विषय-सूची

शास्त्र भण्डारों की नामावलि

१	शास्त्र भण्डार	भ० दि० जैन मन्दिर, (वडा घडा) अजमेर
२	,,	दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर, अलवर
३	,,	दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर, अलवर
४	,,	दि० जैन मन्दिर, दूनी
५	,,	दि० जैन बघेरवाल मन्दिर, आवा
६		दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, बूदी
७	,,	दि० जैन मन्दिर आदिनाथ, बूदी
८	,,	दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी
९	,,	दि० जैन मन्दिर महावीर स्वामी, बूदी
१०	,,	दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ स्वामी, बूदी
११	,,	दि० जैन मन्दिर बघेरवाल, नैणवा
१२	,,	दि० जैन मन्दिर तेरापथी, नैणवा
१३	,,	दि० जैन मन्दिर अग्रवाल, नैणवा
१४	,,	दि० जैन मन्दिर, दबलाना
१५	,,	दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, इन्दरगढ
१६	,,	दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, फतेहपुर (शेखावाटी)
१७	,,	दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर
१८	,,	दि० जैन मन्दिर फौजूराम, भरतपुर
१९	,,	दि० जैन पंचायती मन्दिर, नयी डीग
२०	,,	दि० जैन वडी पचायती मन्दिर, नयी डीग
२१	,,	दि० जैन मन्दिर, पुरानी डीग
२२	,,	दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर, कामा
२३	,,	दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, कामा
२४	,,	दि० जैन नेमिनाथ मन्दिर, टोडारायसिंह
२५	,,	दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर, टोडारायसिंह
२६	,,	दि० जैन मन्दिर, राजमहल
२७	,,	दि० जैन मन्दिर, बोरसली कोटा
२८	,,	दि० जैन पचायती मन्दिर, बयाना
२९	,,	दि० जैन छोटा मन्दिर, बयाना
३०	,,	दि० जैन मन्दिर, वैर
३१	,,	दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर

३२	शास्त्र भण्डार	दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर, उदयपुर
३३	,,	दि० जैन सभवनाथ मन्दिर, उदयपुर
३४	,,	दि० जैन तेरहपथी मन्दिर, वसवा
३५	,,	दि० जैन पचायती मन्दिर, वसवा
३६	,,	दि० जैन मन्दिर कोटडियोका, डूंगरपुर
३७	,,	दि० जैन मन्दिर, भादवा
३८	,,	दि० जैन मन्दिर चोधरियान, मालपुरा
३९	,,	दि० जैन आदिनाथ स्वामी, मालपुरा
४०	,,	दि० जैन मन्दिर तेरहपथी, मालपुरा
४१	,,	दि० जैन पचायती मन्दिर, करोली
४२	,,	दि० जैन मन्दिर सोगाणीयो का, करोली
४३	,,	दि० जैन बीसपथी मन्दिर, दौसा
४४	,,	दि० जैन तेरहपथी मन्दिर, दौसा
४५	,,	दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर

प्रकाशकीय

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी की प्रबन्धकारिणी कमेटी की ओर से गत २४ वर्षों से साहित्य अनुसधान का कार्य हो रहा है। सन् १९६१ मे राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारो की ग्र थ सूची का चतुर्थ भाग प्रकाशित हुआ था। तत्पश्चात् जिणदत्त चरित, राजस्थान के जैन सन्त-व्यक्तित्व एव कृतित्व, हिन्दी पद सग्रह, जैन ग्र थ भडार्स इन राजस्थान, जैन शोध और समीक्षा आदि रिसर्च से सम्बन्धित पुस्तको का प्रकाशन हुआ है। जैन साहित्य के शोधार्थियो के लिये विद्वानो की दृष्टि मे ये सभी पुस्तकें महत्वपूर्ण सिद्ध हुई हैं। शास्त्र भण्डारों की ग्र थ सूची पचम भाग के प्रकाशनार्थ विद्वानो के आग्रह को ध्यान मे रखते हुये और भगवान महावीर की २५०० वीं निर्वाण शताब्दि समारोह हेतु गठित अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन समिति द्वारा साहू शान्तिप्रसाद जी की अध्यक्षता मे देहली अधिवेशन मे राजस्थान के जैन ग्रन्थागारो की सूचिया प्रकाशन के कार्य को वीर निर्वाण सवत् २५०० तक पूर्ण करने हेतु पारित प्रस्ताव का भी ध्यान रखते हुये क्षेत्र कमेटी ने ग्र थ सूची के पचम भाग के प्रकाशन के कार्य को और गति दी और मुझे यह लिखते हुये प्रसन्नता है कि महावीर क्षेत्र कमेटी ने दिगम्बर जैन समिति के प्रस्ताव को क्रियान्वित करने मे सर्व प्रथम पहल की है।

ग्र थ सूची के इस पचम भाग मे राजस्थान के विभिन्न नगरो व कस्बो मे स्थित ४५ शास्त्र भण्डारो के सस्कृत, प्राकृत, अपभ्र श, हिन्दी एव राजस्थानी भाषा के ग्र थो का विवरण दिया गया है। यदि गुटको मे संग्रहीत पाण्डुलिपियो की सख्या को जोडा जाय तो इस सूची मे बीस हजार से अधिक ग्रंथो का विवरण प्राप्त होगा। समूचे साहित्यिक जगत् मे ऐसी विशाल ग्रन्थ सूची का प्रकाशन सभवत प्रथम घटना है। ये हस्तलिखित ग्र थ राजस्थान के प्रमुख नगर जयपुर, अजमेर, उदयपुर, डूगरपुर, कोटा, बू दी, अलवर, भरतपुर, एवं प्रमुख कस्बे टोडारायसिंह, मालपुरा, नैणवा, इन्द्रगढ, बयाना, वैर, दवलाना, फतेहपुर, दूनी राजमहल, बसवा, भादवा, दौसा आदि के दिगम्बर जैन मन्दिरो मे स्थापित शास्त्र भण्डारो मे सग्रहीत हैं। इनकी ग्र थ सूचो बनाने का कार्य हमारे साहित्य शोध विभाग के विद्वान् डा० कस्तूरच द जी कासलीवाल एव अनूपचन्द जी न्यायतीर्थ ने स्वय स्थान स्थान पर जाकर अवलोकन कर पूर्ण किया है। यह उनकी लगन एव साहित्यिक रुचि का सुफल है। यह सूची साहित्यिक, सास्कृतिक एव ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। ग्र थ सूची के अन्त मे दी गई अनुक्रमणिकाए प्राचीन साहित्य पर कार्य करने वाले शोधार्थियो के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण सिद्ध होगी। शोधार्थियो एव विद्वानो को कितनी ही अज्ञात एव अनुपलब्ध ग्र थो का प्रथम वार परिचय प्राप्त होगा तथा भाषा के इतिहास मे कितनी ही लुप्त कडिया और जुड सकेंगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

भगवान महावीर के जीवन पर निवद्ध नवलराम कवि का "वर्द्धमान पुराण" कामा के शास्त्र भडार मे उपलब्ध हुआ है वह १७ वी शताब्दी की कृति है तथा भगवान महावीर के जीवन से सम्बन्धित हिन्दी कृतियो मे अत्यधिक प्राचीन है। श्रीमहावीर जी क्षेत्र की ओर से भगवान महावीर के जीवन से सम्बन्धित प्रमुख हिन्दी काव्यो के शीघ्र प्रकाशन की योजना विचाराधीन है।

अभी राजस्थान मे नागौर कुचामन, प्रतापगढ, सागवाडा, आदि स्थानो के महत्वपूर्ण ग्रंथ भण्डारो की सूची का कार्य अवशिष्ट है। इनकी सूची दो भागो मे समाप्त हो जायगी, ऐसी आशा है। इस प्रकार राजस्थान के शास्त्र भण्डारो की ग्रंथ सूची के ७ भाग प्रकाशित हो जाने के पश्चात् ग्रंथ सूची प्रकाशन की हमारी योजना भगवान महावीर की २५०० वी निर्वाण शताब्दी तक पूर्ण हो सकेगी।

प्रबन्धकारिणी कमेटी उन विभिन्न नगरो एव कस्बों के शास्त्र भण्डारो के व्यवस्थापको की आभारी है जिन्होंने विद्वानो को ग्रंथ सूची बनाने के कार्य मे पूर्ण सहयोग प्रदान किया है। आशा है भविष्य मे भी साहित्य सेवा के पुनीत कार्य मे उनका सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

क्षेत्र कमेटी पूज्य १०८ मुनिवर श्री विद्यानन्दजी महाराज की भी आभारी है जिन्होने इस सूची में प्रकाशनार्थ अपना पुनीत आर्शीर्वाद प्रदान करने की महती कृपा की है। साहित्योद्धार के कार्य मे मुनिश्री द्वारा हमे बराबर प्रेरणा मिलती रहती है। हम साहित्य के मूर्द्धन्य विद्वान् डा० हजारीप्रसादजी द्विवेदी के भी आभारी हैं जिन्होंने इसका पुरोवाक् लिखने की कृपा की है।

महावीर भवन
जयपुर

सोहनलाल सोगाणी
मत्री

आशीर्वाद

धर्म, जाति और समाज की स्थिति मे जहा सस्कृति मूल कारण है, वहा इनके सवर्धन और सरक्षण मे साहित्य का भी महत्वपूर्ण स्थान है । सस्कृति एव साहित्य दोनो जीवन और प्राणवायु सदृश परस्परापेक्षी हैं । एक के बिना दूसरे की स्थिति सभव नही । अत दोनो का स रक्षण आवश्यक है ।

आदि युगपुरुष तीर्थ कर वृषभदेव से प्रवर्तित दिव्य देशना ने तीर्थ कर वर्द्ध मान पर्यन्त और अद्यावधि जो स्थिरता धारण की, वह साहित्य की ही देन है । यदि आज के युग मे प्राचीन साहित्य हमारे बीच न होता तो हमारा अस्तित्व ही समाप्त प्राय था । भारत के प्रभूत शास्त्रागारो मे आज भी विपुल साहित्य सुरक्षित है । न जाने, किन किन महापुरुषो, धर्मप्रेमियो ने इस साहित्य की कैसे कैसे प्रयत्नो से रक्षा की । पिछले समयो मे बडे बडे उतार चढाव आये । मुगल साम्राज्य और विद्वेषियो के कब कब कितने किनने धर्मद्रोही झंझावात चले, इसका तो अतीत इतिहास साक्षी है । पर हा यह अवश्य है कि उस काल मे यदि सस्कृति, साहित्य और धर्म के प्रेमी न होते तो आज के भण्डारो मे विपुल साहित्य सर्वथा दुर्लभ होता । सतोष है कि ऐसे साहित्य पर विद्वानो का ध्यान गया और अब धीरे धीरे तीव्रगति से उसके उद्धार का कार्य जनता के समक्ष आने लगा, यह सुखद प्रसग है ।

राजस्थान के शास्त्र भण्डारो की ग्र थ सूची का पचम भाग हमारे समक्ष है । इसके पूर्व चार भागो मे लगभग पच्चीस हजार ग्र थो की सूची प्रकाशित हो चुकी है । इस भाग मे भी लगभग बीस हजार ग्र थो की नामावली है । प्राकृत, अपभ्रंश, सस्कृत, राजस्थानी और हिन्दी सभी भाषाओ मे लगभग एक हजार लेखकों, आचार्यो, मुनियो और विद्वानो की रचनायें हैं । इन रचनाओ मे दोहा, चोपई, रास, फागु, वेलि, सतसई, बावनी, शतक आदि के माध्यम से तत्व, आचार विचार एव कथा सबधी विविध ग्र थ हैं ।

श्री डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल समाज के जाने माने शोध विद्वान् हैं । भडारो के शोध कार्य पर इन्हे पी--एच डी भी प्राप्त है । बृहत्सूची के उक्त सकलन, सपादन मे इन्हे लगभग बीस वर्ष लग चुके है और अभी कार्य शेष है । इस प्रसग मे डा० साहब एव उनके सहयोगियो को पैदल, ऊट गाडी व ऊटो पर सैकडो मीलो की यात्रा करनी पडी है , उन्होने अथक परिश्रम किया है । यह ऐसा कार्य है जो परम आवश्यक था और किसी का इस पर कार्य रूप मे ध्यान नही गया । डा० साहब के इस कार्य मे वर्तमान एव भावी पीढी के शोधार्थियो को पूरा पूरा लाभ मिलेगा ऐसा हमारा विश्वास है । साथ ही तीर्थ कर महावीर की २५०० वी निर्वाण शती के प्रसग मे इस ग्र थ का उपयोग और भी बढ जाता है । ग्र थ भण्डारो मे उपलब्ध तीर्थ कर महावीर सम्बन्धी अनेक ग्रंथों का उल्लेख भी इस सूची मे है, जिनके आधार पर तीर्थ कर महावीर का प्रामाणिक जीवन प्रकाश मे लाया जा सकता है । और भी अनेक ग्र थ प्रकाशित किये जा सकते हैं । समाज को इधर ध्यान देना उचित है । डा० साहब का प्रयास सर्वथा उपयोगी एव अनुकरणीय है ।

प्रस्तुत प्रकाशन के महत्वपूर्ण कार्य से श्रीमहावीरजी अतिशय क्षेत्र कमेटी, उसके तत्तकालीन मन्त्रियों श्री ज्ञानचन्द्र खिन्दूका व श्री सोहनलाल सोगाणी के साहित्योद्धार प्रेम की झलक सहज ही मिल जाती है। अन्य तीर्थक्षेत्रो के प्रवन्धको को इनका अनुकरण कर साहित्योद्धार मे रुचि लेना सर्वथा उपयोगी है। ग्रंथ सपादन के कार्य मे श्री प० अनूपच द न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न से डा० साहव को पूरा पूरा सहयोग मिला है। हमारी भावना है कि समाज और देश इस अमूल्य सूची का अधिकाधिक लाभ ले सके।

विद्यानन्द मुनि

उज्जैन
३०-१२-७१

———

पुरोवाक्

मुझे राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारो की इस पांचवीं ग्रंथ सूची को देख कर बड़ी प्रसन्नता हुई। डा० कासलीवालजी ने विभिन्न नगरो एव ग्रामो के ४५ शास्त्र भण्डारो का आलोडन करके इस ग्रंथ सूची को तैयार किया है। इसमे लगभग बीस हजार पाण्डुलिपियो का विवरण दिया हुआ है। इस ग्रंथ सूची मे कुछ ऐसी महत्वपूर्ण पुस्तकें भी हैं जिनका अभी तक प्रकाशन नहीं हुआ है। मुझे यह कहने मे जरा भी सकोच नहीं है कि डा० कस्तूरचन्द जी एवं पं० अनूपचन्द जी ने इस ग्रंथ सूची का प्रकाशन करके भारी शोध कर्त्ताओ और शास्त्र जिज्ञासुओ के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण ग्रंथ दिया है। इस प्रकार की ग्रंथ सूचियो मे भिन्न भिन्न स्थानों में सुरक्षित और अज्ञात तथा अल्पज्ञात पुस्तको का परिचय मिलता है और शोध कर्त्ता को अपने अभीष्ट मार्ग की सूचना में सहायता मिलती है। इसके पूर्व भी डा० कासलीवालजी ने ग्रंथ सूचियो का प्रकाशन किया है। वे इस क्षेत्र मे चुपचाप महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। मेरा विश्वास है कि विद्वत् समाज उनके प्रयत्नों का पूरा लाभ उठाएगा।

यद्यपि इन ग्रंथो की सूची जैन भण्डारो से संग्रह की गई तथापि यह नहीं समझना चाहिए कि इसमे केवल जैन धर्म से संबद्ध ग्रंथ ही है। ऐसे बहुत से ग्रंथ हैं जो कि जैन धर्म क्षेत्र के बाहर भी पड़ते हैं और कई ग्रंथ हिन्दी साहित्य के शोध कर्त्ताओं के लिए बहुत उपयोगी जान पड़ते हैं। इस महत्वपूर्ण ग्रंथ सूची के प्रकाशन के लिए श्री महावीर तीर्थ क्षेत्र कमेटी के मन्त्री श्री सोहनलाल जी सोगाणी तथा डा० कस्तूरचन्द जी और प० अनूपचन्द जी न्यायतीर्थ साहित्य और विद्या प्रेमियो के हार्दिक धन्यवाद के अधिकारी है।

हजारी प्रसाद द्विवेदी

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी

— -

ग्रंथ सूची-एक झलक

क्रम सख्या	नाम	सख्या
१	ग्र थ सख्या	५०५०
२	पाण्डुलिपि सख्या	२०,०००
३	ग्र थकार	१०८०
४	ग्राम एव नगर	६७०
५	शासको की सख्या	१३५
६	अज्ञात एव अप्रकाशित ग्र थ विवरण	१००
७	ग्र थ भण्डारों की सख्या	४५

———

आभार

हम सर्वप्रथम क्षेत्र की प्रबन्ध कारिणी कमेटी के सभी माननीय सदस्यों तथा विशेषत निवर्तमान मत्री श्रीज्ञानचन्द्र जी खिन्दूका एव वर्तमान अध्यक्ष श्री मोहनलाल जी काला तथा मत्री श्री सोहनलालजी सोगाणी के आभारी है जिन्होंने ग्र थ सूची के इस भाग को प्रकाशित करवाकर साहित्य जगत् का महान् उपकार किया है। क्षेत्र कमेटी द्वारा साहित्य शोध एव साहित्य प्रकाशन के क्षेत्र मे जो महत्वपूर्ण कार्य किया गया है वह अत्यधिक प्रशसनीय एव श्लाघनीय है। आशा है भविष्य मे साहित्य प्रकाशन के कार्य को और भी प्राथमिकता मिलेगी।

हम राजस्थान के उन सभी दि० जैन मन्दिरो के व्यवस्थापको के आभारी हैं जिन्होंने अपने यहा स्थित शास्त्र भण्डारो की ग्र थ सूची बनाने मे हमे पूर्ण सहयोग दिया। वास्तव मे यदि उनका सहयोग नही मिलता तो हम इस कार्य मे प्रगति नही कर सकते थे। ऐसे व्यस्थापक महानुभावो मे निम्न लिखित सज्जनों के नाम विशेषतः उल्लेखनीय है—

डू गरपुर—	स्व० श्री मीराचन्द जी गाधी
	स्व० श्री रत्नलालजी कोटडिया
	सुरजमलजी नन्दलालजी डूंडू सर्राफ
फतेहपुर—	श्री बाबू गिन्नीलालजी जैन
अजमेर—	समस्त समाज दि० जैन मन्दिर बडाधडा (भट्टारक) अजमेर
कोटा—	श्री डा० नेमीचन्द जी
	श्री स्व० ज्ञानचन्द जी
नैणवा—	श्री बाबू जयकुमार जी वकील
बू दी—	श्री सेठ मदनमोहन जी कासलीवाल
	श्री केशरीमल जी गगवाल
दूनी—	श्री मदनलाल जी
मालपुरा—	श्री समीरमल जी छाबडा
टोडारायसिंह—	श्री मोहनलालजी जैन
	श्री रतनलाल जी जैन
भरतपुर—	श्री बा० शिखरचन्द जी गोधा
उदयपुर—	श्री सेठ पन्नालाल जी जैन
	श्री मोतीलाल जी मीडा
बयाना—	श्री रोशनलाल जी ठेकेदार
जयपुर—	श्री मु शी गेंदीलाल जी साह

इस अवसर पर स्व० गुरुवर्य्य प० चैनसुखदास जी सा० न्यायतीर्थ के चरणो मे सादर श्रद्धाञ्जलि अर्पित है जिनकी सतत प्रेरणा से ही राजस्थान के इन शास्त्र भण्डारो की ग्रथ सूची का कार्य किया जा सका । हम हमारे सहयोगी स्व० सुगनचन्द जी जैन की सेवाओ को भी नही भुला सकते जिन्होने हमारे साथ रह कर शास्त्र भण्डारो की ग्रथ सूची बनाने मे हमे पूरा सहयोग दिया था । उनके आकस्मिक स्वर्गवास से साहित्यिक कार्यों में हमे काफी क्षति पहुची है । हम उदीयमान शोधार्थी श्री प्रेमचद रावका के भी आभारी हैं जिन्होंने ग्रथ सूची की अनुक्रमणिकायें तैयार करने मे पूरा सहयोग दिया है ।

हिन्दी के मूर्द्धन्य विद्वान् डा० हजारी प्रसाद जी द्विवेदी के हम अत्यधिक आभारी हैं जिन्होंने हमारे निवेदन पर ग्रथ सूची पर पुरोवाक् लिखने की महती कृपा की है । जैन साहित्य की ओर आपकी विशेष रुचि रही है और हमे आशा है कि आपकी प्रेरणा से हिन्दी के इतिहास मे जैन विद्वानो की कृतियो को उचित स्थान प्राप्त होगा ।

राष्ट्रसत मुनिप्रवर श्री विद्यानदजी महाराज का हम किन शब्दो मे आभार प्रकट करें । मुनि श्री का आशीर्वाद ही हमारी साहित्यिक साधना का सबल है ।

१-१-७२

कस्तूरचन्द कासलीवाल
अनूपचन्द न्यायतीर्थ

———

प्रस्तावना

राजस्थान एक विशाल प्रदेश है। इसकी यह विशालता केवल क्षेत्रफल की दृष्टि से ही नही है किन्तु साहित्यिक, सास्कृतिक एव ऐतिहासिक दृष्टि से भी राजस्थान की गणना सर्वोपरि है। जिस प्रकार यहा के वीर शासको एव योद्धाओ ने अपने बहादुरी के कार्यो से देश के इतिहास को नयी दिशा प्रदान करने मे महत्वपूर्ण योग दिया है उसी प्रकार यहा के साहित्य सेवी समूचे भारत का गौरवमय वातावरण बनाने मे सक्षम रहे हैं। यहा की सस्कृति भारत की आत्मा है जो अहिसा, सहअस्तित्व एव समन्वय की भावना से ओतप्रोत है। यही कारण है कि इस प्रदेश मे युद्ध के समय मे भी शाति रही और सभी वर्ग भारतीय सस्कृति के विकास मे अपना अपना योग देते रहे। भारतीय साहित्य के विकास मे, उसकी सुरक्षा एव प्रचार प्रसार मे राजस्थानवासियो का महत्वपूर्ण योगदान रहा। सस्कृत भाषा के साथ-साथ यहा के निवासियो ने प्राकृत, अपभ्र श, हिन्दी, राजस्थानी एव गुजराती के विकास मे भी सर्वाधिक योग दिया। राजस्थानी यहा की जन भाषा रही और उसके माध्यम से हिन्दी का खूब विकास हुआ। इसीलिये हिन्दी के प्राचीनतम कवियो की कृतिया यही के ग्र थागारो मे उपलब्ध होती हैं। यही स्थिति अन्य भाषाओ के सम्बन्ध मे भी कही जा सकती है।

राजस्थान के शास्त्र भण्डारो का यदि मूल्याकन किया जावे तो हमारे पूर्वजो की बुद्धिमत्ता एव उनके साहित्यिक प्रेम की जितनी भी प्रशसा की जावे वही कम रहेगी। उन्होने समय की गति को पहिचाना, साहित्य निर्माण के साथ साथ उसकी सुरक्षा की ओर भी ध्यान दिया और धीरे-धीरे लाखो की सख्या मे पाण्डुलिपियो का संग्रह कर लिया। मुसलिम शासन काल मे जिस प्रकार उन्होने साहित्यिक धरोहर को अपने प्राणो से भी अधिक प्रिय समझ कर सुरक्षित रखा वह आज एक कहानी बन गयी है। यहा के शासक एव जनता दोनो ने ही मिल कर अथक प्रयासो से साहित्य की अमूल्य निधि को नष्ट होने से बचा लिया। इसलिये यहा के शासको ने जहा राज्य स्तर पर ग्र थ सग्रहालयो एव पोथीखानो की स्थापना की, वहा यहा की जनता ने अपने-अपने मन्दिरो एव निवास स्थानो पर भी पाण्डुलिपियो का अपूर्व सग्रह किया। बीकानेर की अनूप सस्कृत लायब्रेरी एव जयपुर का पोथीखाना जिस प्रकार प्राचीन पाण्डुलिपियो के सग्रह के लिये विश्वविख्यात है उसी प्रकार नागौर, जैसलमेर, अजमेर, आमेर, बीकानेर एव उदयपुर के जैन ग्र थालय भी इस दृष्टि से सर्वोपरि हैं। यद्यपि अभी तक विद्वानो द्वारा इन शास्त्र भण्डारो का पूर्णत मूल्याकन नही हो सका है फिर भी गत २० वर्षो मे इन सग्रहालयो की जो ग्र थ सूचिया सामने आयी हैं उनसे विद्वान गण इस ओर आकृष्ट होने लगे हैं और अब शनै शनै इनमे सग्रहीत साहित्य का उपयोग होने लगा है।

जनता द्वारा स्थापित राजस्थान के इन शास्त्र भण्डारो मे जैन शास्त्र भण्डारो की सबसे बडी सख्या है। ये शास्त्र भण्डार राजस्थान के सभी प्रमुख नगरो एव कस्बो मे मिलते है। यद्यपि अभी तक इन शास्त्र भण्डारो की पूरी सूची तैयार नही हो सकी है। मैंने अपने Jain Granth Bhandars in Rajasthan में ऐसे १०० शास्त्र भण्डारो का परिचय दिया है लेकिन उसके पश्चात् और भी कितने ही ग्र थागारो का

अस्तित्व हमारे सामने आया है, इसलिये राजस्थान मे दिगम्बर एव श्वेताम्बर शास्त्र भण्डारो की संख्या की जावे तो वह २०० से कम नही होनी चाहिये। श्वेताम्बर शास्त्र भण्डारो की ग्र थ सूचिया एव उनका सामान्य परिचय तो बहुत पहिले मुनि पुण्यविजय जी, मुनि जिनविजयजी एव श्री अगरचन्द जी नाहटा प्रभृति विद्वानो ने साहित्यिक जगत को दे दिया था लेकिन दिगम्बर जैन मन्दिरो मे स्थापित शास्त्र भण्डारो का परिचय देने एव उनकी ग्र थ सूची बनाने का काय अनेक प्रयत्नो के बावजूद सन् १९४७ के पूर्व तक योजना बद्ध तरीके से प्रारम्भ नही किया जा सका। यद्यपि प० परमानन्द जी शास्त्री, स्व० प० जुगलकिशोर जी मुख्तार एव श्रद्धेय स्व० प० चैनसुखदासजी न्यायतीथ द्वारा इस ओर लोगो को बराबर प्रेरणाए दी जाती रही लेकिन फिर भी कोई ठोस कार्य प्रारम्भ नही किया जा सका। आखिर प० चैनसुखदासजी न्यायतीर्थ की बार बार प्रेरणाओ के फलस्वरूप श्रीमहावीर क्षेत्र के तत्कालीन मत्री श्री रामचन्द्रजी सा० खिन्दूका ने इस दिशा मे पहल की तथा क्षेत्र की ओर से साहित्य शोध विभाग की स्थापना की गयी। इस प्रकार दिगम्बर जैन मन्दिरो मे स्थित शास्त्र भण्डारो की ग्र थ सूची का कार्य प्रारम्भ हुआ। इसके पश्चात् ग्र थ सूचियो के प्रकाशन का कार्य प्रारम्भ किया गया और सन् १९४९ में सर्व प्रथम राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारो की ग्र थ सूची प्रथम भाग (आमेर शास्त्र भण्डार की ग्र थ सूची) प्रकाशित हुआ। इसके पश्चात् तीन भाग और प्रकाशित हो चुके हैं जिनमे बीस हजार से भी अधिक ग्र थो का परिचयात्मक विवरण दिया जा चुका है।

ग्र थ सूची का पाचवा भाग विद्वानो एव पाठको के समक्ष प्रस्तुत है। इसमे जयपुर नगर के शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर लश्कर के अतिरिक्त सभी शास्त्र भण्डार राजस्थान के विभिन्न नगरो एव कस्बो मे स्थित है। प्रस्तुत भाग मे ४५ शास्त्र भण्डारो मे सग्रहीत २० हजार से भी अधिक पाण्डुलिपियो का परिचयात्मक विवरण दिया गया है। एक ही भाग मे इतनी अधिक पाण्डुलिपियो का परिचय देने का हमारा यह प्रथम प्रयास है। इन शास्त्र भण्डारो की सूचीकरण के कार्य मे हमे दस वर्ष से भी अधिक समय लगा। एक एक भण्डार को देखना, वहा के ग्र थो की धूल साफ करना, उन्हें सूची बद्ध करना, अस्तव्यस्त पत्रो को व्यवस्थित करना, पुराने एव जीर्ण शीर्ण वेष्टनों को नये वेष्टनो मे परिवर्तित करना, महत्वपूर्ण पाठो एव प्रशस्तियों की प्रति लिपि तैयार करना, पूरे ग्र थ भण्डार को व्यवस्थित करना आदि सभी कार्य हमे करने पडे और यह कार्य कितना श्रम साध्य है इसे भुक्त भोगी ही जान सकता है। फिर भी, यह कार्य सम्पन्न हो गया हम तो इसे ही पर्याप्त समझते हैं क्योकि कुछ ऐसे शास्त्र भण्डार भी हैं जिन्हें पचासो वर्षो से नही खोला गया और उनमे कितनी २ साहित्यिक निधिया विद्यमान हैं इसे जानने का कभी प्रयास ही नही किया।

इस ग्र थ सूची मे बीस हजार पाण्डुलिपियो के परिचय के अतिरिक्त सैकडो ग्र थ प्रशस्तियो, लेखक प्रशस्तियों तथा अलभ्य एव प्राचीनतम पाण्डुलिपियो का परिचय भी दिया गया है। इस सूची के अवलोकन के पश्चात् विद्वानों को इसका पता लग सकेगा कि सैकडों ग्र थो की कितनी २ महत्वपूर्ण पाण्डुलिपियो की जानकारी मिली है जिनके बारे में साहित्यिक जगत अभी तक अन्धेरे मे था। कुछ ऐसे ग्र थ है जिनकी पाण्डुलिपिया राजस्थान के प्राय सभी शास्त्र भण्डारो मे उपलब्ध होती है जो उनकी लोकप्रियता की द्योतक है। स्वय ग्र थकारो की मूल पाण्डुलिपियों की उपलब्धि भी कम महत्वपूर्ण नही है। इन पाण्डुलिपियो के आधार पर प्रकाशन के समय पाठ भेद जैसा दुरूह कार्य कम हो जावेगा और पाठ की प्रामाणिकता मे ऊहापोह नही करना पडेगा। महापडित टोडरमल के आत्मानुशासन भाषा की विभिन्न भण्डारो मे ४८ प्रतिलिपिया सग्रहीत हैं इसी प्रकार मनोहरदास सोनी की धर्मपरीक्षा की ४७ पाण्डुलिपिया, किशनसिंह के क्रियाकोश की ४५, द्यानतराय के चर्चाशतक की ३७,

पद्मनन्दि पचविंशति की ३५, ऋषभदास निगोत्या के मूलाचार भाषा की ३३, शुभचन्द्र के ज्ञानार्णव की ३४, भूधरदास के चर्चासमाधान की २६ पाण्डुलिपिया उपलब्ध हुई हैं। सबसे अधिक महाकवि भूधरदास के पार्श्वपुराण की पाण्डुलिपिया है जिनकी सख्या ७३ है। पार्श्वपुराण का समाज मे कितना अधिक प्रचार था और स्वाध्याय प्रेमी इसका कितनी उत्सुकता से स्वाध्याय करते होगे यह इन पाण्डुलिपियो की सख्या से अच्छी तरह जाना जा सकता है। पार्श्वपुराण की सबसे प्राचीन पाण्डुलिपि सवत् १७६४ की है जो रचना काल के पाच वर्ष पश्चात् ही लिखी गयी थी। इसी तरह प्रस्तुत भाग मे एक हजार से भी अधिक ग्र थ प्रशस्तिया एव लेखक प्रशस्तिया भी दी गयी हैं जिनमे कवि एव काव्य परिचय के अतिरिक्त कितनी ही ऐतिहासिक तथ्यो की जानकारी मिलती है। इतिहास लेखन मे ये प्रशस्तिया अत्यधिक महत्वपूर्ण सहायक सिद्ध होती है। उनमे जो तिथि, काल, वार नगर एवं शासको का नामोल्लेख किया गया है वह अत्यधिक प्रामाणिक है और उन पर सहसा अविश्वास नही किया जा सकता। प्रस्तुत ग्र थ सूची मे सैकडो शासको का उल्लेख है जिनमे केन्द्रीय, प्रान्तीय एव प्रादेशिक शासको के शासन का वर्णन मिलता है। इसी तरह इन प्रशस्तियो मे अनेको ग्राम एव नगरो का भी उल्लेख मिलता है जो इतिहास की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

इस भाग मे राजस्थान के विभिन्न नगरो एव ग्रामो मे स्थित दिगम्बर जैन मन्दिरो मे सग्रहीत ४५ शास्त्र भण्डारो की हस्तलिखित पाण्डुलिपियो का परिचय दिया गया है। ये शास्त्र भण्डार छोटे बडे सभी स्तर के हैं। कुछ ऐसे ग्र थ भण्डार हैं जिनमें दो हजार से भी अधिक पाण्डुलिपियो का सग्रह मिलता है तथा कुछ शास्त्र भण्डारो मे १०० से भी कम हस्तलिखित ग्र थ हैं। इन भण्डारो के अवलोकन के पश्चात् इतना कहा जा सकता है कि १५ वी शताब्दी से लेकर १८ वीं शताब्दी तक ग्र थो की प्रतिलिपि तथा उनके सग्रह का अत्यधिक जोर रहा। मुसलिम काल मे प्रतिलिपि की गयी पाण्डुलिपियो की सबसे अधिक सख्या है। ग्र थ भण्डारो के लिये इन शताब्दियो को हम उनका स्वर्णकाल कह सकते है। आमेर, नागौर, अजमेर, सागवाडा, कामा, मोजमाबाद, बूदी, टोडारायसिंह, चम्पावती (चाटसू) आदि स्थानो के शास्त्र भण्डार इन शताब्दियो मे स्थापित किये गये और इन्ही स्थानो पर ग्र थो की तेजी से प्रतिलिपि की गयी। यह युग भट्टारक सस्था का स्वर्ण युग था। साहित्य लेखन एव उनकी सुरक्षा एव प्रचार प्रसार मे जितना इन भट्टारको का योगदान रहा उतना योगदान किसी साधु सस्था एव समाज का नही रहा। भट्टारक सकलकीर्ति से लेकर १८ वी शताब्दी तक होने वाले भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति तक इन भट्टारको ने देश मे जबरदस्त साहित्य प्रचार किया और जन जन को इस ओर मोडने का प्रयास किया।

लेकिन राजस्थान मे महापडित टोडरमल जी के क्रान्तिकारी विचारो के कारण इस सस्था को जबरदस्त आघात पहुचा और फिर साहित्य लेखन का कार्य अवरुद्ध सा हो गया। जयपुर नगर ने सारे जैन समाज का मार्गदर्शन किया और यहा पर होने वाले प० दौलतराम कासलीवाल, प० टोडरमल, भाई रायमल्ल, प० जयचन्द छाबडा, प० सदासुखदास कासलीवाल जैसे विद्वानो की कृतियो की पाण्डुलिपिया तो होती रही किन्तु प्राकृत, सस्कृत, अपभ्रंश एव हिन्दी राजस्थानी भाषा कृतियो की सर्वथा उपेक्षा कर दी गयी। यही नही ग्र थो की सुरक्षा की ओर भी कोई ध्यान नही दिया गया। और हमारी इसी उपेक्षा वृत्ति से ग्र थ भण्डारो के ताले लग गये। सैंकडो ग्र थ चूहो और दीमको के शिकार हो गये और सस्कृत एव प्राकृत की हजारो पाण्डुलिपियो को नही समझ सकने के कारण जल प्रवाहित कर दिया गया।

लेकिन गत २५-३० वर्षों से समाज मे एक पुन साहित्यिक चेतना जाग्रत हुई और साहित्य सुरक्षा एव उसके प्रकाशन की ओर उसका ध्यान जाने लगा। यही कारण है कि आज सारे देश मे पुन जैन ग्रथाकारो के ग्रथ सूचियो की माग होने लगी है। क्योकि प्रादेशिक भाषाओ का महत्वपूर्ण सग्रह आज भी इन्ही भण्डारो मे सुरक्षित है। विश्वविद्यालयो मे जैन आचार्यो एव उनके साहित्य पर रिसर्च होने लगी है क्योकि आज के विद्वान् एव शोधार्थी साम्प्रदायिकता की परिधि से निकल कर कुछ काम करना चाहता है। इसलिये ऐसे समय मे ग्रथ सूचियो का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण कार्य है। प्रस्तुत ग्रथ सूची मे राजस्थान के जिन शास्त्र भण्डारो का विवरण दिया गया है उनका परिचय निम्न प्रकार है—

शास्त्र भण्डार भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर

भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर का शास्त्र भण्डार राजस्थान के प्राचीनतम ग्रथ भण्डारो मे से एक है। इस ग्रथ भण्डार की स्थापना कब हुई थी इसकी तो अभी तक निश्चित खोज नही हो सकी है किन्तु यदि भट्टारको की गादी के साथ शास्त्र भण्डारो की स्थापना का सबध जोडा जावे तो यहा का शास्त्र भण्डार १२ वी शताब्दी मे ही स्थापित हो जाना चाहिये, ऐसी हमारी मान्यता है। क्योकि सवत ११६८ मे भट्टारक विशाल कीर्ति प्रथम भट्टारक के रूप मे यहा की गादी पर बैठे थे। इसके पश्चात् १६ वी शताब्दी से तो अजमेर भट्टारको का पूर्णत केन्द्र बन गया। इन भट्टारको ने पाण्डुलिपियो के लिखने लिखाने मे अत्यधिक योग दिया और इस भण्डार की अभिवृद्धि की ओर खूब कार्य किया।

इस भण्डार को सर्व प्रथम स्व० श्री जुगलकिशोरजी मुख्तार एव प० परमानन्दजी शास्त्री ने वहा कुछ समय ठहरकर देखा था किन्तु वे इस की ग्रथ सूची नही बना पाये इसलिए इसके पश्चात् दिसम्बर १६५८ में हम लोग वहा गये और पूरे आठ दिन तक ठहर कर इस भण्डार की ग्रथ सूची तैयार की।

इस भण्डार मे २०१५ हस्तलिखित ग्रथ एव गुटके हैं। कुछ ऐसे अपूर्ण एव स्फुट पत्र वाले ग्रथ भी हैं जो सन्दूको मे भरे हुए हैं। लेकिन समयाभाव के कारण उन्हे नही देखा जा सका। शास्त्र भण्डार मे सस्कृत, प्राकृत, अपभ्र श एव हिन्दी इन चारो भाषाओ के ही अच्छे ग्रथ हैं। इनमे प्राचीन पाडुलिपि समयसार प्राभृत की है जो सवत् १४६३ की लिखी हुई है। यह प्राकृत भाषा का ग्रथ है और आचार्य कुदकुद की मौलिक कृति है। इसके अतिरिक्त आत्मनुशासन टीका (प्रभाचन्द्राचार्य) हरिवश पुराण (ब्रह्म जिनदास) सागार धर्मामृत (आशाधर), धर्मपरीक्षा (अमितगति), सुकुमाल चरित्र (भ० सकलकीर्ति) की प्राचीन पाडुलिपिया है। महा प० आशाधर का 'अध्यात्म रहस्य' एव जीतसार समुच्चय (वृषभदास। चित्रबधस्तोत्र (मेधावी) पासचरिउ (तेजपाल) की ऐसी पाण्डुलिपिया हैं जो प्रथम बार इस भण्डार मे उपलब्ध हुई हैं। हिन्दी की कितनी ही ऐसी कृतिया उपलब्ध हुई है जो साहित्यक की दृष्टि मे अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। भगवतीदास की रचनाए जिनमे 'सीतासतु' 'शील बत्तीसी', राजमती गीत, अर्गलपुर जिन वदना, राजावली, 'बनजारा गीत' 'राजमती नेमीश्वररास' के नाम उल्लेखनीय हैं, और एक ही गुटके मे उपलब्ध हुई हैं। ठाकुर कवि का शाति पुराण (सवत् १६५२) हिन्दी का एक अच्छा काव्य है घेल्ह कवि का 'बुद्धि प्रकाश' तथा बूचराज का 'भुवनकीर्ति गीत' एव 'धर्मकीर्ति गीत' इतिहास की दृष्टि से भी अच्छी रचनाए है। इसके अतिरिक्त भण्डार मे 'सामुद्रिक पुरुष लक्षण' की पाण्डुलिपि है, जिसकी लेखक प्रशस्ति सवत् १७६३ भादवा सुदी १४ की है और उसमे यह लिखा हुआ है कि इस प्रति को जोबनेर मे पडित टोडरमल के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी। इससे महा प० टोडरमलजी के

जीवन एव आयु के सम्बन्ध मे विशेष प्रकाश पडता है। यदि इस प्रशस्ति का सम्बन्ध प० टोडरमलजी से ही है तो फिर टोडरमलजी की आयु के सम्बन्ध मे सभी मान्यताए (धारणाए) गलत सिद्ध हो जाती हैं। यदि सवत् १७६३ मे पडितजी की आयु १५-१६ वर्ष की भी मान ली जावे तो उनके जीवन की नयी कहानी प्रारम्भ हो जाती है, और उनकी आयु २५-२६ वर्ष की न रहकर ५० वर्ष से भी ऊपर पहु च जाती है लेकिन अभी इस की खोज होना शेष है।

अलवर

अलवर प्रान्त का नाम पहिले मत्स्य प्रदेश था जो महाभारत कालीन राजा विराट का राज्य था। मछेरी के नाम से अब भी यहा एक गाम है। जो मत्स्य का ही अपभ्र श शब्द है। यही कारण है कि राजस्थान निर्माण के पूर्व अलवर, भरतपुर, धौलपुर और करौली राज्यो के एकीकरण के पश्चात् इस प्रदेश का नाम मत्स्य देश रखा गया था। १६ वी शताब्दी के पूर्व अलवर भी जयपुर के राज्य मे सम्मिलित था लेकिन महाराजा प्रतापसिंह ने अपना स्वतन्त्र राज्य स्थापित किया और उसका अलवर नाम दिया। अलवर नगर और देहली जयपुर के मध्य मे बसा हुआ है।

जैन साहित्य और सस्कृति का भी अलवर प्रदेश अच्छा केन्द्र रहा है। इस प्रदेश मे अलवर के अतिरिक्त तिजारा, अजबगढ, राजगढ, आदि प्राचीन स्थान हैं और जिनमे शास्त्र भण्डार भी स्थापित है। यहा ७ मन्दिर है और सभी मे ग्र थ भण्डार है। सबसे अधिक ग्र थ खण्डेलवाल पचायती मदिर एव अग्रवाल पचायती मदिर मे हैं दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मदिर मे भक्तामर स्तोत्र एव तत्वार्थसूत्र की स्वर्णाक्षरी प्रतिया है जो कला की दृष्टि से उल्लेखनीय है। जयपुर के महाराजा सवाई प्रतापसिंह द्वारा लिखित आयुर्वेदिक ग्र थ 'अमृतसागर' की भी एक उत्तम प्रति है इसका लेखन काल स० १७६१ है। खण्डेलवाल पचायती मदिर के शास्त्र भण्डार मे २११ हस्तलिखित ग्र थ एव ४६ गुटके हैं जिनमे अध्यात्म बारहखडी (दौलतराम कासलीवाल), यशोधर चरित (परिहानन्द) राजवार्तिक (भट्टाकलंक) की प्रतिया विशेषत उल्लेखनीय है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मदिर दूनी

जयपुर से देवली जाने वाली सडक पर स्थित दूनी एक प्राचीन कस्बा है। यह टोक से १२ मील एव देवली से ६ मील है। जयपुर राज्य का यह जागीरी गाव था जिसके ठाकुर रावराजा कहलाते थे। यहा एक दि० जैन मदिर है। मदिर के एक भाग पर एक जो लेख अ कित है उसके अनुसार इस मन्दिर का निर्माण सं० १५८५ मे हुआ था और इसीलिये यहा का ग्र थ भण्डार भी उसी समय का स्थापित किया हुआ है। यहा के ग्र थ भण्डार मे १४३ हस्तलिखित ग्र थ हैं। जिनमे अधिकाश ग्रंथ हिन्दी भाषा के है। ग्र थ भण्डार मे सबसे प्राचीन पाण्डुलिपि सवत् १५०० मे लिपि की हुई जिनदत्त कथा है। विद्यासागर की हिन्दी रचनाएं भी यहा सग्रहीत हैं जिनमे सोलह स्वप्न, जिनराज महोत्सव, सप्तव्यसन सवैया, आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इसी तरह तानुशाह का झूलना, गग कवि का 'राजुल का बारह मासा' हिन्दी की अज्ञात रचनाए हैं।

गग कवि पर्वत धर्मार्थी के पुत्र थे। भट्टारक शुभचन्द्र के जीवधर स्वामी चरित्र की सवत् १६१५ मे लिखी हुई पाण्डुलिपि भी उल्लेखनीय है। बाण कवि कृत कलियुगचरित्र (सवत् १६७४) की हिन्दी की अच्छी कृति है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन बघेरवाल मदिर आवा

टोक प्रात का आवाँ एक प्राचीन नगर है। साहित्य एव सस्कृति की दृष्टि से १६-१७ वी शताब्दी में यह गौरव पूर्ण स्थान रहा। चारो ओर छोटी २ पहाडियो के मध्य मे स्थित होने के कारण जैन साधुओ के लिये चिन्तन करने का यह एक अच्छा केन्द्र रहा। सवत् १५९३ मे यहा मडलाचार्य धर्मकीर्ति के नेतृत्व मे एक बिम्ब प्रतिष्ठा महोत्सव सपन्न हुआ था जिसका एक विस्तृत लेख मदिर मे अ कित है। लेख मे सोलकी वश के महाराजा सूर्यसेन के शासन की प्रश सा की गयी है इसी लेख मे महाराजा पृथ्वीराज के नाम के का उल्लेख हुआ है। नगर के बाहर समीप ही छोटी सी पहाडी पर भ० प्रभाचन्द्र, भ० जिनचन्द्र, एव भ० धर्मचन्द्र की तीन निषेधिकाए हैं जिनपर लेख भी अंकित हैं। ऐसी निषेधिकाए इस क्षेत्र मे प्रथम बार उपलब्ध हुई है जो अपने युग मे भट्टारको के जबरदस्त प्रभाव की द्योतक है।

यहा दो मदिर हैं एक बघेरवाल दि० जैन मदिर तथा दूसरा खण्डेलवाल दि० जैन मदिर। दोनो ही मदिरो मे हस्तलिखित ग्र थो का उल्लेखनीय सग्रह नही है केवल स्वाध्याय मे काम आने वाले ग्रन्थ ही उपलब्ध हैं।

बूंदी

बू दी राजस्थान का प्राचीन नगर है जो प्राचीन काल के वृन्दावती मे नाम से प्रसिद्ध था। कोटा से बीस मील पश्चिम की ओर स्थित बू दी एव झालावाड का क्षेत्र हाडौती प्रदेश कहलाता है। मुगलशासन मे बू दी के शासको का देश की राजस्थान की राजनीति मे विशेष स्थान रहा। साहित्यिक एव सास्कृतिक दृष्टि से भी १७ वी १८ वी एवं १९ वी शताब्दी मे यहा पर्याप्त गतिविधिया चलती रही। १७ वी शताब्दी में होने वाले जैन कवि पद्मनाभने बू दी का निम्न शब्दो मे उल्लेख किया है—

> बू दी इन्द्रपुरी जखिपुरी कि कुबेरपुरी
> रिद्धि सिद्धि भरी द्वारिकि कासी धरीधर मे
> धौमहर धाम, घर घर विचित्र बाम
> नर कामदेव जैसे सेवे सुख सर मे
> वापी बाग वारुण बाजार वीथी विद्या वेद
> विवुध विनोद वानी बोले मुखि नर मे
> तहा करे राज भावस्यघ महाराज
> हिन्दू धर्मलाज पातसाहि आज कर मे

१८ वी शताब्दी मे कवि दिलाराम और हीरा के नाम उल्लेखनीय हैं। बू दी नगर मे ५ ग्रन्थ भण्डार हैं जिनके नाम निम्न प्रकार है—

१ ग्र थ भण्डार दि जैन मदिर पार्श्वनाथ
२ ,, ,, आदिनाथ
४ ,, ,, अभिनन्दन स्वामी
४ ,, ,, महावीर स्वामी
५ ,, ,, नागदी (नेमिनाथ)

ग्रंथ भण्डार दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ

इस भण्डार मे ३३४ हस्तलिखित ग्रथ एव गुटके हैं। अधिकाश ग्रथ सस्कृत एव हिन्दी भाषा के हैं तथा पूजा, कथा प्रधान एव स्तोत्र व्याकरण विषयक हैं। इस भण्डार मे ब्रह्म जिनदास विरचित' रामचन्द्र रास' की एक सुन्दर पाण्डुलिपि है। इसी तरह भक्तामरस्तोत्र हिन्दी गद्य टीका की प्रति भी यहा उपलब्ध हुई है जो हेमराज कृत है।

ग्रंथ भण्डार दि० जैन मंदिर आदिनाथ

इस मन्दिर के ग्रथ भण्डार मे १६८ हस्तलिखित ग्रथो का सग्रह है इस सग्रह मे ज्योतिष रत्नमाला की सबसे प्राचीन प्रतिलिपि है जो सवत् १५१६ मे लिपि की गई थी। इसी तरह सागारधर्मामृत, त्रिलोकसार एव उपदेशमाला की भी प्राचीन प्रतिया है।

ग्रथ भण्डार दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी

इस ग्रथ भण्डार मे ३६८ हस्तलिखित ग्रंथो का सग्रह है। यह मदिर भट्टारको का केन्द्र रहा था और यहा भट्टारक गादी भी थी, और सभवत इसी कारण यहा ग्रथो का अच्छा सग्रह है। भण्डार में अपभ्रश भाषा की कृति 'करकण्डु चरिउ की' अपूर्ण प्रति है जो सस्कृत टीका सहित है। सग्रह अच्छा है तथा ग्रथो की प्राचीन प्रतिया भी उल्लेखनीय हैं।

ग्रंथ भण्डार दि० जैन मंदिर महावीर स्वामी

यह मन्दिर विद्वानो का केन्द्र रहा है। यहा के ग्रथो का अधिकाश सग्रह हिन्दी भाषा के ग्रथो का है। इसमे पुराण, कथा, पूजा एव स्तोत्र साहित्य का बाहुल्य है। ग्रथो की सख्या गुटको सहित १७२ है। अधिकाश ग्रथ १८-१९ वी शताब्दी के हैं।

ग्रंथ भण्डार दि० जैन मदिर नागदी (नेमिनाथ)

नेमिनाथ के मदिर मे स्थित यह ग्रथ भण्डार नगर का महत्वपूर्ण भण्डार है। यहा पूर्ण ग्रथो की सख्या २२२ है जो सभी अच्छी दशा में है। लेकिन कुछ ग्रथ अपूर्ण अवस्था मे हैं जिनके पत्र इधर उधर हो गये है इस सग्रहालय मे 'माधवानल प्रबन्ध' जो गोकुल के सुत नरसी की हिन्दी कृति है, की सवत् १६५५ की अच्छी प्रति है। श्रेणिक चरित्र (र० काल स० १८२४-दौलत ग्रोसेरी) चतुर्गतिनाटक (डालूराम), आराधनासार (विमलकीर्ति), भागवत पुराण (श्रीधर) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इस सग्रह मे एक गुटके मे बूचराज कवि की हिन्दी रचनाओ का अच्छा सग्रह है।

इस प्रकार बूदी नगर मे हस्तलिखित ग्रथो का महत्वपूर्ण सग्रह हैं।

नैणवा

बूदी प्रात का नैणवा एक प्राचीन नगर है जो बूदी से ३२ मील है और रोड से जुडा हुआ है। यह नगर प्रारम्भ से ही साहित्य का केन्द्र रहा है। उपलब्ध हस्तलिखित ग्रथो मे प्रद्युम्नचरित की सबसे प्राचीन पाण्डुलिपि

है जो सन् १४६१ मे इसी नगर लिखी गई थी। भट्टारक सकलकीर्ति के गुरु भट्टारक पद्मनन्दि का नैणवा मुख्य स्थान था और सकलकीर्ति ने आठ वर्ष यही रह कर उनसे शिक्षा प्राप्त की थी। भट्टारक पद्मनन्दि द्वारा प्रतिष्ठापित सवत् १४७० की जिन प्रतिमायें टोक के बाहर जैन नशिया मे विराजमान हैं। इसी तरह सन् १७१६ मे केशवसिह कवि ने भद्रबाहुचरित की यही बैठ कर रचना की थी लेकिन वर्तमान मे अतीत के महत्व को देखते हुए यहा कोई अच्छा सग्रह नही है। यहा तीन जैन मन्दिर हैं और इन तीनो मे करीब २२० हस्तलिखित ग्र थो का सग्रह है। लेकिन यहा पर प्रतिलिपि किये हुए ग्र थ आज भी बू दी, कोटा, दबलाना, इन्द्रगढ, आमेर, जयपुर, भरतपुर एव कामा के भण्डारो मे उपलब्ध होते हैं। इससे यहा की साहित्यिक गतिविधियो का सहज ही मे पता चल जाता है। पुष्पद त कवि का णायकुमारचरिउ एव सिद्धचक्रकथा की प्राचीन पाण्डुलिपिया जयपुर के ग्र थ भण्डारो मे सुरक्षित है। इसी तरह समाधितन्त्र भाषा-पर्वतधर्मार्थी (सन् १७१६), क्रियाकोश भाषा-किशनसिह (सन् १७५७) पार्श्वपुराण भूधरदास (सवत् १८०६) समयसार नाटक-बनारसीदास (सन् १८४१) आदि कुछ ऐसी पाण्डुलिपिया हैं जिनका लेखन इसी नगर मे हुआ था।

शास्त्र भण्डार दि० जैन बघेरवाल मंदिर

यह यहा का प्राचीन एव प्रसिद्ध मन्दिर है जिसके शास्त्र भण्डार मे १०४ हस्तलिखित ग्र थो का सग्रह हैं। सभी ग्र थ सामान्य विषयो से सम्बन्धित हैं। इसी भण्डार मे एक गुटका भी है जिसमे हिन्दी की कितनी ही अज्ञात रचनाओ का सग्रह है। कुछ रचनाओ के नाम निम्न प्रकार हैं—

सारसीखामणिरास	भट्टारक सकलकीर्ति	१५ वी शताब्दी
नेमिराजमतिगीत	ब्रह्म यशोधर	१६ वी शताब्दी
पञ्चेन्द्रियगीत	जिनसेन	,,
नेमिराजमति वेलि	सिंहदास	,,
वैराग्य गीत	ब्रह्म यशोधर	,,

शास्त्र भण्डार दि० जैन तेरापथी मन्दिर

इस शास्त्र भण्डार मे पुराण, पूजा, कथा एव चरित सम्बन्धी रचनाओ का सग्रह मिलता है। भट्टारक सकलकीर्ति के शिष्य श्री लालचन्द द्वारा निर्मित सम्मेदशिखर पूजा की एक प्रति है जो सवत् १८८२ मे देवपाद नगर मे छन्दोबद्ध की गयी थी। यहा तीन मन्त्र हैं जो कपडे पर लिखे हुए हैं। ऋषिमडल मत्र सवत् १५८५ का लिखा हुआ है। तथा २२×२३ इन्च वाले आकार का है। मत्र पर दी हुई प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्री श्री श्री शुभचन्द्रसूरिभ्यो नम । अथ सवत्सरेस्मिन् श्री नृपविक्रमादित्य गताब्द सवत् १५८५ वर्षे कार्तिक वदी ३ शुभ दिने श्री रिषीमडल यत्र ब्रह्म अज्जूयोग्य प० अहर्दासेन शिष्य प० गजमल्लेन लिखित ग्र थ भवतु। वृहद् सिद्धचक्र यत्र का लेखन काल सवत् १६१६ है और धर्मचक्र यत्र का लेखन काल सवत् १६७४ है।

ग्र थ भण्डार दि० जैन अग्रवाल मन्दिर

इस मन्दिर मे कोई उल्लेखनीय सग्रह नही है। केवल ३७ पाण्डुलिपिया हैं जो पुराण एव कथा से सम्बन्धित है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मदिर दबलाना

बूदी से १० मील पश्चिम की ओर स्थित दवलाना एक छोटा सा गाव है, लेकिन हस्तलिखित ग्र थो के सग्रह की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यहा के भण्डार मे ४२३ हस्तलिखित ग्र थो का सग्रह है। सग्रह से ऐसा पता लगता है कि यह सारा भण्डार किसी भट्टारक अथवा साधु के पास था। जिसने यहा लाकर मदिर मे विराजमान कर दिया। भण्डार मे काव्य, चरित, कथा, राम, व्याकरण, आयुर्वेद एव ज्योतिष विषयक ग्र थो का अच्छा सग्रह है। बूदी, नैणवा, गोठडा, इन्दरगढ, जयपुर, जोधपुर सागवाडा एव सीसवाली मे लिखे हुए ग्र थो की प्रमुखता है। सबसे प्राचीन प्रति 'षडावश्यक बालावबोध' की पाण्डुलिपि है जो सवत् १५२१ मे मालवा मडल की राजधानी उज्जैन मे लिखी गयी थी। सवत् १४९९ मे विरचित मेहउ कवि का आदिनाथ स्तवन, लालदास का इतिहाससार समुच्चय, साधु ज्ञानचन्द द्वारा रचित सिंहासन बत्तीसी, रामयश (केशवदास) रचना काल स० १६८०, आदि ग्र थो के नाम उल्लेखनीय हैं। भण्डार मे सग्रहीत पाण्डुलिपिया भी प्राचीन एव शुद्ध है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ

इन्दरगढ कोटा राज्य का प्राचीन शहर है। यह पश्चिमी रेलवे की बडी लाइन पर सवाईमाधोपुर और कोटा के मध्य में स्थित है। यहा के दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर मे हस्तलिखित ग्र थो का एक सग्रह उपलब्ध है शास्त्र भण्डार मे हस्तलिखित ग्र थो की सख्या २८९ है। इसमे सिद्धान्त, स्तोत्र, आचार शास्त्र, से सम्बधित पाण्डुलिपियो की सख्या सर्वाधिक हैं कुछ ग्र थ ऐसे भी है। जिनका लेखन इस नगर मे हुआ था।

शास्त्र भण्डार दि० जैन अग्रवाल मन्दिर फतेहपुर (शेखावाटी)

फतेहपुर सीकर जिले का एक सुन्दरतम नगर है। चुरु से सीकर जाने वाली रेल्वे लाइन पर यह पश्चिमी रेल्वे का स्टेशन है। जैन साहित्य और कला की दृष्टि से फतेहपुर प्रारम्भ से ही केन्द्र रहा। देहली के भट्टारको का इस नगर से सीधा सम्पर्क रहा और वे यहा की व्यवस्था एव साहित्य सग्रह की ओर विशेष ध्यान देते रहे। यहा का शास्त्र भण्डार इन्ही भट्टारको की देन है। शास्त्र भण्डार मे हस्तलिखित ग्र थो एव गुटको की सख्या २७५ हैं। इनमे गुटको की सख्या ७३ हैं जिनमे कितने ही महत्वपूर्ण कृतिया सग्रहीत है। प०जीवनराम द्वारा लिखा हुआ यहा एक महत्वपूर्ण गुटका है जिसके १२२२ पृष्ठ है अभी तक शास्त्र भण्डारो मे उपलब्ध गुटको मे यह सबसे बडा गुटका हैं इसमे ज्योतिष एवं आयुर्वेद के पाठो का सग्रह हैं। जिनकी एक लाख श्लोक प्रमाण सख्या है। इस गुटके को लिखने मे जीवनराम को २२ वर्ष (सवत् १८३८ से १८६०) लगे थे। इसका लेखन चुरु मे प्रारम्भ करके फतेहपुर मे समाप्त हुआ था। इसी तरह भण्डार मे एक 'णमोकार महात्म्य कथा" की एक पाण्डुलिपि है जिसमे १३"×७½" आकार वाले ७८९ पत्र हैं। यह पाण्डुलिपि सचित्र है जिसमे ७६ चित्र हैं जो जैन पौराणिक पुरुषो के जीवन कथाओ पर तैयार किये गये है। ग्र थ भण्डार मे हस्तलिखित ग्र थ की अधिक सख्या न होते हुये भी कितने ही हिन्दी के ग्र थ प्रथम वार उपलब्ध हुए जिनका परिचय आगे दिया गया है। यहा ग्र थो की लिपि का कार्य भी होता था। त्रिलोकसार भाषा (सवत् १८०३), हरिवश पुराण (सवत् १८२४) महावीर पुराण, समयसार नाटक एवं ज्ञानार्णव आदि की कितनी ही प्रतियो के नाम गिनाये जा सकते हैं। ग्र थ सूची के कार्य मे नगर के प्रसिद्ध समाज सेवी एव साहित्य प्रेमी श्री गिन्नीलाल जी जैन का सहयोग मिला उनके हम आभारी है।

भरतपुर

राजस्थान प्रदेश का भरतपुर एक जिला है। जो पर्याप्त समय तक साहित्यिक केन्द्र रहा था। व्रज भूमि भूमि मे होने के कारण यहा की भाषा भी पूर्णत व्रज प्रभावित है। भरतपुर जिले मे भरतपुर, डीग, कामा, बयाना, वैर, कुम्हेर आदि स्थानो मे हस्तलिखित ग्रथो का अच्छा सग्रह है।

भरतपुर नगर की स्थापना सूरजमल जाट द्वारा की गयी थी। १८ वी शताब्दी की एक कवि श्रुत-सागर ने नगर की स्थापना का निम्न प्रकार वर्णन किया है —

देश काठहड विरजि मैं, बदनस्यघ राजान।
ताके पुत्र है भलो, सूरिजमल गुणधाम।
तेज पुज रवि है भयो लाभ कीर्ति गुणवान।
ताको सुजस है जगत मै, तपै दूसरो भान।
तिनहु नगर जुव साइयो नाम भरतपुर तास।

शास्त्र भण्डार दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर

ग्रथो के सकलन की दृष्टि से इस मन्दिर का शास्त्र भण्डार इस जिले का प्रमुख भण्डार है। सभी ग्रथ कागज पर लिखे हुए हैं। शास्त्र भण्डार की स्थापना कब हुई थी, इसकी निश्चत तिथि का तो कही उल्लेख नही मिलता लेकिन मन्दिर निर्माण के बाद ही जिले के अन्य स्थानो से लाकर यहा ग्रथो का सग्रह किया गया। १६ वी शताब्दी मे ग्रथो का सबसे अधिक सग्रह हुआ। भण्डार मे हस्तलिखित ग्रथो की सख्या ८०१ है जिनमे *सस्कृत एव हिन्दी भाषा के ही अधिक ग्रथ हैं। सबसे प्राचीन पाण्डुलिपि वृहद तपागच्छ गुर्वावली की जो मुनि* सुन्दरसूरि द्वारा निर्मित है तथा जिसका लेखन काल सवत् १४६० है। इसी भण्डार मे सवत् १८६२ की दूसरी पाण्डुलिपि है। इसके अतिरिक्त गगाराम कवि का सभाभूषण, हर्षचन्द का पद सग्रह, विश्वभूषण का जिनदत्त भाषा, जोधराज कासलीवाल का सुखविलास की पाण्डुलिपिया उल्लेखनीय हैं। इसी भण्डार मे भक्तामर स्तोत्र की एक सचित्र पाण्डुलिपि हैं जिसमे ५१ चित्र है। मध्यकाल की शैली पर चित्रित सभी चित्र कला, शैली एव कलम की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। इस पाण्डुलिपि का लेखन काल सवत् १८२६ है। जैन कला की दृष्टि से कलाकारो को इस पर विशद प्रकाश डालना चाहिये।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर फौजूराम

भरतपुर नगर का यह दूसरा जैन मन्दिर है जहा हस्तलिखित ग्रथो का सग्रह है। मन्दिर के निर्माण को अभी अधिक समय नही हुआ इसलिये हस्तलिखित ग्रथो का सग्रह भी करीब १०० वर्ष पुराना है। इस भण्डार मे ६५ हस्तलिखित ग्रथो का सग्रह है। इसी भण्डार मे कुम्हेर के गिरावरसिंह की तत्वार्थसूत्र पर हिन्दी गद्य टीका उल्लेखनीय कृति है। इसकी रचना सवत् १६३५ मे की गयी थी।

शास्त्र भण्डार पंचायती मन्दिर, डीग (नयी)

'डीग' पहिले भरतपुर राज्य की राजधानी थी। आज भी फव्वारो की नगरी के नाम से यह नगर प्रसिद्ध है। पचायती मन्दिर मे हस्तलिखित ग्रथो का छोटा सा सग्रह है जिसमे ८१ पाण्डुलिपिया उपलब्ध होती

हैं। हिन्दी के प्रसिद्ध कवि सेवाराम पाटनी इसी नगर के थे। उनके द्वारा रचित मल्लिनाथचरित की मूल पाण्डुलिपि इसी भण्डार मे सुरक्षित है इस चरित काव्य का रचना काल सवत् १८५० है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन बड़ा पंचायती मन्दिर डीग

इस मन्दिर में पहिले हस्तलिखित ग्र थो का अच्छा सग्रह था। लेकिन मन्दिर के प्रबन्धको की इस ओर उदासीनता के कारण अधिकाश सग्रह सदा के लिये समाप्त हो गया। वर्तमान मे यहा ५६ ग्र थ तो पूर्ण एवं अच्छी स्थिति मे है और शेष अपूर्ण एवं त्रुटित दशा मे सग्रहीत है। भण्डार मे भगवती आराधना भी सबसे प्राचीन पाण्डुलिपि है। जिसका लेखन काल सवत् १५११ वैशाख शुक्ला सप्तमी है। इसकी प्रतिलिपि माडलगढ मे महाराणा कु भकर्ण के शासन काल मे हुई थी। इसके अतिरिक्त राजहंस के षट्दर्शन समुच्चय, अपभ्र श काव्य भविसयत्त चरिउ (श्रीधर), आत्मानुशासन (गुणभद्र) एव सकलकीर्ति के जम्बुस्वामी चरित की भी अच्छी पाण्डुलिपिया हैं।

शा त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर पुरानी डीग

पुरानी डीग का दि० जैन मन्दिर अत्यधिक प्राचीन है और ऐसा मालूम देता है कि इसका निर्माण १४ वी शत ब्दी पूर्वही हो चुका होगा। मन्दिर की प्राचीनता को देखते हुए यहा अच्छा शास्त्र भण्डार होना चाहिए लेकिन नयी डीग एव भरतपुर बनने के पश्चात् यहा से बहुत से ग्र थ इधर उधर चले गये। वर्तमान मे यहा के भण्डार मे हस्तलिखित ग्र थो की सख्या १०१ है लेकिन वे भी अच्छी तरह रखे हुए नही है। भण्डार के अधिकाश ग्र थ हिन्दी भाषा के हैं। नथमल कवि ने जिणगुणविलास (रचना काल स० १८६५) की एक पाण्डुलिपि यहा सवत् १८६६ की लिखी हुई है। मुकुन्ददास कवि के भ्रमरगीत की पाण्डुलिपि भी उल्लेखनीय हैं। कवि चुन्नीलाल की चौबीस तीर्थंकरपूजा की पाण्डुलिपि इस भण्डार मे सर्व प्रथम उपलब्ध हुई है। पूजा का रचना काल सवत् १९१४ है। इसकी रचना करौली मे हुई थी। इसी भण्डार मे खुशालचन्द्र काला की जन्म पत्री की प्रति भी सग्रहीत है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर कामा

राजस्थान के प्राचीन नगरो मे कामा नगर का भी नाम लिया जाता है। पहिले यह भरतपुर राज्य का प्रसिद्ध नगर था लेकिन आजकल तहसील का प्रधान कार्यालय है। उक्त मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे सग्रहीत ग्र थो के आधार पर इतना अवश्य कहा जा सकता है कि यह नगर १७-१८ वी शताब्दी मे साहित्यक गतिविधियो का प्रमुख केन्द्र रहा। हिन्दी के प्रसिद्ध महाकवि दौलतराम कासलीवाल के सुपुत्र जोधराज कासलीवाल यहा आकर रहने लगे थे जिन्होने सवत् १८८४ मे सुखविलास की रचना की थी। इसी तरह इनसे भी पूर्व पचास्तिकाय एव प्रवचनसार की हेमराज के हिन्दी टीका की पाण्डुलिपिया भी इसी भण्डार मे उपलब्ध होती है।

भण्डार मे गुटको सहित ५७८ पाण्डुलिपिया उपलब्ध होती हैं। ये पाण्डुलिपिया सस्कृत, प्राकृत अपभ्र श, हिन्दी, व्रज एव राजस्थानी भाषा से सम्बधित रचनाये हैं। यह भण्डार महत्वपूर्ण एव अज्ञात तथा प्राचीन पाण्डुलिपियो की दृष्टि से राजस्थान के प्रमुख भण्डारो मे से है। कामा नगर और फिर यह शास्त्र भन्डार साहित्यिक गतिविधियो का बडा भारी केन्द्र रहा। आगरा के पश्चात् और सागानेर एव जयपुर के पूर्व कामा मे ही एक अच्छा सग्रहालय था। जहा विद्वानो का समादर था इसलिए भण्डार मे सवत् १४०५ तक की पाण्डुलिपिया मिलती है। यहा की कुछ महत्वपूर्ण पाण्डुलिपिया के नाम निम्न प्रकार है—

१	प्रबोध चिंतामणि	राजशेखर सूरि	सस्कृत	लिपि सवत् १४०५,
२	आत्मानुशासन टीक	प्रभाचन्द्र	,,	१४६१
३	आत्मप्रबोध	कुमार कवि	,,	१५४७
४	धर्मपचविंशति	ब्रह्म जिनदास	अपभ्र श	—
५	पार्श्व पुराण	पद्मकीर्ति	,,	१५७४
६	यशस्तिलक चम्पू	सोमदेव	सस्कृत	१४६०
७	प्रद्युम्न चरित	सधारू कवि	व्रज भाषा	१४११ (रचना काल)

उक्त पाण्डुलिपियो के अतिरिक्त भडार मे और भी अज्ञात, प्राचीन एव अप्रकाशित रचनाए हैं।

शास्त्र भण्डार अग्रवाल पचायती मन्दिर कामा

इस मन्दिर मे ग्र थो की सख्या अधिक नही हैं। पहिले ये सभी ग्र थ खण्डेलवाल पचायती मन्दिर मे ही थे लेकिन करीब ७० वर्ष पूर्व इस मन्दिर मे से कुछ ग्र थ अग्रवाल पचायती मन्दिर मे स्थापित कर दिये गये। यहा ११५ हस्तलिखित ग्र थ हैं। इस भण्डार मे सधारू कवि कृत एक प्रद्युम्न चरित की भी पाण्डुलिपि है। जिसमे उसका रचना काल स० १३११ दिया हुआ है। किन्तु यह प्रति अपूर्ण है। इसी भण्डार मे नवलराम कृत वर्द्धमान पुराण भाषा की पाण्डुलिपि है जो प्रथम बार उपलब्ध हुई है। इसका रचना काल स० १६६१ है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह

टोडारायसिंह का प्राचीन नाम तक्षकगढ था। जैन ग्र थो की प्रशस्तियो, शिलालेखो एव मूर्ति लेखो मे तक्षकगढ का काफी नाम आता है। इसकी स्थापना नागाओ ने की थी तथा १५ वी शताब्दी तक यह प्रदेश उदयपुर के महाराणाओ के अधीन रहा। जैन धर्म एव साहित्य का तक्षकगढ से काफी सम्बन्ध रहा। बिजोलिया के एक लेख मे वर्णन आता है कि टोडानगर मे राजा तक्षक के पूर्वजो ने एक जैन मन्दिर बनाया था। जब से यह नगर सालकी वशी राजपूतो के अधीन हुआ बस उसी समय से जैन साहित्य के विकास मे इन राजाओ का काफी योगदान रहा। महाराजा रामचन्द्र राव के शासनकाल मे यहा बहुत से ग्र थो की प्रतिलिपिया सम्पन्न हुई। इनमे उपसकाध्ययन, णायकुमार चरिउ (स० १६१२) यशोधर चरित्र (सं० १५५५) जम्बूस्वामी चरिउ (स० १६१०) आदि ग्र थो के नाम उल्लेखनीय हैं।

यहा दो मन्दिरो मे हस्तलिखित ग्र थो का सग्रह मिलता है। जिनका परिचय निम्न प्रकार है—

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह

नेमिनाथ स्वामी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे २१६ हस्तलिखित ग्र थो का सग्रह है। इस भण्डार मे सबसे प्राचीन पाण्डुलिपि त्रिलोकसार टीका माधवचन्द्र त्रैवेद्य की है जो स० १५८८ सावण सुदी १४ की लिखी हुई है एक प्रवचनसार की संस्कृत टीका है जो स० १६०५ की है। इनके अतिरिक्त चौबीस तीर्थ करपूजा (देवीदास), आस्रवत्रिभगी टीका (प० सोमदेव), गुणस्थान चौपई (ब्र० जिनदास) रविव्रतकथा (विद्यासागर) आदि ग्र थो की पाण्डुलिपिया भी उल्लेखनीय हैं। भण्डार में ऐसी कितनी ही रचनायें है जिनकी लिपि तक्षकपुर। (टोडारायसिंह) में हुई थी। इससे इस नगर की सास्कृतिक महत्ता का स्वत ही पता चल जाता है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह

इस मन्दिर में छोटा सा ग्रथ भण्डार है जिसमें केवल ८१ पाडुलिपिया हैं जिनमे गुटके भी सम्मिलित हैं। यहाँ विलास सज्ञक रचनाओ का अच्छा सग्र ह है जिनमे धर्म विलास (द्यानतराय) ब्रह्मविलास (भगवतीदास) सभाविलास, बनारसीविलास (बनारसीदास) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं वैसे यहा पर ग्र थो का सामान्य सग्रह है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर राजमहल

राजमहल बनास नदी के किनारे पर टोक जिले का एक प्राचीन कस्बा है। स वत् १६६१ मे जब महाराजा मानसिंह का आमेर पर शासन था तब राजमहल भी उन्ही के अधीन था। इसी सवत् मे राजमहल मे ब्रह्म जिनदास कृत हरिवशपुराण की प्रति का लेखन हुआ था।

इस मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे २२५ हस्तलिखित पाण्डुलिपिया हैं जिनमे ब्रह्म जिनदास कृत करकण्डुरास, मुनि शुभचन्द्र की होली कथा, त्रिलोक पाटनी का इन्द्रिय नाटक आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। भण्डार मे हिन्दी के अधिक ग्र थ है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा

दि० जैन मन्दिर मे स्थित शास्त्र भण्डार नगर के प्रमुख ग्र थ सग्रहालयो में से है। इस भण्डार मे४०५ हस्तलिखित ग्र थो का अच्छा सग्रह है। वैसे तो यहा प्राकृत, सस्कृत, अपभ्र श, राजस्थानी एव हिन्दी सभी भाषाओ के ग्र थो का सग्रह है लेकिन हिन्दी के ग्र थो की अधिकता है। १८वीं शताब्दी मे लिखे गये ग्र थो का यहाँ अधिक सग्रह है इससे यह प्रतीत होता है कि इस शताब्दी मे यहा का साहित्यिक वातावरण अच्छा था। महीपाल चरित (सवत् १८५६), पर्वरत्नावली (सवत् १८५१) समावितन्त्र भाषा (संवत् १८३३) ज्ञानदर्पण दीपचन्द्र (सवत् १८३५) आदि कितनी ही पाण्डुलिपिया यही लिखी गयी थी। भण्डार मे सबसे प्राचीन पाण्डुलिपि आचार्य शुभचन्द्र के ज्ञानार्णव की है जिसका लेखन काल सवत् १५४८ है। पल्यविधानरास (भ० शुभचन्द्र) चन्द्रप्रभस्वामी विवाहलो (भ० नरेन्द्रकीर्ति) चेतावणी, रविव्रत कथा (मुनि सकलकीर्ति), परवादरो परशीलरास (कुमुदचन्द्र) नेमिविवाह पच्चीसी (वेगराज) आदि कुछ हिन्दी रचनायें इस शास्त्र भण्डार की महत्वपूर्ण कृतिया हैं जो भाषा, शैली एव काव्यात्मक दृष्टि से अच्छी रचनायें हैं।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर बयाना

राजस्थान प्रदेश का बयाना नगर प्राचीनतम नगरो मे से है। यहाँ का किला चतुर्थ शताब्दि से पूर्व ही निर्मित हो चुका था। डा० अल्तेकर को यहा गुप्ता कालीन स्वर्ण मुद्राए प्राप्त हुई थी। जैन सस्कृति और साहित्य की दृष्टि से भी यह प्रदेश अत्यधिक समृद्ध रहा था। यहाँ के दि० जैन मन्दिर १० वी शताब्दि के पूर्व के माने जाते हैं इस दृष्टि से यहा के शास्त्र भण्डार भी प्राचीन होने चाहिये थे लेकिन मुसलिम शासको का यह प्रदेश सदैव कोप भाजन रहा इसलिये यहाँ बहुमुल्य ग थ सुरक्षित नही रह सके।

पचायती मन्दिर का शास्त्र भण्डार यद्यपि ग्रन्थ सख्या की दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण नही है लेकिन भण्डार पूर्ण व्यवस्थित है और प्रमुख रूप मे हिन्दी पाण्डुलिपियों का अच्छा सग्रह है जिनकी सख्या १५० है।

इनमे व्रत विधान पूजा (हीरालाल लुहाडिया), चन्द्रप्रभपुराण (जिनेंद्रभूषण) बाहुबलि छन्द (कुमुदचन्द्र) नेमिनाथ का छन्द (हेमचन्द) नेमिराजुलगीत (गुणचन्द्र) उदरगीत (छीहल) के नाम उल्लेखनीय है ।

शास्त्र भण्डार दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना

इस मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे १५१ पाण्डुलिपियो का सग्रह है । और जो प्राय सभी हिन्दी भाषा की है । षोडशकारणाद्यापनपूजा (सुमतिसागर) समोसरन पाठ (लल्लूलाल-रचना स० १८३८) लीलावती भाषा (लालचन्द रचना स० १७३६) अक्षरबावनी (केशव दास रचना सवत् १७३६) हिन्दी पद (खान मुहम्मद) आदि पाण्डुलिपियो के नाम विशेषत उल्लेखनीय है ।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर वैर

बयाना से पूर्व की ओर वैर' नामक एक प्राचीन कस्बा है, जो आजकल तहसील कार्यालय है । यह स्थान चारो ओर परकोटे से परिवेष्टित है । मुगल एव मरहठा शासन मे यह उल्लेखनीय स्थान माना जाता था । यहा एक दि० जैन मन्दिर है जिसका शास्त्र भण्डार पूर्णत. अव्यवस्थित है । कुछ कृतिया महत्वपूर्ण अवश्य हैं इसमे साधु-वदना (आचार्य कु वर जी रचना काल स० १६२४) अध्यात्मक बारहखडी (दौलतराम कासलीवाल) के अतिरिक्त प० टोडरमल, भगवतीदास, रामचन्द्र, खुशालचन्द्र आदि का कृतियो का अच्छा संग्रह है ।

उदयपुर

उदयपुर अपने निर्माण काल से ही राजस्थान की सम्मानित रियासत रही । महाराणा उदयसिंह ने इस नगर की स्थापना सवत् १६२६ मे की थी । भारतीय सस्कृति एव साहित्य को यहा के शासको द्वारा जो विशेष प्रोत्साहन मिला वह विशेषत उल्लेखनीय है । जैन-धर्म और साहित्य के विकास की दृष्टि से भी उदयपुर का विशिष्ट स्थान है । चित्तौड के बाद मे इसे ही सभी दृष्टियो से प्रमुख स्थान मिला । मेवाड के शासको ने भी जैन-धर्म सस्कृति एव साहित्य के प्रचार एव प्रसार मे अत्यधिक योग दिया और उन्ही के आग्रह पर नगर मे मन्दिरो का निर्माण कराया गया । शास्त्र भण्डारो मे हस्तलिखित ग्रन्थो का सग्रह किया गया । इस नगर मे जिन ग्रन्थो की पाण्डुलिपिया की गयी वे आज राजस्थान के कितने ही शास्त्र भण्डारो मे सग्रहीत हैं । महाकवि दौलतराम कासलीवाल ने अपने जीवन की १५ शरद ऋतुए इसी नगर मे व्यतीत की थी । और जीवधर चरित, क्रियाकोश, श्रीपालचरित जैसी रचनायें इसी नगर मे रची थी । कवि ने वसुनन्दि श्रावकाचार एव जीवधर चरित मे यहा का अच्छा उल्लेख किया है । यहा तीन मन्दिरो मे शास्त्र भण्डार स्थापित किये हुए मिलते है । जिनका परिचय निम्न प्रकार है ।

शास्त्र भण्डार दि० जैन अग्रवाल मन्दिर

दि० जैन अग्रवाल मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे हस्तलिखित पाण्डुलिपियो का अच्छा सग्रह हैं जिनकी सख्या ३८८ है । इनमे हिन्दी के ग्रन्थो की सख्या सबसे अधिक है । पूज्यपाद की सर्वार्थसिद्धि की सबसे प्राचीन पाण्डुलिपि है जो सवत् १३७० की है । इसकी प्रतिलिपि योगिनीपुर मे हुई थी । महाकवि दौलतराम कासलीवाल का यह मन्दिर साहित्यिक केन्द्र था । उनके जीवधर चरित की मूल पाण्डुलिपि इसी भण्डार मे सुरक्षित है । इस शास्त्र भण्डार मे वर्धमान कवि के वर्धमानरास की एक महत्वपूर्ण पाण्डुलिपि है । इसके अतिरिक्त

अकलकयतिरास (जयकीर्त्ति) अजितनाथरास, अ त्रिकारास (ब्र० जिनदास) श्रावकाचार (धर्मविनोद) पचकल्याणक पाठ (ज्ञानभूषण) चेतन-मोहराज सवाद (खेम सागर) आदि इस भण्डार की अलकृत प्रतिया हैं ।

शास्त्र भण्डार दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर

इस शास्त्र भण्डार मे १८५ हस्तलिखित ग्रन्थो का सग्रह है जिनमे अधिकाश हिन्दी के ग्रन्थ हैं । इनमे नेमीनाथरास (ब्रह्म जिनदास) परमहस रास (ब्रह्म जिनदास) ब्रह्म विलास (भैया भगवतीदास) वणजारागीत (कुमुदचन्द्र) दानफल रास (ब्र० जिनदास) भविष्यदत्त रास (ब्र० जिनदास) रामरास (माधवदास) आदि के नाम विशेषत उल्लेखनीय है । भण्डार मे भ० सकलकीर्ति की परम्परा के भट्टारको एव ब्रह्मचारियो की अधिक कृतिया हैं ।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर सभवनाथ, उदयपुर

नगर के तीनो शास्त्रो मे इस मन्दिर का शास्त्र भण्डार सबसे प्राचीन, महत्वपूर्ण एव बडा है । भण्डार मे सग्रहीत सैंकडो पाण्डुलिपिया अत्यधिक प्राचीन है एव उनकी प्रशस्तिया नवीन तथ्यो का उद्घाटन करने वाली है । तथा साहित्यिक दृष्टि से इतिहास को नयी दिशा देने वाली है । वैसे यहा के हस्तलिखित ग्रन्थो की सख्या ५२४ है लेकिन अधिकाश पाण्डुलिपिया १५ वी, १६ वी, १७ वी, एव १८ वीं शताब्दि की हैं । भ० ज्ञानभूषण, ब्र० जिनदास के ग्रन्थो की प्रतियो का उत्तम सग्रह है । भट्टारक सकलकीर्ति रास एक ऐतिहासिक कृति है जिसमे भ० सकलकीर्ति एव भुवनकीर्ति का जीवन वृत्त दिया हुआ है । आचार्य जयकीर्ति द्वारा रचित रचना "सीताशीलपताकागुणवेलि" की एक सुन्दर प्रति है जिसका रचना काल स० १६२४ है । इसी तरह ब्र० वस्तुपाल का रोहिणीव्रत (रचना सवत् १६५४) हरिवशपुराण-अपभ्र श (यश कीर्ति) धर्मशर्माभ्युदय (महाकवि हरिचन्द्र) सवत् १५१४ णमोकाररास (ब्र० जिनदास) जसहरचरिउ टीका प्रभाचन्द्र (स० १५७४) आदि पाण्डुलिपियो के नाम उल्लेखनीय हैं । इसी शास्त्र भण्डार मे एक ऐसा गुटका भी है जिसमे ब्रह्म जिनदाय की रचनाओ का प्रमुख सग्रह मिलता है ।

शास्त्र भण्डार दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा

बसवा जयपुर प्रदेश का एक प्राचीन नगर हैं । इसमे हिन्दी के कितने ही विद्वानो ने जन्म लिया और अपनी कृतियो से हिन्दी भाषा के विकास मे महत्वपूर्ण योगदान दिया । इन विद्वानो मे महाकवि प० दौलतराम कासलीवाल का नाम प्रमुख है । पडित जी ने २० से भी अधिक ग्रथो की रचना करके इस क्षेत्र मे अपना एक नया कीर्तिमान स्थापित किया । सेठ अमरचन्द बिलाला भी यही के रहने वाले थे । यहा कितनी ही हस्तलिखित ग्रथो की प्रतिलिपि हुई थी जो राजस्थान के विभिन्न भण्डारो मे एवं विशेषत. जयपुर के भण्डारो मे सग्रहीत हैं ।

तेरहपथी मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे यद्यपि ग्रथो का सग्रह १०० से अधिक नही है किन्तु इस लघु सग्रह मे भी कितनी ही पाण्डुलिपिया उल्लेखनीय हैं । इनमे पार्श्वनाथस्तुति (पासकवि) राजनीति सवैय्या (देवीदास) अध्यात्म बारहखडी (दौलतराम) आदि रचनायें उल्लेनीय हैं ।

शास्त्र भण्डार दि० जैन पचायती मदिर बसवा

इसी तरह यहा का पचायती मदिर पुराना मदिर है जिसमे १२ वी शताब्दी की एक विशाल जिन प्रतिमा है। यहा कल्पसूत्र की दो पाण्डुलिपिया है जो स्वर्णाक्षरी हैं तथा सार्थक है। इनमे एक मे ३६ चित्र तथा दूसरे मे ४२ चित्र हैं। दोनो ही प्रतिया सवत् १५३६ एव १५२८ की लिखी हुई हैं। यहा पद्मनन्दि महाकाव्य की एक सटीक प्रति है जिसके टीकाकार प्रहलाद हैं। इस ग्रथ की प्रतिलिपि सवत् १७६८ मे बसवा मे ही हुई थी। महाकवि श्रीधर की अपभ्रंश कृति भविसयत्त चरिउ की सवत् १४६२ की पाण्डुलिपि एव समयसार की तात्पर्यवृत्ति की संवत् १४४० की पाण्डुलिपि उल्लेखनीय है। प्राचीन काल मे यह भण्डार और महत्वपूर्ण रहा होगा ऐसी पूर्ण सभावना है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर भादवा

भादवा फुलेरा तहसील का एक छोटा सा ग्राम है। पश्चिमी रेल्वे की रिवाडी फुलेरा ब्राच लाइन पर भैसलाना स्टेशन है। जहा से यह ग्राम तीन मील दूरी पर स्थित है। जैन दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान स्व० प० चैनसुखदास न्यायतीर्थ का जन्म यही हुआ था। यहा के दि० जैन मन्दिर मे एक शास्त्र है जिसमे १५० से अधिक हस्तलिखित ग्रथो का सग्रह है।

शास्त्र भण्डार मे हिन्दी कृतियो की अच्छी सख्या है। इनमे द्यानतराय का धर्म विलास, भैय्या भगवतीदास का 'ब्रह्म विलास' तथा धर्मदास का 'श्रावकाचार' के नाम विशेपत उल्लेखनीय हैं। गुटको मे भी छोटी छोटी हिन्दी कृतियो का अच्छा सग्रह है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर डूगरपुर

डूगरपुर नगर प्रारम्भ से ही जैन साहित्य एव सस्कृति का केन्द्र रहा। १५ वी शताब्दी मे जब से भट्टारक सकलकीर्ति ने यहा अपनी गादी की स्थापना की, उसी समय से यह नगर २–३ शताब्दियो तक भट्टारको एव समारोहो का केन्द्र रहा। संव। १४८२ में यहा एक भव्य समारोह मे सकलकीर्ति को भट्टारक के अत्यन्त सम्माननीय पद की दीक्षा दी गयी।

> चऊदय व्यासीय सवति कुल दीपक नरपाल सघपति।
> डूगरपुर दीक्षा महोछव तीणि कीया ए।
> श्री सकलकीर्ति सह गुरि सुकरि दीधी दीक्षा आणदभरि।
> जय जय कार सयलि सचराचरुए गणधार॥

भ० सकलकीर्ति के पश्चात् यहा भुवनकीर्ति, ज्ञानभूषण, विजयकीर्ति एव शुभचन्द जैसे महान् व्यक्तित्व के धनी भट्टारको का यहा सम्मेलन रहा और इस प्रकार २०० वर्षो तक यह नगर जैन समाज की गतिविधियो का केन्द्र रहा। इसलिए नगरके महत्व को देखते हुए वर्तमान मे जो यहा शास्त्र भण्डार है वह उतना महत्वपूर्ण नही है। यहा का शास्त्र भण्डार दि० जैन कोटडिया मन्दिर मे स्थापित किया हुआ है जिसमे हस्तलिखित ग्रथो की सख्या ५५३ है। जिनमे चन्दनमलयगिरि कथा, आदित्यवार कथा, एव राग रागनियो की सचित्र पाण्डुलिपियो है। इसी भण्डार मे ब्र० जिनदास कृत रामरास की पाण्डुलिपि है जो अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इसके

अतिरिक्त ब्र० जिनदास की भी रासक कृतियो का यहा अच्छा सग्रह है। वेणीदास का सुकौशलरास, यशोधर चरित (परिहानन्द) सम्मेदशिखर पूजा (रामपाल) जिनदत्तरास (रत्नभूषणसूरि) रामायण छप्पय (जयसागर) आदि और भी पाण्डुलिपियो के नाम उल्लेखनीय हैं। यहा भट्टारकों द्वारा रचित रचनाओ का अच्छा सग्रह है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर मालपुरा

मालपुरा अपने क्षेत्र का प्राचीन नगर रहा था। तत्कालीन साहित्य एव पुरातत्व को देखने से मालूम होता है कि टोडारायसिंह (तक्षकगढ) एव चाटसू (चम्पावती) के समान ही मालपुरा भी साहित्यिक एव सास्कृतिक गतिविधियो का अच्छा केन्द्र रहा। जयपुर के पाटोदी के मदिर के शास्त्र भण्डार मे एक गुटका सवत् १६१६ का है जो यही लिखा गया था। मालपुरा का दूसरा नाम द्रव्यपुर भी था। यहा सभी जैन मन्दिर विशाल ही नही किन्तु प्राचीन एव कला पूर्ण भी हैं तथा दर्शनीय हैं। ये मन्दिर नगर के प्राचीन वैभव की ओर सकेत करते हैं। यहा की दादावाडी ओसवाल समाज का तीर्थस्थान के रूप मे प्रसिद्ध है।

यहा तीन मन्दिरो मे मुख्य रूप से शास्त्र भण्डार है। इनके नाम है चौधरियो का मन्दिर, आदिनाथ स्वामी का मन्दिर तथा तेरापथी मन्दिर। यद्यपि इन मन्दिरो मे ग्र थो की सख्या अधिक नही है किन्तु कुछ पाण्डुलिपिया अवश्य उल्लेखनीय है। इनमे ब्रह्म कपूरचन्द का पार्श्वनाथरास तथा हर्षकीर्ति के पद हैं।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर करौली

करौली राजस्थान की एक रियासत थी। आजकल यह सवाईमाधोपुर जिले का उपजिला है। १८ वी १६ वी शताब्दी मे यहा अच्छी साहित्यिक गतिविधिया रही। नथमल विलाला, विनोदीलाल, लालचन्द आदि कवियो का यह नगर केन्द्र रहा था। यहा दो मन्दिर है और दोनो मे ही शास्त्रो का सग्रह है। इन मन्दिरो के नाम हैं दि० जैन पचायती मन्दिर एव दि० जैन सोगाणी मन्दिर। इन दोनो ग्र थ भण्डारो में २७५ हस्तलिखित पाण्डुलिपियो का सग्रह है। अधिकाश हिन्दी की पाण्डुलिपिया हैं। अपभ्र श भाषा की वराग चरित्र की पाण्डु-लिपि का भी यहा सग्रह है। सवत् १८४८ मे समोसरनमगल चौबीसी पाठ की रचना करौली मे हुई थी। इसकी छन्द सख्या ४०५ है। यह संभवत नथमल विलाला की कृति है। ग्र थ भण्डार पूर्णत व्यवस्थित एव उत्तम स्थिति मे है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन बीस पथी मदिर दौसा

दौसा ढू ढाहड प्रदेश का प्राचीन नगर रहा है। यहा पहिले मीणा जाति का शासन था और उसके पश्चात् यह कछवाहा राजपूतो की राजधानी रहा। इसका प्राचीन नाम देवगिरि था। यहा दो जैन मन्दिर है और दोनो मे ही हस्तलिखित ग्र थो का सकलन है।

इस मन्दिर के प्रमुख वेदी के पिछले भाग मे अ कित लेखानुसार इस मन्दिर का निर्माण सवत् १७०१ मे हुआ था। यहा के शास्त्र भण्डार मे हस्तलिखित ग्र थो की सख्या १७७ है जिनमे गुटके भी सम्मिलित हैं। अधिकाश ग्र थ हिन्दी भाषा के हैं जिनमे परमहस चौपई (ब्र० रायमल्ल) श्रावकाचार रास (जिणदास) यशोधर चरित्र (सस्कृत—पूर्णदेव) सम्यकत्वकौमुदी भाषा (मुनि दयानन्द) रामयश रमायन (केशराज) आदि ग्र थो के नाम विशेषत उल्लेखनीय हैं।

शास्त्र भण्डार दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा

इस मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे हस्तलिखित ग्र थो की सख्या १५० है लेकिन सग्रह की दृष्टि से भण्डार की सभी पाण्डुलिपिया महत्वपूर्ण है। अधिकाश ग्रथ अपभ्रश एव हिन्दी के है। अपभ्र श ग्र थो मे जिणयत्त चरिउ (लाखू) सुकुमाल चरिउ (श्रीधर) वड्ढमाणकहा (जयमित्तहल) भविसयत्तकहा (धनपाल) महापुराण (पुष्पदत) के नाम उल्लेखनीय हैं। हिन्दी भाषा के ग्र थो मे चौदहगुणस्थान चर्चा (अखयराज श्रीमाल) विल्हण चौपई (सारग) प्रियमे लक चौपई (समयसुन्दर, सिंहासन वत्तीसी (हीर कलश) की महत्वपूर्ण पाण्डुलिपियाँ है। इसी भण्डार मे तत्वार्थसूत्र की एक सस्कृत टीका सवत् १५७७ की पाण्डुलिपि भी उपलब्ध है।

शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर

जयपुर के अधिकाश शास्त्र भण्डारो की सूची इससे पूर्व चार भागो मे प्रकाशित हो चुकी है लेकिन अब भी कुछ शास्त्र भण्डार वच गये हैं। दि० जैन मन्दिर लश्कर नगर का प्रसिद्ध एव विशाल मन्दिर है। यहा का शास्त्र भण्डार भी अच्छा है तथा सुव्यवस्थित है। पाण्डुलिपियो की सख्या ८२८ है। सग्रह अत्यधिक महत्व पूर्ण है। यह मन्दिर वर्षों तक साहित्यिक गतिविधियो का केन्द्र रहा है। वख्तराम साह ने अपने वुद्धिविलास एव मिथ्यात्व खडन की रचना इसी मन्दिर मे वैठ कर की थी। केशरीसिह ने भी वर्द्धमान पुराण (सवत् १८२५) की भाषा टीका इसी मन्दिर मे पूर्ण की थी। यह मदिर वीसपथ आम्नाय वालो का आश्रय दाता था। यहा सस्कृत ग्र थो का भी अच्छा सग्रह उपलब्ध होता है। प्रमाणनयतत्वालोकालकार टीका (रत्नप्रभाचार्य) आत्मप्रवोध (कुमार कवि) आप्तपरीक्षा (विद्यानन्दि) रत्नकरण्डश्रावकाचार टीका (प्रभाचन्द्र) शातिपुराण (प० अशग) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। भट्टारक ज्ञानभूषण के आदीश्वरफाग की सवत् १५८७ की एक सुन्दर प्रति यहा के सग्रह मे है।

विषय विभाजन

प्रस्तुत ग्रन्थ सूची मे हस्तलिखित ग्रन्थो को २४ विषयो मे विभाजित किया गया है। धर्म, आचार शास्त्र, सिद्धान्त एव स्तोत्र तथा पूजा विषयो के अतिरिक्त पुराण, काव्य, चरित, कथा, व्याकरण, कोश, ज्योतिष, आयुर्वेद, नीति एव सुभाषित विषयो के आधार पर ग्रन्थो की पाण्डुलिपियो का परिचय दिया गया है। इस वार सगीत रास, फागु, वलि एव विलास जैसे पूर्णत साहित्यिक विषयो से सम्वन्धित ग्रन्थो का विशेष विवरण मिलेगा। जैन भण्डारो मे इन विषयो के सार्वजनिक उपयोग के ग्रन्थो की उपलब्धि से इन भण्डारो की सहज उपादेयता सिद्ध होती है। साहित्य की ऐसी एक भी विधा नही है जिस पर इन भण्डारो के ग्रन्थ नही मिलते हो इसलिये शोधार्थियो के लिये तो ये शास्त्र भण्डार साक्षात सरस्वती के वरदान के समान है। चाहे कोई विषय हो अथवा साहित्य की कोई विधा, ग्रन्थ भण्डारो मे उन पर हस्तलिखित ग्रन्थ अवश्य मिलेगे। रास, फागु, वेलि, गीत, विलासात्मक कृतियो के अतिरिक्त चौढालया, अष्टक, वारहमासा, द्वादशा, पच्चीसी, छत्तीसी, शतक, सतसई, आदि पचासो सख्यावाचक काव्यो का अपरिमित साहित्य इन शास्त्र भण्डारो मे उपलब्ध होते हैं। यही नही कुछ ऐसे काव्यात्मक विषय हैं जिन पर अन्यत्र इतने विशाल रूप मे साहित्य मिलना कठिन है। इनमे धमाल एव सवादात्मक प्रमुख हैं। जैन कवियो ने अपने काव्यो की लोक प्रियता वढाने के लिये उनको नये नये नाम दिये। यह सव उनकी सूझ वूझ का ही परिणाम है।

सैकडो ऐसी कृतिया हैं जो अभी तक प्रकाश मे नही आ सकी हैं और जो कुछ कृतिया प्रकाश मे आयी है उनकी भी प्राचीनतम पाण्डुलिपि का विवरण हमे ग्रन्थ सूची के इस भाग मे मिलेगा। किसी भी ग्रन्थ की एक से अधिक पाण्डुलिपि मिलना नि सन्देह ही उसकी लोकप्रियता का द्योतक है। क्योकि उस युग मे ग्रन्थो का लिखवाना, शास्त्र भण्डारो मे विराजमान करना एव उन्हे जन जन को पढने के लिये देना जैनाचार्यों की एक विशेषता रही थी। ये ग्रन्थ भण्डार हमारी सतत साधना के उजज्वल पक्ष हैं।

महत्वपूर्ण साहित्य की उपलब्धि

प्रस्तुत ग्रन्थ सूची मे सैकडो ऐसी कृतिया आयी हैं जिनका हमे प्रथम वार परिचय प्राप्त हो रहा है। ये कृतिया मुख्यत. सस्कृत, हिन्दी तथा राजस्थानी भाषा की हैं। इनमे भी सबसे अधिक कृतिया हिन्दी की हैं। वास्तव मे जैन कवियो ने हिन्दी के विकास मे जो योगदान दिया उसका अभी कुछ भी मूल्याकन नही हो सका है। अकेले ब्रह्म जिनदास की ६० से भी अधिक रचनाओ का विवरण इस सूची मे मिलेगा। इसी तरह और भी कितने ही कवि हैं जिनकी वीस से अधिक रचनाऐं उपलव्ध होती हैं लेकिन अभी तक उनका विशद परिचय हम नही जान सके। यहा हम उन सभी कृतियों का सक्षिप्त रूप से परिचय उपस्थित कर रहे हैं जो हमारी दृष्टि मे मे नयी अवया अज्ञात रचनाये हैं। हो सकता है उनमे से कुछ कृतियों का परिचय विद्वानो को मालूम हो। यहा इन कृतियो का परिचय मुख्यत विषयानुसार दिया जा रहा है।

१ कर्मविपाक सूत्र चौपई (८१)

प्रस्तुत कृति किस कवि द्वारा लिखी गयी थी इसके वारे मे रचना मे कोई उल्लेख नही मिलता। लेकिन कर्म सिद्धात पर यह एक अच्छी कृति है जिसमे २४११ पद्यो मे विषय का वर्णन किया गया है। चौपई की भाषा हिन्दी है जिस पर गुजराती का प्रभाव है। इसकी एकमात्र पाण्डुलिपि अजमेर के भट्टारकीय शास्त्र भण्डार मे सग्रहीत हैं।

२ कर्मविपाक रास (८२

कर्म सिद्धान्त पर आधारित रास शैली मे निबद्ध यह दूसरी रचना है जिसकी दो पण्डुलिपिया राजमहल (टोक) के शास्त्र भण्डार मे उपलव्ध होती हैं। रचना काफी वडी है तथा इसका रचना काल सवत् १८२४ है।

३ चौदह गुण स्थान वचनिका (३३२)

अखयराज श्रीमाल १८ वीं शताब्दि के प्रमुख हिन्दी गद्य लेखक थे। 'चौदह गुण स्थान वचनिका' की कितनी ही पाण्डुलिपिया मिलती हैं लेकिन उनका आकार अलग अलग है। दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा मे इसकी एक पण्डुलिपि है जिसमे ३६९ पत्र हैं। इसमे गोम्मटसार, त्रिलोकसार एव लब्धिसार के आधार पर गुणस्थानो सहित अन्य सिद्धान्तो पर चर्चा की गयी है। वचनिका की भाषा राजस्थानी है। अखयराज ने रचना के अन्त मे निम्न प्रकार दोहा लिख कर उसकी समाप्ति की है।

चौदह गुणस्थान कथन, भाषा सुनि सुख होय ।
अखयराज श्रीमाल ने, करी जथामति जोय ।।

४ चौवीस गुणस्थान चर्चा (३४१)

दादूपथ के साधु गोविन्द दास को इस कृति की उपलब्धि टोडारायसिंह के दि० जैन नेमिनाथ मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे हुई है। गोविन्द दास नासरदा मे रहते थे और उसी नगर मे सवत १८८१ फागुण सुदी १० के दिन इसे समाप्त की गयी थी। रचना अधिक बडी नही है लेकिन कवि ने लिखा है कि सस्कृत और गाथा (प्राकृत) को समझाना कठिन है इसलिये उसने हिन्दी मे रचना की है। प्रारम्भ मे उसने पच परमेष्टि को नमस्कार किया है।

५ तत्वार्थ सूत्र भाषा (५३०)

तत्वार्थ सूत्र जैनधर्म का सबसे श्रद्धास्पद ग्रन्थ है। सस्कृत एव हिन्दी भाषा मे इस पर पचासो टीकायें उपलब्ध होती हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ सूची मे २०० से अधिक पाण्डुलिपिया आयी है जो विभिन्न विद्वानो की टीकाओ के रूप मे है।

प्रस्तुत कृति साहिबराम पाटनी की है जो बूदी के रहने वाले थे तथा जिन्होने तत्वार्थ सूत्र पर विस्तृत व्याख्या सवत १८१८ मे लिखी थी। बयाना के शास्त्र भाण्डार से जो पाण्डुलिपि उपलब्ध हुई है वह भी उसी समय की है जिस वष पाटनी द्वारा मूल कृति लिखी गयी थी। कवि ने अपने पूववर्ती विद्वानो की टीकाओ का अध्ययन करने के पश्चात् इसे लिखा था।

६ त्रिभगी सुबोधिनी टीका (६२३)

त्रिभगीसार पर यह पडित आशाधर की सस्कृत टीका है जिसकी दो प्रतिया जयपुर के दि० जैन मन्दिर, लश्कर के शास्त्र भण्डार मे सग्रहीत है। नाथूराम प्रेमी ने आशाधर के जिन १९ ग्रन्थो का उल्लेख किया है उसमे इस रचना का नाम नही है। टीका की जो दो पाण्डुलिपिया मिली है उनमे एक सवत् १५८१ की लिखी हुई है तथा दूसरी प्रसिद्ध हिन्दी विद्वान् जोधराज गोदीका की स्वय की पाण्डुलिपि है जिसे उन्होने मालपुरा मे स्थित किसी श्वेताम्बर बन्धु से ली थी।

धर्म एवं आचार शास्त्र

७ क्रियाकोश भाषा (६९६)

यह महाकवि दौलतराम कासलीवाल की रचना है जिसे उन्होने सवत १७९५ मे उदयपुर नगर मे लिखा था। प्रस्तुत पाण्डुलिपि स्वय महाकवि की मूल प्रति है जो इतिहास एव साहित्य की अमूल्य धरोहर है। उस समय कवि उदयपुर नगर मे जयपुर महाराजा की ओर से वकील की पद पर नियुक्त थे।

८ चतुर चितारणी (१०५८)

प्रस्तुत लघु कृति महाकवि दौलतराम की कृति है जिसकी एक मात्र पाण्डुलिपि उदयपुर के दि० जैन अग्रवाल मन्दिर मे उपलब्ध हुई है। महाकवि का यही मन्दिर काव्य साधना का केन्द्र था। रचना का दूसरा नाम भवजलतारिणी भी दिया हुआ है। यह कवि की सबोधनात्मक कृति है।

९ ब्रह्म बावनी (१४५७)

ब्रह्म बावनी एक आध्यात्मिक कृति है। इसके कवि निहालचन्द है जो सभवत बगाल मे किसी कार्यवश गये थे और वही मकसूदाबाद मे उन्होने इसकी रचना की थी। वैसे कवि कानपुर के पास की छावनी मे रहते थे इनकी एक और कृति नयचक्रभाषा प्रस्तुत सूची के २३३४ सख्या पर आयी है जिसमे कवि ने अपना सक्षिप्त परिचय दिया है। नयचक्रभाषा सवत् १८६७ की कृति है इसलिये ब्रह्म बावनी इसके पूर्व की रचना होनी चाहिये क्योकि उन्होने उसे धैर्य के साथ बैठ कर लिखने का उल्लेख किया है। बावनी एक लघुकृति है लेकिन आध्यात्मिक रस मे ओत प्रोत है।

१० मुक्ति स्वयंवर (१५३९)

मुक्ति स्वयवर एक रूपक काव्य है जिसमे मोक्ष रूपी लक्ष्मी को प्राप्त करने के लिये स्वयवर रचे जाने का रूपक बाधा गया है। यह रचना काफी बडी है तथा ३१८ पृष्ठो मे समाप्त होती है। रूपककार वेणीचन्द कवि है जिन्होने इसे लश्कर मे प्रारम्भ किया था और जिसकी समाप्ति इन्दौर नगर मे हुई थी। वैसे कवि ने अपने को फलटन का निवासी लिखा है और मलूकचन्द का पुत्र बतलाया है। रूपक काव्य का रचना काल सवत् १९३४ है। इस प्रकार कवि ने हिन्दी जैन रूपक काव्यो की परम्परा मे अपनी एक रचना और जोड कर उसके विकास मे योग दिया है।

११ वसुनन्दि श्रावकाचार भाषा (१६६४)

वसुनन्दि श्रावकाचार पर प्रस्तुत भाषा वचनिका ऋषभदास कृत है जो झालरापाटन (राजस्थान) के निवासी थे। कवि हूमड जाति के श्रावक थे। इनके पिता का नाम नाभिदास था। इस ग्रन्थ की रचना करने मे आमेर के भट्टारक देवेन्द्र कीर्त्ति की प्रेरणा का कवि ने उल्लेख किया है। भाषा टीका विस्तृत है जो ३४७ पृष्ठो मे पूर्ण होती है। इसका रचनाकल सवत १९०७ है जिसका उल्लेख निम्न प्रकार हुआ है—

> ऋषि पूरण नव एक पुनि, माघ पूनि शुभ श्वेत।
> जया प्रथा प्रथम कुजवार, मम मगल होय निकेत॥

कवि ने झालरापाटन स्थित शातिनाथ स्वामी तथा पार्श्वनाथ एव ऋषभदेव के मन्दिर का भी उल्लेख किया है।

१२ श्रावकाचार रास (१७०२)

पदमा कवि ने श्रावकाचार रास की रचना कब की थी उसने इसका कोई उल्लेख नही किया है। इसमे पद्यात्मक रूप से श्रावक धर्म का वर्णन किया गया है। रास भाषा, शैली एव विषय वर्णन की दृष्टि से उत्तम कृति है। इसकी एक अपूर्ण प्रति दि० जैन मन्दिर कोटा के शास्त्र भण्डार में सग्रहीत है।

१३ सुख विलास (१७९१)

जोधराज कासलीवाल हिन्दी के प्रसिद्ध महाकवि दौलतराम कासलीवाल के सुपुत्र थे। अपने पिता के सामन ही जोधराज भी हिन्दी के अच्छे कवि थे। सुख विलास मे कवि की रचनाओ का संकलन है। उनका यह

काव्य सवत् १८८४ मे समाप्त हुआ था। जब कवि की अन्तिम अवस्था थी। दौलतरामजी के मरने के पश्चात् जोधराज किसी समय कामा नगर से चले गये होगे। कवि ने कामा नगर के वर्णन के साथ ही वहा के जैन मन्दिरो का भी उल्लेख किया है। कामा उस समय राजस्थान का अच्छा व्यापारिक केन्द्र था इसलिए कितने ही विद्वान भी वहा जाकर रहने लगे थे। सुख विलास की तीनो ही प्रतिया भरतपुर के पचायती मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे सग्रहीत हैं।

सुख विलास गद्य पद्य दोनो मे ही निवद्ध है। कवि ने इसे जीवन को सुखी करने वाले की सज्ञा दी है।

सुख विलास इह नाम है सब जीवन सुखकार।
या प्रसाद हम हू लहै निज आतम सुखकार ॥

अध्यात्म चिंतन एवं योग

१४ गुण विलास (१६५८)

विलास सज्ञक रचनाओ मे नथमल विलाला कृत गुण विलास का नाम उल्लेखनीय है। गुण विलास के अतिरिक्त इनकी 'वीर विलास' सज्ञक एक कृति और है जो एक गुटके मे (पृष्ठ सख्या ६६२) सग्रहीत है। गुण विलास मे कवि को लघु रचनाओ का सग्रह है। यह सकलन सवत् १८२२ मे समाप्त हुआ था। कवि की कुछ प्रमुख रचनाओ मे जीवन्धर चरित्र, नागकुमार चरित्र, सिद्धान्तसार दीपक आदि के नाम उल्लेखनीय है। वैसे कवि भरतपुर मे अर्थोपार्जन के लिए आकर रहने लगे थे और सघ के साथ श्रीमहावीरजी की यात्रा पर गये थे।

१४ समयसार टीका (२२८७)

भट्टारक शुभचन्द्र १६-१७ वी शताब्दी के महान् विद्वान थे। सस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, गुजराती भाषा पर उनका पूर्ण अधिकार था। अब तक शुभचन्द्र की जितनी कृतिया मिली है उनमे समयसार टीका का नाम नही लिया जाता था। इसलिए प्रस्तुत टीका की उपलब्धि प्रथम वार हुई है। टीका विस्तृत है और कवि ने इसका नाम अध्यात्मतरगिणी दिया है। कवि ने टीका के अन्त मे विस्तृत प्रशस्ति दी है जिसके अनुसार इसका रचना काल सवत् १५७३ है। इस टीका की एक मात्र प्रति शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर कामा मे सग्रहीत है। इसका प्रकाशन होना आवश्यक है।

१५ षटपाहुड भाषा (२२५६)

षट्पाहुड पर प्रस्तुत टीका प० देवीदास छावडा कृत है। जिसे इन्होने सवत् १८०१ सावण सुदी १२ के दिन समाप्त की थी। देवीसिंह प्राकृत, सस्कृत एव हिन्दी के अच्छे विद्वान थे तथा भाषा टीकाए लिखने मे उन्हें विशेष रुचि थी। षट्पाहुड पर उनकी यह टीका हिन्दी पद्य मे हैं। जिसमे कवि ने आचार्य कुन्दकुन्द के भावो को ज्यो का त्यो भरने का प्रयास किया है। भाषा, भावशैली की दृष्टि से यह टीका अत्यधिक महत्व पूर्ण है।

१६ ज्ञानार्णव गद्य टीका

आचार्य शुभचन्द्र के ज्ञानार्णव पर सस्कृत और हिन्दी की कितनी ही क्रियाए उपलब्ध होती हैं। इनमे ज्ञानचन्द द्वारा रचित हिन्दी गद्य टीका उल्लेखनीय है। टीका का रचना काल स० १८६० माघ सुदी २ है। टीका की भाषा पर राजस्थानी का स्पष्ट प्रभाव है। इसकी एक प्रति दि० जैन मन्दिर कोटडियान डूगरपुर में संगृहीत है।

१७ चेतावणी ग्रथ (२००२)

यह कविवर रामचरण की कृति है जो राजस्थानी भाषा मे निबद्ध है। कवि ने इसमे प्रत्येक व्यक्ति को सजग रहने की चेतावनी दी है। कृति का उद्देश्य सोते हुए प्राणियो को जगाने जा रहा है। इसमे २१ पद्य हैं जिसमे कवि ने स्पष्ट शब्दो मे विषय का विवेचन किया है। भाषा भाव एव शैली की दृष्टि से रचना उत्तम है। इसकी एक मात्र प्रति दि० जैन मन्दिर कोटा के शास्त्र भण्डार मे सग्रहीत है।

१८ परमार्थशतक (२०६६)

परमार्थ शतक भैय्या भगवतीदास की है जो प्रथम बार उपलब्ध हुई है। रचना पूर्णत. आध्यात्मिक है जिसकी एक मात्र पाण्डुलिपि पचायती मन्दिर भरतपुर मे सग्रहीत है।

१९ समयसार वृत्ति (२३०५)

समयसार पर प० प्रभाचन्द्र कृत सस्कृत टीका की एक मात्र पाण्डुलिपि भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर के शास्त्र भण्डार मे उपलब्ध हुई है। प० प्रभाचन्द्र ने कितने ही ग्रथो पर सस्कृत टीकायें लिखकर अपनी विद्वत्ता का प्रदर्शन ही नहीं किया किन्तु स्वाध्याय प्रेमियो के लिये भी कठिन ग्रथो के अर्थ को सरल बना दिया। श्री नाथूराम प्रेमी ने समयसार वृत्ति का "जैन साहित्य और इतिहास" मे उल्लेख अवश्य किया है, लेकिन उन्हे भी इसकी पाण्डुलिपि उपलब्ध नही हो सकी थी। प्रस्तुत प्रति संवत् १६०२ मगसिर सुदी ८ की लिपिबद्ध की हुई है। वृत्ति प्रकाशन योग्य है।

२० समयसार टीका (२३०९)

भ० देवेन्द्रकीर्ति आमेर गादी भट्टारक थे। वे भट्टारक के साथ २ साहित्य प्रेमी भी थे। आमेर शास्त्र भण्डार की स्थापना एव उनके विकास मे भ० देवेन्द्रकीर्ति का प्रमुख हाथ रहा था। समयसार पर उनकी यह टीका यद्यपि अधिक बडी नही है। किन्तु मौलिक तथा सार गर्भित है। इस टीका से पता लगता है कि समयसार जैसे आध्यात्मिक ग्रथ का भी इस युग मे कितना प्रचार था। इसकी एक मात्र पाण्डुलिपि शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी मे सग्रहीत है। इसका टीका काल सवत् १७८८ भादवा सुदी १४ है।

२१ सामायिक पाठ भाषा (२५२१)

श्यामराम कृत सामायिक पाठ भाषा की पाण्डुलिपि प्रथम बार उपलब्ध हुई है। इसका रचनाकाल स० १७४६ है। कृति की पाण्डुलिपि दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर मे सग्रहीत है। रचना अच्छी है।

पुराण साहित्य

२२ पद्मचरित टिप्पण (२८७१)

रविषेणाचार्य कृत पद्मचरित पर श्रीचन्द मुनि द्वारा लिखा हुआ यह टिप्पण है। टिप्पण सक्षिप्त है और कुछ प्रमुख एव कठिन शब्दो लिखा गया है। प्रस्तुत पाण्डुलिपि सवत् १५११ की है जो जयपुर के लश्कर के मन्दिर मे सग्रहीत है। श्रीचन्द मुनि अपभ्र श भाषा की रचना रत्नकरण्ड के कर्त्ता थे जो १२ वी शताब्दी के विद्वान थे।

२३ पार्श्व पुराण (३००६)

अपभ्र श के प्रसिद्ध कवि रइधू विरचित पार्श्वपुराण की एक प्रति शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा मे सग्रहीत है। पार्श्वपुराण अपभ्र श की सुन्दर कृति है।

२४ पुराणसार (३०१३)

सागर सेन द्वारा रचित पुराणसार की एक मात्र पाण्डुलिपि शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर अजमेर मे सग्रहीत है। कवि ने रचनाकाल का उल्लेख नही किया है लेकिन यह सभवत १५ वी शताब्दि की रचना मालूम पडती है। कृति अच्छी है। भट्टारक सकलकीर्ति ने जो पुराणसार ग्रथ लिखा है सभवत वह इस कृति के आधार पर ही लिखा गया था।

२५ वर्धमानपुराण भाषा (३०८२)

वर्द्धमान स्वामी के जीवन पर हिन्दी मे जो काव्य लिखे गये हैं वे अभी तक प्रकाश मे नही आये हैं। इसी ग्रथ सूची मे वर्द्धमान पर कुछ काव्य मिले हैं और उनमे नवलराम विरचित वर्द्धमान पुराण भाषा भी एक काव्य है। यह काव्य सवत् १६६१ का है। महाकवि बनारसीदास जब समयसार नाटक लिख रहे थे तभी भगवान महावीर पर यह काव्य लिखा जा रहा था। नवलराम बुदेलखड के निवासी थे और मुनि सकल-कीर्ति के उपदेश से नवलराम एव उनके पुत्र दोनो ने मिल कर इस काव्य की रचना की थी। काव्य विस्तृत है तथा उसकी एक प्रति दि० जैन पचायती मन्दिर कामा मे उपलब्ध होती है।

२६ वर्धमानपुराण (३०७०)

वर्धमान स्वामी के जीवन पर यह दूसरी कृति है जिसे कविवर नवल शाह ने सवत् १८२५ मे समाप्त की थी। इसमे १६ अधिकार हैं। पुराण मे भगवान महावीर के जीवन पर अत्यधिक सुन्दर रीति से वर्णन किया गया है। इस पुराण की प्रति बयाना एव दो प्रतिया फतेहपुर शेखावाटी के शास्त्र भण्डार मे उपलब्ध होती हैं। कवि ने पुराण के अन्त मे रचना काल निम्न प्रकार दिया है—

उज्जयत विक्रम नृपति, सवत्सर गिनि तेह।
सत अठार पच्चीस अधिक ,समय विकारी एह ॥

२७ शांतिनाथ पुराण (३०६५)

यह ठाकुर कवि की रचना है जिसकी जानकारी हमे प्रथम वार प्राप्त हुई है। हिन्दी भाषा में शान्तिनाथ पर यह पुराण सर्वाधिक प्राचीन कृति है जिसका रचनाकाल सवत् १६५२ है। इस पुराण की एक मात्र पाण्डुलिपि अजमेर के भट्टारकीय शास्त्र भण्डार मे सग्रहीत है।

२८ शान्तिपुराण (३०६४)

महापडित आशाधर विरचित शान्तिपुराण सस्कृत का अच्छा काव्य है। कवि ने इसकी प्रशस्ति मे अपना विस्तृत परिचय दिया है। श्री नाथूराम प्रेमी ने आशाधर की जिन रचनाओ के नाम गिनाये हैं उसमे इस पुराण का नाम नही लिया गया है। इसकी एक प्रति जयपुर के दि० जैन मन्दिर लश्कर मे सग्रहीत है। पुराण प्रकाशन योग्य है।

काव्य एवं चरित्र

२९ जीवन्धर चरित (३३५९)

महाकवि दौलतराम कासलीवाल की पहिले जिन कृतियो एव काव्योका उल्लेख मिलता था उनमे जीवन्धर चरित का नाम नही था। उदयपुर के अग्रवाल दि० जैन मन्दिर मे जब हम लोग ग्रथो की सूची का कार्य कर रहे थे। तभी इसकी एक अस्त व्यस्त प्रति प० अनूपचद जो न्यायतीर्थ को प्राप्त हुई। कवि का यह एक हिन्दी का अच्छा काव्य है जो पाच अध्यायो मे विभक्त है। कवि ने अपने इस काव्य को नवरस पूर्ण कहा है जिसे कालाडेहरा के श्री चतुरभुज अग्रवाल एव पृथ्वीराज तथा मागवाडा के निवासी श्रीवेलजी हूवड के अनुरोध पर उदयपुर प्रवास मे सवत् १८०५ लिखकर मा भारती को भेट की थी। उदयपुर मे अग्रवाल दि० जैन मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे जो प्रति प्राप्त हुई थी, वह कवि की मूल पाडुलिपि है जिससे इसका महत्व और भी वढ गया है। काव्य प्रकाशन होने योग्य है।

३० जीवधर चरित (३३५८)

महाकवि रइधू द्वारा विरचित जीवन्धर चरित अपभ्र श की विशिष्ट रचना है। इस काव्य की एक प्रति दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी के शास्त्र भण्डार मे सग्रहीत है। पाण्डुलिपि प्राचीन है और सवत् १६५८ मे लिपि बद्ध की हुई है। यह काव्य प्रकाशन योग्य है।

३१ जीवन्धर चरित्र प्रबन्ध (३३६०)

जीवन्धर चरित्र हिन्दी भाषा का प्रवन्ध काव्य है जिसे भट्टारक यश कीर्ति ने छन्दोबद्ध किया था यश कीर्ति भट्टारक चन्द्रकीर्ति के प्रशिष्य एव भट्टारक रामकीर्ति के शिष्य थे। ये हिन्दी के अच्छे विद्वान थे। प्रस्तुत काव्य हिन्दी को कोई वडा काव्य नही है किन्तु भाषा एव शैली की दृष्टि से काव्य उल्लेखनीय है। इसकी एक पाण्डुलिपि उदयपुर के सभवनाथ मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे सग्रहीत है। इसकी रचना सवत् १८७१ मे हुई थी। कवि ने गुजरात देश के ईडर दुर्ग के पास भीलोडा ग्राम मे इसे समाप्त किया था। उस ग्राम मे चन्द्रप्रभ स्वामी का मन्दिर था और वहीं इस प्रवन्ध का रचना स्थल था।

सवत अठारासै इकहोत्तरै भादवा सुदी दशमी गुरुवार रे ।
ए प्रवध पूरो करो प्रणमी जिन गुरु पाय रे ।
गुर्जर देश मे सोभतो ईडर गढ ने पास रे ।
भीलोडी सुग्राम है तिहा श्रावक नो सुभवासरे ।
चन्द्रप्रभ जिनधाम है ते भव्य पूजै जिन पाय रे ।
तिहा रहिने रचना करी, यशकीर्ति सुरी राय रे ।

३२ धर्मशर्माभ्युदय टीका (३४६१)

धर्मशर्माभ्युदय सस्कृत भाषा के श्रेष्ठ महाकाव्यो मे से है । यह महाकवि हरिचन्द की रचना है और प्राचीन काल मे इसके पठन पाठन का अच्छा प्रचार था । इसी महाकाव्य पर भट्टारक यश.कीर्ति की एक विस्तृत टीका अजमेर के शास्त्र भण्डार मे उपलब्ध हुई है जिसका सदेहध्वान्त दीपिका नाम दिया गया है । टीका विद्वत्तापूर्ण है तथा उसमे काव्य के कठिन शब्दो का अच्छा खुलासा किया गया है ।

३३ नागकुमार चरित (३४८०)

नथमल विलाला कृत नागकुमार चरित हिन्दी की अच्छी कृति है जिसकी पाण्डुलिपिया राजस्थान के विभिन्न शास्त्र भण्डारो में उपलब्ध होती हैं । प्रस्तुत पाण्डुलिपि स्वय नथमल विलाला द्वारा लिपिवद्ध है । इसका लेखन काल सवत् १८३६ है ।

प्रथम जेठ पूनम सुदी सहस्त्र रात्रा वर वार ।
ग्र थ सुलिख पूरन कियो हीरापुरी मझार ।
नथमल नै निजकर थकी ग्र थ लिख्यौ धर प्रीत ।
भूल चूक यामैं लखौ तो सुध कीजो मीत ।

३४ वारा आरा महा चौपई वध (३६६०)

भट्टारक सकलकीर्ति की परम्परा मे होने वाले भट्टारक रामकीर्ति के प्रशिष्य एव पद्मनन्दि के शिष्य ब्र० रूपजी की उक्त कृति एक ऐतिहासिक कृति है जिसमे २४ तीर्थ करो का शरीर, आयु वर्ण आदि का वर्णन है । इसमें तीन उल्लास है । यह कवि की मूल पाण्डुलिपि है जिसे उसे महिसाना नगर के आदि जिन चैत्यालय मे छन्दोवद्ध किया था । इस चौपई की एक प्रति उदयपुर के सभवनाथ मन्दिर मे उपलब्ध होती है ।

३५ भोज चरित्र (३७२१)

हिन्दी भाषा मे भोज चरित्र भवानीदास व्यास की रचना है । यह एक ऐतिहासिक कृति है जिसमे राजा भोज का जीवन निवद्ध हैं । कवि ने इसका निम्न प्रकार उल्लेख किया है—

गढ जोधाण सतोल धाम आई विलाडे ।
पीर पाठ कल्याण सुजस गुण गीत गवाडे ।।

भोज चरित तिन सौ कह्यो कवियण सुख पावै ।।
व्यास भवानीदास कवित कर वात सुणावे ।।
सुणी प्रवध चारण मते भोजराज वीन कह्यो ।
कल्याणदास भूपाल को धर्म ध्वजा धारी कह्यो ।

३६ यशोधर चरित्र (३८२४)

महाराजा यशोधर के जीवन पर सभी भाषाओ मे अनेक काव्य लिखे गये हैं। हिन्दी मे भी विभिन्न कवियो ने रचना करके इस कथा के लोकप्रियता मे अभिवृद्धि की है। इन्ही काव्यो मे हिन्दी कवि देवेन्द्र कृत यशोधर चरित भी है जिसकी पाण्डुलिपिया डूगरपुर के शास्त्र भण्डार मे उपलब्ध हुई है। काव्य काफी वडा है। इसका रचनाकाल सवत् १६८३ है। देवेन्द्र कवि विक्रम के पुत्र थे जो स्वय भी सस्कृत एव हिन्दी के अच्छे कवि थे। विक्रम एव गगाधर दो भाई थे जो जैन ब्राह्मण थे। गुजरात के कुतलूखा के दरवार मे जैनधर्म की प्रतिष्ठा वढाने का श्रेय ब्र० शातिदास को था और उसी के प्रभाव के कारण विक्रम के माता पिता ने जैनधर्म स्वीकार किया था। इन्ही के सुत देवेन्द्र ने महुआ नगर मे यशधोर की रचना की थी।

सवत १६ आठ ओसि आसो सुदी वीज शुक्रवार तो
रास रच्यो नवरस भर्‌यो महुआ नगर मभार तो।

कवि ने अपनी कृति को नवरस से परिपूर्ण कहा है।

३७ रत्नपाल प्रवन्ध (३८८८)

रत्नपाल प्रवन्ध हिन्दी की अच्छी कृति है जो ब्र० श्रीपती द्वारा रची गयी थी। इसका रचनाकाल स० १७३२ है। भाषा एव शैली की दृष्टि से रचना उत्तम प्रवन्ध काव्य है तथा प्रकाशन योग्य है।

३८ विक्रम चरित्र चौपई (३९३१)

भाउ कवि हिन्दी के लोकप्रिय कवि थे। उनकी रविव्रतकथा हिन्दी की अत्यधिक लोकप्रिय रचना रही है। विक्रमचरित्र चौपई उनकी नवीन रचना है। जिसकी एक पाण्डुलिपि दवलाना के शास्त्र भण्डार मे सग्रहीत है। रचना काल सवत् १५८८ है। इस रचना से भाउ कवि का समय भी निश्चित हो जाता है। कवि ने रचना काल का उल्लेख निम्न प्रकार किया है—

सवत् पनर अठार्सिइ तिथि वलि तेरह हु ति
मगसिर माम जाण्यो रविवार जते हु ति।
चडी तणइ पसाउ सचढउ प्रवन्ध प्रमाण।
उवभाय भावै भणइ वातज आवा ठाण।।

३९ शांतिनाथ चरित्र भाषा (३९६५)

सेवाराम पाटनी हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे। शातिनाथ चरित्र उनके द्वारा लिखा हुआ विशिष्ट काव्य है। कवि महापडित टोडरमल के समकालीन विद्वान् थे। उनको उन्होंने पूर्ण आदर के साथ उल्लेख किया

है। इन्ही के उपदेश से सेवाराम काव्य रचना की ओर प्रवृत्त हुए थे। शातिनाथ चरित्र हिन्दी का अच्छा काव्य है जो २३० पत्रो मे समाप्त होता है। सेवाराम ढूढाहड देश मे स्थित देव्याढ (देवली) नगर के रहने वाले थे। कवि ने काव्य के अन्त मे निम्न प्रकार उल्लेख किया है—

देश ढूढाहड आदि दे सबोधे बहुदेश।
रची रची ग्रन्थ कठिन टोडरमल महेश।
ता उपदेश लवास लही सेवाराम सयान।
रच्यो ग्रथ रुचिमान के हर्ष हर्ष अधिकान ।।२३।।
सवत् अष्टादश शतक पुनि चौतीम महान।
सावन कृष्णा अष्टमी पूरन कियो पुरान।
अति अपार सुखसो बसे नगर देव्याढ सार।
श्रावक बसे महाधनी दान पूज्य मतिधार ।।२४।।

४० श्रीपाल चरित्र (४०५०)

श्रीपाल चरित्र ब्रह्म चन्द्रसागर की कृति है जो भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति के प्रशिष्य एव सकलकीर्ति के शिष्य थे। जो काष्ठासघ के रामसेन के परम्परा के भट्टारक थे। कवि ने सुरेन्द्रकीर्ति एव सकलकीर्ति दोनो की प्रशसा की है तथा अपनी लघुता प्रकट की है। काव्य की रचना सोजत नगर में सवत् १८२३ मे समाप्त हुई थी।

सोजन्या नगर सोहामणु दीसे ते मनोहार।
सासन देवी ने देहरें परतापुरे अपार।
सकलकीर्ति तिहा राजता छाजता गुण भडार।
ब्रह्म चन्दसागर रचना रची तिहा वेसी मानाहार ।।३०।।

चरित्र की भाषा एव शैली दोनो ही उत्तम है तथा वह विविध छन्दो मे निर्मित की गयी है। इसकी एक प्रति फतेहपुर के शास्त्र भण्डार मे उपलब्ध होती है।

४१ श्रेणिक चरित्र (४१०३)

श्रेणिक चरित्र महाकवि दौलतराम कासलीवाल की कृति है। अब तक जिन काव्यो का विद्वत जगत को पता नही था उनमे कवि की यह कृति भी सम्मिलित है। लेकिन ऐसा मालूम पडता है कि कवि के पद्मपुराण, हरिवशपुराण, आदिपुराण, पुण्यास्रव कथाकोश एव अध्यात्मबारहखडी जैसी वृहद कतियो के सामने इस कृति का अधिक प्रचार नही हो सका इसलिए इसकी पाण्डुलिपिया भी राजस्थान के बहुत कम भण्डारो मे मिलती है।

श्रेणिक चरित्र कवि का लघु काव्य है जिसका रचनाकाल सवत् १७८२ चैत्र सुदी पचमी है।

सवत सतरैसै बीआसी, औ चैत्र सुकल तिथि जान।
पचमी दीने पूरण करी, वार चद्र पचान ।।

कृति ५०० पद्यो मे समाप्त होती है जिसमे दोहा, चौपई, छन्द प्रमुख है । रचना की भाषा अधिक परिष्कृत नही है । इसकी एक प्रति दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर मे सगृहीत है ।

४२ सुदर्शन चरित्र भाषा (४१८८)

सुदर्शन के जीवन पर महाकवि नयनन्दि ने अपभ्र श भाषा मे सवत् ११०० मे महाकाव्य लिखा था । उसी को देख कर जैनन्द ने सवत् १६३३ मे आगरा नगर मे प्रस्तुत काव्य को पूर्ण किया था । जैनन्द ने भट्टारक यश कीर्ति क्षेमकीर्ति तथा त्रिभुवनकीर्ति का उल्लेख किया है । इसी तरह बादशाह अकबर एव जहागीर के शासन का भी वर्णन किया है । काव्य यद्यपि अधिक बडा नही है किन्तु भाषा एव वर्णन की दृष्टि से काव्य अच्छा है । काव्य की छन्द संख्या २०६ है । काव्य के प्रमुख छन्द दोहा, चौपई एवं सोरठा है । कवि ने निम्न छन्द लिख कर अपनी लघुता प्रकट की है ।

छद भेद पद भेद हो, तो कछु जानें नाहि ।
ताको कियो न खेद, कथा भई निज भक्ति बस ॥

४३ श्रेणिक प्रबन्ध (४१०५)

कल्याणकीर्ति की एक रचना चारुदत्त चरित्र का परिचय हम ग्रंथ सूची के चतुर्थ भाग में दे चुके हैं । यह कवि की दूसरी रचना है जिसकी उपलब्धि राजस्थान के फतेहपुर एव बू दी के भण्डारो मे हुई हैं । कवि भट्टारक सकलकीर्ति की परम्परा मे होने वाले भट्टारक देवकीर्ति के शिष्य थे । कवि ने इस प्रबन्ध को बागड प्रदेश के कोटनगर के श्रावक विमल के आग्रह से आदिनाथ मन्दिर मे समाप्त की थी । रचना गीतात्मक है तथा प्रकाशन योग्य है ।

कथा साहित्य

४४ अनिरुद्ध हरण–उषा हरण (४२२३)

यह रत्नभूषण की कृति है जो भट्टारक ज्ञानभूषण के शिष्य एव भ० सुमतिकीर्ति के परम प्रशसक थे । अनिरुद्ध हरण की रचना भ० ज्ञानभूषण के उपदेश से ही हो सकी थी ऐसा कवि ने उल्लेख किया है । कवि ने कृति का रचनाकाल नहीं दिया हैं लेकिन भट्टारक ज्ञानभूषण के समय को देखते ही हुए यह कृति सवत् १५६० से पूर्व की होनी चाहिए । अनिरुद्ध हरण की भाषा पर मराठी भाषा का प्रभाव है कवि ने रचना को "रचना इ बहुरम कहु" बहुरस भरी कहा है । अनिरुद्ध प्रद्युम्न के पुत्र थे । कवि ने काव्य का नाम ऊषा हरण न देकर अनिरुद्धहरण दिया है ।

४५ अनिरुद्ध हरण (४२२४)

अनिरुद्ध के जीवन पर यह दूसरा हिन्दी काव्य है जो ब्रह्म जयसागर की कृति है । ब्रह्म जयसागर भट्टारक महीचन्द्र के शिष्य थे । ये सिहपुरा जाति के श्रावक थे तथा हासोर नगर मे इन्होने इस काव्य को सवत् १७३२ मे समाप्त किया था । इसमे चार अधिकार हैं । इस रचना की भाषा राजस्थानी है तथा उस पर गुजराती का प्रभाव है । रत्नभूषण सूरि के अनिरुद्ध हरण से यह रचना बडी है ।

अनिरुद्ध हरणज मे कर्यु दुख हरण ए सार ।
साभला सुख ऊपजे कहे जयसागर ब्रह्मचार जी ॥

४६ अभयकुमार प्रबन्ध (४२२६)

उक्त प्रबन्ध पदमराज कृत हिन्दी काव्य है जिसमे अभयकुमार के जीवन पर प्रकाश डाला गया है । पदमराज खरतर गच्छ के आचार्य जिनहम के प्रशिष्य एव पुण्य सागर के शिष्य थे । जैसलमेर नगर मे ही इसकी रचना समाप्त हुई थी । प्रबन्ध का रचनाकाल सवत १६५० है । रचना राजस्थानी भाषा की है ।

४७ आदित्यवार कथा (४२५१)

प्रस्तुत कथा प० गगादास की रचना है जो कारजा के भट्टारक धर्मचन्द्र के शिष्य थे । आदित्यवार कथा एक लोकप्रिय कृति है जिसे उन्होने सवत १७५० मे समाप्त किया था । कथा की दो सचित्र प्रतिया उपलब्ध हुई हैं जिनमे एक भट्टारकीय दि०जैन मन्दिर अजमेर मे तथा दूसरी डू गरपुर के शास्त्र भण्डार मे उपलब्ध हुई है । दोनो ही सचित्र प्रतिया अत्यधिक कलात्मक हैं । डू गरपुर वाली प्रति मे स्वय प० गगादास एव भ० धर्मचन्द्र के चित्र भी हैं । कथा की रचना शैली एव वर्णन शैली दोनो ही अच्छी है ।

४८ कथा सग्रह (४३०८)

भट्टारक विजयकीर्ति अजमेर गादी के प्रसिद्ध भट्टारक थे । वे सन्त के साथ साथ विद्वान् एव कवि भी थे इनकी दो रचनायें कर्णामृत पुराण एव श्रेणिक चरित्र पहिले ही उपलब्ध हो चुकी हैं । कथा सग्रह इनकी तीसरी रचना है । इसका रचनाकाल सवत १८२७ है । इस कथा सग्रह मे कनक कुमार, धन्य कुमार, तथा शालिभद्र की कथाए चौपई छन्द मे निबद्ध हैं । रचना की एक पाण्डुलिपि भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर मे सग्रहीत है ।

४६ चन्द्रप्रभ स्वामीनो विवाह (४३२६)

प्रस्तुत कृति भ० नरेन्द्रकीर्ति की है जिसे उन्होंने सवत १६०२ मे छन्दोबद्ध किया था । कवि ने इस काव्य को गुजरात प्रदेश के महसाना नगर मे समाप्त किया था । वे भट्टारक सुमतिकीर्ति के गुरू भ्राता भट्टारक सकलभूषण के शिष्य थे । विवाहलो भाषा एव वर्णन शैली की दृष्टि से सामान्य है इसकी एक पाण्डुलिपि कोटा के बोरसली के मन्दिर में उपलब्ध हुई है ।

५० सम्यक्त्व कौमुदी (४८२८)

जगतराय की सम्यक्त्व कौमुदी कथा हिन्दी कथा कृतियो मे अच्छी कृति है । इसमे विभिन्न कथाओ का संग्रह है । कवि आगरे के निवासी थे । कवि की पद्मनन्दि पचविशतिका, आगमविलास आदि पहिले ही उपलब्ध हो चुकी हैं । रचना सामान्यत अच्छी है ।

५१ होली कथा (४६००)

यह मुनि शुभचन्द्र की कृति हैं। जो आमेर गादी के भट्टारक जगतकीर्ति के शिष्य थे। मुनि श्री हडोती प्रदेश के कुजडपुर मे रहते थे। वहाँ चन्द्रप्रभ स्वामी का चैत्यालय था और उसी मे इस रचना को छन्दोबद्ध किया गया था। रचना भाषा की दृष्टि से अच्छी कथा कृति है। इसकी रचना धर्मपरीक्षा मे वर्णित कथा के अनुसार की गयी है।

मुनि शुभचन्द करी या कथा, धर्म परीक्षा मे ली जथा।
होली कथा सुने जे कोई, मुक्ति तणा सुख पावे सोय।
सवत सतरासै परि जोर, वर्ष पचावन अधिक और ॥ १२६ ॥

५२ वचन कोश (५२३२)

बुलाकीदास कृत वचनकोश हिन्दी भाषा की अच्छी कृति है। कवि की पाण्डवपुराण एव प्रश्नोत्तरोपासकाचार हिन्दी जगत की उत्तम कृतिया है जिन पर ग्रन्थ सूची के पूर्व भागो मे प्रकाश डाला जा चुका है। वचनकोश के माध्यम से जैन सिद्धान्त को कोश के रूप मे प्रस्तुत करके कवि ने हिन्दी जगत की महान् सेवा की है। इस कृति का रचनाकाल सवत १७३७ है। यह कवि की प्रारम्भिक कृति है। रचना प्रकाशन योग्य है।

आयुर्वेद

५३ अजीर्ण मजरी (५५६२)

न्यामतखा फतेहपुर (शेखावाटी) के शासक क्यामखा के शासन काल के हिन्दी कवि थे। उन्होने आयुर्वेद की इस कृति को वैद्यक शास्त्र के अन्य ग्रन्थों के अध्ययन के पश्चात लिखी थी। इससे ज्ञात होता है कि न्यामतखा सस्कृत एव हिन्दी दोनो ही भाषाओ के विद्वान थे। इसकी रचना सवत १७०४ है। कवि ने लिखा है कि उसने यह रचना दूसरो के उपकारार्थ लिखी हैं।

वैद्यक शास्त्र को देखि करी, नित यह कियो बखान।
पर उपकार के कारणै, सो यह ग्रन्थ सुखदान ॥ १०२ ॥

५४ स्वरोदय (५७६४)

आयुर्वेद विषय पर यह मोहनदास कायस्थ की रचना है। यद्यपि इस विषय की यह लघु रचना है। नाडी परीक्षा पर भी स्वर के साथ इसमे विशेष वर्णन है। सवत १६८७ मे इस रचना को कन्नोज प्रदेश मे स्थित नैमखार के समीप के गाम कुरस्थ मे समाप्त किया गया था।

रास, फागु वेलि

५५ ब्रह्म जिनदास की रास संज्ञक रचनायें

ब्रह्म जिनदास सस्कृत एव हिन्दी दोनो के ही महाकवि थे। दोनों ही भाषाओ पर इनका समान अधिकार था। इसलिये जहा इन्होने सस्कृत मे बडे बडे पुराण एव चरित्र ग्रन्थ लिखे वहा हिन्दी में रास सज्ञक

रचनाये लिख कर १५ वीं शताब्दी मे हिन्दी के पठन पाठन मे अपना अपूर्व योग दिया। प्रस्तुत ग्रन्थ सूची में ही इनकी ६५ रचनाओ का परिचय दिया गया है। इनमें संस्कृत की ५, प्राकृत की एक तथा शेष ५६ रचनायें हिन्दी भाषा की हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ सूची मे सबसे अधिक कृतिया इन्ही की है इसलिये ब्रह्म जिनदास साहित्यिक सेवा की दृष्टि से सर्वोपरि है। कवि की जिन रास सज्ञक रचनाओ की उपलब्धि हुई है इनके नाम निम्न प्रकार है—

१	अजितनाथ रास	(६१३३)	२	आदिपुराण रास	(६१३५)
३	कर्मविपाकरास	(६१४६)	४	जम्बूस्वामी रास	(६१५३)
५.	जीवधर रास	(६१५७)	६	दानफल रास	(६१६१)
७	नवकार रास	(६१७१)	८	धर्मपरीक्षा रास	(६१६५)
९	नागकुमार रास	(६१७२)	१०	नेमीश्वर रास	(६१७६)
११	परमहंस रास	(६१८०)	१२.	भद्रबाहु रास	(६१९१)
१३	यशोधर रास	(६१९७)	१४	रामचन्द्र रास	(६२०२)
१५	राम रास	(६२०३)	१६	रोहिणी रास	(६२०६)
१७	श्रावकाचार रास	(६२१४)	१८.	श्रीपाल रास	(६२१५)
१९	श्रुतकेवलि रास	(६२२३)	२०.	श्रेणिक रास	(६२२४)
२१	सोलहकारण रास	(६२३९)	२२	हनुमत रास	(६२४३)
२३	अनतव्रत रास	(१०२३६)	२४	अठाईसमूलगुण रास	(१०१२०)
२५	करकण्डुनो रास	(६१४७)	२६	चारुदत्त प्रबध रास	(१०२३६)
२७	धन्यकुमार रास	(६१६३)	२८	नागश्रीरास	(१०२३६)
२९	पानीगालण रास	(१०१२०)	३०	वकचूल रास	(६१९०)
३१	भविष्यदत्त रास	(६१९३)	३२	सम्यक्त्व रास	
३३	सुदर्शन रास	(१०२३१)	३४	होलीरास	(१०२३६)

१५ वी शताब्दी मे होने वाले एक ही कवि के इतनी अधिक रास सज्ञक कृतियो का उपलब्धि हिन्दी साहित्य के इतिहास मे सचमुच एक महत्वपूर्ण कहानी है। कवि का रामसीताराम ही महाकवि तुलसीदास की रामायण से बडी रामायण है। वैसे कवि की कुछ कृतियो को छोड कर सभी रचनाये महत्वपूर्ण तथा भाषा एव शैली की दृष्टि से उल्लेखनीय है। कवि का राजस्थान का बागड प्रदेश एव गुजरात मुख्य कार्य स्थान रहा था। इसलिये इनकी रचनाओ पर गुजराती भाषा एव शैली का भी अधिक प्रभाव है।

ब्रह्म जिनदास की रचनाओ का अभी मूल्याकन नही हो पाया है। यद्यपि कवि पर राजस्थान विश्व विद्यालय मे शोध कार्य चल रहा है लेकिन अभी तक अनेक साहित्यिक दृष्टिया हैं जिनके आधार पर कवि का मूल्याकन किया जा सकता है। एक ही नही बीसो शोध निबन्ध लिखे जा सकते है।

कवि भट्टारक सकलकीर्ति के भाई ही नही किन्तु उनके प्रमुख शिष्य भी थे। इन्होने अपनी कृतियो मे पहिले सकलकीर्ति की और उनकी मृत्यु के पश्चात भ० भुवनकीर्ति का स्मरण किया है जो उनके पश्चात भट्टारक गादी पर बैठे थे। ब्र० जिनदास रास सज्ञक रचनाओ के अतिरिक्त और भी रचनायें लिखी है। जिनके आधार पर यह कहा जा सकता है कि कवि सर्वतोमुखी प्रतिभा वाले विद्वान थे।

५६ चतुर्गति रास (६१४६)

वरिचन्द हिन्दो के अच्छे कवि थे। इनकी अब तक कितनी ही रचनाओ का परिचय मिल चुका है। इन रचनाओ मे चतुर्गति रास इनकी एक लघु रचना है। जिसकी एक पाण्डुलिपि कोटा के बोरसली के मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे सग्रहीन है। रचना प्रकाशन योग्य है।

५७ वर्धमान रास (६२०७)

भगवान महवीर पर यह प्राचीनतम रास सज्ञक काव्य है जिसका रचना काल, सवत १६६५ है तथा जिसके निर्माता हैं वर्द्धमान कवि। रास यद्यपि अधिक वडा नही है फिर भी महावीर पर लिखी जाने वाली यह उल्लेखनीय रचना है। काव्य की दृष्टी से भी यह अच्छी रचना है। वर्धमान कवि ब्रह्मचारी थे और भट्टारक वादिभूषण के शिष्य थे।

सवत सोल पासठि मार्गसिर सुदि पचमी सार ।
ब्रह्म वर्धमानि रास रच्यो तो साभलो तम्हे नरनारि ॥

५८ सीताशील पताका गुणवेलि (६२३२)

वेलि सज्ञक रचनाओ मे आचार्य जयकीर्ति की इस रचना का उल्लेखनीय स्थान है। इसमे महासती सीता के उत्कृष्ट चरित्र का यशोगान गाया गया है। आचार्य जयकीर्ति हिन्दी के अच्छे कवि थे। प्रस्तुत ग्रन्थ सूची में ही उनकी ६ रचनाओ का परिचय दिया गया है। इनमे अकलकयतिरास, अमरदत्त मित्रानन्द रासो, रविव्रत कथा, वसुदेव प्रवन्ध, शोलसुन्दरी प्रबन्ध उक्त वेलि के अतिरिक्त हैं। कवि ने काव्य के विवध रूपो मे रचनायें लिखी थी तथा अपनी कृतियो को विविध रूपो मे लिख कर पाठको की इस ओर रूचि जाग्रत किया करते थे।

आ० जयकीर्ति ने भट्टारकीय युग मे भट्टारक सकलकीर्ति की परम्परा मे होने वाले भ० रामकीर्ति के शिष्य ब्रह्म हरखा के आग्रह से यह वेलि लिखी थी। इस का रचना काल संवत १६७४ ज्येष्ठ सुदी १३ बुधवार है। यह गुजरात प्रदेश के कोटनगर के आदिनाथ चैत्यालय मे लिखी गयी थी। प्रस्तुत प्रति की एक और विशेपता है कि वह स्वय ग्रन्थकार के हाथ से लिखी हुई है जैसा कि निम्न प्रशस्ति मे स्पष्ट है—

सवत १६७४ आपाढ सुदी ७ गुरो श्री कोटनगरे स्वज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थ आ० श्री जयकीर्तिना स्वहस्ताभ्या लिखितेय।

५९ जम्बूस्वामीरास (५१५४)

प्रस्तुत रास नयविमल की रचना है। इसमे अन्तिम केवली जम्बूस्वामी के जीवन पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। यह रास भाषा एवं शैली की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। रास मे रचनाकाल नही दिया है लेकिन यह १८ वी शताब्दी का मालूम देता है। इसकी एक प्रति शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा मे सग्रहीत है।

६० ध्यानामृतरास (६१७०)

यह एक आध्यात्मिक रास है जिसमे ध्यान के उपयोग एव उसकी विशेषताओं के वारे में विस्तृत प्रकाश डाला गया है। रास के निर्माता है ब्र० करमसी। जो भट्टारक शुभचन्द्र के प्रशिष्य एव मुनि विनयचन्द्र के शिष्य थे। रास की भाषा एव शैली सामान्य है। कवि ने अपना परिचय निम्न प्रकार दिया है—

जिन सासण चिरजयो विवुह पद्म पयासण सूर।
चउविह सघ सदा जयो विघन जायो तुम्ह दूर॥
श्री शुभचन्द्र सूरि नमी समरी विनयचन्द्र मुनिराय।
निज वुद्धि अनुसरि रास कियो ब्रह्म करमसी हरसाय॥

६१ रामरास (६२०४)

रामरास कविवर माधवदास की कृति है। यह कृति वाल्मीकि रामायण पर आधारित है। रचना सवत नही दिया हुआ है लेकिन रास १७ वी शताब्दी का मालूम पडता है। सवत् १७६८ की लिखी हुयी एक पाण्डुलिपि दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर मे सग्रहीत है।

६२ श्रेणिकप्रवधरास (६२२४)

यह ब्रह्म सघजी की रचना है जिसे उन्होने सवत् १७७५ मे समाप्त की थी। कवि ने अपनी कृति को प्रवध एव रास दोनो लिखा है। यह एक प्रवध काव्य है और भाषा एव शैली की दृष्टि मे काव्य उल्लेखनीय है। भगवान महावीर के प्रमुख उपासक महाराजा श्रेणिक का जीवन का विस्तृत वर्णन किया गया है। रचना प्रकाशन योग्य है।

६३ सुकौशलरास (६२३५)

वेणीदास भट्टारक विश्वसेन के शिष्य थे। सुकौशलरास उन्ही की रचना है जिसे उन्होने १७ वीं शताब्दी मे निवद्ध किया था। यद्यपि यह एक लघु रास है लेकिन काव्यत्व की दृष्टि से यह एक अच्छी कृति है। रास की पाण्डुलिपि अहमदावाद के शान्तिनाथ चैत्यालय मे सवत् १७१४ की माघ सुदी पचमी को की गयी थी जो आजकल डूगरपुर के शास्त्र भण्डार मे सग्रहीत है।

६४ वृहद्तपागच्छ गुरावली (६२६८, ६२६६)

श्वेताम्बरीय तपागच्छ मे होने वाले साधुओ की विस्तृत पट्टावली की एक प्रति दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर और एक प्रति पचायती मन्दिर भरतपुर के शास्त्र भण्डार मे सग्रहीत है। दोनो ही पाण्डुलिपिया प्राचीन है लेकिन भरतपुर वाली प्रति अधिक वडी है और ४४ पत्रो मे पूर्ण होती है। अलवर वाली प्रति मे मुनि सुदरसूरि तक के गुरुओ की पट्टावली दी हुई है। जबकि भरतपुर वाली प्रति स्वयं मुनि सुन्दर सूरि की लिखी हुई है और उसका लेखन काल सवत् १४६० फागुण सुदी १० है।

६५ भट्टारक सकलकीर्तिनुरास (६३१०)

भट्टारक सकलकीर्ति १५ वी शताब्दी के जबरदस्त विद्वान सत थे। जैन वाङ्मय के निष्णात ज्ञाता थे। उनकी वाणी में सरस्वती का वास था एव वे तेजोमय व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने वागड देश मे भट्टारक सस्था की इतनी गहरी नीव लगायी कि वह आगामी ३०० वर्षों तक उसने समस्त समाज पर एक छत्र राज्य किया। भट्टारक सकलकीर्ति स्वय ऊचे विद्वान एव अनेक शास्त्रो के रचयिता थे। इसके प्रशिष्य भी बडे भारी साहित्य सेवी होते रहे। प्रस्तुत राम मे भट्टारक सकलकीर्ति एव उनके शिष्य भ० भुवनकीर्ति का सक्षिप्त परिचय दिया गया है। रास ऐतिहासिक है और यह उनके जीवन की कितनी घटनाओ का उद्घाटित करता है। रास के प्रारम्भ मे आचार्यों की परम्परा दी है। और फिर भ० सकलकीर्ति के जन्म, माता, पिता, अध्ययन, विवाह, सयम ग्रहण, भट्टारक पद ग्रहण, ग्र थ रचना आदि के बारे मे सक्षिप्त परिचय दिया गया है। इसके पश्चात् २४ पद्यो मे भ० भुवनकीर्ति के गुणो का वर्णन किया गया है। भ० भुवनकीर्ति की सर्व प्रथम सवत् १४८२ मे डूंगरपुर मे दीक्षा हुई थी। रास पूर्णत ऐतिहासिक है।

ब्र० सामल की यह रचना अत्यधिक महत्वपूर्ण है जिसकी एक पाण्डुलिपि उदयपुर के सभवनाथ मन्दिर मे सग्रहीत है।

विलास एवं संग्रह कृतियां

६६ वाहुबलि छन्द (६४७९)

यह लघु रचना भ० प्रभाचन्द्र के शिष्य वादिचन्द्र की कृति है। इसमें केवल ६० पद्य हैं जिसमे भरत सम्राट के छोटे भाई वाहुबलि की प्रमुख जीवन घटनाओ का वर्णन है। रचना अच्छी है। तथा एक सग्रह ग्र थ मे सग्रहीत है।

६७ चतुर्गति नाटक (६५०४)

डालूराम हिन्दी के प्रसिद्ध कवि थे। ग्र थ सूची के उसी भाग मे उनकी ९ और रचनाओ का विवरण दिया गया है। चतुंगति नाटक मे चार गति-देव, मनुष्य, तिर्यञ्च और नरकगति मे सहे जाने वाले दु खो का वर्णन किया गया है। यह जीव स्वय जगत् रूपी नाटक का नायक है जो विभिन्न योनियो को धारण करता हुआ ससार परिभ्रमण करता रहता है। रचना अच्छी है तथा पठनीय है।

६८ संबोध सत्ताणनु दूहा (६७७६)

यह वीरचन्द की रचना है जो सवोधनात्मक है। वीरचन्द का परिचय पहिले दिया जा चुका है। भाषा एव शैली की दृष्टि मे रचना सामान्य है।

स्तोत्र

६९ अकलंकदेव स्तोत्र भाषा (६७९४)

अकलक स्तोत्र सस्कृत का प्रसिद्ध स्तोत्र है और यह उसी स्तोत्र की परमतखडिनी नाम की भाषा टीका है। इस टीका के टीकाकार चपालाल वागडिया है जो झालरापाटण (राजस्थान) के निवासी थे। टीका विस्तृत

है तथा वह पद्यमय है । टीकाकाल सवत् १९१३ श्रावण सुदी ३ है । टीका की एक प्रति बू दी के पार्श्वनाथ मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे सग्रहीत है ।

७० आदिनाथ स्तवन (६८०७)

यह स्तवन तपागच्छीय साधु सोमसुन्दर सूरि के शिष्य मेहउ द्वारा निर्मित है। इसका रचनाकाल सवत् १४९९ है भाषा हिन्दी एव पद्य सख्या ४८ है । इसमे राणकपुर के मन्दिर का सुन्दर वर्णन किया गया है रचना ऐतिहासिक है । स्तवन का अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है—

भगति करू सामी तणी ए छइ दरसण दाण ।
चिहु दिसि कीरति विस्तरी, ए धन धरण प्रधान ।
संवत चउदनवाणवइ ए धुरि काती माहे ।
मेहउ कहइ मइ स्तवन कीउ मनि रगि लाहे ।। ४८ ।।
इति श्री राणपुर मंडण श्री आदिनाथ स्तवन सपूर्ण ।।

७१ भक्तामर स्तोत्र भाषा टीका (७१७३)

भक्तामर स्तोत्र की हेमराज कृत भाषा टीका उल्लेखनीय कृति है । दि० जैन मन्दिर कामा के शास्त्र भण्डार मे २९ पृष्ठों वाली एक पाण्डुलिपि है जो स्वय हेमराज की प्रति थी ऐसा उस पर उल्लेख मिलता है । यह प्रति सवत् १७२७ की है । स्वय ग्र थकार की पाण्डुलिपियो मे इसका उल्लेखनीय स्थान है ।

७२ भक्तामर स्तोत्र वृत्ति (७१८५)

भक्तामर स्तोत्र पर भ० रत्नचन्द्र को यह सस्कृत टीका है । टीका विस्तृत है तथा सरल एव सुबोध है । अजमेर की एक प्रति के अनुसार इसकी टीका सिद्ध नदी के तट पर स्थित ग्रीवापुर नगर के पार्श्वनाथ चैत्यालय में की गई थी । टीका करने में श्रावक करमसी ने विशेष आग्रह किया था ।

७३ वर्धमान विलास स्तोत्र (७२८७)

प्रस्तुत स्तोत्र भट्टारक ज्ञानभूषण के प्रमुख शिष्य भ० जगद्भूषण द्वारा विरचित है । इसमे ४०१ पद्य है स्तोत्र विस्तृत है तथा उसमे भगवान महावीर के जीवन पर भी प्रकाश डाला गया है । पाण्डुलिपि अपूर्ण है तथा प्रारम्भ के ३ पत्र नही है फिर भी स्तोत्र प्रकाशन होने योग्य है ।

७४ समवशरण पाठ (७३५४)

सस्कृत भाषा मे निवद्ध उक्त समवशरण पाठ रेखराज की कृति है । रेखराज कवि ने इसे कब समाप्त किया था इसके बारे मे कोई उल्लेख नही मिलता है । रचना सामान्यत. अच्छी है ।

इसी तरह समवशरण मगल महाकवि मायाराम का (७३५५) तथा समवशरण स्तोत्र (विष्णुसेन) भी इस विषय की उल्लेखनीय कृतिया है ।

पूजा एवं विधान साहित्य

उक्त विषय के अन्तर्गत उन रचनाओ को दिया गया है जो या तो पूजा साहित्य मे सम्बन्वित है अथवा प्रतिष्ठा विधान आदि पर लिखी गयी है। प्रस्तुत विषय की १६७५ पाण्डुलिपियो का परिचय इस भाग मे दिया गया है ग्र थ सूची के भाग मे सबसे अधिक कृतिया इन्ही विषयो की है। ये पूजाए मुख्यतः सस्कृत एव हिन्दी भाषा की है। पूजा साहित्य का मध्यकाल मे कितना अधिक प्रचार था यह इन पाण्डुलिपियो की सख्या से जाना जा सकता है। इस विषय की कुछ अज्ञात एवं उल्लेखनीय रचनायें निम्न प्रकार है—

१	अकृत्रिम चैत्यालय पूजा	मल्लिसागर	(७४६४)	सस्कृत
२	अनन्तचतुर्दशी पूजा	शान्तिदास	(७४६१)	,,
३	अनन्तनाथ पूजा मडल विधान	गुणचन्द्राचार्य	(७५०८)	,,
४	अनन्तव्रत कथा पूजा	ललितकीर्ति	(७५१६)	,,
५	अनन्तव्रत पूजा	पाण्डे धर्मदास	(७५१७)	,,
६	अनन्तव्रत पूजा उद्यापन	सकलकीर्ति	(७५३१)	,,
७	अष्टान्हिका व्रतोद्यापन पूजा	प० नेमिचन्द	(७५५६)	,,
८	आदित्यवार व्रतोद्यापन पूजा	जयसागर	(७५७१)	,,
९	कल्याण मन्दिर पूजा	देवेन्द्रकीर्ति	(७६४७)	,,
१०	चतुर्दशी व्रतोद्यापन पूजा	विद्यानन्दि	(७६८१)	,,
११	चौबीस तीर्थ कर पूजा	देवीदास	(७७२७)	हिन्दी
१२	चतुर्विशति तीर्थ कर पचकल्याणक पूजा	जयकीर्ति	(७८४४)	संस्कृत
१३	जम्बूद्वीप पूजा	प० जिनदास	(७८६८)	,,
१४	तीस चौबीस पूजा	प० साधारण	(७९२५)	,,
१५	त्रिकाल चतुर्विशति पूजा	त्रिभुवनचन्द्र	(७९४९)	,,
१६	त्रिलोकसार पूजा	नेमीचन्द	(७९६२)	हिन्दी
१७	,,	सुमतिसागर	(७९७२)	संस्कृत
१८	दशलक्षणव्रतोद्यापन पूजा	भ० ज्ञानभूषण	(८०६५)	सस्कृत
१९	नन्दीश्वर द्वीप पूजा	प० जिनेश्वदास	(८२२९)	,,
२०	नन्दीश्वर द्वीप पूजा	विरधीचन्द	(८२३१)	हिन्दी
२१	पच कल्याणक पूजा उद्यापन	गुजरमल ठग	(८२३६)	,,
२२	पच कल्याणक पूजा	प्रभाचन्द	(८२४१)	सस्कृत
२३	पच कल्याणक	वादिभूषण	(८२४४)	,,
२४	पच कल्याणक विधान	हरी किशन	(८२८०)	हिन्दी
२५	पद्मावती पूजा	टोपण	(८३८८)	सस्कृत
२६	पूजाष्टक	ज्ञानभूषण	(८४५२)	,,
२७	प्रतिष्ठा पाठ टीका	परशुराम	(८६२३)	,,
२८	लघु पच कल्याणक पूजा	हरिमान	(८७६०)	हिन्दी

२९	व्रत विधान पूजा	अमरचन्द	(८८०८)	हिन्दी
३०	षोडशकारण व्रतोद्यापन पूजा	सुमतिसागर	(८८६३)	संस्कृत
३१	सम्मेदशिखर पूजा	ज्ञानचन्द	(८९८१)	हिन्दी
३२	सम्मेदशिखर पूजा	रामपाल	(८९९८)	,,

गुटकासंग्रह

७६ सीता सतु (९१६६)

यह कविवर भगौतीदास की रचना है जो देहली के अपभ्रंश एवं हिन्दी के प्रसिद्ध कवि थे। अजमेर के भट्टारकीय शास्त्र भण्डार मे एक बडा गुटका है जिसमे सभी रचनायें भगौतीदास विरचित हैं। सीतासतु भी उन्ही मे से एक रचना है जो दूसरे गुटके मे भी सग्रहीत है। यह सवत् १६८४ की रचना है कवि ने जो अपना परिचय दिया है वह निम्न प्रकार है—

> गुरु मुनि महिंदसैण भगौती, रिसि पद पकज रेगु भगौती।
> कृष्णदास वनि तनुज भगौती, तुरिय गह्यो व्रतु मनुज भगौती।
> नगरि बूडिये वासि भगौती, जन्म भूमि चिरु आसि भगौती।
> अग्रवाल कुल वस लगि, पडित पद निरखि भमि भगौती।

सीतासतु की कुल पद्य संख्या ७७ है।

७७ मृगी सवाद (९१६६)

यह कवि देवराज की कृति है जिसे उन्होने सवत् १६६३ मे लिखी थी। सवाद रूप मे यह एक सुन्दर काव्य है जिसकी पद्य सख्या २५० हैं। कवि देवराज पासचन्द सूरि के शिष्य थे।

७८ रत्नचूडरास (९३००)

रत्नचूडरास सवत् १५०१ की रचना है। इसकी पद्य सख्या १३२ है। इसकी भाषा राजस्थानी है तथा काव्यत्व की दृष्टि से यह एक अच्छी रचना है। कवि वडतपगच्छ के साधु रत्नसूरि के शिष्य थे।

७९ बुद्धि प्रकाश (९३०१)

थेल्ह हिन्दी के अच्छे कवि थे। बुद्धिप्रकाश इनकी एक लघु रचना है जिसमे केवल २७ पद्य हैं। रचना उपदेशात्मक एव सुभाषित विषय से सम्बद्ध हैं।

८० वीरचन्द दूहा (९३६९)

यह लक्ष्मीचन्द की कृति है जिसमे भट्टारक वीरचन्द के बारे मे ९६ पद्यो मे परिचय प्रस्तुत किया है। रचना १६ वी शताब्दी की मालूम पडती है। यह एक प्रकाशन योग्य कृति है।

८१ अर्गलपुर जिन वन्दना (६३७१)

यह रचना भी कविवर भगवतीदास की है जो देहली निवासी थे। इसमे आगरे मे सवत् १६५१ मे जतने भी जिन मन्दिर एव चैत्यालय थे उन्ही का वर्णन किया गया है। रचना ऐतिहासिक है तथा "अर्गलपुर पट्टणि जिण मन्दिर जो प्रतिमा रिसि राई" यह प्रत्येक पद्य की टेक है। प्रत्येक पद्य १२ पक्ति वाला है। पूरी रचना मे २१ पद्य है। आगरा मे तत्कालीन श्रावको के भी कितने ही नामो का उल्लेख किया गया है। एक उदाहरण देखिये—

> साहु नराइनी करिउ जिनालय अति उत्त ग धुज सोहइ हो।
> गधकुटी जिन विंब विराजत अमर खचर खोहइ हो।
> जगभूपनु भट्टारक तिह थलि काम करि छमइ यो हो।
> श्रुत सिद्धान्त उदधि वुधि गण हस पचम काल दिसिंद हो।
> तिनि इकु श्लोकु सुनायो मुख भानी रामपुरी वनि लोक हो।
> जिह सरवरि निस हस विराजइ सोम खस वर स्तोक हो।
> नृप मराल उडि जाति जहा ते तिह मरि सोभा नाही हो।
> ज्ञानी अरु दानी जग मडण समुझि लखो मनमाही हो।
> समुझि लखहि मन माहि सगुण जण सुनि वानी गुरु देवा।
> सुर सुखु देखि अभै पदु पावहि करहि साधु रिसि सेवा ॥१६॥

८२ संतोष जयतिलक (६४२१)

यह बूचराज कवि का रूपक काव्य है जिसमे सतोष की लोभ पर विजय का वर्णन किया गया है। सतोष के प्रमुख अग हैं शील, सदाचार, सम्यक ज्ञान, सम्यक चरित्र, वैराग्य, तप, करुणा क्षमा एव सयम। लोभ के प्रमुख अगो मे मान, क्रोध, मोह, माया कलह आदि हैं। कवि ने इन पात्रों की सयोजना करके प्रकाश और अन्धकार पक्ष की मौलिक उद्भावना प्रस्तुत की है। इसमें १३१ पद्य हैं जो सारिक, रड रगिक्का, गाथा, दोहा, पद्धडी, अडिल्ल, रासा, आदि छन्दो मे विभक्त हैं। इस काव्य की एक प्रति दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ बूदी के शास्त्र भण्डार मे सग्रहीत है।

८३ चेतन पुद्गल धमालि (६४२१)

यह कवि का दूसरा रूपक काव्य है। वैसे तो कवि का 'मयणजुज्झ' अत्यधिक प्रसिद्ध रूपक काव्य है। लेकिन भाषा एव शैली की दृष्टि से चेतन पुदगल धमालि सबसे उत्तम काव्य है। इसमे कवि ने जीव और पुदगल के पारस्परिक सम्बन्धो का तुलनात्मक वर्णन किया है। वास्तव मे यह एक सवादात्मक रूपक काव्य है। जिसके जड एव जीव दोनो नायक हैं। काव्य का पूरा सवाद रोचक है तथा कवि ने उसे बडे ही सुन्दर ढग से प्रस्तुत किया हैं। इसमे १३६ पद्य हैं जिनमें १३१ पद्य दीपकराग के तथा ५ पद्य अष्ट छप्पय छन्द के हैं। रचना मे रचनाकाल का उल्लेख नही है। अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है—

> जे वचन श्रीजिण वीरि भासे, तास नित धारह हीया।
> इव भणइ बूचा सदा निम्मल, मुकति सरूपी जिया ॥

८४ आराधना प्रतिबोधसार (६६४६)

यह कृति भ० विमलकीर्ति की है जो सभवत भ० सकलकीर्ति के पश्चात् गादी पर बैठे थे लेकिन अधिक दिनो तक उस पर टिके नही रह सके। इस कृति मे ५५ छन्द है। कृति आराधना पर अच्छी सामग्री प्रस्तुत करती है। इसको भाषा अपभ्र श मय है।

> हो अप्पा दसण णाए हो, अप्पा सयम जाए।
> हो अप्पा गुए गमीर हो, अप्पा शिव पद धार ॥५१॥
> परमप्पा परमवछेद, परमप्पा अकल अभेद।
> परमप्पा देवल देव, इम जाणी अप्पा सेव ॥५१॥

८५ सुकौशल रास (६६४६)

यह सासू कवि की रचना है जो प्रमुख रूप से चौपई छन्द मे निबद्ध है। प्रारम्भ मे कवि का नाम सागु भी दिया गया है। इसी तरह कृति का नाम भी "सुकोसल रास चउपई" दिया है। कवि ने अपने नामोल्लेख के अतिरिक्त अन्य परिचय नही दिया है और न अपने गुरु परम्परा का ही उल्लेख किया है। रास की भाषा सरल एव सुबोध है। एक उदाहरण देखिये—

> अजोध्या नगरी अति भली, उत्तम कहीइ ठाम।
> राज करि परिवार सु, कीर्त्ति धवल तस नाम ॥१०॥
> तस धारि राणी रूयडी, रूपवत सुब सेष।
> सहि देवी नामि सुगु, भक्ति भरतार विवेक ॥११॥

८६ बलिभद्र चौपई (६६४६)

यह चौपई काव्य ब्रह्म यशोधर की कृति है जिसमे त्रेसठ शलाका महापुरुषो मे से ६ बलिभद्रो पर प्रकाश डाला गया है। इसका रचना काल सवत १५८५ है। स्कध नगर के अजित नाथ चैत्यालय मे इसकी रचना की गयी थी। ब्र० यशोधर भ० रामदेव के अनुक्रम मे होने वाले भट्टारक यश कीर्ति के शिष्य थे। चौपई मे १८६ पद्य है।

> सवत पनर पच्यासई, स्कध नगर मझारि।
> भवणि अजित जिनवर तणि ए गुण गाया सार ॥१८६॥

८७ यशोधररास (६६४६)

यह सोमकीर्ति का हिन्दी काव्य है जिसमे महाराजा यशोधर के जीवन पर प्रकाश डाला गया है। रचना गुढली नगर के शीतलनाथ स्वामी के मन्दिर मे की गयी थी। सारा काव्य दश ढालो से विभक्त है। ये ढालें एक रूप से सर्ग का ही काम देती है। इसकी भाषा राजस्थानी है जिसमे कही कही गुजराती के शब्दो का भी प्रयोग हुआ है। रास की सवत १६८५ की पाण्डुलिपि बू दी नगर के मन्दिर केगुटके मे उपलब्ध होती है।

९० चूनड़ी. ज्ञान चूनडी आदि (९७०८)

चूनडी एव ज्ञान चूनडी, पद सग्रह, नेमि व्याह पच्चीसी, बारहखडी एव शारदा लक्ष्मी सवाद आदि सभी रचनाये वेगराज कवि की हैं। कवि १९ वी शताब्दी के थे।

९१ नेमिनाथ को छन्द (९९२२)

'नेमिनाथ को छद' कृति हेमचन्द्र की है जो श्रीभूषण के शिष्य थे। इसमे नेमिनाथ का जीवन चित्रित किया गया है। रचना विविध छन्दो में विभक्त है छन्द की भाषा सस्कृत निष्ठ है लेकिन वह सरल एव सामान्य है। इसकी पद्य सख्या २०५ है। रचना प्रकाशन होने योग्य है।

८८ शालिभद्ररास (९६७८)

यह श्रावक फकीर की रचना है जो बघेरवाल जाति के खडीय्या गोत्र के श्रावक थे। इसका रचना काल सवत् १७४३ है। रास की पद्य सख्या २२१ है। रचना काल निम्न प्रकार दिया गया है—

अहो सवत् सतरासै वरस तीयाल।
मास वैसाख पूरिणम प्रतिपाल।
जोग नीखतर सव भल्या मिल्या गुढामझी।
पूरणवास रखते अनरघ राजई।
अहो सगली मन की पूगजी आस सालिभद्र गुण वरणउ ॥२२१॥

८९ गुणठाणा गीत (९६८३)

गुणठाणा गीत (गुणस्थान गीत) वह्म वर्द्धन की कृति है जो शोभाचन्द सूरि के शिष्य थे। गीत बहुत छोटा है और १७ छन्दो मे ही समाप्त हो जाता है। इसमे गुणस्थान के बारे मे अच्छा प्रकाश डाला गया है। भाषा राजस्थानी है।

९२ पद (९९३६)

यह एक मुसलिम कवि की रचना है जिसमे नेमिनाथ का गुणानुवाद किया गया है। नेमिनाथ के जीवन पर किसी मुसलिम कवि द्वारा यह प्रथम पद है। कवि नेमिनाथ के जीवन से परिचित ही नहीं था किन्तु वह उनका भक्त भी था। जैसा कि पद की निम्न पक्ति से जाना जा सकता है—

छपन कोटि जादो तुम मुकुट मनि।
तीन लोक तेरी करत सेवा।
खान मुहम्मद करत ही वीनती।
राखिले शरण देवाधिदेवा ॥६॥

९३ धनकुमार चरिउ (१०,०००)

धन्यकुमार चरिउ महाकवि रइधू की कृति है। रइधू अपभ्रंश के १५ वी शताब्दि के जबरदस्त महा कवि थे। अब तक इनकी २० से भी अधिक रचनायें उपलब्ध हो चुकी हैं। धन्यकुमार चरित इसी कवि की रचना है जिसकी पाण्डुलिपि कामा के दि० जैन मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे सग्रहीत है।

९४ तीर्थंकर माता पिता वर्णन (१०१३७)

यह सवत् १५४८ की रचना है जिसमे ३० पद है। इसके कवि है हेमलु जिसके पिता का नाम जिनदास एव माता का नाम वेल्हा था। वे गोलापूर्व जाति के वणिक थे। इसमे २४ तीर्थंकरो के माता पिता, शरीर, आयु आदि का वर्णन मिलता है। वर्णन के भाषा एव शैली सामान्य है। यह एक गुटके मे सग्रहीत है जो जयपुर के लश्कर के दि० जैन मन्दिर मे सग्रहीत है।

९५ यशोधर चरित्र (१०१८१)

मनसुखसागर हिन्दी के अच्छे कवि थे। इनका सम्मेदशिखर महात्म्य हिन्दी कृति पहिले ही मिल चुकी है। प्रस्तुत कृति मे यशोधर के जीवन पर वर्णन किया गया है। यह सवत् १८८७ की कृति है। इसी सवत् की एक प्रति शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर फतेहपुर मे सग्रहीत है। यह हिन्दी की अच्छी रचना है। मनसुखसागर की अभी और भी रचना मिलने की सभावना है।

९६ गुटका (१०२३१)

दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर मे एक गुटका पत्र सख्या १८-२९८ है। यह गुटका सवत् १६११ से १६४३ तक विभिन्न वर्षो मे लिखा गया था। इसमे १८८ रचनाओ का सग्रह है। गुटका के प्रमुख लेखक भट्टारक श्री विद्याभूषण के प्रशिष्य एव विनयकीर्ति के शिष्य ब्र० धन्ना थे इसमे जितनी भी हिन्दी कृतिया है वे सभी महत्वपूर्ण एव अप्रकाशित है। उन्हे कवि ने भिरि, देवपल्ली नगरो मे लिखा था। गुटके मे कुछ महत्वपूर्ण पाठ निम्न प्रकार है—

१	जीवधररास	त्रिभुवनकीर्ति	रचना काल सवत् १६०६
२	श्रावकाचार	प्रतापकीर्ति	—
३	सुकमाल स्वामीरास	धर्मरूचि	—
४	वाहुबलिवोलि	शातिदास	—
५	सुकौशलरास	सागु	—
६	यशोधररास	सोमकीर्ति	—
७	भविष्यदत्तरास	विद्याभूषण	—

९७ भट्टारक परम्परा

डूगरपुर के शास्त्र भण्डार में एक गुटका है जिसमे १४७१ से १८२२ तक भट्टारक सकलकीर्ति की परम्परा मे होने वाले भट्टारको का विस्तृत परिचय दिया गया है। सर्व प्रथम वागड देश के भू मच राज्य मे

होने वाले देहली पट्टस्थ भट्टारक पद्मचन्द से परम्परा दी गयी है। उसके पश्चात् भ० पद्मनन्दि एवं उसके पश्चात् भ० सकलकीर्ति का उल्लेख किया गया है। भ० सकलकीर्ति एवं भुवनकीर्ति के मध्य मे होने वाले भ० विमलेन्द्रकीर्ति का भी उल्लेख हुआ है। पट्टावली महत्वपूर्ण है तथा कितने ही नये तथ्यो को उद्घाटित करती है।

९८ भट्टारक पट्टावलि (६२८६)

उदयपुर के सभवनाथ मे ही यह एक दूसरी पट्टावली है जिसमे जो १६६७ मार्गशीर्ष सुदी ३ शुक्रवार से प्रारम्भ की गयी है इस दिन प० क्षमा का जन्म हुआ था जो भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति के पश्चात् भट्टारक बने थे। इसके पश्चात् विभिन्न नगरो मे विहार एवं चातुर्मास करते हुए, श्रावको को उपदेश देते हुए सन् १७५७ की मार्गशीर्ष बुदी ४ के दिन अहमदाबाद नगर मे ही स्वर्गलाभ लिया। उस समय उनकी आयु ६० वर्ष की थी। पूरी पट्टावली क्षेमेन्द्रकीर्ति की है। ऐसी विस्तृत पट्टावली बहुत कम देखने मे आयी है। उनकी ६० वर्ष की जो जीवन गाथा कही गयी है वह पूर्णतः ऐतिहासिक है।

९९ मोक्षमार्ग बावनी (१५९३)

यह मोहनदास की बावनी है। मोहनदास कौन थे तथा कहा के निवासी थे इस सम्बन्ध मे कवि ने कोई परिचय नही दिया है। इसमे सवैय्या, दोहा, कुडलिया एवं छप्पय आदि छन्दो का प्रयोग हुआ है। बावनी पूर्णत आध्यात्मिक है तथा भाषा एवं शैली की दृष्टि से रचना उत्तम है।

है नाही जामैं नहो, नहि उतपति विनास।
सो अभेद आतम दरब, एक भाव परगास ॥ १३ ॥
चित थिरता नहि मेर सम, अथिर न पत्र समान ॥
ज्यौ तर पवन झकोलतैं ठोर न तजत सुजान ॥ १४ ॥

१०० सुमतिनाथ पुराण (३१०४)

दीक्षित देवदत्त सस्कृत एवं हिन्दी के अच्छे विद्वान थे। उनकी सस्कृत रचनाओ मे सगर चरित्र, सम्मेदशिखर महात्म्य एवं सुदर्शन चरित्र उल्लेखनीय रचनायें हैं। सुमतिनाथ पुराण हिन्दी कृति है जिसमें पाचवे तीर्थंकर सुमतिनाथ के जीवन पर प्रकाश डाला गया है। इसमे पाच अध्याय हैं। कवि जिनेन्द्र भूषण के शिष्य थे। पुराण के बीच मे सस्कृत के श्लोको का प्रयोग किया गया है।

ग्रंथ सूची के सम्बन्ध में

प्रस्तुत ग्रथ सूची मे बीस हजार से भी अधिक पाण्डुलिपियो का वर्णन है। जिनमे मूल ग्रथ ५०५० हैं। ये ग्रथ सभी भाषाओ के हैं लेकिन मुख्य भाषा सस्कृत, प्राकृत एवं हिन्दी है। प्राकृत भाषा के भी उन ही ग्रंथो की पाण्डुलिपिया हैं जो राजस्थान के अन्य भण्डारो मे मिलती हैं। अपभ्रश की बहुत कम रचनाये इस सूची मे आयी हैं। अजमेर एवं कामा जैसे ग्रथागारो को छोडकर अन्यत्र इस भाषा की रचनायें बहुत कम मिलती है

सस्कृत भाषा में सबसे अधिक रचनायें स्तोत्र एव पूजा सम्बन्धी हैं। बाकी रचनायें वही सामान्य हैं। समयसार पर सस्कृत भाषा की जो तीन सस्कृत टीकाए उपलब्ध हुई है और जिनका ऊपर परिचय भी दिया जा चुका है वे महत्वपूर्ण है। लेकिन सबसे अधिक रचनायें हिन्दी भाषा की प्राप्त हुई हैं। वस्तुत अब तक जो हिन्दी जैन साहित्य प्रकाश मे आया है वह तो ग्र थ सूची मे वर्णित साहित्य का एक भाग है। अभी तो सैकडो ऐसी रचनायें हैं जिनका विद्वानो को परिचय भी प्राप्त नही हुआ है और जो हिन्दी की महत्वपूर्ण रचनायें है। सैकडो की सख्या मे गीत मिले हैं जो गुटको मे सग्रहीत हैं। इन गीतो मे नेमि राजुल गीत पर्याप्त सख्या मे है। इनके अतिरिक्त हिन्दी की अन्य विधाओ की भी रचनायें उपलब्ध हुई हैं वास्तव मे जैन विद्वानो ने काव्य के विभिन्न रूपो मे अपनी रचनायें प्रस्तुत करके अपनी विद्वत्ता का ही प्रदर्शन नही किया किन्तु हिन्दी को भी जनप्रिय बनाने मे अत्यधिक योग दिया।

ग्र थ सूची के इस विशालकाय भाग मे बीस हजार पाण्डुलिपियो के परिचय मे यदि कही कोई कमी रह गयी हो अथवा लेखक का नाम रचनाकाल आदि देने मे कोई गल्ती हो गयी हो तो विद्वान् उन्हे हमे सूचित करने का कष्ट करेंगे। जिससे भविष्य के लिये उन पर ध्यान रखा जा सके। शास्त्र भण्डारो के परिचय हमने उनकी सूची बनाते समय लिया था उसी आधार पर इस सूची मे परिचय दिया गया है। हमने सभी पाण्डुलिपियों का अधिक से अधिक परिचय देने का प्रयास किया हैं। सभी महत्वपूर्ण ग्र थ एव लेखक प्रशस्तिया भी दे दी गयी है जिनकी सख्या एक हजार से कम नही होगी। इन प्रशस्तियो के आधार पर साहित्य एव इतिहास के कितने ही नये तथ्य उद्‌घाटित हो सकेंगे तथा राजस्थान के कितने ही विद्वानो, श्रावको एव शासको के सम्बन्ध मे नवीन जानकारी मिल सकेगी।

राजस्थान के विभिन्न नगरो एव ग्रामो मे स्थापित कुछ भण्डारो को छोडकर शेष की स्थिति अच्छी नही है और यही स्थिति रही तो थोडे ही वर्षों मे इन पाण्डुलिपियो का नष्ट होने का भय है। इन भण्डारो के व्यवस्थापको को चाहिये कि वे इन्हें व्यवस्थित करके वेष्टनो मे बाधकर विराजमान कर दे जिससे वे भविष्य मे खराब भी नही हो और समय २ पर उनका उपयोग भी होता रहे।

महावीर भवन
जयपुर
दिनाक २५-१२-७१

कस्तूरचन्द कासलीवाल
अनूपचन्द न्यायतीर्थ

———

कतिपय अज्ञात एवं अप्रकाशित ग्रंथों की नामावलि

क्रम सख्या	ग्र थ सूची क्रमाक	ग्र थ नाम	ग्र थकार	भाषा
१	६७६४	अकलकदेव स्तोत्र भाषा	चपालाल बागडिया	हिन्दी
२	५५६१	अजीर्ण मजरी	न्यामतखा	,,
३	६१३३	अजितनाथ रास	ब्र० जिनदास	,,
४	४२२३	अनिरूद्ध हरण (उषाहरण)	रत्नभूषण	
५	४२२४	अनिरूद्ध हरण	जयसागर	,,
६	४२२६	अभयकुमार प्रबन्ध	पदमराज	,,
७	४२५१	आदित्यवार कथा	गगाराम	,,
८	१०१२०	अठाईस मूलगुणरास	ब्र० जिनदास	हिन्दी
६	६३७१	अर्गलपुर जिनवन्दना	भगवतीदास	,,
१०	६१३५	आदिपुराण रास	ब्र० जिनदास	,,
११	७८०७	आदिनाथ स्तवन	मेहउ	,,
१२	६१३५	आदिपुराण रास	ब्र० जिनदास	,,
१३	७५३१	अनन्तव्रत पूजा उद्यापन	सकलकीर्ति	संस्कृत
१४	४३०८	कथा सग्रह	विजयकीर्ति	हिन्दी
१५	८१	कर्मविपाक सूत्र चोपई	—	हिन्दी
१६	८२	कर्मविपाक रास	—	,,
१७	६६६	क्रियाकोश भाषा	दौलतराम कासलीवाल	,,
१८	६१४६	कर्मविपाक रास	ब्र० जिनदास	,,
१६	६१४७	करकण्डुनोरास	,,	हिन्दी
२०	१६८८	गुण विलास	नथमल बिलाला	,,
२१	६६८३	गुणठाणागीत	ब्रह्म वर्द्धन	,,
२२	७६८१	चतुर्दशी व्रतोद्यापन पूजा	विद्यानन्दि	,,
२३	७७२७	चौवीस तीर्थंकर पूजा	देवीदास	हिन्दी
२४	१०५८	चतुर्रचितारणी	दौलतराम कासलीवाल	,,
२५	६१४६	चतुर्गतिरास	वीरचन्द	हिन्दी
२६	६५०४	चतुर्गति नाटक	डालूराम	,,
२७	४३२६	चन्द्रप्रभ स्वामीनो विवाह	नरेन्द्रकीर्ति	,,
२८	३३२	चौदह गुणस्थान वचनिका	अखयराज	,,
२६	३४१	चौवीस गुणस्थान चर्चा	गोविन्दराम	,,

क्रम संख्या	ग्रंथ सूची क्रमांक	ग्रंथ नाम	ग्रंथकार	भाषा
३०	१०२३६	चारुदत्त प्रबन्धरास	ब्र० जिनदास	हिन्दी
३१	२००२	चेतावणी ग्रंथ	रामचरण	,,
३२	६४२१	चेतन पुद्गल धमालि	ब्र० बूचराज	,,
३३	६७०८	चूनडी एव ज्ञान चूनडी	वेगराज	,,
३४	७८६८	जम्बूद्वीप पूजा	प० जिनदास	संस्कृत
३५	३३५८	जीवधर चरिउ	रइधू	अपभ्रंश
३६	३३५६	जीवधर चरित	दौलतराम कासलीवाल	हिन्दी
३७	३३६०	जीवधर चरित्र प्रबंध	भ० यशकीर्ति	हिन्दी
३८	६१५७	जीवधर रास	ब्र० जिनदास	,,
३९	६१५३	जम्बूस्वामीरास	ब्र० जिनदास	हिन्दी
४०	५१५४	,,	नयविमल	,,
४१	२०५५	ज्ञानार्णव गद्य टीका	ज्ञानचन्द	संस्कृत
४२	५३०	तत्वार्थ सूत्र भाषा	साहिबराम पाटनी	,,
४३	६२३	त्रिभंगी सुबोधिनी टीका	आशाधर	संस्कृत
४४	१०१३७	तीर्थंकर माता पिता वर्णन	हेमलु	हिन्दी
४५	१०,०००	धनकुमार चरित्र	रइधू	अपभ्रंश
४६	३४६१	धर्मशर्माभ्युदय टीका	यशकीर्ति	संस्कृत
४७	६१६५	धर्मपरीक्षा रास	ब्र० जिनदास	हिन्दी
४८	६१७०	ध्यानामृत रास	ब्र० करमसी	,,
४९	३४८०	नागकुमार चरित	नथमल बिलाला	हिन्दी
५०	६१७१	नवकार रास	ब्र० जिनदास	,,
५१	६१७२	नागकुमार रास	ब्र० जिनदास	हिन्दी
५२	६१७९	नेमीश्वररास	,,	,,
५३	१०२३६	नागश्री रास	,,	,,
५४	६९२२	नेमिनाथ को छन्द	हेमचन्द	हिन्दी
५५	२१२१	परमात्मप्रकाश भाषा	बुधजन	,,
५६	२१२७	परमात्मप्रकाश टीका	ब्र० जीवराज	हिन्दी
५७	२८७१	पद्मचरित टिप्पण	श्रीचन्द मुनि	संस्कृत
५८	३५२०	पार्श्वचरित्र	तेजपाल	अपभ्रंश
५९	१०१२०	पानीगालण रास	ब्र० जिनदास	हिन्दी
६०	३०१३	पुराणसार	सागरसेन	संस्कृत
६१	२०९६	परमार्थ शतक	भगवतीदास	हिन्दी
६२	६१८०	परमहंस रास	ब्र० जिनदास	हिन्दी
६३	१४५७	ब्रह्म बावनी	निहाल चन्द	,,

क्रम संख्या	ग्रंथ सूची क्रमांक	ग्रंथ नाम	ग्रंथकार	भाषा
६४	६६४६	बलिभद्र चौपई	ब्र० यशोधर	हिन्दी
६५	,,	बाहुबलिवेलि	शांतिदास	,,
६६	३६६०	बारा आरा महाचौपई बंध	ब्र० यशोधर	हिन्दी
६७	६३०१	बुद्धि प्रकाश	वेल्ह	,,
६८	७१७३	भक्तामर स्तोत्र भाषा टीका	हेमराज	,,
६९	७१८५	भक्तामर स्तोत्र वृत्ति	भ० रतनचन्द	,,
७०		भट्टारक परम्परा	—	हिन्दी
७१	६२८६	भट्टारक पट्टावलि	—	हिन्दी
७२	६१६४	भविष्यदत्त रास	विद्याभूषण	हिन्दी
७३	३७२१	भोजचरित्र	भवानीदास व्यास	,,
७४	६१६६	मृगोसवाद	देवराज	,,
७५	१५६३	मोक्षमार्ग बावनी	मोहनदास	,
७७	१५३६	मुक्ति स्वयवर	वेणीचन्द	,,
७८	३८२४	यशोधर चरित्र	देवेन्द्र	हिन्दी
७९	६१६७	यशोधर रास	ब्र० जिनदास	हिन्दी
८०	६६४६	यशोधर रास	सोमकीर्ति	,,
८१	१०१८१	यशोधर चरित	मनसुखसागर	,,
८२	६३००	रत्नचूडरास	—	,,
८३	३८८८	रत्नपालप्रबन्ध	श्रीपति	,,
८४	६२०३	रामरास	ब्र० जिनदास	,,
८५	६२०२	रामचन्द्ररास	,,	,,
८५	६२०४	रामरास	माधवदास	हिन्दी
८७	५२३२	वचनकोश	बुलाकीदास	,,
८८	१६६४	वसुनन्दि श्रावकाचार भाषा	ऋषभदास	,,
८९	३०८२	वर्द्धमानपुराण भाषा	नवलराम	
९०	३०७०	वर्द्धमानपुराण	नवलशाह	,,
९१	६२०७	वर्धमानरास	ब्र० जिनदास	हिन्दी
९२	६३६९	वरिचन्द दूहा	लक्ष्मीचन्द	हिन्दी
९३	३९३१	विक्रम चरित्र चौपई	भाउ	,,
९४	१६६४	वसुनन्दि श्रावकाचार भाषा	—	
९५	६२९८	वृहद् तपागच्छ पट्टावली	—	संस्कृत
९६	७२८७	वर्धमान विलास स्तोत्र	भ० जगद्भूषण	,,
९७	३०९४	शांतिपुराण	पं० आशाधर	संस्कृत
९८	३०९५	शांतिनाथपुराण	ठाकुर	हिन्दी

क्रम संख्या	ग्रंथ सूची क्रमांक	ग्रंथ नाम	ग्रंथकार	भाषा
९९	३९६५	शांतिनाथ चरित्र भाषा	सेवाराम पाटनी	,,
१००	६३७८	शालिभद्ररास	फकीर	हिन्दी
१०१	२७०२	श्रावकाचार	ब्र० जिनदास	,,
१०२	१०२३१	श्रावकाचार	प्रतापकीर्त्ति	
१०३	४०५०	श्रीपालचरित्र	ब्र० चन्द्रसागर	,,
१०४	४१०३	श्रेणिक चरित्र	दौलतराम कासलीवाल	,,
१०५	४१०५	श्रेणिकप्रबन्ध	कल्याणकीर्ति	,,
१०६	६२२३	श्रुतकेवलीरास	ब्र० जिनदास	,,
१०७	२२८७	समयसार टीका	भ० शुभचन्द्र	संस्कृत
१०८	२३०६	समयसार टीका	देवेन्द्रकीर्ति	,,
१०९	२३०५	समयसार वृत्ति	प्रभाचन्द्र	,,
११०	४८२८	सम्यक्त्व कौमुदी	जगतराय	हिन्दी
१११	७३५४	समवसरणपाठ	रेखराज	,,
११२	७३५५	,,	मायाराम	,,
११३	६३१०	सकलकीर्त्तिनुरास	ब्र० सामल	,,
११४	६७७६	सबोध सताणनुदूहा	वीरचन्द	,,
११५	५७९४	स्वरोदय	मोहनदास	,,
११६	९४२१	संतोष तिलक जयमाल	बूचराज	,,
११७	२५२१	सामायिक पाठ भाषा	श्यामराम	,,
११८	६२३५	सुकौशलरास	वेणीदास	,,
११९	९६४९	,,	सागु	,,
१२०	३१०४	सुमतिनाथ पुराण	दीक्षित देवदत्त	,,
१२१	४१८८	सुदर्शन चरित्र भाषा	जैनन्द	,,
१२२	१०२३१	सुकुमाल स्वामी रास	धर्मरुचि	,,
१२३	१०२३१	सुदर्शन रास	ब्र० जिनदास	,,
१२४	१७९१	सुखविलास	जोधराज कासलीवाल	,,
१२५	२२५६	षट् पाहुड भाषा	देवीसिंह	,,
१२६	४९००	होली कथा	मुनि शुभचन्द्र	हिन्दी

राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों

की

ग्रंथ सूची-पंचम भाग

विषय—आगम, सिद्धान्त एवं चर्चा

१. अनुयोगद्वार सूत्र— × । पत्र सख्या ५६ । भाषा—प्राकृत । विषय—आगम । रचना-काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—यह पाच मूल सूत्रो मे से एक सूत्र है ।

२. अर्थप्रकाशिका—सदासुख कासलीवाल । पत्र स० ४६८ । आ० १५×७½ इञ्च । भाषा—राजस्थानी (ढूढारी गद्य) । विषय—सिद्धान्त । रचना काल स० १६१४ वैशाख सुदी १० । लेखन काल × । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर । वेष्टन स० १ ।

विशेष—इसका रचना कार्य स० १६१२ मे प्रारम्भ हुआ था । यह तत्वार्थसूत्र पर सदासुख जी की वृहद् गद्य टीका है ।

३. प्रति स० २ । पत्र स० ३६५ । ले० काल स० १६२६ वैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० २ **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मदिर ।

४. प्रति सं० ३ । पत्र स० ४१६ । आ० १२×७½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर, अलवर । वे० स० १४३ ।

५. प्रति सं० ४ । पत्र स० ३०६ । आ० १३×६½ इञ्च । ले० काल स० १६६१ । पूर्ण । वेष्टन स० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर महावीर, बूदी ।

६. प्रति स० ५ । पत्र स० २८६ । आ० १०½×६ इञ्च । ले० काल स० १६५० वैशाख बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, टोडारायसिंह ।

७. प्रति स० ६ । पत्र स० ३२१ । आ० ११½×७½ इञ्च । ले० काल स० १६३७ । पूर्ण । वेष्टन स० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—गणेशलाल पाण्ड्या चौधरी चाटसू वाले ने प्रतिलिपि कराई । पुस्तक साह भैरूवगसजी कस्य धन्नालाल जी इन्द्रगढ वालो ने मथुरालाल जी अग्रवाल कोटा वालो की मारफत लिखाई ।

८. प्रति सं० ७ । पत्र स० ३१२ । आ० १२×७½ इञ्च । लेखन काल स० १६३३ कार्तिक बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—श्रावक माधोदास ने इसी मन्दिर मे ग्रन्थ को चढाया था।

९ **प्रति स० ८** । पत्र स० ६१६ । ग्रा० १०½ × ७ इश्च । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन सख्या ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर वयाना ।

१०. **प्रति स० ९** । पत्र सख्या १६३ । ग्रा० १२½×७ इश्च । लेखन काल १६३० । पूर्ण । वेष्टन सख्या ५ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

११. **प्रति स० १०** । पत्र सख्या १२१ । ग्रा० १०×६½ इश्च । लेखन काल सवत् १६५५ सावण सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सख्या ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटियोका नैणवा

१२ **प्रति स० ११** । पत्र स० ६०१ । लेखन काल स० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन सख्या ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष— रिखवदास जैसवाल रहने वाला हवेली पालम जिला दिल्ली वाले ने प्रतिलिपि कराई थी ।

१३ **प्रति स० १२** । पत्र सख्या १०६ । ग्रा० ११½×५½ इश्च । लेखन काल स० १६४० भादवा बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सख्या ४६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—रिखवचन्द विन्दायक्या ने प्रतिलिपि की थी तथा सवत् १६६६ कार्तिक कृष्णा ८ को लश्कर के मदिर मे विराजमान किया था ।

१४. **अर्थसदृष्टि**— × । पत्र सख्या ५ । ग्रा० १२×४ इश्च। भापा—प्राकृत—सस्कृत । विपय—आगम । र० काल × । लेखन काल × । अपूर्ण । वेष्टन सख्या २१२ । ६५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

१५. **आगमसारोद्धार—देवीचन्द** । पत्र सख्या ८० । ग्रा० ८½×६ इश्च । भापा—हिन्दी । विपय—सिद्धान्त । र० काल स० १७४६ । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन सख्या ३७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—गुटका के रूप मे है । टीका का नाम सुखवोध टीका है ।

१६ **प्रति स० २** । पत्र सख्या १६ । ग्रा० १०×५ इन्च । लेखन काल × । वेष्टन सख्या १६६/१२६ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

इति श्री खरतरगच्छे श्री देवेन्द्रचन्द्रमणि विरचिता श्री आगमसारोद्धार वालाववोध सपूर्णा ।

१७ **अन्तगडदसाओ**— × । पत्र सख्या २१ । आकार १०×४½ इन्च । **भाषा—प्राकृत** विपय—आगम । रचना काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन सख्या ५३६ । **प्राप्ति स्थान**--भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—इसका सस्कृत मे अन्तकृद्दशासूत्र नाम है । यह जैनागम का आठवा अङ्ग है ।

१८. **अन्तकृतदशाग वृत्ति**—× । पत्र स० ८ । ग्रा० १०½×४ इन्च । भापा—प्राकृत । विपम—आगम । र० काल × । लेखन काल स० १६७५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८६ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—स० १६७५ वर्षे शाके १५४० प्रवर्तमाने आश्विनिमासे शुक्ल

पक्षे पूर्णमास्या तिथौ बुधवासरे श्री चन्द्रगच्छे श्री हीराचन्द सूरि शिष्य गगादास लिखितमल ।

१६. आचारांग सूत्र— × । पत्र स० २८ । आ० १०×४$\frac{1}{8}$ इन्च । भाषा–प्राकृत । विषय–आगम । र० काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन सख्या २०६ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष—प्रति प्राचीन है कही कही हिन्दी टीका भी है । प्रथम श्रुतस्कध तक है । आचाराग–सूत्र प्रथम आगम ग्रन्थ है ।

२०. प्रति सं० २ । पत्र सख्या ५ । लेखन काल × । वेष्टन स० ६६८ । अपूर्ण ।**प्राप्ति स्थान**–दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर ।

२१. आचारांग सूत्र वृत्ति—अभयदेव सूरि । पत्र स० १–१६५ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४ इन्च । भाषा–सस्कृत । विषय–आगम । र० काल × । लेखन काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २५३ । **प्राप्ति-स्थान**–दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष—प्रति प्राचीन है पर बीच के कितने ही पत्र नही हैं ।

२२. आचारांग सूत्र वृत्ति × । पत्र स० १०० । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{8}$ इन्च । भाषा–प्राकृत हिन्दी । विषय—आगम । र० काल—× । ले काल—× । पूर्ण । वे स १५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ, बूदी ।

२३. आवश्यक सूत्र—× पत्र स०—१० से ४४ । भाषा–प्राकृत । विषय–आगम । रचना काल–× । लेखन काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—इसका दूसरा नाम षडावश्यक सूत्र भी है । ग्रथ मे प्रतिदिन पाली जानी योग्य क्रियाओ का वर्णन है ।

२४ आवश्यक सूत्र निर्युक्ति ज्ञानविमव सूरि—पत्र सख्या-४४ । भाषा–सस्कृत । विषय–आगम । रचना काल–× । लेखन काल–स० १८८३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर

२५. आश्रव त्रिभगी-नेमिचन्द्राचार्य—पत्र स० २–३२ । आ १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय—सिद्धात । र काल × । ले काल × । अपूर्ण । वे स, ३०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

२६. प्रति स. २ । पत्र स० १० । आ १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल । × वे० स० ६३३ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लशकर, जयपुर ।

विशेष— प्रति टीका सहित है ।

२७. प्रति स. ३ । पत्र स ८७ । आ० १२×६ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वे स १४८ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर आदिनाथ, बूदी ।

विशेष— ८७ से आगे के पत्र नही है ।

२८. प्रति सं. ४ । पत्र स ६० । आ० १३×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३१ (२) **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका—इति श्रीनेमिचन्द्रसिद्धान्तचक्रवर्तीविरचिताया **श्री सोमदेव पण्डितेन** कृत टीकाया श्रीआश्रवबधउदय उदीरण सत्व प्रभृति लाटी भाषाया समाप्ता । प्रति सटीक है । टीकाकार प० सोमदेव है ।

२९. इक्कीस ठाणाप्रकरण—नेमिचद्राचार्य । पत्र स० ७ । आ०-१०×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत विषय—सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल स० १८२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूदी ।

विशेष—नैणसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

३०. प्रति स २. । पत्र स० १४ । आ० ११×४¾ इञ्च । ले० काल × । । वे० स० १८९ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लशकर, जयपुर ।

३१ प्रति स. ३. । पत्र स० ८ । आ० १०×४ इञ्च । लेखन काल × । पूर्ण । वे० स० ९७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३२. उक्तिनिरूपण— × । पत्र स० २१ । आ० १०¼×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आगम । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७६ । ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर, इन्दरगढ ।

३३. उत्तरप्रकृतिवर्णन— × । पत्र स० १२ । आ०-१०×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—सिद्धान्त । र काल—× । ले० काल—× । पूर्ण । वे० स० १३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूदी ।

विशेष - प० विरधीचन्द ने स्वपठनार्थ सुदारा मे प्रतिलिपि की थी ।

३४. उत्तराध्ययन सूत्र- × । पत्र स० ३६ । आकार-१०×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आगम शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी) ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । गुजराती गद्य टीका सहित है । लिपि देवनागरी है ।

३५. प्रति स. २ । पत्र सख्या—७ । भाषा-प्राकृत । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ७१६ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—वीसवा अध्याय सस्कृत छाया सहित है ।

३६. उत्तराध्ययन टीका— × । पत्र स ११४ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत-सस्कृत । विषय—आगम । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ५४४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७. प्रति स. २ । पत्र स० ७६-३२८ । आ० १०¼ × ५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वे स० ११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली, कोटा ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३८ उत्तराध्ययन सूत्र वृत्ति— × । पत्र स २-२१६ । भाषा—सस्कृत । विषय—आगम । र० काल - × । ले० काल - × । अपूर्ण । वे० स० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोक)

विशेष— वीच के वहुत से पत्र नही है ।

३९. उत्तराध्ययनसूत्र बलावबोधटीका-× । पत्र स २-२०५ । आ० १०×५ इञ्च । भापा-प्राकृत-सस्कृत । विपय—आगम । र० काल × । ले० काल । स० १६४१ कार्तिक सुदी १३ । अपूर्ण । वे० स० ३१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—सवत् १६४१ वर्षे कार्तिक सुदी १३ वारसोमे श्री जैसलमेरमध्ये लिपिकृता श्रावके ऋषि श्री ज्येठा पठनार्थं ।

४०. उत्तराध्ययन सूत्र बालावबोध टीका × । पत्र स० २१९ । आ० १०×४ इञ्च । भापा-हिन्दी (गद्य) । विपय—आगम । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (वू दी)

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४१. उपासकादशांग—पत्र स० ७८ । आ० १०×४½ इञ्च । भापा-प्राकृत । विपय-आगम । र० काल × । ले० काल स० १९०७ । पूर्ण । वेष्टन स० २४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (वू दी) ।

विशेष—मूल के नीचे गुजराती प्रभावित राजस्थानी गद्य टीका है । सवत् १९०७ मे फागुण सुदी २ को साधु माणक चन्द ने ग्राम नाथद्वारा मे प्रतिलिपि की थी ।

४२. प्रति सं० २ । पत्र स० ७ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (वू दी) ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४३. उवाई सूत्र—× । पत्र स० ७८ । आ० १० × ४ इञ्च । भापा-प्राकृत । विपय-आगम । र० काल—× । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० १४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

४४. प्रति सं० २ । पत्र स० ३८ । ले० काल स० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर वसवा ।

विशेष—राजपाटिका नगर प्रतिलिपि कृत ।

४५. प्रति सं० ३ । पत्र स० ८४ । आ० १०½ × ४¾ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन० मन्दिर वोरसली, कोटा ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा सटीक है ।

४६. एकषष्ठि प्रकरण × । पत्र स० २१ । आ० ११½×५½ इञ्च । भापा-प्राकृत । विपय—सिद्धात । र० काल × । ले० काल स० १७९४ फागुण बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १२३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर, बयाना ।

विशेष—जिनेश्वरसूरि कृत गुजराती टीका सहित है । अर्थ गाथाओ के ऊपर ही दिया है ।

४७. **एकसौंग्रडतालीस प्रकृति का व्यौरा**—× । पत्र स० ३ । ग्रा० ११×४ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय—सिद्धात । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४८ **ग्रङ्गपण्णत्ती**—× । पत्र स० २५ । ग्रा० १०×४½ इन्च । भाषा—प्राकृत । विषय—ग्रागम । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४९ **प्रति स० २** । पत्र स० ५-८ । ग्रा० १२× ५½ इन्च । ले० काल स० १५९९ । अपूर्ण । वेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है । सवत् १५९९ वर्षे पौष वुदी ५ भौमवासरे श्रीगिरिपुरे श्री ग्रादिनाथ चैत्यालये श्री मूल सघे भट्टारक श्री शुभचन्द्र गुरुपदेशात् लिखित ब्र० तेजपाल पठनार्थं ।

५०. **कर्म प्रकृति—नेमिचन्द्राचार्य** । पत्रस० १९ । ग्रा ११ × ४¾ इन्च । भाषा—प्राकृत विषय—सिद्धात । र०काल—× । ले०काल—स० १६८८ पौष वुदी ग्रमावस । पूर्ण । वेष्टनस० १३८१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६८८ वर्षे मिति पौषमासे ग्रसितपक्षे ग्रमावस्या तिथौ शुभनक्षत्रे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये मडलाचार्य श्री ५ श्रीयश कीर्तिस्तच्छिष्य ब्र० गोपालदासस्तेन स्वयमर्थं लिपिकृत स्वात्मपठनार्थं नगरे श्रीमहाराष्ट्र राजा श्रीवीठलदासराज्ये ।

५१ **प्रतिसं० २** । पत्रस० ३० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३१८ । **प्राप्ति स्थान**-उपरोक्त मन्दिर ।

५२ **प्रतिसं० ३** । पत्रस० १२ । ग्रा० १०½×४½ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २०२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

५३ **प्रतिस० ४** । पत्रस० २८ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४७२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

५४ **प्रतिसं० ५** । पत्रस० ७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०८० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

५५ **प्रतिस० ६** । पत्रस० १३ । ग्रा० १० × ५ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३८३ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

५६ **प्रतिसं० ७** । पत्रस० ११ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ, वूदी ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

५७ **प्रतिसं० ८** । पत्रस० १२ । ले०काल—स० १७०२ । पूर्ण । वेष्टनस० ५१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर ।

विषय—त्रिलोक चन्द के पठनार्थ लिखा गया था ।

५८. प्रतिसं० ९ । पत्रस० १२ । आ० १२×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

५९. प्रतिसं० १० । पत्रस० २६ । आ० १०×४ इञ्च । लेखन स० १८०६ माघ बुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनस० १३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—कामा मे जितसिंह के शासन काल मे पार्श्वनाथ चैत्यालय मे रतनचन्द ने स्व पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

६०. प्रतिस० ११ । पत्रस० १४ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

६१. प्रतिसं० १२ । पत्रस० ४२ । ले०काल स० १५८६ चैत्र बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है । इस प्रति की खडेलवालान्वय वैद गोत्रवाले प० लाला भार्या लालसिरि ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

६२. प्रतिसं० १३ । पत्रस० १६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

६३. प्रतिसं० १४ । पत्रस० १२ । ले०काल स० १७०० । पूर्ण । वेष्टनस० २५२-१०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का, डूगरपुर ।

प्रशस्ति—स० १७०० वर्षे फागुणमासे कृष्णपक्षे ११ दिने गुरुवासरे डडुकाग्रामे श्रीआदिनाथचैत्यालये श्रीमूलसघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री रत्नचन्द्राम्नाये ब्रह्म केशवा तत् शिष्य ब्र० श्री गगदास तत् शिष्य ब्र० देवराजास्य पुस्तक कर्मकाडसिद्धान्त लिखितमस्ति स्वज्ञानावर्णकर्मक्षयार्थं ।

६४. प्रतिसं० १५ । पत्रस० १-१७ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ७४३ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६५. प्रतिसं० १६ । पत्रस० १० । आ० ११×५ । वेष्टनस० १० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

६६. प्रतिसं० १७ । पत्रस० १८ । आ० ११×५ । लिपिकाल स० १७६५ पौष सुदी २ । वेष्टनस० ११ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है । महाराजा श्री जयसिंह के शासन काल मे अम्बावती नगर मे प० चौखचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

६७. वेष्टनस० । **१८** । पत्रस० १९ । आ० १०×४½ । वेष्टनस० १२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

६८. कर्मप्रकृति टीका-अभयचन्द्राचार्य । पत्रस० १५ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत विषय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६९ **कर्मप्रकृति टीका—भ० सुमतिकीर्ति एवं ज्ञानभूषण** । पत्रस० ५५ । आ० १०$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ । भाषा–सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल—× । लिपिकाल—स० १६४५ चैत्र बुदी । वेष्टनस० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष– लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

७०. **कर्मप्रकृति वर्णन**—× । पत्रस० १२० । आ०-४$\frac{1}{2}$×४ इन्च । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय – सिद्धान्त । र०काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टनस० १८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी ।

विशेष -अन्य पाठ भी हैं ।

७१. **कर्मप्रकृति वर्णन**—× । पत्रस० २ । आ० ११×४$\frac{3}{4}$ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२०६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—१४८ प्रकृतियो का ब्यौरा है ।

७२ **कर्मप्रकृति वर्णन**—× । पत्रस० २४-८३ । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस०—२५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७३ **कर्मप्रकृति वर्णन**—× । पत्रस० ११ । आ० ८×५ इन्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । र०काल—× । ले०काल स० १९११ । पूर्ण । वेष्टनस० १५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

७४ **प्रतिस०** २ । पत्रस० ३५ । ले०काल स० १९२० । पूर्ण । वेष्टनस०—२३ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७५ **प्रतिस०** ३ । पत्रस० ६ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ९६ । २७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर टोडारायसिह ।

७६ **कर्मविपाक**—× । पत्रस० १५ । आ०—१२×५$\frac{3}{4}$ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल–× । ले० काल–× । पूर्ण । वेष्टनस० १५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ बूंदी ।

७७ **कर्मविपाक—बनारसीदास** । पत्रस० १० । आ०—६$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सिद्धान्त । र०काल—१७०० । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टनस० २६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

७८ **कर्मविपाक—भ० सकलकीर्ति** । पत्रस० १६ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २३९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दिगम्बर जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—कर्मो के विपाक (फल) का वर्णन है ।

७९. **प्रतिसं०** २ । पत्रस० ३३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ बूंदी ।

८०. प्रति सं० ३—पत्रस० २४ । ले० स० १६१७ ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

८१. कर्मविपाकसूत्र चौपई— × । पत्रस० १२७ । आ० ११$\frac{3}{2}$ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—ग्रथ का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है —

श्री परमात्मने नम । श्री सरस्वत्यै नम ।

देव निरन्जणने नमु, अलख अजर अभिराम ।
घट घट अन्तर आतमा, परम जोत परणाम ॥ १ ॥
सावद वचन सवे तजि, राजरिध भडार ।
वनवासी मुनीवर नमु, जे सुद्धा अणगार ॥ २ ॥
जिनवर वाणी ने नमु, भविक जीव हितकार ।
जनम मरण ना दुख थकी, छुटे ते निरधार ॥ ३ ॥
शीलवत नर नार नै, समकीत वरत सहित ।
हरष धरी तेहने नमु, कर्म सुभट जेणें जीत ॥ ४ ॥

मध्यभाग (पत्र ७१)

देव तीरीय मनुष्य ते जाण । लेप काष्ट अने पाषाण ।
ए च्यारे नो करु वखाण, पण थे सुण जो चतुर सुजान ॥ १४०३ ॥
मन वचन काया ये जाण । एह मोकले धरमनी हाण ।
ए अणें चोगणा च्यार । लेखे करता था ये वार ॥ १४०४ ॥
करत करावत अनमोदना, तिगणावार करो एक मना ।
एम करता छती से भया । इन्द्री पच गणा ते मया ॥ १४०५ ॥

अन्तिम—

सतोपी कवले सदा समता सहित सुजाण ।
डर्‌या विसर्‌या रहे सदा ते पहुँचै निरवाण ॥ २४०७ ॥
आगमवाणी उचरै उर न वोले वोल ।
दयापरुपै रात दिन हसाये रहे अवोल ॥ २४०८ ॥
एक भगत चूके नही पाछे जल नो त्याग ।
आतम हेत जाणे सही ते समझे जिनमाग ॥ २४०९ ॥
पर निंद्या मुखनवि गमे हास्यादि न करत ।
सका काक्षा कोए नही जीत्यो ते शिवमत ॥ २४१० ॥
एहने मारग जे चले ते नर जाणो साध ।
एण थी वीजा जे नरा ते सव जाणो वाध ॥ २४११ ॥

इति श्री कर्मविपाक सूत्र चौपई सपूर्णम् । श्री उदयपुर नगर मध्ये लिपि कृता ।

८२. कर्मविपाक रास— । पत्रस० १८३ । आ०—९½ × ५ इञ्च । भाषा— हिन्दी पद्य । विषय—सिद्धात । र०काल स० १८२४ । पूर्ण । वेष्टनस० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक) ।

८३ प्रति स० २ । पत्र सख्या १५६ आ० ९¾×६ इञ्च । ले०काल स० १८८२ फागुण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक) ।

८४ कर्मविपाक सूत्र—पत्रस० १४ से १७ । आ० १० × ४ इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल स० १५१२ भादवा सुदी १३ । अपूर्ण । वे० स० ५४५ । **प्राप्ति-स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—श्रीखानपेरोजविजयराज्ये श्रीनागपुरमध्ये वृहद्गच्छे सागरभूतसूरिशिष्य श्रीदेशतिलक तच्छिष्य मुनि श्रुतमेरुणा लेखि । रा० देल्हा पुत्र सघप मेघा पठनार्थं ।

८५ कर्मविपाक सूत्र—देवेन्द्रसूरि— 'ज्ञानचन्द्रसूरि के शिष्य' । पत्रस० ११ । आ० १०×४ इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धात । र०काल स० × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बू दी) ।

विशेष—प्रति हिन्दी टव्वा टीका सहित है ।

८६ प्रति स० २ । पत्र स० ५९ । आ० १०½ × ६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १७२ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मदिर दबलाना ।

विशेष—प्रति टव्वा टीका सहित है ।

८७. कर्मसिद्धान्त माडणी—× । पत्रस० ६ । आ०-१०×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल-× । ले०काल-× । पूर्ण । वेष्टनस० ११३-९ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर वाडा वीस पथी दौसा ।

विशेष—हिन्दी (गद्य) अर्थ सहित है ।

८८ कल्पसूत्र—भद्रबाहु स्वामी । पत्रस० २०-५० । आ०-९½×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत/विषय आगम । र०काल × । ले०काल स० १६१३ चैत्र सुदी ७ । अपूर्ण । वेष्टनस० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—श्रीपत्तननगरे भट्टारक श्री धर्ममूर्त्तिसूरिलिखापित जयमडनगणि पठनार्थं ।

८९ प्रति सं० २ । पत्रस० ८५ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ६५५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

९० प्रति स० ३ । पत्रस० २-१५९ । ले०काल स० १८२३ । अपूर्ण । वेष्टनस० १३३७ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

९१. प्रति सं० ४ । पत्रस० ९ । ले०काल स० १५८४ चैत्र सुदी ५ । अपूर्ण । वेष्टनस० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बू दी ।

९२ प्रति स० ५ । पत्रस० १४९ । ले०काल स × । अपूर्ण । वेष्टनस० ७४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

९३ **प्रतिसं० ६** । पत्रस० १३४ । ले०काल × । पूर्ण (८ अध्याय तक)। वेष्टनस० १६।५५ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वडा वीस पथी, दौसा ।

विशेष—पत्रस० २५ तक गाथाओ के ऊपर हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है। इसके वाद वीच मे जगह २ अर्थ दिया है। भापा पर गुजराती का अविक प्रभाव है ।

९४ **प्रतिसं० ७**—पत्रस० ७५ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

९५ **प्रतिसं० ८** । पत्रस० २-६३ । आ० १२×४ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २८८ । ६८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है। अन्तिम पत्र के आवे हिस्से पर चित्र है ।

९६ **प्रतिसं० ९** । पत्रस० १२२ । ले०काल स० १५३६ । पूर्ण । वेष्टनस० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वसवा ।

विशेष—प्रति सचित्र है तथा चित्र वहुत सुन्दर हैं। अधिकतर चित्रो पर स्वर्ण का पानी या रग चढाया गया है। चित्रो की सख्या ३९ है। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर वसवा ।

९७ **कल्पसूत्र टीका**—× । स० १२ । आ० १०×४ इञ्च । भापा—गुजराती । विपय—आगम । र०काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टनस० ३०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, वू दी ।

विशेष—प्रति प्राचीन है लिपि देवनागरी है ।

९८ **कल्पसूत्र बालावबोध**—× । पत्रस० १२८ । आ० १०×४ इञ्च । भापा-प्राकृत हिन्दी । विषय—आगम । र०काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टनस० ५५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का, डू गरपुर ।

९९ **कल्पसूत्र वृत्ति**—× । पत्रस० १४० । आ० १०×४½ इञ्च । भापा—प्राकृत-सस्कृत । विपय—आगम । र०काल—× । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टनस० २५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, वून्दी ।

विशेष—१४० से आगे पत्र नही है। प्रति प्राचीन है। प्रथम पत्र पर सरस्वती का चित्र है ।

१०० **कल्पसूत्र वृत्ति**—× । पत्रस० १८३ । भापा—प्राकृत-गुजराती लिपि—देवनागरी । विपय—आगम । र०काल—× । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टनस० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर वसवा ।

विशेष—श्री जिनचन्द्रसूरि तेह तणी आलाइ एववििघ श्री पर्यू पणीपर्व आराधनउ हु तउ श्रीसघ आचन्द्रार्क जयवत पणउ ।

१०१ **कल्पाध्ययन सूत्र**—× । पत्रस० १०२ । भापा-प्राकृत । विपय-आगम । र०काल-× । ले०काल स १५२८ कार्तिक वुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस०-२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर वसवा ।

विशेष—सवत् १५२८ वर्षे कार्तिक वुदी ५ शनौ तद्दिने लिलिखे । प्रति सचित्र है तथा इसमे ४२ चित्र है जो वहुत ही सुन्दर हैं ।

१०२ कल्पावचूरि—× । पत्रस० ४० । आ० १०½×४ इच । भाषा-प्राकृत । विषय-आगम । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १८ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

१०३ कल्पावचूरि—× । पत्रस०१४१ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आगम । र०काल—× । ले०काल—सवत् १६६१ आसोज बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनस० ३०८ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी)

१०४ कल्पलता टीका—समयसुन्दर उपाध्याय । पत्रस० १२४ । भाषा — सस्कृत । विषय—आगम । र०काल—× । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टनस०—६२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०५. कषायमार्गणा –× । पत्रस० १–२५ । आ० १२½× ७ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय सिद्धान्त । र०कारा—× । ले० काल—× । वेष्टनस०—७३७ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर

१०६. कार्माणकाययोग प्रसग—× । पत्रस०—५ । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल—× । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टनस०—६७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० पचायती जैन मन्दिर भरतपुर ।

वशेष—तत्वार्थ सूत्र टीका श्रुत सागरी मे से दिया गया है ।

१०७. कूटप्रकार— × । पत्रस०–२ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल—× । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टनस०—२१७—६४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—अनतानुवधी कषायो का कूट वर्णन है ।

१०८ क्षपणासार—माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव । पत्रस० १४२ । आ० ११ × ६½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर दीवानजी, कामा ।

१०९ गर्भचक्रवृतसंख्यापरिमाण— × । पत्रस० २ । आ० १२ × ४ इञ्च । भाषा-प्राकृत सस्कृत । विषय—आगम । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २१६ । ६४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

११० गुणस्थान चर्चा— × । पत्रस० ३० । आ०—१०½ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त चर्चा । र०कारा— × । ले० काल—स० १७०५ माघ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० २०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ, टोडारायसिंह ।

१११ गुणस्थान चर्चा— × । पत्रस० १८० । आ०—६ ×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ, बूदी ।

११२ गुणस्थान चर्चा— × । पत्रस० २० । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-चर्चा । र०कारा × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर राजमहल ।

विशेष—पचकल्याणको की तिथि भी दी हुई है। गुटका साइज मे ग्रन्थ है।

११३ गुणस्थान चर्चा— × । पत्रस० ५१ । आ०—१२½ × ८ इञ्च । भाषा —हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त चर्चा । र०काल— × । ले० काल— × । अपूर्ण । वेष्टनस० ५० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर वडा बीस पथी दौसा ।

११४ गुणस्थान चर्चा— × । पत्रस० ५२ । आ० १२½ × ७½ इञ्च । भाषा —हिन्दी । विषय—सिद्धान्त चर्चा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११७–७५–**प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर भादवा ।

११५ गुणस्थान चर्चा— × । पत्रस० २–६७ । आ० १० × ४½ । भाषा —हिन्दी । विषय— सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल × । वेष्टनस० २५ । अपूर्ण—प्रथम पत्र नही है । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

११६ प्रति स० २ । पत्रस० १–१८ । आ० १०½ × ४¾ । ले० काल × । वेष्टनस० २६ । अपूर्ण—१८ मे आगे के पत्र नही है । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

११७ गुणस्थान चर्चा— × । पत्रस० १–८ । आ० ११ × ५ । भाषा—हिन्दी । विषय— चर्चा । र०काल × । ले० काल × । वेष्टनस० ७०१ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दिगम्बर जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

११८ गुणस्थान क्रमारोह— × । पत्रस० २ । आ० १२ × ५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चर्चा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ६५१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

११९. गुणस्थान गाथा—× । पत्रस० ३ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय— सिद्धात । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३४० । **प्राप्ति स्थान**–भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१२०. गुणस्थानचर्चा—× । पत्रस० १३ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चर्चा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २३४ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

१२१. प्रतिसं० २ । पत्रस० ३० । ले०काल स० १७०५ माघ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० २०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ, टोडारायसिंह ।

१२२. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १८० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर आदिनाथ, बूदी ।

१२३. प्रतिसं० ४ । पत्रस० २० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर, राजमहल

विशेष—पच कल्याणको की तिथिया भी दी हुई हैं । गुटका साइज मे ग्रन्थ है ।

१२४. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ५१ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ५० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर वडा बीस पथी दौसा ।

१२५. प्रतिस० ६ । पत्रस० ५२ । ले०काल-× । पूर्ण । वेष्टनस० ११७।७५ । **प्राप्तिस्थान**-दि० जैन मन्दिर भादवा (राज)

१२६. प्रतिस० ७ । पत्रस० २६७ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर

विशेष--प्रथम पत्र नही है ।

१२७. प्रतिस० ८ । पत्रस० १-१८ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २६ । **प्राप्तिस्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—१८ से आगे के पत्र नही है ।

१२८. प्रतिस० ९ । पत्रस० १८ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ७०१ । **प्राप्तिस्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

१२९. गुणस्थान चौपई—ब्रह्म जिनदास । पत्रस० ४ । आ०-९½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—चर्चा । र०काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टनस० १९२ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ, टोडारायसिंह (टोक) ।

१३० गुणस्थान मार्गणा वर्णन—नेमिचन्द्राचार्य । पत्रस०-५८ । आ०-१०×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल—× । ले० काल—स० १८८४ चैत्र सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० २४४-५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—आमेर मे प्रतिलिपि की गई थी ।

१३१. गुणस्थान मार्गणा चर्चा—× । पत्रस०—१२१ । आ०—१२×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चर्चा । र०काल—× । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टनस० २८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—इसमे अन्य पाठ भी हैं ।

१३२. गुणस्थान मार्गणा वर्णन—× । पत्रस०—७५ । आ०—९×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल—× । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टनस०—१७९-३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर, इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—यत्र सहित वर्णन है । पच परावर्त्तन का स्वरूप भी दिया है ।

१३३ गुणस्थान वर्णन—× । पत्रस०—८-४४ । आ०—११×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल—× । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टनस०—२९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

१३४. गुणस्थान वर्णन—× । पत्रस०—७ । आ०—१०×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल—× । ले० काल—स० १७८७ । भादवा बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस०—६३७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१३५. गुणस्थान रचना—× । पत्रस०-२० । आ०-१२×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-

सिद्धान्त। र० काल—X । ले० काल—X । अपूर्ण। वेष्टन स०—१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा।

१३६. गुणस्थान वृत्ति—रत्नशेखर सूरि। पत्र स०—३५ । आ०—९½×४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—सिद्धान्त। र० काल—X । ले० काल—X । अपूर्ण। वेष्टन स०—४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर।

विशेष—सूत्र स० २-६-८ नही है।

अन्तिम—प्राय पूर्वपरिचितं श्लोकं रुद्धतो रत्नशेषर सूरिभि ।
वृहद्गच्छीय श्रीवज्रसेनसूरिशिष्यं ।
श्रीहेमतिलकसूरिपट्टप्रतिवृत्त
श्रीरत्नशेखरसूरि स्वपरोपकाराय प्रकरणरूप तथा ॥
ग्रन्थाग्रन्थ स० ९६० ।

१३७. गोम्मटसार—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र स०—१५ । आ०—११½×४½ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—सिद्धान्त। र० काल—X । ले० काल—X । पूर्ण। वेष्टन स०—१३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूदी।

१३८. प्रति सं० २—पत्र स०—१४० । ले० काल स० १९४९ । पूर्ण। वेष्टन स०—१४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि ०जैन मन्दिर महावीरजी बूदी।

विशेष—धर्मभूषण के शिष्य जगमोहन के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी। मति सस्कृत टीका सहित है।

१३९. प्रति सं०—३ पत्र स०—२३ । ले० काल—X । पूर्ण। वेष्टन स०—२०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह ।

विशेष—अ तिम तीन पत्रो मे जीव एव धर्म द्रव्यो का वर्णन है।

१४०. प्रति सं०—४. पत्र स०—८७ । ले० काल—स० १७५९ (शक स० १६२४) पूर्ण। वेष्टन स०—९४ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती मन्दिर बयाना।

१४१. प्रति सं०—५ पत्र स०—८७ । ले० काल—X । पूर्ण । वेष्टन स०—१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बडा पचायती मन्दिर, डीग

विशेष—प्रति प्राचीन है।

१४२. प्रति सं०—६ पत्र स०—६७ । ले० काल—X । अपूर्ण। वेष्टन स०—१७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर

विशेष—प्रतिक्रमण पाठ के भी कुछ पत्र हैं।

१४३. प्रति सं०—७ । पत्र स०—३-४५ । ले० काल स०—X । अपूर्ण। वेष्टन स०—२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है।

१४४. प्रति स०—८ । पत्र स०—८७ । ले० काल—स० १६११ । पूर्ण। वेष्टन स०—१८२, ७७ ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का, डूगरपुर।

विशेष—लेखक प्रशस्ति कटी हुई है।

१४५. गोम्मट्टसार—नेमिचन्द्राचार्य। पत्रस०—५३७। भाषा—प्राकृत। विपय—सिद्धान्त। र०काल—×। ले० काल-१७६८ द्वि० भादवा सुदी १। पूर्ण। वेष्टनस०—३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन वडा पचायती मन्दिर, डीग।

विशेष—श्री हेमराज ने लिखी थी। प्रति सस्कृत टीका सहित है।

१४६. प्रतिस० २। पत्रस०—२८१। आ०—१२×५½ इञ्च। ले० काल—×। अपूर्ण। वेष्टनस०—१६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है।

१४७. प्रतिसं० ३। पत्रस०—२४१। आ० १२½ × ८ इञ्च। ले० काल—×। अपूर्ण। वेष्टनस०—२७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा।

विशेष—प्रति तत्व प्रदीपिका टीका सहित है।

१४८ गोम्मटसार—नेमिचन्द्राचार्य ×। पत्रस० ३८७। आ० १२½ × ६ इञ्च। भाषा—प्राकृत-सस्कृत। विपय—सिद्धान्त। र०काल ×। ले० काल स० १७०५। अपूर्ण। वेष्टनस० १५२ **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—वहुत से पत्र नही है। प्रति सस्कृत टीका सहित है। प्रशास्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १७०५ भादवा सुदी ५ श्रीरायदेशे श्रीजगन्नाथजी विजयराज्ये भीलोडा नगरे चन्द्रप्रभ चैत्यालये ।

१४९. गोम्मटसार टीका—सुमतिकीर्ति। पत्रस० ३४७। आ० १४×७ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विपय—सिद्धान्त। र०काल—स० १६२० भाद्रपद सुदी १२ ले० काल—स० १६६७। पूर्ण। वेष्टनस० १४४-२११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक)।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है।

१५०. प्रति स० २। पत्रस० ३२। आ०— १२ × ४½ इञ्च। ले० काल— स० १७६५ आसोज सुदी १२। पूर्ण। वेष्टनस० ६२। **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मदिर आदिनाथ बूदी।

विशेष—वसुपर मे पडित दोदराज ने पार्श्वनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी।

१५१ प्रति स० ३। पत्रस० ६५। ले० काल स० १८०६। पूर्ण। वेष्टनस० १८०६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी ४ कामा।

१५२ प्रति स० ४। पत्रस० ४८। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १६२। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मदिर दीवानजी, कामा।

१५३ प्रति स० ५। पत्रस० ६०। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० ६६। **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रति जीर्ण है। ग्रन्थ का नाम कर्म प्रकृति भी दिया है।

१५४. प्रतिसं० ५। पत्रस०१ से ६६। ले० काल—×। अपूर्ण। वेष्टनस०—६७। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरह पन्थी मन्दिर, वसवा।

१५५. प्रतिसं० ६। पत्रस० ४७। आ० ११½×५ इञ्च। ले० काल स० १८५६ भादवा सुदी १४। पूर्ण। वेष्टनस० ११६८। **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर।

१५६. गोम्मटसार (कर्म काण्ड टीका)—नेमिचन्द्र। पत्रस० १४। आ० ११×४¾ इञ्च। भाषा—प्राकृत सस्कृत। विषय—सिद्धान्त। र०काल—×। ले० काल १७५१ मार्गशीर्ष सुदी १५। पूर्ण। वेष्टनस० २७१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा।

विशेष—प्रशस्ति सवत १७५१ वर्षे मार्ग सुदी १५ वुधे श्री मूलसघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कु दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्तिदेव तत्पट्टे भट्टारक श्री ३ सुरेन्द्रकीर्तिदेव तद्गुरु भ्राता प० विहारीदासेन लिखित स्वहस्तेन ज्ञानावर्णी कर्मक्षयार्थं। प्रति सस्कृत टीका सहित है।

१५७. प्रतिसं० २। पत्रस० ५२। ले० काल—स० १७६४ जेठ बुदी २। पूर्ण। वेष्टनस० २८०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा।

१५८. प्रतिसं० ३। पत्रस० ३-११६। ले०काल— ×। अपूर्ण। वेष्टनस० २४। **प्राप्ति-स्थान**— दि० जैन मदिर तेरह पथी दौसा।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है।

१५९. गोम्मटसार कर्मकाण्ड—×। पत्रस० १०। भाषा—प्राकृत। विषय—सिद्धान्त। र०काल—×। ले०काल—×। अपूर्ण। वेष्टनस० ८८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर, भरतपुर।

१६०. गोम्मटसार चर्चा—×। पत्रस० ४। आ०१२×६ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—सिद्धात। र०काल—×। ले०काल—×। पूर्ण। वेष्टनस० ३२-१८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का, डूगरपुर।

१६१. गोम्मटसार चूलिका—×। पत्रस० ७। भाषा—सस्कृत। विषय—सिद्धात। र०काल— ×। ले०काल— ×। पूर्ण। वेष्टनस० ६६७। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर।

विशेष—हेमराज ने लिखा था।

१६२. गोम्मटसार पूर्वार्द्ध (जीवकांड)— ×। पत्रस० १२३। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—सिद्धात। र०काल— ×। ले०काल— ×। पूर्ण। वेष्टनस० १०४३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है।

१६३. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) भाषा टीका— ×। पत्रस० ४०। आ० १०×५ इञ्च। भाषा—प्राकृत हिन्दी। विषय—सिद्धात। र०काल— ×। ले०काल—×। पूर्ण। वेष्टनस० ६६६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर।

१६४. **गोम्मटसार (जीवकाण्ड) भाषा-महा पं० टोडरमल।** पत्रस० १०० । आ० १३×७½ इञ्च । भापा—राजस्थानी (ढूढारी गद्य) । विपय—सिद्धात । र०काल—× । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टनस० ११७ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

१६५ **प्रतिस० २** । पत्रस० ४८० । आ० १२×८½ इञ्च । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टनस० ८६-१ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीस पथी दौसा ।

१६६. **प्रतिसं० ३** । पत्रस० ६ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल स० × । पूर्ण । वेष्टनस० ६१४ । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—केवल प्रथम गाथा की टीका ही है ।

१६७. **प्रतिस० ४** । पत्रस० २६ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टनस० ४३ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा ।

१६८ **गोम्मटसार भाषा-महा पं० टोडरमल** । पत्रस० १-८० । आ० १२½×६ । भापा-राजस्थानी गद्य । विपय—सिद्धान्त । र०काल—× । ले०काल—× । वेष्टनस० ७३६ । अपूर्ण । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१६९. **गोम्मटसार भाषा-महा प० टोडरमल** । पत्रस० ५७२ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा-राजस्थानी (ढूढारी) गद्य विपय—सिद्धात । र०काल—स० १८१८ माघ सुदी ५ ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टनस० १५७५ **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१७० **प्रतिसं० २** । पत्रस० ८९० । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० १४०० । **प्राप्ति-स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—सम्यक्ज्ञान-चन्द्रिका टीका सहित है ।

१७१. **प्रतिस० २** । पत्रस० १०२० । ले०काल स०—× । अपूर्ण । वेष्टनस० ५५-८५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन बीस पथी मन्दिर दौसा ।

विशेष—सम्यक्ज्ञान-चन्द्रिका टीका सहित है ।

१७२. **प्रतिस० ३** । पत्रस० १०२१ । ले०काल स०-× । पूर्ण । वेष्टनस० २५२ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

विशेष—प्रति सुन्दर है ।

१७३. **प्रतिस० ४** । पत्रस० १०२६ । ले०काल स० १९५६ भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० ६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर महावीर स्वामी, बूदी ।

१७४. **प्रतिस० ५** । पत्रस० ३२५ । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टनस० ४२३ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१७५. **प्रतिसं० ६** । पत्रस० ७६४ । ले०काल स० १८६० भादवा सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० ४२३ । **प्राप्तिस्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्रति लब्धिसारक्षपणासार सहित है । कुम्हेर मे रणजीत के राज्य मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१७६. प्रतिसं० ७ । पत्रस० ६८२ । ले०काल स०—× । पूर्ण । वेष्टनस० २३ । **प्राप्ति-स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

१७७. प्रतिसं० ८ । पत्रस० ३०६ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टनस० १ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मन्दिर चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—प्रति सदृष्टि सहित है । पत्रस० १५६ तक लब्धिसार क्षपणासार है । ६७ वें पत्र मे सदृष्टि भूमिका तथा अन्तिम ५० पत्रो मे लब्धिसार, क्षपणासार तथा गोम्मटसार की भाषा है ।

१७८. प्रतिसं० ९ । पत्रस० ५०४ । ले०काल स०—१८१६ । पूर्ण । वेष्टनस० ६ । **प्राप्ति-स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—पत्रस० २७० से ५०४ तक दूसरे वेष्टनस० मे है ।

१७९. प्रतिसं० १० । पत्रस० १००० । ले०काल स० १६५८ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० ५७ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्योका नैणवा (बू दी) ।

विशेष—सम्यक्ज्ञान चन्द्रिका टीका सहित है ।

१८०. प्रतिसं० ११ । पत्रस० ७३२ । ले काल स०—× । पूर्ण । वेष्टनस० १५।१७१ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

१८१. प्रतिसं० १२ । पत्रस० ६८१ । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टनस० १४५ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह टौंक ।

विशेष—६८६ के आगे के पत्र नही हैं ।

१८२. प्रतिसं० १३ । पत्रस० १३४६ । ले० काल स० १६२२ सावण बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० १ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन वडा मन्दिर फतेहपुर (शेखावाटी)

विशेष—यह ग्रन्थ ४ वेष्टनो मे बधा है । टीका का नाम सम्यक्ज्ञान चन्द्रिका है । लब्धिसार क्षपणासार सहित है । प० सदासुखदासजी कासलीवाल ने उधव लाल पाण्डे चाकसू वालो से प्रतिलिपि करवाई थी ।

१८३. प्रतिसं० १४ । पत्रस० १२६५ । ले० काल स० १८६० माघ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० १५।६१ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

विशेष—सम्यक्ज्ञान चन्द्रिका टीका है सदृष्टि भी पूरी दी हुई है । यह ग्रन्थ तीन वेष्टनो मे बधा हुआ है ।

१८४. प्रतिसं० १५ । पत्रस० ७६-३८५ । आ०—१२×८ इञ्च । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टनस० ८४-३८ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मन्दिर वडा बीस पथी दौसा ।

१८५. गोम्मटसार भाषा—× । पत्रस० २५ । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टनस० ७८।५६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

१८६. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) भाषा—हेमराज । पत्रस० ६६ । आ० १४×८½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल—१७३४ आसोज सुदी ११ । ले० काल स० १६५४ । पूर्ण । वेष्टनस० १४।१६ । **प्राप्तिस्थान** । दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

१८७. **प्रतिस० २** । पत्रस० ६६ । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० ५१ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

१८८. **प्रतिस० ३** । पत्रस० ६६ । ले० काल स० १८६४ पौष बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ११४ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

१८९. **प्रतिस० ४** । पत्रस० १०७ । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० १४ । **प्राप्तिस्थान**-दि० जैन मन्दिर महावीर स्वामी बून्दी ।

१९०. **प्रतिस० ५** । पत्रस० ४६ । ले० काल स० १८२४ । पूर्ण । वेष्टनस० १२५ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

१९१. **प्रतिसं० ६** । पत्रस० ५६ । ले० काल स० १९३१ । पूर्ण । वेष्टनस० ३७६ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—रसिक लाल मुशी ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१९२. **प्रतिस० ७** । पत्रस० ९७ । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० ३१ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर, बयाना ।

विशेष—सवत् १९४१ मे गूजरमल गिरधरवाका ने ग्रन्थ को मन्दिर मे चढ़ाया था ।

१९३. **प्रतिसं० ८** । पत्रस० ६५ । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० ७ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर बीस पथी दौसा ।

विशेष—श्रवक खेमचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

१९४. **प्रतिसं०** । ९ पत्रस० ७९ । ले० काल— स० १८६० । पूर्ण । वेष्टनस० ८६ । दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—अनन्तराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१९५. **प्रतिस० १०** । पत्रस० १२७ । ले० काल— × । वेष्टनस० १२७ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

१९६. **प्रतिस० ११** । पत्रस० ६२ । ले० काल स० १८२३ प्रथम माघवुदी ९ । पूर्ण । वेष्टनस० १८।२२ **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

१९७. **गोम्मटसार 'पचसग्रह' वृत्ति**— × । पत्रस०–२३८ । आ०–१४×७ इञ्च । भाषा–प्राकृत-सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले० काल— × । अपूर्ण । वेष्टनस०—११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी ।

विशेष—सस्कृत टीका सहित है । २३८ के आगे पत्र नही है ।

१९८. **प्रतिस० २** । पत्रस०—३२० । आ०—१४×६३/४ इञ्च । ले० काल—स० १८२५ । पूर्ण । वेष्टनस०—५२-३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

१९९. **गोम्मटसार (पचसग्रह) वृत्ति—अभयचन्द्र** । पत्रस० ४०१ । आ० १४×६ इञ्च ।

भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल—× ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन स०—५३७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२००. प्रति सं०—२ । पत्रस०—१–१५७ । आ०–१०½×५½ इञ्च । ले० काल–× । वेष्टन स०–७६४ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

२०१. प्रति सं०—३ । पत्रस०—१४६ । आ०–१२×५½ इञ्च । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन स०—१८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

२०२. प्रति सं०—४ । पत्रस०—३३० । आ०—१४×६ इञ्च । ले० काल—स० १७१७ भादवा बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स०—३४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—अन्तिका मे श्वे० धर्मघोष ने प्रतिलिपि की थी ।

२०३. गोम्मटसार वृत्ति—केशववर्णी । पत्रस०—३७६ । आ०—१४×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल—× । ले० काल—वीर स० २१७७ ज्येष्ठ सुदी ५ । वेष्टन स०—९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—सहसमल्ल के कहने से प्रति लिखी गई थी ।

२०४. गोम्मटसार वृत्ति— × । पत्रस० ४२६ । आ० १२ × ८½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल स० १७०५ । पूर्ण । वेष्टन स० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर, उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—सवत् १७०५ वर्षे वैशाख शुक्ला द्वितीया भौमवासरे राय देशस्य श्री पुलिदपुरे श्री चन्द्रप्रभुचैत्यालये श्रीमूलसघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे .... . भटारक सकलकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० भुवनकीर्ति ... . तत् शिष्य मुनि श्रीदेवकीर्ति तत् शिष्याचार्य जी कल्याणकीर्ति तत् शिष्य ब्रह्म नेजपालेन स्वज्ञानावरणीयकर्मक्षयार्थं ... ... कल्याण कीर्ति तत् शिष्याचार्य श्री त्रिभुवनचन्द्र-पठनार्थं ।

२०५. गोम्मटसार जीवकाण्ड वृत्ति (तत्वप्रदीपिका)— × । पत्रस० २६ से १६८ । आ०—१० × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल— × । ले० काल— × । अपूर्ण । वेष्टन स० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी, बू दी ।

२०६. गोम्मटसार संदृष्टि—आ० नेमिचन्द्र । पत्रस० ११ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × अपूर्ण । वेष्टन स० २०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

२०७. गौतमपृच्छा सूत्र— × । पत्रस० १३ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा—प्राकृत—हिन्दी । विषय—आगम । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना ।

विशेष—१२ वा पत्र नहीं है । प्राकृत के सूत्र सामने हिन्दी अर्थ सूत्र रूप मे है । सूत्र स० ६४ ।

२०८. गौतमपृच्छा— × । पत्रस० १८ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-

आगम । र० काल— × । ले० काल-सवत् १७८१ । पूर्ण । वेष्टन स० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पचायती, दूनी (टोक) ।

विशेष—पडित शिवजीराम ने शिष्य नेमिचन्द्र के पठनार्थ दूणी नगर मे प्रतिलिपि की थी ।

२०९. प्रति स० २ । पत्र स० १९ । आ० ८ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । र० काल— × । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—(दि० जैन मदिर पचायती दूनी (टोक) ।

विशेष—श्री फतेहचन्द के शिष्य वृन्दावन उनके शिष्य शीतापति शिष्य प० शिवजीलाल तत् शिष्य नेमिचन्द आत्मकल्याणार्थं ।

२१०. प्रति स० ३ । पत्र स० ७९ । ले० काल स० १८७५ । पूर्ण । वेष्टन स० ७४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

२११ प्रति सं० ४ । पत्र स० ४२ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

२१२. गौतम पृच्छा— × । पत्र स०—७९ । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल—१८७५ । पूर्ण । वेष्टन स० ७४२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

२१३. प्रति सं० २ । पत्र स० ४२ । भाषा—सस्कृत । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० ७४५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मदिर ।

२१४. गौतम पृच्छा— × । पत्र स० ४ । आ० १०½ × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५४२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—११९ पद्य है ।

२१५. प्रति सं० २—पत्र स० ६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मदिर उदयपुर ।

२१६. चतु शरणप्रकीर्णक सूत्र—पत्र स०— ४ । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल— × । ले० काल—स० १७०३ । पूर्ण । वेष्टन स० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जै० पचायती मदिर डीग ।

२१७ चतुःसरण प्रज्ञप्ति— × । पत्र स० २ से ५ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय—आगम । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १९० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

२१८. चर्चा—भ० सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र स० १३ । आ० ८ × ६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चर्चा । वेष्टन स० ४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल टोक ।

विशेष—जैन सिद्धान्तो को चर्चा के माध्यम मे समझाया गया है ।

२१९. चर्चा— × । पत्र स० ३ । आ० ९½ × ४½ । भाषा—सस्कृत । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ६७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

२२०. चर्चा—पत्रस० ३८ । आ० १३ × ६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३७ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल टोंक ।

२२१. चर्चाकोश—× । पत्रस० १२४ । भाषा-हिन्दी । विषय—चर्चा । र०काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन० स० ८८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरह पथी मदिर बसवा ।

२२२. चर्चा ग्रन्थ—× । पत्र स० २-६ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । मन्दिर विषय—चर्चा । ले० काल—× । र०काल—× । वेष्टन स० ७१४ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन लश्कर, जयपुर ।

२२३. चर्चा नामावली—× । पत्र स० ३३ । आ० १२×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चर्चा । र०काल—× । ले० काल०—स० १९७९ माघ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—जैन सिद्धान्तो की चरचाओ का वर्णन है ।

२२४. चर्चा नामावली हिन्दी टीका सहित—× । पत्र स० ५७ । आ०—१०×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत हिन्दी । विषय—सिद्धान्त चर्चा । र०कारा—× । ले० काल०— स० १९३९ सावन बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ११८ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

२२५. चर्चापाठ—× । पत्र स० १८ । आ०—८×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय–सिद्धान्त । र०काल—× । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ बूदी ।

२२६. चर्चाबोध—× । पत्र स० १४ । आ० १½×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय-चर्चा । र०काल–× । ले० काल–× स०१९७३ । पूर्ण । वेष्टन स० । ६१ । २२ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

२२७. चर्चाग्रंथ—× । पत्र स० ४० । आ० ११×५½ इच । भाषा हिन्दी । विषय—चर्चा । र०काल–× । ले० काल–स० १८०२ । पूर्ण । वेष्टन स० १४५५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय शास्त्र भण्डार अजमेर ।

२२८. चर्चाशतक—द्यानतराय । पत्र स० ६ । आ० १०¾×५इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । र०काल–× । ले० काल–× । अपूर्ण । वेष्टन स० ४५७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय शास्त्र भण्डार अजमेर ।

विशेष— सैद्धान्तिक चर्चाओ का वर्णन है ।

२२९. प्रतिसं० २ । पत्र स० ६२ । ले० काल–स० १९४० काती सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० १४७७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय शास्त्र भण्डार अजमेर ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है ।

२३०. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १७ । ले० काल०—× । पूर्ण । वेष्टन स० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

२३१. **प्रतिसं० ४।** पत्रस० १०२। ले०काल स० १६५२ आसोज सुदी ६। पूर्ण। वेष्टनस० ६१। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी।

विशेष—झगडावत कस्तूरचन्द जी तत् पुत्र चोखचन्द ने प्रतापगढ के चन्द्राप्रभ चैत्यालय मे लिखवाया था।

२३२. **प्रतिसं० ५।** पत्रस० १६। ले०काल—×। पूर्ण। वेष्टनस० ७६। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी।

२३३. **प्रतिसं० ६।** पत्रस० २६। ले०काल—×। पूर्ण। वेष्टन स० १३६। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदा बूदी।

२३४. **प्रतिसं० ७।** पत्रस० ७१। ले०काल—×। अपूर्ण। वेष्टन स० १६३। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी।

विशेष—प्रथम पत्र नही है।

२३५ **प्रतिसं० ८।** पत्रस० १००। ले० काल— स० १६४२। पूर्ण। वेष्टन स० २७। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी।

विशेष—प्रति टीका सहित है।

२३६ **प्रतिसं० ९।** पत्रस० १५। ले०काल—×। अपूर्ण। वेष्टन स० २२३। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक।

२३७. **प्रतिस० १०।** पत्रस० ६६। ले०काल—स० १६४३। पूर्ण। वेष्टन स० ३५। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह टोक।

२३८. **प्रतिस० ११।** पत्रस० १६। ले०काल स० १८६२। पूर्ण। वेष्टन स० ४५। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा।

२३९ **प्रतिसं० १२।** पत्रस० १०२। ले०काल स० १६२७। आसोज बुदी १३। पूर्ण। वेप्टन स० ४०। **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

विशेष—प्रति टीका सहित है।

२४०. **प्रतिसं० १३।** पत्रस० ६३। ले०काल स० १६३८। ज्येष्ठ सुदी ३। वेप्टन स० १२४/२०। **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ़।

विशेष—प्रति बहुत सुन्दर है तथा हिन्दी गद्य टीका सहित है।

२४१ **प्रतिस० १४।** पत्रस० १६। ले०काल—×। अपूर्ण। वेष्टन स० १४३।१६। **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ।

२४२. **प्रतिस० १५।** पत्रस० २५। ले०काल स०—×। अपूर्ण। वेष्टन स० ६६। **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ।

२४३. **प्रतिस० १६।** पत्रस० १५। ले०काल—×। पूर्ण। वेष्टन स० १७०। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर।

विशेष—१६ वें पत्र से द्रव्य सग्रह है ।

२४४. प्रतिसं० १७ । पत्रस० ६६ । ले०काल स० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन स० १७६ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—प्रति हिन्दी गद्य टीका सहित है । टीकाकार राजमल्ल पाटनी है ।

२४५. प्रतिसं० १८ । पत्रस० ७५ । ले०काल—× । वेष्टन स० ४२ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—हिन्दी गद्यार्थ सहित है ।

२४६. प्रतिसं० १६ । पत्रस० ५६ । आ० १०½×७ इञ्च । ले०काल स० १६३८ वैशाख सुदी ८ । पूर्ण । वे० स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर बयाना ।

२४७. प्रतिसं० २० । पत्रस० ६५ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० १३ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन दीवानजी का मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है ।

२४८. प्रतिसं०—२१ । पत्रस०—५३ । ले० काल—१८६४ । पूर्ण । वेष्टन स०—३५८ ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२४९. प्रतिसं०—२२ । पत्रस०—५५ । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन स०—३६४ ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२५०. प्रतिसं०—२३ । पत्रस०—१८ । ले० काल—१८१८ आसोज सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स०—३६५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—भरतपुर मे प्रतिलिपि की गई थी । मूल पाठ है ।

२५१. प्रतिसं०—२४ । पत्रस०—५३ । ले० काल—१८६८ । पूर्ण । वेष्टन स०—३६६ ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है । उपरोक्त मन्दिर ।

२५२. प्रति स०—२५ । पत्रस०—५३ । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन स०—४२२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२५३. प्रति सं०—२६ । पत्रस०—१० । ले० काल—स० १६२२ । पूर्ण । वेष्टन स०—११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—लश्कर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२५४. प्रतिसं०—२७ । पत्रस०—८८ । भाषा—हिन्दी । ले० काल—स० १६२८ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स०—८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

२५५. प्रतिसं०—२८ । पत्रस०—५४ । ले० काल—स० १८२० । पूर्ण । वेष्टन स०–२०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२५६. प्रतिसं०—२६ । पत्रस०—५३ । ले० काल–१६३१ माघ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

२५७. **प्रतिस०—३०** । पत्रस०-५६ । ले० काल-१६३२ । पूर्ण । वेष्टन स०—५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का, डीग ।

२५८. **प्रतिस०—३१** । पत्रस०—५६ । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टन स०—६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास, पुरानी डीग ।

विशेष—प्रति अशुद्ध एव अव्यवस्थित है ।

२५६. **प्रतिस०—३२** । पत्रस०—१०४ । ले० काल—स० १६४७ अपाढ बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स०—६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वडा वीस पथी दौसा ।

विशेष—हिन्दी गद्य मे टीका भी है । जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२६०. **प्रतिस०—३३** । पत्र स० ७७ । ले० काल-स० १६३४ वैशाख सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

वशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है कास्टासिंघे माथुरसंघे पुष्करगणे लोहाचार्य आम्नाय भट्टारक जी श्री श्री १०८ श्री ललितकीर्ति भट्टारकजी श्री श्री १०८ श्री राजेन्द्रकीर्ति जी तत् शिष्य पडित जोरावर चद जी लिखायो फतेहपुर मध्ये लिपिकृत प्रेमसुख भोजक ।

२६१. **प्रतिस० ३४** । पत्र स० १२ । ले० काल—स० १६०० कार्तिक बुदी १४ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी ।

विशेष—माली लूलचन्द ने लिपि की थी ।

२६२ **प्रतिस० ३५** । पत्र स० ६२ । ले० काल—स० १६३६ । पूर्ण । वेष्टन स०—६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मदिर उदयपुर ।

२६३ **प्रतिस० ३६** । पत्र स०२६ । ले०काल—१६०३ । पूर्ण । वेष्टन स० २२५-६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का, डूगरपुर ।

२६४ **प्रतिसं० ३७** । पत्र स०—३८ । ले० काल— स० १६६६ कार्तिक बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स०—५१३ ।

विशेष—रिषभचन्द बिन्दायक्या ने प्रतिलिपि कर लश्कर के मदिर मे विराजमान किया । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

२६५. **चर्चाशतक टीका—हरजीमल** । पत्र स० ५६ । आ० १३×७ इन्च । भाषा-हिन्दी (पद्य तथा गद्य) । विषय—चर्चा । र०काल—× । ले० काल—स० १६३० । पूर्ण । वेष्टन स०-३४ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

विशेष—हरजीमल पानीपत वाले की टीका सहित है । १०४ पद्य हैं । मिश्र ठाकुरदास हिण्डौन वाले ने प्रतिलिपि की थी । लिखाइत लालाजी माधोसिंहजी पठनार्थ सुखलाल कानूनगो का बेटा नाती हुलासी राम का, गोत्र चादुवाड बयाना वाले ने माधोदास श्रावक उदासीन चादवाड कारण आप घर मे रिक्त होकर यह ग्रन्थ लिखवाकर चन्द्रप्रभु के पुराने मन्दिर मे चढाया ।

२६६. **प्रतिस० २** । पत्रस० ७६ । विषय-चर्चा । र० काल-× । ले० काल-× । पूर्ण ।

वेष्टन स० १०३ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, वू दी ।

विशेष—इति चर्चाशतक भाषा कवित्त द्यानतराय कृति तिनकी अर्थ टिप्पण हरजीमल पाणीपथ की वणाई सपूर्ण । यह पुस्तक श्री अभिनदनजी का मदिर की छै ।

२६७. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ६७ । ले० काल–स० १६४६ पौष सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी, वू दी ।

२६८. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ८० । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर महावीर स्वामी, वू दी ।

२६९. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ५३ । ले० काल–स० १६५६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर महावीर स्वामी, वू दी ।

२७०. चर्चाशतक टीका— नाथूलाल दोसी । पत्र स० ८६ । आ० १२×८½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-सिद्धान्त-चर्चा । र० काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स०—८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर महावीर स्वामी, वू दी ।

विशेष—प्रति टव्वा टीका सहित है ।

२७१. चर्चा समाधान— × । पत्र स० १३ । आ० ६½×७ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चर्चा । ले०काल—× । र०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० २६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान वू दी ।

२७२. चर्चासमाधान— भूधरदास । पत्र स० १५५ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—चर्चा । र० काल—स० १८०६ माघ सुदी ५ । ले०काल—स० १८८७ सावण सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १०८४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय शास्त्र भण्डार अजमेर ।

२७३. प्रतिसं० २ । पत्र स० ८७ । ले०काल—स० १६३६ । पूर्ण । वेष्टन स० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान वू दी ।

विशेष— सवत् १६३६ भाद्रपद कृष्णा २ वुधवारे लिखायत पडित छोगालाल लिखित मिश्र रूपनारायण भीलाय मध्ये ।

२७४. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ६१ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ११७ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर महावीर स्वामी वू दी ।

२७५. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ४७ । आ०—११×५½ इञ्च । ले०काल—स० १८६७ । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर महावीर स्वामी वू दी ।

२७६. प्रतिसं० ५ । पत्र स० १११ । आ०—१२½×६ इञ्च । ले०काल स० १८८७ । पूर्ण । वेष्टन स० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का, नैणवा ।

विशेष—धर्ममूर्ति रोडू ने खीवसी विप्र से लोचनपुर मे प्रतिलिपि कराई थी ।

२७७. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ११४ । आ० ६×६ इञ्च । ले०काल—स० १८७४ । वैशाख वुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूणी ।

२७८. **प्रतिस० ७** । पत्र स० १२३ । आ० ६$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल—स० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल ।

विशेष—राजमहल वा दूणी मध्ये लिखित । कटार्या मोजीराम ने राजमहल के चन्द्रप्रभ मन्दिर को भेंट किया था ।

२७९. **प्रतिसं० ८** । पत्र स० ८६ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल—स० १८५० चैत्र सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल ।

विशेष—विजयकीर्ति जी तत् शिष्य पडित देवचन्दजी ने तक्षकपुर मे आदिनाथ चैत्यालय मे व्यास सहजराम से प्रतिलिपि कराई थी ।

२८०. **प्रतिसं० ९** । पत्र स० ६६ । आ० १०$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{4}$ इञ्च । ले०काल—स० १८८२ । पौष सुदी ३ । पूर्ण । वेप्टन स० ६५-३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह

विशेष—तक्षकपुर मे गुमानीराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२८१ **प्रतिसं० १०** । पत्र स ८४ । आ० ११×४ इञ्च । ले०काल—स० १९७८ अषाढ बुदी १४ । पूर्ण । वेप्टन स० १५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतहपुर शेखावाटी ।

विशेष—वाबूलाल जैन ने मार्फत वाबू वेद भास्कर से आगरे मे लिखवाया था ।

२८२. **प्रतिसं० ११** । पत्र स० ७७-१०८ । आ०—११×६ इञ्च । ले०काल स० १८४८ । पौष बुदी ५ । अपूर्ण । वेप्टन स० ९४।८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

२८३. **प्रतिस० १२** । पत्र स० १३५ । आ० १२×७ इञ्च । ले०काल—× । पूर्ण । वेप्टन स० ९।३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

२८४. **प्रतिसं० १३** । पत्र स० ८५ । आ० १२×६ इञ्च । ले०काल स० १८०६ । पूर्ण । वेप्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२८५. **प्रतिस० १४** । पत्र स० १९८ । ले०काल—× । पूर्ण । वेप्टन स० ४१२ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

२८६. **प्रतिस० १५** । पत्र स०—१९१ । ले०काल स० १८२३ जेठ सुदी ५ । पूर्ण । वेप्टन स० ४१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—पुस्तक कामा मे लिखी गई थी ।

२८७ **प्रतिसं० १६** । पत्र स० ११८ । ले० काल स० १९२४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी तथा दो प्रतियो का मिश्रण है ।

२८८. **प्रतिस० १७** । पत्र स० ९१ । ले०काल—स० १८५४ । पूर्ण । वेप्टन स० ४१९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

२८६. प्रतिसं० १८ । पत्र स० १३१ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल—स० १८१५ । माह बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

२६०. प्रतिसं० १६ । पत्र स० ८६ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

२६१. प्रतिसं० २० । पत्र म० १५८ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हुण्डावालो का डीग ।

२६२. प्रतिसं० २१ पत्र स० ११८ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले० काल—स० १८३४ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

विशेष— बगालीमल छाबडा ने करौली नगर मे प्रतिलिपि करवाई थी ।

२६३. प्रतिसं० २२ । पत्र स० १३५ । आ० ११×५¾ इञ्च । ले० काल— स० १८१४ आश्विन सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

२६४. प्रतिसं० २३ । पत्र स० १०३ । आ० १२¾×६ इञ्च । ले० काल–१८०७ जेठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १२/२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दीर करौली ।

विशेष—चद्रप्रभ चैत्यालय करौली मे साहिबराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२६५ प्रतिसं० २४ । पत्र स० १३२ । ले० काल—स० १८५२ ज्येष्ठ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० २०–३४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर बडा बीस पथी दौसा ।

२६६. प्रतिसं० २५ । पत्र स० ६ । आ० ६×६ इञ्च । ले० काल—स० १८१५ । पूर्ण । वेष्टन स०१३१–६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरह पथी दौसा ।

थिशेष—चिमन लाल छाबडा ने प्रतिलिपि की थी ।

२६७. प्रतिसं० २६ । पत्र स० १२६ । ले० काल स० १८२३ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ४७/४० **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर मादवा (राजस्थान) ।

२६८. प्रतिसं० २७ । पत्र स० १६७ । ले० काल–स० १६२० । पूर्ण । वेष्टन स० ४४/१०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर मादवा (राज०) ।

विशेष—भवरलाल पाटौदी ने प्रतिलिपि की थी ।

२६६. प्रतिसं० २८ । पत्र स० ११७ । आ० १३ × ५ इञ्च । ले० काल—स० १६३१ आषाढ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—ईश्वरीय प्रसाद शर्मा ने प्रतिलिपि की थी ।

३००. प्रतिसं० २६ । पत्र स० १११ । ले० काल—स० १८२८ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—साह रतनचन्द ने स्वय के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३०१. चर्चा समाधान—भूधर मिश्र । पत्र स० ५३ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी

गद्य । विषय—सिद्धात चर्चा । र०काल—× । ले०काल—स० १७५५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६५-४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—हूवड ज्ञातीय लघु शाखा के पाडलीय नवलचन्द ने प्रतिलिपि कराई थी ।

३०२. चर्चासागर—प० चम्पालाल । पत्र स०-३६० । ग्रा० १३×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धात चर्चा । र०काल—स० १६१० । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर, शेखावाटी ।

३०३. चर्चासागर बचनिका—पत्र स० ३८६ । ग्रा० ११×७½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चर्चा । र०काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० १२५२ । **प्राप्तिस्थान**—भ. दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३०४. चर्चासार-धन्नालाल—पत्र स० २७ । ग्रा० १०½×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल—स० १६४७ फागुण सुदी १० । ले०काल—स० १६४७ फागुण सुदी १२ । **प्राप्तिस्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ कोटा ।

३०५. चर्चासार—प० शिवजीलाल । पत्र स० १५० । ग्रा० ११½×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चर्चा । र०काल—स० १६१३ । ले०काल—स० १६५२ । पूर्ण । वेष्टन स० ८ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूदी ।

विशेष—पडित शिवजीलाल ने ग्रथ रचा यह सार ।

सकल शास्त्र की साखि नै देखि कीयो निराधर ।।

३०६ प्रतिस० २ । पत्र स० १०७ । ले० काल स० १६३३ । पूर्ण । वेष्टन स० ४ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

३०७. प्रतिस० ३ । पत्र स० १११ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी, टोक ।

३०८ प्रतिस० ४ । पत्र स० ५८ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ११२-५५ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह, टोक ।

३०६. प्रतिस० ५ । पत्र स० ६६ । ले०काल—स० १६२६ । अपूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

३१०. प्रतिस० ६ । पत्र स० १२७ । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टन स० ८० । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

३११ चर्चासार—× । पत्र स० ४० । ग्रा० १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० १४७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३१२ चर्चासार—× । पत्र स ६६ । ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । विषय-सिद्धात । र०काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० १५८० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३१३. चर्चासार—× । पत्र स० ७६ । आ० १०½×५½ इन्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-सिद्धात चर्चा । र०काल—× । ले० काल— स० १६२६ फागुन बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूदी ।

३१४. चर्चासार—× । पत्र स० ५३ । आ० ६½×६ इन्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धात । र०काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूदी ।

३१५. चर्चासार सग्रह—भ० सुरेन्द्र भूषण । पत्र स० ६ । आ० १०½×४½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय—सिद्धात चर्चा । र०काल—× । ले०काल—स० १७३४ । पूर्ण । वेष्टन स० १३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

विशेष—ब्राह्मण चपे ने बूदी मे छोगालाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३१६. चर्चासार सग्रह—पत्र स० २६६ । आ० १४½×७½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय—चर्चा । र०काल—स० १६०० । ले०काल—स० १६६० । पूर्ण । वेष्टन स० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर, सीकर ।

३१७. चर्चा संग्रह—× । पत्र स० १० । आ० ६×७ इन्च । भाषा-प्राकृत । विषय—सिद्धात । र०काल—× । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टन स० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा ।

विशेष— प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

३१८. चर्चा सग्रह—× । पत्र स० २१ । आ० १२×६ इन्च । भाषा-सस्कृत । हिन्दी । विषय—चर्चा । र०काल—× । ले०काल—× । वेष्टन स० ७३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

३१६. चर्चासग्रह—× । पत्र स० २५ । भाषा-हिन्दी । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३२०. प्रतिसं० २ । पत्र स० २६ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ३६३ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३२१. चर्चा सग्रह—× । पत्र स० १५३ । आ० १२½×६½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय—चर्चा । र०काल—× । ले०काल—स० १८५२ माघ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १३० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

विशेष—विविध प्रकार की चर्चाओ का सग्रह है ।

३२२. चर्चा संग्रह—× । पत्र स० ६२ । आ०११×४ इन्च । भाषा हिन्दी । विषय—चर्चा । अपूर्ण । र० काल—× । ले०काल—× । वेष्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी, मालपुरा ।

३२३. चौदह गुणस्थान वर्णन—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र स० ३४ । आ० १०¾×५½ इन्च । भाषा-प्राकृत । विषय—सिद्धात चर्चा । र०काल—× । ले०काल—स० १८३० आषाढ सुदी १ । पूर्ण ।

वेष्टन स० ११३६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—चौदह गुणस्थानो का वर्णन है ।

३२४ प्रतिस० २ । पत्र स० ३८ । ले०काल स० १२४८ । पूर्ण । वेष्टन स० ६२३ । **प्राप्ति-स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३२५ प्रतिसं० ३ । पत्र स० ११ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ४६१ । **प्राप्ति-स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३२६. चौदह गुणस्थान वर्णन—पत्र स० २ । भाषा-सस्कृत । विषय—सिद्धात । र०काल-× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ७१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३२७. चौदह गुणस्थान चर्चा—× । पत्र स० ३६ । आ० ६½×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल— × । ले०काल—स० १८४५ माघ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर ।

विशेष—भूरामल की पुस्तक से महादास ने प्रतिलिपि की थी ।

३२८. चौदह गुणस्थान चर्चा—× । पत्र स० ३७ । आ० ६×६¼ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चर्चा । र०काल—× । ले०काल—स० १८४४ कार्तिक सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

३२९ चौदह गुणस्थान चर्चा—× । पत्र स० ६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३३० चौदह गुणस्थान चर्चा—× । पत्र स० २६६ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—चर्चा । र०काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—तालिकाओ के रूप मे गुणस्थानो एव मार्गणाओ का वर्णन किया हुआ है ।

३३१ चौदह गुणस्थान वचनिका-अखयराज श्रीमाल—पत्र स० १०२ । आ० १०½×४ इञ्च । भाषा-राजस्थानी (ढूढारी)—गद्य । विषय—चर्चा । सिद्धात । र०काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३३२. प्रतिस० २ । पत्र स० ३६६ । आ० १½×६ इञ्च । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरह पथी दौसा ।

विशेष—नानूराम तेरह पथी ने चिमनलाल तेरहपथी से प्रतिलिपि कराई थी ।

प्रारम्भ—

धर्म धुरन्धर आदि जिन, आदि धर्म करतार ।
मै नमौं अध हरण तै, सब विधि मगल सार ।।१।।
अजित आदि पारस प्रभू, जयवन्ते जिनराय ।
घाति चतुष्क कर्ममल, पीछे भये शिवराय ।

वरधमान वर्तो सदा, जिन शासन सुद्ध सार ।
यह उपगार तुम तर्जौ, मैं पाये सुखकार ।

× × × ×

अथ शास्त्र गोमट्टसार जी वा त्रिलोकसार जी वा लब्धिसार जी के अनुसारि वा किंचत और शास्त्रां के अनुसारि चर्चा लिखिये हैं सो हे भव्य तु जानि सो ज्यासू जाण्या पदारथा का सरूप जयार्थ जाण्या जाय । अर पदारथ का सरूप जाणि वा करि सम्यक्त्व की प्राप्ति होय । अर सम्यक्त्व की प्रापति से शुद्ध स्वरूप की प्रापति होय सो एही वात उपादेय जाणि भव्य जीवन के चर्चा सीखवो उचित है ।

अन्तिम पुष्पिका—

इति श्री चौदह गुणस्थानक की वचनिका करी श्री जिनेसर की वाणी के अनुसारि सपूर्ण ।

दोहा—चौदह गुणस्थानक कथन, भाषा मुनि सुख होय ।
अखयराज श्रीमाल नैं, करी जथामति जोय ।।

इति श्री गुणस्थान टीका सपूर्ण । ग्रन्थ कर्त्ता अखयराज श्रीमाल ।

३३३. प्रति सं०—३ । पत्र स०—३९ । ले० काल-× । अपूर्ण । वेष्टन स०—६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वडा बीस पथी दौसा ।

विशेष—पत्र स० ३० से ३४ व ३९ से आगे नही हैं ।

३३४. प्रति सं०—४ । पत्र स०–५२ । ले० काल स० १७४१ कार्तिक बुदी ६ । वेष्टन स० ६०६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

३३५. प्रति सं०—५ । पत्र स०—२० । आ०—९×४½ इञ्च । अपूर्ण । वेष्टन स०—२६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३३६. प्रति सं० ६ । पत्र स० ४२ । ले० काल स० १८१२ । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स० १८१२ वर्षे पौषमासे कृष्णपक्षे तीज तिथौ शनिवासरे गुणस्थान की भाषा टीका लिखी उदयपुर मध्ये ।

ग्रन्थ प्रमाण—प्रति पत्र १२ पक्ति एव प्रति पक्ति ३५ अक्षर ।

३३७. प्रति सं० ७ । पत्र स० ५३ । ले० काल स० १८५४ । पूर्ण । वेष्टन स० ११६/२८ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ ।

३३८. प्रति सं० ८ । पत्र स० ५२ । ले० काल स० १७५० कार्तिक बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन स० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—कामा मे गोपाल ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी ।

३३९. प्रति सं० ९ । पत्र स० ६५ । आ० १०½× ४¾ इञ्च । ले० काल स० १७५८ । पूर्ण । वेष्टन स० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३४०. **प्रतिस० १०** । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १७८१ भादवा सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजीकामा ।

३४१. **चौबीस गुणस्थान चर्चा— गोविन्द दास** । पत्र स० ८ । आ० १०×८ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-गुणस्थानो की चर्चा । र० काल स० १८८१ फाल्गुन सुदी १० । ले०काल स० १८... । पूर्ण । वेष्टन स० ४३-११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

प्रारम्भ—

गुण छियालीस करि सहित, देव अरहत नमामि ।
नमो आठ गुण लिये, सिद्ध सब हित के स्वामी ।।
छत्तीस गुणा करि, विमल आप आचारिज सोहत ।
नमो जोरि कर ताहि, सुनत बानी मन मोहत ।
अरु उपाध्याय पच्चीस गुण सदा बसत अभिराम है ।
गुण आठ बीस फिरि साधु है, नमो पच सुख धाम है ।।

अन्तिम—

सस्कृत गाथा कठिन, अरथ न समझ्यो जाय ।
ता कारण गोविंद कवि, भाषा रची बनाय ।।
जो या को सीखे सुणै, अरथ विचारै जोय ।
सभा माह आदर लहै, मूरिख कहै न कोय ।।
अक्षर अरथ यामै घटि वढि होय ।
बुधजन सबै सुवारज्यो माफ कीजियै मोय ।।
अठारासै ऊपरै गतू , इक्यासी और
फागुण सुदी दशमी सुतिथि, शशि वासर शिरमौर ५६ ।।
दादूजी को साधु है, नाम जो गोविन्ददास ।
तानै यह भाषा रची, मनमाहि धारि उल्हास ।।
नासरदा ही नगर मे रच्योजु, भाषा ग्र थ ।
जो याकू सीखे सुणै लहै जैन मत पथ ।।

३४२. **चौदह मार्गणा टीका**—× । पत्र स० ८६ । आ० ६×५½ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३४३ **चौबीस ठाणा**— × । पत्र स० २४ । आ० ६¾×४½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चर्चा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६१० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३४४. **चौबीस ठाणा चर्चा— नेमिचन्द्राचार्य । टिप्पणकार— दयातिलक**— पत्र स० १२३ । आ० ११½×५ इन्च । भाषा—प्राकृत-सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल स० १८४०-अगहन । वेष्टन स० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—महाराजा सवाई प्रतापसिंह के शासन काल मे प० रत्नचन्द्र ने जयपुर के लश्कर के मन्दिर मे पूर्ण किया तथा प्रारम्भ "चम्पावती नगर मे किया। ग्रन्थ का नाम "जैन सिद्धान्त सार" भी दिया है जिसको दयातिलक ने आनन्द राय के लिये रचा था ।

३४५. चौबीस ठाणा चर्चा—× । पत्र स० १० । आ० १६×११½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल स० १६४३ आषाढ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ, (कोटा)

विशेष—बडा नक्शा दिया हुआ है ।

३४६. चौबीस ठाणा चर्चा—आ० नेमिचन्द्र । पत्र स० २६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६२७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३४७. प्रतिसं०— २ पत्र स० ३० । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

३४८. प्रतिसं० ३ पत्र स० २८ । ले० काल–स० १८२८ श्रावण बुदी ५ । वेष्टन स २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—ठाकुरसी ने ब्राह्मण चिरजीव राजाराम से प्रतिलिपि कराई थी ।

३४९. प्रतिसं० ४ ।पत्र स० ३२ । ले० काल– । वेष्टन स० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टिप्पण सहित है । कृष्णगढ के चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३५०. प्रतिसं० ५ । पत्र-स० ५२ । ले०काल–स० १७८४–फागुण सुदी १२ । वेष्टन स० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत्सरे १७८४ फागुणमासे शुक्लपक्षे द्वादशतिथौ रविवारे उदयपुरनगरे श्रीपार्श्वनाथ चैत्यालये श्री मूलसघे भट्टारकेन्द्र भट्टारकजी श्री १०८ देवेन्द्रकीर्त्तिजी आचार्य श्री शुभचन्द्रजी तत् शिष्याचार्यवर्या-चार्यजी श्री १०८ क्षेमकीर्त्ति जी तच्छिष्य पाडे गोर्द्धनाख्यस्तेनेद पुस्तक लिखित ।

३५१. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ३० । ले० काल स० १८८५ । पूर्ण । वेष्टन स० १७५–७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूँगरपुर ।

३५२. प्रतिसं० ७ पत्र स० २६ । ले० काल स० १७३१ । पूर्ण । वेष्टन स० ११०/११ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैनमन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है— सवंत् १७३१ वर्षे आषाढमासे बुदी ९ शुक्रे श्री गिरिपुरे श्री आदिनाथ चैत्यालये श्री काष्ठासघे नदीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री राजकीर्ति ब्र० श्री अभयरुचि पठनार्थं ।

३५३. प्रतिसं० ८ । पत्र स० २६ । ले० काल स० १७१३ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१२ । १६७ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—स० १७१३ कार्तिक सुदी ७ सोमवार को सागवाडा के मन्दिर मे रावल श्री पु ज विजय के शासन मे कल्याणकीर्ति के शिष्य तेजपाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३५४. प्रतिसं० ६ । पत्र स० २५ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४१३ । १६८ । **प्राप्ति स्थान**—समवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

३५५. प्रतिसं० १० पत्र स० ३० । ले० काल स० १७७४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१४/१६६ **प्राप्ति स्थान**—समवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—स० १७७४ मगसिर सुदी ४ रविवार को श्री सागपत्तन नगर मे आदिनाथ चैत्यालय मे नौत्तम चैत्यालय मध्ये ब्र० केशव ने प्रतिलिपि की थी ।

३५६. प्रतिस० ११ । पत्र स० १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २०० । **प्राप्ति स्थान**—समवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

३५७. प्रतिस० १२ । पत्र स० ४४ । ले० काल० × । पूर्ण । वेष्टन ८१-११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

३५८. प्रतिसं० १३ । पत्र स० ३४ । ले० काल× । अपूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान** द० जैन मन्दिर वडा बीस पथी दौसा ।

विशेष—हिन्दी टव्वा टीका सहित है ।

३५६ प्रतिसं० १४ । पत्र स० १३ । ले० काल× । पूर्ण । वेष्टन स० १६४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३६०. प्रतिसं० १५ । पत्र स० २३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिन्र दीवानजी कामा ।

३६१ प्रतिस० १६ । पत्र स० ३१ । ले० काल स० १७३६ मगसिर सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३६२. प्रतिस० १७ । पत्र स० २४ । ले० काल× । पूर्ण । वेष्टन स ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३६३. प्रतिसं० १८ । पत्र स० २५ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३६४. प्रतिस० १६ । पत्र स० ६७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११२/४ **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

३६५. प्रतिसं० २० । पत्र स० ३० । ले० काल स० १८४७ । पूर्ण । जीर्ण । वेष्टन स० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना वू दी ।

३६६ प्रतिस० २१ । पत्र स० २४ । ले० काल× । पूर्ण । वेष्टन स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी वू दी ।

३६७. प्रतिसं० २२ । पत्र स० १७ । आ० ११×५½ इञ्च ले० काल— स० १६१७ श्रावण

सुदी । पूर्ण । वे० स० ३१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दनस्वामी बू दी ।

प्रशास्ति—अथ सवतसरेस्मिन् श्रीविक्रमादित्यराज्ये सवत् १६१७ श्रावणमासे शुक्लपक्षे नक्षत्रे श्रीमूलसघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे तदाम्नाये आ० श्री कुन्दचार्यान्वये भ० जिनचद्रदेवा सकलतार्किक-चूडामणि श्री सिघकीर्त्तिदेव तत्पट्टे भ०- धर्मकीर्त्तिदेवातदम्नाये ससारीशरीरनिर्विन्न त्रयोदशविधिचारित्र-प्रतिपालक भव्यजनकुमुदप्रतिवोधित चद्रोदये मेनार आचार्य श्री मदनचद तत्शष्यि पडिताचार्य श्रीध्यानचदेन इद - चतुर्दशस्थान लिपिकृत । प्रतितत्पर पुस्तक कृत्वा लेखकाना श्रीमोहनवास्तव्येन सा० अरहदास पठनार्थं कर्मक्षयनिमित्त ।

३६८. प्रतिसं० २३ । पत्र स० ४२ ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ३४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दनस्वामी वू दी ।

३६९. प्रतिसं० २४ । पत्र स० ४८ । ले० काल—स० १८५९ आसोज सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ वू दी ।

विशेष—सस्कृत टीका सहित है ।

३७०. प्रतिसं० २५ । पत्र स० २३ । आ० ११ X ४½ इञ्च । ले०काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदीनाथ वू दी ।

३७१. प्रतिसं० २६ । पत्र स० ३० । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ वू दी ।

३७२. चौबीसठाणा चर्चा—पत्र सख्या २१ । आ० १०½ X ५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चर्चा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, वू दी ।

३७३. चौबीसठाणा चर्चा—X । पत्र स० २६४ । आ० ११ X ७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । र० काल X । ले० कान स० १७५५ कार्त्तिक सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० १४५७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७४. चौबीसठाणा चर्चा—X । पत्र स० १६२ । आ० १२ X ६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-चर्चा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १४५८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७५. चौबीसठाणा चर्चा—X । पत्र स० १५० । आ० ११½ X ६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-चर्चा । र० काल X । ले० काल स० १९१५ आसोज सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० २/४५ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ ।

विशेष—वन्नालाल ने मावोगढ मे प्रतिलिपि कराई थी ।

३७६. चौबीसठाणा चर्चा—X । पत्र स० ७५ । आ० ८½ X ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-चर्चा । र०कार X । ले० काल-पूर्ण । वेष्टन स० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ ।

३७७. चौबीसठाणा चर्चा—X । पत्र स० १ । आ० ४८ X १४ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विपय-सिद्धान्त चर्चा । ले० काल × । र०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०/७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)

३७८. चौबीसठाणा चर्चा—× । पत्र स०-६ । आ०—१०×६½ इञ्च । विषय—हिन्दी । (पद्य) विषय—सिद्धान्त चर्चा । र०काल—× । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टन स०—३७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर दवलाना बूंदी ।

३७६. चौबीसठाणा चर्चा—× । पत्र स०—२३ । आ०—६० ×७ इञ्च । भापा-हिन्दी । विपय—सिद्धान्त-चर्चा । र०काल— × । ले० काल-स० १८७४ । पूर्ण । वेष्टन स०—४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक) ।

३८०. चौबीसठाणा चर्चा—× । पत्र स०-४२ । आ०-१०½×५½ इञ्च । भापा-हिन्दी । विषय—सिद्धान्त-चर्चा । र०काल—× । ले० काल—× पूर्ण । वे० स०—१६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी ।

३८१. प्रति स—२ । पत्र स०—४५ । ले० काल—× । पूर्ण । वे० स०—१४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

३८२. प्रति सं०—३ । पत्र स०-५६ । ले० काल-स० १८२६ । पूर्ण । वे० स०- २४-१८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेप—भादवा ग्राम मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३८३. चौबीसठाणा चर्चा × । पत्र स०—५४ । आ०—११×५ इञ्च । भापा—हिन्दी सस्कृत । विपय—सिद्धान्त चर्चा । र०कारा—× । ले० काल—× । अपूर्ण । वे० स०—१४०-६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

३८४. चौबीस ठाणा— × । पत्र स० ८ । आ० ११×३¾ इञ्च । भापा— हिन्दी । विपय—सिद्धान्त चर्चा । ले० काल—× । पूर्ण । वे० स०—१३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेप—वसवा मे प० परसराम ने चि० अनतराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३८५ प्रति स०—२ । पत्र स०—६ । आ०—१०¾×५ इञ्च । भापा—हिन्दी । ले० काल-× । पूर्ण । वे० स०—२६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मन्दिर दवलाना (बूदी) ।

३८६. प्रतिसं०—३ । × । पत्र स०—१४ । ले० काल- × । पूर्ण । वे० स०-१८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

३८७. चौवीसी ठाणा पीठिका—× । पत्र स०-२-६५ । आ०—८½×५½ इञ्च । विषय —सिद्धान्त । र०काल—× । ले० काल—× । पूर्ण । वे० स०—३८२-१४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

३८८ चौरासी वोल—× । पत्र स०—८ । आ०—११½×४½ इञ्च । भापा—हिन्दी । विपय—चर्चा । र०काल— × । ले० काल-स० १७२८ वैशाख वुदी ६ । पूर्ण । वे० स० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—लिखित प० जगन्नाथ ब्राह्मण लघुदेवगिरी वास्तव्य ।

३८६. छियालीस ठाणा चर्चा—× । पत्र स०—१५ । आ०—१०½×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल—× । ले० काल-स० १८५० आपाढ बुदी १२ । पूर्ण । वे० स०—१६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—त्रेपठ शलाका पुरुपो के नाम भी दिये हुये हैं । शेरगढ मे पार्श्वनाथ चैत्यालय मे लिखा गया था ।

३६०. छत्तीसी ग्रन्थ— × । पत्र स० ११-६६ । आ० ११½ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—गुणस्थान चर्चा । र०काल × । ले० काल स० १६४८ । अपूर्ण । वेष्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६४८ वर्पे आसोज बुदी १३ दिने श्री मूलसघे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री वादिभूपण गुरुपदेशात् नागद्रा ज्ञातीय सा० अचला भार्या वछा पुत्री राजा एतै स्वज्ञानावरणीय कर्मक्षयार्थं इद छत्तीसी नाम शास्त्र लिखाप्य ब्रह्म भट्टारक श्री विजयकीर्ति ब्रह्म नारायणाय दत्तमिद .... पठनार्थ दत्त । शुभ भवतु । छत्तीसी ग्रन्थ समाप्त ।

पक्ति १२ प्रति पक्ति २६ अक्षर है ।

३६१. जीव उत्पत्ति सभाज्य—हरखसूरि । पत्र स० २ । आ०—६¾ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन म० २७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—नदवेण सज्झाय भी है ।

३६२. जीवतत्वस्वरूप— × । पत्र स० १० । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६४ । २५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मदिर उदयपुर ।

३६३. जीवविचार सूत्र— पत्र स० १० । आ० ६ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत-हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना बू दी ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा शातिसूरि कृत हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

३६४. जीवस्वरूप— × । पत्र स० ७ । आ० ६ × ६ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना बू दी ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

३६५. जीवाजीव विचार— × । पत्र स० ८ । आ०- १० × ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल स० १८१६ । पूर्ण । वेष्टन स० ७६/४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—हिन्दी टव्वा टीका सहित है ।

३९६. ज्ञातृधर्म सूत्र— × । पत्र स० १०२ । आ० १० × ४½ इन्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आगम । र० काल × । ले० काल स० १६६६ पौष सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जै० मदिर दीवानजी कामा ।

३९७. जीवविचार प्रकरण— शातिसूरि । पत्र स० ८ । आ० १० × ४½ इन्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धात । र० काल × । ले० काल स० १७२६ ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० २४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना बूदी ।

विशेष—मूल के नीचे हिन्दी की टीका है ।

३९८. प्रति स०—२ । पत्र स०—७ । आ०—१०×४½ इन्च । ले० काल स० १७९३ पौष सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी) ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

३९९. प्रति स०—३ । पत्र स०—८ । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन स०—५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना ।

विशेष—मूल के नीचे हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

४००. प्रति सं०—४ । पत्र स०—७ । ले० काल—× । पूर्ण । वे० स०—४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी) ।

विशेष—मूल के नीचे हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है । पत्र ७ मे दिशाशूल वर्णन भी है ।

४०१ प्रति स—५ । पत्र स०-७ । ले० काल-× । पूर्ण । वे० स०-२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

विशेष—प्रति हिन्दी टव्वा टीका सहित है ।

४०२. प्रति स०—६ । पत्र स०— ८ । आ०-१०×४ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

४०३. जीवसमास विचार— × । पत्र स०- ६ । आ० १०×४½ इन्च । भाषा-प्राकृत-सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल—× । ले० काल × । पूर्ण । वे० स०—१२५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

४०४. जीवस्वरूप वर्णन— × । पत्र स०—१ से १५ । आ० १२×५ इन्च । भाषा—सस्कृत-प्राकृत । विषय—सिद्धात । र० काल—× । ले० काल—× । वे० स०—७५८ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है । गोम्मटसार जीवकाड मे से जीव स्वरूप का वर्णन किया गया है ।

४०५. ज्ञान चर्चा—× । र० काल—× । ले० काल—× । पूर्ण । वे० स०—१३२६ ।

प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४०६. प्रति सं०—२ । पत्र स०—२-५५ । ले० काल स० १८२८ भादो सुदी ४ । पूर्ण । वे० स०—२१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक)

४०७. प्रति स०—६ । पत्र स०—३७ । ले० काल—× । पूर्ण । वे० स०—३५/११५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—विभिन्न चर्चाओ का सग्रह है ।

४०८. ज्ञानसार—मुनि पोमसिंह । पत्र स० ५ । आ० १०$\frac{3}{4}$×४$\frac{3}{4}$ । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धात । र० काल—१०८१ श्रावण सुदी ६ । ले० काल—स० १८२१ भादवा सुदी ११ । वेप्टन स० ८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—पडित श्री चोखचन्द्र के शिष्य श्री सुखराम ने नैणसागर से प्रतिलिपि कराई थी ।

४०९. ठाणांग सुत्त—× । पत्र स०—१,१३-२३३ । आ० १०×३$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय—आगम । र० काल—× । ले० काल स० १६५६ । अपूर्ण । वेप्टन स० ३३४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाना बूदी ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है । टीका विस्तृत है । सवत् १६५६ वर्षे कार्तिक सुदी द्वितीया भौमे लिपिकृत आत्मर्थे । अभयदेव सूरि विरचिते स्थानाख्य तृतीयाग विवरणस्थानकाव्ये । अन्त मे—ठाणाग बालावबोध समाप्त च डीडवाणा स्थाने । २ से १२ तक पत्र नहीं है । इस ग्रथ के पत्र १,१३-२३२ तक वेप्टन स० १८२ मे है । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी) ।

४१०. प्रतिसं० २ । पत्र स०—१ से ६६ । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टन स० ३५० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४११. ढाढसी गाथा—ढाढसी । पत्र स०—२-६ । आ० ११×४ इच । भाषा—प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४८० । २४७ । सस्कृत टीका सहित है । प्राप्ति स्थान—दि० जैन समवनाथ मन्दिर, उदयपुर ।

४१२. तत्वकौस्तुभ—प० पन्नालाल पाड्या । पत्र स०—८७४ । आ० १२×७$\frac{1}{2}$ इच । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-सिद्धान्त । र० काल स० १६३४ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० १३६—१३७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—तत्वार्थराजवार्तिक की हिन्दी टीका है ।

प्रति दो वेष्टनो मे है—पत्र स०—१-४०० तक वेष्टन स० १३६

पत्र स०—४०१-८७४ तक वेष्टन स० १३७ ।

४१३. तत्वज्ञानतरगिणी-भ० ज्ञानभूषण । पत्र स० ७६ । आ० १३×७$\frac{1}{2}$ इच । भाषा—सस्कृत, हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र० काल—स० १५६० । ले० काल स०—१६७६ । पूर्ण । वेष्टन स०—१६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूदी ।

४१४. प्रति स० २ । पत्र स०—३० । श्रा० १०×६ इ च । ले० काल स० १८४८ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८/४२ । प्राप्ति स्थान—दि० मन्दिर कोटडियो का, डू गरपुर ।

४१५. तत्ववर्णन—× । पत्रस० ३ ३६ । श्रा० १०×४½ इ च । भाषा हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल— × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६० । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—गुजराती मिश्रित हिन्दी गद्य है ।

४१६. तत्वसार—देवसेन । पत्र स० ४ । श्रा० १३½×६ । भाषा—अपभ्र श । विषय—सिद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ४०८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

४१७. तत्वानुशासन-रामसेन । पत्र स० १७ । श्रा० १०×४ इ च । भाषा सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल— × । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४१८. प्रति स० २ । पत्र स० १६ । ले० काल- × । वेष्टन स० ५२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

४१९. तत्वार्थबोध—बुधजन । पत्र स० १०६ । श्रा०-११×७ इ च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सिद्धान्त । र० काल स० १८७९ कार्तिक सुदी ५ । ले० काल स० १८८२ फाल्गुन बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ७१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

४२०. प्रति स० २ । पत्र स० ७४ । श्रा० १३×८ इ च । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । ५८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भादवा ।

४२१. प्रति स० ३ । पत्र स० १४४ । ले० काल — × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६ । प्राप्ति स्थान दि० जैन मन्दिर नागदी बू दी ।

४२२. प्रति स० ४ । पत्र स०—८१ । ले० काल—स० १९८० फाल्गुण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १३५ । प्राप्ति स्थान दि० जैन मन्दिर नागदी बू दी ।

विशेष—प० हरगोविन्द चौबे ने प्रतिलिपि की थी ।

४२३. तत्वार्थरत्नप्रभाकर—भ० प्रभाचन्द्र । पत्र स० १२६ । श्रा० ११½×४½ इ च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल स०—१४८९ भादवा सुदी ५ । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र की प्रभाचन्द्र कृत टीका है ।

४२४. प्रति सं २ । पत्रस० १७२ । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टन न० ५४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर ।

४२५. प्रति सं ३ । पत्र स० ११८ । ले० काल स०—१६८० कार्तिक बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० २२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर, करौली ।

४२६. प्रति सं० ४ । पत्र स० ७८ । आ० ११×८ इच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स०—७२ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

४२७. प्रति स० ५ । पत्र स० १४३ । आ० १२×४½ । ले०काल स० १६८३ वैशाख बुदी ५ । वेष्टन स० ९६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

४२८. तत्वार्थराजवार्तिक—भट्टाकलंक । पत्रस० ८७४ । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल—× ले० काल—× पूर्ण । वेष्टनस० ३/१३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, अलवर ।

४२९. प्रति स०—२ । पत्रस० ६२ । आ०—१३×८ इञ्च । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टनस० १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, अलवर ।

४३० प्रति स० ३ । आ० १४×८½ इञ्च । पत्रस०–४१२ । ले०काल १६६२ पौष बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० १४६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—प्रति उत्तम है ।

४३१. प्रति स०—४ । पत्रस० १२ । ले० काल—× । वेष्टनस० ३३ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—१२ से आगे पत्र नही लिखे गये हैं ।

४३२. प्रति सं०—५ । पत्रस० ५८० । आ०—११×४½ इञ्च । ले०काल—× । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४३३. तत्वार्थवृति—पं० योगदेव । पत्रस० १ से १४६ । आ०—१२×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल—× । अपूर्ण । वेष्टनस० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । प्रति पत्र मे ९ पक्ति एव प्रति पक्ति मे ३२ अक्षर हैं । १००—११६ तक अन्य प्रति के पत्र हैं ।

४३४. तत्वार्थश्लोकवार्तिक आ० विद्यानन्दि । पत्रस० ५४३ । आ०–१२×८ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय – सिद्धान्त । र०काल—× । ले०काल स० १९७६ पौष सुदी ९ । पूर्ण । वेष्टनस० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

४३५. तत्वार्थसार—अमृतचन्द्राचार्य । पत्रस० ३३ । आ०—११×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल स० १६३९ आसोज सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० १२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—इति अमृतचन्द्रसूरीणा कृति सुतत्वार्थसारो नाम मोक्षशास्त्र समाप्त । अथ ग्रन्थाग्रन्थश्लोक स० ७२४ ।

प्रशस्ति - सवत् १६३९ वर्षे आसोज सुदी ३ बुधे श्री मोजिमपुर चैत्यालये श्रीमूलसघे सरस्वती गच्छे वलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री सुमतिदेवास्तत्पट्टे भ० गुणकीर्तिदेवा ब्र० कर्मसी पठनार्थं देवे माहवजी लक्ष्मी त ।

४३६ प्रति स० २ । पत्रस० ५६ । ले०काल १८१४ आषाढ बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० २१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर मे लिखा गया था ।

४३७. तत्त्वार्थसारदीपक—भ० सकलकीर्त्ति । पत्रस० ६३ । आ०- १०½×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० ७६—४३ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मदिर कोटडियो का डू गरपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है। **अन्तिम प्रशस्ति**-सागवाडा वास्तव्य स० जावऊ भार्या बाई जिमणादे तयो पुत्री बाई अण् अरिक्सा पठनार्थं ।

४३८ प्रति स० २ । पत्र स० ६६ । आ० १२ × ५¾ । ले०काल—स० १८२६ । वेष्टनस० ४५ । दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—महाराजा सवाई पृथ्वीसिंह के शासनकाल मे जयपुर नगर मे केशव ने प्रतिलिपि की थी ।

४३९. तत्वार्थसूत्र मगल— × । पत्रस० ४ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५६५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—हिन्दी मे तत्वार्थ सूत्र का सार दिया हुआ है ।

४४०. तत्वार्थसूत्र-उमास्वामि । पत्र स० ३३। आ० ११ × ५¼ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल स०× पूर्ण । वेष्टनस० ११०६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

विशेष—इसी का दूसरा नाम मोक्षशास्त्र भी है ।

४४१. प्रति स० २ । पत्र स० ११ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले०काल स० १८५३ । पूर्ण । वेष्टनस० म० ६८४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४४२. प्रतिस० ३ । पत्र स० १६ । आ० ६ × ५ इञ्च । ले०काल स०१८२५ वैशाख बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० १३२३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४४३ प्रतिस० ४ । पत्रस० ५ । आ० १० × ४¾ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १००३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

४४४ प्रति स० ५ । पत्र स० ४० । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० २२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी । हिन्दी टीका सहित है ।

४४५ प्रति सं०—६ । पत्र स० १७ । ले०काल × । पूर्ण वेष्टनस०—२२८ **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

विशेष—मूल के नीचे हिन्दी टीका भी है ।

४४६ प्रति स०—७ । पत्र स० ४८ । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—उक्त मन्दिर ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

४४७ प्रति सं० ८ । पत्र स० ७ । आ० १३ × ५½ इञ्च । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० २३१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर अभिनन्दनस्वामी बूदी ।

४४८ प्रति सं० ६ । पत्र स० २६ । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० १४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर अभिनन्दनस्वामी, बूदी ।

विशेष—हिन्दी टव्वा टीका सहित है ।

४४६ प्रति सं० १० । पत्र स० २४ । ले०काल—स० १८२७ । पूर्ण । वेष्टन स० १५० प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—हिन्दी टव्वा टीका सहित है । प० रतनलाल चिमनलाल की पुस्तक है ।

४५०. प्रतिसं०—११ । पत्र स० १६ । ले०काल स० १६४७ चैत्र सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १२१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूदी ।

विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरो मे लिखी हुई है । चपालाल श्रावक ने प्रतिलिपि की थी ।

४५१. प्रति सं०—१२ । पत्र स० ५० । आ०—१०×५½ इञ्च । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टनसं०—४२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोट्योका नैणवा ।

विशेष—इसके अतिरिक्त निम्न पाठो का सग्रह और है—

जिनसहस्रनाम— (सस्कृत) आदिनाथजी की वीनती किशोर–(हिन्दी) ।

श्री सकलकीर्ति गुरु वदी काति स्याम दसेसी ।
विनती रचीय किशोर पुर केथोण वसै जी ।
जो गावे नर नारि सुस्वर भाव धरेजी ।
त्या घरि नोनधि होई धन कोप भरे जी ।

पाश्वनाथ स्तुति–वलु–हिन्दी (र०काल स० १७०४ अपाढ वुदी ५)

आदिनाथ स्तुति–कुमदचन्द्र–हिन्दी ।

प्रारम्भ—प्रभु पायि लागु करु सेव थारी ।
तुम्हे साभलो श्री जिनराज महारी ।

अन्तिम—घण् विनउ हू जगनाथ देवो ।
मोहि राखि जे भवै भवै स्वामी सेवो ।।
या विनती भावसु जे भणीजे ।
कुमुदचन्द्र स्वामी जिसो हो खमीजे ।।

अक्षर माला—मनराम–हिन्दी ।

विषापहार स्तोत्र भाषा—अचलकीर्ति–हिन्दी (र०काल स०– १७१५)

विशेष—नारनौल मे इस ग्रन्थ की रचना हुई थी ।

४५२. प्रतिसं०—१३ । पत्र स० ४५ । पूर्ण । वेष्टनस० २१ । प्राति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल ।

विशेष—प्रति हिन्दी टव्वा टीका सहित है।

४५३. **प्रतिसं० १४** । पत्रस० ८ । ले० काल— × । अपूर्ण । वेष्टनस० १४४ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर, राजमहल ।

४५४. **प्रतिसं० १५** । पत्रस०—५२ । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टनस०— ५० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है।

४५५. **प्रतिसं० १६** । पत्रस०–३३ । ले० काल स० १८५३ । पूर्ण । वेष्टनस०–५६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक)

विशेष—भक्तामर स्तोत्र भी दिया हुआ है

४५६. **प्रतिसं० १७** । पत्रस०—५४ । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टनस०—१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक) । हिन्दी टीका सहित है ।

४५७. **प्रतिसं० १८** । पत्रस०—१२-३० । ले०काल स० १८१६ पूर्ण । वेष्टनस०—२८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी) ।

विशेष—इसी मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे तत्वार्थ सूत्र की पाच प्रतिया और हैं।

४५८ **प्रति स० १९** । पत्रस०–३८ । ले० काल–स० १९४० आपाढ वुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ७८।४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर, इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—प्रति हिन्दी टव्वा टीका सहित है । नसीरावाद की छावनी मे प्रतिलिपि की गई थी। इस ग्रन्थ की दो प्रतिया और हैं।

४५९. **प्रतिस० २०** । पत्रस०–२ से १० । विषय—सिद्धान्त । र०काल—× । ले०काल स० १९३० । अपूर्ण । वेष्टनस०—२९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

४६०. **प्रतिसं० २१** । पत्र स० ११ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० २२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मदिर वोरसली कोटा ।

विशेष – सस्कृत टव्वा टीका सहित है ।

४६१. **प्रतिसं० २२** । पत्र स० १४ । ले० काल—स० १७९७ कार्तिक वुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० २७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वोरसली कोटा ।

४६२ **प्रतिस०—२३** । पत्र स० १५ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ३५४ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मदिर वोरसली कोटा ।

४६३ **प्रतिसं०—२४** । पत्र स० २० । ले०काल—स० १९४८ पौष शुक्ला १२ । पूर्ण । वेष्टन स०१५३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन खण्डेलवाल पञ्चायती मदिर अलवर ।

विशेष—स्वर्णाक्षरो मे वहुत सुन्दर प्रति है ।

४६४. **प्रतिसं० २५** । पत्र स० २० । ले०काल—स० १९४८ फाल्गुन सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पञ्चायती मदिर अलवर ।

विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरो मे लिखी हुई है। चिम्मनलाल ने प्रतिलिपिकी थी।

४६५ **प्रतिसं० २६** । पत्र स० ३४ । ले०काल- × । पूर्ण । वेष्टनस०६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, भरतपुर ।

विशेष—हिन्दी टव्वा टीका सहित है । वहुत सुन्दर है ।

४६६. **प्रतिसं० २७** । पत्र स० १५ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टनस० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मदिर ।

४६७ **प्रतिसं० २८** । पत्र स० ४७ । ले०काल स० १८८१ । पूर्ण । वेष्टनस० २५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है तथा अक्षर मोटे हैं ।

४६८. **प्रतिसं० २९** । पत्रस० ६३ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टनस० १८४ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मदिर; भरतपुर ।

विशेष—सामान्य अर्थ दिया हुआ है । इस मन्दिर मे तत्वार्थ सूत्र की १३ प्रतिया और हैं ।

४६९ **प्रतिसं० ३०** । पत्रस० १६ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टनस० १२१ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मन्दिर, बयाना ।

४७० **प्रतिसं० ३१** । पत्रस० २७ । ले०काल—स० १८३८ । पूर्ण । वेष्टनस० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मदिर, बयाना ।

विशेष—प्रति हिन्दी तथा टीका सहित है ।

४७१. **प्रतिसं० ३२** । पत्रस० २१ । ले०काल—स० १९०४ । पूर्ण । वेष्टनस० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर, बयाना ।

विशेष—इसी मन्दिर मे दो प्रतिया और हैं ।

४७२ **प्रतिसं० ३३** । पत्रस० ३० । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टनस० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर, कामा ।

विशेष—प्रति हिन्दी टव्वा टीका सहित है । इसी मदिर मे दो प्रतिया और हैं ।

४७३. **प्रतिसं० ३४** । पत्र स० २० । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० ३०९ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी, कामा ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

४७४. **प्रतिसं० ३५** । पत्र स० १२ । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० १९ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

विशेष—नीले रङ्ग के पत्रो पर स्वर्णाक्षरो की प्रति है ।

४७५. **प्रतिसं० ३६** । पत्र स० १२ । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० १०९ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी; कामा ।

४७६. **प्रतिस० ३७** । पत्रस० १२१ से १६२ । ले०काल— X । अपूर्ण । वेष्टन स० ११० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है ।

४७७. **प्रतिस० ३८** । पत्रस० २१ । ले०काल—स० १८६० । पूर्ण । वेष्टन स० ३३५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

४७८. **प्रतिस० ३९** । पत्रस० १६ । ले०काल— X । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति-स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर हूण्डावालो का, डीग ।

४७९. **प्रतिस० ४०** । पत्रस० ७० । ले०काल—१९५४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति-स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

४८०. **प्रतिस० ४१** । पत्रस० १२ । ले०काल— X । पूर्ण । वेष्टन स० ३७ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

४८१. **प्रतिसं० ४२** । पत्रस० २-१६ । ले०काल— X । अपूर्ण । वेष्टन स० ७७ । जीर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

४८२. **प्रतिस० ४३** । पत्रस० ८ । ले०काल— X । पूर्ण । वेष्टन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

४८३. **प्रतिस० ४४** । पत्रस० २० । ले०काल— X । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ से १०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

४८४. **प्रतिस० ४५** । पत्रस० ११ । ले०काल—स० १९६७ । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ से १०१ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—ईश्वरलाल चादवाड ने प्रतिलिपि की थी ।

४८५. **प्रतिस० ४६** । पत्रस० २८ । ले०काल— X । पूर्ण । वेष्टनस० १५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—लिपि सुन्दर है । अक्षर मोटे हैं । हिन्दी गद्य मे अर्थ दिया हुआ है ।

४८६. **प्रति स० ४७** । पत्रस० २० । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १३२ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—प्रति सुनहरी है पर किसी २ पत्र के अक्षर मिट से गये हैं ।

४८७. **प्रतिस० ४८** । पत्रस० १३ । ले०काल— स० १८४३ आसोज वदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १४३ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

४८८. **प्रतिस० ४९** । पत्रस० १६ । ले०काल— X । पूर्ण । वेष्टन स० १६५ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—**ऋषिमडल स्तोत्र** गौतम स्वामी कृत और है जिसके पाच पत्र हैं ।

४८९. प्रतिसं० ५० । पत्रसं० ४२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८८ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—एक प्रति और है । प्रति हिन्दी अर्थ सहित है ।

४९०. **प्रतिसं० ५१** । पत्रसं० १० । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४९१. **प्रतिसं० ५२** । पत्रसं० ६-१३० । ले०काल सं० १८७७ चैत बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है । लेकिन वह अशुद्ध है ।

प्रमाण नयैरधिगम :—चत्वारि सजीवादीना नव पदार्थं तत्व प्रमाण भेद द्वै करि । नय कथिने भेद द्वय प्रमाण भवति । नय भवति विकल्प द्वय । तत्र प्रमाण कोऽर्थ । प्रमाण भेद द्वय । स्वार्थ प्रमाण परार्थ प्रमाण । तत्र च अय प्रमाण को विशेष । प्रधानश्रुतज्ञानगरिष्टसिद्धातशास्त्र स्वार्थं प्रमाण भवति । यत् ज्ञानात्मक भावश्रुत श्रुतसूक्ष्मजल्पना अभ्यतरि आत्मज्ञान यस्य परमार्थं भवति । स्वार्थ प्रमाण वचनात्मक । परमार्थ प्रमाण तस्य वचनात्मक श्रुत ज्ञानस्य विकल्पना एव प्रमाण विशेष । नय कोऽर्थ । नयस्य भेद-द्वय । द्रव्यार्थनय व्यवहारनय । अधिगम्य कोर्थ उपयातर प्रमाणनयस्य । इति भावार्थं ॥

४९२. **प्रतिसं० ५३** । पत्रसं० २६ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है एव हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

४९३. **प्रति सं० ५४** । पत्रसं० ३२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है ।

४९४. **प्रति सं० ५५** । पत्रसं० १८ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३६—६२ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मंदिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

४९५. **प्रति सं० ५६** । पत्रसं० ८ । ले०काल × । वेष्टन सं० ४०७ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

४९६. **प्रति सं० ५७** । पत्रसं० २३ । ले०काल × । वेष्टन सं० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४९७. **प्रतिसं० ५८** । पत्रसं० ८२ । आ० ११ × ४¾ इञ्च । ले० काल × । वेष्टनसं० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

४९८. **प्रतिसं० ५९** । पत्रसं० ८९ । ले० काल × । वेष्टनसं० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मंदिर ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

४६६. **प्रतिसं० ६०** । पत्रस० २० । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३५७ । १६० **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर सभवनाथ उदयपुर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

५००. **प्रति स० ६१** । पत्रस० २४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३५८ । १६१ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर । प्रति प्राचीन है ।

५०१ **प्रतिसं० ६२** । पत्रस० ८४ । आ० ११$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इन्च । ले० काल स० १६१२ चैत्र बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है । भरतपुर मे प्रतिलिपि करायी गयी थी । श्री सुखदेव की मार्फत गोपाल से यह पुस्तक खरीदी गयी थी ।

चढायत जैन मदिर कामा के रामसिंह कासलीवाल दीवान उमरावसिंह का बेटा वासी कामा के सावण सुदी ५ स० १६२८ मे ।

५०२. **प्रति स० ६३** । पत्रस० ६२ । ले० काल स० १६४६ ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० २१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है । आनदीलाल दीवान कामावाले ने प्रतिलिपि कराकर दीवान जी के मदिर मे चढायी थी ।

५०३. **प्रति स० ६४** । पत्रस० ७८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा संस्कृत टीका सहित है ।

५०४. **तत्वार्थ सूत्र भाषा ×** । पत्रस० ५३ । आ० १२$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल स० १६१३ भादवा सुदी ६ । अपूर्ण । वेष्टनस० २३ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन अग्रवाल मन्दिर अलवर ।

५०५. **प्रतिसं० २** । पत्रस० ३३ । आ० १२$\frac{1}{2}$×८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—हिन्दी मे टिप्पण दिया हुआ है ।

५०६. **तत्वार्थ सूत्र टीका—श्रुतसागर** । पत्रस० ३१६ । आ०—११×५ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल स० १७६५ । पूर्ण । वेष्टनस० ८३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दनस्वामी बूदी ।

विशेष—जयपुर मे श्वे० प्रयागदास ने प्रतिलिपि की थी ।

✓५०७. **प्रतिस० २** । पत्रस० ३६६ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोंक) ।

✓**विशेष**—अन्तिम पत्र नही है । ग्रन्थ के दोनो पुट्ठे सचित्र हैं ।

५०८. **प्रतिसं० ३** । पत्रस० ४७६ । ले० काल स०१८७६ । पूर्ण । वेष्टनस० २६।१४ ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक)।

५०६. प्रति सं० ४। पत्रस० ३३३। ले० काल स० १८४६ माघ सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० २६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक।

विशेष—ग्रन्थाग्रन्थ स० ६००० । लिखायत टोडानगर मध्ये ।

५१०. प्रति सं० ५। पत्रस० ३१५। ले० काल स० १८२१। पूर्ण। वेष्टनस० २५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

५११. प्रति सं० ६। पत्रस० ४६३। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १७५। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—प्रति अशुद्ध है।

५१२ तत्वार्थ सूत्र भाषा—महाचन्द्र। पत्रस० ४। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय-सिद्धान्त। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० २३८-६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

अन्तिम—सप्त तत्व वर्णन कियो, उमास्वामी मुनिराय।
दशाध्याय करिके सकल शास्त्र रहस्य वताय।
स्वल्प वचनिका इम पढौ, स्वल्प मती बुध चिन्ह।
महाचन्द्र सोलापुर रहि, पचन कहे अधीन ॥

५१३. प्रति सं० २। पत्रस० ३७। ले०काल स० १९५५ काती वुदी ६। पूर्ण। वेष्टनस० २३३-५८३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मन्दिर, उदयपुर।

विशेष—भट्टारक कनककीर्ति के उपदेश से हु वडज्ञातीय महता फतेलाल के पुत्र ने उदयपुर के सभवनाथ चैत्यालय मे इस प्रति को चढाई थी। भीडर मे गोकुल प्रसाद ने प्रतिलिपि की थी।

५१४. तत्वार्थसूत्र भाषा— कनककीर्ति। पत्रस० २-६२। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विपय—सिद्धान्त। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० १६०४। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५१५. प्रति सं० २। पत्रस० ५५। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ३५।३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर मादवा (राज०)।

५१६. प्रति सं० ३। पत्र स० ११८। ले०काल स० १८४४ पौप वुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० १५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)।

विशेष—आचार्य विजयकीर्ति के शिष्य प० देवीचन्द ने प्रति लिखाई थी। लिखत माली नन्दू मालपुरा का।

५१७. प्रति सं० ४। पत्र स० २२०। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर।

५१८. प्रति सं० ५। पत्र स० ६८। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ७८। **प्राप्ति-स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—अन्तिम पत्र नही है।

५१९. प्रतिस० ६। पत्र स० १९७। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४०६-१५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

५२०. प्रतिसं० ७। पत्र स० ८४। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७६। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर वडा वीसपथी दौसा।

५२१ प्रतिस० ८। पत्र स० १९९। आ० ११×७½ इन्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २३-५०। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर वडा वीसपथी दौसा।

विशेष—रतनचन्द पाटनी ने दौसा मे प्रतिलिपि की थी।

५२२ प्रतिस० ९। पत्र स० १९३। ले०काल स० १७८५ जेष्ठ सुदी १। पूर्ण। वेष्टनस० २५-४०। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर वडा वीसपथी दौसा।

विशेष—पडित ईसर अजमेरा लालसोट वाले ने प्रतिलिपि की थी।

५२३. प्रतिस० १०। पत्र स० ३७। आ० १२×५½ इन्च। ले०काल स० १८६१। अपूर्ण। वेष्टन स० ९७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा।

विशेष—भवानीराम से प्रतिलिपि कराई थी।

५२४. प्रतिसं० ११। पत्रस० १२९। आ० १०½×७½ इन्च। ले०काल स० १८५९ चैत्र सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन स० ९८-३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा।

विशेष—प्रति उत्तम है। सेवाराम ने दौसा मे प्रतिलिपि की थी।

५२५. प्रतिसं० १२। पत्रस० ८८। ले०काल स०१८१२ ज्येष्ठ सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स०—२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी।

५२६. प्रतिसं० १३। पत्रस० ४-६५। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १८०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी)।

विशेष—इसका नाम तत्वार्थरत्नप्रभाकर भाषा भी दिया है।

५२७ प्रतिस० १४। पत्रस० ९०। ले०काल स० १७५५ माघ सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स०—३१। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर चेतनदास दीवान पुरानी डीग।

५२८. प्रतिस० १५। पत्रस० ७६। ले०काल × पूर्ण। वेष्टन स० ३२। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—तत्वार्थसूत्र की श्रुतसागरी टीका के प्रथम अध्याय की भाषा है।

५२९. तत्वार्थसूत्र टीका—गिरिवरसिंह। पत्र स०— ७७। भाषा-हिन्दी। विषय—सिद्धात। र०काल १९३५। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६३। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, भरतपुर।

विशेष—टीका वही मे लिखी हुई है।

अन्तमें—ऐसे स्वामी उमास्वामी आचार्य कृत दशाध्यायी मूल सूत्र की सर्वार्थसिद्धि नामा सस्कृत टीका ताकी भाषावचनिका तें सक्षेप मात्र अर्थ लैके दीवान बालमुकन्द के पुत्र गिरिवरसिंह वासी कु भेर के ने अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार मूल सूत्रनि को अर्थ जानिवे के लिए यह वचनिका रची और स० १९३५ के ज्येष्ठ सुदी २ रविवार के दिन सपूर्ण कीनी ।

५३०. तत्वार्थसूत्र भाषा—साहिबराम पाटनी । पत्रस० ४० । आ० ११½ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—सिद्धात । र०काल स० १८१८ । ले०काल स० १८१८ । पूर्ण । वेष्टन स० ६९ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

विशेष—ग्रन्थ गुटका साइज मे है । ग्रन्थ का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

आदि भाग—सुमरण करि गुरु देव द्वादशागवाणी प्रणमि ।
सुरगमुक्ति मग मेव, सूत्र शब्द भाषा कहो ।
पूर्वकृत मुनिराय, लिखी विविध विधि वचनिका ।
तिनहू अर्थ समुदाय लिख्यौ अन्त न लख्यौ परे ।

टीका—शिवमग मिलवन कर्मगिर भजन सर्व तत्वज्ञ ।
वदौ तिह गुण लब्धिकौ वीतराग सर्वज्ञ ।।

अन्तिम—कवि परिचय —हैं अजाना जिन आश्रमी वर्ण वनिक व्यवहार ।
गोत पाटणी वश गिरि है बू दी आगार ।। २१ ।।
वसुदश शत परि दसरुवसु माघ विशति गुणग्राम ।
ग्रन्थरच्यौ गुरुजन कृपा सेवक साहिबराम ।। २२ ।।

ऋषि खुशालचन्द ने बयाना मे प्रतिलिपि की थी ।

५३१. तत्वार्थ सूत्र भाषा—छोटेलाल । पत्रस० ७५ । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—सिद्धान्त । र०काल स० १९५८ । ले० काल स० १९५९ । पूर्ण । वेष्टन स० १०९ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष—छोटेलाल जी अलीगढ वालो ने रचा था । कवि का पूर्ण परिचय दिया हुआ है तथा गुटका साइज है ।

५३२. तत्वार्थ सूत्र भाषा-प० सदासुख कासलीवाल । पत्रस० ८० । आ० १२ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय–सिद्धात । र०काल स० १९१० फाल्गुण बुदी १० । ले० काल स० १९१० । पूर्ण । वेष्टन स० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

५३३. प्रतिसं० २ । पत्रस० ८८ । ले० काल–स० १९७९ । पूर्ण । वेष्टन स० २२ । **प्राप्ति–स्थान**—दि०जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

५३४. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १७७ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १९५२ । अपूर्ण । वेष्टन स०—३६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना बू दी ।

५३५. प्रति सं० ४ । पत्र स० ३७ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । ले०काल स १९१४ आसोज सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६।६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ, कोटा ।

५३६. प्रति स० ५ । पत्रस० ७३ । ले०काल—स० १६१३ । पूर्ण । वेष्टन स० १२-३६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—भैरवबक्श ने प्रतिलिपि करायी थी ।

५३७ प्रतिसं० ६ । पत्रस० ६५ । आ० १२×५इन्च । ले०काल स० १६१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

५३८. प्रतिस० ७ । पत्रस० ६६ । आ० १२×५ इन्च । ले०काल स० १६२५ । पूर्ण । वेष्टनस० ११२ । **प्राप्तिस्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

५३९. प्रतिसं० ८ । पत्रस० ६७ । ले०काल स० १६६२ । पूर्ण । वेष्टनस० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

५४०. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १०७ । ले०काल १६६२ चैत्र बुदी ४ । वेष्टनस० २० । **प्राप्तिस्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

५४१. प्रतिसं० १० । पत्रस० ६७ । आ० १४×६½ इन्च । ले०काल स० १६५६ भादवा बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० २६ **प्राप्ति स्थान** - उपरोक्त मन्दिर ।

५४२. प्रतिस० ११ । पत्रस०५६ । आ० १५½×५½ इन्च । ले०काल स० १६२३ । पूर्ण । वेष्टनस० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

५४३. प्रतिस० १२ । पत्रस० ७३ । आ० १४×८ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

५४४ प्रतिस० १३ । पत्रस० ७३ । ले०काल स० १६५५ । पूर्ण । वेष्टनस० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हूण्डावालो का डीग ।

५४५ प्रतिस० १४ । पत्रस० ६३ । आ० १३×७ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

५४६. प्रतिस० १५ । पत्र स० ३० । आ० १२×७ इन्च । ले० काल स० १६४३ । पूर्ण । वेष्टन स० २३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान, बूदी ।

५४७ तत्वार्थसूत्र भाषा —(वचनिका)—पन्नालाल सघी । पत्र स० ५५ । आ० १½×८ इन्च । भाषा-राजस्थानी (ढूढारी) गद्य । विषय-सिद्धात । र०काल स० १६३८ । ले० काल स०१६४६ । पूर्ण । वेष्टन स० १६१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर श्री महावीरजी बूदी ।

विशेष—बीजलपुर मे प्रतिलिपि हुई ।

५४८. प्रतिस० २ । पत्र स० ६४ । ले० काल स० १६४२ । पूर्ण । वेष्टन स० १४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूदी ।

५४९. तत्वार्थसूत्र भाषा-(वचनिका)-जयचन्द छाबडा । पत्र स० ३६३ । आ० ११½× ६ इन्च । भाषा-राजस्थानी (ढूढारी) गद्य । विषय-सिद्धात । र०काल स० १८६५ चैत्र सुदी ५ । ले०काल-स० १८८० माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

५५०. प्रतिसं० २ । पत्रस० २६६ । आ० १३×७ इन्च । ले०काल स० १९४१ माघ सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० ११-३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—घन्नालाल मागीलाल के पठनार्थ लिखी गयी थी ।

५५१. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ३५४ । आ० १३×८½ इन्च । ले० काल स० १९४५ वैशाख सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

५५२. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ३५४ । आ० ११×६ इन्च । ले० काल० स० १९१८ । पूर्ण । वेष्टनस० १४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूदी ।

५५३. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ३१० । आ० १४×६½ इन्च । ले० काल स० १९२९ । पूर्ण । वेष्टन स० ९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूदी ।

५५४. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ३५४ । आ० १०×८ इन्च । ले० काल० स० १८९५ । पूर्ण । वेष्ठन स० २१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

५५५. प्रतिसं० ७ । पत्र स० ५३ । आ० ११×५ इन्च । ले०काल स० १९६७ । पूर्ण । वेष्टनस० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

५५६. प्रतिसं० ८ । पत्रस० २६ । आ० ११½×५½ इन्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपथी मालपुरा (टोक) ।

५५७. प्रतिसं० ९ । पत्रस० ४४७ । आ० १०½×७½ इन्च । ले०काल स० १९५८ । पूर्ण । वेष्टनस० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्योका, नैणवा ।

५५८. प्रति स० १० । पत्रस० ३०१ । आ० १३×६ इन्च । ले०काल स० १९३२ आषाढ बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मन्दिर बयाना ।

५५९. प्रति स० ११ । पत्रस० ३२१ । आ० १२½×५¾ इन्च । ले०काल स० १९११ आपाढ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

५६०. तत्वार्थसूत्र भाषा—× । पत्रस० ३८ । आ०११×६½ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

५६१. तत्वार्थसूत्र भाषा ·····। पत्रस० ९ । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल— × । ले०काल १७५५ आपाढ बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन स० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर डीग ।

५६२. तत्वार्थसूत्र भाषा '। पत्रस० ८४ । आ० १२×६½ इन्च । भाषा —हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

५६३. तत्वार्थसूत्र भाषा · । पत्रस० ४३ । आ० ११×६½ इन्च । भाषा—संस्कृत—हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल १९५३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है।

५६४. तत्वार्थसूत्र भाषा । पत्रस० २२ । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल-× । ले०काल स० १८२६ माह सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

५६५. तत्वार्थसूत्र भाषा ···। पत्रस० ३४ । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-सिद्धात । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनपचायती मन्दिर, भरतपुर ।

५६६. तत्वार्थसूत्र भाषा · । पत्रस० ४१ । भाषा—हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन-स० ५५० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

५६७. तत्वार्थसूत्र भाषा । पत्रस० ५५ । भाषा-हिन्दी । ले०काल १६६६ । पूर्ण । वेष्टन स० ५५१ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

५६८. तत्वार्थसूत्र टीका·····। पत्रस० ८३ । भाषा—हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५५२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—गुटका साइज है ।

५६९. तत्वार्थसूत्र भाषा · · । पत्रस०-१५ । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५५५ ।

विशेष—हासिये के चारो ओर टीका लिखी है । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

५७०. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस० ८२ । भाषा—हिन्दी । र०काल—× । ले० काल-१७९९ । पूर्ण । वेष्टन स० ५५६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—श्रुतसागरी टीकानुसार कनककीर्ति ने लिखा था ।

५७१. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस० ६५ । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल १९२४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५५८ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—मूल सहित है ।

५७२. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस० ३० । आ० ६३/४ × ४३/४ इन्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । विषय-सिद्धात । र०काल × । ले०काल स० १८१९ माह सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १०९६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

५७३. तत्वार्थसूत्र—भाषा × । पत्रस० ७६ । आ० ७३/४ × ५ इन्च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । विषय— सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल स० १९०५ आसोज वुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ७२६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७४. तत्वार्थ सूत्र भाषा × । पत्रस० ६६ । आ० ११३/४ × ६३/४ इन्च । भाषा—सस्कृत-हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०२७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७५ तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस० २० । आ० १२ × ५१/२ इन्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—सिद्धात । र०काल — × । ले०काल—स० १८४६ सावन सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १०२१ । **प्राप्ति स्थान**— भट्टारकीय दि० जैन मदिर, अजमेर ।

५७६. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस० ११६ । आ ११¾ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल— × । ले०काल स० १८०७ ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर, नैणवा ।

विशेष—जीवराज उदयराम ठोल्या ने तोलाराम वैद्य से नैणवा मे प्रतिलिपि कराई थी ।

५७७. तत्वार्थसूत्र—भाषा × । —पत्रस० ४२ । आ० ७½ × ५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत-हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५४ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

५७८. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस० १४३ आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत, हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६३–४४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर वडा वीसपथी दौसा ।

५७९. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस० ६ से ५३ । आ० १२ × ५ इच । भाषा—सस्कृत हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १०६–६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वडा वीसपथी दौसा ।

५८०. तत्वार्थ सूत्र भाषा × । पत्रस० ११६ । आ० १० × ६½ इञ्च । भाषा—सस्कृत हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल स० १९१३ मगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० २३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर कोट्यो का, नैणवा ।

५८१. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस० १५७ । आ० ६ × ६ इञ्च । भाषा—सस्कृत, हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल स० × । ले०काल स० १८८८ चैत्र सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटयो का, नैणवा ।

विशेष—नैणवा नगर मे लछमीनारायण ने टोडूराम जी हुडा के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

५८२. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस० २७ । आ० १२ × ७½ इञ्च । भाषा - सस्कृत, हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का, नैणवा ।

विशेष—प्रति टव्वा टीका सहित है ।

५८३. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस० ६३ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल स० १७८३ । पूर्ण । वेष्टन स० १३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर, उदयपुर ।

५८४. तत्वार्थसूत्र—भाषा × । पत्रस० १०० । आ० = ६½ × ५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत-हिन्दी (गद्य) । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—हिन्दी गद्य टीका दी हुई है ।

५८५ तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस० ६० । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत—हिन्दी (गद्य) । विषय - सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल स० १८८२ । पूर्ण । वेष्टन स० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

५८६. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस० ३४ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत हिन्दी (गद्य) । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल स० १६२३ । पूर्ण । वेष्टन सख्या ११३ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

५८७. तत्वार्थसूत्र—भाषा × । पत्रस० २-३८ । आ० १४ × ६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बू दी ।

५८८. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस० ६१ । आ० ९ × ४¾ इञ्च । भाषा—संस्कृत-हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दनस्वामी बू दी ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति का पत्र नही है ।

५८९. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस० ४० । आ० १३ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल स० १९०७ द्वि० जेठ वुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर नागदी, बू दी ।

५९०. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्र स० ३९ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल—× । ले०काल सं० १९६५ भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १४१० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

५९१. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्र स० ६५ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा— संस्कृत । हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल स० १९५४ कार्तिक सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० १५७२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५९२. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्र स० ४३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल—× । ले० काल—स० १९०१ श्रावण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १४-११ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५९३. तत्वार्थसूत्र—भाषा × । पत्र स० १२ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल स० १८१८ । ले०काल स० १८२६ । पूर्ण । वेष्टन स० १४६७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५९४. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्र स० २१ । आ० १२ × ७½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धात । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १५३० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

५९५. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्र स० १५१ । आ० १२½ × ८ इञ्च । भाषा—संस्कृत. हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल स० १८४२ माह सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन

स० १५७६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय शास्त्र भण्डार अजमेर ।

५६६. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्र स० १६६ । आ० ६ × ८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल स० १८४३ चैत सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ६२७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

विशेष—किशनगढ मे प० चिमनलाल ने प्रतिलिपि की ।

५६७. तत्वार्थसूत्र भाषा—× । पत्रस० ६१ । आकार १०½ × ७½ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल—स० १६३२ । पूर्ण । वेष्टन स० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन पचायती मन्दिर, अलवर ।

५६८. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस० १२७ । आ० १०¾ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी—(गद्य) । विषय—सिद्धात । र०काल— × । ले०काल स० १८७७ आपाढ बुदी २ । पूर्ण वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, राजमहल (टोक) ।

विशेष – श्लोक स० ३००० प्रमाण ग्रन्थ है ।

५६६. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस० २५० । आ० १४×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य विषय – सिद्धान्त । र०काल— × । **ले०काल** स० १८६३ । पूर्ण । वेष्टन स० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपथी मालपुरा (टोक) ।

६००. तत्वार्थसूत्र. भाषा × । पत्रस० २२६ । आ० ८½ × ५½ इञ्च । भाषा —हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धात । र०काल— × । ले०काल स० १६१० । पूर्ण । वेष्टन स० १५५ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन पचायती मन्दिर, अलवर ।

६०१. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस० ६० । आ० ११½ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) विषय—सिद्धात । र०काल— × । ले०काल स० १८०० मगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८/३३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर मादवा (राज) ।

विशेष—मालपुरा मे प्रतिलिपि की गयी थी ।

६०२. तत्वार्थसूत्र भाषा— × । पत्रस० ३८ । आ०—१० × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६-२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६०३. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस० ७६ । आ०—१२½ × ६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल—स० १८८७ । पूर्ण । वेष्टन स० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

६०४. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस० २६ । आ० ११ × ७ इञ्च । भाषा—सस्कृत—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल × । पूर्ण वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है ।

६०५. **तत्वार्थसूत्र** भाषा— × । पत्रसं० ५१ । ग्रा० १०½ × ४½ इन्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन सं० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—केवल प्रथम अध्याय तक है ।

६०६. **तत्वार्थसूत्र** भाषा । पत्रसं० ४६ । ग्रा० १०½ × ६ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं०—८६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर, उदयपुर ।

६०७. **तत्वार्थसूत्र** भाषा — × । पत्रसं० १०० । ग्रा०—११½ × ५½ इन्च । भाषा—हिनी गद्य । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—केवल प्रथम अध्याय की टीका है और वह भी अपूर्ण है ।

६०७ (क). **तत्वार्थसूत्र** भाषा × । पत्रसं०३६ । ग्रा०—१२½ × ६ इन्च । र०काल । ले० काल सं० १६१६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मदिर ।

विशेष—हिन्दी टव्वा टीका सहित है । ज्ञानचद तेरापंथी ने दौसा मे प्रतिलिपि की थी ।

६०८. **तत्वार्थसूत्र वृत्ति**— × । पत्रसं० ४० । ग्रा० ८×४½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—इति श्रीमदुमास्वामी विरचित तत्वार्थसूत्र तस्य वृत्तिस्तत्वार्थदीपिका नाम्नी समाप्तम् । इस वृत्ति का नाम तत्वार्थ दीपिका भी है ।

६०९. **तप्वार्थसूत्र वृत्ति**—× । पत्रसं० ३८४ । ग्रा० १० × ५½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धात । र०काल— × । ले० काल—सं० १७६१ फागुण सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

६१०. **तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति**— × । पत्रसं० २३ । ग्रा० १२ × ६ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १६२-८० । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६११. **तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति**— × । पत्रसं० ६५ । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल—× । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टनसं० ११।३२५ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर, उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

६१२. **त्रिभगीसार-नेमिचन्द्राचार्य** । पत्रसं० ७४ । ग्रा० ११×५ इन्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धात । र०काल × । ले०काल सं० १६०७ वैशाख बुदी १० । पूर्ण । वेष्टनसं० १६२ । **प्राप्ति स्थान** । भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६१३. **प्रतिसं० २** । पत्रसं० ६१ । ले०काल सं० १६३३ । पूर्ण । वेष्टनसं० २६२ । **प्राप्ति**

स्थान—दि०जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है तथा टीकाकार स्वरचन्द ने स० १९३३ मे टीका की थी।

६१४. प्रतिसं० ३। पत्रस० ३३। ले०काल— ×। पूर्ण। वेष्टनस० १५। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर, डीग।

विशेष—कठिन शब्दो का अर्थ भी है।

६१५. प्रतिसं० ४। पत्रस० ५६। ले०काल—×। अपूर्ण। वेष्टनस० १६। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

६१६. प्रतिस० ५। पत्रस० ४४। आ० ११$\frac{1}{4}$ × ५$\frac{1}{2}$। र०काल— ×। लिपिकाल— ×। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर।

६१७. त्रिभगीसार टीका—विवेकनन्दि। पत्रस० ५९। आ० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—सिद्धान्त। टीकाकाल— ×। ले०काल स० १७२७ आसोज बुदी ३। पूर्ण। वेप्टन स० २। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बू दी।

६१८. प्रतिसं० २। पत्रस० ६७। आ० ११ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल— ×। पूर्ण वेप्टन स० ११६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा।

६१९. प्रतिसं० ३। पत्रस० ६७। आ० ११ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल—×। पूर्ण। वेप्टन स० ११५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिरर दीवान जी, कामा।

६२०. त्रिभंगीसार भाषा ×। पत्रस० ५८। आ० ९ × ६ इञ्च। भाषा—हिन्दी (गद्य)। विषय—सिद्धात र०काल— ×। ले०काल स०—×। अपूर्ण। वेप्टन स० १७१। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

६२१. प्रतिसं० २। पत्रस० ६। ले०काल—×। अपूर्ण। वेप्टन स० १२९। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बू दी।

६२२. त्रिभगीसार भाषा ×। पत्रस० २२। भाषा—हिन्दी। विषय— र०काल— ×। ले० काल— ×। पूर्ण। वेप्टन स० ३७५। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर।

६२३. त्रिभगी सुबोधिनी टीका—प० आशाधर। पत्रस० २७। आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५। भाषा—सस्कृत। विपय—सिद्धात। र०काल— ×। लिपिकाल—स० १७२१ माह सुदी १०। वेप्टन स० २०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—ग्र थ समाप्ति के पश्चात् निम्न पक्ति लिखी हुई है—

"यह पोथी मालपुरा का सेतावर पासि लई छै। तातै यह पोथी साह जोधराज गोदीका सागानेर वालो की छै।"

६२४. प्रतिसं० २। पत्रस० ८६। लिपिकाल—स० १५८१ आसोज सुदी २। पूर्ण। वेप्टन स० २१। **प्राप्तिस्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—हस्तिकान्तिपुर मे गगादास ने प्रतिलिपि की थी।

६२५. त्रेपनभाव चर्चा— × । पत्रस० ४ । आ०— ६½ × ५½ इञ्च । भाषा— हिन्दी । विषय—चर्चा । र०काल— × । ले०काल स० १८७३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोंक) ।

विशेष—अजमेर मे प्रतिलिपि की गयी थी ।

६२६. दशवैकालिक सूत्र— × । पत्रस० ५८ । भाषा—प्राकृत । विषय-आगम । र०काल × । ले०काल स० १७५३ । पूर्ण । वेष्टनस० ७४७ ।**प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष—गुजराती (लिपि हिन्दी) टीका सहित है गाथाओं पर अर्थ है ।

६२७ प्रतिसं० २ । पत्रस० १७ । ले०काल—स० १८२६ । पूर्ण । वेष्टनस० ५६० । उपरोक्त मन्दिर । दि० जैन मन्दिर पचायती भरतपुर ।

६२८ प्रतिसं० ३ । पत्रस० ६६ । आ० ६½ × ४½ । ले०काल स० १६७६ माह बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १३२ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

६२९. प्रतिस० ४ । पत्रस० २० । आ० १२½ × ६ इञ्च । ले०काल स० १५६१ । पूर्ण । वेष्टन स० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—सवत् १५६१ वर्षे प्रथम श्रावण सुदि ३ शनौ ज्ञानावरणादिक कर्मक्षयार्थं तेजपालेन इद ग्र थ स्वहस्तेन लिखित ।

६३०. प्रतिस० ५ । पत्रस० ६१ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले०काल स० १७४१ माघ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० १५१ ।**प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६३१ द्रव्यसमुच्चय-कजकीर्ति । पत्रस० २ । आ० १२ × ५ । भाषा—सस्कृत । विषय सिद्धान्त । र०काल — × । लिपि काल०— × । वेष्टन स० ६ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—शुभचन्द्र की प्रेरणा से कजकीर्ति ने रचना की थी ।

६३२ प्रतिसं० २ । पत्रस० ६ । आ० ११ × ५ । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । लिपिकाल — × । वेष्टन स० ७ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

६३३. द्रव्यसग्रह – नेमिचन्द्राचार्य । पत्रस० ८ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल—स० १८४८ । पूर्ण । वेष्टनस० ६२२ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है ।

६३४. प्रतिस० २ । पत्रस० ५ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० २ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है । इस मन्दिर मे सस्कृत टीका सहित ४ प्रतिया और हैं ।

६३५. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ७ । आ० ११ × ५ इञ्च । लिपि स० १६६८ । वेष्टनस० ५ । **प्राप्तिस्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। आचार्य हरीचन्द नागपुरीय तपागच्छ के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी।

६३६. प्रतिसं० ४। पत्रसं० ४। ले०काल— × । पूर्ण। वेष्टनसं० २६। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—इस मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे ४ प्रतिया और हैं।

६३७. प्रतिसं० ५। पत्रसं० ५। ले०काल—सं० १७५०। पूर्ण। वेष्टनसं० ३१४। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा।

विशेष—इस मन्दिर मे ४ प्रतिया और हैं जो संस्कृत टीका सहित हैं।

६३८. प्रतिसं० ६। पत्रसं० २१। ले०काल—सं० १७२६ फाल्गुन सुदी १३। पूर्ण। वेष्टनसं० २२। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मदिर हूण्डावालो का डीग।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है।

६३९. प्रतिसं० ७। पत्रसं० ५। ले०काल— × । पूर्ण। वेष्टनसं० ७। २०। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)।

६४०. प्रतिसं० ८। पत्रसं० ४। ले०काल—सं० १७६८ जेष्ठ सुदी १२। पूर्ण। वेष्टनसं०-५६-१६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

विशेष—गोनेर मे महात्मा साहिमल ने प्रतिलिपि की थी।

६४१. प्रतिसं० ९। पत्रसं० ४। ले०काल—सं० १६०० माह बुदी १३। पूर्ण। वेष्टनसं०-२७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक)।

६४२. प्रतिसं० १०। पत्रसं० २४। ले०काल— × । पूर्ण। वेष्टनसं० ८७।१६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

६४३. प्रतिसं० ११। पत्रसं० ४। ले०काल— × । पूर्ण। वेष्टनसं० ६८। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

६४४. प्रतिसं० १२। पत्रसं० ५६। ले०काल— × । पूर्ण। वेष्टनसं० २४५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बून्दी।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

६४५. प्रतिसं० १३। पत्रसं० १०। ले०काल—सं० १९५२ सावन सुदी ९। पूर्ण। वेष्टनसं०-१०८। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

विशेष—झगडावत कस्तूरचन्द के पुत्र चोकचन्द ने लिखी थी।

६४६. प्रतिसं० १४। पत्रसं० ५। ले०काल—सं० १८७८ माह बुदी २। पूर्ण। वेष्टनसं०-२६०। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—पं० हीरानन्द ने प्रतिलिपि की थी।

६४७. प्रतिसं० १५। पत्रसं० ५। ले०काल— × । अपूर्ण। वेष्टनसं० १३। **प्राप्तिस्थान**—

दि० जैन मदिर दबलाना (बून्दी) ।

६४८. **प्रतिसं० १६** । पत्रस० ११ । ग्रा० ६×४ इञ्च । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस०–१११-६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर, इन्दरगढ ।

विशेष—एक प्रति ग्रौर है ।

६४९. **प्रतिसं० १७** । पत्रस० १४ । ले०काल—स० १७१३ । पूर्ण । वेष्टनस० ३६८–१४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

विशेष—पाडे जसा ने नागपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

६५०. **प्रतिसं० १८** । पत्रस० १८ । ग्रा० १२×५ इञ्च । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० १६० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर ग्रलवर ।

६५१. **प्रतिस० १९** । पत्रस० १७ । ग्रा० ८½×४½ इञ्च । ले०काल—स० १६४६ सावन वुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० १५० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरी है । तथा सुन्दर है । चम्पालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

६५२. **द्रव्यसग्रह टीका—प्रभाचन्द्र** । पत्रस० १५ । ग्रा० ११×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल—× । ले०काल—स० १८२०,माघ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० ६८० । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

६५३. **द्रव्य सग्रह टीका**—पत्रस० १५ । ग्रा० १०½×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल—स० १८२२ । पूर्ण । वेष्टनस० १३३ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

६५४. **द्रव्यसग्रह वृत्ति—ब्रह्मदेव** । पत्रस० ११६ । ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० ३११ । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, ग्रजमेर ।

६५५. **प्रतिसं० २** । पत्रस० ११७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६५६. **प्रतिस० ३** । पत्रस० ५१ । ले०काल—स० १७५३ चैत्र सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० ६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक) ।

६५७. **प्रतिसं० ४** । पत्रस० ६ । ग्रा० १२½×५ इञ्च । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टनस०–१४२ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन ग्रग्रवाल मदिर, उदयपुर ।

६५८. **प्रतिसं० ५** । पत्रस० १०१ । ले०काल—स०१७१० जेष्ठ वुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस०–१२२ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर, ग्रादिनाथ बून्दी ।

विशेष—स० १७१० ज्येष्ठ वुदी १ को ग्राचार्य महेन्द्रकीर्ति के पठनार्थ विद्यागुरु श्री तेजपाल के उपदेश से वृ दावती मे जयसिह के राज्य मे प्रतिलिपि हुई थी ।

६५९. **प्रतिस० ६** । पत्रस० ६४ । ग्रा० ६½–४½ इञ्च । ले०काल—स० १८०७ ग्रापाढ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० ६६।३१ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन सोगणियो का मन्दिर, करौली ।

६६०. **प्रतिसं० ७** । पत्रस० १०६ । आ० १०×५½ इञ्च । ले०काल — । अपूर्ण । वेष्टनस०—२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६६१. **प्रतिस० ८** । पत्रस०—१७१ । आ० ११×४½ इञ्च । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६६२. **द्रव्यसंग्रह वृत्ति**—× । पत्रस० ८६ । आ० ११×६½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० १३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६६३. **द्रव्यसग्रह टीका**— × । पत्रस० ८ । आ० १०×४¾ इञ्च । भाषा—प्राकृत हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल—स० १७६० ज्येष्ट सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनस० ६८३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६४. **द्रव्यसंग्रह टीका**—× । पत्र स० ४७ । आ०—११½×७ इञ्च । भाषा—सस्कृत—हिन्दी । विषय—सिद्धान । र०काल—× । ले०काल—स० १८१७ वैशाख सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० २३।२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करोली ।

६६५. **द्रव्यसग्रह भाषा**—× । पत्र स० १६ । ले०काल—स० १८६७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२।१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी, टोक ।

विशेष—टोडा के नेमिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी । प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

६६६ **द्रव्यसग्रह भाषा टीका** । पत्र स० ५-१० । आ० १०¼×४¾ इञ्च । ले०काल—स० १७१६ । वैशाख सुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टन स० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति ।

सम्वत् १७१६ वर्षे वैसाख मासे शुक्लपक्षे १३ रवौ सागपत्तन शुभस्थाने श्री आदिनाथ चैत्यालये श्री काष्टासघे नदीनटगछे विद्यागणे भ० रामसेनान्वये तदनुक्रमेण भ० श्री रत्नभूपण भ० श्री जयकीर्ति भ० श्री कमलकीर्ति तत्पट्टे भ० भुवनकीर्ति विद्यमाने भ० श्री कमलकीर्ति तत् शिप्य ब्रह्म श्री गगसागर लिखित स्वय पठनार्थ ।

६६७. **द्रव्यसग्रह भाषा** — × । पत्र स०—१७ । आ० १०½×६½ इञ्च । भाषा—प्राकृत हिन्दी । विपय-सिद्धात । रचना काल—× । लेखन काल स० १९५० ज्येष्ठ बुदी अमावस । पूर्ण । वेष्टन स० १३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ, कोटा ।

विशेष—श्री धन्नालाल बघेरवाल पुत्र जिनदास ने इन्दरगढ को अपने हाथ से प्रातिलिपि की थी ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सम्वत् उन्नीस-सै-पचास शुभ ज्येष्ठ हि मासा । कृष्णा मावस चन्द्र पूर्ण करि चित्तहुलासा ॥
घन्नालाल वघेरवाल मे गोत्र सुभधर । लघु सुत मै जिनदास लिखी इन्दरगढ निजकर ।
पठनार्थ आत्महित सुद्ध चित्त सदा रहो सुभा भावना । हो मूल सुद्ध करियो तहा मो परि क्षमा रखावना ।

६६८. **द्रव्य संग्रह टीका** × । पत्र सख्या-५० । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—

सिद्धात । रचना काल— × । लेखन काल-स० १८६३ । पूर्ण । वेष्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—वखतलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

६६९. द्रव्यसग्रह सटीक—× । पत्र स० २९ । आ० ११×५ इन्च । भाषा-प्राकृत-हिन्दी (गद्य) । विषय—सिद्धात । र काल × । ले० काल स० १८९१ माह वुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

६७०. द्रव्यसग्रह भाषा—पर्वतधर्मार्थी । पत्र स० ४३ । आ० १२×४½ इन्च । भाषा—गुजराती । लिपि हिन्दी । विषय—सिद्धात । र० काल—× । ले० काल स १७७० । वेष्टन स० २१९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बू दी ।

६७१. प्रति स० २ । पत्रस० २३ । आ० १०½×५ इन्च । ले० काल स० १७५१ चैत्र वुदी ६ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना, बू दी ।

६७२. प्रतिस० ३ । पत्र स० ७२ । लेखन काल स० १७६२ । पूर्ण । वेष्टन स० ४०६-१५३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियान, डूगरपुर ।

६७३. द्रव्यसग्रह भाषा— × । पत्र सख्या १६ । आ० १३×६ इन्च । भाषा—हिन्दी विषय—सिद्धात । र० काल— × । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० १५७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—गाथाओ के नीचे हिन्दी अर्थ मे अनुवाद है—

अन्तिम—सर्वगुन के निधान वडे पडित प्रधान ।
वहु दूपन रहित, गुन भूषण सहित है ।
तिन प्रति विनवत, नेमिचन्द मुनि नाथ ।
सौधियो जु जाको, तुम अर्थ जे अहित है ।
ग्रन्थ द्रव्य सग्रह, सुकीर्ति मे वहुत थोरो ।
मेरी कक्ष वुद्धि अल्प, शास्त्र मोमहिन है ।
तातै मै जु यह ग्र थ रचना करी है ।
कुछ गुन गहि लीजो एती वीनती कहित है ।

६७४. द्रव्यसग्रह भाषा—× । पत्र स० २६ । आ० ६×७½ इन्च । भाषा—सस्कृत । हिन्दी । विषय—सिद्धात । र० काल × । लेखन काल × । वेष्टन स०६४८ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—गणेशलाल विन्दापक्या ने स्वय पठनार्थ लिखी थी ।

६७५ द्रव्यसग्रह भाषा—× । पत्र स० ३९ । आ० १०½×४½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । ले० काल—× । पूर्ण । वे स ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वोरसली कोटा ।

६७६. द्रव्यसग्रह भाषा—× । पत्रस० ६१ । आ० १०½ × ६ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र० काल—× । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मँदिर दीवानजी, कामा ।

६७७. **द्रव्यसग्रह भाषा**— × । पत्रस० २५ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल स० १७२१ फागुण बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० ७७।५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर भादवा (राज०) ।

विशेष—ब्रह्मगुण सागर ने प्रतिलिपि की थी ।

६७८. **द्रव्यसग्रह भाषा**—× । पत्रस० २० । आ०—१२ × ५½ इञ्च । भाषा— हिन्दी। विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले० काल—स० १८२२ चैत्र सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनस० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर कामा ।

विशेष—साहिबी पाण्डे ने भरतपुर मे इच्छाराम से प्रतिलिपि कराई ।

६७९. **द्रव्यसग्रह भाषा** × । पत्रस० १३ । भाषा—हिन्दी । विषय–सिद्धान्त । र०काल–× । ले०काल १९३१ । पूर्ण । वेष्टनस० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर हण्डावालो का डीग ।

वशेष—मधुपुरी मे लिपि की गई थी ।

६८०. **द्रव्यसग्रह भाषा टीका— बसीधर** । पत्रस० ५१ । आ० ९¾ × ५¼ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय— सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल स०—१८१४ ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मदिर करौली ।

विशेष—पडित लालचद ने करौली मे प्रतिलिपि की थी ।

६८१ **प्रतिसं० २** । पत्रस० २८ । ले० काल— स० १८६२ वैशाख बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० ७०–२८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर बडा बीस पथी दौसा ।

विशेष—महात्मा गुलाबचद जी ने प्रतिलिपि की थी ।

६८२ **द्रव्यसग्रह भाषा-प० जयचन्द छाबडा** । पत्रस०–१-५, २०-४५ । आ० ८×६ इञ्च। भाषा—राजस्थानी (ढूढारी) गद्य । विषय—सिद्धान्त । र०काल स० १८६३ । ले० काल × । वेष्टनस० ६९७ ।अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६८३ **प्रतिसं० २** । पत्रस०—६४ । । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

६८४ **प्रति सं० ३** । पत्रस० १३ । ले० काल × । अपूर्ण वेष्टनस० १० । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन, मदिर श्री महावीर बूदी ।

६८५. **प्रतिसं० ४** । पत्रस० १३ । आ० ९½ × ६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दिगम्बर जैन मदिर श्री महावीर बूदी ।

६८६ **प्रतिसं० ५** । पत्रस० १३ । ले० काल स० १९४० । पूर्ण । वेष्टनस० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बूदी ।

६८७. **प्रतिस० ६** । पत्रस० ४० । ले०काल स० १९४५। पूर्ण । वेष्टनस० १४८ । **प्राप्ति–स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

६८८. **प्रतिसं० ७** । पत्रस० ५० । ले०काल स० १९५२ । पूर्ण । वेष्टनस० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

६८९. प्रतिसं० ८ । पत्रस० ४४ । र०काल X । ले०काल स० १९४० । पूर्ण । वेष्टनस० १३२/३३ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा) ।

६९०. प्रतिस० ९ । पत्रस० ४७ । ले०काल स० १८७६ कार्तिक दुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरह पथी दौसा ।

विशेष—मंजराम गोधा वासी गाजी का थाना का टोडाभीम मे आत्मवाचनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

६९१. प्रतिस० १० । पत्रस० ५० । ले०काल स० १८७० । पूर्ण । वेष्टनस० १०२ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल पचायती दि० जैन मन्दिर, अलवर ।

विशेष—जहानावाद मे प्रतिलिपि हुई थी ।

६९२. प्रतिसं० ११ । पत्रस० ४६ । ले०काल स० १८७९ कार्तिक वदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० ११७ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल पचायती दि० जैन मन्दिर अलवर ।

६९३ प्रति स० १२ । पत्रस०—६६ । आ० ८½ X ५½ इञ्च । ले० काल स० १८८० । पूर्ण । वेष्टनस० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन पचायती मदिर अलवर ।

६९४ प्रति स० १३ । पत्रस०—४७ । ले० काल स० १९८३ पूर्ण । वेष्टनस०—१६१ (अ) । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर

६९५. प्रतिसं० १४ । पत्रस०—३६ । ले० काल—X । पूर्ण । वेष्टनस०—३६।२१ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा ।

६९६. धर्मचर्चा ... । पत्रस० ४ । आ० १०½ X ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल X । ले० काल X । वेष्टनस० ७७ **प्राप्तिस्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६९७. धर्मकथा चर्चा X । पत्रस० २२ । आ० ९X४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी प० । विषय—सिद्धान्त । र०काल— X । ले० काल—स० १८२३ । पूर्ण । वेष्टनस० ४३४–१६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—प्रश्नोत्तर के रूपमे चर्चाएँ हैं । भट्टारक धर्मचन्द्र के शिष्य प० सुखराम के पठनार्थ भीलोडा मे लिखा गया था ।

६९८. नवतत्व गाथा .... । पत्रस० २४ । आ०—१०¾ X ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत विषय—नौ तत्वो का वर्णन । र०काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वेष्टनस० २५५ । **प्राप्ति-स्थान**—दि जैन मदिर दीवान जी कामा ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है ।

६९९ प्रति स० २ । पत्रस० ६ । आ० १० X ४½ इञ्च । ले० काल X । अपूर्ण । वेष्टनस० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वडा बीस पथी दौसा ।

विशेष—बालावबोध हिन्दी टीका सहित है ।

७००. नवतत्व गाथा भाषा—पन्नालाल चौधरी—पत्रस० ४१ । आ० १०½ X ७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धात । र०काल १९३४ । ले० काल स० १९३५ वैशाखबुदी ६ । पूर्ण ।

वेष्टनस० ३८।१७८। **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मदिर अलवर।

विशेष—मूलगाथाएं भी दी हुई हैं।

७०१ नवतत्व प्रकरण—×। पत्रस० ६। आ० १०½×४ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय–नव तत्वो का वर्णन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ५४६। **प्राप्ति स्थान**–भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—जीव अजीव आश्रव बध सवर निर्जरा मोक्ष एव पुण्य तथा पाप इन नव तत्वो का वर्णन है। इस भण्डार मे ३ प्रतिया और हैं।

७०२. प्रतिसं० २। पत्रस० ९। आ०—११×५ इञ्च। ले० स० १७८५ वैशाख वुदी १। पूर्ण। वेष्टनस० २६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—हिन्दी टव्वा टीका सहित है।

७०३. प्रतिसं० ३। पत्रस० ४। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बू दी)।

विशेष—४४ गाथायें हैं।

७०४. प्रतिसं० ४। पत्रस० ११। ले०काल—× पूर्ण। वेष्टनस० ३४२। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—मूल के नीचे गुजराती गद्य मे उल्था दिया है। मुनि श्री नेमिविमल ने शिव विमल के पठनार्थं इन्द्रगढ मे प्रतिलिपि की थी। इस भण्डार मे चार प्रतिया और हैं।

७०५ प्रतिसं० ५। पत्रस०१०। आ० १०½×५ इञ्च। ले०काल—×। पूर्ण। वेष्टनस० १७८–७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

विशेष—प्रति हिन्दी टव्वा टीका सहित है। इस भण्डार मे एक प्रति और है।

७०६. प्रतिसं०६। पत्रस० ४। ले० काल स० १७७९। पूर्ण। वेष्टनसं०—१२१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर।

७०७ प्रतिसं० ७। पत्रस०–८। आ० १०× ४½ इञ्च। ले० काल—×। पूर्ण वेष्टनस०—५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर खण्डेलवाल उदयपुर।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थं सहित है।

७०८. नवतत्व प्रकरण टीका—टीकाकार प० भान विजय। पत्रस०—३१। आ० ९×४ इञ्च। भाषा—सस्कृत हिन्दी। विषय—सिद्धान्त। र० काल—×। ले० काल स० १७४६ माघ सुदी १३। पूर्ण। वेष्टनस०—२१–९९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)।

विशेष—मूल गथाए भी दी हुई हैं।

७०९. नवतत्व शब्दार्थ—×। पत्रस०–१६। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—सिद्धान्त। र० काल—×। ले० काल सं० १६६८ वैशाख सुदी १। पूर्ण। वेष्टनस०—५१।

विशेष—रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ— जीवा १ जीवा २ पुन्न ३ पावा ४ श्रव ५ सवरोय ६ निजरणा ७ ।
बधो ८ मुकोय ६ तहानव तत्ता हुतिनायव्वा ।। १ ।।

व्याख्या—साची वस्तुनउ स्वरूप ते तत्व कहिये । ते सम्यग्दृष्टिनउ जाण्या चाहियउ । तेह भणी पहिली तेहना नाम लिखियइ छइ । पहिलिउ जीव तत्व बीजउ
अजीव तत्व पुण्य तत्व ३ पाप तत्व ४ आश्रव तत्व ५ सवर तत्व ६ निर्जरा तत्व ७ ।
बध तत्व ८ मोक्ष तत्व ६ तथा ए नव तत्व होहि विवेकीणइ जाणिवा ।

अन्तिम—अनउसप्पिणी अणतापुग्गाल परियट्टो मुणेयव्वो ।
तेणतातिम श्रद्धा अणागयद्धा अणतुगुणा ।।

व्याख्या—अनत उत्सर्पिणीइ अवसर्पिणी एक पुद्गल परावर्त होइ । मुणेयव्वो कहता जाणिवउ । ते पुद्गल परावर्त अतीत कालि अनता अनागत कालि अनतगुणा इहा कहिउ उ पच्छइ श्री जिन वचन हुइ ते प्रमाण इति नव तत्व शब्दार्थ समाप्त ।

ग्रन्थ स० २७५ । सवत १६६८ वर्षे वैशाख मासे कृष्ण पक्षे प्रतिपदा तिथौ सोमवासरे अर्गलापुर मध्ये फोफलिया गोत्रे सा० रेखा तद्भार्या रायजादी पठनार्थ ।

७१०. **नवतत्व सूत्र** ×। पत्रस० ८ । भाषा—प्राकृत । विषय—नव तत्वों का वर्णन । र० काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टनस०—६६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर ।

७११. **नाम एव भेद सग्रह—×** । पत्रस०—२५ । भाषा—हिन्दी । विषय— सिद्धात । र०काल—× । ले०काल—× । वेष्टनस० ४५४ **प्राप्ति स्थान**–दि जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७१२. **नियलावति सुत्त**— × । पत्रस० ३८ । आ० १० × ४½ इन्च । भाषा— प्राकृत विषय—आगम । र०काल × । ले० काल स० १७०१ फागुन बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० १ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मदिर खडेलवाल उदयपुर ।

७१३. **नियमसार टीका—पद्मप्रभमलधारिदेव** । पत्रस० १०३ । आ० ११½×५½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धात । र०काल— × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १५६ । **प्राप्ति-स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष–स० १६४७ मे भीमराज की वहू ने चढाया था । मूल्य १५ ४४ पैसे ।

७१४. **प्रतिस० २** पत्रस० १६४ । आ० ६½×६½ इन्च । ले०काल स० १०३५ । पूर्ण । वेष्टनस० १४२१ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७१५. **प्रतिस० ३** । पत्रस० ८३ । आ० १०½×५ इन्च । ले०काल स० १७६५ मङ्गसिर बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

७१६. **नियमसार भाषा—जयचन्द छाबडा** । पत्रस० १५३ । आ० १२½×७ इन्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । र०काल वीर स० २४३८ । ले०काल स० १६६४ । पूर्ण । वेष्टनस० ११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बून्दी ।

विशेष—चदेरी मे प्रतिलिपि हुई थी ।

७१७. पचपरावर्त्तन टीका × । पत्रस० ४ । आ० १०×४¾ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-सिद्धात । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४३ । **प्राप्तिस्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७१८. पचपरावर्त्तन वर्णन × । पत्रस० २ । आ० १०¼×४¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-सिद्धात । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०९५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७१९. पचपरावर्त्तन वर्णन × । पत्रस० ३ । आ० ८½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धात । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०९८ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७२०. पचपरावर्त्तन स्वरूप × । पत्रस० ४ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सिद्धात । र०काल— × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७२१. पचसग्रह—नेमिचन्द्राचार्य । पत्रस० २० । आ० ११¼×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धात । र०काल— × । ले०काल—स० १८३१ । अपूर्ण । वेष्टनस० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७२२. प्रति स० २ । पत्रस० ६३ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० ३०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कामा ।

७२३. प्रतिसं. ३ । पत्रस० १७२ । आ० ११½×४ इञ्च । ले०काल—स० १७९७ चैत्र बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० १०१ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बून्दी ।

विशेष—जती नैणसागर ने पाडे खीवसी से जयपुर मे लिखवायी थी । प्रति जीर्ण है ।

७२४. पचसग्रह वृत्ति—सुमतिकीर्ति । पत्रस० ३७४ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—प्राकृत सस्कृत । विषय—सिद्धात । र०काल—स० १६२० भादवा सुदी १० । ले०काल—स० १८१२ श्रावण बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० २४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—इसका दूसरा नाम लघु गोम्मटसार टीका है ।

७२५. प्रतिसं० २ । पत्रस० २०५ । ले०काल—स० १७८४ सावन सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस०—२९९ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—आगरा मे केसरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

७२६. पच ससार स्वरूप निरूपण × । पत्रस० ५ । आ० १०¾×४¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धात । र०काल— × । ले०काल—स० १६३६ । पूर्ण । वेष्टनस०१७९-७५ ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—स० १६३६ वर्षे आसोज सुदी १२ उपाध्याम श्री नरेन्द्रकीर्त्ति पठनार्थं ब्रह्मदेवदासेन ।

७२७. पंचास्तिकाय-आ० कुन्दकुन्द । पत्रस० ३५ । आ० ९ × ४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर, वैर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

७२८. **प्रतिसं० २** । पत्रस० १६ । आ० १०½ × ६ इन्च । ले०काल स० १६०६ । वेष्टन स० ५०/१६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—प्रति सस्कृत टव्वा टीका सहित है ।

७२९. **पचास्तिकाय-कुंदकुंदाचार्य** । पत्रस० १४८ । आ० ११½ × ४½ इन्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल स० १७१८ चैत्र सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १३५४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—प्रति अमृतचन्द्राचार्यकृत सस्कृत टीका एव पाण्डे हेमराज कृत हिन्दी टीका सहित है ।

श्री रूपचन्द गुरू कै प्रसाद थी । पाण्डे श्री हेमराज ने अपनी बुद्धि माफिक लिखित कीना । जे वहुश्रुत है ते सवारिकै पढियो ॥६॥ इति पचास्तिकाय ग्रथ समाप्त । सवत् १७१८ वर्षे चैत सुदी ११ दीतवार रामपुर मध्ये पचास्तिकाय ग्रथ स्वहस्तेन लिपी कृता पाण्डे सेखेन इद आत्मपठनार्थं ।

७३०. **प्रति स० २** । पत्रस० ७६ । आ० १२ × ५ इन्च । ले०काल स० १५१३ । पूर्ण । वेष्टन-स० १७५/२४१ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर सभवनाथ उदयपुर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है । प्रशस्ति—सवत्सरेस्मिन १५१३ वर्षे आश्विन बुदि ७ शुक्रवासरे श्री आदिनाथ चैत्यालये मूलसघे ·· ·· इससे आगे का पत्र नही है ।

७३१. **प्रतिसं० ३** । पत्रस० ३० । आ० १०¾ × ४½ इन्च । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

७३२. **पञ्चास्तिकाय टीका-टीकाकार-अमृतचन्द्राचार्य** । पत्रस० ५० । आ० ११½ × ५½ । भाषा—प्राकृत-सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल स० १५७३ माघ सुदी १३ । वेष्टन स० २८ । दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

७३३. **प्रति स० २** । पत्रस० ११५ । ले०काल—स० १७४७ माघ बुदी ६ । वेष्टन स० २६ **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—महात्मा विद्याविनोद ने फागी मे लिखा था ।

७३४ **प्रति स० ३** । पत्रस० ४६ । ले०काल स० १५७७ आसोज बुदी ६ । अपूर्ण । वेप्टन स० २२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १५७७ वर्षे आश्विन बुदि ६ बुधवारे लिखित **तिजारास्थाने** अल्लावलखान राज्यप्रवर्त्तमाने श्रीकाष्ठासघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्रीहेमचन्द्र तदाम्नाये अगरवालान्वये मीतल गोत्रे सा० महादास तत्पुत्र सा० द्यौपाल तेनेद पचास्तिकाय पुस्तक लिखाप्य पडित श्री साधारणाय पठनार्थं दत्त ।

७३५. **प्रतिसं० ४** । पत्रस० ७७ । ले०काल स० १६१४ फागुण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन-स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—राजपाटिकाया लिखितोय ग्रथ

७३६ **प्रतिसं० ५** । पत्रस० १३७ । आ० १३ X ५ इञ्च । ले०काल सवत् १६३२ भादवा वुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० २६२ । **प्राप्ति स्थान—** दि०जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—कुरुजागलदेश सुवर्णपथ सुमस्थान योगिनीपुर मे अकवर वादशाह के शासनकाल मे अग्रवाल जातीय गोयल गोत्रीय साहु चादण तथा पुत्र अजराजु ने प्रतिलिपि कराई । लिखित पाण्डे चदू हरिचद पुत्र • । प्रशस्ति विस्तृत है । पत्र चूहे काट गये हैं ।

७३७. **पचास्तिकाय टीका-अमृतचन्द्र** । पत्रस० ४१ । आ० १०½ X ४¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० २१२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७३८. **पचास्तिकाय टीका**— X । **पत्रस०** ४७ । आ० १० X ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल — X । ले०काल स० १७४८ कार्त्तिक वुदी ७ पूर्ण । वेष्टन स० २०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १७४८ वर्षे कार्तिकमासे कृष्णपक्षे सप्तम्यातिथौ शनिवासरे श्री विजय गच्छे श्री भट्टारक श्रीसुमतिसागरसूरि तत् शिष्य मुनि वीरचद लिपीकृत श्रीअकवरावादमध्ये ।

७३९. **पचास्तिकाय टव्वा टीका**— X । पत्र स० ३० । आ० १० X ६ इञ्च । भाषा—प्रा० हिन्दी । विषय-अध्यात्म । र०काल— X । ले०काल— X । पूर्ण । वेष्टन स० २०३-८४ । **प्राप्ति- स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

७४०. **पचास्तिकाय बालावबोध**— X । पत्र स० १३५ । आ० ८¾ X ६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । अपूर्ण । वेष्टन स० ६८१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७४१. **पचास्तिकाय भाषा-हीरानद** । पत्रस० १८६ । आ० ९ X ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दीपद्य । विषय—सिद्धान्त । र०काल स० १७०० ज्येष्ठ सुदी ७ । ले०काल—स० १७११ । अपूर्ण । वेष्टन स० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—वीच के कितने ही पत्र नही हैं ।

७४२. **पचास्तिकाय भाषा-पाण्डे हेमराज** । पत्र स० १३८ । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—सिद्धान्त । र०काल— X । ले०काल—स० १८७४ मगसिर सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७४३. **प्रति स० २** । पत्र स० १५४ ।ले०काल—स० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३०४ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७४४. **प्रति स० ३** । पत्र स० १७६ । ले०काल—१७२७ कार्तिक वुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कामा ।

विशेष—लिखाइत साह श्री देवीदास लिखत महात्मा दयालदास महाराजा श्री कर्मसिंह जी विजय-राज्ये गढ कामावती मध्ये ।

७४५. प्रति स० ४ । पत्र स० १४५ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० २२ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

७४६. प्रतिसं० ५ । पत्र स० ११० । आ० १२ $\frac{1}{2}$ × ५ $\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल—स० १६२६ । पूर्ण । वेप्टन स० १२२ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर, बयाना ।

७४७. प्रतिस० ६ । पत्र स०—१३१ । आ० ११ × ६ इञ्च । ले० काल स० १७४६ । पूर्ण । वेप्टन स० ३३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७४८. प्रति स० ७ । पत्र स० ६६ । आ० १२ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० २८/२३ । जैन मन्दिर भादवा (राज०)

७४६. प्रति स० ८ पत्र । स० ६७ । आ० ११$\frac{1}{4}$ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विपय-सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल—स० १६३६ आसोज सुनी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७५० प्रति स० ६ । पत्र स० १३६ । आ०११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{4}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) विषय—सिद्धाण्त । र०काल × । ले०काल स० १८४१ । पूर्ण । वेष्ट्न स० ३१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७५१. प्रति स० १० । पत्र स० १५० । आ० १० × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल—स० १८०५ । पूर्ण । वेष्ट्न स० २४०-६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—अन्तिम दो पत्रो मे ब्रह्म जिनदास कृत शास्त्र पूजा है ।

७५२. प्रति स. ११ । पत्र स० ११० । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विपय—सिद्धान्त ।र०काल— × । ले०काल— स० १७४६ पोष सुदी ६ । पूर्ण । वेप्टन स० २४-६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

७५३. प्रति स० १२ । पत्र स० १८१ । आ०—१२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विपय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल स० १८६२ माघ सुदी १३ पूर्ण । वेप्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरह पथी मालपुरा (टोक) ।

विशेष—धनराज गोधा सुत रामचद ने टोडा मे मालपुरा के लिये प्रतिलिपि करवाई थी ।

७५४ पचास्तिकाय भाषा—बुधजन—पत्र स० ६३ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विपय—सिद्धात । र०काल स० १८८२ । ले०काल—× । पूर्ण । वेप्टन स० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—दीवान अमरचन्द की प्रेरणा से ग्रथ लिखा गया ।

७५५ । परिकर्माष्टक— पत्र स० १० । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विपय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल— × । अपूर्ण । वेप्टन स० ५१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—गोम्मटसार की सहष्टि आदि का वर्णन है।

७५६. पक्खिय सुत्त— × । पत्र स० ६ । आ० ७½ × ३½ इन्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आगम । र०काल × । ले०काल—स० १६५५ । पूर्ण । वेष्टन स० २८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी) ।

विशेष– प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६५५ वर्षे श्रावण वुदि द्वितीयाया सोमवासरे श्रीवृहत्खरतरगच्छे श्रृंगारहार श्रीमज्जिनसिंहसूरि राजेश्वराणा शिष्य कवि लालचन्द पठनार्थं लिखित श्री लाभपुर महानगरे । इसके आगे श्री जिनपद्मसूरि का पार्श्वनाथ स्तवन (सस्कृत) भी लिखा हुआ है ।

७५७. प्रतिसं० २ । पत्र स १५ । आ० १० × ४½ इन्च । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० १८८ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७५८. प्रतिस० ३ । पत्रस० ८ । आ० ११×४½ इन्च । ले०काल—स० १६५५ वैशाख सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ६५३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—इसी भण्डार मे इसकी एक प्रति और है ।

७५९. प्रतिसं० ४ । पत्रस० २ मे ५ । आ० ८½ × ५ इन्च । ले०काल — × । अपूर्ण । वेष्टनस० २०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रथम पत्र नही है । लिपीकृत जती कल्याणेन विजय गच्छे महिमा पुरे मकसूसावादमध्ये ।

७६०. प्रतिसं० ५ । पत्रस० १८ । आ० ११×४¾ इन्च । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस०-१११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना ।

विशेष – १०वें पत्र मे साधु अतिक्षार एव २४वें तीर्थकर दिया हुआ है ।

७६१. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ६ । आ०१०½ × ४½ इन्च । ले०काल—स० १५६५ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० ३१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बून्दी)

विशेष – प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत १५६५ वर्षे कार्तिक सुदी १४ सोमवासरे श्रीयोगिनीपुरे । श्रीखरतर गच्छ । श्री उहेम निधान तत्पहे श्री श्रीपाल तत्पहे श्री श्री मेदि ऋषि मुनि तत् शिष्य महासती रूप सुन्दरी तथा गुण सुन्दरी पठिनार्थं कर्मक्षय निमित्त । लिखित विशून ।

७६२. पारखी सूत्र—× । पत्रस० १४ । आ० ६½×४ इन्च । भाषा—प्राकृत । विषय—(चितन) । र०काल— × । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टनस० २५६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

विशेष—१४ से आगे पत्र नही है । प्रति प्राचीन है ।

७६३. प्रज्ञापना सूत्र (उपाग)— × । पत्रस० ५४१ । आ० १०½×४½ इन्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आगम ग्रन्थ । र०काल— × । ले०काल – स० १८२२ । पूर्ण । वेष्टन स० १०४–२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

विशेष—मलयागिरि सूरि विरचित सस्कृत टीका के ग्रनुमार टब्बा टीका है। प० जीवविजय ने गुजराती भाषा टीका की है। टीकाकाल स० १७८४।

७६४. प्रश्नमाला — × । पत्रस० २१ । ग्रा० १०½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चर्चा । र०काल— × । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० १४४५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष—सुदृष्टि तरगिणी ग्रादि ग्रन्थो मे से सग्रह किया गया है।

७६५ प्रतिस० २ । पत्रस० २८ । ग्रा० १२¾×६½ इञ्च । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ग्रग्रवाल मन्दिर फतेहपुर (सीकर)

७६६. प्रश्नमाला वचनिका— × । पत्रस०—२८ । ग्रा० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धात । र०काल— × । ले०काल—स० १६६७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७ । **प्राप्ति—स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी (नेमिनाथ) बू दी ।

७६७. प्रश्नव्याकरण सूत्र— × । पत्रस० ५१ । भाषा—प्राकृत । विषय-ग्रागम । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६३८ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७६८. प्रतिस० २ । पत्रस० ६७ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । ले०काल— × । ग्रपूर्ण । वेष्टनस० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टब्बा टीका सहित है।

७७६ प्रश्नव्याकरण सूत्र वृत्ति—ग्रभयदेव गणि । पत्रस० ११६ । ग्रा० १०½×५इञ्च । भाषा—प्राकृत सस्कृत । विषय—ग्रागम । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष— श्री सविग्रहविहारिण श्रुतनिधि चारित्रचूडामणि प्रशिष्येणामयदेवाख्यसूरिणा विवृति कृता प्रश्नव्याकरणागस्य श्रुत भक्तया समासता निवृत्ति कुलनभसून चन्द्रद्रोणाख्यसूरि सुख्येन" पडित गणेन गुणावतप्रियेया न गुणवतप्रियेना सशोधिता वय ।

७७० प्रश्नशतक—जिनवल्लभसूरि । पत्रस० ४७ । ग्रा० ११×४ इञ्च । भाषा—सकृत । विषय—चर्चा । र०काल × । ले०काल स०१७१४ ग्रषाढ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ३०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

प्रशस्ति—स० १७१४ वर्षे ग्रषाढ सुदी २ शुक्रवासरे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालवे श्री सरोजपुर नगरे भट्टारक श्री जगत्कीर्त्ति देवस्य शिष्य गुणदासेन इद पुस्तक लिखित ।

७७१. प्रश्नोत्तरमाला—×। पत्रस० ५३ । ग्रा० ११×५¾ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चर्चा । र०काल × । ले०काल—स० १६१७ । पूर्ण । वेष्टनस० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ग्रग्रवाल मन्दिर फतेपुर शेखावाटी सीकर ।

विशेष—सुदृष्टितरङ्गिणि के ग्राधार पर है।

७७२. प्रति स० २ । पत्रस० ३८ । ग्रा० १०¾×५½ इञ्च । ले०काल—स० १६२४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मदिर ।

७७३. प्रश्नोत्तररत्नमाला अमोघवर्ष । पत्रस० २ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चर्चा । र०काल × । ले०काल-स० १७८६ । पूर्ण । वेष्टन स० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७७४. प्रश्नोत्तरी—× । पत्रस० २६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६३-१०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का, डूगरपुर ।

७७५. बासठ मार्गणा बोल । पत्रस० ४ से ६ । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल× ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ६२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७७६. बियालीस ढाणी—× । पत्रस० २३ । आ० १०×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धात चर्चा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५४ । **प्राप्ति स्थान** - पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, टोडारायसिंह (टोक)

७७७. बधतत्व—देवेन्द्रसूरि । पत्रस० ३ । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धात (बध) । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस ७०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७७८. प्रतिसं० २ । पत्रस० ५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७२६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७७९. भगवती सूत्र × । पत्रस० ६६० । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आगम । र०काल × । ले०काल—स० १६१४ कार्तिक सुदी १० । वेष्टन स० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

७८०. भगवती सूत्र वृत्ति—× । पत्रस० ३५-५२२ । आ० ११½×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—आगम । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रारम्भ के ३४ तथा ५२२ से आगे पत्र नही हैं ।

७८१. भावत्रिभगी—नेमिचन्द्राचार्य । पत्रस० ३३५ । आ० १०½×६ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है ।

७८२. प्रतिसं० २ । पत्रस० ५१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

७८३. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ३७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७८४. प्रतिसं० ४ । पत्रस १४३ । ले०काल स० १७२६ । पूर्ण । वेष्टन स ८३ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७८५. **भावसग्रह–श्रुतमुनि** । पत्रस० १३ । आ० ११½ × ५¾ । भाषा–प्राकृत । विषय–सिद्धान्त । र०काल — × । लिपिकाल—स० १७३४ । वेष्टनस० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर ।

विशेष—अवावती कोट मे साह श्री विहारीदास ने महात्मा डूगरसी की प्रेरणा से प्रतिलिपि की थी ।

७८६. **प्रतिसं० २** । पत्रस० ६८ । लिपिकाल स० १७८७ माह बुदी ५ । वेष्टनस० १८ । **प्राप्ति स्थान** – उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष - केथूणि नगर मे दुर्जनशाल के राज्य मे लिखा गया था । त्रिभगीसार भी इसका नाम है ।

७८७. **प्रतिसं० ३** । पत्रस० ५-५१ । आ० १२½ × ५ इञ्च । लिपि काल० स० १६३७ आषाढ बुदि १२ । वेष्टन स० १६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७८८. **प्रतिस० ४** । पत्रस० ४६ । ले०काल स० १७४७ कार्तिक बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस०—२१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७८९. **मार्गणासत्तात्रिभगी–नेमिचन्द्राचार्य**—पत्रस० १७ । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धात । र०काल — × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६६/२०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर समवनाथ उदयपुर ।

विशेष—तीन प्रतिया और है । जिनके वेष्टन स० १००/२०२, १०१/२०३ एव १०२/२०४ है ।

७९०. **मार्गणास्वरूप**— × । पत्रस० ६१ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस०—२५८ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—सस्कृत टव्वा टीका सहित है ।

७९१ **रत्नकोश** – × । पत्रस० १२ । आ० १२ × ४ इच । भाषा—सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल— × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४४७ । २८१ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन सभवनाथ मन्दिर, उदयपुर ।

प्रारभ —

जयति रणधवलदेव सकलकलकेलिकोविद
कुशलविचित्रवस्तुविज्ञान रत्नकोपमुदाहृत ।

७९२ **रयणसार-कुदकुदाचार्य** । पत्रस० ११ । आ०—११ × ५¾ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल– × । ले० काल– × । पूर्ण । वेष्टनस० १२५४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

७९३. **प्रतिस० २** । पत्रस० ११ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

७९४ **प्रतिस० ३** । पत्रस० ४-६ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १६६-६ । **प्राप्ति स्थान**— दिगम्बर जैन मन्दिर बडा वीसपथी दौसा ।

७६५. **प्रतिसं० ४** । पत्रस० ११ । आ० १०½ × ४¾ इञ्च । ले०काल स० १८२१ भादवा बुदी ७ । वेष्टनस० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प० चोखचद के शिष्य सुखराम ने नैणसागर तपागच्छी से जयपुर मे आदीश्वर जिनालय मे प्रतिलिपि करायी थी ।

७६६. **लघु सग्रहणी सूत्र** । पत्रस० ४ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आगम । र०काल × । ले०काल स० × । पूर्ण । वेष्टनस० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी) ।

विशेष—मूल गाथाओ के नीचे हिन्दी मे टीका है ।

७६७. **लघुक्षेत्रसमासविवरण-रत्नशेखर सूरि** । पत्रस० ४१ । आ० १२ × ४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल स० १५३२ सावण बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

विशेष—प्रति मलयगिरि कृत टीका सहित है । कुल २६४ गाथाएं हैं । प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

सवत् १५३२ सवत्सर प्रवर्त्तमाने श्रावण वदि पचम्या शनौ अद्येह श्रीपत्तनवास्तव्या दीसावाल ज्ञातीय म० देवदासेन लिखित । श्री नागेन्द्रगच्छे प० जिनदत्त मुनि गृहीता ।

७६८. **लब्धिसार भाषा वचनिका-प० टोडरमल** । पत्र स १८४ । आ० १०×७½ इञ्च । भाषा—राजस्थानी (ढू ढारी) गद्य । विषय—सिद्धात । र० काल × । ले० काल । × । पूर्ण । वे० स० १५६१ । **प्राप्ति स्थान**—भा० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७६६. **प्रतिसं० २** । पत्र स० १५ । आ० १५ × ७ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

८००. **प्रतिसं० ३** । पत्र स० १६६ । आ० १२½ × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान (बू दी) ।

८०१. **प्रति स० ४** । पत्र स० २२७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४६ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर उदयपुर ।

८०२ **लब्धिसार क्षपणासार भाषा वचनिका-पं० टोडरमल** । पत्र स० ३३२ । आ० १०½ × ७½ इञ्च । भाषा-राजस्थानी (ढू ढारी) गद्य । विषय-सिद्धात । र० काल स० १८१८ माघ सुदी ५ । ले० काल—स० १८६६ चैत्र बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ११६६ । **प्राप्ति-स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८०३. **प्रति सं० २** । पत्र स० २२७ । ले० काल स० १८७४ सावन वदो २ । पूर्ण । वेष्टन स० ७१ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—अन्तिम दो पृष्ठो पर गोम्मटसार पूजा सस्कृत मे भी है ।

८०४ **प्रति स० ३** । पत्र स० २५४ । आ० ११ × ८ इञ्च । ले० काल स० १८६० । पूर्ण । वेष्टन स० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन० मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—नानूलाल तेरापथी ने प्रतिलिपि कराई थी ।

८०५. विचारसग्रहणी वृत्ति— × । पत्रस० २४ । आ० १०½ × ४½ इन्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आगम । र० काल स० १६०० । ले० काल स० १७१२ पूर्ण । वेष्टन स० ४६३ × । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियान डूगरपुर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टब्बा टीका सहित है । टीका काल स० १६६३ है ।

८०६. विपाक सूत्र—× पत्रस० ३० से ४६ । भाषा-प्राकृत । विषय-आगम । र०काल-× । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० ७५२ । दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

८०७. विशेषसत्ता त्रिभगी-नेमिचन्द्राचार्य । पत्रस० ५-३७ तक । आ० ११½ × ५½ इन्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल — × । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टन स० १५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ बूदी ।

८०८. प्रति स० २ । पत्रस० ३० । ले०काल स० १६०६ ज्येष्ट बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० / १२४ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—श्री मूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० शुभचन्द्रदेवा त० भ० जिनचद्र देवा त भ सिद्धकीर्त्ति त भ श्री धर्मकीर्त्ति तदान्नाये बाई महासिरि ने लिखवाया था ।

८०९. शतश्लोकी टीका-त्रिमल्ल । पत्रस० १० । आ० ६ × ४½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल स० १८६४ ज्येष्ठ बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ८८ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना ।

विशेष— प० रत्नसौभाग्येन चिरदेवेन्द्रविमल वाचनार्थं सवत १८६४ वर्षे ज्येष्ठ कृष्णा ७ गुरूधसे महाराजा जी शिवदानसिंह जी विजयराज्ये ।

८१०. श्लोकवार्तिक—विद्यानदि । पत्र स० ३१६ । आ० ११¾ × ४¾ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल स० १७२० । पूर्ण । वेष्टन स० १४०/७ । दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

विशेष —प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १७२० वर्षे कार्तिकमासे कृष्णपक्षे पचम्या रविदिने श्री मूलसघो सरस्वतीगच्छे बलात्कार गणे भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति तत्पट्टे भट्टारक-कोहिसुकदायप्तमान भट्टारक श्री ५ रत्नचन्द्र तत्शिष्य पडित कुशला लिखित बूदी नगरे अभिनन्दन चैत्यालये तत्वार्थ टीका समाप्त ।

८११. श्लोकवार्तिकालकार । पत्र स० ७ । आ० १२ × ५ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १७६/२१० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर सभवनाथ उदयपुर ।

८१२. सत्तात्रिभगी —आ० नेमिचन्द्र । पत्र स० ४० । आ० १० × ६ इन्च । भाषा—प्राकृत हिन्दी । र०काल × । ले०काल स० १८७० पूर्ण । वेष्टन स० ४३५-१६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—हिन्दी गद्य मे अर्थ दिया हुआ है । मार्गणाओ के चित्र भी दिये हुये हैं ।

८१३. सत्तास्वरूप—× । पत्र स० ४३ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-सिद्धात । र०काल × । ले०काल स० १९३३ कार्तिक सुदी ५ पूर्ण । वेष्टन स० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

८१४. प्रतिसं० २ । पत्र स० १८ । आ० ६½×६½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

८१५. सप्ततिका × । पत्र स० ३०-३९ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-सिद्धात । र०काल × । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टन स० २२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर । इति कर्मग्रन्थ पटक सूत्र समाप्त ।

८१६. सप्तपदार्थ वृत्ति × । पत्र स० २९ । आ० ११½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विपय-सिद्धात । र०काल—× । ले०काल स० १५४१ आसोज बुदी ११ । वेष्टन स० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—रत्नशेखर ने स्वय के पठनार्थ लिखी थी ।

८१७. सप्तपदार्थी टीका—भावविद्येश्वर । पत्र स० ३७ । आ० १३×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—सिद्धात । र०काल—× । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अग्रवाल उदयपुर ।

विशेष—इति भावविद्येश्वर रचिता चमत्कार ˙ ˙ नाम सप्तपदार्थी टीका ।

८१८. समयभूषण—इन्द्रनंदि । पत्र स० ३ । आ० १३×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय-सिद्धात । र०काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ४६/४३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सभवनाथ उदयपुर ।

विशेष—इति श्री मदिन्द्रनद्याचार्य विरचितो नाम समयभूपणापरथेय ग्रन्थ ।

८१९. समवायांग सूत्र । पत्र स० ७७ । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धात । र०काल—× । ले०काल —× । अपूर्ण । वेष्टन स० ४६ ४१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

८२०. सर्वार्थसिद्धि—पूज्यपाद । पत्रस०—१४० । आ० ९×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय—सिद्धात । र०काल—× । ले० काल स १८३१ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स०—८६ । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—अजमेर मे भट्टारक श्री त्रिलोकेन्दुकीर्ति ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

८२१. प्रतिसं० २ । पत्रस०—१ से १६१ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स०—११३२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

८२२. प्रतिस० ३ । पत्रस०—४ से १०४ । आ० ११½×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स०—१०३८ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

८२३. प्रतिसं० ४ । पत्रस०—२१२ । ले० काल स० १७४५ आषाढ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स०—१७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

८२४. प्रति स० ५ । पत्रस०–१८५ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स०—६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन वडा पचायती मन्दिर डीग ।

८२५ प्रति स० ६ । पत्रस०—१६६ । आ० ११×५½ । ले० काल—स० १७७६ आसोज सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स०—३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—हिण्डौन मे प० नरसिह ने प्रतिलिपि की थी ।

८२६. प्रतिस० ७ । पत्रस०—२१६ । आ० ८½×६½ । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन स०–६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

८२७ प्रतिस०८ । पत्रस० १११ । आ० १०½×६¾ इञ्च । ले०काल स०—१६८० कातिक वदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १८० । **प्राप्तिस्थान** दि० जैन मन्दिर पचायती करौली ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है ।

८२८. प्रतिस० ६ । पत्रस०—१५४ । आ० ११½×४¾ इञ्च । ले० काल–१६७० पौष सुदी ६ ।पूर्ण । वेष्टन स० ६/१२ **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर सौगाणियो का करौली ।

८२६. प्रतिस० १० । पत्रस० ३८-२०७ । ले०काल स० १३७० पौष बुदी ७ । अपूर्ण । वेष्टन स० १०१-१० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रत्येक पत्र मे १० पक्ति एव प्रति पक्ति मे ३१—३४ अक्षर हैं ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—सवत १३७० पौष बुदी १० गुरुवासरे श्री योगिनीपुरस्थितेन साधु श्री नारायण सुत भीम सुत श्रावक देवचरेण स्वपठनार्थ तत्वार्थवृत्ति पुस्तक लिखापित । लिखित गौडान्वय कायस्थ प० गधर्व पुत्र वाहडदेवेन ।

निष्पदीकृत चित्तचडविहगा, पचाप्यक्षक्रुप्यानका ।
ध्यानध्वस्तसमस्तकिल्बिषविषा, शास्त्रा बुवे पारगा ।
हेलोन्मूलितकर्म्मकदनिचया कारुण्य पुण्याशया ।
योगीन्द्रा भयभीमदैत्यदलना कुर्वन्तु वो मगल ॥

लेखक पाठयो शुभ भवतु । इसके पश्चात् दूसरी कलम से निम्न प्रशस्ति और दी हुई है—

श्रीमूलसघे भ० श्री सकलकीर्तिदेवास्तत्पट्टे श्री भुवनकीर्तिदेवा चेली श्री गौतमश्री पठनार्थ शुभ भवतु ।

८३० प्रतिस० ११ । पत्रस० १७० । आ० १०½×७½ इञ्च । ले०काल— × ।पूर्ण। वेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बघेरवालो का, नैनवा ।

विशेष—स० १६६३ आसोज सुदी ४ कोटडियो का मन्दिर मे ग्रन्थ चढाया ।

८३१ सर्वार्थसिद्धि भाषा—प० जयचन्द । पत्रस० २६६ । आ० १३×७ इञ्च । **भाषा**—राजस्थानी (ढू ढारी) गद्य । विषय—सिद्धात । र०काल स० १८६१ चैत्र सुदी ५ । ले०काल सख्या १८६६ माघ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १५६६ (क) । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८३२ प्रतिस० २ । पत्र स० २६४ । ले० काल स० १८६० । पूर्ण । वेष्टन स० ५३४ ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पचायती भरतपुर ।

विशेष लालसिंह् वडजात्या ने लिखवायी थी ।

८३३ प्रतिसं० ३ । पत्र सख्या—३१३ । लेखन काल स० १८७३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—जोधराज कासलीवाल कामावाले ने लिखवाया था ।

८३४. प्रति स. ४ । पत्र स २४३ । ले०काल—× । पूर्ण । वे०स० ५३६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

८३५ प्रति सं ५ ।पत्र स० ४७२ । ले० काल स० १८७४ सावरण वुदी १२ । पूर्ण । वे स०—८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

८३६. सारसमुच्चय—कुलभद्राचार्य । पत्र स० १४ । भापा—नस्कृत । विपय—सिद्धात । र०काल—× । ले० काल स० १८०२ वैशाख मुदी १३ । पूर्ण । वे० स० २४७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८३७. सिद्धांतसार—जिनचन्द्राचार्य । पत्रस० ८ । आ० ९×५ इञ्च । भापा—प्राकृत । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल स० १५२४ आसोज सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० १९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—साभर मे प्रतिलिपि हुई थी । लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

८३८. प्रतिसं० २ । पत्रस० ८ । आ० ८ × ३½ इञ्च । ले०काल स० १५२५ आसोज सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ५१० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मदिर ।

विशेष—केवल प्रशस्ति अपूर्ण है ।

८३९. प्रति स ३ । पत्र स० ७ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल स० १५२५ । पूर्ण । वे० स० ३३६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—म० १५२५ वर्षे श्रावण मुदी १३ श्री मूलसघे भ० श्री जिन चन्द्रदेवा वील्ही लिखायित ।

८४०. प्रति स० ४ । पत्र स० १२ । आ० ८¾×३½ इञ्च । लेखन काल स० १५२४ कातिक सुदी १४ । पूर्ण । वे० स० १३१ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—फागी ग्राम प्रतिलिपि हुई थी ।

८४१. प्रति स. ५ । पत्र स० ६ । आ० ११×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—कही कही सस्कृत मे टिप्पणी भी है ।

८४२ सिद्धान्तसार दीपक—भ० सकलकीर्ति । पत्रस० १२५ । आ० ११ ×½५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय—सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल स० १८१५ चैत सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनस०—१०२३ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

८४३. **प्रति स० २** । पत्रस० ११ । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ११८४ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

८४४. **प्रति स० ३** । पत्र स०— १२–१५१ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६५६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

८४५ **प्रति स० ४** । पत्रस०—१६० । आ० ६ × ६ इञ्च । ले०काल स० १८४८ आषाढ सुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टन स० ८१ । **प्राप्ति स्थान**-उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्रारम्भ के ८१ पत्र वेष्टन स० २२१ मे है ।

८४६. **प्रति स० ५** । पत्रस० —१-४५,१६६ । ले० काल—१८२३ माघ वदी ११ । अपूर्ण । वेष्टन स० २५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर मे प्रतिलिपि की गई थी ।

८४७ **प्रति स० ६** । पत्रस०—५२ से १५७ । ले० काल - × । अपूर्ण । वेष्टन स० २-६४ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

८४८ **प्रति स० ७** । पत्र स०—२३१ । ले० काल स० १७६० आसोज सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—जिहानावाद मे प्रतिलिपि हुई थी ।

८४६ **प्रति स० ८** । पत्र स० १६० । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर ।

८५०. **प्रति स० ९** । पत्र स० १३६ । ले० काल—१६१७ कार्तिक सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स०-६७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—प० जीवनराम ने फतेहपुर मे रामगोपाल ब्राह्मण मौजपुर वाले मे प्रतिलिपि कराई थी ।

८५१ **प्रति स० १०** । पत्र स० ८२ । ले० काल स० १७२८ चैत्र बुदी ३ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

८५२. **प्रति स० ११** । पत्र स० ३–१६४ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल— × । अपूर्ण । वेष्टन स० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

८५३ **प्रति स० १२** । पत्र स० २५७ । ले० काल स० १८४३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल ।

विशेष—श्लोक स ५५०० ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—मिति पोष सुदी ६ नौमी शुक्रवासरे लिपिकृत आचार्य विजयकी चि० सदासुख चौवे रूनचन्द को वाई खुशाला मिति पौष सुदी ६ सम्वत् १८४३ का नन्दग्राम नगर हाडा राज्ये महारावजी श्री उम्मेदस्यघजी राज्ये एकसार झाला गोत्रे राज्य जालिमस्यघ जी पडितजी श्रीलाल जी नानाजी तत् स भौसा गोत्रे साहजी श्री हीरानन्दजी तत् पुत्र साहजी श्री धर्ममूर्ति कुल उधारणीक खुस्यालचन्द जी भार्या कसुम्भलदे तत् पुत्र शाहजी श्री धर्ममूर्ति कुल उधारणीक साह छाजुरामजी भार्या छाजादे भाई चन्द्रा शास्त्र घटापित । शास्त्र जी दीन्हु पुण्य अर्थ ।

८५४. प्रति सं० १३ । पत्र स० १६६ । ले० काल स० १७६४ सावन सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १४० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष – सवाई माधोपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

८५५. प्रति सं० १४ । पत्र स० ३४६ । आ० १०½ × ४½ । ले० काल स० १७८६ । पूर्ण । वेष्टन स० ५७ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८५६. प्रति सं० १५ । पत्र स० २-२२६ । आ० १३ × ५ इञ्च । ले० काल—१७५४ मगसिर सुदी ४ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रथम पत्र नही है । धर्मपुरी मे प्रतिलिपि हुई थी ।

८५७. प्रति स० १६ । पत्र स० १४० । आ० १३ × ६½ । ले० काल स० १९१९ । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी नैणवा ।

विशेष—स० १९२८ मे चन्दालाल वैद ने चढाया था ।

८५८ प्रति स १७ । पत्र स० २७१ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल म० १८८५ सावन सुदी २ पूर्ण वेष्टन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—श्री भाग्यविमलजी तत् शिष्य प० मोतीविमलजी तत् शिष्य प० देवेन्द्रविमलजी तत् शिष्य सुखविमलेन लिपि कृत ।

८५९. प्रति स० १८ । पत्र स० ११३ । आ० १० × ६ इञ्च । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

८६०. सिद्धांत सारदीपक—नथमल बिलाला । पत्र स० ३७८ । आ० १२ × ६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—सिद्धात । र० काल स० १८२४ माह सुदी ५ । ले० काल स० १८९५ कार्तिक सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १६०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

८६१. प्रति स० २ । पत्र स० २४६ । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ५६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष—२०१ तथा २०२ का पत्र नही है ।

८६२. प्रति स० ३ । पत्र स० २०९ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ५६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८६३. प्रति सं० ४ । पत्र स० २६६ । ले० काल स० १८७७ । फागुण सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० २१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—जोधराज कासलीवाल के पुत्र उमरावसिंह व पौत्र लालजीमल वासी कामा ने लिखवाया था ।

८६४. प्रति सं० ५ । पत्र स० १५८ । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हुण्डावालो का डीग ।

८६५ प्रति स० ६ । पत्र स० ६ । ले० काल स० १९५६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३ । **प्राप्ति**

स्थान - दि० जैन मन्दिर चेतनदास पुरानी डीग ।

८६६. प्रति स० ७ । पत्र स० ३०६ । ले० काल स० १८२५ वैशाग्व सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—२ प्रतियो के मिले हुए पत्र है । प्रथम प्रति के २६८ तक तथा दूसरी प्रति के २६६ से ३०६ तक हैं ।

८६७. प्रतिसं० ८ । पत्रस० २३७ । आ० १२½×४ इञ्च । ले०काल स० १६२१ चैत सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—म० १६३२ मे इस ग्रन्थ को मदिर मे भेट चढाया गया था ।

८६८. प्रति सं० ६ । पत्रस० २११ । आ० १३×७½ इञ्च । ले०काल स० १८३५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

८६९. प्रति स० १० । पत्र स० १३१ । आ० १२×६¼ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

८७०. प्रति स० ११ । पत्र स० २२३ । आ० १३×५½ इञ्च । ले०काल स० १८६८ चैत सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक) ।

८७१ प्रति स० १२ । पत्र स० २६५ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल स० १८८८ चैत्र बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियो का मालपुरा (टोक)

८७२. प्रति स० १३ । पत्र स० १४३ । आ० १३¾×६½ इञ्च । ले०काल स० १८३५ भादवा सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पचायती राजमहल (टोक)

विशेष—महात्मा स्यभुराम ने जयपुर मे प्रतिलिपि की ।

८७३ प्रति स० १४ । पत्र स० २११ । आ० ११×६½ इञ्च । ले०काल स० १८८३ । पूर्ण । वेष्टन स० १८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर, उदयपुर ।

८७४ प्रति स १५ । पत्र स० १७६ । आ० १३½×४¼ इञ्च । ले०काल स० १८७२ फागुन बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर महावीर स्वामी बू दी ।

८७५ प्रति स० १६ । पत्र स० २७२ । आ० १२×६ इञ्च । ले०काल स० १६७० काती सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १०८-११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—इन्दरगढ मे प्रतिलिपि हुई थी ।

८७६ प्रति स० १७ । पत्र स० १२१ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल स० १८६८ । पूर्ण । वेष्टन स० ११६-५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दीर कोटडियान डू गरपुर ।

८७७. प्रति स० १८ । पत्र स० २३६ । आ० ११×७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बीसपथी दौसा ।

८७८. प्रतिस० १६ । पत्र स० १८७ । आ० ११×७½ इञ्च । ले०काल स० १८६४ आसोज बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १०६-३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—श्री गौरीबाई ने पन्नालाल चुन्नीलाल साह से प्रतिलिपि करवाई थी ।

८७९. **प्रति सं० २०** । पत्र स० २०६ । आ० ११×७½ इञ्च । ले०काल स० १८५६ । पूर्ण । वेष्टनस० १२/१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर, भादवा ।

८८०. **प्रति सं० २१** । पत्र स० १७७ । आ० १३×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी नेमिनाथजी बू दी ।

८८१. **सिद्धातसागरप्रदीप** × । पत्रस० १२६ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय - सिद्धात । र०काल × ले०काल – स० १८७१ । पूर्ण । वेष्टन स० १२८-५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियान डू गरपुर ।

८८२. **सिद्धातसार सग्रह—नरेन्द्रसेन** । पत्रस० २६७ । आ० ११×७ इञ्च । भाषा—सस्कृत हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल स० १९३३ । पूर्ण । वेष्टन स० १५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

८८३. **प्रति स० २** । पत्रस० ७८ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल स० १८२२ श्रावण सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १०२० । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—महारोठ नगर मे राठौड वशाधिपति महाराजाधिराज महाराजा श्री विजयसिंहजी के शासनकाल मे खुशालचन्द पाड्या ने प्रतिलिपि की थी ।

८८४ **प्रति सं० ३** । पत्रस० १०२ । आ० १२×६ इञ्च । ले०काल स० १८०६ आसोज बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स २१२ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—जिहानाबाद मे प्रतिलिपि हुई थी ।

८८५ **प्रति स० ४** । पत्रस० ५ । आ० १०¾×४¾ । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ११३ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

८८६. **सूत्र प्राकृत—कु दकु दाचार्य** । पत्र स० ६ । आ० १२¼×६ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स ३१० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

८८७ **सूत्र सिद्धात चौपई**—× । पत्र स० १० । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ४०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डू गरपुर ।

८८८ **सूत्र स्थान**— × । पत्र स० १३२ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १९५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी नेमिनाथ बू दी ।

८८९. **सग्रहणी सूत्र**—× । पत्र स० ६१ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय—आगम । र०काल × । ले० काल स० १७७७ चैत्र बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १९८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बू दी ।

८९०. प्रति स० २। पत्र स० १२। ले० काल स० १७७१। पूर्ण। वे० स० १७१–४६। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर, इन्दरगढ।

विशेष—सवत् १७७१ वर्षे माह बुदी ८ दिने लिपीकृत कोटडामध्ये।

८९१. सग्रहणी सूत्र—मल्लिषेण सूरि। पत्र स० १२। भाषा—प्राकृत। विपय—आगम। र०काल ×। ले०काल स० १६५७। पूर्ण। वेष्टन स० ८–४४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर, उदयपुर।

प्रशस्ति—सवत् १६५७ वर्षे आसौज बुदी १४ दिने शनिवासरे श्री मागलउर नगरे वाणरसि श्री नयरग गणि तत् शिष्य जती तेजा तत् शिष्य जती व्रासण लिखित।

८९२. प्रति स० २। पत्र स० ३१। आ० ८×३½ इञ्च। ले० काल स० १६०१ भादवा बुदी ७। पूर्ण। वेष्टन स० २८१। **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर दवलाना।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सतत् १६०१ वर्षे भाद्रपद बुदी ७ शनौ भट्टारक श्री कमलसेन पठनार्थ लिखित सम्मत श्री वहोडा नगरे।

८९३. सग्रहणी सूत्र—देवभद्र सूरि। पत्र स० २६। आ०–१०×४ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—सिद्धान्त। र०काल ×। ले० काल स० १७०७। अपूर्ण। वे० स० २६६। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—सस्कृत मे चूर्णि सहित है।

८९४ सग्रहणी सूत्र— ×। पत्र स० ८। आ० १०×४ इञ्च। भाषा—पुरानी हिन्दी। विषय—आगम। र० काल ×। ले० काल स० १७०९।। वे० स० ६०१। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर।

विशेष—सवत् १७०९ वर्षे आषाढ मासे शुक्ल पक्षे १ दिने मेदवरे श्रीयोघपुरे मतिकीर्ति रलिखित्यति।

८९५ प्रति स० २। पत्र स० ४४। ले० काल स० १७१३ कार्तिक बुदी २। पूर्ण। वे० स० ३१४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बून्दी)

८९६ सग्रहणी सूत्र भाषा—दयासिह गणि। पत्र स० ४७। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—प्राकृत हिन्दी। विषय—आगम। र०काल ×। ले० काल स० १९४७ सावण सुदी १४। पूर्ण। वे० स० १९१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कामा।

विशेष— बीयाइ सुयपरेंसु इगहीणाऊ हु तिपतीउ।
सत्तमि महिपयरे दिसि इक्कक्के विदिसिनात्यै॥ ८८

वीया कहता बीजइ प्रतरह। पक्तई २ एके कउ उछउ करण। सातमइ नरकइ उगणपचास मइ प्रतरइ दिसइ एकेकउ नरकावास उछइ। विदसाइ एकइ नरकावास उ नही॥८८॥

समाप्ति—सवत् १४९७ द्वितीय सावण सुदी चउदसि शुक्रवार तिणइ दिवसइ तपागच्छ

नायक भट्टारक श्री रत्नसिंहसूरि नइ शिष्यदइ पंडित याहेमगणइ ए बालावबोध रच्यउ सर्वसौख्य मांगलिक्य नइ अर्थइ हुवउ ।

८९७. संघरण सूत्र— × । पत्र सं० १२ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आगम । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दनस्वामी बून्दी ।

विशेष—गणि श्री जीव विजयग णि शिष्यणि गत जी विजयेन लिखित मुनि जसविजय पठनार्थं ।

————

विषय - धर्म एवं आचार शास्त्र

८६८. **अर्चानिर्णय**— × । पत्र स० २५ । आ० ११½ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-चर्चा । र०काल × । ले० काल स० १६१४ मगसिर सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

विशेष—त्रेसठशलाका पुरुषो की चर्चा है ।

८६९ **अतिचारवर्णन**—पत्र स० २ । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । र० काल—× । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

९०० **अनगारधर्मामृत— प० आशाधर** । पत्र स० २२-२८७ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—इसका नाम यत्याचार भी है । इसमे मुनि धर्म का वर्णन है प्रति स्वोपज्ञ टीका सहित है ।

९०१ **प्रति स० २** । पत्र स० २२४ । आ० १०½×४ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १०७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—२२४ से आगे पत्र नही हैं । प्रति स्वोपज्ञ टीका सहित है ।

९०२ **अनित्यपचाशत—त्रिभुवनचद** । पत्र स० ८ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा ।

विशेष—मूलकर्त्ता पद्मनदि है ।

९०३ **अमितिगति श्रावकाचार भाषा—भागचद** । पत्र स०—१८५ । आ०—१४×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । र०काल—स० १९१२ आषाढ सुदी १५ । ले० काल— × । पूर्ण । वे० स०—१५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूदी ।

९०४ **प्रति स० २** । पत्र स० २०१ । आ० १२½ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १९८१ । पौष बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १४५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

९०५ **अर्हत् प्रवचन**— × । पत्र स० २ । आ०—११½ × ५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—धर्म । र०काल— × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

६०६, अष्टाह्निका व्याख्यान—हृदयरग ।पत्र स० ११ । भाषा—सस्कृत । विषय—धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

६०७ अहिंसाधर्म महात्म्य— × । पत्र स० ८ । आ० ११ × ६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—धर्म । र० काल × । ले० काल स० १८८१ फागुण सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १४६१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

६०८ आचारसार-वीरनन्दि । पत्र स० ६१ । आ० ६ × ६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १८२३ आषाढ सुदी १। पूर्ण । वेष्टन स० ३६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

६०६. प्रति स० २ । पत्र स० १२६ । आ० ११ × ४½ इञ्च । ले० काल स० १५६५ । पूर्ण । वेष्टन स० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

६१०. आचारसार वचनिका—पन्नालाल चौधरी । पत्र स० ६० । आ० १४×८½ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । र० काल स १६३४ वैशाख बुदी ६ । ले० काल स० १६७७ माघ वदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—प० हीरालाल ने बाबू वेद भास्कर जी जैन आगरा निवासी द्वारा बाबूलाल हाथरस वालो से प्रतिलिपि कराई ।

६११. आचार्यगुणवर्णन— × । पत्रस० ३ । भाषा—सस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र० काल— × । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टनस० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

६१२. आराधना प्रतिबोधसार-सकलकीर्ति— पत्रस० ३ । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र ।र० काल— × । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टनस० ६१/२४८ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—अ तिम भाग निम्न प्रकार है—

जय भणइ सुणइ नर नार ते जाइ भवनइ पारि ।
श्री सकलकीर्ति कहि सुविचारि आराधना प्रतिबोधसार ।।
इति आराधनासार समाप्त । दीक्षित वेणीदास लिखित ।

६१३. प्रतिसं० २ । पत्रस० ४ । आ० ६×५ इञ्च । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस०३३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६१४. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ४ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल— × पूर्ण । वेष्टनस० २८३–१११ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६१५. आराधनासार—देवसेन । पत्रस० ३-७६ । आ० १२ × ४ इञ्च भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । र०काल— × । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३१६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रारम्भ के २ पत्र नही हैं। प्रति सस्कृत टीका सहित है।

९१५.(क) **प्रतिसं० २** । पत्रस० ११ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल— × । अपूर्ण वेष्टनस० १०/३२५ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन समवनाथ मदिर उदयपुर।

९१६. **आराधनासार—अमितिगति** । पत्रस० २-६६ । आ० १० × ४½ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र० काल— × । ले०काल— स० १५३७ श्रावण बुदी ८ । अपूर्ण । वेष्टनस० १४६६ । **प्राप्तिस्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

९१७ **आराधना**— × । पत्रस० ६ । आ० ६ × ४ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल— × । ले०काल — × । पूर्ण । वेष्टनस० ३३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर।

९१८ **आराधनासार भाषा टीका**— × । पत्रस० २१ । आ० १० × ६½ इच । भाषा—प्राकृत-हिन्दी (गद्य) । विषय—आचार शास्त्र । र०काल स० १९२१ । ले०काल—स० १९५३ श्रावण सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनस० १६७/६३ **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ कोटा।

९१९. **आराधनासार टीका**— × । पत्रस० ३८ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—धर्म । र० काल— × । ले०काल—स० १६३२ । पूर्ण । वेष्टनस० ११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

९२०. **आराधनासार टीका—नदिगणि** । पत्रस० ४०३ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रति प्राचीन है। प्रशस्ति पूर्ण नही है।

९२१ **आराधनासार टीका—प० जिनदास गगवाल** । पत्रस० ६५ । आ० १०×५½ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—आचार शास्त्र । र०काल स० १८३० । ले०काल—स० १८३० चैत सुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० ३७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी)।

९२२ **प्रतिस० २** । पत्रस० १०६ । आ० ११ × ६ इञ्च । ले०काल स० १८३१ ज्येष्ठ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० ३३४ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली, कोटा।

विशेष—भानपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

९२३. **आराधनासार भाषा-दुलीचन्द** । पत्रस० २५ । भाषा —हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल २० वी शताब्दी । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३६ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—स० १९४० मे भरतपुर मन्दिर मे चढाया गया था।

९२४. **आराधनासार वचनिका—पन्नालाल चौधरी** । पत्रस० ३० । आ० १२½ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—आचार शास्त्र । र० काल स० १९३१ चैत बुदी ६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८/१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, भादवा (राज०)।

६२५. आराधना पंजिका—देवकीर्त्ति । पत्र स० १७८ । आ० १२ × ५ । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । र० काल × । ले० काल स० १७८० पौष सुदी ६ । वेष्टन स ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन म० लश्कर, जयपुर ।

विशेष—सूरत वन्दरगाह के तट पर वद्रीदास ने लिखा था।

६२६. आराधनासूत्र—सोमसूरि । पत्रस० ३ । आ० ६$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत विषय—धर्म । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०१६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—लिखत तिलकसुदरगणि ।

६२७. प्रति सं० २ । पत्रस० १२ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १७४३ चैत्र सुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० ५४० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—६६ गाथाएं हैं । प्रति टव्वा टीका सहित है ।

६२८ प्रति सं० ३ । पत्रस० ५ । आ० १० × ४$\frac{1}{4}$ इञ्च । ले०काल स० १६४८ । पूर्ण । वेष्टन स० ७२६ । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

विशेष—स० १६४८ वर्षे वैशाख सुदी १३ भृगुवारे लिखिता मु० हसस्तेन सुश्राविका सवीरा पठनार्थं ।

६२६. आसादना कोश । पत्र स० १५ । आ० १२×४$\frac{1}{4}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । वे० स० ६३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६३०. इक्कावन सूत्र— × । पत्र स० २८ । आ० ६$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय धर्म । र०काल स० १७८० चैत्र बुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २३८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—धर्म का ५१ सूत्रो मे वर्णन किया गया है

६३१. इन्द्रमहोत्सव— × । पत्र स० ४ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय—भगवान के जन्मोत्सव पर ५६ कुमारी देविया आदि के आने को वर्णन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०८१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६३२. इष्ट छत्तीसी—बुधजन । पत्र स० २ । आ० ७$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ६५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६३३. प्रति सं० २ । पत्र स० २ । आ० १०×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ, (कोटा)

६३४. इष्टोपदेश—पूज्यपाद । पत्र स० २–२७ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६३५ **प्रतिसं० २** । पत्र स० ६ । आ० १२×७ इञ्च । र० काल × । ले० काल× । पूर्ण । वेष्टन स० ३४–१३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

विशेष—प० तिलोक ने बून्दी मे प्रतिलिपि की थी । कही २ सस्कृत मे कठिन शब्दो के अर्थ भी दिए हुए हैं ।

६३६ **उपदेशरत्नमाला—सकलभूषण** । पत्र स० ६७ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र० काल स० १६२७ श्रावण सुदी ६ । ले० काल स० १८३१ सावण सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १२४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६३७ **प्रतिसं० २** । पत्र स० १४२ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल स० १६७४ भादवा सुदी ६ । वेष्टन स० ६७६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६३८. **प्रतिसं० ३** । पत्र स० १४४ । ले० काल स० १६८६ भादवा सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६३६ **प्रतिसं० ४** । पत्र स० १२६ । आ० १०½×५½ इञ्च । ले० काल स० १८५६ । पूर्ण । वेष्टन स० २६४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—जोबनेर के मन्दिर जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

६४० **प्रतिसं० ५** । पत्र स० १०५ से १७० । आ० ६½×४½ इञ्च । ले० काल स० १८५३ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दनस्वामी बूदी ।

विशेष—प० जिनदास के लिये लिखी गई थी ।

६४१ **प्रतिसं० ६** । पत्र स० १२४ । आ० ६½×६ इञ्च । ले० काल स० १८५५ पौष सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष—खडारि मे प० सदासुख ने प्रतिलिपि की थी ।

६४२ **प्रति स० ७** । पत्रस० २१६ । आ० ६½×४½ इञ्च । ले० काल स० १८६६ ज्येष्ठ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बून्दी)

विशेष—विमल ने इन्द्रगढ मे शिवसिंह के राज्य मे प्रतिलिपि की थी ।

६४३ **प्रतिसं० ८** । पत्रस० ७६ । आ० १२×६½ इञ्च । ले० काल स० १८७१ । पूर्ण । वेष्टन स० ५–३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूँगरपुर ।

विशेष—स० १८७१ आसौज सुदी १३ बुधवासरे लिखित भरतपुर मध्ये पोथी आचारज श्री सकलकीर्तिजी ।

६४४ **प्रति स० ६** । पत्रस० १३६ । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १६३–६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६४५. **प्रतिस० १०** । पत्रस० १४४ । आ० १०½×५ । ले० काल स० १७४० माह सुदी ११ । वेष्टनस० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—अम्बावती कर्वटे नगर मे महाराजा रामसिंह के शासन काल मे प्रतिलिपि हुई थी ।

६४६. प्रतिसं० ११ । पत्रस० १०१–१३८ । आ०१५×५½ इञ्च । ले० काल स० १७७६ । अपूर्ण । वेष्टनस० ७२२ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—हीरापुर मे प० नरसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

६४७. प्रतिसं० १२ । पत्रस० ४२ । आ० १२×५½ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ६८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६४८. उपदेशसिद्धांतरत्नमाला-नेमिचन्द्र भण्डारी । पत्रस० १३ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । भाषा—प्राकृत-सस्कृत । विषय—धर्म एव आचार शास्त्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—गाथाओ पर सस्कृत मे अर्थ दिया हुआ है ।

६४६. प्रतिसं० २ । पत्रस० १२ । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ६० **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

६५० प्रतिसं० ३ । पत्रस० १६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष – प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

६५१ प्रतिसं० ४ । पत्रस० २१ । ले० काल स० × । पूर्ण । वेष्टनस० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

६५२ उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला-पाण्डे लालचन्द । पत्र स० ११४ । आ० १४ × ८½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—धर्म एव आचार । र०काल स० १८१८ । ले०काल स० १६५२ । पूर्ण । वेष्टन स० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर, अलवर ।

६५३ उपदेशरत्नमाला-धर्मदास गणि । पत्रस० ५५ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय-धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २४४ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर, दबलाना (बूदी) ।

विशेष—प्रतिजीर्ण है । मूल गाथाओ के नीचे हिन्दी मे अर्थ दिया है ।

६५४. प्रतिसं० २ । पत्रस० २७ । आ० १० × ४ इञ्च । ले०काल स० १८६३ । पूर्ण । वेष्टनस० २०६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

।।श्री।। स० १८६३ वर्षे कार्तिक सुदि ७ भौमदिने आगरा नगरमध्ये लिखापित ऋषि टोडर । पठनार्थं सुश्रावक श्रीमाल गोत्र पारसान मु श्रावक मानसिह तत्पुत्र श्रावक महासिह तस्य भार्या सुश्राविका पुण्य प्रभाविका देवगुरुभक्तिकारिका श्राविका रमा पठनार्थं ।

६५५. उपदेशसिद्धांतरत्नमाला—भागचन्द । पत्र स० २६ । आ० १२½ × ८ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—धर्म । र०काल स० १६१२ आपाढ बुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२१८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

९५६, **प्रतिसं० २** । पत्र स० ४५ । आ० ६×५३/४ इञ्च । ले० काल स० १६५४ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

९५७. **प्रतिसं० ३** । पत्र स० ७५ । ले० काल स० १६४० । पूर्ण । वेष्टन × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

९५८. **प्रतिसं० ४** । पत्र स० ३४ । आ० १४ × ८ इञ्च । ले० काल स० १६३० चैत्र बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

विशेष—ठाकुरचन्द मिश्र ने प्रतिलिपि की थी ।

९५९ **प्रतिसं० ५** । पत्र स० ३३ । आ० १२१/२ × ५१/२ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३०६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

९६०. **प्रति स० ६** । पत्रस० २८ । आ० १३ × ८ इच । ले०काल—स० १६३१ । वैशाख सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर करौली ।

विशेष—जती हरचद के मदिर वियाने मे ठाकुर चद मिश्र हिण्डौन वाले ने प्रतिलिपि की ।

९६१. **प्रतिसं० ७** । पत्रस० ६४ । आ० १२१/२ × ४३/४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

९६२. **प्रतिसं० ८** । पत्रस० ३४ । आ० १३×६ इञ्च । ले०काल स० १६१६ मगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर (शेखावाटी) ।

विशेष—इस प्रति मे र०काल स० १६१४ माघबुदी १३ दिया हुआ है ।

९६३. **प्रतिसं० ९** । पत्रस० ४६ । आ० ९३/४ × ७ इच । ले०काल स० १६३८ फागुन बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर स्वामी बूदी ।

९६४. **प्रतिसं० १०** । पत्रस० ४८ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

९६५. **प्रतिसं० ११** । पत्रस० ४३ । आ० ११ × ८ इञ्च । ले०काल स० १६३३ । पूर्ण । वेष्टनस० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मदिर अलवर ।

९६६. **प्रतिसं० १२** । पत्र स० ४० । ले०काल स० १६३४ । पूर्ण । वेष्टनस० १३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर, अलवर ।

९६७. **प्रतिसं० १३** । पत्रस० ७१ । आ० १२३/४ × ४३/४ इञ्च । ले०काल स० १६४० मगसिर बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६२ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

९६८. **उपासकाचार-पूज्यपाद** । पत्रस० ६ । आ० ११ × ४१/४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २०६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

९६९ **उपासकाचार-पद्मनदि** । पत्रस० १०५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १३६-६३ । **प्राप्ति स्थान**—

दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—१०५ से आगे पत्र नही हैं ।

९७०. उपासकसस्कार—पद्मनदि । पत्रस० ४ । आ० १२ × ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत विपय—आचार । र० काल × । ले० काल स० १५४२ । पूर्ण । वेष्टन स० ३०१ । १५८ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—

सूतक वृद्धिहानिभ्या दिनानि दशद्वादश ।
प्रसूति-स्थान मासैक वासरे पच श्रोत्रिण ।।
प्रसूति च मृते वाले देशातरमृते रणे ।
सन्यासे मरणे चैव दिनेक सूतक भवेत ।।

प्रशस्ति—स० १५४२ वर्षे वैशाख सुदी ७ लिखत ।

९७१. उपासकाध्ययन-पडित श्री विमल श्रीमाल । पत्रस० १८३ । आ० ६ × ५ इञ्च । भापा—हिन्दी पद्य । विपय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३२३-१२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

९७२. उपासकाध्ययन टिप्पण— × । पत्रस० १-५ । आ० १२ × ५ इञ्च । भापा—सस्कृत । विपय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १५८७ । अपूर्ण । वेष्टनस० ३४३/१६३ **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—अतिम पुष्पिका एव प्रशस्ति निम्न प्रकार है—इति श्री वसुनदिसिद्धातविरचितमुपासकाध्ययनटिप्पणक समाप्त ।

सवत् १५८७ वर्षे चैत्र बुदी ६ रवौ श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे श्रीकुदकुदाचार्यान्वये आचार्य श्री रत्नकीर्तिस्तच्छिष्य मुनि श्रीहरिभूषणेनेद लिखित कर्मक्षयार्थं ।

९७३. उपासकाध्ययन विवरण— × । पत्रस० १७ । आ० ६$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भापा—सस्कृत । विपय-आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७३६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

९७४. उपासकाध्ययन श्रावकाचार-श्रीपाल । पत्रस० १-२३७ । आ० ११ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भापा—हिन्दी । विपय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १८२६ । पूर्ण । वेष्टनस० १६७, १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—अन्तिम छन्द—

त्रेपन क्रिया ए त्रेपन क्रिया ए रास अनोपम ।
शुभ श्रावकाचार मनोहर
प्रबध रच्यो रलियामणो सुललित वचन भविजन सुखकर ।
भणे भणावे साभलो भावसु लखै लखावै सार ।
श्रीपाल कहे जे साभलज्यो तेह घर मगल धर तेह जय जयकार ।।

इति उपासकाध्ययनाख्याने श्रीपालविरचिते । सघपति रामजी नामाकिते श्रावकाचार अभिधाने प्रवध समाप्त ।

गाधी वर्द्धमान् तत्पुत्र गाधी पूषालजी भार्या पानवाई पुत्र जोतिसर जवेरचन्द्र जडावचन्द्र एते कुटुवपरवार श्रावकाचारनी ग्र थ लखावो ।

९७५. **उपासकाध्ययन सूत्र भाषा टीका**— × । पत्रस० ४४ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा–प्राकृत हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १७०३ आपाढ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनस० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है । समणोपासक श्रावकमथपु आभगत जिणधर्म पालतु विचरइ । ति द्वारइ तेह गोसालु मखली पुएहवी । कथा वार्त्ता लाघा सावली । इम खलु निम्चि सद्दालु पुन्य आजीविकाना धर्म घीटली नइ प्रोसा निर्ग्रंथु धर्म तेह पडिव ज्यो आदरसा ।

९७६. **कल्पार्थ**— × । पत्रस० ४२ । आ० १०×५ इञ्च । भापा—प्राकृत । विपय—धर्म । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १११-९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वडा वीसपथी दौसा ।

९७७. **कुदेव स्वरूप वर्णन**— पत्र स० २४ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर (वयाना) ।

९७८. **कुदेव स्वरूप वर्णन**—× । पत्र स० ३७ । आ० ९½×५½ इञ्च । भापा—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल स० १९११ द्वि० आपाढ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

९७९. **कुदेव स्वरूप वर्णन**—× । पत्र स० २५ । आ० ११½ × ५ इञ्च । भापा—हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल स० १८९९ । अपूर्ण । वेष्टन स० ७४/४६ । **प्राप्ति-स्थान** दि० जैन मदिर भादवा (राज०) ।

विशेष—मेघराज रावका भादवा वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

९८०. **कुदेवादि वर्णन** । पत्र सख्या २१ । भापा—हिन्दी । विपय—धर्म । र०काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३८८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

९८१. **केशरचन्दन निर्णय** × । पत्रस० १९ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष—सग्रह ग्र थ है ।

९८२. **क्रियाकलाप टीका—प्रभाचन्द्राचार्य** ।। पत्रस० २–६० । भाषा—सस्कृत । विपय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १८०७ । अपूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर वसवा ।

६८३. प्रतिसं० २। पत्रस० ४३। आ० १०½×४½ इञ्च। ले० काल० ×। पूर्ण। वेष्टनस० ६०–४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

६८४. प्रतिसं० ३। पत्रस० ४४। आ० ११½×४½ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ८१२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

६८५. क्रियाकोश—दौलतराम कासलीवाल। पत्रस० ११०। आ० १०¾×४¾ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—आचार शास्त्र। र० काल स० १७६५ भादवा सुदी १२। ले० काल० ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४५०। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—इसका दूसरा नाम त्रेपन क्रियाकोश भी है।

६८६. प्रतिसं० २। पत्र स० ६३। आ० १२×६ इञ्च।—ले०काल स० १८६७ मगसिर बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० १६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर।

विशेष—वैर मे प्रतिलिपि की गई थी।

६८७. प्रतिसं० ३। पत्रस० ११२। आ० ११×७¾ इञ्च। ले०काल स० १६५४ भादवा सुदी १२। पूर्ण। वेष्टनस० ४८१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर।

६८८. प्रति स० ४। पत्रस० १०६। आ० ६½×६½ इञ्च। ले०काल स० १८७७ सावन बुदी ऽऽ। पूर्ण। वेष्टन स० १११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी।

विशेष—भोपतराय बाकलीवाल बसवा वाले ने सवाई माधोपुर मे प्रतिलिपि की थी।

६८६. प्रति स० ५। पत्रस० १०६। आ० ६½×६¾ इञ्च। ले०काल स० १८६६ द्वि० आषाढ बुदी ४। पूर्ण। वेष्टन स० ११२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदीनाथ बूदी।

विशेष—सवाई माधोपुर मे प्रतिलिपि की गई थी।

६६०. प्रतिसं० ६। पत्रस० १३०। आ० १०½×७½ इञ्च। ले०काल स १६४७। पूर्ण। वेष्टन स० २२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दनस्वामी बूदी।

६६१. प्रतिसं० ७। पत्रस० १२७। आ० ११×५ इञ्च। ले०काल स० १६५२। पूर्ण। वेष्टनस० १६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी।

विशेष—छबडा मे प्रतिलिपि हुई थी।

६६२. प्रतिसं० ८। पत्रस० १२५। ले०काल स० १६०१। पूर्ण। वेष्टन स० ११४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)

६६३. प्रतिसं० ६। पत्रस० ११२। आ० १०¾×५½ इञ्च। ले०काल स० १६०४ पौष बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० २२२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—गोमदलाल बटवाल ने मोतीलाल से कोटा के रामपुरा मे लिखाया था।

६६४. प्रतिसं० १०। पत्रस० ६०। आ० १३×६¼ इञ्च। ले०काल स० १८६६ आषाढ बुदी १२। पूर्ण। वेष्टन स० ६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना।

विशेष—गुमानीराम रावका ने बयाना मे प्रतिलिपि की थी। इस समय ईस्ट इण्डिया कम्पनी का।

शासन था । श्रावकों के ८० घर तथा १ मन्दिर था ।

९९५.प्रति स० ११ । पत्रस० ११० । आ० २३$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । ले० काल स० १८९६ भादो बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ११-३५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

विशेष—नानिगराम द्वारा करौली मे प्रतिलिपि की गई थी ।

९९६. प्रतिसं० १२ । पत्रस० १३९ । आ० १०×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १७९५ । पूर्ण । वेष्टनस० २१९ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—स्वय ग्र थकार के हाथ की मूल प्रति है ग्र थ रचना उदयपुर मे हुई थी । अन्तिम भाग निम्न प्रकार है—

सवत् सत्रासौ पच्याणव भादवा सुदी बारस तिथि जाणव ।
मङ्गलवार उदयपुर का है पूरन कीनी ससै ना है ॥१८७१॥
आनन्दसुत जयसु को मन्त्री जय को अनुचार ज्याहि कहै ।
सो दौलति जिन दासनि दास जिन मारग की सरण गहै ॥

९९७ प्रतिसं० १३ । पत्रस० ९७। ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४१९।१५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

९९८. प्रतिस० १४ । पत्रस० ९३ । आ० १३$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । ले० काल स० १९५७ । पूर्ण । वेष्टन स० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बू दी ।

९९९ प्रति स० १५ । पत्र स० १०६ । आ० ९$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । ले०काल स० १८६० आसोज सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १३६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—नोनन्दराम छावडा ने सवाई माधोपुर मे प्रतिलिपि करवायी थी ।

१०००. प्रतिस० १६ । पत्र स० ८५० । आ० १२$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । ले० काल× । अपूर्ण । वेष्टन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

१००१. क्रियाकोश भाषा—किशनसिंह । पत्र स० ७७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—आचार शास्त्र । र०काल स० १७८४ भादवा सुदी १५ । ले० काल स० १८०३ मगसिर सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १४८३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—गृहस्थो के आचार का वर्णन है ।

१००२. प्रति स० २ । पत्र स० ७९ । आ० १०×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५१६ । **प्राप्ति-स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१००३. प्रति स० ३ । पत्र स० ९७ । आ० १३×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । । ले०काल स० १८३१ । पूर्ण । वेष्टन स० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बून्दी ।

१००४. प्रति स० ४ । पत्र स० ११५ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले०काल—स० १८८४ । पूर्ण । वेष्टन स० २४७–९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

१००५. प्रतिस० ५ । पत्र स० ६८ । आ० १२$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले०काल स० १८२२ । पूर्ण ।

वेष्टन स० ६२–४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

१००६. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ३४ । आ० ६×६ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २६६/१४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर समवनाथ उदयपुर ।

१००७. प्रतिसं० ७ । पत्र स० ६६ । आ० १३×७ इञ्च । ले०काल स० १६३७ आपाढ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—लाला रामचन्द वेटे लालाराम रिखवदास अग्रवाल श्रावक फतेहपुरवासी (दूकान शहर दिल्ली) ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

१००८. प्रति स० ८ । पत्र स० ८० । आ० १२½×७ इञ्च । ले०काल स० १८६५ । पूर्ण । वेप्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर (सीकर)

विशेष—फतेहपुर वासी अग्रवाल लक्ष्मीचन्द्र के पुत्र मोहनलाल ने रतलाम मे प्रतिलिपि करवाई थी । द मगलजी श्रावक ।

१००९ प्रतिसं० ९ । पत्रस० १४५ । आ० १० × ६ इञ्च । ले०काल स० १८३१ वैशाख सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० ५/१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर भादवा (राज०) ।

१०१०. प्रतिसं० १० । पत्रस० १५१ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले०काल स० १८६६ फागुण सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० १२५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष पन्नालाल भाट ने प्रतिलिपि की थी ।

१०११. प्रतिसं० ११ । पत्रस० १४३ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले०काल स० १८१६ । पूर्ण । वेष्टन स० ८८–५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरापथी दौसा ।

विशेष—भीगने से अक्षरो पर स्याही फैल गई है ।

१०१२. प्रतिसं० १२ । पत्रस० २१४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३२ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पचायती मदिर हण्डावालो का डीग ।

१०१३ प्रतिसं० १३ । पत्रस० ६६ । आ० १२½ × ६ इञ्च । ले०काल स० १८७८ । पूर्ण । वेष्टनस० १५ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

१०१४ प्रति स० १४ । पत्रस० १२१ । आ० ८¾ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १८५५ द्वि० अपाढ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० ६२ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

१०१५. प्रतिसं० १५ । पत्रस० १५६ । आ० १६ × ५ इ च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४४७ । ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, कामा ।

१०१६ प्रतिसं० १६ । पत्रस० ८७ । आ० १३ × ८ इञ्च । ले० काल स० १८६६ फागुण सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर वयाना ।

विशेष—वक्षीराम ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१०१७ प्रतिसं० १७ । पत्रस० ११६ । आ० १३ × ८ इञ्च । ले०काल स० १९७७ ज्येष्ठ बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर वयाना ।

१०१८ प्रतिस० १८ । पत्रस० ५२ । ले०काल X । अपूर्ण । वेष्टनस० २८२ । **प्राप्ति स्थान**— दिगम्बर जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०१९. प्रतिसं० १९ । पत्र स० १३२ । ले०काल—स० १८७४ । पूर्ण । वेप्टन स० २८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—इसे कामा के जोधराज कासलीवाल ने लिखवायी थी ।

१०२०. प्रतिस० २० । पत्र स १११ । ले०काल X । पूर्ण । वेप्टन स० २८४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०२१ प्रतिसं० २१ । पत्रस० ८३ । ले०काल—स० १८११ आपाढ वुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनस० २८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—इसे जिहानावाद मे प० मयाचन्द्र ने लिखवायी थी ।

१०२२. प्रतिसं० २२ । पत्रस० १४२ । ले०काल स० १८२५ वैसाख सुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० २८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर निवासी गूजरमल के लिए वसवा मे प्रतिलिपि की गई थी ।

१०२३ प्रतिसं० २३ । पत्रस० ६४ । ले०काल— स० १८४७ सावन सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन म० २८७ । **प्राप्दि स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—हुलाशराय चौधरी ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१०२४. प्रतिस० २४ । पत्रस० ५६ से १०४ । ले०कालस० १७८५ । अपूर्ण । वेष्टन स० ४१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०२५. प्रति सं० २५ । पत्रस० ११२ । आ० १२X७ इञ्च । ले०काल— X । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

१०२६. प्रतिसं० २६ । पत्रस० ६२ । आ० १२$\frac{१}{२}$X५$\frac{१}{२}$ इञ्च । ले०काल—स० १८०६ माह सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ४४/१६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

१०२७ प्रतिस० २७ । पत्रस० १३४ । ले०काल स० १९४९ । पूर्ण । वेष्टनस० ४५/१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

१०२८ प्रतिसं० २८ । पत्रस० १०५ । ले०काल—स० १८७४ भादवा सुदी २ । वेष्टनस० ४६/१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

१०२९ प्रतिस० २९ । पत्रस०—३५-७९ । आ० १२X६ इञ्च । ले०काल—स० १८८३ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वोरसली कोटा ।

विशेष—कोटा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१०३० प्रतिसं० ३० । पत्रस० १५२ । आ० १० X ५ इञ्च । ले०काल स० १९२२ । पूर्ण । वेष्टन स० ११८/७७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—लिखाइत भुवानीलाल जी श्रावगी वासवान माधोपुर या लिखाई इन्द्रगढ मध्ये ।

१०३१. प्रतिसं० ३१ । पत्रस० २ से ८४ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल— स० १६०८ कार्त्तिक वुदी १० । अपूर्ण । वेष्टन स० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक) ।

१०३२. प्रतिसं० ३२ । पत्रस० ११५ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल स० १८८६ पौष वुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष—राजमहल मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१०३३. प्रतिसं० ३३ । पत्रस० ३१ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन म० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बघेरवालो का आवा (उणियारा) ।

१०३४. प्रतिसं० ३४ । पत्र स० १२४ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले०काल म० १८५० वैशाख सुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

१०३५. प्रति सं० ३५ । पत्रस० ६४ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले०काल - स० १८५४ माघ शुक्ला ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटयो का, नैणवा ।

१०३६. प्रतिसं० ३६ । पत्रस० १०२ । आ० ११ × ६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटयो का नैणवा ।

१०३७. प्रतिसं० ३७ । पत्रस० ७३ ।आ० ११¼ × ६½ इञ्च । ले०काल स० १८१४ मगसिर सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनस० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

मिति मगसर सुदी १५ रवौ सवत् १८१४ का साल की पोथी सगही सुखदेव मागानेर का की से उतारी छै लिखत तोलाराम खुश्यालचन्द वैद की पोथी नग्र नैणवा मध्य वाचै जीनै श्री सबद वचा । श्री तेरापथी का म दिर चढाया मिती फागुण सुदी ६ सवत् १६११ चिरजी कालु ने चढाया श्री गिरनार जी की यात्रा के चढाया श्री सावलयानाथ स्वामी के ।

१०३८ प्रतिसं० ३८ । पत्रस० १६-६६ । आ० १०×७ इञ्च । ले०काल स० १६८६ । अपूर्ण । वेष्टनस० २२ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बू दी ।

१०३६. प्रतिसं० ३६ । पत्रस० ११८ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १६३७ माह सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनस० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

विशेष—मालपुरा निवासी प० जौहरीलाल ने टोडा मे सावला जी के मदिर मे लिखा था ।

१०४०. प्रति स० ३० । पत्रस० १२३ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १८४६ । पूर्ण । वेष्टनस० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ टोडारायसिह (टौंक) ।

विशेष—सहजराय व्यास ने प्रतिलिपि की थी ।

१०४१ प्रति स० ४१ । पत्रस० १५५ । आ० ६ × ७½ इञ्च । ले० काल स० १६४० । पूर्ण । वेष्टनस० ११३/६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष— लाखेरी मे प्रतिलिपि की गई थी ।

१०४२. प्रतिसं० ४२ । पत्रस० १२५ । आ० ६½ × ६ इञ्च । ले० काल—स० १६१५ । पूर्ण । वेष्टनस० १८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

१०४३. प्रतिस० ४३ । पत्रस० ५५ । ग्रा० १० × ७ इन्च । ले० काल स० १८२६ फाल्गुन बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० ११६-४७ । **प्राप्तिस्थान**-दि० जैन मन्दिर वडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—लालसोट मे प्रतिलिपि की गई थी ।

१०४४ प्रतिस० ४४ ।पत्रस० ६४ । ग्रा० १२ × ५ इन्च । ले० काल—स० १७६० फाल्गुण बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० १२७ × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वडा वीसपथी दौसा ।

विशेष—प० खुशालीराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१०४५ प्रतिस० ४५ । पत्रस० १४१ । ग्रा०—१२½ × ५½ इन्च । ले० काल स० १८६२ चैत सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० १८१ । **प्राप्ति-स्थान**—दि जैन पचायती मदिर करौली ।

१०४६ क्रियाकोष भाषा—दुलीचन्द । पत्रस० ५७ । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय—गृहस्थ की क्रियाओं का वर्णन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी भरतपुर ।

१०४७ क्रियापद्धति × । पत्रसं० ५ । ग्रा० ८×५ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी (बूदी) ।

विशेष—जैनेतर ग्रन्थ है ।

१०४८. क्रियासार-भद्रबाहु । पत्रस० १८ । ग्रा० ६¾×४½ इन्च । भाषा—प्राकृत । विषय-आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० × । पूर्ण । वेष्टनस० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

१०४९. क्षेत्रसमास × । पत्रस० ५ । ग्रा० १०½×४½ इन्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल स० १७४३ । पूर्ण । वेष्टन स०४६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—अलवर नगर मे प्रतिलिपि की गई थी ।

१०५०. क्षेत्रसमास प्रकरण—× । पत्र स ८ । ग्रा० १०×४½ इन्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५४१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०५१. गुणदोषविचार— × । पत्र स० ५ । ग्रा० १२×५ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आचार । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष— देवशास्त्र गुरु के गुण तथा दोषो पर विचार है ।

१०५२. गुरुपदेशश्रावकाचार—डालूराम । पत्र स० २०३ । ग्रा० १३×७ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय-आचार शास्त्र । र०काल स० १८६७ । ले० काल स० १९८४ । पूर्ण । वेष्टन स० १५३१ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०५३. प्रति स० २ । पत्र स० २२१ । ग्रा० १०½×५ इन्च । ले० काल स० १८७० सावन सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ४०७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०५४. प्रति सं० ३ । पत्र स० १८५ । आ० १०×७½ इञ्च । ले० काल स० १६५० । पूर्ण । वेष्टन स० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीरजी बूदी ।

१०५५. प्रतिसं० ४ । पत्र स० २३६ । आ० १२½×७ इञ्च । ले० काल स० १६४८ । पूर्ण । वेष्टन म० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन० मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

१०५६. गृहप्रतिक्रमण सूत्र टीका—रत्नशेखर गणि । पत्र स० ५८ । भाषा —सस्कृत । विषय—धर्म । र० काल × । ले० काल म० १८७६ । पूर्ण । वेष्टन म० ७४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०५७. चउसरणवृत्ति— ×। पत्र म० १२ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

१०५८. चतुरचितारणी—दौलतराम । पत्र म० ?-५ । आ० १०×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—धर्म । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन म० ३०५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—इह चतुरचितारणि भवजल तारणि ।
कारणि शिवपुर साधक हैं
वाचो अर राचो या मे साचौ
दौलति अविनाशी' ।

इति श्री चतुरचितारणी समाप्त ।

१०५९. चतुर्दशी चौपई—चतुरमल । पत्र म० २७ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र० काल × । ले० काल स० १६५२ पोष सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर हूण्डावालो का डीग)

१०६०. चतुष्कशरण वर्णन—पत्र स० ८ । आ० १०⅞×३⅞ इच । भाषा—प्राकृत हिन्दी । विषय—धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन म ३०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

विशेष—गाथाओ के ऊपर हिन्दी अर्थ दिया हुआ है ।

१०६१. प्रतिसं० २ । पत्र स० ३ । आ० ६½×४½ इच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २६६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दबलाना बूदी ।

१०६२. चतुर्मास धर्म व्याख्यान— × । पत्र स० ५ से १२ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन म० ६२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०६३. चतुर्मास व्याख्यान—समयसुन्दर उपाध्याय । पत्र स० ५ । भाषा—सस्कृत । विषय—धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भरतपुर ।

१०६४ **प्रतिस० २** । पत्र स० ३-५ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६६६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

१०६५ चारित्रसार—चामुण्डराय । पत्र स० ५१ । आ० ११½ × ५¾ । भाषा—सस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १५२१ ज्येष्ठ सुदी६ । वेष्टन स० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

१०६६. प्रतिस० २ । पत्र स० ६२ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—५७ से ६२ पत्रो पर सस्कृत मे टिप्पणी भी दी गई है ।

१०६७. चारित्रसार—वीरनदि । पत्र स० २-१६ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय—अचार शास्त्र । र०काल × । ले० काल स० १५८८ चैत्र बुदी ११ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

विशेष—फागुण सुदित्ती वर्ष सवत् १५० लिक्षते आचार्य श्रीसिंघनदि देवासु आचार्य श्रीधर्मकीर्ति देवा तत् शिष्यणी खुल्लकीवाई पारो । लिक्षते ज्ञानावरणी कर्म क्षयार्थ ।। स० १५८८ वर्षे चैत्र बुदी एकादसी मङ्गलवारे ३ स्वात्मपठनार्थं लिक्षते क्षुल्लकी पारो ।।

१०६८. प्रतिसं० २ । पत्र स० ७८ । आ० ½ × ४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—७८ से आगे के पत्र नही है प्रति प्राचीन है ।

१०६६. चारित्रसार वचनिका मन्नालाल । पत्रस० ६८ । आ० १२ × ६½ इच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । र० काल स० १८७१ माघ सुदी ५ । ले०काल—स० १६०३ । पूर्ण । वेष्टनस० १३१-५६ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

१०७० प्रति स० २—पत्रस० १८३ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल—स० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन स० १०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

१०७१. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १६१ । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० ४१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर ।

१०७२. प्रतिस० ४ । पत्रस० १०० । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ४१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर ।

१०७३. चारो गति का चौढालिया × । पत्रस० ८ । आ० ६ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३४ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

विशेष—गुटके मे है तथा अन्य पाठो का सग्रह भी है ।

१०७४. चौबीस तीर्थकर माता पिता नाम—× । पत्रस० ३ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस०-६०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

१०७५. चौबीस दण्डक—धवलचन्द्र । पत्रस० ७ । आ० १०×४$\frac{1}{8}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत, हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल—स० १८११ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस०-१८० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर, इन्दरगढ ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है । सवत् १८११ माघ सुदी ५ भगत विमल पठनार्थ रामपुरे लिपी कृत–नेमिजिन चैत्यालये ।

१०७६. चौबीस दण्डक—सुरेन्द्रकीर्त्ति । पत्रस० २ । आ० १०×४$\frac{3}{8}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वे०स० २०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बून्दी ।

१०७७. प्रतिसं० २ । पत्रस० ३ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ । ले०काल × । वेष्टनस०-३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—एक पत्र और है ।

१०७८ चौबीस दडक भाषा—प दौलतराम । पत्रस० ३ । आ० ८$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विपय—धर्म । र०काल १८वी शताब्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १५०–६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

१०७९. प्रतिसं० २ । पत्रस० ४ । आ० १२×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २५४-१०२ । **प्राप्ति स्थान**–उपरोक्त मन्दिर ।

१०८०. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ६ । आ० ११×४$\frac{3}{8}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५८६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०८१. प्रतिस० ४ । पत्रस० १२ । आ० ६×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५२२ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—प्रथम ८ पत्र पर व्रत उद्यापन विधि है ।

१०८२. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ४ । आ० ११×५ इच । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टनस० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

१०८३. प्रतिस० ६ । पत्रस० ४ । आ० १२ × ४ इच । ले०काल स० १८७८ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । वेप्टन स० ३२ । १३८ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टौक) ।

१०८४. प्रतिस० ७ । पत्रस० ५ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, करौली ।

१०८५. चौबीस दण्डक × । पत्रस० ६ । भाषा—हिन्दी । विपय—धर्म । र० काल । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ४०८–१५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियान डूगरपुर ।

१०८६. प्रतिसं० २ । पत्र स० ३ । आ० १०$\frac{1}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

१०८७. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ११ । आ० ६$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना बूदी ।

१०८८. प्रति स० ४। पत्रस० ११ । ग्रा० १२×७ इञ्च । ले०काल स० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन स० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी बू दी ।

१०८६. चौबीस दण्डक— × । पत्रस० १० । ग्रा० ११×५½ इञ्च । भापा—सस्कृत । विपय—धर्म । र०काल—× । ले०काल स० १८२३ । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी बू दी ।

विशेष—पाडे गुलाव सागवाडा वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

१०६०. चउवोली की चौपई—चतरू शिष्य सावलजी । पत्रस० ३७ । ग्रा० १०×४ इञ्च । भापा—हिन्दी । विपय—धर्म । र०काल × । ले०काल स० १७६८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

१०६१. चौरासी बोल— × । पत्र स० १ । भापा - हिन्दी । विपय—धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७५ । **विशेष स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

१०६१. (क) चौरासी बोल— × । पत्रस० १६ । ग्रा० १० × ६ इञ्च । भापा—हिन्दी । विपय—धर्म । र०काल × । ले०काल स० १७५० पूर्ण । वेष्टन स० १६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—काष्ठासघ की उत्पत्ति, प्रतिष्ठा विवरण एव मुनि आहार के ४६ दोपो का वर्णन है ।

१०६२ छियालीस गुण वर्णन— × । पत्रस० ६ । ग्रा० ६½×५½ इञ्च । भापा—सस्कृत । विपय—धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १८४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

१०६३. जिनकल्पी स्थविर आचार विचार— × । पत्र स० १३ । ग्रा०१०×५ इञ्च । भापा—प्राकृत, हिन्दी (पद्य) । विपय—आचार शास्त्र । र०काल—× । ले०काल—स० १८०५ । पूर्ण । वेष्टन स० १८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

१०६४ जिन कल्याणक-प आशाधर । पत्र स० ५ । ग्रा० ११×४¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विपय—धर्म । र०काल—× । ले० काल× । पूर्ण । वेष्टन स० ५५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१०६५ जिन प्रतिमा स्वरूप—× । पत्रस० ६५ । ग्रा० ११ × ७½ इञ्च । भापा—हिन्दी (गद्य) । विपय—धर्म । र० काल—× । ले०काल स० १६४४ फागुण सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस०—३६ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

१०६६ जिन प्रतिमा स्वरूप— × । पत्रस०—५४ । ग्रा० १०×७ इञ्च । भापा-हिन्दी । विपय-धर्म । रचना काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेप्टन स० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीरजी बू दी ।

१०६७ जिन प्रतिमास्वरूप भाषा-छीतरमल काला । पत्र सख्या—८२ । ग्रा० ८½×५ इञ्च । भापा-हिन्दी (पद्य) । विपय—धर्म । र०काल स० १६२५ वैशाख सुदी ३ । ले०काल स० १६३३ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वेप्टन स० ८६।३१ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ, (कोटा) ।

विशेष—उत्तमचन्द व्याम ने मलारणा डूगर मे प्रतिलिपि की थी। प्रश्नोत्तर रूप मै है।

१०९८ जीव विचार प्रकरण। पत्रस० ६। भाषा—प्राकृत। विषय --धर्म। र०काल ×। ले०काल—स० १८६१। पूर्ण। वेष्टनस० ६२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—अलवर मे प्रतिलिपि की गई थी।

१०९९. जीव विचार। पत्रस० ३। आ० १२×५ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—धर्म। र० काल - ×। ले० काल—×। पूर्ण। वेष्टनस०—१७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, चौगान बूदी।

११०० जीवसार समुच्चय—×। पत्रस०–२८। आ० १२× ५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—धर्म। र०काल ×। ले० काल— ×। पूर्ण। वेष्टनस०—३१।३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

११०१. जैन प्रबोधिनी द्वितीय भाग—×। पत्रस० २६। आ० ८½ × ८½ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—धर्म। र०काल—×। ले० काल—×। पूर्ण। वेष्टनस०६९८। **प्राप्ति स्थान** --भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

११०२. जैनश्रावक आम्नाय—समताराम। पत्रस०–२८। आ० १०½ × ७ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—आचार। र०काल×। ले० काल सं० १९१५ आसोज बुदी ७। पूर्ण। वेष्टनस० २९१। **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा।

विशेष— कवि भेलसा का रहने वाला था। रचना सम्वत निम्न प्रकार है—

सवत एका पर नो उमै पचदश जानो सोय।

कृष्णपक्ष अष्टी सही भृगु वैसाख जो होय।

पत्र २६ से २८ तक प्यारेलाल कृत अभिषेक बावनी है।

११०३. जैन सदाचार मार्तण्ड नामक पत्र का उत्तर—×। पत्र स० २७। आ० ११½× ८ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—आचार शास्त्र। र०काल—×। ले०काल—×। अपूर्ण। वेष्टन स० ६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

११०४ ज्ञानचिन्तामणि—मनोहरदास। पत्रस० ९। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। र० काल स० १७००। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १९०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

११०५ ज्ञानदर्पण-दीपचन्द। पत्रस० ३१। आ० ११ × ६½ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—धर्म। र०काल ×। ले० काल स० १८७० जेठ सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन स० ४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर।

११०६. प्रति स० २। पत्र स० ८२। आ० ८½ × ४ इञ्च। ले० काल—स० १८६०। माघ बुदी ९। पूर्ण। वे० स० ९६–१६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरह पथी दौसा।

११०७. ज्ञानदीपिका भाषा ×। पत्र स० ३०। आ० १२ × ६ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—धर्म। र०काल स० १८३१ सावन बुदी ३। ले० काल स० १८६० फागुन व.ी १३। पूर्ण। वे० स०–९२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर करौली।

विशेष—सवाई माधोपुर मे ही रचना एव प्रतिलिपि हुई थी । लेखक का नाम दिया हुआ नहीं है ।

११०८ ज्ञानपच्चीसी-बनारसीदास । पत्र स० १ । आ०-१०×४½ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल स० १७७८ । पूर्ण । वेष्टन स० ६२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—कोकिंद नगर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

११०९. प्रति स० २ । पत्र स०—१ । ले० काल × । पूर्ण । वे०स० ६८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१११०. ज्ञानपचमी व्याख्यान-कनकशाल । पत्र स० ६ । भाषा—सस्कृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल—स० १६५५ । पूर्ण । वे० स० ७३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—मेडवा मे लिपि हुई थी ।

११११. ज्ञानानद श्रावकाचार-भाई रायमल्ल । पत्रस० २२६ । आ० ११×७½ इन्च । भाषा-राजस्थानी (ढूढारी) गद्य । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स०—१६०८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर । अजमेर ।

१११२ प्रति स० २ । पत्र स० १३५ । आ० १२ × ८ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जै० मदिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

१११३. प्रति स० ३ । पत्र स० १२६ । आ० १२ × ६¾ इन्च । ले० काल स० १९५८ । पूर्ण । वेष्टन स० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर स्वामी बूदी ।

१११४. प्रति स० ४ । पत्र स० ११७ । आ० १३½×५ इन्च । ले० काल स० १९५८ । पूर्ण । वेष्टन स० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर, नैणवा ।

१११५ प्रति स० ५ । पत्र स० २०६ । आ० १२ × ८ इन्च । ले० काल स० १९५२ पौष शुक्ला ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष—जयपुर मे प्रतिलिपि की गई थी । लिपि कराने मे १६।।।) खर्च हुए थे ।

१११६ प्रतिस० ६ । पत्र स० १८६ । आ० १२½ × ८ इन्च । ले०काल स० १९५२ मगसिर बुदी १० । पूर्ण । वे० स० २५/४१ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

१११७. प्रतिस० ७ । पत्र स० १८६ । आ० १२½ × ७ इन्च । ले० काल स० १९६२ अषाढ बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ६९ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—गृहस्थ धर्म का वर्णन है ।

१११८ प्रतिस० ८ । पत्र स० १९५ । आ० १०½ × ६½ इन्च । ले० काल—स० १९२६ । पूर्ण । वेष्टन स० ७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

१११९ प्रतिसं० ९ । पत्र स० १६६ । आ० १२×६½ इन्च । ले०काल १९०५ आषाढ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—टोक मे प्रतिलिपि हुई थी ।

११२०. प्रतिसं० १० × । पत्र स० १४६ । आ० १३ × ६½ इञ्च । ले०काल स० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन स० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर अलवर ।

११२१. **प्रति स० ११** । पत्र सख्या २६३ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल स० १६०५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा, (राज) ।

विशेष— रूघनाथगढ मे प्रतिलिपि हुई थी ।

११२२. ढू ढियामत उपदेश × । पत्र स० १४ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी) ।

११२३ तत्वदीपिका × । पत्र स० २२ । आ० १२¾ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५६० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

११२४. तत्वधर्मामृत × । पत्र स० २० । आ० ११½ × ५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विपय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी) ।

११२५. तीर्थवदना आलोचन कथा × । पत्र स० १३ । आ० १०¾ × ६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-धर्म । र०काल × । ले० काल- × पूर्ण । वेष्टन स० ६१-१७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

११२६ तीस चौबीसी × । पत्र स० ४ । आ० १० × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल—× । ले० काल स० १६३६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटयो का नैणवा ।

११२७. तेरहपथ खडन—पन्नालाल दूनीवाले । पत्रस० १६ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विपय—धर्म । र०काल × । ले०काल स० १६४८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

११२८. त्रिवर्णाचार—श्री ब्रह्मसूरि । पत्रस० ५७ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पचायती दूनी (टोक) ।

ग्रन्थ का प्रारम्भ—ॐ नम श्रीमच्चतुर्विशति तीर्थेभ्यो नम ।

अत्रोच्यते त्रिवर्णाना शौचाचार-विधि-क्रम ।
शौचाचार विधि प्राप्तौ, देह सस्कर्तु मर्हते ॥

सन्धि समाप्ति पर—

इति श्री ब्रह्मसूरि विरचिते श्रीजिनसहिता सारोद्धार प्रतिष्ठातिलक नाम्नि त्रिवर्णिकाचारसग्रहे सूत्र प्रसगेसध्यावदनदेवाराधनायात विश्वदेवसतर्प्पणादि–विधानिय नाम चतुर्थं पर्व ।

११२६. त्रिवर्णाचार-सोमसेन । पत्रस० १२१ । आ० १० X ६ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय--आचार । र०काल स० १६६७ कार्तिक सुदी १५ । ले०काल स० १८६२ माह सुदी १० । पूर्ण वेष्टन-स० १३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

११३०. प्रतिस० २ । पत्रस० १४४ । आ० १० X ४½ इन्च । ले०काल स० १८६८ । पूर्ण । वेष्टन स० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पाश्वनाथ चौगान बू दी ।

विशेष—गोर्द्धन ने तक्षकगढ टोडानगर के नेमिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी ।

११३१. प्रति सं० ३ । पत्रस० १०-१५३ । आ० १०½ X ५½ इन्च । र०काल X । ले०काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० १७१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर राजमहल टोक ।

११३२. प्रति स० ४ । पत्रस० १५२ । आ० ६½ X ४ इन्च । ले०काल स० १८६५ सावन सुदी ५ । अपूर्ण । वेष्टन स० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बू दी) ।

विशेष—१०१ से ४६ तक के पत्र नही है । इसका दूसरा नाम धर्म रसिक ग्र थ भी है ।

११३३ प्रति स० ५ । पत्रस० ४२ । भाषा—संस्कृत । ले०काल स० १८७१ । पूर्ण । वेष्टन स० २६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर । इस मन्दिर मे एक अपूर्ण प्रति और है ।

विशेष—चुन्नीलाल ने भरतपुर मे प्रतिलिपि कर इसे मन्दिर मे चढाया था ।

११३४ प्रतिस० ६ । पत्रस० १०५ । आ० ११ X ५ इन्च । ले०काल स० १८५२ पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

११३५ प्रति स० ७ । पत्र स० १०१ । आ० १२ X ६½ इन्च । ले०काल स० १८७३ सावन सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

विशेष—गुमानीराम ने कल्याणपुरी के पचायती मदिर नेमिनाथ मे प्रतिलिपि की थी ।

११३६ प्रति स० ८ । पत्रस० १०३ । आ० १२ X ४½ इन्च । ले०काल स० १८७० । चैत बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १४-२१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर कोटडियो का, डूंगरपुर ।

११३७. दण्डक— X । पत्रस० २१ । आ० १०½ X ५ इन्च । भाषा—संस्कृत-हिन्दी । विषय आचारशास्त्र । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १४१६ । **प्राप्ति स्थान**— भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

११३८. दडक— X । पत्र स० ५ । आ० १० X ४¾ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय — आचार शास्त्र । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १०१४ । **प्राप्ति स्थान**--भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

११३९. दडक— X । पत्र स० १२ । आ० १० X ४½ । भाषा—हिन्दी । विषय आचार शास्त्र । र०काल X ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ६१८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

११४०. दडक— X । पत्र स० ४ । आ० ११ X ४½ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । र०काल X । ले० काल स० १८१३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१७ । भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

११४१. दडक— × । पत्रस० २७ । आ० ६½ × ४½ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । र०काल — × । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

११४२. दडक प्रकरण-जिनहस मुनि । पत्रस० २६ । भाषा—प्राकृत । विषय--धर्म । र०काल— × । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० ६०७ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

११४३. दडक प्रकरण– वृन्दावन । पत्रस० २-२६ । आ० ६½ × ६ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार । र०काल—× । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टनस० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटया का नैणवा ।

११४४. दडक वर्णन × । पत्रस० १६ । आ० १०¾ × ४¼ इन्च । भाषा हिन्दी गद्य । विषय–आचार । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १६३ । **प्राप्ति स्थान** । दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—१६ से आगे पत्र नही हैं ।

११४५. दडक स्तवन-गजसार । पत्रस० ५ । आ० ११ × ५ इन्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आचार । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका महित है । लिखित ऋपि श्री ५ घोमरा तस्य शिष्य ऋपि श्री ५ गोपाल जी प्रसाद ऋपि जे तसी लिखित पठनार्थं बाई कुमरि बाई ।

११४६. प्रति सं० २ । पत्रस० ७ । आ० १०×५ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—सस्कृत टब्बा टीका सहित हैं ।

११४७. प्रति सं० ३ । पत्र स० ७ । आ० ६¼ × ४¼ इन्च । ले० काल स० १७०६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बू दी) ।

विशेष— प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

११४८. दशलक्षणधर्म वर्णन— × । पत्रस० ३५ । आ० ८ × ६½ इन्च । भाषा—सस्कृत, । विपय—धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५५७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

११४९. दशलक्षणधर्म वर्णन × । पत्रस० ४३ । आ० ८ × ६½ इन्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११९५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर, अजमेर ।

११५०. दशलक्षणधर्म वर्णन— × । पत्रस० १४ । आ० ८½ × ६½ इन्च । भाषा—हिन्दी । विपय—धर्म । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ३६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

११५१. दशलक्षणधर्म वर्णन–रइधू । पत्र स० २१ । **भाषा**—अपभ्र श । विषय—धर्म । र०काल—× । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरहपथी मदिर, बसवा ।

११५२. दशलक्षण भावना—प० सदासुख कासलीवाल । पत्रस० २६ । आ०—१४½ × ८ इन्च । भाषा—राजस्थानी (ढू ढाडी) गद्य । विषय - धर्म । र०काल— × । ले०काल स० १६५५ । पूर्ण । वेष्टनस० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—मागीराम शर्मा ने दौसा मे प्रतिलिपि की थी । रत्नकरण्ड श्रावकाचार मे से उद्धृत है ।

११५३. प्रतिस० २ । पत्र स० ३८ । आ० १२½×५ इन्च । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

११५४. प्रतिस० ३ । पत्रस० २७ । आ० १२½×७ इन्च । ले०काल स० १६७७ फागुन सुदी १० पूर्ण । वेष्टनस० १३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

११५५. प्रतिस० ४ । पत्रस० ७३ । आ० ६×६ इन्च । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टनस० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोंक) ।

११५६. प्रतिस० ५ । पत्रस० ८६ । आ० १०¾×४¾ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३८ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

१०५७. प्रतिस० ६ । पत्रस० ३० । आ० १३½ × ६½ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३५८।१३६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

११५८. प्रतिस० ७ । पत्र स० ३१ । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० ५२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

११५९. दर्शनविशुद्धि प्रकरण--देवभट्टाचार्य । पत्रस० १५६ । आ० १०×४½ इन्च । भाषा–सस्कृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८६-५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—सोलह कारण भावना का वर्णन है ।

११६० दर्शनसप्तति —× । पत्र स० ३ । आ० १२ × ५½ इन्च । भाषा प्राकृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल स० १७८२ वैशाख सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स १८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, दीवानजी कामा ।

११६१. दर्शनसप्ततिका—× । पत्रस० ७ । आ० १०×५ इन्च । भाषा—प्राकृत । विषय–धर्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी) ।

विशेष—मूल के नीचे हिन्दी गद्य मे अर्थ दिया है । अ त मे लिखा है—

इति श्री सम्यक्त्वसप्तातिकावचूरि ।

११६२ दानशील भावना—भगौतीदास । पत्रस० ३-५ । आ० १०½×४ इन्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—धर्म । र०कारा × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ११०-६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बीसपथी दौसा ।

११६३. दानशीलतप भावना—मुनि असोग । पत्रस० ३ । भापा—प्राकृत । विपय—धर्म । र०काल— × । ले०काल स०—× । पूर्ण । वेष्टन स० ५७, ६४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

अ तिम—

छदाइस छाण अयागयण अमोग नामा मुणि पु गवण ।
सिद्ध तनि स्मरेय इमि जिण,हीणाहिय मूरि खमतु तण । इति

११६४. प्रतिसं० २ । पत्रस० ६ । आ० १०×४ इन्च । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ५६-८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—४६ गाथाऐ है ।

११६५. दानादिकुलकवृत्ति—पत्रस० २०८ । भापा—सस्कृत । विपय - आचार शास्त्र । र०काल— × । ले० काल— × । पूर्ण । वेप्टन स० ६१० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर ।

११६६. द्विजमतसार । पत्रस० २१ । आ० १२½×४½ इच । भापा—सस्कृत । विपय —धर्म । र०काल—× । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

११६७. धर्म कु डलिया—बालमुकुन्द । पत्रस० २६ । आ० १२½×८ इच । भापा—हिन्दी । विपय - धर्म । र०काल × । ले०काल स० १६२१ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वेप्टन स० ६६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

११६८ प्रति स० २ । पत्र स० १६ । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टनस० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी भरतपुर ।

११६९ धर्मढाल—× । पत्र स० १ । आ० ६½×५ इच । भाषा—हिन्दी । विपय—धर्म । र०काल× । ले०काल× । पूर्ण । वेष्टनस० ३४५ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मदिर दवलाना (बू दी) ।

विशेष—और भी ढाल दी हुई है ।

११७० धर्मपरीक्षा—अमितिगति । पत्र स० ७० । आ० ११×५ इच । भापा—सस्कृत । विपय—धर्म । र०काल स० १०७० । ले०काल स० १५३७ कार्तिक बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० १५१ । **प्राप्ति स्थान**—म दि० जैन मन्दिर (अजमेर) ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है —

सवत् १५३७ वर्षे कार्तिक वुदि ५ मोमे मईवारी स्थाने श्री अजितनाथ चैत्यालय राजाधिराज–श्री अजयमल्ल–विजयराज्ये श्रीमत् काष्ठासघे नदीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री राममेनान्वये भ . रत्नकीर्ति तत्पट्टे भ लखमसेन तत्पट्टे धरणवीर पट्टाचार्य म श्री सोमकीर्ति तत् शिष्य आचार्य श्री वीरसेन आचार्य विमलसेन मु विजयसेन मु जयसेन ब्र वीरम । ब्र, माना । ब्र कान्हा । ब्र गणीवा । ब्र शामण । आर्यिका वाई जिनमती आर्यिका विनयशिरि । आ जिनशिरि । क्षुल्लिका वाई नाई । क्षु गाजी । पडित अम्मी । पडित वेला । प० जिनराज । प० नरसिंह । प० वीमपाली छात्र वाल्हा ।

११७१. प्रतिसं० २ । पत्रस० १५५ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले०काल स० १७३३ आसोज बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० १५५० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

११७२. प्रति स. ३ । पत्र स० १०० । आ० ११¾×४½ इञ्च । ले०काल स० १७२१ । वेष्टन स० १२३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

११७३. प्रति स० ४ । पत्र स० ८६ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १२०/१७ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

११७४. प्रतिस० ५ । पत्र स० १ से ६६ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

११७५. प्रतिस० ६ । पत्र स० ११६ । ले० काल स० १६८७ कार्त्तिक बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६-१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सौगाणी करौली ।

विशेष—सवत् १६८७ वर्षे कार्त्तिक वदि १३ शनिवासरे मोजमावाद मध्ये लिखत जोसी राधा । स्वस्ति श्री वीतारागायनम सवत् १७१२ सागानेरी मध्ये जीण चैत्यालै ठोल्या कै देहुरै आर्यिका चन्द्रश्री बाई हीरा । चेलि नान्हि—द्रम्मंप्रिक्षा (धर्मपरीक्षा) शास्त्र अठाई के व्रत कै निमति । अर्यका चन्द्र श्री देहहुरै मेल्हो (कर्म) कृमखै कै निमित मिति चैत्र वदी ८ भुमीवार ।

११७६. प्रति स० ७ । पत्रस० ११२ । आ० ११ × ४¾ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ८१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

११७७. प्रति स० ८ । पत्र स०१०२ । ले०काल स० १७९९ वैसाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन वडा पचायती मन्दिर डीग ।

११७८. प्रति स० ९ । पत्र स० ११० । आ० १२ × ५ इञ्च । ले०काल स० × । पूर्ण । वेष्टनस० स० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति अशुद्ध है ।

११७९ प्रतिस० १० । पत्र स० ८९ । ले०काल स० १८५५ माह सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० २२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष— फरुखावाद मे प्रतिलिपि की गई । स० १९२२ मे भरतपुर के मन्दिर मे चढाया था ।

११८० प्रतिस० ११ । पत्र स० ८८ । र०काल × । ले० काल० स० १७९२ मगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० २३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

११८१ प्रतिस० १२ । पत्र स० ११९ । आ० १२×४ इच । भाषा—सस्कृत । विषय— । ले०काल स० १६६४ फागुण सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति—सवत् १६६४ वर्षे फागुण बुदी ८ गुरुवासरे मोजवा वास्तव्ये राजाधिराज महाराजा श्री मानसिंह राजप्रवर्तमाने अजतिनाथ जिनचैत्यालये श्री मूलसघे ब स गच्छे कुन्द० भ शुभचन्द्र देवास्तत्पट्टे पद्मनदिदेव खडेलवाल दोसी गोत्र वाले सघवी रामा के वशवालो ने प्रतिलिपि कराई थी । आगे पत्र फट गया है ।

११८२. प्रति सं० १३ । पत्र स० ८७ । आ० १०$\frac{1}{4}$ × ५$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल स० १८३६ सावण सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० १५६/३६ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

११८३. प्रतिसं० १४ । पत्र स० ८५ । आ० १२×६ इच । ले०काल स० १८७८ माघ बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक) ।

विशेष—ग्रन्थ के पत्र एक कोने मे फटे हुये हैं ।

११८४. प्रतिसं० १५ । पत्र स० ८१ । आ० १३×६ इच । ले० काल स० १८७७ । पूर्ण । वे० स० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

११८५. प्रतिसं० १६ । पत्र स० ५ । आ० १२×५ इच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ बूदी ।

११८६. धर्मपरीक्षा— × । पत्र स० २८ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—धर्म । र०काल—× । ले०काल स० १४४८ शाके फागुन सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—पार्थपुर नगर के पार्श्वनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

११८७. धर्मपरीक्षा भाषा—मनोहरदास सोनी । पत्रस० ६४ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल स० १७०० । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० १६१७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

११८८. प्रतिसं० २ । पत्र स० १२१ । आ० १२$\frac{1}{2}$×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल स० १८८३ भादवा सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १०८८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

११८९. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १३८ । आ० ९$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७५-४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

११९०. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ७३ । आ० ९$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १७९८ । पूर्ण । वेष्टन स० २९१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—गुटका रूप मे है ।

११९१ प्रतिस० ५ । पत्र स० ११८ । आ० ११$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । ले०काल स० १९७२ । पूर्ण । वेष्टन स० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

११९२. प्रति स० ६ । पत्रस० १८३ । आ० ७$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १८५२ । पूर्ण । वेष्टन स० ९८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

११९३. प्रति स० ७ । पत्रस० ८३ । आ० १३×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १८९० । पूर्ण । वेष्टनस० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

मिति पौष सुदी ६ बृहस्पतिवार स० १८९० का श्रीमान परमपूज्य श्री राजकीर्ति जी तत् शिष्य पण्डितोत्तम पण्डित श्री जगरूपदासजी तत् शिष्य पण्डितजी श्री दुलीचन्दजी तत् शिष्य लिपिकृत पण्डित

देवकरणाम्नाय अजयगढ का लिखायित पुन्यपवित्त दयावत धर्मात्मा साहजी श्री तोलजी गोत्रे राउका स्वात्मार्थ बोधनीय प्राप्ति र्भवतु। ग्राम इन्द्रपुरी मध्ये।

११६४. प्रति स० ८। पत्रस० ६३। आ० ११¾ × ६ इञ्च। ले०काल स० १६०७ वैशाख सुदी ३। पूर्ण। वेष्टनस० ३७। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावटी (सीकर)।

११६५. प्रतिस० ६। पत्रस० ८५। आ० १२×६ इञ्च। ले०काल—स० १८७५ कार्तिक सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन स० ६२।५२। **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)।

विशेष—सीताराम के पठनार्थ परशुराम लुहाडिया ने प्रतिलिपि की थी।

११६६ प्रतिस० १०। पत्रस० ८४। आ० १२×६½ इञ्च। ले०काल स० १८३७ वैशाख सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० ४६।४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेष—सुखदास रावका ने भादवा मे प्रतिलिपि की थी।

११६७. प्रति स० ११। पत्रस० १४४। आ० १०×५ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ८०-७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा।

विशेष—दौलतराम तेरापथी ने प्रतिलिपि करवायी थी।

११६८. प्रति स० १२। पत्रस० ११३। ले०काल स० १८५१। पूर्ण। वेष्टनस० २२।२७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा।

विशेष—महाराजा प्रतापसिह जी के शासनकाल मे दौसा मे प्रतिलिपि की गई थी।

११६६. पति स १३। पत्रस० १३३। आ० ६½×६½ इञ्च। ले०काल स० ५-६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सौगाणी करौली।

१२००. प्रतिस० १४। पत्रस० १०२। आ० १२×५½ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १३०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर करौली।

१२०१ प्रतिस० १५। पत्र स० ७०। ले० काल स० १८१३ आषाढ सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन स० ७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बडा पचायती मदिर (डीग)।

१२०२. प्रतिस० १६। पत्र स० १२६। ले०काल स० १८१५। पूर्ण। वेष्टन स० १५। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर हण्डावालो का डीग।

विशेष—सेवाराम पाटनी ने लिखवाया था।

१२०३ प्रतिसं०-१७। पत्र स० ११३। ले०काल—स० १८८३ भादो वदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० ३६। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पञ्चायती मदिर हण्डा वालो का डीग।

१२०४. प्रतिस० १८। पत्र स० १३३। आ० १२ × ७½ इञ्च। ले०काल—स० १८१८ पूर्ण। वेष्टनस० १८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मदिर कामा।

१२०५. प्रतिस० १६। पत्रस० १०४। आ० ११¾ × ४½ इञ्च। ले०काल स० १८४१ भादवा सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन स० ४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वैर।

विशेष—वैर मे प्रतिलिपि हुई थी।

१२०६. प्रतिसं० २० । पत्रस० ९३ । आ० ११ × ८ इञ्च । ले०काल स० १८२० । मगसिर सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर वयाना ।

विशेष—८६ पत्र के आगे भक्तामरस्तोत्र है । ले० काल स० १८३४ दिया है । प्रति जीर्ण शीर्ण है ।

१२०७. प्रतिसं० २१ । पत्रस० १८२ । ले०काल १८७५ सावन वदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ४४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—जोधराज ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

१२०८. प्रतिसं० २२ । पत्रस० २२५ । ले०काल स० १७४८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—विद्याविनोद ने सागानेर मे प्रतिलिपि की थी । गुटका साइज ।

१२०९. प्रतिसं० २३ । पत्रस० १५६ । लेखन काल १८२५ । पूर्ण । वेष्टनस० ३२९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर मे जवाहरसिंह जी के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई ।

१२१०. प्रतिसं० २४ । पत्रस० ९९ । ले०काल स० १७९१ । पूर्ण । वेष्टनस० ३३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१२११. प्रतिसं० २५ । पत्रस० ९८ । ले०काल स० १८१३ पूर्ण । वेष्टनस० ३३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—तक्षकपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१२१२. प्रति सं० २६ । पत्र स० १२५ । ले० काल १८१३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१२१३. प्रति स० २७ । पत्र स० १२३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१२१४. प्रति स० २८ । पत्रस० १३६ । आ० ११ × ७ इञ्च । ले० काल स० १९२७ । पूर्ण । वेष्टनस० ८७ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन पचायती मन्दिर, अलवर ।

१२१५. प्रति स० २९ । पत्रस० ११३ । आ० १२×६ इञ्च । ले०काल स० १८६६ ज्येष्ठ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० ४६/४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, अलवर ।

१२१६ प्रति स० ३० । पत्रस०–१०३ । ले०काल स० १९२२ कार्तिक बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० ५० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

१२१७. प्रति स० ३१ । पत्रस० ८९ । आ० १२×८½ इञ्च । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टनस० ३१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

१२१८. प्रति स०—३२ । पत्रस० ८६ । आ० १२½×६ इञ्च । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० २१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

१२१६. प्रतिसं० ३३ । पत्रस० १४२ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १८१२ । पूर्ण । वेष्टनस० २८८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर, दबलाना (बूदी) ।

१२२०. प्रतिस० ३४ । पत्रस० ८७ । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण शीर्ण । वेष्टनस० ३८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर तेरह पथी मालपुरा (टोक) ।

१२२१. प्रतिस० ३५ । पत्रस० १२ । ले० काल स० १६०१ आपाढ़ सुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टनस०-३३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक)

१२२२. प्रतिस० ३६ । पत्रस०४८ । आ० ८½ × ६ इञ्च । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस०१०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

१२२३. प्रतिस० ३७ । पत्रस०—१३४ । आ० ६ × ५ इञ्च । ले० काल स० १८८५ । पूर्ण । वेष्टनस०—६५ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष—भट्ट तोलाराम भवानीराम दसोरा ने प्रतिलिपि की थी ।

१२२४ प्रति स० ३८ । पत्रस० ६५ । आ० १०×७ इञ्च । ले० काल- × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन खडेलवाल मन्दिर आवा (उणियारा) ।

१२२५. प्रतिस० ३६ । पत्रस० २-१०४ । आ० १०½ × ६½ इञ्च । ले०काल स० × । पूर्ण । वेष्टनस०—११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक)।

१२२६ प्रतिस० ४० । पत्र स० १०६ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मदिर पचायती दूनी (टोक)

१२२७ प्रति स० ४१ । पत्रस० १०७ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले० काल स० १८४० फागुण सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १६ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मदिर कोटयो का नैणवा ।

१२२८ प्रतिसं० ४२ । पत्र स० १०१ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल स० १८४० फागुण बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरह पथीमदिर, नैणवा ।

१२२६. प्रति स० ४३ । पत्र स० ११२ । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल स० १८३८ । पूर्ण । वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मदिर श्री महावीर स्वामी बूदी ।

१२३० प्रति स० ४४ । पत्र स० ६० । आ० १०×४½ इच । ले० काल स० १७४० पौष सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी ।

विशेष अरगअपुर मे विनयसागर के शिष्य ऋषिदयाल ने प्रतिलिपि की थी ।

१२३१. प्रति स० ४५ । पत्र स० ६६ । आ० १० × ६½ इञ्च । ले०काल—स० १६२० पौष सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

विशेष—लोचनपुर मे लिख गया था ।

१२३२. प्रति स० ४६ । पत्र स० ६३ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले० काल—स० १८४६ अपाढ सुदी ६। पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त ।

विशेष—सवाई माधोपुर के गढ रणथम्भोर मे आमेर के राजा प्रतापसिंह के शासन काल मे सगही पाथुराम के पुत्र निहालचद ने प्रतिलिपि कराई थी ।

पुस्तक प० देवीलाल चि० विरधूचद की है।

१२३३. प्रति सं० ४७ । पत्र स० १०५ । आ० १२½×७ इच । ले०काल—स० १९७६ । पूर्ण । वेष्टन स० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

विशेष—चदेरी मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१२३४. धर्मपरीक्षा वचनिका-पन्नालाल चौधरी । पत्रस० १८२ । आ० १०×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । र०काल स० १९३२ । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ३१ । **प्राप्ति स्थान** -दि० जैन मन्दिर श्री महावीर स्वामी, बूंदी ।

१२३५. प्रति सं २ । पत्र स० ११७ । आ० १२½ × ८ इञ्च । ले० काल स०—१९५१ आषाढ सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, श्री महावीर स्वामी बूदी ।

१२३६. धर्मपरीक्षा भाषा-बाबा दुलीचन्द । पत्र स० २५१ । भाषा—हिन्दी । भाषा—धर्म । र०काल— × । ले०काल स० १९४० वैसाख सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३८ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१२३७. धर्मपरीक्षा भाषा सुमतिकीर्ति । पत्र स० ७६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—धर्म । र०काल स० १६२५ । ले० काल स० १६४८ । पूर्ण । वेष्टन स० १५ । **प्राप्ति स्थान** । दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

१२३८. धर्मपरीक्षा भाषा—दशरथ निगोत्या । पत्रस० ११० । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । र०काल स०—१७१८ फागुन बुदी ११ । ले०काल—स० १७९० । पूर्ण । वेष्टन स-३३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

१२३९. प्रतिसं० २ । पत्रस० ३५ आ० १०½ ×४ इञ्च । ले०काल स० १८२० माह बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर, करौली ।

१२४०. प्रतिसं० ३ । पत्र स० २३५ । आ० १२×५½ इञ्च । लेखन काल-स० १७५० । पूर्ण । वेष्टन स० १९८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—गद्यांश

ससार मे भैता जीवा के सुखदुख कौ आतर होई केतौ मेर सिरस्यौजे नौ जाणिज्यो ।
भावार्थ से योजु ससारी जीवानै दुखतौ मेरू वरावर अर सुख न मरसौ वरावरि जाणज्यौ ।। २१ ।।

अन्तिम पाठ—

साह श्री हेमराज सुत मातु हमीर दे जाणि ।
कुल नि गोत श्रावक धर्म दशरथराज वखाणी ।। १।।
सवत् सतरासै सही अष्टदश अधिकाय ।
फागुण तम एकादशी पूरण णाम सुभाय ।। २ ।।
धर्म परीक्षा वचनिका सुन्दरदास रहाय ।
साधर्मी समझिवै दशरथ कृति चित लाय ।। ३ ।।

इति श्री अमितगति कृता धर्मपरीक्षा मूल तिहकी वचनिका वालवोध नाम अपर नाम तात्पर्यार्थ टीका तस्य धर्मार्थं दशरथेन कृता समाप्ता ।

१२४१. धर्मपचविशतिका—ब्र० जिरणदास । पत्र स० ३ । आ० ११ × ५$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । र० काल—× । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ ।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

आदि भाग—भव्व कमल मायड सिद्ध जिरणनि हुयारिगद सद पुज्ज ।
णेमि ससि गुरुवीर परणमियतिय सुधिभव महरण ।।
ससामज्झि जीवो हिंडियमिच्छत विसयससत्तो ।
अलहतो जिरणधम्म वहुविहयञ्जाय गिएहेइ ।। २ ।।
चउगइ दुह सतत्तो चउरासी लक्ख जोरिण अइक्खिरणो ।
कम्मफल भुजतो जिरण धर्म विर्वज्जिउ जीवे ।। ३ ।।

अन्तिम—जिरणधम्म मोक्खछ अरणरण हवेहि हिसगायरण ।
इय जारिण भव्वजीवा जिरणअक्खिय धम्मु आयरहि ।। २० ।।
रिणम्मल दसरणभत्ती वयअरणुपेहाय भावरणा चरिया ।
अ ते सलेहरणा करिज्जइ इच्छहि मुत्तिवररमरणी ।। २५ ।।
मेहा कुमुहरिण चद भवदु सायरह जारणपत्तमिरण ।
धम्मविलाससुदह भरिगद जिरणदास वम्हेरण ।। २ ।।
इतिधर्म पचविशतिका सम्पूर्णम ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवनजी कामा ।

१२४२. धर्मप्रश्नोत्तरी । पत्र स० १ । आ० ८ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । र० काल—× । ले०काल स० १८८६ अपाढ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनस० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक) ।

विशेष—जन्म पत्र की साइज का लम्बा पत्र है ।

१२४३. धर्ममडन भाषा—लाला नथमल । पत्रस० ७० । आ० ६$\frac{3}{4}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विपय—धर्म । र० काल × । लेखन काल स० १६३६ पूर्ण । वेष्टन स० १३०-५६ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

१२४४ धर्मरत्नाकर—जयसेन । पत्र स० ६० । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विपय—धर्म । र० काल म० १०५५ । ले० कालस० १८३४ चैत सुदी ३ । पूर्ण । वे स १०३६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—अजमेर मध्ये लिखित ।

१२४५ प्रतिसं० २ । पत्रस० ६१ । आ० ६ × ५$\frac{1}{4}$ इञ्च । ले०काल स० १८४८ कातिक सुदी ८ ।पूर्ण । वेष्टनस० १२०२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—प० गोपालदास ने अजमेर मे प्रतिलिपि की थी ।

१२४६. प्रतिसं० ३। पत्रस० १६५। आ० ६×४½ इञ्च। ले० काल स० १७७५ वैशाख सुदी ७। वेष्टन स० ८७। **प्राप्ति स्थान**—शास्त्र भण्डार दि० जैनमन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—महात्मा धनराज ने स्वय पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

१२४७. धर्मरसायन–पद्मनन्दि। पत्र सख्या १३। भाषा—प्राकृत। विपय—धर्म। र०काल—× लेखन काल—×। पूर्ण। वेष्टन स० ५०८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

१२४८ प्रतिसं० २। पत्र स० १०। आ० १० × ५½ इञ्च। ले० काल। पूर्ण। वेष्टन स० ५८। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

१२४९. धर्मशुक्लध्यान निरूपण—×। पत्र स० ३। भापा—सस्कृत। विपय—धर्म। र०काल—×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६२।२४९। **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

१२५०. धर्मसग्रह श्रावकाचार—प० मेधावी। पत्र स० ६३। आ० ११×५ इञ्च। भापा—सस्कृत। विपय—आचार। र०काल स० १४४०। ले०काल स० १५२६। पूर्ण। वेष्टन स० ३०१। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

१२५१. प्रति स० २। पत्र स० ४५। आ० १२ × ४½ इञ्च। ले० काल स० १७८८ श्रावण सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन स० २६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी।

विशेष—द्रव्यपुर नगर के चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे यशकीर्ति के शिष्य छाजूराम ने प्रतिलिपि की थी।

१२५२. प्रति स० ३। पत्र स० ८६। आ० ६½×५½ इञ्च। ले०काल स० १८३५। वेष्टन स० ८०। **प्राप्ति स्थान**— शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—महाराजा प्रतापसिंह के शासनकाल मे बख्तराम के पुत्र सेवाराम ने नेमिजिनालय मे लिखा था।

१२५३. धर्मसार—प० शिरोमणिदास। पत्रस० ३६। आ० १०½ × ५ इञ्च। भापा—हिन्दी। विपय धर्म। र०काल स० १७३२ वैशाख सुदी ३। ले०काल स० १८५९। पूर्ण। वेष्टन स० १६२२। **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन भण्डार अजमेर।

१२५४. प्रति स० २। पत्रस० ५९। आ० १० × ५ इञ्च। ले०काल स० १७७९ अगहन सुदी २। पूर्ण। वेष्टन सख्या ५११। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन भण्डार अजमेर।

१२५५. प्रति सं० ३। पत्रस० ७२। आ० ९ × ६ इञ्च। ले०काल स० १८४६ भादवा सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन स० ३१२। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

१२५६. प्रति स० ४। पत्रस० ३५। आ० १२ × ६ इञ्च। ले० काल स० १८६१ चैत्र सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० ८६-९ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा।

विशेष—श्री नाथूलाल दौसा वाले ने सवाई माधोपुर मे ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी। ग्रथकर्त्ता ने सकलकीर्ति के उपदेश से ग्र थ रचना होना लिखा है।

१२५७. प्रति स० ५। पत्रस० ४४। आ० १३ × ६ इञ्च। ले०काल स० १८५८ सावन सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन स० १२८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

१२५८. प्रति सं० ६। पत्र स० ५३। आ० १३×६ इन्च। ले०काल × पूर्ण। वेष्टन स० १२८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

१२५९. प्रति स० ७। पत्र स० ५६। आ० ९½×६½ इन्च। ले० काल स० १८५९ वैशाख सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० १४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

१२६०. प्रति स० ८। पत्र स० ५५। आ० ९ × ५¾ इन्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २९३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—७९३ पद्य है।

१२६१. प्रति स० ९। पत्रस० ६९। ले०काल स० १८९९। पूर्ण। वेष्टन स० २९६। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा।

१२६२. प्रति स० १०। पत्रस० ५६। आ० ११ × ५ इन्च। ले०काल स० १८९५। पूर्ण। वेष्टन स० ४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, कामा।

विशेष—हेमराज अग्रवाल सुत मोतीलाल शेखावाटी उदयपुर मे प्रतिलिपि करवायी थी।

१२६३. प्रति सं० ११। पत्रस० ५३। ले०काल—१८७९। पूर्ण। वेष्टन स० ३७०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

१२६४. प्रतिसं० १२। पत्रस० ६९। ले०काल—×। पूर्ण। वेष्टन स० ३७१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर।

१२६५ प्रतिसं० १३। पत्रस० ६८। ले०काल स० १८७९ ज्येष्ठ सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन स० ३७२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर।

विशेष—दीवान जोधराज के पठनार्थ लिखी गई थी।

१२६६. प्रतिसं० १४। पत्रस० ४९। आ० ९ × ५ इन्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर नैणवा।

विशेष—सकलकीर्ति के उपदेश से ग्रन्थ रचना की गई थी।

१२६७. प्रतिसं० १५। पत्रस० ४२। आ० ११ × ७ इन्च। ले०काल स०— १९५१। पूर्ण। वेष्टन स० २५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी।

१२६८. प्रतिस० १६। पत्रस० ४७। आ० १० × ७½ इन्च। ले०काल स० १९५१। पूर्ण। वेष्टन स० २१० **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी।

१२६९. प्रतिस० १७। पत्र स० ४८। आ० १० × ७ इन्च। ले० काल स १९५१ वैशाख शुक्ला १५। पूण। वेष्टन स० २६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी।

१२७०. धर्मसार—×। पत्र स० २६। आ० १२×५½ इन्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—धर्म। र० काल—×। ले० काल स० ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)।

१२७१. धर्मसारसग्रह—सकलकीर्ति। पत्र स० २६। आ० १२½ × ५ इन्च। भाषा—सस्कृत। विषय-धर्म। र० काल ×। ले०काल- स० १८२२। पूर्ण। वेष्टनस० ९३-४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियो का डूगरपुर।

१२७२. धर्मोपदेश-रत्नभूषण । पत्र स० १५८ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-- आचार । र०काल स० १६६६ । ले०काल स० १८०३ । पूर्ण । वेष्टनस० २६६-११६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

अन्तिम पुष्पिका—श्री धर्मोपदेशनाम्नि ग्र थे श्रीमत्सकलकलापडित कोटीरहीद भूतभूतल विख्यातकीर्त्ति भट्टारक श्री त्रिभुवनकीर्त्तिपदसस्थित सूरिश्रीरत्नभूषण विरचिते प्रह्नोदपादि सकल दीक्षाग्रहण शुभगति गमनोनाम एकादश सर्ग ।

देवगढ मध्ये भट्टारक देवचन्द जी हू वड जाति लघु शाखाया ।

१२७३ प्रति स० २ । पत्र स० ७४ । आ० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १७७६ वैशाख सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

विशेष—मालपुरा के श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय मे श्री भुवन भूषण के शिष्य पडित देवराज ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१२७४. धर्मोपदेश— × । पत्रस० १६ । आ० ८$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर, फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

१२७५. धर्म्मोपदेश रत्नमाला-भण्डारी नेमिचद । पत्रस० २३ । आ० ६ × ४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टनस० १०० । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसत्री कोटा ।

विशेष—प्रति हिन्दी टव्वा टीका सहित है ।

१२७६ धर्मोपदेश श्रावकाचार-ब्र.नेमिदत्त । पत्रस० २० । आ० १०$\frac{1}{4}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १६५८ आषाढ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० १३२७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर, अजमेर ।

विशेष—इसका दूसरा नाम धर्मोपदेशपीयूष भी है ।

१२७७. प्रतिसं० २ । पत्रस० ३१ । ले०कालस० १८२५ । पूर्ण । वेष्टनस० २६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष—थाणा मे केसरीसिंह ने लिखी थी ।

१२७८ प्रतिसं० ३ । पत्रस० ३१ । आ० ६$\frac{1}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० २२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर, दीवानजी कामा ।

१२७९. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ३१ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २२६ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

१२८० प्रतिसं० ५ । पत्र स० ६-२६ । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टनस० २६४ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१२८१. प्रतिस० ६ । पत्र स० ३५ । आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल- स० १८१२ चैत बुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० २ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

१२८२. **प्रतिसं० ७** । पत्र स० २३ । आ० ११$\frac{3}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इंच । ले० काल स० १६८१ भादवा सुदी २ । वेष्टन स० १२५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१२८३. **प्रति स० ८** । पत्रस० २३ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । र० काल— × । ले० काल × । वेष्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१२८४ **प्रति स० ६** । पत्र स० २६ । आ० ११$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ । ले० काल × । वेष्टन स० १०७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१२८५. **प्रति स० १०** । पत्र स० २४ । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टन स० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मन्दिर डीग ।

१२८६. **धर्मोपदेश श्रावकाचार—प० जिनदास** । पत्र स० ११७ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र० काल— × । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—साह टोडर के आग्रह से ग्रथ रचना की गयी थी । प्रारम्भ मे विस्तृत प्रशस्ति दी गई है ।

१२८७ **धर्मोपदेश श्रावकाचार-धर्मदास** । पत्र स० ४५ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-आचार शास्त्र । र० काल स० १५७८ वैशाख सुदी ३ । ले० काल स० १६७४ कार्तिक बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—चपावती मे प्रतिलिपि की गयी थी ।

१२८७. **धर्मोपदेशसिद्धान्त रत्नमाला—भागचन्द** । पत्रस० ७७ । आ० ६ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । र० काल स० १६१२ आषाढ वदी २ । ले०काल स० १६३६ भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६७-११३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

१२८६. **प्रतिस० २** । पत्रस० २६ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । ले० काल स०१६५१ । अपूर्ण । वेष्टन स० ७६४ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१२६०. **नमस्कार महात्म्य**— × । पत्रस० २ । आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय— धर्म । र० काल— × । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

१२६१. **नरक दुःख वर्णन-भूधरदास** । पत्रस० ५ । आ० ७$\frac{1}{2}$ × ७ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय—धर्म । र० काल— × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६६ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—कविवर द्यानतराय की रचनायें भी है ।

१२६२ **नवकार अर्थ**— × । पत्र स० ३ । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय—धर्म । र० काल × । ले०काल स० १७३३ कार्तिक बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ३०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

१२९३. नवकार बालावबोध । पत्रस० ४ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र० काल × ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० ७२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१२९४. नित्यकर्मपाठसंग्रह । पत्रस० १० । आ० ११×५½ इच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—धर्म । र० काल—× । ले०काल स० १९३७ । पूर्ण । वेष्टन स० १८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

१२९५. पंच परष्मेठी गुण वर्णन—× । पत्रस० २३ । आ० १०½×६½ इच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—धर्म । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर तेरह पथी दौसा ।

विशेष—ग्रन्थ वही की साइज मे है ।

१२९६. पंचपरावर्तन वर्णन × । पत्रस० ४ । आ० १२×४½ इच । भाषा—हिन्दी(गद्य) । विषय—धर्म । र० काल—× । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० २९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

१२९७. पचपरावर्त्तन वर्णन—× । पत्रस० ३ । आ० ११½×५½ इच । भाषा—हिन्दी (ग०) । विषय—धर्म । र०काल—× । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० २०७ । **प्राप्ति-स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

१२९८. पचपरावर्त्तन वर्णन—× । पत्रस० ६ । आ० ११×७ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—चितन धर्म । र०काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ७९/५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

१२९९. पचप्रकार ससार वर्णन—× । पत्रस० ४ । आ० १०½×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत । विषय - धर्म । र०काल—× । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—शास्त्र भडार दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१२९९. (क) प्रतिसं० २ । पत्रस० ३ । आ० १०½×५½ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन स० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

१३००. पन्द्रहपात्र चौपई—भ. भगवतीदास । पत्रस० ३ । आ० १०×६½ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र० काल × । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० ८२–४४ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

आदि—

नमो देव अरिहत कौ नमौ सिद्ध शिवराय ।
नमे साध के चरण को जोग त्रिविध के भाव ।
पात्र कुपात्र अपात्र के पनरह भेद विचार ।
ताकी हूँ रचना कहूँ जिन आगम अनुसार ।।

अन्तिम—

गिरे तो दम मैं पुर निरधार
मरण करे तो चोथे सार ।

ऐसे भेद जिनागम माहि
त्रिलोकसार गोमतसार ग्रथ की छाह ।।
भाषा करहि भविक इहि हेत
पाछि पढत अर्थ कहि देत ।
बाल गोपाल ढहि जे जीव
भैया ते सुख लहि सदीव ।।

१३०१. पद्मनदि पचविंशति—पद्मनंदि । पत्रस० १३२ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल—× । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० ११६४ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१३०२. प्रतिस० २ । पत्रस० १३१ । आ० १०$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इच । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ६७८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—साहमलू ने इस ग्रथ की प्रतिलिपि करवाई थी ।

१३०३ प्रति स० ३ । पत्र स० ८५ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले०काल × । वेष्टनस० १२० । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—८५ से आगे पत्र नही हैं ।

१३०४ प्रति स० ४ । पत्र स० १-५० । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ । ले०काल × । वेष्टनस० ७६२ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

१३०५ प्रति स० ५ । पत्र स० ७-६६ । आ० ११×४$\frac{3}{4}$ । ले०काल × । विषय—आचार अपूर्ण । वेष्टन स० ८२२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । पत्र मोटे है । प्रति १६वी शताब्दी की प्रतीत होता है ।

१३०६. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ५३ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इच । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० १६०-७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

१३०७. प्रतिस० ७ । पत्रस० १४-१५ । आ० १३$\frac{1}{2}$×५ इच । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टन स० ३०८/२४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रतिजीर्ण है तथा सभी पत्र सील से चिपके हुए हैं ।

१३०८. प्रतिस० ८ । पत्र स० १६२ । आ० १३×४ इच । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टन स० ४०६/२४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

१३०९. प्रति स० ९ । पत्र स० ८० । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ४१०/२४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

१३१०. प्रतिस० १० । पत्र स० ७७ । ले०काल स० १५९१ । अपूर्ण । वेष्टनस० ४११/२४३ । प्रतिजीर्ण है एव प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

सवत् १५९१ वर्षे प्रथम श्रावण वुदी २ शुक्रवासरे स्वस्ति श्री मूलसघे सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे कु दकु दाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्ति तत्पट्टे भुवनकीर्ति तत्पट्टे श्री ज्ञानभूषण तत्पट्टे विजयकीर्ति

तत्पट्टे शुभचन्द्र प्रवर्तमाने रायदेशे ईडर वास्तव्य हुवड ज्ञातीय मोडा करमसी भार्या पूतलियो सुत हो माडा मेघराजचात्रु डोभाडा चापा भार्या चापलदे तयो सुत डोभाडा सिहराज भार्या दाडमदे एते स्वज्ञानावरणादि कर्म क्षमार्थ स्वभावरुच्चते श्रीपद्यमदि पचविंशतिका लिखित्वा ईडर सुभस्थाने श्री सभवनाथालये सुस्थिताया श्री विजयकीर्ति शिष्याय प्रदत्त । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथमन्दिर उदयपुर ।

१३११. प्रतिसं० ११ । पत्र स० १४४ । आ० ९×८ इच । ले० काल स० १७८३ आसोज सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स०—९१-९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वडा बीसपथी दौसा ।

विशेष - सस्कृत पद्यो के ऊपर हिन्दी अर्थ दिया हुआ है ।

१३१२. प्रति सं० १२ । पत्रस० ८४ । आ०- ९×६३/४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

१३१३. प्रतिसं० १३ । पत्रस० १३१ । ले०काल स० १९१४ । पूर्ण । वेष्टनस० ७४ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पचायती मदिर हूण्डावालो का डीग ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

१३१४ प्रति सं० १४ । पत्र स० ७२ । आ० १०१/२×६१/२ इच । ले०काल—स० १८३२ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१३१५. प्रतिस० १५ । पत्रस० ५३ । आ० १११/२×५१/२ इञ्च । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टनस० ३१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१३१६ प्रतिसं० १६ । पत्र स० ५७ । आ० १३×५१/२ इञ्च । ले० काल स० १७३२ । पूर्ण । वेष्टनस० १०७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१३१७. प्रतिसं० १७ । पत्र स० ३२ । आ० ९×६१/२ इञ्च । ले०काल स० १९३२ । पूर्ण । वेष्टन स० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—प्रति हिन्दी गद्य टीका सहित है ।

१३१८. प्रतिसं० १८ । पत्र स० ६५ । ले० काल स० १७५० आसोज सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ४७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१३१९. प्रतिसं० १९ । पत्र स० १६४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

१३२०. प्रतिसं० २० । पत्र स० ८९ । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल० × । पूर्ण । वेष्टन स० १७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

१३२१. प्रतिसं० २१ । पत्र स० ११४ । आ० १११/२×४१/२ इञ्च । ले० काल स० १७३५ पौष बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—इस प्रति को आचार्य शुभकीर्ति तत् शिष्य जगमति ने गिरधर के पठनार्थ लिखी थी ।

१३२२. प्रतिसं० २२ । पत्र स० ९७ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

१३२३ प्रतिसं० २३ । पत्रस० १६१ । आ० ५×६ इञ्च । ले०काल सवत् १८३१ आषाढ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

१३२४. प्रतिसं० २४ । पत्रस० ६७ । आ० ११½ × ४¾ इञ्च । ले०काल स० १५८० पौष सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० २०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

विशेष प्रशस्ति—स० १५८० वर्षे पौपमासे शुक्लपक्षे पचमी भृगो आद्येह श्री घनैंद्रेन्द्रुगे चन्द्रप्रभचैत्यालये श्री मूलसघे भारतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनदि देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री ३ देवेन्द्रकीर्तिदेवास्तपट्टे भ० विद्यानदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री श्री श्री ··· ···· ।

१३२५. प्रतिसं० २५ । पत्रस० १०८ । आ० १०½×५½ इञ्च । ले०काल स० १७१५ मगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० २२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

प्रशस्ति—स० १७१५ मार्गशिर सुदी ११ लिखित ब्रह्म सुखदेव स्वयमात्मा निमित्त नैणपुरमध्ये । सूरसिंह सोलखी विजयराज्ये शुभ श्री मूलसघे सरस्वतीगछे बलात्कारगणे भ श्रीपद्मकीर्ति बह्म सुखदेव पठनार्थ । लिखितं सुखदेव ।

१३२६. प्रतिस० २६ । पत्र स० ६६ । आ०१०×४½ इञ्च । ले०काल स० १७६१ माघ बुदी ६ । पूर्ण ।वेष्टन स० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना (बूदी)

विशेष—प्रशस्ति । स० १७६१ वर्षे शाके १६१८ प्रवर्त्तमाने माघ मासे कृष्णपक्षे षष्ठमिति को शुक्रवासरे पडितोत्तमपडित श्री १०८ श्री अमरविमलजी तत् शिष्य गणे श्री ३५ श्री रत्नविमलजी तत् शिष्य मुनि मेघविमलेन लिखित नयणवानगरमध्ये साहजी श्री जोधराजजी पुस्तकोपरि लिपि कृता दीवानश्री बुधराज्ये शुभ भवतु । श्री रस्तु ।

१३२७. प्रतिस० २७ । पत्र स० ११३ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स ४५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी)

विशेष—कठिन शब्दो के अर्थ दिये हुए हैं । प्रशस्ति वाला अन्तिम पत्र नही है । प्रति प्राचीन है ।

१३२८. प्रतिसं० २८ । पत्र स० ६७ । आ० १३½×६½ इञ्च । ले० काल स० १६३५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तरहपथी मन्दिर नैणवा ।

विशेष—चन्दालाल बैंद ने नैणवा के मदिर मे लिपि करवा कर चढाया था ।

१३२६. प्रतिस० २६ । पत्रस० ८२ । आ० १० × ४ इञ्च । ले०काल स० १६०३ माघ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना (बूदी) ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

अथ सवत्सरेस्मिन श्रीविक्रमादित्यराज्ये सवत् १६०३ वर्षे माघ वदि २ शुक्रवासरे निज सोभास्पर्द्धितस्वर्गे श्रीमन्नवग्रामपुरे ।। श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा । तदाम्नाये मडलाचार्य श्री धर्मकीर्तिदेवा दिगतरालाचार-सैद्धातिकचक्रवर्त्याचार्य श्रीनेमिचन्द्रदेवास्तत् प्रियशिष्यालकाचार्य श्री जिनदासब्रह्म । तदाम्नाये सहलवाल कुल कमलभानुसाहु पद्मा तद्भार्या पल्हो तयो ज्येष्ठ पुत्र साहु लोला भार्या देवल । प्रथम पुत्र वाला तद्भार्या कपूरी । द्वितीय पुत्र डूगर । तद्भार्या अणमा । साहु पद्मा द्वितीय पुत्र साहु डाला तद्भार्या चाऊ प्रथम पुत्र धनपालु तद्भार्या रूडी द्वितीय पुत्र कौरू । तृतीय पुत्र खेता । चतुर्थ पुत्र मणिदास

साहु पद्म, तृतीय पुत्र दूलहु तद्भार्या सरो। तयो पुत्र ऊवा। एतेषा मध्ये साहु लोल पद्मनंदि पचविंशतिका कर्मक्षयनिमित्त लिख्यावि।

१३३०. प्रतिसं० ३०। पत्रस० ६१। आ० १४ × ५½ इञ्च। ले०काल स० १५६३। पूर्ण। वेष्टन स० २४-५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—सं० १५९३ वर्षे चैत्र सुदी १ सोमे श्रीमूलसघे भ० श्री विजयकीर्त्ति तत् भ० श्री **कुमुदचन्द्र** (शुभचन्द्र) त ब्रह्म मोजा पाठनार्थं।

१३३१. प्रति सख्या ३१। पत्रस० ६७। आ० १२ × ४ इञ्च। ले०काल स० १७६५। पूर्ण। वेष्टन स० २४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक।

१३३२. प्रति सं० ३२। पत्रस० ५३। आ० ११ × ८ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, पचायती दूनी।

विशेष – स्योबक्स दौसा वालो ने प्रतिलिपि की थी। शिवजीराम के शिष्य प० नेमीचंद के पठनार्थ दूणी मे हीरालाल कोठ्यारी ने इसे भेंट स्वरूप प्रदान की थी। प० हीरालाल नेमीचद की पुस्तक है।

१३३३. प्रति स० ३३। पत्रस० ८६। आ० ११½ × ५½ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

विशेष—प्रति प्राचीन है। अन्तिम पत्र नही है।

१३३४. प्रति स० ३४। पत्रस० ४५-७६। आ० ११ × ५ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनदन स्वामी, बूंदी,

१३३५. प्रतिसं० ३५। पत्रस० ६०। आ० १२ × ५ इञ्च। ले०काल स० १७८८ पौष सुदी १। पूर्ण। वेष्टन स० १०६। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर आदिनाथ बूंदी।

विशेष– प० छाजूराम ने प्रतिलिपि की थी।

१३३६. पद्मनदिपंचविंशति टीका— ×। पत्रस० १३५। आ० १२½ × ७ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—आचार शास्त्र। र०काल ×। ले०काल स० १९३८। पूर्ण। वेष्टन स० १२१५। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर।

१३३७. पद्मनदिपचविंशति टीका— ×। पत्रस० ९२। आ० ११½ × ५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—आचार शास्त्र। र०काल ×। ले०काल स० १७५२ आसोज सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन स० १०२२। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

१३३८. पद्मनन्दिपंचविंशतिका—पत्रस० २४७। आ० ११ × ५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—आचार शास्त्र। र०काल ×। ले० काल स० १६७१ आषाढ बुदी २। पूर्ण। वेष्टनस० ११५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

लेखक प्रशस्ति—सवत् १६७१ वर्षे आषाढ बुदी २ बार सोमवासरे हरियाणादेसे पथ-वास्तव्ये अकव्वर सुत जहागीर जलालदी सुलेमसाहि राजि प्रवर्त्तमाने श्री काष्ठासघे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्री विजयसेनदेवास्तत्पट्टे सिद्धान्तजलसमुद्रविवेककलाकमलिनी–विकाशनैक–दिणमणि भट्टारक नयसेनदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री अस्वसेनदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री अनतकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री क्षेमकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे

श्री हेमकीर्त्तिदेवातत्पट्टे भट्टारक श्रीकुमारसेनदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री हेमचद्रदेवा तत्पट्टे श्री पद्मनदिदेवा तत्पट्टे पचममहाव्रतधारका पचसमिति-त्रिगुप्ति-गुप्तान् देश-विदेस-विज्ञानमान् पच-रस-त्यागी भट्टारक यश कीर्त्ति तत्पट्टे निग्रंथचूडामणि वावीस-परीसह-साहन-सीला कमलमलिनगात्रान् चारित्रपात्रान् गिरनैरि-जात्रा लब्धि-विजयानय-रोपणीरो भट्टारक श्रीगुणचद्र तत्पट्टे कुदेंदुहारहास-काश-सकाश जशोभर धनतर-धनसार-पूर-पूरित चतुर्दश बह्माड-भाडान् श्री जिनसासन-उद्धरण परम भट्टारक-मन्यत् भट्टारक सकलचद्र तदाम्नाये अग्रोतकान्वये सिघलगोत्रे वूल्ह्याणि सुवर्णपथ-वास्तव्ये साह पलसी तस्य भार्या साध्वी चीमाही तस्य पुत्र ६ ... एतेपामध्ये सर्वज्ञध्वनिनिर्गत जीवादि-पदार्थ द्रव्यगुणपर्याय श्रद्धापर शास्त्रदान निरतरायकारी चतुष्पष्टिकलासुन्दर सुन्दरी निहकर-क्रीडा-विहारान् राज्ञ सभा सकल-कल-कामिनी मन श्रम कातियुत-कठ-भूषण-हारिहारान् चौधरी भवानीदास सुतेनेद पद्मनदिपचासिका टीका लिखायित ।।

१३३६, पद्मनन्दिपर्चावंशति टीका × । पत्रस० २०७ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बडा वीसपथी दौसा ।

१३४०. पद्मनदिपच्चीसी भाषा-जगतराय । पत्र स० १०४ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—आचार शास्त्र । र०काल स० १७२२ फागुन सुदी १० । ले० काल स० १८६१ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरह पथी दौसा ।

१३४१. प्रतिसं० २ । पत्र स० ११८ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

१३४२. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १०१ । आ० १२½ × ७ इञ्च । ले०काल स० १६६२ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स०—७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर ।

१३४३. प्रति स० ४ । पत्र स० १३४ । आ० १०½ × ५ इञ्च । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

१३४४. पद्मनदि पच्चीसी भाषा—मन्नालाल खिन्दूका । पत्रस० ३८३ । आ० १४ × ७ इञ्च । भाषा—राजस्थानी (ढूढारी) गद्य । विषय—धर्म (आचार शास्त्र) । र०काल स० १६१५ मगसिर वुदी ५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५७४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिरअजमेर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

१३४५ प्रति स० २ । पत्रस० २४६ । आ० १३½ × ८ इच । ले०काल स० १६६१ सावन सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

१३४६. प्रतिस० ३ । पत्रस० २५ । आ० १४ × ८ इच । ले०काल स० १६५८ सावन वुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

१३४७. प्रतिस० ४ । पत्रस० २८७ । आ० १२ × ८ इच । ले०काल स० १६३३ चैत वुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टौंक)

विशेष—भैरुलाल पहाडिया चूरुवाले से मदिरो के पचो ने लिखवाया था ।

१३४८. प्रतिसं० ५ । पत्रस० २८३ । आ० १३ × ७ इञ्च । ले०काल स० १६३० आपाढ वुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी वूदी ।

विशेष—प० मिश्र नन्दलाल ने चन्द्रापुरी मे प्रतिलिपि की थी। चुन्नीलाल रावका की वहु एव मोतीलाल शाह की वेटी जानकी ने भेंट किया था।

१३४६. पद्मनदि पच्चीसी भाषा ×। पत्रस० ४२। आ० ६×४ इच। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—धर्म। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० १४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल टौंक।

१३५० पद्मनदि श्रावकाचार—पद्मनन्दि। पत्रस० १४। आ० १३×८ इच। भाषा—सस्कृत। विषय—आचार शास्त्र। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० २०६। **प्राप्तिस्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर।

१३५१ प्रति स० २। पत्रस० ५८। आ० ११¾×४½ इच। ले० काल स० १७१३ भादवा बुदी ४। पूर्ण। वेष्टनस० १२८६। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन, मदिर अजमेर।

१३५२. प्रति स० ३। पत्रस० ५७। आ० १०½×४½ इञ्च। ले० काल स० १८५४ चैत्र बुदी ५। पूर्ण। वेष्टनस० १४६८। **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

१३५३ प्रति स० ४। पत्रस० ६१। आ० १०×७½ इञ्च। ले० काल— ×। पूर्ण। वेष्टनस० ११०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर भादवा (राज०)।

१३५४. प्रति स० ५। पत्रस० ५६। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १२। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर वडा पचायती डीग।

१३५५. पुरुषार्थ सिद्धच् पाय—अमृतचन्द्राचार्य। पत्रस० ११। आ० ६×४ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—धर्म। र०काल— ×। ले०काल— ×। पूर्ण। वेष्टनस० १४७२। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम 'जिन प्रवचन रहस्यकोष' भी है।

१३५६. प्रति स० २। पत्र स० २–१५। आ० १२×५½ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—प्रथम पत्र नही है। ८ पत्र तक सस्कृत टिप्पणी भी हैं।

१३५७. प्रतिसं० ३। पत्रस० ४६। आ० ११½×४¾। ले०काल स० १८१७ ज्येष्ठ सुदी १५। वेष्टनस० ६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—प्रति नैणसी कृत सस्कृत टीका सहित है।

१३५८. प्रतिस० ४। पत्रस० ८। आ० १०½×४½। ले०काल स० १७४७ भादवा सुदी १३। वेष्टनस० ६१/५६। **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—द्रव्यपुर पतन मे खेमा मनोहर अमर के लिए प्रतिलिपि हुई थी।

१३५६. प्रति स० ५। पत्रस० ४२। आ० १३×६½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ३६। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा।

१३६० प्रति स० ६। पत्रस० २७। ले० काल स० १८८१ मङ्गसिर सुदी ३ पूर्ण। वेष्टनस० २१८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर।

१३६१. प्रति स० ७ । पत्रस० २६ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल स० १७५० । पूर्ण । वेष्टनस० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—कामा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१३६२. प्रति स० ८ । पत्रस० ११ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१३६३ पुरुषार्थ सिद्धय् पाय भाषा—महापडित टोडरमल । पत्रस० ८६ । आ० १२½×६½ इञ्च । भाषा—राजस्थानी (ढू ढारी) गद्य । विषय—धर्म । र०काल स० १८२७ । ले० काल स० १८९५ मङ्गसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० १५३४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—इस ग्र थ की अधूरी टीका को पडित दौलतरामजी कासलीवाल ने सवत् १८२७ मे पूरा किया था ।

१३६४. प्रति स० २ । पत्रस० १२६ । आ० ११½×६ इञ्च । ले० काल स० १८४८ । पूर्ण । वेष्टनस० ३४६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

१३६५. प्रति स० ३ । पत्रस० १२७ । आ० १२½×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

१३६६. प्रति स० ४ । पत्रस० ७४ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले० काल स० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा ।

१३६७ प्रति स० ५ । पत्र स० २१ । आ० १२½ × ७½ इञ्च । ले० काल- × । अपूर्ण । वेष्टन स० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर वयाना ।

१३६८ प्रतिस० ६ । पत्रस० १८६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३२ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर (वयाना) ।

१३६९ प्रतिस० ७ । पत्रस० ९६ । आ० १२ × ३ इञ्च । ले०काल स० १९११ माघ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० २२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बू दी ।

विशेष—चाकसू मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१३७०. प्रति स० ८ । पत्रस० ८२ । आ० १३ × ६ इञ्च । ले०काल स० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन-स० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मन्दिर श्रीमहावीर बू दी ।

१३७१ प्रति स० ९ । पत्रस० ८८ । आ० १२ × ६¾ इञ्च । ले० काल स० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन स० २९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर नैरावा ।

विशेष—ब्राह्मण सीताराम नागपुर मध्ये लिपि कृत ।।

१३७२. प्रति स० १० । पत्र स० ८१ । आ० १३ × ७½ इञ्च । ले० काल स० १९२६ । पूर्ण । वेष्टन स० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोट्यो का नैरावा ।

विशेष—लोचनपुर मे भोपतराम जी घापाराम जी ठग ने बलदेव भट्ट से प्रति कराकर कोट्यो के मदिर मे भेंट की थी ।

१३७३. प्रति सख्या ११ । पत्रस० १२५ । आ० ११½ × ६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

१३७४. प्रति स० १२ । पत्रस० ८७ । आ० १२½ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १८६२ । पूर्ण । वेष्टन स० १०६/२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ कोटा ।

विशेष—ब्राह्मण भोपतराम ने सवाईमाधोपुर मे प्रतिलिपि की थी । यह प्रतिउ गियारा के मदिर के वास्ते लिखी गयी थी ।

१३७५. प्रति स० १३ । पत्रस०—१२८ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७५/१७० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मदिर अलवर ।

१३७६ प्रति स० १४ । पत्र स० १२४ । ले०काल स० १६२० । पूर्ण । वेष्टन स० ४८-१७० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

१३७७. प्रति सं० १५ । पत्र स० १०४ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ६५-१०४ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर पचायती अलवर ।

१३७८. प्रति स० १६ । पत्र स० ६६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

१३७९. प्रति स ० १७ । पत्रस० ८० । ले० काल स० १८७२ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२२ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर ।

१३८०. प्रति स० १८ । पत्रस० ७४ । ले० काल स० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

१३८१. प्रतिसं० १९ । पत्रस० ८८ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले० काल– × । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

१३८२. प्रति स० २० । पत्र स० ६३ । आ० १२ × ७ इञ्च । ले० काल स० १८७६ सावण वुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—दौलतराम जी ने टीका पूर्ण की थी । जोधराज ने प्रतिलिपि कराई थी ।

१३८३. प्रति सं० २१ । पत्र स० १२८ । लेखन काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर हण्डावालो का डीग ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

१३७४. प्रति स २२ । पत्र स० ६२ । आ० १२ × ८ इञ्च । ले० काल स० १८७८ क्वार सुदी २ पूर्ण । वेष्टन स० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

१३८५. प्रति स० २३ । पत्र स० १०६ । आ० १२¾ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १८६० माघ बुदी ऽऽ । पूर्ण । वेष्टन स० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

१३८६. प्रति स० २४ । पत्र म० १०० । आ० ११½ × ८ । ले० काल स० १९४१ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४–४८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर वडा वीस पथी दौसा ।

विशेष—रतनचद दीवान की प्रेरणा से दौलतराम ने टीका पूर्ण की थी । शिनवक्स ने दौसा मे प्रतिलिपि की । पुस्तक छोटीलाल जी विलाल ने दौसा के मन्दिर मे चढाई ।

१३८७ प्रति स० २५। पत्र स० १५२। आ० १०½ × ५ इन्च। ले० काल स० १६१८ वैशाख सुदी ४। पूर्ण। वेष्टन स० ६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—रघुनाथ ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी। लाला सुखानन्द की धर्म पत्नी ने अनतव्रत चतुर्दशी उद्यापन मे स० १६२६ भादवा सुदी १४ को वडा मन्दिर मे चढाई।

१३८८. प्रति स० २६ । पत्र स० १०८। आ० १३ × ६½ इन्च। ले० काल स० ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक।

विशेष—राजमहल मध्ये सा तेजपाल जी भाई नाथूराम जी तस्य पुत्र नेमलाल ज्ञाति खडेलवाल गोत्र कटार्या ने ब्राह्मण सुखलाल से प्रतिलिपि कराकर चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे विराजमान कराया।

१३८९. पुरुषार्थसिद्धच्युपाय भाषा—×। पत्र स० ८२। आ० १२×७ इन्च। भापा—हिन्दी गद्य। विषय—धर्म। र० काल—×। ले०काल स० १६८१। पूर्ण। वेष्टन स० ५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर स्वामी बूदी।

विशेष—चदेरी मे (ग्वालियर राज्य) प्रतिलिपि हुई। प्रति मूला साह केमन्दिर की है।

१३९० परिकर्म विधि—×। पत्र स० ५३। आ० १०×५ इन्च। भाषा—सस्कृत (पद्य)। विषय—धर्म। र० काल—×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १०। **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रत्येक पत्र पर १० पक्ति एव प्रति पक्ति मे ३४ अक्षर है।

१३३९ पाण्डवी गीता—×। पत्र स० ११। आ० ६×५½ इन्च। भाषा—सस्कृत। विपय—धर्म। र० काल—×। ले० काल स० १६९७ आपाढ सुदी १०। पूर्ण। वेप्टन स० १२८। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

१३९२. पुण्यफल—×। पत्र स० १। आ० १०½×४½ इन्च। भाषा—प्राकृत। विषय—धर्म। र० काल—×। ले० काल—×। पूर्ण। वेष्टन स० २६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी)।

१३९३ प्रतिज्ञापत्र । पत्र स० १। भापा—हिन्दी। विषय—आचार। र० काल—×। ले० काल स० १८८८। पूर्ण। वेष्टन स० ४८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

१३९४ प्रतिमा बहतरी—द्यानतराय। पत्रस० ६। आ० १०½×३ इन्च। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। र० काल—×। ले०काल स० १९०७। पूर्ण। वेष्टन स० ४५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

१३९५. प्रव्रज्याभिधान लघुवृत्ति—×। पत्र स० २ से १० तक। आ० ११×५ इन्च। भापा—सस्कृत। विषय—आचार शास्त्र। र० काल—×। ले०काल स० १५८१ आसोज सुदी १३। अपूर्ण। वेष्टन स० २११। **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

१३९५. प्रश्नमाला भाषा—×। पत्र स० २०। आ० १३×६½ इन्च। भाषा—हिन्दी। विषय - धर्म। र०काल—×। ले०काल सं० १९०७ पौष बुदी १२। पूर्ण। वेष्टन स० ५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना

विशेष—ला० तेजराम ने ग्रथ की प्रतिलिपि करवायी थी।

१३९७. प्रश्नमाला—× । पत्र स० ३८ । आ० ११½×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—मुद्दष्टितर गिणी मे से पाठ सग्रह किया गया है ।

१३९८. प्रश्नोत्तर मालिका—× । पत्र स० ४२ । आ० ९×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—धर्म । र०काल—× । ले०काल स० १८९० । पूर्ण । वेष्टन स० ५८ ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

प्रशस्ति—सवत् १८९० वर्षे शाके १७५५ प्रवर्त्तमाने उत्तरगोले उत्तरायनगते सूर्य ग्रीष्म दिने महामगल्य प्रदेशे मासोत्तममासे ज्येष्ठ मासे कृष्ण पक्षे तिथौ २ रविवासरे उदैगर मध्ये (कुशलगढ) आदिनाथ चैत्यालये मडलालार्य श्री रामकीर्ति जी लिखित ग्र थ प्रश्नोत्तर मालिका सम्पूर्ण ।

१३९९. प्रश्नोत्तररत्नमाला वृत्ति—आचार्य देवेन्द्र । पत्र स० १४३ । आ०१० × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ बू दी ।

विशेष—प्रति प्राचीन एव सस्कृत टीका सहित है । १४३ से आगे पत्र नही है । इत्याचार्य श्री देवेन्द्र विराचिताया प्रश्नोत्तर रत्नमाला वृत्तौ परधनामवारणाया नागदत्ता कथा ।

१४००. प्रति स० २ । पत्र स० १४–१५१ । आ० ९½×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बू दी ।

१४०१. प्रश्नोत्तर रत्नमाला—× । पत्र स० १९ । आ० ९½×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १८७१ । पूर्ण । वेष्टन स० ४३७-१६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, कोटडियो का डू गरपुर ।

१४०२· प्रश्नोत्तर श्रावकाचार—भ. सकलकीर्त्ति । पत्रस० २०९ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १७०० फागुण सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० १३३६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष-ले० काल के अतिरिक्त निम्न प्रकार और लिखा है–स० १८०१ माह सुदी १४ को अजमेर मे उक्त ग्र थ की प्रतिलिपि हुई ।

१४०३. प्रति स० २ । पत्रस० ११५ । आ० ९¾×५ इञ्च । ले० काल स० १८४० आपाढ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० १२६५ । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१४०४ प्रति स० ३ । पत्रस० १५१ । ले०काल स० १६६५ माघ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० १२८५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१४०५. प्रति स० ४ । पत्रस० १३२ । आ० १०¾×४¾ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०५४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१४०६. । प्रति स० ५ । पत्र स० ९५ । ले०काल स० १५८२ भादवा सुदी ११ भौम दिने । पूर्ण । वेष्टन स० ९९० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—श्री मूलसघे लिखित नानू भोजराजा सुत ।

१४०७. प्रति स० ६ । पत्र स० ७३ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७४७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१४०८. प्रति स० ७ । पत्रस० ७२ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल स० १५५३ श्रावण बुदी । पूर्ण । वेष्टन स० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

प्रशस्ति—राउल गङ्गदास विजयराज्ये स० १५५३ वर्षे श्रावण मासे कृष्णपक्षे सोमे गिरपुरे श्री आदिनाथ चैत्यालये श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे भट्टारक श्री ज्ञानभूषण आचार्य श्री रतनकीर्ति हुवडज्ञातीय श्रेष्ठि ठाकार वाई रूपिणी सुत साइआ भार्या सहिजलदे एते धर्मप्रश्नोत्तर पुस्तक लिखापित । मुनि श्री माघनदि दत्त ।

१४०९. प्रतिसं० २ । पत्र स० १२४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर, अजमेर ।

१४१०. प्रतिस० ३ । पत्र स० १६४ । आ० ९½×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१४११. प्रति स० ४ । पत्रस०—१९ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स०—१४१७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१४१२. प्रति स० ५ । पत्रस० १९ । आ० १०½ × ४¾ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स०—१२८३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१४१३ प्रतिस० ६ । पत्रस० ५४ । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल—स० १८६५ फागुण बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स०—११८६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१४१४. प्रतिस० ७ । पत्रस० १६० । आ० १२½×४¾ इञ्च । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १८१३ फागुन बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ७ १० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर सौगाणियो का करौली ।

विशेष—साहिबराम सौगाणी ने करौली मे प्रतिलिपि की थी ।

१४१५. प्रतिस० ८ । पत्रस० १३२ । आ० १०½×४ इञ्च । ले० काल स० १६९४ पौष सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३०८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

प्रशस्ति—सवत् १६९४ वर्षे पौष सुदी १४ तिथौ बुधवासरे मृगसिरनक्षत्रे महाराजाधिराज श्री माधवसिंह जी राज्ये कोटा नगरे श्री महावीरचैत्यालये श्री मूलसघे नद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दान्वये भट्टारक श्री प्रभाचददेवा तत्पट्टे भ० श्रीचदकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री देवेन्द्रकीर्त्ति देवा तत्पट्टे भट्टारकेन्द्र भट्टारक श्री नरेन्द्रकीर्त्ति तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये सौगाणी गोत्रे साह श्री सागा तद्भार्ये द्वे ऐतपा मध्ये साम्यक्त्वालकृतगात्र–शांतिकांति–सौजन्ये -दार्यवीर्यादिगुणावलिभूपित साहजी नादा तस्य भार्या चतुविध ।

१४१६ प्रतिसं० ९ । पत्रस० ९१ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले०काल स० १७३२ । पूर्ण । वेष्टन स० २९ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—ब्र० वादिचन्द्र के पठनार्थ लिखा गया था ।

१४१७. प्रतिसं० १० । पत्रस० ८८ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० २९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक) ।

विशेष—चतुर्थ परिच्छेद तक है ।

१४१८. प्रति स० ११ । पत्रस० १३४ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल सख्या १८५७ माघ बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १०४ । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर पचायती दूणी (टोक) ।

विशेष—श्री सन्तोपराम जी स्यौजीराम जी ने पडित सीताराम से प्रतिलिपि कराई थी ।

१४१९. प्रतिसं० १२ । पत्र स० १०१ । आ० ११½ × ८ इञ्च । ले० काल स० १५९७ । पूर्ण । वे० स० १४ ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स्वस्ति सवत् १५९७ वर्षे द्वितीय चैतमासे शुक्लपक्षे द्वितीयादिने रविवासरे अद्येह घिनोई द्रुगे श्री चन्द्रप्रभचैत्यालये श्री मूलसघे श्रीसरस्वतीगच्छे श्रीवलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यन्वये भट्टारक श्री पद्मनदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री देवेन्द्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० विद्यानन्दिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री मल्लिभूषण देवास्तत्पट्टे भ० श्री लक्ष्मीचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री वीरचन्ददेवास्तत्पट्टे श्री भट्टारक श्री ज्ञानभूषणदेवाभ्यो नमोस्तु । मुमुक्षुणा **सुमतिकीर्तिना** कर्मक्षयार्थं श्रावकाचारो ग्रथोलिखित ग्रथ स० २८८० ।

१४२० प्रति स १३ । पत्र स० ११६ । आ० १०×४¾ इञ्च । ले०काल स० १७५२ वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना बू दी ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १७५२ वर्षे वैशाख बुदी ५ सोमवासरे श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कु दकु दाचार्यान्विये भट्टारक श्री रत्नचन्द तत्पट्टे भट्टारक श्री हर्षचन्द्र तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्र तत्पट्टे सकलतार्किकचक्रचूडामणी भट्टारक श्री अमरचन्द्र विजय राज्ये तदाम्नाये ब्रह्मचारी श्री नागराज तच्छिष्य रत्नजी विनयविनत पडितशिरोमणीना प्रश्नोत्तरनामा श्रावकाचारिय ग्रथ स्वहस्तेन लिखितमस्ति श्री मद्यानपत्तने श्रीमज्जीर्णप्रासादे आदिनाथचैत्यालये तत्रस्थित्वा लिखिताय ग्रथ ।

१४२१. प्रति स० १४ । पत्र स० ९१ । आ० १२×६ इञ्च । ले०काल स० १९१० । पूर्ण । वेष्टन स० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली (कोटा) ।

विशेष—प्रशस्ति सवत् १६५० समये वैशाख बुदी चउथी ४ लिखायित पुस्तक जयण पाडे श्रावक लिखत खेमकरण सुत दुर्गादास मुकाम हाजिपुर नगरे मध्य देवहरा सुमय ।

१४२२. प्रति स० १५ । पत्र स० १७० । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल स० १८११ । पूर्ण । वेष्टन स० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दीर बोरसल कोटा ।

विशेष—पडित श्री मार्गवदास के शिष्य नवनिधिराम नागरचाल देश मे महाराज सरदारसिह जी के शासनकाल मे नगरग्राम मे चतुर्विशति तीर्थंकर चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी ।

१४२३. प्रति सं० १६ । पत्र स० १३० । ले०काल १-३२ । आसाढ बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० २०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

१४२४. प्रतिस० १७ । पत्र स० १२७ । ले०काल स० × । पूर्ण । वेष्टन स० २१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

१४२५ प्रतिसं० १८। पत्र सख्या—११६ । लेखन काल X । पूर्ण । वेष्टन स० २१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१४२६. प्रति स. १६। पत्र स० १७८ । आ० ११×४½ इञ्च । ले०काल—X । पूर्ण । वे०स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१४२७ प्रति स २०। पत्र स० १४० । आ० ११×७ इञ्च । ले० काल स० १८३६ माह बुदी ६ । पूर्ण । वे स० २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१२२८.प्रति स० २१ पत्र स० ७६ । आ० १३½×५½ इञ्च । ले० काल स० १६६६ भाद्रपद । पूर्ण । वे० स० २४७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

१४२६. प्रति स० २२। पत्रस० ८ । आ० ११×४½ इञ्च । ले०काल स० १७०८ । पूर्ण । वेष्टनस० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

१४३०. प्रतिस० २३। पत्रस० १४८ । आ० १२ × ४½ इञ्च । ले०काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० २५६–५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सम्भवनाथ मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—दो प्रतियो का मिश्रण है । प्रति प्राचीन है ।

१४३१. प्रति स २४। पत्र स०२१४ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

१४३२. प्रति स० २५। पत्र स० ८३–१५७ । आ० १२ × ५¾ इञ्च । लेखन काल स० १६०३ पौष सुदी १० । अपूर्ण । वे० स० ७४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—अलवरगढ महादुर्ग मे सलेमशाह के राज्य मे प्रतिलिपि हुई थी । ग्रथ लिखवाने वाले की विस्तृत प्रशस्ति दी है ।

१४३३. प्रति स. २६। पत्र स० १–६७ । आ० ११½×६ इञ्च । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० ७४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१४३४. प्रति स० २७। पत्रस० ६७ । आ० ११×७½ इञ्च । ले०काल स० १८८२ मगसिर सुदी १२ । वेष्टनस०—१६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—किशनगढ निवासी महातमा राधाकृष्ण ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

१४३५ प्रति स० २८। पत्र स० ४२ । आ० १२×५½ । ले०काल स० १८१६ फालगुण बुदी ८ । वेप्टन स० १४४ । **प्राप्ति स्थान**—शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—सवाई जयपुर मे व्यास गुमानीराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१४३६. प्रति स० २६। पत्र स० ६० । आ० ११½ × ५ इञ्च । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान (बूदी) ।

१४३७ प्रति सं० ३०। पत्र स० ६७ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१४३८. प्रति स० ३१ । पत्र स० ६५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१४३९. प्रति सं० ३२ । पत्र स० ५६ । आ० ११×४½ इञ्च । ले० काल स० १६६४ पूर्ण । वेष्टन स० ११६-५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

प्रशस्ति--सवत् १६६४ वर्षे ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे १५ रवौ लिखित ब्र० श्री ठाकरसी तत् शीष्य आचार्य श्री अमरेचन्द्र कीर्ति · ।

१४४०. प्रश्नोत्तर श्रावकाचार भाषा वचनिका-× । पत्र स० ८९ । आ० १४×६½ इञ्च । भाषा—सस्कृत हिन्दी (गद्य) विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

१४४१. प्रश्नोत्तर श्रावकाचार भाषा वचनिका—× । पत्र स० ५४ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

१४४२. प्रायश्चित ग्रंथ × । पत्र स० ३२ । आ० ९×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत-हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १९०४ माघ बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन स० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

१४४३. प्रायश्चित ग्रंथ —× । पत्र स० ३० । आ० ९×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत-सस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १९ ।
प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष – झालरापाटन के सभवनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१४४४. प्रायश्चित शास्त्र—मुनि वीरसेन । पत्र स० १८ । आ० ११×५½ । भाषा—सस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १९०४ द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ला १५ । पूर्ण । वेष्टन स० १३० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विशेष—ग्रथ समाप्ति के बाद लिखा हुआ अश—

तर्कव्याकरणे जिनेन्द्रवचने प्रख्यातमान्यो गुरु ।
श्रीमल्लक्षणसेनपडितमति श्री गौरसेनोद्भव ॥
सिद्धान्ते जनि पदगुरु सुविदित श्री वीरसेनो मुनि ।
तैरेतद्रचित विशोध्यमखिल श्री वीरसेनामिधै ॥
सम्वत् १९०४ वर्षे ज्येष्ठ द्वितीय शुक्ल १५ सोमवारे ।

१४४३ प्रायश्चितशास्त्र—अकलंकदेव । पत्र स० ६ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आचार । र० काल × । ले० काल स० १४४८ फागुण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ११४१ । **प्राप्तिस्थान**—भट्टारकीय दि० जैन भण्डार अजमेर ।

१४४६ प्रति स० २ । पत्र स० ७ । आ० ९½×५½ इञ्च । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन स० १९८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ बूदी ।

१४४७. प्रति स० ३ । पत्र स० १६ । आ० ४×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

१४४८. प्रति स० ४ । पत्र स० ८ । आ० ६½×४½ इञ्च । ले०काल स० १८८५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना बूंदी ।

विशेष—स० १८८५ लिपि कृत प० रतिरामेरण । श्री चन्द्रप्रभाचैत्यालये ।

१४४९. प्रायश्चित समुच्चय वृत्ति—नन्दिगुरु । पत्र स० ५२ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आचारशास्त्र । ले०काल × । ले०काल स० १५६४ । पूर्ण । वेष्टन स० २०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

१४५०. प्रति स० २ । पत्र स० ५४ । आ० १०¾×५¾ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१४५१. बाईस अभक्ष्य वर्णन— × । पत्र स० ६३ । आ० १०½×७½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

१४५२ बाईस परीषह-भूधरदास । पत्र स० ३-१४ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

१४५३. बालप्रबोध त्रिशतिका-मोतीलाल पन्नालाल । पत्र स० ६५ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल स० १६७७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

१४५४. बुद्धिप्रकाश-टेकचद । पत्र स० ६४ । आ० १३¾×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—धर्म । र०काल स० १८२६ ज्येष्ठ बुदी ८ । ले० काल स० १६८० फाल्गुण सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १३४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

आदिभाग—

मन दुख हर कर शिवसुरा नरा सकल दुखदाय ।
हरा कर्म अष्टक अरि, ते सिध सदा सहाय ।।
त्रिभुवन तिलक त्रिलोक पति त्रिगुणात्मक फलदाय ।।
त्रिभुवन फिर तिरकाल तैं तीर तिहारे आप ।।२।।

अन्तिम भाग—

समत अष्टादश सत जोय, और छबीस मिलावो सोय ।
मास जेठ बुदि आठेसार, ग्रंथ समापत को दिनधार ।।२२।।
या ग्रंथ के अवधार ते विधि पूरव बुधि होय ।
छद ढाल जानै घनी समुझे बुधजन जोय ।।२३।।
तातैं मो निज हित चहो, तौ यह सीख सनाय ।
बुधि प्रकास सुध्याय के बाढै धर्म सुभाय ।।२४।।

पढो सुनो सीखो सकल, बुध प्रकास कहत ।
ता फल शिव अघ नासिकै टेक लहो शिवसत ।।२५।।

इति श्री बुधप्रकाश नाम ग्र थ सपूर्ण । पडित कृपाराम चौबे ने प्रतिलिपि की थी । विविध धर्म सम्बन्धी विषयो का सुन्दर वर्णन है ।

१४५५. प्रतिसं० २ । पत्र स० ११५ । आ० १२$\frac{3}{4}$×६$\frac{3}{4}$ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी ।

विशेष—प्रथम यह इन्दौर मे लिखा गया फिर माडल मे इसे पूरा किया गया ।

१४५६. बुद्धिवि -बख्तराम । पत्र स० १०१ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इन्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–धर्म । र० काल स० -२७ । ले० काल स० १८६६ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १२१–१०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—इसमे जयपुर नगर का ऐतिहासिक वर्णन भी है ।

१४५७. ब्रह्मबावनी-निहालचन्द । पत्र स० ४ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र० काल स० १८०१ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—मकसूदाबाद (बगाल) मे ग्र थ रचा गया था ।

१४५८. प्रश्नोत्तरोपासकाचार-बुलाकीदास । पत्रस० ११६ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—आचार शास्त्र । र० काल स० १७४७ वैशाख सुदी २ । ले० काल स० १८०३ माघ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० २० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन शास्त्र भडार अजमेर ।

१४५६ प्रतिस० २ । पत्रस० १६२ । ले० काल स० १८७६ भादो सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० २६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—प्रति दीवान जोधराज कासलीवाल ने लिखवाई थी ।

१४६०. प्रति स० ३ । पत्रस० १४२ । ले० काल स० १८१३ आसोज वदी १२ । पूर्ण । वेष्टनस० २६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—निहालचन्द जती द्वारा लिखी गयी थी ।

१४६१. प्रतिसं० ४ । पत्रस० १२४ । आ० ११×८ इन्च । ले० काल स० १८८८ कार्तिक वदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

१४६२. प्रति स० ५ । पत्र स० १२१ । लेखन काल स० १८३३ पौष वदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

१४६३. प्रति स० ६ । पत्र स० ११६ । ले० काल स० १८२७ । पूर्ण । वेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी बसवा ।

१४६४. प्रति स० ७ । पत्र स० ११८ । आ० १०×५$\frac{1}{2}$ इन्च । ले० काल स० १८५७ आपाढ सुदी १४ । पूर्ण । वे० स० ६३–६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, तेरहपथी दौसा ।

विशेष—चिमनराय नेरापथी ने इसकी प्रतिलिपि की तथा दौलतराम तेरापथी ने इसे दौसा के मन्दिर मे चढाया था।

१४६५. प्रति स० ८ । पत्र स० १२६ । ले०काल स० १७६१ कार्तिक सुदी ३ । पूर्ण। वेष्टन स० ४२-१५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, अलवर।

१४६६. प्रतिसं० ६ । पत्र स० १६१ । ले० काल स० १८८५ पौष बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन ० ४३-१५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर।

१४६७. प्रति स० १० । पत्र स० १४२ । आ० ६½ × ६¾ इञ्च । ले० काल स० १८०० चैत सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)।

१४६८. प्रति स० ११ । पत्र स० १-५७ । आ०-११½ × ५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)।

१४६९. प्रति स० १२ । पत्र स० १२१ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४६-६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)।

विशेष—मालपुरा मे शिवलाल ने लिपि की थी। स० १६३६ मे नदलाल गोधा की वहू ने टोडा के मन्दिर मे चढाया था।

१४७० प्रति स० १३ । पत्र स० १२७ । आ० १०½ × ३½ इञ्च । ले० काल स० १८५० । पूर्ण । वे० स० ३६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बून्दी)

१४७१. प्रति स० १४ । पत्र स० १०६ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३१६-११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

१४७२. प्रतिस० १५ । पत्रस० १५३ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १८२७ । पूर्ण । वेष्टनस० २००-८१ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

१४७३. प्रतिसं० १६ । पत्रस० ६६ । आ० ११ × ७ इञ्च । ले०काल स० १८२३ श्रावण सुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० ४०-२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज)

१४७४. प्रति स० १७ । पत्रस० १३५ । आ० ८½ × ६½ इञ्च । ले०काल स० १७५५ वैशाख सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

१४७५ प्रति स० १८ । पत्रस० १३६ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले० काल स० १७८४ सावण बुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० १०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना।

१४७६. प्रतिस० १६ । पत्रस० ६७ । ले० काल—स० १८७६ । पूर्ण । वेष्टनस० २४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—जीर्ण-पानी मे भीगे हुऐ पत्र हैं।

१४७७. प्रति स० २० । पत्रस० १४४ । आ० १२ × ४½ इञ्च । ले०काल—स० १७८२ पौष बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ४०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

१४७८ प्रतिसं० २१ । पत्रस० १२४ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले०काल स० १६१० । पूर्ण । वेष्टनस० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक)।

विशेष—प० गोविन्दराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१४७९. प्रतिसं० २२ । पत्रस० १४१ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १८४१ पौष बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनस० २९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटयो का नैणवा ।

विशेष—कोट्यो के देहरा मे व्रजवासी के पठनार्थ पडित,अखैराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१४८०. प्रति स० २३ । पत्रस० ८० । आ० ११½ × ६ इञ्च । ले०काल— स० १९१० । पूर्ण । वेष्टन स० १९ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोक) ।

१४८१. भगवतीआराधना—शिवार्य । पत्रस० ११ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२३ । **प्राप्तिस्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१४८२. प्रतिसं० २ । पत्रस० १२३ । आ० १२½×५¼ ,इञ्च । ले०काल स० १७३२ चैत्र सुदी ९ । वेष्टन म० ५७ । **प्राप्तिस्थान** दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—मालपुरा मे राजा रामसिह के शासन काल मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१४८३. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ६५ । र०काल × । ले०काल स० १५११ वैशाख सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० २४ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर डीग ।

प्रशस्ति—सवत् १५११ वर्षे वैशाख वदि ७ गुरौ पुष्यनक्षत्रे सकलराज–शिरोमुकुट-माणिक्य मरीचि प० अरीकृत चरणकमलपादपीठस्य श्री राणा कु भकर्ण सकल-साम्राज्य–धुरौ विभ्राणस्य समये श्री म डलगढ शुभस्थाने आदिनाथ चैत्यालये · ।

१४८४. भगवती आराधना टीका । पत्र स० २०८ । आ० १२¼×६¾ इञ्च । भाषा–प्राकृत–सस्कृत । विषय—आचार । र०काल × । ले०काल स० १९३२ म गसिर सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति टव्वा टीका सहित है ।

१४८५. भगवती आराधना टीका । पत्र स० २८१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–प्राकृत सस्कृत । विषय—आचार । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० १५४६ । **प्राप्ति-स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—प्रति टव्वा टीका सहित है । स० १९११ मे यह प्रति सेठ जुहारमल जी सोनी के घर से चढाई गई थी ।

१४८६. भगवती आराधना (विजयोदया टीका) अपराजित सूरि । पत्र सख्या ११८ से ५९४ । आ० ११ × ४¼ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आचार । र०काल × । लेखन काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४३८ । **प्राप्ति स्थान**— भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

१४८७. प्रतिस० २ । पत्रस० ५१४ । ले०काल स० १७९४ भादो वदी ९ । पूर्ण । वेष्टनस० २८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१४८८. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ३३३ । आ० १२½×६½ इञ्च । ले० काल स० १८६४ चैत्र बुदी ७ । वेष्टन स० ३० । **प्राप्ति स्थान**—शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—महात्मा शभुराम ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

१४८९. प्रति सं० ४ । पत्र स० २४८ । आ० ११×६ इन्च । ले०काल स० १७८६ कार्तिक बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

१४९०. भगवती आराधना टीका—नन्दिगणि । पत्र स० ४३८ । आ० १०½×७ इन्च । भाषा—प्राकृत-सस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन शास्त्र मन्दिर अजमेर ।

१४९१. प्रति स० २ । पत्र स० ३०८ । आ० ११×७ इन्च । ले०काल स० १८८८ । पूर्ण । वेष्टन स० ११३-७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—प० शिवजीराम की दूणी के चैत्यालय की प्रति है ।

१४९२. प्रति स० ३ । पत्र स० ६५२ । आ० ११ × ५½ इन्च । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

१४९३ भगवती आराधना भाषा—प. सदासुख कासलीवाल । पत्र स० १५८-४४७ । आ० १२½×७ इन्च । भाषा-राजस्थानी (ढूढारी) गद्य । विषय-आचार । र०काल स० १९०८ भादवा सुदी २ । ले०काल—स० १९६१ कार्तिक बुदी १० । अपूर्ण । वेष्टन स० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

१४९४. प्रति सं० २ । पत्र स० ५२४ । आ० १४×८½ इन्च । ले०काल स० १९६३ भादवा बुदी ऽऽ । पूर्ण । वेष्टन स० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—परसादीलाल गजाधरलाल पद्मावती पोरवाल ने सिकन्द्रा (आगरा) मे प्रतिलिपि करवाई थी ।

१४९५ प्रति स० ३ । पत्र स० ४४८ । आ० ११×८ इन्च । ले० काल स० १९१४ मङ्गसिर बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० २/७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

१४९६ प्रति स० ४ । पत्र स० २८३ से ६८१ । आ० ११×७¾ इन्च । ले० काल स० १९१० । आषाढ सुदी १४ । अपूर्ण । वेष्टन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

१४९७. प्रति सं० ५ । पत्र स० ६४६ । आ० १०½×४¾ इन्च । ले० काल स० १९१० मङ्गसिर बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन ओम्न मदिर बयाना ।

१४९८. प्रति स० ६ । पत्र स० ३०१-६७३ । ले०काल १९११ । पूर्ण । वेष्टन स० १५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—जयपुर मे लिखवाकर ग्रन्थ भरतपुर के मन्दिर मे भेंट किया गया ।

१४९९. प्रति स० ७ । पत्र स० ५०० । आ० १३×८ इन्च । ले०काल स १९२७ । वेष्टन स० ९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, अलवर ।

१५०० प्रति स० ८ । पत्र स० ६०० । आ० १४×७½ इन्च । ले० काल १९१० । पूर्ण । वेष्टन स० १३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर अलवर ।

१५०१ प्रतिसं० ९ । पत्र स० ५१६ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल स० १९१० । पूर्ण । वेष्टन स० १४/१० ।**प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक)

१५०२ प्रतिसं० १० । पत्र स० ४६० । आ० १३ × ६$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल स० १९१२ । पूर्ण । वेष्टन स० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोट्यो का नैणवा ।

१५०३. प्रति स० ११ । पत्र स० ४६ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्रीमहावीर बूदी ।

१५०४. प्रति स० १२ । पत्र स० ४२० । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ७ इञ्च । ले०काल स० १९३० मङ्गिसर बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—बयाना के पच श्रावको ने मिश्र गनेश महुआ वाले से प्रतिलिपि करायी थी ।

१५०५. प्रति स० १३ । पत्र स० ३०१ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

१५०६. प्रति स० १४ । पत्र स० ४६५ । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स ४६-२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

१५०७. प्रति सं० १५ । पत्र स० ४२४ । आ० १३ × ८ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

१५०८. प्रति स० १६ । पत्र स० २८२ । आ० ११ × ८ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर करौली ।

१५०९. भद्रबाहु सहिता—भद्रबाहु । पत्र ७० । आ० ८$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले० काल—वीर निर्वाण स० २४४९ । पूर्ण । वेष्टन ५६/३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज)

विशेष—फूलचन्द वडजात्या ने प्रतिलिपि की थी ।

१५१०. प्रति स० २ । पत्र स० २०-७२ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६०/८९ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राजस्थान)

१५११. भावदीपक भाषा— × । पत्र स० ५४ । आ० १३ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

१५१२. भाव प्रदीपिका— × । पत्रस० ५०-२१५ । आ० १२ × ५$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—धर्म । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण एव जीर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, तेरहपथी दौसा ।

१५१३. भावशतक—नागराज । पत्र स० ११ । आ० ११ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर । लिखित ब्रह्म डालू झाझरी ।

१५१४ भावसग्रह—वामदेव। पत्र स० ४२। आ० १४×५ इन्च। भाषा—सस्कृत। विषय—धर्म। र०काल—×। ले०काल—×। पूर्ण। वेप्टन स० ६१-३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

विशेष—भ० विजयकीर्त्ति की प्रति है।

१५१५ प्रतिस० २। पत्रस० २३। आ० १२×६½ इन्च। ले०काल स० १८६१ भादवा बुदी ३। पूर्ण। वेष्टनस० ४६। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपयी दौसा।

विशेष—पत्रो को चूहो ने खा रखा है। नोनदग्राम जी पुत्र हनुलाल जी ने दौसा के मन्दिर के वास्ते भोपत ब्राह्मण से सवाई माधोपुर मे प्रतिलिपि करवाई थी।

१५१६. प्रतिस० ३। पत्रस० ४१। आ० ११ × ४¾ इन्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ५३। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

१५१७. प्रतिस० ४। पत्रस० ४६। आ० ११×४½ इच। ले० काल स० १६०३ पौप सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन स० २६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी बूदी।

१५१८ प्रतिस० ५। पत्रस० ६०। आ० १३×५½ इन्च। ले० काल स० १६३३ श्रावण सुदी १। पूर्ण। वेष्टन स० १। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूदी।

१५१९ भावसग्रह—देवसेन। पत्रस० ३८। आ० १०½ × ४½ इन्च। भाषा—प्राकृत। विषय—धर्म। र० काल ×। ले०काल स० १५४१ पौप बुदी ८। वेष्टनस० १३०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन शास्त्र भण्डार मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—सु० गयासुद्दीन के राज्य मे कोटा दुर्ग मे श्री वर्द्धमान चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी।

१५२० प्रतिस० २। पत्रस० ३५। आ० ११½×५। ले० काल स० १६२२ आपाढ बुदी १४। पूर्ण। वेष्टनस० १२४। **प्राप्तिस्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—वडवाल नगर के आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी।

१५२१. प्रतिस० ३। पत्रस० ६१। आ० ११×५ इच। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी (कामा)।

विशेष—प्रति प्राचीन है लिपिकाल के पत्र पर दूसरा पत्र चिपका दिया गया है।

१५२२ भावसग्रह—श्रुतमुनि। पत्र स० ३८। आ० ११×५ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय—धर्म। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६५८। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर शास्त्र भण्डार अजमेर।

१५२३ भावसग्रह टीका—×। पत्र स० १६। आ० १०×४½ इन्च। भाषा—सस्कृत। विषय—धर्म। र०कारा ×। ले० काल—×। पूर्ण। वेष्टन स० २४०। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

१५२४ भावसग्रह टीका—×। पत्र स० १७। आ० १०×४½ इन्च। भाषा—सस्कृत। विषय—धर्म। र०काल—×। ले० काल स० १८३२ श्रावण शुक्ला ८। पूर्ण। वे० स०—२५६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—सवाई जयपुर मे प० केशरीसिह ने प्रतिलिपि की थी ।

१५२५. महादण्डक—विजयकीर्ति । पत्र स० ९६ । आ० ९$\frac{3}{4}$×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल—स० १८२९ । ले० काल स० १८२९ । पूर्ण । वेष्टन स० १७०८ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—

सोरठा—सवत् जानि प्रवीन अठारासै गुणतीस लखि ।
महादडक सुभ दीन, ज्येष्ठ चोथि गुरु पुम्य शुक्ल ।।
गढ अजमेर सुथान श्रावक सुख लीला करें
जैन धर्म वहु मान देव शास्त्र गुरु भक्ति मन ।

इति श्री महादडक कर्णानुयोग भट्टारक श्री विजयकीर्ति विरचिते लघु दण्डक वर्णन इकतालीसमा अधिकार ४१ । स० १८२९ का ।

१५२६. मिथ्यात्वखडन—बख्तराम ।पत्र स० ६३ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय-धर्म । र०काल स० १८२१ पोष सुदी ५ । ले० काल स० १८९२ भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १४०१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, शास्त्र भडार अजमेर ।

१५२७ प्रतिसं० २ । पत्र स० ९६ । आ० १२$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल× । पूर्ण । वेष्टन स० १०९० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

१५२८. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ११८ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल स० १८५३ आषाढ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनस० ३२ । **प्राप्तिस्थान**— भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—जयनगर मे मन्नालाल लुहाडिया ने प्रतिलिपि की थी ।

१५२९ प्रति स० ४ । पत्र स० २५ । आ० ११×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल स० १८९३ आषाढ शुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ८४ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मदिर कामा ।

१५३० मिथ्यामतखडन । पत्र स० ४ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र० काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ६८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१५३१ मिथ्वात्व निषेध । पत्र स० १६ । आ० १३$\frac{1}{2}$×८$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर ।

१५३२. मिथ्यात्व निषेध—× । पत्रस० ४४ । आ० १२$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । र० काल—× । ले० काल०—× । पूर्ण । वेष्टन स० ४ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

विशेष—तनसुख अजमेरा ने स्वय पठनार्थ प्रतिलिपि की थी । कुल लागत १।।।) ≡ ।

१५३३. मिथ्यात्व निषेध—× । पत्रस० २७ । आ० १०$\frac{1}{2}$×८$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल स० १८९८ फागुण सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

विशेष—पन्नालाल वैद अजमेरा ने लिखा ।

१५३४. मिथ्यात्व निषेध—× । पत्रस० ३१ । आ० १२$\frac{1}{8}$×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी(गद्य) । विषय—धर्म । र०काल—× । ले०काल स० १८६८ आषाढ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

विशेष—मोहनलाल ने गढ गोपाचल (ग्वालियर) मे प्रतिलिपि की थी । श्रीराम के पठनार्थ पुन बलदेव ने ग्वालियर मे पुस्तक लिखी थी ।

१५३५. मिथ्यात्व निषेध— × । पत्र स० ३४ । आ० १२$\frac{1}{8}$×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-धर्म । र०काल—× । ले०काल स० १६६६ भादवा बुदी ५ ।पूर्ण । वेष्टन स० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—चौबे छुट्टीलाल चदेरीवालो ने खुरई मे प्रतिलिपि की थी ।

१५३६. मिथ्यात्व निषेध—× । पत्र स० ३६ । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र०काल × । ले०काल १८६४ । पूर्ण । वेष्टन स० १७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१५३७. मिथ्यात्व निषेध । पत्र स० ३० । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा— हिन्दी (पद्य) । विषय-चर्चा । र०काल—× । ले०काल स० १८६६ आसोज सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

१५३८. मिथ्यात्व निषेध । पत्र स० ३२ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

१५३९. मुक्तिस्वयवर—वेणीचन्द । पत्रस०—३१८ । आ० १३$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{8}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य-पद्य) । विषय—धर्म । र०काल स० १६३४ कार्तिक बुदी ६ । ले० काल स १६७६ माघ बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स०—१३६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी सीकर ।

अन्तिम—लसकर मै आर भियो पूरण इन्दोर जान ।
कार्तिक वद नौमी दिना सवत उगनीससै चौतीस मान ।
जा दिन से आर भियौ पूरण के दिन मान ।
याही वरस मगसर वदी तेरस रवी प्रमान ।
स्वात नक्षत्र जिस दिवस मिथुन लग्न मझार ।।
जग माता परसाद ते पूरण भयौ जु सार ।। ३ ।।
इति श्री मुक्ति स्वयवर जी ग्र थ भाषा वचनिका सपूर्ण ।
वेणीचन्द मलूक चन्द का पुत्र फलटन का निवासी था ।

१५४० मुनिराज के छियालीस अन्तराय—भैय्या भगवतीदास । पत्रस० २ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—आचार शास्त्र । र०काल स० १७५० ज्येष्ठ सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१५४१. मूलाचार सूत्र—वट्टकेराचार्य । पत्रस० ३० । आ० ११$\frac{1}{8}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१५४२. मूलाचार वृत्ति—वसुनंदि । पत्र स० ६ से २४७ । आ० १२½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—आचार । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १२६० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१५४३. प्रतिसं० २ । पत्र स० २६० । आ० ११½×४¾ इञ्च । ले० काल स० १७३० । पूर्ण । वेष्टन स० १५५-७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

प्रशस्ति—स वत् १७३० वर्षे पौष बुदी ५ बुवे श्री मूलस घे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री सकलकीर्तिस्तदन्वये भट्टारक श्री पद्मनदि तत्पट्टे श्री देवेन्द्रकीर्त्तिगुरूपदेशात श्री उदयपुरे श्री शभवनाथचैत्यालये हु वडज्ञातीय वृहत्साख्य गढीआ भीमा भार्या वाई पुरी तयो पुत्र गदीआ, रण-छोड भार्या लक्ष्मी तयो सुत लालजी राघवजी एतै स्वज्ञानावरण कर्मक्षयार्थं श्री मूलाचार ग्र थ भृत्येन गृहीत्वा ब्रह्म श्री सघ जी तत्शिष्य ब्रह्म लाड्यकायदत ॥

१५४४. मूलाचार प्रदीप—सकलकीर्त्ति । पत्रस० १८२ । आ० ९×४¾ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १८७५ वैशाख सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—राजगढ मे आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१५४५. प्रति स० २ । पत्रस० १०५ । आ० १३×६ इञ्च । ले०काल स० १६६१ चैत्र बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बून्दी ।

१५४६. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १४० । आ० ११½×४¾ इञ्च । ले०काल १८२८ चैत्र बुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

विशेष—श्वेताम्बर मोतीराम ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

१४४७ मूलाचार भाषा—ऋषभदास निगोत्या । पत्रस० ३२३ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा—राजस्थानी (ढूढारी) गद्य । विषय—आचार शास्त्र । र० काल स० .१८८८ कार्तिक सुदी ७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस०२२-१२६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—वसुनन्दिकी सस्कृत टीका के आधार पर भाषा टीका की गई थी । इस ग्र थ की भाषा सर्व प्रथम नन्दलाल ने प्रारम्भ की थी तथा ६ अधिकार ५ गाथा तक भाषा टीका पूर्ण करने के पश्चात् इनका स्वर्गवास हो गया था फिर इसे ऋषभदास ने पूर्ण किया ।

१५४८. प्रतिसं० २ । पत्रस० ४६४ । आ० १४×८ इञ्च । ले०काल स० १९७४ कार्तिक बुदी ऽऽ । पूर्ण । वेष्टनस० १०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—वीर स० २४४४ भादवा सुदी ८ सदाराम गगाबक्स वासुदेवजी श्रावक फतेहपुर निवासी ने वडा मन्दिर मे चढाया था । प्रति २ वेष्टनो मे हैं ।

१५४९. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ३८८ । आ० १३×७½ इञ्च । ले०काल स० १९०२ । वेष्टनस० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष—इसमे मुनियो के चरित्र का वर्णन है । प सदासुख के पुत्र चिमनलाल ने फतेचन्द शर्मा चदेशी से १५) रु मे इस प्रति को खरीदी थी ।

१५५०. प्रतिस० ४ । पत्रस० ३६१ । ग्रा० १३ × ७ इन्च । ले० काल स० १६०२ । पूर्ण । वेष्टनस० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बू दी ।

१५५१. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ४४८ । ग्रा० १५ × ६ इन्च । ले० काल स० १६५५ । पूर्ण । वेष्टनस० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

१५५२. प्रतिस० ६ । पत्रस० ४०८ । ग्रा० ११½ × ६ इन्च । ले०काल स० १६०० । पूर्ण । वेष्टन स० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल टोक ।

विशेष—फागी मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१५५३. प्रतिस० ७ । पत्रस० ४६२ । ग्रा० ११ × ७ इन्च । ले०काल स० १६४१ । वेष्टन स० ८३/२ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर, इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—मागीलाल जिनदास ने गणेशलाल पाण्ड्या चाटमू वाले से प्रतिलिपि करवायी थी ।

१५५४. प्रति स० ८ । पत्रस० ३७२ । ले० काल १८६३ । पूर्ण । वेष्टन स० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—सगही ग्रमरचन्द दीवान की प्रेरणा से यह ग्र थ पूरा किया गया था । श्री कुन्दनलाल द्वारा इसकी जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१५५५. प्रतिस० ९ । पत्र स० ४७४ । ग्रा० १२½ × ७½ इन्च । ले० काल स० १६३२ वैसाख सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स०३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर वयाना ।

विशेष—गनेश महुआ वालो ने प्रतिलिपि की थी ।

१५५६. प्रतिस० १० । पत्रस० १-१५० । ग्रा० १०½ × ७½ इन्च । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर वयाना ।

१५५७. प्रतिस० ११ । पत्र स० ४०० । ग्रा०-१३½ × ७½ इन्च । ले० काल स० १६५१ फागुन बुदी १ । वेष्टन स० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, करौली ।

१५५८. प्रति स० १२ । पत्र स० ४३० । ग्रा० १२ × ८ इन्च । ले० काल सं० १६०४ । ग्रपूर्ण । वे०स० १०/६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर मादवा ।

१५५९. प्रतिसं० १३ । पत्र स० ३६२ । ग्रा० १०½ × ६½ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४५-२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियान डूगरपुर ।

प्रशस्ति—सवत् ग्रठारहसै ग्रच्यासी मास कातिग मे ।
स्वेत पक्ष सप्तमी सुतिथि शुक्रवार है ।
टीका देश भाषा मय प्रारम्भी सुनन्दलाल ।।
पूरन करी ऋषभदास निरधार है ।

इति श्री वट्टकेर स्वामी विरचित मूलाचार नाव प्राकृत ग्र थ की वसुनन्दि सिद्धात चक्रवर्त्ति विरचित ग्राचार वृत्ति नाम सस्कृत टीका के ग्रनुसार यह सक्षेपक भावार्थ मात्र देश भाषा मय वचानिका सपूर्ण ।

१५६०. मोक्षमार्ग प्रकाशक महा—प० टोडरमल । पत्रस० २८८ । आ० ८½×७½ इच । भाषा—राजस्थानी (ढू ढारी) गद्य । विषय—धर्म । र०काल स० १८२७ के आस पास । ले०काल स०—१६२४ । अपूर्ण । वेष्टन प० १६०७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—इसमे मोक्ष माग के स्वरूप का बहुत सुन्दर ढग से वर्णन किया गया है टोडरमल जी की अन्तिम कृति है जिसे वे पूर्ण करने के पहले ही शहीद हो गये थे ।

१५६१. प्रतिसं० २ । पत्रस० २४७ । आ० १०×७½ इच । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० १७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बू दी ।

१५६२. प्रति सं० ३ । पत्रस० २३७ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० ७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

१५६३. प्रतिसं० ४ । पत्रस० १५० से ३२७ । आ० १३½×७ इञ्च । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टन स० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष—श्री आदिनाथ महाराज के मन्दिर मे श्री जवाहरलाल जी कटारया ने अनतव्रत जी के उपलक्ष मे चढाया मिती भाद्रपद शुक्ला स० १६३६ ।

१५६४ प्रतिसं० ५ । पत्रस० २४६ । आ० ११½×६ इच । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टनस० १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल, टोक ।

विशेष—अन्तिम पत्र नही है ।

१५६५ प्रतिसं० ६ । पत्रस० १४६ । आ० १३×७ इच । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टनस० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

१५६६. प्रतिसं० ७ । पत्रस० २८६ । आ० १२½×६½ इञ्च । ले० काल० × । अपूर्ण । वेष्टनस० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

१५६७. प्रतिसं० ८ । पत्रस० ४४३ । आ० ६×६½ इञ्च । ले० काल स० १८८५ आषाढ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपन्थी मालपुरा (टोक) ।

विशेष—प० शिवप्रिय ने मालपुरा मे प्रतिलिपि की थी ।

१५६८. प्रतिस० ६ । पत्र स० २६७ । आ० ११×८ इञ्च । ले०काल स० १६२२ पौष सुदी १२ । अपूर्ण । वेष्टन स० १४३ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

१५६९. प्रतिस० १० । पत्रस० २४६ । आ० १३½×७ इञ्च । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टनस० १० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर अलवर ।

१५७०. प्रति स० ११ । पत्रस० २६७ । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टन स० ११/६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

१५७१. प्रति स० १२ । पत्रस० २१२ । ले०काल—× । पूर्ण । जीर्ण शीर्ण । वेष्टन स० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१५७२. प्रतिस० १३ । पत्रस० २०६ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—माधोसिंह ने प्रतिलिपि करवाई थी।

१५७३. प्रतिस० १४। पत्रस० ३०५। ले०काल ×। अपूर्ण (२ से १८४ तक पत्र नही है)। वेष्टनस० १३७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

१५७४. प्रतिस० १५। पत्रस० १०८। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

१५७५. प्रतिसं० १६। पत्रस० २३६। आ० १३×६½ इन्च। ले०काल स० १६३१ चैत बुदी २। पूर्ण। वेष्टन स० १। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना।

विशेष—हीरालालजी पोतेदार ने प्रतिलिपि करवायी थी। बयाना मे प्रतिलिपि हुई थी।

१५७६. प्रतिस० १७। पत्रस० २४०। आ० १२½×७½ इन्च। ले०काल स० १६००। पूर्ण। वेष्टन स० १२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना।

१५७७ प्रतिस० १८। पत्रस० २३०। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० १२ (क)। **प्राप्ति स्थान**—दिगम्बर जैन मन्दिर वैर (बयाना)।

१५७८. प्रतिसं० १९। पत्र स० १६–६७। ले०काल—×। अपूर्ण। वेष्टन स० ३२५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा।

१५७९. प्रतिसं० २०। पत्र स ३१०। आ० ११×६½ इञ्च। ले०काल स० १६२७। पूर्ण। वेष्टन स० ३०३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

१५८०. प्रति स० २१। पत्रस० २०२। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० १। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग।

१५८१. प्रतिस० २२। पत्रस० २०२। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० १। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग।

१५८२ प्रतिसं० २३। पत्रस० १४४–२९४। ले० काल स० १९१५ आषाढ सुदी १३। अपूर्ण। वेष्टनस० ५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग।

१५८३. प्रतिसं० २४। पत्रस० १४३। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

१५८४. प्रति स० २५। पत्रस० २७८। आ० १२½ × ५½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० २। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली।

१५८५. प्रति स० २६। पत्रस० १५७। आ० ११½ × ६½ इच। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० २४/२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली।

१५८६. प्रति स० २७। पत्रस० २४७। आ० १२ × ५ इच। ले०काल स० १८२६। पूर्ण। वेष्टनस० ७१/६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर भादवा (राज०)

विशेष—साह जीवणराम ने भादवा मे प्रतिलिपि करवाई। दो प्रतियो का मिश्रण है।

१५८७. प्रति स० २८। पत्रम० १८०। आ० १३½ × ६½ इच। ले०काल स० १९१८ श्रावण सुदी ५। अपूर्ण। वेष्टनस० ३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—हरिकिशन अग्रवाल ने स्वय पठनार्थ व्यास सिवलाल ममाई (वम्वई) नगर मे कराई। प्रति पूरी नकल नही हुई है।

१५८८. प्रति स० २६। पत्रस० २१२। आ० १३½ × ८½ इञ्च। ले०काल स० १६७७ आषाढ बुदी ८। पूर्ण। वेष्टनस० १०३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—वीर स० २४४६ भादवा सुदी ७ को जरावरमल मटरूमल ने वडा मन्दिर मे चढाया।

१५८९. प्रति स० ३०। पत्रस० २१०। आ० १३×६½ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बून्दी।

विशेष—२१० से आगे पत्र नही है।

१५९०. प्रति स० ३१। पत्र स० २६१। आ० ११ × ६½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

१५९१. प्रति स० ३२। पत्रस०२१०। आ० १०½×५½ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा।

१५९२. प्रति स० ३३। पत्रस० ४०३। आ० १३×७ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १५३/१३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

१५९३. मोक्षमार्ग बावनी—मोहनदास। पत्र स० ७। आ० ९½×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। र०काल ×। ले० काल स० १८३५ मङ्गसिर सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० २६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली, कोटा।

विशेष—ग्रथ रामपुरा (कोटा) मे लिखा गया था।

१५९४. मोक्ष स्वरूप — ×। पत्र स० २५। आ० १०×३¾ इञ्च। भाषा—हिन्दी (गद्य)। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १३६२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

१५९५ यत्याचार वृत्ति—वसुनंदि। पत्र स० १३-३८०। आ० ९½×४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—आचार शास्त्र। र०काल ×। ले० काल स० १५९५। अपूर्ण। वेष्टन स० २३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

१५९६. रत्नकरण्ड श्रावकाचार—आचार्य समन्तभद्र। पत्रस० १३। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—श्रावक धर्म का वर्णन। र०काल ×। ले० काल स० १५८३। पूर्ण। वेष्टन स० १०४२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—सस्कृत मे संक्षिप्त टीका सहित है।

१५९७. प्रति स० २। पत्र स० १३। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ११२३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

१५९८. प्रति सं० ३। पत्र स० ३०। र०काल ×। ले० काल स० १९५३। पूर्ण। वेष्टन स० ६९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर हण्डावालो का डीग।

१५९९. प्रति सं० ४। पत्र स० १८। आ० ८½×४½ इञ्च। ले० काल स० १७५६ ज्येष्ठ सुदी १। पूर्ण। वेष्टन स० १५३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

१६०० प्रति स० ५। पत्र स० १५। ले० काल स० १९५४। वेष्टन स० ४४८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

१६०१. प्रति स० ६। पत्र स० ४। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स ६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी भरतपुर।

१६०२ प्रति स० ७। पत्रस० ८। आ० १२×५ इञ्च। ले०काल स० १९२१। पूर्ण। वेष्टनस० १५९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर अलवर।

१६०३. प्रतिस० ८। पत्रस० ११। आ० १०½×५ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १८/१३। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक)

१६०४ प्रतिसं० ९। पत्र स २७। आ० १०½ × ४ इञ्च। ले०काल स० १९५४। वैशाख वुदि १४। पूर्ण। वेष्टन स० ६३। **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मन्दिर, आदिनाथ बूदी।

१६०५. प्रति स० १०। पत्र स० १५। आ० १२×५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण वे० स० ३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूँदी

१६०६. प्रति स० ११। पत्र स० १३। आ० १३ × ५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३४४/१६० **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

१६०७. प्रति स० १२। पत्र स० १८। आ० ९×४ इञ्च। ले० काल स० १६६६। पूर्ण। वेष्टन स० ४५०/१६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर स भवनाथ उदयपुर।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स वत् १६६६ वर्षे फागुण सुदी १५ श्री मूलस घे भट्टारक श्री वादिभूषण शिष्य ब्र वर्द्धमान पठनार्थं। ग्र थ का नाम उपासकाध्ययन भी है।

१६०८. प्रति स० १३। पत्र स० १६। आ० १२×५½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २२८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा।

१६०९ प्रतिस० १४। पत्र स० ३५। आ० ९½×५ इञ्च। ले० काल ×। वेष्टन स० ६५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—प्रति सस्कृत व्याख्या सहित है।

१६१०. रत्नकरण्डश्रावकाचार टीका-प्रभाचन्द। पत्र स० २५। आ० ११×५ इञ्च। ले० काल स० १४४६। पूर्ण। वेष्टन ×। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

१६११. प्रतिस० २। पत्रस० ५६। आ० १० × ४¾ इञ्च। ले०काल ×। वेष्टन स० ९९। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

१६१२ प्रतिस० ३। पत्रस० १८। आ० ११¾ × ५ इञ्च। भाषा— ×। ले०काल स० १५३३ वैसाख सुदी ३। वेष्टनस० १००। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

१६१३. प्रतिस० ४। पत्रस० ५६। आ० १० × ४ इच। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० २३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ बूदी।

विशेष—अन्तिम पत्र नही है। प्रति प्राचीन है।

१६१४. रत्नकरण्ड श्रावकाचार टीका: × । पत्रस० १-३० । आ० ११½×५½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । वेष्टनस० ७१६ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१६१५. रत्नकरण्ड श्रावकाचार टीका । पत्रस० ५६ । आ० ६ × ५¾ इन्च इन्च । भाषा—सस्कृत, हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १६५६ ज्येष्ठ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनस० ३३ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मदिर कोटयो का नैणवा ।

विशेष—मथुरा चौरासी मे लिखा गया था । प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

१६१६. रत्नकरण्ड श्रावकाचार भाषा-प० सदासुख कासलीवाल । पत्र स० २३१ । आ० १४×८ इच । भाषा—राजस्थानी (ढूढारी) गद्य । विषय—श्रावक धर्म वर्णन । र०काल स० १६२० चैत्र बुदी १४ । ले०काल स० १६४४ । पूर्ण । वेष्टनस० १५६८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

विशेष—आ० समन्तभद्र के रत्नकरण्ड श्रावकाचार की भाषा टीका है ।

१६१७. प्रतिसं० २ । पत्रस० ३५ । आ० ११ × ७½ इन्च । ले०काल × अपूर्ण । वेष्टन स० ६२६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—सदासुख कासलीवाल की लघु वचनिका है ।

१६१८. प्रति स० ३ । पत्रस० ४०१ । आ० १२½ × ७½ इन्च । ले०काल स० १६३५ जेठ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिह (टोंक) ।

विशेष—बघेरा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१६१९. प्रति स० ४ । पत्रस० १६६ । ले०काल स० १६२१ । पूर्ण । वेष्टन स० ५६७ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

१६२०, प्रतिसं० ५ । पत्र स० ३३२ । आ० ११×५½ इन्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

१६२१. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ५५७ । आ० १३×५ इन्च । ले० काल स० १६४३ । पूर्ण । वेष्टन स० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

१६२२. प्रतिसं० ७ । पत्र स० ५७३ । ले० काल स० १६२० । अपूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

१६२३ प्रतिस० ८ । पत्र स० ३६४ । आ० १०½ × ८ इन्च । ले०काल स० १६४५ । पूर्ण । वेष्टनस० १२५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर, उदयपुर ।

१६२४. प्रतिसं० ९ । पत्रस० २६१ । आ० १०½ × ८ इच । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

१६२५. प्रति स० १० । पत्र स० ३२६ । आ० १४¾ × ७¾ इच । ले०काल स० १६२४ भादवा बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर (शेखावाटी-सीकर) ।

विशेष—सदासुख की स्वय की लिखी हुई प्रति से प्रतिलिपि की गई थी। यह ग्र थ स्व० सेठ निहालचद की स्मृति मे उनके पुत्र ठाकुरदास ने फतेहपुर के बडे मदिर मे चढाया सवत् १६८४ आपाढ सुदी १५।

१६२६. प्रतिस० ११ । पत्र स० ४१६ । आ० १३ × ८ इन्च । ले०काल स० १६५५ माघ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—प्रति सुन्दर है। द्वारिकाप्रसाद ने प्रतिलिपि की थी।

१६२७. प्रति स० १२ । पत्र सख्या ५७० । ले० काल स० १६२१ । पूर्ण । वेष्टन स० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—प्रति दो वेष्टनो मे है। सदासुख कासलीवाल डेडाका ने गोरूलाल पाड्या चौधरी चाटसू वाले से प्रतिलिपि कराई थी।

१६२८. प्रतिसं० १३ । पत्र स० ४३२ । आ० १३×८ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११/४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज)

विशेष—स्वय ग्र थकार के हाथ की लिखी हुई प्रति प्रतीत होती है।

१६२६ प्रति स० १४ । पत्र स० ३६६ । आ० १२ × ७¾ इन्च । ले० काल स० १६३१ आषाढ वदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

१६३०. प्रति स० १५ । पत्र स० २२७ । आ० १२ × ७½ इन्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १३३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

१६३१. प्रति स० १६ । पत्र स० ४५२ । आ० १२ × ७½ इन्च । ले० काल- × पूर्ण । वेष्टन स० ३३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

१६३२. प्रति स० १७ । पत्र स० ३०८-४५० । आ० १२½ × ७ इन्च । ले० काल । स० १६३२ । अपूर्ण । वेष्टन स० १ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा।

विशेष—अखयगढ मे प्रतिलिपि की गई थी।

१६३३. प्रति स० १८ । । पत्रस० २१२ । आ० १२¾ × ७½ इन्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा।

विशेष—पत्र स० २१२ से आगे के पत्र नही हैं।

१६३४. प्रति स० १६ । पत्रस० ३४० । आ० १२ × ७ इन्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १४५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना।

१६३५. प्रति स० २० । पत्र स० ३६२ । आ० १३ × ७½ इन्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना।

विशेष—३६२ के आगे के पत्र नही हैं।

१६३६. प्रतिसं० २१ । पत्र स० ४८० । ले० काल स० १६२१ चैत बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

१६३७. प्रति सं० २२ । पत्र स० ३२६ । आ० १५ × ६ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर।

१६३८. प्रतिसं० २३ । पत्र स० २५८ । आ० १२½ × ७½ इञ्च । ले० काल स० १६७५ । पूर्ण । वेष्टन स० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

१६३६. प्रति सं० २४ । पत्र स० २६६ । आ० १३×८ इञ्च । ले० काल स० १६३१ । पूर्ण । वेष्टन स० १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

१६४०. प्रति स० २५ । पत्र स० ४०६ । आ० ११ × ८ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मदिर अलवर ।

१६४१. प्रति सं० २६ । पत्र स० ३६० । आ० १३ × ८ इच । ले० काल स० १६२४ । अपूर्ण । वेष्टन स० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक) ।

१६४२. प्रति सं० २७ । पत्र स० ४१४ । आ० १२ × ८ इंच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—पत्र स० ४१४ से आगे नही है ।

१६४३. प्रतिसं० २८ । पत्र स० ३६६ से ५७० । आ० ११½×७½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

१६४४. प्रति स० २६ । पत्रस० ३८७ । आ० १२×७ इच । ले०काल—स० १६६३ । पूर्ण । वेष्टनस० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बघेरवालो का, आवा (उणियारा) ।

विशेष—चदेरी मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१६४५. प्रति स० ३० । पत्रस० २०० । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा

१६४६. प्रतिसं० ३१ । पत्रस० ५०६ । आ० ११ × ७½ इच । ले०काल—स० १६२४ । पूर्ण । वेष्टनस० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, श्री महावीर स्वामी बूदी ।

१६४७. प्रतिसं० ३२ । पत्रस० ४६६ । आकार ११ × ७½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, श्री महावीर स्वामी बूदी ।

१६४८. प्रति सं० ३३ । पत्रस० ३५६ । आ० १४×८ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १५० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूदी ।

१६४६. प्रति सं० ३४ । पत्रस० ४१३ । आ० १२½ × ६½ इञ्च । ले०काल स० १६५५ । पूर्ण । वेष्टनस०-२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

१६५०. प्रति स० ३५ । पत्र स० ३२२ । आ० ६४ × ७½ इञ्च । ले० काल स० १६६१ चैत्र वदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० २४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

विशेष—चदेरी मे चोवे दामोदर ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५१. रत्नकरण्ड श्रावकाचार भाषा वचनिका—पन्नालाल दूनीवाला । पत्रस० ३४ । आ० १०¾×६¾ इञ्च । भाषा—राजस्थानी (ढूढारी) गद्य । विषय—श्रावक धर्म का वर्णन । र०काल स० १६३१ पौष बुदी ७ । ले० काल स० १६५६ । पूर्ण । वे० स० २० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक)

विशेष—प० फतेहलाल ने इस टीका को शुद्ध किया और प० रामनाथ शर्मा ने इसकी प्रतिलिपि की थी।

१६५२. रत्नकोश सूत्र व्याख्या— × । पत्र स० ७ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

१६५३ रत्नत्रय वर्णन— × । पत्र स० ३७ । आ० १२½×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष—पत्र २२ से आगे दश लक्षण धर्म वर्णन है पर वह अपूर्ण है ।

१६५४. लाटीसहिता—पाडे राजमल्ल । पत्र स० ७७ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल स० १६४१ । ले० काल स०१८४८ । पूर्ण । वेष्टन स० १७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१६५५. प्रति स० २ । पत्र स० ६४ । आ० ११×५½ इञ्च । ले० काल स० १७६० । पूर्ण । वेष्टन स० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर कामा ।

विशेष—पत्र भीगे हुए है ।

१६५६. प्रति स० ३ । पत्र स० ७८ । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल स० १८८६ फागुण सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूणी ।

विशेष—दूणी नगर मे पार्श्वनाथ के मन्दिर मे पडित जी श्री १०८ श्री सीतारामजी के शिष्य शिवजी के पठनार्थ लिखी गयी थी ।

१६५७. लोकामत निराकरण रास—सुमतिकीर्त्ति । पत्र स० १३ । आ० १४¾×४¾ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल स० १६२७ चैत्र बुदी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २८१ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

१६५८. वसुनन्दि श्रावकाचार—आ० वसुनन्दि । पत्र स० १७ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले० काल स० १८१० माघ बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ३० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

वशेष—इसका दूसरा नाम उपासकाध्ययन भी है ।

१६५९. प्रतिसं० २ । पत्र स० ११ । आ० ११½×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३२० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१६६० प्रति स० ३ । पत्रस० १६ । आ० ११×६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अजमेर ।

१६६१ प्रति स० ४ । पत्र स० ५५ । आ० ८¾×६ इञ्च ले०काल स० १८६४ पौष बुदी ६ । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—महाराजा जगतसिह के शासनकाल मे साह श्री जीवणराम ने प्रागदास मोट्टाकावासी से सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि करवाई थी ।

१६६२. प्रतिसं० ५ । पत्रस० २० । आ० ६$\frac{3}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१६६३ प्रतिसं० ६ । पत्र स० ५३ । आ० १२×८ इञ्च । ले० काल स० १६८४ । पूर्ण । वेष्टन स० १७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—प्रति टव्वा टीका सहित है कीमत ८।) है ।

१६६४. वसुनन्दि श्रावकाचार भाषा—ऋषभदास । पत्र स० ३४७ । आ० ६ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । र०काल स० १६०७ । ले०काल स० १६२४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—अन्तिम ।

गर्ग देश झल्लरि प्रथम पत्तन पूर सु अनूप ।
झालावार सुहावनी मदनसिंह तसु भूप ।।
पृथ्वीराज सुत तास कै सौमितु पद कू पाय ।
राजकरै पालै प्रजा सवही कू सुखदाय ।।
तिसि पत्तन मे शाति जिन राजै सवकू शाति ।
आधि व्याधि हरै सदा कर्म क्षोभ को भ्राति ।।
ताकी **थुति तिय** भवन की सोमा कही न जाय ।
देखत ही अघ हरत है सुर सिव मग दरसाय ।।
पार्श्वनाथ को भुवन इक ऋषभदेव कौ और ।
नाना सोभा सहित पुनि राजत है इसि ठौर ।।
भव्य जीव वदै सदा पूजै भाव लगाय ।
नर नारी गावें सदा श्री जिन गुरण हरषाय ।।
तिसी पुरी मे ज्ञाति के लोग वसै जु पुनीत ।
तामैं **हूंबड** जाति के वगवर देस जनीत ।।
श्री नेमिश्वर वस सुत वाल सोम आख्यात ।
सो चउ भ्रात नियुक्त है ताके सुत विख्यात ।।
नाभिजदास वखानिये ताकै सुत दो जानि ।
तामैं श्रेष्ठ वखानिये पडित सुनौ वखानि ।।
वासु पूज्य जिन जनम की पुरी राज सुत जानि ।
• फुनि अरुरण मुत लघु भ्राता जु कहानि ।।
तामैं गुरू भ्राता सही मूढ एक तुम जान ।
सव जैनी मे वसत है दो सुत सुत अभिराम ।।
ताकू श्री वसुनदि कृत नाम श्रावगाचार ।
गाथा टीका वध कू पढि वै कू सुख कार ।।
भट्टारक आमेर कै देवेन्द्र कीर्त्ति है नाम ।

जयपुर राजै गुणनिधि देत भए अभिराम ।।
ताकू लखि मन भयौ विचार ।
होय वचनिका तो सुख कार ।।
सब ही वाचैं सुनौ विचारैं ।
सुगम जानि नही आलस धारैं ।।
सो उपाय मन लहि करि लिखी ।
बालबोध टीका चित सुखी ।।
यामैं बुद्धी मद बसाय ।
फुनि प्रमाद मुरखता लाय ।।
ऋषि पूरण नव एक पुनि माघ पूनि शुभ श्वेत ।
जथा प्रथा प्रथम कुजवार, मम मगल होय निकेत ।।

१६६५. वसुनदि श्रावकाचार वचनिका— × । पत्र स० ४६६ । आ० १२½ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । र०काल स० १९०७ । ले० काल स० १९२६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४७–२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

ऋषि पूरण नव एक पुनि माघ पूनि शुभ खेत ।
जथा प्रथा प्रथम कुजवार मम मगल होय निकेत ।।

१६६६ वसुनन्दि श्रावकाचार भाषा-दौलतराम । पत्र स० ५५ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–आचार शास्त्र । र०काल स १८१८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—मूल कर्त्ता आ० वसुनन्दि है । प्रति टव्वा टीका सहित है ।

१६६७. वसुनन्दि श्रावकाचार भाषा-पन्नालाल । पत्र स० १२७ । भाषा—हिन्दी । विषय—श्रावक धर्म । र०काल स० १९३० कार्तिक सुदी ७ । ले० काल स० १९३० । पूर्ण । वेष्टन स० १५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१६६८. वसुनन्दि श्रावकाचार भाषा—पत्र स० ३७८ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५८१ । **प्राप्ति-स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१६६९. वसुनन्दि श्रावकाचार भाषा × । पत्र स० ३५१ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बून्दी ।

१६७०. वर्द्धमानसमवशरण वर्णन-ब्र० गुलाल । पत्र स० १२ । आ० ६×३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल स० १६२८ माघ बुदी १० । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर (बयाना) ।

विशेष—आदि अत भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—

जिनराज अनन्त सुखनिधान मगल सिव सत ।
जिनवाणी सुमरण मति वढै ।
ज्यो गुणठाण खिपक विण चढै ।।
गुरू निर्ग्रंथ चरण चित लाव ।
देव शास्त्र गुरू मगल भाव ।।
इनही सुमरि वणौ सुखकार ।
समोसरण जै जै विस्तार ।।

अन्तिम पाठ—

सोलहसै अठवीस मे माघ दसै सुदी पेख ।
गुलाल ब्रह्म मनि नीत इती जयौ नद को सीख ।।
कुरु देश हथनापुरी राजा विक्रम साह ।
गुलाल ब्रह्म जिन धर्म जय उपमा दीजे काह ।

१६७१. विचारषट्त्रिशकावचूर्णि—पत्र स० १३ । भाषा—स स्कृत । विषय-धर्म । र०काल स०१५७८ । ले०काल स० १८८४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१६७२. विचार सूखड़ी— पत्रस० ४ । भाषा—स स्कृत । विषय-धर्म । र०काल × । ले०काल स० १६७२ । पूर्ण । वेप्टन स० ७३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१६७३. विद्वज्जन बोधक-सघी पन्नालाल दूनीवाला । पत्रस० ६३७ । आ० १३½ × ८½ इन्च । भाषा-राजस्थानी (ढू ढारी) गद्य । विपय-धर्म । र०काल स० १९३९ माघ सुदी ५ । ले०काल स० १९६६ फागुन सुदी ८ । पूर्ण । वेप्टन स० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—

लिखाई,	सुघाई	स्याही	कागज	वस्ता पट्टा	डाकखर्च
४१।।।-।।।	२०।।।=।।	१।-	६।।=	१।।	२)

टोटल—४७ ≡ ।

१६७४. प्रतिसं० २ । पत्र स० ५४८ । आ० १३¾×८½ इन्च । ले०काल स० १९९२ श्रावण बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ५०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—रिपभचन्द विन्दायक्याने प्रतिलिपि की थी ।

१६७५ विवेक विलास-जिनदत्तसूरि । पत्रस० २३ । आ० ९¾ × ५½ इन्च । **भाषा**—स स्कृत-हिन्दी । विषय-धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

विशेष—स स्कृत पद्यो के साथ हिन्दी अर्थ भी दिया है ।

१६७६. विंशस्थान × । पत्रस० ३६ । भाषा—हिन्दी । विपय-धर्म । र०काल × । ले०काल स० १८७६ । पूर्ण । वेष्टनस० ६३६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

१६७७ व्रतनाम— × । पत्रस० १२ । आ० १० × ४३/४ इन्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय-धर्मं । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल टोक ।

१६७८ व्रतनिर्णय— × । पत्रस० ५२ । आ० ११ × ८ इन्च । भाषा — सस्कृत । विषय-धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १५४६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

१६७९ व्रतसमुच्चय— × । पत्रस० ३१ । आ० ११ × ५१/४ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र०काल × । ले०काल स० १८३३ सावन बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनस० ३०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

१६८०. व्रतसार— × । पत्रस० ७ । आ० ६१/२ × ४१/४ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५४५ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१६८१. व्रतोद्योतन श्रावकाचार-अभ्रदेव । पत्रस० ५५ । आ० ६ × ३ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

१६८२ प्रतिसं० २ । पत्रस० २६ । आ० १०१/२ × ४१/२ इन्च । र०काल × । ले० काल स० १५६३ पूर्ण । वेष्टनस० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—अर्थ सवत्सरेस्मिन् सवत् १५६३ वर्षे पौष सुदी २ आदित्यवासरे श्री मूलसघे सरस्वती गच्छे श्री कुदकुन्दाचार्यान्वये ब्र मानिक लिखापित आतम पठनार्थं परोपकाराय ।

सवत् १६५७ वर्षे ब्रह्म श्री देवजी पठनार्थं इद पुस्तक ।

१६८३. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ३३ । आ० ११ × ५१/२ इन्च । ले०काल स० १८८२ श्रावण बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० ५४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

१६८४. व्रतो का ब्यौरा— × । पत्रस० ५ । आ० १११/२ × ४ इन्च । भाषा-हिन्दी । विपय-धर्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५८७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१६८५. व्रतो का ब्योरा— × । पत्रस० १६ । आ० ११×४१/२ इन्च । भाषा-हिन्दी । विपय—धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १५८२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१६८६ व्रत ब्यौरा वर्णन । पत्रस० ७ । आ० १११/२ × ५ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आचार शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११५६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१६८७. शलाका पुरुष नाम निर्णय-भरतदास। पत्रस० ६१ । आ० ६×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। र०काल स० १७८८ वैशाख सुदी १५। ले० काल स० १८८८ सावरण सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन स० ३७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना बूदी।

विशेष—कविनाम—

गोसुत केरो नाम तास मे दास जु ठानो।
तासुत मोहि जान नाम या विधि मन आनो॥
मधुकर को अरी जोय, राग फुनि तामे ह्वीजे।
यह कर्त्ता को नाम अर्थ पडित जन कीजे॥

झालरापाटन के शातिनाथ चैत्यालय मे ग्रथ रचना हुई थी। कवि झालरापाटन का निवासी था। र०काल सम्वन्धी दोहा निम्न प्रकार है—

शुभ एक गिरण हीरण शील उत्तर भेदन मे।
मदवसु तापै धरया भेद जो होवे इनमे॥

१६८८. शास्त्रसार समुच्चय— ×। पत्रस० ५। आ० १० × ५ इञ्च। भाषा–सस्कृत विषय—धर्म। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर दूनी (टोक)

प्रारम्भ—श्रीमन्नआमरस्तोत्र प्राप्तानत चतुष्टय।
नत्वा जिनाधिप वक्ष्ये शास्त्रसार समुच्चय॥१॥
अथ त्रिविधोकाल॥१॥ द्विविधो वा॥२॥
षड्विधोवा ३॥ दशविधा कल्पद्रुमा।

अन्तिम—
चतुराध्यायसपन्ने शास्त्रसार समुच्चये।
पठते अयोपवासस्य फल स्यान्मुनिभाषते॥
श्रीमाघनन्दियोगीन्द्र सिद्धात बोधिचन्द्रमा।
अभिकर्तुं विचितार्थं शास्त्रसारसमुच्चये॥२५
मुमुक्षु सुमतिकीर्त्ति पठनार्थं।

१६८९. शिव विधान टीका— ×। पत्रस० ६। आ० ६ × ४ इञ्च। भाषा-हिन्दी, सस्कृत। विषय-धर्म। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १४५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी)।

१६९० शीलोपदेशमाला—सोमतिलक। पत्रस० १३२। आ० ११×४ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय-धर्म। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १४८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

विशेष—प्रति टीका सहित है। एव प्राचीन है।

१६९१. श्रावकक्रिया ×। पत्रस० २७। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—आचार शास्त्र। र०काल ×। ले० काल स० १८८५ माह सुदी ६। पूर्ण। वेष्टनस० १४७०। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—इति कल्पनाकरनग्र थे श्रावक नित्य कर्म पट् तत्र पप्टमदान पप्टोव्याय ।

१६६२ श्रावक क्रिया × । पत्रस० १६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

१६६३ श्रावक क्रिया × । पत्रस० १६ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६/७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा)

१६६४. श्रावक गुण वर्णन × । पत्रस० ३ । भाषा—प्राकृत । विषय-आचार शास्त्र । र० काल× । ले० काल स० × । पूर्ण । वेष्टनस० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

१६६५. श्रावक धर्म प्ररूपणा— × । पत्रस० ११ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

१६६६. श्राचकाचार । पत्र स १५ । आ० १०¾×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय-आचार शास्त्र । र० काल स० १५१४ । ले० काल × । वे० स० ८१ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—मडल दुर्ग मे रचना की गई । ग्रन्यकर्त्ता की प्रशस्ति अधूरी है ।

१६६७. श्रावकाचार— × । पत्र स० ५ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वे० स० ३००/१५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सभवनाथ उदयपुर ।

१६६८. श्रावकाचार—उमास्वामी । पत्र स० १६ । आ० ८¾×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १६६६ भादवा सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ६५७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

१६६९ श्रावकाचार—अमितिगति । पत्र स० ७५ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन स० १४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१७००. प्रति स० २ । पत्रस० ७४ । आ० १०¾ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १६७० फाल्गुन सुदी ८ । वेष्टनस० १४३ । **प्राप्ति स्थान**–उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—जहागीर नूरमोहम्मद के राज्य मे—हिसार नगर मे प्रतिलिपि करवाकर श्रीमती हेमरत्न ने त्रिभुवनकीर्त्ति को भेंट की थी ।

१७०१. श्रावकाचार × । पत्रस० ३ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय-आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १८१७ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० १८८–१२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

१७०२. श्रावकाचार रास—पदमा । पत्रस० ११६ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रथम पत्र नही है ।

प्रारम्भ :—

समोसरण माहे जव गया
तिण आनन्द भवियण मन भया ।
मुखिकन जिय जयकार,
भेट्या जिनवर त्रिभुवन तार ।।
तीन प्रदक्षरणा भावै दीघ,
अष्टप्रकारि पूजा कीघ ।।
जल गध अक्षित पुष्प नैवेद ।
दीप धूप फल अरघ वसु भेद ।।

अन्तिम :—

श्रावकाचार तणु श्रावकाचार तण,
रास कीउ मि सणी परि ।
भविजन मनरजन भजन कर्म कठोर,
निर्भर पञ्च परमेष्टी मन धरि ।
समरि सदा गुरु निर्ग्रंथ मनोहर
अनुदिन जे धर्म पालमि
टाली सर्व जतीचार जिन सेवक ।
पदमो कहि ते पामसि भवपार ।।२५

१७०३. श्रावकाराधन—समयसुन्दर । पत्रस० ३ । भाषा—सस्कृत । विषय—श्रावक धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

१७०४. प्रतिसं० २ । पत्रस० ४ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ६६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१७०५. षट्कर्मोपदेशरत्नमाला—अमरकीर्ति । पत्रस० ८१ । आ० १२½×६ इञ्च । भाषा-अपभ्र श । विषय-आचार शास्त्र । र०काल स० १२४७ । ले० काल स० १६०० चैत्र बुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० १६०२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१७०६. प्रतिसं० २ । पत्र स० ८-८३ । आ० १२×४ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६६० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि०जैन मन्दिर अजमेर ।

१७०७. प्रति स० ३ । पत्रस० १०४ । आ० १० × ५ इञ्च । ले० काल स० १६५२ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

१७०८. षट्कर्मोपदेशरत्नमाला—सकल भूषण । पत्र स० १३६ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । र० काल स० १६२७ । ले० काल स० १८५७ पौष बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ३२० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१७०६. प्रति स० २ । पत्र स० १०४ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

विशेष—१०४ से आगे पत्र नही है ।

१७१०. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १६५ । ले०काल स० १८२० चैत बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—विराट नगर मे प्रतिलिपि की गई ।

१७११. प्रतिसं० ४ । पत्रस० १२४ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टनस० ३७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१७१२. प्रति स० ५ । पत्र स० ११४ । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

१७१३. षट्कर्मोपदेशरत्नमाला भाषा—पाण्डे लालचन्द । पत्रस० १४६ । आ० ११×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—आचार । र०काल स० १८१८ माह सुदी ५ । ले०काल स० १८८७ कार्तिक बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १२२६ । **प्राप्तिस्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—अजमेर पट्टे श्री १०८ श्री रत्नभूषण जी तत् शिष्य पण्डित पन्नालाल तत् शिष्य प० चतुर्भु ज इद पुस्तक लिखापित ।

ब्राह्मण श्रीमाली सालगराम वासी किशनगढ ने अजयगढ (अजमेर) मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी ।

१७१४. प्रति सं० २ । पत्रस० १७१ । आ० ६½ × ६½ इञ्च । ले० काल स० १६४७ । पूर्ण । वेष्टनस० १६१६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीयदि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

१७१५. प्रति स० ३ । पत्रस० १४२ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल स० १६११ मगसिर बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—हरकिशन भगवानदास ने दिल्ली से मगाया ।

१७१६ प्रति स० ४ । पत्रस०—१६४ । आ० १०½×५ इच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७१-२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

१७१७. प्रति स०—५ । पत्रस० १३५ । आ० १०½×७½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

१७१८. प्रति स०—६ । पत्रस० ८५ । आ० १३×६½ इञ्च । ले०काल स० १६०८ । पूर्ण । वेष्टन स० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अग्रवाल नैणवा ।

१७१६. प्रतिस० ७ । पत्रस० १८४ । लेखन काल स० १८६३ । पूर्ण । वेष्टनस० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी बसवा ।

१७२०. प्रति स० ८ । पत्र स० १२४ । आ० १२×६½ इच । ले०काल स० १८८२ मगसिर बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

१७२१. प्रतिस० ६ । पत्रस० १५३ । आ० १२×६ इच । ले०काल स० १८१६ आषाढ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पचायती बयाना ।

विशेष—श्री मिट्ठूराम के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गयी थी ।

१७२२. प्रतिसं० १० । पत्र स० १०६ । आ० १२½×७½ इच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १५३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

१७२३. प्रति स० ११ । पत्रस० १३७ । ले० काल स० १८१६ वैसाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ५६ । **प्राति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पचायती भरतपुर ।

विशेष—प्रनि प्राचीन है तथा प्रशस्ति विस्तृत है ।

१७२४. प्रति सं० १२ । पत्र स० १६१ । आ० ११½×७ इन्च । ले० कालस० १८६४ भादवा बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष – राजमहल मे वैद्यराज सन्तोपराम के पुत्र अमीचन्द, अभयचन्द्र सौगानी ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१७२५. प्रति स० १३ । पत्र स० १६६ । आ० ६½ × ६¾ इन्च । ले० काल स० १८५६ आषाढ बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष—प० देवीचन्द ने व्यास सहजराम से तक्षकपुर मे प्रतिलिपि कराई ।

१७२६. प्रतिसं० १४ । पत्र स० १६१ । आ० १०¾ × ५½ इन्च । ले० काल स० १८२७ जेठ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पञ्चायती करौली ।

विशेष—टेकचद विनायक्या ने करौली मे प्रतिलिपि कराई थी ।

१७२७. प्रतिस० १५ । पत्र स० १५६ । आ० ११½ × ५½ इन्च । ले० काल स० १८१६ सावन सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५८/३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सौगाणी करौली ।

१७२८. प्रति स० १६ । पत्रस० १८३ । आ० १०½ × ५ इन्च । **ले०काल × । पूर्ण** । वेष्टन स० ४७-४२ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर सौगाणी करौली ।

१७२९. प्रतिसं० १७ । पत्रस० ८७ । आ० ११ × ५½ इन्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक)

१७३०. प्रति स० १८ । पत्रस० १२२ । आ० १२ × ७½ इन्च । ले०काल—स० १९२६ । पूर्ण । वेष्टन स० १२७ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूदी ।

१७३१. प्रति स० १९ । पत्रस० ६१ । आ० १२½ × ६¾ इन्च । ले०काल स० १९५४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४४, २६ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—सवत १९५४ भाद्रव शुक्ल पक्ष रविवासरे लिखित झगडावत कस्तूरचद जी चोखचद्र ।

१७३२ प्रतिसं० २० । पत्र स० १०५ । आ० १२ × ५½ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

१७३३. षडशीतिक शास्त्र—×। पत्रस० १२। आ० ६½×४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। विषय-धर्म। र०काल ×। ले० काल स० १७१५ मगसिर सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० ६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—सुपार्श्वगणि के शिष्य तिलक गणि ने भडस्दा नगर मे प्रतिलिपि की थी।

१७३४. षडावश्यक— ×। पत्र सख्या ३०। आ० १० × ४ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-धर्म एव आचार। र०काल— ×। लेखन काल— ×। पूर्ण। वेष्टन स० २४। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

विशेष—प्रति हिन्दी टव्वा टीका सहित है

१७३५. षडावश्यक बालावबोध टीका— ×। पत्र स० २८। आ० १० × ३ इञ्च। भाषा-प्राकृत हिन्दी। विषय-आचार शास्त्र। र०काल ×। ले० काल स० १६१७ भादवा सुदी २। पूर्ण। वेष्टन स०६८-८७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा।

विशेष—टव्वा टीका है। अहमदाबाद मे प्रतिलिपि की गई थी।

पत्र १—नमो अरिहताण-अरिहत नइ नमहारु नमस्कार। नमो सिद्धाण-सिद्ध नइ नमस्कार। नमो आयरियाण आचार्य नइ नमस्कार। नमो उवज्झायाण-उपाध्याय नइ नमस्कार। नमो लोए सव्व साहूण लोक कहिता मनुष्य लोक तेह माहि सर्व साधु नइ नमस्कार।

पत्र ३—सिद्धाण बुद्धाण-सिद्ध कहीइ आठ तउ छय करी सीधा छइ। बुद्धाण कहीइ ज्ञात तत्व छइ। पार गयाण-ससार तइ पारि गया छइ। परपार गयाण चऊद गुणठाणा नी परि पराइ पुहता छइ। लो अग्ग भुवग्ग पीढा-लोकाग्र कहीइ सिधि तहा उवगयाण कहीइ पुहता छइ। नमोसयासव्व सिद्धाण सदैव सकलता सिद्धि नइ नमस्कार हउ।

१७३६. षडावश्यक बालावबोध— ×। पत्र स० १८। आ० १२×४ इञ्च। भाषा—प्राकृत-सस्कृत। विषय—आचार शास्त्र। र०काल—×। ले० काल स० १५७६। पूर्ण। वेष्टन स० ३२३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—मूल प्राकृत के नीचे सस्कृत मे टीका है।

प्रशस्ति—स वत् १५७६ वर्षे आश्वन शुदि १३ गुरौ।

१७३७. षडावश्यक बालावबोध-हेमहस गणि। पत्र स० ४५। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी (गुजराती मिश्रित)। र०कारा ×। ले०काल स० १५२१। पूर्ण। वेष्टन स० २४०। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दवलाना बू दी।

विशेष—रचना का आदि अत भाग निम्न प्रकार है—

आदिभाग—

पहिलउ सकल मगलीक तउ,
मूल श्री जिनशासनऊ सार।
इग्यारह अग चऊद पूर्व नउद्धार,
तो देव श्वासननु श्री पच परमेष्टि महामत्र नउकार।

अ तिम पुष्पिका—

इति श्री तपागच्छ नायक सकल सुविहित पुर दर श्रीसोमसुन्दरसूरि श्रीजयचन्द्रसूरि पद-कमल ससेविता शिष्य पडित हेमाहसगणिना श्राद्धवरातमर्थनया कृतोऽय षडावश्यक वालाववोध आचन्द्रार्क नद्यात् । ग्र थ स ० ३३०० । स ० १५२१ वर्षे श्रावण वदि ११ रविवासरे मालवमडले उज्जयिन्या लिखित ।

१७३८. षडावश्यकविवरण— × । पत्र स० २६ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत विषय-आचार । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३६१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१७३९. षोडश कारण दशलक्षण जयमाल-रइधू । पत्र स० ३६ । आ० ८×७ इञ्च । भाषा-अपभ्र श । विषय-धर्म । र०काल × । ले०काल स० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती कामा ।

१७४०. षोडशकारण भावना-प० सदासुख कासलीवाल । पत्रस० ७२ । आ० १२½ × ८ इञ्च । भाषा—राजस्थानी (ढू ढाडी) (ग०) । र०काल × । ले०काल स० १९६४ भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५२७ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

१७४१. प्रति स० २ । पत्रस० ११० । आ० ११½ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सख्या ४९३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१७४२. प्रति स० ३ । पत्रस० ६० । आ० १४½ × ८ इञ्च । ले०काल स० १९५५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष— मागीराम शर्मा ने दौसा मे प्रतिलिपि की थी ।

१७४३. प्रति स० ४ । पत्रस० २ से २१४ । ले० काल स० १९६४ पूर्ण । वेष्टन स० २६८ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—रत्नकर ड श्रावकाचार से उद्धृत है ।

१७४४. सदेह समुच्चय-ज्ञानकलश । पत्रस० १९ । आ० १२ × ५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी) ।

१७४५. सप्तदशबोल— × । पत्र स० ४ । आ० ८×३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी)

१७४६. सप्ततिका सूत्र सटीक— × । पत्र स० ५४ । आ० × ४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र०काल × । ले० काल स० १७८३ फागुण सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना बू दी ।

विशेष—गुजराती मिश्रित हिन्दी मे गद्य मे टीका है । बू दी मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१७४७. समकित वर्णन × । पत्रस० ११ । आ० १०½ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना बू दी ।

१७४८. सबोध पचासिका-गौतम स्वामी । पत्रस० १५ । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र० काल-सावन सुदी २ । ले०काल स० १८९६ फागुन बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० २८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका महित हैं तथा अरवंगढ मे प्रतिलिपि हुई ।

१७४९. सबोध पचासिका— × । पत्रस० १४ । आ० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । र०काल × । ले०काल स० १८२८ द्वि आषाढ बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १३९६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

१७५०. सबोध पचासिका × । पत्रस० १३ । आ० १२ × ७ इञ्च । भाषा-प्राकृत, सस्कृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

१७५१ प्रति स० २ । पत्रस० २६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

१७५२. सबोध पचाशिका-द्यानतराय । पत्रस० १२ । आ० ६ × ७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—इस रचना का दूसरा नाम सवोध अक्षर बावनी भी है ।

१७५३. सबोध सत्तरी-जयशेखर सूरि । पत्र स० ६ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

१७५४ सबोध सत्तरी— × । पत्रस० ७ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

१७५५ सबोध सत्तरी प्रकरण- × । पत्रस० २ । आ० ६ × ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल स० १६१५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

१७५६. सबोध सत्तरी बालावबोध- × । पत्र स० ८ । आ० १० × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा हिन्दी (गद्य) । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी)

१७५७ सम्यक्त्व प्रकाश भाषा-डालूराम । पत्र स० १२६ । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय – धर्म । र० काल १८७१ चैत सुदी १५ । ले० काल १९३४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

१७५८. सम्यक्त्व बत्तीसी-कवरपाल । पत्र स० ६ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५०६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

१७५९. सम्यक्त्व सप्तषष्टि भेद- × । पत्र स० ८ । आ० ९×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८९ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१७६०. सागर धर्मामृत-प० आशाधर । पत्र स० ५६ । आ० ११ × ५¼ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-श्रावक धर्म वर्णन । र०काल स० १२९६ । ले० काल स० १५९५ । आषाढ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१७ । **प्राप्ति स्थान**— भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—रितिवामानगरे सूर्यमल्ल विजयराज्ये ।

१७६१. प्रतिसं० २ । पत्र स० ३ से १३७ । आ० १०¼ × ४ ¾ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १२७८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१७६२. प्रति सं० ३ । पत्र स० ६३ । आ० ११¼×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०११ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१७६३. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ४९ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०८७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

१७६४ प्रतिसं० ५ । पत्र स० ४४ । ले०काल स० × । अपूर्ण । वेष्टन स १०८९ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

१७६५. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ८२ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल स० १६५४ आपाढ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५१२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१७६६. प्रतिसं० ७ । पत्र स० ५८ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले० काल स० १६३५ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ७४५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—मोजमावाद मे मा० हेमा ने प्रतिलिपि की थी ।

१७६७. प्रतिसं० ८ । पत्रस० ५३ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०५२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१७६८. प्रतिसं० ९ । पत्रस० ४१ । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टनस० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन वडा पचायती मन्दिर डीग ।

१७६९. प्रतिसं० १० । पत्रस० ९६-१५२ । आ० १३×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—स्वोपज्ञ टीका सहित है । प्रारम्भ के ९५ पत्र नही ।

१७७०. प्रतिसं० ११ । पत्रस० ४३ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल स० १६५९ चैत्र सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० २०/१३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है साह श्री भोटाकेनस्य भाडागारे लिखापित ।

१७७१. प्रतिसं० १२ । पत्र स० १३० । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल स० १८२० चैत्र बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बून्दी ।

विशेष महाराज माधवसिंह के शासन मे चम्पावता नगरी मे प्रतिलिपि की गयी थी प्रति सटीक है ।

१७७२. प्रतिसं० १३ । पत्रस० ३० । आ० १२ × ५ इञ्च । ले०काल स० १५५७ कार्तिक वदी १ । पूर्ण । वेप्टन स० ३९ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बून्दी ।

१७७३. प्रतिसं० १४ । पत्रस० ८६ । आ० ९½ × ४ इञ्च । ले०काल स० १५८० वैशाख वुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १५८० वर्षे वैशाख बुदी ५ बुधवासरे श्री मूलसघे नद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कु दकु दाचार्यान्वये भ श्री पद्मनदिदेव तत्पट्टे भ श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत् शिष्य म ० श्री धर्मचन्द्रास्तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये मू द्द गोत्रे सा देव तद्भार्या गौरी तत्पुत्र सा वाला तद्भार्या होली । तत्पुत्रा चत्वार प्रथम सा सरवण स्योराज सा डू गर सा डाल । सा सरवण भार्या सरस्वती तत्पुत्र सा हीला, ताल्ह । सा हीला भार्या टपोत तत्पुत्र सा नाथू । सा स्योराज भार्या लाली । तत्पुत्रा टला खीवा हीरा, सा डू गर भार्या लाडी एतेषा मध्ये साह डालू नामा इदशास्त्र श्रावकाध्ययन लिखाप्य धर्मचन्द्रपात्राय दत्त ।

१७७४. प्रतिसं० १६ । पत्र स० ३८ । आ० १२×५½ । ले०काल स० १८१६ वैशाख सुदी १५ । वेष्टन स० १६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—महाराजा माधवसिंह के शासनकाल मे जयपुर मे पडित चोखचन्द के शिष्य सुखराम ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

१७७५. प्रतिसं० १७ । पत्रस० १-७३-१३३ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

१७७६. प्रति स० १८ । पत्र स० ९–४० । आ० ११½×५ इञ्च । ले०काल स० १७२५ । अपूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १७२५ वर्षे माघ सुदी ८ शुक्रे श्री मूलसघे सरस्वती गच्छे भ श्री देवेन्द्रकीर्ति तदाम्नाये आचार्य श्री कल्याणकीर्ति तत् शिष्य ब्रह्म साध जिष्णोरिद पुस्तक ।

१७७७. प्रति स० १९ । पत्र स० १३२ । ले०काल स० १५५२ । पूर्ण । वेप्टन स० १४/३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—सवत् १५५२ वर्षे कार्तिक वुदी ५ शनिवासरे शुभमस्तु घटेरा ज्ञातीय सघई नीउ भार्या नागश्री तस्य पुत्र सघई दौसा भार्या रत्नाश्री सुत धनराज भार्या तस्य पुत्र सोनापाल एतै- कर्मक्षयार्थं लिखापित ।

१७७८. प्रति स० २० । पत्र स० १४५ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले० काल स० १९७१ ज्येष्ठ वुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

१७७९. सागार धर्मामृत भाषा— × । पत्र स० २१२ । आ० ११×५½ इ च । भाषा-हिन्दी गद्य । विपय-आचार शास्त्र । र०काल × । ले० काल स० १९८० आषाढ़ वुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—चदेरी मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१७८०. साधु आहार लक्षण— × । पत्र स० ६ । आ० ११×५ इन्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय-आचार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बू दी ।

१७८१. साधु समाचारी— × । पत्र स० ५ । भाषा–सस्कृत । विषय–साधु चर्या । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

१७८२. सारचतुर्विशतिका—सकलकीर्त्ति । पत्रस० १५० । आ० १०½×४½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल । पूर्ण । वेष्टनस० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बू दी ।

१७८३. प्रतिसं० २ । पत्र स० १०४ । आ० ११½×४¼ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक) ।

१७८४. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १०० । आ० ११×५ इन्च । ले० काल स० १८७१ । पूर्ण । वेष्टनस० २९१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

विशेष—कोटा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१७८५. सारचौबीसी—पार्श्वदास निगोत्या । पत्रस० ४०० । आ० १३½×८ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय–धर्म । र० काल स० १९१८ कार्तिक सुदी २ । ले० काल स० १९६८ माघ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—जयगोविंद ताराचन्द की बहिन ने बडा मन्दिर मे चढाया था ।

१७८६. प्रति सं० २ । पत्रस० ४३८ । आ० १२×७½ इन्च । ले० काल स० १९४५ । पूर्ण । वेष्टनस० १३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

१७८७ सार समुच्चय—कुलभद्र । पत्रस० १७ । आ० १०×४½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन स० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—पत्र बहुत जीर्ण है ।

१७८८. सारसमुच्य । पत्रस० १६ । आ० ११×५¼ इन्च । भाषा–सस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

१७८९. सार समुच्य । पत्रस० १६ । आ० ११×५ इन्च । भाषा–सस्कृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १५६–७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डू गरपुर ।

१७९०. सार सग्रह— × । पत्रस० २५७ । आ० १२¼×५½ इन्च । भाषा–प्राकृत । विषय–धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—सस्कृत तथा हिन्दी मे टीका भी दी हुई है ।

१७६१. सुखविलास—जोधराज कासलीवाल । पत्र स० ६४ । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र०काल १८८४ मगसिर सुदी १४ । ले० काल स० १९३६ । पूर्ण । वेष्टन स० ५४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—प० दौलतराम के पुत्र जोधराज ने कामा मे सुखविलास की रचना की थी ।

१७६२ प्रति स० २ । पत्रस० ३११ । ले०काल १८८४ पूर्ण । वेष्टन स० ५४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—पोदकर ब्राह्मण से जोधराज ने कामा मे लिपि कराई थी ।

१७६३. प्रति स० ३ । पत्रस० ३९४ । ले०काल × । १८८६ । पूर्ण । वेष्टन स० ५४५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—जो यामे अलप बुद्धि के जोग तें कही अक्षर अर्थ मात्रा की भूल होय तो विशेष ज्ञानी धर्म बुद्धि मोकू अल्प बुद्धि जानि क्षमा करि धर्म जानि या को सोध के सुद्ध करि लीज्यो ।।

प्रारम्भ—

णमो देव अरहन्त कौ नमौ सिद्ध महाराज ।
श्रुत नमि गुर को नमत हों सुख विलास के काज ।।
येही चउ मगल महा ये चउ उत्तम सार ।
इन चव को चरणो गहू होह सुमति दातार

अन्तिम—

जिन वाणी अनुस्वार सव कथन महा सुखकार ।
भूले पथ अनादि तें मारग पावै सार ।।
मारग दोय श्रुत मे कहे मोक्ष और ससार ।
सुख विलास तो मोक्ष है दुख थानक ससार ।।
जिन वाणी के ग्रन्थ सुनि उमग्यो हरष अपार ।
ताते सुख उद्यम कियो ग्र थन के अनुसार ।।
व्याकरणादिक पढ्यो नही, भाषा हू नही ज्ञान ।
जिनमत ग्रन्थन तें कियो, केवल भक्ति जु आनि ।।
भूल चूक अक्षर अरथ, जो कुछ यामे होय ।
पडित सोध सुधारियें, धर्म बुद्धि धरि जोग ।।
दौलत सुत कामा वसौ, जौध कासलीवाल ।
निज सुख कारण यह कियो, सुख विलास गुणमाल ।।
सुख विलास सुखथान है, सुखकारण सुखदाय ।
सुख अर्थ सेयो सदा, शिव सुख पावौ जाय ।।
कामा नगर सुहावनै, प्रजा सुखी हरषत ।
नीत सहत तहा राज है, महाराज बलवन्त ।।

जिन मन्दिर तहा चार हैं सोभा कहिय न जाय ।
श्री जिन दर्शन देख तें आनन्द उर न समाय ।।
श्रावक जैनी वहु वसैं आपस मे बहु प्रीति ।
जिन वाणी सरधा करैं पाखडी नहि रीत ।।
एक सहस्र अरु आठ सत असी ऊपरचार ।
सो समत सुभ जानियो शुकल पक्ष भृगुवार ।।
मगसिर तिथि पाचौ विषैं उत्तराषाढ निहार ।
ता दिन यह पूरण कियौ शिव सुख को करतार ।।
सुख विलास इह नाम है सव जीवन सुखकार ।
या प्रसाद हम हू लहै निज आतम सुखकार ।।
सुखी होहु राजा प्रजा सेवो धर्म सदीव ।
जैनी जन के भाव ये सुख पावैं सव जीव ।।

अन्तिम मङ्गल—

देव नमो अरहत सकल सुखदायक नामी ।
नमो सिद्ध भगवान भये शिव निज सुख ठामी ।।
साध नमौ निरग्र थ सकल परिग्रह के त्यागी ।
सकल सुख्य निज थान मोक्ष ताके अनुरागी ।।
वन्दो सदा जिन धर्म को देय सर्व सुख सम्पदा ।
ये सार धार तिहू लोक मे करो क्षेम मङ्गल सदा ।।

मगसिर सुदी ५ स १८८४ मे जोधराज कासलीवाल कामा के ने लिखवाया था ।

१७९४. सुदृष्टितरंगिणी—टेकचन्द । पत्रस० ६३४ । आ० १२½×७½ इञ्च । **भाषा—** हिन्दी । विषय-धर्म । र०काल स० १७३८ । ले०काल स० १९१० पूर्ण । वेष्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन पचायती मन्दिर दीवानजी कामा ।

१७९५. प्रति स० २ । पत्रस० ५९६ । ले० काल स० १९१० । पूर्ण । वेष्टन स० ५३७ । **प्राप्ति स्थान—**उपरोक्त मन्दिर ।

१७९६. प्रतिस० ३ । पत्रस० २९९ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ५३८ । **प्राप्ति स्थान—**उपरोक्त मन्दिर ।

१७९७. प्रति स० ४ । पत्रस० ३१० । आ० १५×८ इच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४५ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन खण्डेलवाल पचायनी मन्दिर अलवर ।

१७९८. प्रतिस० ५ । पत्रस० २–२०० । आ० १२½×६½ इच । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—२०० से आगे पत्र नही है ।

१७९९ प्रति स० ६ । पत्र स० १५० । आ० ११½×७½ इञ्च । ले०काल स० १९२६ । पूर्ण । वेष्टनस० ३/६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—सवाई माधोपुर मे प्रतिलिपि की गयी थी।

१८०० **प्रति स०** ७। पत्र स० ७०७। आ० १०½×५½। ले०काल स० १८०८ ज्येष्ठ सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन स० १६। **प्राप्ति स्थान**— दि जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोंक)

१८०१ **प्रति स०** ८। पत्र स० ३१। आ० १२×७। ले०काल स० १८३३। अपूर्ण। वेष्टन स० ४८१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियो का डूगरपुर।

१८०२ **प्रति स०** ६। पत्रस० ५४७। आ० ११ × ७ इन्च। ले०काल स० १८०५। पूर्ण। वेष्टन स० ११३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर, उदयपुर।

१८०३ **प्रति स०** १०। पत्रस० ४३५। आ० १०½×८ इन्च। ले०काल स० १८१२ कार्तिक सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० २६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

१८०४ **प्रतिस०** १२। पत्रस० ३०५। आ० १४×११ इन्च। ले०काल स० १८६१ आसोज सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० ६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, तरहपंथी दौसा।

विशेष—नानूलाल तेरापथी ने पन्नालाल तेरापथी से प्रतिलिपि करवायी थी।

१८०५ **प्रतिसं०** १३। पत्रस० ३५३। आ० १३×७½ इच। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, करौली।

१८०६. **प्रतिसं०** १४। पत्रस० १ से ६३। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर हण्डावालो का डीग।

१८०७. **प्रतिसं०** १५। पत्रस० ४६१। आ० १३ × ७ इन्च। ले०काल स० १८६३। पूर्ण। वेष्टन स० १३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बघेरवालो का आवा, (उणियारा)।

१८०८ **प्रतिस०** १६। पत्रस० २५७-४७५। आ० १३½ × ७½ इच। ले०काल स० १६२८। अपूर्ण। वेष्टन स० ११६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोंक)।

१८०९. **प्रतिस०** १७। पत्र स० २६५। आ० १४ × ७ इन्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ४२/२३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोंक)।

१८१०. **प्रतिस०** १८। पत्रस० ४३०। आ० १३½×६ इच। ले० काल स० १६०८ पौष बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० २६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा।

विशेष—बल्देव गुजराती मोठ चतुर्वेदी नैन मध्ये लिखित।

१८११. **प्रतिस०** १६। पत्रस० ३८। आ० १२×६ इच। ले०काल स० १६४५। अपूर्ण। वेष्टन स० ३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

१८१२. **प्रतिस०** २०। पत्र स० ५४४। आ० १३×६ इच। ले०काल स० १६२५। पूर्ण। वेष्टन स० १३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

विशेष—लोचनपुर (नैणवा) मे लिखा गया था।

१८१३. **प्रतिस०** २१। पत्र स० १६। आ० १०×७ इन्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ३२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

१८१४. सूतक वर्णन—भ० सोमसेन। पत्र स० १७। आ० १०×४½ इच। भाषा—सस्कृत। विषय—आचार शास्त्र। र०काल ×। ले० काल स० १९२५। पूर्ण। वेष्टन स० १००। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पञ्चायती मंदिर अलवर।

१८१५. सूतक वर्णन— ×। पत्र स० २। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—आचार शास्त्र। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ५४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

१८१६. सूर्य प्रकाश—आ० नेमिचन्द्र। पत्र स० १११। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—आचार शास्त्र। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १५६। **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोंक)

१८१७. सोलहकारण भावना— ×। पत्र स० १। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय—धर्म। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३३४। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

१८१८. स्वरूप संबोधन पच्चीसी— ×। पत्र स० २। भाषा—सस्कृत। विषय – धर्म। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६५/२५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर, उदयपुर।

१८१९. स्वाध्याय भक्ति—×। पत्रस० २। आ० १०½×५½ इञ्च। भाषा – सस्कृत। विषय—धर्म। र०काल ×। ले०काल स० १८४४ अगहन बुदी १। पूर्ण। वेष्टन स० १३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक।

— ० —

विषय – अध्यात्म चिंतन एवं योग शास्त्र

१८२०. अध्यात्मोपनिषद्-हेमचद्र । पत्र स० २० । आ० १० × ८ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २६२ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर, अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

१८२१. अध्यात्म कल्पद्रुम—मुनि सुन्दरसूरि । पत्र स० ७ । आ० १०½ × ४½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ६२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१८२२ अध्यात्म तरगिणी—आचार्य सोमदेव । पत्र स० १० । आ० ११½×५½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन स ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१८२३. अध्यात्म बारहखडी—दौलतराम कासलीवाल—पत्र स० २०४ । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-अध्यात्म । र० काल स० १७९८ फागुण सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८१ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

विशेष—पाच हजार पद्यो से अधिक की यह कृति अध्यात्म विषय पर एक सुन्दर रचना है । यह अभी तक अप्रकाशित है ।

१८२४. प्रति स० २ । पत्र स० ८३ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरापथी मन्दिर बसवा ।

१८२५. प्रति स० ३ । पत्र स० १३२ । आ० १२ × ६ इन्च । ले० काल स० १८६० । पूर्ण । वेष्टन स० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—हतूलाल जी तेरहपथी ने माधोपुर निवासी ब्राह्मण भोपत से प्रतिलिपि करवाकर दौसा के मन्दिर मे विराजमान की थी ।

१८२६. प्रति स० ४ । पत्र स० १५६ । आ० १२½ × ७ इन्च । ले० काल स० १८३१ कार्त्तिक बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

१८२७ प्रति स० ५ । पत्र स० २१९ । आ० १२ × ६ इन्च । ले० काल स० १८७९ फागुण सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १७-२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—भवानीराम ने अलवर मे प्रतिलिपि की थी ।

१८२८. प्रति स० ६ । पत्र स० १२८ । ले० काल स० १८०३ आसोज सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ४३३ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१८२९. प्रति स० ७ । पत्र स० २८० । आ० १०×८ इन्च । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अग्रवाल उदयपुर ।

१८३०. प्रति स० ८ । पत्र स० ३२ । आ० ११½ × ६½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वैर (बयाना)

विशेष—४०० पद्य है ।

१८३१. अध्यात्म रामायण— × । पत्र स० ३३६ । आ० १० × ६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । र०काल × । ले० काल स० १८५५ माघ सुदो ९ । पूर्ण । वे० स० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बू दी ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका—

इति श्री अध्यात्मरामायणे ब्रह्मापुराणे उत्तरखडे उमामहेश्वरसवादे उत्तरखडे नवम सर्ग । अध्यात्मोत्तरकाडे ग्रह सख्यया परिक्षिप्ता । उत्तर काड ।

१८३२. अनुप्रेक्षा सग्रह— × । पत्र स० ७ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (प) । विपय-चिंतन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७१० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—तीन तरह से बारह भावनाओ का वर्णन है ।

१८३३. अनुभव प्रकाश—दीपचन्द कासलीवाल । पत्रस० २५ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-अध्यात्म । र०काल स० १७८१ पौप वुदी ५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २२-४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

१८३४. प्रतिसं० २ । पत्रस० ३९ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १८१२ चैत सुदी ९ । पूर्ण । वेष्टनस० २९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी चेतनदास पुरानी डीग ।

१८३५. प्रति स० ३ । पत्रस० ४० । आ० १२½ × ७½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर कामा ।

१८३६ प्रति सं० ४ । पत्रस० ४७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१८३७. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ५९ । आ० ८½ × ५½ इञ्च । ले० काल— × । अपूर्ण । वेष्टनस० १९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

१८३८. असज्झाय नियुत्ती × । पत्रस० ४ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । र०काल × । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० ४९७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

१८३९. अष्ट पाहुड—कुंदकुंदाचार्य । पत्रस० ८२ । आ० १२ × ४½ इञ्च । भापा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । र०काल × । ले०काल स० १८१२ । पूर्ण । वेष्टनस० ११९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

१८४० प्रति स० २ । पत्रस० ५६ । ले०काल स० १८१४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१८४१. अष्टपाहुड भाषा-जयचन्द छावडा । पत्रस० १७० । आ० १३½ × ८½ इञ्च । भाषा-राजस्थानी (ढूढारी) गद्य । विषय-अध्यात्म । र०काल स० १८६७ भादवा सुदी १३ । ले०काल

स० १६७२ पौष सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६२७ । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—टीकमचन्द सोनी ने पुत्र दुलीचद के प्रसाद वडाधडा के मदिर मे चढाया ।

१८४२. प्रतिसं० २ । पत्र स० १५२ । आ० ११ × ७½ इञ्च । ले० काल स० १८७७ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वे० स० १५६६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

१८४३ प्रति स० ३ । पत्र स० २७० । आ० ११ × ५¾ इञ्च । ले०काल स० १६१६ आपाढ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

विशेष—मध्य पीपली चौंठ वजार दौलतराम ने अपने पुत्र के पठनार्थ प्रतिलिपि करवायी थी ।

१८४४. प्रतिसं० ४ । पत्र स० २०६ । आ० १३×६ इञ्च । ले०काल स० १६४० फागुन वदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६/४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर सौगाणियो का करौली ।

१८४५. प्रति स० ५ । पत्र स० २६२ । आ० ११×६ इञ्च । ले०काल स० १८७२ सावन सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती करौली ।

विशेष—अलवर नगर मे जयकृष्ण ने प्रतिलिपि की थी ।

१८४६. प्रति स० ६ । पत्र स० १७० । आ० १२½ × ७½ इञ्च । ले०काल स० १६२० । पूर्ण । वेष्टन स० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर छोटा बयाना ।

विशेष—श्रावक माधोदास ने यह ग्र थ मदिर मे भेंट किया था ।

१८४७. प्रतिसं० ७ । पत्र स० २२६ । आ० १२½×७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पचायती कामा ।

१८४८. प्रति स० ८ । पत्र स० २४५ । आ० ११×७ इञ्च । ले०काल स० १६५७ सावन सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—दिगम्बर जैन सरस्वती भण्डार मथुरा के मार्फत प्रतिलिपि हुई थी ।

१८४६ प्रतिसं० ६ । पत्र स० १६१ । आ० १३×७½ इञ्च । ले०काल स० १६०६ । पूर्ण । वेष्टन स० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती कामा।

१८५० प्रति स० १० । पत्र स० २२२ । ले०काल १८७३ ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती भरतपुर ।

विशेष—जोधराज के पुत्र उमरावसिंह ने लिखवायी थी ।

१८५१. प्रतिसं० ११ । पत्र स० २११ । ले० काल स० १८७२ माह सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६४ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर मे प्रतिलिपि की गई थी ।

१८५२ प्रति स० १२ । पत्र स० १६० । ले० काल १८८७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर मे चिम्मनराम वजाज ने लिखवायी थी ।

१८५३. प्रति स० १३ । पत्र स० २१२ । आ० १३½×८¾ इञ्च । ले०काल स० १६६२ । पूर्ण । वेष्टन स० ५०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—रिषभचन्द विन्दायक्या ने लश्कर पाटोदी के मन्दिर जयपुर मे महाराजा सवाई माधोसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि की थी।

१८५४. प्रति सं० १४ । पत्र स० २८६ । आ० १२×६½ इञ्च । ले० काल म० १८७२ सावन बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

१८५५. प्रति स० १५ । पत्र स० १६६ । आ० १३×७½ इञ्च । ले०काल स १६३८ सावण सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन म० २०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

१८५६. प्रतिसं० १६ । पत्र सख्या १८५ । आ० १२×८ इञ्च । । लेखन काल स० १६४६ । पूर्ण । वेष्टन स० ११०–१२ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ, कोटा

१८५७. प्रति स १७ । पत्र स० २५४ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले०काल स० १८८२ । पूर्ण । वे०स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक) ।

विशेष—आचार्य श्री माणक्य नन्दि के शिष्य ने लिखा था ।

१८५८. प्रति सं. १८ । पत्र स०१६० । आ० १०×६½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वे स० ११६ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

१८५९. प्रति स० १९ । पत्र स० २५१ । आ० ११×७½ इञ्च । ले० काल स० १६४५ । पूर्ण । वे० स० २३ । **प्राप्ति स्थान**— दि०जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

१८६०. प्रति स० २० । पत्रस० २२२ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल म० १८८४ (शक स० १७४६) । पूर्ण । वेष्टनस० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

विशेष—जोशी गोपाल ने लोचनपुर (नैणवा) मे लिखा है।

१८६१. प्रतिसं० २१ । पत्रस० १७६ । आ० १३ × ६ इञ्च । ले०काल स० १६२६ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक) ।

विशेष—सदासुख वैद ने अपने पठनार्थ लिखी ।

१८६२. प्रति सं २२ । पत्र स० २०५ । आ० १२½×६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

१८६३. आत्म प्रबोध । पत्र स० ३ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । लेखन काल स० १८२० कार्तिक सुदी १ । अपूर्ण । वे०स० ४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—नैणसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

१८६४. आत्म प्रबोध—कुमार कवि । पत्र स० १४ । आ० १० × ४¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल स० १५७२ आश्विन बुदी १० । वे० स० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—वीरदास ने दौवलाणे के पार्श्वनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी।

१८६५. प्रति स० २ । पत्रस० ११ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले०काल स० १५४७ फागुण सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस०—८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—श्रीपथा नगरे खण्डेलवाल वश गगवाल गोत्रे सघई मेठापाल लिखापित ।

१८६६. आत्म सबोध—रइधू । पत्र स० २१ । भाषा—अपभ्र श । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल स० १६१० । पूर्ण । वेष्टन स० ५१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१८६७. प्रति सं० २ । पत्र स० ६–२६ । आ० ११ × ४ इञ्च । ले० काल स० १५५३ । अपूर्ण । वेष्टन स० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स० १५५३ वर्षे चैत्र सुदी ६ पुष्य नक्षत्रे बुधे धृतिनाम्नियोगे गौणोलीय पत्तने राजाधिराजा श्री···· राज्य प्रवर्त्तमाने जोतिश्रीलाल तच्छुपुत्र जोति गोपाल लिखत पुस्तक लिखिमिति । शुभ भवतु ।

१८६८. आत्मानुशासन—गुणभद्राचार्य । पत्र स० १–२० । आ० १२½ × ५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल—× । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अग्रवाल उदयपुर ।

१८६९. प्रति स० २ । पत्रस० ३५ । ले०काल १६१० चैत सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर डीग ।

विशेष—प्रति जीर्ण है तथा सस्कृत टीका सहित है ।

१८७०. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ५० । आ० ११½×६ इच । ले०काल × । वेष्टन स० ६०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१८७१. प्रति स० ४ । पत्रस० ४६ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१८७२. प्रति स० ५ । पत्रस० ५२ । आ० १०×४ इच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१८७३ प्रतिसं० ६ । पत्रस० ५८ । आ० ११½ × ४½ इच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति के प्रारम्भ मे आचार्य श्री श्री हेमचन्द्र परम गुरुभ्यो नम ऐसा लिखा है । सस्कृत मे कठिन शब्दो के अर्थ भी दिये हुए हैं ।

१८७४ प्रति सं० ७ । पत्रस० ११ २६ । आ० १२×५ इच । ले०काल स० १७८३ मगसिर सुदी ८ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—मनपाराम ने कामा मे प्रतिलिपि की थी ।

१८७५. प्रतिस० ८ । पत्रस० ४७ । आ० १०×५ इच । ले०काल स० १६८१ फागुण बुदी ६ । अपूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक) ।

१८७६. आत्मानुशासन टीका—टीकाकार प० प्रभाचन्द्र । पत्रस० ८२ । आ० १०×४½ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल स० १५८० आषाढ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० २ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—हिसार नगर मे प्रतिलिपि की गई थी ।

१८७७. प्रतिस० २ । पत्र स० ८१ । आ० १०½ × ४ इञ्च । ले०काल स० १५४८ पौष बुदी ३ । पूर्ण ।वेष्टनस० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

विशेष—गोपाचल दुर्ग मे महाराजा मानसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१८७८. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ३३ । आ० १०½×५ इञ्च । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१८७९. आत्मानुशासन भाषा " । पत्र स० १-५८ । आ० १२ × ५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ७२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

१८८०. आत्मानुशासन भाषा—× । पत्रस० १६१ । आ० १२ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विपय—अध्यात्म । र० काल × । ले०काल स० १६४२ फागुन सुदी ६ । पूर्ण। वेष्टनस० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मदिर करौली ।

१८८१. आत्मानुशासन भाषा टीका--× । पत्रस० ११० । आ० ११½ × ६½ इञ्च। । भाषा—सस्कृत हिन्दी । विपय - अध्यात्म । र०काल × । ले०काल स० १८६० वैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ७०१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—रामलाल पहाड्या ने हीरालाल के पठनार्थ पचेवर मे प्रतिलिपि की थी ।

१८८२ आत्मानुशासन भाषा –टोडरमल जी । पत्र स० १४० । भाषा-हिन्दी । विषय–अध्यात्म । र०काल × । ले० काल १६३१ पूर्ण । वेष्टन स० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—अखैगढ मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१८८३. प्रतिसं० २ । पत्र स० १४६ । आ० ११ × ६ इञ्च । ले० काल स० १८२४ । पूर्ण । वेष्टनस० २३ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज) । सग्रामपुर मे प्रतिलिपि की गई थी ।

१८८४ प्रति स० ३ । पत्र स० ६८ । आ० १२½ × ६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

१८८५. प्रति सं० ४ । पत्र स० १४५ । आ० १०½×५½ इञ्च । ले० काल स० १८८७ सावन बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर मालपुरा (टोंक)

विशेष—श्री चन्द्रप्रभ के मन्दिर मे जीवणराम कासलीवाल ने मालपुरा मे प्रतिलिपि की ।

१८८६. प्रति सं० ५ । पत्र स० ८७ । आ० ११½ × ५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरह पथी मन्दिर मालपुरा (टोंक)

१८८७. प्रति स० ६ । पत्र स० १३८ । आ० १३ × ७½ इञ्च । ले०काल स० १८५२ चैत्र सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० १२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

१८८८. प्रति सं० ७ । पत्रस० १३६ । आ० १३ × ६ इञ्च । ले०काल स० १८७५ भादवा सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर, अलवर ।

१८८६. प्रतिस० ८ । पत्रस० १६३ । आ० ११ × ७ इञ्च । ले०काल स० १८७० ज्येष्ठ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

१८९० प्रतिसं० ९ । पत्रस० १६० । ले०काल स० १८३० चैत सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० ३९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—प० लालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

१८९१. प्रतिसं० १० । पत्रस० १०६ । ले०काल स० १८३० फागुन बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ३९१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष—कुशलसिंह ने प्रतिलिपि करवाई थी तथा आमेर की गई थी ।

१८९२. प्रतिस० ११ । पत्रस० १४५ । लें०काल स० १८५२ । पूर्ण । वेष्टन स० ४२९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—रूदावल की गद्दी मे प्रतिलिपि की गई थी ।

१८९३. प्रति स० १२ । पत्रस० १८७ । आ० ११ × ८$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल स० १८२७ वैशाख सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

विशेष—बुधलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

१८९४. प्रति स० १३ । पत्रस० ८९ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १८३४ सावण सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—जयपुर मे प्रतिलिपि की गई थी ।

१८९५. प्रति स० १४ । पत्रस० ८७ । आ० ९ × ६ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

१८९६. प्रति स० १५ । पत्रस० १८ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २३ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मदिर इन्दरगढ (कोटा)

१८९७. प्रति स० १६ । पत्रस० १३९ । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । ले०काल स० १८६८ पौष सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १२५/७१ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मदिर इन्दरगढ (कोटा)

१८९८. प्रतिसं० १६क. । पत्रस० १५८ । आ० १२ × ८$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १९४८ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ९९ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर, इन्दरगढ (कोटा)

१८९९ प्रतिस० १७ । पत्रस० ४७। आ० १० × ९ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

१९००. प्रतिसं० १८ । पत्रस० ११० । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

१९०१ प्रतिस० १९ । पत्रस० ८५ । आ० ९ × ६ इञ्च । ले०काल स० १८३७ चैत्र सुदी १२ । अपूर्ण । वेष्टनस० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली (कोटा) ।

१९०२. प्रति स० २० । पत्र स० २०३ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल स० १८३६ आषाढ सुदी १५ । पूण । वेष्टनस० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती खण्डेलवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—अलवर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१६०३ प्रतिसं० २१ । पत्र स० १३५ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती खण्डेलवाल मन्दिर अलवर ।

१६०४. प्रतिस० २२ । पत्र स० १७३ । आ० १२½ × ६ इन्च । ले०काल स० १६१० कार्तिक सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—लाला रामदयाल फतेहपुर वासी ने ब्राह्मण हरसुख प्रोहित से मिर्जापुर नगर मे प्रतिलिपि करवाई थी ।

१६०५. प्रति सं० २३ । पत्रस० ११० । आ० ११×८ इञ्च । ले०काल स० १८५७ । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

१६०६. प्रतिस० २४ । पत्रस० १३२ । आ० १४×५ इञ्च । ले० काल स० १८६० मगसिर सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ८–२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वडा वीसपथी दौसा ।

विशेष—उदैचन्द लुहाडिया देवगिरी वासी (दौसा) ने प्रतिलिपि की थी ।

१६०७. प्रतिसं० २५ । पत्रस० ७१ । आ० १२½ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १८५५ वैशाख सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४२–६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वडा वीसपथी दौसा ।

१६०८. प्रतिस० २६ । पत्र स० १७५ । आ० ११×५ इञ्च । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा ।

१६०९. प्रति स० २७ । पत्रस० १२६ । आ० १२½ × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा ।

विशेष—तेरापथी चिमनलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

१६१०. प्रति स० २८ । पत्रस० ६२ । आ० ११ × ७½ इञ्च । ले० काल स० १६६२ चैत सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक)

१६११. प्रति स० २९ । पत्र स० १०६ । आ० १२×५¾ इञ्च । ले० काल स० १८६८ । पूर्ण । वेष्टन स० ६१–१०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

विशेष—दसकत स्योवगस का व्यास फागी का ।

१६१२. प्रति सख्या ३० । पत्रस० १२२ । आ० ६ × ६ इञ्च । ले०काल स० १८३२ पौष बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० २८–६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

विशेष—हरीसिंह टोग्या ने रामपुरा (कोटा) मे प्रतिलिपि करवाई थी ।

१६१३. प्रति स० ३१ । पत्रस० ११६ । आ० १२×६ इञ्च । ले०काल स० १८६७ । पूर्ण । वेष्टनसं० १७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

१६१४. प्रति स० ३२ । पत्रस० १७४ । आ० १०½×५½ इञ्च । ले०काल स० १८६६ सावन सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर नैणवा ।

विशेष—लिखित प० श्री ब्राह्मन भगवानदास जो बाचै सुनै को श्री जिनेन्द्र ।

१६१५. प्रति स० ३३ । पत्र स० ११८ । ग्रा० १२½ × ६ इन्च । ले०काल स० १६१५ कार्तिक वुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपथी नैणवा ।

विशेष—पुस्तक चपालाल वैद ने की है ।

१६१६. प्रति स० ३४ । पत्र स० ११४ । ग्रा० १२½×६ इन्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेप्टन स० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर, वूदी ।

विशेष—११४ से आगे पत्र नही है ।

१६१७. प्रतिसं० ३५ । पत्र स० १८२-२६२ । ग्रा० ६×५ इन्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी वूदी ।

१६१८. प्रति स० ३६ । पत्रस० १२६ । ग्रा० १०½×६ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७८-४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

१६१६. प्रति स० ३७ । पत्रस० ११७ । ग्रा० १२×५½ इन्च । ले० काल स० १८४८ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ५० । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ वूदी ।

विशेष—पवाई प्रतापसिंह के राज्य मे सवाई माधोपुर मे प्रतिलिपि हुई ।

१६२० प्रति स० ३८ । पत्रस० ७८ । ग्रा० १२ × ५½ इन्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ वूदी ।

१६२१. प्रति स० ३६ । पत्रस० १३१ । ग्रा० १२×५½ इन्च । ले० काल स० १८३५ श्रावण सुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० ४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ वूदी ।

विशेष—सवाई माधोपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१६२२. । प्रति स० ४० । पत्र स० १२८ । ग्रा० १० × ६½ इन्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अग्रवाल उदयपुर ।

१६२३. प्रतिसं० ४१ । पत्र स० १०४ । ग्रा० १२½×४½ इन्च । ले० काल × । अपूर्ण वेष्टन स० २१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी वूदी ।

विशेष—१०४ से आगे पत्र नही है ।

१६२४ प्रतिसं० ४२ । पत्र स० ६४ । ग्रा० १०×¾×७¾ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनदन स्वामी वूदी ।

विशेष—आरम्भ के पत्र किनारे पर कुछ कटे हुये है ।

१६२५. प्रति स० ४३ । पत्र स० २४८ । ग्रा० ११×६ इन्च । ले० काल स० १६१४ । पूर्ण । वेष्टन स० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान वूदी ।

विशेष—साहजी श्री दौलतराम जी कासलीवाल ने लिखवाया था ।

१६२६. प्रति स० ४४ । पत्रस० १-१३० । ग्रा० ११ × ५¾ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६६५ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१६२७ प्रतिसं० ४५ । पत्रस० १७३ । ग्रा० ११×८ । ले० काल × । वेष्टन स० ८२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१९२८. प्रति सं० ४६ । पत्रस० ११७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

१९२९. प्रतिसं० ४७ । पत्रस० १०३ । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल स० १८०४ । पूर्ण । वेष्टनस० ~८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१९३०. प्रति स० ४८ । पत्र स० ९३ । आ० १०½ × ७½ इञ्च । लेखन काल स० १९०७ । आसोज बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १३०९ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१९३१. आत्मावलोकन—दीपचन्द कासलीवाल । पत्र स० १०६ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–अध्यात्म । र०काल × । ले० काल स० १७२१ । पूर्ण । वेष्टन स० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मन्दिर अलवर ।

१९३२. प्रति सं० २ । पत्र स० १८५ । ले० काल स० १९२७ आषाढ शुक्ला १ । अपूर्ण । वे० स० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, दीवानजी भरतपुर ।

१९३३. प्रति स० ३ । पत्र स० ५६ । आ० १२ × ६½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१९३४. प्रति स० ४ । पत्रस० ९१ । आ० १२¾×७ इञ्च । ले०काल स० १८८३ आसोज बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ८७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पचायती कामा ।

विशेष—जोवराज उमरावसिंह कासलीवाल कामा ने प्रतिलिपि कराई थी । सेढमल वोहरा भरतपुर वाले ने अचनेरा मे प्रतिलिपि की थी । श्लोक स० २२५० ।

१९३५. प्रतिसं० ५ । पत्र स० १०७ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले०काल स० १७६९ आसोज सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १२९ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मदिर, कामा ।

विशेष—श्री केशरीसिंह जी के लिये पुस्तक लिखी गई थी ।

१९३६. आलोचना × । पत्र स० ७ । भाषा–हिन्दी सस्कृत । विषय–चिंतन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१९३७. आलोचना— × । पत्रस०–१ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–चिंतन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स०—१७४–१२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

१९३८. आलोचना जयमाल – ब्र० जिनदास । पत्रस० ३ । आ० ९¾×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय-चिंतन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६१९ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—किये हुए कार्यों का लेखा जोखा है ।

१९३९. आलोचनापाठ— × । पत्रस० १३ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय-चिंतन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स०–१३७९ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१६४०. इन्द्रिय विवरण— × । पत्रस० ३ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय—चितन । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २१४/८५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सभवनाथ उदयपुर ।

१६४१. इष्टोपदेश—पूज्यपाद । पत्रस० ६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१६४२. कार्तिकेयानुप्रेक्षा—स्वामी कार्तिकेय । पत्रस० २७ । आ० ६½ × ८½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१६४३. प्रतिसं० २ । पत्रस० ३२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१६४४. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ३४ । ले०काल स० १६१७ भादवा सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—मडलाचार्य भुवनकीर्ति के शिष्य मुनि विशाल कीर्ति से साह जाट एव उसकी भार्या जाटम दे खडेलवाल भौंसा ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१६४५. प्रतिसं० ४ । पत्रस० २८ । आ० १३×५ इञ्च । ले०काल स० १६१० । पूर्ण । वेष्टन स० १७८/१७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सभवनाथ उदयपुर ।

विशेष—प्रतिजीर्ण है ।

प्रशस्ति—स० १६१० वर्षे वैशाख बुदी १४ सोमे श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे श्री कु दकु दाचार्यान्विये भट्टारक श्री विजयकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्र तद् शिष्य ब्र० कृष्णा ब्र० लीवा पठनार्थं हुवघ गोत्रे द्या रामा भा० रमादे सु० द्या० पंचायणि भा० परिमलदे इद पुस्तक कर्म क्षमार्थं लिखापित ।

कठिन शब्दो के अर्थ दिये हुए हैं ।

१६४६ प्रतिसं० ५ । पत्र स० २३ । आ०१२½×५ इञ्च । ले०काल स० १६३८ । पूर्ण । वेष्टन स० १२८ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर अग्रवाल उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६३८ वर्षे मार्गशिर वदि २ भौमे जयताणा-शुभस्थाने श्री जिनचैत्यालये श्री मूलसघे वलात्कारगणे श्री कु दकु दाचार्यान्वये श्री पद्मकीर्ति, सकलकीर्ति, भुवनकीर्ति, ज्ञानभूषण, विजयकीर्ति, शुभचन्द्र देवा सुमतिकीर्तिदेवा श्री गुणकीर्ति देवास्तद् गुरु भ्राता ब्रह्म श्री सामल पठनार्थं ।

१६४७. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ७६ । आ० ६×४ इञ्च । ले० काल स० १५७२ भादवा सुदी ४ । अपूर्ण । वेष्टन स २६२ । **प्राप्ति स्थान**- अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

१६४८. प्रतिसं० ७ । पत्र स० ५६ । ले० काल स० १६१३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

विशेष—सस्कृत टब्बा टीका सहित है ।

१६४६. प्रति सं० ८ । पत्रस० ७५ । आ० ८ × ६ इञ्च । ले०काल स० १८६६ चैत बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वैर (बयाना) ।

१६५०. प्रति स० ६ । पत्रस० २१ । आ० १०½ × ५ इञ्च । ले०काल स० १८११ चैत्र बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दबलाना (बू दी) ।

विशेष – रत्नविमल के शिष्य प० रामविमल ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५१. प्रति स० १० । पत्रस०– × । आ० १३ × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३२१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

१६५२ प्रति स० ११ । पत्र स० २५ । आ० १०×६ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १२६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बू दी ।

१६५३. प्रति सं० १२ । पत्र स० ६–५६ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टनस० ५११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रार भ के ८ पत्र नही है ।

१६५४ प्रति स० १३ । पत्र स० १३ । आ० ८½ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१६५५. प्रति स ० १४ । पत्रस० ६० । आ० १०×५ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर, लश्कर, जयपुर ।

विशेष—कही २ कठिन शब्दो के सस्कृत मे अर्थ एव टिप्पणी दिये गए हैं ।

१६५६. प्रति स० १५ । पत्रस० २६ । आ० १०½×४¾ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—मुनि लक्ष्मीचन्द्र ने कर्मचन्द्र के पठनार्थ लिखा था ।

१६५७. प्रतिसं० १६ । पत्रस० २४ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । ले० काल–स० १५३५ मार्ग शीर्ष सुदी १५ । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति–स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१६५८. प्रति स० १७ । पत्र स० २० । आ० ८½ × ४ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३०–४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वडा बीसपथी दौसा ।

१६५६. प्रति सं० १८ । पत्र स० ४१ । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर डीग ।

१६६०. कार्तिकेयानुप्रेक्षा टीका-शुभचन्द्र । पत्र स० २८६ । आ० १०¾ × ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चितन । र०काल स० १६०० । ले० काल स० १७८८ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १०७६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

१६६१. प्रति स० २ । पत्र स० ६०–१८४ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

१६६२. **प्रति स० ३।** पत्र स० ३२६। ले० काल स० १७८० कार्तिक सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० २६०। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पचायती भरतपुर।

विशेष—सूरतनगर मे लिखा गया था।

१६६३ **प्रति स० ४।** पत्र स० २३६। आ० १२ × ६ इञ्च। ले० काल स० १७६०। पूर्ण। वेष्टन स० ३७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—प्रति जीर्ण है।

१६६४. **प्रतिसं० ५।** पत्रस० २–१४५। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर डीग।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

१६६५. **प्रतिसं० ६।** पत्र सख्या ५०। आ० १४½ × ६¾ इञ्च। लेखन काल स० १६२४ पौष सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन स० १५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

स्वाति श्री सवत १६२४ वर्षे पौष मासे शुक्ल पक्षे दशम्या १० तिथौ श्री बुधवारे श्री ई लावा शुभस्थाने श्री ऋषभ जिन चैत्यालये श्री मूलसघे श्री सरस्वती गच्छे श्री बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनदि देवास्तत्पट्टे भ० श्री देवेन्द्र कीर्ति देवास्तत्पट्टे श्री विद्यानदि देवास्तत्पट्टे भ० श्री मल्लि भूषणदेवास्तत्पट्टे भ० श्री लक्ष्मीचन्द्र परमगुरु देवास्तत्पट्टे भ० श्री वीरचन्द्र देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री ज्ञान भूषण गुरवो जयतु तथात्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्र गुरवो नदतु। श्री आचार्य श्री सुमति कीर्तिना लिखापिता स्वहस्तेन शोधितेय टीका। आचार्य रत्नभूषण जयतु। श्री कार्तिकेयानुप्रेक्षा सटीका समाप्ता।

१६६६. **कार्तिकेयानुप्रेक्षा भाषा—जयचन्द्र छाबडा।** पत्र स० १०८। आ० १२ × ८ इञ्च। भाषा—राजस्थानी (ढूढारी) गद्य। विषय—अध्यात्म। र०काल स० १८६३ सावन बुदी ३। ले० काल स० १८६४ वैशाख बुदी ३। पूर्ण। वेष्टन स० १५७०। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—ग्रथ रचना के ठीक ६ माह वाद लिखी हुई प्रति है।

१६६७. **प्रतिसं० २।** पत्र स० १०६। आ० ८½×६½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दि अग्रवालो का अलवर।

१६६८. **प्रतिसं० ३।** पत्र स० १०६। आ० १०½ × ७ इञ्च। ले०काल १८७१। पूर्ण। वेष्टन म० ७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अग्रवालो का अलवर।

१६६९. **प्रतिसं० ४।** पत्रस० १३६। आ० ११½×५½ इञ्च। ले० काल स० १८८७। पूर्ण। वेष्टनस० ६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरह पथी मालपुरा (टोक)।

विशेष—जीवनराम कासलीवाल ने प्रतिलिपि की थी।

१६७०. **प्रतिसं० ५।** पत्रस० २३७।। आ० १०×७ इञ्च। ले० काल स० १६५३। पूर्ण। वेष्टनस० ८८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी।

१६७१. **प्रति सं० ६।** पत्रस०६३। आ० १३×८ इञ्च। ले०काल स० १६६१। पूर्ण। वेष्टन स० ८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अगवाल मदिर नैणवा।

१९७२ प्रति स० ७। पत्रस० ९७। आ० ११ × ६ इञ्च। ले० काल। पूर्ण। वेष्टनस० १२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक।

१९७३. प्रति स० ८। पत्र स० १४७। आ० १२×८ इञ्च। ले०काल स० १९४९ ज्येष्ठ बुदी ५। पूर्ण। वेष्टनस० १०४/५। **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

१९७४. प्रति स० ९। पत्र स० ९३। आ० ९½×६½ इञ्च। ले० काल स० १८३७ चैत बुदी १२। अपूर्ण। वेष्टन स० ८८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

१९७५. प्रति स० १०। पत्रस० १०८। आ० ११×८ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर खण्डेलवाल अलवर।

१९७६. प्रति स० ११। पत्र स० ८१। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० १६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर अलवर।

१९७७. प्रति सं० १२। पत्रस० ५०१। ले० काल स० १८९०। पूर्ण। वेष्टनस० १६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—भरतपुर मे हेतराम रामलाल ने वलवन्तसिंह जी के राज्य मे प्रतिलिपि करवाई थी।

१९७८. प्रतिसं० १३। पत्रस० ११५। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ५३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

१९७९. प्रति स० १४। पत्रस० १०८। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ५३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

१९८०. प्रति स० १६। पत्र स० २३२। आ० १० × ६½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ११४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर छोटा बयाना।

१९८१. प्रतिसं० १६। पत्र स० ११२। आ० १२×७ इञ्च। ले०काल स० १८६८। पूर्ण। वेष्टन स० १०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती कामा।

विशेष—प्राकृत मे मूल भी दिया हुआ है।

१९८२. प्रति सं० १७। पत्रस० १९२। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर हण्डावालो का डीग।

१९८३. प्रति स० १८। पत्रस० ४८। आ० १३ × ६½ इञ्च। ले०काल स० १८९२ भादो सूदी ५। पूर्ण। वेष्टन सख्या ८४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

विशेष—चिम्मनलाल बिलाला ने नेमिनाथ चैत्यालय मे इस प्रति को लिखवाई थी।

१९८४. . प्रतिस० १९। पत्रस० १०९। आ० १०½ × ७½ इञ्च। पूर्ण। वेष्टन स० १६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा।

विशेष – १०९ से आगे के पत्र नही है।

१९८५. प्रति स० २०। पत्रस०'१५०। आ० १२ × ५¾ इञ्च। ले० काल स० १८९१ भादवा बुदी २। पूर्ण। वेष्टन स० ६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—श्री चौवेरामू ने चन्द्रपुरी मे प्रतिलिपि की थी।

१६८६. प्रति स० २१ । पत्रस० ११२ । आ० १२ × ६½ इन्च । ले०काल स० १६१२ । पूर्ण ।वेष्टन स० ३५३-१३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

१६८७. गुणतीसीभावना - × । पत्र स० ५ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय--चिंतन । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २६०/१६६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर सम्भवनाथ उदयपुर ।

अन्तिम—उगणत्रीसीभावना तणीजे सत्य विचार ।
जेमनमाहि समरसि ते तरमे ससार ।।

१६८८. गुण विलास—नथमल विलाला । पत्र स० ६१ । भाषा--हिन्दी (पद्य) । विषय—अध्यात्म । रचना काल १८२२ असाढ बुदी १० । ले०काल १८२२ द्वि० असाड सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० २७१ ।**प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

१६८९. चारकषाय सज्झाय—पद्मसुन्दर । पत्रस० ८ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चिंतन । र०काल × । ले० काल स० १७६३ पौष बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—ऋषि रत्न ने उदयपुर मे लिखा ।

१६९०. चिद्विलास—दीपचन्द कासलीवाल । पत्र स० ४४ । आ० १०½ × ५ इन्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । र०काल स० १७७९ फागुण बुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०५० । **प्राप्तिस्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१६९१ प्रति स० २ । पत्र स० २४ । आ० १२×४½ इञ्च । ले०काल स० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन स० १२२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

विशेष—महात्मा जयदेव ने जोवनेर मे प्रतिलिपि की थी ।

१६९२ प्रति स० ३ । पत्र स० १४१ । आ० ८½×४ इन्च । ले० काल स० १८५४ ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७/७ । **प्राप्तिस्थान** – दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रत्येक पत्र मे ७ पक्ति एव २२-२४ अक्षर है ।

१६९३. प्रति स० ४ । पत्र स० ६७ । आ० ९×४½ इञ्च । ले०काल स० १७७९ । पूर्ण । वेष्टन स० ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१६९४. प्रति स० ५ । पत्रस० ५१ । आ० १३ × ७½ इञ्च । ले०काल स० १९०६ । पूर्ण । वेष्टनस० ८ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

१६९५. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ५९ । आ० १०½×७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती बयाना ।

विशेष—मोहनलाल कासलीवाल भरतपुर वाले ने प्रतिलिपि की थी। माह सुदी १४ स० १९३२ मे पोतदार चुन्नीराम बैनाडा ने बयाना के॰ दर चढाया था ।

१६९६. प्रतिसं० ७ । पत्रस० ६६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती भरतपुर ।

विशेष—जीवराज कासलीवाल ने लिखवाया था ।

१९९७. प्रति स० ८। पत्रस० ९५ । ले०काल स० १९५४ । पूर्ण । वेष्टनस० ४१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती भरतपुर ।

विशेष—भुसावर वालो ने भरतपुर मे चढाया था ।

१९९८. प्रति सं० ९ । पत्रस० १४१ । आ० ९×४½ इञ्च । ले०काल स० १८५५ । पूर्ण । वेष्टन स० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

१९९९. प्रति सं. १० । पत्रस० ६८ । आ० ८½×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

२०००. प्रतिसं० ११ । पत्रस० ९४ । आ० ९½×४½ इञ्च । ले०काल स० १७५१ । पूर्ण । वेष्टन स० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती खडेलवाल अलवर ।

विशेष—इस प्रति मे रचनाकाल स० १७४९ तथा लेखनकाल स० १७५१ दिया है जबकि अन्य प्रतियो मे रचना काल स० १७७९ दिया है।

२००१. प्रतिसं० १२ । पत्र स० ६६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर खडेलवाल अलवर ।

२००२. चेतावणी ग्रंथ—रामचरण । पत्र स० ७ । आ० १३ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित एव अध्यात्म । र०काल × । ले०काल स० १८३३ । पूर्ण । वेष्टन स० १०७ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—आदिभाग—

प्रथम नमो भगवत कू, फेर नमो सव साध ।
कहू एक चेतावणी सुवाणी विमल अगाध ।।
वंधे स्वाद रस भोग मू इन्द्रया तणा अरथ ।
उन जीवन के चेतवे करू चितावणी ग्रथ ।।
रामचरण उपदेश हित करू ग्रथ विस्तार ।
पड्यो प्राण भव कूप मे निकसै अर्थ विचार ।।

चौकी—दिवाना चेत रे भाई, तुज सिर गजव चलि आई ।
जरा की फौज अति भारी, करे तन लूट के स्वारी ।।

अन्तिम—रामचरण जज राम कू सत कहे समझाय ।
सुख सागर कू छोड के मत छीलर दुख जाय ।।

सोरठा—भरीयादक कलि जाय सवद ब्रह्म नाही कले ।
रामचरण रहत माहि चोरासी भट काटले ।।
चोरासी की मार भजन विना छूटे नही ।
तात हो हुशियार एह सीख सतगुरू कही ।।१२१।।
इति चेतावणी ग्रथ ।

लिखित सुनेल मध्ये प० जिनदासेन परोपकारार्थं ।।

२००३ छहढाला-टेकचन्द । पत्र स० ६ । आ० ८ X ५½ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय-चिन्तन । र०काल X । ले०काल— X । पूर्ण । वेष्टन स० ८८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर भादवा (राज.) ।

२००४. छहढाला—दौलतराम पल्लीवाल । पत्र स० १२ । आ० ८ X ५ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चिन्तन । र०काल स० १८९१ वैशाख सुदी ३ । ले०काल— X । पूर्ण । वेष्टनस० ५५२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

२००५. प्रतिसं० २ । पत्रस० १५ । आ० ७½ X ५½ इन्च । ले०काल X । पूर्ण । वेप्टन स० १३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—अत मे वारहमासा भी दिया हुआ है जो अपूर्ण है ।

२००६. प्रतिस० ३ । पत्रस० १७ । आ० ७½ X ५½ इन्च । ले०काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० ९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर छोटा वयाना ।

२००७. प्रतिसं० ४ । पत्रस० १० । आ० ९X६ इन्च । ले० काल—X । पूर्ण । वेप्टन स० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान वूदी ।

२००८. प्रतिसं० ५ । पत्रस० २८ । आ० १२X६½ इन्च । ले० काल—स० १९६५ मगसिर सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ११७ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर, फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—प० जगन्नाथ चदेरी वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

२००९. प्रति स० ६ । पत्रस० १० । आ० ८X६½ इच । ले०काल X । पूर्ण । वेप्टन स० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

२०१०. प्रति स० ७ । पत्रस० १० । आ० ९½X५½ इच । ले०काल X । पूर्ण । वेप्टन स० ८७/९२ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

२०११ प्रति सं० ८ । पत्र स० १३ । आ० ११X७ इन्च । ले०काल—स० १९४३ । पूर्ण । वेष्टनस० ९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्रीमहावीर वूदी ।

२०१२ छहढाला—बुधजन । पत्र स० २ । आ० १२X६ इच । भाषा—हिन्दी पद्य । विपय—चिंतन । र०काल स० १८५९ वैशाख मुदी ३ । ले०काल स० १८६० आसोज सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० ३६/१४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ जी टोडारायसिंह ।

विशेष—प० उदैराम ने डिग्गी मे प्रतिलिपि की थी । प्रति रचना के एक वर्ष वाद की ही है ।

२०१३ ज्ञानचर्चा— X । पत्र स० ४७ । आ० १२½X६ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल X । ले०काल स० १८५४ पौष सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० १५५४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२०१४ ज्ञान दर्पण—दीपचद कासलीवाल । पत्र स० २८ । आ० ११ X ५ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय-अध्यात्म । र०काल X । ले० काल स० १८६५ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

विशेष—रामपुरा के कोटा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२०१५ प्रतिसं० २। पत्र स० ३१। आ० ९X ६½ इञ्च। ले० काल X। अपूर्ण। वेष्टन स० ३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर नैणवा।

विशेष—३१ से आगे के पत्र नही हैं।

२०१६. ज्ञानसमुद्र—जोधराज गोदीका। पत्र स० ३४। आ० १०½X५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—अध्यात्म। र०काल स० १७२२ चैत्र बुदी ५। ले०काल X। पूर्ण। वेष्टन स० ४१/२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर भादवा (राज०)।

२०१७. प्रति स० २। पत्र स० २६। आ० १०½X५½ इञ्च। ले०काल स० १८९५ आषाढ बुदी ७। पूर्ण। वेष्टन स० ६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा।

विशेष—हेमराज अग्रवाल के सुत मोतीराम ने प्रतिलिपि की थी। कृपाराम कामा वाले ने प्रतिलिपि कराई थी।

२०१८. ज्ञानार्णव—आचार्य शुभचन्द्र। पत्रस० १४२। आ० १०¼X४¾ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—योग। र०काल X। ले० काल स० १६५० ज्येष्ठ बुदी ७। पूर्ण। वेष्टनस० ४०८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

२०१९. प्रतिसं० २। पत्रस० १४९। आ० १०X५¼ इञ्च। ले० काल X। पूर्ण। वेष्टनस० ५८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२०२०. प्रतिसं० ३। पत्रस० १५१। आ० ११½X४½ इञ्च। ले० काल स० १५९५ भादवा बुदी २। पूर्ण। वेष्टनस० १२५८। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है।

२०२१. प्रतिसं० ४। पत्र स० २०९। आ० ९X५¾ इञ्च। ले०काल स० १८१२ पौष सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन स० १०७८। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि०जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है।

२०२२. प्रति स० ५। पत्रस० ७५। आ० ११ X ५½ इञ्च। ले० काल स० १७७३ कार्तिक बुदी ४। पूर्ण। वेष्टन स० ९८५। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—तक्षकपुर मे प० कर्पूरचन्द्र ने आत्म पठनार्थ लिखा था।

२०२३. प्रतिसं० ६। पत्रस० १२०। आ० १०½X४¼ इञ्च। ले० काल स० १७९७ फागुण बुदी १३। पूर्ण। वेष्टनस० १२०८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२०२४ प्रतिसं० ७। पत्रस० ८२। आ० ११X५ इञ्च। ले० काल X। पूर्ण। वेष्टनस० ११५१। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२०२५. प्रति स० ८। पत्रस० ९७। आ० ८½X७ इञ्च। ले० काल X। अपूर्ण। वेष्टनस० ८६८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर।

विशेष—ग्र थ चिपका हुआ है। गुटका साइज मे है।

२०२६. प्रति स० ९। पत्रस० ७७-१४८। आ० ११X५½ इञ्च। ले०काल X। पूर्ण। वेष्टनस० १३०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर भरतपुर।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

२०२७. प्रति स० १० । पत्रस० २-१५ । आ० १२ X ५½ इञ्च । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—केवल योगप्रदीपाधिकार है प्रति प्राचीन है ।

२०२८. प्रतिसं० ११ । पत्रस० १३ । आ० ६½ X ४½ इञ्च । ले०काल । अपूर्ण । वेष्टन स० ४१-८ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२०२६. प्रतिस० १२ । पत्र स० ७६ । आ० ६½ X ५½ इञ्च । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२०३०. प्रति स० १३ । पत्रस० ३-४३ । आ० १०½ X ८ इञ्च । ले०काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० २१७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२०३१. प्रति स० १४ । पत्रस० ७६ । आ० ६½ X ४½ इञ्च । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टनस० १७२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

२०३२. प्रतिसं० १५ । पत्र स० १०७ । आ० १० X ५ इञ्च । ले०काल स० १७२८ कार्तिक बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—रामचन्द्र ने लक्ष्मीदास से जहानाबाद जैसिंहपुरा मे प्रतिलिपि कराई । कार्त्तिक वदी ऽ ऽ स० १८७८ मे जट्टमल्ल के पुत्र ज्ञानीराम ने वडा मन्दिर फतेहपुर मे चढाया ।

२०३३. प्रतिसं० १६ । पत्र स० ११ । आ० १० X ४½ इञ्च । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ५३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—केवल योगप्रदीपाधिकार है ।

२०३४. प्रतिसं० १७ । पत्रस० ११७ । आ० १२ X ५½ इञ्च । ले०काल स० १७५२ पूर्ण । वेष्टनस० ६५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२०३५. प्रति स० १८ । पत्र स० १२७ । आ० १२ X ६ इञ्च । ले०काल X । वेष्टन स० १७४ । प्राप्तिस्थान — दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२०३६ प्रति स० १६ । पत्र स० ११८ । आ० ११ X ५½ इञ्च । ले०काल स० १७८६ भादवा सुदी २ पूर्ण । वेष्टन स० ७१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२०३७. प्रतिसं० २० । पत्र स० ६७ । ले० काल स० १६६६ ज्येष्ठ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० २५६ । प्राप्ति स्थान दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—सिरोज मेलिखा गया था ।

२०३८. प्रतिसं० २१ । पत्र स० १३६ । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० २५६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

२०३६. प्रतिस० २२ । पत्र स० १३३ । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० २८० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

२०४०. प्रतिसं० २३ । पत्र स० ६३ । आ० १२×४ इच । ले०काल स० १५४८ । पूर्ण । वेष्टन स० १३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति—सवत् १५४८ वर्षे वैशाख सुदी २ गुरुवासरे गोपाचलगढ दुर्गे महाराजाधिराज श्री मानसिंहदेव राज्यप्रवर्त्तमाने श्री काष्ठासघे मथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्री गुणकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री यशकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री मलयकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे महासिद्धात आगम विद्यानुवाद-उद्घाटन समर्थीत तत्पडिताचार्य श्री गुणभद्रदेवा तस्य आम्नाये अग्रोत्कान्वये गगगोत्रे सादिछ ज्ञानार्णव ग्रथ लिखापित कर्मक्षयनिमित्त ।

२०४१. प्रति स० २४ । पत्र स० १६६ । आ० ५ × ४ इञ्च । ले० काल स० १७१४ फागुण सुदी १५ । पूर्ण । वे० स० १३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—चन्द्रपुरी मे महाराजाधिराज श्री देवीसिह के शासनकाल मे श्री सावला पार्श्वनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की गई थी । सिरोजपुर मध्ये पडित मदारी लिखित ।

२०४२. प्रतिसं० २५ । पत्रस० १७१ । आ० ६½×६ इञ्च । ले०काल स० १८३३ मङ्गसिर बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बू दी)

२०४३. प्रतिसं० २६ । पत्र स० ५८ । आ० ६½×४½ इञ्च । ले०काल स० १७५१ भादवा बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बू दी) ।

२०४४. प्रति स० २७ । पत्र स० ६६ । आ० ११½×५ इञ्च । ले०काल स० १६४७ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १००-७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह ।

विशेष—प्रशस्ति ।

सवत् १६४७ वर्षे आशो मासे शुक्ल पक्षे दशम्या तिथौ सोमे । छेह श्री वटाद्रा शुभस्थाने श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय मूलसघे भारती गच्छे श्री कु दकु दान्वये भ० श्री लक्ष्मीचद्र देवास्तत्पट्टे भ० श्री वीरचद्र देवास्तत्पट्टे भ० श्री ज्ञानभूषण देवास्तत्पट्टे भ० प्रभाचद्र देवास्तत्पट्टे भ० श्री वादिचद्र देवास्तेपा शिष्य ब्रह्म श्री कीर्त्तिसागरेण लिखित ।

२०४५. प्रति स० २८ । पत्र स० १५४ । आ० ११½×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स १२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पचायती दूनी (टोक) ।

२०४६. प्रति स० २६ । पत्र स० ११५ । आ० १०½×६½ इञ्च । ले०काल स० १६३४ अषाढ बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

२०४७. प्रति स० ३० । पत्र स० ३४७ । आ० ६×५½ इञ्च । ले० काल स० १८१२ मगसिर बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपथी दि० जैन मदिर नैणवा ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है ।

२०४८. प्रतिसं० ३१ । पत्र स० ११६ । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बू दी ।

विशेष—अन्तिम पत्र दूसरी प्रति का है ।

२०४९. प्रति स० ३२ । पत्र स० १३७ । आ० १०½×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बू दी

२०५०. प्रतिसं० ३३ । पत्र स० ६६ । आ० १३×७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—४२ वी सधि तक पूर्ण ।

२०५१. प्रतिसं० ३४ । पत्रस० ८३ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ११५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—८३ से आगे के पत्र नही है ।

२०५२. ज्ञानार्णव गद्य टीका—श्रुतसागर । पत्र स० ११ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—योग । र०काल × । ले० काल स० १६६१ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १२०७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—जोबनेर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२०५३. प्रति स० २ । पत्रस० ११ । आ० ११×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ४६/६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा)।

२०५४. प्रतिस० ३ । पत्रस० ६ । आ० १३½×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

२०५५. ज्ञानार्णव गद्य टीका-ज्ञानचन्द । पत्र स० × । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-योग । र०काल स० १८६० माघ बुदी २ । ले०काल स० १८६० । पूर्ण । वेष्टन स० २३६-६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

२०५६. ज्ञानार्णव गद्य टीका—पत्र स० ५ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । वि० योग । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टिप्पण सहित है ।

२०५७. ज्ञानार्णव भाषा—टेकचद । पत्रस० २६६ । आ० ११×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-योग । र०काल × । ले० काल— × । अपूर्ण । वेष्टनस० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बूंदी ।

विशेष—२६६ से आगे पत्र नही है ।

२०५८. ज्ञानार्णव भाषा— × । पत्रस० २८६ । आ० १०½×८ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । विषय-योग । र०काल × । ले०काल स०१६३० भादवा सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

२०५६ ज्ञानार्णव भाषा-लब्धिविमल गणि । पत्रस० १६४ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । र०काल स० १७२८ आसोज सुदी १० । ले० काल स० १७६८ सावण सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—दूसरा नाम लक्ष्मीचद भी है ।

२०६०. प्रति स० २ । पत्र स० ८१ । आ० १२×६ इञ्च । ले० काल स० १८१६ । पूर्ण । वेष्टन स० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर भादवा (राज०)

२०६१. **प्रति सं० ३** । पत्र स० १३६ । आ० १०×५½ इञ्च । ले० काल स० १८२१ आषाढ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मदिर करौली ।

विशेष—अतिम-इति श्री ज्ञानार्णवे योगप्रदीपाधिकारे गुण दोष विचारे आ० शुभचद्र प्रणीता-नुसारेण श्रीमालान्वये वदलिया गोत्रे भैया ताराचद स्याम्यार्चनया पडित लक्ष्मीचद्र विहिता सुखबोधनार्थ शुक्लध्यान वर्णन एकचत्वारिंशत प्रकरण ।

अग्रवाल वशीय शोभाराम सिंगल ने करौली मे बुधलाल से प्रतिलिपि कराई ।

२०६२. **प्रति सं० ४** । पत्रस० ९३ । आ० ११½× ६½ इञ्च । ले०काल १७९९ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ९३ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मन्दिर करौली ।

विशेष—किसनदास सोनी व शिष्य रतनचद ने हीरापुरी मे प्रतिलिपि की ।

२०६३. **प्रति स० ५** । पत्रस० १३५ । आ० १२½×६ इञ्च । ले०काल स १८५४ । पूर्ण । वेष्टनस० १९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, कामा ।

२०६४ **प्रतिसं० ६** । पत्र स० १४ । ले० काल स० १७६१ माघ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर वसवा ।

२०६५. **प्रति सं० ७** । पत्रस० ११२ । आ० १३×५½ इच । ले० काल स० १७८० फागुण बुदी ११ । अपूर्ण । वेष्टनस० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—१११ वा पत्र नही है ।

२०६६ **प्रति स० ८** । पत्रस० १५८ । ले०काल १७८२ अषाढ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनस० ३७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष—खोहरी मे लिखी गई ।

२०६७ **प्रति सं० ९** । पत्रस० १११ । ले० काल स० १७८४ । पूर्ण । वेष्टनस० ३७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन, पञ्चायती मदिर भरतपुर ।

२०६८. **प्रति स० १०** । पत्रस० ४९ । ले० काल स० १७८४ । अपूर्ण । वेष्टनस० ६८० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पञ्चायती मदिर भरतपुर ।

२०६९ **ज्ञानार्णव भाषा-जयचन्द छावडा** । पत्रस० २६० । आ० ११×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-योग । र०काल स० १८६९ माघ सुदी ५ । ले० काल स० १८८६ । पूर्ण । वेष्टनस० १६१५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

२०७०. **प्रति स० २** । पत्रस० ३३४ । आ० ११×७½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

२०७१. **प्रति स० ३** । पत्रस० ३०२ । आ० १४×७½ इञ्च । ले०काल—स० १९७१ माघ बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० ७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—परशादीलाल ने सिकन्द्रा (आगरे) मे प्रतिलिपि की ।

२०७२. **प्रति स० ४** । पत्र स० २६९ । आ० १३×७¾ इञ्च । ले०काल स० १९०१ द्वि सावण बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० २१२ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सौगाणी करौली ।

विशेष—माधोसिंह ने भरतपुर मे सेढूराम से प्रतिलिपि करवाई ।

२०७३. **प्रतिसं० ५** । पत्रस० ३२६ । आ० १२½×६½ इञ्च । ले०काल स० १९०७ कार्तिक सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० ९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—नगर करौली मे श्रावक चिमनलाल विलाला ने नानिगराम से प्रतिलिपि करवाई ।

२०७४. **प्रतिसं० ६** । पत्रस० ३९५ । आ० १३×७½ इञ्च । ले०काल स० १८९८ । पूर्ण । वेष्टनस० ३३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२०७५. **प्रति स० ७** । पत्रस० ९० । आ० १२¾×८ इञ्च । ले०काल स० १८९७ वैशाख बुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० ९७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर कामा ।

२०७६ **प्रति स० ८** । पत्रस० १३४ । आ० १२½×६½ इच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, छोटा वयाना ।

२०७७. **प्रतिस० ९** । पत्र स० २१२ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स०—१४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर छोटा वयाना ।

२०७८. **प्रति स० १०** । पत्रस० २८८ । ले०काल १८७५ । ज्येष्ठ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन म० ३९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

२०७९. **प्रतिस० ११** । पत्रस० २८५ । ले०काल स० १८८३ । पूर्ण । वेष्टनस० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी भरतपुर ।

२०८० **प्रति सं० १२** । पत्र स० ३५७ । आ० १२×६ इच । ले०काल—स० १८८० । पूर्ण । वेष्टन स० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

२०८१. **प्रतिस० १३** । पत्रस० ३५९ । आ० १२½×७ इञ्च । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० १६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

२०८२ **प्रतिसं० १४** । पत्र स० २९० । आ० ११×७ इञ्च । ले० काल स० १९०० आसोज सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनस० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोक) ।

विशेष—प० शिवलाल ने मालपुरा मे प्रतिलिपि की ।

२०८३. **प्रतिसं० १५** । पत्र स० ३११ । आ० १३×७½ इञ्च । ले०काल स० १९७० पौष सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक)

२०८४. **प्रतिसं० १६** । पत्र स० ३९० । आ० १०½ × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—प्रति उत्तम है ।

२१८५. **प्रतिसं० १७** । पत्र स० ४०० । आ० १०½ × ५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

२०८६. **प्रतिसं० १८** । पत्र स० १३२ । आ० १२×६ इञ्च । ले० काल० × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

२०८७. प्रतिसं० १६। पत्र स० २७१। आ० १३×६½ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

विशेष—केवल अन्तिम पत्र नही है।

२०८८. प्रतिसं० २०। पत्र स० ४४०। आ० ११×८ इञ्च। ले० काल स० १८८३ सावण बुदी ८। पूर्ण। वेष्टन स० ५१०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—कालूराम साह ने खुशाल के पुत्र सोनपाल भाँवसा से प्रतिलिपि करायी।

२१८९ तत्वत्रयप्रकाशिनी टीका—×। पत्र स० १२। भाषा-सस्कृत। विषय-योग। र० काल ×। ले० काल स० १७५२। पूर्ण। वेष्टन स० १२७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

विशेष—स० १७५२ वर्षे माह शुक्ला त्रयोदसी तिथौ लिखितमाचार्य कनक कीर्ति शिष्य पडित राय मल्लेन गुरोति। ज्ञानार्णव से लिया गया है।

२०९०. द्वादशानुप्रेक्षा-कुन्दकुन्दाचार्य। पत्र स० ६। आ० १०½×४¾ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। वेष्टन स० ६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

२०९१. प्रति स० २। पत्र स० १२। आ० १०¾×५ इञ्च। ले०काल स० १८८८ वैशाख बुदी २। वेष्टन स० ६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—माणकचन्द ने लिपि की।

२०९२. द्वादशानुप्रेक्षा-गौतम। पत्र स० ५। आ० १०×४¾ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—अध्यात्म। र० काल—×। ले०काल ×। वेष्टन स० ६६। **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

२०९३. ध्यानसार—×। पत्र स० ६। आ० ६×६ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—योग। र० काल—×। ले० काल स० १६०३। पूर्ण। वेष्टन स० १६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी।

२०९४. निर्जरानुप्रेक्षा—×। पत्र स० १। आ० ६×४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—अध्यात्म। र० काल—×। ले० काल—×। पूर्ण। वेष्टन स० २०६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

२०९५. पच्चक्खाणभाष्य—× पत्र स० २६। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—चिंतन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १८८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, चौगान बूंदी।

२०९६. परमार्थ शतक—भगवतीदास। पत्रस० ७। भाषा—हिन्दी। विषय—अध्यात्म। र० काल—×। ले०काल स० १६०६। पूर्ण। वेष्टन स० ५०४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

२०९७. परमात्मपुराण—दीपचन्द कासलीवाल। पत्र स० ३७। आ० ६×६ इञ्च।

भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—अध्यात्म । र०काल—स० १७८२ अषाढ सुदी ६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पचायती कामा ।

विशेष—दीपचद साधर्मी तेरापथी कासलीवाल ने आमेर मे स० १७८२ मे पूर्ण किया । प्रतिलिपि जयपुर मे हुई थी ।

२०६८. प्रति स० २ । पत्र स० २६ । आ० ६१/२×४१/२ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४-४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—आमेर मे लिखा गया ।

२०६६. परमात्मप्रकाश—योगीन्द्रदेव । पत्र स० १२ । आ० ११×४३/४ इञ्च । भाषा—अपभ्रश । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६० । **प्राप्तिस्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

२१००. प्रति स० २ । पत्र स० १८ । आ० ६ × ५१/२ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० स० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२१०१. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १७४ । आ० ७१/२×५ इच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२१०२. प्रतिसं० ४ । पत्र स० १५ । आ० ११३/४ × ५१/२ इच । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

२१०३. प्रतिसं० ५ । पत्र स० २३ । आ० ६१/२×४१/२ इञ्च । ले० काल स० १८२८ ज्येष्ठ सुदी १ । वेष्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

२१०४. प्रतिस० ६ । पत्र स २३ । आ० ६३/४×४१/२ इञ्च । ले० काल स० १८२८ ज्येष्ठ सुदी १३ । वे० स० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—रामपुरा मे प्रतिलिपि हुई ।

२१०५. प्रतिसं० ७ । पत्र स० ४ । आ० १२१/२×६ इच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

२१०६. प्रतिस० ८ । पत्र स० २० । आ० ११×४१/२ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनदन स्वामी, बूदी, ।

विशेष—३४३ दोहे है ।

२१०७. परमात्म प्रकाश टीका—पाण्डवराम । पत्र स० १४३ । भाषा—सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल स० १७५० वैशाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

२१०८. प्रतिसं० २ । पत्रस० १७२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

२१०९. परमात्मप्रकाश टीका— × । पत्रस० १५५ । आ० १०×४१/२ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल स० १७६४ मगसिर सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० १२१७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२११० परमात्मप्रकाश टीका—ब्रह्मदेव । पत्र स० १७५ । आ० १२ × ८ इञ्च । भाषा—अपभ्र श सस्कृत एव हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल स० १८६१ द्वि० चैत्र सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४-१७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बड़ा बीसपथी दौसा ।

विशेष—दौलतराम की हिन्दी टीका सहित है ।

देवगिरी निवासी उदैचन्द लुहाडिया ने दौसा मे प्रतिलिपि की थी ।

२१११. परमात्मप्रकाश टीका— × । पत्रस० १८० । आ० ६½ × ३ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० १२६२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अति प्राचीन है । अक्षर मिट गये हैं ।

२११२. परमातमप्रकाश टीका—ब्र. जीवराज । पत्रस० ३५ । आ० ११ × २ इञ्च । र०काल स० १७६२ । ले०काल स० १७९२ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५३४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—वखतराम गोधा ने चाटसू मे प्रतिलिपि की थी । टीका का नाम वालावबोध टीका है ।

अन्तिम प्रशस्ति—

श्रावक कुल मोट मुजस, खण्डेलवाल वखाण ।
साहव्रडा साखा वडी, भीम जीव कुल माण ।।१।।
राजै तसु सुत रेखजी, पुण्यवत सुप्रमाण ।
ताको कुल सिंगार, सुत जीवराज सुवजाण ।।२।।
पुर नोलाही मे प्रसिद्ध राज सभा को रूप ।
जीवराज जिन धर्म मे, समझै आतमरूप ।।३।।
करि आदर वहु तिन कह्यो, श्री ध्रमसी उयभाव ।
परमातम परकास को, वार्त्तिक देहु वनाय ।।४।।
परमातम परकास सो सास्त्र अथाह समुद्र ।
मेठा अर्थ गम्भीर भरिण, दलै अग्यान दलिद्र ।।५।।
सुगुरु ग्यान श्रैवक सजे पाये कीये प्रतद्य ।
अर्थ रत्न धरि जतनमू , देखो परखौ पद्य ।।६।।
सतरैसै वासठि समै, पखयजु सुरणसार ।
परमातम परकास कौ, वार्त्तिक कह्यो विचारि ।।७।।
कीरति सु दर सुभकला, चिरजीव जीवराज ।
श्री जिन सासन सानवे, सुधर्म सुभिखसुराज ।।८।।
इति श्री योगीन्दुदेव, विरचिते तीनसौपैंतालीस
दोहा पद प्रमाण, परमातम प्रकास को वालाबोध ।
सम्पूर्ण सवत् १७९२ वर्षे माह वुदी ५ दसकत
वखतराम गोधा चाटसू मध्ये लिखित ।।

२११३. प्रति स० २ । पत्रस० ५१ । आ० ६½ × ६½ इन्च । ले०काल स० १८२७ । पूर्ण । वेष्टनस० ५५६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२११४. प्रति स० ३। पत्र स० ७४ । आ० ६×६ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)

२११५. प्रति स० ४ । पत्र स० ५–६६ । आ० १०×४½ इन्च । । ले० काल स० १८२६ । अपूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक)

विशेष—सवाईजयपुर मे आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई । जर्ना गुणगर्भान ने ग्र थ मन्दिर मे पधराया स० १८२८ मे प० देवीचन्द ने चढाया ।

२११६. परमात्मप्रकाश टीका— × । पत्र स० १२३ । आ० १० × ४½ इन्च । भाषा—अपभ्र श-सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल स० १५२८ वैशाख सुदी २ । अपूर्ण । वेष्टन स० २७ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—१२२ वा पत्र नही है । टीका ४४०० श्लोक प्रमाण बताया गया है । गोपाचल मे श्री कीर्तिसिंहदेव के शासन काल मे प्रतिलिपि हुई ।

२११७. परमात्मप्रकाश भाषा—पाडे हेमराज । पत्र स० १७४ । आ० ८½×६इन्च । भाषा—हिन्दी । विपय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल स० १८८६ । पूर्ण । वेप्टन स० २४६-१०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियोका डूगरपुर ।

२११८. परमात्मप्रकाश भाषा— × । पत्रस० १०२ । आ० १३×६½ इन्च । भाषा—हिन्दी । विपय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६/४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर भादवा (राज०)

विशेष—अन्तिम पत्र नही हैं ।

२११६ परमात्म प्रकाश भाषा— × । पत्र स० १–१४० । आ० १०½×४½ इन्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

२१२०. परमात्मप्रकाश भाषा— × । पत्रस० ३४ । आ० ६×४ इन्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विपय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेप्टन स० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिह (टोक)

रचयिता-वृन्दावनदास लिखा है ।

२१२१. परमात्म प्रकाश भाषा—बुधजन । पत्रस० ५४ । भाषा—हिन्दी । विपय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हुण्डावालो का डीग ।

२१२२. परमात्मप्रकाश वृत्ति— × । पत्रस० ५६–१७८ । आ० ११½×३½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति प्राचीन है। श्लोक स० ४००० है।

२१२३. परमात्मप्रकाश भाषा—दौलतराम कासलीवाल। पत्र स० २६५। आ० १०½×६ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—अध्यात्म। र०काल ×। ले०काल स० १८९९ पौष बुदी ५। पूर्ण। वेष्टनस० १२६४। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२१२४. प्रतिसं० २। पत्रस० १९२। आ० ११×५ इञ्च। ले०काल स० १८८२ मङ्गसिर सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन स० ७५। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर।

विशेष—ब्रह्मदेव की सस्कृत टीका का हिन्दी गद्य मे अनुवाद है।

२१२५. प्रतिसं० ३। पत्र स० १४५। आ० १२½×७½ इञ्च। ले०काल स० १९०४ फागुण सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन स० ५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती वयाना।

विशेष—ग्रथ श्लोक स० ६८९० मूलग्रथकर्ता—आचार्य योगीन्दु टीकाकार-ब्रह्मदेव (सस्कृत) लालाजी माधोसिहजी पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी।

२१२६. प्रतिसं० ४। पत्र स० १४६। आ० १२×७½ इञ्च। ले० काल स० १९३४। पूर्ण। वेष्टन स० १३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर छोटा (वयाना)।

२१२७. प्रतिसं० ५। पत्र स० २०२। आ० ११½×५½ इञ्च। ले० काल स० १९२७ पौष सुदी १। पूर्ण। वेष्टनस० २०/९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती अलवर।

२१२८. प्रति स० ६। पत्र स० १७६। ले० काल स० १९५६ ज्येष्ठ बुदी १। पूर्ण। वेष्टन स० ७८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर अलवर।

२१२९. प्रति सं० ७। पत्रस० १९१। आ० १०½×५¼ इञ्च। ले०काल स० १८८८ मगसिर सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन स० ७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक)

विशेष—मालपुरा मे श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की गई।

२१३०. प्रति सं० ८। पत्रस० ११८। आ० १२×८½ इञ्च। ले०काल स० १८८२ मगसिर सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन स० ११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा।

विशेष—चिम्मनलाल ने दौसा मे प्रतिलिपि की।

२१३१. प्रति सं० ९। पत्र स० २८७। आ० १२½ × ८ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १३२ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी।

२१३२. प्रतिसं० १०। पत्र स० ९१–१२७। आ० ११×८ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २९७। **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

२१३३. प्रतिसं० ११। पत्र स० १८४। आ० ११½×८ इञ्च। ले० काल स० १८९४। पूर्ण। वेष्टन स० १५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक

विशेष—प्रोहित रामगोपाल ने राजमहल मे प्रतिलिपि की।

२१३४. प्रति स० १२। पत्रस० ५०७। ले०काल स० १८८६। पूर्ण। वेष्टनस० २९६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—अक्षर काफी मोटे हैं।

२१३५. प्रतिसं० १३ । पत्र स० १६० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

२१३६. परमात्मस्वरूप— × । पत्र स० २ । आ० १०×४ इन्च । भापा—सस्कृत । विपय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—२४ पद्य है ।

२१३७. पाहुड दोहा—योगचन्द्र मुनि । पत्र स० ८ । आ० ८½×४½ इन्च । भापा—अपभ्र श । विपय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वडा वीसपथी दौसा ।

२१३८. प्रतिक्रमण— × । पत्र स० ४ । आ० ६×४ इन्च । भापा—प्राकृत । विपय—चिन्तन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ४५६/२८० । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

२१३६ प्रतिक्रमण— × । पत्र स० १६ । भापा—प्राकृत । विपय—चिन्तन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ४५/४१५ **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

२१४० प्रतिक्रमण— × । पत्रस० २३ । आ० ११ ×५ इन्च । भापा—सस्कृत-प्राकृत । विपय—चिन्तन । र०काल × । ले० काल स० १८६१ । पूर्ण । वेष्टनस० १७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान वू दी ।

विशेष—सस्कृत टीका सहित है ।

२१४१. प्रतिक्रमण— × । पत्रस० १३ । आ० १०×८ इन्च । भापा—हिन्दी (गद्य) । विषय – धर्म । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २७ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

२१४२. (वृहद्) प्रतिक्रमण— × । पत्रस० ४० । आ० ११×५ इन्च । भापा—सस्कृत । विपय—चिन्तन । र०काल× । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११५२ । **प्राप्ति स्थान**-भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२१४३ (वृहद्) प्रतिक्रमण— × । पत्रस० १७ । आ० १० × ४½ इन्च । भापा—प्राकृत । विषय—चितन । र०काल × । ले०काल स० १५७१ । पूर्ण । वेप्टन स० ६२१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

२१४४. (वृहद्) प्रतिक्रमण— × । पत्रस० ६ से २० । आ० १०½×५ इन्च । भापा—प्राकृत-सस्कृत । विपय—चितन । र०काल × । ले० काल स० १८८१ । पूर्ण । वेष्टनस० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—हीरानन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

२१४५ (वृहद्) प्रतिक्रमण । पत्र स० ५-२० । आ० १२×५ इन्च । भापा—प्राकृत । विपय—चिन्तन । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १७१-४१७ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

२१४६. प्रतिक्रमण पाठ— × । पत्र स० ८ । आ० ८×६½ इञ्च । भाषा–प्राकृत-हिन्दी । विषय—चितन । र०काल × । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन स० १५०–२७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

२१४७. प्रतिक्रमण—गौतमस्वामी । पत्रस० १८० । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल स० १५९९ चैत सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनस० ११ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति प्रभाचन्द्रदेव कृत सस्कृत टीका सहित है ।

२१४८ प्रतिसं० २ । पत्रस० ९९ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति पृष्ठ १० पक्ति एव प्रति पक्ति ३५ अक्षर हैं ।

२१४९. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ६६ । आ० ११×४½इञ्च । ले० काल स० १७२६ । पूर्ण । वेष्टनस० ३१७/४१४ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—श्री प्रभाचन्द्र कृत सस्कृत टीका सहित है । प्रति जीर्ण है ।

अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति श्री गौतम स्वामी विरचित वृहत् प्रतिक्रमण टीका श्रीमत् प्रभाचन्द्रदेवेन कृतेय ।

सवत् १७२६ कार्तिक वदि ३ शुभे श्री उदयपुरे श्री सभवनाथ चैत्यालये राजा श्रीराजसिंह विजयराज्ये श्री मूलसघे सरस्वती गच्छे वलात्कार गणे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक पद्मनदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक सकलकीर्त्ति तत्पट्टे भट्टारक भुवनकीर्त्ति' श्री कल्याणकीर्त्ति शिष्य त्रिभुवनचन्द्र पठनार्थं लिपिकृत ।

२१५०. प्रतिक्रमण— × । पत्रस० ३१ । आ० १० × ६ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–चितन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—१७ वा पत्र नही है ।

२१५१. प्रतिक्रमण —× । पत्रस० १७ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—चितन । र०काल × । ले०काल स० × । अपूर्ण । वेष्टन स० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बून्दी) ।

२१५२. प्रतिक्रमण टीका—प्रभाचन्द्र । पत्रस० २७ । भाषा—सस्कृत । विषय—आत्म चितन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० । २७ । ४१६ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

२१५३. प्रतिक्रमण सूत्र—× । पत्र स० ७ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय–चितन । र० काल × । ले०काल स० १७०३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५४३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

२१५४. प्रतिक्रमण सूत्र—× । पत्रस० २ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—चितन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४९५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२१५५. प्रतिक्रमण सूत्र—×। पत्र स० ३। आ० १०$\frac{3}{4}$ × ५ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—चिंतन। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४६७। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर।

विशेष—गुजराती टव्वा टीका सहित है।

२१५६. प्रतिक्रमण सूत्र—×। पत्र स० २०। आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—आत्मचिंतन। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २७८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना बूंदी।

२१५७. प्रवचनसार—कुंदकुंदाचार्य। पत्र स० ९२। भाषा—प्राकृत। विषय—अध्यात्म। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३१८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

२१५८. प्रवचनसार टीका—प० प्रभाचन्द। पत्र स० ५०। आ० १३ × ६ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—अध्यात्म। र०काल ×। ले० काल स० १६०५ मगसिर सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन स० ८८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)।

प्रशस्ति—श्री सवत् १६०५ वर्षे मगसिर सुदी ११ रवौ। अद्येह श्री वाल्मीकपुर शुभस्थाने श्री मुनिसुव्रत जिन चैत्यालये श्री मूल सघे श्री सरस्वतीगच्छे श्री बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदि देवास्तत्पट्टे श्री देवेन्द्रकीर्ति देवास्तत्पट्टे भ० श्री विद्यानंदि देवास्तत्पट्टे भ० श्री मल्लिभूषण देवास्तत्पट्टे भ० श्री लक्ष्मी चन्द्र देवास्तत्पट्टे भ० वीरचन्द देवास्तत्पट्टे भ० ज्ञानभूषण गच्छाधिराज तदन्वये आचार्य श्री सुमतिकीर्तिना कमक्षयार्थ स्वपरोपकाराय प्रवचनसार ग्रंथोय लिखित। परिपूर्ण ग्रंथ आ० श्री रत्नभूषणाना मिद। (प्रति जीर्ण है)।

विद्यानदीश्वर देव मल्लि भूषणसद्गुरु।
लक्ष्मीचद च वीरेन्दु वदे श्री ज्ञान भूषण ॥ १ ॥

२१५९. प्रवचनसार टीका—×। पत्र स० ११७। आ० ११ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—प्राकृत सस्कृत। विषय—अध्यात्म। र०काल—×। ले०काल स० १४६४ कार्तिक बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० १६२५। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२१६०. प्रवचनसार टीका—×। पत्रस० १२७। आ० ८$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—अध्यात्म। र०काल ×। ले०काल स० १७४४ मगसिर सुदी १२। पूर्ण। वेष्टनस० ४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक)।

२१६१. प्रवचनसार भाषा—×। पत्रस० १४९। आ० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—हिन्दी (गद्य)। विषय—अध्यात्म। र०काल ×। ले०काल स० १८५७ वैशाख सुदी ११। पूर्ण। वेष्टनस० ९४। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा।

विशेष—तेरापथी चिमनराम ने प्रतिलिपि की थी।

२१६२. प्रवचनसार भाषा—×। पत्रस० १४९। आ० १२ × ६ इच। भाषा—हिन्दी (गद्य)। विषय—अध्यात्म। र०काल ×। ले० काल स० १७१७ आसोज सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन स० ६०/४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर भादवा (राज०)।

विशेष—श्री विमलेशजी ने डूगरसी से प्रतिलिपि करवायी।

२१६३. प्रवचनसार भाषा—×। पत्रसं० २०१। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा—हिन्दी (गद्य)। विषय अध्यात्म। र०काल ×। ले० काल स० १७४३। पूर्ण। वेष्टन स० ४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

२१६४. प्रवचनसार भाषा—×। पत्रसं० १७२ आ० ६½ × ४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—अध्यात्म। र०काल ×। ले०काल ×। वेष्टन सं० १२७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूदी।

२१६५. प्रवचनसार भाषा वचनिका—हेमराज। पत्रसं० १७७। आ० ११ × ६ इञ्च। भाषा—हिन्दी (गद्य)। विषय—अध्यात्म। र० काल स० १७०६ माघ सुदी ५। ले० काल स० १८८५। वेष्टनस० ११७३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२१६६. प्रतिसं० २। पत्रसं० २२०। आ० १२×५½ इच। ले०काल स० १८८६ आपाढ बुदी ५। पूर्ण। वेष्टनस० २६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२१६७. प्रतिसं० ३। पत्र स० २८३। आ० १०½×७½ इञ्च। ले० काल स० १६४१ अगहन बुदी ६। पूर्ण। वेष्टनस० २६/६३। **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मन्दिर अलवर।

२१६८. प्रतिसं० ४। पत्र स० ३५४। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २७/६३। **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मन्दिर अलवर।

२१६९. प्रतिसं० ५। पत्र स० १७०। आ०१२×५½ इञ्च। ले० काल स० १८४० माघ सुदी १३। अपूर्ण। वेष्टन स० ५२। **प्राप्ति स्थान**—तेरहपथी दि० जैन मन्दिर नैणवा।

विशेष—बीच बीच मे कुछ पत्र नही है। गगाविष्णु ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी।

२१७०. प्रतिसं० ६। पत्र स० २८२। आ०१२×६ इञ्च। ले०काल १७८५ पूर्ण। वेष्टन स० ५४-३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

विशेष—रामदास ने प्रतिलिपि की थी।

२१७१. प्रतिसं० ७। पत्र स० १६७ ।आ०१४×५½ इच। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १३२। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल टोक।

२१७२. प्रतिसं० ८। पत्र स० २३०। आ० १२×५½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६२-५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीस पथी दौसा।

विशेष—पत्र १६० तक प्राचीन प्रति है तथा आगे के पत्र नवीन लिखवा कर ग्रथ पूरा किया गया है।

२१७३. प्रतिसं० ९। पत्र सख्या १४४। आ० ११ × ७ इञ्च। लेखन काल स० १८३८। पूर्ण। वेष्टन स० २१२। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर।

२१७४. प्रतिसं० १०। पत्रस० १८०। आ० १२½×६ इञ्च।। ले० काल स० १७८८। पूर्ण। वेष्टन स० ११६/१७। **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

२१७५. प्रतिसं० ११ । पत्रस० ३०१ । आ० ११ × ४¾ इञ्च । ले०काल स० १८५६ । पूर्ण । वेष्टनस० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—स० १८५६ भादवा कृष्ण ६ रविवार उदयपुर मध्येसार जीवणदास खडेलवाल के पठनार्थ लिख्यो ।

२१७६. प्रतिसं० १२ । पत्रस० १६५ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर महावीर स्वामी बूदी ।

२१७७. प्रति स० १३ । पत्रस० २०६ । ले०काल स० १७२४ । पूर्ण । वेष्टनस० ३१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

२१७८. प्रतिस० १४ । पत्र स० १६८ । ले०काल स० १७२४ । पूर्ण । वेष्टनस० ३१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—हेमराज ने ग्र थ कामागढ मे पूर्ण किया । साहु अमरचन्द वाकलीवाल ने ग्र थ लिखाकर भरतपुर के मन्दिर मे चढाया था ।

२१७९. प्रतिसं० १५ । पत्र स० १४८ । आ० १३ × ६ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २० । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर दीवान चेत्तनदास पुरानी डीग ।

२१८०. प्रति स० १६ । पत्रस० २५१ । आ० १० × ८½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

२१८१. प्रति स० १७ । पत्र स० २५५ । आ० ११¾ × ५¾ इञ्च । ले० काल स० १८७२ फागुन सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—करौली मे प्रतिलिपि हुई ।

२१८२. प्रतिसं० १८ । पत्र स० २१३ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले० काल स० १७९५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

२१८३. प्रतिसं० १९ । पत्र स० १४८ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १७१९ चैत्र सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० २४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—कामावती नगर मे प्रतिलिपि हुई ।

२१८४. प्रति स० २० । पत्रस० १७६ । ले०काल स० १७४६ आसोज सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० २४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२१८५. प्रतिसं० २१ । पत्रस० १६५ । ले० काल स० १७५२ ज्येष्ठ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० २४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२१८६. प्रति स० २२ । पत्रस० २७१ । ले०काल—स० १७८२ ज्येष्ठ बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० २४६ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

२१८७. प्रति स० २३ । पत्रस० २८६ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १७५४ आसोज सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२१८८. प्रतिसं० २४ । पत्र स० २०६ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १७५४ । पूर्ण । वेष्टन स० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२१८९. प्रति सं० २५ । पत्र स० ७० । आ० १२×६ इच । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२१९०. प्रतिसं० २६ । पत्रस० २२६ । आ० ११×७½ इच । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मदिर कामा ।

२१९१. प्रतिसं० २७ । पत्र स० २१० । आ० १२½×७½ इच । ले० काल स० १९२९ फागुणबुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर पचायती कामा ।

विशेष—प्राकृत मे मूल तथा सस्कृत मे टीका दी हुई है । चूरामन जी पोदार गोत्र वनावरी वयाना वालो ने ग्र थ की प्रतिलिपि करवायी । व्यास स्योबक्ष ने अखैगढ मे प्रतिलिपि की ।

२१९२. प्रवचनसार भाषा—हेमराज । पत्रस० ९१ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय अध्यात्म । र०काल स० १७२४ आषाढ सुदी २ । ले० काल स० १८८५ भादवा बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन स० १९१ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर वडा बीस पथी दौसा ।

विशेष—प्रतिलिपि दौलतराम निरमैचद ने की थी । इसको बाद मे काट दिया गया है ।

२१९३. प्रति सं० २ । पत्र स० २२९ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग।

२१९४. प्रति स० ३ । पत्रस० ४१ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर आदिनाथ बू दी ।

विशेष—ग्र थ जीर्ण एव पानी से भीगा हुआ है ।

२१९५. प्रतिसं० ४ । पत्रस० २११ । आ० ११½ × ७½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । प्राप्ति स्थान—म० पचाय दि० जैन मंदिर वयाना ।

२१९६. प्रवचनसार वृत्ति-अमृतचद्र सूरि । पत्रस० २-६६ । आ० ११½ × ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

विशेष –प्रथम पत्र नही है ।

२१९७ प्रति स० २ । पत्रस० ७१ । ले०काल १८०३ । पूर्ण । वेष्टन स० १९ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर वडा पचायती डीग ।

२१९८. प्रवचनसार वृत्ति × । पत्रस० १४३ । आ० १२ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल स० १५९० । अपूर्ण । वेष्टन स० २४० । प्राप्ति स्थान—अग्रवाल दि० जैन मदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रथम पत्र नही हैं ।

२१९९. प्रवचनसारोद्धार—× । पत्र स० १४८ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले०काल स० १६६९ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर दवलाना बू दी ।

विशेष—इति श्री प्रवचन सारोद्धार सूत्र ।

२२०० प्रायश्चित पाठ—अकलंकदेव । पत्रस० ८-२७ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चिंतन । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २६६।१५७ **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर ।

२२०१. प्रायश्चित विधि—पत्रस० ५ । भाषा—सस्कृत । विपय-चिंतन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मदिर भरतपुर ।

२२०२. प्रायश्चित समुच्चय—नंदिगुरु । पत्र स० १२ । आ० १२ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विपय—चिंतन । र०काल × । ले०काल स० १६८० पूर्ण । वेष्टन स० २७०/२५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सभवनाथ उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६८० वर्षे पौष वदि रवौ श्री मूलसघे सरस्वती गच्छे वलात्कार गणे भट्टारक श्री वादिभूषण तत्पट्टे भट्टारक रामकीर्ति विजयराज्ये ब्रह्मरायमल्लाय आहार भय भैपज्य शास्त्र दान वितरणैक तत्पराणा अनेक जीर्णनौतन मासादोद्धरणधीराना जिन विम्व प्रतिष्ठाद्यनेक धर्म कर्म करं णेसक् चिन्ताना । कोट नगरे हुवडज्ञातीय वृहच्छाखो सघपति श्री लक्ष्मणाख्याता भार्या ललतादे द्वितया भा० स० शृगार दे तपोभ्रता स० जिनदास भा० स० मोहण दे **स० काहानजी भ० स० कर्पूरदे स०** मानजी भा० सकोपवदे द्वि भा० स० मनरगदे स० भीमजी भार्या स० भक्तादे एतै स्वज्ञानावर्ण कर्म क्षयार्थं प्रायश्चित ग्रथ लिखाप्य दत्त ।

२२०३. प्रति स० २ । पत्र स० १-१०८ । आ० ११½ × ४½ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन स० ७५७ अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

२२०४. बारह भावना— × । पत्र स० ४ । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विपय - चिंतन । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

२२०५. ब्रह्मज्योविस्वरूप—श्री धराचार्य । पत्र स० ५ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० २९५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

२२०६. भवदीपक भाषा—जोधराज गोदीका—पत्रस० २१४ । आ० १०½ × ७½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—योग शास्त्र । र०काल × । ले०काल—स० १९४४ फागुण सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मदिर इन्दरगढ (कोटा) ।

२२०७. भव वैराग्यशतक— × । पत्रस० ५ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विपय—चिंतन । र०काल × । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ३७६-१४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियो का डूगरपुर ।

२२०८. भगवद्गीता—× । पत्रस० ६८ । भापा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल × । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टन स० ३० । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

२२०६ **भावदीपिका**— पत्रस० १७७ । भाषा–हिन्दी । विषय-अध्यात्म । र०काल × । ले०काल— × । अपूर्ण । वेष्टन स० १६ । **प्राप्ति स्थान**–पचायती दि० जैन मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

२२१०. **मोक्षपाहुड—कुंदकुदाचार्य** । पत्रस० ३८ । आ० १०×६ इच । भाषा-प्राकृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल स० १८१२ । पूर्ण । वेष्टन स० २४१–६५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

२२११. **योगशास्त्र—हेमचन्द्र** । पत्रस० ४१ । आ० १०×४½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय–योग । र० काल × । ले०काल—स० १५८७ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६४ । **प्राप्ति स्थान**— भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

सवत् १५८७ वर्ष आषाढ सुदी ११ रवौ । आगमगच्छे श्री उदय सूरिभ्यो नम प्रवर्त्तनी लडाधइ श्री गणि शष्याणी जयश्रीगणि लक्ष्यापित पठनार्थं प्रक्षेविकोवादवी ।

२२१२. **प्रति सं० २** । पत्रस० ७–१४ । आ० १०×४½ इन्च । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० २१५ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

विशेष—इसमे द्वादश प्रकाश वर्णन है । यहा द्वादश प्रकाश मे पचम प्रकाश है । अतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति परमहित श्री कुमारपाल भूपाल विरचिते शुड्यूपिने आचार्य श्री हेमचन्द विरचिते अध्यात्मोय-निपन्नामि सजात पट्टवधे श्री योगशास्त्रे द्वादश प्रकाश समाप्त ।

२२१३. **प्रतिसं० ३** । पत्रस० १८ । आ० १०½×४½ इन्च । ले०काल स० १५४५ वैसाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ३०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

विशेष—सवत् १५४५ वर्षे वैशाख सुदी २ शुक्ले । श्रीमति मडन दुर्ग नगरे । महोपाध्याय श्री आगन मडन । शिष्येण लिखायिता सा० शिवदास । सघविपि सहजलदे कृते ।

२२१४ **प्रतिसं० ४** । पत्रस० १० । आ० १०½×४½ इच । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० ७०७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२२१५. **योगसार—योगीन्द्रदेव** । पत्रस० ७ । आ० १२×५½ इच । भाषा-अपभ्रंश । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल—स० १८३१ चैत सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—मिति चैत्र सुदी १ स वत १८३१ का लिखित आचार्य श्री राजकीर्ति पडित सवाई रोमण भैंसलाणा मध्ये ।

२२१६. **प्रतिसं० २** । पत्रस० १७ । आ० ११×४½ इन्च । ले० काल० स० १६६३ माह बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० १४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा।

विशेष—लिखायत श्री १०८ आचार्य कृष्णदास वाचन हेतवे लिखित सेवग आज्ञाकारी सुलतान ऋषि कर्णपुरी स्थाने ।

२२१७. **प्रतिसं० ३** । पत्रस० ११ । ले० काल स० १७५५ आसोज सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

विशेष—कामा मे प्रतिलिपि हुई ।

२२१८. प्रतिसं० ४। पत्र स० ३०। आ० ११ × ५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४२६/२२६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन स भवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

अतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इनि श्री योगसार भाषा टब्बा अर्थ सहित सम्पूर्ण।

२२१९. प्रतिसं० ५। पत्र स० २४। आ० १०½×५½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १६२-७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

२२२०. प्रति सं० ६। पत्रस० ९। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ४७८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

२२२१. योगसार वचनिका— ×। पत्र स० १७। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी (गद्य)। विपय—योग। र० काल ×। ले० काल स० १८३२। पूर्ण। वेष्टन स० २९२-११५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

विशेष—नौगावा नगर मे आदिनाथ चैत्यालय मे ब्रह्म कणोफल जी ने प्रतिलिपि की।

२२२२. योगेन्दु सार—बुधजन। पत्रस० ७। भाषा—हिन्दी। विपय—योग। र० काल १८९५। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० २२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर।

२२२३. वज्रनाभि चक्रवर्ति की वैराग्यभावना—×। पत्रस० ८। आ० १०×४¾ इच। भापा—हिन्दी। विषय—चिंतन। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ५८४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर।

विशेष—निम्न रचनाएँ और है—वैराग्य सज्झाय छाजू पवार (हिन्दी) विनती देवाब्रह्म।

२२२४. वैराग्य वर्णमाला ×। पत्रस० १०। आ० ८×६½ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—वैराग्य चिंतन। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर।

विशेष—अन्त मे **सज्जन चित्त वल्लभ** का हिन्दी अर्थ दिया हुआ है।

२२२५. वैराग्यशतक। पत्रस० ९। भापा—प्राकृत। विषय—वैराग्य। र० काल ×। ले० काल स० १६५७ पौष वदी १४। पूर्ण। वेष्टनस० ६४९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

२२२६. प्रतिसं० २। पत्र स० ६। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ५११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर।

विशेष—टीका सहित है।

२२२७. वैराग्य शतक-थानसिंह ठोल्या। पत्र स० ३०। आ० १०½×६¾ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विपय—चिंतन। र० काल स० १८४९ वैशाख सुदी ३। ले० काल स० १८४९ जेष्ठ वदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० १६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

२२२८. शान्तिनाथ की बारह भावना ×। पत्र स० १२। आ० १३ × ७ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विपय—चिंतन। र०काल ×। ले० काल स० १९४४ चैत बुदी २। पूर्ण। वेष्टन स० ४३।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूंदी।

विशेष—दसकत छोगालाल लुहाडया आकादो छे।

२२२९. **शील प्राभृत—कुन्दकुन्दाचार्य।** पत्र स० ४। आ० १०½×५ इच। भाषा—प्राकृत। विषय – अध्यात्म। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स २५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर।

विशेष—प्रारभ मे लिंग पाहुड भी है।

२२३०. **प्रति स० २।** पत्रस० ४। आ० १२¾×६ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ३११। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

२२३१. **श्रावक प्रतिक्रमण—×।** पत्रस० १३। आ० १०×७ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—चिन्तन। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १७७-१९३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)।

२२३२. **श्रावक प्रतिक्रमण—×।** पत्र स ३-१५। आ० ९×४ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-चिंतन। र०काल ×। ले०काल स० १७४५ माघ बुदि ५। अपूर्ण। वेष्टन स० २७१। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर, दबलाना बूंदी।

विशेष—मूल के नीचे हिन्दी मे अर्थ दिया है।

२२३३. **श्रावक प्रतिक्रमण—×।** पत्र स० ७। आ० १०×४ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—चिंतन। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५९/८९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेष—प्रति जीर्ण है।

२२३४. **श्रावक प्रतिक्रमण—×।** पत्र स० ६। आ० १३½×६ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—चिंतन। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ४०६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

२२३५. **षट्पाहुड—आ० कुन्दकुन्द।** पत्र स० ४८। आ० १०½×९½ इञ्च। भाषा—विषय—अध्यात्म। र०काल ×। ले० काल स० १८८६। पूर्ण। वेष्टन स० ३६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

२२३६. **प्रति स० २।** पत्र स० २२।। ले० काल स० १७९७ मार्ग सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन स० २४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

२२३७ **प्रतिसं० ३।** पत्र स० १६। आ० १०½×९½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

२२३८. **प्रतिसं० ४।** पत्रस० २८। आ० ११½ × ४¾ इञ्च। ले०काल स० १७२३। वेष्टन सं० १६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—सिरूजशहर मध्ये पण्डित विहारीदास स्वपठनार्थं स० १७२३ वर्षं भादु सुदी ३ दिने।

२२३९. **प्रतिसं० ५।** पत्रस० २८। आ० १२½ × ३ इञ्च। ले०काल स० १८१६ पौष सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन स० ४५/४३। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर भादवा (राज०)।

२२४०. **प्रति स० ६** । पत्रस० ५८ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १७५० । पूर्ण । वेष्टनस० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२२४१. **प्रति स० ७** । पत्रस० ६ । आ० १२½×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मद्रिर दीवानजी कामा ।

२२४२. **प्रतिसं० ८** । पत्र स० ७४ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२२४३. **प्रतिसं० ९** । पत्र स० २३ । ले० काल स० १७२१ पौप सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—सागानेर मे प्रतिलिपि हुई । ग्रन्थाग्रन्थ ६०८ मूलमात्र ।

२२४४. **प्रतिसं० १०** । पत्र स० ३७ । ले० काल स० १७१२ मगसिर बुदी । पूर्ण । वेष्टन स० १५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—देहली मे शाहजहा के शासनकाल मे सुन्दरदास ने महात्मा दयाल से प्रतिलिपि कराई ।

२२४५ **प्रतिसं० ११** । पत्र स० २३ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२२४६. **प्रतिस १२** । पत्रस० ३१ । आ० १०½ × ४½ इच । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २६७ । **प्राप्ति स्थान**—*दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।*

२२४७. **प्रति स० १३** । पत्र स० ९७ । आ० ११¾ × ४¾ इच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२२४८. **प्रतिसं० १४** । पत्र स० ५४ । आ० ११ × ६ इञ्च । ले० काल स० १८५१ चैत्र सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १००/३९ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इ दरगढ (कोटा) ।

विशेष—लिखत ब्राह्मण अमेदावास वान आत्रदा का । लिखाइत बाबाजी ज्ञान विमलजी तत् शिष्य ध्यानविमलजी लिखत इ द्रगढ मध्ये ।

२२४९. **प्रति स० १५** । पत्र स० ६२ । आ० १२×४½ इञ्च । ले० काल स० १७६५ चैत सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ९७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

विशेष—सस्कृत टीका सहित है ।

२२५०. **प्रति स० १६** । पत्र स० ६७ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल स० १७१७ मगसिर बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ बूदी ।

विशेष—प० मनोहर ने लिखा ।

२२५१. **प्रति स० १७** । पत्र स० ६२ । आ० ९ × ६ इच । ले० काल स० १७९६ जेठ सुदी ८ । पूर्ण। वेष्टन स० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

२२५२. **प्रति सं० १८** । पत्र स० ३१ । आ० ८½ × ४ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

२२५३. **षटपाहुड टीका**—× । पत्र स० ३-७३ । आ० ११×७ इन्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—अध्यातम । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बू दी ।

२२५४. **षट्पाहुड टीका**—। पत्र स० ६४ । आ० १०×५$\frac{3}{4}$ इन्च । भापा—हिन्दी । विपय—अध्यातम । र० कारा × । ले० काल स० १७८६ । पूर्ण । वेष्टन स० १४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

लेखक प्रशस्ति—सवत १७८६ का वर्षे माह वुदी १३ दिने । लिखत जती गगाराम जी माणपुर ग्रामे महाराजाधिराज श्री सवाई जयसिह जी राज्ये ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

२२५५ **प्रतिस० २** । पत्रस० ५० । आ० १०×५$\frac{3}{4}$ इन्च । ले०काल स० १८२४ कार्तिक बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १४५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

सवत १८२४ वर्षे कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे तिथि ३ वार सनीचर वासरे कोटा का रामपुरा मध्ये महाराजा हरकृष्ण लिपि कृता पाडेजी वखतराम जी पठन हेतवे । गुमानसिंघ जी महाराव राज्ये ।

प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

२२५६. **षट्पाहुड भाषा—देवीसिह छाबडा** । पत्र स० ५० । आ० १३ × ६ इन्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—अध्यात्म । र०काल स० १८०१ सावण सुदी १३ । ले० काल स० १९४२ । पूर्ण । वेप्टन स० ३१५/२२७ । **प्राप्ति स्थान**—सम्भवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—उदयपुर मे प्रतिलिपि हुई ।

२२५७. **प्रति स० २** । पत्र स० २७ । आ० ८×४$\frac{1}{2}$ इन्च । ले० काल स० १८७७ । पूर्ण । वे० स० ११६/८६ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्यरगढ (कोटा) ।

विशेष—राजूगगवाल ने इन्द्रगढ मे प्रतिलिपि की ।

२२५८. **प्रतिसं० ३** । पत्र स० ३६ । आ० ११×५ इन्च । ले० काल स० १८५० । पूर्ण । वे० स० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बू दी ।

२२५९. **षट् पाहुड भाषा (रचनिका)—जयचन्द छाबडा** । पत्र स० १६३ । आ० ११× ७ इन्च । भापा—हिन्दी (गद्य) । विपय—अध्यातम । र०काल स० १८६७ भादवा सुदी १३ । लेखन काल × । वेष्टन स० ७८ । **प्राप्तिस्थान**—तेरहपथी दि० जैन मदिर नैणवा ।

२२६०. **प्रति स० २** । पत्र स० १६६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×७$\frac{3}{4}$ इन्च । ले०काल स० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरह पथी दौसा ।

विशेष—पन्नालाल साह वसवा वाले ने दौसा मे प्रतिलिपि की । नानूलाल तेरापथी की बहू ने चढाया ।

२२६१. **प्रतिसं० ३** । पत्र स० १८० । आ० १०$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर ।

षटपाहुड वृत्ति—श्रुतसागर । पत्रस० १८३ । आ० ११×५ इन्च । भाषा—हिन्दी संस्कृत ।

विपय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल० × । पूर्ण । वेष्टन स० १०५३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२२६२. प्रतिसं० २ । पत्रस० २०३ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल स० १७८५ मगसिर सुदी ३ पूर्ण । वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

२२६३ प्रतिसं० ३ । पत्र स० ३४ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भापा—सस्कृत । विपय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

२२६४. प्रतिस० ४ । पत्रस० ६१ । आ० ६¾×४½ इञ्च । ले० काल स० १७७० । पूर्ण । वेष्टन स० १५१/४० । **प्राप्ति-स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मदिर इन्दरगढ, कोटा ।

विशेष—लिखत साह ईसर अजमेरा गैणोली मध्ये लिखी स० १७७० माह सुदी ५ शनीवारे ।

२२६५ प्रतिसं० ५ । पत्र स० २३० । आ० १३×६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, कामा ।

२२६६ प्रतिस० ६ । पत्रस० १६० । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

२२६७ षोडशयोग टीका—× । पत्र स० २० । आ० १०×५ इञ्च । भापा—सस्कृत । विषय—योग । र०काल × । ले० काल स० १७८० पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बू दी ।

लेखक प्रशस्ति—सावत् १७८० वर्षे श्रावण वदि ७ शनौ लिखत श्री गौडज्ञातीय श्रीमद् नरेश्वर सुत जयरामेण ओवेर ग्राम मध्ये जोसी जी श्री मल्लारि जी गृहे ।

२२६८, समयसार प्राभृत—कु दकु दाचार्य । पत्र स० १-५४ । आ० १०×६½ इञ्च । माषा-प्राकृत । विपय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कामा ।

विशेष—प्रति आत्मख्याति टीका सहित है ।

२२६९. प्रति स० २ । पत्रस० ३५ । आ० १३½×६½ इ च । ले०काल स० १६३२ काती सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपथी दि० जैन मन्दिर नैणवा ।

विशेष—इसका नाम समयसार नाटक भी दिया है । प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

२२७०. प्रति स० ३ । पत्रस० १०७ । आ० १२ × ४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६८/२२७ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—ग्रन्थाग्रन्थ श्लोक स० ४५०० । प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

२२७१. समयसार कलशा—अमृतचन्द्राचार्य । पत्रस० ६१ । आ० ११¾ × ५ इ च । भाषा—सस्कृत । विपय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ४६२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

२२७२. प्रतिसं० २ । पत्रस० २५ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १६०१ वैशाख सुदी ६ । वेष्टन स० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

२२७३. प्रति सं० ३ । पत्रस० १२ । आ० १०×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २५१-१०१ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—प्रति टव्वा टीका सहित है ।

२२७४. प्रति सं० ४ । पत्रस० ३३ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १२४ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर अग्रवाल उदयपुर ।

विशेष—पत्र १९ तक हिन्दी मे अर्थ भी है । ३३ से आगे के पत्र नही है ।

२२७५. प्रति स० ५ । पत्र स० ७९ । आ० ९¾ × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अग्रवाल उदयपुर ।

विशेष—प्रति टव्वा टीका सहित है ।

२२७६. प्रति स० ६ । पत्रस० १४ । आ० १३×४ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ४३४ । **प्राप्तिस्थान**—सभवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर ।

२२७७. प्रतिसं० ७ । पत्रस० १०१ । आ० १८×४ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३१२/२१८ । **प्राप्ति स्थान**—समवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति वहुत प्राचीन है । पत्र मोटे है ।

२२७८. प्रतिसं० ८ । पत्रस० ३६ । आ० ११×५½ इच । ले०काल स० १७१८ । पूर्ण । वेष्टन स० २९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरह पथी दौसा ।

२२७९. प्रतिसं० ८ । पत्रस० ८६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन म० २१३ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

२२८०. प्रतिसं० ९ । पत्रस० २७ । आ० १०¾×५½ इञ्च । ले०काल स० १६५० वैशाख बुदी ७ । वेष्टन स० ३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

२२८१ प्रतिसं० १० । पत्रस० ५७ । आ० १०×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दिगम्बर जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

२२८२. प्रतिसं० ११ । पत्र स० ६७ । आ० ११×४½ इच । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

विशेष—४४६ श्लोक तक है । प्राकृत मूल भी दिया हुआ है ।

२२८३. प्रतिसं० १२ । पत्र स ४१ । आ० १०×६½ इञ्च । ले०काल स० १९४६ कार्तिकी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपथी दि० जैन मन्दिर नैणवा ।

विशेष—नैनपुर मे प्रतिलिपि की गयी ।

२२८४. प्रति स० १३ । पत्रस० १५ । आ० १०×४ इच । ले०काल स० १६३४ मादवा बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनस० ३४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

२२८५. प्रतिसं० १४। पत्रस० ३३। ग्रा० १३ × ५½ इच। ले०काल ×। ग्रपूर्ण। वेष्टनस० ७०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूदी।

विशेष—टीका का नाम तत्वार्थ दीपिका है।

२२८६ समयसार कलशा टीका—नित्य विजय। पत्रस० १३२। ग्रा० १२×५½ इच। भाषा—सस्कृत। विषय—ग्रध्यात्म। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १३१। **प्राप्तिस्थान** दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—ग्रन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

इति श्री समयसार समाप्त ।। कु दकु दाचार्ये प्राकृत ग्र थ रूप मदिर कृत समयसार शास्त्रस्य मया ग्रमृत चन्द्रेण सस्कृत रूप कलश कृतस्तस्य मदिरोपरि।

नित्य विजय नामाह भाव सारस्य टिप्पण।
ग्रानन्द राम सज्ञस्य वाचनाव्यलीलिखम्।

प्रारम्भिक—

सिद्धान्नत्वालिखानीद मर्थ सारस्य टिप्पण।
ग्राणदराम सज्ञस्य वाचनाय च शुद्धये ।।

प्रति टव्वा टीका सहित है।

२२८७. समयसार टीका (ग्रध्यात्म तरगिणी)—भ० शुभचन्द्र। पत्रस० १३०। ग्रा० १०×४½ इच। भाषा—सस्कृत। विषय—ग्रध्यात्म। र०काल स० १५७३ ग्रासोज सुदी ५। ले०काल स० १७६५। पूर्ण। वेष्टन स० २८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—

प्रारभ—ग्रादिभाग—

शुद्ध सच्चिद्रूप भव्यावुजचन्द्रममृत मकलक।
ज्ञानाभूप वदे सर्व विभाव स्वभाव सयुक्त ।१।।
सुधाचन्द्रमुने र्वाक्या पद्यात्युद्धृत्य रम्माणि।
विवृणोमि भक्तितोह चिद्रूपे रक्त चित्तश्च। २।।

ग्रन्तभाग—

जयतु जित विपक्ष पालिताशेपशिष्यो
विदित निज स्वतत्वश्चोदितानेक सत्व ।।
ग्रमृतविधुयतीश. कु दकु दो गणेश।
श्रुतसुजिन विवाद स्याद्विवादाधिवाद ।। १ ।।
सम्पक् ससार वल्लीवलय-विदलनेमत्तमातगमानी।
प्रापातापेभकुम्भोद् गमन करा कुण्ठ कण्ठीरवारि ।।
विद्वद्विद्याविनोदा कलित मति रहो मोहतामस्य सार्था ।।१।।
चिद्रूपोद्भासिचेता विदित शुभयतिर्ज्ञान भूपस्तु भूयात ।। २ ।।
विजयकीर्ति यतिर्जगता विमल[1]कीर्ति धरोधृति धारक।
जपतु शासन भासन भारती मय मतिर्दलिता पर वादिक ।। ३ ।।

१ गुरुर्विधृत धर्म धुरोद्ं वृत्तिधारक ऐसा भी पाठ है।

शिष्य स्तस्य विशिष्ट शास्त्र विशद ससार मीताशयो ।
भावाभाव विवेक वारिधि तरत् स्याद्वाद् विद्यानिधि ॥
टीका नाटक पद्यजा वरगुणाध्यात्मादि स्रोतस्विनी ।
श्रीमच्छ्रीशुभचन्द्र एप विधिवत् सचकरीतिस्म वै ॥ ४ ॥
त्रिभुवन वरकीर्ति र्जात रूपात्तमूर्ते
शमदम-मयपूर्तेराग्रह राग्रहन्नाटकस्य
विशद विभव वृत्तो वृत्तिमाविश्चकार
गतनयशुभचन्द्रो ध्यान सिद्धयर्थमेव ॥ ५ ॥
विक्रमवर भूपालात् पचत्रिंशते त्रिसप्तति व्यधिके (१५७३)
वर्षेऽप्यश्विन मासे शुक्ले पक्षेऽथ पचमीदिवसे ॥६॥
रचितेय वर टीका नाटक पद्यस्य पद्ययुक्तस्य ।
शुभचन्द्रे णसुजयमताविद्यासवल न पद्यपद्याकात् ॥ ७ ॥
..... पातनिकाभिश्च भिन्न भिन्नाभि ।
जीयादाचन्द्रार्क स्वाध्यात्मतरगिणी टीका ॥ ८ ॥

इति श्री कुमतद्रुम मूलोन्मूलनमहानिर्झरणी श्रीमदध्यात्मतरगिणी टीका ।
स० १७९५ वर्षे पौष वदी १ शनौ । लिखिता ।

२२८८ समयसार टीका (आत्मख्याति)—अमृतचन्द्राचार्य । पत्रस० १९१ । आ० १०½×४½ इञ्च । भापा—प्राकृत सस्कृत। विपय—अध्यात्म । र० काल ×। ने०काल म० १४९३ मगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० १८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—ग्रन्थाग्रन्थ स० ४५०० है ।

लेखक प्रशस्ति—

स्वस्ति श्री सवत् १४९३ वर्षे मार्गकृष्ण त्रयोदश्या सोमवासरे अद्येह श्री कालपी नगरे समस्त राजावली समालकृत विनिर्जितारिवली प्रचड महाराजाधिराज सुरत्राण श्री महमूदसाहि विजयराज्य प्रवर्त्तमाने अस्मिन् राज्ये श्री काष्ठासघेमाथुरान्वये पुष्कर गच्छे लोहाचार्यान्वये प्रतिष्ठाचार्य श्री अनन्तकीर्ति देवा तस्य पट्ट गगनागणे भट्टारक कल्पा श्री क्षेमकीर्ति देवा' तत्पट्टे श्री हेमकीर्ति देवा तत् शिष्य श्री धर्मचन्द्र देव तस्य धर्मोपदेशामृतेन हृदिस्थित मनोवल्ली सिच्यमानेना रोहितास नगरे वास्तव्य श्री कालपीनगर स्थिन अग्रोतकान्वय मीतण (ल) गोत्रीय पूर्व पुरुप साधु खेत नाम्नि तस्य वसे दीवाण ठा० प्रसिद्ध सर्वकार्य कुशल साधु नयण तस्य द्वौ भार्यो कोकिला साता नाम्नो एतेपा कुक्षे उत्पन्न एकादश प्रतिमा धारक सा सहजपाल हृदरत्ति प्रसिद्ध साधु श्री नरपति कुलमडण साधु हेमराजी एतै साधु सहजपाल पुत्र गुरुदास हरिराज सा नरपति भार्या साधु नमिइण अन भो पुत्र जिणदास वील्हा वीरदास । सा हेमराज पुत्र गणराज गुरुदास पुत्र साधु नरपति पुत्र साधु श्री वाल्हचन्द्र तस्य द्वौ भार्यो साधुनी जौणपाल ही लहुवडि नाम्नी अनयो पुत्र साधु देवराज तस्य भार्या राल्ही नाम्नी एतयो पुत्र पल्हचन्द एतै जिनप्रणीत मार्ग रतै चतुर्विध दानदायकै सघनायकै जिनपूजा पुरदरै एतेपा मध्ये साधु नइण पौत्रेण साधु नरपति पुत्रेण साधु श्री वाल्हचन्द्र देवेन साधुनी जौणपाल ही लहुवडिकातेन साधु राज जातेन पौत्र साधु 'श्री पाल्हणचन्द्र समुद्भवेन श्री समयसार पुस्तकं

लिखाप्य ससार समुद्रो तारणार्थं दुरितदुष्ट विध्वस नार्थं ज्ञानावरणाद्यपृक कर्मक्षयार्थं श्री धर्महेतो सुगुरो. धर्मचन्द्र देवेभ्य पुस्तकदान दत्त ।

२२८९. **प्रति स० २** । पत्रस० १७१ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल स० १७३७ आषाढ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० २४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

२२९०. **प्रति स० ३** । पत्रस० १२६ । आ० ११½×५ इञ्च । ले०काल स० १५७५ । पूर्ण । वेष्टनस० १६४ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रतिलिपि रोहितक ग्राम मे हुई । श्री हेमराजजी के लिये प्रतिलिपि की गई ।

अन्तिम—वणिक् कुल मडन हेमराज सोय चिरजीवतु पुत्र पौत्री ।

तद्यर्थं मेतल्लिखित च पुस्त दातव्य मे तद्धि दुखे प्रयत्नात् ।।

२२९१. **प्रति स० ४** । पत्रस० १४३ । ले०काल स० १६५८ माघ सुदी ५ । पूर्ण । **वेष्टनस०** १६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार हैं—

श्री मूलसघे भारती गच्छे वलात्कार भ० विद्यानद्याम्नाये श्री मल्लिभूषणदेवा त० प० भ० श्री लक्ष्मीचन्द्र देवा तत्पट्टे श्री अभय चन्द्र देवा तत्पट्टे भ० श्री रत्नकीर्ति तद्गुरु भ्राता ब्रह्म श्री कल्याणसागरस्येद पुस्तक काकुस्थपुरे विक्रियेत नीत मुतफरीये देवनीत अर्गलपुरस्थ कल्याण सागरेण पडित स्वामाय प्रदत्त पठणाय ।

२२९२. **प्रतिस० ५** । पत्रस० १६६ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल × । **वेष्टनस०** २४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२२९३. **प्रतिसं० ६** । पत्रस० १४३ । आ० १०½×५½ इञ्च । ले० काल स० १९२५ । पूर्ण । वेष्टनस० ६/५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सौगाणी करौली ।

२२९४. **प्रतिसं० ७** । पत्र स० १४३ । आ० १०½×६ इञ्च । ले० काल स० १७८८ वैशाख वदी ११। पूर्ण । वेष्टन स० १३/२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सौगाणी करौली ।

२२९५ **प्रति स० ८** । पत्रस० ११२ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ४० । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपथी दि० जैन मदिर वसवा ।

२२९६ **प्रति स० ९** । पत्रस० १६४ । आ० १०¾ × ५¾ इच । ले० काल स० १८३० । पूर्ण । वेष्टनस० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बू दी ।

२२९७. **प्रति स० १०** । पत्रस० १९ । आ० ११ × ५ इच । ले०काल स० १७३९ । पूर्ण । वेष्टनस० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दनस्वामी, बू दी ।

विशेष—इस टीका का नाम आत्मख्याति है । लवाण मे आ० ज्ञानकीर्ति ने प्रतिलिपि की ।

२२९८ **प्रति स० ११** । पत्रस० १३२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २९५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष —तात्पर्य वृत्ति सहित है ।

२२९९ **प्रतिसं० १२** । पत्रस० २०२ । भाषा—सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल स० १८४० । पूर्ण । वेष्टन स० ९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर वसवा ।

विशेष—तात्पर्य वृत्ति सहित है।

प्रशस्ति—सवत् १४४० वर्षे चैत्र सुदी १० सोमवासरे अद्येह योगिनिपुर पेरोजसाहि राज्यप्रवर्तमाने श्री विमलसेन श्री धर्मसेन भावसेन सहस्रकीर्तिदेवा तरुजजिनगरे श्री श्रेष्ठि कुलान्वये गर्गगोत्रे साह धन्ना गच्छे ······ तेना समयसार ब्रह्मदेव टीका कर्त्ता मूलकर्त्ता श्री कुन्कुन्दाचार्यदेव विरचित लिखाप्य सहस्रकीर्ति आचार्य प्रदत्त।

२३००. प्रतिसं० १३। पत्रस० २३। आ० १४×५½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। **वेष्टनस०** २९-६३। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

२३०१ प्रतिसं० १४। पत्रस० ५०। आ० ११×५ इञ्च। ले०काल स० १६०७ सावण बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० ३३५ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

विशेष प्रशस्ति—सवत् १६०७ वर्षे सावण बुदि ६ खक नाम नगरे पातिसाहि श्लेमिसाहि राज्ये प्रवर्तमाने श्री शातिनाथ जिन चैत्यालये श्री मूलसघे नद्याम्नाये बलात्कार गणे सरस्वती गच्छे ······।

२३०२. प्रतिसं० १५। पत्रस० ६३। आ० ११½ × ५ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। **वेष्टनस०** ६१। **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर, आदिनाथ बूंदी।

२३०३ प्रतिसं० १६। पत्रस० ६८। आ० १२×५½ इच। ले०काल ×। पूर्ण। **वेष्टनसं०** ५४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रतिपत्र १० पक्ति एव प्रति पक्ति अक्षर ३७ हैं।

प्रति प्राचीन है।

२३०४ प्रतिसं० १७। पत्रस० १९७। आ० ११×४¾ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। **वेष्टनस०** ५०१। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—अन्तिम पृष्ठ नही हैं पाडेराजमल्ल कृत टीका एव प० बनारसीदास कृत नाटक समयसार के पद्य भी हैं।

२३०५. समयसार वृत्ति—प्रभाचन्द। पत्रस० ६५। आ० १२½×५¼ इञ्च। **भाषा**—सस्कृत। विषय—अध्यात्म। र०काल ×। ले०काल स० १६०२ मगसिर बुदी ५। पूर्ण। **वेष्टनस०** ११८१। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२३०६. समयसार टीका—भ० देवेन्द्रकीर्ति। पत्रस० १५। आ० ८½×४ इञ्च। **भाषा**—सस्कृत। विषय-अध्यात्म। र०काल स० १७८८ भादवा सुदी १४। ले०काल स० १८०४ वैशाख सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० ३१८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बून्दी।

विशेष—आ० कुन्दकुन्द के समयसार पर आमेर गादी के भ० देवेन्द्रकीर्त्ति की यह टीका है जो प्रथम बार उपलब्ध हुई है।

प्रशस्ति—

वास्वष्ट युक्त सप्तेन्द्र युते वर्षे मनोहरे,
शुक्ले भाद्रपदेमासे चतुर्दश्या शुभे तिथौ।
ईसरदेति सद्ग्रामे टीकेय पूर्णतामिता।
भट्टारक जगत्कीर्त्ति पट्टे **देवेन्द्रकीर्त्तिना** ॥२॥

दु कर्म्महानये शिष्य मनोहर गिराकृता ।
टीका समयसारस्य सुगमा तत्ववोधिनी ।।३।।
बुद्धिमद्भि बुधै हास्य कर्त्तव्यनो विवेकभि ।
शोधनीय प्रयत्नेन यतो विस्तारता वृजेन् ।।४।।
बुधै सपाट्यमान च वाच्यमान श्रुत सदा ।
शास्त्रमेतच्छुभ कारि चिर सतिष्टताभुवि ।।५।।
पूज्यदेवेन्द्रकीर्त्ति सशिष्येण स्वात हारिणा ।
नाम्वेय लिखिता स्वहस्तेन स्ववुद्धये ।।६।।

सवत्सरे वसुनाग मुनीद्र द्रमिते १७८८ भाद्रमासे शुक्ल पक्ष चतुर्दशी तिथौ इसरदा नगरे श्रीराजि श्री अजीतसिंहजी राज्य प्रवर्त्तमाने श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालये । भट्टारकजी श्री १०८ देवेन्द्रकीर्त्तितेनेय समयसार टीका स्वशिष्य मनोहर कमनाद् पठनाय तत्ववोधिनी सुगमा निज बुद्धया पूर्व टीका भवलोक्य निहिता वुद्धि मद्भि शोधनीया प्रमादाद्वा अल्पबुद्धया यत्र हीनाधिक भवेत् तद्वोवनीय सभोभवीत् श्री जिन प्रत्यसत्ते ।

सवत् सरेन्दवसु शून्यवेदयुते १८०४ युते वर्षे वैशाख मासे शुक्लपक्षे त्रयोदश्या चद्रवारे चन्द्रप्रभ चैत्यालये पडितोत्तमपडित श्री चोखचन्दजी तत् शिष्य रामचन्देण टीका लिखितेय स्वपठनार्थं झिलडी नगरे वाचकाना पाठकाना मगलावली सवोभवतु ।।

२३०७ समयसार प्रकरण—प्रतिबोध। पत्र स० ६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्याम । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७७/५८ । **प्राप्ति स्थान—** पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

२३०८. समसार भाषा टीका—राजमल्ल। पत्र स० २६८ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—हिन्दी टब्वा टीका है ।

२३०९ प्रतिसं० २ । पत्र स० १७६ । आ० १२×७ इञ्च । ले० काल स० १९०७ वैशाख सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर चौधरियान मालपुरा (टोक)

विशेष—अकवरावाद (आगरा) मे प्रतिलिपि हुई ।

२३१०. प्रति स० ३ । पत्रस० २१० । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल स० १७२५ भादवा सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० २६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

२३११. प्रतिस० ४ । पत्र स० २१८ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२३१२. प्रति स०५ । पत्रस० ६३ । आ० ६½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ बू दी ।

२३१३. प्रति स० ६ । पत्र स० ५७–२६४ । आ० ६½ × ६ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

२३१४. प्रति स० ७। पत्र स० २३७। आ० १३ × ७½ इञ्च। ले० काल स० १८६८ आषाढ बुदी १०। पूर्ण। वेष्टन स० ६०। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा।

विशेष—कामा मे प्रतिलिपि हुई।

२३१५. प्रतिसं० ८। पत्रस० १४५। आ० ११½ × ४½ इञ्च। ले० काल स० १७५०। पूर्ण। वेष्टन स० १६१ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर।

२३१६ समयसार टीका— ×। पत्र स० २५। भाषा—सस्कृत। विषय—अध्यात्म। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपथी नैणवा।

२३१७. समयसार भाषा—जयचन्द छाबडा। पत्र सख्या ४१८। आ० ११ × ७½ इञ्च। भाषा–हिन्दी गद्य (ढूढारी)। विषय–अध्यात्म। र० काल स० १८६४ कार्त्तिक बुदी १०। ले० काल स०१६११ फागुण बुदी २। पूर्ण। वेष्टन स० २५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—महानन्द के पुत्र रामदयाल ने स० १६१३ भादवा सुदी १४ को मदिर मे चढाया था।

२३१८. प्रति स० २। पत्र स० ३३६। आ० १½० × ७½ इञ्च। ले०काल स० १६३७। पूर्ण। वेष्टन स० १२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

२३१९. प्रति स० ३। पत्रस० ३६०। आ० ११ × ६ इञ्च। ले०काल स० १८६६ पौष बुदी १। पूर्ण। वेष्टन स० ७३–१७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा।

विशेष—वखतलाल तेरहपथी ने कालूराम से प्रतिलिपि करवाई।

२३२०. प्रति स० ४। पत्र स० १६८। आ० १२½ × ६ इञ्च। ले० काल स० १८७९ वैशाख बुदी १०। पूर्ण। वेष्टन स० ८७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

विशेष—वख्तराम जगराम तथा मूसेराम की प्रेरणा से गुमानीराम ने करौली मे प्रतिलिपि की।

२३२१. प्रतिसं० ५। पत्रस०२६६। ले०काल स० १८९५। पूर्ण। वेष्टन स० ५२५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष – भरतपुर नगर मे लिखा गया।

२३२२. प्रतिस० ६। पत्र स० २६४। ले० काल स० १८७४। पूर्ण। वेष्टन स० ५२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

२३२३. प्रति स० ७। पत्र स० २५७। आ० ११ × ७½ इञ्च। ले० काल स० १८७९ माह सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० ८०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर।

विशेष-- जयपुर मे प्रतिलिपि हुई।

२३२४. प्रति स० ८। पत्र स० ३१८। आ० १४ × ७½ इञ्च। ले० काल स० १९४३ माघ सुदी २। पूर्ण। वेष्टन स० ७७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर।

२३२५ प्रति स० ९। पत्रस० ३७२। आ० १३ × ५ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ८६। **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा।

२३२६. प्रतिसं० १०। पत्रस० ३८७। आ० १२⅞ × ७½ इञ्च। ले०काल स० १९५४। पूर्ण। वेष्टन स० ८१/१। **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर, इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—मागीलालजी जिनदासजी इन्दरगढवालो ने सवाई जयपुर मे जैन पाटशाला, शिल्प कम्पनी बाजार (मणिहारो का रास्ता) मे मारफत भोलीलालजी सेठी के स० १६५४ मे यह प्रति लिखाई। लिखाई मे पारिश्रमिक के ३२॥। ≡)॥ लगे थे।

२३२७. प्रति स० ११। पत्रस० २४४। आ० १०½×८ इन्च। पूर्ण। वेष्टन स० ६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)

विशेष—पत्र स० १-१५० एक तरह की तथा १५१-२४४ दूसरी प्रकार की लिपि है।

२३२८ समयसार भाषा—रूपचन्द। पत्र स० २२२। आ० १२ × ५½ इन्च। भाषा—हिन्दी (गद्य)। विषय—अध्यात्म। र० काल स० १७००। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४७। **प्राप्ति स्थान** – तेरहपथी दि० जैन मदिर नैणवा।

विशेष—महाकवि बनारसीदास कृत समयसार नाटक की हिन्दी गद्य मे टीका है।

२३२६. प्रति सं० २। पत्रस० ३११। आ० १०½×४½ इन्च। ले०काल स० १७३५ सावण बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० ६७। **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मदिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—आगरा मे भगवतीदास पोखाड ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की।

२३३०. प्रति स० ३। पत्रस० १७३। आ० १०½×३½ इन्च। ले०काल स० १७६५ वैशाख बुदी १। पूर्ण। वेष्टन स० ३६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी)।

२३३१. समयसार नाटक—बनारसीदास। पत्र स० १११। आ० ८¾ × १¼ इन्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—अध्यात्म। र० काल स० १६६३ आसोज सुदी १३। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १०८३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२३३२. प्रति स० २। पत्र स० १४२। आ० ६½ × ५ इन्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १४८६। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२३३३. प्रति स० ३। पत्रस० २३४। आ० ११½×५½ इन्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६३। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर।

२३३४. प्रति स० ४। पत्रस० ६६। आ० ६×६ इन्च। ले० काल स० १७३३। वेष्टन स० १५००। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—(गुटका स० २७६)

२३३५. प्रति स० ५। पत्र स० १०८। आ० ७×५½ इन्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७६१। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२३३६ प्रतिसं० ६। पत्रस० १०२। ले०काल स० १८६८। पूर्ण। वेष्टनस० २३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर।

२३३७. प्रतिसं० ७। पत्रस० १५६ से २३०। आ० १०½×५ इन्च। ले०काल स० १८१२। पूर्ण। वेष्टन स० ३५-२०। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर।

विशेष—ब्रह्म विलास तथा समयसार नाटक एक ही गुटके मे हैं।

२३३८. प्रति स० ८। पत्रस० ७२। आ० ६½ × ६½ इन्च। ले० काल स० १८८०। पूर्ण। वेष्टन स० १०२-५०। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर।

२३३९ प्रति स० ९ । पत्र स० ४२ । आ० ८×६½ इञ्च । ले०काल स० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन स० १३२-६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

विशेष—४२ पत्र के वाद कुछ पत्रो मे कवीर साहव तथा निरजन की गोष्टि दी हुई है ।

२३४०. प्रति सं० १० । पत्र स० १४० । आ० ७×४½ इञ्च । लेखन काल स० १९०४ । पूर्ण । वेप्टन स० १३८-६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

२३४१. प्रति स० १० । पत्र स० १० । आ० ९½×५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २१०-८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

विशेष—१० से आगे पत्र नही है ।

२३४२. प्रतिसं० ११ । पत्र स० ८६ । आ० १०×५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेप्टन स० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अग्रवाल उदयपुर ।

२३४३. प्रतिसं० १२ । पत्र स० ६२ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल स० १७२३ भादवा सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स ५१ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रनि पत्र ११ पक्ति एव प्रति पक्ति ३३ अक्षर है ।

खोखरा नगर मे प्रतिलिपि हुई ।

२३४४. प्रति सं० १३ । पत्रस० ७३ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल सं० १७९९ । पूर्ण । वेष्टन स० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

२३४५. प्रतिसं० १४ । पत्रस० १९९ । आ० ११×७ इञ्च । ले०काल स० १७२८ । पूर्ण । वेष्टन स० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति टव्वा टीका सहित है । (हिन्दी गद्य टीका)

२३४६. प्रतिसं० १५ । पत्र स० ८८ । आ० १०×४ इञ्च ले० काल । पूर्ण । वेष्टन स० १९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—वनारसी विलास के भी पाठ हैं ।

२३४७ प्रतिसं० १६ । पत्र स० १२५ । आ० ८×६½ इञ्च । ले० काल स० १७५९ कात्तिक सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० २९५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

(गुटकाकार न० १२)

२३४८. प्रति स० १७ । पत्र स० ४६ । आ० ११×५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १०९ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन मदिर उदयपुर ।

२३४९. प्रतिसं० १८ । पत्र स० १७४ । आ० ११½ × ७½ इञ्च । ले० काल स० १९२६ । पूर्ण । वेष्टन स० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—खडेलवाल दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

२३५०. प्रतिसं० १९ । पत्र स० ३-६७ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १८२ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

२३५१. प्रति सं० २० । पत्र स० ६९ । आ० १०½ × ६ इञ्च । ले० काल सं० १८९३ सावण सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—सरावगी लिखमीचद ने लिखाया तथा भादवा सुदी १४ स० १८६३ मे व्रतोद्यापन पर फतेपुर के मदिर मे चढाया ।

२३५२ **प्रति सं० २१** । पत्र स० १३० । आ० १४×८½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—प० हीरालाल जैन ने बाबूलाल आगरे वालो से प्रतिलिपि कराई ।

२३५३ **प्रति सं० २२** । पत्र स० ५० । आ० १३½×७ इञ्च । ले० काल स० १९१४ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वे० स० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—प्रति सुन्दर है ।

२३५४ **प्रति स० २३** । पत्रस० ७० । आ० १३ × ६ इञ्च । ले०काल-स० १९१६ पौष वदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—व्यास सिवलाल ने जै गोविन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की ।

२३५५. **प्रति स० २४** । पत्रस० १८० । आ० ८ × ६ इञ्च । ले० काल—स० १७४८ काती बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनस०—१०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

विशेष—जोवनेर मे प्रतिलिपि हुई ।

२३५६ **प्रति स० २५** । पत्रस० २२१ । आ० १२½× ६ इञ्च । ले० काल— स० १८५७ कार्त्तिक बुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस०—३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—चिमनलाल तेरहतथी ने प्रतिलिपि की ।

२३५७. **प्रति सं० २६** । पत्रस० ३-१० । आ० १०½ × ५½ इञ्च । ले० काल— × । अपूर्ण । वेष्टनस० १०५-६ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर बडा वीस पथी दौसा ।

२३५८. **प्रति स० २७** । पत्रस० १३७ । आ० ६½ × ५¼ इञ्च । ले० काल सं० १८५६ ज्येष्ठ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० १३१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

२३५९ **प्रति स० २८** । पत्र स० ३-३६६ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टन स०६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—अमृतचन्द्र कृत कलशा तथा राजमल्ल कृत हिन्दी टीका सहित है । पत्र जीर्ण है ।

२३६० **प्रति स० २९** । पत्रस० ६० । आ० १० × ५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

२३६१ **प्रति स० ३०** । पत्रस० ७९ । ले० काल स० १६९७ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी, कामा ।

२३६२. **प्रति स० ३१** । पत्र स० ९-१४५ । आ० ९ × ५ इञ्च । ले० काल— × । अपूर्ण । वे० स० २५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

२३६३ **प्रतिस० ३२** । पत्र स० २०९ । आ० ११¼ × ६½ इञ्च । ले० काल स० १८९४ अषाढ सुदी ११ । पूर्ण । वे० स०३५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—रिषभदास कासलीवाल के पुत्र ने कामा मे प्रतिलिपि कराई ।

२३६४. प्रति सं० ३३ । पत्रस० १६५ । आ० १२½×५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

२३६५. प्रतिसं० ३४ । पत्रस० ७३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

२३६६. प्रति स० ३५ । पत्रस० १०३ । ले०काल स० १७२१ आसोज सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० २६८ क । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२३६७. प्रति सं० ३६ । पत्र स० ६३ । आ० १०×६½ इञ्च । ले०काल स० १८६६ । पूर्ण । वेष्टन स० २३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मदिर कामा ।

विशेष—जोवराज कासलीवाल ने प्रतिलिपि करायी थी ।

२३६८. प्रतिसं० ३७ । पत्रस० १०६ । आ० १० ×६½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

२३६९ प्रतिसं० ३८ । पत्रस० ३५७ । ले०काल सं० १७५३ सावरण सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० ६८ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

विशेष—पहिले प्राकृत मूल, फिर सस्कृत तथा पीछे हिन्दी पद्यार्थ है ।

पत्र जीर्ण शीर्ण अवस्था मे है ।

२३७०. प्रति स० ३९ । पत्र स० ९० । आ० १२½×६½ इञ्च । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० १४१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

२३७१. प्रति सं० ४० । पत्र स० १२३ । आ० ६×५½ इञ्च । लें० काल स० १७४८ माघ बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पचायती वयाना ।

विशेष—वेगमपुर मे भवानीदास ने प्रतिलिपि की थी । १२३ पत्र के आगे २१ पत्रो मे वनारसीदास कृत सूक्ति मुक्तावली भाषा है ।

२३७२. प्रति सं० ४१ । पत्रस० ७७ ।ले०काल स० १८५५ पूर्ण । वेष्टनस० १७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर वयाना ।

विशेष—वयाना मे प्रतिलिपि हुई ।

२३७३. प्रतिसं० ४२ । पत्रस०—७० । लेखन काल स० १९२९ फागुरण सुदी २ । पूर्ण । वेप्टन स० १८ । प्राप्ति-स्थान—दि० जैन मदिर पचायती वयाना ।

विशेष—श्री ठाकुरचन्द मिश्र ने माधोसिंह जी के पठनार्थ प्रतिलिपि करवायी तथा स० १९३२ मे मदिर मे चढाया ।

२३७४. प्रतिसं० ४३ । पत्र सख्या—४१ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पचायती भरतपुर ।

विशेष—जीर्ण है ।

२३७५ प्रतिसं० ४४ । पत्र स० २-५९ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४८३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पचायतती भरतपुर ।

२३७६ **प्रतिसं० ४५** । पत्रस० १६२ । ले०काल स० १८६६ पूर्ण । वेष्टन स० ५२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती भरतपुर ।

२३७७. **प्रतिस० ४६** । पत्रस० ६५ । ले०काल स० १७०३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती भरतपुर ।

२३७८. **प्रतिसं० ४७** । पत्रस० ६१ । ले०काल स० १७३३ आसोज बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती भरतपुर ।

२३७९. **प्रतिसं० ४८** । पत्रस० २३ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती भरतपुर ।

२३८०, **प्रति स० ४९** । पत्रस० १५४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

२३८१. **प्रति स० ५०** । पत्र स० २२३ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १७३४ पौष सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १२५ । **प्राप्ति स्थान**—खडेलवाल पचायती दि० जैन मन्दिर अलवर ।

२३८२. **प्रतिसं० ५१** । पत्र स० ६० । ले०काल स० १७७९ । अपूर्ण । वेष्टन स० १२६ । **प्राप्तिस्थान**—खडेलवाल दि० जैन मन्दिर अलवर ।

विशेष—प्रति का जीर्णोद्धार किया हुआ है ।

२३८३. **प्रतिसं० ५२** । पत्र स० ११७ । ले०काल स० १९०१ पूर्ण । वेष्टन स० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—खडेलवाल दि० जैन मदिर अलवर ।

२३८४. **प्रति सं० ५३** । पत्र स० ९३ । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टन स० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—खडेलवाल दि० जैन मन्दिर अलवर ।

२३८५. **प्रति सं० ५४** । पत्रस० ६० । आ० ११½×५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३३/१६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर अलवर ।

२३८६. **प्रति स० ५५** । पत्र स० १४९ । आ० ७×५½ इञ्च । ले० काल स० १९०३ पूर्ण । वेष्न स० ३८१ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

२३८७. **प्रति स० ५६** । पत्र स० ३२–७१ । आ० ९½ × ६ इञ्च । ले०काल स० १८३१ द्वितीय वैशाख बुदी ८ । अपूर्ण । वेष्टनस० २०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मन्दिर दवलाना (बूदी) ।

विशेष—दौलतराम चौधरी ने मनसाराम चौधरी की पुस्तक से उतारी । प्रतिलिपि टोडा मे हुई ।

२३८८ **प्रति स० ५७** । पत्र स० ११७ । आ० ६×६ इञ्च । ले०काल स० १७३३ भादवा सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरह पथी मालपुरा (टोक) ।

विशेष—कर्णपुरा मे लिखा गया ।

२३८९. **प्रति स० ५८** । पत्रस० ३–११८ । आ० ८ × ४ इञ्च । ले०काल स० १८५० पौष सुदी ४ । अपूर्ण । वेष्टन स० १०९–१३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—सहजराम व्याम ने तक्षकपुर मे प्रतिलिपि की ।

२३९०. प्रति सं० ५९ । पत्रस० ९८ । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल स० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टौक) ।

२३९१. प्रतिसं० ६० । पत्रस० ९१ । आ० ११ × ५½ इच । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, राजमहल टोक ।

विशेष—अतिम पत्र नही है ।

२३९२ प्रतिसं० ६१ । पत्रस० ८० । आ० १० × ४ इच । ले०काल स० १८२५ । पूर्ण । वेष्टन स० ७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, राजमहल (टोक) ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

सवत् १८२५ वर्षे माह मासे कृष्ण पक्षे अष्टमी दिने बुधवारे कतु आरा ग्रामे श्री मूलसघे सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे श्री कु दकु दाचार्यान्वये भट्टारक श्री ५ रत्नचन्द्र जी तत्पट्टे भट्टारक श्री ५ देवचन्द जी भट्टारक श्री १०८ धर्मचन्द जी तत् शिष्य गोकलचन्द जी तत् लघु भ्राता ब्रह्म मेघजी ।

ग्र थ के ऊपरी भाग पर लिखा है—

श्री रूपचन्द जी शिष्य सदासुख वावाजी श्री विजयकीर्ति जी ।

२३९३. प्रतिसं० ६२ । पत्रस० १३८ । आ० ९ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १८४० । अपूर्ण । वेष्टन स० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोट्यो का मैणवा ।

विशेष—प्रारम के ३० पत्र जिनोदय सूरि कृत हसराज वच्छराज चौपई (रचना स० १६८०) के हैं ।

२३९४. प्रतिसं० ६३ । पत्रस० ८१ । आ० १०½ × ६½ इञ्च । ले०काल स० १९३३ कार्तिक बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटयो का नैणवा ।

विशेष—नैणवा मे प्रतिलिपि हुई ।

२३९५. प्रतिसं० ६४ । पत्रस० ११९ । आ० १०½ × ५ इच । ले०काल स० १८९६ चैत्र बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

विशेष—नैणवा नगर मे चुन्नीलाल जी ने लिखवाया ।

२३९६. प्रतिसं० ६५ । पत्र स० ९५ । आ० १०½ × ४¾ इञ्च । ले० काल स० १७३३ आसोज सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपथी दि० जैन मन्दिर नैणवा ।

विशेष—पूजा की प्रतिलिपि पडित श्री शिरोमणिदास ने की थी ।

२३९७. प्रति स० ६६ । पत्रस० ३३७ । आ० १२×७ इच । ले० काल स० १९४३ । पूर्ण । वेष्टन स० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर वू दी ।

२३९८. प्रतिस० ६७ । पत्रस० ८२ । ले०काल स० १८६२ चैत सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर स्वामी बू दी ।

२३९९ प्रति स० ६८ । पत्रस० १३२ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल स० १८८७ । पूर्ण । वेष्टनस० २०९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी वू दी ।

२४००. **प्रति स० ६६।** पत्रस० १४०। आ० ११ × ७ इंच। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

विशेष—हिन्दी गद्य टीका सहित है टोक नगर मे लिपि की गई थी।

२४०१. **प्रति स० ७०।** पत्रस० ६-१००। आ० ६×४ इंच। ले०काल स० १८४४ वैशाख बुदी ६। अपूर्ण। वेष्टन स० ३२१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी।

२४०२. **प्रति स० ७१।** पत्रस० ३१। आ० ६½×५ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

२४०३. **प्रति स० ७२।** पत्रस० ६६। आ० ६½×६½ इञ्च। ले० काल १८८२। पूर्ण। वेष्टनस० ५८। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ बूंदी।

२४०४. **प्रति सं० ७३** पत्रस० ६०। आ० १२×६½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

२४०५. **प्रतिस० ७४।** पत्र स० ८१। आ० ११×५½ इञ्च। ले० काल स० १७०४ कार्तिक बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० २१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन-मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक)।

विशेष—सवत् १७०४ कार्तिक बुदी १३ शुक्रेवार लखि हरि जी शुभ भवतु।

२४०६ **प्रति स० ७५।** पत्र स० ४ से ६४। आ० ६½×२½ इंच। ले० काल स० १८१४ कार्तिक। अपूर्ण। वेष्टन स० ६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर चौधरियान (मालपुरा)।

विशेष—८६ से आगे भक्तामर स्तोत्र है।

२४०७. **प्रति स० ७६।** पत्र स० ६६। आ० ११½ × ५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ४६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

२४०८. **प्रति स० ७७** पत्र स० ६६। आ० ११½×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। ले० काल स० १९२६। पूर्ण। वेष्टन स० ५०३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

२४०९. **प्रतिस० ७८।** पत्र स० १०१-१२६। आ० १२ × ५½ इञ्च। ले० काल १६४६। वेष्टन स० ७५६। अपूर्ण। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

२४१०. **समाधितत्र—पूज्यपाद।** पत्र स० ८। आ० ६½×५¾ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—। योग र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४५५। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर।

२४११. **प्रतिसं० २** पत्रस० १४। ले०काल × पूर्ण। वेष्टन स० २६६। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

२४१२ **समाधितत्र भाषा—पर्वतधर्मार्थी।** पत्र स० १५७। आ० १३×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी गुजराती। विषय—योग। र०काल ×। ले० काल स० १७४५ फागुण बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० ६६०। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२४१३. **प्रतिसं० २।** पत्र स० १००। आ० १२½×७¾ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ११६७। **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२४१४. प्रति सं० ३ । पत्र स० १५८ । आ० ११×६ इच । ले० काल १८८२ । पूर्ण । वेष्टन स० २२२–९० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

२४१५. प्रति सं० ४ । पत्र स० १५४ । आ० ११×५ इच । ले०काल स० १६९८ । पूर्ण । वेष्टन स० १७९ । प्राप्ति स्थान—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६९८ मे वर्ष फागुण बुदी १२ दिने श्री परतापपुर शुभस्थाने श्री नेमिनाथ चैत्यालये कु द-कु दा चार्यान्वये भ० श्री सकलकीर्ति तदाम्नाये भ० रामकीर्ति तत्पट्टे भ० श्री पद्मनन्दिणा शिष्य ब्रह्म नागराजेन इद पुस्तक लिखित ।

२४१६ प्रति सं० ५ । पत्रस० १८७ । आ० ११½×५ इञ्च । ले०काल स० १७३७ । पूर्ण । वेष्टन स० १८६ । प्राप्ति स्थान—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—सागवाडा के आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की गई थी ।

२४१७. प्रति सं० ६ । पत्र स० १७९ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल स० १७०६ मगसिर बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१०/२२९ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सम्भवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—प० मागला पठनार्थं ।

२४१८. प्रति स० ७ । पत्र स० १७८ । आ० ११¾×५½ इञ्च । ले०काल स० १८५५ । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ । प्राप्ति स्थान—खण्डेलवाल दि० जैन मदिर उदयपुर ।

२४१९. प्रति स० ८ । पत्र स० २६९ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल स० १८०८ । पूर्ण । वेष्टन स० १५३ । प्राप्ति स्थान—खण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत १८०८ वर्षे शाके १६७३ प्रवर्त्तमाने मासोत्तमे मासे फागुणमासे शुक्लपक्षे पचमीतिथौ ।

२४२०. प्रति स० ९ । पत्र स० १३१ । आ० १०×५½ इञ्च । ले०काल स० १८७५ काती सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ८८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—फतेहपुर के डेडराज के पुत्र कवीराम हीराकणी ने प्रतिलिपि कराई । मालवा मे अष्टा नगर है वहा पोरवार पद्मावती घासीराम श्रावक ने घाटतले कुण्ड नामक गाव मे प्रतिलिपि की थी ।

२४२१ प्रति स० १० । पत्र स० ११३ । आ० १४×६½ इच । ले०काल १८२७ वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १/८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

जोवनेर मे प्रतिलिपि की गई ।

२४२२ प्रति स० ११ । पत्र स० १८३ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले० काल स० १८०५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—आरतिराम दौसा वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

२४२३ प्रति स० १२ । पत्रस० ११६ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले० काल स० १८५२ सावन बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० १३–३३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर वड़ा वीसपथी दौसा ।

विशेष—हीरालाल चादवाड ने चिमनराम दौसा निवासी से प्रतिलिपि करवाई थी ।

२४२४. **प्रति स० १३** । पत्र स० २०१ । आ० ६½×८¾ इञ्च । ले०काल स० १७४८ सावन सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० १४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—रामचन्द्र वज ने साह जयराम विलाला की पोथी से मानगढ मध्ये उतरवाई ।

२४२५. **प्रति स० १४** । पत्र स० १३७ । आ० १२½×५½ इञ्च । ले० काल स० १६१२ । पूर्ण । वेष्टन स० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

२४२६. **प्रति स० १५** । पत्रस० ११३ । आ० १३×६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२४२७. **प्रति स० १६** । पत्र स० ३०१ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल स० १६१७ । पूर्ण । वेष्टनस० ३५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२४२८. **प्रति स० १७** । पत्रस० १३६ । ले० काल स० १७४१ । पूर्ण । वेष्टनस० ३५२ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—वयाना मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२४२९. **प्रति स० १८** । पत्र स० २२० । आ० ११×४½ इच । ले०काल स० १७२६ । पूर्ण । वेष्टन स० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२४३०. **प्रति स० १९** । पत्र स० १२ । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२४३१. **प्रति स० २०** । पत्र स० ३१६ । आ०११×४ इञ्च । ले० काल स० १७०५ । पूर्ण । वेष्टन स० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

२४३२. **प्रति स० २१** । पत्र स० १३५ । आ० ११×७½ इञ्च । ले०काल स १८७७ आसोज सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती कामा ।

विशेष—जोधराज कासलीवाल कामा वालो ने सेढमल वोहरा भरतपुर वाले से प्रतिलिपि कराई थी । श्लोक स० ४५०१ ।

२४३३. **प्रतिसं० २२** । पत्र सख्या २०९ । आ० ११½×४½ इञ्च । ले०काल स० १७३० कार्तिक वुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर वयाना ।

विशेष—काशीराम के पठनार्थ पुस्तक की प्रतिलिपि हुई थी । प्रति जीर्ण है ।

२४३४. **प्रति स. २३** । पत्र स० १८२ । ले०काल स० १७७४ । पूर्ण । वे०स० २७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—गुटका साइज है ।

२४३५. **प्रति स. २४** । पत्र स० २०० । ले० काल स० १७७० । पूर्ण । वे. स० ५६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

२४३६. **प्रति स० २५** । पत्र स० १५८ । आ० ९¾×५½ इञ्च । ले० काल स० १८३५ । पूर्ण । वे० स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर।

२४३७. **प्रति स० २६** । पत्रस० १८३ । आ० ११×५ इन्च । ले०काल स० १८८२ अषाढ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० १८/१०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

२४३८. **प्रतिसं० २७** । पत्रस० २०८ । आ० ११ × ७ इन्च । ले०काल स० १८२३ सावण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—साहजी श्री मोहणरामजी ज्ञाति बघेरवाल वागडिया ने कोटा नगर मे स्वयभूराम बाकलीवाल से प्रतिलिपि कराई ।

२४३९. **प्रति सं २८** । पत्र स० १७२ । आ० १०½×६ इन्च । ले० काल स० १७८१ आषाढ बुदी १ । पूर्ण । वे० स० १/६५ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्द्रगढ (कोटा) ।

विशेष—कोटा नगर मे चन्द्रभाण ने बाई नान्ही के पठनार्थ लिखा था ।

२४४०. **प्रति स० २९** । पत्र स० १८३ । आ० ११½ × ५ इन्च । लेखन काल स० १७८१ आषाढ सुदी ७ । पूर्ण । वे०स० ७६/६६ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—अतिम पत्र दूसरे ग्र थ का है ।

वरणी वसु सागरे दुहायने नभतरे च ।
मासस्यासितपक्षे मनुतिथि सुरराजपुरोवरे ॥

लि० चन्द्रभाणेन बाई नान्ही सति शिरोमणि जैनधर्मधारिणी पठनार्थ कोटा नगरे चौहान वश हाडा दुर्जनमाल राज्ये प्रतिलिपि कृत । पुस्तक बडा मदिर इन्दरगढ की है ।

२४४१. **प्रति स० ३०** । पत्र स० १७९ । आ० १३ × ६½ इन्च । ले० काल स० १९१८ । पूर्ण । वे० स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—सवाईमाधोपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२४४२. **प्रति स० ३१** । पत्रस० १८ । आ० १० × ४½ इन्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस०—३४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

२४४३. **प्रति सं० ३२** । पत्रस० ७१ । आ० १०×४½ इच । ले०काल स० १७६५ चैत सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० ७०–११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टौडारायसिह (टोक) ।

२४४४. **प्रति सं० ३३** । पत्रस० ३१७ । आ० १०½×४ इन्च । ले०काल स० १७७६ पौष बुदी ९ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

विशेष—नाथूराम ब्राह्मण जोशी वणहटे के ने प्रतिलिपि की । लिखाई साह मोहनदास ठोलिया के पुत्र जीवराज के पठनार्थ । चिमनलाल रतनलाल ठोलिया ने स० १९०८ मे नैणवा मे तेरहपथियो के मदिर मे प्रति चढाई ।

२४४५. **प्रति सं. ३४** । पत्रस० १११ । आ० १३×६½ इन्च । ले०काल स० १८८७ । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूदी ।

२४४६. **प्रतिसं० ३५** । पत्रस० १५७ । आ० १२×५½ इन्च । ले०काल स० १७३८ मगसिर सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी ।

विशेष—सावलदास ने वगरू मे प्रतिलिपि की थी ।

२४४७. **प्रति स० ३६** । पत्र स० २६३ । आ० ६½ × ५ इञ्च । ले० काल स० १९२४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

२४४८. **प्रति सं० ३७** । पत्र स० २११ । आ० ११×४½ इञ्च । ले० काल सं० १८८३ वैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर कामा ।

२४४९. **समाधितत्र भाषा—नाथूलाल दोसी** । पत्रस० १०१-१४२ । आ० १२½ × ८ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—योग । र०काल १९२३ चैत सुदी १२ । ले० काल स० १९५३ प्र ज्येष्ठ सुदी ५ । अपूर्ण । वेष्टन स० ४६३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२४५० **समाधिदत्र भाषा-रायचंद** । पत्रस० ५७ । आ० १० × ४½ इञ्च । भापा-हिन्दी गद्य । विषय—योग शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १८६३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६३ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

विशेष—अन्तिम पद्य—

जैसी मूल श्री गुरु कही तैसी कही न जाय ।
पै परियोजन पाय कै लखी जुह चदराय ।।

२४५१. **समाधितत्र भाषा**— × । पत्र स० ६१ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी (गद्य) । विषय—योग शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२४५२. **समाधि तत्र भाषा**— × । पत्र स० २४ । आ० १०⅛×४⅛ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—योग । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—२४ से आगे पत्र नही है ।

२४५३. **समाधितत्र भाषा-माणकचद** । पत्रस० १८ । आ० १२½×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । गद्य । विषय—योग । र०काल × । ले०काल स० १९५७ चैत सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—वृषभदास निगोत्या ने सशोधन किया था ।

२४५४. **प्रतिस० २** । पत्र स० ३८ । आ० ७½×६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

२४५५. **समाधिमरण भाषा—द्यानतराय** । पत्र स० २ । आ० ९×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चिंतन । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ६४५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

२४५६. **समाधिमरण भाषा—सदासुख कासलीवाल** । पत्रस० १५ । आ० १२×५½ इञ्च । भापा—हिन्दी (गद्य) । विषय—चिंतन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४१९ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२४५७. **समाधिमरण भाषा**— × । पत्र स० २७ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चिन्तन । र०काल ×, । ले०काल स० १९१९ पौष बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १४४९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२४५८. **समाधिमरण भाषा**— × । पत्र स० १४ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चिंतन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६१३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३४५९. **समाधिमरण भाषा**— × । पत्र स० १७ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी ग० । विषय—चिंतन । र०काल × । ले० काल स० १९०६ । पूर्ण । वेष्टन स० २२–६८ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

२४६०. **समाधिमरण भाषा**— × । पत्र स० १४ । भाषा—हिन्दी । विषय—चिंतन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

२४६१. **समाधिमरण भाषा**—× । पत्र स० १४ । आ० १२½ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चिंतन । र०काल × । ले० काल स० १९१६ कार्तिक सुदि १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर, शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—सरावगी हरिकिसन ने व्यास शिवलाल देवकृष्ण से बम्बई मे प्रतिलिपि कराई थी ।

२४६२. **समाधिमरण भाषा**— × । पत्र स० १९ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । (गद्य) । विषय—आत्मचिंतन । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२४६३. **समाधिमरण स्वरूप**— × । पत्र स० १३ । आ० १०½×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—योग । र०काल × । ले० काल स० १८२० ज्येष्ठ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

२४६४. **समाधि स्वरूप**— × । पत्र स० १६ । भाषा—सस्कृत । विषय—चिंतन । र०काल—× । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६३/२५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

२४६५. **समाधिमरण स्वरूप**— × पत्रस० २३ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—योग । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

२४६६. **समाधिशतक—पूज्यपाद** । पत्रस० ७ । आ० १२×५¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२४६७. **प्रति स० २** । पत्रस० ८ । आ० ९×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

२४६८. **प्रति स० ३** । पत्रस० ८ । आ० १०¾×५ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन स० ५५ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

२४६९. समाधिशतक टीका—प्रभाचन्द्र । पत्रस० १० । ग्रा० १२ × ५½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय—ग्रध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२४७०. प्रति सं० २ । पत्रस० २६ । ग्रा० १२×४ इच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६२६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

२४७१. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ३० । ग्रा० ११×५ इच । ले०काल स० १७४७ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२४७२. प्रतिसं० ४ । पत्रस० २-४३ । ग्रा० १०×५ इच । ले०काल स० १५८० । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० २४० । **प्राप्ति स्थान**—ग्रग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १५८० वर्षे ज्येष्ठ मासे १४ दिने श्री मूलसघे मुनि श्रीभुवनकीर्ति लिखापित कर्मक्षयनिमित्त ।

२४७३. प्रति स० ५ । पत्र स० २१ । ग्रा० ११½ × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर ग्रभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२४७४. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ८ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३०/२३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर । गलमात्र है ।

२४७५. प्रतिस० ७ । पत्र स० १२ । ग्रा० ११⅞ × ४¾ इञ्च । ले० काल स० १७६१ कार्तिक सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—वसवा मे जगत्कीर्ति के शिष्य दोदराज ने प्रतिलिपि की थी ।

२४७६. प्रति स० ८ । पत्रस० ११ । ग्रा० १० × ४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६४ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन ग्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२४७७ समाधि शतक—पन्नालाल चौधरी । पत्रस० ६० । भाषा—हिन्दी । विषय—ग्रध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

२४७८. सामायिक पाठ—× । पत्रस० ८ । भाषा-प्राकृत । विषय-ग्रध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३६८-१४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

२४७९ प्रति स० २ । पत्रस० ११ । ग्रा० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियो का डूगरपुर ।

२४८० प्रतिसं० ३ । पत्रस० १४ । ग्रा० १० × ६ इञ्च । ले० काल— स० १६०६ सावण सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—अन्त मे दौलतराम जी कृत सामायिक पाठ के अन्तिम दोहे हैं जो स० १८१४ की रचना है। सस्कृत मे भी पाठ दिये हैं।

२४८१. प्रति स० ४ . पत्रस० ६। आ० ७३/४ × ३१/२ इञ्च । ले०काल स० १४८३। पूर्ण। वेष्टन स० २५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

सवत् १४८३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ शनौ नागपुर नगरे जयाणद गणि लिखत चिरनद तात् श्री सघे प्रसादात्।

२४८२. प्रति सं० ५। पत्रस० १५६। ले०काल ×। अपूर्ण । वेष्टनस० २४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है।

२४८३ प्रति स० ६ । पत्रस० २५ । आ० ८ × ५१/२ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

२४८४. प्रति सं० ७। पत्रस० १५। ले०काल स० १७६२। पूर्ण। वेष्टन स० ८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर डीग।

विशेष—डीग मे प्रतिलिपि हुई थी।

२४८५. प्रति सं० ८। पत्रस० १४। आ० ११×५ इञ्च। वेष्टन स० ३७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

२४८६. प्रति सं० ६। पत्रस० ५८। आ० १११/२×५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मदिर उदयपुर।

विशेष—प्रति हिन्दी गद्य टीका सहित है। सेठ वेलजी सुत वाघजी पठनार्थ लिखी गयी।

२४८७. प्रति सं० १० । पत्र स० ११। आ० ११×५ इञ्च। लेखन काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २८१-१११। **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर।

विशेष—सस्कृत मे भी पाठ है।

२४८८. प्रति स० ११। पत्रस० २१। आ० १०१/२ × ५ इञ्च। ले०काल स० १६१२ भादवा बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० ३७३-१४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

२४८९. प्रति स० १२। पत्रस० ७। आ० ६१/२ × ५१/२ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

२४९०. सामायिकपाठ – ×। पत्र स० ३३। आ० १२×६१/२ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—अध्यात्म। र०काल ×। ले०काल स० १६१३। पूर्ण। वेष्टन स० ५१२। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है।

२४९१. सामायिक पाठ—× । पत्र स० ७२ । भाषा—सस्कृत। विषय—अध्यात्म। र०काल ×। ले०काल स० १६४१। पूर्ण। वेष्टन स० ६/४१८। **प्राप्तिस्थान**—सभवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स्वस्ति सवत् १६४१ वर्षे श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे धनोट द्रुगे चन्द्रनाथ चैत्यालये भ० श्री ज्ञानभूषण प्रभाचन्द्राणा शिष्येण उपाध्याय श्री धर्मकीर्तिणा स्वहस्तेन लिखित ब्रह्मअजित सागरस्य पुस्तकेद। ब० श्री मेघराजस्तच्छिष्य ब्र० सवजीस्तच्छिष्य।

दर्शनविधि भी दी हुई है।

२४६२. सामायिक पाठ—×। पत्रस० १६। आ० ६ × ४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—अध्यात्म। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी।

२४६३. सामायिक पाठ(लघु)—×। पत्र स० ४१। आ० १२×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—अध्यात्म। र०काल ×। ले० काल स० १७४६। पूर्ण। वेष्टन स० २२१। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी।

विशेष—सहस्रनाम स्तोत्र भी है।

२४६४. सामायिक पाठ—×। पत्रस० १६। आ० ६×६½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—अध्यात्म। र०काल—×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २६/१५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)।

२४६५. सामायिक पाठ—×। पत्र स० २०। भाषा—सस्कृत। विषय-अध्यात्म। र०काल—×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

२४६६. सामायिक पाठ—×। पत्र स० ३। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-अध्यात्म। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

२४६७. सामायिक पाठ—×। पत्र स० १३। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय-अध्यात्म। र०काल—×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २०। **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

२४६८. सामायिक पाठ—×। पत्र स० १७। आ० ६½×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—अध्यात्म। र०काल ×। ले०काल—×। पूर्ण। वेष्टन स० २५६-१०२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

२४६९. सामायिक पाठ—×। पत्रस० २३। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—अध्यात्म। र०काल ×। ले० काल स० १९६६। पूर्ण। वेष्टन स० ५१४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

२५००. साधु प्रतिक्रमण सूत्र—×। पत्रस० ६। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—चिंतन। र०काल ×। ले० काल स० १७३० माघ बुदी १२। पूर्ण। वेष्टन स० १०८-६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है।

२५०१. सामायिक पाठ(वृहद्)—×। पत्रस० १४। आ० १०×७ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—अध्यात्म। र०काल ×। ले० काल ×। वेष्टन स० १७६-१६४। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)।

२५०२. सामायिक पाठ (लघु)—×। पत्रस० १। आ० १०×४$\frac{3}{4}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—अध्यात्म। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

२५०३. सामायिक पाठ (लघु)—×। पत्र स० ४। आ० ८×६ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—अध्यात्म। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३०५-११७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर।

विशेष—संस्कृत मे भी पाठ दिये है।

२५०४ सामायिक पाठ—बहुमुनि। पत्र स० ५१। आ० ९×६ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—अध्यात्म। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ९६। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

२५०५. प्रति सं० २। पत्र स० १७। आ० ११×५ इञ्च। ले०काल स० १९१७ वैशाख सुदी ४। पूर्ण। वेष्टन स० ३४। **प्राप्ति स्थान**—तेरहपथी दि० जैन मन्दिर नैणवा।

२५०६. सामायिक पाठ ×। पत्रस० ४। भाषा—हिन्दी। विषय—अध्यात्म। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ७४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

२५०७. सामायिक पाठ भाषा—जयचन्द छाबडा। पत्रस० ७०। आ० ११×४ इञ्च। भाषा—हिन्दी (गद्य)। विषय-अध्यात्म। र० काल स० १८३२ वैशाख सुदी १४। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १३६४। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२५०८. प्रतिसं० २। पत्रस० ३८। आ० ११$\frac{1}{4}$ × ५ इञ्च। ले०काल स० १८८७ माघ सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० ३०७। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२५०९. प्रतिसं० ३। पत्र स० ४५। आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इच। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ९८। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२५१०. प्रति स० ४। पत्र स० १४। आ० ७ × ६ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ९१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

विशेष—जिनदास गोधा कृत सुगुरु शतक तथा देव शास्त्र गुरु पूजा और है।

२५११. प्रतिसं० ५। पत्रस० ६२। आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल स० १९१८ चैत बुदी ४। पूर्ण। वेष्टन स० ९६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

२५१२. प्रतिसं० ६। पत्र स० ४४। आ० ९×७ इञ्च। ले०काल स० १९२९ पौष सुदी ६। पूर्ण। वेष्टनस० १००। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

२५१३. प्रति स० ७। पत्र स० ४३। आ० १२×६$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर अलवर।

२५१४. प्रति स० ८ । पत्र स० २५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स ४४१ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

२५१५. प्रति स० ९ । पत्र स० २४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर (भरतपुर) ।

२५१६. प्रति स० १० । पत्र स० ४४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५५४ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

२५१७. प्रतिसं० ११ । पत्र स० ४८ । आ० १३×६ इञ्च । ले० काल स० १८८१ । पूर्ण । वेष्टन स० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

२५१८. सामायिक पाठ भाषा – भ. तिलोकेन्दुकीर्त्ति । पत्रस० ९८ । आ० ७×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल स० १८४१ सावण सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ८३४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२५१९. सामायिक पाठ भाषा—धन्नालाल । पत्रस० ३१ । आ० ९¾×६¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल स० १९४५ आसोज बुदी ६ । ले० काल स० १९७१ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १३६/२१ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मदिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—गोविन्दकवि कृत चौवीस ठाणा चर्चा पत्र स० २७-३१ तक है । इसका र०काल स० १८८१ फागुण सुदी १२ है ।

२५२०. प्रति स० २ । पत्रस० २७ । आ० ९½ × ६ इञ्च । ले०काल स० १९४६ वैशाख सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ४/४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—२५ से २७ तक चौवीस ठाणा चर्चा भी है जिसकी गोविन्दकवि ने स० १८११ मे रचना की थी ।

२५२१. सामायिक पाठ भाषा—श्यामराम । पत्रस० २३ । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । र०काल १७४६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४६० । **प्राप्ति स्थान**— जैन दि० पञ्चायती मन्दिर, भरतपुर ।

२५२२. सामायिक पाठ— × । पत्रस० ४ । आ० ९ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी) ।

२५२३. सामायिक पाठ— × । पत्रस० ९ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

२५२४. सामायिक पाठ— × । पत्रस० ७६ । आ० ९½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

२५२५. सामायिक पाठ संग्रह— × । पत्रस० ६४ । आ० १३½×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल स० १८२७ आषाढ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० ४७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—सवाई जयपुर मे महाराजा पृथ्वीसिंह के राज्य मे चिमनराम दोषी की दादीने नैणसागर से प्रतिलिपि करवाकर चढाया था ।

मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है—

वृहद् सामायिक, भक्ति पाठ, चौतीसअतिशयभक्ति, द्वितीय नदीश्वर भक्ति, वृहद् स्वयमूस्तोत्र, आराधना सार, लघुप्रतिक्रमण, वृहत् प्रतिक्रमण कायोत्सर्ग, पट्टावली एव आराधना प्रतिवोध सार ।

२५२६. सामायिक प्रतिक्रमण— × । पत्रस० १०५ । आ० १०½×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल स० १६४४ पूर्ण । वेष्टन स० ३४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२५२७. सामायिक टीका— × । पत्रस० ४७-७७ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १७६/४१६ । **प्राप्ति स्थान**—सम्भवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

२५२८. प्रति स० २ । पत्रस० २-२६ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १८०/४२० । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

२५२९. प्रतिसं० ३ । पत्र स० २-१७ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १८१/४२१ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर ।

२५३०. सामायिक पाठ टीका— × । पत्रस० ६८ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल स० १८२७ । पूर्ण । वेष्टन स० २१-८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वडा वीसपथी दौसा ।

विशेष—स्योजीराम लुहाडिया ने आत्म पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२५३१. सामायिक टीका— × । पत्रस० ७३ । भाषा—सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर वसवा ।

२५३२. सामायिक पाठ टीका— × । पत्रस० ५१ । आ० ११½×४½ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल स० १८१४ चैत सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० २८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

विशेष—सवत् १८१४ चैत मासे शुक्लपक्षे पचम्या लिपिकृत पडित आलमचन्द तत् शिष्य जिनदास पठनार्थं ।

२५३३. सामायिक पाठ टीका— × । पत्रस० ४५ । आ० १३×५इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-अध्यात्म । र०काल × । ले०काल स० १७६० आषाढ वुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० २७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

२५३४. सामायिक पाठ टीका— × । पत्र स० ४५ । ग्रा० १२½ × ७ इञ्च । भाषा—सस्कृत-हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल स० १८३० ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० २४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

२५३५ सामायिक टीका— × । पत्र स० ७५ । ग्रा० ९ × ७ इञ्च । भाषा—सस्कृत-हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले० काल स० १८४१ चैत सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३/७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वडा वीसपथी दौसा ।

विशेष—रतनचन्द पाटनी ने दौसा मे प्रतिलिपि की ।

२५३६. सामायिक पाठ टीका सहित— × । पत्रस० १०० । ग्रा० ९½ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-अध्यात्म । र०काल × । ले०काल स० १७८७ ज्येष्ठ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

विशेष—जहानावाद मे प्रतिलिपि हुई ।

२५३७ साम्यभावना— × । पत्रस० ३ । ग्रा० १२ × ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६२/१६८ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

२५३८. सवराग्रनुभप्रेक्षा—सूरत । पत्रस० ३ । ग्रा० ११ × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चिन्तन । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ८१५ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—द्वादश अनुप्रेक्षा का भाग है ।

२५३९. ससार स्वरूप— × । पत्र स० ६ । ग्रा० ११ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चितन । र०काल × । ले० काल स० १६४५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी बूदी ।

विशेष—आचार्य यश कीर्त्तिना स्वहस्तेन लिखित ।

२५४०. सरवगसार सत विचार—नवलराम । पत्रस० २७८ । ग्रा० १०½ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । र०काल स० १८३४ पौप बुदी १४ । ले० काल स० १८३७ । पूर्ण । वेष्टन स० ५०५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—(गुटका मे है)

प्रारम्भ—

सतगुरु मुझि परि, महरि करि वगसो वुधि विचार ।
अवङ्गसार एह ग्र थ, जो ताको करू उचार ।
ताको करू उचार साखि सता की ल्याऊ ।
उकति जुकति परमाण, और अतिहास सुनाऊ ।
नवलराम सरणं सदा, तुम पद हिरदै धारि ।
सतगुरु मुझपर महर करी, वगसो वुधि विचार ।

२५४१. **सिद्धपचासिका प्रकरण**— × । पत्रस० १० । आ० ६½×४½ इञ्च । भापा—प्राकृत । विपय—अध्यात्म । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२५४२ **स्वरूपानन्द—दीपचन्द**। पत्रस० ११ । आ० १०×४ इञ्च । भापा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र०काल स० १७५१ । ले०काल म० १८३५ कार्त्तिक सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० ३१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली (कोटा) ।

विशेष—कोटा के रामपुर मे महावीर चैत्यालये मे प्रतिलिपि हुई थी ।

— ० —

विषय – न्याय एवं दर्शन शास्त्र

२५४३. अष्टसहस्री—आ० विद्यानन्दि । पत्र स० २५१ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–जैन न्याय । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५६३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—देवागम स्तोत्र की विस्तृत टीका है ।

२५४४. प्रति स० २ । पत्रस० २८५ । आ० १२×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

२५४५. प्रतिसं० ३ । पत्र स० २८१ । आ० १३ × ५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १५६ । ४८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । बीच मे कितने ही पत्र नही है । भ० वादिभूपरण के शिष्य ब्र० नेमिदास ने प्रतिलिपि की थी ।

२५४६. अष्टसहस्री (टिप्पण)—× । पत्रस०–५३ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–दर्शन शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १३५ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

२५४७. आप्त परीक्षा—विद्यानन्दि । पत्रस० १४३ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय-दर्शन शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—मुनि श्री धर्मभूपरण तत् शिष्य ब्रह्म मोहन पठनार्थ ।

२५४८. प्रति स० २ । पत्र स० ७३ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले०काल स० १६३५ ज्येष्ठ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—अकबर जलालुद्दीन के शासनकाल मे अरगलपुर (आगरा) मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२५४९. प्रति स० ३ । पत्र स० ६३ । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११८३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२५५० प्रतिसं० ४ । पत्र स० ६ । आ० ११×४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २४४/२३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

२५५१. आप्तमीमासा—आचार्य समन्तभद्र । पत्रस० ८० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय-न्याय । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—गोविन्ददास ने प्रतिलिपि की थी । इसका दूसरा नाम देवागम स्तोत्र भी है ।

२५५२ प्रति स० २ । पत्रस० ३५ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १५७/५१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है। "ब्र मेघराज सरावगी" लिखा है।

२५५३. प्रति स० ३ । पत्रस० २९ । आ० १२½×८ इञ्च । ले० काल स० १९५६ ज्येष्ठ बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनस० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

२५५४. आप्तमीमांसा भाषा—जयचन्द छाबडा । पत्रस० ११६ । आ० १०¾ × ११ इञ्च । भाषा—राजस्थानी (ढूढारी) गद्य । विषय—न्याय । र०काल स० १८६६ चैत बुदी १४ । ले०काल स० १८८६ माह बुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० ११८५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

नोट—इसका दूसरा नाम देवागम स्तोत्र भाषा भी है।

२५५५. प्रति स० २ । पत्रस० १०४ । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

२५५६. प्रति स० ३ । पत्र स० ७६ । आ० १०½ × ७ इञ्च । ले० काल स० १९६१ । पूर्ण । वेष्टन स० ५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

विशेष—चन्देरी मे प्रतिलिपि हुई थी।

२५५७. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ८२ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल स० १८८० भादवा बुदी १ । पूर्ण वेष्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अग्रवाल पचायती उदयपुर।

२५५८. प्रतिसं० ५ । पत्र स० ६९ । ले० काल स० १८९४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

२५५९. प्रति स० ६ । पत्र स० ६१ । ले० काल स० १८९६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३११ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

२५६०. प्रति स० ७ । पत्रस० १०१ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १९२५ कार्तिक सुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० ५३/११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर।

२५६१ प्रतिसं० ८ । पत्रस० ६७ । आ० १२×८ इञ्च । ले० काल स० १८६८ । पूर्ण । वेष्टन स० ८० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

विशेष—साह धन्नालाल चिरन्जीव मागीलाल जिनदास शुभधर इन्दरगढ वालों ने जयपुर मे प्रतिलिपि कराई थी।

२५६२. प्रति स० ९ । पत्रस० ५६ । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल स० १८९७ । पूर्ण । वेष्टनस० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)।

विशेष—फागी मे प्रतिलिपि की गयी थी।

२५६३. प्रतिसं० १० । पत्रस० ६१ । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)।

२५६४. प्रति स० ११ । पत्र स० ५६ । आ० १३×७½ इञ्च । लेखन काल स० १९४१ सावन बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

विशेष—चुन्नीलाल ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी।

२५६५. प्रति स० १२ । पत्रस० ६८ । आ० १२$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इच । ले०काल स० १६८२ चैत बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—वसुदा मे सोनपाल विलाला ने प्रतिलिपि की थी ।

२५६६. आप्तस्वरूप विचार—× । पत्र स० ६ । आ० ११×४$\frac{3}{4}$ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय-न्याय । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मन्दिर अलवर ।

विशेष—अ त मे स्त्री गुण दोष विचार भी दिया हुआ है ।

२५६७ आलाप पद्धति—देवसेन । पत्र स० ७ । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले०काल स० १८६१ सावण बुदी ऽ ऽ । पूर्ण । वेष्टन स० ११७८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—ब्राह्मण भोपतराम ने माधवपुर मे ताराचन्द गोधा के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२५६८. प्रति स० १ । पत्र स० ५ । ले० काल स० १८३० वैशाख बुदी १ । पूर्ण । वे० स० ११७६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

२५६९. प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११८२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२५७० प्रति स० ३ । पत्र स० ११ । आ० १०×५ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

२५७१ प्रतिसं० ४ । पत्र स० ११ । आ० ६× ७ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी, बू दी ।

विशेष—ले० काल पर स्याही फेर दी गयी है ।

२५७२. प्रति स० ५ । पत्र स० ८ । आ० १०×५$\frac{1}{2}$ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

२५७३. प्रति स० ६ । पत्र स० ६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

२५७४. प्रतिसं० ७ । पत्रस० १० । आ० १३×५ इन्च । ले० काल स० १७७२ मगसिर सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—सवत् १७७२ मे सागानेर (जयपुर) नगर मे डूगरसी ने नेमिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी । कठिन शब्दो के सकेत दिये है । अन्त मे नवधा उपचार दिया है ।

२५७५. प्रतिसं० ८ । पत्रस० ७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—सस्कृत टीका सहित है तथा प्रति प्राचीन है ।

२५७६. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १० । आ० ११$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इन्च । ले० काल स० १७६४ । पूर्ण । वेष्टनस० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

२५७७. प्रतिसं० १० । पत्र स० ६ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल स० १७६८ भादवा बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२५७८. प्रति स० ११ । पत्रस० ८ । आ० १० × ४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मन्दिर, उदयपुर ।

२५७९. प्रति ‥ पत्रस० ९ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मदिर ।

२५८० प्रतिसं० १३ । पत्रस० १६ । आ० ८½×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३८ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२५८१. प्रति स० १४ । पत्रस० ८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३९ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२५८२. प्रति स० १५ । पत्रस० ९ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले०काल स० १७८६ । वेष्टनस० ६०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—कोटा नगर मे भट्टारक देवेन्द्र कीर्त्ति के शिष्य मनोहर ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । प्रति सटीक है ।

२५८३ प्रतिस० १६ । पत्र स० १३ । आ० ११½ × ५ इञ्च । ले०काल— स० १७७८ मगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५८८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—सागानेर मे भ. देवेन्द्रकीर्ति के शासन मे प० चोखेचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

२५८४. **ईश्वर का सृष्टि—कर्तृत्व खडन**— × पत्र स० २ । आ० १३ × ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टनस० ४४४/५०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मदिर उदयपुर ।

२५८५. **उपाधि प्रकरण**— × । पत्रस० ३ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—दर्शन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१८/६४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मदिर उदयपुर ।

२५८६. **खडनखाद्य प्रकरण**— × । पत्रस० ६५ । आ० ९½ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० १४०८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

२५८७. **चार्वाकमतीभडी**— × ।पत्रस० १८ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय – न्याय । र०काल × । ले० काल—स० १८९३ ज्येष्ठ बुदी ३ । पूर्ण । वेप्टन स० २०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष—प जयचन्द छावडा द्वारा प्रतिलिपि की गयी थी ।

२५८८. तर्कदीपिका—विश्वनाथाश्रम । पत्रस० ६ । ग्रा० १०×४½ इच । भाषा-संस्कृत (गद्य) । विषय—न्याय । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२४८९. तर्क परिभाषा—केशवमिश्र । पत्रस० ३५ । ग्रा० ११½×५½ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४१६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

२५९० प्रति सं० २ । पत्र स० २६ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । ले०काल—स० १७२८ । पूर्ण । वेष्टनस० ४०६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

२५९१ प्रतिसं० ३ । पत्र स० २२ । ग्रा० १०×४ इच । ले०काल × पूर्ण । वेष्टनस० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वदलाना (वू दी) ।

२५९२ प्रति स० ४ । पत्र स० ५४ । ग्रा० १२½×५ इच । ले०काल स० १५९१ फागुण सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० ४७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

२५९३ प्रतिसं० ५ । पत्र स० ३-४४ । ग्रा० १० × ४½ इञ्च । ले० काल स० १६९४ । अपूर्ण । वेष्टन स० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६९४ वर्षे कृष्ण पक्षे वैशाख .सुदी २ दिने मार्त्तण्डवासरे मालवविषये श्री सारगपुर शुभ स्थाने श्री महावीर चैत्यालये सरस्वती गच्छे वलात्कार गणे कु दकु दाचार्यान्वये भट्टारक श्री रत्नचन्द्र तदाम्नाये ब्र० श्री जेसा तत् शिष्य ब्र० श्री जसराज तत् शिष्य ब्रह्मचारी श्री रत्नपाल तर्कभापा लिखिता ।

२५९४. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १२ । ग्रा० १० × ५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना (वू दी)

विशेष—प्रति टीका सहित है ।

२५९५. तर्कभाषा — × । पत्रस० ११ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अजमेर

२५९६ तर्क परिभाषा प्रकाशिका—चेन्नभट्ट । पत्र स० ६३ । ग्रा० १० × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । र०काल । ले० काल स० १७७५ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—सुस्थान नगर के चितामणि पार्श्वनाथ मदिर मे सुमति कुशल ने सिंह कुशल के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२५९७. तर्कभाषावार्त्तिक— × । पत्र स० ४ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—दर्शन । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, वू दी ।

२५९८. तर्कसग्रह-अन्न भट्ट । पत्रस० २४ । ग्रा० १० × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले०काल स० १७९१ आषाढ वुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ३०२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

२५९९. प्रति सं० १ । पत्रस० ३ । ले०काल स० १८२० वैशाख सूदी ९ । पूर्ण । वेष्टन सख्या ३१४ **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त मन्दिर ।

२६००. प्रति स० २ । पत्र स० १७ । आ० ११×६¾ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १७४-७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

२६०१ प्रति सं० ३ । पत्र स० १६ । आ० १० × ५ इञ्च । ले० काल स० १७५८ । पूर्ण । वेष्टन स० ९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२६०२. प्रतिसं० ४ । पत्रस० १६ । आ० ९ × ४ इञ्च । ले० काल स० १७९६ । पूर्ण । वेष्टन स० १३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी ।

२६०३. प्रतिसं० ५ । पत्र सख्या १६ । आ० ९ × ४ इञ्च । लेखन काल स० १८६६ माघ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बून्दी ।

२६०४. प्रति स० ६ । पत्र स० ९ । आ० १२½ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १८२१ । पूर्ण । वेष्टन स० ४७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—जयनगर मे श्री क्षेमेन्द्रकीर्त्ति के शासन मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२६०५. प्रति स० ७ । पत्र स० ७ । आ० १२×५ इच । ले० काल × । वेष्टन स ४७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

२६०६. प्रति सख्या ८ । पत्रस० ७ । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

२६०७. प्रतिसं० ९ । पत्रस० १४ । आ० ९ × ४½ इञ्च । ले० काल स० १८०१ अगहन बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनस० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी)

विशेष—लिखित खातोली नगर मध्ये । प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

२६०८. प्रति सं० १० । पत्र स० ८। आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रति टीका सहित है ।

२६०९. प्रति स० ११ । पत्र स० १७ । ले० काल । पूर्ण × । वेष्टन स० ७५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

२६१०. प्रति स० १२ । पत्रस० ११ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३३२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति टीका सहित है ।

२६११. प्रति सं० १३ । पत्र स० ६ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल स० १८६१ । पूर्ण । वेष्टनस० ३३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

२६१२. दर्शनसार—देवसेन । पत्र स० ६ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—दर्शन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५५९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२६१३. प्रति स० २ । पत्र स० ४ । आ० १२×५½ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

२६१४ प्रति सं० ३ । पत्र स० ४ । आ० १२½×६ इञ्च । ले०काल स० १६२४ । पूर्ण । वेष्टन स० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—देवीलाल के शिष्य थिरधी चन्द ने प्रतिलिपि झालरापाटन मे की ।

२६१५. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ५ । आ० १२½×७ इञ्च । ले०काल स० १६२५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दीवानजी कामा ।

२६१६. प्रति स० ५ । पत्र स० ४ । आ० १२×४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २५६/४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

२६१७ प्रतिस० ६ । पत्रस० २ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २५७/८५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२६१८. प्रति स० ७ । पत्र स० ३ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

२६१९ द्रव्य पदार्थ— × । पत्र स० १ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—तर्क (दर्शन) । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

२६२०. द्विजवदनचपेटा— × । पत्र स० १० । आ० १३ × ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-वादविवाद (न्याय दर्शन) । र०काल × । ले० काल स० १७२५ । अपूर्ण । वेष्टन स० ४३२/५०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

२६२१. प्रतिस० २ । पत्र स० १६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४३३/५०६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२६२२ नयचत्र—देवसेन । । पत्र स० १५ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-न्याय । र०काल × । ले० काल स० १९४४ माघ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स०११२ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बून्दी ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

२६२३. प्रति स० २ । पत्रस० ४८ । आ० १० × ६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल टोक ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

२६२४. नयचक्र भाषा वचनिका—हेमराज । पत्र स० ११ । आ० ८½ × ६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—दर्शन । र०काल स० १७२६ फागुण सुदी १० । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ । १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२६२५. प्रतिसं० २ । पत्र स० २७ । आ० ८½ × ६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल पचायती दि० जैन मन्दिर अलवर ।

२६२६. प्रति सं० ३ । पत्र स० १३ । आ० १०×८ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, अलवर ।

२६२७. प्रति स० ४ । पत्रस० १२ । आ० १२½×५¼ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

अन्तिम पुष्पिका—इति श्री पडित नरायणदासोपदेशात् साह हेमराज कृत नयचक्र की सामान्य वचनिका सम्पूर्ण ।

२६२८. प्रति सं० ५ । पत्रस० २२ । आ० १०¼ × ६½ इञ्च । ले०काल स० १९४९ । पूर्ण । वेष्टनस० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर, इन्दरगढ (कोटा)

२६२९. प्रति सं० ६ । पत्र स० ९ । आ० १२½ × ६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६/२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज) ।

२६३०. प्रति सं० ७ । पत्रस० १७ । आ० ८½×७½ इञ्च । लेखन काल स० १९३४ । अपूर्ण । वेष्टन स० २०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—पत्र स० ४ नही है । लाला श्रीलाल जैन ने रतीराम ब्राह्मण कामावाले से प्रतिलिपि कराई थी ।

२६३१ प्रति स० ८ । पत्र स० १४ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

२६३२. प्रति सं० ९ । पत्र स० १५ । आ० ११ × ५½ इञ्च । पूर्ण । वेष्टन स० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास, पुरानी डीग ।

२६३३. प्रति सं० १० । पत्रस० १९ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल स० १९३७ । पूर्ण । वेष्टन स० ७३ । **प्राप्ति स्थान**–भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२३३४. नयचक्र भाषा–निहालचन्द ? पत्र स० ६५ । आ० १२ × ७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विपय—न्याय । र०काल स० १८६७ मार्गशीर्ष वदी ६ । ले० काल स० १८७३ । पूर्ण । वेष्टन स० १७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

विशेष—सहर कानपुर के निकट कपू फोज निवास ।
तहा वैठि टीका करी थिरता को अवकास ।।
पवत अष्टादस सतक ऊपर सठ सठि आन ।
मारग वदि षष्टी विषै वार सनीचर जान ।।
ता दिन पूरन भयौ वडौ हर्ष चित आन ।
र कै मातू निधि लई त्यौ सुख मो उर आन ।।

टीका का नाम स्वमति प्रकाशिनी टीका है ।

२६३५. प्रति स० २ । पत्रस० ४७ । आ० १४×५ इञ्च । ले० काल× । पूर्ण । वेष्टनस० १३ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मदिर वयाना ।

२६३६. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ४५ । आ० १२½ × ७½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

२६३७. न्याय ग्रंथ— × । पत्र स० २-६५ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-दर्शन । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी) ।

२६३८. न्याय ग्रंथ— × । पत्र स० ६ । आ० १३ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-जैन न्याय । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

२६३९ न्याय ग्रंथ—× । पत्रस० ३-२३५ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-जैन न्याय । र०काल × । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टनस० ४२०/२८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

२६४०. न्यायचन्द्रिका—भट्ट केदार । पत्रस० १६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत विषय-न्याय । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४३७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२६४१ न्यायदीपिका-धर्मभूषण । पत्रस० ३६ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-जैन न्याय । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३०० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२६४२. प्रति स० १ । पत्र स० ३० । ले० काल स० १८२५ आषाढ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मदिर ।

२६४३. प्रतिस० २ । पत्रस० ३५ । आ० ६¾ × ५ इञ्च । ले०काल स० १८५३ आसोज सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

विशेष - स्योजीराम ने प० जिनदास कोटे वाले के प्रसाद से लिखा ।

२६४४. प्रति स० ३ । पत्रस० ३४ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल स० १७०५ । पूर्ण । वेष्टन स० १७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२६४५. प्रति स० ४ । पत्रस० २१ । आ० १२½ × ६ इञ्च । ले०काल × । वेष्टनस० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

२६४६. प्रति स० ५ । पत्र स० २८ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल × । वेष्टनस० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

२६४७ न्याय दीपिका भाषा वचनिका—संघी पन्नालाल । पत्र स० ६१ । आ० १३½ × ५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । विषय—न्याय । र०काल स० १९३५ मगसिर वदी ७ । ले० काल स० १९५७ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

२६४८ न्यायावतारवृत्ति— × । पत्र स० ५ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत विषय—न्याय । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

२६४९. न्याय बोधिनी × । पत्र स० १-१७ । आ० ११$\frac{3}{4}$ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ७४४ । अपूर्ण । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रारंभ—निखिलागम संचारि श्री कृष्णाख्य परमद ।
व्यात्वा गोवर्द्धन सुधीस्तनुते न्यायबोधिनीम् ।।

२६५०. न्यायविनिश्चय-आचार्य अकलंकदेव । पत्रस० ५ । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१/५०५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

२६५१ न्यायसिद्धांत प्रभा—अनंतसूरि । पत्र स० २३ । आ० १०$\frac{1}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स ७१४ । प्राप्तिस्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२६५२. न्यायसिद्धांतदीपक टीका-टीकाकार शशिधर । पत्रस० १२७ । आ० १०× ४$\frac{1}{4}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७१५ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—एक १८ पत्रो की अपूर्ण प्रति और है ।

२६५३ पत्रपरीक्षा—विद्यानन्दि । पत्रस० ३३ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-दर्शन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

२६५४. परीक्षामुख-माणिक्यनदि । पत्रस० ५ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—दर्शन । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३०२/१५९ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

२६५५ परीक्षामुख (लघुवृत्ति)— × । पत्रस० २० । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—न्याय । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६८ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—पत्र स० ७ से 'आप्तपरीक्षा' दी गई है ।

२६५६. परीक्षामुख भाषा-जयचन्द छबड़ा । पत्रस० १२७ । आ० १४ × ८$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-राजस्थानी (ढू ढारी) गद्य । विषय-दर्शन । र०काल स० १८६० । ले०काल स० १९५३ । पूर्ण । वेष्टन स० १३ ६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मंदिर अलवर ।

२६५७. प्रतिसं० २ । पत्र स० १८८ । ले०काल स० १९२२ जेठ कृष्णा ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मंदिर दीवान जी भरतपुर ।

२६५८. प्रमाणनयतत्वालोकालंकार-वादिदेव सूरि । पत्र स० ९८-१६८ । आ० ११$\frac{3}{4}$× ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-न्याय । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३२१ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२६५९. प्रमाणनयतत्वालोकालंकार वृत्ति—रत्नप्रभाचार्य । पत्र स० ३–८७ । ग्रा० ११ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २८१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—दो प्रतियो का सम्मिश्रण है । टीका का नाम रत्नाकरावतारिका है ।

२६६०. प्रति स० २ । पत्रस० ८६ । ग्रा० १०½×४½ । ले०काल स० १५५२ ग्रासोज बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—विप्र श्रीवत्स ने वीसलपुर नगर मे प्रतिलिपि की थी और मुनि सुजाणनगर के शिष्य प० श्री कल्याण सागर को भेंट की थी ।

२६६१. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ७६ । ले०काल स० १५०१ । पूर्ण । वेष्टन स० ६१/४६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन एव जीर्ण है । अतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

प्रमाणनयातत्वालकारे श्री रत्नप्रभविरचिताया रत्नावतारिकाख्य लघु टीकाय वादस्वरूप निरूपणीयानामष्टम परिच्छेद समाप्ता । श्री रत्नावतारिकाख्य लघुटीकेति । सवत् १५०१ माघ सुदि १० तिथौ श्री ५ भट्टारक श्री रत्नप्रभसूरि शिष्येण लिखितमिद ।

२६६२. प्रमाणनय निर्णय-श्री यशःसागर गणि । पत्रस० १६ । ग्रा० १० × ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । र० काल × । ले०काल × । वेष्टन स० २७ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

२६६३. प्रमाण निर्णय—विद्यानदि । पत्र स० ५७ । ग्रा० ११×५ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष - प्रति प्राचीन है । मुनि धर्मभूषण के शिष्य ब्र० मोहन के पठनार्थ प्रति लिखायी गयी थी ।

२६६४. प्रतिसं० २ । पत्रस० ५६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है प० हर्षकल्याण की पुस्तक है । कठिन शब्दो के अर्थ भी है ।

२६६५. प्रमाण परीक्षा—विद्यानंद । पत्र स० ७५ । ग्रा० ११×५ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—आदिभाग—

जयति निर्जिताशेष सर्वथैकातनीतय ।
सत्यवाक्याधियाशश्वत् विद्यानदो जिनेश्वरा ।।
अथ प्रमाण परीक्षा तत्र प्रमाण लक्षण परीक्ष्यते ।

मुनि श्री धर्म भूषण के शिष्य ब्रह्म मोहन के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी ।

२६६६. **प्रतिसं० २** । पत्र स० ४७ । आ० १४$\frac{3}{4}$ × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३१/४६८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन स मवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—भट्टारक वादिभूषण के शिष्य ब्र० नेमीदास के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी ।

२६६७. **प्रतिसं० ३** । पत्र स० ६३ । आ० १३×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १६३७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२६६८. **प्रमाण परीक्षा भाषा—जयचन्द छाबडा** । पत्रस० ६० । आ० १३×७ इच । भाषा—हिन्दी ग० । विपय – दर्शन । र० काल स० १६१३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

२६६६. **प्रमाण प्रमेय कलिका—नरेन्द्रसेन** । पत्र स० १० । आ० ११$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय—दर्शन । र० काल × । ले० काल स० १७१४ फाल्गुन सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० २६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी

विशेष—श्री गुणचद्र मुनि ने प्रतिलिपि की थी ।

२६७०. **प्रमाण मंजरी टिप्पणी**—× पत्रस० ४ । आ० १०× ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय—न्याय । र० काल × । ले० काल स० १६१५ । पूर्ण । वेष्टनस० १४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स० १६१५ वर्षे भादवा सुदी १ रवौ श्री शुभचन्द्रदेवा तत् शिष्योपाध्याय श्री सकलभूपणाय पठनार्थं ।

२६७१. **प्रति स० २** । पत्रस० २४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—प्रति अति प्राचीन है ।

२६७२. **प्रतिसं० ३** । पत्रस० २७ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२६७३. **प्रमेयरत्नमाला—अनन्तवीर्य** । पत्रस० ७० । आ० ११×६ इच । भाषा—सस्कृत । विपय—न्याय । र० कारा × । ले० काल स० १८६१ कार्त्तिक बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० ११८० । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—परीक्षा मुख की विस्तृत टीका है ।

२६७४. **प्रतिसं० २** । पत्र स० ६३ । आ० ११ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १७०४ । पूर्ण । वेष्टनस० १६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—उदयपुर मे सभवनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी । धर्मभूपण के शिष्य ब्र० मोहन ने प्रतिलिपि की थी । कही कही टीका भी दी हुई है ।

२६७५. **प्रति सं० ३** । पत्र स० ५३ । आ० १३×५ इञ्च । ले० काल × पूर्ण । वेष्टन स० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२६७६. **प्रति स० ४** । पत्र स० ७५ । अपूर्ण । वेष्टन म० २२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२६७७. **प्रति स० ५** । पत्र स० ३३ । आ० १२ X ५½ इञ्च । ले०काल X । वेष्टन स० ६८७ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

२६७८. **पचपादिका विवरण—प्रकाशात्मज भगवत** । पत्र स० १८६ । आ० १०½X ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । र०काल X । ले०काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० १११ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीमत् परमहस परिव्राजकान्यानुभव पूज्यपाद शिष्यस्य प्रकाशात्मज भगवत् कृतौ पचपादिका विवरणे द्वितीय सूत्र समाप्तम् ।

२६७९. **भाषा परिच्छेद—विश्वनाथ पंचानन भट्टाचार्य** । पत्र स० ७ । आ० १०X४¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । र०काल—X । ले०काल X । पूर्ण वेष्टन स० ४६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

२६८०. **महाविद्या**— X । पत्र स० ५ । आ० १३X४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—जैन न्याय । र०काल । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ४४५/५०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

अन्तिम पुष्पिका—

इति तर्क प्रवाणीना महाविद्याभियोगिना ।
इति विद्यातर्की शास्त्र समाप्त ।।

२६८१. **रत्नावली न्यायवृत्ति—जिनहर्ष सूरि** । पत्रस० ४७ । भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । र०काल X । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन स० ५८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—जिनहर्ष सूरि वाचक दयारत्न के शिष्य थे ।

२६८२. **विदग्ध मुखमडन—धर्मदास** । पत्र म० १८ । आ० १२X५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय—न्याय । र०काल—X । ले० काल स० १७६३ माघ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष—ब्रह्म केसोदास के शिष्य ब्रह्म कृष्णदास ने प्रतिलिपि की थी ।

२६८३. **प्रति स० २** । पत्रस० १६ । आ० १२X५¾ इञ्च । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक)

२६८४. **प्रति सं० ३** । पत्र स० ९ । आ० ११½X४½ इञ्च । ले० काल स० १७१४ चैत बुदी ३ । पूर्ण । वेप्टन स० २०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

२६८५. **प्रतिसं० ४** । पत्र स० २८ । आ० १२X५ इञ्च । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ४६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टिप्पण सहित है ।

२६८६. प्रति स० ५ । पत्र स० १४ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले० काल स० १८१५ श्रावण सुदी १२ । वेष्टन स० ४६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टिप्पण सहित है ।

२६८७. प्रति स० ६ । पत्र स० ५ । आ० १३½×५¾ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन स० ६८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा सस्कृत टीका सहित है ।

२६८८. विदग्ध मुखमडन—टीकाकार शिवचन्द । पत्र स० ११७ । आ० १० × ४½ इञ्च । *भाषा—सस्कृत* । *विषय—न्याय* । *र० काल* × । *ले० काल* × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१८ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

२६८९. वेदान्त संग्रह— × । पत्रस० ५१ । आ० १२½×३½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—दर्शन । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ४७ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२६९०. षट् दर्शन— × । पत्र स० ४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बू दी ।

२६९१. षट् दर्शन वचन— ×। पत्र स० ६ । भाषा-सस्कृत । विषय-दर्शन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०६/४६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

२६९२. षट् दर्शन विचार । पत्र स० ३ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-दर्शन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूँदी ।

२६९३. षट् दर्शन समुच्य— × । पत्रस० १० । आ० १०×४¾ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । र० काल × । ले०काल × । वेष्टन स० १२०४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

२६९४. षट् दर्शन समुच्चय—हरिचन्द्र सूरि । पत्र स० २८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-दर्शन । र० काल × । ले०काल स० १५५८ । अपूर्ण । वेष्टन स० ८३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—पत्र स० १६ पर स० १५५८ वर्षे आसोज वदि ८—ऐसा लिखा है पत्र २६ पर हेमचन्द्र कृत 'वीर द्वात्रिंशतिका' भी दी हुई है ।

२६९५. प्रति सं० २ । पत्रस० २ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १०५/४९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

२६९६ प्रति सं० ३ । पत्र स० ६ । आ० १०×५¾ इच । ले०काल स० १८३१ आसोज सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० २१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

२६९८ **प्रति स० ४** । पत्र स० ३७ । ग्रा० १२×६ इञ्च । ले० काल स० १६०१ । पूर्ण । वेष्टन स० २४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

विशेष—सवाईमाधोपुर मे नोनदराम ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी । प्रति सटीक है ।

२६९९ **प्रति स० ५** । पत्रस० ६ । ले०काल स० १६३५ । पूर्ण । वेष्टनस० १०४/५०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—सवत् १६३५ वर्षे तथा शाके १४९९ प्रवर्तमाने मार्गसिर सुदी शनौ ब्र० श्री नेमिदासमिद पुस्तक ।।

२७००. **षट् दर्शन समुच्चय टीका—राजहस** । पत्रस० २२–२८ । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । र०काल × । ले०काल स० १५९० ग्रासोज वुदी ४ । ग्रपूर्ण । वेष्टनस० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर डीग ।

२७०१ **षट् दर्शन समुच्चय सूत्र टीका**— × । पत्रस० ४५ । ग्रा० ११½×५½ इच । भाषा—सस्कृत हिन्दी । र०काल × । ले० काल स० १८१० वैशाख वुदी । पूर्ण । वेष्टनस० ९७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, नागदी बूदी ।

२७०२. **षट् दर्शन समुच्चय सटीक** । पत्र स० ७ । ग्रा० ११×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रति ग्रपूर्ण है । चौथा पत्र नही है एव पत्र जीर्ण है ।

२७०३. **षट् दर्शन के छिनव पाखड**— × । पत्र स० १ । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—दर्शन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४०–१५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

२७०४. **सप्तपदार्थी—शिवादित्य** । पत्र स० १५ । ग्रा० १२×३½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—दर्शन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २४९ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

२७०५ **प्रति स० २** । पत्रस० ९ । ग्रा० ९×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९८० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त, मन्दिर ।

२७०६ **सप्तभगी न्याय**— × । पत्रस० २ । ग्रा० १२×४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय-न्याय । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४५१/२६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

२७०७. **सप्तभंगी वर्णन**— × । पत्रस० १२ । ग्रा० ११ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कमा ।

२७०८ **सर्वज्ञ महात्म्य**— × । पत्रस० २ । भाषा—सस्कृत । विषय—दर्शन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५८, ६४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ-मदिर उदयपुर ।

विशेष—देवागम स्तोत्र की व्याख्या है ।

२७०६. सर्वज्ञसिद्धि । पत्रस० २० । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४५४/२५४ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२७१०. सार संग्रह—वरदराज । पत्रस० २-१०० । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत (गद्य) । विषय—न्याय । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२७११. प्रतिसं० २ । पत्र स० ७ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—इसका दूसरा नाम तार्किक रास भी है ।

२७१२. प्रति स० ३ । पत्रस० ६३ । आ० ११¾ × ४¾ इञ्च । ले०काल स० १६५२ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२/३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२७१३. सांख्य प्रवचन सूत्र— × । पत्र स० १४० । आ० ६¾ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले० काल स० १७६५ फागुन बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

२७१४. सांख्य सप्तति × । पत्र स० ४ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—दर्शन । र०काल × । ले० काल स० १८२१ भादवा बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० २६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—जयपुर नगर मे प० चोखचन्दजी के शिष्य प० सुखराम ने नैणसागर के लिए प्रतिलिपि की थी ।

२७१५. सिद्धात मुक्तावली— × । पत्र स० ६८ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । र०काल × । ले०काल स० १८१० भादवा बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १३३७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

२७१६. स्याद्वाद मंजरी—मल्लिषेण सूरी । पत्र स० ३६ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—दर्शन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२७१७. प्रतिसं० २ । पत्रस० ६७ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०५/६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—प्रति प्राचीन एवं टीका सहित है ।

विषय--पुराण साहित्य

२७१८. **अजित जिनपुराण—पडिताचार्य अरुणमणि**। पत्र स० २१६। आ० १२½ × ५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—पुराण। र०काल स० १७१६। ले०काल स० १७६७ वैशाख सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० स० ४२६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—प्रति जीर्ण शीर्ण है।

२७१६ **प्रतिसं० २**। पत्र स० ३४। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ४५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—अजितनाथ द्वितीय तीर्थंकर हे। इस पुराण मे उनका जीवन चरित्र विस्तृत है।

२७२०. **आदि पुराण महात्म्य**— पत्र स० २। आ० १० × ४¾ इच। भाषा—सस्कृत। विपय—महात्म्य वर्णन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना बूदी।

२७२१. **आदिपुराण—जिनसेनाचार्य**। पत्र स० ४४०। आ० १०½ × ५½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विपय—पुराण। र०काल ×। ले० काल स० १८७३ पौष बुदी। वेष्टन स० १४०। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२७२२. **प्रतिसं० २**। पत्र स ३६२। आ० १२ × ६ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय-पुराण। र०काल ×। ले० काल स० १६५६ पूर्ण। वे० स० १४४३। **प्राप्ति स्थान**—उरोक्त मन्दिर।

२७२३. **प्रतिसं० ३**। पत्र स० ४८१। आ० १०¾ × ४¾ इच। ले० काल स० १६८१ श्रावण सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन स० १५४३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

२७२४. **प्रतिसं० ३**। पत्र स० ४०५। आ० १२½ × ७ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २११। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

२७२५ **प्रतिस० ४**। पत्र स० ७६२। आ० ११ × ६ इच। ले०काल स० १८८५ वैशाख सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन स० १५६७। **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—प्रति हिन्दी टव्वा टीका सहित है।

२७२६ **प्रतिसं० ५**। पत्रस० २८८। आ० ११½ × ६ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २८३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

२७२७ **प्रति स० ६**। पत्रस० ७। आ० १२ × ६ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० ३६/६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

२७२८. **प्रति स० ७**। पत्र स० ४४३। आ० १२ × ८ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेप्टन स० ६। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर।

२७२६ **प्रतिस० ८**। पत्र स० ३५१। आ० १२ × ८ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेप्टन स० ३। **प्राप्तिस्थान**—पचायती दि० जैन मदिर करौली।

विशेष—ले० प्रशस्ति अपूर्ण है।

चादनगाव महावीर मे गूजर के राज्य मे पाण्डे सुखलाल ने प्रतिलिपि की थी।

२७२६(क) प्रति स० ६। पत्र स० ४२४। आ० ११$\frac{3}{8}$×६ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

२७३०. प्रति स०१०। पत्र स० ४६४। आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। ले० काल स० १६६६ फागुण सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन स० ५६ २६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली।

२७३१. प्रतिसं० ११। पत्र स० ६०६। ले० काल स० १७३० कार्त्तिक सुदी १३ बुधवार। अपूर्ण। प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष प्रति जीर्ण शीर्ण है।

प्रशस्ति—श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे श्री कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्ति तत्पट्टे भुवनकीर्ति त० प० ज्ञानभूपण तत्पट्टे भ० विजयकीर्ति तत्पट्टे भ० शुभचन्द्र तत्पट्टे भ० सुमनिकीर्ति तत्पट्टे भ० गुणकीर्ति तत्पट्टे भ० वादिभूपण तत्पट्टे भ० राजकीर्ति तत्पट्टे भ० पद्मनदि तत्पट्टे देवेन्द्रकीर्ति तत्पट्टे क्षेमेन्द्रकीर्ति तदाम्नाये आचार्य कल्याणकीर्ति तत् शिष्य ब्रह्म श्री ५ मघजीन तत् शिप्य ब्रह्मचारि नाराजिप्णवे अहमदावाद नगरे सारिगपुरे शीतल चैत्यालये हुवडज्ञातीय लघुशाखाया बवियागोत्रे साह श्री सघजी तत्पुत्र साह श्री सूरजी भार्या वाल्हवाई तयो पुत्र साह परेक्षमुन्दर भार्या सिप्तावाई तयो पुत्रौ द्वौ प्रथम पुत्र सामदाम द्वितीय पुत्र धर्मदाम एतैं स्वज्ञानावरणीय कर्मक्षयार्थं श्री वृहदादिपुराण लिखाप्य दत्त ब्रह्मचारयकासाहायात्।

२७३२. प्रति स० १२। पत्र स० १८७। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन वडा पचायती मन्दिर डीग।

२७३३ प्रतिसं० १३। पत्रस० २४२। आ० १२ ×५ इञ्च। ले० काल स० १७४८। पूर्ण। वेष्टनस० ४२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा।

विशेष—स ग्रामपुर निवासी साहजी श्री द्यानतरायजी श्रीमाल ज्ञातीय ने इसकी प्रतिलिपि करवायी थी।

२७३४ प्रति स० १४। पत्रस० ३६६। आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{8}$ इञ्च। ले०काल स० १७२२ चैत सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० १३४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी।

लेखक प्रशस्ति—

श्री भुवनभूपणेन स्वहस्तेन भट्टारक श्री जगत्कीर्त्तिजितरूपदेशात् सागावत्या मध्ये सवत् १७२२ मधुमासे शुक्लपक्षे पटी भृगुवासरे।

२७३५. प्रति स० १५। पत्रस० ३४१। आ० १२$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। ले०काल स० १८६१ माघ सुदी ५। पूर्ण। वेष्टनस० ६४। प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर नागदी, बूदी

विशेष—जयपुर मे पन्नालाल खिदूका ने प्रतिलिपि करवायी थी। प्रारम्भ के १८५ पत्र दूसरी प्रति के हैं।

२७३६ प्रतिसं० १६। पत्रस० ६०। आ० १२×५ इञ्च। ले०काल स० १६७६ जेष्ठ वदि ८। अपूर्ण। वेष्टन स० २३८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

२७३७ प्रति स० १७। पत्रस० १६६। आ० १२×६ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १३६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

२७३८ आदिपुराण—पुष्पदंत। पत्र स० २३४। आ० १२×५ इन्च। भाषा—अपभ्रंश। विषय—पुराण। र० काल × । ले० काल स० १६३१ भादवा सुदी १२। पूर्ण । वेष्टन स० १३१। प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है। मालपुरा नगर मे प्रतिलिपि हुई थी। इसमे प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ का जीवन वृत्त है।

२७३९ प्रति स० २। पत्रस० २८६। आ० १२ × ५ इन्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० ३०७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर, अभिनन्दन स्वामी वूदी।

२७४० आदिपुराण। पत्रस० १७२। आ० ११ × ५। भाषा-सस्कृत। र० काल ×। ले० काल ×। वेष्टनस० १०३। प्राप्ति स्थान—शास्त्र भण्डार दि० जैन, मदिर लश्कर जयपुर।

विशेष—रत्नकीर्त्ति के शिष्य ब्र० रत्न ने प्रतिलिपि करवाई थी।

२७४१ आदिपुराण—भ० सकलकीर्ति। पत्रस० १६७। आ० १०×४½ इन्च। भाषा—सस्कृत। विषय—पुराण। र० काल ×। ले० काल स० १८८० चैत सुदी ८। पूर्ण। वेष्टनस० ८६४। प्राप्ति स्थान— भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

विशेष—श्री विद्यानदि के प्रशिष्य रूडो ने प्रतिलिपि की थी।

२७४२ प्रति स० २। पत्रस० २१८। आ० १२×५ इन्च। ले० काल स० १७७६। पूर्ण। वेष्टनस० ५२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक)।

विशेष—तक्षकपुर (टोडारायसिंह) मे प० विजयराम ने आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी।

२७४३. प्रति स० ३। पत्रस० १८८। आ० १२×५½ इन्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ वूदी।

२७४४. प्रति स० ४। पत्रस० १४६। आ० १२×६ इन्च। ले०काल—स० १६०५ पूर्ण। वेष्टनस० ६। प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, वूदी।

विशेष—वूदी मे प्रतिलिपि की गई थी।

२७४५. प्रति स० ५। पत्र स० २२७। आ० १०½×५ इन्च। ले०काल स० १७५२। पूर्ण। वेष्टन स० १०। प्राप्ति स्थान—उपरोक्त।

विशेष—भ० देवेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य ब्र० कल्याणसागर ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

२७४६. प्रति स० ६। पत्रस० १६७। आ० ११½×६ इन्च। ले०काल स १७७६। पूर्ण। वेष्टनस० ३३५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर, अभिनन्दनस्वामी, वूदी।

विशेष—मालपुरा मे प्रतिलिपि हुई थी।

२७४७ प्रतिसं० ७। पत्र स० १७६। आ० १० × ६ इन्च। ले० काल स० १६१० वैशाख बुदी १४। पूर्ण। वेष्टन स० ११। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर नागदी वूदी।

विशेष—वृदावती मे नेमिनाथ चैत्यालय मे प० चिम्मनलाल ने प्रतिलिपि की थी।

२७४८. प्रति स० ८। पत्रस० २१५। आ० १०½×६½ इच। ले० काल स० १८२५। पूर्ण। वेष्टनस० ३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर चौधरियान मालपुरा (टोक)।

२७४९. प्रतिसं० ९। पत्र स० २१४। आ० १०½×५ इञ्च। ले० काल स० १६९७ वैशाख सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन स० ३२९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

प्रशस्ति—श्रो ह्रीं स्वस्ति श्री सवत् १६९७ वर्षे वैशाखमासे शुक्लपक्षे सप्तमी बुधवासरे सरूज नगरे श्री पार्श्वनाथचैत्यालये श्रीमद्दिगवर काष्टासघे जैत गच्छे चारित्रगणे भट्टारक श्री रामसेनान्वये तदनुक्रमेण भ० सोमकीर्त्ति तदनुक्रमेण भ० रत्नभूषण तत्पट्टाभरण भट्टारक जयकीर्त्ति विजयराज्ये तत् सिष्य ब्र० शिवदास तत् शिष्य प० दशरथ लिखत पठनार्थं। परमात्मप्रसादात् श्री गुरुप्रसादात् श्री पद्मावती प्रसादात्।

२७५०. प्रति स० १०। पत्रस० १५१। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० २२२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

२७५१. प्रति सं० ११। पत्रस० २३८। ले० काल स० १६७९ मगसिर बुदी ३। पूर्ण। वेष्टन स० ५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा।

२७५२. प्रति स० १२। पत्रस० १-३२। आ० १२×५½ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ७०८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

२७५३. आदिपुराण—ब्र० जिनदास। पत्रस० १८०। आ० १० × ५½ इञ्च। भाषा—राजस्थानी पद्य। विषय—पुराण। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ३८८-१४५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

२७५४. प्रति स० २। पत्रस० १६५। आ० ११×६½ इच। ले०काल स० १८८२। पूर्ण। वेष्टनस० ४२। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी।

विशेष सरोला ग्राम मे प्रतिलिपि की गई थी।

२७५५. आदिपुराण भाषा—प० दौलतराम कासलीवाल। पत्र स० ६२५। आ० ११½×८ इञ्च। भाषा—हिन्दी (गद्य)। विषय—प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ के जीवन का वर्णन। र०काल स० १८२४। ले० काल स० १९७१। पूर्ण। वेष्टनस० २२५। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२७५६. प्रतिस० २। पत्र स० २०१। आ० १४× ७ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १५७३। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

२७५७. प्रतिसं० ३। पत्र स० १५०। आ० १०½×७½ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १०७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा।

विशेष—आगे के पत्र नही हैं।

२७५८. प्रति स० ४। पत्र स० ३९५। आ० ११×६ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १०७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर।

२७५९. प्रतिसं० ५। पत्र स० ४३। आ० १३×७ इच। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ६०। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मदिर उदयपुर।

२७६०. **प्रतिस० ७** । पत्र स० ५५८ । आ० १३×७ इन्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

२७६१ **प्रतिस० ८** । पत्र सख्या ६०१ । आ० १२ × ६½ इन्च । लेखन काल स० १६१६ । पूर्ण । वेष्टन स० २७८-११० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—रतलाम मे प्रतिलिपि की गई थी ।

२७६२ **प्रतिस० ६** । पत्रस० २०४ । आ० ११½×८ इन्च । ले० काल स० १६८० । अपूर्ण । वेष्टन स० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक)।

विशेष—६६ अध्याय तक है । मल्लिनाथ तीर्थंकर तक वर्णन है ।

२७६३ **प्रति सख्या १०** । पत्र स० २६६-४२७ । आ० १२×६ इच । ले० काल स० १६१७ आषाढ सुदी ८ । अपूर्ण । वेष्ट स ० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—रामचन्द छावडा ने दौसा मे प्रतिलिपि की की ।

२७६४ **प्रति स० ११** । पत्र स० ४७३ । लेखक काल × । पूर्ण । वेष्टन सख्या ४२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

२७६५. **प्रति स० १२** । पत्र सख्या २ से ३१८ । लेखन काल × । अपूर्ण । वेष्टन सख्या ४२८ । **प्राति स्थान**—दि जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

२७६६ **प्रति स० १३** । पत्र सख्या ५१ से ४३१ । आ० १५×६½ इच । लेखन काल—स० १८६६ । अपूर्ण । वेष्टन सख्या ११।७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पचायती दूनी (टोक)

विशेष जयकृष्ण व्यास ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

२७६७ **प्रति स० १४** । पत्र स० ४६६ । आ० १६×१० इच । ले. काल स० १६६७ पौष सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक)

२७६८ **प्रतिस ० १५** । पत्र सख्या ८८८ । आ० १२×५½ इच । ले० काल स० १८५३ कार्तिक बुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टन सख्या २५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन तेरहपथी मदिर, नैणवा

विशेष-पत्र सख्या ७०२ से ७७५ तक नहीं है । ब्राह्मण सालिगराम द्वारा प्रतिलिपि की गयी थी ।

२७६९ **प्रति सख्या १६** । पत्र सख्या ५८० । आ० १३×७ इच । ले० काल सख्या १६२२ । पूर्ण । वेष्टन सख्या १५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बूदी ।

विशेष—लोचनपुर नैणवा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२७७०. **प्रति स ० १७** । पत्र सख्या ६३० । आ०-१३×६½ इच । ले० काल स० १८६७ । पूर्ण । वेष्टनस० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ बूदी ।

विशेष—सेवाराम पहाड्या केशी वाले ने अपने सुत के लिये लिखवाया था ।

२७७१. **प्रति स ० १८** । पत्र सख्या ६२२ । आ० १४×६½ इच । ले० काल स० १६०७ । पूर्ण । वेष्टनस० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष—प० सदासुख जी **अजमेरा** ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२७७२. **प्रति सख्या १६** । पत्र स० १०१-५०७ । आ० १०×७ इच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १६० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर दवलाना (बूदी)

२७७३. प्रति स० २० पत्र स० ६०२ । आ० १२½×५ इंच । ले० काल स० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन स० १९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपथी मालपुरा (टोक)

२७७४. प्रति स० २१ । पत्र स० ८२९ । आ० १०×७ इच । ले० काल स० १९५६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर कोटयो का, नैणवा

२७७५. प्रति स० २२ । पत्र स० ४८ मे १३८ । आ० १२×६½ इच । ले० काल ×। अपूर्ण । वेष्टनस० ३३ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा)

२७७६ प्रति स० २३ । पत्र स० ६९२ । आ० १२½ × ६ इच । ले०काल× । वेष्टनस० २५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा)

२७७७. प्रति स० २४ । पत्र स० ७१९ । आ० १२×७½ इच । ले० काल स० १९१६ माघ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन म० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती अग्रवाल मन्दिर, अलवर ।

२७७८. प्रति स० २५ । पत्र स० ५१० । आ० १५×७½ इच । ले० काल स० १९१० वैशाख सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन म० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती अग्रवाल मंदिर, अलवर ।

विशेष—ग्रन्थ तीन वेष्टनो मे है ।

२७७९. प्रति सं० २६ । पत्र स० ५८१ । आ० १०½×६ इच । ले० काल स० १८७५ । पूर्ण । वेष्टन स० १३५ ।

विशेष—पाडे लालचन्द ने प्रतिलिपि की थी । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर, वयाना ।

२७८०. प्रतिसं० २७ । पत्र स० ४५२ । आ० १२×७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर कामा ।

२७८१. प्रति स० २८ । पत्र स० ८४३ । आ० १२×७½ इच । ले० काल स० १८९६ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, कामा

विशेष—वीच के पत्र नही है ।

२७८२. प्रति स० २९ । पत्र स० २२२ । आ० १३×६½ इच । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ३३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

२७८३. प्रतिसं० ३० । पत्र स० ९१३ । आ० १३×६ इञ्च । ले० काल० × । पूर्ण । वेष्टन स० १७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

२७८४ प्रति स० ३१ । पत्र स० ४८५ । आ० १२ × ७ इञ्च । ले० काल स० १९०६ वैशाख बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मदिर करौली ।

विशेष—करौली नगर मे नानिगराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२७८५. प्रतिसं० ३२ । पत्र स० ७२८ । आ० १२¾× ६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४/४ **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२७८६. प्रतिसं० ३३ । पत्र स० ११२३ । आ० १२×६ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वड़ा वीसपथी दौसा ।

२७८७. प्रति स० ३४ । पत्रस० ८८६ । ग्रा० १५ × ७ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—दो वेष्टनो मे है । इसे श्री भगवानदास ने जयपुर मे मगवाया था ।

२७८८. प्रतिस० ३५ । पत्र स० ३१६ । ग्रा० १३×६½ इन्च । ले० काल स० १६०६ मगसिर सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—पाडे जीवनराम के पठनार्थ रामगढ मे ब्राह्मण गोपाल ने प्रतिलिपि की थी ।

२७८९ प्रति स० ३६ । पत्र स० २२३ से ८२६ । ग्रा० १३×७ इन्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

२७९०. प्रति स० ३७ । पत्र स० ५२६ । ग्रा० ११×६ इन्च । ले० काल स० १८२८ सावन बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—करौली मे लिखा गया था ।

२७९१. उत्तरपुराण—गुणभद्राचार्य । पत्र स० ४५८ । ग्रा० १०½×५ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र० काल । ले० काल स० १७०५ । पूर्ण । वेष्टनस० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—भगवान आदिनाथ के पश्चात् होने वाले २३ तीर्थंकरो एव अन्य शलाका महापुरुषों का जीवन चरित्र निबद्ध है । सवत्सरे वाणरध्रमुनीदुमिते ।

२७९२. प्रतिस० २ । पत्र स० २२० । ग्रा० ११ × ५ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७२४ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२७९३. प्रति स० ३ । पत्रस० ४०६ । ग्रा० ११ × ५½ इन्च । ले०काल स० १७५० फागुन बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० ११७४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है

२७९४ प्रतिस० ४ । पत्र स० ३१३ । ग्रा० १३×४ इन्च । ले० काल स० १८४६ फागुण बुदी १४ । अपूर्ण । वेष्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

विशेष—आचार्य श्री विजयकीर्ति ने वाई गुमाना के लिए प्रतिलिपि करवायी थी ।

२७९५ प्रति स० ५ ।पत्रस० ३२५ । ग्रा० १२ × ५ इन्च । ले०काल स० १७८५ आषाढ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूदी ।

विशेष—बूदी मे **ज्योतिर्विद** पुष्करने रावराजा दलेलसिंह के शासनकाल मे आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी ।

२७९६ प्रति स० ६ । पत्रस० ३६८ । ग्रा० १२ × ५½ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बून्दी ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२७९७. प्रतिसं० ७ । पत्रस० ३०० । ग्रा० ११½ × ५½ इन्च । ले०काल स० १८२५ प्र. सावन सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० २५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

विशेष—प० महाचन्द्र ने जीर्ण पुस्तक से शोधकर प्रतिलिपि की थी। दो प्रतियो का मिश्रण है।

२७९८. प्रतिसं० ८ । पत्र स० ३२४ । आ० १३×७ इञ्च । ले०काल स० १९५३ । पूर्ण । वेष्टन स० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बू दी ।

२७९९ प्रति स० ९ । पत्रस० २९४ । आ० १२½×५½ इञ्च । ले०काल स० १८११ भादवा बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० ३८४/२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

२८००. प्रतिसं० १० । पत्रस० ३६० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—कही २ कठिन शब्दो के अर्थ हैं ।

२८०१ प्रति स० ११ । पत्रस० २३१ । आ० १३×६½ इच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२७-५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

२८०२. प्रति सं० १२ । पत्रस० ११४ । आ० १३×५¾ इ च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२८०३. प्रतिसं० १३ । पत्र स० १९२ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२८०४. प्रति स० १४ । पत्र स० ३४७ से ५४८ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १६४४ कार्त्तिक सुदी ९ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है। इसके अतिरिक्त एक प्रति और है जिसके १-१२२ तक पत्र हैं ।

२८०५. प्रति सं० १५ । पत्र स० ४५-३०० । आ० १०½×५½ इञ्च । ले० काल स० १८४० । पूर्ण । वे० स० २०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

२८०६. प्रतिसं १६ । पत्रस० ४०८ । आ० ११ × ४ इ च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३०९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

२८०७. प्रतिसं० १७ । पत्रस० ३८४ । आ० १२×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१० **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२८०८. प्रति स० १८ । पत्र स० २-४५२ । आ० १२×६इ च । ले० काल स० १८३३ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति—सवत् १८३३ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे पचम्या तिथौ भौमवासरे मालवदेशे सुसनेर नगरे पडित आलमचन्द तत् शिष्य प जिनदास तयोन मध्ये प० आलमचन्देन पुस्तक उत्तरपुराण स्वय • ।

२८०९. प्रतिस० १९ । पत्रस० २८५ । आ० १४×६ इञ्च । ले० काल स० १७८३ फागुण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—उदयपुर मे महाराणा सग्रामसिंह के शासन काल मे सभवनाथ चैयालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२८१० प्रति स० २० । पत्र स० २३१ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । दो प्रतियो का मिश्रण है । कठिन शब्दो के अर्थ भी दिये हुए हैं ।

२८११. प्रति स० २१ । पत्रस० ४६४ । ले०काल स० १९२६ । पूर्ण । वेष्टनस० २७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

२८१२ प्रति स० २२ । पत्रस० ११५–२२० । ले०काल १६६६ । अपूर्ण । वेष्टन स० ६७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

२८१३ प्रति स० २३ । पत्रस० ४१९ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी भरतपुर ।

२८१४ प्रति स० २४ । पत्रस० ४३४ । ले०काल स० १७२६ कार्त्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० २२१ । **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त मन्दिर ।

२८१५ प्रति स० २५ । पत्रस० ५०१ से ५३९ । ले०काल स० १८२२ । अपूर्ण । वेष्टन स० २६१ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२८१६ उत्तरपुराण—पुष्पदत । पत्र स० ३२५ । आ० १२½×४½ इञ्च । भाषा-अपभ्र श । र०काल × । ले०काल स० १५३८ कार्त्तिक सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ११२/६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

लेखक प्रशस्ति—सवत १५३८ वर्षे कार्त्तिक सुदी १३ आदित्यवारे अश्वनिनक्षत्रे सुलतान गयासुद्दीन राज्य प्रवर्तमाने तोडागढस्थाने श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये श्री मूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्द-कुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दि देवा । तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री जिणचन्द्र देवा तत् शिष्य मुनि जयनन्दि द्वितीय शिष्य मुनि श्री रत्नकीर्त्ति । मुनि जैनिन्द तत् शिष्य ब्रह्म अचलू इद उत्तरपुराण शास्त्र आत्म हस्तेन लिखित ज्ञानावर्णी कर्मक्षयार्थ मुनि श्री मडलाचार्य रत्नकीर्त्ति तत् शिष्य ब्रह्म नरसिह जोग्य पठनार्थं ।

२८१७ उत्तरपुराण—सकलकीर्त्ति । पत्रस० १६२ । १२×६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल । ले०काल स० १८८० पौष सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चेतनदास दीवान पुरानी डीग ।

२८१८. उत्तरपुराण भाषा—खुशालचन्द । पत्र स० २७१ । आ० १५×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—पुराण । र०काल स० १७९९ । ले०काल स० १८४६ । पूर्ण । वेष्टनस० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२८१९ प्रति स० २ । पत्र स० ३१७ । आ० १५ × ७½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११७ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—भगवान आदिनाथ को छोडकर शेष तेईस तीर्थकरो का जीवन चरित्र है ।

२८२० प्रति स० ३ । पत्र स० ४८८ । आ० ११×५¾ इञ्च । ले० काल स० १८२४ पौष बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन स० ३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक

विशेष—राजाराम के पुत्र हठीराम ने जयपुर मे वखता से प्रतिलिपि कराई थी ।

२८२१. प्रति स० ४ । पत्र स० २७१ । आ० १४ × ६½ इञ्च । ले० काल स० १६५८ कार्त्तिक सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर नैणवा ।

२८२२. प्रति स० ५ । पत्र स० ६३१ । आ० ६½ × ७ इञ्च । ले० काल स० १६५६ । पूर्ण । वेष्टन स० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बू दी ।

२८२३. प्रति सं० ६ । पत्रस० ४४१ । आ० १०½ × ६½ इञ्च । ले० काल स० १६४५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बू दी ।

२८२४. प्रति स० ७ । पत्र स० २०२–२५१ तक । आ० १४ × ६½ इञ्च । ले० काल स० १८६६ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

विशेष—प्रारम्भ के २०१ पत्र नही है ।

२८२५. प्रतिसं० ८ । पत्र स० २६८ । आ० ११½ × ७¾ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोक) ।

२८२६. प्रति स० ९ । पत्र स० ४६१ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १८८२ । पूर्ण । वेष्टन स० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोट्यो का नैणवा ।

२८२७. प्रति सं० १० । पत्र स० ३३५ । आ० १२ × ६¾ इच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४–२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक)

२८२८. प्रति सं० ११ । पत्र स० २६५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

विशेष—जीर्णोद्धार किया गया है ।

२८२९. प्रति स० १२ । पत्र स० ४६६ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

२८३०. प्रति स० १३ । पत्रस० ४१२ । आ० १३ × ६ इञ्च । ले०काल स० १८४२ माघ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—फौजीराम सिंगल ने स्व एव पर के पठनार्थ प्रतिलिपि करवाई ।

२८३१. प्रति स० १४ । पत्रस० १०५ । आ० १२ × ४¾ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—शान्तिनाथ पुराण तक है ।

२८३२. प्रतिसं० १५ । पत्रस० १८८ । आ० १३ × ६½ इञ्च । ले०काल स० १८७८ श्रावण बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—पाडे सावतसिह जी आपमनके देहरा मे दयाचन्द से प्रतिलिपि करवाई जो दिल्ली मे रहते थे ।

२८३३. प्रतिसं० १६ । पत्र स० ३५६ । आ० १३ × ७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

२८३४. **प्रतिस० १७** । पत्र स० ३५४ । आ० १४×६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मंदिर अलवर ।

२८३५. **प्रति स ० १८** । पत्रस० २६७ । ले० काल स० १८५३ । पूर्ण । वेष्टन स० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, भरतपुर ।

विषय—कुशलसिंह कासलीवाल ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

२८३६. **प्रति स० १९** । वेष्टनस० ४०५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३८७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

२८३७. **उत्तरपुराण भाषा**—पन्नालाल । पत्र स० ८८६ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय पुराण । र० काल स० १९३० । ले० काल स० × । पूर्ण । वेष्टन स० १५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्री महावीर बूंदी ।

२८३८ **कर्णामृत पुराण—भ० विजयकीर्ति** । पत्रस० ८६ । आ० ६½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) विषय—पुराण । र० काल । ले०काल स० १८२६ पौष सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० १०१० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

२८३९. **प्रति स० २** । पत्रस० २४९ । आ० ५×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ९०९ । प्राप्ति **स्थान** भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—दूसरा नाम महादडक करणानुयोग भी दिया है ।

२८४० **प्रति स० ३** । पत्रस० ३९ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ११३५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२८४१. **प्रतिस० ४** । पत्र स० १३१ । आ० १३×८ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१८-३१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

२८४२ **गरुडपुराण** । पत्रस० ६५ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-पुराण र०काल × । ले०काल स० १८२५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—दशम अध्याय तक है ।

२८४३. **गरुडपुराण** × । पत्र स० ३२ । आ० ११½×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३१९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

२८४४ **चौवीस तीर्थंकर भवान्तर** × । पत्रस० २ । आ०१२½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) विषय-पुराण । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण × । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मंदिर राजमहल (टोक)

२८४५ **चन्द्रप्रभपुराण—भ० शुभचन्द्र** । पत्रस० ७२ । आ० १०½×४½× इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-पुराण । र० × । ले०काल स० १८२६ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४२ **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर, अजमेर

विशेष—आठवें तीर्थंकर चन्द्रप्रभ का जीवन चरित्र है ।

२८४६. प्रति स० २ । पत्रस० ६० । ग्रा० ११×५$\frac{1}{4}$ । ले०काल स० १८३२ चैत्र सुदी १३ । वेष्टन स० १७३ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन म० लश्कर, जयपुर ।

विशेष—सवाई जयपुर नगर मे झाझूराम साहने प्रतिलिपि की थी ।

२८४७ चन्द्रप्रभपुराण—जिनेन्द्रभूषण । पत्रस० २४ । ग्रा० १२$\frac{1}{2}$ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पुराण । र०काल सवत १८४१ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

विशेष—इटावा मे ग्र थ रचना की गयी थी । ग्र थ का आदि ग्रत भाग निम्न प्रकार है—

प्रारभ— चिदानद भगवान सव शिव सुख के दातार ।
श्री चन्द्रप्रभु नाम है तिन पुराण सुख सार ।।१।।
जिनके नाम प्रताप से कहे सकल जजाल ।
ते चन्द्रप्रभ नाम है करी ·· · ·पुर पार ।।२।।

ग्र तिम पाठ—

मूल सघ है मै सरस्वति गच्छ ज्यू ।
बलात्कार गण कह्यो महाराज परतछ ज्यू ।
ग्रामनाय कहे वीच कुन्दकुन्द ज्यू ।
कुन्दकुन्द मुनराज ज्ञानवर ग्रापज्यू ।।२७।।
भट्टारक गुणकार जगतभूपण भये ।
विश्वभूपण सुभ ग्राप ग्रान पूरन ठये ।
तिनके पद उद्धार देवेन्द्रभूपण कहे ।
सुरेन्द्रभूपण मुनराज भट्टारक पद लहे ।
जिनेन्द्र भूपण लघु शिष्य बुद्धिवरहीन ज्यू ।
कह्यो पुराण सुज्ञान पूरण पद जान ज्यू ।
सवत ठरासै इकतालीस सामले ।
सावन मास पवित्र पाप भक्ति कौ गलै ।।
सुदि ह्वै द्वैज पुनीत चन्द्र रविवार है ।
पूरन पुण्य पुराण महा सुखदाइ है ।
शहर इटावौ भलौ तहा बैठक भई ।
श्रावक गुन सयुक्त बुद्धि पूरन लई ।।

इसके ग्रागे ८ पद्य ग्रौर हैं जिनमे कोई विशेप परिचय नही है ।

इति श्री हर्पसागरस्यात्मज भट्टारक श्री जिनेन्द्रभूपण विरचिते चन्द्रप्रभुपुराणे चन्द्रप्रभु स्वामी निर्वाण गमनो नाम पष्टम सर्ग । श्लोक स प्रमाण १०६१ ।

मध्य भाग—

सब रितु के फल ले ग्राया तिन भेंट करी सुखदायी ।
राजा सुनि मनि हरपावै तब ग्रानन्द भोर बजावै ।।२४।।

सब नगर नारि नर आये वदन चाले सुख पाये ।
चन्द्री सब परिजन लेई जिनवर चरनन चित देई ।।२५।।

२८४८. प्रतिस० २ । पत्रस० १२½ × ७½ इन्च । ले०काल स० १८३३ । पूर्ण । वेष्टन स० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२८४९. चन्द्रप्रभचरित्र भाषा—हीरालाल । पत्र स० १८२ । आ० ११ × ५ इन्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय—पुराण । र०काल स० १९०८ । ले०काल स० १९३८ । पूर्ण । वेष्टन स० ८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

२८५०. जयपुराण—ब्र० कामराज । पत्र स० २९ । आ० ११½ × ५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । र०काल × । ले० काल स० १७१३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

प्रशस्ति-निम्न प्रकार है—

स० १७१३ पौष सुदी २ रवौ श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुदकुदाचार्यान्वये भ० श्री सकलकीर्ति तदाम्नाये भ० श्री रामकीर्ति तत्पट्टे भ० श्री पद्मनदि तत्पट्टे भ० श्री देवेन्द्रकीर्ति गुरुपदेशात् गुर्जरदेशे श्री अमदावादनगरे हुवड ज्ञातीय गगाउ गोत्रे सा० धर्मदास भार्या धर्मादे तयो सुत सा कल्पा भार्या जसा सुत विमलादास प्रेमसी सहस्रवीर प्रतापसिंह एतै ज्ञानावरणी क्षयार्थ आचार्य नरेन्द्रकीर्ति तत् शिष्य इल ब्र० चारी लाडयाकात् ब्र० कामराजाय जयपुराण लिखाप्य दत्त ।

२८५१. प्रति स० २ । पत्र स० ८९ । ले० काल स० १८१८ मगसिर सुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन स० २१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—प० बख्तराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२८५२. त्रिषष्टि स्मृति— × । पत्र स० ३१ । आ० ११×५ इन्च । भाषा – सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल स० १६०९ । पूर्ण । वेप्टन स० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६०९ वर्षे श्री मगसिर सुदी ३ गुरुदिने श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनदिदेवा तत्पट्टे भ० श्री सकलकीर्तिदेवा तदन्वये ब्र० श्री जिनदास तत्पट्टे ब्र० शातिदास ब्र० श्री हसराज ब्र० श्री राजपालस्तल्लिखाय कर्मक्षयार्थ निमित्त ।

२८५३. त्रिषष्टिशलाका पुरुषचरित्र—हेमचन्द्राचार्य । पत्रस० ६९ । आ० १४×४ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल—स० १४६४ चैत्र मास । पूर्ण । वेष्टनस० १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

२८५४. त्रेसठशलाका पुरुष वर्णन— × । पत्रस० ७ । आ० १०×४ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० २२९ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—इसमे त्रेसठशलाका पुरुषो का अर्थात् २४ तीर्थंकर ९ नारायण, ९ प्रतिनारायण, ९ बलभद्र एव १२ चक्रवर्त्तियो का जीवन चरित्र वर्णित है ।

२८५५. नेमिपुराण भाषा—भागचद । पत्रस० १८२ । आ० १२×७ इञ्च । भापा–हिन्दी पद्य । विषय-पुराण । रचना काल स० १६०७ । ले०काल—स० १६१४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

२८५६ प्रतिसं० २ । पत्र स० १६० । आ० १३½×७ इञ्च । ले० काल स० १६६१ । पूर्ण । वेष्टन स० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—चदेशी मे लिखा गया था । नेमीश्वर के मदिर मे छोटेलाल पन्नालाल जी गढवाल वालो ने चढाया था ।

२८५७. प्रति स० ३ । पत्र स० १७० । आ० १⅓×७½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

२८५८. नेमिनाथ पुराण—ब्र० नेमिदत्त । पत्रस० २६८ । आ० १०¾×४½ इच । भापा–सस्कृत । विपय—पुराण । र०काल × । ले०काल स० १६४५ चैत बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० ६३५ । **प्राप्ति स्थान**--भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—इसका दूसरा नाम नेमिनाथ चरित्र है ।

२८५६. प्रति सं० २ । पत्रस० ६२ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २६७ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२८६०. प्रति स० ३ । पत्रस० २२४ । आ० १०¼ × ४½ इच । ले०काल स० १८३० । पूर्ण । वेष्टनस० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १८३० ना वर्षे द्वितिय चैत्र मासे शुक्ल पक्षे श्री वाग्वर देशे पुल्ल दपुर मध्ये श्री शातिनाथ चैत्यालये । भट्टारक श्री ५ रत्नचन्द्र जी तत्पट्टे भट्टारक श्री ५ देवचन्द्र जी तत्पट्टे भट्टारक नी श्री १०८ श्री धर्मचन्द्र जी तत्सिप्य ब्रह्ममेघजी स्वय हस्तेन लिपि कृत ।

२८६१. प्रतिसं० ४ । पत्र स० २-२२० । आ० ६½×४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

२८६२. प्रतिस० ५ । पत्रस० १६४ । आ० १०½×७ इञ्च । ले० काल स० १६२४ पौप बुदी ८ । पूर्ण । वेप्टन स० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी ।

विशेष—शिवलाल जी का चेला विरदीचद ने प्रतिलिपि की थी । यह प्रति जो जोवनेर मे लिखी गई स० १६६६ वाली प्रति से लिखी गई थी ।

२८६३. प्रति स० ५ क । पत्र स० १२४ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । ले० काल० स० १७६६ आपाढ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूंदी) ।

विशेष—रत्नविमल के प्रशिप्य एव मुक्तविमल के शिष्य धर्मविमल ने प्रतिलिपि की थी ।

२८६४. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १३५ । आ० १२½×६¾ इञ्च । ले०काल स० १६७३ । पूर्ण । वेष्टन स० १८१-७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

२८६५ प्रतिस० ७ । पत्र स० २४२ । आ० १० × ४½ इन्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर ।

२८६६. **प्रतिस० ८** । पत्र स० १४३ । आ० ११×४½ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१४ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२८६७ **प्रतिसं० ९** । पत्रस० २४३ । ले०कालस० १६४६ । पूर्ण । वेष्टनस० १ । **प्राप्ति स्थान**—दिगम्बर जैन पचायती मन्दिर डीग ।

२८६८ **प्रतिसं० १०** । पत्र स० १६५ । आ० १२½×६ इच । ले०काल स० १८१७ द्वि. चैत सुदी १५ । वेष्टन स० १७-१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

विशेष—नालचद के पुत्र खुशालचन्द ने करौली मे प्रतिलिपि की थी ।

२८६९. **प्रतिसं० ११** । पत्र स १३८ । ले०काल स० १६१४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर वसवा ।

२८७०. **प्रति स० १२** । पत्रस० ८६ । आ० १३×६½ इच । ले०काल स० १८६९ । पूर्ण । वेष्टनस० २७२-१०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

२८७१. **पद्मचरित टिप्पण—श्रीचन्द मुनि** । पत्रस० २८ । आ० १०½ × ५ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल स० १५११ चैत्र सुदी ११ । वेष्टन स० १०२ । दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

लेखक प्रशस्ति—सवत् १५११ वर्षे चैत्र सुदी २ श्री मूलसघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत् पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्ततत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचद्र देवा भट्टारक श्री पद्मनन्दि शिष्य मुनि मदनकीर्त्ति तत् शिष्य ब्रह्म नरसिंघ निमित्त खण्डेलवालान्वये नायक गोत्रे साह उधर तस्य भार्या उदयश्री तयो पुत्र माल्हा सोढा डालु इद शास्त्र कर्म्मक्षय निमित्त ।

२८७२ **पद्मनाभ पुराण—भ० शुभचन्द्र** । पत्रस० ११० । आ० १२×४½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल × । वेष्टनस० १८७ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रारम्भ के ६५ पत्र नवीन लिखे हुए है ।

२८७३ **प्रति स० २** । पत्रस० ७१ । आ० ११½ × ५ इन्च । ले०काल स० १६५४ आसोज सुदी २ । वेष्टनस० १८८ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—भट्टारक अमरकीर्त्ति के शिष्य ब्र० जिनदास, प० शान्तिदास आदि ने प्रतिलिपि की थी ।

२८७४. **प्रति स० ३** । पत्र स० १०७ । आ० १०½ × ५ इन्च । ले० काल स० १८२९ आसोज सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १९७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना (बूदी) ।

२८७५ **पद्मपुराण—रविषेणाचार्य** । पत्रस० ७१२ । आ० १०½×४½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले० काल स० १६७७ सावण वुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ४०९ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—सवत् १६७७ वर्षे शाके १५४२ प्रवर्त्तमाने श्रावण बुदी ६ शुक्रवारे उत्तरानक्षत्रे अतिगतनामजोगे महाराजाधिराज रावश्री भावसिह् प्रतापे लिखत जोसी अलावंक्स वु दिवाल अम्वावती मध्ये ।

२८७६. प्रतिसं० २ । पत्रस० ४६० । आ० ११$\frac{1}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १८७६ पौष बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० १०५६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२८७७. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ५१२ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इ च । ले०काल स० १८८३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

विशेष—पडित शिवजीराम ने लिखा था ।

२८७८. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ५६० । आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १८०३ । पूर्ण । वेष्टन स० ८७/८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

विशेष—रामपुर मे प्रतिलिपि की गई थी ।

२८७९. प्रतिसं० ५ । पत्रस० २८६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—अशुद्ध प्रति है ।

२८८०. प्रति स० ६ । पत्रस० ३४६ । आ० १०×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १८१० कार्तिक सुदी १० । अपूर्ण । वेष्टन स० १५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

२८८१. प्रति स० ७ । पत्र स० ५७३ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मन्दिर करौली ।

२८८२ प्रतिसं० ८ । पत्रस० ७–४८३ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल स० १५९२ । अपूर्ण । वेष्टनस० १७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १५९२ वर्षे कार्तिक सुदी ९ वुधे अद्येह गोरिलि ग्रामे प० नसा सुत पेथा भ्रातृ भीकम लिखित ।

२८८३. पद्मपुराण—ब्र० जिनदास । पत्रस० ४४३ । आ० १२$\frac{3}{4}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १११९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर, अजमेर ।

२८८४. प्रतिसं० २ । पत्र स ५३५ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १८७१ क्वार सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनस० १०६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक)

२८८५. प्रतिसं० ३ । पत्र स० २८८ । आ० १२×६ इच । ले०काल स० × । अपूर्ण **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—सस्कृत मे सकेतार्थ दिये हैं । स०१७३६ मे भट्टारक श्री महरचन्द्र जी को यह ग्रन्थ भेंट किया गया था ।

२८८६. **पद्मपुराण—भ०धर्मकीर्ति** । पत्र स० ३२६ । ग्रा० ११½×५ इन्च । भाषा—सस्कृत ।विषय—**पुराण** ।र०काल-× । ले०काल स० १७१५ । पूर्ण । वेष्टन स०२७० । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति—सवत् १७१५ वर्षे भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे पचम्या तिथौ गुरुवासरे श्री सिरोज नगरे श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालये श्री ।

२८८७. **पद्मपुराण—भ० सोमसेन** । स० २८२ । ग्रा० १०½×५ इन्च । भाषा—सस्कृत । **विशेष**—पुराण । र०काल । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५३२ । **प्राप्ति स्थान—**भ० दि० जैन मन्दिर, ग्रजमेर

२८८८. **प्रति स० २** । पत्रस० २७६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२८ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष —जयपुर मे प्रतिलिपि की गई थी ।

२८८९. **प्रतिस० ३** । पत्र स० ३०६ । ग्रा० १०×६ इन्च । ले० काल स० १८६८ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वे० स० १७० । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर, राजमहल ।

विशेष—राजमहल नगर मे प० जयचद जी ने लिखवाया तथा विहारीलाल शर्मा ने प्रतिलिपि की थी ।

२८९०. **पद्मपुराण भाषा**—दौलतराम कासलीवाल पत्र स० १९६ । ग्रा० १३×८ इन्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विपय—पुराण । र०काल स० १८२३ माघ सुदी ९ । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० १४४२ ।**प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

२८९१. **प्रति स० २** । पत्र स० ६४५ । ग्रा० १२×५¾ इन्च । ले०काल स० १८९० ज्येष्ठ वुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन स०१७९ । **प्राप्ति स्थान—**भ० दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

२८९२ **प्रति स० ३** । पत्रस० ९४३ । ले०काल स० १९३१ । पूर्ण । वेष्टनस० । २९३ । **प्राप्ति स्थान** - भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

२८९३. **प्रति स० ४** । पत्रस० १-२७५ । ग्रा० ११×७इन्च । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टनस० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

विशेष—२७५ से ग्रागे पत्र मे नही है ।

२८९४. **प्रतिस० ५** । पत्रस० ७३७ । ग्रा० १३×८ इन्च । ले०काल स० १९५५ कार्तिक सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर ग्रावा (उणियारा)

विशेष—प० रामदयाल ने चदेरी मे प्रतिलिपि की थी ।

२८९५. **प्रतिस० ६** । पत्रस० ३९० । ग्रा० ९½×९½ इन्च । ले० कालस० १८४६ । चैत सुदी ११ पूर्ण । वेष्टनस० १२५ । × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वडा वीसपथी दौसा ।

२८९६ **प्रतिसं० ७** । ग्रा० १४×७½ इन्च । ले० काल स० १८७८ । पूर्ण । वेष्टन स० ८७-७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष —चिमनराम तेरहपथी ने प्रतिलिपि की थी ।

२८९७. **प्रति स० ९** । पत्रस० २२४–५२१ । आ० १३×७ इञ्च । ले० काल स० × । अपूर्ण । वेष्टनस० ८१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर भादवा (राज०)

२८९८ **प्रति स० १०** । पत्र स० ६०७ । आ० ११×७¾ इन्च । ले० स० १९१५ । पूर्ण । वे० काल स० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—दो वेष्टनो मे है ।

२८९९. **प्रति स० ११** । पत्र स० ६३८ । आ० १२×६½ इञ्च । ले०काल स० १९२९ ज्येष्ठ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—दो वेष्टनो मे है ।

२९०० **प्रतिसं० १२** । पत्रस० ९२८ । आ० ११ ×८ इञ्च । ले०काल × ।पूर्ण । वेष्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

२९०१. **प्रतिस० १३** । पत्रस० २४० । आ० ११×८ इन्च । ले०काल × । अपूर्ण ।वेष्टनस० ८९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

२९०२. **प्रति स० १४** । पत्र स० ५३७ । आ० १२½×६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मदिर उदयपुर ।

२९०३. **प्रति सं० १५** । पत्र स० ७४७ । आ० १०×७½ इञ्च । ले० काल स० १८५३ । पूर्ण । वेष्टन स० २०१/८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

२९०४. **प्रति स० १६** । पत्रस० ५२८ । आ० १०½×७ इन्च । ले०काल स० १८५१ । पूर्ण । वेष्टनस० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२९०५. **प्रतिसं० १७** । पत्रस० ४५६ । आ० १०½×०½ इच । ले० काल स० १८५४ । पूर्ण । वेष्टन स० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—स० १८५४ पौप सुदी १३ महाराजाधिराज श्री सवाई प्रतापसिहजीराज्ये सवाईजयनगरमध्ये लिखापित साह श्री मानजीदासजी बाकलीवाल तत् पुत्र कवर मनसाराम जी चिमनरामजी सेवारामजी नोनवराम जी मनोरथरामजी परमार्थ शुभ मुयात् ।

लिखित सवाईराम गोधा सवाईजयनगरमध्ये अ बावती बाजार मध्ये पाटोदी देहुरे आदि चैत्यालये जतीजी श्री कृष्णसागरजी के जायगा लिखी ।

२९०६. **प्रतिसं० १८** । पत्र सख्या ४७ । आ० १०×९ इच । ले०काल स०१८२३ । अपूर्ण । वेष्टन स० ७४ ।**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

२९०७. **प्रति सं० १९** । पत्र स० ५९९ । आ० १२ × ९ इञ्च । ले० काल स० १९४३ । पूर्ण । वेष्टन स० १३।९ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक)

विशेष—ऋषि हेमराज नागौरी गच्छवाले ने प्रतिलिपि की थी ।

२९०८. **प्रतिसं० २०** । पत्रस० १५२ । आ० ११×८ इन्च । ले० काल स० × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४१।२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पचायती दूनी (टोक)

२६०६ **प्रति स० २१** पत्र स० ४८६ । आ० १४×६½ इच । ले० काल स० १६७६ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर, नैणवा

२६१०. **प्रतिस० २२** । पत्रस० ६०८ । आ० १३×७ इन्च । ले० काल × । पूर्ण वेष्टन स० १३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बूदी ।

२६११ **प्रतिस० २३** । पत्रस० ५०५ ।आ० १३×८ इच । ले० काल स० १६७६ । पूर्ण । वेष्टन स० १५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

२६१२. **प्रतिस० २४ (क)** । पत्र सख्या ३२४ से ५१६ । आ० १३ × ७ इन्च । ले० काल स० १८६२ । अपूर्ण । वेष्टन स० २४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

विशेष—शेष पत्र अभिनन्दन जी के मदिर मे है । सवाईमाधोपुर म प्रतिलिपि हुई थी ।

२६१३ **प्रति स० २४** । पत्र स० २–३२३ । आ० १३×७ इन्च । अपूर्ण । ले० काल × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष—पत्र १ तथा ३२४ से अन्तिम पत्र तक पार्श्वनाथ दि० जैन मदिर मे हैं ।

२६१४. **प्रति स० २५** । पत्रस० ८२८ । आ० ११½ × ५ इन्च । ले० काल स० १८८७ आषाढ बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १२ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपथी मालपुरा (टोक) ।

२६१५. **प्रति स० २६** । पत्रस० ६१३ । आ० १२½×६½ इन्च । ले०काल० स०× चैत्र बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १०१—१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—शातिनाथ चैत्यालय मे लिखा गया था ।

२६१६ **प्रतिस० २७** । पत्र स० ६०६ । आ० १३ × ७ इन्च । ले० काल स० १८३३ । पूर्ण । वेष्टन स० १६५/७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर, इन्दरगढ (कोटा))

२६१७. **प्रति स० २८** । पत्रस० ७२ । आ० १२×७ इन्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा)

२६१८. **प्रति स० २६** । पत्रस० ६५३ । आ० ११½×६ इन्च । ले०काल स० १८६६ वैशाख सुदी १० । वेष्टन स० १०१ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—गुलाबचद पाटोदी से सवाई माधोपुर मे प्रतिलिपि कराई थी ।

२६१६. **प्रतिसं० ३०** । पत्र स० ५०८ । आ० १५ × ७ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

२६२०. **प्रति स० ३१** । पत्र स० ४५० । आ० १५ × ८ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

२६२१. **प्रति स० ३२** । पत्रस० ५८२ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मदिर ।

२६२२ **प्रति स० ३३** । पत्र स० ६७१ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२९२३. प्रति स० ३४ । पत्र स० ५५१ । लेखन काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १/६० **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पञ्चायती मदिर अलवर ।

२९२४. प्रति स० ३५ । पत्र स० ५५१ । आ० ११ × ८ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मदिर अलवर ।

२९२५. प्रतिसं० ३६ । पत्र स० ५१४ । आ० १३½×८ इञ्च । ले० काल स० १९५६ फागुन बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर ।

विशेष—अलवर मे लिखा गया था ।

२९२६ प्रतिसं० ३६ (क) । पत्र स० ८४९ । आ० १०×७ इञ्च । ले० काल स० १८७२ कार्तिक सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स ३५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२९२७. प्रति स० ३७ । पत्रस० ५३६ । ले०काल स० १८६३ माघ शुक्ला ५ । पूर्ण । वेष्टन स० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी, भरतपुर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

२९२८. प्रतिसं० ३८ । पत्रस० २०१ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—आगे के पत्र नही हैं तथा जीर्ण है ।

२९२९. प्रतिसं० ३९ । पत्र स० ३०१ से ४८१ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

३९३० प्रतिसं० ४० । पत्र स० ५९५ । ले० काल स० १८६३ । पूर्ण । वेष्टनस० १८० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२९३१. प्रति स० ४१ । पत्र स० २४३ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १८२ । **प्राप्ति स्थान** - उपरोक्त मदिर ।

२९३२. प्रतिस० ४२ । पत्र स० ४४१ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८३ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मदिर ।

२९३३. प्रतिसं० ४३ । पत्र स० २११-३४४ । आ० १४½×६ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ९५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

२९३४. प्रति स० ४४ । पत्र स० ४७६ । आ० १३ × ८ इञ्च । ले० काल स० १९२९ माघ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर, बयाना ।

२९३५. प्रति स० ४५ । पत्र स० ५८१ । आ० १४×६ इञ्च । ले० काल स० १८८२ । पूर्ण । वेष्टन स० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

विशेष—जनी खुशाल ने बयाना मे ग्र थ की प्रतिलिपि की थी ।

२९३६. प्रति स० ४५(क) । पत्र स० ५१६ । आ० १४×६ इञ्च । ले० काल स० १८४९ मगसिर बुदी १० । पूर्ण । वेस्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर ।

विशेष—वैर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२६३७. प्रति स० ४६ । पत्रस० ७६७ । आ० १३ X ७ इन्च । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टनस० ४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

२६३८. प्रति स० ४७ । पत्रस० ४३८ । आ० १५ X ८ इन्च । ले० काल X । अपूर्ण । वेष्टनस०—३५४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२६३६ प्रति स० ४८ । पत्रस० ७२७ । ले० काल स० १८२६ । पूर्ण । वेष्टनस० ५६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

२६४०. प्रति स० ४६ । पत्रस० ३०१ । ले० काल X । अपूर्ण । वेष्टनस० ६४ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

२६४१. प्रति स० ५० । पत्रस० ३६४ । ले० काल X । अपूर्ण । वेष्टनस० ७२ । प्राप्ति स्थान–दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

२६४२ प्रति स० ५१ । पत्र स० ४–१०५ । आ० १४ X ५$\frac{3}{4}$ इन्च । ले०काल— X । अपूर्ण । वेष्टन स० ६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

२६४३ प्रति स० ५२ । पत्रस० ३२२ से ७०६ । आ० १३ X ५$\frac{3}{4}$ इन्च । ले० काल X । अपूर्ण । वेष्टनस० ११८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

२६४४. प्रति स० ५३ । पत्रस० ३२१ । आ० १३ X ५$\frac{3}{4}$ इन्च । ले० काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० ६५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मदिर करौली ।

२६४५. प्रति स० ५४ । पत्र स० ७४४ । आ० १२ X ७$\frac{1}{2}$ इन्च । ले० काल—स० १६५८ ज्येष्ठ सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० १५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—अजमेर वालो के चौवारे जयपुर मे लिखा गया था ।

२६४६. प्रतिस० ५५ । पत्र स० ५२८ । आ० १०$\frac{1}{2}$ X ६$\frac{3}{4}$ इन्च । ले० काल स० १६५५ आपाढ सुदी ११ । पूर्ण । वे० स०३१३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

विशेष—छीतरमल सोगाणी ने प्रतिलिपि की थी ।

२६४७. प्रतिसं० ५६ । पत्र स० ६३६ । ले०काल स० १८३५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन तेरहपथी मन्दिर वसवा ।

२६४८. प्रति स० ५७ । पत्रस० ५२३ । आ० १४$\frac{1}{2}$ X ७ इन्च । ले०काल स० १८८२ । पूर्ण । वेष्टनस० ५४१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रथम पत्र नही है ।

२६४६. पद्मपुराण—खुशालचन्द काला । पत्रस० २६१ । आ० १२ X ६$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—पुराण । र०काल स० १७८३ पौष सुदी १० । ले०काल स० १८४६ । पूर्ण । वेष्टनस० ७४२ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२६५०. प्रति स० २ । पत्र स० ३४० । आ० १२ X ५$\frac{1}{2}$ इन्च । ले०कान स० १८४१ । स० ५० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर कोट्यो का नैणवा ।

विशेष—अखैराम ब्राह्मण ने नैणवा मे प्रतिलिपि की थी।

२९५१. प्रतिसं० ३। पत्र स० २७२। आ० १३ × × ६३/४ इन्च। ले० काल स० १९०४। अपूर्ण। वेष्टन स० २८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा।

२९५२. प्रतिसं० ४। पत्र स० २१६। आ० १२×७१/२ इन्च। ले० काल स० १८५१ श्रावण बुदी ८। पूर्ण। वेष्टन स० २०१। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—श्रीमन् श्री विजयगछे श्रीपुजि श्री १०८ श्री विद्यासागर सूरि जी तत् शिस्य ऋषिजी श्री चतुर्भुज जी त० सि० ऋषिजी श्री सावल जी तत्पट्टे ऋषिजी श्री ५ रूपचद जी त० शिष्य रिखव, वखतराम लखत नानता ग्राम मध्ये राज्य श्री ५ जालिमसिंह राज्ये। कवर जी श्री नातालाल माधोसिंह जी श्रीरस्तु।

२९५३. प्रतिसं० ५। पत्र स० २५५। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हूण्डावालो का डीग।

विशेष—प्रति जीर्ण है।

२९५४. प्रति सं० ६। पत्रस० २३८। आ० १२×६ इच। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ८८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

विशेष—२२६ से २३८ तक के पत्र लम्वे हैं।

२९५५. प्रति सं० ७। पत्र स० ४२१। आ० ११ × ५१/२ इन्च। ले० काल स० १९७६ सावन सुदी १०। पूर्ण। वेप्टन स० १८/७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर।

२९५६. प्रति स० ८। पत्र स० १८५। आ० १११/२×७१/२ इन्च। ले०काल स० १८७७। पूर्ण। वेष्टन स० ८३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा।

विशेष—तेरापथी चिमनलाल ने प्रतिलिपि की थी।

२९५७. प्रति सं० ९। पत्र स० ३२४। आ० १२१/२ × ७१/२ इन्च। ले० काल स० १७८८ आषाढ सुदी १। पूर्ण। वे० स० १०८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा।

विशेष—दौसा मे प्रतिलिपि हुई थी।

२९५८. प्रति स० १०। पत्र स० २६४। आ० १३ × ६ इन्च। ले० काल स० १७९२ सावण सुदी ९। पूर्ण। वेष्टन स० ८०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर वयाना।

विशेष—हिरदैराम ने ग्र थ की प्रतिलिपि करवायी थी।

२९५९. प्रति स० ११। पत्र स० २९२। आ० १२१/२ × ६ इन्च। ले०काल स० १८२४ वैशाख बुदी १३। पूर्ण। वेप्टन स० ४९४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—माधोसिंह के शासन काल मे नाथूराम पोल्याका ने प्रतिलिपि की थी।

२९६०. प्रति सं० १२। पत्र स० ३४८। ले०काल स० १८००। पूर्ण। वेष्टन स० १७९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

२९६१. पाण्डवपुराण—श्री भूषण (शिष्य विद्याभूषण सूरि)। पत्र सख्या ३०८। आ० १० × ५१/२ इन्च। भाषा—सस्कृत। विपय—पुराण। र०काल स० १५०७। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्न स० २५। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

२९६२. प्रति स० २। पत्र स० २५२। आ० १२×६ इच। ले० काल स० १८५४ चैत्र बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० ६७। प्राप्ति स्थान—दि० जन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

२९६३ प्रति सं० ३। पत्र स० २९८। ले०काल स० १६९८ मगसिर सुदी। वेष्टन स० २२६। प्राप्ति स्थान— दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—ब्रह्म शामलाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी।

२९६४ प्रति स० ४। पत्र स० ११५। आ० १२×५ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वे० स० १। प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—वीच २ के पत्र नही हैं। प्रत्येक पत्र मे ११ पक्तिया एव प्रत्येक पक्ति मे ४५ अक्षर है।

उक्त ग्र थ के अतिरिक्त भट्टारक सकलकीर्ति द्वारा विरचित वृषभनाथ चरित्र एव गुणभद्राचार्य कृत उत्तर पुराण के त्रुटित पत्र भी है।

२९६५ प्रति स० ५। पत्रस० २२६। आ० १२×४½ इञ्च। ले०काल स० १७३२ मगसिर बुदी ७। पूर्ण। वेष्टन स० १२३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाना बू दी।

विशेष—मनोहर ने नैणवा ग्राम मे प्रनिलिपि की थी।

२९६६ पाण्डवपुराण—भ०शुभचन्द्र। पत्र स० ४१५। आ० ११ × ४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—पुराण। र०काल स० १६०८। ले०काल स० १७०४ चैत्र सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० ६४। प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

विशेष—खण्डेलवालगोत्रीय श्री खेतसी द्वारा गोवर्धनदास विजय राज्य मे प्रतिलिपि की गयी थी।

२९६७ प्रति स० २। पत्रस० २०४। आ० ११½×६ इञ्च। ले०काल स० १८६६ भादवा सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० ३४। प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी।

विशेष—माधवपुर नगर के कर्वटाक्षपुर मे श्री महाराज जगतसिंह के शासन मे भ० श्री क्षेमेन्द्रकीर्ति के शिष्य श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति तत्पट्टे सुखेन्द्रकीर्त्ति तदाम्नाये साह मलूकचन्द लुहाडिया के वश मे किशनदास के पुत्र विजयराम शभुराम गेगराज। शम्भुराम के पुत्र द्वौ—नोनदराम पन्नालाल। नोनदराम ने प्रतिलिपि करवाई थी।

यह प्रति बू दी के छोगालाल जी के मन्दिर की है।

२९६८ प्रति स० ३। पत्रस० २२०। आ० १२×६ इञ्च। ले०काल स० १६७७ माघ शुक्ला २। पूर्ण। वेष्टन स० ३११। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बून्दी।

प्रशस्ति—सवत् १६७७ वर्षे माघ मासे शुक्लपक्षे द्विनीया तिथौ अम्बावती वास्तव्ये श्री महाराजा भावसिंघ राज्य प्रवर्तमाने श्री मूलसघे भ० श्री देवेन्द्रकीर्त्तिदेवा तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये भौसा गोत्रे सा० ऊदा भार्या तुदलदे । प्रशस्ति पूर्ण नही है।

२९६९ प्रति स० ४। पत्र स० २४८। आ० १५×५इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी, बू दी।

२९७०. प्रति सं० ५। पत्र स० ३०१। आ० १०½×४½ इञ्च। ले०काल स० १९३६। अपूर्ण।। वेष्टन स० ९३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बू दी।

विशेष—वृन्दावती नगर मे प० सेवाराम ने लिखा। १-९५ तक के पत्र दूसरी प्रति के है। ९६ से १८४ तक पत्र नही हैं।

२९७१. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १३६ । आ०१०½×६ इञ्च। ले०काल स० १८३४ आषाढ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० ९८-२७ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोंडारायसिंह (टोक)

विशेष—चम्पावती नगरी मे श्री वृदावन के शिष्य सीताराम के पठनार्थ लिखा गया था।

२९७२. प्रतिसं० ७ । पत्रस० १५६ । आ० १२×५ इच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

२९७३ प्रतिसं० ८ । पत्रस० २५७ । ले० काल स० १६९७ । पूर्ण । वेष्टनस० २८/२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है।

प्रशस्ति—सवत् १६९७ वर्षे श्री शालिवाहन शाके १५६२ प्रवर्त्तमाने मार्गशिर सीतात् ५ रविवासरे श्रीमालवदेशे श्रीउदयपुरनगरे श्रीशातिनाथचैत्यालये श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे आचार्य श्री कुन्दकुन्दान्वये भट्टारकश्रीपद्मनदिदेवा तत्पट्टे भ० सकलकीर्त्तिदेवा त० भ० श्रीभुवनकीर्त्तिदेवा तत्पट्ट आचार्य श्री ज्ञानकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भ० गुणकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ श्रीसकलचन्द्रदेवा त भ श्री रत्नचन्द्रदेवा त भ श्री हर्षचन्द्रदेवा तस्य आम्नाये श्रीकपूरात् शिष्य श्रीसूरजी बघेरवाल ज्ञातीय पटोडगोत्रे सेनगणि साह श्रीराघो तद्भार्या गोजाई पुत्र सहु ठोला गोत्रे साह श्री धाउ तद्भार्या गगाई तयो पुत्र साह श्री पल्हा भार्या गोरा · साह श्री आया हरसोरा गोत्रे साह श्री गागु तद्भार्या चगाई तयो पुत्र साह श्री ·· ··· ·· एतेषा मध्ये · इद शास्त्र श्री सूरजीनी लिखाप्य दत्त ।

पुन सवत् १७१२ की प्रशस्ति दी है। सभवत दुबारा यही ग्रथ फिर किसी के द्वारा मडलाचार्य सुमतिकीर्त्ति को भेंट किया गया था।

२९७४. प्रतिसं० ९ । पत्र स० ३५० । आ० १०¾×४½ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन स० १९१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

२९७५. पाडवपुराण—यशःकीर्त्ति । पत्रस० २०-११०, २०५-२४९ । आ० १२×५इञ्च । भाषा—अपभ्रश । विषय—पुराण । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—प्रति प्राचीन एव जीर्ण है।

२९७६. पाण्डवपुराण—ब्र० जिनदास । पत्र स० ५३१ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पुराण । र०काल × । ले० काल स० १५२८ मगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १६०९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—प्रशस्ति महत्वपूर्ण है।

२९७७. पाण्डवपुराण—देवप्रभसूरि । पत्र स० ४९ से २६१ । आ० ९½×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ११२१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२९७८. **पाण्डव पुराण**— × । पत्रस० १७६ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । र० काल × ।ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३४१ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मदिर अजमेर ।

२९७९. **पाण्डव पुराण**— × । पत्रस० १०१ । आ० ११×८ इच । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-पुराण । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६३१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२९८०. **पाण्डवपुराण—बुलाकीदास**। पत्रस० १६२ । आ० १२×८ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—पुराण । र० काल स० १७५४ आषाढ सुदी २ । ले०काल स० १९४४ । पूर्ण । वेष्टन स० १५७७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२९८१ **प्रतिस० २** । पत्रस० २०४ । आ० १०½×४½ इच । ले०काल स० १८७६ । पूर्ण । वेष्टन स० २१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

२९८२ **प्रति स० ३** । पत्रस० २१६ । आ० १३×७ इञ्च । ले०काल स० १९२५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८३-१९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोंक)

विशेष—सदासुख वैद्य ने दूनी मे प्रतिलिपि की थी ।

२९८३ **प्रतिस० ४** । पत्र स० २४५ । आ० १०×५½ इच । ले० काल स० १९१७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३९ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

२९८४. **प्रति स० ५** । पत्र स० १८२ । आ० ११×७½ इच । ले०काल स० १९४६ चैत बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—हीरालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

२९८५. **प्रति सं० ६** । पत्र स० २२९ । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल स० १८४१ । पूर्ण । वेष्टन स ५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा

२९८६. **प्रतिस० ७** । पत्रस० २६८ । आ० ११×५½ इच । ले०काल स० १८४१ । आषाढ बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

विशेष – अखैराम ने नैणवा मे प्रतिलिपि की थी ।

२९८७. **प्रतिस० ८** । पत्र स० ३७७ । आ० १५×७½इच । ले० काल स० १८९९ भादवा सुदी । १० ।पूर्ण । वेष्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर

२९८८. **प्रति स० ९** । पत्र स० २३८ । ले० काल स० १७८३ आसोज वदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ७८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

२९८९. **प्रति स० १०** । पत्र स० १४७ । आ० १२½ × ७½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

२९९० प्रति स० ११ । पत्रस० १८६ । ग्रा० १४ × ७$\frac{3}{4}$इञ्च । ले०काल १९९३ वैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० २२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी (कामा)

२९९१. प्रतिस० १२ ।पत्रस० २-९५ । ग्रा० १२×६ इञ्च । ले०काल ×। अपूर्ण । वेष्टन स० ८१/१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास, पुरानीडीग

२९९२. प्रतिसं० १३ । पत्र स० १६१ । ग्रा० । ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० × । अपूर्ण । वेष्टन स० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष —अन्तिम दो पत्र ग्राधे फटे हुये है ।

२९९३ प्रतिस० १४ । पत्रस० २६० । ग्रा० १२×६$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४२ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

२९९४.प्रतिस० १५ । पत्र स० २३२ । ग्रा० १३×६ इञ्च । ले० काल स० १८६६ ग्रासोज बुदी ९। पूर्ण । वेष्टन स० १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—पन्नालाल भाट ने प्रतिलिपि की थी ।

२९९५ प्रतिसं० १६ । पत्रस० १९५ । ग्रा० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल० स० १८११ शाके १६७६ । पूर्ण । वेष्टनस० ३२ ।**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वडा बीसपथी दौसा ।

२९९६. प्रतिस० १७ । पत्रस० २४२ । ग्रा० १२×५$\frac{1}{2}$ इच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेष —अन्तिम दो पत्र नही है ।

२९९७. प्रति स० १८ ।पत्रस० २४३ । ग्रा० ११$\frac{1}{4}$×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल स० १९२३ । पूर्ण । वेष्टनस० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

२९९८. प्रतिसं० १९ । पत्रस० २३५ । ग्रा० १३$\frac{1}{2}$×७ इच । ले० काल स० १९५३ ग्राषाढ बुदी । १४ । पूर्ण वेष्टन स० ४२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

२९९९. प्रति सं० २० । पत्रस० ३२८ । ग्रा० १२$\frac{1}{2}$×६ इच । ले० काल स० १९११ वैशाख सुदी १ । पूण । वेष्टन स० ६० ।**प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मदिर ।

विशेष-- रामदयाल श्रावक फतेहपुर वासी ने मिर्जापुर नगर मे प्रोहित भूरामल ब्राह्मण से प्रतिलिति कराई थी ।

३००१ प्रतिसं० २१ । पत्रस० १९० । ग्रा० १४×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १८६६ । पूर्ण । वेष्टन स० ५२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

३००२. प्रतिसं० २२ । पत्रस० ११८ । ग्रा० १२×७ इञ्च । ले०काल स० १९६६ । पूर्ण । वेष्टन स० १७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

३००३. प्रतिसं० २३ । पत्रस० १७६ । ले०काल स० १९५६ ग्रासोज । पूर्ण । वेष्टन स० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

३००४. पाण्डव पुराण वचनिका—पन्नालाल चौधरी। पत्रस० २४६ । आ० १३×८½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—पुराण । र०काल स० १६३३ । ले०काल स० १६६५ वैशाख बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १२११ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३००५ पार्श्व पुराण—चन्द्रकीर्त्ति । पत्र स० १२८ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल स० १६५४ । ले०काल स० १६८१ फागुण बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोक) ।

विशेष—आचार्य चन्द्रकीर्त्ति श्रीभूषण के शिष्य थे । पुराण मे कुल १५ सर्ग हैं । पत्र १ से ५१ तक दूसरी लिपि है ।

३००६. पार्श्वपुराण—पद्मकीर्त्ति । पत्र स० १०८ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-अपभ्र श । विषय—पुराण । र०काल स० ६६६ । ले० काल स० १५७४ काती बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १७७ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—चित्रकूटे राणाश्रीसग्राम राज्ये भ० प्रभाचन्द्रदेवा खण्डेलवालान्वये मौसा गोत्रे साह महक भार्या महाश्री पुत्र साह मेघा भार्या मेघसी द्वितीय भा सा जीणा भार्या जीणश्री तृतीय भा सा सूरज भार्या सूर्यदे चतुर्थ भ्राता सा पूना भार्या पूनादे एतेषा मध्ये साह मेघा पुत्र हीरा ईसर महेसर करमसी इद पार्श्वनाथचरित्र मुनिश्री नरेन्द्रकीर्त्ति योग्य घटापित ।।

३००७. पार्श्वपुराण—रइधू । पत्रस० ८१ । आ० ११¾×५ इञ्च । भाषा—अपभ्र श । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल स० १७४३ माघ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० २८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—१७४३ वर्षे माघ कृष्ण ३ चन्द्रवारे लिखित महानन्द पुष्कर मल्लतमज पालव निवासी ।

३००८. पार्श्वपुराण—वादिचन्द्र । पत्र स० १३२ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले० काल स० १८१० माघ सुदी १ । पूर्ण । वेष्न स० २६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—नरेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य प० बूलचन्द ने इस ग्र थ की प्रतिलिपि की थी ।

३००९. प्रति स० २ । पत्रस० ७३ । आ० १०×५ इच । ले०काल स० १८५० । पूर्ण । वेष्टन स० २३४–६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—नौतनपुर मे ब्र नेमिचन्द्र ने ग्र थ का जीर्णोद्धार किया था ।

३०१० पुराणसार (उत्तरपुराण)—भ० सकलकीर्त्ति । पत्र स० १६२ । आ० १०×४¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले० काल स० १८६० भादवा बुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० १५५८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३०११. प्रतिसं० २ । पत्र स० ३४ । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल स० १८२६ आसोज बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १४५६ । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—मडलाचार्य भट्टारक विजयकीर्त्ति की आम्नाय मे साकभरिनगर (साभर) मे महाराजा पृथ्वीसिंह के राज्य मे श्री हरिनारायणजी ने शास्त्र लिखवाकर पडित माणकचन्द को भेट किया था ।

३०१२. प्रतिसं० ३। पत्रसं० २३६। आ० १०×५ इञ्च। ले० काल सं० १७७० पौष बुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० १२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी।

३०१३. पुराणसार—सागरसेन। पत्रसं० ६२। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। र०काल ×। ले०काल सं० १६५७। पूर्ण। वेष्टन सं० १०७३। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत १६५७ वर्षे भादवा बुदी ६ वार शुक्रवार अजमेर गढ मध्ये श्रीमद्अकबरसाहिमहासुरत्राण राज्ये लिखित च जोसी सूरदास साह धाणा तत्पुत्र साह सिरमल।

३०१४. भागवत महापुराण— ×। पत्रसं० १३३। आ० १२×७ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय—पुराण। र०काल ×। ले० काल सं० १८१२। पूर्ण। वेष्टनसं० ७२। **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी।

विशेष—३१ वें अध्याय तक पूर्ण है।

३०१५. भागवत महापुराण— ×। पत्रसं० २०५। आ० १०½×४½ इच। भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। र०काल। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ५३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूदी।

विशेष—दशमस्कंध पूर्वाद्ध तक है।

३०१६. भागवत महापुराण— ×। पत्रसं० २-१४६। आ० ६×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—पुराण। र०काल सं० १७०० श्रावण बुदी १०। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० ६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, आदिनाथ बूदी।

३०१७. भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (एकादश स्कंध)—श्रीधर। पत्रसं० १२६। आ० १३ × ५ इच। भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। र०काल ×। ले० काल सं० १८०१। पूर्ण। वेष्टनसं० १०३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी।

३०१८. प्रति सं० २। पत्रसं० ३५। आ० १५×६ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ११७। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

३०१९. भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (तृतीय स्कंध)—श्रीधर। पत्रसं० १३२। आ० १२×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १०२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी।

३०२०. प्रति सं० २। पत्रसं० ७७। आ० १२ × ६ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ११५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, नागदी बूदी।

३०२१. भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (द्वादश स्कंध)—श्रीधर। पत्र सं० ४४। आ० १५×६ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ११४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नागदी, बूदी।

३०२२. **भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (चतुर्थ स्कध)—श्रीधर** । पत्र स० ६७ । आ० १५×७ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

३०२३. **भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (द्वितीय स्कध)—श्रीधर** । पत्र स० ३२ । आ० १५×७ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

३०२४. **प्रति स० २** । पत्र स० ४३ । आ० १५×६ इच । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

३०२५ **भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (सप्तम स्कध)—श्रीधर** । पत्र स० ६४ । आ० १५ × ७ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर नागदी बूदी ।

३०२६ **भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (षष्टम स्कध)—श्रीधर** । पत्रस० ६२ । आ० १५ × ६½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले० काल स० १७७६ । पूर्ण । वेष्टनस० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

३०२७. **प्रति स० २** । पत्रस० ६२ । आ० १५×७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १११ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

३०२८. **भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (अष्टम स्कध)—श्रीधर** । पत्रस० ५८ । आ० १५×६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

३०२९. **भागवत महा पुराण भावार्थ दीपिका (नवम स्कध)—श्रीधर** । पत्र स० ५१ । आ० १५×६½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र० काल × । ले०काल स० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन स० १०७ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

३०३० **भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (पचम स्कध)—श्रीधर** । पत्र स० ८३ । आ० १५×६½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले० काल स० १७४६ । पूर्ण । वेष्टन स० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

३०३१. **प्रति स० २** । पत्र स० १६–२३ । आ० १५ × ६½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

३०३२. **भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (प्रथम स्कध)—श्रीधर** । पत्रस० ६० । आ० १३×६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल स० १८६९ । पूर्ण । वेष्टनस० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

३०३३. **भागवत महापुराण भावार्थ दीपिका (दशम स्कध)—श्रीधर** । पत्रस० ४३७ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पुराण । र० काल स० × । ले०काल स० १७४५ माघ सुदी ऽऽ । पूर्ण । वेष्टनस० १०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष—इद पुस्तक लिखित ब्राह्मण जोशी **प्रह्लाद** तत्पुत्र चिरजीव मथुरादास चिरजीव भाई गगाराम तेन इद पुस्तक लिखित । जवूद्वीप पटणस्थले । श्री केशव चरण मन्निव्यौ ।

३०३४. **मल्लिनाथ पुराण**— × । पत्रस० २६ । आ० १२½×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ९७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

३०३५. **मल्लिनाथ पुराण भाषा—सेवाराम पाटनी** । पत्र स० १०८ । आ० १०½×५¾ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—पुराण । र०काल स० १८५० । ले०काल स० १८६४ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० २०६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—लेखराज मिश्र ने कोसी मे प्रतिलिपि की थी । सेवाराम का भी परिचय दिया है । वे दौसा के रहने वाले थे तथा फिर डीग मे रहने लगे थे ।

३०३६. **महादण्डक**— × । पत्र स० ४ । आ० १०¾ × ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय × । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६०२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—इति श्री जैसलमेर दुर्गस्य श्री पार्श्वनाथ स्तुतिश्चकेड चक्रेण चेत साखाचक्र सहजकीर्ति नाम महादडकेन स० १६८३ प्रमाणे विजयदशमी दिवसे । लिख्यनानि महादण्डक विद्रुपाक्षपरामेण मागा नगरमध्ये मिती ज्येष्ठ प्रतियद्दिवसे स० १७८२ का ।

३०३७. **महादंडक—भ० विजयकीर्ति** । पत्रस० १७५ । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पुराण । र०काल स० १८३६ । ले०काल स० १८४० पूर्ण । वेष्टन स० १४३८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—किशनगढ मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३०३८. **प्रतिसं० २** । पत्र स० १८२ । आ० ६½×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ८१६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—ग्र थ मे ४१ अधिकार हैं तथा अजयगढ मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३०३९. **महापुराण—जिनसेनाचार्य—गुणभद्राचार्य** । पत्र स० १-१४५ । आ० १३×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३२१/२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३०४०. **प्रति स० २** । पत्रस० ६-४१७ । आ० ११½ × ६ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—बीच २ मे कई पत्र नही हैं । प्रति प्राचीन एव जीर्ण है ।

३०४१. **प्रतिसं० ३** । पत्र स० ३६६ । आ० ११× ५½इञ्च । ले०काल १८८० । पूर्ण । वेष्टन स० १२/८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी । (टोक)

३०४२. **प्रतिसं० ४** । पत्र स० ६४० । ले० काल स० १६६३ । पूर्ण । वे० स ३- । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

विशेष—रणथमौर के चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी।

३०४३. **प्रति स० ५**। पत्र स० ३६२। ले० काल स० १७६५। पूर्ण। वेष्टन स० २७७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

३०४४. **प्रति सं० ६**। पत्र स० १ से ४८४। ले० काल स० ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २८२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

३०४५. **प्रति स० ७**। पत्रस० ४३५। आ० १२×५½ इन्च। ले०काल स०×। अपूर्ण। वेष्टनस० २३२। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—३७१से ४३४ तक तथा ४३५ से आगे के पत्र मे नही है।

३०४६. **महापुराण-पुष्पदत**। पत्र स० ३५७। आ० ११×४½ इन्च। भाषा-अपभ्रश। विषय | पुराण। र०काल। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ४३७। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष-प० भीव लिखित।

३०४७. **प्रतिसं० २**। पत्र स० ६४६। आ० १०½×५½ इन्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५६। **प्राप्तिस्थान**—उपरोक्त मदिर।

३०४८. **प्रति स० ३**। पत्रस०३१५। आ० ११½×५ इन्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० २६ ×। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा।

विशेष—बहुत से पत्र नहीं है।

३०४६. **प्रतिसं० ४**। पत्र स० ११। आ० ११½×५½ इन्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा।

विशेष—प्रति प्राचीन एव जीर्ण। पत्र पानी मे भीगे हुये है।

३०५०. **प्रति स० ५**। पत्र स० २५७। आ० ११½ × ४½ इन्च। ले० काल स० ×। पूर्ण। वेष्टन स० ८३। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—प्रतिप्राचीन है। प्रशस्ति काफी बडी है।

३०५१. **प्रतिसं० ६** पत्र स० १३८। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २६/४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

३०५२. **महापुराण चौपई—गगादास (पर्वतसुत)**। पत्रस० ११। आ० १०½ ×४½ इन्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—पुराण। र०काल। ले० काल स० १८२५ कार्तिक बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० ३१३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बू दी।

३०५३ **प्रतिसं० २**। पत्रस० १०। ले०काल स० ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १०६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

३०५४. **महाभारत—×**। पत्र सं० ६१। आ० ११×४½ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय पुराण। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी।

विशेष—कर्णपर्व-द्राधिप सवाद तक है ।

३०५५ मुनिव्रत पुराण—ब्र० कृष्णदास । पत्र स० १८६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले० काल स० १६८१ । पूर्ण । वेष्टन स० ३९५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

विशेष—अन्तिम पत्र जीर्ण हो गया है ।

३०५६. रामपुराण—सकलकीर्ति । पत्र स० ३४५ । आ०१२ × ६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले० काल स० १८७१ । पूर्ण । वेष्टन स० ७९ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—भट्टारक भुवनकीर्ति उपदेशात् ढु ढाहर देशे दीर्वपुरे लिपीकृत ।

३०५७. रामपुराण—भ० सोमसेन । पत्र स० १८८ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय-पुराण । र०काल × । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन स० १०५५ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३०५८. प्रति स ० २ । पत्र स० २३० । आ० १३½×६¾ इञ्च । ले०काल स० १८९९ माघ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी ।

३०५९. प्रतिसं० ३ । पत्र स० २७६ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल स० १७२३ । पूर्ण । वेष्टन स० १८२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

प्रशस्ति—स० १७२३ वर्षे शाके १५८८ चैत्र सुदी ५ शुक्रवासरे अंबावती महादुर्गे महाराजाधिराज श्री जयसिंह राज्य प्रवर्तमाने विमलनाथ चैत्यालये भट्टारक श्री नरेन्द्रकीर्ति के समय मोहनदास भौंसा के वशजो ने प्रतिलिपि कराई थी ।

३०६०. प्रति सं ४ । पत्रस० १९४ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले०काल १८५७ । पूर्ण । वेष्टन स० ९२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष—वृ दावती मे पार्श्वनाथ चैत्यालय मे सेवाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

३०६१. प्रतिसं० ५ । पत्रस० २५० । ले०काल स० १८४८ । अपूर्ण । वेष्टन स० ११ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर दवलाना बूदी ।

३०६२. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ३८-२५४ । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५३ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

३०६३. प्रति सं० ७ । पत्रस० २३६ से ३६२ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल स० १८४३ । अपूर्ण । वेष्टन स० २१२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

३०६४. प्रतिसं० ८ । पत्र स० २९० से ३४४ । आ० ११×५½ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २१७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

३०६५. प्रतिसं० ९ । पत्र स० २३७ । आ० १३×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३२८ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

३०६६. वर्द्धमान पुराण -- × । पत्र स० १६६ । श्रा० ११३/४×७१/२ इञ्च । भाषा-- हिन्दी । विषय-पुराण । र०काल--× । ले०काल स० १९४१ ज्येष्ठ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

३०६७. वर्द्धमान पुराण भाषा— × । पत्र स० १४७ । श्रा० ११×७१/२ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल — × । पूर्ण । वेष्टन स० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी' बूदी ।

३०६८. वर्द्धमान पुराण—कवि असग । पत्रस० १०५ । श्रा० १०१/२×४१/२ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल स० १००६ । ले० काल स० १५४० फागुण सुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन स० १४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १५४० वर्षे ।। फाल्गुण शुल्क नवम्या श्री मूलसघे नद्यम्नाये वलात्कारगणे भट्टारक श्री पद्मनदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्शिष्य मुनि रत्नकीर्ति स्तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये पाटणी गोत्रे ... ।

३०६९. वर्द्धमान पुराण— × । पत्रस० २१४ । श्रा० १३१/२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । र०काल × । ले० काल स० १९३९ फागुन वदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० २७ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल पचायती दि० जैन मन्दिर अलवर ।

३०७०. वर्द्धमानपुराण—नवलशाह । पत्र स० १५७ । श्रा० १२१/२×७१/२ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पुराण । र०काल स० १८२५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

विशेष—पुराण मे १६ अधिकार हैं ।

प्रारभिक पाठ—

ऋषभादिमहावीर प्रणमामि जगद्गुरु ।
श्री वर्द्धमानपुराणोऽय कथयामि अह ब्रवीत् ।
ओकार उच्चारकरि ध्यावत मुनिगण सोइ ।
तामैं गरभित पचगुरु तिनपद वदौ दोइ ।
गुण अनन्त सागर विमल विश्वनाथ भगवान ।
धर्मचक्र मय वीर जिन वदौ सिर धरि ध्यान ।।२।।

अतिम पाठ—

उज्जयति विक्रम नृपति सवत्सर गिनि तेह ।
सत अठार पचीस अधिक सभय विकारी एह ।।३२।।
द्वादश मे सूरज गिनै द्वादश अशहि ऊन ।
द्वादशमौ मासहिं भनौ शुक्लपक्ष तिथि पून ।।३३।।
द्वादशनक्षत्र मखानिये बुधवार वृद्धि जोग ।
द्वादश लगन प्रभात मे श्री दिन लेख मनोग ।।३४।।

रितवसत प्रफुल्ल अनि फागु समय शुभ हीय ।
वर्द्धमान भगवान गुन ग्रथ समापति कीय ।

मवि की लघुता—

द्रव्य नवल क्षेत्रहि नवल काल नवल है और ।
भाव नवल भव नवल अतिवृद्धि नवल इहि ठौर ॥
काय नवल अरु मन नवल वचन नवल विसराम ।
नव प्रकार जत नवल इह नवल साहि करिं नाम ॥

अ तिम पाठ—दोहा—

पच परम गुरु जुग चरण भवियन बुध गुन धाम ।
कृपावत दीजै भगति, दास नवल परनाम ॥४२॥

३०७१ प्रतिसं० २ । पत्र स० १३६ । आ० १२×६½ इञ्च । ले० काल स० १६१५ सावन बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

३०७२. प्रति स० ३ । पत्र स० ७२ । आ० १०¾×५½ इञ्च । ले०काल स० १६१७ । पूर्ण । वेष्टन स० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी ।

विशेष—भगवानदास ने ववई मे प्रतिलिपि कराई थी । स० १६२६ मे श्री रामानद जी की वहू ने फतेपुर के मदिर इसे चढाया था ।

३०७३. वर्द्धमान पुराण—सकलकीर्त्ति । पत्र स० ९८ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बू दी ।

३०७४. प्रतिसं० २ । पत्रस० १२१ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना (बू दी) ।

३०७५. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १३८ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३०७६. प्रतिसं० ४ । पत्रस० १३८ । आ० १२×७¾ इञ्च । ले० काल स० १७६५ । पूर्ण । वेष्टनस० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—करौली नगर मे किसनलाल श्रीमाल ने लिखा ।

३०७७. प्रति सं० ५ । पत्रस० १२६ । आ० ११×८ इच । ले०काल स० १६०२ पूर्ण । वेष्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

३०७८. प्रति स० ६ । पत्र स० १०३ । आ० ११×४½ इञ्च । ले० काल स० १५८८ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार—

सवत् १५८८ वर्षे ज्येष्ठ सुदी १२ गुरु प० नला सुत प० पेया भ्रात अकिम······· लिखितं ।

दूसरी प्रशस्ति—

स्थवीराचार्य श्री ६ चन्द्रकीर्ति देवाः ब्रह्म श्रीवत तत् शिष्य ब्रह्म श्री नाकरस्येद पुस्तक पठनार्थं ।

३०७९. प्रति स० ४ । पत्र स० २०६ । आ० १२ X ६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पुराण । र०काल स० १८२५ । ले० काल स० १९०८ । पूर्ण । वेष्टन स० २३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—

कामा के मन्दिर मे दीवान चुन्नीलाल ने भेंट किया ।

३०८० प्रति स० ५ । पत्रस० १८८ । आ० ६½X७½ इञ्च । ले०काल स० १९५९ । पूर्ण । वेष्टनस० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली (कोटा) ।

३०८१. प्रति स० ६ । पत्रस० १३० । ले० काल स० १८८९ । पूर्ण । वेष्टनस० ७६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

३०८२. वर्द्धमान पुराण भाषा—नवलराम । पत्रस० २४३ । आ० ११ X ७ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । र०काल स० १६६१ अगहन सुदी । ले० काल स० १९०३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है वैश्य कुल की ८४ गोत्रो का वर्णन किया गया है ।

दोहरा—

सोरहसै इक्याणवै अगहण सुभ तिथि वार ।
नृप जुझार बु देल कुल जिनके राजमझार ।
यह प्रक्षेप वखाणकरि कहो पतिष्ठा धर्म,
परजाग जुत वाडी विभव तिण उत्पति वहुधर्म ॥

दोहरा—

क्षत्रसालवती प्रवल नाती श्रीहरि देस ।
सभासिह सुत हिइपति करहि राज इहदेस ॥
ईति भीत्ति व्यापै नही परजा अति आणद ।
भाषा पढहि पढावहि पट् पुर श्रावक वृ द ।

पद्धडी छद—

ताहि समय करि मन मे हुलास,
कीजे कथा श्री जिण गुणहि दास ।
वक्ताप्रभाव वडौ उर आन ।
तव प्रभु वर्द्धमान गुणखान ।
करो अस्तवण भाषा जोर ।
नवलसाह तज मदमण मोर ।
सकलकीर्ति उपदेश प्रवाण ।
पितापुत्र मिलि रच्यो पुराण ।

अन्तिम दोहा—

पच परम जग चरण नमि, भव जण वृद्ध जुत धाम ।
कृपावत दीजे भगत दास नवल परणाम ।।

ग्र थ कामापुर के पचायती मन्दिर मे चढाया गया ।

३०८३ विमलनाथपुराण—ब्र० कृष्णदास । पत्र स० २६६ । आ० १२×७½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय--पुराण । र०काल स० १६७४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

३०८४. प्रतिसं० २ । पत्र स० १५१ । आ० १०½×५½ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८/११ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर सौगाणी करौली ।

३०८५. विमलनाथ पुराण भाषा—पांडे लालचन्द । पत्र स० १०० । आ० १४ × ८½ इन्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । र०काल स० १८३७ । ले० काल स० १९३४ वैशाख बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल पचायती दि० जैन मन्दिर अलवर ।

३०८६. प्रतिसं० २ । पत्र स० ११८ । आ० ९½×६ इन्च । ले० काल स० १८९० । पूर्ण । वेष्टन स० ७० । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

३०८७. प्रतिस० ३ । पत्र स० १३७ । आ० १२ × ५½ इन्च । ले० काल स० १९३३ आषाढ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

३०८८. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ११८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—ब्रह्म कृष्णदास विरचित सस्कृत पुराण के आधार पर पाडे लालचन्द ने करौली में ग्र थ रचना की थी ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

अडिल्ल—

गढ गोपाचल परम पुनीत प्रमानिये,
तहा विश्वभूषण भट्टारक जानिए ।
तिनके शिष्य प्रसिद्ध ब्रह्म सागर सही,
अग्रवार वर वश विषै उत्पत्ति लही ।

काव्य छन्द—

जात्रा करि गिरनार सिखर की अति सुख दायक ।
फुनि आये हिंडौन जहा सब श्रावक लायक ।
जिन मत को परभाव देखि निज मन थिर कीनो ।
महावीर जिन चरण कमल को शरणैं लीनो ।।

दोहा—

ब्रह्म उदधि के शिष्य फुनि पंडिलाल अयान ।
छद कोस पिंगल तनौ जामे नाही ज्ञान ।

प्रभु चरित्र किम मिस विपय कीनो जिन गुणगान ।
विमलनाथ जिनराज को पूरण भगो पुराण ।।
पूर्व पुरान विलोकि के पाडेलाल ग्रयान ।
भाषा वन्ध प्रवध मे रच्यो करौरी थान ।।

चौपाई—

सवत् अष्टादश सत जान ताउपर पैंतीस प्रमान ।
अस्विन सुदी दशमी सोमवार ग्रंथ समापति कीनौ सार ।।

३०८६. **विष्णु पुराण—** × । पत्रस० ७–४० । ग्रा० ११ × ५½ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पुराण । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

विशेष—पत्र स० ७–६ तक अठारहपुराण तथा ६–४० तक विष्णुपुराण जिसमे आदिनाथ का वर्णन भी दिया हुआ है ।

३०६०. **श्रेणिक पुराण—विजयकीर्त्ति** । पत्र स० ८१ । भाषा-हिन्दी । विपय-पुराण । र०काल स० १८२७ फागुन वुदी ५ । ले० काल स० १६०३ आसोज सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३०६१. **प्रतिसं० २** । पत्र स० १४५ । ग्रा० ११½ × ५½ इञ्च भाषा—हिन्दी पद्य । विपय—पुराण । र०काल स० १८२७ फागुन वुदी ७ । ले० काल स० १८८७ । वेष्टन स० ६६४ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—भट्टारक परिचय दिया गया है । भट्टारक धर्मचन्द्र ठोल्या वैराठ के थे तथा मलयखेड के सिंहासन एव कारजा पट्ट के थे ।

३०६२. **शान्ति पुराण—अशग** । पत्र स० ८४ । ग्रा० ११ × ५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल स० १८४१ आषाढ वुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ वू दी ।

विशेष—उणियारा नगर मे ब्रह्म नेतसीदास ने अपने शिष्य के पठानार्थ लिखा था ।

३०६३. **प्रतिस० २** । पत्रस० १२४ । ग्रा० ११½ × ६ इन्च । ले०काल स० १५६४ फागुण सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ५१७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३०६४. **शान्ति पुराण—प. आशाधर कवि** । पत्र स० १०७ । ग्रा० १२ × ५ इन्च । भाषा——सस्कृत । विपय—पुराण । र०काल × । ले० काल १५६१ आषाढ सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स०२०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति अच्छी है ।

३०६५. **शांतिनाथ पुराण—ठाकुर** । पत्र स० ७४ । ग्रा० ११ × ५½ इन्च । भाषा–हिन्दी हिन्दी । विषय-पुराण । र०काल स० १६५२ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६०५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

३०९६. **शान्तिनाथ पुराण—सकलकीर्त्ति** । पत्रस० २०३ । आ० १० × ६ इञ्च । भाषा—विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल स० १८९३ आषाढ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल टोक ।

३०९७. **प्रति सं० २** । पत्रस० २२४ । ले०काल स० १७८३ वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती भरतपुर ।

विशेष—इसे प० नरसिंह ने लिखा था ।

३०९८. **प्रतिसं० ३** । पत्र स० २२७ । आ० १२½ × ५ इञ्च । ले०काल स० १७९८ मगसिर सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० २८/१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

विशेष—प० नरसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

३०९९. **शान्तिनाथ पुराण—सेवाराम पाटनी** । पत्र स० १५७ । आ० १३½ × ८½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पुराण । र०काल स० १८३४ सावन बुदी ८ । ले० काल स० १९६५ चैत्र बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० १३-२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

३१००. **प्रतिसं० २** । पत्र स० १५६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३१०१. **प्रतिसं० ३** । पत्र स०२२१ । आ० १३×८ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बूदी ।

३१०२. **प्रति स० ४** । पत्रस० १९४ । आ० १३ × ८ इञ्च । ले०काल स० १८९३ माघ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—सेवाराम ने प० टोडरमल्लजी के पथ का अनुकरण किया तथा उनकी मृत्यु के पश्चात् जयपुर छोड के चले जाना लिखा है । कवि मालव देश के थे तथा मल्लिनाथ चैत्यालय मे ग्र थ रचना की थी । ग्र थ रचना देवगढ मे हुई थी । कवि ने हु वड वशीय अ वावत की प्रे रणा से इस ग्र ंथ की रचना करना लिखा है ।

आलमचन्द वैनाडा सिकन्दरा के रहने वाले थे । देवयोग से वे बयाना मे आये और यहा ही बस गये । उनके दो पुत्र थे खेमचन्द और विजयराम । खेमचन्द के नथमल और चेतराम हुए । नथमल ने यह ग्र थ लिखाकर इस मन्दिर मे चढाया ।

३१०३. **शान्तिनाथ पुराण** भाषा—× । पत्रस० २४९ । आ० १३×९½ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

३१०४ **सुमतिनाथ पुराण—दीक्षित देवदत्त** । पत्रस० ३-४२ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल स० १८४७ चैत सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी ।

विशेष अन्तिम—भगवान सुमति पदारविंदनि ध्याइमान सानद के ।
कवि देव सुमति पुराण यह, विरच्ये ललित पद छद के ।
जो पढई आपु पढाई औरनि सुनहि वाच सुनावही ।
कल्याण मनवछित सुमति परसाद सो जन पाव ही ।

इति श्री भगवत् गुणभद्राचार्यानुक्रमेण श्री भट्टारक विश्वभूषण पट्टाभरण श्री ब्रह्म हर्षसागरात्मज श्री भट्टारक जिनेन्द्रभूषणोपदेशात् दीक्षित देवदत्त कवि रचितेन श्री उत्तरपुराणान्तर्गत सुमति पुराणे श्री निर्वाण कल्याण वर्णनो नाम पचमो अधिकार । भगवानदास ने अटेर मे प्रतिलिपि की थी ।

प्रारम्भ मे त्रिभंगी सार का अ श है ।

३१०५ हरिवंश पुराण—जिनसेनाचार्य । पत्रस० ४२६ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय -पुराण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३०८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३१०६. प्रति स० २ । पत्र स० ४०६ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स०१४ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मदिर ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति वाला पत्र नही है ।

३१०७. प्रतिस ० ३ । पत्रस० १४० । आ० १०½×५¾ इञ्च । ले० काल× । अपूर्ण । वे० स० १२७६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

३१०८. प्रति स० ४ । पत्रस० २६४ । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बू दी ।

३१०९. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ३१४ । आ० १२×५ इच । ले०काल १७५६ आसोज सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८/११ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

विशेष—रावराजा बुधसिंह के बू दी नगर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३११०. प्रतिस० ६ । पत्र स० ३१६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—तीन चार प्रतियो का सग्रह है ।

३१११. प्रतिसं० ७ । पत्रस० ३६२ । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३११२ प्रतिसं० ८ । पत्रस० १६ । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल स० १७११ । अपूर्ण । वेष्टनस० १५१/७६ । सभवनाथमन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति— स० १७११ वर्षे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे श्री सागपत्तने श्री आदिनाथ चैत्यालये लिखित । श्री सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री वादिभूषण, तत्पट्टे भ० श्री रामकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री पद्मनदि त० भ श्री देवेन्द्रकीर्तिस्तदाम्नाये आचार्य श्री महीचन्द्रस्तत्‌शिष्य ब्र० बीरा पठनार्थ ।

३११३. प्रतिसं० ९ । पत्र सं० ९५ । आ० १२½×५¾ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—बीच के अनेक पत्र नही हैं । तथा ९५ से आगे पत्र भी नही है ।

३११४. प्रति सं० १० । पत्र स० ३०२ । आ० १३×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

३११५. हरिवशपुराण भाषा—खड्गसेन । पत्रस० १७० । आ० १२×५ इञ्च । भापा—हिन्दी पद्य । विपय—पुराण । र० काल × । ले० काल स० १८१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—३१३३ पद्य हैं । गागरड्ड मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३११६. हरिवश पुराण—भट्टारक विद्याभूषण के शिष्य श्रीभूषण सूरि । पत्रस० ३३५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय—पुराण । र० काल × । ले० काल स० १७०१ भादवा बुदी १ पूर्ण । वेष्टन स० २५-१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—राजनगर मे लिखा गया था ।

३११७. हरिवशपुराण—यश कीर्ति । पत्रस० १८९ । आ० ११×५ इञ्च । भापा—अपभ्र श । विषय—पुराण । ले० काल × । ले० काल स० १६६१ । पूर्ण । वेष्टन स० २४८/२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—सवत् १६६१ चैत्र सुदी २ रविवासरे पातिसाह श्री अकब्बर जलालदीनराज्यप्रवर्तमाने श्री आगरा नगरे श्रीमत् काष्टासघे माथुरगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्यान्वये भट्टारक श्री श्रीमलयकीर्तिसूरी—श्वरान् तत्पट्टे सुजसोराशिसुश्रीकृतदृग्वलयाना प्रतिपक्षसिरिस्फोटान् प्रवीभव्याजविकासिना सुमालिना कुवादेन्दीवरसकोचनैकशीतरूचीना सद्व्रतयवेचनजलमुचा चारुचारित्रचरिता ··· भ० गुणभद्र देवा । तत्पट्टे वादीभकु भस्थल विदारणैक ·· भ० श्री भानकीर्तिदेवा तत्पट्टे ······ भ० कुमारसेनदेवा तदाम्नाये अग्रोतकान्वये गोयलगोत्रे इदानी आगरा वास्तव्यं सुदेसप्रदेसविख्यातमात्यान् दानप्रतिश्रेयासावतारान् दीपकराइवलू तस्य भार्या सील तोयतर गिनि विनअग्रागेश्वरी साध्वी अर्जु नदे तयो पुत्र पच । प्रथम पुत्र देवीदास तस्यभार्या नागरदे तत्पुत्र कु वर तस्य भार्या देवल तयो पुत्र द्वय प्रथम पुत्र चन्द्रसैनि —द्वितीय पुत्र कपूर । राइवलू द्वितीय पुत्र रामदास तस्यभार्या देवदत्ता । राइवलू तृतीय पुत्र लक्ष्मीदास तस्य भार्या अनामिका । राइवलू चतुर्थ पुत्र षेमकरण तस्य भार्या देवल । राइवलू पचम पुत्र दानदानेश्वरान् जैनसभाशृ गार हारान् जिनपूजापुरदरान् ··· साहु आसकरण तस्य भार्या ···· साध्वी मोतिगदे तयो पुत्र ·· साहु श्री स्वामीदास जहरी तस्य भार्या · ··· साध्वी वेनमदे तयो पुत्र पच । प्रथम पुत्र भवानी, द्वितीय पुत्र मुरारी तस्य भार्या नारगदे । तयो तृतीय पुत्र लाहुरी भार्या नथउदास तस्य भार्या लोहगमदे तयो पुत्र त्रय गोकलदास तस्य भार्या कस्तूरी पुत्र मुरारि । स्वामिदास तृतीयपुत्र पचमीप्रत उद्धरणवीरान् साहु प्रथीमल तस्यभार्या सुन्दरदे तस्य पुत्र मायीदास स्वामीदास चतुर्थ पुत्र साहु मथुरादास स्वामीदास पचम पुत्र जिन शासन उद्धरणधीरान् ··· ··· साह ·· ····। इससे आगे प्रशस्ति पत्र नहीं है ।

३११८. हरिवश पुराण—शालिवाहन । पत्र स० १६७ । आ० १२ × ५ इञ्च । भापा—हिन्दी । विषय—पुराण । र० काल स० १६९५ । ले० काल—स० १७८९ फागुण सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

३११९. प्रति सं० २ । पत्रस० ५२ । ले० काल १७९४ । पूर्ण । वेष्टन स० १७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

३१२०. प्रति स० ३ । पत्रस० १३० । ग्रा० १२½ × ६½ इन्च । ले०काल स० १८०३ म गसिर बुदी ८ । पूर्ण । वेप्टन स० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—शाहजहानाबाद मे प्रतिलिपि हुई थी ।

अग्रवाल ज्ञातीय वशल गोत्रे फतेपुर वास्तव्ये वागड देशे साह लालचद तत्पुत्र साह सदानद तत्पुत्र साह राजाराम तत्पुत्र हरिनारायण पाडे स्वामी श्री देवेन्द्रकीर्त्ति जी फतेपुर मध्ये वास्तव्य तेन दिल्ली मध्ये पातसाह मोहम्मद साहि राज्ये सपूर्ण कारापित ।

३१२१. हरिवश पुराण—दौलतराम कासलीवाल । पत्रस० ३८६ । ग्रा० १५×७ इन्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पुराण । र०काल स० १८२६ । ले० काल स० १८६५ । पूर्ण । वेप्टन स० १५/ ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनमन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

विशेष—जयकृष्ण व्यास फागी वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

३१२२ प्रतिस० २ । पत्रस० ४६२ । ग्रा० १३×५¾ इन्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । र०काल स० १८२६ चैत सुदी १५ । ले० काल स० १८७२ ग्रासोज सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ७१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर भण्डार ।

३१२३. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ४६८ । ग्रा० १२½×७ इन्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पुराण । र०काल स० १८२६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

३१२४. प्रति स० ४ । पत्रस० २०२ से ६१३ । ग्रा० ११×७½ इन्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय—पुराण । र०काल स० १८२६ । ले० काल स० १८६३ । ग्रपूर्ण । वेष्टनस० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष—चौधरी डोडीराम पुत्र गोविन्दराम तथा सालगराम पुत्र मन्नालाल छावडा ने राजमहल मे टोडानिवासी ब्राह्मण सुखलाल से प्रतिलिपि कराकर चद्रप्रभु स्वामी के मदिर मे विराजमान किया ।

३१२५ प्रतिसं० ५ । पत्र स० ५३८ । ग्रा० १३×६½ इन्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय—पुराण । र०काल स० १८२६ । लेखन काल स० १९६१ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

३१२६ प्रति स० ६ । पत्रस० ४४४ । ग्रा० १३×६½ इन्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—पुराण । र०काल स० १८२६ । ले० काल स० १८६३ । पूर्ण । **प्राप्तिस्थान** दि० जैन मन्दिर ग्रभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष—ग्रथ का मूल्य १५) रु० ऐसा लिखा है ।

३१२७ प्रति स० ७ । पत्रस० ४५४ । ग्रा० १२½ × ७इन्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—पुराण । र०काल स० १८२६ चैत सुदी १५ । ले०काल स० १९६१ माघ बुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

३१२८. प्रति सं० ८ । पत्रस० ३८९ । ग्रा० १५½×६ इन्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—पुराण । र०काल स० १८२९ । ले० काल १८६४ वैशाख बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक) ।

३१२९. प्रति स० ९ । पत्र स० ६१७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—पुराण । र०काल स० १८२६ । ले० काल स० १८८१ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८/८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० पार्श्वनाथ जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

३१३०. प्रति स० १० । पत्र स० २१३ । आ० १२½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-पुराण । र०काल स० १८२६ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

३१३१. प्रति स० ११ । पत्र स० ४२७ । आ० १२ × ८ इञ्च । भाषा हिन्दी (गद्य) । र०काल स० १८२६ । ले० काल स० १८५३ । पूर्ण । वेष्टन स० १७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ख० पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—कु भावती नगर मे प्रतिलिपि की गई थी ।

३१३२. प्रति स० १२ । पत्र स० ३२६ । आ० १६ × ७ इञ्च । भाषा-हिन्दी ग० । विषय-पुराण । ले० काल स० १८८४ पौष वदी १३ । र०काल स० १८२६ चैत सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—प्रति दो वेष्टनो मे है ।

३१३३. प्रति स० १३ । पत्रस० ४०६ । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पुराण । र० काल स० १८२६ । ले० काल स० १८८२ मर्गसिर सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० १४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—नवनिधिराय कासलीवाल ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

३१३४. प्रति सं० १४ । पत्रस० ३५७ । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पुराण । र०काल स० १८२९ चैत सुदी १५ । ले० काल स० १८७५ । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

३१३५ प्रति स० १५ । पत्रस० ४७५ । ले०काल १८४४ । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष—कु भावती मे प्रतिलिपि हुई थी । स० १८९१ मे मन्दिर मे चढाया गया ।

३१३६. प्रतिसं० १६ । पत्र स० ४९३ । आ० १२½×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—पुराण । र०काल स० १८२९ चैत सुदी १५ । ले०काल—स० १८५५ कार्त्तिकसुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० ९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

३१३७ प्रति स० १७ । पत्र स० ४६८ । आ० १३×७ इच । भाषा—ले०काल × ।अपूर्ण एव जीर्ण । वेष्टनस० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वैर भरतपुर ।

३१३८ प्रति स० १८ । पत्र स० २२४ । आ० १३½×८½ इच । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल× । अपूर्ण । वेष्टनस० ३५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

३१३९ प्रतिस० १९ । पत्र स० ४८० । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय पुराण । र०काल स० १८२९ । ले० काल स० १८३४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, हण्डावालो का डीग ।

३१४० प्रति स० २० । पत्रस० २ से २४६ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर हण्डावालो का डीग ।

३१४१ प्रतिसं० २१ । पत्रस० ६०२ । आ० १२½ × ५½ इन्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पुराण । र०काल स० १८२९ चैत सुदी १५ । ले० काल स० १८६५ वैशाख सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

विशेष—नगर करौली मे साहवराम ने गुमानीराम द्वारा लिखाया था । बीच के कुछ पत्र जीर्ण है ।

३१४२ प्रतिस० २२ । पत्र स० १–२०५ । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय—पुराण । र०काल स० १८२९ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर वसवा ।

३१४३. प्रति स० २३ । पत्र स० ४४० । आ० १२½×६½ इन्च । भाषा-हिन्दी ग० । विषय-पुराण । र०काल स० १८२९ चैत सुदी १५ । ले० काल स० १८९४ माघ बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—जीवणराम जी ने ब्राह्मण विजाराम आखाराम से प्रतिलिपि कराई थी ।

३१४४. प्रतिसं० २४ । पत्रस० ५०६ । आ० १२ × ७½ इन्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल स० १८२९ । पूर्ण । वेष्टन स० ८१९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—चिमनलाल तेरहपथी ने प्रतिलिपि की थी ।

३१४५. प्रतिसं० २५ । पत्रस० ३२७ । आ० १३×१० इन्च । भाषा-हिन्दी ग० । विषय—पुराण । र०काल स० १८२९ । ले० काल स० १८६० । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—दौसा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३१४६. प्रति स० २६ । पत्रस० ३०० । आ० ११ × ७½ इन्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-पुराण । र०काल स० १८२९ चैत्र सुदी १५ । ले०काल स० × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

३१४७. प्रति स० २७ । पत्रस० ४४१ । आ० १२½×६½ इन्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पुराण । र०काल स० १८२९ । ले०काल स० १८५९ । पूर्ण । वेष्टनस० २६-१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, कोटडियो का डूगरपुर ।

३१४८. हरिवंश पुराण—ब्र० जिनदास । पत्रस० २४५ । आ० ११ × ६ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल स० १८४ (?)-फागुण सुदी ९ । पूर्ण । वेष्टनस० १७४ । **प्राप्ति स्थान**—शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—बूदी नगर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३१४६. प्रति स० २ । पत्रस० २७७ । आ० ११½×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पञ्चायती दूनी (टोक) ।

विशेष—प्रति उत्तम है ।

३१५०. प्रति स० ३ । पत्रस० २०८ । आ० ८¾×६ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३१५१. प्रतिसं० ४ । पत्रस० १८६ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण। र० काल × । ले०काल स० १८४३ । पूर्ण । वेष्टन स० २६२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

३१५२. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ३६५ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । र०काल × । ले०काल स० १५६३ । पूर्ण । वेष्टनस० ३४३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३१५३ प्रतिसं० ६ । पत्रस० ३४३ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । र० काल × । ले०काल स० १५८६ । पूर्ण । वेष्टन स० १३०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३१५४. प्रतिसं० ७ । पत्रस० २०७ । आ० १३×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । र० काल × । ले०काल स० १८२५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बूदी ।

३१५५. प्रतिसं० ८ । पत्रस० ३०६ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । र० काल × । ले०काल स० १६५७ । पूर्ण । वेष्टन स० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी ।

विशेष—सवत् १६५७ वर्षे भाद्रव सुदि १३ बुधवासरे श्री मूलसघे श्रीयथावयानौ शुभस्थाने राजाधिराज श्रीमद् अकबरसाहिराज्ये चद्रप्रभ चैत्यालये खडेलवाल ज्ञातीय समस्त पचाइतु बयानै को पुस्तक हरिवश शास्त्र पडित बूरा प्रदत्त । पुस्तक लिखित ब्राह्मनु परासर गोत्रे पाडे प्रहलादु तत्पुत्र मित्रमौनि लेखक पाठक ददातु । इद पुस्तक दुरसक्रतवा पडित सभाचन्द तदात्मज रघुनाथ सवत् १७६७ वर्ष अश्वनि मासे कृष्णा पक्षे तिथौ ६ बुधवारे ।

३१५६ प्रतिसं० ६ । पत्रस० २८५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

३१५७. प्रतिसं० १० । पत्रस० २२१ । आ० १२ ×६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनमन्दिर दबलाना (बूदी) ।

विशेष—अन्तिम २ पत्र फट गये है । प्रतिजीर्ण है । सावडा गोत्र वाले श्रावक सुलतान ने प्रतिलिपि की थी ।

३१५८. **प्रतिस० ११** । पत्रस० १२२ । आ० १० × ५½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २०३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

३१५९. **प्रतिसं० १२** । पत्रस० १२३–२२५ । आ० १०×५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । र०काल × । ले० काल स० १७९६ । पूर्ण । वे० स० ३३७ । **प्राप्तिस्थान**-दि० जैन मन्दिर दबलाना बूदी ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

इति श्री हरिवश सपूर्ण । लिखित मुनि धर्मविमल धर्मोपदेशाय स्वय वाचनार्थ सीसवाली नगर मध्ये श्री महावीर चैत्ये ठाकुर श्री मानसिंहजी तस्यामात्य सा० श्री सुखरामजी गोत छावडा चिरजीयात् । सवत् १७९६ वर्षे मिती चैत्र बुदी ७ रविवासरे ।

३१६०. **प्रतिस० १३** । पत्रस० ३७० । आ० १२×५ इन्च । भाषा सस्कृत । विषय-पुराण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१७–६२ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

३१६१. **प्रतिसं० १४** । पत्रस० २०६ । आ० १३×६ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल स० १८५४ । पूर्ण । वेष्टन स० १०२-७ ।**प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—तक्षकपुर मे प० शिवजीराम टोडा के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

३१६२. **प्रतिसं० १५** । पत्रस० २२२ । आ० १०½×५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६/१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

३१६३. **प्रतिसं० १६** । पत्रस० २२५ । आ० १२×६ इच । भाषा-सस्कृत । विषय -पुराण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९७/१० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैनपार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

३१६४. **प्रतिसं० १७** । पत्रस० २५४ । आ० ११×५ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले०काल स० १६८९ वैशाख बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३३९ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—नैनवा वासी सगही श्री हरिराज खडेलवाल ने गढ़नलपुर मे प्रतिलिपि करवाई थी।

३१६५. **प्रतिसं० १८** । पत्र स० २७१ । आ० १०½×४½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । र०काल × । ले० काल स० १७७६ फागुन सुदी १० । पूर्ण । वे० स० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—बादशाह फर्रूकसाह के राज्य मे परशुराम ने प्रतिलिपि की थी ।

३१६६ **प्रतिस० १९** । पत्र स० १से१२७ । भाषा-सस्कृत । विषय पुराण । र०काल × । लेखन काल × । अपूर्ण । वे०स० १० **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर डीग ।

३१६७. प्रति सं० २० । पत्र स० ३१० । आ० १० ×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । र० काल × । ले० काल स० १८१६ । पूर्ण । वे० स० १६८ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

३१६८. प्रतिसं० २१ । पत्रस० ३२३ । आ० ११×५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय—पुराण ।र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेट्टन स० १३७ । ग्र थाग्र थ ६६६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

३१६९. प्रति सं० २२ । पत्रस० ३१७ । आ० १०¾×४ ¾ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । र० काल × । ले०काल स० १८१८ । पूर्ण । वेष्टन स० १०८–५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

३१७०. प्रतिसं० २३ । पत्र स० २१७ । आ० ११½ × ५इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । र० काल × । ले० काल १६६२ । पूर्ण । वे० स० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मदिर उदयपुर ।

३१७१. प्रति स० २४ । पत्र स० २६३-२९२ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पुराण । र०काल × । ले० काल स० १६८५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३९५/७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष - स० १६८५ वर्षे फागुण सुदी ११ शुक्रवासरे मालवदेशे श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे कु द-कुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति तत्पट्टे भ० रत्नकीर्त्ति तत्पट्टे भ० यश कीर्ति तत्पट्टे भ० गुणचन्द्र तत् भ०जिनचन्द्र तत् भ०, सकलचन्द्र तत्पट्टे भ० रत्नचन्द्र तदाम्नाये ब्र० श्री जेसा तत् शिष्य आचार्य जयकीर्ति तत् शिष्य आ० मुनीचन्द्र कर्मक्षयार्थं लिख्यत । वागडदेशे सागवाडा ग्रामे हु बडज्ञातीय बजीयणा गोत्रे सा० गोसल भार्या दमनी । तत् पुत्र सा० चपा भा० कला तत् पुत्र सा० गणेश भार्या गगदे पुत्र आ० मुनीचन्द्र लिखीत । स १६८५ वर्षे फागुण बुदी ६ सोमे सुजालपुरे पार्श्वनाथ चैत्यालये ब्र० जेसा शिष्य जयकीर्ति शिष्य आ० मुनिचन्द्र केन ब्रह्म भोगीदासाय गुरू भ्रात्रे हरिवश पुराण स्वहस्तेन लिखित्वा स्वज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थं दत्त । रणयर नगरे लिखित । श्री आचार्य भुवनकीर्ति तत् शिष्य ब्र० श्री नारायणदासस्य इद पुस्तक ।

३१७२. प्रति स० २५ । पत्र स० ३६६ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल × । ले० काल स० १५५८ । अपूर्ण । वेष्टन स० २४७/६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—९० से २७९ तक के पत्र नही है ।

प्रशस्ति—सवत् १५५८ वर्षे पौष सुदी २ रवौ श्री मूलसघे बलात्कारगणे कु दकु दाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनदिदेवा तत्पट्टे भ० श्री सकलकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री भुवनकीर्ति तत्पट्टे ज्ञानभूषण तत्पट्टे श्री विजयकीर्ति गुरूपदेशात् वाग्वरदेशे नुगामास्थाने राउल श्री उदयसिहजी राज्ये श्री आदिनाथचैत्यालये हु वड ज्ञातीय विरजगोत्रे दोसी आया भार्या सारू सुत सम्यक्त्वादिद्वादशव्रतप्रतिपालक दोसी झाइया भा० देसति सुत आगमवेत्ता दोसी नेमिदास भार्या टवकू भ्रातृ दो सतोषी भा० सरीयादे भ्रा० दो० देवा भार्या देवलदे तेषा पुत्रा श्रीपाल रामारूडा एतै हरिवश पुराण लिखाप्य दत्त । ब्रह्म रामा पठनार्थं ।

३१७३ **प्रति स० २६** । पत्र स० ४०३ । ग्रा० १० X ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । र० काल X । ले० काल स० १६०१ । पूर्ण । वेष्टन स० १५४/१० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६०१ वर्षे कार्तिक मासे शुक्लपक्षे ११ शुक्रे श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे श्री श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री भुवनकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री ज्ञानभूषणदेवा तत्पट्टे भ० विजयकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्रदेवा तत् शिष्य ब्र० श्रीरगा ज्ञानावर्णकर्मक्षयार्थं लक्षित्वा वागडदेशे गुयाजीग्रामे श्री शातिनाथ चैत्यालये शुभ भवति आचार्य श्री पद्मकीर्तिये दत्त हरिवशाख्य महापुराण ज्ञानावर्ण क्षयार्थं ॥

३१७४. प्रति स० २७ । पत्र स० २३० । ग्रा० १०½ X ५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । र० काल X । ले० काल स० १६५३ । पूर्ण । वेष्टन स० २५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६५३ वर्षे माघ सुदी ७ बुधे श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्तिदेवा तत्पट्टे भुवनकीर्तिदेवा तत्पट्टे ज्ञानभूषणदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री विजयकीर्तिस्त भ० शुभचन्द्रदेवास्तत् भ० सुमतिकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० गुणकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री वादिभूषण तादाम्नाये श्री ईलप्रकारे श्री सम्भवनाथ चैत्यालये श्रीसघेन इद हरिवशपुराण लिखावि स्वज्ञानावरणीकर्मक्षयार्थं ब्रह्म लाडकाय दत्त ।

३१७५. हरिवश पुराण—खुशालचन्द । पत्र स० २२३ । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । र० काल स० १७८० । ले० काल स० १८५२ । पूर्ण । वेष्टन स० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पचायती दूणी (टोक) ।

विशेष—फागी मे स्योवक्स ने प्रतिलिपि की थी ।

३१७६ प्रति स० २ । पत्रस०-२१६ । ग्रा० १२ X ६ इञ्च । विषय-पुराण । र० काल स० १७८० वैशाख सुदी ३ । ले०काल X । अपूर्ण । वेष्टनस० ३५० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३१७७ प्रति स० ३ । पत्रस० २३६ । ग्रा० ११ X ६½ इञ्च । भाषा हिन्दी (पद्य) । विषय-पुराण । र० काल स० १७८० । ले० काल स० १८२६ । पूर्ण । वेष्टनस० १६१८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३१७८. प्रति स० ४ । पत्र स० ३१४ । ग्रा० १०½ X ५¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । र० काल स० १७८० । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १३ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

३१७९. प्रति स० ५ । पत्रस० २६६ । ग्रा० १०½ X ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—पुराण । र० काल स० १७८० वैशाख सुदी ३ । लेखन काल स० १८३५ पौष सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ५६ । **प्राप्ति स्थान**--तेरहपथी दि० जैन मन्दिर नैणवा ।

विशेष—महाराजा विशनसिंह के शासन मे सदासुख गोदीका सागानेर वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

३१८०. प्रति स० ६ । पत्र स० २२२ । आ० १३½×६¾ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—पुराण । र०काल स० १७८० । ले० काल स० १८३१ चैत बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

३१८१. प्रति स० ७ । पत्र स० २३१ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । र० काल स० १७८० । ले० काल स १८६० श्रावण सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स०९१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

३१८२. प्रति स० ८ । पत्र । स० २४१ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—पुराण । र० काल × । ले०काल स० १८४० । पूर्ण । वेष्टनस० ५६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

३१८३. प्रति स० ९ । पत्रस० २७६ । आ० १०¾×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । र० काल स० १७८० वैशाख सुदी ३ । ले०काल स० १८३६ माह सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० १०३-२०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

विशेष—सवत् १९१५ मे साह हीरालाल जी तत्पुत्र जैकुमार जी अमैचन्द जी ने पुण्य के निमित्त एव कर्मक्षयार्थ टोडा के मन्दिर सावलाजी (रैण)के मे चढाया था ।

३१८४. प्रतिसं० १० । पत्र स० २१७ । आ० ११×६ इञ्च । ले० काल स० १८४५ कातिक सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ११९/७३ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—व्रजभूमि मथुरा के पास मे पटेल माहिब के लश्कर मे पार्श्वनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३१८५. प्रति स० ११ । पत्रस० २०१ । आ० १३×६इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । र०काल स० १७८० । ले०काल स० १८८४ । पूर्ण । वेष्टन स० १४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३१८६. प्रति सं० १२ । पत्रस० २२३ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १४३ । **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—२२३ से आगे पत्र नही है ।

३१८७. प्रति स० १३ । पत्र स० २४२ । आ० ११½×६½इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । र० काल स० १७८० । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १९ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

३१८८. प्रति स० १४ । पत्र स० २३१ । भाषा—हिन्दी । विषय—पुराण । र० काल सं० १७८० वैशाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ११९ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—संवत् १७९३ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे द्वितीया शनौ लिखितोयं ग्रथ । साधर्मी पडित सुखलाल चेला श्री सुरेन्द्रकीर्ति का जानो ।

विशेष—कुन्दनलाल तेरापथी ने प्रतिलिपि की थी।

दोहा—

देश ढू ढाड सुहावनो, महावीर सस्थान।
जहा बैठ लेखन कीयौ धर्म ध्यान चित आन।
तीन सिखिर मडीप अति सौभै।
गीरद चहु कोर मन मोहे ॥
वन उपवन सोभन अधिकार।
मानौ स्वर्गपुरी अवतार ॥
दर्शन करन जात्री आवै।
धर्म ध्यान अति प्रीति वढावै ॥
श्री जिनराज चरन सो नेह।
करत सकल सुख पावै तेह ॥
चन्दनपुर अकवर पुर जानि।
मन्दिर ढिग जैसिह पुर आनि ॥
नदी गम्भीर चौगिरदा मानि।
पडित दो नर है तिस थान ॥
सुखानन्द सोभाचन्द जान।
ता उपदेश लिखौ पुरान ॥
मार्ग सुद दोज सो जान ॥६॥
ता दिन लिख पूरन करौ सो हरवश सोसार।
पढै सुनै जो भाव सौ जो भवि उतरै पार ॥

३१८९. प्रति स० १५ । पत्रस० २३८ । आ० १२½×६ इन्च । ले०काल स० १८७८ भादवा वुदी ऽऽ। पूर्ण । वेष्टन स० १४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मन्दिर करौली ।

३१९०. प्रतिसं० १६ । पत्रस० ३३७ । आ० १२¾×६½ इन्च । भाष-हिन्दी पद्य । **विषय**—पुराण । र०काल स० १७८० वैशाख सुदी ३ । अपूर्ण । वे० स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सोगानी मन्दिर करौली ।

३१९१. प्रतिसं० १७ । पत्र स० २६७ । भाषा—हिन्दी । विषय—पुराण । र० काल स० १७८० । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर वसवा ।

३१९२. प्रतिसं० १८ । पत्रस० १८५ । आ० १२×८½ इन्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । र० काल स० १७८० वैशाख सुदी ३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५-६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वडा वीसपथी दौसा ।

३१९३. प्रतिस० १९ । पत्रस० १४५ । आ० १२×८ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय—पुराण । र० काल स० १७८० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६३ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

३१९४ प्रतिसं० २० । पत्रस० ३१५ । आ० ११×५ इन्च । भाषा—हिन्दी विषय—पुराण । र० काल स० १७८० । ले०काल स० १८२८ । पूर्ण । वेष्टनस० १७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

३१९५. प्रतिसं० २० (क) । पत्रस० २४० । आ० १०½×६½ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । र०काल स० १७८० । ले०कालस० १८९४ कार्तिक बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १४-९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—झालरापाटन मध्ये श्रीशातिनाथ चैत्यालये श्रीमूलसघे वलात्कारगणे श्रीकुन्दनाचार्यान्वये ।

३१९६. प्रतिसं० २१ । पत्रस० १९० । आ० १२×६ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय—पुराण । र० काल स० १७८० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४२/२५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर मादवा ।

३१९७. प्रतिसं० २२ । पत्रस० २२७ । आ० १०½×५½ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—पुराण । र० काल स० १७८० । ले०काल स० १८२८ । पूर्ण । वेष्टन स० १७/२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, मादवा (राज०) ।

३१९८ प्रतिसं० २३ । पत्रस० २६५ । भाषा—हिन्दी । विषय—पुराण । र० काल १७८० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन वढा पचायती मन्दिर, डीग ।

विशेष—४-५ पक्तियो का सम्मिश्रण है ।

३१९९. प्रतिसं० २४ । पत्रस० २८९ । आ० १२½ × ५½ इन्च ।भाषा—हिन्दी पद्य विषय—पुराण । र० काल स० १७८० । ले० काल स० १८१२ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी चेतनदास पुरानी डीग ।

३२००. प्रतिसं० २५ । पत्रस० २३० । आ० १२½×५इन्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—पुराण । र० काल स० १७८० वैशाख सुदी ३ । ले०काल स० १७९२ कार्तिक सुदी रविवार । पूर्ण । वेष्टन स० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर वयाना ।

विशेष—ग्र थ श्लोक स० ७५०० । वयाना मे प० लालचन्दजी ने प्रतिलिपि की थी। श्री खुशाल ने ग्र थ की प्रतिलिपि करवायी थी ।

३२०१. प्रतिसं० २६। पत्रस० १८१ । भाषा—हिन्दी विषय—पुराण । र० काल १७८० वैशाख सुदी २ ।ले०काल स० १८९९ कार्तिक सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—सुखलाल वुधसिह ने भरतपुर मे प्रतिलिपि करवाई थी ।

३२०२. प्रतिसं० २७ । पत्रस० ३०३ । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पुराण । र०काल स०१७८० । ले० काल स० १८१७ । पूर्ण । वेष्टन स० १४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—सागरमल ने भरतपुर मे लिखवाया था ।

३२०३. प्रति स० २८ । पत्रस० २६४ । भाषा-हिन्दी । विषय-पुराण । र०काल स०१७८० । वैशाख सुदी ३ । ले०काल स० १७९२ । पूर्ण । वेष्टनस० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

३२०४. प्रति स० २९ । पत्र स० २९२ । ले०काल स० १८१४ । पूर्ण । वेष्टन स० १८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विषय--काव्य एवं चरित

३२०५. अकलंक चरित्र— × । पत्रस० ४१ । आ० ८३/४ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल स० १९८२ वैशाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

३२०६. अमरुक शतक— × । पत्रस० १-९ । आ० १०१/४ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले०काल स० १८२० । वेष्टनस० ७२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—देवकुमार कृत सस्कृत टीका सहित है ।

३२०७. अंजना चरित्र—भुवनकीर्ति । पत्र स० २५ । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल १७०३ । ले०काल स० १९६० । पूर्ण । वेष्टनस० ७१९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३२०८. अंजना सुन्दरी चउपई— पुण्यसागर । पत्र स० ३२ । आ० ९१/४×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-काव्य । र०काल स० १६८९ सावण सुदी ५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३८५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

अन्तिम भाग—

ते गछ दीपै दीपतउ साच उर मझार ।
वीर जिणेसर रो जिहा तीरथ अछइ उदार ।।
तासुपाटि अनुक्रम आलस सागर सूर ।
विनयराज कर्मसागरु वाचक दोह सनूर ।।
तासु सीस पुण्यसागरु वाचक भणै एम ।
अ जनासुन्दर चउपई परणवचते प्रेम ।।
सवत सोल निवासीयै श्रावण मास रसाल ।
सुदि तिथि पचम निर्मली ऋद्धि वृद्धि मगल माल ।।
।। सर्वगाथा २४९ ।।

३२०९. प्रति स० २ । पत्र स० १७ । आ० १०×४१/२ इञ्च । ले० काल स० १७२१ कार्त्तिक सुदी । पूर्ण । वेष्टन स० ७३२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—मेडतापुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३२१०. अंबड चरित्र— × । पत्र स० ३-५० । आ० ९३/४×४१/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ९७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बू दी) ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—
अवड चतुर्थ आदेश समाप्त ।।

३२११. आदिनाथ चरित्र— × । पत्र स० ३५ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८६०। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—रचना गुटका के आकार मे है ।

३२१२. आदिनाथ के दस भव—× । पत्रस० १० । भाषा–हिन्दी । विषय–जीवन चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती भरतपुर ।

विशेष—पत्र ४ के वाद पद सग्रह हैं ।

३२१३. उत्तम चरित्र ··· । पत्रस० १३ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × पूर्ण । वेष्टनस० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—श्वेताम्वरनाथ के अनुसार 'धन्ना शालिभद्र' चरित्र दिया हुआ है ।

३२१४. ऋतु संहार—कालिदास ।पत्र ।स० २१ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय—काव्य । र० काल × । ले०काल स० १८८२ आपाढ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक) ।

३२१५. करकण्डु चरित्र—मुनि कनकामर । पत्र स० ३-७७ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—अपभ्र श । विपय—चरित काव्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

३२१६. करकण्डुचरित्र—भ०शुभचन्द्र । पत्रस० ५८ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।विषय—चरित्र । र०काल स० १६११ । ले०काल स० १६७० । पूर्ण । वेष्टन स० ४१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

३२१७. प्रति स० २ । पत्रस० ६५-१६६ । आ० ११×४ इञ्च । ले०काल स० १५७३ । अपूर्ण । वेष्टनस० १६३/५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—सवत् १५७३ वर्षे श्री आदिजिनचैत्यालये श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक देवेन्द्रकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० विद्यानन्दिदेवा तत्पट्टे भ० लक्ष्मीचन्ददेवा स्तेषा पुस्तक ।। श्री मल्लिभूपण पुस्तकमिद ।

३२१८. काव्य संग्रह— × । पत्र स० १५ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विपय-काव्य । र० काल × । ले० काल स० १६५८ सावन बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १८६-७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—मेघाभ्युदय, वृन्दावन, चन्द्रदूत एव केलिकाव्य आदि टीका सहित है ।

३२१६. प्रति सं० २ । पत्र स० ६ । ग्रा० ७×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय काव्य । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

विशेष—नवरत्न सम्बन्धी पद्य है ।

३२२०. प्रति स० ३ । पत्रस० २ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोट्यो का नैणवा ।

३२२१. किरातार्जुनीय—भारवि । पत्र स० १०८ । ग्रा० ८½ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—काव्य । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४७० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३२२२ प्रति स० २ । पत्र स० १०२ । ग्रा० १०½×५ इञ्च । ले०काल× । पूर्ण । वेष्टनस० १२८१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३२२३. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ४४ । ग्रा० ११×४½ इच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२३८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

३२२४. प्रति स० ४ । पत्रस० १३४ । ग्रा० ९ × ६ इञ्च। । ले०काल स० १७६८ वैशाख सुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन स० ११३६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—अजमेर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३२२५. प्रति स० ५ । पत्र स० ४४ । ग्रा० १०×४ इच । ले० काल× । वेष्टन स० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

३२२६. प्रति स० ६ । पत्र स० ११२ । ग्रा० ११ × ४½ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन स० २६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—सामान्य टीका दी हुई है ।

३२२७. प्रति स० ७ । पत्र स० १४४ । ग्रा० १२½×६ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन स० २६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—मेघकुमार साधु की टीका सहित है ।

३२२८. प्रतिसं० ८ । पत्र स० १० । ले० काल × । पूर्ण । (प्रथम सर्ग है ।) वेष्टन स० ४२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर हाण्डावालो का डीग ।

३२२९. प्रति स० ९ । पत्रस० ४३ । ग्रा० ११×५¾ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—धर्ममूर्ति शालिगराम के पठनार्थ द्विज हरिनाराण ने प्रतिलिपि की थी ।

३२३०. प्रतिसं० १० । पत्रस० ५० । ग्रा० ९×६¾ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण ।वेष्टन स० २१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—प्रारम्भ मे लिखा है—सवत् १८६९ मिति पौष बुदी ११ को लिखी गई शिवराम के पठनार्थं।

३२३१. प्रति सं० ११ । पत्र स० १५५ । आ० १२½×४½ इञ्च । ले० काल स० १७८५ आषाढ सुदी २ । पूर्ण । वे० स० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष—प्रति व्याख्या सहित है।

३२३२. प्रतिसं० १२ । । पत्रसं० ११४ । आ० ८½×४ इञ्च । ले० काल १७५० ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी बूदी ।—

विशेष—लिपि विकृत है—१८ सर्ग तक है ।

३२३३. प्रतिसं० १३ । पत्रस० ७९ । आ० ९×५ इञ्च । ले०काल स० १९०७ चैत सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष—११ सर्ग तक है । कही २ सस्कृत मे शब्दार्थ दिये हुये हैं।

३२३४. प्रतिसं० १४ । पत्र स० १२१ । आ० ११×४½ इच । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३२३५. प्रतिसं० १५ । पत्रस० ४६ । आ० १०×६ इच ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

विशेष—११ सर्ग तक है ।

३२३६. प्रतिसं० १६ । पत्र स० ३२ । आ० ११½×४½ इच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३२३७ प्रति सं० १७ । पत्रस० × । [ले० काल स० १७१२ भादवा सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० २४२-९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड्यो का डूगरपुर ।

विशेष—प० भट्टनाथ कृत सस्कृत टीका सहित है

प्रशस्ति—सवत् १७१२ वर्षे भाद्रपद मासे शुक्ल पक्षे तृतीया ... लिपि सूक्ष्म है ।

३२३८. कुमारपाल प्रबन्ध—हेमचन्द्राचार्य । पत्रस० ८-२४ । आ० १०¾×४¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी ।

३२३९. कुमार संभव—कालिदास । पत्र स० ९९ । आ० १०½×४ । इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—काव्य । र०काल × । लेखन काल सं० १७८९ । वेष्टन सं० २८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—टौंक नगर मे पं० रामचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

३२४०. प्रति स० २ । पत्रस० ३२ । आ० १०½ × ४ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन स० २८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

३२४१. प्रति सं० ३ । पत्रस० ४३ । आ० ८¾ × ३ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन स० २८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

३२४२. प्रति सं० ४। पत्र स० ७४ । आ० ११×४½ इञ्च । ले०काल स० १८४० पौष सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

३२४३. प्रति स० ५ । पत्र स० २४ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल स० १८२२ । पूर्ण । वेष्टन २२४ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मदिर राजमहल (टोंक) ।

विशेष—श्री चपापुरी नगरे वाह्य चैत्यालये प० वृन्दावनेन लिपि कृत ।

३२४४. प्रति स० ६ । पत्र स० ५३ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी बूदी ।

विशेष—सात सर्ग तक है ।

३२४५. प्रति स० ७ । पत्र स० ६० । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल स० १७१६ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—शुक्रवासरे श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भट्टारक जयकीर्त्ति के शिष्य पडित गुणदास ने लिखा था ।

३२४६. प्रति स० ८ । पत्र स० ३८ । आ० ११×४ इञ्च । ले० काल स० १६६६ । पूर्ण । वेष्टन स० १३५ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति—सवत् १६६६ वर्षे आषाढ बुदी द्वितीया शुक्रे श्री खरतरगच्छे भट्टारक श्री जिनचंद्र सूरिभि तत् शिष्य सोमकीर्त्ति गणि तत् शिष्य कनकवर्द्धन मुनि तत् शिष्य कमल तिलक पठनार्थं लेखि ।

३२४७. कुमारसभव सटीक—मल्लिनाथ सूरि । पत्र स० ११४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—काव्य । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी ।

विशेष—सातसर्ग तक है ।

३२४८. प्रति सं० २ । पत्रस० ७६ । आ० ११×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

३२४९. क्षत्रचूडामणि – वादीभसिंह । पत्र स० ४६ । आ० १३ × ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—काव्य । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३२५० खडप्रशस्ति काव्य— × । पत्र स० ४ । भाषा—सस्कृत । विषय—काव्य । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६०/२६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

३२५१ प्रतिसं० २ । पत्रस० ४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १६१/२७० । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर ।

३२५२ गजसुकुमाल चरित्र—जिनसूरि । पत्र स० २० । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र०काल स० १६६६ वैशाख सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ७३१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३२५३. गजसिंहकुमार चरित्र—विनयचन्द्रसूरि। पत्रस० २-३३ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल स० १७५४ । अपूर्ण । वेष्टनस० १०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टौंक ।

विशेष—प्रथम पत्र नही है ।

अन्तिम पुष्पिका एव प्रशस्ति निम्न प्रकार है —

इति श्री चित्रकीयगच्छे श्री विनयचन्द्र सूरि विरचिते गजसिंह कुमार चरित्रे केवली देशना पूर्वभाप-स्मृता वर्णन दीक्षा मोक्ष प्राप्तिवर्णनो नाम पचम विश्राम सम्पूर्ण ।

स० १७५४ वर्षे आश्विन सुदी ६ शनौ श्री वृहत्खरतरगच्छे पीपल पक्षे श्री खेमडाधिशाखाया वाचक धर्मवाचना धर्म श्री १०८ ज्ञानराजजी तत् शिष्य सीहराजजी तत् विनय पडित श्री अमरचन्द जी शिष्य रामचन्द्रेनालेखिभद्र भूयात् । श्रीमेदपाटदेशे विजय प्रवान महाराजाधिराज महाराणा श्री जैसिहजी कुवरश्री अमरसिंह जी विजय राज्ये वहुदिन श्री पोटलग्रामु चतुर्मास ।

३२५४. गुणवर्मा चरित्र—माणिक्यसुन्दर सूरि। पत्रस० ७४। भापा—सस्कृत । विपय—चरित्र । र०काल × । ले०काल स० १८७४ । पूर्ण । वेष्टनस० ६०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—मिरजापुर मे प्रति लिखी गई थी ।

३२५५. गौतम स्वामी चरित्र—धर्मचन्द्र। पत्रस० ५२ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल स० १७२६ ज्येष्ठ सुदी २ । ले०काल सं० १८१७ वैशाख सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० १०५० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—अजयगढ मे जिनचैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३२५६. प्रतिसं० २ । पत्रस० ५२ । आ० ११½×४½ इंच । ले०काल × पूर्ण । वेष्टनस० १५६४ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

३२५७. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ४४ । आ० ११ × ५¾ इञ्च । ले०काल स० १८४० माह बुदी १ । वेष्टनस० १५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—सवाई प्रतापसिंह के शासन काल मे श्री बख्तराम के पुत्र सेवाराम स्वय ने प्रतिलिपि की थी ।

३२५८. प्रति सं० ४ । पत्र स० ३४ । आ० १३¾×४¾ इञ्च । ले० काल स० १७२६ ज्येष्ठ सुदी २ । वेष्टन स० १५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति रचनाकाल के समय ही प्रतिलिपि की हुई थी । प्रतिलिपिकार प० दामोदर थे ।

३२५६. प्रति सं० ५ । पत्र स० ५० । आ० १२×३½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

३२५६. प्रति स० ६ । पत्रस० ५० । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—भगवन्ता तनसुखराय फतेहपुर वालों ने पुरोहित मोतीराम से प्रतिलिपि कराई थी ।

३२६०. **प्रतिसं० ६** । पत्रस० ५६ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल स० १८४२ । पूर्ण । वेष्टनस० ३६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

विशेष—सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३२६१. **घटकर्पर काव्य—घटकर्पर** । पत्रस० ४ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले० काल × । वेष्टनस० ३०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

३२६२ **प्रतिसं० २** । पत्रस० ४ । आ० १०½×५ इच । र० काल × । ले० काल × । वेष्टनस० ३१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

३२६३ **प्रति सं० ३** । पत्र स० २ । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन स० ३११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

३२६४. **प्रतिसं० ४** । पत्रस० ५ । आ० १२ × ४½ इञ्च । ले०काल स० १९०४ । पूर्ण । वेष्टनस० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

३२६५. **चन्दनाचरित्र—भ० शुभचन्द** । पत्रस० ३० । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२३७ । **प्राप्ति-स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

३२६६ **प्रतिस० २** । पत्रस० ३३ । आ० ११×५¾ इच । ले० काल स० १८३२ आषाढ वुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० ३७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, लश्कर जयपुर ।

विशेष—जयपुर के लश्कर के मन्दिर मे सुखराम माह ने प्रविलिपि की थी ।

३२६७. **चन्द्रदूत काव्य-विनयप्रभ** । पत्र स० १ । आ० १०¾ × ५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले० काल स० १८२५ आषाढ । वेष्टन स० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

३२६८. **चन्द्रप्रभचरित्र—यश कीर्ति** । पत्र स० १२१ । आ० ९½×४½ इञ्च । भाषा—अपभ्र श । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा ।

३२६९ **चन्द्रप्रभु चरित्र-वीरनंदि** । पत्रस० ९७ । आ० १०½ × ५¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—काव्य । र० काल स० १०८२ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४३० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—जीर्ण शीर्ण प्रति है ।

३२७० **प्रति स० २** । पत्र स० १२२ । आ० ११½×५ इच । ले० काल स० १६७६ भादवा सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३२७१. **प्रति स० ३** । पत्र स० १२ । आ० ८×६½ इञ्च । ले० काल × । वेष्टनस० ६४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन लश्कर मन्दिर जयपुर ।

केवल प्रथम द्वितीय सर्ग जिसमे न्याय प्रकरण है दिया है । प्रथम सर्ग अपूर्ण है ।

३२७२. प्रति स० ४ । पत्र स० १३८ । आ० १०½×६ इञ्च । ले० काल स० १८२६ वैशाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० २३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—दीर्घ नगर जवाहरगज मे चेतराम खण्डेलवाल सेठी ने प्रतिलिपि कराई थी ।

३२७३. प्रति स० ५ । पत्रस० १२३ । आ० १२×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३२७४. प्रति स० ६ । पत्र स० १२० । ले० कालस० × । पूर्ण । वेष्टनस० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है तथा अलग २ अध्याय है ।

३२७५. प्रति सं० ७ । पत्रस० ११६ । ले० काल स० १७२६ भादवा सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० ३६–४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

३२७६. प्रति स० ८ । पत्र स० ३–२०४ । आ० ११×४ इच । ले०काल स० १६०८ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३८७/२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

सवत् १६०८ वर्षे आषाढ मासे शुक्ल पक्षे ११ तिथौ रविवासरे सुरत्राण श्री महमूद राज्य प्रवर्तमाने श्री गधार मन्दिरे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये श्री मूलसघे सरस्वती गच्छे वलात्कारगणे कुदकुदाचार्यान्वये—

इसके आगे का पत्र नही है ।

३२७७. प्रति सं० ६ । पत्र स० ३–६५ । आ० ११×४ इञ्च । ले० काल स १७२२ आसोज सुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टनस० २६७/२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—बीच २ मे पत्र चिपके हुए है तथा कुछ पत्र भी नही है । प्रति जीर्ण है ।

प्रशस्ति—स० १७२६ मे कल्याणकीर्ति के शिष्य ब्रह्मचारी सघ जिष्णु ने सागपत्तन मे श्री पुरुजिन चैत्यालय मे स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३२७८. प्रति सं० १० । पत्र स० ८४ । आ० ६½×७ इञ्च । ले० काल स० १८६६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

विशेष—प्रशस्ति—मिती वैशाख बुदी ६ मगलवार दिने सावत्१८६६ का शाके १७६४ का साल का । लिखी नगरणा रायसिंह का टोडा मे श्री नेमिनाथ चैत्यालये लिखी आचार्य श्रीकीर्तिजी

३२७९. प्रति स० ११ । पत्रस० ८६ । आ० १२×८½ इच । ले० काल स० १६४६ आषाढ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इंदरगढ ।

३२८०. चन्द्रप्रभ चरित्र—सकलकीर्ति । पत्रस० २२–५२ । आ० १२½×५¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल स० × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

३२८१ चन्द्रप्रभ चरित्र—श्रीचन्द । पत्रस० १२६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १७६३ कार्तिक बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० २२१–८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपर ।

३२८२. चन्द्रप्रभ चरित्र—हीरालाल । पत्र स० २३२ । आ० १२½×७७ इञ्च । भाषा—हिन्दी प० । विषय-चरित्र । र० काल स० १६१३ । ले०काल स १६६३ । पूर्ण । वेष्टन स० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—प्यारेलाल ने देवीदयाल पण्डित से वडवत नगर मे प्रतिलिपि कराई।

३२८३ चन्द्रप्रभ काव्य भाषा टीका । पत्र स० १३३ । भाषा—हिन्दी । विषय—काव्य । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेप्टन स० ३५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३२८४. चन्द्रप्रभ काव्य टीका । पत्र स० ५० । भाषा—हिन्दी विषय—काव्य । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वे०स० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

३२८५. चारुदत्त चरित्र—दीक्षित देवदत्त । पत्रस० । १४२ । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १८४७ । पूर्ण । वे स० २७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—रामप्रसाद कायस्थ ने प्रतिलिपि की थी ।

३२८६. जम्बूस्वामी चरित (जम्बूसामि चरिउ)—महाकवि वीर । पत्र स० ६६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—अपभ्र श । विषय—काव्य । र०काल स० १०७६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३२८७. जम्बूस्वामीचरित्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र स० ६२ । आ० १०¾×४¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल स० १६६६ चैत्र वुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १२६२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३२८८. प्रति स० २ । पत्र स० ५३ । आ० १०¾ × ४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३३३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३२८९. प्रति स० ३ । पत्रस० ११२ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल स० १८०६ । पूर्ण । वेष्टनस० ३४५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—उग्रवास मध्ये श्री नथमल घटायित । खण्डेलवाल लुहाडिया गोत्रे ।

३२९०. प्रति स० ४ । पत्र स० ८६ । ले० काल स० १६८५ । पूर्ण । वेष्टन स० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर डीग ।

३२९१. प्रतिसं० ५ । पत्र सं० ७९ । आ० ११½×४ इञ्च । ले० काल स० १७०० माघ वुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२४/५२ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । वीच मे कुछ पत्र नही हैं । सवत् १७०० मे उदयपुर मे सभवनाथ मदिर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३२९२. प्रति सं० ६ । पत्र स० ९६ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल स० १६६७ । पूर्ण । वेष्टन स० १७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६६७ वर्षे भादवा सुदी १ दिने श्री वाग्वरदेशे लिखित प० कृष्णदासेन ।

३२९३. प्रति स० ७ । पत्रस० ६१ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण वेष्टन स० २५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

३२९४. जम्बूस्वामी चरित्र—ब्रह्म जिनदास । पत्र स० ६३ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय चरित । र०काल × । ले०काल स० १७०६ कार्तिक सुदी ५ । वेष्टन स० ३ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—विस्तृत प्रशस्ति दी हुई है ।

३२९५. प्रतिसं० २ । पत्रस० ८४ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४५० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३२९६. प्रति स० ३ । पत्रस० १२१ । आ० ६½ × ४ इञ्च । ले०काल स० १८२८ मगसिर सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० ४०१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३२९७. प्रतिसं० ४ । पत्र स० १०६ । आ० ११½×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० २०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

३२९८. प्रति स० ५ । पत्रस० ७५ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३२९९. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ६८ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १६७० । पूर्ण । वेष्टन स० २६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

३३००. प्रतिसं० ७ । पत्र स० ६२ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल स० १६५१ आसोज सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

प्रशस्ति—सवत् १६५१ वर्षे आश्विन सुदी ६ शुक्रवासरे **मगधाक्ष** देशे राजाधिराज श्री मानसिंह राज्य प्रवर्तमाने श्री मूलसघे सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे श्री कुदकुदाचार्यान्वये ।

३३०१. प्रति स० ८ । पत्र स० १५४ । आ० ८½ × ५ इञ्च । ले०काल स० १८७४ आषाढ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर नागदी बूदी ।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति के गुरू भ्राता कृष्णचन्द्र ने दौलतिराव महाराज के कटक मे लिखा गया ।

३३०२. प्रति स० ९ । पत्र स० ६६ । आ० १०×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, चौगान बूदी ।

३३०३. प्रतिसं० १० । पत्रस० ११६ । आ० १०×५ इञ्च । ले० काल स० १६३२ । पूर्ण । वेष्टनस० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—चम्पावती मे प्रतिलिपि की गयी थी । प्रशस्ति अपूर्ण है ।

३३०४. प्रति स० ११ । पत्रस० ८८ । आ० १०½ × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २०४–८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

३३०५. जम्बूस्वामीचरित्र-पाण्डे जिनदास। पत्र स० ३-४६ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (प०) । विषय—चरित्र । र०काल स० १६४२ भादवा बुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

विशेष—प्रति अशुद्ध है ।

३३०६. प्रति स० २ । पत्रस० ६७ । आ० ८ × ४ इञ्च । ले०काल स० १८८६ । अपूर्ण । वेष्टनस० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

विशेष—प्रतिजीर्ण है । कामा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३३०७. प्रति स० ३ । पत्रस० १३० । आ० ४½ × ४½ इञ्च । ले०काल स० १८२२ मार्गशीर्ष सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—प्रति गुटकाकार है । ग्यानीराम ने सवाई जैपुर मे प्रनिलिपि की थी । पत्र १२७ से चौबीसी वीनती विनोदीलाल लालचद कृत और है ।

३३०८. प्रतिस० ४ । पत्रस० १२५ । आ० ६ × ५¾ इञ्च । ले०काल स० १६२५ फागुन सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ८/५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

अन्तिम—

सवन सोलासै तौ भए, वियालीस ता उपरि गए ।
भादो बुदि पाचौ गुरुवार ता दिन कथा कीयो उचार ।।
अकबर पातसाह कउ राज, कीन्ही कथा धर्म कै काजु ।
कोर धर्म निवि पासा साह, टोडर सुत आगरे सनाह ।।
ताकै नाव कथा ईह धरी, मथुरा पासै नित ही करी ।।
रिखवदास अर मोहनदास, रूपमगदु अरु लक्ष्मीदाम ।
धर्म बुद्धि तुम्हारे हियो नित्य, राजकरहुँ परिवार सजुत ।।
पढै सुनै जे मन दे कोय, मन वछित फल पावै सोय ।।१।।

मिती फागुन सुदी १ शुक्रवार स० १६२५ को सदा सुख वैद ने पूर्ण नगर मे प्रतिलिपि की थी ।

३३०९. प्रति स० ५ । पत्र स० २६ । आ० ११½×८ इञ्च । ले०काल स० १८५४ । अपूर्ण । वे० स० ४६/२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

३३१०. प्रतिस ६ । पत्रस० २५२ । आ० १३ × ६½ इच । ले०काल स० १६२० । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—स० १८४१ की प्रति से प्रतिलिपि की गई थी ।

३३११. प्रतिसं० ७ । पत्रस० २८ । आ० ११¾×६½ इञ्च । ले०काल स० १६६५ मगसिर सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—प्रति सुन्दर है ।

३३१२. प्रति स० ८ । पत्र स० ३६ । आ० ११×५½ इच । ले० काल स० १७४५ वैशाख सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ११७ ।**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वोरसली कोटा ।

विशेष—ताजगज आगरा मे प्रतिलिपि हुई ।

३३१३. प्रतिसं० ६ । पत्रस० २० । आ० १०½×७ इञ्च । ले० काल स० १९५५ कार्त्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० ६/७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर

३३१४. प्रतिसं० १० । पत्र स० २१ । ले०काल स० १९२९ । ज्येष्ठ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ७/४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

३३२५ प्रति स० ११ । पत्रम० ६२ । आ० ११×५¾ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३३१६. प्रतिसं० १२ । पत्रस० २३ । आ० १२½×६½ इञ्च । ले०काल स० १९०७ । पूर्ण । वेष्टनस० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

३३१७ प्रति स० १३ । पत्रस० २४ । ले० काल स० १९३० । पूर्ण । वेष्टनस० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

३३१८. प्रति सं० १४ । पत्रस० १८ । आ० १२½×६ इच । ले० काल स० १८०० माघ बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६/४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर मादवा (राज०)

३३१९. जम्बूस्वामी चरित्र—नाथूराम लमेचू । पत्रस० २८ । आ० ११ × ७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी ग० । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल स० १९८६ असाढ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—हरदत्तराय ने स० १९९१ कार्त्तिक सुदी १५ अष्टाह्निका पर चढाया था ।

३३२०. जम्बू स्वामी चरित्र—× । पत्र स० ८ । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३३२१. जम्बू स्वामी चरित्र—× । पत्र स० २० । आ० २०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य प्रभाव । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल स० १८२६ । पूर्ण । वेष्टन स० २७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—सवत् १८२६ जेष्ठ बुदी ५ वार सोमे लखीवे साजपुर मध्ये लीखत आराजा सोना ।

३३२२. जम्बू स्वामी चरित्र—× । पत्र स० ९ । आ० ९×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी (ग०) । विषय-चरित्र । र०काल × । ले० काल स० १७४८ माह सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

३३२३. जम्बू स्वामी चरित्र— × । पत्र स० ७ । आ० ११ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ९५/८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

३३२४. जम्बू स्वामी चरित्र—× । पत्र स० १३४ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-प्राकृत-सस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ९५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—बीच २ मे पत्र नही हैं ।

३३२५. जयकुमार चरित्र—ब्र. कामराज। पत्र स० ६१ । ग्रा० ११ × ५ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—६१ से आगे के पत्र नही है ।

३३२६. प्रति स० २ । पत्र स० १३२ । ग्रा० ६½ × ४¾ इञ्च । ले० काल स० १८१८ पौष सुदी १२ । अपूर्ण । वेष्टन स० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—पत्र स० ८२ से ६५ व ११२ से १३१ तक नही हैं ।

भरतपुर नगर मे पाण्डे वखतराम से साह श्री चूढामणि ने प्रतिलिपि कराई थी ।

३३२७. जसहरचरिउ—पुष्पदत । पत्र स० ६१ । ग्रा० १०½×४ इ च । भाषा—अपभ्र श । विषय—काव्य र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

३३२८. प्रतिसं० २ । पत्रस० ६३ । ग्रा० १०½ × ४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना (बू दी) ।

३३२९ जसहर चरिउ— × । पत्रस० २६ । ग्रा० ११½ × ५ इञ्च । भाषा—अपभ्र श । विषय—काव्य । र०काल × । ले०काल स० १५७८ ग्रासौज सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० ६७० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टिप्पण सहित है ।

३३३०. जिनदत्त चरित्र—गुणभद्राचार्य । पत्र स० ५३ । ग्रा० १२½×४¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-काव्य । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन स० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

३३३१ प्रतिसं० २ । पत्र स० ४५ । ग्रा० ११×५½ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन स० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

३३३२ प्रति स० ३ । पत्रस०५४ । ग्रा० ६×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३३३३ प्रति स० ४ । पत्र स० ३६ । ग्रा० १२ × ५½ इ च । ले० काल स० १८६२ । पूर्ण । वे० स० २३४ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

विशेष—कोटा के रामपुरा मे श्री उम्मेदसिंह के राज्यकाल मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३३३४. प्रति सख्या ५ । पत्रस० ३८ । ग्रा० १२×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

विशेष—यह पुस्तक सदासुख जी ने जती रामचन्द को दी थी ।

३३३५ प्रतिस० ६ । पत्र स० ६१ । ग्रा० ६½×४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

३३३६ प्रति सं० ७ । पत्र स० ४३ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३३३७. प्रतिसं० ८ । पत्रस० ५० । आ० ११¾×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन न० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—भगवतीदास ने प्रतिलिपि की तथा नेमिदास ने सशोधित की थी ।

३३३८. प्रतिसं० ९ । पत्रस० ३६ । आ० १२½×५½ इञ्च । ले० काल स० १६१६ मगसिर बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति पूर्ण है । गिरिपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३३३९. जिनदत्त चरित्र—प० लाखू । पत्र स० १६४ । आ० ११×५¾ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—चरित्र । र०काल स० १२७५ । ले० काल × । अपूर्ण । जीर्ण शीर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बडा बीसपथी दौसा ।

३३४०. प्रतिसं० २ । पत्रस० १००–१५६ । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बीसपथी दौसा ।

३३४१. जिनदत्त चरित्र—रत्नभूषण सूरि । पत्रस० २८ । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ८८/७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सम्भवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—हासोट नगर मे ग्रंथ रचना हुई थी ।

३३४२. प्रति स० २ । पत्रस० २३ । ले० काल स० १८०० । पूर्ण । वेष्टन स० ६६/७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

३३४३. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ३६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७/७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

३३४४. जिनदत्त चरित्र— × । पत्र स० ६२ । आ० १२½×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल स० १९८६ ज्येष्ठ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

३३४५. जिनदत्त चरित्र-विश्वभूषण । पत्रस० ७१ । आ० ११½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

प्रारम्भ—

श्रीजिन वन्दौ भावसो तोरि मदन को बाण ।
मोह महातम पटल को प्रगट भयो मनु भानु ।।१।।

मध्यम भाग—

वनितासो वातैं कहैं आओ हमारो देस ।
सुमर ग्राम चम्पापुरी वन मे कियो प्रवेश ।।

चौपई

दम्पति वन मे पहुचे जाइ सूर्य अस्त रजनी भई आइ ।
कहौ प्रिया वनवारि मिटाइ, समनु करो विस्मै सुखपाई ।।३६।।

अन्तिम पाठ—

सवत सत्रहसै अरुतीस, नाम प्रमोदा व्रह्मावीस,
अगहन वदि पाचै रविवार, अश्लेष ऐन्द्र जोग सुधार ।
यह चरित्र पूर्ण जव भयौ, अति प्रमोद कविता चित ठयो,
यह जिनदत्त चरित्र रसाल, तामैं भासौ कथा विशाल ।
भव्यकजन पढियो चितुलाइ
पठत सुनत सम्यकत्व ढिठाई ।
धर्म विरुद्ध छन्द करि छीन,
ताहि बनायौ पम्यौ परवीन ।
भव्य हेत मैं रच्यौ चरित्र, सुनौ भव्य चित दै वृप मित्र ।
याकै सुनत कुमति सव जाइ, सम्यक्दिष्टि सुव होइ भाइ ।।६४।।
याके सुनत पुण्य की वृद्धि, याके सुनत होई गृह रिद्धि ।
यातै सुनौ भव्य चितलाइ, याके सुनत पाप मिट जाइ ।
याहि सुनत सुख सम्पति होई, यातै सुनत रोग नही कोइ ।
याकै सुनत दु ख मिटि जाई, याकै सुनत सुख होई भाइ ।।६६।।
नर नारि मन देकै सुनौ, ताकौ जसु तिलोक मे गनौ ।
यह चरित्र सुनियो मन लाइ, विश्वभूषण मुनि कहत वनाइ ।।

छप्पै

गगा सागर मेर खोट आसापति मगा ।
ब्रह्मा विष्ण महेस तोय निधि गौरी अगा ।
जोलो जिनवर धर्म तारा भुव मडल सोभा ।
जो लौं सिद्धसमूह मुक्ति रामा सू लोभा ।
तो लौ तिष्ठो ग्र थ यह श्री जिनदत्त चरित्र ।
विश्वभूषण भाषा करी सुनियो भविजन मित्त ।।६८।।
।। ६ सघिया दैं ।।

३३४६ **प्रति स० २** । पत्र स० ७८ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल स० १८२३ चैत बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

विशेष—सोमचन्द भोजीराम अग्रवाल जैन ने करौली मे प्रतिलिपि करवाई थी ।

३३४७. **प्रतिसं० ३** । पत्र स० ५२ । आ० १२½×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर ।

३३४८. **प्रतिसं० ४** । पत्र स १०४ । आ० ६½×४½ इञ्च । ले० काल स० १८७४ अगहन बुदी १० । पूर्ण । वे० स०६५/८ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर सौगाणी करौली ।

विशेष—व्रजलाल ने गुमानीराम से करौली मे प्रतिलिपि करवाई थी।

३३४६ प्रतिस० ५। पत्रस० ७१। ले०काल स० १८०० चैत सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन स० ३६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

३३५०. प्रति सं० ६। पत्र स० ८७। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

३३५१ प्रतिसं० ७। पत्रस० ५१। आ० १३ × ८½ इन्च। ले०काल स० १९५६ आसोज बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० ६३/८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, अलवर।

३३५२. जिनदत्त चरित्र भाषा—कमलनयन। पत्र स० ६६। आ० १०½ × ८ इन्च। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र०काल स० १९७०। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २८३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

विशेष— ० ७ ९ १

गगन ऋपीश्वर रध्रफुनि चन्दतथा परमान।
सब मिल कीजे एकद्वे सवतसर पहिचान॥

३३५३. जीवन्धर चरित्र— ×। पत्र स० १५०। आ० ११×५ इन्च। भाषा—सस्कृत। विषय—चरित्र। र०काल ×। ले० काल स० १९०४। पूर्ण। वेष्टन स० १२५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी।

३३५४ जीवन्धर चरित्र—शुभचन्द्र। पत्र स० ११६। आ० ११×४¾ इच। भाषा—सस्कृत। विषय—चरित्र। र०काल स० १६०७। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४४। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

३३५५. प्रतिसं० २। पत्रस० ८३। आ० ११½ × ५ इन्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ९९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

३३५६ प्रतिस० ३। पत्रस० ७६। आ० १२ × ६½ इन्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २०९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

३३५७ प्रति स० ४। पत्रस० ९१। आ० ११×५ इन्च। ले०काल स० १६१५। पूर्ण। वेष्टन स० ६९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक)

प्रशस्ति—सवत् १६१५ वर्षे फाल्गुन बुदी ८ बुधे श्री मूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री विजयकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र देवास्तस्य शिष्य आचार्य श्री विमलकीर्त्तिस्तस्य शिष्य ब्रह्म गोपाल पठनार्थं जीवधर चरित्र अनेक सीमत राज सुमेवित चरणारविंद चतुरगसैन्य सकल लक्ष्मी लक्षित राउल श्रामकरण राजे श्रीनजिा प्रनादराजि विराजिते सकलर्द्धिसकुल श्रावकजन सभृत शुद्ध सम्यकत्वादि द्वादशव्रत प्रतिपालक पट् जीवनकाय दयोपलक्षित चातुर्य्यं गुणालकृतविग्रह सदासद् गुर्वाज्ञा प्रतिपालन पुरेशो विराजिते गिरासु गिरपुरे जिन पूजनाया गच्छद् गच्छदिम बहुभि स्त्रीपुरपै नित्योत्सवे विराजिते निर्दलित कलि लीला विलास श्री आदिनाथ चैत्यालये हुवडान्वये स्ववशमडण मणिसमान सघवी घमसी तस्य भा० धम्मा तयो मुत प्रथम जिनयज्ञयीत्रायजनपतिसर्गं चतुर्विवदानचतुरसाधर्मिक जनदान महोत्सव वशात सतति विहित-पुण्य-परम्परा पवित्रित निजकुलाकाश सूर्यसम सघवी जीवा तस्य भ्राया जीवादे तयोपुत्र

जगमाल तस्य भार्तृ स० जयमाल भार्या जयतादे तस्य भगनी पूर्व पुण्यार्पित पूर्णं ललित लक्षण तल्ललना सभर्तृ गणोभूया पक्ष तिलकोपमा सीलेन सीता समामाश्राविका जयवती द्वितीया भगनी माका निमित्य जीवघर चरित्र शास्त्र लिखाप्यदत्त कर्मक्षयार्थं ।

३३५८. जीवन्धर चरित्र—रइधू । पत्र स० १८५ । आ० ११½×४½ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १६५८ भावा बुदी ७ पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—अकबर के शासनकाल मे रोहितगढ दुर्ग मे वालचन्द सिगल ने मडलाचार्य सहसकीर्ति के लिए पाडे केसर से प्रतिलिपि करवायी थी । प्रशस्ति काफी वडी है ।

३३५९. जीवन्धर चरित्र—दौलतराम कासलीवाल । पत्रस० ६० । आ० १०½×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—चरित्र । र० काल स० १८०५ आषाढ सुदी २ । ले० काल स० १८०५ । पूर्ण । वेष्टन स० २२० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—स्वय ग्रथकार के हाथ की लिखि हुई मूलप्रति है । इस ग्रंथ की रचना उदयपुर धानमढी अग्रवाल जैन मन्दिर मे स १८०५ मे हुई थी । यह ग्रथ अब तक प्राप्त रचनाओं के अतिरिक्त है तथा एक सुन्दर प्रबन्ध काव्य है ।

३३६०. जीवन्धर चरित्र प्रबन्ध—भट्टारक यशःकीर्त्ति । पत्र स० ३१ । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १८६३ भादवा बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १०७/६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—दक्षिणदेश मे मुरमग्राम मे चन्द्रप्रभु चैत्यालय मे हुमडज्ञातीय लघुशाखाइ मे वाई ज्येष्ठी ताराचन्द बेटी श्री गुजरदेशे मुमेई (मुंबई) ग्रामे ज्ञानावरणकर्म क्षयार्थं शास्त्रदाना करनाव ।

३३६१. जीवन्धर चरित्र—नथमल विलाला । पत्रस० १०५ । आ० १४½×८½ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । र० काल सं० १८३५ कार्तिक सुदी ९ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विषय—गोरखराम की धर्मपत्नी जडिया की माता ने वीर स० २४४२ मे वडे मदिर फतेहपुर मे चढ़ाया था ।

३३६२. प्रतिसं० २ । पत्र स० ४४ । आ० ९×६ इञ्च । ले० काल × पूर्ण । वेष्टन स० ८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगन बूदी ।

३३६३. प्रति स० ३ । पत्रस० ९३ । आ० १२×६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

३३६४. प्रति स० ४ । पत्रस० १६१ । आ० ११½×५½ इच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पचायती करौली ।

विशेष—करौली मे बुधलाल ने लिखवाया था ।

३३६५. प्रतिसं० ५ । पत्र स० ११४ । आ० १२×६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस०६५-११४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर वडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—तेरापथी चिमनलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३३६६. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ८७ । आ० ११ × ८½ इन्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १३५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—दौसा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३३६७. प्रतिसं० ७ । पत्र स० १०५ । ले० काल स० १६३२ । पूर्ण । वेष्टन स० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

३३६८. प्रति स० ८ । पत्र स० २१३ । आ० १३⅞ × ६ इन्च । ले०काल स० १८६८ भदवा सुदी ८ । पूर्ण । वेप्टनस० १०/६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सौगानी करौली ।

३३६९. प्रतिसं० ६ । पत्र स० १३७ । आ० १३ × ६ इच । ले०काल स० १८३६ मादवा बुदी ३ । अपूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्तिस्थान** –दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

विशेष—पत्र २ से ४६ तक नही है । नथमल विलाला ने अपने हाथो से हीरापुर मे लिखा ।

३३७०. प्रति सं० १० । पत्रस० १८४ । आ० ११⅞ × ५ ½इन्च । ले०काल स० १८३६ भादवा बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० १७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष — सवत् अष्टादस सतक गुनतालीस विचार ।
भादो वदी तृतीया दिवस सहसरस्म वर वार ।।
चरित्र सुलिख पूरन कियो हीरापुरी मझार ।
नथमल ने निजकर थकी, धर्म हेतु निरधार ।।

३३७१. प्रति सं० ११ । पत्रस० १३० । ले० काल स० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

विशेष—गोपालदासजी दीघ (डीग) वालो ने आगरे मे प्रतिलिपि कराई थी ।

३३७२. प्रति स० १२ । पत्रस० ११-१४६ । आ० १२½ × ७½ इन्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

३३७३ प्रति स० १३ । पत्र स० १२७ । आ० १३ × ५½ इन्च । ले० काल स० १८६७ भादवा सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

विशेष—आलमचन्द के पुत्र खिमानद तथा विजयराम खडेलवाल बनावरी गोत्रीय ने बयाना मे प्रतिलिपि की । हीरापुर (हिण्डौन) के जती बसन्त ने बयाना मे प्रतिलिपि की की थी ।

३३७४ प्रति स० १४ । पत्रस० १५२ । आ० १२ × ६ ½ इन्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १२० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष - प्रशस्ति वाला अतिम पत्र नही हैं ।

३३७५ प्रतिस०१५ । पत्रस० १३५ । आ० १२⅞ × ७¾ इन्च । ले० काल १६५६ चैत्र बुदी ५ पूर्ण । वेष्टनस० ४८० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन, मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—बद्रीनारायण ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

३३७६. प्रतिस० १६ । पत्रस० ८५ । ले० काल स० १८६६ । पूर्ण । वेष्टनस० ७८१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

३३७७ प्रति स० १७। पत्रस० १४६। ग्रा० ८½×६½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ७। **प्राप्ति स्थान**— दि०जैन ग्रग्रवाल पचायती मदिर ग्रलवर।

३३७८. प्रति स० १८। पत्रस० १११। ग्रा० १३×८ इञ्च। ले०काल १६६२ भादवा बुदी १३। पूर्ण। वेष्टनस० ६४, २०४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर ग्रलवर।

३३७९ प्रति स० १९। पत्रस० ११७। ले०कालस० १६६८ मगसिर बुदी ६। पूर्ण। वेष्टनस० ६५/२०४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर ग्रलवर।

३३८०. प्रति स० २०। पत्र स० ६७-१०७। ग्रा० १२×८ इञ्च। ले०काल ×। ग्रपूर्ण। वेष्टन स० ८४।। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटयो का नैरावा।

३३८१ प्रति स० २१। पत्रस० १२०। ग्रा० १३½×६½ इञ्च। ले०काल स० १६०५। पूर्ण। वेष्टनस० ५७। **प्राप्ति स्थान**—तेरहपथी दि० जैन मन्दिर नैरावा।

३३८२ रणायकुमारचरिउ—पुष्पदन्त। पत्रस० ८२। ग्रा० १०½×४½ इञ्च। भाषा—ग्रपभ्र श। विषय—चरित्र। र०काल ×। ले०काल स० १६२५। ग्रपूर्ण। वेष्टनस० २५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा।

३३८३ प्रतिस० २। पत्र स० ६६। ग्रा० १०×६ इञ्च। ले०काल स० १५६४ फाल्गुण बुदी १४। पूर्ण। वेष्टन स० ३२। **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष— जिनचन्द्राम्नाये इक्ष्वाकवशे गोलारान्वये साघु वीरसेन पचमी व्रतो द्यापन लिखायितम्।

३३८४ प्रतिस० ३। पत्रस० ३-४८। ग्रा० १०½ × ४½ इञ्च। ले०काल ×। ग्रपूर्ण। वेष्टन स० १५। **प्राप्ति स्थान**— भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर।

विशेष—ग्रादि ग्रन्त भाग नही है।

३३८५ णेमिचरिउ—महाकवि दामोदर। पत्रस० ६२। ग्रा० ११×५ इञ्च। भाषा—ग्रपभ्र श। विषय-चरित्र। र०काल ×। ले०काल ×। ग्रपूर्ण। वेष्टन स० २८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा।

विशेष—६२ से ग्रागे पत्र नही है।

३३८६ त्रिषष्ठिशलाका पुरुषचरित्र—हेमचन्द्राचार्य। पत्रस० १६-११७। भाषा—सस्कृत। विषय—चरित्र। र०काल ×। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। वेष्टन स० ६६। **प्राप्ति स्थान**—तेरहपथी दि० जैन मन्दिर बसवा।

३३८७ दापालिका चरित्र— ×। पत्र स० ४। ग्रा० ६×४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय—चरित्र। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५२४। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर।

विशेष—मुनिशुभकीर्ति लिखित।

३३८८ दुर्गमबोध सटीक— ×। पत्रस० ४०। ग्रा० १४×६½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—काव्य। र०काल ×। ले०काल ×। ग्रपूर्ण। वेष्टनस० १३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ बूदी।

३३८९ दुर्घट काव्य × । पत्रस० ६ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा—सम्कृत । विषय—काव्य । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ३१४ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर, लश्कर, जयपुर ।

३३९०. धन्यकुमार चरित्र–गुणभद्राचार्य । पत्र स० ४० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३३९१. प्रतिसं० २ । पत्र स० ६३ । आ० ११×४ इच । ले०काल स० १५९५ ज्येष्ठ सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० २१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—देवनाम नगर मे पार्श्वनाथ चैत्यालय मे श्री सूर्य सेन के राज्य मे व श्री रावत वैरसल्ल के राज्य मे वाकुलीवाल गोत्र वाले सा० फौरात तथा उनके वशजो ने प्रतिलिपि करायी थी ।

३३९२ प्रतिस० ३ । पत्र स० ५२ । आ० ११ × ४ इञ्च । ले०काल स० १५९५ । पूर्ण । वेष्टन स० ७९/३२ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १५९५ वर्षे ज्येष्ठसुदी ११ वृहस्पतिवासरे श्री मूलसघे नद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनदि देवारततपट्टे भ० श्री शुभचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खडेलवालान्वये कावावालगोत्रे सा० चोखा तद्भार्या चोखसिरि सा० नाथू द्वि. नल्ह तृतीय गागा । नाथू भार्या नयणश्री द्वि नेमा तृ० भुभू । नाल्हा भार्या नारगदे । गगाभार्या गौरादे एतेषा मध्ये सा० नाथू इद शास्त्र लिखाप्य मडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रार्य दत्त यह पुस्तक इन्दरगढ मदिर की है ।

३३९३ प्रतिस० ४ । पत्र स० ४४ । आ० १०½×४¾ इञ्च । ले० काल स० १६७६ भादवा सुदी २ वेष्टन स० १२६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—जहागीर के राज्य मे चम्पावती नगर मे प्रतिलिपि हुई । प्रशस्ति विस्तृत है ।

३३९४ प्रतिसं० ५ । पत्रस० ५० । आ० ९×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०कालस० १५८२ ज्येष्ठ सुदी १० । वेष्टनस० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—दिगम्बर जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष— हरुनपुर नगर के नेमिजिन चैत्यालय मे श्रुतवीर ने प्रतिलिपि की ।

३३९५ प्रतिसं० ६ । पत्र स० ४१ । आ० ११×५ इच । ले०काल स० १६०५ माह वुदी ९ । वेष्टन स० १६० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है । तक्षक गढ मे सोलकी राजा रामचद के राज्य मे आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई ।

३३९६. धन्यकुमार चरित्र—सकलकीर्ति । पत्र स ५६ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल स० १६७३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६५२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३३९७. प्रति स० २ । पत्रस० ५३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४०३/४७ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

३३९८. **प्रतिसं० ३** । पत्रस० २५ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४०४/४८ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

३३९९ **प्रतिस० ४** । पत्रस० ४३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४०५/५० । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

३४००. **प्रति स० ५** । पत्रस० २-३५ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ४०६/४९ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर ।

३४०१. **प्रति स० ६** । पत्र स० ७० । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन स० १५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

३४०२. **प्रतिसं० ७** । पत्रस० ५३ । आ० १०×६½ इञ्च । ले० काल स० १८६७ । पूर्ण । वे० स० ३८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

विशेष—बू दी मे प० नन्दलाल ने प्रतिलिपि की ।

३४०३. **प्रतिसं० ८** । पत्र स० ४१ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल स० १९६७ पूर्ण । वेष्टन स० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

विशेष—चपावती मे ऋषि श्री जेता जी ने प्रतिलिपि करवायी ।

३४०४. **प्रतिस० ९** । पत्रस० २० । आ० १३×५½ इञ्च । ले० काल स० १९३६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ बू दी ।

विशेष—वृन्दावती मे नेमिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की गई ।

३४०५. **प्रतिसं० १०** । पत्र स० ४२ । आ० १२×६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

३४०६. **प्रति स० ११** । पत्र स० ६-४० । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल स० १७४८ माघ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ ।

३४०७. **प्रतिसं० १२** । पत्रस० ३७ । आ०१२×५ इञ्च । ले०काल स० १७९८ फागुण सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनस० ९९ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मदिर तेरहपथी मालपुरा (टोक)

विशेष—प० केशरीसिह ने सवाई जयपुर मे लिखा ।

अन्तिम प्रशस्ति—पातिसाह श्री महमद साह जी महाराजाधिराज श्री सवाई जयसिंह जी का राज मे लिखो सागा साहू के देहुरो जी मध्ये प० वालचद जी के शास्त्रसू उतासो छै जी ।

३४०८. **प्रतिसं० १३** । पत्रस० ४७ । आ० १०½ × ५ इच । ले०काल स० १८५८ जेष्ठ वदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनमन्दिर वोरसली कोटा ।

विशेष—प० शम्भूनाथ ने कोटा मे लिखाया ।

३४०९ **प्रतिस० १४** । पत्रस० ६० । ले० काल स० १७५२ वैसाख वुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० २७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—कनवाडा नगर मे प्रतिलिपि हुई ।

३४१० **प्रतिस० १५** । पत्र स० ३० । आ० ११×५ इच । ले० काल स० १८१२ श्रावण सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ५७-२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वडा वीसपथी दौसा ।

विशेष—देवपुरी मे प्रतिलिपि हुई ।

३४११. प्रतिसं० १६ । पत्र स० ४२ । आ० ११½ × ४½ इञ्च । ले०काल स० १६३५ पूर्ण । वेष्टन स० १२४-५७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

प्रशस्ति – सवत् १६३५ वर्षे आसोज बुदी ४ शनौ श्री मूलसघे सरस्वती गच्छे वलात्कारगणे **भट्टारक** श्री कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति तत्पट्टे भ० श्री जसकीर्त्ति तत् शिष्य मडलाचार्य श्री गुणचद्र तत् शिष्य आचार्य श्री रत्नचद्र तत् शिष्य ब्रह्म हरिदासाय पठनार्थं ।

३४१२. प्रति स० १६ । पत्र स० २५ । आ० १२½ × ६ इञ्च । ले०काल स० १८७१ । पूर्ण । वे० स० ४३-२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—लिखी भरतपुर माह मिती जेठ वदी १ वार वीसपतवार सवत् १८७१ ।

३४१३ प्रति सं० १८ । पत्र स० ४५ । आ० ११ × ४¾ इञ्च । ले०काल स० १७२८ पूर्ण । वेष्टन स० ४८-३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

प्रशस्ति—स० १७२८ वर्षे श्रावण वदी ४ । शनौ रामगढ मध्ये लिखीत ।

भ० विजय कीर्त्ति की यह पुस्तक है ऐसा लिखा है ।

३४१४. धन्यकुमार चरित्र—ब्र० नेमिदत्त । पत्र स० २४ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय—चरित्र । र०काल × । ले०काल स० १७०२ चैत्र सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

३४१५. प्रति स० २ । पत्रस० २३ । आ० १० × ६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

३४१६. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २० । आ० १२ × ५ इञ्च । ले०काल स० १५९६ वैशाख सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१८ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

३४१७. प्रतिसं० ४ । पत्र स० २४ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १७२९ आसोज बुदी १४ । वेप्टन स० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष – वालकिशन के पुत्र जोसी नाथू ने कोटा मे महावीर चैत्यालय मे प० विहारी के लिए प्रतिलिपि की ।

३४१८. प्रति सं० ५ । पत्र स० २९ । आ० ९½ × ५ इञ्च । ले०काल स० १७८२ माघ बुदी ५ । वेष्टनस० १५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—झलायनगर के पार्श्वनाथ चैत्यालय मे ब्र० टेकचन्द्र के शिष्य पाण्डे दया ने प्रतिलिपि की ।

३४१९. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ४३ । आ० ८ × ४½ इञ्च । ले० काल स० १७२४ मगसिर बुदी ५ । वेष्टन स० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—हीडौली नगर के पार्श्वनाथ चैत्यालय मे श्री आचार्य कनककीर्त्ति के शिष्य प० रायमल्ल ने स्वपठनार्थं प्रतिलिपि की ।

३४२०. प्रति स० ७ । पत्रस० ४१ । आ० ९½ × ४½ इंच । ले० काल स० १७७१ । पूर्ण । वेष्टन स० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ बूदी ।

विशेष—अवावती मे ग्रथ लिखा गया था । भ० नरेन्द्रकीर्त्ति की आम्नाय मे हमीरदे ने ग्रथ लिखवाया ।

३४२१. **प्रति स० ८** । पत्रस० २७ । आ० १०×४½ इन्च । ले० काल स० १७०३ पौष बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोंक) जीर्ण ।

विशेष—ब्रह्म मतिसागर ने स्वय अपने हाथो से लिखा ।

३४२२ **प्रति स० ९** । पत्र स० १८ । आ० १०½×५ इन्च । ले० काल स० १६६८ पूर्ण । वेष्टन स० १५८ ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

प्रशस्ति—सवत् १६६८ वर्षे कार्त्तिक सुदि २ रवौ प्रतापपुरे श्री नेमिनाथ चैत्यालये भट्टारक श्री वादिभूषण तत्सीष्य आचार्य श्री जयकीर्त्ति तत्सीष्य ब्र० सवराज पठनार्थ उतेश्वर गोत्रे सा० छाछा भार्या श्रावका नयोपुत्र सा० सतोष तस्य भार्या जयती दि० पुत्र श्री वत तस्य भार्या करमइती एतै स्व ज्ञानावर्णी कर्म्म क्षयार्थं ।

३४२३. **धन्यकुमार चरित्र—भ० मल्लिभूषण** । पत्रस० २० । आ० ११×५ इन्च । भाषा सस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३४२४ **धन्यकुमार चरित्र**— × । पत्रस० ५ । आ० १२×५½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १७८/५३ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मदिर इन्द्रगढ़ (कोटा) ।

३४२५. **धन्यकुमार चरित्र—खुशालचन्द काला** । पत्रस० ४० । आ० ११×५½ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल स० १६५७ । पूर्ण । वेष्टन स० १४५१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३४२६ **प्रतिस० २** । पत्र स० ४२ । आ० ११½×८½ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३४२७ **प्रति स० ३** । पत्रस० ६१ । आ० १०½×५½ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २० । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपथी दि० जैन मदिर नैणवा ।

विशेष—अतिम पद्य निम्न प्रकार है—

चद कुशाल कहै हित लाय,
जे ज्ञानी समझै निज पाय ।
सुधातम लो लावत भ्रात,
असुभ कर्म सव ही मिट जात ।

प्रारभ के तथा वीच २ के कई पत्र नही है ।

३४२८ **प्रति स० ४** । पत्र स० ५२ । आ० ९½×५ इन्च । ले० काल स० १९७६ । पूर्ण । वेष्टन स० २० । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर नैणवा ।

३४२९. **प्रति स० ५** । पत्रस० ३५ । आ० १२½×६½ इन्च । ले०काल स० १८९९ । पूर्ण । वेष्टन स० २१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर कोटयो का (नैणवा)

३४३० **प्रतिस० ६** । पत्रस० ८७ । आ० ११×५ इन्च । ले०काल स० १९०३ । पूर्ण । वेष्टन स० ९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर, पचायती दूणी (टोक) ।

३४३१. प्रति स० ७ । पत्रस० ३१ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपथी मालपुरा (टोक)

३४३२. प्रति सं० ८ पत्र स० १९ । आ० १०½×५ इंच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल टोक ।

३४३३. प्रति स० ९ । पत्र स० ६६ । आ० १०½×५½ इच । ले० काल स० १८९२ फागुन सुदी ७ पूर्ण । वेप्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल टोक ।

विशेष—अमीचन्द के लघु भ्राता आवचन्दजी ने राजमहल के चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे ब्राह्मण सुख-लाल वाम टोडा से प्रतिलिपि करवाई ।

३४३४ प्रति स० १० । पत्र स० २९ । आ० १४×७½ इच । ले० काल स० १९०७ भादवा बुदी ६ । पूर्ण ।वेष्टनस० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बूदी ।

३४३५ प्रति स० ११ । पत्र स० ९३ । आ० १०×७ इच । ले०काल स० १९५५ । वेष्टनस० २२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी बूदी ।

३४३६. प्रति स० १२ । पत्र स० ९९ । आ० ९½×४½ इच । ले० काल स० १८७४ सावन सुदी १५ । पूर्ण । वेप्टन स० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—नेमीचन्द्र ने गुमानीराम से करौली मे प्रतिलिपि कराई ।

३४३७. प्रति स० १३ । पत्र स० ४१ । आ० ९½×६ इच । ले० काल स० १७०० वैशाख सुदी १ । पूर्ण । वेप्टन स० ७३ । **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

विशेष—अवावती नगरी मे प्रतिलिपि हुई ।

३४३८ प्रति स० १४ । पत्र स० ८५ । आ० ९×४½ इच । ले० काल स० १८१९ माघ शीर्ष सुदी १३ । पूर्ण । वेप्टन स० १५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

३४३९. प्रतिस० १५ । पत्र स० ५५ । आ० १३ × ६½ इञ्च । ले० काल स० १८८७ अषाढ सुदी ८ । । पूर्ण । वेष्टन स० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

३४४० पतिस० १६ । पत्र स० ३४ । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर डीग ।

विशेष— करौली मे प्रतिलिपि हुई । मन्दिर कामा दरवाजे का ग्रन्थ है ।

३४४१. प्रति स०१७ । पत्र स० २४ । ले० काल × । अपूर्ण । वेप्टन स० १९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर डीग ।

३४४२ प्रति स० १८ । पत्र स० ४० । आ० ११×८ इच । ले० काल स० १९२१ फागुन बुदी ३ । पूर्ण । वे० स० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

३४४३. प्रतिसं० १९ । पत्र स० ३५ । आ० १२½×६½ इञ्च । ले० काल० × । पूर्ण । वेष्टन स० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

३४४४ प्रति स० २० । पत्र स० ५४ । आ० १० ×६ इञ्च । ले० काल स० १९१२ । पूर्ण । वेष्टन स० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मदिर उदयपुर ।

३४४५. **प्रतिस० २१** । पत्र स० ३४ । आ० १४×२½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

३४४६. **प्रतिस० २२** । पत्र स० ६३ । आ० १०×६ इञ्च । ले० काल स० १९०७ वैशाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर ।

३४४७. **प्रतिस० २३** । पत्र स० ६६ । आ० ९½×४½ इञ्च । ले० काल स० १८४१ । पूर्ण । वेष्टन स० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर अलवर ।

३४४८. **प्रतिस० २४** । पत्र सख्या ५४ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५४/१०५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मदिर अलवर ।

३४४९ **प्रतिस० २५** । पत्रस० ३८ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५५/१०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

३४५० **प्रति सख्या २६** । पत्र स० ३६ । ले० काल × पूर्ण । वेष्ट स ० ३६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

३४५१. **प्रति स० २७** । पत्र स० ५२ । लेखक काल× । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन तेरहपथी मदिर वसवा ।

३४५२ **धन्यकुमार चरित्र वचनिका**—× । पत्र स० ३४ । आ० १०×६¾ इच । भाषा-हिन्दी । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५५६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

३४५३ **धन्यकुमार चरित्र भाषा—जोधराज** । पत्र स० ३७ । आ० ९×६ इच । भाषा—हिन्दी । विषय-चरित्र । र०काल स० १८१० । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११५ **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर भादवा (राज०)

३४५४. **ध०कुमार चरित्र भाषा** × । पत्र सख्या २९ । आ० ११×६ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल स० १८९४ माह सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

३४५५ **धन्यकुमार चरित्र भाषा**—× । पत्र सख्या १०८ आ० ७×७ इच । भाषा-हिन्दी । विषय—चरित्र । र०काल × । पूर्ण । ले० काल स० १८९८ । वेष्टनस० ३३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मदिर कामा ।

३४५६. **धर्मदत्त चरित्र—दयासागर सूरि** । पत्र स० ९-९७ । आ० ९×५½ इच । भाषा—हिन्दी । विषय-चरित्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

३४५७. **धर्मदत्त चरित्र—माणिक्यसुन्दर सूरि** । पत्र स० १० । आ० ११×४ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल स० १६६६ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १४६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर राजमहल टोक ।

विशेष—माणिक्यसुन्दर सूरि आचार्य मेरुतु ग सूरि के शिष्य थे । लिखित गुणसागर सूरि शिष्य ऋषि नाथू पठनार्थ जसराणापुर मध्ये ।

३४५८. धर्मशर्माभ्युदय—महाकवि हरिचन्द । पत्र स ख्या ६६ । ग्रा० ११×४ इच । भाषा-सस्कृत । विपय—काव्य । र० काल × । ले० काल स० १५१४ । पूर्ण । वेष्टन स० २८६/१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रतिप्राचीन है । पत्र कैंची से काट दिये गये है (ठीक) करने को ।

प्रशस्ति—सवत् १५१४ वर्षे ग्रापाढ सुदी ६ गुरौ दिने धोवाविले धूले श्री चन्द्रप्रभ चल्यालये श्री मूलसघे वलात्कार गणे सरस्वती गच्छे श्री कु दकु दाचार्यान्वये भट्टारकीय श्री पद्मनदिदेवा तत् शिष्य श्री मदन कीर्तिदेवा तत् शिष्य श्री नयणानदिदेवा तन्निमित्त इद पुस्तक हु वडज्ञातीय श्रावकं लिखाप्यदत्त । समस्त ग्रभीष्ट भवतु । भ० श्री ज्ञानभूषण तत् शिष्य मुनि श्री विशालकीर्ति पठनार्थ । प० पाहूना सर्मपित । भ० श्रीशुभचन्द्रदेवा तत् शिष्य ब्र० श्रीपाल पठनार्थ प्रदत्त ।

३४५९ प्रति स० २ । पत्र सख्या ११२ । ग्रा० १०×४ इ च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सख्या ३६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

३४६० प्रति स० ३ । पत्र स० ६४ । ग्रा० $10\frac{1}{2}$ × $4\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । ग्रपूर्ण । जीर्ण । वेष्टन स० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—४६ पत्र तक सस्कृत टीका (सक्षिप्त) दी हुई ।

३४६१. धर्मशर्माभ्युदय टीका—यश कीर्ति । पत्रस० १६२ । ग्रा० $13\frac{1}{2}$× ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११७० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन भट्टाकीय मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष– धर्मनाथ तीर्थंकर का जीवन चरित्र वर्णन है ।

३४६२ प्रति स० २ । पत्रस० ७४ । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ११७१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

३४६३. प्रति स० ३ । पत्रस० १११ । ले०काल स०१६३७ । सावण सुदी ७ ग्रपूर्ण । वेष्टनस० ११७२ । **प्राप्तिस्थान** भट्टारकीय दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

विशेष—ग्रजमेर के पार्श्वजिनालय मे प्रतिलिपि हुई । २१ सर्ग तक की टीका है ।

३४६४. प्रति स० ४ । पत्रस० १८८ । ग्रा० $12\frac{1}{4}$×$6\frac{1}{4}$ इञ्च । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० २२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३४६५. प्रति स० ५ । पत्रस० १०३ । ग्रा० १०×$4\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० १५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ग्रादिनाथ मन्दिर बू दी ।

विशेष—टीका का नाम सदेहध्वात दीपिका है । १०३ से ग्रागे पत्र नही है ।

३४६६. नलोदय काव्य—कालिदास । पत्र स० ३३ । ग्रा० १०×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय—काव्य । र० काल × । ले०काल × ग्रपूर्ण । वेष्टन स० २३–२२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिचन्द टोडारायसिह (टोक) ।

३४६७. नलोदय टीका—× । पत्र स० १-२३ । ग्रा० $11\frac{1}{2}$×$5\frac{1}{2}$ भाषा-सस्कृत । विपय-काव्य । र०काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ७६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—टीका महत्वपूर्ण हैं।

३४६८ नलोदय टीका—रामऋषि पत्र स० ७। भाषा—सस्कृत विषय—काव्य। र० काल स० १६६४। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हुण्डावालो का डीग।

विशेष—अतिम चक्रे राम ऋषि विद्वान् वुद्ध कालात्मक जा सुधी।
नलोदयीमिया टीका शुद्धा यमक बोधिनी।

रचना स०। ४६६ वेदागरस चन्द्राढ्यो वर्षे मासे तु माधवे। शुक्ल पक्षेतु सप्तम्या गुरौ पुष्ये तथोद्र नि।

३४६९ नलोदय काव्य टीका रविदेव। पत्र स० ३७। आ० १०×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय—काव्य। र० काल। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी)।

विशेष—रामऋषि कृत टीका की टीका है।

३४७० प्रति स० २। पत्र स० ३६। ले० काल स० १७५१। पूर्ण। वे० स १९१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी।

विशेष—प्रवावती मे नेमिनाथ चैत्यालय मे भ० जगद्कीर्ति की आज्ञानुसार दोदराज ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

३४७१ प्रति स० ३। पत्रस० ३१। आ० ११½×६ इञ्च। वेष्टन स० २९४। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—इति वृद्ध व्यासातमज मिश्र रामर्षिदाधीच विरचिताया रविदेव विरचित महाकाव्य नलोदय टीकाया यमकबोधिन्या नलराज ब्रह्म नाम चतुर्थं आश्वास समाप्त।

३४७२ नागकुमार चरित्र—मल्लिषेणसूरि। पत्र स० २३। आ० ११×४ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय – चरित्र। र० काल ×। ले० काल स० १६३४। पूर्ण। वेष्टन स० ३८८/१२७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—सवत् १६३४ वर्षे फागुन बुदी ११ भोमे श्री शातिनाथ चैत्यालये श्री म काष्ठासघे नदीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री रामसेनान्वये भ० श्री भुवनकीर्ति आचार्य श्री जयसेन तत् शिष्य मु० कल्याणकीर्ति ब्रह्म श्री वस्ता लिखित।

सवत् १६८४ वर्षे मार्ग शीर्ष बुदी ५ खौ श्रीशीलचन्द्र तत् शिष्याणी बाई पोहोना तथा ब्रह्म श्री मेघराज तत् शिष्य ब्र० सवजी पठनार्थ इद नागकुमार चरित्र प्रदत।

३४७३. प्रति स० २। पत्र स० ३३। आ० १० × ४½ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—सुमतिकीर्ति के गुरु भ्राता श्री सकलभूषण के शिष्य श्री नरेन्द्रकीर्ति के पठनार्थ लिखा गया था।

३४७४. प्रति स० ३। पत्र स० २४ आ० ११½×५½ इञ्च। र० काल ×। ले०काल स० १६५४। पूर्ण। वेष्टन स० १५८। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

३४७५ प्रतिस० ४। पत्रस० २३। आ० ११½×४½ इञ्च। ले० काल स० १६६०। पूर्ण। वेष्टनस० १६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर।

३४७६ नागकुमार चरित्र—विबुधरत्नाकर। पत्र स० ३९। आ० ११½ × ६ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय - चरित्र। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १३९/१६। **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर, इन्दरगढ (कोटा))

३४७७. प्रति स० २ । पत्रस० ४९ । आ० ९½ × ५ इञ्च। ले०काल स० १८८३। पूर्ण। वेष्टन स० २४४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा।

विशेष—गोठडा मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी।

३४७८ प्रति स० ३ पत्र स० ५२। आ० ११ × ४½ इच। ले० काल सं० १९६१ फागुण सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन स० ३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर, नैणवा।

विशेष—पं० रत्नाकर ललितकीर्ति के शिष्य थे।

३४७९. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ४७। आ० १३½ × ५ इञ्च। ले० काल स० १८७५ चैत सुदी ६। पूर्ण। वेस्टन स० ५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर नागदी बूदी।

विशेष—ब्राह्मण चिरजी ने उणियारा मे प्रतिलिपि की थी। प० निहालचन्द ने इसे जैन मन्दिर मे रावराजा भीमसिंहजी के शासन मे चढाया था।

३४८०. नागकुमार चरित्र—नथमल विलाला। पत्र स० ८७। आ० १२ × ५¾ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—चरित्र। र०कारा स० १८३७ माह सुदी ५। ले० काल स० १८७८ सावन सुदी ८। पूर्ण। वेस्टन स० १५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

विशेष—नेमिचन्द्र श्रीमाल ने करौली मे गुमानीराम से प्रतिलिपि करवाई थी।

३४८१. प्रति स० २ । पत्र सख्या १०९। आ० ११ × ५ इञ्च। ले० काल स० १९६१ फालगुन सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन स० १९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी।

३४८२ प्रति स० ३ । पत्र स० ४८। आ० ११½ × ५। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ५६/६९। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा।

विशेष—अन्तिम पत्र नही है।

३४८३ प्रति स० ४ । पत्रस० १०७। आ० ११ × ५½। ले० काल स० १८७९ सावण सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० ६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा।

विशेष—मोतीलाल की बहूने प्रतिलिपि कराई।

३४८४. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ७५। आ० ११½ × ८ इञ्च ले०काल स० १८७७ द्वि ज्येष्ठ बुदी ३। पूर्ण। वेष्टन स० ६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा।

विशेष—जसलाल तेरहपथी ने पन्नालाल साह बसवा वाले से देवगिरि (दौसा) मे प्रतिलिपि करवाई।

३४८५ प्रतिसं० ६ । पत्र स० ८०। आ० ११½ × ५½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६२/८१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बडा बीस पथी दौसा।

३४८६ प्रतिसं० ७ । पत्र स० ४९-९६। आ० १०½ × ५ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० १८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडाबीस पथी दौसा।

विशेष—चिम्मनराम तेरहपथी ने दौसा मे प्रतिलिपि की थी।

३४८७. **प्रति सं० ८** । पत्र स० ६४ । ग्रा० १२×५½ इञ्च । ले० काल स० १८३६ प्र० जेष्ठ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—१५३७ छद है ।

प्रथम जेठ पुन सुदी सहस्ररस्म वर वार ।
ग्रथ सुलिख पूरन कियो हीरापुरी मझार ।
नथमलनैं निजकर थकी ग्रथ लिख्यौ घर प्रीत ।
भूलचूक जो यामे लखौ तो सुध कीजो मीत ।।
प्रति ग्रथकार के हाथ की लिखी हुई है ।

३४८८. **प्रति सं० ९** । पत्र स० ६१ । ग्रा० १२×६ इञ्च । ले० काल स० १८७७ ग्रापाढ फुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर वयाना ।

विशेष—करौली मे गुमानीराम से ग्रथ लिखाकर वयाना के मन्दिर मे विराजमान किया ।

३४८९. **प्रति सं० १०** । पत्रस० ७७ । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ३६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३४९० **प्रतिसं० ११** । पत्र स० ५३ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

३४९१. **नेमि चरित्र—हेमचन्द्र** । पत्र स० २९ । ग्रा० १०½×४½ इञ्च । भापा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष—२९ से आगे पत्र नही है । प्रति प्राचीन है । त्रिपष्टि शलाका चरित्र मे से है ।

३४९२ **नेमिचन्द्रिका भाषा**— × । पत्र स० २० । ९½×६½ । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । र० काल स० १८८० ज्येष्ठ सुदी ११ । ले० काल स० १८८६ माघ वुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर सौगाणी करौली ।

३४९३ **नेमिजिन चरित्र—ब्र नेमिदत्त** । पत्र स० ६२ । ग्रा० १२×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स ४२७ । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३४९४. **प्रतिसं० २** । पत्रस० १७५ । ग्रा० १०½×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० १२२६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३४९५ **नेमिदूत काव्य—महाकवि विक्रम** । पत्र सख्या १३ । ग्रा० १०½×४½ इञ्च । भापा-सस्कृत । विषय काव्य । र०काल × । लेखन काल स० १६८९ कार्तिक वुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन स० २५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बून्दी ।

विशेष—इति श्री कवि विक्रम भट्ट विरचित मेघदूता तत्पाद समस्यासयुक्त श्रीमन्नेमिचरिताभिधाना काव्य समाप्त । सं० १६८९ वर्षे कार्त्तिकाशित नवम्या ९ आचार्य श्रीमद्रत्नकीर्त्ति तच्छिष्येण लि० विजयहर्षेण ।

पुस्तक प० रतनलाल नेमिचन्द की है ।

३४९६. प्रति स० २। पत्रस० २४। आ० १२½×७ इञ्च। लेखकाल स० १९८६ आसोज सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन स० १६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष - प्रति हिन्दी अनुवाद सहित है।

३४९७. प्रति स० ३। पत्रस० १५। आ० ११×५¾। लेखकाल स० १६८५ कार्तिक बुदी १। वेष्टन स० १५३। पूर्ण। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन म० लश्कर, जयपुर।

३४९८. प्रति स० ४। पत्र स० १४। आ० १०½ × ४½ इञ्च। लेखकाल ×। वेष्टन स० १५४। अपूर्ण। **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर।

३४९९. नेमिनाथ चरित्र— ×। पत्रस० १०६। आ० १०×५ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—चरित्र। र०काल ×। ले० काल। अपूर्ण। वेष्टनस० १५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी)

विशेष—प्रति हिन्दी गद्य टीका सहित है

३५०० नेमिनाथ चरित्र—×। पत्र स० ६९। भाषा-सस्कृत। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० ६१६। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

३५०१. नेमिनाथ चरित्र—×। पत्र स० १०३। भाषा-सस्कृत। विषय चरित्र। र० काल×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ५८७। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैनपचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है तथा नेमिनाथ के अतिरिक्त कृष्ण, वसुदेव व जरासिन्ध का भी वर्णन है।

३५०२ नेमिनिर्वाण—वाग्भट्ट। पत्रस० ९३। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—काव्य। र० काल ×। लेखकाल स० १८३० वैशाख बुदी १०। पूर्ण। वेष्टन स० १०७/५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष — रामपुरा मे गुमानीरामजी के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई।

३५०३. प्रति स०२। पत्रस०६६। आ० १२½×५ इञ्च। ले० काल स० १७२६ कार्तिक बुदी १। पूर्ण। वेष्टन स० ३०१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

३५०४. प्रति स० ३। पत्रस० ६-६१। आ० १० × ६ इञ्च। ले० काल स० १७९८। अपूर्ण। वेष्टन स० २३७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—सवत् १७९८ वर्षे कार्तिक बुदी ८ भूम पुत्रे श्री उदयपुर नगरे महाराणा श्री जगतसिहजी राजवी लिखतद खेतसी स्वपनार्थ।

३५०५. प्रतिसं० ४। पत्र स० ८६। आ० ९×५½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५७/४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सौगाणी करौली।

३५०६. प्रतिसं० ५। पत्रस० १०८। आ० ९½×४ इच। ले० काल स० १७१५। पूर्ण। वेष्टन स० २७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी।

विशेष - स० १७१५ मेरुपाट उदयपुर स्थाने श्री आदिनाथ चैत्यालये साहराज राणा राजसिंह विजयराज्ये श्री काष्ठासघे नन्दीतटगच्छे विजयगणे भट्टारक रामसेन सोमकीर्ति, यशःकीर्ति उदयसेन त्रिभुवन कीर्ति रत्नभूषण, जयकीर्ति, कमलकीर्ति भुवनकीर्ति, नरेन्द्रकीर्ति।

प० गगादास ने लिखा ।

३५०७ **प्रति सं० ६** । पत्र स० ७० । आ० १२ × ४ इञ्च । ले० काल स० १६७६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—सवत् १६७६ ब्रह्म श्री बालचन्द्रेन लिखित ।

३५०८ **प्रतिस० ७** । पत्र स० ५३ । आ० १०३/४×५३/४ इञ्च । ले० काल स० १८४२ ज्येष्ठ बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

३५०९ **नैषध चरित्र टीका**— × । पत्र स० २ ६ । आ० १३ × ५१/२ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—काव्य । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, लश्कर, जयपुर ।

३५१० **नैषधीय प्रकाश—नरसिंह पाडे** । पत्र स० ८ । आ० १०×४१/२ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—काव्य । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति जीर्ण एव अपूर्ण है ।

३५११ **पद्मचरित्र**— × । पत्र स० ४ । आ० १३×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४२/७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

३५१२ **पद्मचरित्र—विनयसमुद्रवाचक गणि** । पत्रस० ६५ । आ० १११/२×४१/२ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३५१३ **पद्मनदिमहाकाव्य टीका—प्रह्लाद** । पत्र स० १३९ । भाषा—सस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । लेखन काल स १७९८ चैत सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बसवा ।

विशेष—बसुवा ग्राम मे प्रतिलिपि हुई ।

इति श्री पद्मनद्याचार्यं विरचिते महाकाव्यटीका सूत्र सपूर्ण । तस्य धनपालस्य शिष्यस्तेन शिष्येण नाम्नाप्रह्लादेन श्री पद्मनदिन सुरे आचार्य कृते काव्यस्य टिप्पणक प्रकट सानद ।

३५१४ **परमहस सबोध चरित्र—नवरग** । पत्रस० १० । आ० १०×४१/२ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३५१५ **परमहस सबोध चरित्र**— × । पत्र स० २६ । आ० १०१/२×४१/२ इच । भाषा—प्राकृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

३५१६ **पवनंजय चरित्र—भुवनकीर्त्ति** । पत्र स० २४ । आ० ११×४१/२ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

३५१७. पाण्डवचरित्र—ब्र० जिनदास । पत्र स० १-३६ । आ० १० X ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पुराण । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० स० २५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बू दी) ।

विशेष—ग्र थ का अपर नाम नेमिपुराण भी है ।

३५१८. पाण्डव चरित्र—देवप्रभसूरि । पत्र स० ३६६ । आ० १२ X ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल X । ले० काल स० १४५४ । पूर्ण । वे० स० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १४५४ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ७ सप्तमी शुक्रवारे श्री पाण्डव चरित वयरमणेन लिखित मद्राहृडीय गच्छे श्री सूरिप्रभसूरीणा योग्य ।

३५१९. पारिजात हरण—पडिताचार्य नारायण । पत्र स० १२ । आ० ६½ X ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—काव्य । र० काल X । ले०काल स० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दबलाना (बू दी) ।

विशेष—अतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीमत् विकुलतिलकश्रीमन्नारायण पडिताचार्य विरचिते पारिजात हरणे महाकाव्ये तृतीय स्वास । श्री कृष्णार्पणमस्तु ।

इन्द्रगढ मे देवकरण ने प्रतिलिपि की थी ।

३५२०. पार्श्वचरित्र—तेजपाल । पत्रस० १०१ । आ० १०X५ इञ्च । भाषा—अपभ्र श । विषय—चरित्र । र०काल स० १५१५ कार्त्तिक बुदी ५ । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टनस० ३५४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैनमन्दिर अजमेर ।

विशेष—अतिम पत्र नही है ।

आदिभाग—

गणवयतवसग्यरउ वारिज सायरू, गिरुवमवासय सुहणिलउ ।
पणविवि तिथकर कइयण सुहयरु रिसहु रिसीसर कुल तिलउ ॥
देविदेहिए ओवरो सिवयरो कल्याण मालापरो ।
झाण जेण जिउ थिर अणहिओ कम्मट्ठु दुट्ठा ।
सवोसीय पास जिणिदु सघ वरदो वोच्छ चरित्त तहो ॥१॥

तीसरी सधि की समाप्ति निम्न प्रकार है —

इय सिरि पासचरित्त रइय कइ तेजपाल साणद अगुमणिय सुहद्द घूघलि सिवराम पुत्तेण जउणहि माणमहणे पासकुमारे विवड्ढिगेहे णिवकीला वण्णणए तइओ सधी परिसम्मतो ।

३५२१. पार्श्वपुराण—आ० चन्द्रकीर्ति । पत्रस० १२५ । आ० ८ X ६ इञ्च । भापा—सस्कृत । विपय—चरित्र । र०काल X । ले०काल स० १८२६ वैशाख बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० १४५३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३५२२ पार्श्वनाथचरित्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र स० ११६ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३३ । **प्राप्ति स्थान—** भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

३५२३. प्रति स० २ । पत्रस० २३ । आ० १२½ × ५¾ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०२४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३५२४ प्रति स० ३ । पत्रस० १६२ । आ० ६ × ५ इञ्च । ले० काल स० १८४७ ज्येष्ठ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० १५४४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३५२५ प्रति स० ४ । पत्रस० ६८ । आ० १२×६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—२३ सर्ग हैं ।

३५२६ प्रति स० ५ । पत्रस० १५१ । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल स० १६०६ मगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० ५७ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—टोडरमल वाकलीवाल के वशजो ने ग्र थ लिखवाया था कीमत ४।।) रु०

३५२७. प्रति स० ६ । पत्रस० ११२ । आ० १३×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १७६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३५२८ प्रति स० ७ । पत्र स० ७ । आ० १०×६½ इञ्च । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० ८५/६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

३५२६ प्रति स० ८ । पत्रस० ३० से ७० । आ० १० × ६¾ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

३५३०. प्रति स० ६ । पत्र स० १६ । आ० १०½ × ६½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण वेष्टन स० ६४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रति तृतीय सर्ग तक पूर्ण है ।

३५३१ पार्श्वनाथ चरित्र—× । पत्र स० २७ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत (गद्य) । विषय—चरित्र । र०काल स० १६२० ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी ।

३५३२ पार्श्वनाथ चरित्र— × । पत्र स० ११२ । आ० ११½×४¾ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल स० १८२७ । पूर्ण । वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**— खडेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

३५३३. पार्श्वपुराण—भूधरदास । पत्र संख्या १०५ । आ० ६ × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । र०काल स० १७८६ आषाढ सुदी ५ । ले०काल स० १८६२ चैत्र सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १४७१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष— साखूणमध्ये लिपिकृत प० विरधीचन्द पठनार्थं ।

३५३४. प्रतिसं० २ । पत्र स० ८६ । आ० १० × ५ इञ्च । ले० काल स० १८८४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३५२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३५३५. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १२६ । ग्रा० ६×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५३३ । **प्राप्ति स्थान**— भट्टारकीय दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

३५३६. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ५७ । ले० काल स० १८८१ वैशाख सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १५४२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

३५३७. प्रति सं० ५ । पत्रस० ८३ । ग्रा० १२½×५½ इञ्च । ले० काल स० १८४६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन ग्रग्रवाल मदिर उदयपुर ।

३५३८ प्रति स० ६ । पत्र स० १२६ । ग्रा० ६ × ४½ इञ्च । ले० काल स० १८४७ पौष सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० २६०, १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—नौतनपुर ग्राम मे ग्रादिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३५३९. प्रति स० ७ । पत्र स० ६३ । ग्रा० ११×५½ इञ्च । ले०काल स० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन स० १६१-७६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

३५४०. प्रति सं० ८ । पत्र स० १०० । ग्रा० १२½ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १६३२ चैत सुदी १० । पूर्ण । वे० स० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

३५४१. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ७७ । ग्रा० १२½×५½ इञ्च । ले० काल स० १८५५ वैशाख सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—रामवक्स ब्राह्मण ने रूपराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३५४२. प्रतिसं० १० । पत्र सख्या ६४ । ग्रा० ११×५½ इञ्च । ले०काल स० १८३६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४३/२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, भादवा (राज०)।

३५४३. प्रति स० ११ । पत्र स० ६५ । ग्रा० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १८२५ । पूर्ण । वेष्टन स० २५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

विशेष—चालसोट मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३५४४. प्रतिसं० १२ । पत्रस० ६१ । ले० काल स० १८१६ । पूर्ण । जयपुर मे प्रतिलिपि हुई । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर भादवा (राज०) ।

३५४५ प्रतिसं० १३ । पत्रस० १०६ । ले०काल स० १८४६ माघ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपथी दि० जैन मन्दिर वसवा ।

३५४६. प्रतिसं० १४ । पत्रस० ७४ । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टनस० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपथी दि० जैन मन्दिर वसवा ।

३५४७. प्रति स० १५ । पत्र स० ११५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३ । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपथी दि० जैन मदिर वसवा ।

३५४८. प्रति सं० १६ । पत्र स० ७५ । ग्रा० १२×५ इञ्च । ले० काल स० १७६४ फागुन बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १६/२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वडा वीस पथी दौसा ।

विशेष—यती प्रयागदास ने जयपुर मे प्रतिलिपि की ।

३५४९. प्रति स० १७ । पत्रस० ६६ । ग्रा० १२½×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३३–१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

३५५०. प्रति स० १८ । पत्र स० ६५ । ग्रा० १२½ × ६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—चिमनलाल तेरहपथी ने प्रतिलिपि की ।

३५५१. प्रति स० १९ । पत्रस० ६७ । ग्रा० ११½ ×५½ इञ्च । ले०काल स० १९३२ । पूर्ण । वेष्टन स० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—नन्दलाल सोनी ने प्रतिलिपि की थी

३५५२. प्रति सं० २० । पत्रस० ७६ । ग्रा० १३×½ ७ इञ्च । ले०काल स० १९०० सावण सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० ३५५ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—लक्ष्मूलाल ग्रजमेरा ने ग्रलवर मे प्रतिलिपि की थी ।

३५५३. प्रतिस० २१ । पत्रस० ८६ । ले०काल स० १८३७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

३५५४. प्रति स० २२ । पत्रस० ८५ । ग्रा० ९½×५ ½ इञ्च । ले० काल स० १७९२ । पूर्ण ।वेष्टनस० २५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३५५५ प्रतिस० २३ । पत्र स० २०६ । ग्रा० ८¾×४ ¾ इञ्च । ले०काल स १८६६ ग्रासोज सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सोगानी करौली ।

३५५६. प्रतिस० २४ । पत्रस० । ग्रा० १०½×५ इञ्च । ले० काल स० १८१४ मगसिर बुदी ९ । पूर्ण । वेप्टन स० १५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनपचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—हेडराज के पुत्र मगनीराम ने पाडे लालचन्द से करौली मे लिखवाया ।

३५५७ प्रति स० २५ । पत्र स० ९४ । ग्रा० १०½ × ५½ इञ्च । ले० काल० स० १८४३ । पूर्ण । वेष्टन स० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी चेतनदास पुरनी डीग ।

३५५८ प्रतिस० २६ । पत्रस० ७३ । ग्रा० १२½×६ इञ्च । ले०काल स० १८७० ।पूर्ण । वेष्टन स० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष– जीवारामजी कासलीवाल ने सूरतरामजी व उनके पुत्र लिछमनसिंह कुम्हेर वालो के पठनार्थ वैर मे प्रतिलिपि करवाई थी ।

३५५९. प्रतिस० २७ । पत्रस० ८७ । ले०कालस० १८५५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनपचायती मन्दिर हुन्डावलो का डीग ।

विशेष—प्रागदास मोहावाले ने इन्दौर मे कासीरावजी के राज्य मे प्रतिलिपि की थी ।

३५६० प्रतिस० २८। पत्र स० ६४ । ले० काल स० १८७४ ग्राषाढ वदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हुण्डावालो का डीग ।

३५६१. प्रति स० २९ । पत्र स० १०२ । ग्रा० १२×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिरदबलाना बूंदी ।

३५७७ **प्रति सं० ४५** । पत्र स ८१ । आ० ११½×५ इञ्च । ले० काल स० १८३४ । पूर्ण । वेष्टन स० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दीवानजी कामा ।

३५७८ **प्रति स० ४६** । पत्र स० ८२ । आ० १२½×६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती दीवानजी कामा ।

३५७९ **प्रति सं० ४७** । पत्र स० २०४ । आ० १०×७ इञ्च । ले० काल स० १९५३ मगसिर वुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष—ग्र ठालाल शर्मा ने प्रतिलिपि की ।

३५८० **प्रति सं० ४८** । पत्र स० ५३ । आ० १२½×६½ इञ्च । ले० काल स० १८६६ पौष सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर नैणवा ।

विशेष—लिखाइत साहाजी श्री भैरूरामजी गगवाल तत्पुत्र चिरजीव कवरजी श्री जैलालजी पठनार्थं । यह ग्र थ १८७३ मे तेरापथी के मन्दिर मे चढाया था ।

३५८१ **प्रति सं० ४९** । पत्र स० ७२ । आ० ११×७ इञ्च । ले० काल स० १९५६ । पूर्ण । वेष्टन स० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

३५८२ **प्रतिसं० ५०** । पत्रस० ५६ । आ० १०¾×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

३५८३ **प्रति स० ५१** । पत्र स० ७७ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १८४० मगसिर सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोट्यो का नैणवा ।

विशेष—नैणवा मे ब्राह्मण सीताराम ने प्रतिलिपि की थी ।

३५८४. **प्रति सं० ५२** । पत्र स० ८९ । आ० १०×६ इञ्च । ले० काल स० १९१४ श्रावण सुदी १ । पूण । वेष्टन स० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

विशेष—साह पन्नालाल अजमेरा ने प्रतिलिपि की थी ।

३५८५. **प्रतिसं० ५३** । पत्र स० ८९ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६, १८ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक)

३५८६ **प्रतिसं० ५४** । पत्र स० १५४ । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल स० १८८८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७/१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)

विशेष—सर्वसुख गोधा मालपुरा वाले ने दीवान अमरचन्दजी के मन्दिर मे प्रतिलिपि की थी ।

३५८७. **प्रति सं० ५५** । पत्र स० ४४ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर खडेलवालो का, आवा (उणियारा)

विशेष—जन्म कल्याणक तक है ।

३५८८ **प्रति स० ५६** । पत्र स० ८५ । आ० ६½×६¾ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष – पद्य स० ३३३ हैं ।

सवत् १८७९ चैत्रमासस्य शुक्लपक्ष ९ राजमहल मध्य कटारया मोजीराम चन्द्रप्रभ चैत्यालये स्थापित ।

३५८६. प्रति स० ५७ । पत्रस० ७० । ले०काल स० १६५७ सावण बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष—लिखित प० लखमीचन्द कटरा अहीरो का फिरोजावाद जिला आगरा ।

३५९०. प्रति स० ५८ । पत्रस० १३३ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । ले०काल स० १८४६ सावण सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेज—तक्षकपुर मे व्यास सहजराम ने प्रतिलिपि की थी ।

३५९१ प्रतिसं० ५९ । पत्रस० ९३ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

३५९२. प्रतिसं० ६० । पत्र स० १२५ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११०/६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

३५९३. प्रति सं० ६१ । पत्र स० ६१ । आ० ११$\frac{3}{4}$×७$\frac{3}{4}$ इच । ले० काल स० १९०४ फागुन बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ५०–८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

विशेष—टोडारायसिंह के श्री सावला जी के मन्दिर मे जवाहरलाल के वेटा विसनलाल ने व्रतो-द्यापन के उपलक्ष मे भादवा सुदी १४ स० १९४८ को चढाया था ।

३५९४ प्रतिसं० ६२ । पत्र स० ११६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल । अपूर्ण । वेष्टन स०१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक) ।

३५९५. प्रति स० ६३ । पत्रस० ६८ । आ० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १८२८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३५ । **प्राप्तिस्थान**– दि० जैन मदिर तेरहपथी मालपुरा (टोक) ।

विशेष—धनराज गोधा रूपचन्द सुत के पठनार्थ लिखा गया था ।

३५९६ प्रति स० ६४ । पत्र स० ३–१२० । आ० ९×६ इञ्च । ले० काल स० १८८५ । जीर्ण शीर्ण । अपूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिरतेरहपथी मालपुरा (टोक)

३५९७. प्रतिसं० ६५ । पत्र स० ५२ । आ० १२ × ८ इञ्च । ले०काल स० १९५६ । पूर्ण । वेष्टनस० ३३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोक) ।

३५९८. प्रतिसं० ६६ । पत्रस० १३५ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

३५९९. प्रति स० ६७ । पत्र स० ५७ । आ० ११×७ इञ्च । ले० काल स० १८९९ । पूर्ण । वेष्टन स० १०९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी ।

विशेष—बूदी मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३६००. प्रतिस० ६८ । पत्र स० ८३ । आ० १३×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १८५३ । पूर्ण । वेष्टन स० १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी ।

विशेष—खडार मे लिक्षमणदास मोजीराम वाकलीवाल का वेटा ने विख चढायो ।

३६०१. प्रतिसं० ६९ । पत्रस० १०१ । आ० १३×५ इञ्च । ले०काल स० १८३१ आषाढ बुदी १ । अपूर्ण । वेष्टनस० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—दासणौती के जीवराज पाड्या ने लिखा था ।

३६०२. **प्रति स० ७०** । पत्रस० ७८ । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल स० १८५१ आषाढ बुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० ७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर आदिनाथ बूदी ।

विशेष—रणथभौर मे नाथूराम ने स्व पठनार्थ लिखा था ।

३६०३ **प्रति सं० ७१** । पत्र स० ६७ । आ० १२½×६½ इन्च । ले० स० १६७४ । पूर्ण । वे० स० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

विशेष—इन्दौर मे प० बुद्धसेन इटावा वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

३६०४. **प्रति स० ७२** । पत्रस० १४८ । आ० ६×५ इञ्च । ले०काल स० १८३३ । पूर्ण । वेष्टन स० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

३६०५. **प्रति स० ७३** । पत्रस० ४६ । ले०काल स० १६६३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

३६०६. **पार्श्वपुराण**— × । पत्रस० २५७ । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय —पुराण । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर । वसवा ।

३६०७ **प्रद्युम्नचरित—महासेनाचार्य** । पत्रस० ६६ । आ० ११×४½ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित । र०काल × । ले०काल स० १५३२ । पूर्ण । वेष्टन स० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—भट्टारक ज्ञान भूषण के पठनार्थ लिखी गयी थी ।

३६०८. **प्रति स० २** । पत्रस० १२६ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल स० १५८६ । पूर्ण । वेष्टन स० १६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

विशेष—छीतर ने ब्र० रतन को भेंट दिया था ।

प्रशस्ति—सवत् १५८६ वर्षे चैत्र सुदी १२ श्री मूलसघे वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री जिनचन्द्र तत्पट्टे भ० प्रभाचन्द तदाम्नाये खडेलवालान्वये वाकलीवाले गोत्रे स० केल्हा तद्भार्या करमा · · ।

३६०६ **प्रतिसं० ३** । पत्र स० ६४ । आ० १२½×५¾ इच । ले० काल स० १८४१ । पूर्ण । वेष्टन स० १७१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

३६१० **प्रद्युम्नचरित्र | सोमकीर्ति** । पत्र स० १७२ । आ० १०¾×४½ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल स० १५३१ पौष सुदी १३ बुधवार । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स १५३५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

३६११. **प्रति सं० २** । पत्र स० १५६ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स ४५६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३६१२. **प्रतिसं० ३** । पत्रस० १७३ । आ० १०×४½ इच । ले०काल स० १८१० पौष बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १०२/३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—वप्राख्य पत्तनस्य रामपुर मध्ये श्री नेमिजिन चैत्यालये आसावर मनस्य व्याघ्रान्वये षटोड गोत्रे सा० श्री ताराचदजी श्री लघु भ्रातृ सा० जगरूपजी कियो कारापित जिन मन्दिर तास्मिन् मदिरे चतुर्मासिक कृत ।

३६१३. प्रतिसं० ४ । पत्र स० २३७ । आ० १२×५ इ च । ले० काल स० १८१० कार्तिक सुदी १४ ।पूर्ण । वेष्टन स० ३०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वोरसली कोटा ।

३६१४ प्रति स० ५ । पत्र स० १६५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर डीग ।

३६१५. प्रति स० ६ । पत्र स० १६२ । आ० ११ × ४½ इञ्च । र० काल स० **१५३१** । ले० काल स० १६७५ । पूर्ण । वेष्टन स० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

३६१६. प्रति स० ७ । पत्र स० २७३ । ले० काल स० १६६६ । पूर्ण । वष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर हण्डावालो का डीग ।

विशेष—अलवर मे लिखा गया था ।

३६१७. प्रति सं० ८ । पत्र स० २२० । आ० ११×५ इ च । ले० काल स० १६१४ माह सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १२४ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

विशेष—घट्याली मे प्रतिलिपि कराई । मुनि श्री हेमकीर्त्ति ने सशोधन किया । प्रशस्ति भी है ।

३६१८. प्रति स० ९ । पत्रस० १५५ । आ० ९½×५ इञ्च । ले०काल स० १८२० मगसिर बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनस० ३३६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी) ।

विशेष—दवलाना मे प्रतिलिपि हुई ।

३६१९. प्रद्युम्नचरित्र—शुभचन्द । पत्र स० ९७ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

विशेष—केवल अन्तिम पत्र नही है ।

३६२०. प्रद्युम्न लीला वर्णन—शिवचन्द गणि । पत्र स० २६१ । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६०२ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

३६२१. प्रद्युम्नचरित्र— × । पत्रस० ४२ । आ० १०½×४¼ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३६२२. प्रद्युम्न चरित्र— × । पत्र स० ७६-२१५ । आ० १४×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । र० काल × । ले०काल स० १९५७ । अपूर्ण । वेष्टन स० २०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

विशेष—प्रारम्भ के ७५ पत्र नहीं हैं ।

३६२३. प्रद्युम्न चरित्र— × । पत्र स० १८७ । आ० १३ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बू दी ।

३६२४. **प्रद्युम्न चरित्र**— × । पत्र स० ३३५ । भाषा—हिन्दी । विषय—जीवन चरित्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३६२५. **प्रद्युम्न चरित्र टीका**— × । पत्रस० ७५ । आ० १४ × ७ इन्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ११५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

३६२६ **प्रद्युम्न चरित्र रत्नचद्र गणि** । पत्रस० १०५ । आ० १०×५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल स० १८३४ । पूर्ण । वेष्टन स० १३७-३२ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

३६२७. **प्रद्युम्न चरित्र वृत्ति-देवसूरि** । पत्र स० २ से १०४ । भाषा-सस्कृत । विषय— चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३६२८. **प्रद्युम्न चरित—सघारु** । पत्रस० ३२ । आ० ११×४½ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । र०काल स० १४११ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी द्वारा जनवरी ६० मे प्रकाशित । इसके सपादक स्व० प० चैनसुखदास जी न्यायतीर्थ एव डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल एम ए पी एच, डी हैं ।

३६२९. **प्रति सं० २** । पत्रस० ४० । आ० १२×६½ इन्च । ले०काल स० १८८१ वैशाख बुदी १० । अपूर्ण । वेष्टन स० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मन्दिर कामा ।

विशेष—खोज एव अन्य प्रतियो के आधार पर सही र०काल स० १४११ भादवा सुदी ५ माना गया है जबकि इस प्रति मे र०काल स० १३११ भादवा सुदी ५ दिया है । बीच के कुछ पत्र नहीं हैं तथा प्रति जीर्ण है ।

३६३०. **प्रद्युम्नचरित्र—मन्नालाल** । पत्रस० २५६ । आ० १३×७¾ इन्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—चरित्र । र०काल स० १९१६ ज्येष्ठ बुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४७६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

३६३१. **प्रद्युम्न चरित्र भाषा—ज्वालाप्रसाद बख्तावरसिंह** । पत्रस० २११ । आ० ११½× ८ इ च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—चरित्र । र०काल स० १९१४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)

विशेष—ग्र थ की भाषा प्रथम तो ज्वाला प्रसाद ने की लेकिन स० १९११ मे उनका देहान्त होने से चन्दनलाल के पुत्र बख्तावरसिंह ने १९१४ मे इसे पूर्ण किया ।

मूलग्र थ सोमकीर्ति का है ।

३६३२. **प्रति सं० २** । पत्रस० ३०३ । आ० १२×८ इन्च । ले०काल स० १९६१ । पूर्ण । वेष्टनस० २७ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर, नैणवा ।

३६३३. **प्रति सं० ३** । पत्रस० २१६ । आ० १२ × ८ इ च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४७/१२७ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन प चायती मन्दिर अलवर ।

३६३४. प्रति सं० ४ ।पत्रस० २६३ । ले०काल स० १६६१ । पूर्ण । वेष्टन स० १४८/५० **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

३६३५. प्रतिसं० ५ । पत्रस० १६७ । आ० १५×८½ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अलवर ।

३६३६. प्रति स० ६ । पत्रस० १७६ । आ० १३ × ८ इन्च । ले०काल स० १६६४ आसौज बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—स वत १६१५ मे पन्नालाल जी ने प्रारम्भ किया एव १६१६ मे बख्तावरसिंह ने पूर्ण किया ऐसा भी लिखा है ।

३६३७. प्रतिसं० ७ । पत्र स० २८७ । ले०काल स० १६४६ सावण बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

३६३८. प्रद्युम्नचरित्र भाषा—खुशालचन्द । पत्र स० ३० । आ० १२¾×८ इन्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

३६३९. प्रद्युम्नचरित्र भाषा— × । पत्र स० ३६४ । आ० १३ × ८ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल स० १६४१ । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा राज० ।

विशेष—इन्दौर मे प्रतिलिपि हुई ।

३६४०. प्रद्युम्न प्रबंध—भ० देवेन्द्रकीर्ति । पत्रस० २३ । आ० १०×६ इन्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—काव्य । र०काल स० १७२२ चैत सुदी ३ । ले०काल स० १८६५ काती बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० ३६८/६६ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—देवेन्द्रकीर्ति निम्न आम्नाय के भट्टारक थे—

श्री मूलसघे भट्टारक सकलकीर्ति तत् शिष्य भुवन कीर्ति तत्पट्टे ज्ञानभूषण तत्पट्टे विजयकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक शुभचन्द्र तत्पट्टे भ० सुमति कीर्ति तत्पट्टे गुणकीर्ति तत्पट्टे वादिभूषण तत्पट्टे रामकीर्ति तत्पद्मनदि सूरि त प देवेन्द्रकीर्ति· · ।

आदि अत भाग निम्न प्रकार है—

आदि भाग— दोहा ।

सकल भव्य सुखकर चदा नेमि जिनेश्वर राय ।
यदुकुल कमल दिवस पति प्रणमु तेहना पाय ।
जगदवा जय सरस्वती जिनवाणी तुझ काय ।
अविरल वाणी आप जो भू भूंठी मुझमाय ।

अंतिम भाग—

तसपटकमल कमल वहु श्रीय देवेन्द्रकीर्ति गच्छइसरे ।
प्रद्युम्न प्रवध रच्यो तिमि भवियण भण जो निशद्योसरे ।।४३।।
स वत सतर वावीस सुदि चैत्र तीज बुधवार रे ।
माहेश्वरमाहि रचना रची रहि चन्द्रनाथ ग्रह द्वार रे ।।४४।।

सुरथ वासी सघपति क्षेगमजी सुरजी दातार रे।
तेह आग्रह थी प्रद्युम्न नो ए प्रवध रच्यो मनोहार रे ॥८५॥

दूहा—
मनोहार प्रवध ए गुथ्यो करी विवेक ।
प्रद्युम्न गुणि सुत्रे करी स्तवन कुसुम अनेक ॥
भवियण गुण कठे धरो एह अपूर्व हार।
घिरे मगल लक्ष्मी घणी पुण्य तणो नही पार ॥
भणे भणावे साभलो लिखे लिखावे एह ।
देवेन्द्र कीर्ति गच्छपति कहे स्वर्ग मुक्ति लहे तेह ॥

इति श्री प्रद्युम्न प्रवध सपूर्णं ।श्री दक्षण देशे अणगर ग्रामे प० खुश्यालेन प्रतिलिपि कारित ।
ग्रथ का अपर नाम प्रद्युम्न प्रवध भी मिलता है।

३६४१. प्रति स० २ । पत्र स० ३६ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल स० १८१२ फागुण बुदी । पूर्णं । वेष्टन स० १३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी)।

विशेष—भट्टारक श्री शुभचन्द्र ने रामपुरा मे प्रतिलिपि की थी।

३६४२ प्रतिसं० ३ । पत्र स० ५७ । आ० ६½×४½ इञ्च । ले० काल स० १८०२ पूर्णं । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

विशेष—ब्रह्म श्री फतेचन्द ने लिखवाया था।

३६४३. प्रबोध चद्रिका— × । पत्र स० ८-३२ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले० काल स० १८६४ कार्तिक बुदी २ । अपूर्णं । वेष्टन स० १२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

३६४४. प्रबोध चद्रोदय—कृष्ण मिश्र । पत्र स० ३६ । आ० १० × ५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—काव्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्णं । वेप्टन स० १८८ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

३६४५. प्रभंजन चरित्र— × । पत्र स० २ से ४२ । आ० ६½×६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्णं । वेष्टनस० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

३६४६. प्रभजन चरित्र—× । पत्रस० २१ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल × । ले० काल स० १६२३ आसोज सुदी १ । वेष्टनस० १५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—आ० श्री लखमीचन्द्र के शिष्य प० नेमिदास ने स्वय के पठनार्थ लिखवाया ।

३६४७ प्रश्न षष्टि शतक काव्य टीका-टीकाकार पुण्य सागर । पत्रस० ७४ । आ० ११ × ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—काव्य । टीका स० १६४० । ले०काल स० १७१४ सावन सुदी ७ । पूर्णं । वेष्टनस० २३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३६४८. प्रीतिकर चरित्र—सिहनन्दि। पत्रस० १६ । आ० ११½×६½ इञ्च । भाषा—स स्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले०काल स ० १६१० । पूर्ण । वेष्टन स० २८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३६४९. प्रीतिकर चरित्र—ब्र० नेमिदत्त। पत्रस० ३० । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—स स्कृत । विषय चरित्र । र०काल × । ले०काल स० १५०४ पूर्ण । वेष्टनस० २६५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३६५०. प्रतिसं० २। पत्र स० १ से २५ तक । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३६० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३६५१. प्रति स० ३। पत्रस० २३ । आ० ६ × ६ इञ्च । ले०काल स ० १६०७ फागुण सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० २५३ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

३६५२. प्रीतिकर चरित्र—जोधराज गोदीका। पत्र स० २३ । आ० ६½ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विपय—चरित्र । र०काल स ० १७२१ फागुण सुदी ५ । ले० काल स० १८८७ । पूर्ण । वेष्टन स० १४६६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३६५३. प्रति सं० २। पत्रस० १० । आ० ११×६ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, तेरहप थी मालपुरा (टोक) ।

३६५४. प्रति स० ३। पत्र स० ३० । आ० ११½×५½ इञ्च । ले०काल स० १८८५ । पूर्ण वेष्टन स० ५० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर तेरहपथी मालपुरा (टोक) ।

३६५५. प्रति सं० ४। पत्र स० ६५ । आ० ११×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मन्दिर अलवर ।

३६५६. प्रतिसं० ५। पत्र स० ४५ । ले०काल स १७६१ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—जोधराज मनीराम के पुत्र चादवाल ने भोजपुर मे लिखा ।

३६५७. प्रति सं० ६। पत्र स० ३३ । ले०काल स० १६०२ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३६५८. प्रति सं० ७। पत्र स० ६६ । आ० ६½×५ इञ्च । ले०काल म० १७८४ फागुण बुदी ५ । पूर्ण । वे०स० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प चायती मन्दिर बयाना ।

३६५९. बसतवर्णन—कालिदास। पत्रस० । १७ । आ० ६ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले० काल स० १८६६ सावण सुदी १० । पूर्ण । वे स० १४३० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३६६०. बारा आरा महाचौपईबध—ब्र० रूपजी। पत्रस० १८ । भाषा—हिन्दी । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०८/१४३ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—चौवीस तीर्थंकरो के शरीर का प्रमाण, वर्ण आदि का पद्यों मे सक्षिप्त वर्णन है ।

आदि अंत भाग निम्न प्रकार है —

प्रारंभ—ओनम सिद्धेभ्य। बारा आरा चौपई लिख्यते।
प्रथम वृषभ जिन निस्तवु जे जुग आदि सार।
भव एकादश ऊजला भव्य उतारण पार ॥१॥
इह प्रथम जिनद दुख दावानल कद
भव्यकज विकाशनचन्द सुघकाधिव धारणचन्द ॥ २ ॥
सरस्वती निवलीनमु जेह ज्ञान अपार।
मनवाछु जेहथीफली कविजन लाभ सार ॥ ३ ॥
श्री मूलसघ सहामणो सरस्वतीगच्छे सार।
वलात्कर शुभगण भण्यो श्री कुदकुद सारि ॥ ४ ॥

इस से आगे भ० पद्मनदि, सकलकीर्ति भुवनकीर्ति, ज्ञानभूषण, विजयकीर्ति शुभचन्द्र, सुमतिकीर्ति गुणकीर्ति की परम्परा और उसके बाद

वादीभूषण नेह अनुक्रमि रामकीरतिज सार।
पद्मनदि निवलीस्तवु चेल रहित सुखकार।
तेहना शिष्यज उजलो करि वार आर विचार।
ब्रह्मरूपजी नामिभण्यो सुणज्यो सज्जनसार॥
समतभद्र देमेज कवि गुणभद्र गुणधार
तेहनागुण मनमाहि धरि कवि वोलु सुखकार।

अन्तिम—

चन्द्रसूरज ग्रह तारा जाण
रामयशनाक निर्वाण
त्यार लगिये चोपे रहो
आसावर कठिकरी कहो ॥६३ ॥
सतर उक्त वीस दूहा सही
सात्री सत्रण सिचोए कही
ब्रह्मरूपजी कहे प्रमाण
सुणता भणता पचकल्याण ॥

इति महाचौपई वधे ब्रह्मरूपजी विरचिते अष्टकाल स्वरूप कयानाम तृतीय उल्लास। इति बारा आरा महाचौपई वधे वमाप्त।

स्वय पठनाय स्वय कृत स्वय लिखित। महिसाणा नगर आदि जिन चैत्यालये कृता। इसमे कुल तीन उल्लास है—

१ कालत्रय स्वरूप
२. चतुर्थ काल वर्णन स्वरूप
३. अष्टकाल स्वरूप वर्णन।

३६६१. भद्रबाहु चरित्र—रत्ननदि। पत्रस० २४। आ० ६×५½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—चरित्र। र०काल ×। ले०काल स० १८४३। पूर्ण। वेष्टन स० १२३३। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

३६६२. प्रतिसं० २ । पत्र स० २१ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल स० १६२७। पूर्ण । वेष्टन स० ११४० । **प्राप्तिस्थान**—भट्टाकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—कही २ कठिन शब्दो के अर्थ भी दिये हैं ।

३६६३. प्रति सं० ३ । पत्रस० २९ । आ० १०×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

३६६४. प्रतिसं० ४ । पत्र स० २०१ । आ० ९×५½ इञ्च । ले०काल स० १८०८ । पूर्ण । वेष्टन स० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वमी बूंदी ।

३२६५. प्रतिसं० ५ । पत्र स० २४ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले०काल स० १८३२ फागुण सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १७१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

३६६६. प्रतिस० ६ । पत्रस० २५ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिरनदूनी (टोंक)

३६६७. प्रतिसं० ७ । पत्रस० २८ । आ० ११×५ इञ्च । ले० कालस० १८२५ । पूर्ण । वेष्टनस० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

३६६८. प्रतिसं० ८ । पत्रस० २७ । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल स० १८१९ फागुण बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

३६६९ प्रतिसं० ९ । पत्रस० ३१ । आ० ९×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

३६७०. प्रति सं० १० । पत्र स० ३३ । आ० १०¾×४½ इञ्च । पूर्ण ले०काल × । वेष्टन स० १५६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

३६७१. प्रतिसं० ११ । पत्रस० २-१९ । आ० १२×५½ इच । ले०काल स० १७६० माघ सुदी ब्र १३ । पूर्ण । वेष्टनस० ७५२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

३६७२. भद्रबाहु चरित्र भाषा—किशनसिंह पाटनी । पत्र स० ४३ । आ० १२ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) विषय—चरित्र । र०काल स० १७८३ माघ बुदी ८ । ले०काल स० १८८२ माह सुदी १२ । पूर्ण वेष्टनस० १४८२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—किशनसिंह पाटनी चौथ का बरवाडा के रहने वाले थे ।

३६७३. प्रति सं० २ । पत्र स० १६ । आ० १३×७ इञ्च । ले० काल स० १९०५ पौष सुदी ५ । पूर्ण वेष्टन स० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

३६७४. प्रति सं० ३ । पत्र स० ४७ । आ० ९½×६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७३-४२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

३६७५. प्रति स० ४ । पत्रस० २८ । आ० १२½×७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

३६७६. प्रति स० ५ । पत्र स० ३९ । ले० काल स० १९७५ । पूर्ण । वेष्टन स० १६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

३६७७. **प्रतिस० ६** । पत्र स० १६ । आ० १०३/४×५ ३/४इञ्च । ले० काल स० १६७६ भादवा बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

३६७८. **प्रति स० ७** । पत्रस० ३५ । आ० १०×६ इञ्च । ले०काल स० १६५० । पूर्ण । वेष्टन स० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

३६७९. **प्रतिस० ८** । पत्र स० ३२ । आ० ६ × ५ इञ्च । ले० काल स० १६०० । पूर्ण । वेष्टन स० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

विशेष—लोचनपुर शुभ ग्राम मे सिघराज जिनधाम ।
बुद्धि प्रमाण लिख्यो मुझे जपिये श्री जिननाम ।। १ ।।
साइ करो मुझि ऊपरै, दोषहरो भगवान ।
सरण नगण आदिकसहु ध्राऊं श्री जिनवाणि ।
पन्नाअरुण वनाय के भावै विनती एह ।
देव धर्म श्रुत साधू को चरण नमू धरि नेह ।।
सभव है पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३६८०. **प्रतिसं० ६** । पत्र स० २८ । आ० १०×७ इञ्च । ले०काल स० १६०२ । पूर्ण । वेष्टन स० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का नैणवा ।

विशेष—महाराजाधिराज श्री रामसिहजी का राज मे बूदी के परगणे नैणवा मध्ये ।

३६८१. **प्रति स० १०** । पत्र स० २६ । आ० ११×७ इञ्च । ले०काल स० १६६२ । पूर्ण । वेष्टन १० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर बघेरवालो का (उणियारा)

३६८२. **प्रति स० ११** । पत्र स० ४३ । आ० १०×७ इञ्च । ले०काल १८८२ । पूर्ण । वेष्टन स० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोंक)

३६८३. **प्रति स० १२** । पत्र स० ३१ । आ० १२×८ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६१/५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (टोंक)

विशेष—भेलीराज ज्ञानि सावडा चम्पावती वाले ने माधोराजपुरा मे प्रतिलिपि कराई थी ।

३६८४ **प्रतिस० १३** । पत्रस० ४१ । आ० १०×४ १/२ इञ्च । र०काल स० १७८३ माघ बुदी ८ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७६ । । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

३६८५ **प्रतिस० १४** । पत्रस० २० । आ० १२१/२ × ७१/२ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर ।

विशेष—५६५ पद्य है ।

३६८६ **प्रतिस० १५** । पत्र स० ५७ । आ० ६१/२×५ १/२ इञ्च । ले० काल स० १८१३ आसोज सुदी १० । । पूर्ण । वेष्टन स० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर वयाना ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है-शुभ सवत् १८१३ वर्षे आसोज मासे शुक्कपक्षे दशम्पा रविवासरे खण्डेलवालान्वये गिरधरवाल गोत्रे श्रावकपुनीत श्री उदैरामजी तस्य प्रभावनागकारक श्री चूरामलजी तस्य पुत्र

द्रय ज्येष्ठ पुत्र लीलापती लघुसुत बनारसीदास पौत्रज रावेकृष्ण एतेपा साहजी श्री चुरामणिजी तेनेद शास्त्र लिखापित ।

दोहा—चूरामनि ने ग्रन्थ यह निजहित हेत विचार ।
लिखवायो भविजन पढो ज्यो पावै सुखसार ।।

३६८७. **प्रति स० १६** । पत्र स० ८८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—उपगूहन कथा ऋषि मण्डल स्तोत्र, जैन शतक (स० १७६१) वीस तीर्थकरों की जखडी धादि भी है ।

३६८८ **प्रतिसं० १७** । पत्रस० ४१ । आ० १० × ५ इञ्च । ले०काल स० १८५७ अषाढ सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० ६२-६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—चिमनलाल तेरहपयी दौसा ने प्रपिलिपि की थी ।

३६८९. **प्रतिसं० १८** । पत्र स० ४४ । ले० काल १८२७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहतथी वसवा ।

विशेष—कामागढ मे भोलीलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३६९०. **प्रतिसं० १९** । पत्र स० ४१ । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल स० १८५२ वैशाख सुदी १ । अपूर्ण । वेष्टन म० ९७-९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर वडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—चूहो ने खा रखा है ।

३६९१ **भद्रबाहु चरित्र भाषा—चंपाराम** । पत्र स० ४३ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य)। विपय—चरित्र । र०काल स० १८६४ सावन सुदी १५ । ले०काल स० १९२६ मगसिर बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० ९५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—ब्राह्मण पुष्करणा फतेराम जात काकला मे प्रतिलिपि की थी ।

सवत् १९२८ भादवा सुदी १४ को अनन्तव्रतोद्यापन के उपलक्ष मे हरिकिसन जी के मन्दिर मे चढाया था ।

३६९२. **प्रति स० २** । पत्र स० २३ । आ० ११½×६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

३६९३. **प्रतिस० ३** । पत्र स० ७१ । आ० १०½×६½ इञ्च । ले० काल स० १९४४ । पूर्ण । वेष्टन स० १५४, ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर, इन्दरगढ (कोटा)

३६९४. **प्रति स० ४** । पत्रस० ५९ । आ० ९½×६ इञ्च । ले० काल स० १९२३ आपाढ सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० ४२/५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा)

३६९५ **प्रति स० ५** । पत्रस० ३४ । आ० १३×६ इञ्च । ले०काल स० १८९९ । पूर्ण । वेष्टनस० १४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली (कोटा) ।

३६९६. **भद्रबाहु चरित्र भाषा**— × । पत्र स० ८५ । आ० ९×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विपय—चरित्र । र०काल × । ले० काल स० १८१७ । पूर्ण । वेष्टन स० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

३६९७ भद्रबाहु चरित्र सटीक— × । पत्र स० ४१ । आ० १२ × ७½ इन्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १९७७ माघ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनमन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—रत्नन्दि कृत सस्कृत की टीका है ।

३६९८. भविष्यदत्त चरित्र—श्रीधर । पत्रस० ६५ । आ० १०½×५ इन्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल स० १६८५ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३६९९ प्रतिस० २ । पत्र स० ८१ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १९९ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७००. प्रतिस० ३ । पत्र स० ८१ । ले० काल स० १६१३ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० २०१। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—तक्षकमहादुर्ग मे मडलाचार्य ललितकीर्त्तिदेव की आम्नाय मे सा हीरा भोना ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

३७०१. प्रतिस० ४ । पत्रस० ६३ । ले० काल १६४३ । पूर्ण । वेष्टनस० ८९/६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सभवनाथ उदयपुर ।

प्रशस्ति—

सवत् १६४३ वर्षे श्रावण वुदी ५ तिथौ रविवासरे श्री चन्द्रावतीपुर्या श्री आदिनाथ चैत्यालये श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भ० भुवनकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० ज्ञानभूपणदेवा तत्पट्टे श्री विजयकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्रदेवा स्तत्पट्टे भ० श्री सुमतिकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री गुणकीर्ति तत् शिप्य ब्रह्म मेघराज पठनार्थं । सिरोजवास्तव्ये परवार ज्ञातौ चौधरी माह्न तद्भार्या अडा तयो पुत्र धर्मभारधुर धरावत दानशील पूजादिगुण सयुक्ता चौधरी वाघराज तद्भार्या भानमती ताभ्या ज्ञानावर्णी कर्मक्षयार्थं श्री भविप्यदत्त पचमी चरित्रे लेखित्वादत्त ॥

३७०२. प्रति स० ५ । पत्रस० ५५ । आ० १०½×५½ इच । ले०काल स० १७३१ मगसिर वुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ बूदी ।

विशेष—प० लक्ष्मीदास ने स्व पठनार्थं लिखा था ।

३७०३. प्रतिसं० ६ । पत्रस० २६–४८ । आ० १२×५½ इन्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस०७०९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

३७०४. प्रतिसं० ७ । पत्र स० ८८ । आ० १०½ × ४ इन्च । ले० काल स० १५५९ श्रावण वुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक)

प्रशस्ति—सवत् १५५९ वर्षे श्रावण मासे कृष्णपक्षे प्रति पत्तियौ वुध दिने गधारे मन्दिरे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री सकलकीर्ति तत्पट्टे भ० भुवनकीर्ति तत्पट्टे भ० श्री ज्ञानभूषण तच्छिष्य मुनि श्री गुणभूपण पठनार्थं वाई शातिका मदनश्री ज्ञानावरणीय कर्मक्षयार्थं लिखापित भविप्यदत्त चरित्र ॥

३७०५. प्रतिसं० ८। पत्रस० ८६ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल स० १६५६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति—स० १६५६ काती सुदी ५ गुरुवारे अउडक्ष देशे भेदकी पुर नगरे राजाधिराज मानस्यघ राज्ये प्रतिलिपि हुई थी ।

३७०६. प्रतिसं० ९ । पत्र स० ५० । आ० १२½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी) ।

३७०७. प्रतिसं० १० । पत्र स० २–६६ । आ० १२×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३२२ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३७०८. प्रति स० ११ । पत्रस० १–७५ । ले० काल स० १६१० । पूर्ण । वेष्टन स० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर डीग ।

३७०९. प्रति सं० १२ । पत्र स० ६७ । ले० काल स० १४८२ वैशाख सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर वसवा ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

सवत् १४८२ वैशाख सुदी १० श्री योगिनीपुरे साहिजादा मुरादखान राज्य प्रवर्त्तमाने श्री काष्ठासघे माथुरान्वये पुष्कर गणे आचार्य श्री भावसेन देवास्तत् पट्टे श्री गुणकीर्ति देवास्तत् शिस्य श्री यश कीर्ति देवा उपदेशेन लिखापित ।

३७१०. प्रतिसं० १३ । पत्र स० ६३ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल स० १६३१ वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

३७११. प्रतिसं० १४ । पत्र स० १–८८ । आ० ११½×४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—८८ पत्र से आगे के पत्र नही है । प्रति प्राचीन है ।

३७१२. भविष्य दत्त चरित्र— × । पत्रस० १६ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

३७१३. भविष्यदत्त चौपई—ब्र० रायमल्ल । पत्रस० ४२ । आ० १०×४½८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । र०काल स० १६३३ काती सुदी १४ । ले० काल स० १७६४ वैशाख सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १२४५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७१४. प्रति सं० २ । पत्र स ५० । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल स० १६५५ काती सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३०८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७१५. प्रति स० ३ । पत्र स० ७० । आ० ८½×६ इञ्च । ले०काल स० १८४५ । पूर्ण । वेष्टनस० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल, टोक ।

विशेष—महात्मा ज्ञानीराम सवाई जयपुर वाले ने प्रतिलिपि की । लिखायित प० श्री देवीचन्द जी राजारामस्यघ के खेडा मध्ये ।

३७१६. प्रति स० ४ । पत्र स० ४४ । ग्रा० १०½×४½ इञ्च । ले० काल स० १८३० । पूर्ण । वेष्टन स० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक) ।

लेखक प्रशस्ति—मिति भादवा वुदि ११ वर दीतवार सवत् १८३० साके १६६५ प्रवर्तमान भट्टारक श्री १०८ श्री सुरेन्द्रकीर्त्ति जी प्रवृतमान मूलस घे वलात्कार गणे सुरसती गच्छे ग्राम्नाये श्री कु द-कुन्दाचार्ये लिखिनार्थं साहा नाथूराम सोनी जाति सोनी । लिखतु रूडमल गोधा । श्री ग्रादिनाथ के देहुरा ।

३७१७ प्रति स० ५ । पत्रस० ५३ । ग्रा० १० × ४¾ इञ्च । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टनस० ५०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—ईश्वरदास साह ने प्रतिलिपि की ।

३७१८. भुवन भानु केवली चरित्र × । पत्रस० ३७ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × ले०काल स० १७४७ । पूर्ण । वेप्टन स० ६५ । **प्राप्दि स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना वू दी ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

इति श्री भवनभानु केवलि महाचारित्रे वैराग्यमय समाप्त ।

सवत् १७४७ वर्षे शाके १६१२ मिति फागुण वुदि १ पडितोत्तम श्री ५ श्री लक्ष्मी विमलगणि शिष्य पडित शिरोमणि पडित श्री ५ श्री र गविमलगणि शिष्य ग्रमर विमल गणि शिष्य गणि श्री रत्नविमल ग. पठनार्थ भगवतगढ नगरे पातिसाह श्री ग्रौर गसाह् विजैराज नवाव ग्रस्तवागी नामे राजश्री सादुलसिहजी राजे लिखत ।

३७१६. भोजप्रवध—प० वल्लाल । पत्रस० ४० । ग्रा० १३ × ६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय काव्य । र०काल स० १७५५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

३७२०. प्रति स० २ । पत्र स० ७५ । ग्रा० १०½×५ इञ्च । ले०काल स० १८६६ । वे० स० २६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

३७२१. भोज चरित्र—भवानीदास व्यास । पत्रस० ३५ । ग्रा० १० ×४¾ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय—काव्य । र०काल × । ले०काल स० १८२५ । वेष्टन स० ६७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—गढ जोधाण सतोल धाम ग्राई विलाडे ।
पीर पगठकल्याण सुजस गुण गीत गवाडे ।।
भोज चरित तिण सु कह्यो कविपण सुख पावे ।
व्यास भवानीदास कवित्त कर वात सुणावे ।।
सुणी प्रवध चारण प्रते भोजराज वीन कह्यो ।
कल्याणदास भूपाल को धर्म ध्वजाधारी कह्यो ।

इनि श्री भोज चरित्र सम्पूर्ण । सवत् १८२५ वर्षे मित कातिग वुदि ४ दिने वावीढारे लिखित । पचायक विजेयण श्रीमन्नागपुरे श्री पार्श्वनाथ प्रसादात् ।

३७२२. भोजप्रबध— × । पत्रस० २० । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय—काव्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर दवलाना (बू दी) ।

३७२३. भोजराजकाव्य— × । पत्र स० १ । आ० १०×४ इ च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

३७२४. मणिपति चरित्र—हरिचन्द सूरि । पत्र स० १८ । भाषा—प्राकृत । विपय-चरित । र०काल स० ११७२ । ले० काल × पूर्ण । वेष्टन स० ४६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

३७२५. मयणरेहाचरित्र— × । पत्रस० ७ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) विषय—कथा । र०काल × । ले० काल स० १९१६ काती बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बू दी) ।

३७२६. मलयसुन्दरीचरित्र—जयतिलक सूरि । पत्र स० ६७ । भाषा—सस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १४६० माघ सुदी १ सोमदिने । पूर्ण । वेष्टनस० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर वसवा ।

३७२७. मलयसुंदरी चरित्र भाषा—अखयराम लुहाडिया । पत्रस० १२४ । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-चरित्र । र०काल × । ले० काल स० १७७४ कार्तिक बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनस० ६० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरहपथी मन्दिर वसवा ।

विशेष—प्रारभ —

रिखभ आदि चौबीस जिन जिन सेया आनन्द ।
नमस्कार त्रिकाल सहित करत होय सुखकद ॥

३७२८. मल्लिनाव चरित्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र स० २७ । आ० ११½×५½ इ च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले०काल स० १८३२ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७२९. प्रति स० २ । पत्र स० ३८ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २७८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७३०. प्रति स० ३ । पत्र स० ४१ । आ० ११×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

३७३१. प्रति स० ४ । पत्रस० ४१ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल स० १६२३ आसोज बुदी १४ पूर्ण । वेष्टनस० २५५/२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—दीमक लगी हुई है ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६२३ वर्षे आश्वनि १४ शुक्रे श्री मूलसघे भट्टारक श्री सकलकीर्ति तत्पट्टे भ० श्री भुवनकीर्ति तत्पट्टे भ० ज्ञानभूषण तत्पट्टे भ० विजयकीर्ति तत्पट्टे भ० शुभचन्द्र तत्पट्टे भ० श्री सुमतिकीर्ति स्तदास्नाये

गिरिपुर वास्तश्थ हुवडज्ञातीय का० साइया भार्या सहिजलदं तयो सुत सम्यक्त्वपानीय प्रक्षालित पापकर्द्दम अङ्गी-कृत द्वादशव्रतनियम । दानदत्ति सर्तपित त्रिविधपात्र विहित श्री शत्रु जयेताजीयेत तु गी प्रमुख तीर्थ पात्र समस्त गुणगणादेय को जावड तद्भार्या शीनेवशील सपन्ना दानपूजापरायणालावण्य जलवेर्वता वचनामृतवापिका श्राविका गोरा नाम्नी द्वितीय भार्या मुहूणदे तयो पुत्र को सामलदास एतं ज्ञानावरणी कर्म क्षयार्थं व्र० कर्ण-सागराय श्री मल्लिनाथ चरित्र सलिखाप्यप्रदत्त ।

३७३२. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ७६ । ले०काल १६२२ आषाढ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० २२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर मे पन्नालाल बढजात्या ने लिखवाई थी ।

३७३३. मल्लिनाथ चरित्र—सकलभूषण । पत्र स० ४१ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय—चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १८०८ फाल्गुन बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० १३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी (वू दी) ।

३७३४. मल्लिनाथ चरित्र भाषा—सेवाराम पाटनी । पत्रस० ५६ । आ० ११×७½ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।विषय—चरित्र । र०काल स० १८५० भादवा वुदी ५ । ले०काल स० १८८४ । पूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—कामा मे सदासुख रिखभदास ने प्रतिलिपि की थी ।

प्रारम्भ—

(नम) श्री मल्लिनाथाय, कर्ममल्लविनाशने ।
अनन्त महिमासाय, जगत्स्वामिनिर्निश ।।

पद्य—

मल्लिनाथ जिनको सदा वदो मनवचकाय ।
मङ्गलकारी जगत मे, भव्य जीवन सुखदाय ।।
मङ्गलमय मङ्गलकरण, मल्लिनाथ जिनराज ।
आरभ्यो मैं ग्र थ यह, सिद्धि करो महाराजि ।।२।।

हिन्दी गद्य का नमूना—

समस्त कार्य करि जगत गुरू नै ले करि इन्द्र वडी विभूति सू पूर्ववत पुर नै ले आवता हुआ । तहा राज आगण कै विषं वडा सिहासन पाइ हर्ष करि सर्वाङ्ग भूपित इन्द्र बैठतो हुई ।

अन्तिम प्रशस्ति—

रामसुख परभातीमल्ल, जोवराज मगहि वुधिमल्ल ।
दीपचन्द गोधो गुणवान इनि चारया मिलि कही वखानि ।।१।।
मल्लिनाथ चरित्र की भाषा, करो महा इह अति विख्यात ।
पढै सुनै साधरमी लोग, उपजै पुण्य पाप क्षय होय ।।२।।
तव हमने यह कियो विचार, वचनरूप भाषा अतिसार ।
कीजे रचना सुगम अमार, सव जन पढै सुनै सुखकार ।।३।।
मायाचन्द को नदन जानि, गोतपाटणी सुखकी खानि ।
सेवाराम नाम है सही, भाषा कवि को जानो इहि ।।४।।

अल्प बुद्धि मेरी अति घणी, कवि जन सू विनती इम भणी ।
भूल चूक जो लेहु सुधार, इहि अरज मेरी अवधार ।।५।।
प्रथम वास द्योसा का जानि, डीगमाहि सुखवास बखानि ।
महाराज रणजीत प्रचड, जाटवश मे अतिवलवड ।।६।।
प्रजा सवै सुखसो अति वसै, पर दल ईति भीतिनही लसी ।
न्यायवत राजा अति भलौ, जैवतो महि मडल खरो ।
सवत् अष्टादशशत जानि, और पचास अधिक ही मान ।।
भार्दोमास प्रथम पक्षि माहि, पाचै सोमवार के माहि ।
तब इह ग्र थ सपूर्ण कियो, कविजन मन वाछित फल लियो ।।

३७३५. प्रति सं० २ । पत्र स० २६ से ६४ । ले० काल स० १८५० । अपूर्ण । वेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

३७३६ प्रति स० ३ । पत्र स० ५६ । आ० १०½×६ इच । ले०काल स० १८५० भादवा वुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० २९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

विशेष—स० १८५० भादवा वुदी ५ सोमवार डीग सहर मे लिख्यो सेवाराम पाटनी मयाचन्दजी का ज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थं ।

प्रति रचनाकाल के समय की ही है । तिथि तथा सवत् एक ही है ।

३७३७. प्रति स० ४ । पत्रस० ८४ । आ० १०×५½ इञ्च । ले०काल स० १८८३ काती सुदी ऽऽ । पूर्ण । वेष्टन स० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मन्दिर कामा ।

विशेष—कामा मे सदाशुख कासलीवाल ने प्रतिलिपि की । महाराजा सवाई वलवतसिह जी के शासनकाल मे फौजदार नाथूराम के समय मे लिखा गया था ।

३७३८ महावीर सत्तावीस भव चरित्र—×। पत्र स० ३ । आ० ९×३½ इच । भाषा—प्राकृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक) ।

विशेष—जिनवल्लभ कवि कृत सस्कृत टीका सहित है ।

३७३९. महीपालचरित्र—वीरदेव गणि । पत्र स० ९१ । आ० ११ × ४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल स० १७३९ । पूर्ण । वेष्टन स० २०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

३७४०. महीपाल चरित्र—चारित्रभूषण । पत्र स० ५० । आ० १०×४¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल स० १७३१ श्रावण सुदी २ । ले० काल स० १८४२ माघ सुदी । पूर्ण । वेष्टन स० १०५९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—अजमेर मे प्रतिलिपि हुई ।

३७४१. प्रति सं० २ । पत्र स० ३६ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७४२. प्रति स० ३ । पत्र स० ४८ । आ० ९½×५½ इन्च । ले०काल स० १८९५ भादवा बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ४/८० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—प० मोतीलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३७४३ प्रति स० ४ । पत्रस० २६ । आ० १२½× ६½ इन्च । ले०काल स० १७८३ सावण बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० ७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पाटोदी का नैणवा ।

विशेष—उणियारामध्ये रामपुरा के गिरधारी ब्राह्मण ने जती जीवणदास के पठ्ठा से लिखाया था ।

३७४४ प्रतिस० ५ । पत्र स० ४२ । आ० १०½×६ इन्च । ले०काल स० १९३३ । पूर्ण । वेष्टनस० ७५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर राजमहल टोंक ।

३७४५ प्रति स० ६ । पत्र स० ३६ । आ० १०½×४½ इन्च । ले० काल स० १८२६ । पूर्ण । वेष्टन स० २४० । प्राप्ति स्थान—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

३७४६ प्रतिस० ७ । पत्र स० ४० । आ० १०×५½ इन्च । ले० काल स० १८५५ कार्तिक बुदी १३ । पूर्ण । वेष्ठन स० ६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—कोटा नगर के रामपुरा शुभ स्थान के प० जिनदास के शिष्य हीरानन्द के पठनार्थ प० लालचन्द ने लिखा था ।

३७४७ महीपाल चरित्र भाषा—नथमल दोसी । पत्र स० ६६ । आ० १०×६ इन्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । र०काल स० १९१८ आसाज बुदी ४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चोगान बूदी ।

विशेष—दुलीचन्द दोसी के सुपौत्र तथा शिवचन्द के सुपुत्र नथमल ने ग्रथ की भाषा की थी ।

३७४८. प्रति स० २ । पत्रस० ४३ । आ० १३ × ८ इन्च । ले०काल स० १९६८ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चोगान बूदी ।

विशेष—प्रतापगढ़ नगर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३७४९ प्रतिस० ३ । पत्रस० ६१ । आ० ११×७ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अग्रवालो का नैणवा ।

३७५० प्रति स० ४ । पत्र स० ६८ । आ० ११×७ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

३७५१ प्रति स० ५ । पत्र स० १३३ । आ० १२×५ इन्च । ले० काल स० १९३४ श्रावण बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ३३२-१२७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

३७५२ प्रति स० ६ । पत्रस० ४८ । आ० ११×५ इन्च । ले० काल स० १९५६ । पूर्ण । वेष्टनस० ११५-५६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

३७५३. प्रति स० ७ । पत्र स० ७२ । आ० ९×७½ इन्च । ले० काल ×।पूर्ण । वेष्टन स० ८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

३७५४. प्रति स० ८ । पत्रस० ६१ । आ० ११×७ इन्च । ले० काल स० १९४८ आसोज बुदी ९ । पूर्ण । वेप्टन स० ५७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

३७५५. प्रतिस० ६ । पत्र स० ५७ । आ० १३×७½ इञ्च । ले०काल स० १९७६ । पूर्ण । वेष्टन स० १७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी (बूंदी) ।

३७५६. महीभट्ट काव्य—महीभट्ट । पत्रस० ७२ । आ० ९⅞×४¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पर्श्वनाथ इन्दरगढ (बूंदी)

३७५७ मुनिरग चौपाई—लालचन्द । पत्रस० ३३ । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ६३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर ।

३७५८. मेघदूत—कालिदास । पत्रस० २९ । आ० ९×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२९९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७५९. प्रति स० २ पत्र स० १७ । आ० ९×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेप्टन स० १६०३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७६०. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १५ । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन स० १३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

३७६१. प्रतिसं० ४ । पत्रस० १० । आ० ११½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण वेष्टन स० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्द स्वामी, बूंदी ।

३७६२ प्रति सं० ५ । पत्रस०१४ । आ० १२× ४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिदन्दन स्वामी, बूंदी ।

३७६३. प्रति स० ६ । पत्र स० १७ । आ० १० × ४ इच । ले० काल × । पूर्ण ।वे० स० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

३७६४. प्रति सख्या ७ । पत्रस० ८ । आ० ९× ४ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २२१ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर दवलाना बूंदी ।

३७६५. प्रतिसं० ८ । पत्र स० १७ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल स० १८१९ फागुण बुदी १३ । अपूर्ण । वेप्टनस० ३०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

३७६६. प्रति सं० ९ । पत्र स० ३५ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३०८ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—सजीवनी टीका सहित है ।

३७६७. प्रतिसं० १० । पत्र स० २८ । आ० ८½×४ इञ्च । ले० काल स० १६८७ । पूर्ण । वेष्टन स० ४७ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूंदी)

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—सवत् १६८७ वर्षे वैशाख मासे शुक्लपक्षे एकादश्या तिथौ भौमवासरे बूंदीपुरे चतुर्विशति ज्ञातिना शारग घरेण लिखित इद पुस्तक ।

३७६८. प्रतिस० ११ । पत्रस० १७ । ग्रा० १२ × ४ इञ्च । ले०काल स० १८१६ । पूर्ण । वेष्टनस० १३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

३७६९ प्रतिस० १२ पत्रस० ४७ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ५२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—सस्कृत टीका सहित है ।

३७७०. प्रति स० १३ । पत्रस० २३ । ग्रा० १०½×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८४-७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का, डूगरपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन एव टीका सहित है ।

३७७१. मेघदूत टीका (सजीवनी)—मल्लिनाथ सूरि । पत्र स० २-३३ । ग्रा० ६½× २½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—काव्य । र०काल × । ले० काल स १७४७ । अपूर्ण वेष्टन स० १४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—ग्रन्थाग्रन्थ स० १७०० प्रशस्ति निम्न प्रकार । है—सवत् १७४० वर्षे मगसिर सुदी ६ । दिने लिखित शिष्य लालचन्द केन उदैपुरे ।

३७७२. मृगावती चरित्र—समयसुन्दर । पत्र स० २-४६ । ग्रा० १०×४¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय - चरित्र र०काल स० १६६८ । ले० काल स० १६८७ फागुण सुदी २ । अपूर्ण । वेष्टन स० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

३७७३. मृगावती चरित्र × । पत्रस० ३२ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ११५-६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

३७७४ यशस्तिलक चम्पू—ग्रा० सोमदेव । पत्र स० ४०४ । ग्रा० ११½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—काव्य । र०काल स० ८८१ (शक) वि० स० १०१६ । ले० काल स० १८५४ । पूर्ण । वेष्टन स० १ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७७५. प्रतिसं० २ । पत्रस० २४४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७ । **प्राप्ति स्थान**-भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७७६. प्रतिस० ३ । पत्रस० २६४ । ग्रा० १२½×५ इञ्च । ले० काल स० १८७६ पौष सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० २ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर आदिनाथ बूदी ।

विशेष—महात्मा फकीरदास ने खधारि मे प्रतिलिपि की थी ।

३७७७. प्रति स० ४ । पत्रस० २७० । ग्रा० १२×५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

३७७८. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ३६२ । ग्रा० १२×५½ इञ्च । ले० काल स० १७१६ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—सरवाड नगर मे राजाधिराज श्री सूर्यमल्ल के शासन काल मे आदिनाथ चैत्यालय मे श्री कनककीर्ति के शिष्य प० रायमल्ल ने प्रतिलिपि की थी । सस्कृत मे कठिन शब्दो का अर्थ भी है ।

३७७६. प्रति स० ६ । पत्र स० २०१-२८२ । आ० ११×५¾ इञ्च । ले० काल स० १४६० वैशाख बुदी १२ ।अपूर्ण । वेष्टन स० ३२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—नेमिचन्द्र मुनिना उद्दत हस्ते लिखापित पुस्तकमिद ।

३७८०. यशस्तिलक टिप्पण—× । पत्रस० ३५३ । आ० १२×८ इञ्च ।भाषा—सस्कृत । (गद्य) विषय—काव्य र० काल × । ले० काल स १६१२ । अषाढ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३७८१. यशस्तिलक चम्पू टीका—श्रुतसागर । पत्रस० ३० । आ० ११ × ७¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । ले० काल स० १६०२ ज्येष्ठ सुदी ३ । पूर्ण वेष्टनस० १०१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर

विशेष—सवाई मानसिह के शासन काल मे जयपुर के **नेमिनाथ चैत्यालय** मे (लश्कर) विजयचन्द की भार्या ने अष्टाह्निका व्रतोद्यापन मे प० झाझूराम से प्रतिलिपि करवाकर मन्दिर मे भेट किया ।

३७८२. यशोधर चरित्र—पुष्पदत । पत्र स० ७२ । आ० ११ ×५½ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२५५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—स० १६२६ मे चादमल सौगानी ने चढाया था ।

३७८३ प्रतिसं० २ । पत्रस० ८६ । आ० ११ ×४इञ्च । ले० काल स० १५६४ । पूर्ण । वेष्टन स०४८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—सवत् १५६४ फागुण सुदी १२ । श्री मूल सघे सरस्वती गच्छे कुदकुदाचार्यान्वये श्री धर्मचन्द्र की आम्माय मे खण्डेलवाल हरसिह की भार्या याशस्वती ने आचार्य श्री नेमिचन्द्र को ज्ञानावरणी क्षयार्थ दिया ।

३७८४ प्रतिस० ३ । पत्रस० १०७ । आ० १२ ×४½ इञ्च । ले०काल स० १५५६ पूर्ण । वेष्टनस० ३८६।३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सम्भवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—सवत् १५५६ वर्षे ज्येष्ठ बुदी ८ भौमे श्री मूलसघे सरस्वती गच्छे श्री कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्ति देवातत्पट्टे भट्टारक श्री भुवनकीर्ति देवातत्पट्टे भ० श्री ज्ञानभूषण देवा तद्भ्रातृ आ० श्री रत्नकीर्तिदेवा तत् शिष्य ब्रह्मरत्न सागर उपदेशेन श्रीमती गवार मन्दिरे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये हुवड ज्ञातीय श्री धना भार्या परोपकारिणी द्वादशानुप्रेक्षा चितन विधायिनी शुद्धशील प्रति पालिनी माजी नाम्मी स्वश्रेय श्रे०से श्री यशोधर महाराज चरित्र लिखाप्य दत्त ज्ञानावरणी कर्म क्षयार्थ शुभ भवतु । कल्याण भूयात् ।

३७८५. यशोधर चरित्र टिप्पणी—प्रभाचन्द्र । पत्रस० १२ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा – सस्कृत । विषय – चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १५७४ । अपूर्ण । वेष्टनस० ४८७ । **प्राप्ति स्थान**—जैन दि० मन्दिर सम्भनाथ उदयपुर ।

प्रशस्ति—सवत् १५७४ ज्येष्ठ सुदी ३ बुधे श्री हसपत्तने श्री वृषभ चैत्यालये श्री मूलसघे श्री भारती गच्छे श्री कुदकुदाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनदि त प देवेन्द्रकीर्ति त भ विद्यानदि नत्पट्टे भ मल्लिभूषण त प भ लक्ष्मीचन्द्र देवाना शिष्य श्री ज्ञानचन्द्र पठनार्थ श्री सिंहपुरा जाने श्रेष्ठि माला श्रेष्ठि माधव सुता वार हरखाइ तस्या पुत्र जन्म निमित्त लिखापित्त ।

३७८६. यशोधर चरित्र पीठिका— × । पत्रसं० १८ । आ० ११×६ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले०काल स० १६८६ । पूर्ण । वेष्टनस० २६५ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६८६ श्रावण वदी ११ दिने श्री मूलसघे भट्टारक श्री पद्मनंदी तत् गुरुभ्राता जैन ब्रह्मचारी लाडयका तत् शिष्य ब्रह्म श्री नागराज ब्रह्म लालजिष्णुना स्वहस्तेन पठनार्थं ।

३७८७. यशोधर चरित्र पीठवध—प्रभजनगुरु । पत्रस० २०२ । आ० ६×४½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल स० १६४४ । पूर्ण । वेष्टन स० ८८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६४४ फागुण सुदी ११ सोमे श्री सूरपुरे श्री आदिनाथ चैत्यालये ब्र० कृष्णा प० रामई आस्या लिखापित ।

अन्तिम पुष्पिका—इति प्रभजन गुराश्चरिते (रचिते) यशोधरचरित पीठिका वधे पचम सर्ग ।

३७८८. यशोधरचरित्र—वादिराज । पत्रस० २-२२ । आ० ११×५ इन्च । भाषा–सस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले०काल स० १६६२ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३२७ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मदिर उदयपुर ।

विशेष—सवत् १६६२ वर्षे माह सुदी १३ । शनौ श्री मूलसघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे थी कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री वादिभूषण तत् शिष्य प० वेला पठनार्थं शास्त्रमिद साहराम लखितमिद । लेखक पाठकयो शुभ भवतु ।

३७८६. प्रतिसं० २ । पत्रस० २० । आ० ६×४½ इच । ले०काल स० १५८१ । पूर्ण । वेष्टन स० ४८५ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स वत् १५८१ वर्षे श्रावण बुदी ७ दिने श्री मूलसघे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनदि तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्र देवा तदाम्नाये गोलारान्डान्वये प० श्री घनश्याम तत्पुत्र पडित सुखानन्द निजाध्ययनार्थमिद ग्र थ लिखापित ।

३७६०. यशोधर चरित्र—वासवसेन । पत्रस० ५१ आ० १०½×४½ इन्च । भाषा–सस्कृत । विषय–चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

३७६१. प्रतिस० २ । पत्रस० ७८ । आ० १०½ × ४½ इन्च । ले० काल स० १८०३ । पूर्ण । वेष्टन स० १४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

विशेष – जयपुर नगर मे महाराज सवाई ईश्वरसिह के राज्य मे प्रतिलिपि हुई ।

३७६२. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १७ । आ० १०½×४½ इन्च । ले०काल × । वेष्टन स० ७६३ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

३७९३. यशोधरचरित्र—पद्मनाभकायस्थ। पत्रस० ६०। आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—चरित्र। र० काल × । ले०काल स० १८६५ पौष सुदी ५ । पूर्ण। वेष्टन स० १५५१। **प्राप्ति स्थान** – भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

३७९४. प्रतिसं० २। पत्रस० ७९। ले० काल ×। पूर्ण। वेप्टन स० २७९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

३७९५. प्रति स० ३। पत्रस० ४१-७०। आ० ११$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्चे। भाषा-सस्कृत। विषय-चरित्र। र०काल ×। ले०काल स० १८४१ फागुण सुदी ६। वेष्टनस० १४६। अपूर्ण। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर।

३७९६. यशोधर चरित्र—पद्मराज। पत्र स० १-४०। आ० १२×४$\frac{1}{2}$। भाषा—सस्कृत। विषय—चरित्र। र०काल ×। ले०काल ×। वेष्टन स० ७४२। अपूर्ण। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर।

३७९७. यशोधर चरित्र—आचार्य पूर्णदेव। पत्रस० १८। आ० ६$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—चरित्र। र०काल ×। ले० काल स० १६७५ आसोज बुदी १३। पूर्ण। वेष्टनस० ६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वडा वीस पथी दौसा।

विशेष—पाडे रेखा पठनार्थ जोशी भ्रमरा ने प्रतिलिपि की।

३७९८. प्रतिसं० २। पत्रस० २८। आ० ६$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)।

विशेष—लेखत पद्म विमल स्वकीय वाचनार्थं

३७९९ प्रतिसं० ३। पत्रस० १३। आ० १०×५ इच। वेष्टनस० १४७। पूर्ण। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—कही २ कठिन शब्दो के अर्थ भी दिये गये हैं।

३८०० यशोधरचरित्र—सोमकीर्ति। पत्र स० २८। आ० ११×४ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—चरित्र। र० काल ×। ले० काल सं० १६५८। पूर्ण। वेष्टन स० ४८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० सभवनाथ जैन मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६५८ वर्षे चैत्र सुदी ३ भौमे जवाछा नगरे राजधिराज श्री चन्द्रभाणराज्ये श्री आदिनाथ चैत्यालये काष्ठासघे नन्दीतटगच्छे श्री रामसेनान्वये भ० सोमकीर्ति भ० यशः कीर्ति त० भ० उदयसेन त०भ० त्रिभुवनकीर्ति त०प०भ० रत्नभूपण आचार्य श्री जनसेन श्री जयसेन शिष्य कल्याणकीति तत् शिष्य ब्र० कचराकेन लिख्यते।

३८०१. यशोधर चरित्र—सकलकीर्ति। पत्रस० २२। आ० ६$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—चरित्र। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ११४२। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

३८०२. प्रतिसं० २। पत्रस० २९। आ० १२×५ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १५६। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर।

३८०३ **प्रतिसं० ३** । पत्रस० ६१ । आ० १०¼×४½ इच । ले० काल स० १८४६ । पूर्ण । वेष्टनस० २८ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—उदयपुर नगरे श्री तपागच्छे ।

३८०४. **प्रति स० ४** । पत्र स० ३८ । आ० ११ × ५ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १६४४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

३८०५. **प्रति स० ५** । पत्र स० ५५ । आ० १०×४ इन्च । ले० काल स० १६४१ । पूर्ण । वेष्टन स० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष– प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६४१ वर्षे पौष सुदी ७ भौमे ईलदुर्ग मध्ये लिखत चेला श्री धर्मदास लिखत गढराय सघ जीवनाथ वास्तव्य हुंवड ज्ञातीय कोठारी विजातत् भार्या र गा सुत जे स ग जीवराज इद पुस्तक ज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थं मुनि जयभूषण दत्त लिखापित ।

३८०६. **प्रतिसं० ६** । पत्रस० ३६ । आ० १०½ × ३½ इन्च । र० काल × । ले० काल स० १६७६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६२-१३६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूगरपुर ।

प्रशस्ति—सम्वत् १६७६ वर्षे कार्तिक सुदी ३ लिखित पुस्तक रामपुरा ग्रामे श्री आदिनाथ चैत्यालये श्री मूलस घे सरस्वती गच्छे कु दकु दाचार्यान्वये श्री ५ सकलचन्द तत्पट्टे गच्छ भार धुर धर भ० श्री पूरनचन्द तत् शिष्य ब्रह्म बूचरा वागड देशे वास्तव्य हूंवड ज्ञातीय सा० भोजा भार्या सिरधा भातृ भीया अचीड़ा ब्रह्म बूचरा कर्मक्षयार्थ इद्र यशोधर पुस्तक लिखापितं । शुभ भवतु ।

३८०७ **प्रति स० ७** । पत्र स० ३४ । आ० १०½×६ इच । ले० काल पूर्ण । वेष्टन × । स० ५१-४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

३८०८ **प्रति स० ८** । पत्र स० ८२ । आ० १३× ५½ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर ।

३८०९. **प्रति स० ९** । पत्रस० १२ । आ० १२×५½ इच । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०३/१८ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इंदरगढ (कोटा) ।

३८१० **प्रतिस० १०** । पत्रस० २४ । आ० ६½×४¾ इन्च । ले० काल स० १६५० । पूर्ण । वेष्टनस० १०१/१६ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

३८११ **प्रतिसं० ११** । पत्रस० ६६ । आ० १०½×४½ इन्च । ले० काल स० १८८० । वेष्टनस० ६८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

विशेष—टोडानगरे श्री श्याम मन्दिर प० शिवजीरामाय चौ० शिववक्सेन दत्त ।

३७१२. **प्रतिस० १२** । पत्र स० ८० । आ० १११×४ इन्च । ले० काल स० १८२१ चैत बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

३८१३. प्रतिसं० १३ । पत्रसं० ३५ । आ० १२½ × ६½ इञ्च । ले० काल सं० १८५६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपंथी दि० जैन मन्दिर नैणवा ।

विशेष—सं० १९३० मे भादवा सुदी १४ को घासीलाल ऋषभलाल वैद ने तेरहपंथियो के मन्दिर में चढाया ।

३८१४ प्रतिसं० १४ । पत्रसं० ४४ । आ० १०×५½ इञ्च । ले० काल सं० १९११ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ बूंदी ।

विशेष—बूंदी मे प्रतिलिपि की गई थी ।

३८१५. प्रतिसं० १५ । पत्र सं० ४० । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १७५५ द्वि० ज्येष्ठ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—नूतनपुर मे मुनि श्री लाभकीर्त्ति ने अपने शिष्य के पठनार्थं लिखा ।

३८१६. प्रतिसं० १६ । पत्रसं० ५४ । आ० ९½ × ४ ½ इञ्च । ले०काल सं० १८७७ प्र० ज्येष्ठ बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

संवत् १८४७ का वर्षे ज्येष्ट कृष्णपक्षे अष्टम्या शुक्रवासरे श्री नेमिनाथ चैत्यालये वृन्द्रावती मध्ये लिखित पं डूंगरसीदासजी तस्य शिष्यत्रय सदासुख, देवीलाल, सिवलाल तेषां मध्ये सदासुखेन लिपि स्वहस्तेन ।

३८१७ यशोधर चरित्र × । पत्र सं० २२ । आ० ११×४½ इञ्च भाषा—संस्कृत । विषय-चरित्र । । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३८१८. यशोधर चरित्र— × । पत्रसं० २ से २० आ० ११½×५ इञ्च भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल सं० १९१५ फागुन बुदी १० । पूर्ण । वेष्टनसं० १५६१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

३८१९. यशोधर चरित्र— × । पत्रसं० ४१ । आ० ११½ ×५¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १०७१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

३८२०. यशोधर चरित्र— × । पत्रसं० २० । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

३८२१. यशोधर चरित्र × । पत्रसं० १५ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ९४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

विशेष—दवलाणा मे प्रतिलिपि हुई । ३२७ श्लोक है ।

प्रारम्भ—प्रणम्य वृषभ देव लोकलोक प्रकाशक ।
अतस्तत्वोपदेष्टार जगत पूज्य निरंजन ॥
अर्हतस्त्रि जगतपूज्यान्नष्ट घाति चतु प्रणमयि ।
सदा सातान विश्व विघ्न प्रशातप ॥ २ ॥

अन्तिम—यस्याद्यापिच सिष्योय पूर्ण देवोमही तले ।
जगत मन्दिर मुहर्त कीर्तिस्तभी विराजते ॥ ३२६
सो व्याध्री सुव्रत सश्वत भव्यानाभक्ति कारिणा ।
पस्य तीर्थे समुत्पन्नयशोधर महीभुज ॥ ६२३ ॥

३८२२ **यशोधर चरित्र** — × । पत्रस० १३ । ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा-सष्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले०काल स० १८२६ ग्रासोज बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी) ।

३८२३. **यशोधर चरित्र** × । पत्रस० ११० । ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले०काल स० १८५५ चैत बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी बूदी ।

३८२४ **यशोधर चरित्र—विक्रमसुत देवेन्द्र** । पत्र स० १३५ । ग्रा० १०½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय—कथा । र०काल स० १६८३ । ले० काल स १७३१ । पूर्ण । वेष्टन स० ४३८-१६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

३८२५. **प्रति सं० २** । पत्रस० १७१ । ग्रा० १० × ४½ इञ्च । ले०काल स० १८३१ । पूर्ण । वेष्टन स० ५०-३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डुगरपुर ।

विशेष—प्रतापगढ़ मे लिखा गया ।

३८२६. **यशोधर** । पत्रस० २२ । ग्रा० ११½×५ इञ्च । ले०काल स० १६७० । पूर्ण । वेष्टनस० १४५-६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, कोटडियो का डूगरपुर ।

दोहा—सवत् सोरह से ग्रधिक सत्तर सावन मास ।
सुकलसोम दिन सप्तमी कही कथा मृदुमास ।।
ग्रडिल्ल—ग्रगरवाल वर वस गोसना थान को ।
गोइल गोत प्रसिद्ध चिन्हना ध्वान को ।।
माताचन्दा नाय पिता भैरो भन्यो ।
परिहाँन (द) कही मनमोहन ग्रगन गुन ना गन्यो ।। ६३ ।।

विशेष—ग्रन्य मे दो चित्र है जो सस्कृत ग्रन्थ के ग्राधार पर है ।

३८२७. **प्रति सं० २** । पत्रस० ३६ । ग्रा० ११ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । र०काल स० १६७० सावन सुदी ७ । ले०काल स० १८५२ ग्रपाढ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० ४२। २५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

३८२८ **प्रति स० ३** । पत्र स० २५ । ग्रा० १२×८ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६।२० **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर ग्रलवर ।

३८२९. **प्रतिस० ४** । पत्रस० ४२ । ले०कान स० १९४३ ग्रासोज सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ६७। १७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर ग्रलवर ।

३८३०. **प्रति स० ५** । पत्र स० ३४ । ले० काल स० २९११ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर ग्रलवर ।

३८३१ **प्रति स० ६** । पत्रस० ४६ । ले०काल स० १९२६ ग्रासोज सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६९/१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनपचायती मदिर ग्रलवर ।

३८३२. **प्रतिस० ७** । पत्र स० ४२ । ग्रा० १० × ५ इञ्च । ले० काल स० १७९५ ग्रषाढ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बयाना ।

विशेष—चूडामणि के वश मे होने वाले सा मुकुटमणि ने शास्त्र लिखवाया ।

३८३३. प्रति सं० ८ । पत्र स० २२ । ले०काल स० १८६७ चैत सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बयाना ।

३८३४. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ४५ । आ० ११×५$\frac{1}{4}$ इच । ले० काल स० १८१० । अपूर्ण । वेप्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वैर ।

३८३५. प्रति स० १० । पत्रस० ४६ । ले०काल स० १८२० पौष सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वसवा ।

३८३६. यशोधर चरित्र भाषा—खुशालचन्द काला । पत्र स० ६१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । र०काल स० १७८१ कार्तिक सुदी ६ । । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४८१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३८३७. प्रतिसं० २ । पत्रस० ५१ । आ० १२×८ इञ्च । ले० काल १६६० । पूर्ण । वेष्टन स० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर नैणवा ।

विशेष—सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि कराई थी ।

३८३८. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ७३ । आ० ६× ४$\frac{1}{2}$इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४४ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

विशेष—७३ से आगे के पत्र नही है ।

३८३९. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ८३ । आ० ६×४$\frac{1}{2}$ इच । ले०काल × । अपूर्ण ।वेष्टन स० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का नैणवा ।

३८४०. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ४६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का नैणवा ।

३८४१. प्रतिस० ६ । पत्र स० ८४ । आ० १०×४$\frac{1}{4}$ इच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

३८४२ प्रति स० ७ । पत्रस० स० ३६ । आ० १३× ५ इञ्च । ले० काले स० १८३० । पूर्ण । वेष्टनस० ११ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर वू दी ।

३८४३ पत्रस० ५८ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १९७६ । पूर्ण । वेष्टनस० ४३ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, वू दी । ,

३८४४ प्रतिसं० ६ । पत्र स० ४६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×८ । इञ्च । ले० काल स० १६२५ फागुन सुदी ५ । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक) ।

३८४५. प्रति स० १० । पत्रस० ७३ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १६४५ । वेष्टन स० २४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ कोटा ।

३८४६. प्रति स० ११ । पत्रस० ४५ । ले०काल स० १८०० वैशाख वुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ५७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३८४७. प्रति स० १२ । पत्र स० ५५ । आ० १०½×५½ इच । ले० काल स०१८१६ । वेष्टन स० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर ।

३८४८. प्रति स० १३ । पत्र स० ३४ । ले० काल स० १८१२ सावन सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० ९ ।**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—स्वामी सुन्दर सागर के व्रतोद्यापन पर पाण्डे तुलाराम के शिष्य पाण्डे माकचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

३८४९ प्रति स० १४ । पत्र स० ६९ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १८१७ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

३८५०. यशोधर चरित्र भाषा—साह लोहट । पत्र स० २–७९ । आ० ८½ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय–चरित्र । र० काल स० १७२१ । ले०काल स० १७५६ आसोज सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १७० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी) ।

विशेष–मुनि शिवविमल ने इन्द्रगढ मे प्रतिलिपि की थी । कवि ने बू दी मे ग्रन्थ रचना की थी । इसमे १३६९ पद्य है ।

३८५१ यशोधर चरित्र भाषा— × । पत्रस० ३९ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १६ (क) । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा ।

३८५२. यशोधर चरित्र भाषा— × । पत्र स० १०-४५ । आ० ९ × ६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी प० । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८८–९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बडा बीसपथी दौसा ।

३८५३ यशोधर चौपई— × । पत्रस० ६२ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बू दी ।

विशेष—गुटका आकार है ।

३८५४. रघुवश—कालिदास । पत्रस० १०८ । आ० १०½ × ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४७६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३८५५. प्रतिस० २ । पत्रस० १०९ । आ० ११½×४½ इच । ले०काल स० १७२७ माघ बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ६७० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३८५६ प्रति स० ३ । पत्र स० २२ से १०४ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३८५७ प्रति स० ४ । पत्र स० ६७ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल स० १८३ । पूर्ण । वेष्टन स० ८६-४६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

प्रशस्ति- सवत् १८३ वर्षे मास वैशाख वदी ३ गुरुवासरे देउगढ नगरे मल्लिनाथ चैत्यालये श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कु दकु दाचार्यान्वये भट्टारक श्री अमरचन्द्र तत्पट्टे भ०

श्री हर्षचन्द्र तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र तत्पट्टे भ० अमरचन्द्र तत्पट्टे भट्टारक श्री रतनचन्द तत्पट्टे भट्टारक श्री १०८ देवचद्र जी तत् शिष्य ब्र फतेचन्द जी रघुवश काव्य लिखापित ।

३८५८. प्रति स० ५ । पत्र स० ६० । आ० १०$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १७९९ अगहन सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० २४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना बू दी ।

विशेष—लूण्हरा नगर मे प्रतिलिपि हुई ।

३८५९. प्रति स० ६ । पत्रस० १९ । आ० ९×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक)

३८६०. प्रति सं० ७ । पत्र स० २–२७२ । आ० १०×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ९७/२२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—प्रति प्राचीन है लगभग स० १६०० की प्रतीत होती है ।

३८६१. प्रति स० ८ । पत्रस० ११३ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इच । ले०काल स० १८५१ । आषाढ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी) ।

विशेष—इन्द्रगढ मध्ये महाराजा श्री सन्मतिसिंह जी विजयराज्ये लिपिकृत ।

३८६२. प्रति स० ९ । पत्रस० ६१ । ले०काल स० १६६३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना (बू दी) ।

३८६३. प्रति स० १० । पत्र स० ३८ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३४० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी)

३८६४. प्रति स० ११ । पत्र स० ३० । अ० ११$\frac{1}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २३५ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

३८६५. प्रति सं० १२ । पत्रस० १४ आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२१ (१) । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

विशेष—द्विनीय सर्ग तक है ।

३८६६ प्रति स० १३ । पत्रस० ८ । आ० १०$\frac{1}{2}$×७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ९९ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नागदी बू दी ।

विशेष—द्वितीय सर्ग तक है ।

३८६७ प्रति सं० १४ । पत्रस० १२५ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । वेष्टनस० ६२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष— प्रति प्राचीन है ।

३८६८. प्रति स० १५ । पत्र स० १४२ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २२५ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

३८६९. प्रति स० १६ । पत्रस० ४–१३ । लेखन काल स० १७१५अपूर्ण । वेष्टन स० २२७ । **प्राप्ति स्थान**-- दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष—प्रारभ के ३ पत्र नही हैं ।

३८७०. प्रति स० १७ । पत्र स० ७२ । ग्रा० ८$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

३८७१. प्रति स० १८ । पत्र स० १६० । ले० काल स० १७६० फागुण सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

विशेष—रणछोडपुरी मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३८७२. प्रति स० १९ । पत्र स० २१ । लेखन काल × । अपूर्ण । वष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर हुण्डा वालो का डीग ।

३८७३. प्रतिस० २० । पत्र स० २२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

विशेष—मल्लिनाथ कृत सस्कृत टीका सहित केवल ८ वा अध्याय है ।

३८७४. प्रति स० २१ । पत्र स० २६ । ग्रा० १० × ६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

विशेष—४ सर्ग तक है ।

३८७५ रघुवश टीका—मल्लिनाथ सूरि । पत्र स० ६१ से ९० । ग्रा० १० × ४ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—काव्य । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १३-२२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—टीका का नाम सजीवनी टीका है ।

३८७६ प्रतिस० २ । पत्र स० १४ । ग्रा० १० × ४ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ बूदी ।

३८७७ प्रति स० ३ । पत्रस० १६२ । ग्रा० ११ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १८४६ माघ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी ।

विशेष—माधु सणदराज दादूपथी ने वृन्दावती मे प्रतिलिपि की थी ।

३८७८. प्रति स० ४ । पत्रस० १६५ । ग्रा० ११$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । ले० काल स० १८७९ श्रावण बुदी २ । वेष्टन स० २६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

३८७९. प्रति स० ६ । पत्रस० ६० । ग्रा० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८७-९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—द्वितीय सर्ग तक है ।

३८८०. प्रति स० ७ । पत्र स० २८१ । ग्रा० १०$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १७१५ कात्तिक वुदी ५ । पूर्ण । वेप्टन स० १८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति—सवत् १७१५ वर्षे शाके १६८० प्रवर्त्तमाने निगते श्री सूर्ये कातिग मासे शुक्लपक्षे पचम्या तिथौ वुधवासरे वशपुर स्थाने वासपूज्य चैत्यालये श्रीमत् काष्ठासघे नदीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री रामसेनान्वये भट्टारक श्री त्रिभुवनकीर्त्ति भ० रत्नभूपण त० भ० जयकीर्त्ति त०भ० कमलकीर्ति तत् पट्टोभरण भट्टारक श्री ५ भुवनकीर्त्ति तदाम्नाये पचनामधर मडलाचार्य आचार्य श्री केशवसेन तत्पट्टे मडलाचार्य श्री

विश्वकीर्त्ति तस्य लघु भ्राता आचार्य रामचद्र ब्र० जिनदास ब्र० श्री वलभद्र वाई लक्ष्मीमति पडित मायाराम पडित भूपत समन्वितान् श्री वलभद्र स्वय पठनार्थं लिखत ।

३८८१ प्रतिसं० ८ । पत्र स० ५० । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

३८८२. रघुवश टीका—समय सुन्दर । पत्र स० ३६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय–काव्य । र० काल स० १६९२ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी) ।

३८८३. रघुवश टीका— × । पत्रस० २-६४ । आ० ११ × ५¾ इञ्च । भापा—सस्कृत । विषय—काव्य । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १४७-६७ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

३८८४. रघुवश काव्य वृत्ति—सुमति विजय । पत्रस० २१८ । आ० १०×४ इञ्च । भापा-सस्कृत । विपय-काव्य । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

अन्तिम प्रशस्ति—इति श्री रघुवशे महाकवि कालिदासकृतौ पडित सुमतिविजय कृताया सुगमान्यप्रवोविकायामेकोनविंशति सर्ग समाप्ता ।

श्रीमन्न दिविजयाख्याना पाठकानाम भूधर ।
शिष्य:पुण्यकुमारेति नामा सपुण्यवारिधि ।।१।।
तस्याभवत् विनेयाश्च राजसारास्तु वाचका· ।
सज्जनोक्तक्रियायुक्ता वैराग्यरसर जिता ।।२।।
शिष्यमुखासु तेपा तु हेमधर्मा सदाह्वयः ।
शिष्टदिष्टा गुणाभिष्टा वभूव सावुमडले ।।३।।
सप्रत तद्विनयश्च जीया सुधी धनाचेइ ।
पाठकवादिवृ देन्द्रा श्रीमद् विनयमेरव ।।४।।
सुमतिविजयेनेव विहिता सुगमान्वया ।
वृत्तिर्वालवोधार्थं तेपा शिष्येण धीमता ।।५।।
विक्रमाख्ये पुरे रम्ये मीष्टदेवप्रसादत ।
रघुकाव्यस्य टीकाय कृता पूर्णा मया शुभा ।।६।।
निर्विग्रह रसशशिसवत्सरे फाल्गुन सितै—
कादश्या तिथौ सपूर्णा कीरस्तु मगल सदा कर्तु द्दीमान ।।७।।

ग्र थाग्र थ १३००० प्रमारण

प्रारम्भ—प्रणम्य जगदाधीश गुरु सदाचारनिरमल ।
वामागप्रभव ज्ञात्वा वृत्ति मन्यादि दष्ध्येय ।।
सुमतिविजयाख्येन क्रियते सुगमान्वया ।
टीका श्रीरघुकाव्यस्य ममेय शिशुहेतवे ।।२।।

३८८५ प्रति स० २। पत्रस० १४६। ग्रा० १२ × ५½ इञ्च। ले०काल × । ग्रपूर्ण। वेष्टनस० २३५। **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ कोटा।

३८८६. रघुवश काव्य वृत्ति—गुणविनय। पत्रस० ४१। ग्रा० ६¾×६ इञ्च। भापा—सस्कृत। विपय—काव्य। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १३३४। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर।

विशेष—तृतीय ग्रधिकार तक है।

३८८७. रघुवशसूत्र— ×। पत्र स० ६२। ग्रा० १० × ४ इञ्च। भापा-सस्कृत। विपय-काव्य। र०काल ×। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। वेष्टन स० ४५६। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर।

३८८८ रत्नपाल प्रबन्ध—ब्र० श्रीपति। पत्रस० ६२। ग्रा० ६½×४½ इञ्च। भापा—हिन्दी प०। विपय-चरित। र०काल स० १७३२। ले०काल स० १८३०। पूर्ण। वेष्टन स० ३३७-१३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

३८८९. प्रतिस० २। पत्र स० ५६। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १६-११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

३८९०. रसायन काव्य—कवि नाथूराम। पत्रस० १८। ग्रा० ९×५½ इञ्च। भापा—सस्कृत। विपय—काव्य। र०काल ×। ले० काल० ×। पूर्ण। वेष्टनस० ३८७-१४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

३८९१. राक्षस काव्य ×। पत्रस० ५। ग्रा० ११ × ५ इच। भापा-सस्कृत। विषय-काव्य। र०काल ×। ले० काल ×। वेष्टन स० ३०६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

३८९१.(क) प्रति स० २। पत्रस० ५। ग्रा० १०½ ×६ इञ्च। भापा—सस्कृत। विषय—काव्य। र०काल ×। ले०काल ×। वेष्टनस० ३१२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

३८९२. प्रतिसं० ३। पत्रस० ४। ग्रा० १०½×६ इच। भापा—सस्कृत। विपय-काव्य। र०कात ×। ले० काल ×। वेष्टन स० ३१३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

३८९३. राघव पाडवीय—धनंजय। पत्रस० २६९। ग्रा० १२ × ६ इच। भाषा-सस्कृत। विपय—काव्य। र०काल ×। ले० काल स० १८१३। पूर्ण। वेष्टन स० १२३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर ग्रादिनाथ वूदी।

ग्र थ का नाम द्विसधान काव्य भी है।

विशेष—चपावती नगर मे प्रतिलिपि हुई थी। चाटसु मध्ये कोटिमाहिल देहरे ग्रादिनाथचैत्यालये द्विसधान काव्य की पुस्तक पडितराज-शिरोमणि प० दोदराज जी के शिष्य पडित दयाचद के व्याखान के ताई लिखायो मान महात्मा कहूँ।

प्रति सस्कृत टीका सहित है।

३८९४. राघव पाण्डवीय टीका—नेमीचन्द। पत्रस० ४०९। ग्रा० ११×४½ इञ्च। भापा—सस्कृत। विपय-काव्य। र०कात ×। ले० काल स० १६५६। पूर्ण। वेष्टन स० १२३०। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, ग्रजमेर।

विशेष—शेरपुर नगर मे राजाधिराज श्री जगन्नाथ के शासन मे खडेलवाल ज्ञातीय पहाडया गोत्रवाले डाडुकी भार्या लाडमदे ने यह ग्र थ लिखवाया था।

पाण्डुलिपि मे द्विसधान काव्य नाम भी दिया हुआ है।

३८६५. प्रतिसं० २। पत्रस० ५८। आ० १२×५ इञ्च। ले० काल स० १८२३। पूर्ण। वेष्टन स० ३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा।

विशेष—जयपुर मे प्रतिलिपि की गई थी।

३८६६. राघवपाण्डवीय टीका-चरित्रवर्द्धन। पत्रस० १४-१४५। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—काव्य। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० ३२६। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

३८६७ राघव पांडवीय—कविराज पडित। पत्रस० ५०। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-काव्य। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६७१। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—इति श्री हलधरणीप्रसूत कादवकुलतिलक चक्रवर्त्ति वीर श्री कामदेव प्रोत्साहित कविराज पडित विरचिते राघवपाण्डवीये महाकाव्ये कामदेव्याके श्रीरामयुधिष्ठिर राज्यप्राप्ति नाम त्रयोदश सर्ग। ग्र थ स० १०७०।

३८६८. राघव पांडवीय टीका— ×। पत्रस० १-४५। आ० ११ × ४ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-काव्य। र० काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ४८१/१८। **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

३८६६. वरांग चरित्र-तेजपाल। पत्रस० ५६। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा-अपभ्र श। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ११६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

३६००. वरांगचरित्र—भट्टारक वर्द्धमानदेव। पत्रस० ७८। आ० ८½×५¾ इञ्च। भाषा—स स्कृत। विषय—चरित्र। र० काल ×। ले० काल स० १८१२ पौष सुदी २। पूर्ण। वेष्टनस० १२०१। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

३६०१. प्रति स० २। पत्र स० ५५। आ० ११½ × ५ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

३६०२. प्रतिसं० ३। पत्र स० ५५। आ० ११ × ५ इञ्च। ले० काल स० १६८०। पूर्ण। वेष्टन स० १५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६८० वर्षे श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री गुण-कीर्त्ति तत्पट्टे भ० वादिभूषण तत्पट्टे भ० रामकीर्ति तत् गुरूभ्राता पुण्यधाम श्री गुणभूषण वराग चरित्रमिद पठनार्थं।

३९०३. प्रति सं० ४ । पत्रस० ८९ । आ० १२×४½ इच । ले०काल स० १६६० ज्येष्ठ सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० २९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

विशेष—राजमहल नगर मे महाराजा मानसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३९०४. प्रतिसं० ५ । पत्र स ५९ । आ० १२⅞×५ इञ्च । ले० काल स० १८६९ सावन बुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ६१/५२ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर सौगाणी करौली

विशेष—करौली मे लिखा गया था ।

३९०५. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ७९ । आ० १०⅞×४⅞ इञ्च । ले० काल स० १८२३ । पूर्ण । वेष्टनस० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—सोमचन्द और भोजीराम सिंघल अग्रवाल जैन ने करौली मे प्रतिलिपि करवायी थी ।

३९०६. प्रतिसं० ७ । पत्र स० ५७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—दयाराम के पठनार्थ लिखी गई थी ।

३९०७. प्रतिसं० ८ । पत्र स० ६८ । ले० काल स० १८१४ आषाढ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—प० लालचन्द जी बिलाला ने प्रतिलिपि की थी ।

३९०८. प्रतिसं० ९ । पत्रस० ७५ । आ० ९×५ इञ्च । ले० काल स० १८३८ भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बू दी) ।

विशेष—गोठडाग्रामे चन्द्रप्रभ चैत्यालये लिखित व्यास रूपविमल शिष्य भाग्यविमल ।

३९०९. प्रतिसं० १० । पत्र स० ६२ । आ० ११⅞×४⅞ इञ्च । ले० काल स० १५४६ आश्विन बुदी ११ । वेष्टन स० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष-स० १५४६ वर्षे आश्विन बुदि ११ भूमवासरे लिखित माथुरान्वय कायस्थ श्री गोइद तत् पुत्र श्री गूजर श्री हिर जयपुर नगरे । जलवानी सुलितान अहमद साहि तत्पुत्र सुलितान महमदसाहि राज्य प्रर्वत्तमाने ।

३९१०. प्रतिस० ११ । पत्र स० ४२ । आ० १३ × ५ इन्च । ले० काल १६०० वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—सागानेर मे राव सागा के राज्य मे लिखा गया था ।

३९११. प्रतिस० १२ । पत्र स० ७० । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल स० १८४५ आषाढ बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—जयपुर प्रतिलिपि' हुई थी ।

३९१२ प्रति स० १३ । पत्रस० ३२ । आ० १२×५½ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति वाला पत्र नही है ।

३९१३ वराग चरित्र—कमलनयन । पत्र स० १२१ । आ० ९×५½ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय-काव्य । र०काल × । ले० काल स० १९३८ कार्त्तिक बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ९९१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—ग्र थ प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

जाति बुढेलेवस पट्ट, मैनपुरी सुखवास ।
नागएवार कहावते, कासियो तसु तासु ।।
नदराम इक साहु तह, पुरवासिन सिर मौर ।
है हरचद सुदास तह, वैद्य क्रियाघर और ।
तिनही के सुत दोय हैं, मापू तिनके नाम ।
क्षितपति दूजो **कजहग**, धरै भाव उर साम ।
लघु सुत कीनी जह कथा भाषा करि चित ल्याय ।
मङ्गल करौ भवीन कौ, हूजे सब सुखदाय ।
एन समै घरतै चलिकै वरवास कियो तु पराग मझारी ।
हीगामल सुत लालजी तासो तहा धर्म सनेह बाढा अधिकारी ।
तह तिनको उपदेशहि पायकै कीनी कथा रुचि सौं! सुविचारी ।
होहु सदा सब कौ सुखदायक राम वराग की कीरति भारी ।

दोहा—

सवत नवइते सही सतक उपरि फुनि भाषि ।
युगम सप्त दोउधरी अकवाम गति साखि ।
इह विधि सव गन लीजिये करि विचार मन वीच ।
जेठ सुदी पूनौ दिवस पूरन करि तिहि खीच ।।

इति लिपिकृत प० साखूरिणस्थ अमीचन्द शिप्य जूगराज वारावकी नवावगजमध्ये सवत् १९३८ का कार्तिक कृप्णा ७ ।

३९१४. वरांग चरित्र—पाडे लालचन्द । पत्रस० ६६ । आ० १२½×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । र०काल स० १८२७ माह सुदी ५ । ले०काल स० १८८३ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सौगाणी करौली ।

विशेष—व्रजलाल ठोल्या ने गुमानीराम से करोली मे प्रतिलिपि करवाई थी ।

३९१५. प्रति स० २ । पत्र स० ८५ । आ० ११¾×५¾ इञ्च । ले० काल स० १८३५ आषाढ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

३९१६. प्रति सं० ३ । पत्रस० १०४ । आ० ११×५½ इ च । ले० काल स० १८३३ वैशाख सुदी ७ । अपूर्ण । वेष्टन स० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—१०३ वा पत्र नही है । मोतीराम ने अपने पुत्र प्राणसुख के पठनार्थ बुधलाल से नगर रूदावल मे लिखवाया था ।

३९१७. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ९३ । आ० ११½×६ इञ्च । ले०काल स० १८८३ भादवा बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—अलवर मे प्रतिलिपि की गई थी ।

३९१८. प्रतिसं० ५ । पत्रस० १०१ । आ० ८½×६ इञ्च । ले० काल स० १८७५ वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

विशेष-पाडे लालचन्द पाडे विश्वभूषण के शिष्य थे तथा गिरनार की यात्रा से लौटने समय हिंडौन तथा श्री महावीरजी क्षेत्र पर यात्रार्थ आये एव नथमल विलाला की प्रेरणा से ग्र थ रचना की। इसका पूर्ण विवरण प्रशस्ति मे दिया हुआ है।

३६१६. वड्ढमाण (वर्द्धमान) काव्य—जयमित्रहल। पत्रस० १–५५। आ० १०×४¾ इञ्च। भाषा-अपभ्र श। विषय–काव्य। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा।

विशेष—पचम परिच्छेद तक पूर्ण है।

३६२० प्रतिस० २। पत्र स० ४६। आ० ११× ५ इञ्च। ले० काल स० १५४६ पौष बुदी २। पूर्ण। वेष्टन स० २८०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा।

विशेष—गोपाचल दुर्ग मे महाराज मानसिंह के राज्य मे जैसवाल ज्ञातीय साधु नाइक ने प्रतिलिपि करवाई थी।

३६२१. वर्द्धमान चरित्र—श्रीधर। पत्रस० ७८। आ० ११½×४½ इञ्च। भाषा–अपभ्र श। विषय-चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० १६/१३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)

विशेष—१० वा परिच्छेद का कुछ अ श नही है।

३६२२. वर्द्धमान चरित्र—असग। पत्र स० १११। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय— चरित्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

३६२३. वर्द्धमान चरित्र—मुनि पद्मनन्दि। पत्र स० ३५। आ० ६½×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—चरित्र। र० काल ×। ले०काल × पूर्ण। वेष्टन स० २८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बू दी।

विशेष—इति श्री वर्द्धमानकथावतरे जिनरात्रिव्रतमहात्म्यप्रदर्शके मुनि पद्मनन्दिविरचिते मुन सुखनामाकिते श्री वर्द्धमान निर्वाण गमन नाम द्वितीय परिच्छेद समाप्त।

३६२४. वर्द्धमान चरित्र—विद्याभूषण। पत्रस० २३६। आ० १०×५¾ इच। भाषा—सस्कृत। विषय—चरित्र। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६०/३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर।

३६२५. वर्द्धमान चरित्र—सकलकीर्त्ति। पत्र स० १४५–२१०। आ० १२×४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय-चरित्र। र०काल ×। ले० काल स० १६५६ जेष्ठ सुदी २। अपूर्ण। वेष्टन स० ३२२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी।

विशेष—मालपुरानगरे माधवसिंह राज्ये चन्द्रप्रभ चैत्यालये · लिखित। प्रति जीर्ण हो चुकी है।

३६२६. प्रतिसं० २। पत्रस० १०३। आ० १२½×६ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी।

३९२७. प्रति स० ३ । पत्र स० ५-११ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३०४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

३९२८. प्रति सं० ४ । पत्र स० १३२ । आ० १०½×४¾ इञ्च । ले० काल स० १८५८ चैत्र सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० १६४, २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—इन्द्रगढ मध्ये महाराजा शिवदानसिह के राज्य मे ज्ञान विमल ने प्रतिलिपि की थी ।

३९२९. वलि महानरेन्द्र चरित्र—× । पत्र स० ६६ । भाषा-सस्कृत । विषय-जीवन चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५९४ । **प्राप्ति स्थान—दि०** जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३९३० विक्रम चरित्र—रामचन्द्र सूरि । पत्र स० ५६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल स० १४८० । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

३९३१. विक्रम चरित्र चौपई—भाऊ कवि । पत्र स० २५ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल × ले० काल स १५८८ । पूर्ण । वेष्टन स० २८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना बूदी ।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—दूहा—नमो नमो तुम्ह चन्डिका तुम गुन पार न हु ति ।
एकचित्त लिउ सुमरता सुख सम्पति पामति ।
तइहेज महिषासुर ववि‍उ देत्यज मोडयामान ।
जाणु शभु निशभुना तइ हरिया तसु प्राण ।

अन्तिमभाग—

स वत् पनर अठासिइ तिथि वलि तेरह हु ति ।
मगसिर मास जाण्यो रविवार जते हु ति ।
चडी तणइ पसाउ सचढुउ प्रवन्ध प्रमाण ।
उवझाय भावे भणइ वातज आवा ठाण ।
इति विक्रमचरित्र चौपई ।

३९३२. विजयचन्द चरिय— × । पत्र स० ८ । आ० १० × ४¾ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

३९३३. वृषभनाथ चरित्र—सकलकीर्ति । पत्र स० १४९ । आ० १२½ × ६ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १८३९ फागुण सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० १२७३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३९३४. प्रतिसं० २ । पत्र स० १८९ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल स १७९३ आसोज सुदी १४ । अपूर्ण । वेष्टन स० २४६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—सासवाली नगर मध्ये राज्ञ श्री मानसिंघाख्यमत्रिणो धर्ममूर्तय सा श्री सुखरामजी श्री वखतरामजी श्री दोलतरामजी तेपा सहायेन लिखित । मुनिधर्मविमल ने प्रतिलिपि की थी ।

३६३५. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ३०६ । आ० १०$\frac{1}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १६७५ । पूर्ण । वेष्टनस० ७१८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—सवत् १६७५ मगसिर सुदी ३ के दिना आदिपुराण सा नानो मौसो वेगो को घटापित वाई भनीरानो मोजावाद मध्ये ।

३६३६. प्रति स० ४ । पत्रस० ४८/८० । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर ।

३६३७. प्रतिस० ५ । पत्र स० ६–४७ एव १०३ से १३७ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर ।

३६३८. प्रतिसं० ६ । पत्र स० १८६ । आ० ११× ५ इञ्च । ले० काल स० १७६६ । पूर्ण । वेष्टन स० २०६।१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—स० १७६६ कार्तिक सुदी ११ को उदयपुर मे श्री राणा जगतसिंह के शासन काल मे श्वेतावर पृथ्वीराज जोधपुर वाले ने प्रतिलिपि की थी । ग्रन्थाग्रन्था । ४६२८ । रोटीदास गाधी ने ग्रन्थ भेंट दिया था ।

३६३९. प्रति सं० ७ । पत्र स० १०६ । आ० १०×६$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल स० ११०-५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का, डूगरपुर ।

३६४०. प्रतिस० ८ । पत्र स० १७१ । आ० १० $\frac{3}{4}$ × ४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० कान स० १७४१ आपाढ बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

३६४१. प्रति स० ९ । पत्रस० १४८ । आ० ११ $\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले०काल स० १५७५ । पूर्ण । वेष्टन स० १०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का नैणवा ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—सवत् १५७५ वर्षे आश्विन मासे कृष्णपक्षे पचम्या तिथौ श्री गिरिपुरे पौथी लिखी । श्री मूलस घे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे श्री कुदकुदाचार्यान्वये भ० विजयकीर्ति तत् शिष्य आ हेमचन्द पठनार्थं आदिपुराण श्री स घेन लिखाप्य दत्त ।

३६४२. प्रति स० १० । पत्रस० १३४ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५ $\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का नैणवा ।

विशेष—१३४ से आगे के पत्र नही हैं ।

३६४३ प्रतिसं० ११ । पत्रस० २५७ । आ० १०× ६ $\frac{1}{4}$ इञ्च । ले० काल स० १८२२ आसोज सुदी ३ । पूर्ण । वेप्टन स० ३०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३६४४ विद्वद्भूषणकाव्य— × । पत्रस० १५ । आ० १०×४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भापा-सस्कृत । विषय—काव्य । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

३६४५. शतश्लोक टीका—मल्लभट्ट । पत्रस० ११ । आ० ११$\frac{1}{4}$×५$\frac{1}{4}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

३९४६. शांतिनाथ चरित्र— × । पत्रस० १२८ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत गद्य । विपय-चरित्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—श्वेताम्बर आम्नायका ग्र थ है । १२८ से आगे पत्र नही है ।

३९४७. शांतिनाथचरित्र—अजितप्रभसूरि । पत्र स० १२६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल स० १३०७ । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३३४८. प्रतिसं० २ । पत्रस० १८९ । आ० ११×४½ इञ्च । ले० काल स० १८५१ । पूर्ण । वेप्टन स० ४०१ । **प्राप्तिस्थान**-दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३९४९. शांतिनाथ चरित्र—आणंद उदय । पत्रस० २७ । आ० १०½ ×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) ।विपय-चरित्र । र०काल स १६६८ । ले०काल स० १७६९ श्रावण बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० ३२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना बू दी ।

३९५०. शांतिनाथ चरित्र—भावचन्द्र सूरि । पत्रस० १३८ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत (गद्य) । विषय-चरित्र । र०काल × । ले० काल १५३५ भादवा बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० १५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—भावचन्द्र सरि जयचन्द्र सूरि के शिष्य तथा पार्श्वचन्द्र सूरि के प्रशिष्य थे ।

३९५१. प्रति स० २ । पत्रस० १२८-१७२ । आ० १०½×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३९५२. शांतिनाथ चरित्र—सकलकीर्ति । पत्र स० १८३ । आ० १२×५ इ च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल स० १८६८ भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १२५१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—अजमेर नगर मे नेमीचन्द जी कासलीवाल ने प्रतिलिपि करायी थी ।

३९५३. प्रतिसं० २ । पत्र स० १९७ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले० काल स० १८७० आपाढ सुदी ११ । पूर्ण । वे० स० ७१३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—महारोठ नगरे महाराजाधिराज महाराजा मानसिंह जी राज्ये प्रवर्तमाने मिडत्यासाखे महाराज श्री महेसदास जी श्री दुर्जनलाल जी प्रवर्तमाने खडेलवाल जातीय ला० सिंभुदाम जी ने प्रतिलिपि कराई ।

३९५४. प्रति सं० ३ । पत्रस० १९७ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल × पूर्ण । वेष्टन स० १५७८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

३९५५. प्रतिसं० ४ । पत्र स० १८६ । आ० १०½ × ४¾ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १८४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३९५६. प्रतिसं० ५ । पत्र स० १२४ । आ० १२×६½ इञ्च । ले०काल १८०९ कार्तिक बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १०५१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

३६५७. प्रति स० ६ । पत्रस० ३२५ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल स० १७२६ पौष बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन प० २५५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—जोधराज गोदीका के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

३६५८. प्रति स० ७ । पत्र म० १८३ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले०काल १६६० । पूर्ण । वेष्टन स० १००/४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

प्रशस्ति—सवत् १६६० वर्षे आषाढ सुदि १२ शुक्रे सागवाडा शुभस्थाने श्री आदिनाथ चैत्यालये श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुदकुदाचार्यान्वये मडलाचार्य श्री गुणचद्र तत्पट्ट मडलाचार्य श्री जिनचद्र तत्पट्टे म० श्री सकलचन्द तदाम्नाये स्थविराचार्य श्री मल्लिभूषण आचार्य श्री हेमकीर्त्ति तत् षिष्य बाई कनकाए बारसै चोतीस श्री शातिनाथ पुराण ब्र० श्री भोजा ने लिखापि दत्त ।

३६५६. प्रति स० ८ । पत्र स० ६-१६६ । आ० ११ × ४½ × ५ इञ्च । ले० कालस० १६१० । अपूर्ण । वेष्टन स० ३७२।१५ **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६१० वर्षे शाके १४७५ प्रवर्तमाने मेदपाट मध्ये जवाछस्थाने आदीश्वर चैत्यालये लेखक सहजी लिखत्त । श्री मूलसघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनदि तत्पट्टे भ० श्री सकलकीर्ति तत्पट्टे भवनकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री ज्ञानभूषण तत्पट्टे श्री विजयकीर्ति तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र तदाम्नाये ब्रह्म श्री जिणदास तत् पाट ब्र० श्री शातिदास तत्पाट ब्र० श्री हसा तस्य शिष्या बाई घनवती बाई श्री लतमती चरणकमल मधुनतावस्या चैली बाई घनवती कर्मक्षयार्थं पठनार्थ इद पुस्तक लिखापित ।

३६६०. प्रति स० ६ । पत्रस० १४४ । आ० ११ × ४ इञ्च । ले०काल स० १५६४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१६ । **प्राप्ति स्थान**-सम्भवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—सवत् १५६४ वर्षे भादवा सुदी ११ शुक्ले श्री मूलसघे श्री गिरिपुरे श्री आदिनाथ चैत्यालये हुबड ज्ञातीय खरजा गोत्रे बुहरा गोपा भार्या माणवयदे तस्य पुत्री रमा तस्य जमाई गाघी वाछा भार्या नाथी श्री शातिनाथ चरित्र लिखाप्य दत्त । कर्म क्षयार्थं शुभ भवतु । कुदकुदाचार्यान्वय भट्टारक श्री सकलकीर्ति तत्पट्टे भ० श्री भुवनकीर्ति तत्पट्टे भ० ज्ञानभूषण तत् शिष्य आचार्य श्री नेमिचन्द्र त. सु श्री गुणकीर्ति । भट्टारक श्री पद्मनदिभि ब्र० अमराय प्रदत्त पुस्तकमिद ।

किनारो पर दीमक लग गई है किन्तु ग्रन्थ का लिखा हुआ भाग सुरक्षित है ।

३६६१. प्रतिसं० १० । पत्रस० ८० से १२८ । आ० १३ × ५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १७३ । **प्राप्ति स्थान**—सम्भवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३६६२ प्रतिसं० ११ । पत्रस० १६६ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—ग्रन्थ मे १६ अधिकार है । ग्रन्थाग्रन्थ स० ४३७५ है ।

३६६३ प्रति स० १२ । पत्रस० ६०-१४० । आ० १० × ४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस०१३० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर आदिनाथ बूदी ।

३९६४. शातिनाथ-चरित्र—मुनिदेव सूरि । पत्रस० ११८ । आ० १०½×४½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल स० १५१३ । पूर्ण । वेष्टन स० ११८ । **प्राप्ति-स्थान**-खण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

३९६५. शातिनाथ चरित्र भाषा—सेवाराम । पत्र स० २३० । आ० ११×६½ इन्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–चरित्र । र०काल स० १८३४ श्रावग बुदी ८ । ले० काल स० १८८७ । पूर्ण । वेष्टन स० ९-८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

विशेष—

देश ढूढाहड आदि दे स बोधे बहुदेस,
रची रची ग्रन्थ कठिन टोडरमल्ल महेश ।
ता उपदेश लवास ताही सेवाराम सयान,
रच्यो ग्रन्थ रुचिमान के हर्ष हर्ष अधिकान ।। २३ ।।
स वत् अष्टादस शतक फुनि चौनीस महान ।
सावन कृष्ण अष्टमी पूरन कियो पुरान ।
अति अपार सुखसो वसे नगर देव्याढ सार,
श्रावक बसे महाधनी दान पूज्य मतिधार ।। २४ ।।

३९६६. शालिभद्र चरित्र—प० धर्मकुमार । पत्रस० १५ । आ० १०½×४ इन्च । भाषा–सस्कृत । विषय–चरित्र । र०काल × ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

३९६७. शालिभद्र चौपई—जिनराज सूरि । पत्रस० २८ । भाषा–हिन्दी । विषय–चरित्र । र०काल स १६७८ आसोज बुदी ६ । ले० काल स० १७९९ चैत बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६४० । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३९६८. प्रति सं० २ । पत्र स० २५ । ले० काल स० १७९९ । पूर्ण । वेष्टन स० ५०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

३९६९. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २१ । ले०काल स० १७९९ । पूर्ण । वेष्टन स० ५६१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

३९७०. प्रतिसं० ४ । पत्र स० १६ । आ० ११×४½ इन्च । ले०काल स० १८७८ । पूर्ण । वेष्टनस० १९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कामा ।

३९७१. शिशुपालवध--माघ कवि । पत्र स० १९ । आ० १२×४½ इन्च । भाषा–सस्कृत । विषय–काव्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५९७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—४ सर्ग तक है ।

३९७२ प्रतिस० २ । पत्र स० ७० । आ० १० × ५ इन्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १४४० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—अन्तिम पत्र नही है । प्रति प्राचीन है ।

३९७३. **प्रतिस० ३** । पत्र स० ३६-१८२ । आ० ११¾×५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

३९७४ **प्रतिसं० ४** । पत्रस० ३०७ । आ० ११×६ इञ्च । ले०काल स० १८८० । वेष्टनस० २६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैनमन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—लश्कर के मन्दिर मे प० केशरीसिंह के शिष्य · ने देवालाल के पढने के लिए प्रतिलिपि की थी ।

३९७५. **प्रतिसं० ५** । पत्र स० १०६ । आ० १२½×५ इच ।ले०काल स० १८३९ । वेष्टन स० २६७ । **प्राप्ति स्थान**—दिं० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष-जयपुर नगर मे श्री ऋषभदेव चैत्यालय मे प० जिनदास ने स्वपठनार्थं प्रतिलिपि की थी ।

३९७६. **प्रतिसं० ६** । पत्र स ५ । आ० १०½× ५ इञ्च । ले०काल × । प्रथम सर्ग पूर्ण । वेष्टन स० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

३९७७. **प्रतिसं० ७** । पत्रस० १७ । आ० १०× ७ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३४/१६ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर दूनी (टोक) ।

३९७८ **प्रतिसं० ८** । पत्रस० ९ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल × पूर्ण । वेष्टन स० १८८-७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

३९७९. **शिशुपालवध टीका—मल्लिनाथ सूरि** । पत्रस० २२ । आ० १३× ६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

३९८०. **श्रीपाल चरित्र—रत्नशेखर** । पत्र स० ३८ । आ० ९½×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-कथा । र०काल स० १४२८ । ले०काल स० १६९९ चैत सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० २१४ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष—स० १६९९ वर्षे चैतसित त्रयोदस्या तिथौ गुरु दिने । गणिगण गघसिंधु रायमणे गणेन्द्र गणि श्री रूपचन्द शिष्य मुक्ति चदगा लिलेखि । पुस्तक चिरजीयात । लिखित घनेरीया मध्ये ।

३९८१. **प्रति स० २** । पत्र स० ९४ । ले० काल स० १८८४ आसौज सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ६३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—हिन्दी (गुजराती मिश्रित) अर्थ सहित है ।

३९८२. **प्रति स० ३** । पत्र स० ९१ । ले० काल स० १८७६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३९८३. **श्रीपाल चरित्र—प० नरसेन** । पत्र स० ३७ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा-अपभ्र श । विषय-चरित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३९८४. **प्रति सं० २** । पत्र स० ४६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-अपभ्र श । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३६८५. **श्रीपाल चरित्र—जयमित्रहल** । पत्र स० ६० । आ० ११ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-अपभ्र श । विषय-चरित्र । र०काल × । ले० काल स० १६२३ आषाढ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—भैरवदास ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी ।

३६८६. **श्रीपाल चरित्र—रइधू** । पत्र स० १२५ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा-अपभ्र श । विषय-काव्य । र०काल × । ले० काल स० १६०६ आसोज बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बू दी ।

विशेष—शुक्रवासरे कुरु जागल देसे श्री सुर्णपथ शुभस्थाने सुलितान श्री सलेमसिह राज्य प्रवर्तमाने श्री काष्ठासघे माथुरान्वये पुष्कर गणे उभयभाषाप्रवीण तपोनिधि भट्टारक श्री उद्धरसेनदेवा तत्पट्टे भ० श्री धर्मसेनदेवा तत्पट्टे श्री गुणकीर्त्ति देवा तत्पट्टे भ० श्री यशोकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे श्री मलयकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री गुणभद्रसूरीदेवा तत्पट्टे भानुकीर्तिदेवा ।

३६८७. **श्रीपाल चरित्र—सकलकीर्त्ति** । पत्र स० ३५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल स० १५ वी शताब्दी । ले० काल स० १६६४ । पूर्ण । वेष्टन स० २०५-८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

प्रशस्ति—स वत १६६४ वर्षे महासुदि १० सोमे श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्त्तिस्तदन्वये भट्टारक श्री रामकीर्त्तिस्तत्पट्टे भट्टारक श्री पद्मनदि स्तदाम्नाये ब्रह्म श्री लाड्यका तत्सिष्य मुनि श्री धर्मभूषण तत्सिष्य ब्रह्म मोहनाय श्रीईडर वास्तव्य हूँवड ज्ञातीय गग्य गोत्रे लघु साख्यया तबोली आखिराज भार्या उत्तमदे तयो सुत लाधा तथा लट्ठूजी एतै स्वज्ञानावरणीय कर्म्म क्षयार्थं श्रीपालाख्ये चरित्र लिखाप्य दत्त ।

३६८८. **प्रति सं० २** । पत्र स० ४६ । आ० ११×४ इञ्च । ले० काल स० १८३१ । पूर्ण । वेष्टन स० ११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

३६८९ **प्रति स० ३** । पत्र स० ४५ । आ० ११$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल स० १७६८ । वेष्टन स० २०० । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति अच्छी है ।

३६९०. **प्रति सं० ४** । पत्र स० ३६ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल स० १६४८ । पूर्ण । वेष्टन स० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

विशेष—ग्र थाग्र थ स० ८८४ । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स ० १६४८ वर्षे श्रावण सुदी ८ शनिवासरे वडोद शुभस्थाने श्री मूलस घे सरस्वतीगच्छे बलात्कार गणे श्री नेमिजिनचैत्यालये भ० अभयनदिदेवाय तत्सिष्य आचार्य श्री रत्नकीर्ति पठनार्थं । श्रीपालचरित्र लिखित जोसी जानार्दन ।

३६९१. **प्रतिसं० ५** । पत्रस० ३२ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स ० १८७८ श्रावण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

विशेष-टोडा नगर के श्री सावला जी के मन्दिर मे प० शिवजीराम के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी । प्रति जीर्ण है ।

३६६२. प्रति स० ६ । पत्रस० ५३ । आ० १० X ५½ इञ्च । ले०काल स० १६३६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटयो का नैणवा ।

३६६३. प्रति स० ७ । पत्रस० ३८ । आ० १२ X ४ इञ्च । ले०काल स० १७७३ माघ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनस० २१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बू दी ।

विशेष—प० मयाराम ने परानपुर के पार्श्वनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी ।

३६६४. श्रीपाल चरित्र—ब्र० नेमिदत्त । पत्रस० ६६ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-चरित । र०काल स० १५८५ आषाढ सुदी ५ । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टनस० १४३६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

३६६५. प्रतिसं० २ । पत्र स० ६० । आ० ११ X ५½ इञ्च । ले०काल स० १६०५ मगसिर सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १२८६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

३६६६ प्रति स० ३ । पत्र स० ६६ । आ० १२ X ५ इच । ले० काल स० १८३२ सावन बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १३१६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

३६६७ प्रतिसं० ४ । पत्र स० ५५ । आ० १२ X ५ इञ्च । ले०काल स० १८१६ । पूर्ण । वेष्टन स० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर ।

३६६८. प्रति स० ५ । पत्रस० ८३ । ले० काल स० १८१८ । पूर्ण । वेष्टन स० २७५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर मे आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की गई थी ।

३६६६. प्रति स० ६ । पत्र स० ६६ । आ० ६½X४½ इञ्च । ले० काल स० १८८५ । अपूर्ण । वेष्टन स० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बू दी ।

४०००. प्रतिसं० ७ । पत्र स० २५ । आ० ६½ X ५½ इञ्च । ले०काल X । अपूर्ण । वेष्टनस० १०८–१७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

४००१. प्रतिस ० ८ । पत्र स० १३५ । आ० १०X४½ इञ्च । ले० काल स० १८७६ जेष्ठ सुदी ५ । पुर्ण । वेष्टन स० ४०/२१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)

४००२ प्रतिसं० ६ । पत्र स० ६६ । लेखन काल X । पूर्ण । वे०स० १४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बू दी ।

४००३. प्रतिसं० १० । पत्र स० ४७ । आ० १२½X६ इञ्च । ले० काल स० १६०५ । पूर्ण । वे० स० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

विशेष—प० सदासुखजी एव उनके पुत्र चिमनलाल जी को बू दी मे लिखवाकर भेंट किया था ।

४००४. प्रतिसं० ११ । पत्रस० ५५ । आ० ६X५½ इञ्च । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

विशेष—सिद्धचक्र पूजा महात्म्य भी इसका नाम है ।

४००५. श्रीपाल चरित्र—गुणसागर । पत्रस० १८ । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ७३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

४००६. श्रीपाल चरित्र— × । पत्र स० ११ । आ० १० × ५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल स० १६१० सावण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० १८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

४००७. प्रति स० २ । पत्र स० १ से २१ । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । **ले**०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४००८. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २१ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

४००९. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ५३ । आ० १०×६½ इच । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३०/१६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक) ।

४०१०. प्रतिसं० ५ । पत्रस० १०८ । आ० १२×७ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर खडेलवालो का आवा (उणियारा) ।

विशेष—बीच के बहुत से पत्र नही है । १०८ से आगे भी पत्र नही हैं ।

नोट—पुण्यास्रवकथाकोश के फुटकर पत्र हैं और वह भी अपूर्ण है ।

४०११. श्रीपाल चरित्र—परिमल्ल । पत्रस० १३७ । आ० १०×६½ इच । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । र०काल स० १६५१ आपाढ बुदी ५ । ले०काल स० १८१० आसोज सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० १४८४ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—कवि आगरा के रहने वाले थे तथा उन्होने वही रचना की थी ।

४०१२. प्रतिसं० २ । पत्रस० ६१ । आ० १३×८ इच । ले० काल स० १६११ श्रावण बुदी ५ । पूर्ण । वे० स० १- । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—प्रति अच्छी है ।

४०१३. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ५६ । आ० १३×५¾ इञ्च । ले०काल स० १८६६ आपाढ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—मोहम्मदशाह के राज्य मे दिल्ली की प्रति से जो मनसाराम ने लिखी, प्रतिलिपि की गई ।

४०१४. प्रति सं० ४ । पत्र स० ८५ । आ० ११½×६½ इञ्च । ले०काल स० १६१७ भादवा बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

४०१५. प्रतिसं० ५ । पत्रस० १८० । आ० १०×७ इच । ले०काल स० १६६६ फागुण सुदी १२ । पूर्ण । जीर्ण शीर्ण । वेष्टन स० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

४०१६. प्रतिसं० ६ । पत्र स० १२० । आ० ८½ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १६२६ । पूर्ण । वे० स० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—दौसा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४०१७. प्रति सं० ७ । पत्र स० १२५ । आ० १०×६½ इञ्च । ले० काल स० १८८५ । पूर्ण । वेष्टन स० १२२/३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बडा बीसपथी दौसा ।

४०१८. **प्रतिसं० ८** । पत्रस० ६६ । ले०काल स० १७७४ फागुण सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वडावीस पथी दौसा ।

विशेष—जादौराम टोग्या ने प्रतिलिपि की थी ।

४०१९. **प्रति स० ९** । पत्र स० १६७ । ग्रा० १०×४$\frac{3}{4}$ इन्च । ले० काल स० १८२० कार्तिक बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—डेडराज के वडे पुत्र मगनीराम ने करौली नगर मे बुधलाल से लिखवाया था। प्रति जीर्ण है ।

४०२० **प्रति स० १०** । पत्रस० ११७ । ग्रा० १३ × ६$\frac{1}{2}$ इन्च । ले०काल स० १८८६ मगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—गुमानीराम ने करौली मे प्रतिलिपि की थी ।

४०२१. **प्रति स० ११** । पत्र स० १६० । ग्रा० ८ × ६$\frac{3}{4}$ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

४०२२ **प्रति स० १२**। पत्र स० १६१ । ग्रा० ८$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१/४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

४०२३. **प्रतिसं० १३** । पत्रस० १५० । ग्रा० १०×४$\frac{3}{4}$ इन्च । ले० काल स० १८८३ । पूर्ण । वेष्टनस० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मदिर करौली ।

विशेष—बयाने मे प्रतिलिपि हुई तथा खुशालचन्द ने सौगाणी के मन्दिर मे चढाया ।

४०२४ **प्रतिसं० १४** । पत्र स० ९५ । लेखन काल स० १९५७ श्रावण शुक्ला ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हूण्डावालो का डीग ।

४०२५. **प्रतिसं० १५** । पत्र स० १२९ । ग्रा० ११×७ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर कामा ।

४०२६. **प्रतिसं० १६** । पत्रस० १३० । ग्रा० १२×७$\frac{1}{2}$ इन्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

विशेष—पन्नालाल वोहरा ने प्रतिलिपि की थी ।

४०२७ **प्रति स० १७** । पत्र स० ११७ । ग्रा० ११×६ । ले० काल स० १९१८ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—बयाना मे लिपि कराकर चन्द्रप्रभ मन्दिर मे चढाया ।

४०२८. **प्रति स० १८** । पत्रस० १५८ । ग्रा० १०×४$\frac{1}{2}$ इन्च । ले० काल स० १७९६ सावण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर ।

४०२९. **प्रतिस० १९** । पत्रस० ९८ । ग्रा० १२×६$\frac{3}{4}$ इन्च । ले० काल स० १८०४ प्रथम चैत सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० २०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—अग्रवाल जातीय नरसिंह ने प्रतिलिपि की थी । कुल पद्य स० २२९० है ।

४०३०. **प्रतिसं० २०** । पत्र स० १०३ । ले० काल स० १८८० माघ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

विशेष—आगरा मे पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी।

४०३१ **प्रतिसं० २१** । पत्र स० १२३ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल स० १८८९ फागुण बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ५०२ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—महुवा मे साह फतेचन्द मुन्शी के लडके विजयलाल ने ताराचन्द से लिखवाया था।

४०३२. **प्रतिसं० २२** । पत्र स० २०५ । । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

४०३३. **प्रतिसं० २३** । पत्र स० १०० । ले० काल १८४४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—भीमराज प्रोहित ने भरतपुर मे प्रतिलिपि की थी।

४०३४. **प्रति सं० २४** । पत्रस० १४५ । ले० काल स० १८२९ । पूर्ण । वेष्टन स० ५८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायनी मन्दिर भरतपुर।

विशेष—भरतपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

४०३५ **प्रति स० २५** । पत्र स० ६७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

४०३६ **प्रतिसं० २६** । पत्र स० १०१ । आ० १२½ × ७ इञ्च । ले० काल स० १९०३ जेष्ठ सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर पचायती अलवर।

४०३७. **प्रति स० २७** । पत्रस० १४२ । आ० ९½ × ६½ इञ्च । ले०काल स० १८७२ । पूर्ण । वेष्टन स० ५६ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पञ्चायती मदिर अलवर।

४०३८. **प्रति सं० २८** । पत्र स० १२१ । ले० काल स० १८९१ । पूर्ण । वेष्टन स० ३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर, दीवानजी भरतपुर।

विशेष—वलवन्तसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई थी।

४०३९. **प्रति सं० २९** । पत्र सख्या ११० । आ० १२ × ७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मदिर अलवर।

४०४०. **प्रतिसं० ३०** । पत्र स० १३१ । आ० ९½ × ६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर, चौधरियो का मालपुरा (टोक)।

४०४१. **प्रतिसं० ३१** । पत्रस० १४३ । आ० ९½ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १८७७ फागुण बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोक)

विशेष—प० रामलाल ने प० चोली भुवानीवक्स से शाहपुरा मे करवाई थी।

४०४२. **प्रतिसं० ३२** । पत्रस० ११६ । आ० १२×६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, राजमहल टोक।

विशेष—२२०० चौपई हैं।

४०४३. **प्रति सं० ३३** । पत्र स० १६४ । आ० १२ × ६½ इञ्च । ले० काल स० १८७६ । पूर्ण । वेष्टन स० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक)।

विशेष—रावराजा श्री चांदसिह जी के शासनकाल दूणी मे हीरालाल ओझा ने प्रतिलिपि की ।

४०४४. **प्रतिसं० ३४** । पत्र स० ५७ से १११ । आ० ११½×६ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४८/२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

४०४५. **प्रतिसं० ३५** । पत्रस०१२४ । आ० ६½×६½ इञ्च । ले०काल स० १८६० काती सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनस० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटयों का नैणवा ।

विशेष—साह नदराम ने आवा मे ग्र थ लिखा । स० १६६५ मे साह रोडलाल गोपालसाह गोठडा वाले ने नैणवा मे कोटयो के मदिर मे चढाया ।

४०४६. **प्रतिसं० ३६** । पत्रस० १०४ । आ० १२½ × ६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

४०४७. **प्रति स० ३७** । पत्र स० १२६ । आ० १२×६ इञ्च । ले० काल स० १६७२ । पूर्ण । वेष्टन म० १५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बूदी ।

विशेष—वृन्दावती मे लिखा गया था ।

४०४८ **प्रतिसं० ३८** । पत्रस० ६७ । आ० १० × ६½ इञ्च । ले०काल स० १६०६ । पूर्ण । वेष्टन स० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपथी दि० जैन मन्दिर, नैणवा ।

४०४६. **प्रति स० ३६** । पत्र स० ६४ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले०काल स० १६०२ । पूर्ण । वेष्टन स० ७०/४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर मादवा (राज०) ।

विशेष—प्रति शुद्ध एव उत्तम है । फागी मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४०५०. **श्रीपाल चरित्र—चन्द्रसागर** । पत्र स० ५० । आ० १०½ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । र० काल स० १८२३ । ले० काल स० १६४४ । पूर्ण । वेष्टन स० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—आदिभाग—

सकल शिरोमणि जिन नमू तीर्थंकर चौवीस ।
पच कल्याणक जेह लह्या पाम्या शिवपद ईश ।।१।।
वृषभसेन आ देकरि गौतम अन्तिम स्वामि ।
चउदसें वावन उपरि सदगुरु परिणाम ।।२।।
जिन मुख ली'जे उपनी, सारदा देवी सार ।
तिह चरण प्रणमी करी, आये बुद्धि विशाल ।।३।।
सुरेन्द्रकीर्त्ति गुरु गछपती कीर्त्ति तेह अवदात ।
तेह पाट अतिराजता सकलकीर्त्ति गुण क्षात ।।
तस पद कमल भ्रमर सम चन्द्रसागर चितधार ।
श्रीपाल नरेन्द्र तणो कहुँ चरित्र रसाल ।।

अन्तिम भाग—

काष्टा सघ सोहामणु, उदयाचल जिमभाण ।
गछ तट नदी तट रामसेन आम्नाय वखाण ।।

तद अनुक्रमे हुवा गच्छपति विद्या भूषण सूरि राय ।
तेह पाटे अति दीपता श्री श्री भूषण यतिराय ।।२१।।

त्रोटक—तेह पाटे अति सोभता चन्द्रकीर्त्ति कीर्त्ति अपार ।
वादी मद गजन जनु केशरीसिंह सम मनुवार ।।२२।।
तेह पाटे वलि शोभता राज्य कीर्त्ति विद्या भडार ।
लक्ष्मीसेन अति दीपता जेह पाटे अनुसार ।।२३।।

चाल—तेह पाटे अति दीपता इन्द्रभूषण अवतार ।
सुरेन्द्र कीर्त्ति गुरु गच्छपति तेह पाटे अवतार ।
कीर्त्ति देश विदेश मे जाण आगम अपार ।
तेह पाटे सूरिवर सही सकलकीर्त्ति गुणधार ।।२४।।

त्रोटक—गुणधार ते सकल कीर्त्ति ते सूरिवर विद्यागुण भडार ।
लक्षण द्वात्रिंशलकस्या कला वोहोत्तर तनु धार ।।२५।।
व्याकर्णं तर्कं पुराण सागर वादी मद ते निंवार ।
गुण अनत तेह राजता ते कोई न पावै पार ।।२६।।

चाल—व्या तेह पद कमल सोहामणु मधुकर सम ते जाणि ।
ब्रह्मचन्द्र सागर कहे वाल ख्याल मन आणि ।
व्याकर्ण तर्क पुराणन ते न्ही जाणु भेद ।
मुझ मति अल्प ज्यु कहत हुँ कवि गुण अगम अभेद ।।२७।।

त्रोटक—श्रीपाल गुण ते अति घणा मुझ मति अल्प अपार ।
कविता जन हौसि न कीजे तुम्हे गुण तणी भडार ।।२८।।
वाल कर मति जीय ए मे ए रचना रची अपार ।
जे भणे ते वलि साभले ते लहे सौख्य भडार ।।२९।।

चाल—सोजन्या नयर सोहामणु दीसे ते मनोहार ।
सासन देवी ने देहरे परतापुरे अपार ।
सकलकीर्त्ति तिहा राजता छाजता गुण भडार ।।
ब्रह्म चन्द्रसागर रचना रची तिहा वेसी मानाहार ।।३०।।

त्रोटक—मनोहार नगर सोहामणु दीसे ते भा कडमाल ।
श्रावक तिहा वलि शोभता मेवाडा नामे विख्यात ।।३१।।
पूजा करे ते नित्य प्राते वखाण सुणें मनोहार ।
नागकुमार जिम दीपता श्रावक श्राविका तेह नारि ।।३२।।

चाल—ग्र थ सख्या तम्हे जाणज्यो पचदश सत प्रमाण ।
तेह ऊपर वलि शोभता भाठ वत्तीस ते जाणि ।।
ढाल वत्रीस ते सोभती मोहनी भवियण लोक ।
सामलता मुख ऊपजै, नासै विघन ते शोक ।।३३।।

त्रोटक—शोक नासे जाय चिंता पामे रिद्धि भडार ।
पुत्र कलत्र सुभ सपजे जयकीर्त्ति होइ अपार ॥३४॥
मन प्रनीते जु साचले जे पूजे ते मनोहार ।
मन वाछित फल पामीइ स्वर्ग मुगति लहे अवतार ॥३५॥

चाल—सवत शत अष्टादश अय त्रिशति अवधार ।
तेह दिवसा पूरण थयो ए ग्र थ शुभ सार ॥
श्रीपाल गुण अगम अपार केवलि सिद्ध चक्र भवतार ।
तुम गुण स्वामी आपज्यौ अवर इच्छा नहि सार ॥
मुझ सेवक अवधार ज्यो दीज्यो अविचल थान ।
ब्रह्म चन्द्रसागर कहे सिद्धचक्र महाधाम ॥२॥
माघ मास सोहामणो धवल परव मनोहार ।
श्रीज तिथि अति सोभती शुभ तिथि रविवार ॥३॥

इति श्री श्रीपाल चरित्रे भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति तत् शिष्य श्री ब्रह्मचन्द्रसागर विरचिते श्रीपाल चरित ।

मालव देश तलपुर मे मुनिसुव्रतनाथ चैत्यालय मे पडित नेमिचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

४०५१. श्रीपाल चरित्र—× । पत्र स० १२ । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—चरित्र । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

४०५२. श्रीपाल चरित्र— × । पत्र सख्या ११५ । आ० ८×८½ इच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—प्रति गुटका आकार है । ११५ से आगे के पत्रो मे पत्र सख्या नही है । इन पत्रो पर पच मगल, है जिनसहस्रनाम तथा एकीभाव स्तोत्र आदि का सग्रह है ।

४०५३. श्रीपाल चरित्र— × । पत्र स० १५ से ३० । आ० ११¾× ५½ इन्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

४०५४. श्रीपाल चरित्र—× । पत्रस० २७ । आ० १३×७ इन्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १६३६ । पूर्ण । वेष्टनस० ७१ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

४०५५. श्रीपाल चरित्र—× । पत्र स० २६ । आ० १२×८ इन्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १६६१ । पूर्ण । वेष्टन स० ३३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मदिर नैणवा ।

४०५६. श्रीपाल चरित्र—× । पत्र स० ४७ । आ० ६×६½ इन्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १८४१ सावण सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ४३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर वैर ।

विशेष—स ग्रही अमरदास ने प्रतिलिपि की थी। कथाकोप मे से कथा उद्धृत है।

४०५७. श्रीपाल चरित्र—× । पत्रस० ४१ । आ० ८¾×६¾ इच । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १६६२ भादवा बुदी ३ । अपूर्ण । वेष्टन स० ४८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—रिखवचन्द विंदायक्या ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

४०५८. श्रीपाल चरित्र— × । पत्र स० ३५ । आ० १० × ७ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय–चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी बूदी ।

४०५९. श्रीपाल चरित्र × । पत्र स० ५८ । भाषा–हिन्दी । विपय-जीवन चरित्र । र० काल × । ले०काल स० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन स० ५७६ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

४०६०. श्रीपाल चरित्र— × । पत्र स० ३६ । आ० ८ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १६२३ वैशाख बुदी ५ । अपूर्ण । वे० स० ३३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभ वनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—कुल पद्य स ० ११११ है।

स'वत् अठारे सतसठे सावरण मास उतग ।
कीसन पक्ष की सप्तमी रवीवार सुभचग ॥ ११०८ ॥
तादिन पूरण लिखो चरित्र सकल श्रीपाल ।
पढो पढाओ बुधजन मन बूहरख विशाल ॥११०६॥
नगर उदयपुर रूवडो सकल सुखा की धाम ।
तहा जिन मन्दिर सोमही नानाविध अभिराम ।१११०॥
ताहा पारिस जिनराज को मन्दर अत सोहत ।
तहा लिखो ए ग्रन्थ ही वरतो जग जयवत ॥ ११११ ।
इति श्रीपाल कथा स पूर्ण ।

नगर भीडर मध्ये श्री रिखवदेवजी के मन्दिर, श्रीमत् काष्ठाम घ नदितटगच्छे विद्यागणे आचार्य श्री रामसेन तत्पट्टे श्री विजयसेरण तत्पट्टे श्री भ० श्री हेमचन्द्रजी तत्पट्टे भ० श्री क्षेमकीर्ति तत् सिष्य प मन्नालाल लिख्यत । स ० १६२३ वैशाख बुदी ५ ।

प्रारम्भ मे गौत्तम स्वामी का लक्ष्मीस्तोत्र दिया है। आगे श्रीपाल चरित्र भी है। प्रारम्भ का पत्र नहीं है ।

४०६१. श्रीपाल चरित्र—लाल । पत्र स० १४२ । भाषा—हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल स० १८३० । ले०काल स० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४०६२ श्रीपाल प्रबंध चतुष्पदी— पत्रस० ४। भाषा–हिन्दी । विपय × । र० काल × । ले०काल स० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मन्दिर भरतपुर ।

४०६३. श्रेणिकचरित्र—भ० शुभचन्द्र । पत्रस० १३७ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय–चरित्र । र०काल × । ले०काल स० १६७७ भादवा सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—जोशी श्रीधर ने अम्बावती मे प्रतिलिपि की थी ।

४०६४ प्रति सं० २ । पत्रस० १०१ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १३२ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मदिर अजमेर ।

४०६५. प्रति स० ३ । पत्रस० १०० । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२२३ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

४०६६. प्रति स० ४ । पत्रस० ६५ । आ० १२½×५½ इञ्च । ले०कालस० १८३६ । पूर्ण । वेष्टनस० ३२३ । **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त मन्दिर ।

४०६७. प्रति स० ५ । पत्र स० ७४ । आ० ११½ × ४¾ इञ्च । ले०काल स० १८१६ । भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १३८६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—गुलावचन्द छावडा ने महारोठ नगर मे प्रतिलिपि की थी ।

४०६८. प्रति स० ६ । पत्रस० ७६ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बू दी ।

४०६९. प्रतिसं० ७ । पत्रस० १४८ । आ० ११×४ इञ्च । ले०काल स० १८४५ । पूर्ण । वेष्टनस० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

विशेष—कोटा नगर के खुस्यालाडपुरा स्थित शान्तिनाथ चैत्यालय मे आ० विजयकीर्त्ति तत्शिष्य सदासुख चेला रूपचन्द पंडित ने प्रतिलिपि की थी ।

४०७०. प्रतिस० ८ । पत्र स० ६० । आ० १३×५ इञ्च । ले०काल स० १८०२ फागुण बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बू दी ।

विशेष—सवाई जयपुर मे नैणसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

४०७१. प्रतिसं० ९ । पत्रस० १०५ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

४०७२. प्रति स० १० । पत्रस० ६७ । आ० ११×८ इञ्च । ले०काल स० १६२३ । पूर्ण । वेष्टन स० ४७ । **प्राप्लि स्थान**—उपरोक्त मदिर ।

विशेष—दौसा के तेरहपथियो के मदिर का ग्र थ है ।

४०७३. प्रतिस० ११ । पत्रस० १४७ । आ० १०¼ × ७¼ इञ्च । ले० काल स० १७८२ वैशाख बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० १३७/१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

४०७४. प्रतिस० १२ । पत्र स० १३४ । आ० ७¼×४½ इञ्च । ले० काल स० १७२७ कार्त्तिक सुदी ११ ।पूर्ण । वेष्टन स० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति—संवत् १७२७ वर्षे महामागल्य कार्तिक मासे सुकुलपक्षे तिथौ एकादशी आदित्यवासरे श्री मूलसघे सरस्वतीगछे बलात्कारगणे कुदकुदाचार्य तदाम्नाये भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति तत्शिष्य पडित मनोरथेन स्वहस्तेन हुवड ज्ञातीय स्वपठनार्थ कर्मक्षयार्थं।

४०७५ **प्रतिसं० १३**। पत्रसं० ६८। आ० ११ × ४½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० ३६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

४०७६. **प्रतिसं० १४**। पत्र सं० ६८-८६। आ० ११×४ इञ्च। ले० काल सं० १६६४ मगसिर बुदी १३। अपूर्ण। वेष्टन सं० ४००। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

प्रशस्ति—संवत् १६६४ वर्षे मगसिर वदि १३ रवौ श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री सरोजनगरे सुपार्श्वनाथचैत्यालये भट्टारक श्री नरेन्द्रकीर्त्ति तत् शिष्य प० बूलचन्द तत् शिष्य प० आलमचन्द।

४०७७. **प्रतिसं० १५**। पत्र सं० ६४। आ० ११×४ इञ्च। ले०काल सं० ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

४०७८. **प्रतिसं० १६**। पत्रसं० १२८। ले०काल सं० १८२४ चैत्र सुदी २। पूर्ण। वेष्टनसं० २३२। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

विशेष—आशाराम ने भरतपुर मे प्रतिलिपि की थी।

४०७९. **प्रतिसं० १७**। पत्रसं० १८२। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० १०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बडा पचायती मन्दिर डीग।

४०८० **प्रतिसं० १८**। पत्रसं० ७७। आ० १०½ × ५½ इच। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

४०८१. **प्रतिसं० १९**। पत्र सं० ४४। आ० ११×५ इच। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ११६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा।

४०८२. **प्रतिसं० २०**। पत्रसं० २२-१४२। आ०१०¾×४¾ इञ्च। ले०काल सं० १६६२। अपूर्ण। वेष्टन सं० २३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

४०८३ **प्रतिसं० २१**। पत्रसं० १२१। आ० ६×५ इच। ले०काल सं० १६६५ वैशाख सुदी ३। पूर्ण। वेष्टनसं० २६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—ब्रह्म श्री लाड्यका पठनार्थं।

४०८४. **प्रति सं० २२**। पत्रसं० ६१। आ० १२ × ४¾ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० ८३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर।

विशेष—प्रति प्राचीन है। बीच के कुछ पत्र नही हैं। इसका दूसरा नाम पद्मनाभ पुराण भी है।

४०८५. **श्रेणिक चरित्र भाषा—भ० विजयकीर्त्ति**। पत्र सं० ६२। आ० १२½×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-चरित्र। र०काल सं० १८२७। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूदी।

प्रशस्ति—

गढ ग्रजमेर सकल सिरदार । पट नागौर महा ग्रधिकार ।।
मूलसघ मुनि लिखिय वणाय । भट्टारक पट् नो भव भाय ।।
सारद गच्छ तसु सिगार । बलात्कार गण जानुसार ।।
कुन्दकुन्द **मुन्यय** सही । पट ग्रनेक मुनि सो ग्रप सही ।।
रत्नकीर्त्ति पट विद्यानद । तसु पट महेद्रकीर्त्ति सवमुद ।।
ग्रनन्तकीर्त्ति पट धारि भया । तसु पट भूवन भूपण चिर जीया ।।
विजयकीर्ति भट्टारक जानि । इह भाषा कीनि परमाण ।।
सवत् ग्रठारासय सतवीस । फागुण सुदी साते सु जगीस ।।
बुधवार इह पूरण भई । स्वाति नपत्र वृद्धज पामु थई ।।
गोत पाटनी है मनिराय । विजयकीर्त्ति भट्टारक थाय ।।
तसु पट धारी श्री मुनि जानि । बडजात्या तसु गोत्र पिद्यानि ।।
त्रिलोकेन्द्र कीर्त्ति रिपराज । निति प्रति सावय ग्रातम काज ।।
विजयमुनि सिप्य दुतिय सुजाण । श्री वैराड देश तसु ग्राण ।।७६।।
धर्म्मचद भट्टारक नाम, ठोल्या गोत वर्ण्यो ग्रभिराम ।
मलयखड सिहासन सही । कारजय पट सोभा लही ।।८०।

४०८६. **प्रति स० २** । पत्रस० १२८ । ग्रा० ११×५ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २७४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

विशेष—प्रति नवीन है ।

४०८७. **प्रति सं० ३** । पत्र स० ७१ । ग्रा० ५½ × ७ इन्च । ले० काल स० १८६१ पूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ बू दी ।

४०८८ **प्रति सं० ४** । पत्रस० ८६ । ग्रा० ६½ × ४¾ इन्च । ले० काल स० १८६४ फागुण बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १२७६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

४०८९. **प्रति स० ५** । पत्र स० ८८ । ग्रा० १० × ४ इन्च । ले०काल स० १८२६ सावण बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० २७६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष—ग्रजवगढ मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४०९०. **प्रति स० ६** । पत्र स० ७७ । ग्रा० १०½ × ४½ इन्च । ले० काल स० १८८४ चैत्र बुदी ३ ।पूर्ण । वे० स० ११ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—पद्य स० २००० है ।

४०९१ **प्रति स० ७** । पत्र स० ६३ से ११७ । ग्रा० १२½×६ इन्च । ले०काल स० १८७६ । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ४७-२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

विशेष—दूनी मे रावजी श्री चादसिह जी के राज्य मे माणिकचन्द जी सघी के प्रताप से ग्रोभा हरीनारायण ने प्रतिलिपि की थी ।

४०९२. प्रति स० ८ । पत्र स० १०१ । आ० ११ × ५¾ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक) ।

४०९३. प्रति स० ९ । पत्रस० १५२ । आ० ११ × ५ इञ्च । विषय-चरित्र । ले०काल स० १८९१ फागुण बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ३३ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष—सथोक (सतोष) रामजी सोगाणी तत् अमीचन्द अभैचन्दजी राजमहल मध्ये चैत्यालय चन्द्रप्रभ के मे ब्राह्मण सुखलाल वासी टोडारायसिंह से प्रतिलिपि कराकर चढाया था ।

४०९४. प्रतिसं० १० । पत्रस० १३० । आ० ९ × ४½ इञ्च । ले०काल स० १८७९ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

विशेष—तक्षकपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४०९५. प्रतिसं० ११ । पत्र स० ६१ । आ० १५×७ इञ्च । ले० काल स० १९०१ भादवा बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

४०९६. प्रति सं० १२ । पत्र स० ७८ । आ० १२×८ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

४०९७. प्रतिसं० १३ । पत्र स० १५३ । आ० १०¾×५ इञ्च । ले० काल स० १८९४ । पूर्ण । वेष्टन स० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर अलवर ।

४०९८. प्रति स० १४ । पत्रस० १२६ । आ० १०½ × ७ इंच । ले० काल स० १९२७ आसोज बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० अग्रवाल पचायती जैन मन्दिर अलवर ।

४०९९. प्रतिसं० १५ । पत्रस० ९६ । आ० ८½×६ इञ्च । ले०काल स० १९३० चैत वदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

४१००. प्रतिसं० १६ । पत्रस० ८५ । आ० १२ × ७½ इञ्च । ले०कालस० १९१८ आपाढ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर वयाना ।

विशेष—वयाना मे वनराज वोहरा ने प्रतिलिपि की थी ।

४१०१. प्रतिसं० १७ । पत्र स० १२७ । ले० काल स० १९१३ । पूर्ण । वेष्टन स० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

४१०२. प्रति स० १८ । पत्र स० १०८ । आ० १३¼ × ५ इञ्च । ले० काल स० १९३१ भादवा सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—शमशावाद (आगरा) मे ईश्वर प्रसाद ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी ।

४१०३. श्रेणिक चरित्र भाषा—दौलतराम कासलीवाल । पत्रस० २५ । भाषा—हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल × । ले०काल स० १८८८ । पूर्ण । वेष्टन स० ५४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

४१०४. श्रेणिक चरित्र—दौलतऔसेरी । पत्रस० १७२ । आ० ११×७½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र । र० काल स० १८३४ मगसिर सुदी ७ । ले० काल स० १९६१ । पूर्ण । वेष्टनस० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष—८।) कल्दार मे स० १६६२ मे लिया गया था ।

४१०५ श्रेणिक प्रवन्ध—कल्याणकीर्त्ति । पत्र स० ५७ । म्रा० १० × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र । र०काल स० १६७५ श्रासोज सुदी २ । ले०काल स० १८२८ चैत वदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

श्रादिभाग—

ॐ नम सिद्धेभ्य —श्री वृषभाय नम ।

दोहा—सुखकर सन्मति सुभ मती चोवीस मो जिनराय ।
अमर सचरनि करि सेवित पाय ॥१॥
ते जीन चरण कमलनतो हृदय कमल धरी नेह ।
जिन मुख कमल थी उपति नमु वाग्वादिनी गुण गेह ॥२॥
गुण रत्नाकर गौतम मुनि वयण रयण अनेक ।
ते मध्यि केता ग्रही रचु प्रवध हार विवेक ॥३॥
श्री मूलसघ उदयाचलि, प्रभाचद्र रविराय ।
श्री सकलकीरति गुर अनुक्रमि, नमश्री रामकीरति शुभकाय ॥४॥
तस पद कमल दीवाकर नमु, श्री पद्मनदी सुखकार ।
वादि वारण केशरि अकलक ए अवतार ॥५॥
नीज गुरू देव कीरति मुनि प्रणमु चित धर नेह ॥
मडलीक महा श्रेणीक नो प्रवन्ध रचु गुण गेह ॥६॥
नमी देवकीरति गुर पाय ॥ जिन० भावि० ॥ ६ ॥
कल्याण कीरति सूरी वरे रच्यो रे ॥ लाल लो० ॥
ए श्रेणिक गुण मणिहार ॥ जिन० भावि० ॥
वागड विमल देश शोभते रे ॥ लाल लो ॥
तिहां कोट नयर सुखकार ॥ जिन० भावि० ॥ १० ॥
घनपति विमल वसे घणा रे ॥ लाल लो ॥
घनवत चतुर दयाल ॥ जिन० ॥ भावि० ॥
तिहो आदि जिन भवन सोहामणु रे ॥ लाल लो ॥
तणिका तोरण विशाल ॥ जिन० भावि० ॥ ११ ॥
उत्सव होयि गावि माननी रे ॥ लाल लो ॥
वाजे ढोल मृदग कशाल ॥ जिन० ॥ भावि० ।
आदर ब्रह्मसिघ जी तणोरे ॥ लाल लो ॥
तहा प्रवध रच्यो गुणमाल ॥ जिन० ॥ भावि० ॥ १२ ॥
सतत सतर पचोतरि रे ॥ लाल लो० ॥
आसो सुदि बीज रवि ॥ जिन० भावि० ॥
ए साभलि गायि लिखि भावसु रे ॥ लाल लो ॥
ते तहि मगलाचार ॥ जिनदेवरे भावि जिन पद्मनाभ जाणज्यो ॥१३॥

इति श्री श्रेणिक महामडलीक प्रबन्ध स पूर्ण ।

अन्तिम—

मनोहर मूलसघ दीपतो रे ।। लाल लो ।।
सरस्वती गछ श्रृ गार ।। जिन० भावि० ।।४।।

पटोधर कु दकु द सोमतोरे ।। लाल लो ।।
जिणि जलचर कीधा कु दहार ।।जिन० भावी० ।।५।।

अनुक्रमि सकल कीरतिह वरि ।। लाल लो० ।।
श्री ज्ञान भूणष सुभकाय ।। जिन० भावि० ।। ६ ।।

विजय कीरति विजय मुरी रे ।। लाललो० ।।
तस पट शुभचद्र देव ।। जिन० ।। भवि० ।।

शुभ मिती सुमतिकीरति रे ।। लाल लो० ।।
श्री गुणकीरति करु सेव ।। जिन० भावि०।।
श्री वादि भूषण वादी जीयतो ।। लाल लो ।।

रामकीरति गछ राय ।। जिन० ।। भवि० ।।
तस पट कमल दिवाकरु रे ।। लाल लो ।।
जेनो जस वहु नरपति गाय ।। जिन० भावि० ।।७।।

सकल विद्या तणे वारिव रे ।। लाल लो ।।
गछपति पद्मनदि राय ।। जिन० ।। भावि० ।।८।।

एसहू गछपति पदनमी रे ।। लाल लो ।।

प्रशस्ति—स वत् १८२८ का मासोत्तम मासे चैत्रमासे कृष्णपक्षे तिथि त्रोदसी वार ब्रहस्पतवार सूर्यपुरिमध्ये चद्रप्रभ चैत्यालये श्रेणिक पुराण सपूर्ण । श्री मूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वतीगछे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री नरेन्द्रकीर्त्ति जी तत्पट्टे भट्टारक श्री विसालकीर्त्ति जी तत्पट्टे भट्टारक श्री राजेन्द्र कीर्त्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री रत्नेन्द्रकीर्त्ति स्वहस्तेन लिपि कृते कर्म्मक्षयार्थं पठनार्थं ।

४१०६. प्रति सं० ७ । पत्रस० १७१ । आ० १०×७ इञ्च । ले०काल स ० १९५९ । पूर्ण । वेष्टनस० ४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बू दी ।

४१०७. श्रेणिकचरित्र—लिखमीदास । पत्र स० ८५ । आ० ११ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । र० काल सं० १७४९ । ले०काल सं० १८४१ । पूर्ण । वेष्टन स० १२० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

४१०८. प्रति स० २ । पत्रस० ९८ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

४१०६ प्रति सं० ३ । पत्रस० १०५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २४ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन वडा पचायती मन्दिर डीग ।

४११०. प्रतिस० ४ । पत्रस० १०३ । ग्रा० ६×५½ इञ्च । ले० काल स० १८६४ ग्रासोज सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोंक) ।

४१११. प्रति स० ५ । पत्र स० ६७ । ग्रा० १०½ × ५ इञ्च । ले० काल० × । पूर्ण । वेष्टन स० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूंदी) ।

४११२ प्रतिस० ६ । पत्र स० ५६ । ग्रा० १२×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

४११३. प्रतिस० ७ । पत्र स० १२१ । ग्रा० ६½×६½ इञ्च । ले० काल स० १८७६ आषाढ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

४११४. प्रतिस० ८ । पत्र स० ६५ । ग्रा० ११×५½ इञ्च । ले० काल स० १८२२ प्र सावण बुदी १ । पूर्ण । वे० स ३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर वयाना ।

विशेष—अन्तिम भाग ।—

सोरठा—

देस ढूढाहर माहि राजस्थान ग्रावावती ।
भूप प्रभाव दिपाहि रार्जसिघ राजै तिहा ।।६१।।

दोहा—

ता समीप सागावती धन जन करि भरपूर ।
देवस्थल महिमा घणी भला ग्रहस्त सनूर ।।६२।।
पडित दशरथ सुभग सुत सदानन्द तसु नाम ।
ता उपदेश भाषा रची भविजन कौ विसराम ।।६३।।
सवत सतरासै ऊपरै तेतीस ज्येष्ठ सुदी पक्ष ।
तिथि पचम पूरण लही मङ्गलवार सुभक्ष ।।६४।।
फेर लिखि गुणचास मे लखमीदास निज वोध ।
भल्यो चूवयो सवद कोउ वुधजन लीज्यो सोधि ।।६५।।
इति श्रेणिक चरित्र सपूर्णं ।

वलिराम के पुत्र सालिगराम वोहरा ने वयाना मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे यह ग्रथ ऋषि वसत से हीरापुरी (हिंडौन) मे लिखवाकर चढाया । सालिगराम के तेला के उद्यापनार्थ चढाया गया ।

४११५. प्रति स० ९ । पत्रस० ८८ । ग्रा० १२½×६½ इञ्च । ले० काल स० १८८७ । पूर्ण । वेष्टन स० ४० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

४११६. प्रतिसं० १० । पत्र स० १४८ । ग्रा० ५½×५½ इञ्च । ले० काल स० १८०० माह बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—प्रति गुटकाकार है । रचना पडित दशरथ के पुत्र सदानन्द की प्रेरणा से की गई थी ।

४११७. प्रति स० ११ । पत्र स० १४४ । आ० १२×४ इञ्च । ले०काल स० १८६० । पूर्ण । वेष्टन स० ७६-८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

४११८ प्रतिसं० १२ । पत्रस० १४२ । आ० ६×५ इञ्च । ले० काल स० १८२६ पौष सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर भादवा (राज०) ।

विशेष—कोठीग्राम मे सुखानन्द ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

४११६. सगरचरित्र—दीक्षित देवदत्त । पत्रस० १८ । आ० १२ × ८ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०६१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४१२०. प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०६२ । **प्राप्ति स्थान** भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४१२१. सीताचरित्र—रामचन्द्र (कवि बालक) । पत्र स० १०५ । आ० १२×५½ इच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—चरित्र । र०काल स० १७१३ मङ्गसिर सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

४१२२. प्रति स० २ । पत्रस० १२४ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल स० १७४६ । पूर्ण । वेष्टन स० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

विशेष—सागानेर मे प्रतिलिपि की गई थी ।

४१२३. प्रति सं० ३ । पत्र स० ११५ । आ० १२×८ इच । ले० काल स० १६२३ ज्येष्ठ सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

४१२४. प्रति सं० ४ । पत्र स० १३६ । आ० १२×६ इच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वैर ।

४१२५ प्रतिसं० ५ । पत्रस० १४७ । आ० १०½×५½ इच । ले०काल स० १८४१ । अपूर्ण । वेष्टन स० १५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—४६ वा पत्र नही है ।

४१२६ प्रतिसं० ६ । पत्र स० २३८ । आ० ५×५ इच । ले० काल स० १७६० मगसिर बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

४१२७. प्रति सं० ७ । पत्र स० २३८ । आ० ६×६ इच । ले० काल स० १७६० मगसिर बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर भादवा (राज०)

विशेष—जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४१२८. प्रतिसं० ८ । पत्रस० ११५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७१ ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा ।

विशेष—सदासुख तेरापथी ने प्रतिलिपि कराई थी ।

४१२९. प्रति सं० ६ । पत्र स० १६१ । आ० १२×६ इञ्च । ले०काल स० १७५६ माघ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० ६-२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—दीपचन्द छीतरमल सोनी ने आत्म पठनार्थ प्रतिलिपि कराई ।

४१३०. **प्रतिस० १०**। पत्र स० २९९ । आ० ८ × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । गुटका साइज मे है ।

४१३१ **प्रति स० ११** । पत्रस० ११-१२८ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । । वेष्टनस० २७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

विशेष दोहा—

किये ग्र थ रविषेणनै रघुपुराण जियजान ।
वहै अरथ इनमे कह्यो रामचन्द उर आन ।।३०।।

कहै चन्द कर जोर सीस नय अत जै ।
सकल परमाव सदा चिरनन्दि जै ।
यह सीता की कथा सुनै जो कान दे ।
गहै आप निज भाव सकल परदान दे ।।३१।।

४१३२ **प्रति स० १२** । पत्र स० ९७ । आ० ११×५½ इन्च । ले० काल स० १७७७ । वैशाख सुदी २ ।पूर्ण ।वे० स० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बयाना ।

विशेष—बयाना मे प्रतिलिपि, की गई थी ।

४१३३. **प्रति स० १३** । पत्रस० १९० । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बयाना ।

४१३४. **प्रतिस० १४** । पत्र स० १०९ । आ० १२½ × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—श्लोक स० २५०० ।

४१३५. **प्रति स० १५** । पत्रस० १६४ । ले०काल स० १७८४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायत भरतपुर ।

विशेष—गुटका साइज है तथा भाफरी मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४१३६. **प्रति स० १६** । पत्रस० १२८ । ले० काल स० १८१९ । पूर्ण । वेष्टन स० ५७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

४१३७. **प्रति स० १७** । पत्र स० १२९ । ले० काल स० १८१४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

४१३८ **प्रति स० १८** । पत्र स० ९७ । ले० काल स० १८७६ । पूर्ण । वेप्टन स० ५७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४१३९ **प्रति स० १९** । पत्र स० १९३ । आ० ९½×७ इच । ले०काल स० १८७७ आसोज बुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन पचायती मदिर अलवर ।

४१४०. **प्रति सं० २०** । पत्र स० १०१-१३२ । आ० ९×६½ इच । ले० काल स० १९२६ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विशेष—राजमहल मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४१४१. **सुकुमालचरिउ—मुनि पूर्णभद्र (गुणभद्र के शिष्य)** । पत्रस० ३७ । आ० ९×५ इञ्च । भाषा—अपभ्र श । विषय - चरित्र । र०काल × । ले०काल स० १६२२ भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैनमन्दिर अजमेर ।

४१४२. **प्रतिसं० २** । पत्रस० ४७ । आ० ९×५ इच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९५६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४१४३. **प्रतिसं० ३** । पत्र स० ३९ । आ० ४½×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२९ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी) ।

विशेष—इसमे ६ सधिया हैं । लेखक प्रशस्ति वाला अन्तिम पत्र नही है ।

४१४४. **सुकुमालचरिउ—श्रीधर** । पत्र स० १-२१ । आ० ११×५ इच । भाषा-अपभ्र श । विषय—काव्य । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर तेरहपथी दौसा । जीर्ण जीर्ण ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । पत्र पानी मे भीगने से गल गये हैं ।

४१४५. **सुकुमालचरित्र—भ० सकलकीर्त्ति** । पत्र स० ४४ । आ० १२×५ इंच । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल स० १५३७ पौष सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ९८९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १५३७ वर्षे पौष सुदी १० मूलसघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनदिदेवा तत्पट्टे भ० शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० जिनचन्द्रदेवा तत् शिष्य मुनि श्री जैनन्दि तदाम्नाये खडेलवालान्वये श्रेष्ठि गोत्रे स० वील्हा भार्या षेढी तत्पुत्रा स० वादू पार्श्व वादू भार्या इल्हू तत्पुत्र सा० गोल्हा वालिराज, भोजा, चोया, चापा, एतेषा मध्ये वालिराजेन इद सुकुमाल स्वामी ग्र थ लिखाप्यत । प० आसुयोगु पठनार्थ निमित्त समर्पित ।

४१४६. **प्रति सं० २** । पत्र स० ४९ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल स० १८२० चैत्र बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

४१४७. **प्रति सं० ३** । पत्र स० ९६ । ले० काल स० १७३१ । पूर्ण । वेष्टन स० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४१४८. **प्रति सं० ४** । पत्र स० ४७ । आ०१२×५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी ।

४१४९. **प्रतिसं० ५** । पत्रस० २० । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी)

४१५० **प्रति सं० ६** । पत्र स० २३-४३ । आ० १०×४३/४ इन्च । ले० काल स० १७८७ सावण वुदी ८ । अपूर्ण । वेष्टन स० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना (वू दी)

विशेष—लाखेरी ग्राम मध्ये · ·)

४१५१. **प्रतिस० ७** । पत्र स० १०० । आ० ६×४ इन्च । ले० काल स० १८७८ वैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोंक)

विशेष-हरिनारायण ने प्रतिलिपि की थी । धर्ममूर्ति जैन धर्म प्रतिपालक साहजी सोलाल जी अजमेरा वासी टोडा का ने दूनी के आदिनाथ के मन्दिर मे चढाया था ।

४१५२. **प्रतिस० ८** । पत्रस० ६४ । आ० ६१/२×४१/२ इच । ले० काल स० १८७६ भादवा बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर दूनी (टोक)

विशेष—हरीनारायन से सोहनलाल अजमेरा ने प्रतिलिपि करवाई थी-

पडित श्री शिवजीराम तत् शिष्य सदासुखाय इद पुस्तक लिख्यापित्त । अजमेरा गोत्र साहजी श्री श्री मनसारामजी तत्पुत्र साह शिवलालेन ।

४१५३. **प्रतिस० ९** । पत्र स० ४८ । आ० ११ × ४ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वोरसली कोटा ।

विशेष—विमलेन्द्रकीर्तिदेव ने लिखाया था ।

४१५४. **प्रति स० १०** । पत्रस० ६६ । आ० ११ × ५ इन्च । ले० काल स० १६०६ । पूर्ण । वेष्टनस० १६-१२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—दो प्रतियो का मिश्रण है ।

स वत् १६०६ वर्षे माघ शुक्लपक्षे पचम्या तिथौ गुरुवासरे श्री मूलस घे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे कु दकु दा क्षयार्थ लिखाप्य दत्त । ब्रह्म दत्त आचार्य श्री हेमकीर्ति तत् शिष्य ब्रह्म मेघराज प्रेमी शुभ भवत । लि धर्मदास लिखापित महातमा लिखमीचन्द नाथूजी सुत खरतर गच्छे ।

४१५५. **प्रति स० ११** । पत्रस० ६० । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २२४-४४ ।**प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन स भवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन किन्तु जीर्ण है ।

४१५६ **प्रति स० १२** । पत्रस० ५४ । ले० काल स० १५८७ । पूर्ण । वेष्टनस० ६०/४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सम्भवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—ग्रन्थाग्रन्थ स० ११०० है ।

प्रशस्ति—सवत् १५८७ वर्षे भादवा सुदी १० भृगौ अद्येह देलुलिग्राम वास्तव्ये मेदपाट ज्ञातीय शवदोसन लिखिता ।

वाद मे लिखा हुआ हैं—

श्री मूलसघे भ० श्री शुभचन्द्र तत् शिष्य मुनि वीरचन्द्र पठनार्थं । स० १६४१ वर्षे माहसुदी १ शनौ भट्टारक श्री गुणकीर्ति उपदेशात्···· ।

४१५७. प्रति सं० १३ । पत्रस० ५६ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४१५८. प्रति स० १४ । पत्रस० ४४ । आ० १२×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—नवम सर्ग तक पूर्ण है । **अन्तिम** पुष्पिका निम्न प्रकार है—

भट्टारक श्री सकलकीर्ति विरचिते आचार्य श्री विमलकीर्ति तत् शिष्य ब्रह्म गोपाल पठनार्थ । शुभ भवतु ।

४१५९ प्रति सं० १५ । पत्र स० ३६ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४१६०. सुकुमाल चरित्र—नाथूराम दोसी । पत्रस० ६१ । आ० १३½ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विपय-चरित्र । र०काल स० १९१८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मदिर उदयपुर ।

४१६१. प्रति स० २ । पत्र स० ७१ । आ० १०½ × ८½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

४१६२. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ७२ । आ० १३ × ८ इञ्च । ले०काल स० १९५६ । पूर्ण । वेष्टन स० १०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

४१६३. सुकुमाल चरित्र भाषा—गोकल गोलापूर्व । पत्र स० ५२ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विपय—चरित्र । र०काल स० १८७१ कार्तिक बुदी १ । ले०काल स० १९३८ । पूर्ण । वेष्टन स० ८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका—

इहि प्रकार इहि शास्त्र की भाषा का सक्षेप रूप मद बुद्धि के अनुसार गोलापव गोकल ने की ।

४१६४ प्रतिसं० २ । पत्र सख्या ६३ । आ० ११ × ७¼ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० १७८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

४१६५. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ४५ । आ० १३ × ७ इञ्च । ले० काल स० १९५७ । पूर्ण । वेष्टन स० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

४१६६. सुकुमाल चरित्र वचनिका—× । पत्र सख्या ७२ । आ० १३×८ इच । भाषा-हिन्दी गद्य । विपय-चरित्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सख्या १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बूदी ।

४१६७ सुकुमाल चरित्र वचनिका— × । पत्र स० ७७ । आ० १० ×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल स १९५५ आसोज बुदी ७ पूर्ण । वेष्टनस० १२७२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—चन्द्रापुरी मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४१६८. **सुकुमाल चरित्र भाषा**—× । पत्रस० ६२ । भापा-हिन्दी । विपय-जीवन चरित्र । र०काल × । ले०काल स० १६५३ । पूर्ण । वेष्टनस० ५५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४१६९. **सुकुमाल चरित्र भाषा**-× । पत्रस० ६० । भापा-हिन्दी । विपय-चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हूण्डालालो का, डीग ।

४१७०. **सुकुमाल चरित्र**-× । पत्रस० ५३ । आ० १२×५ इञ्च । भापा-सस्कृत । विपय-चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३२७ । **प्राप्तिस्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

४१७१. **सुकुमाल चरित्र**-× । पत्रस० ११ । आ० १०×४ इञ्च । भापा-सस्कृत । विपय-चरित्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—११ से आगे के पत्र नही है ।

४१७२. **सुकुमाल चरित्र**—× । पत्रस० ६२ । आ० ११×५ । भापा-सस्कृत । विपय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० २०१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४१७३ **सुकुमाल चरित्र**—× । पत्र स० ४६ । आ० ११×५ इञ्च । भापा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल × । ले०काल × अपूर्ण । वेष्टन स० १३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

४१७४. **सुकुमाल चरित्र—भ० यश कीर्ति** । पत्र स० ५८ । आ० ११×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विपय-चरित्र । र०काल × । ले० काल स० १८८५ मगसिर सुदी ५ रविवार । पूर्ण । वेष्टन स० ४२६ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

मुनिस्वर नागचन्द्र वत्सर मे मार्गसिर शुक्ल मास ।
पचमी रविवार सुयोगे पूर्ण ग्रन्थ करयोभास ।
विद्यमान नही मुललेश कवित्व कला नहि मान ।
स्वपर जीवतणे हित कारणे करयो प्रवध वखान ।
गछनायक भये तपस्वी ज्ञानतना भण्डार ।
यशकीर्ति ए कथा प्रबध वर्ण म कहह्यो हितकार ।।
× × ×
मेदपाट वर देशपति ये नगर सलू वर सार ।
उत्तम वर्ण वसै तिहा श्रावक पाले श्रावकाचार ।
वृहत् न्यात नागद्रा हु मड गुरुमुखी श्रावक जेह ।
धर्म दिगम्वर पाले उत्तम दान पूजा करे तेह ।
आदिनाथ जिन मन्दिर सोहै तहा रहै सुखै नीवास ।
सकल सघ नो आदर जानि चरित्र कहयो उल्लास ।

सावला ग्राम मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४१७५. **सुखनिधान—जगन्नाथ** । पत्र स० ४४ । आ० १०½×४½ इञ्च । भापा–सस्कृत ।
४१७५. सुखनिधान—जगन्नाथ । पत्र स० ४४ । आ० १०½×४½ इञ्च । भापा–सस्कृत । वेष्टन स०९६२ । **प्राप्ति स्थान** - भट्टारकीय
विषय–काव्य । र०काल × । ले० काल स० १७९७ । पूर्ण ।
दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४१७६. सुदसण चरिउ–नयनन्दि । पत्र स० १–९९–१०९ । आ० १०½×४½ इ च । भाषा–
४१७६. सुदसण चरिउ–नयनन्दि । वेष्टन स० २६० । **प्राप्ति स्थान**-
अपभ्र श । विपय–चरित्र । र०काल स ११०० । ले० काल × । अपूर्ण ।
दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

४१७७. सुदर्शन चरित्र—भ० सकलकीत्ति । पत्रस० २–४६ । आ० ११ × ४ इञ्च ।
भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले० काल स० १६७२ चैत सुदी ३ । अपूर्ण । वेष्टन स०
२६८/४१ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—

सवत् १६७२ वर्षे चैत सुदी ३ भौमे श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये
भट्टारक गुणकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० वादिभूपणदेवा तत्पट्टे भ० श्री रत्नकीर्तिदेवा आचार्य श्री जयकीर्ति तत्
शिष्य ब्रह्म श्री सवराजाय गिरिपुर वास्तव्य पटुयावच्छा भार्या सुजाणदे तयो पुत्र प० काहानजी भार्या कसुवदे
ताभ्या सु दर्शनचरित्र स्वज्ञानावर्णी कर्मक्षयार्थं दत्त ।

४१७८. प्रति सं० २ । पत्रस० ३३–४४ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण ।
वेष्टन स० २५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४१७९. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ६३ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स०
२२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

४१८० सुदर्शन चरित्र—मुमुक्षु विद्यानन्दि । पत्र स० ७३ । आ० ९×५ इ च । भापा—
सस्कृत । विपय—चरित्र । र०काल × । ले० काल स० १८३५ चैत्र शुक्ला ९ । पूर्ण । वेष्टन स० ८२ ।
प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

४१८१. प्रतिसं० २ । पत्रस० ७७ । आ० १०×४¾ इ च । ले० काल स० १८७३ । पूर्ण ।
वेष्टन स० १२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

विशेष वृ दावती नगर मे श्री नेमिनाथ चैत्यालय मे श्री डू गरसी के शिष्य सुखलाल ने प्रतिलिपि
की थी ।

४१८२. प्रति स० ३ । पत्र स० १–२५ । आ० ११¾×५ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन स०
७५० । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

४१८३. सुदर्शनचरित्र—दीक्षित देवदत्त (जैनेन्द्रपुराण) । पत्र स० १०५ । भाषा—सस्कृत ।
विपय—चरित्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्ट स० २३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन
पचायती मदिर भरतपुर ।

इति श्रीमन्मुमुक्षु दिव्य मुनि श्री केशवनद्यनुक्रमेण श्री भट्टारक कविभूपण पट्टाभरण श्री ब्रह्म हर्ष
सागरात्मज श्री भ० जिनेन्द्रभूपण उपदेशात् श्रीदीक्षित देवदत्त कृते श्रीमजिनेन्द्र पुराणान्तर्गत श्रीपचनम–
स्कारफलव्यावर्ण श्री सुदर्शन मुनि मोक्ष प्राप्ति वर्णनो नाम एकादशोधिकार ।

४१८४ प्रति स० २ । पत्र स० ८७ । ले० काल स० १८४८ वैसाख सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स०
२३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४१८५. सुदर्शन चरित्र—ब्र० नेमिदत्त। पत्र स० ७६। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—चरित्र। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६६२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४१८६. प्रति स० २। पत्रस० ६३। आ० ११½×५ इञ्च। ले०काल स० १६०५ भादवा सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन स० २३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—इद पुस्तक ज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थं पुस्तक श्री जिनमन्दिर चढ़ोडित रामचन्द्र सुत भवानी-राम अजमेरा वास्तव्य बूदी का गोठडा अनार सुखपूर्वक इन्द्रगढ वास्तव्य।

४१८७. प्रति स० ३। पत्रस० ८८। आ० १०×४½। ले०काल स० १६१६ भादवा सुदी १२। वेष्टन स० २०५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन म० लश्कर, जयपुर।

विशेष—प्रशस्ति अच्छी है।

४१८८. सुदर्शनचरित्र भाषा—यशः कीर्ति। पत्रस० २८। आ० १०½×८ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। र०काल स० १६६३। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २८५। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष— प्रारभ—

प्रथम सुमरि जिनराय महीतल सुरासुर नाग खग।
भव भव पातिक जाय, सिद्ध सुमति साहस वढै ॥१॥

दोहा।

इन्द्र चन्द्र औ चक्कवै हरि हलहर फनिनाह।
तेउ पार न लहि सकै जिनगुण अगम अथाह ॥२॥

चौपई—

सुमरौं सारद जिनवर वानि, करौ प्रणाम जोरिकरि पान।
मूरख सुमरै पडित होय, पाप पक कहि घातै सोय ॥३॥
जो कवि कवित कहे पुरान, ते मानेहि सो देव की आनि।
प्रथम सुमरि सारद मन धरै, तौ कछु कवित बुद्धि कौ धरै ॥४॥
हसचढी कर वीना जासु, सिद्ध बुद्धि लघु जान्यौ तासु।
मुक्तामनि मई माग सवारि, ऊग्यो सूरज किरन पसारि ॥५॥
श्रवनहि कुडल रतननि खचे, नौनिधि सकति आपनी रचै।
छूटेछरा कठ कठ सिरी, विना सकति आपनी धरी ॥६॥
उज्वलहार अनूपम हिये, विधना कहै तिसोई किये।
पग नूपर उज्वल तन चीर, कनक काति मय दिपै शरीर ॥७॥

सोरठा— विद्या और भडार जौ मागे सौ पावही।
कित आयौ ससार जायहि वर तेरो नही ॥८॥

दोहा— मन वच क्रम गुरू चरण नमि परहित उदति जे सार।
करहु सुमति जैनदकौ होइ कवित्त विस्तार ॥९॥

चौपई—

गुरू गौनम गणवरदे आदि, द्वादशाग अमृत आस्वाद ।
सुमति गुप्त पालन तप धीर, ते वदौ जो ज्ञान गम्भीर ।।१०।।
गणवर पदपावन गुणकद, भट्टारक जसकीर्त्ति मुनिन्द ।
तापर प्रगट पहुमि जग जासु, लीला कियो मौन को वास ।।११।।
नाम सुखेमकीर्ति मुनिराइ, जाके नामु दुरित हरि जाय ।
ताहि पढत श्रुत सागर पाए, त्रिभुवनकीर्ति कीर्ति विस्तार ।।१२।।
ताहि समीप सुमति कछु लही, उत्तम वुद्धि मेरे मन भई ।
नैनानन्द आदि जो कही, तैसी विधि वाचौ चौपई ।।१३।।

अंतिम पाठ—

सोरठा— छद भेद पद भेद हौं तो कछु जानैं नही ।
ताकौ कियो न खेद, कथा भई निज भक्ति वस ।।१९८।।

दोहा अगम आगरो पवरूपुर उठ कोह प्रसाद ।
तरे तरङ्गि नदी वहे नीर अमी सम स्वाद ।।१९९।।

चौपई

भापा भाउ भली जहि रीत, जानैं वहुत गुणी सौ प्रीत ।
नागर नगर लोग सव सुखी, परपीडा कारन सव दुखी ।।२००।।
धन कन पूरन तु ग अवास, सत्रहि नि सेक धर्म के दास ।
छत्रावीस हमाउ वम, अकवर नन्दन वैर विध्वस ।।१।।
तखत वखत पूरो परचड, मुर नर नृप मानहि सव दड ।
नाम काम गुन आयु वियोग, रचि पचि आयु विधाता योग ।।२।।
जहागिर उपमा दीजे काहि, श्री सुलतान नूं दीसैं साहि ।
कोस देस मन्त्री मति गूढ, छत्र चमर सिंघासन रूढ ।।३।।
करैं असीस प्रजा सव ताहि, वरनौ कहा इति मति आहि ।
सवत सोलहसैं उपरत, असठि जानहु वरस महत ।।२०४।।

सोरठा— माघ उजारी पाख, गुरवासुर दिन पञ्चमी ।
वध चौपई भापा, कही सत्य सारुरती ।।२०५।।

दोहा— कथा सुदर्शन सेठ की पढैं सुनैं जो कोय ।
पहिलैं पावैं देव पद पाछैं सिवपुर होय ।।२०६।।
इति सुदर्शन चरित्र भापा सपूर्णम्

४१८९. **सुभाहु चरित्र—पुण्यसागर** । पत्र स० ५ । आ० १०३/४ × ४१/२ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । र०काल स० १६७४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—अन्तिम—

सवत सोल चडोतर वरसइ जेसलमेर नयर सुभ दिवसइ ।
श्रीजिन हस सूरि गुरु सीसइ पुन्यसागर उवझाय जगासइ।।
श्री जिन माणिक सूरि आदेसइ सुवाहु चरित्र भणीउ लव लसई ।
पास पसाइए हरिपि घुणता रिधि सिधि थाउ नितु भणता ।।
।। इति सुवाहु चरित्र सपूर्णम् ।।

४१६०. सुभौम चरित्र—रत्नचन्द्र । पत्रस० ५६ । ग्रा० ११ × ४½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल स० १६८३ भादवा सुदी ५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

४१६१. प्रति स० २ । पत्र स० २६ । ग्रा० १२½×६ इन्च । ले० काल स० १८३८ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

४१६२. सुलोचना चरित्र—वादिराज । पत्रस० ८४ । ग्रा० ११×५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल स० १७६५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी) ।

४१६३ सुषेण चरित्र × । पत्र स० ४४ । ग्रा० १०×६½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल १६०६ आषाढ सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी बूदी ।

विशेष—कोटा मे लिखा गया था

४१६४. सभवजिन चरिउ--तेजपाल । पत्रस० ३२से ५१ । भाषा - अपभ्रश । विषय—चरित्र । र०काल ×। ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन वडा पचायती मन्दिर डीग ।

४१६५. हनुमच्चरित्र--ब्र० अजित । पत्रस० ६४ । ग्रा० १०½×४½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल स० १६०४ पौष सुदी ११ । पूर्ण ।वेष्टनस० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—टोडागढ मे रामचन्द्र के शासन काल मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४१६६ प्रति स० २ । पत्र स० ७४ । ग्रा० १३×५½ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४१६७ प्रति स० ३ । पत्रस० १०६ । ले०काल × । पूर्ण ।वेष्टनस० २३३ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४१६८ प्रतिस० ४ । पत्रस० ८३ । ग्रा० १२ × ५ इन्च । ले० काल १६१७ पौष वुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० १२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन, मदिर वोरसली कोटा ।

विशेष—फागुई वास्तव्ये कवर श्री चन्द्रसोलि राज्य प्रवर्त्तमाने शातिनाथ चैत्यालये खण्डेलवालान्वये अजमेरा गोत्रे सघी सूरज के वशजो ने प्रतिलिपि की थी ।

४१९९. **प्रतिस० ५** । पत्रस० ९५ । आ० १०½×४¾ । ले० कालस० १६१० आषाढ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० १४९ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—अलवर गढ मे लिपि की गई थी ।

४२००. **प्रतिसं० ६** । पत्र स० ७५ । आ० १३× ६½ इञ्च । ले० काल स० १८१७ वैशाख सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० २२/२९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगानी मन्दिर करौली ।

विशेष—कल्याणपुरी (करौली) मे चन्दप्रभ के मन्दिर मे लालचन्द के पुत्र खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

४२०१. **प्रति स० ७** । पत्र स० ९४ । आ० १२½×५ इञ्च । ले०काल स० १६३७ । पूर्ण । वेष्टनस० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

४२०२. **प्रतिस० ८** । पत्र स० ४–३९ । ले०काल × अपूर्ण । वेष्टन स० ५४/३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४२०३. **हनुमच्चरित्र--ब्र० जिनदास** । पत्रस० ४१ । आ० १२½×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल स०१५९२ । पूर्ण । वेष्टनस० २६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४२०४. **हनुमान चरित्र—ब्र ज्ञानसागर** । पत्रस० ३५ । आ० १०×४ इच । भाषा–हिन्दी । विषय - चरित्र । र०काल स ० १६३० आसोज सुदी ५ । ले० काल स० १६४६ । पूर्ण । वेष्टनस० १८५/४० । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है रचना का अतिम भाग निम्न प्रकार है—

> श्री ज्ञानसागर ब्रह्म उचरि हनूमत गुणह अपार ।
> कर जोडी करि वीनती स्वामी देज्यो गुण सार ॥
> सम्वत् सोलत्रीसि वर्षे अश्वनीमास मभार ।
> शुक्ल पक्ष पचमी दिन नगर पालुवा सार ।
> शीतलनाथ भुवनु रच्यु रास भलु मनोहार ।
> श्री संघ गिरुउ गुणनिलु स्वामी सैल करयु जयकार ।
> हुंवड न्याति गुनिलु साह अकाकुल भाण ।
> अमरादेउ घर ऊपनउ श्री ज्ञानसागर ब्रह्म सुजाण ।

इससे आगे के अक्षर मिट गये हैं ।

४२०५. **हनुमच्चरित्र—यशःकीर्त्ति** । पत्रस० १११ । भपा-हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र । र०काल स० १८१७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

४२०६. **हनुमान चरित्र**— × पत्रस० ११० । भाषा–सस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोंक) ।

४२०७. **हरिश्चन्द्र चौपई--कनक सुन्दर ।** पत्र स० १६ । भाषा- हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—हरिश्चन्द्र राजा ऋषि राणी तारा लोचनी चरित्रे तृतीय खड पूर्ण ।

४२०८. **होली चरित—पं० जिनदास ।** स० २१ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित । र०काल स० १६०८ । ले० काल सं० १८१४ ज्येष्ठ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५१४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—अजवगढ मध्ये लिखित आ० राजकीर्ति पठनार्थं चि० सवाईराम ।

४२०९. **प्रति स० २ ।** पत्रस० ४ । आ० ६×६ इञ्च । ले० काल स० १८४८ चैत्र सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

विशेष—अजमेर मे लिखा गया थी।

४२१०. **होलिका चरित्र— × ।** पत्र स० ३ । आ० ६ × ६½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-चरित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विषय -- कथा साहित्य

४२११. अगलदत्तक कथा–जयशेखर सूरि । पत्र स० ५ । आ० १४ × ४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल स० १४६८ माघ सुदी ११ रविवार । अपूर्ण । वेष्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

४२१२. अठारहनाते का चौढालिया-साह लोहट—पत्र स० २ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय–कथा । र० काल १८ वी शताब्दि । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५८६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४२१३ अठारह नाते की कथा—देवालाल । पत्र स० ४ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (प०) । विषय कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४२१४. अठारह नाते की कथा--श्रीवत । पत्र स० ५ । आ० ११ × ४ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३०६/१०५ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष -अंतिम पुष्पिका—इति श्रीमद्धर्माख्यवर्णित तच्छिष्य ब्र० श्रीवत विरचिता अष्टादश परस्पर सम्बन्ध कथा समाप्त ।

४२१५ अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा—खुशालचन्द । पत्र स० ७ । आ० ११ × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय–कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६८-६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—भाद्रपद सुदी १४ को अनन्त चतुर्दशी के व्रत रखने के महात्म्य की कथा ।

४२१६ प्रतिसं० २ ।पत्रस० ६ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

४२१७. अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा— × । पत्रस० ५ । आ० ६ ×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल स० १८२१ पौष बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १५३६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

४२१८. अनतव्रतकथा—भ० पद्मनन्दि । पत्रस० ६ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय–कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ बूंदी ।

४२१९. प्रतिसं० २ । पत्रस० ५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

४२२०. अनन्तव्रतकथा— × । पत्रस० ४ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल स० १८८१ सावण बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १५२८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

४२२१ अनन्तव्रतकथा—ज्ञानसागर । पत्रस० ४ । श्रा० ११×५½ इन्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

विशेष—ऋषि खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

४२२२. अनन्तव्रतकथा—ब्र० श्रुतसागर । पत्र स० ४ । आ० ११½×५ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण वेष्टन स० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

४२२३. अनिरुद्धहरण (उषाहरण)—रत्नभूषण सूरि । पत्र स० ३२ । आ० ११×४½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय —कथा । र०काल × । ले० काल स० १६६६ । पूर्ण । वेष्टन × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन स भवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—आदि अत भाग निम्न प्रकार है—

प्रारभ—दूहा

परम प्रतापी परमतु परमेश्वर स्वरूप ।
परमठाय को लहीजे अकल अक्ष अरूप ।
सारदादेवी सुन्दरी सारदा तेहनु नाम ।
श्रीजिनवर मुख थी उपनी अनोपम उमे उत्तमा ठाम ।।
अर्ण नव क्रोडि जो मुनिवर प्रान महत ।
तेह तणा चरण कमल नमु जेहता गुण छै अनत ।
देव सरस्वती गुरु नमी कहुँ एक कथा विनोद ।
भवियण जन सहुँ साभलो निज मन धरी प्रमोद ।
उषा हरण जे जन कहि जे मिथ्याती लोक ।
अणिरुधि हरिकारि आणयो तहती वचन ए फोक ।।
शुद्ध पुराण जोइ करी कथा एक एक सार ।
भवियण जन सहु साभलो अनिरुधि हरण विचार ।।
वात कथा सहु परहरो परहरो काज निकाम ।।
एह कथा रस साभलो चित्त धरो एक ठाम ।।५६।।

मध्यभाग—

ऊषा बोलि मधुरी वाणि, सामल सखी तु सुखनी खाण ।
लखी लखी तु देखाडि लोक, ताहरी म सागति सघली फोक ।।५७।।
अरे जिन त्रेवीस तणा जे वश अनि वीजा रूप लख्या परस स ।
भूमि गोचरी केरा रूप नगमि तेहनि एक सरूप ।।५८।।
द्वारावती नगरी को ईस जेहनि वहुजन नामि सीस ।
राजा समुद्रविजय विक्षात, नेमीश्वर केरो ते तात ।।५६।।
एह आदि हरिवशी जेह कपटि लिख्या पाडवना देह ।
तेह माही को तेहनि नविगमि, लखी तुकामुभर्ति नमी ।।६०।।

जरासिंघ केरो सुत युवा, अनि जो जजोउ ते ते नवा ।
रूप लखी देख्या ज्या ताम केहि सहथी नवि पोहचि आस ।
वसुदेव केरा सुन्दरपुत्र, जिणे घर राख्या घरना सत्र ।
सुन्दर नारायण तिराम रूप देखाग्या ते अभिराम ।।६१।।

अन्तिम—
श्री गिरनारि पाडियो सिद्ध तणु पद सार ।
सुख अनता भोगवे अकल अनत अपार ।।१।।
उषा थि मन चिंतव्यु ए ससार असार ।
घडी एक करि मोकली लीधो सयम भार ।।२।।
लिंग छेदु नारी तण, स्वर्गिहिरा सुरदेव ।
देव देवी क्रीडा था करि पूजी श्री जिनदेव ।।३।।
अणिरुध हरणज सामलो एक चित्तसहु आज ।
जिनपुराण जोई रच्यु जिथी सरि वहुकाज ।।४।।
श्री ज्ञानभूषण ज्ञानी नमु जे ज्ञान तणो भडार ।
तेह तणा मुख उपदेश थी रच्यो अणिरुधहरण विचार ।।५।।
सुमतिकीरति मुनिवर नमु जे वहुजननि हितकार ।
सात तत्व नित चिंतवि जिन शासन शृगार ।।६।।
दक्षिण देश नो गछपति श्री धर्मचन्द्र यतिराय ।
नेहणा चरण कमलन की कथा कही जदुराय ।।७।।
देव सरस्वती गुरुनमी कहु अणिरुध हरणविचार ।
रत्नभूसण सूरिवर कहि श्री जिन शासन सार ।।८।।
करि जोडी कहु एटलु तव गुणद्यो मुझ देव ।
विजू कामि मागु नही भवे भवे तुम्हारा पद सेव ।।९।।
रचाना इ वहुरस कहु या सामलो सहुजनसार ।
श्री रत्नभूषण सूरीसर कहि वरतो तम्ह जयकार ।।१०।।

इति श्री अनिरुध हरण श्री रत्नभूषण सूरि विरचित समाप्त ।

प्रशस्ति—

सवत् १६६६ वर्षे भादवा सुदी २ भोमे सेगला ग्रामे श्री आदीश्वर चैत्यालये श्री मूलसघे सरस्वती गच्छे वलात्कारगणे कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्त्यान्वये भट्टारक श्री वादिभूषण तत्पट्टे भट्टारक श्री रामकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक पद्मनदि देवा सद्गुरु भ्राता मुनि श्री मुनिचन्द्र तत् शिष्य मुनि श्री ज्ञानचन्द्र तत् शिष्य वर्णि लावाजीना लिखित । शुभ भवतु ।

४२२४. अनिरुद्धहरण कथा—ब्र० जयसागर । पत्रस० ४६ । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल स० १७३२ । ले०काल स० १७६६ । पूर्ण । वेष्टन स० २४६/६५ ।
प्राप्ति स्थान—दि० जैन समवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—अतिम भाग निम्न प्रकार है ।

अनिरुध स्वामी सुगतिगामी कीधू तेह वखाण जी ।
भवियण जन जे भाव भणसे पामे सुख खाण जे ।।१।।
अल्प श्रुत हूँ काइ न जाण देज्यो मुझ ने ज्ञानजी ।
पूर्ण सूरि उपदेशे कीधो अनिरुध हरण सरधानजी ।।२।।
कविजन दोप मा मुझने दीज्यो कहू हूँ मू कि मान जी ।
हीनाधिक जे एहमा होवे सोधज्यो सावधानजी ।।३।।
मूलसघ मा सरस्वती गच्छे विद्यानद मुनेंदजी ।
तस पट्टे गोर मल्लिभूपण दीठे होय अनदजी ।।४।।
लक्ष्मीचन्द्र मुनि श्रुत मोहन वीर चन्द्र तस पाटेजी ।
ज्ञानभूपण गोर गौतम सरिखो सोहे वश ललाट जी ।
प्रभाचन्द तस पाटे प्रगट्यो हुँवड चागी विडिल विक्षात जी ।
वादिचन्द्र तस अनुक्रम सोहे वादिचन्द्रमा क्षान जी ।।
तेह पाटे महीचन्द्र भट्टारक दीठे नर मन मोहे जी ।
गोर महिचन्द्र शिष्य एम वोले जयसगर ब्रह्मचारजी ।
अनिरुध नामजे नित्य जपे तेह घर जयजयकार जी ।
हासोटे सिहपुरा शुभ ज्ञाते लिख्यू पत्र विशाल जी ।
जीवधर कीतातणे वचने रचियो जू ज्ये ढाले जी ।।२।।
दूहा—अनिरुध हरणज मैं कर्‍यु दु ख हरण ऐ सार ।
साभला सुख ऊपजे कहे जयसागर ब्रह्मचारजी ।।

इति श्री भट्टारक महीचन्द्र शिष्य ब्रह्म श्री जयसागर विरचिते अनिरुद्धहरणाख्यानो अनिरुद्ध मुक्ति गमन वर्णनो नाम चतुर्थोऽधिकार सपूर्णमस्तु ।

सवत् १७६६ मा वर्षे श्रावणमासोत्तम मासे शुभकारि शुक्लपक्षे द्वितीया भृगुवासरे श्री परतापपुर नगरे हुँवड ज्ञातीय लघु शाखाया साह श्री मेघजी तस्यात्मज साह दयालजी स्वहस्तेन लिखितमिद पुस्तक ज्ञानावर्णी क्षयार्थं ।

४२२५. **प्रतिसं० २** । पत्रस० २७ । ले० काल स० १७६० चैत बुदी १ पूर्ण । वेष्टनस० २५०/६६ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४२२६ **प्रति स० ३** । पत्र स० ३६ । आ० ११×४ इच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

४२२७. **अपराजित ग्रंथ (गौरी महेश्वर वार्ता)** । पत्र स० २ । भाषा—सस्कृत । विषय—सवाद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४३८/३६२ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४२२८. **अभयकुमार कथा**— × । पत्र स० ६ । आ० १०×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

अन्तिम—अभयकुमार तजी कथा पढि है सुणि जो जीव ।
सुर्गादिक सुख भोगि के शिवसुख लहै सदीव ।
इति अभयकुमार काव्य ।

४२२६. अभयकुमार प्रबध—पदमराज । पत्रस० २७ । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल स० १६५० । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बसवा ।

विशेष—

सवत् सोलहसइ पचासि जैसलमेरू नयर उललासि ।
खरतर गछनायक जिन हस तस्य सीस गुणवत सस ।
श्री पुण्यसागर पाठक सीस पदमराज पभणइ सुजगीस ।
जुगप्रवानजिनचद मुर्णिद विजयभान निरूपम आनन्द ।
भणइ गुणइ जे चरित महत रिद्धिसिद्ध सुखते पामन्ति ।

४२३०. अवती सुकुमाल स्वाध्याय—पं० जिनहर्ष । पत्र स० ३ । आ० ११×४½ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल स० १७४१ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

४२३१. अशोक रोहिणी कथा—× । पत्र स० ३७ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × पूर्ण । वेष्टन स० २६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

४२३२. अष्टावक्र कथा टीका-विश्वेश्वर । पत्रस० ४८ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष – सवत् १७२ माह मासे कृष्ण पक्षे तिथि २ लिखित सारगदास ।

४२३३ अष्टांग सम्यक्त्व कथा—ब्र० जिनदास । पत्र स० ५५ । आ० ६ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १६६/६४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

४२३४. अष्टाह्निकाव्रत कथा— × । पत्र स० ६ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल स० १७८१ फागुण बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ४३६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प० रूपचन्द नेवटा नगरे चन्द्रप्रभ चैत्यालये ।

४२३५. अष्टाह्निका व्रत कथा— × । पत्रस० ११ । आ० १० ×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय —कथा । र०कारा × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २५७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४२३६ अष्टाह्निका व्रत कथा— × । पत्रस० ११ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३६ । **प्राप्ति स्थान** - भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४२३७. **अष्टाह्निकाव्रत कथा**— × । पत्र स० १८ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३०५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४२३८. **अष्टाह्निव्रत कथा**— × । पत्रस० १४ । आ० १०×४¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६८४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४२३९. **अष्टाह्निकाव्रत कथा**— × । पत्रस० ६ । आ० १०½×६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटयो का नैणवा ।

४२४०. **अष्टाह्निकाव्रत कथा—भ० शुभचन्द्र** । पत्रस० ८ । आ० १०¾ × ५ इञ्च । भाषा —सस्कृत । विषय— कथा । र०काल × । ले० काल × । वेष्टनस० २३१ । पूर्ण । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४२४१. **प्रतिस० २** । पत्रस० ५ । आ० ११½×५½ इच । ले० काल स० १८३० । पूर्ण । वेष्टन स० २३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—जयपुर नगर मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प० चोखचदजी के शिष्य प० रामचन्द्र जी ने कथा की प्रतिलिपि की थी ।

४२४२. **प्रतिस० ३** । पत्रस० ४ । आ० ११½×३½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २३५ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर, लश्कर जयपुर ।

४२४३. **प्रतिसं० ४** । पत्रस० १७ । आ० १०½ × ५ इच । ले० काल सं० १८६४ । पूर्ण । वेष्टनस० ३०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी थी ।

विशेष—लश्कर मे नेमिनाथ चैत्यालय मे झाझू राम ने प्रतिलिपि की ।

४२४४. **अष्टाह्निकाव्रत कथा—ब्र. ज्ञानसागर** । पत्र स० ५० । आ० १०×८½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६३० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टाकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४२४५. **प्रति स० २** । पत्रस० १० । आ० ६½×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१६-११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

४२४६. **प्रतिस० ३** । पत्र स० ४ । आ० १२×६ इञ्च । ले०काल स० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन स० २८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी) ।

४२४७. **प्रतिसं० ४** । पत्र स० ३ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

४२४८. **अक्षयनवमी कथा**— × । पत्रस० ७ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल सं० १८१३ आसोज सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० १२४ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—स्कव पुराण मे से है। सेवाराम ने प्रतिलिपि की थी।

४२४९. आदित्यवार कथा— पत्रस० १०। भापा-हिन्दी। विषय-कथा। र०काल X। ले० काल X। पूर्ण। वेष्टनस० ४४५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—राजुल पच्चीसी भी है।

४२५०. प्रतिसं० २। पत्रस० १० से २१। ले० काल X। पूर्ण। वेष्टन स० ४४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

✓४२५१ **आदित्यवार कथा--प० गगादास**। पत्रस० ४१। आ० ९X६ इञ्च। भापा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल स० १७५० (शक स० १६१५) ले०काल स० १८११ (शक स० १६७६) पूर्ण। वेष्टन स० १५२५। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर।

विशेष—प्रति सचित्र है। करीव ७५ चित्र है। चित्र अच्छे हैं। ग्र थ का दूसरा नाम रविव्रत कथा भी है।

४२५२. प्रति सं० २। पत्र स० ६। आ० १०½X५ इञ्च। ले०काल स० १८२२। पूर्ण। वेष्टन स० १७। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी।

४२५३. प्रतिसं० ३। पत्रस० ६। आ० १०½X५ इच। ले०काल स० १८३६। पूर्ण। वेष्टनस० १८। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बू दी।

✓४२५४. **प्रतिसं० ४**। पत्र स० १८। आ० १० X ७ इञ्च। ले०काल X। पूर्ण। वेष्टनस० १-२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर।

विशेष—प्रति सचित्र है तथा निम्न चित्र विशेपत उल्लेखनीय हैं—

पत्र १ पर—पार्श्वनाथ, सरस्वती, धर्मचन्द्र तथा गगाराम का चित्र, बनारस केराजा एव उसकी प्रजा
१ २ ३ ४

पत्र २ पर मतिसागर श्रेष्ठि तथा उसके ६ पुत्र इनके अतिरिक्त ४६ चित्र और हैं। सभी चित्र कथा
५

पर आधारित हैं उन पर मुगल कथा का प्रभुत्व है। मुगल बादशाहो की वेशभूषा बतलायी गयी है। स्त्रिया लहगा, ओढनी एव काचली पहने हुये हैं कपडे पारदर्शक हैं अग प्रत्यग दिखता है,

आदि भाग—

प्रणमु पास जिनेसर पाय, सेवत सुख सपनि पाय।
वदु वर दायक सारदा, यह गुरु चरन नयन युग सदा।
कथा कहुँ रविवार जक्षणी, पूर्व ग्र थ पुराणे भणी।
एक चित्त सुने जे साभले तेहने दुख दालिद्रह टले।

अन्त भाग—

देश वराड विषय सिणगार, कारजा मध्ये गुणधार।
चद्रनाथ मन्दिर सुखकद, भव्य कुसुम भामन वर चद्र ॥११०॥
मूलसघ मतिवत महत, धर्मवत सुरवर अति सत।
तस पद कमल दल भक्ति रस कूप, धर्मभूषण रद रोवे भूप ॥१११॥

विशाल कीर्त्ति विमल गुण जाण, जिन शासन पकज प्रगट्यो मान ।
तत पद कमल दल मित्र, धर्मचन्द्र धृत धर्म पवित्र ॥११२॥
तेहनो पडित गग दास, कथा करी भविष्य उल्हास ।
शाके सोलासत पन्नरसार, सुदि आषाढ बीज रविवार ॥११३॥
अल्प बुद्धि थी रचना करी, क्षमा करो सज्जन चित धरी ।
भणे सुणे भावे नरनारि, तेह घर होये मगलाचार ॥१४॥

इति धर्मचन्द्रानुचर पडित गग दास विरचिते श्री रविवार कथा सपूर्ण ।

४२५५. आदित्यव्रत कथा—भाऊकवि । पत्र स० १० । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण वेष्टन स० ६१४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—इस का नाम रविव्रत कथा भी है ।

४२५६. प्रति सं० २ । पत्र स० ६ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । ले०काल स० १७८० माह बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३०६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष—रामगढ मे ताराचद ने प्रतिलिपि की थी ।

४२५७. प्रति स० ३ । पत्रस० ६ । आ० १०½×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

४२५८. प्रति स० ४ । पत्र स० १६ । आ० ६×४ इञ्च । ले० काल स० १६०८ वैशाख सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० २६२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

विशेष—प० सदासुख ने नेमिनाथ चैत्यालय मे लिखा था ।

४२५९ प्रतिस० ५ । पत्रस० १५ । आ० ६×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १६६ । **प्राप्तिस्थान**-दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

४२६०. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १३ । आ० १२½ × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४२६१. प्रतिस० ७ । पत्र स० १८ । ले०काल स० १८५० आषाढ सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४४३ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—नेमिश्वर की वीनती तथा लघु सूत्र पाठ भी है । भरतपुर मे लिखा गया था ।

४२६२. आदित्यवार कथा—ब्र. नेमिदत्त । पत्रस० १७ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी, (गुजराती का प्रभाव) । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल पूर्ण । वेष्टनस० ५२१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

आदिभाग—

श्री शाति जिनवर २ नमते सार ।
तीर्थंकर जे सोलमु वाछित फल बहुदान दातार ।

सारदा स्वामिणि वली तवु बुद्धिसार म सरोइ माता।
श्री सकलकीर्ति गुरु प्रणामीने श्री भुवनकीर्ति अवतार
दान तण फल वरणवू ब्रह्म जिणदास कहिसार
ब्रह्म जिणदास कहिसार ।'।

अन्तिभाग—

श्री मूलसघ महिमा विरमलोए, सरस्वती गच्छ सिणगारतो।
मल्लिभूषण अति भलाए श्री लक्ष्मीचन्द सूरिराय तो।
तेह गुरु चरणकमल नमीए, ब्रह्म नेमिदत्त भणि चगतो।
ए व्रतथे भवियणकरिए, तेल हिणी अभगतो ।। ३० ।।
मनवछित सपदा लहिए, ते नर नारी सुजाणतो।
इम जाणो पास जिणतणो, ए रविव्रत करो भवि भाणतो।
ए व्रतभावना भावे तेहा, जयो जयो पार्श्वं जिणदतो।
शाति करो हम शारदाए सहगुरु करो आणदतु।

वस्तु—

पास जिणवर पास जिणवर वालब्रह्मचारी।
केवलणाणी गुणनिलो, भवसमुद्र तारण समरथउ।
तसु तणो अदित व्रत भलो जे करि भवीयण सार।
ते भव सकट भजिकरि सुख पामिइ जगितार ।।
इति श्री पार्श्वनाथदितवारनी कथा समाप्त।

४२६३. **आदितवार कथा—सुरेन्द्रकीर्ति** । पत्र स० १३ । भाषा—हिन्दी । विषय-कथा । र०काल स० १७४४ । ले० काल स० पूर्ण । वेष्टन स० ४४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—राजुल पच्चसी भी है ।

४२६४. **आराधना कथा कोश**—× । पत्र स० ६८ । आ० ६$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस०४७८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४२६५. **आराधना कथा कोश**—× । पत्र स० ८५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय-कथा र०काल × । ले० काल × पूर्ण । वेष्टन स० ७२० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—आराधना सवधी कथाओ का सग्रह है ।

४२६६. **आराधना कथा कोश**—पत्रस० १०४ । आ० १०×६ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विपय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

४२६७. **आराधना कथा कोष**— × । पत्रस० १६८ । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

४२६८ **आराधना कथाकोश—बख्तावरसिह रतनलाल।** पत्रस० २६२। आ० १०½×७ इच। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र० काल स० १८६६। ले० काल स० १६३२ वैशाख सुदी १२।। पूर्ण। वेष्टनस० १४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर।

४२६६. **प्रतिसं० २।** पत्र स० २८२। ले० काल स० १६०३। पूर्ण। वेष्टन स० ४४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

४२७०. **आराधना कथाकोश—ब्र० नेमिदत्त।** पत्रस० २५७। आ० ११×५ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथ। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५३०। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर।

४२७१. **प्रतिसं० २।** पत्र स० ६२। आ० ११½×४¾ इन्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १३६५। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४२७२. **प्रतिसं० ३।** पत्र स० २६०। ले० काल स० १८११ चैत बुदी ५। पूर्ण वेष्टन स० २६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—भरतपुर मे लिपि की गई थी।

४२७३. **आराधना कथाकोश-श्रुतसागर।** पत्रस० १५। आ० १२½×५½ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १४८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी।

विशेष—पात्र केशरी एव अकलकदेव की कथायें है।

४२७४ **आराधना कथाकोष—हरिषेण।** पत्रस० ३३८। आ० १२×५½ इन्च। भाषा—सस्कृत। विषय—कथा। र०काल स० ६८६ ले० काल × ।पूर्ण। वेष्टन स० १६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

४२७५. **आराधनासारकथा प्रबध--प्रभाचन्द।** पत्र स० २००। आ० १०×५ इन्च। भाषा—सस्कृत। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल स० १६०८। पूर्ण। वेष्टनस० २६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

४२७६. **प्रतिसं० २।** पत्रस० १-६२। आ० ११×५ इन्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७२०। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

४२७७ **आराधना चतुष्पदी—धर्मसागर।** पत्र स० २०। ६×४ इन्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल स० १६६५ आसोज सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन स० ४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर चौधरियान मालपुरा (टोक)

४२७८ **एकादशी महात्म्य**—×। पत्र स० १०। आ० ११×५ इन्च। भाषा—सस्कृत। विषय—कथा। र० काल ×। ले०काल स० १६२१। पूर्ण। वेष्टन स १५८। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी।

विशेष—स्कद पुराण मे से है।

४२७६. **एकादशी महात्म्य**— × । पत्र सख्या १०१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-महात्म्य । र०काल × । लेखन काल स० १८५२ वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी (बूंदी) ।

४२८०. **एकादशी व्रत कथा**— × । । पत्र स ७ । आ० ६¾×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—इसका नाम 'सुव्रतऋषिकथा' भी है ।

४२८१. **ऋषिदत्ता चौपई—मेघराज** । पत्रस० २२ । आ० १०½×४½ इच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र०काल स० १६५७ पौष सुदी ५ । ले०काल स० १७६६ आसोज सुदी ११ । पूर्ण । वेट्न स० ३१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना बूंदी ।

४२८२. **ऋषिमण्डलमहात्म्य कथा**— × । पत्र स० १० । आ० १२½ × ५¼ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४२८३. **कठियार कानडरी चौपई—मानसागर** । । पत्र स० ५ । आ० १०×४½ इच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र०काल स० १७४७ । ले० काल स० १८४० । पूर्ण । वेष्टनस० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

४२८४. **कृपण कथा—वीरचन्द्रसूरि** । पत्रस० २ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३०७/१०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सभवनाथ उदयपुर ।

विशेष—अन्तिम—

दाझतो तव दुखि उथयो नरक सातमि मरीनिगयो ।
जपि वीरचन्द्र सूरी स्वामि एम जाणि मन राखो गम ।।३२।।

४२८५. **कथाकोश**— × । पत्र स० ४१-६८ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स०३३८/१६७ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर ।

४२८६. **प्रतिसं० २** । पत्र स० ८ । ले० काल स० १७२० । पूर्ण । वेष्टन स० १६०/५६४ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४२८७. **कथाकोश—चन्द्रकीर्ति** । पत्र सख्या १५-६६ । आ० १०½×४½ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—अन्तिम भाग निम्न प्रकार है—

श्रीकाष्ठसघे विबुधप्रपूज्ये
श्रीरामसेनान्वय उत्तमेस्मिन् ।
विद्याविभूषायिध सूरिरासीत्
समस्ततत्वार्थकृतावतार ।।७१।।

तत्पादपंकेरुहचंचरीक
　　श्रीभूपणसूरि वरो विभाति ।
सघ्नष्ट हेतु व्रत सत्कथाच ।
　　श्रीचन्द्रकीर्तिस्त्विमकाचकार ।।७२।।

इति श्री चन्द्रकीर्त्याचार्यविरचिते श्री कथाकोशे षोडपकारणव्रतोपाख्याननिरूपण नामसप्तम सर्ग ।।७।।

४२८८. **कथाकोश—ब्र० नेमिदत्त** । पत्र स० २२० । आ० १२½×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय - कथा । र०काल × । ले० काल स० १७५३ । पूर्ण । वेष्टन स० १०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

४२८९. **प्रतिसं० २** । पत्र सख्या १७३ । आ० ११ × ४ इञ्च । लेखन काल स० १७९३ श्रावण सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—मालपुरा मे लिखा गया था ।

४२९० **प्रति स० ३** । पत्र स० २५७ । आ० ११×५½ इच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४२९१. **प्रति स० ४** । पत्र स० १४४-२१९ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

४२९२ **कथाकोश—भारामल्ल** । पत्र स० १२९ । आ० १३×५½ इच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल स० १९५३ । पूर्ण । वेष्टनस० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर ।

४२९३. **कथाकोश—मुमुक्ष रामचन्द्र** । पत्र स० ४४ । आ० १०×५ इच । भाषा-संस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २५ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मदिर नागदी, बूदी ।

४२९४. **कथाकोश—श्रुतसागर** । पत्र स० ९६ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल स० १८२० पौष सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० १६०१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४२९५. **कथाकोश—हरिषेण** । पत्र स० ३५० । आ० ९×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४२९६. **कथाकोश**— × । पत्र स० ७८ । आ० १०½×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—१, २ एव २८ वा पत्र नही है ।

४२९७. **प्रति सं० २** । पत्रस० ७९ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले० काल स० १९११ । अपूर्ण । वेष्टन स० १८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनमन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—४७ से ५१ तक पत्र नही है ।

निम्न कथाओ एव पाठो का सग्रह है ।

	कथा का नाम	कर्त्ता का नाम	
१	आदिनाथजी का सेहरा—	ललितकीर्त्ति—	र० काल × । हिन्दी पत्र १से८ ।

विशेष—बाहुबलि रास भी नाम है ।

	कथा का नाम	कर्त्ता का नाम	
२	द्रव्यसग्रह भाषा टीका सहित—		× । — × । प्राकृत हिन्दी । पत्र ८ से २६ तक ।
३	चौबीस ठाणा—		× । — × । हिन्दी । पत्र २६ से २९ तक ।
४	रत्नत्रय कथा—	हरिकृष्ण पाडे	र० काल स० १७६६ हिन्दी । पत्र २९ से ३१ तक ।
५	अनन्तव्रत कथा—	,,	र० काल × । हिन्दी । पत्र स० ३१ से ३४ तक ।
६.	दशलक्षण व्रत कथा	,,	र० काल स० १७६५ । हिन्दी पत्र स० ३४से३६
७	आकाश पचमी कथा	,,	र० काल १७६२ । हिन्दी । पत्रस० ३६ से ३९
८	ज्येष्ठ जिनवर कथा	,,	र० काल स० १७९८ । हिन्दी पत्र स० ३९–४१
९	जिन गुण सपत्ति कथा	ललितकीर्त्ति	र० काल × । हिन्दी । पत्र ४१ से ४६ तक
१०.	सुगधदशमी कथा—	हेमराज	र० काल × । हिन्दी । पत्र ४६ से ५३ तक । अपूर्ण
११	रविव्रत कथा—	अकलक	र० काल स० १६७६ । हिन्दी । पत्र ५३–५४
१२	निर्दोषसप्तमी कथा—	हरिकृष्ण	र० काल स० १७७१ । हिन्दी । पत्र ५४ । अपूर्ण
१३.	कर्मविपाक कथा—	,,	र० काल × । हिन्दी । पत्र ५४ से ५८
१४	पद—	विनोदीलाल	पत्र ५८–५९
१५.	समोसरन रचना—	ब्रह्मगुलाल	पत्र ५९ से ५३ । र० काल १६६८
१६	पट दर्शन	×	पत्र ६३ पर
१७	रविव्रत कथा —	भाऊ कवि	पत्र ६३ से ७१ तक
१८	पुरदरविधान कथा—	हरिकृष्ण	र० काल १७६८ फाल्गुन सुदी १० । पत्र ७१–७२
१९.	नि शल्य अष्टमी कथा—	,,	र० काल × । पत्र ७२-७३
२०	सङ्कटचौथ कथा —	देवेन्द्रभूषण	र० काल × । पत्र ७३ से ७५
२१	पचमीव्रत कथा—	सुरेन्द्रभूषण	र० काल स० १७५७ पौष बुदी १० । पत्र ७५–७९

४२९८. कथाकोश— × । पत्र स० २७६ आ० १२ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण वेष्टन स० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर दौसा ।

४२९९. कथासंग्रह— × । पत्रस० ५३ । आ० ९×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४९ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—निम्न कथाओ का सग्रह है—

पुष्पाञ्जली, सोलहकरण, मेघमाला, रोहिणीव्रत, लब्धिविधान, मुकुटसप्तमी, सुगधदशमी, दशलक्षण कथा, आदित्यव्रत एव श्रावणद्वादशी कथा ।

४३०० प्रतिस० २ । पत्र स० ८ । आ० १०×४½ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७३५ । प्राप्ति स्थान – भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प० सुमतिसुन्दरगणिभिरलेखि श्री रिणीनगरे ।

धन्यकुमार, शालिभद्र तथा कनककुमार की कथाए हैं ।

४३०१ **कथा सग्रह**— × । पत्रस० १२४ से २०५ । आ० ११½ × ४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४३०२ **कथा सग्रह**—× । पत्रस० ८६ । आ० १०×४½ इ च । भाषा—सस्कृत । विषय–कथा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (राज०)

४३०३. **कथा सग्रह**—× । पत्रस० । भाषा—सस्कृत । विषय-कथा । वेष्टनस० ४६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

१ अष्टाह्निका कथा—भ० सुरेन्दकीर्ति । सस्कृत
२ पुष्पाजलिव्रत कथा—श्रुतसागर । ,,
३ रत्नत्रय विधानकथा— ,, । ,,

४३०४. **कथा सग्रह**—× । । पत्रस० २८ । आ० १०×६½ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल स० १६४१ । पूर्ण । वेष्टन स० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—भारामल की चार कथाओ का सग्रह है ।

४३०५. **कथा सग्रह**—× । पत्रस० ३७–५६ । भाषा-सस्कृत । विषय–कथा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १५६/१०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

४३०६. **कथा सग्रह**—× । । पत्रस० ५६ । आ० १२ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १५८/१०७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—निम्न कथाओ का सग्रह है ।

१—अष्टाह्निका कथा—		सस्कृत	अपूर्ण
२—अनन्तव्रत कथा	भ० पद्मनदि	'	"
३ —लब्धि विधान	प० अभ्रदेव	"	पूर्ण
४ – रूक्मिणी कथा	छत्रसेनाचार्य	"	"
५—शास्त्र दान कथा	अभ्रदेव	"	"
६—जीवदया	भावसेन	"	"
७—त्रिकाल चौवीसी कथा	प० अभ्रदेव	"	"

४३०७ **कथा सग्रह**—× । पत्र स० २१ । भाषा–प्राकृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४३०८. **कथा सग्रह—विजयकीर्ति** । पत्रस० ५८ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र०काल स० १८२७ सावण बुदी ५ । ले०काल स० १८२८ । पूर्ण । वेष्टन स० ६४५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष कनककुमार, धन्यकुमार, तथा सालिभद्र कुमार की कथाए चौपई वध छद मे है ।

४३०९. **कलिचौदस कथा—भ० सुरेन्द्रकीर्ति** । पत्रस० ५ । आ० ११× ५इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०२ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

४३१०. **कार्तिक पंचमी कथा** । पत्रस० ५ । आ० १०½×४½ इञ्च ।भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०कारा × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६४।२०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

विशेष—प्रति प्राचीन है । १७ वी शताब्दी की प्रतीत होती है ।

४३११. **कार्तिक सेठ को चोढाल्यो** × । पत्रस० ४ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी विषय—कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना वू दी ।

४३१२ **कार्तिक महात्म्य** — × । पत्र स० ८ । आ० ६½ ×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा (जैनेतर) । र०काल × । ले०काल स० १८७२ कार्तिक सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ८-१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर टोडारायसिंह (टोक)

विशेष—पद्मपुराण से ब्रह्म नारद सवाद का वर्णन है ।

४३१३. **कालक कथा**—× । भाषा—प्राकृत । विषय-कथा । र० काल× । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४४०-३१/२८२-८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष— दो प्रतियो के पत्र हैं । फुटकर है ।

४३१४. **कालाकाचार्या कथा—श्री माणिक्यसूरि** । पत्रस० ४ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४३१५. **कालकाचार्य कथा—समयसुन्दर** । पत्रस० ११ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल स० १७१५ वैशाख बुदी १ । वेष्टनस० १२६ । पूर्ण । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर वोरसली कोटा ।

विशेष—देलवाडा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४३१६ **कालकाचार्य प्रबध—जिनसुखसूरि** । पत्र स० १६ । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल १८६६ । पूर्ण । वेष्टन स० ७३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—प्रति जीर्ण हैं ।

४३१७. **कुदकुदाचार्य कथा**—× । पत्रस० २ । आ० १०½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५५ ।**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर वून्दी ।

विशेष—अन्त मे लिखा है–इति कु दकु दस्वामी कथा । या कथा दक्षरणसू एक पडित छावणी माभरो गयो उक अनुसार उतारी है ।

४३१८. कौमुदी कथा—× । पत्रस० ४९–१०४ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २९ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

४३१९. कौमुदी कथा—× । पत्रस० ९० । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल स १७३६ । अपूर्ण । वेष्टनस० ६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मदिर डीग ।

४३२०. कौमुदी कथा—× । पत्र स० १३६ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल स० १८२९ माह सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० २६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान (बू दी) ।

विशेष—राजाधिराज श्री पातिसाह अकबर के राज्य मे चम्पानगरी के मुनिसुव्रतनाथ के चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी । स० १६९२ की प्रति से लिखी गयी थी ।

४३२१. गर्जसिह चौपई—राजसुन्दर । पत्रस० १६ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय कथा । र०काल स० १५५६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपर ।

विशेष—प्रत्येक पत्र पर १७ पक्तिया एव प्रति पक्ति मे ३५ अक्षर हैं ।

मध्य भाग—

—नगर जोइनइ आवियो कुमर जे आवा हेठि ।
नारी ते देखइ नही, जोवइ दस दिसि देठि । १५६ ।।
मनिचिंतइ कारण कियउ केणि हरीरा वाल ।
पगजोतइ सहू तेहना धारि बुद्धि सुविसाल । १५७ ।
नरमहि धूरतना पढौ वैठया नारी माहि ।
पखी माही वाइस सही जोवउ पगहू जाहि । १५८ ।।
वउ आखें अजनाकरि चाल्यउ ननर मझारि ।
पग जोवतउ नारी तणी पहुतउ वेस दुवारि १५९

४३२२ गुणसुन्दरी चउपई—कुशललाभ । पत्र स० ११ । आ० १०½×४½ इन्च । भाषा-राजस्थानी । विषय कथा । र०काल स० १६४८ । ले०काल स० १७४९ । पूर्ण । वेष्टनस० २७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

४३२३. गौतम पृच्छा—× । पत्र स० ६७ । आ० ९×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल स० १८१० । पूर्ण । वेष्टन स० ३८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तरहपथी मन्दिर नैणवा ।

४३२४. चतुर्दशी कथा—डालूराम । पत्र स० २१ । आ० ९×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल स० १७५५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९७३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

४३२५. चंदराजानी ढाल—मोहन । पत्र स० १ । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २०६/६६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

४३२६. चन्द्रप्रभ स्वामिनो विवाह—भ० नरेन्द्रकीर्त्ति । पत्रस० २४ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—रजस्थानी । विषय—कथा । र०काल स० १६०२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

आदि भाग—

सकल जिनेश्वर भारती प्रणमीने
गणधर लहीय पसाउ ।
लोए श्री चन्द्रप्रभ वर नमित नरामर
गायस्यु तेह वीवाहलोए ।।१।।

मध्य भाग—

जइने बोलावे मात्त लक्षमणा देवी मात ।
उठोरे जिनेश्वर कहिए एक वात ।।१।।
सामीरे देखीजें रे पुत्र साहिजे सदा पवित्र ।
रजसु भदासे वछ निरमल गात्र ।

अन्तिम भाग—

विक्रमराय पछी सवत् सोल वय सवत्सर जाण
वैशाख वदी भली सप्तमी दिन सोमवार सुप्रमाण
गुजरदेश सोहामणो **महीसान** नयर मुमार ।
विवाउ लउ रचउ मनरली आदिश्वर भवन मझार ।।
श्री मूलसघ गछपति शुभचन्द भट्टारक सार ।
तत्पदकमल दिवाकरु, श्रीय मुमतिकीरति भवतार ।।
गुरु भ्राता तस जाणइ श्रीय सकलभूषण सुरी देव ।
नरेन्द्रकीरती सुरीवर कहे, कर जोडि ते पद सेव ।
जे नरनारी भावें सुरें, भणेंद सुणें यह गीत ।
ते पद पामे साम्वता, श्री चन्द्रप्रभुनीरीति ।।

इति श्री चन्द्रप्रभ स्वामिनो विवाह सपूर्ण । ब्रह्म श्री गोनम लखीत । पठनार्थ ब्रह्म श्री रूपचन्दजी ।

४३२७. चन्दनमलयागिरी चौपई—भद्रसेन । पत्रस० २० । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र०काल १७वी शताब्दी । ले०काल स० १७६० जेष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १/१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

प्रशस्ति—सवत् १७६० वर्षे मासोतममासे जेठ मासे शुक्ल पक्षे त्रयोदशाम्या तिथौ सोमवासरे इद पुस्तक लिखापित कारंजा नगर मध्ये श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालये लेखक पाठकयो शुभ भवतु ।

प्रति सचित्र है तथा उसमे निम्न चित्र हैं—

१	राधाकृष्ण	—	पत्र १ पर
२	राजा चन्दन रानी मलयागिरी	—	१
३.	महल राजद्वार	—	१
४	राज्य देव्या सवाद	—	२
५	राजा चन्दन कुल देवता से बात पूछै छै	—	३
६	रानी मलियागिरी राजा चन्दन	"	३
७.	रानी मलियागिरी और राजा चन्दन सायर के तीर	—	४
८	" "	—	५
९	" पार्श्वनाथ के मन्दिर पर	—	५
१०	सायर नीर गौउ चरावे छै	—	५
११	चोवदार सोदागर	—	६
१२	रानी वनखड मे लकडी बीनवे	—	६
१३	रानी मलयागिरी एव चोवदार	—	७
१४	"	—	८
१५	मलियागिरी को लेकर जाते हुए	—	९
१६	रानी मलयागिरी एव सौदागर	—	१०
१७	वीर, सायर नदी नीर अमरालु	—	११
१८	राजा चन्दन स्त्री	—	१२
१९	राजा चन्दन पर हाथी कलश ढोलवे	—	१३
२०	राजा चन्दन महल मा जाय छै	—	१४
२१	राजा चन्दन आनन्द नृत्य करवा छै	—	१६
२२	राजा चन्दन भलो छै	—	१६
२३	नीर सायर मीला छै रानी मलियागिरी	—	१६
२४	राजा चन्दन, रानी मलियागिरी सौदागर भेट कीवी	—	१७
२५	राजा चन्दन, के समक्ष सायर नीर पुकार करै छै	—	१८
२६.	चन्दन मलियागिरी	—	१९

४३२८ **चदनषष्ठीव्रत कथा—खुशालचन्द।** पत्र स० ६। आ० १२×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल स० १८२८। पूर्ण। वेष्टनस० १४५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी।

४३२९ **चपावती सीलकल्याणदे—मुनि राजचन्द।** पत्र स० ९। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—कथा। र० काल स० १६८४। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० ५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर।

४३३०. **चारमित्रो की कथा**— ×। पत्र स० ६९। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ९२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

४३३१. चारुदत्त कथा— × । पत्रस० ५ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा - सस्कृत । विपय—कथा । र०काल × । ले० काल × । । पूर्ण । वेष्टन स० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४३३२. चारुदत्त सेठ (णमोकार) रास—ब्र० जिनदास । पत्रस० ३५ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल स० १७५४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३०३ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर, उदयपुर ।

४३३३. चारुदत्त प्रबन्ध—कल्याणकीर्ति । पत्रस० । १३ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र० काल स० १६८२ । ले० काल स० १७६५ । पूर्ण । वे स० २७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

४३३४. चित्रसेन पद्मावती कथा—गुणसाधु । पत्र स० ४४ । भाषा – सस्कृत । विपय—कथा । र०काल सवत १७२२ । ले०काल स० १८६८ आसोज सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

४३३५. चित्रसेन पद्मावती कथा—पाठक राजवल्लभ ।पत्र स० २३ । आ० ९½×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र०काल स० १५२४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

४३३६. प्रति स० २ । पत्र स० ५२ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष—कुल ५०७ पद्य हैं । प० हीरानन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

४३३७ प्रतिसं० ३ । पत्रस० ९ । आ० १०×४ इञ्च । ले०काल स० १६५१ फागुण बुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० २३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति अच्छी है ।

४३३८ चित्रसेन पद्मावती कथा— × । पत्र स० २१ । भाषा—सस्कृत । विपय—कथा । र०काल स० १४२८ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४३३९. चेलणासतीरो चोढालियो—ऋषि रामचन्द । पत्र स० ४ । आ० ९×४ इच । भाषा—राजस्थानी । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर दबलाना (बूदी)

४३४०. चोबोली लीलावती कथा--जिनचन्द । पत्र स० १५ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विपय—कथा । र०काल स० १७२४ । ले०काल स० १८४९ । पूर्ण । वे०स० ३३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४३४१. चौबीसी कथा— × । पत्रस० ७ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

४३४२. **चौबीसी व्रत कथा**— × । पत्र स० ८७ । आ० १४×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन स० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

४३४३. **जम्बूकुमार सज्झाय**— × ।पत्रस० १ । आ० १०½×४ इञ्च । भाषा – हिन्दी । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, बोरसली कोटा ।

४३४४. **जम्बूस्वामी अध्ययन—पद्मतिलक गरिण** । पत्र स० ६३ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल स० १७८६ कार्त्तिक बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० २०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना बूदी ।

विशेष—पद्मसुन्दरगरिण कृत हिन्दी टब्बार्थ टीका सहित है ।

४३४५. **जम्बूस्वामी कथा**— × । पत्र स० ५ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल । अपूर्ण । वेष्टन स० २६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना (बूदी)

४३४६. **जम्बूस्वामी कथा**— × । पत्रस० ३१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४३४७. **जम्बूस्वामी कथा–प० दौलतराम कासलीवाल** । पत्र स० २ से २७ । आ० ११½×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय–कथा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—पुण्यास्रव कथाकोश मे से है । प्रथम पत्र नही है ।

४३४८. **जिनदत्त कथा**— × । पत्र स० २५ । आ० ११ × ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल स० १५०० जेष्ठ बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक)

प्रशस्ति—सवत् १५०० वर्षे जेष्ठ वुदि ७ रवौ गवार मन्दिरे श्रीसघे भट्टारक श्री पद्मनन्दि तच्छिष्य श्री देवेन्द्रकीर्ति तच्छिष्य विद्यानन्दि तद्दीक्षित ब्र० हरदेवेन कर्मक्षयार्थ लिखापित ।

"श्रेष्ठि अर्जुन सुत भूठा लिखापित भ० श्री ज्ञानभूषरणस्तत्पट्टे भ० श्री प्रभचद्रारणा पुस्तक । ये शब्द पीछे लिखे गये मालूम होते हैं ।

प्रारम्भ—

महामोहतमच्छन्न भुवनाभोजभानन ।
सतु सिद्ध्यगना सङ्ग सुखिन सपदे जिना ।।१।।
यदा पत्ता जगद्वस्तु व्यवस्थेय नमामि ता ।
जिनेन्द्रवदनाभोज राजहसी सरस्वती ।।२।।
मिथ्याग्रहाहिनादष्ट सद्धर्मामृतपानत ।
आश्वासयति विश्व ये तान् स्तुवे यतिनायकान् ।।३।।

अन्तिम—

कृत्वा सारतर तपो वहुविध शाताश्चिर चार्यिका।
कल्प नास्तमत्रापुरेत्पनरता दत्तो जिनादिर्गु त ।
यत्रासौ सुखसागरातरगणा विज्ञाय सर्वेपिते।
न्योन्य तत्र जिनादि वदनपरा प्रीता स्थिति तन्वते ॥६८॥

६ सर्ग हैं।

४३४६. **जिनदत्त चरित—गुणभद्राचार्य**। पत्र स० ४७। आ० १२×७½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—चरित। र०काल ×। ले० काल स० १६३०। पूर्ण। वेष्टन स० २२८। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—इसका नाम जिनदत्त कथा दिया हुआ है।

४३५०. **प्रतिसं० २**। पत्र स० ३८। आ० १०×४½ इञ्च। ले० काल स० १६८०। पूर्ण। वेष्टन स० ३६६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४३५१ **जिनदत्त कथा भाषा**— ×। पत्रस० ५८। आ० १२×७ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल स० १६६२। पूर्ण। वेष्टनस० २२६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर, वोरसली कोटा।

४३५२. **जिनरात्रिव्रत महात्म्य—मुनि पद्मनन्दि**। पत्र स० ३६। आ० ११ × ५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय-कथा। र०काल ×। ले० काल स० १५६४ पौष वुदी २। पूर्ण। वेष्टन स० ६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष - द्वितीय सर्ग की पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री वर्द्धमानस्वामि कथावतारे जिनरात्रिव्रतमहात्म्य दर्शके मुनिश्रीपद्मनदिविरचिते मन सुखाय नामाकिते श्री वर्द्धमाननिर्वाणगमन नाम द्वितीय सर्ग ॥२॥

४३५३. **जिनरात्रि विधान**— ×। पत्र स० १५। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय कथा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

४३५४. **ज्ञातृधर्म कथा टीका**— ×। पत्रस० ६६। आ० १० × ४½ इञ्च। भाषा-प्राकृत सस्कृत। विषय-कथा। र०काल ×। ले०काल स० १८७४ मगसिर वुदी १। पूर्ण। वेष्टन स० १०६/७४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)।

विशेष—वणपुर मध्ये नयशेखर ने प्रतिलिपि की थी।

४३५५ **ढोला मारुणी चौपई**— ×। पत्र स० १४। आ० १२ × ५½ इच। भाषा-राजस्थानी (पद्य)। विषय-कथा। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा।

४३५६. **णमोकार मंत्र महात्म्य कथा**— ×। पत्र स० ६८६। आ० १३× ७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-कथा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—सचित्र प्रति है। चित्र सुन्दर है।

४३५७. ताजिकसार— × । पत्रस० ८ । आ० १०×४½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५८८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४३५८. त्रिकाल चौबीसी कथा—प० अभ्रदेव । पत्रस० ५ । आ० १०½ × ४¾ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४३५९ त्रिलोकदर्पण कथा—खडगसेन । पत्रस० १८४ । आ० ११½ × ५½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान कथा । र० काल स० १७१३ चैत्र सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

४३६०. प्रतिस० २ । पत्र स० १५६ । आ० १२½×४½ इन्च । ले० काल स० १७७७ आसोज सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—केशोदास ने प्रनिलिपि की थी ।

४३६१. प्रति स० ३ । पत्र स० १७६ । आ० १०½×५½ इन्च । ले० काल स० १८४६ आसोज सुदी ६ गुरुवार । पूर्ण । वेष्टन स० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल टोक ।

विशेष—लिखायित देवदीदास जी लिखत व्यास सहजरामेण नक्षकपुर मध्ये ।

इस प्रति मे रचना काल स० १७१८ सावण सुदी १० भी दिया हुआ है—

४३६२ प्रतिसं० ४ । पत्रस० १८० । आ० १०×५½ इन्च । ले० काल स १८६३ सावण बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष—ब्राह्मण सुखलाल ने राजमहल मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी ।

४३६३. प्रति स० ५ । पत्रस० ८२ । आ० १२ × ६½ इन्च । ले०काल स० १७६३ मगसिर सुदी १४ । पूर्ण वेष्टनस० ५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

४३६४. प्रति स० ६ । पत्रस० १५७ । आ० १२×५½ इन्च । ले० काल स० १८३२ कार्त्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० १११-८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह टोक ।

विशेष—सूरतराम चौकडाइत भौंसा चाकसू वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

४३६५. प्रतिसं० ७ । पत्र स० १६८ । आ० १० ×४½ इन्च । ले० काल स० १८३० । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

४३६६ प्रतिसं० ८ । पत्रस० ११३-१३६ । ले० काल स० १७५७ । अपूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर बसवा ।

४३६७. प्रतिस० ९ । पत्रस० १४२ । आ० ११ × ६½ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मदिर उदयपुर ।

४३६८. प्रतिस० १० । पत्र स० ११४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४३६६. **प्रतिसं० ११** । पत्रस० १६५ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल स० १८०० । पूर्ण । वेष्टन स०६६-४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

४३७० **प्रति स० १२** । पत्रस० १८४ । आ० ८½×५ इञ्च । ले०काल स० १८२२ आषाढ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—आनन्दराम गोधा ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

४३७१. **प्रति स० १३** । पत्र स० १२४ । ले० काल स० १८२४ सावन बुदी ८ । पूर्ण । वे० स० ३७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४३७२. **प्रति सख्या १४** । पत्रस० ७६ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४३७३. **त्रिलोक सप्तमी व्रत कथा—ब्र० जिनदास** । पत्र स० ७ । आ० ११ × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय–कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३६३/१२४ । **प्राप्ति स्थान**—समवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर ।

४३७४. **दमयंती कथा—त्रिविक्रम भट्ट** । पत्र स० १२१ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत (गद्य) । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल स० १७५७ श्रावण सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बू दी) ।

विशेष—इन्द्रगढ मे मुनि रत्नविमल ने प्रतिलिपि की थी ।

४३७५. **दर्शनकथा—भारामल्ल** । पत्र स० ३७ । आ० १३½×६½ इञ्च । भाषा—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३६८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४३७६. **प्रतिस० २** । पत्र स० ३७ । आ० १०½×५½ इञ्च । ले०कालस० १६३६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

४३७७. **प्रतिसं० ३** । पत्रस० २ से २५ । आ० १३¾ × ७ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—१,१० एव ११ वा पत्र नही है ।

४३७८ **प्रति स० ४** । पत्रस० २८ । आ० १२¾×७¾ इच । ले०काल स० १६४२ । पूर्ण । वेष्टन स० १६७-७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, कोटडियो का डूगरपुर ।

४३७९. **प्रतिसं० ५** । पत्रस० २७ । आ० १२½×८ इञ्च । ले०काल स० १६४३ । पूर्ण । वेष्टनस० ६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

४३८०. **प्रति स० ६** । पत्र स० २२ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

४३८१. **प्रति स० ७** । पत्र स० २८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

४३८२. **प्रतिसं० ८** । पत्रस० ३४ । आ० १०½×७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर कामा ।

४३८३. **प्रति स० ६** । पत्र स० ५५ । आ० १२½ × ५½ इन्च । ले० काल स० १६०७ । पूर्ण । वेष्टन स० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

४३८४. **प्रति स० १०** । पत्रस० ३८ । आ० १० × ६¾ इन्च । ले०काल स० १६२८ आसोज वदी ८ । अपूर्ण । वेष्टन स० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—सौगाणी दि० जैन मदिर करौली ।

विशेष—प्रथम पत्र नही हैं ।

४३८५. **प्रतिस० ११** । पत्र स० ५८ । आ० ६ × ५½ इन्च । ले० काल स० १६५६ सावन सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष – चिरजीलाल व गूजरमल वैद ने करौली मे प्रतिलिपि की थी ।

४३८६. **प्रतिस० १२** । पत्रस० ४१ । आ० १०½ × ५½ इन्च । ले०काल स० १६२७ चैत्र सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ७२/१६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—पत्र स २३ और ३६ की दो प्रतिया और हैं ।

४३८७. **प्रतिस० १३** । पत्रस० २८ । आ० ११ × ७½ इन्च । ले०काल स० १६६१ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

४३८८ **प्रति स० १४** । पत्र स० ४६ । आ० ८½ × ६½ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

४३८९. **प्रति स० १५** । पत्रस० २४ । आ० १३ × ७ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

४३९०. **प्रति स० १६** । पत्रस० ३२ । आ० १० × ७ इन्च । ले०काल स० १६६१ । पूर्ण । वेष्टनस० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, नागदी बूदी ।

४३९१ **प्रति स० १७** । पत्रस० २३ । आ० १२½ × ८ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५३७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४३९२. **दशलक्षण कथा**—× । पत्रस० ३ । आ० १० × ४½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ल०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४३९३ **दशलक्षण कथा**—× । पत्रस० ४ । आ० १०½ × ४½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४३९४. **दशलक्षण कथा—हरिचन्द** । पत्र स० १० । आ० ११ × ४¾ इन्च । भाषा-अपभ्र श । विषय-कथा । र०काल स० १५२४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष आगे तीन कथाए और दी हुई है

प्रारम्भ—श्री नमो वीतरागाय ।

वदिवि जिण सामिया सिव सुह गामिय
पयडमि दह लखणामि कहा ।

सासय सुह कारण भवणिहितारण
भवियहणि सुणहु भत्ति यहा ।।

अंतिम—

सिरि मूलसघ वलत धारगणि । सरसइ गच्छवि ससार मणि ।।
यहच द पोम नदिमुवर, सुहचन्दु भडार उप पट्टुवर ।।
जिणचन्द सूरि णिजियडयण, तहु पट्ट सिहकीर्ति विसुगण
मुनि खेमचन्द सूरि मयमोहहण, श्री विजयकीत्ति तवखीण तेण ।।
अज्जिय सुमदणसिरे पयणमिय
पडित हरियदु विजयसहिय ।।
जिण आइणह चोइहरय ।
विग्हय दहलवखण कह सुवय ।।
उवएसय कहिय गुणग्गलय ।
पदहसइ चउवीस मलय ।
भादव सुदी पंचमि अइ विमल ।
गुरुवारु विसारयणु खतु अमल ।।
गोवागिरि दुग्ग द्दाणइय ।
तोमरह वस किल्हण समय ।
वर लवुकचु वसहितल ।
जिणदास सुधम्म पुण हण्णलय ।।
भज्जावि सुमीला गुण सहिय ।
णदण हरिपारु वुद्धि णिहिय ।।
णदहु जे पढहि पढावहिय ।
वाचहि वखाणहि दखमहिय ।।
ते पावहि सुरणर सुक्खवर ।
पाछे पुणु मोखलच्छिय वर ।

घत्ता—

सासय सुहरत्त भवणिहिवत्त
परम पुरिसु आराहिमणा ।
दह धम्मह भाउ पुण सय हाउ
हरियद णमसिय जिणवरणा ।।
इति दस लाखणिक कथा समाप्त ।

इसके अतिरिक्त मौनव्रत कथा (सस्कृत) रत्नकीर्ति की, विद्याधर दशमीव्रत कथा (सस्कृत) तथा नारिकेर कथा (अपभ्रंश) हरिचन्द की और है ।

४३६५. दशलक्षण कथा-ब्र० जिनदास । पत्र स० १६ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल स० १६४७ । पूर्ण । वेष्टन स० ५४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

४३९६. **दशलक्षण कथा** । पत्रस० ६ । भाषा-हिन्दी । विषय—कथा । र०काल X । ले० काल स० १९६८ । पूर्ण । वेष्टनस० ३१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—व्रत कथा कोष मे से ली गई हैं । पुष्पाजलि कथा और है ।

४३९७. **दान कथा—भारामल्ल** । पत्र स० ८ । आ० ११ × ५ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल X । ले० काल X ।पूर्ण । वेष्टन स० ३९९/९८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

४३९८. **प्रति सं० २** । पत्रस० १० । ले० काल X पूर्ण । वेप्टन स० ४००/९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

४३९९. **प्रति स० ३** । पत्र स० ३० । आ० ११X७½ इन्च । ले० काल स० १९४३ । पूर्ण । वेप्टन स० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बघेरवालो का आवा (उणियारा)

विशेष—सीलोर ग्राम मे प्रतिलिपि की गई थी ।

४४०० **प्रति सं० ४** । पत्रस० ५८ । आ० ७ X ५ इन्च । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टनस० ९७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोट्यो का नैणवा ।

४४०१ **प्रतिस० ५** । पत्र स० २९ । आ० १०½X६ ½इन्च । ले० काल स० १९३६ । पूर्ण । वेष्टन स० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

४४०२ **प्रति स० ६** । पत्रस० २-३४ । ले०काल X । अपूर्ण । वेप्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

४४०३. **प्रतिसं० ७** । पत्र स० ३२ । आ० ९ ½X ६ इन्च । ले० काल स० १९३७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

४४०४. **प्रतिस० ८** । पत्र स० ३२ । ले०काल स० १९३७ । पूर्ण । वेष्टन स० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

४४०५ **प्रतिसं० ९** । पत्र स० ३७ । आ० ६X६ इन्च । ले० काल १८६१ । पूर्ण । वेष्टन स० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

४४०६ **प्रतिस० १०** । पत्र स० २४ । आ० ११X७ इन्च । ले० काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० ९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूदी ।

४४०७ **प्रतिसं० ११** । पत्र स० ३० । आ० १०½ X ७ ½ इन्च । ले०काल स० १९३७ । पूर्ण । वेष्टनस० १०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी ।

४४०८ **प्रति स० १२** । पत्र स० २९ । आ० ९X६ इन्च । ले०काल X । पूर्ण वेष्टन स० १५१ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मदिर श्री महावीर बूदी ।

४४०९. **प्रति स० १३** । पत्र स० २९ । आ० १०½X७½ इन्च । ले०काल १९३७ । पूर्ण । वेष्टन स० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बूदी ।

४४१०. **प्रति सं० १४** । पत्र स० ३० । आ० ८½X६ इन्च । ले०काल X । पूर्ण । वेप्टन स० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

४४११. **प्रतिस० १५** । पत्रस० २६ । आ० ११½×६½ इञ्च । ले०काल १६३० माह बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० ७१/१८४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—१८ पत्रो की एक प्रति और है ।

४४१२. **प्रतिसं० १६** । पत्रस० २६ । आ० १०½ × ६½ इञ्च । ले०काल स० १६५६ । पूर्ण । वेष्टनस० ३३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४४१३. **प्रतिस० १७** । पत्र स० २८ ।ले० काल स० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर वसवा ।

४४१४. **प्रति स० १८** । पत्र स० २४ । ले० काल स० १६२६ पूर्ण । वेष्टन स० १२४ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर वसवा ।

४४१५. **प्रति सं० १६** । पत्रस० २६ । आ० १२½×८ इञ्च । ले०काल × ।पूर्ण । वेष्टनस० ५३५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४४१६. **दान कथा**—× । पत्र स० ६४ । आ० ६×६ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल स० १६२४ । पूर्ण । वेष्टन स० १०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर भादवा (राज०)

विशेष—निशि भोजन कथा भी दी हुई ।

४४१७ **दानशील कथा—भारामल्ल** । पत्र स० ७० । भाषा हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मदिर दीवानजी भरतपुर ।

विशेष—कठूमर मे लिखा गया था ।

४४१८. **दानशील सवाद—समयसुन्दर** । पत्र स० ७ । आ० ६ × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६१/१७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—कोट ग्राम मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४४१६. **दानडी की कथा**—× । पत्र स० ५ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × अपूर्ण । वष्टन स० ३३८-१३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो डूगरपुर ।

४४२०. **द्वादशव्रत कथा—पं० अभ्रदेव** । पत्र स० ६ । आ० ११½ × ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

४४२१ **द्वादशव्रत कथा (अक्षयनिधि विधान कथा)**— × । पत्रस० ३८ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २५६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४४२२. **द्वादशव्रत कथा**— × । पत्रस० ६ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल स० १८४५ । पूर्ण । वेष्टनस० २०४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—अजयगढ मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४४२३. **द्रिढप्रहार—लावन्यसमय** । पत्रस० १ । भापा–हिन्दी । विपय-कथा । र० काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० २०८/५६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयसुर ।

विशेष—आदि अत भाग निम्न प्रकार है—

आदि भाग—

पाय प्रणमीअ सरसति वरसति वचन विलास ।
मुनिवर केवल धरगार सुमहिम निवास ।
तुरे गायसु केवल धरे ते मुनिवर द्रिटप्रहार ऋषिराज ।
सीहतणी परि सयम पाली जिणइ सार्या सविकाज ।
कवण दीपपुर मातपिता कुण किमए प्रगटु नाम ।
कहिता कविअण सुणयो भवियण भाव धरी अभिराम ।।

अन्तिम—

सिरि वीर जिणेसर सासनि सोहइ सार ।
मगलकर केवलनाणी द्रिढ प्रहार तुरे द्रिढ प्रहार ।
केवल केरु सुणिइसार चरित्र जेणइ धार
त्याह उतारि काया करी पवित्र ।
विणुध पुरन्दर समथ रतन गुरु सुन्दर तमु पाय पामी ।
सीस लेख लावण्यसमय इम जपइ जयशिव गामी ।
इति द्रिढ प्रहार ।

४४२४. **दीपमालिका कल्प**···· । पत्र स० ६ । आ० १०X४ इञ्च । भापा—सस्कृत । विपय—कथा । र० काल X । ले०काल स० १७७३ ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० २६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४४२५. **दीपावली कल्पनी कथा**— X । पत्रस० २५ । आ० ११X४½ इञ्च । भापा—हिन्दी (गद्य) । विपय—कथा । र० काल X । ले०काल स० १६३६ । पूर्ण । वेष्टन स० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४४२६. **देवकीनीढाल**— X । पत्रस० ५८ । आ० १२X५ इञ्च । भापा—हिन्दी (पद्य) । विपय—कथा । र०काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वेप्टन स० ३५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना (बू दी) ।

४४२७. **देवीमहात्म्य**— X । पत्रस० ६ । आ० ८X५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विपय-कथा । र० काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बू दी ।

विशेष—जैनेतर साहित्य है । मार्कंडेय पुराण मे से ली गयी है ।

४४२८ **धन्नाचउपई—मतिशेखर** । पत्रस० १४ । आ० १०½X४ इञ्च । भापा—हिन्दी (पद्य) । विपय—कथा । र०काल स० १५७४ । ले०कालस० १६४० । पूर्ण । वेष्टनस० ११२/६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

प्रारम्भ—

पहिलउ पणमीय पय कमल वीर जिणदह देव ।
भविय सुणौ धन्ना तणौ चरिय भणउ नखेवि
जिणवर चिहु परिभासीउ सासणि निम्मल धम्म ।
तिह धुरि पससिउ जिह तूटइ सवि कम्म ॥२॥

पत्र ८ पर—

वहुय वचन मनि हरपियो निसिभरि धनसार ।
नीसरियो आगलि करी, सहुयइ परिवार ॥६५॥
गामि २ घरि २ करइ जिउ काम वराक ।
तऊन पूरउ हुव वरउ, धिग धिग कर्म विपाक ।

अन्तिम पाठ—

श्री उवएस गछ सिणगारो, पहिलउ रयणप्पह गणवारो ।
गुण गोयम अवतारे ॥
जख एव सूरिंद प्रसीवउ, तासु पट्टि जिणि जगि जसु लीवौ ।
सयम सिरि उरिहारो ॥२७॥
अनुक्रमदेव गुप्ति सूरीय, सिद्ध सूरि नमहि तसु सीस ।
मुनिजन सेविय पाय ।
तासु पट्टि सयम जयवतउ, गछनायक महि महिमा वतउ ।
कक्कसूरि गुरुराय ॥२८॥
सयहव्वि व्यापी पतिण गणहारी, गुणवतशील सुन्दर वाणारि ।
वरीय जेणि अणगो ।
तासु सीस **मतिशेखर** हरपिहि, पनरहसय चउदोत्तर वरसिहि ।
कीयो कवित्त अति चगो ॥२९॥
एह चरित धन्ना नउ भाविहि, भणइ गुणइ जे कहइ कहावइ ।
जे सपत्ति देइ दान ।
ते नर मन वछिय फल पावइ । घरि वइठा सवि सपद आवइ ।
विलसइ नवई रिवान ॥३०॥

इति धन्ना चउपई समाप्ता ।

सवत् १६४० वुदी ६ शनिवारे । खेतइ रिपनो भाइई लिख दीइ ॥

४४२९. **धर्मपरीक्षा कथा—देवचन्द्र** । पत्रस० २८ । आ० १२×५ इच । भापा-सस्कृत । विषय कथा । र०काल × । ले० काल स० १६५५ फागुन सुदी २ । वेष्टन स० १२२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—जगन्नाथ ने आचार्य लक्ष्मीचन्द के लिए प्रतिलिपि की थी

४४३०. **धर्म बुद्धि कथा**— × । पत्रस० ८-१३० । आ० ७×५ इच । भापा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल स० १८५२ वैशाख वुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ बूदी ।

४४३१. **धर्मबुद्धि मत्री कथा—बखतराम।** पत्र स० १७ । आ० ८½×८¾ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र०काल स० १८६० आसोज बुदी ८ । ले० काल स० १८७४ सावण सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—धर्मयुक्त बुद्धि को मत्री के रूप मे सलाहकार माना गया है ।

४४३२. **नरकनुढाल—गुणसागर।** पत्रस० २ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल० × । पूर्ण । वेष्टनस० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४४३३ **नलदमयती चउपई**— × । पत्रस० ५६ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बू दी ।

४४३४. **नलदमयंती सबोध—समयसमुन्दर।** पत्रस० ३० । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल स० १६७३ । ले० काल स० १७१८ मगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १३६५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

विशेष—अजयगढ मे प्रतिलिपि हुई थी ।

रचना का अन्तिम भाग निम्न प्रकार है—

सवत सोलतिहुत्तरइ मास वसात अणद ।
नगर मनोहर मेडतो जिहा वासपूज्य जिणद ।
वासुपूज्य तीर्थंकर प्रसाद गछ खरतर गह गहइ ।
गछराय जयप्रधान जिनसिंघसूरि सद्गुरु जस लहइ ।
उवझाय इम कहइ समयसुन्दर कीयो अग्रह नेतसी ।
चउपई नलदमयती किरी चतुरमाणस चित्त वसी ।

इति श्री नल दमयती सम्बन्ध भापसदेव कृत सप्तकोटी स्वर्ग वृष्टि ।

४४३५. **नलोपाख्यान**— × । पत्रस० ४७ । आ० १२×७½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ५२५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—राजा नल की कथा है ।

४४३६ **नागकुमारचरित्र—मल्लिषेण** । पत्रस० २२ । आ० १०¾×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल स० १६७५ आसोज सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ७० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४४३७. **प्रति स० २** । पत्रस० २६ । आ० ६¾×४ इञ्च । ले० काल स० १८३० चैत्र सुदी ५ । अपूर्ण । वेष्टनस० ६८२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—इसका अपर नाम नागकुमार कथा भी है ।

४४३८. **प्रति स० ३** । पत्रस० ३८ । आ० ९×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४४३९. **प्रति स० ४** । पत्र स० २७ । आ० १२ X ५ इञ्च । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० २८७/१४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४४४०. **प्रति सं० ५** । पत्र स० २–१५ । आ० ११ X ४ इञ्च । ले० काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० २५३/१४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

४४४१. **प्रति स० ६** । पत्रस० ३–२७ । ले०काल स० १६१६ । अपूर्ण । वेष्टन स० २५४/१३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—सवत् १६१६ वर्षे गुरु कोटनगरे श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालये भट्टारक श्री शुभचन्द्र शिष्य मुनि वीरचन्द्रेण ज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थं स्वहस्तेन लिखित शुभमस्तु । ब्रह्म धर्मदास ।

४४४२. **प्रति सं० ७** । पत्र स० २-२० । आ० १०X४ इञ्च । ले०काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० २३६–१२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

४४४३. **प्रति सं०** । पत्र स० २० । ले० काल १६०७ । अपूर्ण । वेष्टन स० ४७/१२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण हैं । "ब्रह्म नेमिदास पुस्तकमिद ।"

४४४४. **प्रति स० ९** । पत्र स० २८ । आ० १०X४½ इञ्च । ले० काल स० १७१४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १७१४ वर्षे भादौ मासे कृष्णपक्षे ५ बुधे श्री मूलसघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कु दकु दाचार्यान्वये तत्पट्टे भट्टारक श्री पद्मकीर्ति तत्पट्टे श्री सकलकीर्ति साधु श्री द्वारकादास ब्रह्म श्री परमस्वरूप अनातरगमेण लिखित । ललितपुर ग्रामेषु मध्ये श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय शुभ भवतु ।

४४४५. **नागश्रीकथा—ब्र० नेमिदत्त** । पत्रस० २० । आ० १०¾X४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय कथा । र०काल X ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ३९ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

४४४६. **प्रति स० २** । पत्रस० ४१ । आ० १०½X५½ इञ्च । ले० काल स० १६०८ । पूर्ण । वेष्टनस० २२/१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का, डू गरपुर ।

प्रशस्ति—सवत् १६०८ वर्षे पौष सुदी १४ तिथौ भृगु दिने श्री धनोघेन्दुगे श्री आदिनाथ चैत्यालये मूलसघे भारतीगच्छे वलात्कारगणे श्री कु दकु दाचार्यान्वये भ० पद्मनदिदेवा तत्पट्टे भ० देवेन्द्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री विद्यानदिदेवा तत्पट्टे भ० श्री भारतिभूषणदेवा तत्पट्टे प० श्री लक्ष्मीचददेवा तत्पट्टे भ० श्री वीरचददेवा श्री जिनचन्देन लिखापित ।

४४४७ **प्रति स० ३** । पत्रस० १६ । आ० १०X ५½ इञ्च । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टनस० १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर चौगान बूदी ।

४४४८ **प्रति सं० ४** । पत्र स० १८ । आ० १०X४¾ इञ्च । ले० काल स० १६४२ माह सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० २४१ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति सुन्दर है।

४४४६. निर्झरपचमी विधान- × पत्र स० ३। ग्रा० ११×५½ इन्च। भाषा-ग्रपभ्र श। विपय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा।

४४५०. निर्दोषसप्तमी कथा—ब्रह्म रायमल्ल। पत्र स० २। ग्रा० १२×५½ इन्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ५१-१८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक)

ग्रन्तिम—

जिनपुराण मह इम सुणणी,
जिहि विधि ब्रह्मरायमल भण्यौ ॥५६॥

४४५१. निशिभोजनकथा—किशनसिंह। पत्र स० २-१५। ग्रा० १४ × ६½ इन्च। भाषा—हिन्दी। विषय-कथा। र० काल स० १७७३ सावन सुदी ६। ले० काल स० १६१८। ग्रपूर्ण। वेष्टन स० १२८। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर वयाना।

विशेष—ग्रादि ग्रन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—

माथुर वस तराय वोहरा को परधान।
सगही कल्याणराव पाटनी वखानिये।
रामपुर वास जाकौ सुत सुखदेव सुधी।
ताकौ सुत कृष्णसिंह कविनाम जानये।
तिहि निशभोजन त्यजन व्रत कथा सुनी
ता कीनी चौपई सुग्रागम प्रमानिये।
भूलिचूकि ग्रक्षर जु घरे ताकी
वुध जान सौधि पढौ विनती हमारी मानिये।

छप्पय

प्रथम नागश्रिय चरित्र देवभाषा मय सोहै
सिंघनदि शिष्य नेमिदत्त करता वुध जोहै।
ता ग्रनुसार जु रची वचनिका दसरथ पडित।
व्रत निशभोजन त्यजन कथन जामै गुण मडित।
चौपई वध तिह ग्रन्थ कौ कियो किशनसिंह नाम कवि
जो पढय सुनय सरधान कर ग्रनुक्रम शिव लह भवि ॥५॥

दोहा

सवत सत्रैसै ग्रधिक सत्तर तीन सुजान।
श्रावन सित जटवार भृग हर पूर्णता ठान ॥६॥
कथा माहि चौपई च्यारसे एक वखानी
इकतीसापन छप्पन दोय नव वोधक जानी।

सब इक ठौर किये चारसे सत्रह गनिये
मुज मति लघु कछु छद व्याकरण न भनिये ।
वढ घट जवरन पद मात्र जो होय लखविभो दीनती
कर सुद्ध पढंजे तज्ञ कर जौर करं कवि विनती ॥
रचना दूसरा नाम 'नागश्रीकथा भी है

४४५२. प्रतिसं० २ । पत्रस० ३६ । आ० १०×५½ इच । ले०काल स० १८१२ फागुन सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ (अ) । **प्राप्तिस्थान**—य दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

४४५३. प्रति सं० ३ । पत्र स० ४२ । आ० ६×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनपचायती मन्दिर करौली ।

४४५४. प्रति स० ४ । पत्र स० ३२ । आ० ६×६ इञ्च । ले० काल स० १६४० । पूर्ण । वेष्टन स० ७२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)

४४५५. प्रति स० ५ । पत्रस० २२ । आ० १२×५½ इच । ले०काल स० १६७६ भादवा बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

४४५६. प्रति स० ६ । पत्रस० २६ । ले०काल स० १६०५ -वैशाख बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

४४५७. प्रति स० ७ । पत्र स० १७ । ले० काल स०१८१६ । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

४४५८. प्रति स० ८ । पत्र स० ३१ । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल स० १८४७ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० ८६ ।**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का नैणवा ।

४४५९. प्रति स० ९ । पत्रस० २३ । ले०काल स० १८४४ पूर्ण । वेष्टनस० ५७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

४४६०. निशि भोजनकथा—भारामल्ल । पत्र स० १३ । आ० १०½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल स० १६५६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३३० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवनजी कामा ।

४४६१. प्रति स० २ । पत्र स० १२ । आ० १३×८ इञ्च । ले० काल स० १६५२ । वेष्टन स० ४६/२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

४४६२. प्रति स० ३ । पत्र स० १७ । आ० १०×३½ इञ्च । ले० काल स० १६०२ । पूर्ण । वेष्टनस० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपथी दि० जैन मन्दिर नैणवा ।

४४६३. प्रति स० ४ । पत्रस० १३ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपथी दि० जैन मन्दिर नैणवा ।

४४६४ प्रतिसं० ५ । पत्रस० १२ । आ०१२×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । पद्य । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल स० १६५७ । पूर्ण । वेष्टनस० १६८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

४४६५. **प्रतिसं० ६** । पत्रस० २–१४ । ग्रा० १२×७ इञ्च । ले०काल स १६३७ । पूर्ण । वेष्टन स ० १७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बू दी ।

४४६६. **प्रति स ० ७** । पत्र स० २१ । ले० काल स० १६६१ । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बू दी ।

४४६७. **प्रतिसं० ८** । पत्र स० २६ । ग्रा० ७$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इ च । ले०काल स० १६१८ अगहन बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० ११६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

४४६८. **प्रतिसं० ६** । पत्रस० १३ । ग्रा० १०×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स १६३५ सावन बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

विशेष—दो प्रतियो का मिश्रण है ।

४४६९. **प्रतिसं० १०** । पत्रस० २१ । ग्रा० ७ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १६६१ । पूर्ण । वेष्टन स० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

विशेष—चदेरी मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४४७० **प्रतिसं० ११** । पत्र स० १४ । ग्रा० १०$\frac{1}{2}$× ७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर ग्रादिनाथ बू दी ।

४४७१. **प्रति स० १२** । पत्रस० ७ । ग्रा० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४०१/६७ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४४७२. **प्रति स० १३** । पत्र स० ८ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४०२/१०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४४७३. **निशिभोजन कथा**— × । पत्र स० १६ । ग्रा० ६$\frac{1}{2}$×३$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा – हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल स० १६५७ । पूर्ण । वेष्टन स० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटयो का नैणवा ।

४४७४. **नदीश्वर कथा—शुभचन्द्र** । पत्रस० पत्र स०११ । ग्रा० १०×४$\frac{1}{2}$ इ च । भाषा—सस्कृत । विपय—कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल पचायती दि० जैन मन्दिर अलवर ।

विशेष—इसे अष्टाह्लिका कथा भी कहते है ।

४४७५. **नदीश्वर व्रत कथा** । पत्र स० ८६ । ग्रा० १२$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१२ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४४७६. **नदीश्वर व्रत कथा** — × । पत्रस० २–६ । ग्रा० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–सस्कृद । विपय-कथा । र०काल × । ले०काल स० १८२७ ज्येष्ठ बुदी २ । अपूर्ण । वेष्टन स० २६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

विशेष—जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थो ।

४४७७. **नन्दीश्वर कथा**— × । पत्रस० ८ । आ० १० × ४½ इच । भाषा–सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०६/८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

४४७८. **पंचतंत्र**— × । पत्रस० २-६३ । आ० १०½×४½ इच । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६५८ । **प्राप्ति स्थान**–भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४४७९. **प्रतिसं० २** । पत्रस० १०३ । आ० १०¾×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११३३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४४८०. **पचमीकथा टिप्पण—प्रभाचन्द्र** । पत्र स० २-२० । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा–अपभ्र श, सस्कृत । विषय–कथा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर टोडारायसिंह (टोक) ।

४४८१. **पचपरवी कथा—ब्रह्म विनय** । पत्रस० ६ । आ० १०½× ५½ इच । भाषा-हिन्दी प०। विषय-कथा । र०काल स० १७०७ सावण सुदी २ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—रघुनाथ ब्राह्मण गूजर गौड ने लिपि की थी ।

अन्तिम—

मतरासै सतोतरै कही सावण बीज उजाली सही ।
मन माहै धरियो आनद, मकल गोठ सुखकरी जिण द ।
मूलसघ गछ मडलसार, महावली जीत्यो जिहपार ।।
जसकीरत सभै गछपती, सोभै दिगवर नवै नरपति ।
साथ सिधाडो रहै अतूप, सेवा करे वडेरा भूप ।
महाव्रती अणव्रती धार, सेवै चरण फिरत है लार ।।
तास शिष्य विणमे ब्रह्मचार, करी कथा सब जन हितकार ।
थोडी बुद्धि रणीकी चालि, जाणे गोत वाकलीवाल ।
आनन्दपुर छै आनद थानि, भला महाजन धरम निधान ।।
देव शास्त्र गुरु मानै आण, गुणग्राहक रु सकलसुजाण ।
पाच परवी कथा परवान, हितकर कही भविक हित जानि ।
मन वच तन सुद्धर सिर थान पढै सुनै पावै निरवाण ।।

४४८२. **पचाख्यान—विष्णुदत्त** । पत्र स० १८६ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । र०काल × । ले० काल स० १८५८ । पूर्ण । वे० स० १६/१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

विशेष—सहजराम व्यास ने तक्षकपुर मे प्रतिलिपि की थी । द्रोणीपुर (दूनी) मे पार्श्वनाथ के मन्दिर मे नेमीचद के पठनार्थ लिखा गया था ।

४४८३. **पंचालीनी व्याह—गुणसागर सूरि**। पत्र स० १। आ० ९½×४ इन्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-कथा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी।

विशेष—२५ पद्यो मे वर्णन है।

अन्तिम—सप्तारणमी ढालमइ पचालीनो व्याह।
कहि श्री गुणसागर सूरि जी गजपुर माहि उछाह।

४४८४. **परदारो परशील सज्झाय—कुमुदचन्द**। पत्र स० १। आ० १० × ४½ इन्च। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र०काल ×। ले०काल स० १७९७। पूर्ण। वेष्टनस० २४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

४४८५. **परदेसी राजानी सज्झाय**— ×। पत्र स० १। आ० १० × ४½ इन्च। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

४४८६. **पर्वरत्नावलि—उपाध्याय जयसागर**। पत्रस० २०। आ० ११×५ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-व्रत कथा। र०काल स० १७४८। ले० काल स० १८५१ पौष सुदी ४। पूर्ण। वेष्टनस० १२५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

विशेष—कोटा के रामपुरा मे वासुपूज्य जिनालय मे प० जिनदास के शिष्य हीरानद ने प्रतिलिपि की।

४४८७. **पल्य विधान कथा**— ×। पत्रस० ७। आ० १०½ × ४ इच। भाषा—सस्कृत। विषय-कथा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ८। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक)।

४४८८. **पल्यविधान कथा—खुशालचन्द काला**। पत्रस० १५६। आ० १०×७ इच। भाषा—हिन्दी (पद्य)। र०काल स० १७८७ फागुण बुदी १०। ले०काल स० १९३८ सावण सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन स० ९३। **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मन्दिर अलवर।

विशेष—अक्षयगढ मे प्रतिलिपि की गयी।

४४८९. **पल्यविधान व्रतोद्यापन कथा—श्रुतसागर**। पत्रस० ५८। आ० १२×५½ इन्च। भाषा—सस्कृत। विषय—कथा। र०काल ×। ले०काल स० १८२६ काती सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० ६८९। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४४९०. **पल्यव्रत फल**— ×। पत्रस० ११। आ० ११ × ४½ इन्च। भाषा—सस्कृत। विषय—कथा। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ९६३। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४४९१. **पुण्यास्त्रव कथाकोश—मुमुक्षु रामचन्द्र**। पत्र स० १४८। आ० १०½× इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा र०काल ×। ले०काल स० १८४० वैशाख सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन स० १०७२। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४४९२. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १३५ । आ० ६$\frac{1}{4}$× ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०८५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४४९३. प्रति स० ३ । पत्रसं० ११४ । आ० १३$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । ले० काल स० १९०६ । पूर्ण । वेष्टन स० २०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बू दी ।

विशेष—बू दी मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४४९४. प्रति स० ४ । पत्र म० १५६ । आ० १२$\frac{1}{2}$× ५$\frac{1}{4}$ इञ्च । ले०काल स० १८३६ ज्येष्ठ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष-जयपुर नगर के लश्कर के मन्दिर मे साह सेवाराम ने प० केशव के लिए प्रतिलिपि की थी ।

४४९५ प्रति स० ५ । पत्र स० २४८ । आ० १०$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० कालस० १८९४ चैत सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ८२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

४४९६ प्रति स० ६ । पत्रस० १०३ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४१९ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

४४९७. प्रतिसं० ७ । पत्रस० २३८ । आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८२–३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

४४९८. प्रतिसं० ८ । पत्रस० १८७ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

४४९९ प्रति स० ९ । पत्रम० १४८ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ५२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर दीवानजी कामा

४५००. प्रतिसं० १० । पत्र स० । आ० १३×५$\frac{3}{4}$ इच । ले०काल स० १५९० वैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स्वस्ति श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कु दकु दाचार्याचान्वये भ० सकलकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री भुवनकीर्ति तत्पट्टे भ० श्री ज्ञानभूषण तत्पट्टे भ० श्री विजयकीर्ति तत्पट्टे श्री शुभचन्द्र प्रवर्तमाने सवत् १५९० वर्षे वैशाख सुदी ४ शुक्रे ईडर वास्तव्ये हू बड ज्ञातीय साह लाला भार्या श्राविका दाडिमदे तयो पुत्री बाई पातलि तथा ईडर वास्तव्ये हु बड ज्ञातीय दो देवा लघु भ्राता दो हासा तस्य भार्या श्राविका हासलदे एताभ्या पुण्यास्रवश्राविकभिधान ग्रन्थ ज्ञानावरणादिकर्मक्षयार्थ ब्र० तेजपालार्थ लिखापित शुभ ।

४५०१ पुण्यास्रवकथाकोश भाषा—दौलतराम कासलीवाल—× । पत्र स० १४७ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा हिन्दी गद्य । विषय–कथा । र०काल स० १७७७ भादवा बुदी ५ । ले०काल स १९५५ मगसिर बुदी १२ पूर्ण । वेष्टन स० १५४५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—कवि की यह प्रथम कृति है जिसे उन्होंने अपने आगरा प्रवास मे समाप्त किया था ।

४५०२. प्रतिसं० २ । पत्रस० २०० से ३८८ । आ० १०$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ९९५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४५०३. **प्रति सं० ३** । पत्र स० २०० । आ० ११×७ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १६१६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४५०४. **प्रति सं० ४** । पत्रस० २४४ । आ० १०×६½ इञ्च । ले०काल स० १९५१ आपाढ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष—पुस्तक हेमराज व्रती की है । छवडा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४५०५. **प्रति स० ५** । पत्र स० २१० । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर (बूदी)

४५०६. **प्रति स० ६** । पत्र स० १२५-३९४ । आ० ९×६ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

४५०७. **प्रति स० ७** । पत्रस० २४३ । आ० १०½×८½ इञ्च । ले० काल स० १९३४ आसोज सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर टोडारायसिंह (टोक)

विशेष—भैरुलाल पहाडिया चूरु वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

४५०८ **प्रति स० ८** । पत्रस० ३३७ । आ० १०½×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती दूनी मन्दिर (टोक)

विशेष—अन्तिम पृष्ठ आधा फटा हुआ है ।

४५०९ **प्रति स० ९** । पत्रस० २१९ । आ० १०½ ×६½ इञ्च । ले० काल स० १९०५ भादवा सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

४५१०. **प्रति स० १०** । पत्र स० २२३ । आ० १३×९ इञ्च । ले० काल स० १८२३ वैशाख बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० २१ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मन्दिर चोधरियान मालपुरा (टोक)

४५११. **प्रति सं० ११** । पत्रस० ३५६ । आ० १०× ६ इञ्च । ले०काल स० १८२३ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**-- दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोक)

४५१२. **प्रति स० १२** । पत्र स० २३७ । आ० ११×९½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ७६ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर कोटडियो का नैगावा

विशेष---गुटका रूप मे है लेकिन अवस्था जीर्ण है ।

४५१३. **प्रतिसं० १३** । पत्रस० २४६ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल स० १८३२ । पूर्ण । वेष्टन स० १०१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर भादवा (राज०)

४५१४. **प्रतिस० १४** । पत्रस० १२५ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४ । **प्राप्तिस्थान**–दि० जैन वडा पचायती मन्दिर डीग ।

४५१५. **प्रति स० १५** । पत्र स० २६१ । ले० काल स० १८७० ज्येष्ठ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती वडा मदिर डीग ।

४५१६. **प्रति स० १६** । पत्र सख्या १५१ । ले०काल स० १८८२ आसोज सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मदिर वसवा ।

४५१७. **प्रतिसं० १७** । पत्र स० ३५२ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—बयाना मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४५१८. **प्रतिसं० १८** । पत्रस० ३२६ । आ० १० × ७ इञ्च । ले० काल स० १८६६ आषाढबुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६-१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—थाणा निवासी गोपाललाल गोधा ने प्रतिलिपि की थी ।

४५१९. **प्रतिसं० १९** । पत्रस० ३२५ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल स० १७८८ मगसिर बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—खोहरी मे लिखा गया था ।

४५२०. **प्रति सं० २०** । पत्र स० १८७ । आ० १२½×७½ इञ्च । ले० काल × ।अपूर्ण । वेष्टन स० ३५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४५२१. **प्रतिसं० २१** । पत्रस० १-३६ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर बयाना ।

४५२२. **प्रतिसं० २२** । पत्र स० २८४-३८४ । ले०काल स० १८७० चैत सुदी ६ । अपूर्ण । वेष्टनस० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बयाना ।

विशेष—जीवारामजी मिश्रा वैर वालो ने प्रतिलिपि कराई थी ।

४५२३ **प्रतिसं० २३** । पत्र स० २८० । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति अपूर्ण है किन्तु महत्वपूर्ण है ।

४५२४. **प्रति स० २४** । पत्रस० १८३ । आ० १२½×७½ इञ्च । ले०काल स० १६२६ पौष बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

४५२५. **प्रति स० २५** । पत्र स० २३६ । ले० काल सं० १६६६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

४५२६ **प्रतिसं० २६** । पत्र स० २६५ । ले०काल स० १८१३ । पूर्ण । वेष्टनस० ३०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—बेनीराम चादवाड ने ग्रन्थ लिखवाया था ।

४५२७ **प्रति स० २७** । पत्र स० १५६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

४५२८. **प्रति सं० २८** । पत्रस० १३४ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४५२९. **प्रतिसं० २९** । पत्र स० १०९ से २२३ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४५३०. **प्रति स० ३०** । पत्र स० १२६ । ले० काल १८८६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४५३१ **प्रति स० ३१** । पत्र स० २०१ । आ० १३ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १८७१ आपाढ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर, अलवर ।

४५३२. **प्रति स० ३२** । पत्र स० २८० । ले०काल स० १८६६ आपाढ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ४७/४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मदिर अलवर ।

४५३३. **प्रति स० ३३** । पत्र स० २६० । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८/८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर अलवर ।

४५३४. **प्रति स० ३४** । पत्रस० २६० । आ० १२×४½ इञ्च । ले०काल स० १८५८ चैत्र शुक्ला ६ । पूर्ण । वेष्टनस० १४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल पचायती मदिर अलवर ।

४५३५. **प्रति स० ३५** । पत्र स० ५०६ । आ० ११½×५ इञ्च । ले० काल स० १८५२ । पूर्ण । वेष्टन स० २१२-८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

४५३६. **प्रति स० ३६** । पत्र म० ३८५ । आ० १३¾×६½ इञ्च । ले० काल स० १८८४ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—फतेहपुर वासी हरकठराय भवानीराय अग्रवाल गर्ग ने मिश्र राधाकृष्ण मे सामनी नगर मे प्रतिलिपि करवाई थी ।

४५३७. **प्रति स० ३७** । पत्र स० १–१८६ । आ० ६×४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी) ।

४५३८ **प्रति सं० ३८** । पत्र स० ३३६ । आ० ११×७½ । ले० काल स० १६५३ सावण बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६–७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा) ।

४५३९. **प्रति स० ३९** । पत्रस० २३४ । आ० १०½×४ इञ्च । ले०काल स० १८४६ । पूर्ण । वेष्टनस० ८५/४५ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—शेरगढ नगर मे आचारजजी श्री सुखकीर्त्तिजी वाई रूपा चि० तत् शिष्य पडित मानक चन्द लिखी ।

४५४०. **पुण्यास्रवकथा कोश**— × । पत्रस० ३२७ । आ० १२¼×५¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल स० १८१६ वैशाख सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

४५४१. **पुण्यास्रवकथा कोश**— × । पत्र स० ८४५ । आ० ७¾×३¾ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल स० १८७० भादो सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१/५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

विशेष—लकडी का पुट्ठा चित्र सहित बडा सुन्दर है ।

४५४२ **पुण्णासव कहा—प० रइधू** । पत्र स० ३–८१ । भाषा-अपभ्रंश । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा ।

विशेष—सीम लगने से अक्षरो पर स्याही फिर गई है ।

४५४३. **पुरंदर कथा—भावदेव सूरि** । पत्र स० ७ । आ० ११½×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र०काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०३-६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वडा बीसपथी दौसा ।

४५४४. **प्रतिसं० २** । पत्र स० १३ । ले०काल स० १६०५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४५४५. **पुष्पांजलि कथा सटीक**— × । पत्र स० ४ । आ० १०½×८½ इञ्च । भाषा—प्राकृत-सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२६० । **प्राप्ति स्थान**-भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित जीर्ण है ।

४५४६. **पुष्पांजलि विधान कथा**— × । पत्रस० ११ । आ० ११×४½ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४५४७. **पुष्पांजलि व्रत कथा—खुशालचन्द** । पत्रस० १३ । आ० ८½×७ इञ्च । भाषा—राजस्थानी (ढूढारी) पद्य । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । वेष्टनस० १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर छोटा दीवानजी बयाना ।

विशेष—द्यानतराय कृत रत्नत्रय पूजा भी दी हुई है ।

४५४८. **पुष्पाजली व्रत कथा—गगादास** । पत्र स० ८ । आ० १०½×५½ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल स० १८६८ फागुण सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ७५/१०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

४५४९. **पुष्पांजलि व्रत कथा—मेधावी** । पत्रस० ३१ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र०काल स० १५४१ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४५५०. **पूजा कथा (मैडक की) ब्र० जिनदास** । पत्रस० ६ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३०५–१०६ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४५५१. **प्रत्येक बुद्ध चतुष्टय कथा**— × । पत्र स० १५ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल स० १७०३ भादवा । पूर्ण । वेष्टन स० १९५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४५५२. **प्रद्युम्न कथा प्रबन्ध—भ० देवेन्द्रकीर्त्ति** । पत्र स० ५५ । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल स० १७६२ चैत सुदी ३ । ले०काल स० १८१२ । पूर्ण । वेष्टन स० २५८/१०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

गुटका साइज है । मलारगढ मे आणद ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी ।

४५५३. प्रियमेलक चौपई— × । पत्रस० ८० । आ० ५×४ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३७४ । **प्राप्ति स्थान**—समवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—गुटका है। दान कथा मे प्रियमेलक का नाम आया है एक दान कथा और भी दी हुई है ।

४५५४. प्रियमेलक चौपई—समयसुन्दर । पत्र स० ६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—राजस्थानी (पद्य) । विषय—कथा । र० काल सं० १६७२ । ले०काल सं० १६८० । पूर्ण । वेष्टन स० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा ।

मगलाचरण—

प्रणम् सद्गुरु पाय, समरु सरसती सांमणी ।
दान धरम दी पाप, कहिसि कथा कौतक भणी ।
धरमा माहि प्रधाना, देता रूडा दीसियइ ।
दीधउ वरसी दान, अरिहत दीक्षा अवसरइ ।।

सोरठिया दोहा—

उत्तम पात्र तउ एह, साधन इदी जउ सूझ तउ ।
लहियइ लाछि अछेह, अटलिक दान जउ आपियइ ।।
अति मीठा आहार, सरवरा देज्यो साधना इ ।
सुख लहिस्यउ श्रीकार, फल बीजा सरिषा फलइ ।।४।।
प्रथिवी माहि प्रसिद्ध, सुणिपइ दान कथा सदा ।
प्रियमेलक अप्रसिद्ध, सरस घणु मम्वन्ध छई ।।
सुणउ मिलइ जउ सेवए सुणुता जेउ घस्यइ ।
उमाण सहि अगलित्र के मुझ वचनि को रस नही ।।

×　×　×　×　×

राग वमराडी ढालछठी जलालीयानी—

तिण अवसरि तर सीथ दूरि, रूपवती करइ अरदास ।
जीवन मोराजी कु ली री काया तावड आकर उरि ।
पापिणी लागी मुनइ प्यास ।।१।।
पाणीरि पायउ हु तरसी थई खिण एक मइ नख माय जीण ।
कठ सूकइ काया तपइरि जीभइ वोल्यउ न जाय ।।

×　×　×　×　×

दूहा—

कथा पाट मू की किहर कातरहितकुमार ।
नगर कुमर ते निरखता निरखी त्रिए द्वे नारि ।।
के इक दिन रहता थका विस्तरी सगलइ वाद ।
कुमरी क्रिया त्रिण तपस्या करइ परमारथ न प्रीछना ।।
वोल एक वोलइ नही दिव्य रूप वृप देह ।
भन्न पान को आणि घइ नउते खापइ तेह ।।

राजामती आवी रली साचउ एह नउ सत्त ।
जिम तिम वोली जेइ जइ चिट पट लागी चित्त ।।

× × × × ×

अन्तिम प्रशस्ति—

सवत सोल वहुत्तरि मेडता नगर मझार ।
प्रियमेलक तीरथ चउपइरी कीवी दान अविकार ।।
कवर उझावक कौतकीरि 'जेसलमेरा जाण ।
चतुर जोडावी जिण ए चउनई मूल आग्रह मुलताण ।।
इण चौउपई एह विशेष छइरि सगवट सगली ठाम ।
वीजी चउपई वहु देख जोरि नहि सगटनु ना ।।
श्री खरतर गछ सोहता श्री जिणचन्द्र सूरीस ।
शिष्य सकलचन्द्र सुभ दिमारि समयसुन्दर तसु सीस ।।
जयवता गुरू राजिया श्री जिनसिंह सूरि राय ।
समयसुन्दर तसु सनिधि करी इम भणइ उवझाय ।।
भणता गुणता भावसु सामलता सु विनोद ।
समयसुन्दर कहइ सपजर पुण्य अधिक परमोद ।।

सर्वगाथा—२०३० । इति श्री दानाविकार प्रियमेलक तीर्थ प्रवध सिंहलसुत चउपई समाप्त ।। सावत् १६८० वर्षे मार्ग सिर सुदी १४ दिन लिखत वरवमान लिखत । (वाई भमरा का पाना) ।

४५५५. पुण्यसार चौपई—पुण्यकीर्त्ति । पत्रस० ७ । आ० १०×४ ½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल स० १६६० मगसिर सुदी १० । ले० काल स० १७०० । पूर्ण । वेष्टन स० २८९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—यह सागानेर मे रचा गया एव जाठण ग्राम मे लिखा गया था ।

४५५६. बुधाष्टमी कथा— × । पत्रस० ३ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल स० १८४० भादवा बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष—जैनेतर साहित्य है ।

४५५७. वैतालपचविंशतिका—शिवदास । पत्र स० ३६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४३५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४५५८. प्रतिसं० २ । पत्र स० ४२ । आ० १०×४इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—२५ कहानियो का सग्रह है ।

४५५९. बैतालपच्चीसी— × । पत्रस० २० । आ० १०×४ ½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ९८६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

४५६०. **प्रति स० २** । पत्रस० ७ । आ० ११×४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी)

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४५६१. **बकचोर कथा—(धनदत्त सेठ की कथा) नथमल** । पत्रस० ३३ । भाषा—हिन्दी । विषय कथा । र०काल स० १७२५ आषाढ सुदी ३ । ले०काल स० १६१६ । पूर्ण । वेष्टनस० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

४५६२. **भक्तामरस्तोत्र कथा**— × । पत्र स० १२ । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३२/५०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मदिर उदयपुर ।

४५६३. **भक्तामरस्तोत्र कथा—विनोदीलाल** । पत्र स० २२७ । आ० ६½ × ६½ इच । भाषा—हिन्दी (ग प) । विषय-कथा । र० काल स० १७४७ सावण सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर नैणवा ।

४५६४ **प्रतिसं० २** । पत्र स० २०६ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १८६० ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—बसवा मे प्रतिलिपि हुई ।

४५६५. **प्रति स० ३** । पत्रस० १६३ । आ० १०½ × ६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बूदी ।

४५६६. **प्रति स० ४** । पत्र स० २०४ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

४५६७ **प्रतिस० ५** । पत्र स० १०८ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक) ।

४५६८. **प्रतिस० ६** । पत्र स० फुटकर पत्र । आ० १०½×६ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १२ । **प्राप्ति स्थान**— अग्रवाल पचायती दि० जैन मन्दिर अलवर ।

४५६९ **प्रतिसं० ७** । पत्र स० १८७ । आ० १२ × ७ इञ्च । लेखन काल स० १९१४ सावन बुदी १२ । पूर्ण । वे०स० ७३ । **प्राप्ति स्थान**-अग्रवाल पचायती दि० जैन मन्दिर अलवर ।

४५७० **प्रतिसं० ८** । पत्र स० ३१८ । ले० काल स० १८६६ चैत सुदी ११ । पूर्ण । वे० स० १४४ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—लालजीमल के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी ।

४५७१. **प्रतिसं० ६** । पत्रस० १५२ । आ० १३×६ इञ्च । ले०काल स० १८३६ चैत बुदी ६ । पूर्ण । वेप्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—श्लोक स० ३७६० । प्रधान आनन्दराव ने प्रतिलिपि की थी ।

४५७२. **प्रतिस० १०** । पत्रस० ४१ । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेप्टन स० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मदिर कामा ।

४५७३. **प्रतिसं० ११** । पत्र स० १३८ । आ० ११×५½ इच । ले०काल स० १९०५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी सीकर ।

विशेष—प० खेमचन्द ने प्रतिलिपि की थी। स० १९२९ मे अनन्त चतुर्दशी के व्रतोद्यापन मे साहजी सदाराम जी के पौत्र तथा चि० अमीचद के पुत्र जोखीराम ने ग्र थ मन्दिर फतेहपुर मे विराजमान किया।

४५७४. प्रतिसं० १२। पत्रस० १७८। आ० १०×६ इन्च। ले०काल स० १८५४ कार्त्तिक सुदी ११। पूर्ण। वेष्टनस० २५/२८। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सौगाणी मदिर करौली।

विशेष—२ प्रतियो का मिश्रण है।

४५७५. प्रतिसं० १३। पत्र स० १८२। आ० ९½×६½ इ च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३८-२१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

४५७६ प्रति स० १४। पत्रस० स० २१३। आ० १२× ५½ इन्च। ले० काल स० १८०२। पूर्ण। वेष्टनस० २४ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

४५७७ प्रति स० १५। पत्रस० १६६। आ० १३½×८½ इन्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १०। **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

४५७८ भक्तामर स्तोत्र कथा—नथमल। पत्र स० ६१। आ० ९×५¾ इन्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय कथा। र० काल स० १८२९ जेठ सुदी १०। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

विशेष—करौली मे लिखी गई थी।

४५७९. प्रति स० २। पत्रस० ५२। आ० ११ × ५½ इन्च। ले०काल स० १८२९। पूर्ण। वेष्टन स० १२१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल पचायती मन्दिर अलवर।

विशेष—कल्याणपुर मे बाबा रतनलाल भौंसा ने प्रतिलिपि की थी।

४५८०. प्रति स० ३। पत्रस० १६८। ले०काल स० १९२१। पूर्ण। वेष्टन स० १२२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल पचायती मन्दिर अलवर।

४५८१. प्रति स० ४। पत्र स० ४७। आ० १०¼×६ इन्च। ले०काल स० १८३० फागुन सुदी ७। पूर्ण। वेष्टनस० १२३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

विशेष —बगालीमल छावडा ने करौली मे प्रतिलिपि करवाई थी।

४५८२. भद्रबाहुकथा—हरिकिशन। पत्र स० ३९। आ० १२ × ५½ इ च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-कथा। र०काल ×। ले० काल स० १९७५ सावण सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन स० १४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बूंदी।

४५८३. भरटक कथा— ×। पत्रस० १३। आ० ११×४½ इन्च। भाषा-सस्कृत गद्य। विषय-कथा। र०काल ×। ले०काल × पूर्ण। वेष्टन स० ९४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—२७ कथाए हैं।

४५८४. भविसयत्तकहा—धनपाल। पत्र स० २-८८। आ० ११×५ इन्च। भाषा—अपभ्रंश। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ९५७। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४५८५. **प्रतिसं० २** । पत्रस० १३८ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ बूदी ।

४५८६. **भविष्यदत्त कथा—ब्र० रायमल्ल** । पत्रस० ८० । आ० ६½ × ४ इञ्च । भापा-हिन्दी । विपय-कथा । र० काल स० १६३३ कार्त्तिक सुदी १४ । ले०काल स० १८२६ माघ वुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० २५ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मन्दिर बयाना ।

४५८७. **प्रतिस० २** । पत्र स० ४६ । आ० १०×६½ इञ्च । ले० काल स० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन स० १०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटयो का नैणवा ।

४५८८. **भविष्यदत्त कथा**— × । पत्र स० ३१ । आ० ११½ × ६३/४ इञ्च । भापा-हिन्दी । विपय-कथा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर ।

विशेष—३१ से आगे पत्र नही है ।

४५८९. **मधुमालती कथा**— × । पत्र स० २८-१५८ । आ० ९ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी प० । विपय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १८३५ वैशाख बुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टन स० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह ।

४५९० **मनुष्य भवदुर्लभ कथा**— × । पत्रस० २ । आ० १०½ × ४३/४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विपय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४५९१. **मलयसुन्दरी कथा—जयतिलकसूरि** । पत्र स० २-५६ । आ० १२ × ४३/४ इञ्च । भापा-सस्कृत । विपय-कथा । र०काल × । ले० काल स० १५२० । वेष्टन स० ७६५ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—ग्र थ स० ८३२ । सवत् १५२० वर्षे माघ वदि मगले लिखित वा कमलचन्द्र प्रसादात् त पाचाकेन मूडा ग्रामे श्री रस्तु । शुभमस्तु ।

४५९२. **मलयसुन्दरी कथा**— × । पत्रस० ४० । आ० ११×४½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल स० × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—४० से आगे पत्र नही है । प्रति प्राचीन है ।

४५९३. **महायक्षविद्याधर कथा—ब्र० जिनदास** । पत्र स १० । आ० १० × ४½ इञ्च । भापा-हिन्दी (पद्य) । विपय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८ । **प्राप्ति स्थान** – खडेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४५९४. **महावीरनिर्वाण कथा**— × । पत्रस० ५ । आ० ७ × ५ इञ्च । भापा-सस्कृत । विपय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

४५९५. **माघवानल कामकदला चौपई—कुशललाभ** । पत्र स० २-१२ । आ० १०× ४½इञ्च । भापा-राजस्थानी । विपय-कथा । र०काल स० १६१६ फागुण सुदी १४ । ले० काल स० १७१४ । अपूर्ण । वेष्टन स० २५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना ।

विशेष—नाई ग्राम मध्ये लिखत ।

४५९६. **प्रतिस० २** । पत्र स० ३१ । ग्रा० ९×५½ इञ्च ।ले० काल स० १८०३ चैत्र वुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

४५९७. **माधवानल चउपई**—× ।पत्रस० ८ । ग्रा० ९½×५¼ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७०६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष—प० जगजीवन कुशल ने प्रतिलिपि की थी ।

४५९८. **मुक्तावली व्रत कथा—सुरेन्द्रकीर्त्ति** । पत्रस० ५ । ग्रा० ११×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–कथा । पूर्ण । वेष्टनस० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वोरसली कोटा ।

विशेष—सुरेन्द्रकीर्त्ति सकलकीर्त्ति के शिष्य थे ।

४५९९. **मेघकुमार का चोढाल्या—गणेस** । पत्र स० २ । ग्रा० १० × ४½ इञ्च । भाषा- हिन्दी । विषय- कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वोरसली कोटा ।

४६००. **मौन एकादशी व्रत कथा—ब्रह्म ज्ञानसागर** । पत्रस० १३६-१६६/३१ पत्र । ग्रा० ११×५ इच । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल स० १८६६ । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—दौलतरावजी तेरापथी की वहू ने लिखा था ।

४६०१. **मृगचर्मकथा**—× । पत्रस० ४ । ग्रा० ११½×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय- कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १६३/२२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

विशेष—गिरधरलाल मिश्र ने देवडा मे प्रतिलिपि की थी ।

४६०२ **मृगापुत्र सज्झाय**—× । पत्र स० १ । ग्रा०१०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विपय- कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

४६०३. **यशोधरकथा—विजयकीर्ति** । पत्र सख्या १७ । ग्रा० ९½×४½ इच । भाषा— सस्कृत । विपय-कथा । र०काल × । ले०काल स० १५३९ ग्रापाढ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १४८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४६०४. **रतनाहमीररी बात**—× । पत्रस० २४–५१ । ग्रा० × ४ इञ्च । भाषा–राजस्थानी गद्य । विपय—कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५५० । **प्राप्ति स्थान**-भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष—वडे ग्रन्थ का एक भाग है ।

४६०५. **रत्नपाल चउपई—भावतिलक** । पत्रस० १२ । ग्रा० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—कथा । र०काल स० १६४१ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २५३ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

४६०६ **रत्नत्रयव्रतकथा—देवेन्द्रकीर्ति** । पत्रस० ६ । श्रा० १२×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५६६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

४६०७. **रत्नत्रयकथा—मुनि प्रभाचन्द्र** । पत्रस० ८ । श्रा० ११×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

४६०८. **रत्नत्रयकथा**—× । पत्र स० ४ । श्रा० ११×४¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १८८० मगसिर बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६०९. **रत्नत्रयकथा**—× । पत्र स० ५ । श्रा० ११×८ इच । भाषा-सस्कृत । । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १६३६ आसोज सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० १२१४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

४६१०. **रत्नत्रयकथा**—× । पत्रस० ५ । श्रा० ६ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५२७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६११. **रत्नत्रयकथा टब्बा टीका सहित** । पत्रस० २ । श्रा० ११¾×५¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १८७१ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६०–२०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर टोडारायसिंह (टोक)

४६१२. **रत्नत्रयकथा**—× । पत्रस० ६ । श्रा० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर मालपुरा (टोक)

४६१३ **रत्नत्रयविधानकथा—ब्र० श्रुतसागर** । पत्र स० ६ । श्रा० ११½×५ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

४६१४. **रत्नत्रयविधानकथा-पद्मनदि** । पत्रस० ७ । श्रा० ११×५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३२७।१३४ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

४६१५. **रत्नशेखर रत्नावतीकथा** । पत्र स० १६ । श्रा० ११ × ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्द स्वामी बूदी ।

४६१६. **रयणागरकथा**—× । पत्र स० २४ । श्रा० १०×४ इञ्च । भाषा-अपभ्र श । विषय-कथा । र० कात × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १०५।६५ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

४६१७. रविवारकथा—रइधू । पत्रस० ४ । भाषा-अपभ्र श । विषय-कथा । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टनस० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४६१८. रविवार प्रबन्ध—ब्र० जिनदास । पत्रस० ५ । आ० ११ X ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल X । ले०काल स० १७३४ । पूर्ण । वेष्टन म० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—निम्न प्रकार है—

सवत १७३४ वर्षे आसोज सुदी १० शुक्रे श्री राजनगरे श्रो मूलसघे श्री आदिनाथ चैत्यालये भट्टारक श्री क्षेमकीर्तिस्तदाम्नाये मुनि श्री धर्म भूषण तत् शिष्य ब्रह्म वाघजी लिखित ब्रह्मरायमाण पठनार्थं ।

४६१६. रविव्रतकथा--सुरेन्द्रकीर्ति । पत्रस० १५ । आ० ६ X ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र०काल स० १७४४ । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टनस० २५० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

आदिभाग—

प्रथम सुमरि जिनवर चौवीस चौदहसे त्रेपन मुनि ईस ।
सुमरौ सारद भक्ति अनत, गुरु देवेन्द्रकीर्ति महन्त ।।
मेरो मन इक उपजौ भाव, रविव्रत कथा करन को चाव ।
मैं तुक हीन जु अक्षर करौं, तुम गन पर कवि नीककैं धरो ।।

अन्तिम भाग—

सुरेन्द्रकीर्ति अब कही रवि गुन रूप अनूप सब ।
पडित सुतु कवि सुधवर लीजै, चूक मुवाक अब
गढ गोपाचल गाम नो, सुभथान बखानौ ।
सवत विक्रम भूप गई, भलौ सत्रह सै जानौ ।।
तौ ऊपर चवालीस जेठ सुदी दसमी जानो
वार जो मगलवार हस्त नक्षत्र जु परियो तब ।
हरि विवुध कथा सुरेन्दर रचना सुव्रत पुनजु अनन्त ।।

४६२०. रविव्रतकथा-विद्यासागर । पत्रस० ४ । आ० ६ X ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ३८-१६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

प्रारम्भ—

पचम गुरु पद नमी, मन धरी जिनवाणी ।
रविव्रत महिमा कहु असार शुभ आण द आणी ।।
पूरव दिसि सोहे सुदेश, काश्मीर मनोहार ।
वाणारसी तेह मध्य सार नगर उदार ।।१।।
न्यायवत नरपति तिहा सप्तागे सोहे ।
पुस्याल नाम सोहामणो गुणी जनमन मोहे ।।

तेह नयरे धन कणे करी धनवत उदार ।
मतिसागर नामे सु श्रेष्ठी शुभमति मडार ।।२।।

अन्तिम—

विधि जे व्रत पालि करि मन भावज आणइ ।
समकित फले सुरग गति गया कहे जिन इम वाणी ।।
मन वच काया शुद्धे करी व्रत विध जे पालई ।
ते नरनारी सुख लहे मणि माणक पावई ।।३५।।
श्री मूलसघे मडण हवो गच्छ नायक सार।
अभयचद्र सूरि वर जयो वहु भव्याधार ।।
तेह पद प्रणमीने कहे अति सुललित वाणी ।
विद्यासागर वेद सुणी मनि आण द आणी ।।३६।।
इति रविव्रत कथा सपूर्ण

४६२१. **रक्षाबधनकथा—ब्र० ज्ञानसागर।** पत्रस० ३ । आ० १०½×५½ । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल स० १८७६ पौष सुदी ८ । वेष्टन स० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि०जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—पं० देवकरण ने मौजमावाद मे प्रतिलिपि की थी ।

४६२२. **रक्षाबधनकथा--विनोदीलाल** । पत्र स० २६ । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल स० १९१७ । पूर्ण । वेष्टन स० ५७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४६२३ **रक्षाबधनकथा**—× । पत्र स० ७ । आ० १३½×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६३ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बू दी ।

४६२४. **रक्षाबधनकथा**—× । पत्र स० ३ । आ० ६½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल स० १८७७ आषाढ बुदी १० पूर्ण । वेष्टन स० ११६२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

४६२५. **रक्षाबंधनकथा**—× । पत्रस० ५ । आ० ११½ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल स० १८८७ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ११५७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टाकीय दि० जैन मन्दिर अजनेर ।

४६२६. **रक्षाविधान कथा—सकलकीर्ति** । पत्र स० ४ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अजमेर ।

४६२७. **प्रतिसं० २** । पत्रस० ४ । आ० १२×५ इच । ले०काल स० १८१७ माघ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१३ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वमी बू दी ।

४६२८. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ६ । आ० ८×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

४६२९. रात्रिविधानकथा—× । पत्रस० २ । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १०३।५० **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का, डू गरपुर ।

४६३०. रक्षाख्यान--रत्ननदि । पत्रस० ५ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल स० १७०४ । पूर्ण । वेष्टनस० १६५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४६३१. राजा विक्रम की कथा— × । पत्र स० ३६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी प० । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १००-६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—आगे के पत्र नही हैं ।

४६३२. राजा हरिचंद की कथा— × । पत्रस० २३ । आ० ८×५¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

४६३३. रात्रिभोजन कथा—ब्रह्म नेमिदत्त । पत्र स० १६ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल स० १६७७ । पूर्ण । वेष्टन स० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६७७ वर्षे कातिक सुदी ११ गुरौ श्री मूलसघे सरस्वती गच्छे वलात्कारगणे श्री कु दकु दाचार्यान्वये भ० श्री शुभचन्द्र तत्पट्टे भ० सुमतिकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री गुणकीर्तिदेवा तत्पट्टे वादिभूषण तत्पट्टे भ० श्री रामकीर्तिदेवास्तदाम्नाये ब्रह्म श्री मेघराज तत् शिष्य शिवजी पठनार्थं ।

४६३४. प्रतिसं० २ । पत्रस० ६ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १७६३ । पूर्ण । वेष्टनस० ३५१ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मदिर उदयपुर ।

४६३५. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १२ । आ० १०×४ इञ्च । ले०काल स० १८२६ फागुण बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० १४३ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष—भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति ने प० जिनदास को प्रति दी थी ।

४६३६. रात्रिभोजन कथा—भ० सिंहनदि । पत्रस० २१ । आ० १२½ × ६ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल- × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

विशेष—पत्र १६ से भक्तामर एव स्वयभू स्तोत्र हैं ।

४६३७. रात्रिभोजन चौपई—सुमतिहस । पत्र स० ११ । आ० १०×४½ इच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र०काल स० १७२३ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

अन्तिम—

रात्रि भोजन दोप दिखाया, दीनानाथ बताया जी ।।१।।
अचल नाम तिहाँ रहवाया, दिन दिन तेज सवाया जी ।।२।।

धन २ जे नर ए व्रत पालइ, भोजन त्यागी टालइ जी ।
नव २ नूर सदा तिया माखइ विलसइ लील विसालइ जी ।
सतरइ सइ तेवीस वरसइ हे जइ हीयडउ हरसइजी ।
मगसिर वदि छटि वर बुध दिवसइ चउपई कीधी सुवसइ जी ।।३।।

श्री खरतर गच्छ गगन दिणदा श्री जिण हरप सुरिंदा ।
आचारिज जिन लवधि मुणीदा, उदया पूनिम चदाजी ।
श्री जिणहरप सुरिंद सुसीसइ, सुमति हस सुजगीसइ जी ।
पद उवभाय धरइ निसि दीसै भासै विसवा वीसइजी ।
विमलनाथ जिनेस प्रसादइ जाय तारणि सुभसादइ जी ।
रिद्धि वृद्धि सदा आणदइ सघ सकल चिर नदइ जी ।
अमरसेन जयसेन नरिदा थापा परमानदा जी ।
जयसेना राणी सुखकदा जस साखी रवि चदा जी ।
साधु-शिरोमणि गुण गाया सगला रइ मनि भाया जी ।
जीभ जनम सफली की काया मल्हि सुगुण मल्हाया जी ।।४।।

आदिभाग—

सुबुधि लवधि नव निधि समृद्धि सुखमपद श्रीकर ।
पासनाह पयपणवता वमु जस हुवइ विसतार ।।
श्री गुरु सानिधि लही रमणी भोजन पाय ।
कहिस्यु शास्त्र विचार सु भगवत म घ उपाय ।।

४६३८. **रात्रिभोजनत्याग कथा—श्रुतसागर** । पत्रस० २२ । आ०१०×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विपय-कथा । र०काल × । ले०काल स० १७५८ ज्येष्ठ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० १४६२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६३९ **रामयशरसायन-केशराज** । पत्रस० ६४ । आ० १०½×४½ इच । भाषा-हिन्दी प० । विपय-कथा । र०काल स० १६८० आसोज सुदी १३ । ले० काल स० १७३० । पूर्ण । वेष्टनस० ८५-६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वडा वीस पथी दौसा ।

विशेष—प्रारम्भ का पत्र फटा हुआ है अत ११ वें पद्य से प्रारम्भ किया जाता है ।

जवूद्वीपइ क्षेत्र भरत भलउ, लकानगरी थानिक निरमलउ ।
निरमलउ थानिक पुरी लका द्वीप तउ राक्षस जुउ ।
अजित जिनवर तणइ वारइ भूप घन बाहन हुइ ।
महारक्ष सुत पाटि थापी अजित स्वामी हाथिए ।।
चरण पामी मोक्ष पहुँतउ घणा मुनिवर साथिए ।।११।।

राक्षस राजा राजकरी घणउ अवसर जाणी ।
तप सयम तणउ अवसर जाणी ।
पुण्य प्राणी देव राक्षस सुत भणी ।
राज आपी ग्रही सयम लही मोक्ष सोहामणी ॥
असख्याता हुआ भूपति समइ दशया जिन तणा ।
कीर्त्ति धवल नरेन्द्रनी कउ राय आडवर घणइ ॥१८॥

अन्तिम—

सवत् सोलै असीइरे, आछउ आसो मास तिथि तेरमि ।
अनरपुर माहि आणी अति उल्हास, सीता आवै रे वरि राग ॥ढाल॥
विद्वय गछि गछ नायक गिरुड गोतम नउ अवतार ।
विजयवन्त विजय ऋषि राजा कीयउ धर्म उद्धार ॥
धर्मं मुनि धर्म नउ धोरी धर्म तणो भडार ।
खिमा दया गुण केरउ सागर सागर क्षेम उदार ॥६१॥
श्री गुरु पद्म मुनीश्वर मोटौ जेह नउ वश ।
चउरासी गछ मे जाणी तउ प्रगट पणइ परमस ॥६२॥
तस पटोधर गुणकरि गाजै गुण सागर जयवत ।
कइसूनन कलप तरु कलि मे सूरि शिरोमणि सन ॥६३॥
ए गुरुदेव तणौ सुपसाइ ग्र थ चढिउ सुप्रमाण ।
ग्र थ गुणे गिरि मेरु सरीखउ नवरस माहि वखाण ॥६४॥
एव वासवि ढाल सुवति वचन रचन सुविमाल ।
रामयशो रे रसायण नामा ग्र थ रचिउ सुरसाल ॥
कवि जन तउ कर जोडि करे रे पडित सु अरदास ।
पाचा आगे तउ वचि वउ जण हू अइणा अव्यास ।
अक्षर भगे ढाल जु भगे रागज भगइ जोइ ।
वाचता रे चमन ने भगे रस नही उपजइ कोइ ॥६७॥
अक्षर जाणी ढालज जाणी कागज जाणी एह ।
पाचा आगे वाचना थी ऊजि सिइ अति नेह ॥६८॥
जव लग सायर नउ जल गाजै जव लग सूरिज चद ।
केशराज कहैं तव लगि ग्र थ करउ आनद ॥६६॥

कानडा—

रामलक्ष्मण अने रावण सती सीता नी चरी ।
कही भापा चरित साखी वचन रचन करी खरी ॥
सघ रग विनोद वक्ता अने श्रोता सुख मणी ।
केशराज मुनिद जपै सदा हर्ष वधामणी ॥२००॥

४६४०. **रामसीता प्रबध--समयसुन्दर।** पत्र स० १-७६ । आ० १०×४ इञ्च । भापा-हिन्दी पद्य) । विपय-कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेप्टन स० १७४ । **प्राप्दि स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवल ना (वू दी) ।

४६४१. **रूपसेन चौपई**— × । पत्र स० २२ । आ० १० × १½ इञ्च । भापा-हिन्दी। विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेप्टन स० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

विशेष—२२ से आगे पत्र नही लिखे हुये है ।

४६४२. **रूपसेन राजा कथा—जिनसूरि।** पत्रस० ४३ । आ० ६½×४¾ इञ्च । भापा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० २६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

४६४३. **रोटतीज कथा**— × । पत्र स० १ । आ० ११ × ५¾ इञ्च । भापा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२५६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६४४ **रोटतीज कथा**— × । पत्रस० २ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भापा-सस्कृत । विपय-कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ९९८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

४६४५ **रोटतीजकथा**— × । पत्र स० ३ । आ० १०×४½ इञ्च । भापा-संस्कृत । विपय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० २३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान वू दी ।

४६४६. **रोटतीज कथा**— × । पत्र स० ३ । आ० ६½ × ४¾ इञ्च । भापा—सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

४६४७. **रोटतीज व्रत कथा—चुन्नीराय वैद।** पत्र स० १२ । आ० ७½×३½ इञ्च । भापा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल स० १९०९ भादवा सुदी ३ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—

सवत सत गुनईससै ता ऊपर नव जान ।
भादो सुद त्रितिया दिना बुद्धवार उर आन ॥६३॥
एक रात दिन एक मैं नगर करौली माहि ।
चुन्नी वैदराय ही करी कथा सुखदाय ॥६४॥

४६४८ **रोटतीजकथा—गुणनन्दि।** पत्रस० २ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भापा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६२ । **प्राप्ति सान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी वू दी ।

४६४९ **प्रतिस० २** । पत्र स० ६ । आ० ७ × ५ इञ्च । ले० काल स० १९५३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी वू दी ।

४६५०. रोहिणी कथा— × पत्रस० १६ । आ० ६½×४¾ इन्च । भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय-कथा। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १३७०। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४६५१. प्रतिसं० २ । पत्रस० १५ । ले०काल स० १८७३ पौष बुदी १३। पूर्ण। वेष्टनस० १२७१। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४६५२. रोहिणीव्रत कथा—भानुकीर्ति । पत्र स० ४ । आ० १०¾ × ५ इन्च । भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

४६५३. रोहिणी व्रत कथा— × । पत्रस० ११। आ० १०½×४½ इन्च । भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय-कथा। र० काल ×। ले०काल स० १८८४ वैशाख सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन स० ११६४। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४६५४. रोहिणी व्रत प्रबध—ब्र० वस्तुपाल । पत्रस० १४। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र०काल स० १६५४। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६५/१३१। **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर।

विशेष—प्रति प्राचीन है एव पत्र चिपके हुए हैं। आदि अ त भाग निम्न प्रकार हैं।

प्रारंभ वस्तु छद—

वासु पूज्य जिन नमूं ते सार।
तीर्थंकर जे बारमो मन वछित बहु दान दातार सार ए।
अरुण वरण सोहामणो सेव्या दिपि मुख तार ऐ।
बाल ब्रह्मचारी रूवडो सत्तरि काय उन्नत सहुजल।
वसु पूज्य राम नादनु निपुण विज्ञयादेवी मात कुक्षि निरमल।
जस पसाइ जाणीमि कठिन कला सुविचार।
विघन सव दूरि टलि मगल वर्ति सार ॥१॥

रागमल्हार—

तह पद प कज प्रणमीनि रास करूं रसाल।
रोहिणी व्रत तणो मिलो सुणज्यो बाल गोपाल ॥१॥
सारदा स्वामिनि वली सूव सह गुरू लागू पाय।
विघन सवि दूरि टलि जिम निर्मल मति थायि ॥२॥
सजन विजन सहु सामलो करू वीनती कर जोडि।
सजन सभाति निर्मला दुर्जन पाडि खोडि ॥३॥

अ तिम-दूहा

पुत्री आर्यिका जेह तारे स्त्री लिंग करीय विणास।
सरगि गया सोहामणा पाम्पा देव पद वास ॥१॥
पुत्र आठे सयम लीयोरे वासु पूज्य हसू सार।
स्वर्ग मोक्ष दो पामीया तप सासते लार ॥१॥

रोहिणी कथा व्रत साभलीरे श्रेणिक राजा जाणि ।
नमोस्तु करी निज थानकि गयो भोगवि सुख निरवाण ॥३॥
नर नारी जे व्रत करि भावना भावि चग ।
अशोक रोहिणि वधि ते लहि उपज्यु पुण्य प्रसग ॥४॥
सावली नयर सोहामणा राय देश मभारि ।
रास करोति रूवडो कथा तणि अनुसारि ॥५॥

वस्तु—

मूलसघ मडण २ सरसती गच्छ सणगार ।
बलात्कार गणे आगला शुभचन्द्र सार यतीश्वर ।
तस्य पटोधर जाणीयि सुमतिकीरति सार सुखकर ।
तस्य पद पकज मधुकर गुणकीरति सुविसाल ।
तस्य चरणे नमी सदा वोलि ब्रह्म वस्तुपाल ।

दोहा—

विक्रमराय पछि सुणो सवच्छर सोलसार ।
चोवनो ते जाणीइ आषाढ मास सुखकार ॥१॥
श्वेत पक्ष सोहामणो रे तृतीयानि सोमनार ।
श्री नेमिजिन भुवन भलु रास पुरूह चोतार ॥२॥
पढि गुणि जे सामलि मनि आणी वहु भाव ।
ब्रह्मवस्तुपाल सुधु कहि तेहनि भव जल नाव ॥३॥

इति रोहिणी व्रत प्रवध समाप्त ।

४६५५. लब्धिविधान कथा—प० अभ्रदेव । पत्रस० ११ । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल X । ले० काल स० १६७७ । पूर्ण । वेष्टन स० ४०७/१२१ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेज—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६७७ वर्षे आसोज सुदी १३ शुक्रे श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कु दकु दाचार्यान्वये भट्टारक श्री रामकीर्तिदेवास्तदाम्नाये ब्र० श्री मेघराज तत् शिष्य ब्र० सवजी पठनार्थं । श्री इल्ला प्राकारे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये कोठारी जनी भार्या जमणदि तयो सुत कोठारी भीमजी इय लब्धि विधान कथा लिख्यत ब्र० श्री मेघराज तत् शिष्याय दत्त ।

४६५६. लब्धिविधानव्रत कथा—किशनसिंह । पत्रस० १७ । आ० १० X ५½ इन्च । भाषा-हिन्दी प० । विषय-कथा । र०काल स० १७८२ फागुण सुदी ८ । ले०काल स० १९१० मगसिर वदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—फतेहपुर मे लिखा गया था ।

४६५७ प्रति स० २ । पत्रस० २६ । आ० ६ X ४½ इन्च । पूर्ण । वेष्टनस० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायत मदिर करौली ।

४६५८. प्रति स० ३ । पत्रस० २२ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

४६५९. लक्ष्मी सुकृत कथा— × । पत्रस० ७ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—कनक विजयगरिण ने प्रतिलिपि की थी ।

४६६०. वर्द्धमान स्वामी कथा : मुनि श्री पद्मनन्दि । पत्र स० २१ । आ० ११½ × ४½ इञ्च । भाषा-सम्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल स० १५३७ फाल्गुन सुदी ५ । वेष्टन स० १६० ।**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४६६१. व्रतकथाकोश—श्रुतसागर । पत्र स० ८७ । आ० १२½ × ५¾ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

विशेष—२४ व्रत कथाओ का सग्रह है । अतिम पल्यव्रतविधान कथा अपूर्ण है।

४६६२. प्रति स० २ । पत्रस० १४४ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

४६६३. प्रति स० ३ । पत्रस० ७२ । आ० १२ × ५¾ । **ले०काल** × । वेष्टन स० १७० । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन म० लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रथम ७ पत्र नवीन लिखे हुए हैं तथा ७२ से आगे पत्र नही है ।

४६६४. प्रति स० ४ । पत्रस० १२८ । ले०काल १७६८ चैत वदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर डीग ।

४६६५. व्रतकथाकोश—देवेन्द्रकीर्ति । पत्र स० ७६ । आ० १२½ × ५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०७४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६६६.—प्रति स० २ । पत्र स० १३३ । आ० १०¾ × ६ इञ्च । ले० काल स० १८८६ मगसिर बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १८१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६६७. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २-६२ । आ० १२½ × ४¾ इञ्च । **ले०काल** स० १८७३ । पूर्ण । वेष्टन स० १२६-५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

४६६८, व्रतकथाकोश—ब्र० नेमिदत्त । पत्र स० १६८ । आ० ११ × ५¾ इञ्च । भाषा—संस्कृत विषय-कथा । र०काल × । ले० काल स० १८५३ । पूर्ण । वेष्टन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६६९. व्रतकथाकोश—मल्लिभूषण । पत्र स० १६६ । आ० १२ × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल स० १६०६ चैत बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

४६७०. **व्रतकथाकोश—मु० रामचन्द्र।** पत्र स० ११०। ग्रा० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय कथा कोश। र० काल ×। ले० काल स० १७८३। पूर्ण। वेष्टन स० १५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, चौगान बूंदी।

४६७१ **व्रतकथाकोश—सकलकीर्ति।** पत्र स० ४६। ग्रा० १२×५$\frac{3}{4}$ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल स० १७९६। पूर्ण। वेष्टनस० १०१। **प्राप्ति स्थान**। दि० जैन खडेलवाल मदिर उदयपुर।

विशेष—लिखे प्रथीराज प० खेतसी साह दत्त। स० १७९६ ग्रापाढ़ बुदि ३ बुधे उदैपुर राणा जगतसिह राज्ये।

४६७२. **व्रतकथाकोश—प० अभ्रदेव।** पत्रस० १०४। ग्रा० १२×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विजय-कथा। र० काल ×। ले०काल स० १६३७। पूर्ण। वेष्टन स० २६४-१३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—दीमक ने खा रखा है। प्रशस्ति-सवत् १६३७ वर्षे मगसिर सुदी ७ रवौ। देव महावजी लिखत मोठ वेदी पाटणी। उ० श्री जयनन्दी पठनार्थं।

४६७३. **व्रतकथाकोश – ×।** पत्र स० ८०। ग्रा० ११$\frac{3}{4}$×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल स० १८२६ भादवा बुदी ९। पूर्ण। वेष्टन स० ११३८। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—कथाओ का सग्रह है।

४६७४ **व्रतकथाकोश—×।** पत्रस० २१२। ग्रा० ९$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ ६$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले०काल स० १८३२ ग्रापाढ सुदी १३। पूर्ण। वेष्टनस० ४८। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—ब्राह्मराम जी गूजर गौड ने अजैनगर मे प्रतिलिपि की थी।

४६७५. **व्रतकथाकोष—×।** पत्र स० १०६। ग्रा० १८ × ७$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २३०। पूर्ण। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—विभिन्न कथाओ का सग्रह है।

४६७६. **व्रतकथाकोष—×।** पत्र स० ५५। ग्रा० ११×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल-×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४०-२३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियो का डूगरपुर।

विशेष—निम्न व्रत कथाओ का सग्रह है—

१.	अष्टाह्निका व्रत कथा	सोमकीर्ति।
२.	अनत व्रत कथा	ललितकीर्ति।
३	रत्नत्रय कथा	"
४.	जिनरात्रि कथा	"

५.	आकाश पचमी कथा	"
६.	दशलक्षणी कथा	"
७.	पुष्पाजलि व्रत कथा	"
८.	द्वादश व्रत कथा	"
९.	कर्म निर्जरा व्रत कथा	"
१०.	षट्रस कथा	"
११.	एकावली कथा	"
१२	द्विकावली व्रत कथा	विमलकीर्ति ।
१३.	मुक्तावलि कथा	सकलकीर्ति ।
१४.	लब्धि विधान कथा	प० अभ्र ।
१५.	जेष्ठ जिनवर कथा	श्रुतसागर ।
१६.	होली पर्व कथा	"
१७	चन्दन षष्ठि कथा	"
१८.	रक्षक विधान कथा	ललितकीर्ति ।

४६७७. **व्रतकथाकोश**— × । पत्रस० १२५ । आ० ११ × ६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १८५१ **पौष** बुदि १ । पूर्ण । वेष्टनस० २१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (छोटा) ।

४६७८. **व्रतकथाकोश**— × । पत्र स० ६ । आ० १३½ × ७¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनदन स्वामी बूदी ।

विशेष—६ठा पत्र आधा लिखा हुआ है आगे के पत्र नही लिखे गये मालूम होते हैं ।

४६७९. **व्रतकथाकोश**—× । पत्रस० २-८२ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

निम्न कथाओ का सग्रह हैं—

१	नदीश्वर कथा—	रत्नपाल	अपूर्ण
२	षोडशकारण कथा	ललितकीर्ति	पूर्ण
३	रत्नत्रय कथा	"	"
४	रोहिणीव्रत कथा	"	"
५	रक्षा विधान कथा	"	"
६-	धनकलश कथा	"	"
७	जेष्ठ जिनवर कथा	"	"
८	अक्षय दशमी कथा	"	"
९,	षट्रस कथा	शिवमुनि	"
१०	मुकुट सप्तमी कथा	सकलकीर्ति	"

११ श्रुत स्कध कथा	×	"
१२ पुरन्दर विधान कथा	×	"
१३ ग्राकाश पचमी कथ	×	"
१४ कजिकाव्रत कथा	ललितकीर्ति	"
१५ दशलाक्षणिक कथा	ललितकीर्ति	पूर्ण
१६ दशपरमस्थान कथा	"	"
१७ द्वादशीव्रत कथा	×	"
१८ जिनरात्रि कथा	×	"
१९ कर्मनिर्जरा कथा	×	"
२०, चतुर्विशति कथा	ग्रभ्रकीर्ति	"
२१ निर्दोष सप्तमी कथा	×	"

४६८० **व्रतकथाकोश**—× । पत्रस० १६२ । ग्रा० ९×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टनस० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर चौगान बूदी ।

४६८१. **व्रतकथाकोश**—× । पत्र स० ९८ । ग्रा० ११ ½×५ ½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल स० १७७० माघ सुदी १३ ।पूर्ण । वेष्टन स० ९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ चौगान मदिर बूदी ।

४६८२. **व्रतकथाकोश**—× । पत्र स० फुटकर । भाषा-सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल × × । ग्रपूर्ण । वेष्टन ३७५।१३६ **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

४६८३ **व्रतकथाकोश—खुशालचन्द** । पत्रस० २९ । ग्रा० ९½ × ४ ½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल स० १७८७ फागुण बुदी १३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १९६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष—निम्न कथाग्रो का सग्रह है—

ग्राकाश पचमी, सुगधदशमी, श्रावणद्वादशीव्रत, मुक्तावलीव्रत, नदूकी सप्तमी, रत्नत्रय कथा, तथा चतुर्दशी कथा ।

४६८४ **प्रति सं० २** । पत्र स० १६१ । ग्रा० १०½×५ इञ्च । ले० काल स० १९१४ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १४०-७२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

४६८५ **प्रतिस० ३** । पत्रस० १२२ । ग्रा० ११ × ५ ¾ इञ्च । ले० काल १८५५ । पूर्ण । वेष्टनस० ५७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर राजमहल (टोक)

विशेष—टोडा मे भट्टारक श्री महेन्द्रकीति की ग्राम्नाय के दयाराम ने महावीर चैत्याल मे प्रतिलिपि की थी ।

४६८६ **प्रतिस० ४** । पत्रस० ९८ । ग्रा० १०½×५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०९ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मदिर राजमहल (टोक)

विशेष—२३ कथाग्रो का सग्रह है ।

४६८७. प्रतिसं० ५। पत्र स० १३२। आ० १०×६ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ८१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

४६८८. प्रति स० ६। पत्र स० ७४। आ० १२×७½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर वूदी।

४६८९. प्रतिसं० ७। पत्र स० १३५। आ० १०½×५½ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ७२ ४८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर दौसा।

विशेष—आगे के पत्र नही है।

४६९० प्रति स० ८। पत्रस० १४२। आ० ११×४½ इञ्च। ले०काल १९०८। पूर्ण। वेष्टनस० ७२।३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेष—जयपुर मे नाथूलाल पाण्ड्या ने प्रतिलिपि की थी।

४६९१. प्रति स० ९। पत्र स० ११९। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७९३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

४६९२. प्रतिस० १०। पत्र सख्या ११०। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—कथा। र०काल ×। लेखन काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना वूदी।

विशेष—मूलकर्त्ता श्रुतसागर है।

४६९३ प्रति स० ११। पत्र स० ९७। आ० १२½×६ इच। ले०काल स० १६०० पौष सुदी २। पूर्ण। वेष्टनस० २९५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—जहानाबाद जैसिंघपुरा मध्ये लिखावत साहजी

४६९४ प्रति स० १२। पत्र स० २९६। आ० ९¾×६½ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान वूदी।

विशेष—इस कथा सग्रह मे एक कथा पत्र ६४ से ७९ तक पल्यव्रत कथा धनराज कृत है उसका आदि अन्त निम्न प्रकार हैं—

आदिभाग—

प्रथम नमो गणपति नमो सरस्वती दाता।
प्रणमीं सदगुर पाय प्रगट दीयौं ग्यान विख्याता॥
पच परम गुरु सार प्रणवि कथा अनोपम।
भावी श्रुत अनुसार विविध आगम मैं अनूपम॥
श्रुतसागर ब्रह्म जु कही पल्य विधान कथानिका।
भाषा प्रसिद्ध सो कहू सुणौ भव्य अनुक्रमनिका॥

दोहा—

द्वीप माही प्रसिद्ध अति, जबूदीपवर नाम।
भरत क्षेत्र तामै सरस, साहे सुख की धाम॥

अन्तिम भाग—

विक्रम नृप परमाणि, सतरासै चौरासी जीर्ण ।
मास आषाढ शुक्ला पक्षसार ।
दशमी दिन अरू श्री गुरुवार ।।२५८।।
आचारिज चिहु दिसि परसिधि ।
चदकीर्ति महीयल जससिद्धि ।
ता सिप हर्षकीर्ति भीवसी,
सोहे वुद्धि बृहस्पति सी ।।२६६।।
श्रुतसागर भापित व्रत एह,
पल्य नाम महियल सुखदेह ।
ताकी भाषा करो धनराज,
पडित भीवराज हितकाज ।।२६०।।
रहो चिरजय सकलसघ गच्छपति जती समाज ।
वक्ता श्रोता विविधजन एम कहै धनराज ।।

इति श्री श्रुतसागरकृत व्रतकथाकोश भापाया आचार्य श्री चन्दकीर्ति तत् शिष्य **भीवसी** कृत पल्य व्रतकथा सपूर्ण ।

४६६५ प्रतिसं० १३ । पत्र स० ११५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—महात्मा राधेलाल कृष्णगढ वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

४६६६. प्रतिस० १४ । पत्रस० ४४ । आ० ११½ × ७ इञ्च । ले०काल स० १६८२ । पूर्ण । वेष्टनस० ११३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन छोटा मन्दिर वयाना ।

विशेष-मुख्यत निम्न कथाओ का सग्रह है । मुकुटसप्तमी, अक्षयनिधि, निर्दोप सप्तमी, सुगन्ध दशमी, श्रावण द्वादशी, रत्नत्रय, अनतचतुर्दशी, आदि व्रतो की कथाएँ है ।

४६६७. प्रतिस० १५ । पत्रस० १२३ । आ० ६ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १८७१ । पूर्ण । वेष्टनस० ३२८-१२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—जोधराध ने प्रतापगढ मे लिखा था ।

४६६८. व्रतकथा कोश × । पत्र स० ८-१८ । आ० १०×४ इच । भापा-हिन्दी । विपय-कथा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २८५-१२० । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

४६६६. व्रतकथारासो— × । पत्र स० १४ । आ० १३×७¾ इञ्च । भापा-हिन्दी गद्य । विपय-कथा । र०कारा × । ले० काल स० १८६८ जेष्ठ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० २१२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर पाश्वनाथ चौगान वूदी ।

विशेष—आनन्दपुर नगर मे लिखा गया था ।

४७०० व्रतकथा सग्रह— ×। पत्र स० ११ । भापा—सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

४७०१. प्रतिस ० २ । पत्र स० ६–७३ । आ० ११×५ इञ्च । ले० कान × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

४७०२. व्रतकथा सग्रह— × । पत्र स० १४ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १८८५ । पूर्ण । वेप्टन स० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—मुख्य कथाए निम्न हैं—

१. शोलव्रत कथा—मलूक । र० काल स० १८०६ ।

कह **मलुको** सुणो ससार हूँ मूर्ख मत्त दीण अपार ।
आसोजा सुद आठै कही, थाकचल लाग सोसही ।।
जोडी गाव सात्तडा ठान, सम्मत अठाराछै क माह ।
कुडी हुत सो दूर करो, वाकी सुव **सुनो** रही वरो ।।

२. सुगंध दशमीव्रत कथा—मकरन्द । र० काल १७५८ ।

सत्रैसे अठानवे श्रावण तेरस स्वेत ।
गुरुवासरपुरी करी सुणयो भविजन हेत ।
कथा कही लघु मत्तीनी पट्ट पद्मावती परवार ।।
पाठय गाय **मकरंद** ने पडित लेहो सभाल ।।

३. रोहिणीव्रत कथा—हेमराज । र० काल १७४२ ।

रोहणी कथा सपूर्ण भई, ज्यो पूरव परगासी गई ।
हेमराज ई कही विचार, गुरू सकल शास्त्र अव धार ।।
ज्यो वृत फला · मे लही, सोविधि ग्र थ चौपई लही ।
नगर वीरपुर लोग प्रवीन, दया दान तिनको मन लीन ।।

४. नंदीश्वर कथा—हेमराज ।

यह व्रत नन्दीश्वर की कथा ।
हेमराज परगासी यथा ।।
सहर इटावो उत्तम थान ।
श्रावक करै धर्म सुभ ध्यान ।।
सुने सदा जे जैन पुरान ।
गुरो लोक को राखै मान ।।
तिहिठा सुनो धर्म सम्वन्ध ।
कीनी कथा चौपई वध ।।

५. पंचमी कथा—सुरेन्द्रभूषण । र० काल स० १७५७ ।

अव व्रत करे भाव सो कोई ।
ताको स्वर्ग मुक्ति पद होइ ।

सत्रहसै सत्तावन मानि ।
सवत पोष दशै वदि जानि ॥
हस्तिकातपुर मे पट्ट गयौ ।
श्री सुरेन्द्रभूषण तह रचौ ॥
यह व्रत विधि प्रतिपालै जोइ ।
सो नर नारि ग्रमरपति होइ ॥

विशेष—सीगोली ग्राम म प्रतिलिपि हुई थी ।

४७०३ **व्रत कथा सग्रह—** × । पत्र स० ६ । ग्रा० १०½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८२ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—निम्नलिखित कथाए है ।

१ दशलक्षव्रत कथा—हरिकृष्ण पाडे । र० काल स० १७६५ । पत्र स० २ तक ।

ग्रन्तिम—

ग्रैसी कथाकाश म कही, तैसी ग्र थ चोपई कही ।
सत्रह पर पैसठ मानि, सवत भादव पचमि जानि ॥
तापरि ग्रम तरो लोग विख्यात ।
दयाधम पालै सुभगात ॥
सव श्रावग पूजाविधि करैं ।
पात्रदान दै सुव्रत धरैं ॥३५॥
मन मैं धर्म वुधि जव भई ।
हरिकृष्ण पाडे कथा ग्ररथ ठई ।
यो इह सुनै भाव धरि कोय ।
सोतो निहचै ग्रमरापति होइ ॥३६॥
इति दशलक्षण व्रत की कथा सपूर्ण ।

२ ग्रनतव्रत कथा— × । × । पत्र स० ३ से ४

३. रतनत्रय कथा—हरिकृष्ण पाडे । र० काल स० १७६६ सावन सुदी ७ । पत्र स० ४ से ७

४ ग्राकाशपचमी कथा— ,, । पत्र ७ से ६

५, पचमीरास कथा— × । × । पत्र स० ३

६ ग्राकाशपचमी कथा—× । र० काल १७६२ चैत सुदी २ । पत्र ३

४७०४ **वसुदेव प्रबध—जयकीर्त्ति** । पत्रस० १४ । ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल स० १७३५ ज्येष्ठ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० ६३ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन ग्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—ग्रादि ग्रन्त भाग निम्न प्रकार है—

आदि भाग—

श्री नम सिद्धेभ्य । राग सोरठा ।

दूहा—

इन्द्रवरण सहू ओप नागेन्द्र जाति देव ।
पच परमेप्टी जे असाकरीतिहुनी सेव ॥१॥
वसुदेव प्रवव रचु भले पुन्द तणो फन जेह ।
देवशास्त्र गुरु मन वरी प्रसिद्ध समृद्धि एह ॥२॥
हरिवश कुल सोहामणु अवक वृप्टि राय ।
सौरीपुर सोहिये थकी वासव मम शुभगाय ॥३॥

अन्तिम भाग—

श्रीमूलसघे उजागजी, सरस्वती गच्छ मुजाणजी ।
गुणकीरति गुणग्रामजी वदू वादिभूपण पुण्यधामजी ॥१३॥

दूहा—

ब्रह्म हरखा गुण अनुसरी कह्यु आख्यान ।
भणज्यो सुणज्यो भावसी लसिस्यो सुख सतान ॥१॥
कोट नगर कोडामणी वासे श्रावक पुण्यवत ।
चैत्यालु आदि देवनु धर्म समुद्र समसत ॥
तिहा जिनवर सेवाकरी वसुदेव तप फल एह ।
जयकीरति एम रच्यु धरज्यो धरमी नेह ॥

इति श्रीवसुदेव आख्याने तृतीय सर्गं सपूर्ण । सवत् १७३५ वर्षे ज्येष्ठ वुदी १० ब्र० श्री कामराज तत् शिप्य ब्र० श्री वाघजी लिखित ।

४७०५. प्रति स० २ । पत्रस० १४ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल स० १६७५ । पूर्ण । वेप्टन स० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४७०६. विक्रमलीलावती चौपई—जिनचन्द्र । पत्र स० १७ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—कथा । र०काल स० १७२४ आषाढ सुदी ७ । ले० काल स० १७९८ माघ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० ७४९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—लिखित चेला खुशाल वीजन लिपी कृता दरीवा मध्ये ।

४७०७. विदरभी चौपई—पारसदत्त । पत्र स० १४ । भापा—हिन्दी । विपय—कथा । र०काल × । ले० काल स० १७८५ । पूर्ण । वेप्टन स० ६३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

४७०८. विल्हण चौपई—कवि सारग । पत्र स० ४२ । आ० १०×४ इञ्च । भापा-हिन्दी पद्य । विपय-कथा । र०कारा स० १६३६ । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

प्रारम्भ—

प्रणमु सामिणि सारदा, सकल कला सुपसिद्ध ।
ब्रह्मा केरी वेटडी, आवे अविकल बुद्धि ।।१।।
सुसर अलापइ नादरस हस्ति वजावइ वीण ।
दिनि दिन अति आणद भर, सयल सुरासर लीण ।।२।।
आदि कुमारी आज लगि, ब्रह्म रुद्र हरिमात ।
अलख अनत अगोचरी सुयश जगत्र विख्यात ।।३।।
कासमीर मुख मडणी, सेवक पूरइ आस ।
सिद्धि बुद्धि मगलकरइ, सरस वचन उल्हास ।।४।।
श्री सद्गुरु सुपसाउ कर, समरी अनुपम नाय ।
जास पसाइ पामीइ, मन वछित सविकाम ।।५।।
नारी नामि ससिकला तेह तणु भरतार ।
कवि विल्हण गुण वर्णनु सील तणइ अधिकार ।।६।।
सील सवि सुख सपजइ सीलैं सपति होइ ।
इह भवि परिभवि सुख लहइ, सील तणा फल जोइ ।।७।।
सील प्रभावि आपदा टाली पाप कलक ।
कवि विल्हण सुख विलासिया सुणज्यो मूकी सक ।।८।।

अन्तिम—

ए कवि विल्हणनी चुपई भणइ एक मनावइ ।
तास घरे नव निधि विस्तरइ निसुणता सुख सपति करइ ।।

विरही तणा विरह दुख टलइ,
मनगमती रस रमणी मिलइ ।।
समझई श्रोता चतुर सुजाण ।
मूरिख म लहइ भाग अजाण ।।

दोहा—

सुज्जाणासिउ गोठ की, लाहु विहु परेह ।
अहूरा पूरा करइ पूरा आमो रेइ ।।४।।

श्लोक—

अज्ञसुखमाराध्य सुखनरमाराध्यते विशेपज्ञ ।
ज्ञानलवदुर्विदग्ध ब्रह्मापि नर नर जयति ।।५।।
वर पर्वतदुर्गेपु भ्रांत वनचरैं सह ।
या मूर्खजनससर्गं सुरेन्द्रभवनेष्वपि ।।६।।
पडितोऽपि वरं शत्रु मा मूर्खो हितकारक ।
वानरेण हतो राजा विप्रा चौरेण रक्षित ।।७।।

चौपई—

हंस कोइ मय करसिउ तथा ।
मति अनुसारि ववि कथा '।
उछु अधिकु अक्षर जेह ।
पडित मूवउ कर सो तेह ॥८॥

दूहा—

श्रीमन्नाहड गछवर विद्यमान जयवत ।
ज्ञानसागर सूरी अछइ गुहिर महागुणवत ॥
तास गछि अति विपुल मति पद्मसुन्दर गुरुसीस ।
कविसारग इणि परि कहइ आणी मनह जगीस ॥
ए गुण च्यालइ वछरि ऊपरि सइल सोल ।
सुदि आसाढी प्रतिपदा कीउ कवित्त कल्लोल ।
पुष्य नखित्र वारु गुरु अमृत सिद्ध ॥
श्री जवालेपुरि प्रगट कोतिग कारण विद्ध ॥
सज्जण जणु सभलइं खति मनि आण ।
रिद्ध वृद्धि पामइ सही कुशल खेम कल्याण ॥

वीच वीच मे स्थान चित्रों के लिए छोडा गया है ।

४७०६. **विष्णुकुमार कथा**—× । पत्रस० ५ । आ० ८$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल स० १८२४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३३५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४७१०. **प्रति स० २** । पत्र स० ५ । आ० ११×१ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक)

४७११. **शालिभद्र चौपई**— × । पत्रस० २२ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

४७१२. **शालिभद्र चौपई—जिनराज सूरि** । पत्र स० २९ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र०काल स० १६७८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ कोटा ।

४७१३. **शालिभद्र चौपई—मनसार** । पत्र स० २७ । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र० काल स० १६०८ आषाढ वुदी ६ । ले० काल स० १७६६ । पूर्ण । वेष्टनस० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—श्री सागवाडा मे आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

अन्तिम—

सोलहसम अठोतिर वरस्यइ आसू वदि छठि दिवसइजी ।

श्रीजिनसिंह सूरि सीप मनसारइ भवियण उपगारइजी ।
श्री जिनराज वचन अनुसारइ चरितइ कह्या सुविचारइजी ॥

४७१४. **शालिभद्र चौपई – विजयकीर्त्ति** । पत्र स० ४६ । आ० १०½×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल स० १८२७ । ले० काल १९७२ । पूर्ण । वेष्टन स० २८३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—दान कथा का वर्णन है ।

४७१५ **शालिभद्र धन्ना चौपई – सुमति सागर** । पत्र स० २० । आ० १०×४ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल स० १८२६ चैत्र सदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—बुरहानपुर मे प्रनिलिपि की थी ।

४७१६ **शालिभद्र धन्ना चौपई – मनसार** । पत्रस० २० । आ० १०½×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र०काल १६०८ आसोज बुदी ६ । ले० काल १७४५ शाके १६१० । पूर्ण । वेप्टन स० ७०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४७१७ **शीलकथा—भारामल** । पत्र स० ३१ । आ० ८×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल स० १९४४ भादवा सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १२१२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

४७१८. **प्रतिस० २** । पत्रस० ३४ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ७४४। **प्राप्ति स्थान** –भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—सेठ मूलचन्दजी सोनी ने सवत १९५८ आपाढ सुदी २ की वडा घडा की नशिया मे चढाया था ।

४७१९ **प्रति स० ३** । पत्रस० ५० । आ० ८½×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२७५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४७२०. **प्रति स० ४** । पत्रस० ४४ । ले० काल स० १९५३ । पूर्ण । वेप्टन स० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर वसवा ।

४७२१ **प्रतिसं० ५** । पत्रस० २२ । आ० १३×८½ इञ्च । ले०काल स० १९६३ चैत्र बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ७०/१८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—पत्र स० ३६ और ३३ की दो प्रतिया और हैं ।

४७२२ **प्रतिस० ६** । पत्रस० ४० । ले० काल स० १९०९ । पूर्ण । वेप्टन स० ५५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४७२३ **प्रतिस० ७** । पत्र स० ५२ । आ० ११×६ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर ।

४७२४ **प्रति स० ८** । पत्रस० ३१ । आ० १२½×६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

४७२५. **प्रति सं० ९** । पत्र स० ५३ । ले० काल स० १८९३ । पूर्ण । वेष्टन स० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

४७२६ **प्रति स० १०** । पत्र स० ३२ । आ० १०½ × ६½ इञ्च । × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४७२७ **प्रति स० ११** । पत्रस० ३७ । आ० ६½×६½ इञ्च । र० काल × । ले०काल स० १८९० कार्तिक सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज)

विशेष—सरवणराम सेठी ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

४७२८ **प्रति स० १२** । पत्र स० ५३ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७/४६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मदिर बसवा ।

४७२९ **प्रतिसं० १३** । पत्रस० २-३६ । आ० १०½×६ इञ्च । ले०काल स० १९२८ । पूर्ण । वेष्टनस० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरह पथी मन्दिर नैणवा ।

४७३० **प्रतिस० १४** । पत्रस० ४८ । आ० १२½ × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विषय—तनसुख अजमेरा स्वाध्याय करने के लिये प्रति अपने घर लाया ऐसा निम्न प्रकार से लिखा है—

"तनसुख अजमेरो लायो वाचवा ने गरु स० १९५४ ।

४७३१. **प्रतिसं० १५** । पत्र स० २५ । आ० १३×८ इञ्च । र० काल × । ले०काल स० १९५३ । पूर्ण । वेष्टन ४५ २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर दूनी (टोक) ।

४७३२. **प्रतिसं० १६** । पत्रस० ३२ । आ० ९×६ इञ्च । र०कारा × । ले०काल स० १९१० पूर्ण । वेष्टनस० ७२ १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

विशेष—केकडी मे गणेशलाल ने प्रतिलिपि की थी । पद्य स० ५४७

४७३३. **प्रतिसं० १७** । पत्र स० २५ । आ० १२×८ इञ्च । ले० काल स० १९५५ । पूर्ण । वेष्टस० १९/७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

विशेष—५९९ पद्य सख्या है ।

४७३४ **प्रतिस० १८** । पत्र स० ३२ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वे० स ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

४७३५ **प्रतिसं० १९** । पत्र स० २२ । आ० १२½×८ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४७३६ **शीलकथा**—× । पत्र स० १० । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण वेष्टन स० १२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज)

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

४७३७. **शीलकथा**— × । पत्र स० १४ । आ० ७½ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

४७३८ **शीलकथा—भैंरोंलाल** । पत्र स० ३६ । आ० १२½ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

शील कथा यह पूरण भई ।
भैंरोलाल प्रगट करि गहि ।।
पढै सुनो अव जो मन लाई ।
जन्म जन्म के पातिग जाई ।।४५।।
सील महात्तम जानि भवि पालहु सुख को वास
हृदै हरख वहु धारिकै लिखी जो उत्तम नाम ।।४६।।

इति श्री शीलकथा सपूर्ण लिखते उत्तमचन्द व्यास मलारणा का ।

४७३६. **शीलतरंगिणी—(मलयसुन्दरी कथा) अखयराम लुहाडिया** । पत्रस० ८८ । आ० १०¾ × ५⅞ इञ्च । भाषा-हिन्दी (प) । विषय—कथा । र०कारा × । ले० काल स० १८६ सावन वुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रारम्भ के ५३ पत्र नवीन है । आगरा मे प्रनिलिपि हुई थी ।

४७४० **प्रति स० २** । पत्र स० ७७ । आ० १०½ × ५ इञ्च । ले० काल० × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५०८ । । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—अन्तिम पत्र नही है ।

४७४१ **शीलपुरदर चौपई—×** । पत्रस० १० । आ० १०×४⅞ इञ्च । भाषा-हिन्दी (प) । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल स० १७२० । पूर्ण । वेष्टन स० १०८ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर ववलाना (बू दी) ।

विशेष—मुनि अमरविमलगणि ने वीकानेर मे प्रतिलिपि की थी ।

४७४२ **शीलसुन्दरीप्रवध—जयकीर्ति** । पत्रस० १६ । आ० ११½ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल स० १६६० । पूर्ण । वेष्टनस० २४२ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मदिर उदयपुर ।

४७४३ **शीलोपदेश रत्नमाला—जसकीर्त्ति** । पत्र स० ११ । आ० ११×४ इच । भाषा—प्राकृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर ।

विशेष—गुजराती भाषा मे टिप्पण है । जसकीर्ति जयसिंह सूरि के शिष्य थे ।

४७४४ **शीलोपदेश माला—मेरुसुन्दर** । पत्र स० १६६ । आ० ६¾ × ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० कारा × । ले० काल स० १८२६ भादवा बुदि ३ । पूर्ण । वेष्टन स० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

४७४५. **श्रीपाल सौभागी आख्यान—वादिचन्द्र** । पत्रस० २२ । आ० ११ × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र०काल स० १६५१ । ले० काल स० १७६० कार्तिक बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० २४६, ७६ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—उदयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी । प्रति अत्यन्त जीर्ण है ।

४७४६. **प्रति स ०२** । पत्रस० ३० । आ० १०½ × ५ इच । ले०काल स० १७५३ । पूर्ण । वेष्टनस० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

४७४७ **प्रतिस० ३** । पत्रस० २-३६ । आ० ११ × ४ इञ्च । ले० काल स० १८१६ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४७४८. **श्रुतावतार कथा—×** । पत्रस० ५ । आ० ११ × ४¾ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

४७४८ क **प्रतिसं० २** । आ० १६ × ५¾ इञ्च । ले० काल स० १८६३ ज्येष्ठ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ४४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—महाराज सवाई रामसिह के राज्य मे जयपुर मे लश्कर के नेमि जिनालय मे प० झाझूराम ने प्रतिलिपि की थी ।

४७४६ **श्रेणिक महामांगलिक प्रबन्ध—कल्याणकीर्ति** । पत्र स० ३६ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल स० १७०५ । ले० काल स० १७३१ । पूर्ण । वेष्टन स० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

४७५०. **षटावश्यक कथा—×** । पत्र स० ६ । आ० १० × ४½ इच । भाषा हिन्दी । विषय कथा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—अन्तिम पत्र नही है । ५ कथा तक पूर्ण हैं । प्रति प्राचीन हैं ।

४७५१ **सगर प्रबन्ध—आ० नरेन्द्रकीर्ति** । पत्र स० १० । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य । विषय कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

४७५२ **सदयवच्छ सावलिगा चौपई—×** । पत्र स० १२ आ० ८¾ × ६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय कथा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—पत्र ६ तक है आगे चोवीस वोल है वह भी अपूर्ण है ।

४७५३ **सप्तव्यसन कथा—सोमकीर्ति** । पत्रस० १०२ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल स० १५२६ माघ सुदी १ । ले०काल स० १८३६ अगहन सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५ २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—लाखेरी नगर मध्ये लिखित वावा श्री ज्ञानविमल जी तत् शिष्य रामचन्द्र ।

४७५४. **प्रति स० २** । पत्र स० ११२ । ग्रा० ६½×६ इञ्च । ले० काल स १८८३ । पूर्ण । वेष्टन स० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर वयाना ।

ग्रन्थाग्रन्थ २०६७ श्लोक प्रमाण है ।

४७५५ **प्रति स०३** । पत्रस० २/११६ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । ले० काल स० १७३८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—सवत् १७३८ वर्षे प्रथम चैत्र वुदी १ रवि दिने ब्रह्म श्री धनसागरेण लिखित स्वयमेव पठनार्थ ।

४७५६ **प्रतिस० ४** । पत्र स० ६६ । ग्रा० ११×५½ इञ्च । ले० काल स० १६६० ज्येष्ठ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० २०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६६० वर्षे ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे पूर्णिमा तिथौ भौमे भेलसा महास्थाने श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालये श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कु दकु दाचार्यान्वये भ० श्री सकलकीर्तिदेवा भ० श्री भुवन कीर्तिदेवा भ० श्री ज्ञानभूषणदेवा भ० श्री विजयकीर्तिदेवा भ० श्री शुभचन्द्रदेवा भ० श्री सुमतिकीर्ति भ० श्री गुणकीर्तिदेवा भ० श्री वादिभूषणदेवा भ० श्री रामकीर्तिदेवा भ० पद्मनदि तत् शिष्य ब्रह्म रूडजी स्वय लिखित । शुभ भवतु ।

४७५७ **प्रतिसं० ५** । पत्र स० ७६ । ग्रा० ११×४¾ इञ्च । ले०काल स० १६०५ । पूर्ण । वेष्टन स० १४४–६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६०५ समये ग्राश्विन वुदी ३ बुधवासरे श्री तीर्थराज प्रयाग ग्रामे सलेम साहिराज्ये ।

४७५८. **प्रतिसं० ६** × । पत्र स० ६३ । ग्रा० १२×५ इञ्च । ले०काल स० १६१६ । पूर्ण । वेष्टन स० १४४ ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डु गरपुर । ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

प्रशस्ति—सवत् १६१६ वर्षे ग्रापाढ वुदी ८ भौमे पूर्व भाद्रपद नक्षत्रे श्रीमत् काष्ठासघे नदीतटगच्छे विद्यागणे श्रीरामसेनान्वये श्री वादीभकु भस्थविदारणीकपचानन भट्टारक श्री सोमकीर्तिदेवा तत्पट्टे त्रयोदशप्रकारचरित्रप्रतिपालक भट्टारक श्री विजयसेनदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री विद्वजनकमलप्रतिवोधन मार्त्तण्डावतार भट्टारक श्री कमलकीर्तिदेवा तत्पट्टेको धारणधीरसरस्वती श्रृ गारहार षट्भापानिवास भट्टारक श्री रत्नकीर्तिदेवा तत्पट्टे चरित्रचूडामणि भट्टारक श्री महेन्द्रसेनदेवा तत्पट्टावर धद्यप हिम करोयम् सरस्वती कठाभरणा भूपित सर्वागकलाप्रवीण सदेसपरदेशलब्धप्रभाप्रतिष्टोदय भट्टारक श्री विशालकीर्ति ग्राचार्य श्री सिंधकीर्तिदेवा तत् शिष्य ब्रह्म श्री भोजराज भट्टारक श्री महेन्द्रसेन शिष्यनी ग्रार्यका जीवाकेण तया इद सप्त व्यसनम्य पुस्तक लिखापित ज्ञानावर्णी कर्मक्षयार्थ ब्रह्म भोजराज पठनार्थ ।

४७५९ **प्रति स० ७** । पत्रस० १४२ । ग्रा० १०½×४½ इञ्च । ले० काल स० १६५८ । पूर्ण । वेष्टन स० २४३-६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

विशेष—उदयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४७६०. **प्रतिस० ८** । पत्र स० ७६ । आ० १०½ × ५ इञ्च । ले० काल स० १८५२ । पूर्ण । वेष्टन स० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—शेरगढ मे दयाचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

४७६१. **प्रति स० ९** । पत्र स० ६७ । आ० १० × ४ इञ्च । ले० काल स० १७५१ माह सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ४२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

४७६२. **प्रति स० १०** । पत्रस० ६७ । आ० ११½ × ४½ इञ्च । ले०काल स० १७८५ पौष सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस०७७६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)

विशेष—वृन्दावन ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

४७६३. **प्रतिसं० ११** । पत्र स० ११३ । आ० ६½ × ६ इच । ले० काल स० १६२५ फागुण बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी बू दी ।

४७६४. **प्रतिस० १२** । पत्र स० ६८ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १८२४ । पूर्ण । वेष्टन स० २१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मदिर नागदी, बू दी ।

विशेष—प० गुलाबचदजी ने कोटा मे प्रतिलिपि की थी ।

४७६५. **प्रतिसं० १३** । पत्र स० २५ । आ० १३ × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

विशेष—निम्न प्रशस्ति दी हुई है

मिति आसोज शुक्ला प्रतिपदा सोमवासरान्वित लिखित नग्र कोटा मध्ये लिखापित पडित्तोत्तम पडितजी श्री १०८ श्री शिवलालजी तत्शिष्य श्री रत्नलालजी तस्य लघुभ्राता पडितजी श्री बीरदीलालजी तत् शिष्य श्री नेमिलाल दवलाणा हालानै ।

४७६६. **प्रतिस० १४** । पत्र स० १०८ । आ० ६×४ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

विशेष—पत्र बडे जीर्ण शीर्ण है तथा १०८ से आगे नही है ।

४७६७. **प्रतिस० १५** । पत्र स० ३२ । आ० ६ × ५½ इञ्च । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० १३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बू दी ।

४७६८. **प्रतिसं० १६**। पत्रस० ३५ । ले०काल × पूर्ण । वेष्टनस० ७०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४७६९. **सप्तव्यसन कथा—भारामल्ल** । पत्रस० ७५ । आ० १२ × ६½ इञ्च । ले०काल स० १८२५ । पूर्ण । वेष्टनस० ४०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

४७७०. **प्रतिसं० २** । पत्रस० १०१ । आ० ११½ × ६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८६–११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

४७७१ **प्रतिसं० ३** । पत्र स० १६५ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन स० १५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष—राजमहल नगर मे सुखलाल शर्मा ने तेजपाल के लिये लिखा था।

४७७२ प्रति स० ४। पत्रस० १०७। ग्रा० ११ × ५ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोक)

४७७३. प्रति स० ५। पत्र स० १२६। ग्रा० ११ × ७ इञ्च। ले० काल स० १६६१। पूर्ण। वे० स० २२३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी।

विशेष—चदेरी मे प्रतिलिपि हुई थी।

४७७४. प्रति स० ६। पत्रस० ११४। ग्रा० १३½ × ८½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३७४। प्राप्ति स्थान -दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

४७७५. प्रति स० ७। पत्र स० १२४। ग्रा० १० × ७ इञ्च। ले०काल स० १६६१। पूर्ण। वेष्टनस० ३०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर श्री महावीर बूदी।

४७७६. प्रति स० ८। पत्र स० १००। ग्रा० १२½ × ६½ इञ्च। ले०काल स० १६५८। पूर्ण। वेष्टन स० ५७। प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर।

४७७७. प्रतिसं० ९। पत्र स० ११३। ग्रा० १३¼ × ६¼ इञ्च। ले०काल स० १६६७। पूर्ण। वेष्टन स० १३३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

४७७८. प्रतिसं० १०। पत्र स० ८१। ग्रा० ११½ × ५½ इञ्च। ले०कालस० १८७१ आसोज बुदी १०। पूर्ण। वेष्टन स० ३६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा।

विशेष—गुरुजी गुमानीराम ने तक्षकपुर मे प्रतिलिपि की थी।

४७७९ सप्तव्यसन कथा – ×। पत्रस० ७५। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० ५४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर मालपुरा (टोक)

४७८० सम्यक्त्व कौमुदी—धर्मकीर्ति। पत्रस० ३३। ग्रा० १० × ५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र०काल स० १६७८ भादवा बुदी १०। ले०काल स० १८६५। पूर्ण। वेष्टन स० २०-१२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

अन्तिम—

श्री मूलसघेवरगच्छे बलात्कारगणे वने।
कुदकुदस्य सताने मुनिललितकीर्तिवाक्
तत्पदानुनमार्तण्डे धर्मकीर्तिमुनिमहान्
तेनाय रचितो ग्रन्थ सक्षिप्य स्वल्प बुद्धिना ॥४॥
अष्टापि रसचन्द्राकें वर्षे भाद्रपदमिलते
दशम्या गुरुवारोय ग्रन्थ सिद्धोहि नन्दतात् ॥५॥
यदत्र सुवासित किंचिद ज्ञानाद्वा प्रमादत।
तद् शोध्य कृपयासार्दभ सतेपा सहजो गुण।
विश्वेश्वरैं पूजितपादपद्मो गणेश्वरैं मनो।
तदिव्य नरेश्वरैं सतत गण्यमानो जिनेश्वर ॥७॥

इति श्री सम्यक्त्वकौमुदीग्रंथे उदितोरूप महाराज सुबुद्धि मंत्रीश्रेष्ठी अर्हदास सुवर्ण खुर चौर स्वर्गगमनवर्णन नाम दशम संधि ।।

४७८१ सम्यकत्व कौमुदी—ब्रह्मखेता। पत्रसं० १८३ । आ० १२×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल ×। ले० काल सं० १८०६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

४७८२. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १४३ । आ० ११×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय कथा । र०काल × । ले० काल सं० १८८५ वैशाख बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्द्रगढ (कोटा) ।

४७८३ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२५ । आ० ११ × ४ इञ्च । ले०काल सं० १६७३ श्रावण सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण है ।

४७८४ प्रतिसं० ४ । पत्रसं० १६२ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले० काल सं० १९२६ आसोज सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० १ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोंक) ।

लेखक प्रशस्ति—श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक धर्म्मचन्द्रजी तत् सि ब्रह्म गोकलजी तत् लघु भ्राता ब्रह्म मेघजी लीखिता । श्री दक्षिणदेशमध्ये अमरापुर नग्रे । श्री शांतिनाथ चैत्यालये ।

४७८५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १२० । आ० १२ × ४¾ इञ्च । ले० काल सं० १७४९ । पूर्ण । वेष्टन सं० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

विशेष—श्री जिनाय नम संवत् १७४९ वर्षे मिति आश्विन कृष्णा पचम्या भौमे । लिखित सावलराम जोसी वणाहथ मध्ये । लिखापित पांडे वृंदावन जी ।

४७८६. प्रतिसं० ६ । पत्र सं० ९० । आ० १२½ × ६ इञ्च । ले०काल सं० १८५१ चैत्र सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोंक) ।

विशेष—सीताराम ने स्वपठनार्थ चाटसू नगर मे प्रतिलिपि की थी ।

४७८७ प्रतिसं० ७ । पत्र सं० १४४ । आ० ११×४¾ इञ्च । ले०काल सं० १६३४ आसोज बुदी ८ । वेष्टन सं० ८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—धर्मचन्द्र की शिष्यणी आ० मणिक ने लिखवाकर श्रीहेमचन्द्र को भेंट की थी ।

४७८८ प्रतिसं० ८ । पत्र सख्या ५९ । आ० १०½ × ४¼ इञ्च । ले०काल सं० १६६६ पौष बुदी १४ । वेष्टन सं० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—पं० केशव के पठनार्थ रामपुरा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४७८९ सम्यक्त्वकौमुदी—जोधराज गोदीका । पत्र सं० ६२ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल सं० १७२४ फागुण बुदी १३ । ले० काल सं० १८६८ कार्तिक बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४७६०. **प्रति सं० २ ।** पत्र सख्या ४८ । ले० काल स० १८८५ कार्तिक बुदी ऽऽ । पूर्ण । वेष्टन सख्या १५८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—किशनगढ मे लुहाडियो के मन्दिर मे प० देवकरण ने प्रतिलिपि की थी ।

४७६१. **प्रति सं० ३** । पत्र स० १५६ । आ० ११ × ७½ इन्च । ले० काल स १६१० । पूर्ण । वेष्टन स० १६२० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१७६२ **प्रति स० ४** । पत्रस० ६३ । आ० १०×६ इन्च । ले० काल स० १८२७ । पूर्ण । वे० स० ७५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

४७६३. **प्रति स० ५** । पत्र स० ६४ । आ० ११ × ७ इन्च । ले० काल स० १६२३ पूर्ण । वेप्टन स० ३३/१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

विशेय—सदासुख ने दूनी मे प्रतिलिपि की थी । स० १६३१ मे पाच उपवास के उपलक्ष मे अभयचद की वहू ने चढाया था ।

४७६४ **प्रति सं० ६** । पत्रस० ६३ । आ० १०½ × ६½ इन्च । ले० काल स० १६३३ भादवा बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर कोटयो का नैणवा ।

४७६५. **प्रति सं० ७** । पत्र स० ५४ । आ० १२ × ६ इन्च । ले० काल स० १६५६ माह सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटयो का नैणवा ।

४७६६. **प्रति स० ८** । पत्र स० ७७ । आ० १०½ × ४½ इन्च । ले० काल स० १७५७ कार्त्तिक बुदी १२ । पूर्ण । वे० स० ३१—१४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

विशेष—दयाराम भावसा ने घासीराम जी की पुस्तक से फागुई के तेरह पथियो के मन्दिर मे प्रतिलिपि की थी ।

४७६७ **प्रति सं० ६** । पत्र स० ७७ । आ० १२×५½ इन्च । ले०काल स० १८३५ वैसाख सुदी ११ । अपूर्ण । वेष्टन स० ५१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४७६८ **प्रति स० १०** । पत्रस० ६३ । आ० ११ × ४½ इच । ले०काल स० १८६६ । पूर्ण । वेष्टन स० ५६/८२ । **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—टोडा का गोठडा मध्ये लिखित ।

४७६६ **प्रति सं० ११** । पत्र स० ७२ । ले० काल स० १८८० । पूर्ण । वेष्टन स० ६३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ कोटा ।

४८००. **प्रति सं० १२** । पत्र स० ५१ । ले० काल स० १८८४ चैत्र सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनस० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा) ।

४८०१. **प्रति स० १३** । पत्रस० ४१ । आ० १२×५½ इच । ले०काल स० १८६६ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—नरोत्तमदासजी अग्रवाल के पुत्र ताराचद ने प्रतिलिपि कराई थी ।

४८०२. प्रति सं० १४ । पत्र स० ५१ । आ० १३½ × ८ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

४८०३. प्रतिस० १५ । पत्रस० ८५ । आ० ६ × ४½ इञ्च । ले०काल स० १८४१ । पूर्ण । वेष्टनस० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

४८०४. प्रति सं० १६ । पत्र स० ६२ । आ०१२ × ७ इ च । ले० काल स० १६५१ सावण बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१/१४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

४८०५. प्रतिसं० १७ । पत्र स० ४४ । ले० काल स० १८६२ पौष बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२(क)/१४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर अलवर ।

४८०६. प्रति स० १८ । पत्रस० ७७ । ले०काल स० १८७७ पौष सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२ (ख) १७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

४८०७. प्रति सं० १६ । पत्र स० ६५ । ले० काल स० १८८४ । पूर्ण । वे० स० ५६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४८०८. प्रति स० २० । पत्र स० ४१ । ले० काल स० १८३० । पूर्ण । वेष्टन स० ५७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

४८०९. प्रति स० २१ । पत्र स० ६२ । ले०काल स० १७६६ । पूर्ण । वेष्टन स० ५७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—मनसाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

४८१० प्रति स० २२ । पत्र स० १११ । आ० ८ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १८४१ । पूर्ण । वेष्टन स० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

४८११ प्रतिसं० २३ । पत्रस० ६३ । आ० १०½ × ६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

४८१२. प्रतिसं० २४ । पत्र स० ३८ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २५ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मन्दिर बयाना ।

४८१३ प्रतिसं० २५ । पत्रस० ५७ । आ० १३×५¾ इ च । पूर्ण । वेष्टन स० १७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

४८१४. प्रतिसं० २६ । पत्र स० १०१ । आ० ६¾ × ४½ इञ्च । ले०काल स० १६१० कार्त्तिक वदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० ६०/७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मदिर करौली ।

विशेष—करौली मे लिखा गया था ।

४८१५. प्रति स० २७ । पत्रस० ५६ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले० काल स० १८६० फागुन सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० ६८-३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

विशेष – सेवाराम श्रीमाल ने गुमानीराम से करौली मे प्रतिलिपि करवाई थी ।

४८१६. प्रति स० २८ । पत्रस० ४५ । ले० काल स० १८५६ । पूर्ण । वेष्टनस० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

विशेष—नोनदराम लुहाडिया ने प्रतिलिपि की थी।

४८१७ **प्रति स० २६**। पत्रस० ५०। आ० १२ × ५½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० २६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

४८१८. **प्रति स० ३०**। पत्रस० ५४। आ० १२×७ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

विशेष—डीग नगर मे प्रतिलिपि की गई थी।

४८१६. **प्रति स० ३१**। पत्रस० ७०। आ० १२×६ इच। ले० काल स० १६११। पूर्ण। वेष्टन स० ४५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

४८२०. **प्रति स० ३२**। पत्र स० ६५। आ० ६×६½ इच। ले० काल स० १८५६ पौष सुदी ६। पूर्ण। वेष्टनस० ३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा।

विशेष—सेवाराम ने दौसा मे प्रतिलिपि की थी।

४८२१. **प्रतिसं० ३३**। पत्रस० ७१। आ० १३×४½ इञ्च। ले० काल स० १८६१ द्वि० चैत्र बुदी ८। पूर्ण। वेष्टनस० १५-२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीस पथी दौसा।

विशेष—देवगरी (दौसा) निवासी उदैचन्द लुहाडिया ने प्रतिलिपि की थी।

४८२२. **प्रतिस० ३४**। पत्रस० ६६। आ० १२ × ६ इच। ले०काल स० १८६१ भादवा बुदी ७। पूर्ण। वेष्टन स० ३७-७। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा।

विशेष—अमन महाराजाधिराज महाराजा श्री सवाई पृथ्वीसिंह जी का मे दीवान आरतिसिंह खिदूको मुसाहिब खुस्यालीराम वोहरो। लिखी सरूपचद खिदूका को बेटो पिरागदास जी खिन्दूको।

४८२३. **प्रतिसं० ३५**। पत्र स० ५८। आ० १३×६½ इञ्च। ले०काल स० १८४८। पूर्ण। वेष्टन स० २८८। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

विशेष—भीलोडा ग्राम मे प्रतिलिपि हुई थी।

४८२४. **प्रति स० ३६**। पत्र स० ६७। आ० १२×५½ इच। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

४८२५. **प्रतिसं० ३७**। पत्र स० ८३। आ० १०×६ इच। ले० काल स० १८८२। पूर्ण। वेष्टन स० ७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल टोक।

विशेष—राजमहल मे प्रतिलिपि हुई थी।

४८२६. **सम्यक्त्व कौमुदी भाषा—मुनि दयाचद**। पत्र स० ६१। आ० ११ × ५½ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—कथा। र०काल स० १८००। ले० काल स० १८०२ आषाढ बुदी ४। पूर्ण। वेष्टन स० ६७-६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बडा बीसपथी दौसा।

४८२७ **सम्यक्त्व कौमुदी—विनोदीलाल**। पत्र स० ११२। आ० १२×८ इच। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय-कथा। र०काल स० १७४६। ले० काल सं० १६२८। पूर्ण। वेष्टन स० ११५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर।

४८२८. **सम्यक्त्व कौमुदी—जगतराय**। पत्र स० १०२। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र०काल ×। ले० काल स० १७२२ वैशाख सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० १७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा।

विशेष—प्रशस्ति मे लिखा है—

काशीदास ने जगतराम के हित ग्र थ रचना की थी।

४८२६. **प्रतिसं० २**। पत्रस० ११६। आ० १२×६ इञ्च। ले० काल स० १८०३। पूर्ण। वेष्टनस० १५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चेतनदास दीवान पुरानी डीग।

४८३०. **सम्यक्त्व कौमुदी कथा**×। पत्र स० ६३। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १०५७। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर।

४८३१. **सम्यक्त्व कौमुदी कथा**— ×। पत्रस० ८८। आ० १० × ४¾ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ६६५। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर।

४८३२ **सम्यक्त्व कौमुदी कथा** — ×। पत्र स० १२२। आ० १०½×५½ इन्च। भाषा-सस्कृत। विपय-कथा। र०काल ×। ले० काल स० १८५३ माह सुदी १३।। पूर्ण। वे० स० ६६२। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४८३३. **सम्यक्त्व कौमुदी कथा**— ×। पत्रस० ६४। आ० ११ × ४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विपय-कथा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १५६३। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर।

४८३४. **सम्यक्त्व कौमुदी कथा**— ×। पत्र स० ८६। आ० १० × ६½ इञ्च। भापा-सस्कृत। विषय-कथा। र०काल ×। ले० काल स० १८१२ पौष सुदी ७। पूर्ण। वे० स० ४०२। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

४८३५. **सम्यक्त्व कौमुदी कथा** — ×। पत्र स० १३५। आ० १२×५ इ च। भाषा-सस्कृत। विपयं कथा। र०काल ×। ले० काल स० १६५६। चैत्र सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० २३-१३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर।

विशेष—आचार्य सकलचद्र के भाई प० जैसा की पुस्तक है।

४८३६ **सम्यक्त्व कौमुदी कथा**—×। पत्र स०६२। आ० १०×४¾ इ च। भापा-सस्कृत। विपय-कथा। र०काल ×। ले० काल स० १६८६। पूर्ण। वेष्टन स० ११३-५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

प्रशस्ति—सवत् १६६८ वर्षे चैत्र सुदि १३ दिने लिपी कृत पूज्य श्री १०५ विशालसोमसूरि शिष्य सिंहसोम लिपि कृत।

४८३७ **प्रति सं० २**। पत्र स० १२६। आ० १३×७ इ च। ले० काल स० १८८५। पूर्ण। वेष्टनस० ११४-५५। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त।

४८३८ **सम्यक्त्व कौमुदी कथा**— × । पत्रस० ५३ । आ० ११२ × ४½ इन्च । भापा-सस्कृत । विपय-कथा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेप्टन स० १५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४८३९ **सम्यकत्व कौमुदी कथा** । पत्रस० १३४ । आ० ११ × ४½ इन्च । भापा-सस्कृत । विपय-कथा । र०काल × । ले०काल स० १८३७ आसोज वदी १३ ।पूर्ण । वेष्टनस० १६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

विशेष—वैष्णव जानकीदास ने डालचद के पठनार्थ करौली मे प्रतिलिपि की थी ।

४८४०. **सम्यक्त्व कौमुदी कथा**— × । पत्र स० १०० । आ० ६½ × ५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विपय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मदिर बयाना ।

४८४१ **सम्यक्त्व कौमुदी कथा**—× । पत्रस० १-३४, ६६ भापा-सस्कृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४८४२. **सम्यक्त्व कौमुदी कथा**— × । पत्रस० १६ । आ० १०×४ इन्च । भापा-हिन्दी । विपय-कथा । र० काल× । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १७८ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४८४३ **सम्यक्त्वकौमुदी कथा**— × । पत्र स० १०७ । आ० १० × ४¾ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल स० १७५५ । पूर्ण । वेष्टनस० २६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति—सवत् १७५५ वर्षे पौष मासे शुक्ल पक्षे त्रयोदश्या तिथौ भौमवासरे श्री हीरापुरे लिखित सकलगणि नगेन्द्रगणि श्री ५ रत्नसागर तत्छिष्य गणिगणोत्तम सगणि श्री चतुरसागर तच्छिष्य गणि गणालकार गणि श्री रामसागर तत्छिष्य पडित सुमतिसागरेण ।

४४८४. **सम्यक्त्वकौमुदी**— × । पत्रस० ११३ । आ० १२ × ५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विपय-कथा । र० काल × । ले०काल स० १७४६ । पूर्ण । वेष्टनस० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना बूदी ।

विशेष—सवत् १७४६ वर्षे मिती कार्तिक शुक्ला तृतीयाया ३ भौमवासरे लिखितमिद चौवे रूपसी खीवसी ज्ञाति सिनावढ वणाहटा मध्ये लिखायत च पाहडया मयाचद माधो सुत ।

४८४५ **सम्वक्त्वकौमुदी कथा**— × । पत्रस० ४० । आ० ११×५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विपय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष—लिखित ऋषि कपूरचन्द नीमच मध्ये । प्रति प्राचीन है ।

४८४६. **सम्यक्त्व कौमुदी कथा**— × । पत्र स० २-८२ । आ० १० × ४½ इन्च । भापा-सस्कृत । विपय-कथा । र०काल × । ले० काल स० १८५६ फागुण सुदी ३ । अपूर्ण । वेष्टन स० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

विशेष—प्रति हिन्दी गद्य टीका सहित है। महोपाध्याय मेघविजयजी तत् शिष्य प० कुशलविजय जी तत् शिष्य ऋद्धिविजय जी शिष्य प० भुवन विजयजी तत् शिष्य विनीत विजय गणि लिखित।

४८४७. सम्यक्त्व कौमुदी कथा—×। पत्रस० १४३। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १३९–२११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिह टोक।

४८४८. सम्यक्त्व कौमुदी कथा— ×। पत्रस० १६। आ० ९½×४ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले०काल स० १७२१ फागुन वदी ४। पूर्ण। वेष्टन स० १२३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी।

विशेष—साह जीवराज गोदीका ने प्रतिलिपि करवायी थी।

४८४९. सम्यक्त्व कौमुदी कथा— ×। पत्रस० ५५–१११। आ० ११ × ४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय कथा। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० १४५। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान, बू दी।

४८५० सम्यक्त्व कौमुदी कथा— ×। पत्र स० ५५। आ० ११½ × ५ इञ्च। भाषा—सस्कृति। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २९६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बू दी।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

४८५१. सम्यक्त्व कौमुदी कथा—×। पत्रस० ५४। आ० ९½×४ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ६९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बू दी।

४८५२. सम्यक्त्व लीलाविलास कथा—विनोदीलाल। पत्र स० २२९। आ० ९½×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-कथा। र०काल। ले० काल स० १९५३। पूर्ण। वेष्टन स० १२८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी।

४८५३. सम्यग्दर्शन कथा—×। पत्र स० १२६। आ० १०¾×४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

४८५४. सिद्धचक्र कथा—शुभचन्द्र। पत्रस० ५। आ० ११½×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र०काल। × ले०काल स० १९०९। पूर्ण। वेष्टन स० ७९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना।

४८५५ प्रति स० २। पत्रस० ५। आ० १२ ×४½ इञ्च। ले०काल स० १८४२। पूर्ण। वेष्टनस० २५३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर चौगान बू दी।

४८५६. सिद्धचक्र कथा—श्रुतसागर। पत्रस० २३। आ० ११×५ इञ्च। भाषा सस्कृत। विषय—कथा। र०काल ×। ले० काल स० १५७६ चैत्र सुदी ७। पूर्ण। वेष्टनस० २७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—आर्या ज्ञानश्री ने प्रतिलिपि करायी थी।

४८५७. सिद्धचक्र कथा – भ० सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र स० ५ । आ० १५ × ६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल स १८७६ । पूर्ण । वेष्टन स० ८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)

विशेष-प्रशस्ति मे निम्न प्रकार भट्टारक परपरा दी है देवेन्द्रकीर्ति महेन्द्रकीर्ति क्षेमेन्द्रकीर्ति और सुरेन्द्रकीर्ति।

४८५८. सिद्धचक्रव्रत कथा—नेमिचन्द्र पत्रस० १६६ । भाषा-सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × पूर्ण । वेष्टन स० ७७-३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति विद्वद्वर श्री नेमिचन्द्र विरचिते श्री सिद्धचक्रसार कथा सबधे श्री हरिषेण चक्रवर वैराग्य दीक्षा वर्णनो नाम सप्तम सर्ग ॥७॥

४८५९. सिद्धचक्रव्रत कथा—नथमल । पत्र स० २६ । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल स० १८८९ । पूर्ण । वेष्टन स० २००१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी

विशेष—जादूराम छावडा चाकसूवाला ने वोली मे प्रतिलिपि करवाई थी।

ग्रन्थ का नाम श्रीपाल चरित्र है तथा अष्टाह्निका कथा भी है।

४८६०. प्रतिसं० २ । पत्र स० १३ । आ० १२$\frac{1}{2}$×८ $\frac{1}{2}$इञ्च । ले०काल × पूर्ण । वेष्टन स ३५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

४८६१. प्रति स० ३ । पत्रस० ७ । आ० १२×७$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल स० १९४२ कार्तिक सुदी ५ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

४८६२. सिंहासन बत्तीसी-ज्ञानचन्द्र । पत्र स० २६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना बूंदी।

४८६३. सिंहासन बत्तीसी—विनय समुद्र। पत्र स० २६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—कथा । र०काल स० १६११ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बूदी)

विशेष—इसमे ४१ पद्य है । रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

आदि भाग—

श्री सारदाई नम । श्री गुरुभ्यो नम ।
सयल मगल करण आदीस ।
मुनयण दाइणि सारदा सुगुरु नाम निय ।
चितधारिय नीर राइ विक्रम तणउ ।
सत्तसील साहस विचारीय ॥

सिंहासन वत्तीसी जिनउ सिद्धसेन गणवारि ।
भाख्यु ते लवलेस लहि दायइ विनइ विचार ।।१।।

दूहा—

सिंहासन सोहण सभा निणि पूतली वत्तीस ।
भोजराइ आगलि करइ विक्रमराइ सतीस ।।२।।
ते सिंहासन केहनउ किणि आप्यु किम भोजि ।
लाधउ केम कथा कही ते सभलज्यो वोज ।।३।।

अन्तिम—

पास सतानी गुणे वारिट्ठ केसी गुरु सरिवा जगि जिट्ठ ।।
रयणप्यह सूरीसर जिसा अनुक्रमि कव्वु सूरिगुण निसा ।।३७।।
तासु पाटि देवगुपति गुरुचद,तेहनइ पाटहि सिद्ध सुरिद ।।
तेहनई पद पजक जिम भाण, जे गुरु गरु आगुणे निहाण ।।३८।।
स पइ विजयवत कव्वु सूरि, तस पसाइ मइ आणद सूरि ।
अतेवासी तेहनउ सदा, हर्प समुद्र जिसो निधि मुदा ।।३९।।
तसु पयकमल कमल मवु भृ ग, विनय समुद्र वाचकमन रंग ।।
सवत् सोलह वरसइ ग्यार, सिंघासण वत्तीसी सार ।।४०।।
लेइ बोधउ एह प्रवध, मूढमती मइ चौउपइ वधि ।
भणतो गुणता हुइ कल्याण,अविचल वीकनीयर अहिठाण ।।४१।।

इति सिंघासणवत्तीसी कथा चरित्र सपूर्ण

४८६४. सिंहासन वत्तीसी—हरिफूला । पत्रस० १२३ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र०काल स० १६३६ । ले०काल स० १८०६ । पूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल तेरहपथी मन्दिर दौसा ।

प्रारम्भ—मगला चरण ।

आरादी श्री रिषभप्रभु जुगलाधर्म निवारि ।
कथा कहो विक्रमतणी, जास साकउ विस्तार ।।
साको वरत्यो दान थी दान वडो ससारी ।
वलि विशेप जिण मासणो वोल्या पचप्रकार ।।
अभय सुपात्र दान चिहुँ प्राणी मोख सजोग ।
अनुकपा धरि तकुं चित एम्रिहू दाने भोग।।

पत्र ७२ पर कथा ६

हिवसारारे नयरी, भोज निरेसरु ।
सिंघासण रे आवे सुभ महूर्त्त वरु ।।
तव रावारे दशमी वोलैऊ मही ।
विक्रम ममरे होवै तो वैसे मही ।।

छद—
वैसे सही इम सुयरी पूछे भोज ततखिण पूतली ।
किम हुयो विक्रमराय दाता भणी ते हरखे चली ॥
नयरी अवतीराय विक्रम सभा बैठो अन्यदा ।
धन खड योगी एक आयो कहं वनमाली तदा ।

अन्तिम—प्रशस्ति निम्न प्रकार है —
श्री खरतर रे गणहर गुरु गोयम गमो,
निति उठी रे श्री जिनचद्र सूरि पय नमो ।
तसु गछे रे सप्रति गुण पाठक तिलो ।
वड वादीने श्री विजयराज वसुधा निलो ॥
वसुधा निलो तसु सीस दीने सघनै आग्रह करी ।
दे सैस वाल खडेह नयरी सदा जे आणद भरी ।
सवत् सोलह सो छत्तीस मे चीत आस वदि कथा ।
तिहि कहिय सिघासस वत्तीसी कही हीर सुणी यथा ।
पण चरितै रे दूहा गाहा चौपई ।
सहू अकैन वावीम तै वात्रीसवई ॥
सामू वली हू सघ से मुखि मान छोडिय आपणो ।
जे सासत्र शार्क हवै मिलतो तेह निरतो वापणे
ए चरित साभलि जेय मानव दान आपी निज करै
जे पुण्य पसायै सुखी थापै रिधि पामै बहु परै ।

इति श्री कलियुग प्रधान दानाधिकार श्री विक्रमराय श्री भोजनरिंद सिंधासण वित्तीसी चोपई
सपूर्ण । लि० श्री जिनजी को खानाजाद नान्हेराम गोधो वासी सूरतगढ को, पढैत्या दनं श्री जिनाय नम
वच्या । भूल्यौं चूक्यो सुधारि लीज्योजी मिती द्वितीय भादवा सुदी १० दीनवार स० १८०६ का । लिखाई
ब्रह्म श्री श्री रूपसागर जी विराजै वैराठमध्ये । शुभ भवतु ।

४८६५. **सिंहासन वत्तीसी**—× । पत्र स० २१ । आ० ११½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १५८५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मंदिर अजमेर ।

४८६६. **सिंहासन बत्तीसी**— × । पत्र स० १६ । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प चायती मन्दिर भरतपुर ।

४८६७. **सिंहासन वत्तीसी**—× । पत्रस० १२३ । आ० ५ ×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल स० १६५४ चैत बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी (बूदी)

विशेष—चपापुरी मे लिखा गया था ।

४८६८. **सिंहासन बत्तीसी**— × । पत्र स० १० । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी, मालपुरा (टोंक)

४८६९. **सुकुमार कथा**—× । पत्रस० ८ । ग्रा० १०½×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४८७०. **सुकुमालस्वामी छद—ब्र० धर्मदास** । पत्र स० ३ । ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल स० १७२४ सावण बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० २२५/४५ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—ब्र० शिवराज ने कोट महानगर मे प्रतिलिपि की थी । ब्र धर्मदास सुमतिकीर्ति के शिष्य थे ।

४८७१ **सुखसपत्ति विधान कथा**— × । पत्र स० २ । ग्रा० १०½×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४८७२. **सुखसपत्ति विधान कथा**—। पत्रस० २ । ग्रा० ६×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४८७३. **सुगन्धदशमी कथा—राजचन्द्र** । पत्रस० ६ । ग्रा० १२×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, नागदी बूदी ।

विशेष—प्रति हिन्दी टव्वा टीका सहित है ।

४८७४. **सुगन्धदशमी कथा—खुशालचन्द्र** । पत्र स० १२ । ग्रा० ११×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल स० १६१५ । पूर्ण । वेष्टन स० १३४/६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा)

४८७५ **प्रतिसं० २** । पत्र स० ११ । ग्रा० १०¾×५¾ । ले० काल स० १६१२ ग्राजोज बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १५५ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—लिखित सेवाराम वघेरवाल इन्दरगढ मध्ये ।

४८७६. **प्रतिसं० ३** । पत्रस० १३ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । ले० काल स० १६४४ भादवा सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० ५४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—सुन्दरलाल वैद ने लिखी थी ।

४८७७ **प्रति स० ४** । पत्रस० ७ । ग्रा० १२½×७½ इञ्च । ले०काल स० १६२७ भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष-डीगवाले मोतीलाल जी बालमुकन्दजी जी के पुत्र के पठनार्थ भरतपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४८७८. **प्रति सं० ५** । पत्रस० १३ । ग्रा० ६¾×४½ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

४८७९ प्रतिस० ६। पत्र स० १५। आ० ९×६ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २४९। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर वोरसली कोटा।

४८८० सुगधदशमी कथा—×। पत्र स० ४। भापा—हिन्दी। विपय—कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५०६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—सूतक विचार भी हैं।

४८८१ सुभाषित कथा— ×। पत्रस० १७१। आ० ११×८ इञ्च। भापा-सस्कृत। विषय—कथा। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० ३०३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा।

विशेष—इससे आगे पत्र नही है। रत्नचूल कथा तक है।

४८८२. सुरसुन्दरी कथा—×। पत्रस० १७। आ० १०×४½ इञ्च। भापा—हिन्दी। विपय—कथा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० ७४/४२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

४८८३ सेठ सुदर्शन स्वाध्याय—विजयलाल। पत्र स० ३। आ० ११½ × ४½ इञ्च। भापा—हिन्दी। विषय—कथा। र०काल स० १६०२। ले० काल म० १७१७ आपाढ बुदी ६। पूर्ण। वे० स० १७२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा।

विशेष—सूर्यपुर नगर मे लिखा गया था।

४८८४ सोमवती कथा—। पत्र स० ६। आ० ११×५ इञ्च। भापा सस्कृत। विपय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी।

विशेष—'महाभारते भीष्म युधिष्ठर सवादे' मे से है।

४८८५. सौभाग्य पचमी कथा— ×। पत्र स० १०। भाषा—सस्कृत। विपय—कथा। र०काल स० १६५५। ले०काल स० १८६०। पूर्ण। वेष्टन स० ६८२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—हिन्दी टिप्पण सहित है।

४८८६ सघवूल— ×। पत्रस० ३, ७-१०। आ० १०×४ इञ्च। भापा - हिन्दी (पद्य)। विपय—कथा। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ३५८। प्राप्ति स्थान—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

४८८७. सवादसुन्दर ×। पत्रस० ११। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विपय—कथा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५३। प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी।

विशेष—शारदापद्मपति सवाद, गगादारिक्ष्यपद्म सवाद, लोकलक्ष्मी सवाद, सिंह हस्ति सवाद, गोवूमचणक स वाद पञ्चेन्द्रिय स वाद, मृगमदचन्दन स वाद एव दानादिचतुष्क स वाद का वर्णन है।

प्रारम्भ—

प्रणम्य श्रीमहावीर वदमानपुर दरम्।
कुर्व्वे स्वात्मोपकाराय ग्र थ सवादसुन्दरम् ।।१।।

४८८८ स्थानक कथा— × । पत्रस० ६६ । आ० ११ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत। विषय—कथा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३३० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

अन्तिम पुष्पिका—इति श्री एकादश स्थाने करुणदेवकथानक सपूर्ण । ११ कथायें हैं ।

४८८९. **हनुमत कथा—ब्रह्म रायमल्ल** । पत्रस० ३९ । आ० १०½ × ६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी प. । विषय कथा । र०काल स० १६१६ । ले०काल स० १९०५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—ज्ञानचद तेरापथी दौसा वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

४८९०. **प्रतिसं० २** । पत्रस० २७ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर ।

४८९१ **प्रतिसं० ३** । पत्र स० ५९ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले०काल सं० १९५० । पूर्ण । वेष्टन स० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

विशेष—जैन पाठशाला जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४८९२. **प्रतिसं० ४** । पत्र स० ७० । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

४८९३. **हरिश्चन्द्र राजा की सज्झाय** — × । पत्रस० १ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

४८९४. **हरिषेण चक्रवर्ती कथा—विद्यानन्दि** । पत्रस० ५ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । जीर्ण । वेष्टन स० १८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

४८९५. **होली कथा** । पत्रस० ३ । आ० ११¾ × ५⅞ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । वेष्टनस० १७९ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४८९६. **प्रतिसं० २** । पत्रस० ४ । आ० ११×५ इच । ले० काल × । वेष्टन स० १८० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मदिर ।

४८९७ **प्रतिसं० ३** । पत्रस० ५ । आ० ९×४⅞ इञ्च । ले०काल स० १६७५ । वेष्टनस० १८१ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर, लश्कर जयपुर ।

विशेष—मोजावाद मे रामदास जोशी ने प्रतिलिपि की थी ।

४८९८. **होली कथा**— × । पत्रस० ३ । आ० ११ × ५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय—कथा । र० काल × ले० काल स० १८७८ पौष बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४८६६. होली कथा। पत्र स० ३। आ० ११½×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र०काल ×। ले० काल स० १८६०। पूर्ण। वेष्टन स० १७७-७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

४६००. होली कथा—मुनि शुभचन्द्र। पत्रस० १४। आ० ६½×४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—कथा। र०काल स० १७५५। ले०काल स० १८६४। पूर्ण। वेष्टन स० ६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक।

विशेष—इति श्री धर्म परीक्षा ग्र थउतै द्धृत आचार्गिज शुभचन्द्र कृत होली कथा स पूर्ण।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्री मूलस घ भट्टारक स त, पट्ट आमेरि महा गुणवत।
नरेन्द्रकीर्ति पाट सोहत, सुरेन्द्रकीर्ति भट्टारकवत ।।११६।।
ताके पाटि धर्म को थभ, सोहै जगतकीर्ति कुलथभ।
क्षमावत शीतल परिनाम, पडित कला सोहै गुण धाम ।।११७।।
ता शिष्य आचारिज भेष लीया सही सील की रेख।
मुनि शुभचन्द नाम प्रसिद्ध कवि कला मे अधिकी वुद्धि ।।११८।।
ताके शिष्य पडित गुणधाम, नगराज है ताको नाम।
मेधो जीवराज अन जोगी, दिव चोखो जसो शुभ नियोगी ।।११६।।
देस हाडोती सुवसै देस, तामे पुर कुजड कही ।
ताकी शोभा अधिक अपार, नसिया सोहै वहुत प्रकार ।।१२०।।
हाडावशी महा प्रचण्ड, श्री रामस्यघ धर्म को माड।
ताके राज खुशाली लोग, धर्म कर्म को लीहा स जोग ।।१२१।।
तिहा पौण छतीसू क्रीडा करै, आपणो मार्ग चित्त मे धरै।
श्रावक लोग वसै तिहथान, देव धर्म गुरू राखै मान ।।१२२।
श्री चन्द्रप्रभ चैतालो जहा, ताकी सोभा को लग कहा।
तहा रहे हम वहोत खुश्याल, श्रावक की देख्या शुभ चाल।
तातै उदिय कियो शुभकर्म, होली कथा वनाई परम ।।
भापा वध चौपई करी, स गति भली तै चित मे धरी ।।१२४।।
मुनि शुभचन्द करी या कथा, धर्म परीक्षा मे छी जथा।
होली कथा सनै जो कोई, मुक्ति तणा, सुख पावै सोय ।।
स वत सतरासै परि जोर, वर्ष पचावन अधिका और ।।१२६।।
साक गणि सोलाछैवीस, चैत सुदि सातै कट्टीस।
ता दिन कथा स पूरण भई, एक सो तीस चौपई भई ।।
सायदिन मे जोडी पात, दोन्यू दिसा कुशलात ।।१२७।।

स वत १८६४ मे साह मोजीराम कटारया ने राजमहल मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प्रतिलिपि कराई थी।

४६०१. होली कथा—छीतर ठोलिया। पत्र स० १०। आ० ७½×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी प०। विषय—कथा। र०काल स० १६६० फाल्गुण सुदी १५। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १८३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

४६०२. **प्रतिसं० २** । पत्र स० ८ । आ० ११½×४½ इञ्च । ले०काल स० १८८० फागुरा सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स०१६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

४६०३. **होलीपर्वकथा**— × । पत्रस० ३ । आ० ६¾×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६०८ । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६०४. **होली पर्व कथा**— × । पत्रस० २ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६६२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६०५. **होलीरज पर्वकथा**— × । पत्रस० २ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २८३/११५ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर ।

४६०६. **होलीपर्वकथा**— × । पत्रस० ३ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६०७ **होलीरेणुकापर्व—पडित जिनदास** । पत्रस० ४० । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र०काल स० १५७१ ज्येष्ठ सुदी १० । ले०कालस० १६२८ मगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—खडेलवाल ज्ञातीय साह गोत्रोत्पन्न श्री पदारथ ने प्रतिलिपि करवायी । फागुई वास्तव्ये ।

४६०८. **प्रतिसं० २** । पत्रस० ३६ । आ० १०¾×४½ ले०काल स० १६१५ फागुरा सुदी १ । वेष्टन स० १७८ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—तक्षकगढ मे महाराजा श्री कल्याण के राज्य मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४६०९. **हसराज बच्छराज चौपई—जिनोदयसूरि** । पत्र स० २८ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल स० १८७५ आसोज सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी)

विशेष—मिझल ग्राम मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४६१०. **हंसराज वच्छराज चौपई**— × । पत्रस० २-१८ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) ।विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७०३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विषय -- व्याकरण शास्त्र

४६११ अनिटकारिका— × । पत्र स० १६ । आ० १०½ × ४½ इच । भापा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल स० १७५४ पौप बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १४६४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६१२. **अनिटकारिका**— × । पत्र स० ३ । आ० १०×४½ इञ्च । भापा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४६१३. **प्रतिसं० २** । पत्र स० ४ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४६१४. **अनिटकारिका**— × । पत्र स० ४ । आ० ११×४ इञ्च । भापा-सस्कृत । विपय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल स० १८५२ आपाढ शुक्ला ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

विशेष—श्रीचद ने प्रतिलिपि की थी ।

४६१५. **अनिटसेटकारिका**— × पत्रस० ३ । आ० १० × ४ इच । भापा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २३१/५८५ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—भट्टारक श्री देवेन्द्रकीति के शिष्य व्र० मोहन ने प्रतिलिपि की थी ।

प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

४६१६. **प्रतिसं० २** । पत्र स० ३ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३२/५८४ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४६१७. **अनेकार्थ सग्रह—हेमराज** । पत्र स० ६५ । भापा-सस्कृत । विपय व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्री मूलसघे भट्टारक श्री सकलकीर्ति त० भ० श्री भुवनकीर्ति त० भ० श्री ज्ञानभूपण देवास्तशिष्य मुनि अनतकीर्ति । पुस्तकमिद श्री गिरिपुरे लिखायित ।

४६१८. **अव्ययार्थ**— × । पत्रस० ४ । आ० १०½×४½ इञ्च । भापा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले० काल स० १८६८ । पूर्ण । वेष्टन स० २७५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

४६१६. **अव्ययार्थ**— × । पत्रस० ५ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक) ।

४६२०. आख्यात प्रक्रिया—अनुभूति स्वरूपाचार्य । पत्रस० १० । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

४६२१ प्रति सं० २ । पत्रस० ६३ । आ० ६½×५ इञ्च । ले० काल स० १८७६ फागुन सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी ।

विशेष—सवाईमाधोपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४६२२. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ३० । आ० ११×४ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी ।

४६२३. उपसर्ग वृत्ति । पत्रस० ४ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विपय–व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । वेष्टनस० २५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

४६२४ कातन्त्ररूपमाला—शिववर्मा । पत्र स० ६५ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष—६५ से आगे पत्र नही हैं ।

४६२५. प्रतिसं० २ । पत्र स० २८ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

४६२६ कातन्त्रविभ्रमसूत्र—शिववर्मा । पत्रस० ८ । आ० १०½×४½इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–व्याकरण । र० काल × । ले०काल स० १६८१ । पूर्ण । वेष्टन स० २६७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—अवचूरि सहित है ।

४६२७ प्रति सं० २ । पत्रस० ५ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४२५/५७२ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति—

इति श्री कातन्त्रसूत्र विभ्रमसूत्र समाप्त । प० अमीपाल लिखित । प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

४६२८. कातन्त्रतरूपमाला टीका—दौर्ग्यसिंह । पत्र स० ७३ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३६६–१४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

४६२९. कातन्त्ररूपमाला वृत्ति—भावसेन । पत्रस० ६६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विपय–व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६३०. प्रति स० २ । पत्रस० ११७ । आ० १४×५ इच । ले०काल स० १५५५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३०६/५७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति शुद्ध एव सुन्दर है ।

प्रशस्ति—सवत् १५५५ वर्षे आषाढ वुदी १४ भौमे श्री कोटस्थाने श्री चन्द्रप्रभ जिनचैत्यालये श्रीमूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भ० श्रीसकल कीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री भुवनकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री ज्ञानभूपणदेवा तत्शिष्य ब्रह्म नरसिंह जोग्य पठनार्थं गांधी परवत ज्ञानावर्णी कर्मक्षयार्थ रूपमालाख्य प्रक्रिया लिखित । शुभ भवतु ।

४६३१. **प्रति स० ३** । पत्रस० १३८ । आ० १२×५ इन्च । ले० काल स० १६३७ । पूर्ण । वेष्टन स० ४२७/५७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—आगे पत्र फटा हुआ है ।

प्रशस्ति—निम्न प्रकार है—

स्वस्ति सवत १६३७ वर्षे मार्गसिर वदि चतुर्थी दिने शुक्रवासरे श्रीमत् काष्ठासघे नन्दितट गच्छे विद्यागणे भ० रामसेनान्वये भ० सोमकीर्ति भ० महेन्द्रसेन भ० विशालकीर्ति तत्पट्टे धरणीवर भ० श्री विश्व भूषण ब्र० श्री हीरा ब्र० श्री ज्ञानसागर ब्र० शिवाबाई कमल श्री बा० जयवती समस्तयुक्तं श्रीमत् मरहठदेशे जगदाल्हादनपुरे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये श्री भ० प्रतापकीर्ति गुर्वाज्ञापालण प्रवीण बघेरवाल ज्ञातीय नाटल गोत्र जिनाज्ञा पालक सा माउन भार्या मदाइ तयो पुत्र सर्व कला सपूर्ण ……… .

४६३२. **कारकखंडन—भीष्म** । पत्र स० ५ । आ० ११×४½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका-

इति श्री भीष्म विरचिते बलवधक कारकखडन समाप्त । प्रति प्राचीन है ।

४६३३. **कारकविचार**— × । पत्रस० ६ । आ० ६×४ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले० काल स० १८८८ । पूर्ण । वेष्टनस० १३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल टोक ।

विशेष—मालपुरा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४६३४ **कारिका**— × । पत्रस० ६ । भाषा सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल स० १८८५ । पूर्ण । वेष्टनस० ७५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४६३५. **काशिकावृत्ति -वामनाचार्य** । पत्र स० ३५ । आ० ६½×४ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले० काल स० १५६७ । पूर्ण । वेष्टनस० २०२/६८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—सवत् १५ आषाढादि ६७ वर्षे शाके १४३२ प्रवर्तमाने आश्वन वुदि मासे कृष्णपक्षे तीया तिथौ भृगुवासरे पुस्तकमिद लिखित ।

४६३६ **कृदतप्रक्रिया—अनुभूति स्वरूपाचार्य** । पत्र स० १६ । आ० ११×७ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले०काल स० १६०४ । पूर्ण । वेष्टन स० २७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

४९३७. **क्रियाकलाप—विजयानन्द।** पत्रसं० ५। आ० १०×५$\frac{1}{2}$ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—व्याकरण। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० २४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर, इन्दरगढ (कोटा))

४९३८. **चतुष्क वृत्ति टिप्पण—पं० गोल्हण।** पत्रसं० २-९२। आ० १३×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—व्याकरण। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४०८/२६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर, उदयपुर।

विशेष—प्रति प्राचीन है। अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है।

इति श्री पंडित गोल्हण विरचिताया चतुष्क वृत्ति टिप्पणिकाया चतुर्थपादसमाप्त

४९३९ **चुरादिगण**— ×। पत्रसं० ७। आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—व्याकरण। र० काल ×। ले०काल ×। वेष्टनसं० ६७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

४९४०. **जैनेन्द्रव्याकरण—देवनंदि।** पत्र सं० १३२। आ० १२×७$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—व्याकरण। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० १५७६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—ग्रंथ का नाम पंचाध्यायी भी है। देवनन्दि का दूसरा नाम पूज्यपाद भी है।

४९४१. **प्रति सं० २।** पत्र सं० २०१। आ० ११ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन सं० ११२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर।

४९४२. **प्रति सं० ३।** पत्रसं० ८९। आ० १३×८ इञ्च।। ले०काल सं० १९३५ माघ बुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० ८२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

४९४३. **तत्वदीपिका**— ×। पत्रसं० १८। आ० ११$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—व्याकरण। र० काल। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३४९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष— सिद्धान्त चन्द्रिका की तत्वदीपिका व्याख्या है।

४९४४. **तद्धितप्रक्रिया—अनुभूतिस्वरूपाचार्य।** पत्रसं० ६५। आ० १०×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय-व्याकरण। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० २४८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलाना (बूंदी)

४९४५ **तद्धितप्रक्रिया—महीभट्टी।** पत्र सं० ९६। आ० ९×४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—व्याकरण। र० काल ×। ले० काल सं० १८६५। पूर्ण। वेष्टन सं० ९१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)।

४९४६. **तद्धितप्रक्रिया**— ×। पत्र सं० १६-४२। आ० १०×६$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—व्याकरण। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनसं० २६९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

४६४७ प्रति स० २ । पत्र स० ७६ । श्रा० ६½ × ४½ इच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

४६४८ **तर्कपरिभाषा प्रक्रिया—श्री चिन्नभट्ट** । पत्रस० ४६ । श्रा० १०×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८६/४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

४६४६. **धातु तरगिणी—हर्षकीर्त्ति** । पत्रस० ५६ । श्रा० १०×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल स० १६६३ । ले०काल स० १७४६ । पूर्ण । वेष्टनस० २६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

विशेष—स्वोपज्ञ टीका है । रिणीमध्ये स्थलीदेशे । महाराज श्री अनूपसाह राज्ये लिखित ।। पत्र चिपके हुए है ।

४६५०. **धातुतरगिणी**— × । पत्रस० ५२ । श्रा० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले०काल स० १६६२ मगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १३१६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६५१ **धातुनाममाला**— × । पत्र स० १२ । श्रा० ११½ × ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २६५-१०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

४६५२. **धातुपद पर्याय** —× । पत्र स० ६ । श्रा० ६¾×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११०० । **प्राप्ति स्थान**—भ दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६५३ **धातुपाठ—पाणिनी** । पत्र स० १७ । श्रा० ६½ × ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल ×' । ले० काल स० १६२४ वैशाख बुदी ऽऽ । पूर्ण । वेष्टन स० १८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प० शिवदास सुत श्री नाथेन लिखित ।

४६५४. **धातुपाठ—शाकटायन** । पत्रस० १३ । श्रा० ११ × ५इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल स० १७२६ । पूर्ण । वेष्टनस० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—शाकटायन व्याकरण मे से है। प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १७२६ वर्षे वैशाख बुदी १३ शुक्ले श्री चाउ ड नगरे श्री आदिनाथ चैत्यालये श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कार गणे श्री कु द कु दाचार्यान्वये भट्टारक श्री वादिभूषणदेवास्तत्पट्टे भ० श्री रामकीर्ति देवास्तत्पट्टे भ श्री पद्मनदिदेवास्तत्पट्टे भ श्री देवेन्द्रकीर्तिदेवास्तदाम्नाये आचार्य श्री कल्याणकीर्ति तच्छिष्याचार्य श्री त्रिभुवनचन्द्रे ण शाकटायन व्याकरण धातुपाठ ज्ञानावरणकर्म क्षयार्थ । शुभभवतु ।

४६५५. **धातुपाठ—हर्षकीर्त्ति** । पत्रस० १५ । श्रा० १०×४½ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल स० १६१३ । ले०काल स १७८२ भादवा सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनस० १३४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर आदिनाथ बूदी ।

विशेष—ग्रं तम—

खडेलवाल सद्व शे हेर्मसिहाभिघ सुधी :
तस्याम्यर्थन पाथेय निर्मितो नदताश्चिरम् ।

४६५६. **धातुपाठ**— × । पत्र स० १८ । ग्रा० ११×४½ इञ्च । भापा-सस्कृत । विपय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल स० १५८० ग्रासोज सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० १४२५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष—भट्टारक लक्ष्मीचन्द के शिष्य प० शिवराम के पठनार्थ लिखा गया था ।

४६५७. **धातुपाठ**— × । पत्रस० १० । ग्रा० १०½× ५ इञ्च । भापा—सस्कृत । विपय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

विषय—केवल चुरादिगण है ।

४६५८. **धातु शब्दावली**— × । पत्र स० ३० । ग्रा० ७⅞ × ५¾ इञ्च । भापा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१५-८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

४६५९. **धातु समास**— × । पत्रस० २८ । ग्रा० ११×४¾ इञ्च । भापा—सस्कृत । विपय व्याकरण । र०काल × । ले०काल म० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

४६६०. **निदाननिरुक्त** — × । पत्रस० ३ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । भापा-सस्कृत । विपय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४६६१ **पंचसधि**— × । पत्र स० १४ । ग्रा० ८½×४½ इञ्च । भापा-सस्कृत । विपय-व्याकरण । र० काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—ग्रग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४६६२ **पचसधि**— × । पत्रस० ४ । ग्रा०८×५ इञ्च । भाषा सस्कृत । विपय-व्याकरण । र० काल × । ले०काल स० १८१६ ग्रापाढ बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० १४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना बू दी ।

विशेष—सग्रह ग्र थ है । भाग्य विमल ने प्रतिलिपि की थी ।

४६६३ **पचसधि**— × । पत्रस० ७ । ग्रा० ६½×५ इञ्च । भापा-सस्कृत । विपय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी) ।

४६६४. **पचसधि**— × । पत्र स० १४ । ग्रा० १०×५ इच । भापा—सस्कृत । विपय—व्याकरण । र० काल × । ले०काल स० १६०१ । पूर्ण । वेष्टन स० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना बू दी ।

विशेष—प्रति जीर्णावस्था मे है।

४६६५. **पचसधि**— × । पत्र स० १३ । ग्रा० ११½ × ६ इञ्च । भापा-सस्कृत । विपय-व्याकरण । र० कारा × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना वू दी ।

४६६६. **पाणिनी व्याकरण—पाणिनी** । पत्रस० ७४७ । ग्रा० १२×४ इञ्च । भापा—सस्कृत । विपय—व्याकरण । र० काल × । ले०काल × ग्रपूर्ण । वेष्टन स० २६५/५१५ । **प्राप्ति स्थान**—सम्भवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर ।

विशेष—वीच मे कई पत्र नही हैं । प्रति प्राचीन है । इसका नाम प्रक्रिया कौमुदी व्याख्यान समनप्रसाद नामक टीका भी दिया है । सस्कृत मे प्रसाद नामी टीका है । ग्र थाग्र थ १५६२५ ।

४६६७. **पातजलि महाभाष्य—पातजलि** । पत्रस० ३६३ । ग्रा० ६¾×४½ इञ्च । भापा—सस्कृत । विपय—व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रभिनन्दन स्वामी वू दी ।

४६६८ **प्रक्रिया कौमुदी—रामचन्द्राचार्य** । पत्र स० १२ । ग्रा० ११×४¾ इञ्च । भापा—सस्कृत । विपय—व्याकरण । र० काल × । लेखन काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ७१२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रलमेर ।

४६६९. **प्रति स० २** । पत्रस० १०५ । ग्रा० ६½×४½ इञ्च । ले० काल स १७१३ मगसिर सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० २७० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

विशेष—साहिजिहावादे लिखित भवानीदास पुत्र रणछोडाय ।

४६७०. **प्रक्रिया कौमुदी**— × । पत्र स० ५३ से ११७ । ग्रा० १०½×४¾ इञ्च । भापा—सस्कृत । विपय—व्याकरण । र० काल × । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० १७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

४६७१ **प्रक्रिया कौमुदी**— × । पत्र स० १–७६ । ग्रा० ६½×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय—व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० २५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना वू दी ।

विशेष—पाणिनि के ग्रनुसार व्याकरण है तथा प्रति प्राचीन है ।

४६७२. **प्रक्रिया कौमुदी**— × । पत्रस० १७९ । ग्रा० १०×४ इञ्च । भापा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

४६७३ **प्रक्रिया सग्रह**— × । पत्रस० १६६ । ग्रा० ११¾×५ इञ्च । भापा-सस्कृत । विपय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल स० १६२४ । पूर्ण । वेष्टनस० ३१४ । **प्राप्ति स्थान**—ग्रग्रवाल दि० जैन मदिर उदयपुर ।

४६७४ **प्रक्रिया व्याख्या—चन्द्रकीर्त्ति सूरि** । पत्र स० २५-१५६ । ग्रा० १५ × ७ इञ्च । भापा—सस्कृत । विपय—व्याकरण । र० कारा × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टनस० ४४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोक) ।

४९७५ **प्रबोध चन्द्रिका—बैजल भूपति** । पत्रस० १५ । आ० १२ × ७ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २५३-१०२ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डुगरपुर ।

४९७६. **प्रबोध चन्द्रिका**— × । पत्र स० २० । आ० ११½ × ५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल स० १८८० । पूर्ण । वेष्टनस० १९५ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

विशेष—सवत् १८८० शाके १७४५ बाहुल स्याम पक्षे तियो ६ षष्ट्या शनिवासरे लिखत मुनि सुख विमल स्वात्म पठनार्थ लिपि कृत गोठडा ग्राम मध्ये श्रीमद् लाछन जिनालय ।

४९७७ **प्रसाद सग्रह**— × । पत्र स० १८-१०, ५-३३ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३३/३ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४९७८. **प्राचीन व्याकरण—पाणिनि** । पत्र स० ५६ । आ० ९½×४¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल स० १८२७ अपाढ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ६९६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४९७९. **प्राकृत व्याकरण—चड कवि** । पत्रस० २६ । आ० १० ×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले०काल स० १८७९ । पूर्ण । वेष्टनस० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

४९८०. **प्रतिसं० २** । पत्र स० १४ । आ० १०½ ×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

४९८१. **लघुसिद्धांत कौमुदी—भट्टोजी दीक्षित** । पत्र स० ८२ । आ० ९×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५१५ । **प्राप्ति स्थान—** भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४९८२. **प्रति स० २** । पत्रस० ५९४ । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११९९ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४९८३. **प्रति स० ३** । पत्रस० १८ । आ० १०×५ इञ्च । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना बूदी ।

४९८४. **प्रतिसं० ४** । पत्र स० ५८ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

४९८५. **महीभट्टी प्रक्रिया—अनुभूति स्वरूपाचार्य** । पत्रस० ५९ । आ० ११½×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले० काल० स० १९०० । पूर्ण । वेष्टनस० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

४९८६ **महीभट्टी व्याकरण—महीभट्टी** । पत्रस० ८१ । आ० ९½×६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय- व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ११७-२८९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर टोडारायसिंह ।

४९८७ **प्रति स० २** । पत्र स० २० । आ० १०×६ इन्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर कामा ।

४९८८. **प्रति स० ३** । पत्रस० ११ से ५२ । आ० ११ × ५ इन्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

४९८९. **राजादिगण वृत्ति**— × । पत्रस० २२ । आ० १२½×४½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २०६ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर, उदयपुर ।

४९९०. **रूपमाला—भावसेन त्रिविद्यदेव** । पत्रस० ४६ । आ० १०½×४½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४९९१ **रूपमाला**— × । पत्रस० ५० । आ० १०×५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४९९२. **रूपावली**— × । पत्रस० १०८ । आ० १०×४½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल, टोक ।

४९९३. **लघुउपसर्गवृत्ति**— × । पत्रस० ६ । आ० १०½×४½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४९९४. **लघुजातकटीका—भट्टोत्पल** । पत्रस० ६० । आ० ६½×४ इन्च । भाषा- सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल स० १४६५ आषाढ मासे ७ शनौ । पूर्ण । वेष्टनस० २०३/९८६ । **प्राप्ति स्थान**—सम्भवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर ।

४९९५. **लघुनाममाला—हर्षकीर्ति** । पत्र स० ४२ । भाषा सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल स० १८३५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तरहपथी मदिर वसवा ।

विशेष—वसवा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

इति श्री मन्नोगपुरीयतपागच्छीय भट्टारक श्री हर्षकीर्ति सूरि विरचिताया साखीयाभिधाभिया लघु नाममाला समाप्ता । सवत् १८३५ वर्षे शाके १७०० मिती भादवा शुक्ल पक्षे वार दीतवार एकै नै सपूर्ण कियो । जीवराज पाडे ।

४९९६. **लघुक्षेत्र समास**— × । पत्रस० ३२ । आ० ११×४½ इ च । भाषा-प्राकृत-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल स० १६८२ आसोज सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

४९९७ **लघुशेखर (शब्देन्दु)**— × । पत्रस० १२४ । आ० ११×५¾ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । वेष्टनस० ६९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

४९९८. लघुसिद्धांत कौमुदी - वरदराज । पत्र स० ६३ । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०३२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४९९९. प्रति स० २ । पत्रस० १९८ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १८३६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

५०००. प्रति सं० ३ । पत्र स० ३२ । आ० ११ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २४-१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५००१.वाक्य मजरी— × । पत्रस० ३० । आ० ९×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले० काल स० १८२५ । पूर्ण । वेष्टन स० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५००२. विसर्ग सधि—× । पत्रस० १२ । आ० ९$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना बू दी ।

५००३ शाकटायन व्याकरण—शाकटायन । पत्रस० ७७१ । आ० ११ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल स० १६८१ । पूर्ण । वेष्टनस० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—निम्न प्रकार है—सवत् १६८१ वर्षे जेष्ठ सुदी ७ गुरु समाप्तोय ग्रन्थ ।

५००४. शब्दरूपावली—× । पत्रस० १३ । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

५००५. शब्द भेदप्रकाश—महेश्वर । पत्र स० २-२० । आ० १३$\frac{1}{2}$ ×६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल स० १५५७ । अपूर्ण । वेष्टन स० ११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १५५७ वर्षे आपाढ बुदी १४ दिने लिखित श्री मूलसघे भट्टारक श्री ज्ञानभूपण गुरूपदेशात् हुबड ज्ञातीय श्रेष्ठि जइता भार्या पाचू पुत्री श्री धर्मणि ।

५००६ षट्कारक—विनश्वरनंदि आचार्य । पत्रस० १७ । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले० काल शक स० १५४१ । अपूर्ण । वेष्टन स० १७१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक)

विशेष—अन्तिम पुष्पिका—इति श्री महान वोद्धाग्रगण्य षट्कारक समाप्ता विनश्वरनदि महचार्य विरचितोय सम्बन्वो । शाके १५४१ कर्णाटक देशे गीरसोपानगरे आचार्य श्री गुणचद्र तत्पट्टे मडलाचार्य श्रीमत् भट्टारक श्री सकलचन्द्र शिष्य ब्रह्म श्री वीरदासेन लिखि वोद्धकारक ॥

५००७. षट्कारक विवरण—× । पत्रस० ३ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११६५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५००८. षट्कारिका—× । पत्र स० ५ । आ० ११×५½ इन्च । भाप—सस्कृत । विषय—व्य करण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५००९. षट्कारिका—× । पत्र स० ५ । आ० ११×५½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर

५०१०. षष्टपाद—× । पत्र स० ६ । आ० ११×५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष - कृदन्त प्रकरण है ।

५०११. सप्तसमासलक्षण— × । पत्रस० २ । आ० ११ × ५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४२३/५७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

५०१२. संस्कृत मजरी—वरदराज । पत्रस० ११ । आ० ११×६ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल स० १८६६ भादवा बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ८२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर आदिनाथ (बूदी)

५०१३. संस्कृत मजरी × । पत्रस० १० । आ० ८½×४½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०३३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५०१४.सस्कृत मजरी—× । पत्र स० ४ । आ० १०½ × ४½ इन्च । भाषा- सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५०१५. सस्कृत मजरी—× । पत्रस० ४ । आ० १०× ४½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल स० १९५३ । पूर्ण । वेष्टन स० १४५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूदी ।

५०१६ सस्कृत मजरी—× । पत्र स० १३ । आ० ९ × ५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल स० १८११ । पूर्ण । वे० स० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूदी ।

५०१७ **प्रति स० २** । पत्रस० १२ । आ० ८×५ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त ।

५०१८. सस्कृत मजरी—× । पत्रस० ७ । आ० ११ × ५ इन्च । भाष—सस्कृत । विषय-व्याकरण र०काल × । ले०काल स० १९३५ । पूर्ण वेष्टनस० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

५०१९ सस्कृत मजरी—× । पत्रस० ६ । आ० ११×४½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल स० १८६६ काती सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स२४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

५०२०. प्रति सं० २ । पत्रस० ४ । ले० काल स० १८४७ । पूर्ण । वेष्टनस० २४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—लाखेरी मे प्रतिलिपि हुई थी ।

५०२१. समासचक्र—× । पत्रस० ८ । आ० ६¾ × ४¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १६३५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५०२२. समासप्रक्रिया × × । पत्र स० २६ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३१७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५०२३. समास लक्षण—× । पत्रस० १ । आ० १०×४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल । वेष्टन स० ३५१-५६० । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन सभवनाथ मन्दिर अजमेर ।

विशेष—सस्कृत टीका सहित है ।

५०२४. सारसिद्धान्त कौमुदी—× । पत्रस० २३ । आ० १०½×४½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८६-७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५०२५. सारसग्रह— × । पत्र स० ४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४२४-५७३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

५०२६. सारस्वत टीका—× । पत्र सख्या ७६ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । लेखन काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

५०२७. सारस्वत चन्द्रिका—अनुभूतिस्वरूपाचार्य । पत्र स ४४ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले० काल× । अपूर्ण । वेष्टन स० १२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

५०२८. सारस्वत टीका—पुंजराज । पत्रस० १६३ । आ० १०×४ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४३/५६६ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर ।

विशेष—पुजराज का विस्तृत परिचय दिया है ।

नमदवनसमर्थस्तत्वविज्ञानपार्थ ।
सुजनविहिते ताप श्रीनिधिर्वीतादोष ।
अवनिपतिशरण्यात् प्रोढधीमे च मत्री ।
मफरलमलिकास्या श्रीगयासाद्वायत् ।

पतिव्रता जीवनधर्मपत्नी वन्यामकूनामकुटवमान्या ।
श्रीपु जराजाख्यममूत पुत्र मु ज चेतेस्तेश्वारित पवित्र ॥१४॥

२४ पद्य तक परिचय है । अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है—

योय रुचिर चरित्रो गुरोर्विचित्रैरपि प्रसभ ।
दिग्दतावल दतावली वलक्ष शस्तनुते ॥२३॥
साय टीका व्यरचयदिमा चारु सारस्वतस्य ।
व्युत्पिशूना समुपकृताय पु जराजा नरेन्द्र ॥२४॥
गभीरार्थरुचित विवृत्तेस्वीयसूत्रै पवित्रमेन ।
मभ्यस्यत इह मुदासु प्रसन्ना ॥२४॥

श्री श्री पु जराजकृतेय सारस्वत टीका संपूर्ण । ब्र० गोपालेन ब्र० कृष्णाय प्रदत्त । ग्र था ग्र थ ४५०० । प्रति प्राचीन है ।

५०२९. प्रतिसं० २ । पत्र स० ७२ । आ० ११½ × ६½ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन स० ४०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति बहुत प्राचीन है ।

५०३०. सारस्वत दीपिका वृत्ति—चन्द्रकीर्त्ति । पत्र स० २६० । आ० १०½ × ४½ इच । भाषा—स स्कृत । विषय—व्याकरण । पूर्ण । र०काल × । ले० काल स० १८३१ आसोज बुदी ६ । वेष्टनस० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

विशेष—महात्मा मानजी ने सवाई जयपुर के महाराज सवाई पृथ्वीसिंह के राज्य मे लिखा था ।

५०३१. प्रति स० २ । पत्रस० ४१ । आ० १०½ × ४¾ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

विशेष—४१ से आगे पत्र नही हैं ।

५०३२. प्रतिस० ३ । पत्र स० २२१ । आ० ६½×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर दबलाना (बू दी) ।

५०३३. प्रतिसं० ४ । पत्र स० २०२ । आ० ६×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६१/१०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

अन्तिम पुष्पिका—इति श्री नागपुरीय तपागच्छाधिराज भ० श्री चन्द्रकीर्त्तिसूरि विरचिताया सारस्वत व्याकरण दीपिका सम्पूर्ण ।

५०३४. प्रतिसं० ५ । पत्र सख्या १८२ । आ० ११½×५½ इ च । ले० काल स० १८५१ पौष बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

५०३५ सारस्वत धातुपाठ—अनुभूतिस्वरूपाचार्य । पत्रस० ७ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बू दी) ।

५०३६. सारस्वत प्रकरण— × । पत्रस० १७–७५ । आ० ११× ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३३३–१२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

५०३७. सारस्वत प्रक्रिया—अनुभूतिस्वरूपाचार्य । पत्र स० १०१ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५२४ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—इस मन्दिर मे इसकी ११ प्रतिया और हैं ।

५०३८. प्रति स० २ । पत्र स० ७४ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले० काल स० १९४३ । वेष्टन स० ६०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

५०३९. प्रति सं० ३ । पत्र स० ३२ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १८८७ । वेष्टन स० ३९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५०४०. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ८० से १३९ । ले०काल स० १७२८ । अपूर्ण । वेष्टन स० ८२/५६८ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १७२८ वर्षे पौष मासे कृष्ण पक्षे पचम्या तिथौ बुधवासरे देवगढे राज्य श्री हीरसिंघराज्ये भट्ट श्री कल्याण जी सनिधाने लिखितमिद पुस्तक रामकृष्णेन वागडगच्छेन वास्तव्येन भट्ट मेवाडा ज्ञातीय ··· ··· लिखित ।

५०४१. प्रति सं० ५ । पत्र स० २४ । आ० ११×७ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

५०४२. प्रतिसं० ६ । पत्र सं० ६९ । आ० ११½×७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

५०४३ प्रतिसं० ७ । पत्रस० ३३–६९ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

५०४४. प्रतिसं० ८ । पत्र स० ५१ । आ० १०×४¾ इच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष—६१ से आगे पत्र नही है । प्रति प्राचीन है ।

५०४५. प्रतिसं० ९ । पत्र स १२ । आ० ९½ ½× ४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

५०४६. प्रतिस० १० । पत्रस० ८० । आ० ११× ५ इञ्च । ले० काल स० १८७० । पूर्ण । वेष्टन स० ५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

५०४७. प्रतिसं० ११ । पत्रस० पत्र स० १३ । आ० १३½ × ५½ इच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

५०४८. प्रति स० १२ । पत्र स० १० । आ० १०½×७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४६ । **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त मन्दिर ।

५०४९. प्रतिसं० १३ । पत्रस० ५७ । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

५०५०. **प्रतिसं० १४।** पत्रस० १२८ । आ० १२×५ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१७। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर वोरसली कोटा।

५०५१. **प्रति स० १५।** पत्र स० ४५। आ० ६½×४½ इञ्च। ले० काल स० १८६५। पूर्ण। वेष्टन स० १६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

५०५२. **प्रतिसं० १६।** पत्र स० ६४। आ० ११½ × ३½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ३१६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

५०५३. **प्रतिसं० १७।** पत्रस० २५। आ० १०½×५ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ३०७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

५०५४. **प्रतिसं० १८।** पत्रस० ३०। आ० ११½ × ६½ इञ्च। ले० काल स० १६०६ आसोज वुदी ४। पूर्ण। वेष्टन स० ३६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—कामा मे वलवन्तसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई थी।

५०५० **प्रतिसं० १९।** पत्र स० ६५। आ० १०× ५½ इञ्च। ले० काल स० १८६२ फागुण वुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० ७१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर कामा।

५०५६. **प्रति स० २०।** पत्रस० ६२। ले० काल स० १८६४। अपूर्ण। वेष्टनस० ५१६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

५०५७. **प्रति स० २१।** पत्र स० ४५। आ० ६½×४½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १६७। **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ।

५०५८ **प्रतिसं० २२।** पत्र स० १०६। आ० १०½×५½ इञ्च। ले०काल स० १८४०। पूर्ण। वेष्टन स० २०७। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

५०५९ **प्रति स० २३।** पत्रस० १८। आ० ११×४½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १२६। **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त मन्दिर।

५०६० **प्रतिसं० २४।** पत्रस० २-६५। ले०काल स० १८५। अपूर्ण। वेष्टनस० १३०। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

५०६१. **प्रतिसं० २५।** पत्र स० १५-५८। आ० १०½ × ४½ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना (वू दी)

५०६२. **प्रति स० २६।** पत्र स० ६३। आ० १० × ४ इच। ले० काल ×। अपूर्ण। वेप्टन स० ४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना (वू दी)।

५०६३ **प्रतिसं० २७।** पत्र म० १३६। ले०काल स० १७७३ पूर्ण। वेष्टन स० ४६। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १७७३ वर्षे चैत्र मासे शुभे शुक्लपक्षे तिथौ तृतीयाया ३ भृगुवासरे लिखित रूडामहात्मा गढ अ वावती मध्ये लिखाइत आतमार्थे पठनार्थ पाना १३६ श्लोक पाना १ मे १५ जी के लेखै श्लोक अक्षर वत्तीस का २००० दो हजार हुआ। लिखाई रुपया ३।।।) वाचे जीनै श्रीराम श्रीराम श्रीराम छै जी।

५०६४. प्रति स० २८। पत्रस० ४६। आ० ६½ × ४½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५४। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मंदिर।

विशेष—प्रथम वृत्ति तक है।

५०६५. प्रति स० २९। पत्र स० ९। आ० ८½×४½ इञ्च। ले० काल स० १८६०। पूर्ण। वेष्टन स० ७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)।

विशेष—विसर्ग सन्धि तक है। द्रव्यपुर (मालपुरा) मे प्रतिलिपि हुई थी।

५०६६. प्रतिसं० ३०। पत्र स० १०५। आ० ६½ × ४½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक)।

५०६७. प्रतिसं० ३१। पत्र स० ४४। आ० १० × ६ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

५०६८ प्रतिसं० ३२। पत्र स० ७५। आ० ११½ × ५ इञ्च। लेखन काल स० १६३८ पौष बुदी ऽऽ। पूर्ण। वे० स० ६५-३९। **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

प्रशस्ति—सवत् १६३८ वर्षे पौष बुदी १५ शुक्रे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे सागवाडा पुरोतमस्थाने श्री आदिनाथ चैत्यालये श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे भ० श्री सकलकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री भुवनकीर्त्ति देवा तत्पट्टे भ० श्री ज्ञानभूषणदेवास्तत्पट्टे भ० श्री विजयकीर्त्ति देवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचद्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री सुमतिकीर्त्ति देवास्त भ० श्री गुणकीर्त्ति गुरूपदेशात् स्वात्म पठनार्थं सारस्वत प्रक्रिया लिखित स्वज्ञानावर्णी क्षयार्थ स्वपठनार्थ। श्री शुभमस्तु।

५०६९ प्रतिसं० ३३। पत्र स० ९०। आ० ११ × ४ इञ्च। ले० काल स० १६९४। पूर्ण। वे० स० ३७२-१४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

५०७०. प्रतिसं० ३४। पत्रस० ३६-६७। आ० १२×६ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २५९-१०३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

५०७१. प्रतिसं० ३५। पत्र स० ६६। आ० ११×५ इच। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ९१-४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर।

५०७२ प्रतिसं० ३६। पत्र स० ५४। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—छोटी २ पाच प्रतिया और हैं।

५०७३. प्रतिसं० ३७। पत्रस० १४७। आ० ६½×४ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक।

५०७४. प्रति स० ३८। पत्र स० ८७। आ० ११× ५½ इञ्च। ले०काल स० १९३५। पूर्ण। वेष्टन स० १४५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर (राजमहल) टोंक।

विशेष—विद्वान् दिलमुखराय नृपसदन (राजमहल) मध्ये लिखित।

५०७५. प्रति स० ३९। पत्र स० ५१। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४३। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर हुण्डावालो का डीग।

विशेष—प्रथम वृत्ति तक है।

५०७६. **प्रति स० ४०** । पत्रस० ७१-१५३ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन स० ७१५ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

५०७७. **सारस्वत प्रक्रिया**— × । पत्रस० ५ । आ० ८½ × ५¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४६-१४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

५०७८. **सारस्वत प्रक्रिया**— × । पत्रस० १३ । आ० ८½×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल टोक ।

विशेष - पचसधि तक है ।

५०७९. **सारस्वत प्रक्रिया**— × । पत्रस० १० । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

५०८०. **सारस्वत प्रक्रिया वृत्ति—महीभट्टाचार्य** । पत्रस० ६७ । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

५०८१. **सारस्वत वृत्ति**— × । पत्रस० ९३ । आ० १०¾ × ४¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले० काल स० १५९५ फागुण सुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन स० ११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

विशेष—जोधपुर महादुर्गे राय श्री मालदेव विजयराज्ये ।

५०८२. **सारस्वत व्याकरण**— × । पत्र स० २० । आ० ११½ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८०-४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—शब्द एव धातुओ के रूप हैं ।

५०८३. **सारस्वत व्याकरण दीपिका—भट्टारक चन्द्रकीर्ति सूरि** । पत्र स० १२८ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले०काल सं० १७१० भादवा बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ३४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५०८४ **प्रतिसं० २** । पत्र स० ५३ । आ० ११×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५०८५. **सारस्वत व्याकरण पच सधि—अनुभूति स्वरूपाचार्य** । पत्रस० ९ । आ० १०×४¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५०८६. **सारस्वत वृत्ति—नरेन्द्रपुरी** । पत्र सख्या ७० । आ० ११×४¾ इच । भाषा—सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ३९८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५०८७. सारस्वत सूत्र— × । पत्रस० ७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले०काल स० १७२० । पूर्ण । वेष्टन स० १६१/५६५ । **प्राप्ति स्थान—** समवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

अन्तिम पुष्पिका इस प्रकार है—इति श्री भारतीकृत सारस्वत सूत्र पाठ सपूर्णम् ।

प्रशस्ति—सवत् १७२० वर्षे पौष सुदी ४ बुधे श्री कोटनगरे आदीश्वरचैत्यालये श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भ० श्री देवेन्द्रकीर्तिदेवा तदाम्नाये आचार्य श्री कल्याणकीर्ति तत्शिष्य ब्र० तेजपालेन स्वहस्तेन सूत्र पाठो लिखित ।

५०८८ सारस्वत सूत्र—अनुभूतिस्वरूपाचार्य । पत्रस० ५ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—स स्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३० । **प्राप्ति स्थान—** भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५०८९. प्रति स ० २ । पत्रस० ३ । ले० काल स० १८८३ । पूर्ण । वेष्टन स० २३१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५०९०. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १६ । आ० १२½×६½ इञ्च । ले०काल स० ४९-१८५ । वेष्टन स० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

५०९१. सारस्वत सूत्र— × । पत्रस० ११ ।आ० ९¼×४¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११०१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

५०९२. प्रति स० २ । पत्रस० ६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—स स्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५०९३. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ३९ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

५०९४ प्रतिस० ४ । पत्र स० ३८ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

विशेष—३८ से आगे पत्र नही है ।

५०९५. सारस्वत सूत्र पाठ— × । पत्र स० ४ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल स० १६६१ । वेष्टन स० ६१९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—सवत् १६६१ वर्षे भाद्रपद सुदि १० दिने लिखित आकोला मध्ये चेला कल्याण लिखित ।

५०९६. सिद्धात कौमुदी— × । पत्र स० १३५ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५०९७. प्रति स० २ । पत्रस० १८२ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४१८, १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५०६८. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १४ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल स० १५५० । पूर्ण । वेष्टन स० ४३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

प्रशस्ति—स० १५५० वर्षे आश्वनि मासे शुक्लपक्षे त्रयोदश्या तिथौ रविवासरे **घरी** ४६३ भाद्रपदे नक्षत्रे **घरी** ४० व्याघात योगे **घरी** १७ दिनहुरावलय लिखित श्री सिरोही नगरे राउ श्री जगमाल विजय राज्ये पूर्णिमापथे कच्छोलीवालगच्छे **यशस्ययाम** श्रीसर्वाणदसूरिस्तत्पट्टे भ० श्री गुणसागरसूरिस्तत्पट्टे श्री विजयमलसूरीणा शिष्य मुनि लक्ष्मीतिलक लिखित ।

५०६६. सिद्धात कौमुदी (कृतन्द आदि)— × । पत्रस० १–६ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

५१००. सिद्धातचन्द्रिका—रामचन्द्राश्रम । पत्रस० ५६ । आ० ११$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६६४ । **प्राप्ति स्थान**—ट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५१०१. प्रतिसं० २ । पत्र स० ८६ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १८२८ द्वितीय आषाढ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० ६७७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५१०२. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ६८ । आ० १०×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १८८४ । पूर्ण । वेष्टन स० २६५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५१०३. प्रति स० ४ । पत्रस० १२८ । आ० १०×५ इ च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३६३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५१०४. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ५६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १८४७ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १००६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५१०५. प्रति स० ६ । पत्र स० ६४ । आ० ११$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १७८४ मगसिर सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० १३१८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५१०६ प्रति स० ७ । पत्र स० ६० । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स ० ५२/३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

५१०७ प्रति स० ८ । पत्र स० ६६ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १८८५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५१ २५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—मुनि रत्नचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

५१०८. प्रतिस० ६ । पत्र स० ४५ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १८८१ । पूर्ण । वेष्टन स० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

५१०९. प्रतिसं० १० । पत्र स० ६१ । आ० १०×५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २२८ । **प्राप्ति स्थान** - पार्श्वनाथ दि० जैन मदिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—सिद्धान्तचन्द्रिका की तत्वदीपिका नामा व्याख्या है ।

५११० प्रति स० ११ । पत्रस० १०२ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना (बू दी)

विशेष—१०२ से आगे के पत्र नही है।

५१११. प्रतिसं० १२ । पत्र स० ६१ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल स० १७६६ मगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० २६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

५११२. प्रतिसं० १३ । पत्रस० ३६ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

५११३. प्रति स० १४ । पत्रस० २-६० । आ० ११×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

५११४. प्रतिसं० १५ । पत्रस० ७२ । आ० १३×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

५११५ प्रति स० १६ । पत्रस० ११५ । आ० ११×४½ इच । ले० काल स० १८६१ वैशाख सुदी । पूर्ण । वेष्टनस० २५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५११६. प्रति स० १७ । पत्रस० ५० । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन स० २६१ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५११७. सिद्धांतचन्द्रिका—× । पत्र स० २५ । आ०८½×३ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५३१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५११८ प्रति स० २ । पत्रस० ५५ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १५५२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५११९. प्रति स० ३ । पत्र स० ७२ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५१२०. प्रति सं० ४ । पत्रस० ४३ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १५६५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५१२१. सिद्धान्तचन्द्रिका × । पत्र स० २२ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

५१२२. सिद्धान्त चंद्रिका— × । पत्र स० २७ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २५०-१०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५१२३. सिद्धान्त चन्द्रिका—× । पत्रस० ८ । आ० १२½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल । पूर्ण । वेष्टनस० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

५१२४. सिद्धान्त चन्द्रिका × । पत्र स० ४६ । आ० ११½×५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१८ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५१२५. सिद्धान्त चन्द्रिका टीका—सदानद । पत्रस० १५२ । ग्रा० ६½ × ४½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल- × । ले० काल स० १८७२ माह सुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० ३२८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

५१२६ प्रतिस० २ । पत्रस० ६ । ग्रा० १०½ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १८६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मदिर दवलाना बू दी ।

५१२७. सिद्धान्त चन्द्रिका टीका—× । पत्र स० ११३ । ग्रा० १२ × ६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विपय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल स० १८७५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बू दी ।

५१२८. सिद्धान्तचन्द्रिका टीका-हर्षकीर्ति । पत्रस० १०७ । ग्रा० १० × ४½ इच । भापा —सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

५१२६. सिद्धहेम शब्दानुशासन—हेमचन्द्राचार्य । पत्रस० १६ । ग्रा० १०½×४½ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल स० १६१५ । पूर्ण । वेष्टन स० २१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ग्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति पत्र १५ पक्ति तथा प्रतिपक्ति ६० ग्रक्षर । ग्रक्षर सूक्ष्म एव सुन्दर है ।

प्रशस्ति—निम्न प्रकार हैं—

सवत् १६१५ वर्षे भाद्रपद सुदी १ शनौ श्रीमूलसघे भ० श्री शुभचन्द्रदेवा तत् शिष्योपाध्याय श्री सकल भूपणाय पठनार्थं । इल प्राकार वास्तव्य हु वड ज्ञातीय गगाउग्रा गोत्रे डोभाडा कर्मसी भार्या पूननिसु सा० मेघराज भार्या पाची ताभ्या दत्त मिद शास्त्र ।

५१३०. सिद्धहेमशब्दानुशासन स्वोपज्ञ वृति—हेमचन्द्राचार्य । पत्र स० ७१ । ग्रा० ६×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—व्याकरण र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

५१३१ प्रतिसं० २ । पत्रस० १४ । ग्रा० १२×४ इञ्च । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टनस० ३११/५६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

५१३२. सुबोधिका—× । पत्रस० ४ से १५४ । ग्रा० १०×५ इञ्च । भापा—सस्कृत । विपय व्याकरण । र०काल × । ले०काल स० १६४८ ज्येष्ठ सुदी १३ । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० १३३८ । **प्राप्तिस्थान**- भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

५१३३. सूत्रसार—लक्ष्मणसिंह । पत्रस० २५ । ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४३१ । **प्राप्तिस्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

५१३४. सस्कृत मजरी — × । पत्रस० ६ । ग्रा० १०½×५ इञ्च । भापा-सस्कृत । विषय- व्याकरण । र०काल × । ले० काल स० १८२० ज्येष्ट बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० ३०४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—केशरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

विषय--कोश

५१३५. अनेकार्थध्वनि मजरि—क्षपणक पत्रस० १० । आ० ६३/४×४ । भाषा-सस्कृत । विषय—कोश । र०काल × । ले०काल स० १८५६ फागुन सुदी १४ । वेष्टन स० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूदी ।

५१३६. अनेकार्थध्वनि मजरी—× । पत्र स० २७ । आ० ६×६३/४ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय—कोश । र० काल × । ले०काल स० १६०४ । पूर्ण । वेष्टन स० १८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

५१३७. अनेकार्थध्वनि मजरी—× । पत्र स० ८ । आ० ६×४ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५१३८. अनेकार्थध्वनि मजरी—× । पत्र स० १५ । आ० ११×५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कोप । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

५१३९. अनेकार्थ नाममाला भ० हर्षकीर्ति । । पत्रस० ५६ । आ० ६× ४ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कोश । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २२५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष—दाहिने ओर के पत्र फटे हुये हैं ।

५१४०. अनेकार्थ नाममाला— × । पत्र स० १३ । आ० ११×५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कोप । र०काल × । ले०काल स० १६४१ । पूर्ण । वेष्टन स० २४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६४१ वर्षे वैशाख सुदी ५ गुरौ श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे भ० सुमतिकीर्त्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री गुणकीर्ति गुरुपदेशात् भट्टारक श्री ५ पद्मनदि तत् शिष्य ब्रह्म कल्याण पठनार्थ ।

५१४१. अनेकार्थ मजरी—जिनदास × पत्र स० १० । आ० ८×४ इन्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कोश । र०काल × । ले० काल स० १८७६ सावन बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १३०१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

५१४२. प्रतिसं० २ । पत्रस० १० । आ० १३×४ इच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

विशेष—प्रारम्भ

तुव प्रभु जोति जगत मे कारन करन अभेव ।
विघ्न हरन सव सुख करन नमो नमो तिहिदेव ।

एकै वस्त अनेक है जगमगाति जग धाम।
जिम कचन तै किंकनी ककन कु डल दाम ।।२।।
उचरि सकै न सस्कृत श्री समझ न समरथ।
तिन हित एद सुमति भाख अनेक अरथ ।।

अन्तिम—इति श्री अनेकार्थ मजरी नाम भा० नद कृत।

५१४३. अनेकार्थ मजरी—× । पत्रस० २१ । आ० ८½×४ इञ्च । भाषा-स स्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

५१४४. अनेकार्थ मजरी—× । पत्रस० १५ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा—स स्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले०काल स० १७८४ माह सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० २७३ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

५१४५. अनेकार्थ शब्द मजरी । पत्र स० ४ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६०।६२१ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मदिर उदयपुर ।

५१४६. अभिधान चिंतामणि नाममाला—हेमचन्द्राचार्य । पत्र स० ५१ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-स स्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

५१४७. प्रति स० २ । पत्र स० १८० । आ० ६½×४½ इञ्च । ले० काल स० १६५१ । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—इसे हेमीनाम माला भी कहते है । प्रति स्वोपज्ञ टीका सहित है प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स वत् १६५१ वर्षे माघ सुदी ६ चन्द्रवासरे लिखित मुनि श्री कृष्णदास । मुनि श्री वर्द्धमान लिखित श्री अणिहिल्लपुरपत्तनमध्ये लिखित । भद्र भवतु सामत्तपागच्छे उपाध्याय श्री ७ शातिचन्द्र लिखापित ।

५१४८. प्रति स० ३ । पत्र स० ५७ । आ० १२×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६३-३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

विशेष—कठिन शब्दो के अर्थ दिये हुये है ।

५१४९. प्रति स० ४ । पत्रस० १३७ । आ० १०½×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—दूसरा पत्र नही है । जोशी गणेशदास के पुत्र तुलसीदास ने नागपुर मे प्रपिलिपि की थी । प्रति सटीक है ।

५१५० प्रतिसं० ५ । पत्रस० ११-१६२ । आ०६½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २१०।६४ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

विशेष—सारोद्धार नाम की टीका वाचनाचार्य वादी श्री वल्लभ गणि की है जिसको स० १६६७ मे लिखा गया था ।

५१५१. प्रतिस० ६ । पत्रस० ११ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६४ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

५१५२. अभिधासनार सग्रह—× । पत्र स० ६४ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । र०काल × । ले०काल स० १६४० माघ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

५१५३. अमरकोश—अमरसिंह । पत्र स० ११ । आ० ११½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० १३३० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—इस मन्दिर मे अमरकोश की ६ प्रतिया और है ।

५१५४. प्रति स० २ । पत्रस० १६५ । आ० १०×४ इच । ले०काल स० १७२१ । पूर्ण । वेष्टन स० १६२६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति सटीक है ।

५१५५. प्रति सं० ३ । पत्रस० १८७ । ले०काल । अपूर्ण । वेष्टन स० १६३० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति सटीक है ।

५१५६. प्रति स० ४ । पत्र स० १७४ । आ० ९×६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२६-९१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

विशेष—ज्योतिषसार ग्रन्थ और है जिसका वे० स० २३०-९२ है पत्र स० भी इसी मे है ।

५१५७. प्रति स० ५ । पत्र स० ७७ । आ० १०×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

५१५८. प्रति स० ६ । पत्रस० २-६० । आ० ८×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १५१-६८ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डू गरपुर ।

५१५९. प्रतिसं० ७ । पत्र स० १० । आ० ११× ४ इञ्च । ले० काल स० १८४३ माघ बुदी ५ । अपूर्ण । वेष्टन स० २०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

५१६०. प्रतिसं० ८ । पत्र स० २-१४ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

५१६१. प्रति सं० ९ । पत्र स० ९८ । आ० ११×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

५१६२. प्रति सं० १० । पत्र स० ४२ । आ० ९×५½ इञ्च ।ले० काल × । दूसरे काड तक पूर्ण । वेष्टन स० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन पचायती मन्दिर कामा ।

५१६३ प्रतिस० ११ । पत्र स० ३३ । आ० ८ × ४½ इञ्च । ले०काल स० १८२३ । पूर्ण । वेष्टनस० ९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

५१६४ प्रति स० १२ । पत्र स० १५ । ले०काल × । पूर्ण ।वेष्टन स० ४६८ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

५१६५. प्रति स० १३ । पत्र स० ५१ । आ० ११×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर अलवर ।

विशेष—सागारधर्मामृत पत्र ३६ अपूर्ण तथा दर्शन पाठ पत्र २४ इसके साथ और है ।

५१६६. प्रति सं० १४ । पत्र स० ३-६६ । आ० ६½×४½ इञ्च । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन स० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर ।

५१६७. प्रतिसं० १५ । पत्रस० ६२ । आ० १०½ ×५½ इञ्च । ले०काल स० १८५० चैत वुदी १४ । पूर्ण वे० स० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

५१६८. प्रतिसं० १६ । पत्रस० २६ । आ० १०½× ५ इञ्च । ले०काल स० १८६६ ज्येष्ठ वुदी २ । पूर्ण ।वेष्टनस० १६२ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

विशेष—केवल प्रथम काण्ड ही है ।

५१६९. प्रति स० १७ । पत्र स० ४३-८३ । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी) ।

५१७० प्रतिसं० १८ । पत्र स० १०३ । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १७५ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी)

विशेष—इस मन्दिर मे २ प्रतिया और हैं ।

५१७१. प्रति स० १९ । पत्रस० २७ । आ० ९×५½ इञ्च । ले०काल स० १८७६ । पूर्ण । वेष्टनस० १०१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटयो का नैणवा ।

५१७२. प्रतिसं० २० । पत्र स० ११-३४ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

५१७३ प्रतिसं० २१ । पत्रस० ८६ । आ० १०×६½ इञ्च । ले०काल स० १९६६ । पूर्ण । वेष्टन स० १८३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

विशेष—प० सेवाराम ने श्रावक गुमानीराम रावका से सवाई माधोपुर मे प्रतिलिपि करवाई थी ।

५१७४. प्रति स० २२ । पत्र स० ३२ । आ० ११×६ इञ्च । ले० काल स० १९३७ । पूर्ण । वेष्टन स० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी बूदी ।

५१७५. प्रति स० २३ । पत्र स० ३०-८५ । आ० ९×६ इञ्च । ले० काल स० १८६६ । अपूर्ण । वेष्टन स० २९५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

विशेष—बूदी मे प्रतिलिपि हुई थी ।

५१७६. प्रतिसं० २४ । पत्रस० १६५ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

५१७७. प्रतिसं० २५ । पत्र स० २३ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले० काल स० १८७३ । वेष्टन स० २२१ । प्रथम काण्ड तक । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—जयपुर मे प्रतिलिपि की गई थी । इस मन्दिर मे ८ प्रतिया और हैं ।

५१७८. प्रति स० २६ । पत्र स० १३० । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल स० १८४४ चैत्र बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० २२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—जयपुर मे लश्कर के मन्दिर मे पडित केशरीसिंह ने अपने शिष्य लालचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

५१७६. प्रतिसं० २७ । पत्रस० १६६ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

प्रति टीका सहित है ।

५१८०. प्रतिसं० २८ । पत्र स० ६० । आ० १२×५ इच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—द्वितीय खण्ड मे है । टीका सहित है ।

५१८१ प्रति स० २६ । पत्रस० स० १६ । आ० १२½×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

५१८२. उद्धारकोश—दक्षिणामूर्ति मुनि । पत्रस० १८ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कोष । र०काल × । ले०काल स० १८३७ । पूर्ण । वेष्टनस० ५४६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—इति दक्षिणामूर्त्ति मुनिना विरचिते उद्धारकोशे सकलागमसूरि दशदेवी सप्तकुमार नवग्रह शिष्यदेविव्यान निर्णयो नामसप्तमकल्प ।

५१८३. एकाक्षरी नाममाला— × । पत्र स० २ । आ० ६¾×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कोश । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ११६० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—दूसरा पत्र फटा हुआ है ।

५१८४. प्रति स० २ । पत्रस० २ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल स० १६७१ । पूर्ण । वेष्टन स० २०८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५१८५ प्रति स० ३ । पत्र स० २ । आ० १०½×५ इच । ले०काल स० १६८१ । वेष्टन स० ३०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—सागानेर मे प्रतिलिपि की गयी थो ।

५१८६. प्रति स० ४ । पत्र स० २ । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

५१८७. एकाक्षर नाममालिका—विश्वशभु । पत्र स० ४ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कोश । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ३०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५१८८. प्रति स० २ । पत्रस० ६ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५१८९. प्रति स० ३ । पत्रस० ७ । ग्रा० १०½×५ इञ्च । ले०काल १८५५ ज्येष्ठ बुदी ८ । वेष्टन स० ३०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५१९०. एकाक्षरनामा— × । पत्रस० ६ । ग्रा० १३½×६ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–कोश । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११५/११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

५१९१. त्रिकाण्ड कोश—पुरुषोत्तमदेव । पत्रस० ४६ । ग्रा० १०½×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय–कोश । र०काल × । ले०काल × । वेष्टनस० ३०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५१९२. धनंजयनाममाला—कवि धनजय । पत्र स० १३ । ग्रा० ९×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कोश । र०काल × । ले० काल स० १८०९। पूर्ण । वेष्टन स० १४५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५१९३. प्रति स० २ । पत्रस० १६ । ग्रा० ११×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १६२८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

५१९४. प्रति स० ३ । पत्र स० १५ । ग्रा० १०×५½ इञ्च । ले०काल स० १८५१ पौष वुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० १९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ ।

५१९५. प्रति स० ४ । पत्र स० ३–१९ । ग्रा० ७×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६४–१४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

५१९६. प्रति स० ५ । पत्रस० २४ । ग्रा० १३×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २६८–१०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डू गरपुर ।

५१९७ प्रति स० ६ । पत्रस० १३ । ग्रा० १०×५ इञ्च । ले०काल स० १८४४ । पूर्ण । वेष्टनस० ८४–४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

प्रशस्ति—स० १८४४ का मासोत्तमे मासे शुक्लपक्षे तिथौ ७ भोमवासरे लिपीकृत तुलाराम । शुभ भवतु पठनार्थ पडित सेवकराम शुभ भवतु ।

५१९८ प्रति स० ७ । पत्रस० १८ । ग्रा० १० × ४½ इञ्च । ले० काल स० १६४६ । पूर्ण । वेष्टनस० २३७–९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

प्रशस्ति—सवत् १६४६ वर्षे चैत्र सुदि २ गुरु श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० रत्नकीर्ति देवा त० मडलाचार्य भ० श्री जशकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री गुणचन्द्र राजे तत्पट्टे मडलाचार्य श्री जिनचन्द्र गुरुपदेशात् सागवाडा नगरे हु बड ज्ञातीय भागलीया व० सिंघ जी ।

५१९९. प्रति स० ८ । पत्र स० २० । ग्रा० ११×४ इञ्च । ले० काल स० १५८७ ग्रासोज वुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० २४८। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

५२००. प्रति स० ९ । पत्रस० १५ । ग्रा० ९½× ६ इञ्च । ले०काल स० १८१४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३९ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

५२०१. प्रलि स० १० । पत्र स० १ से ४६ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २३ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन पचायती मन्दिर डीग ।

५२०२. प्रतिसं० ११ । पत्रस० ११ । आ० १२½×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७ । **प्राप्ति स्थान**— छोटा दि० जैन मदिर बयाना ।

५२०३. प्रतिसं० १२ । पत्रस० १३ । आ० १०½× ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८ । **प्राप्तिस्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

५२०४. प्रति सं० १३ । पत्र स० २४-३३ । आ० १२½×६ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर कामा ।

५२०५. प्रति सं० १४ । पत्र सख्या १३ । आ० १२×५½ । ले०काल × । वेष्टन स० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

५२०६. प्रतिसं० १५ । पत्र स० १० । आ० ६½×५½ इञ्च । ले० काल स० १७६६ । वेष्टन स० २१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५२०७. प्रतिसं० १६ । पत्रस० १५ । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल स० १६१६ आसोज सुदी ७ । वेष्टन स० २१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प० डूगर द्वार प्रतिलिपि की गई थी । सम्वत् १६१६ वर्षे आश्विन सुदी सप्तम्या लिखित प० डूगरेग ।

५२०८. प्रति स० १७ । पत्र स० १७ । आ० ६×४½ इञ्च । ले०काल स० १८१४ । पूर्ण । वेष्टनस० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी) ।

५२०९. प्रतिसं० १८ । पत्र स० १६ । आ० ६½ × ५ इञ्च । ले० काल स० १८७५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना बूदी ।

५२१०. प्रतिसं० १९ । पत्र स० १८ । आ० १० × ४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

विशेष—मालपुरा मे लिखा गया था ।

५२११. प्रतिसं० २० । पत्रस० १५ । आ० १०½× ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूदी ।

५२१२. प्रति स० २१ । पत्र स० १७ । आ० ६½×४ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

५२१३. प्रतिसं० २२ । पत्रस० ४६-१०१ । आ० १०½×४ इञ्च । ले०काल स० १७५० श्रावण बुदी ११ । अपूर्ण । वेष्टन स० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ बूदी ।

५२१४. प्रतिसं० २३ । पत्र स० १२ । आ० ६×४ इञ्च । ले०काल स० १७३७ । पूर्ण । वेष्टनस० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूदी ।

विशेष—स० १७३७ वर्षे मासोत्तममासो पोपमासे कृष्णपक्षे सप्तमी तिथौ पुनाली ग्रामे मुनि सुगरण हर्षं पठन कृते । विद्या हर्षेण लेखिता ।

५२१५ प्रतिसं० २४ । पत्र स० ६ । आ० ११ × ४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

५२१६ प्रतिसं० २५ । पत्र स० १३ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ५०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

५२१७ प्रतिस० २६ । पत्र स० ५७ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३२३ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

५२१८. नाममाला—नन्ददास । पत्र स० ३० । भापा—हिन्दी । विपय—कोश । र०काल × । लेखन काल स० १८४८ । पूर्ण । वेप्टन स० ४६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

५२१९. नाममाला—हरिदत्त । पत्र स० ३ । आ० १०½×५½ इञ्च । भापा-सस्कृत । विषय—कोश । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ कोटा ।

५२२०. नाममाला—बनारसीदास । पत्रस० ६ । आ० १२×५½ इ च । भापा—हिन्दी पद्य । विपय—कोश । र०काल स० १६७० आसोज सुदी १० । ले० काल स० १८६१ प्र० चैत वुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

५२२१ प्रतिसं० २ । पत्रस० १२ । आ० १०×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन सं० ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा ।

विशेष—नाममाला तक पूर्ण है तथा अनेकार्थ माला अपूर्ण है ।

५२२२. नामरत्नाकर— × । पत्रस० ६१ । आ० ६×४½ इञ्च । भापा—हिन्दी । विपय–कोश । र०काल स० १७८६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६७८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५२२३ नामलिंगानुशासन—आ० हेमचन्द्र । पत्र स० ८६ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विपय-कोश । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८४४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५२२४. प्रति सं २ । पत्रस० १२० । आ० १०½× ४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३९२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५२२५ नामलिंगानुशासन वृत्ति— × । पत्र स० १३ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-सास्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

५२२६. नामलिंगानुशासन—अमरसिंह । पत्र स० १४४ । आ० १२×५ इ च । भाषा—सस्कृत । विषय—कोप । र०काल × । ले०काल स० १८०५ आसोज सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—कालाडेहरा मे साह दौलतराम ने श्री अनन्तकीर्ति के शिष्य उदयराम को भेंट मे दी थी ।

५२२७. प्रतिस० २ । पत्रस० ११४ । आ० ६× ४ इञ्च । ले०काल स० १८२७ वैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० १४५२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—तृतीय खड तक है।

५२२८. पाणिनीयलिंगानुशासन वृत्ति— × । पत्रस० १६ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा –सस्कृत । विषय—कोश । र०काल × । ले० काल स० १६६ । पूर्ण । वेष्टन स० २७१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५२२९. मान मजरी—नन्ददास । पत्रस० २० । आ० ९×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कोष । र०काल × । ले० काल स० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

५२३०. लिंगानुशासन (शब्द संकीर्ण स्वरूप)—धनंजय । पत्र स० २३ । भाषा-सस्कृत । विषय-कोष । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८०/५९८ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—इति श्री धनजयस्य कृतौ निघटमये शब्दसकीर्णस्वरूपे निरुपणो द्वितीय परिच्छेद समाप्त । मु० श्री कल्याण कीर्तिमिद पुस्तक ।

प्रति प्राचीन है ।

५२३१. लिंगानुसारोद्धार— × । पत्र स० १० । भाषा-सस्कृत । विषय—कोश । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८१/५९४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । लिपि सूक्ष्म है । प० सूरचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी । स० तेजपाल की पुस्तक है ।

५२३२. वचन कोश—बुलाकीदास । पत्र स० २५२ । आ० १५½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—कोश । र० काल स० १७३७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूंदी ।

५२३३ प्रति स० २ । पत्र स० २८२ । आ० ९×५½ इञ्च । ले०काल स १८५६ । पूर्ण । वेष्टन स० २७९ १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५२३४. वैदिक प्रयोग— × । पत्र स० ९ । आ० ९ × ४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । र०काल × । ले० काल स० १५५७ आषाढ बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ११७ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

विशेष—प० जेमा लिखित ।

५२३५. शब्दकोश—धर्मदास । पत्रस० ६ । आ० ९½×६½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-कोश । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—प्रारम्भ—

सिद्धौपधानि भवदु खमहागदाना,
पुण्यात्मना परमकर्णरसायनानि ।
प्रक्षालनैक सलिलानि मनोमलाना,
सिद्धोदने प्रवचनानि चिर जयन्ति ॥१॥

५२३६. शब्दानुशासनवृत्ति— × । पत्रस० ५७ । आ० ११$\frac{३}{४}$ × ३$\frac{१}{२}$ इञ्च । भापा-प्राकृत-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन स० २११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

५२३७. शारदीयनाममाला—हर्षकीर्ति । पत्र स २५ । आ० १० × ४ इञ्च । भापा-सस्कृत । विपय-कोश । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स १३५४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५२३८. सिद्धातरस शब्दानुशासन— × । पत्रस० ३७ । आ० १०$\frac{१}{२}$ × ४$\frac{१}{२}$ इञ्च । भापा-सस्कृत । विषय—कोश । र०काल × । ले० काल स० १८८४ वैशाख वुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६४० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५२३९. हेमीनाममाला—हेमचन्द्राचार्य । पत्र स० २-४१ । आ० १०$\frac{१}{२}$ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी) ।

विषय--ज्योतिष, शकुन एवं निमित्त शास्त्र

५२४० अरहत केवली पाशा— × । पत्रस० ६ । ग्रा० ६ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । र० काल × । ले०काल स० १६७६ माघ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० १८८ । **प्राप्ति सान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

५२४१. अरहत केवली पाशा— × । पत्र स० ४१ । ग्रा० ८ × ६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । र०काल × । ले० काल स० १६१७ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बू दी ।

५२४२. अरिष्टाध्याय— × । पत्रस० ७ । ग्रा० ११½×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले०काल × । वेष्टनस० १३४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५२४३. अष्टोत्तरीदशाकरण— × । पत्रस० ४ । ग्रा० ११¼ × ५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११२८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५२४४. अहर्गण विधि— × । पत्र स० २ । ग्रा० ११ × ५¼ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

५२४५. अ गस्पर्शन— × । पत्रस० १ । ग्रा० ६½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले०काल स० १८१६ । वेष्टन स० ३३१ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५२४६. अ गविद्या— × । पत्रस० १ । ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ३२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

५२४७. अ तरदशावर्णन— × । पत्रस० १०-१५ । ग्रा० १०×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेप्टन स० २५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

५२४८. आशाधर ज्योतिर्ग्र थ—आशाधर । पत्र स० २ । ग्रा० १२ × ४ इञ्च । भाषा-स स्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६४/५५२ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—अन्तिम भाग निम्न प्रकार हैं ।

आसीदृष्टि सनिहितादिवासी, श्रीमुद्गलो ब्रह्मविदावरीष्ट. ।
तस्यान्वयो वेद विदावरीष्ट श्रीमानुनामारविवत् प्रसिद्ध ।।१६।।
तस्योत्पन्नप्रथमतनयो विष्णुणामा मनीषी ।
वेदे शास्त्रे प्रतिहतमतिस्तस्य पुत्रो वभूव ।

श्रीवत्साख्यो घनपतिरसौ कल्पवृक्षोपमान ।
तस्यैकोभूत प्रवरतनयो रोहिताख्यासुविद्वान् ॥१७॥
तस्याद्यसूनुर्गणकाब्जभानुराशाधरो विष्णुपदावुरक्तः ।
सदोत्तमाग कुरुते सचेद चकार दैवज्ञ हिताय शास्त्र ॥

इत्याशाधरोज्योतिर्ग्रंथ समाप्त ।

५२४९. कष्ट विचार— × । पत्रस० २ । ग्रा० ११½ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—जिस वार को बीमार पडे उसका विचार दिया हुआ है ।

५२५०. कालज्ञान— × । पत्र स० १६ । ग्रा० १०×७ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल टोक ।

विशेष—प्रति सटीक है ।

५२५१. कुतूहलरत्नावली—कल्याण । पत्र स० ६ । ग्रा० १२×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१३/६५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

५२५२ केशवी पद्धति—श्री केशव दैवज्ञ । पत्र स० ५२ । ग्रा० ६½ × ५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०३ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा ।

५२५३. प्रतिस० २ । पत्रस० ६ । ग्रा० ६½ × ५ इञ्च । ले०काल स० १८७८ चैत बुदि ६ । पूर्ण । वेष्टन स० २०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

केवल प्रथम सर्ग है ।

५२५४ कोणसूची— × । पत्रस० २ । ग्रा० १२×४ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १९९/५५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

५२५५ गणपति मुहूर्त—रावल गणपति । पत्रस० १०७ । ग्रा० ११×५¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल स० १८५१ आषाढ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

५२५६ गणितनाममाला—हरिदास । पत्रस० ७ । ग्रा० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष—सूर्यग्रह अधिकार तक है ।

५२५७ गर्ग मनोरमा—गर्गऋषि । पत्रस० ८ । ग्रा० ९ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५२५८ **गर्भचक्रवृत**— × । पत्रस० १४ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३२ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

५२५९. **गुणघटित विचार**— × । पत्र स० ६ । आ० ११× ५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

५२६० **गौतम पृच्छा** — × । पत्र स० १० । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । रचना काल × । ले० काल स० १७८० । पूर्ण । वेष्टन स० ५०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

५२६१. **ग्रहपचवर्णन**— × । पत्रस० २ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूंदी)

५२६२. **ग्रहभाव प्रकाश**— × । पत्र स० ५ । आ० १३½ × ५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १९८/५५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सम्भवनाथ मदिर उदयपुर ।

५२६३. **ग्रहराशिफल**— × । पत्र स० २ । भाषा संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल स० १७६६ । पूर्ण । वेष्टन स० १९५, ५५३ । **प्राप्ति स्थान**—सम्भवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर ।

५२६४. **ग्रहलाघव—गणेशदैवज्ञ** । पत्र स० २१ । आ० १० × ४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय–ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६६३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५२६५ **प्रतिसं० २** । पत्र स० १३ । ले० काल स० १८३० । पूर्ण । वेष्टन स० २७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—पुस्तक डूगरसी की है । एक प्रति अपूर्ण और है ।

५२६६. **ग्रहलाघव– देवदत्त (केशव आत्मज)** । पत्र स० १३ । आ० ९¼×४¼ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १९८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ ।

५२६७. **ग्रहलाघव**— × । पत्रस० १६ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

५२६८. **प्रति स० २**— × । पत्र स० ३ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले० काल × । वेष्टनस० ६८४ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५२६९ **ग्रहणविचार**— × । पत्र स० २ । आ० ११½×५½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । वेष्टनस० ६८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५२७० **चमत्कार चिंतामणी—नारायण** । पत्र स० ११ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०६६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५२७१ **प्रति स० २** । पत्रस० ६ । आ० ६×४ इञ्च । ले० काल स० १८३४ मगसिर सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० १११७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—अजयगढ मे प० गोपालदास ने प्रतिलिपि की थी ।

५२७२. **चमत्कार चिन्तामणि — ×** । पत्रस० ११ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ३२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५२७३ **प्रति स० २** । पत्रस० ६ । आ० ६×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५२७४. **चमत्कारफल— ×** । पत्रस० ६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बू दी)

विशेष—विभिन्न राशियो का फल दिया हुआ है ।

५२७५ **चन्द्रावलोक— ×** । पत्र स० १२ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र० काल × । ले० काल स० १८८६ कार्त्तिक बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० १४०२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५२७६. **प्रति स० २** । पत्रस० १-११ । आ० ११½×६ इञ्च । ले० काल × । वेष्टनस० ७०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

५२७७. **चन्द्रावलोक टीका—विश्वेसर अपरनाम गगाभट्ट** । पत्र स० १३० । भाषा—सस्कृत । विषय-ज्योतिप । र० काल × । ले० काल स० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन स० ७६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—बलवन्तसिंह के राज्य मे प्रतिलिपि हुई थी ।

५२७८. **चन्द्रोदय विचार— ×** । पत्रस० १-२७ । आ० ६½×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

५२७९ **चौघडिया निकालने की विधि— ×** । पत्रस० ४ । आ० १०×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

५२८०. **छींक दोष निवारक विधि— ×** । पत्र स० १ । । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

५२८१. जन्मकुण्डली— × । पत्र स० ७। आ० १०×५½ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–ज्योतिष। र० काल–×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३६४-१४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर।

५२८२. जन्मकुण्डली ग्रह विचार— ×। पत्र स १। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३६। **प्राप्ति स्थान**—खडेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

५२८३. जन्म जातक चिन्ह— ×। पत्र स० ६। आ० ७½×६इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल स० १६४६। पूर्ण। वेष्टन स० ३००। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, चौगान बू दी।

विशेष—सागवाडा का ग्राम सुदारा मे प्रतिलिपि हुई थी।

५२८४. जन्मपत्री पद्धति— ×। पत्रस० ४८। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ८७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बू दी।

विशेष—दयाचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

५२८५. जन्मपत्री पद्धति— ×। पत्रस० १०। आ० १०×४½ इच। भाषा—सस्कृत। विषय –ज्योतिष। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा।

५२८६ जातक—नीलकठ। पत्र स० ३६। आ० १०×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २७७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी।

५२८७. जातकपद्धति—केशव दैवज्ञ। पत्र स० १६। आ० ११¾×४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय—ज्योतिष। र०काल ×। ले० काल स० १७८८ चैत सुदी ७। पूर्ण। वेष्टनस० ६७४। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५२८८. प्रति स० २। पत्रस० १४। आ० १०½×४½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलव ल मन्दिर उदयपुर।

५२८९. जातक सग्रह— ×। पत्रस० ६। आ० ६×४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—ज्योतिष। र०काल ×। ले०काल स० १६४८। पूर्ण। वेष्टन स० १४०४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५२९०. जातकाभरण—दु ढिराज दैवज्ञ। पत्र स० ८३। आ० ८½×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—ज्योतिष। र०काल ×। ले० काल स० १८६८। पूर्ण। वेष्टन स० १९८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बू दी।

विशेष—डूगरसीदास ने नेमिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी। ग्र थ का नाम जातक-माला भी है।

५२६१ प्रतिसं० २। पत्र स० ८६। आ० ११½×५½ इञ्च। ले०काल स० १७८६ मगसिर बुदी ३। पूर्ण। वेष्टन १६६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी)

५२६२ प्रतिस० ३। पत्रस० १३। आ० १२×६ इञ्च। ले०काल स० १८७८ भादवा बुदी ११। पूर्ण। वेष्टनस० ११७/५७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

५२६३ जातकालकार— ×। पत्र स० १७। आ० ६½×४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिप। र० काल ×। ले० काल स० १६०३ चैत सुदी ८। पूर्ण। वेप्टन स० १४०३। प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५२६४. प्रतिस० २। पत्र स० २०। आ० ८¾×५¾ इञ्च। ले० काल स० १६१६ सावन बुदी १। पूर्ण। वे० स० १०६६। प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

५२६५ प्रतिस० ३। पत्र स० १४। आ० ११½×५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २४१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी।

५२६६. जोग विचार— ×। पत्रस० १६। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिप। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ३६७-१४६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

५२६७ ज्ञानलावणी— ×। पत्र स० २-८। आ० १०×४ इञ्च। भाषा - सस्कृत। विषय—ज्योतिप। र० कारा ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ४५२/२६३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

५२६८. ज्ञानस्वरोदय—चरनदास। पत्र स० १६। आ० ६×४ इच। भाषा—सस्कृत। विषय—शकुन शास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेप्टन स० ४४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर आदिनाथ स्वामी, मालपुरा (टोक)

५२६६. ज्योर्तिविद्याफल—×। पत्रस० ३। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिप। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेप्टन स० १६६/५५४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

५३००. ज्योतिषग्रथ—भास्कराचार्य। पत्र स० १२। आ० १०×४ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विपय-ज्योतिप। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १६५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बू दी।

५३०१. प्रति स० २। पत्र स० ३३×२०। आ० ६½ × ४½ इञ्च। ले०काल० ×। पूर्ण। वेष्टन स० १०१-४६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

विशेष—ज्योतिपोत्पत्ति एव प्रश्नोत्पत्ति अध्याय हैं।

५३०२. ज्योतिषग्रथ— ×। पत्र स० ४। आ० १०×६½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—ज्योतिप। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेप्टन स० ३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपथी मदिर दौसा।

५३०३. ज्योतिषग्रथ— ×। पत्र स० १६। आ० ११ × ५ इच। भाषा-सस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेप्टन स० १६५। प्राप्ति स्थान-दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

५३०४. प्रतिसं० २। पत्रस० २-१०। आ० १०× ४½ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ४४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

५३०५. ज्योतिषग्रन्थ भाषा—कायस्थ नाथूराम । पत्रस० ४० । आ० १२ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । **विशेष**—ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

५३०६ ज्योतिष रत्नमाला—केशव । पत्रस० ७६ । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । **विशेष**—ज्योतिष ।र०काल × । ले०काल स० १८०६ । पूर्ण । वेष्टनस० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

५३०७. ज्योतिष रत्नमाला—श्रीपतिभट्ट । पत्रस० ८-२३ ।आ० १० × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । **विशेष**—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बू दी ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित हैं ।

५३०८. प्रति सं० २ । पत्रस० ११० । आ० ६½×४½ इच । ले०काल स० १८४७ । पूर्ण । वेष्टनस० १५५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

५३०९. प्रतिस० ३ । पत्रस० ३२ । आ० १२×४¾ इञ्च । ले० काल स० १७८६ माघ बुदी १३ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बू दी ।

५३१०. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ७४ । आ० १०½×५½ इच । ले० काल स० १८४८ ज्येष्ठ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १३१ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मदिर दबलाना (बू दी)

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

५३११ ज्योतिष रत्नमाला टीका—प० वैजा मूलकर्त्ता प० श्रीपतिभट्ट । पत्रस० ११६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय ज्योतिष । र०काल × ले०काल स० १५१६ । पूर्ण । वेष्टन स० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बू दी ।

अन्तिम पुष्पिका—ज्योतिषरत्नमालाविप्रवरा श्रीपतिमध्येय तस्यासुटीका प्रकटार्थ युक्ता दिनमिमिवाडवाणवीजागोवान्वये धान्य इति प्रसिद्धो गोत्रयभूत्राखिलशास्त्रवेत्ता सोमेश्वर च गुरु हस्तु वैजा बालावबोध सचकार टीका । इति श्री श्रीपति भट्ट विरचिताया ज्योतिष पडित वैजाकृत टीकाया प्रतिष्ट प्रकरणानि शर्त प्रकरण समाप्त ।

प्रशस्ति—सवत् १५१६ प्रवर्तमाने पट्टाद्वयोर्म मध्ये सोभन नाम सवत्सरे ॥ सवत् १६५१ वर्षे चैत सुदी प्रति पदा १ मगलवारे चपावती कोटातृ मध्ये लिखित अक्बर राज्ये लिखित पारासर गोत्रे प० खेमचद आत्मज पुत्र पठनार्थ मोहन लिखित ।

५३१२. ज्योतिष शास्त्र—हरिभद्रसूरि । पत्र स० ५६ । आ० ११½ × ५¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०६४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३१३. ज्योतिष शास्त्र—चिंतामणि पडिताचार्य । पत्र स० २६ । आ० ११ × ७ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

५३१४. ज्योतिष शास्त्र—× । पत्र स० १० । ग्रा० १० × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १२४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अजमेर ।

५३१५ ज्योतिष शास्त्र × । पत्र स० १३ । ग्रा० १०×४½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११११ । **प्राप्ति स्थान**-भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३१६ ज्योतिष शास्त्र— × । पत्रस० ६ । ग्रा० ९×४¾ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३१७. प्रति स० २ । पत्र स० १६ । ग्रा०९¾×४ इञ्च । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४३९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३१८. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ११ । ग्रा० ११×५¾ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०६१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३१९ प्रतिसं० ४ । पत्र स० १६ । ग्रा० ९½×४½ इञ्च । ले०काल स० १८३१ श्रावण सुदी ८ । वेष्टनस० ३३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

५३२०. प्रति स० ५ । पत्र स० ५ । ग्रा० ११ × ४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २९१ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर ।

५३२१. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ८ । ग्रा० १०¾×४¾ इञ्च । ले०काल स० १८८५ काती सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी) ।

विशेष—२ प्रतियो का सम्मिश्रण है । नागढ नगर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

५३२२. ज्योतिषसार—नारचन्द्र । पत्र स० ७ । ग्रा० १½ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विपय-ज्योतिप । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूदी ।

५३२३. प्रतिसं० २ । पत्र स० १४ । ग्रा० ११½ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११३१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३२४. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ७ । ग्रा० ११×५ इञ्च । ले०काल स० १८१८ । पूर्ण । वेष्टन स० २०२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

५३२५. ज्योतिष सारणी— × । पत्रस० २६ । ग्रा० १०½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विपय-ज्योतिप । र०काल × । ले० काल स० १८८५ भादवा सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनस० १२३५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३२६. ज्योतिषसार सग्रह—मुंजादित्य । पत्रस० १६ । ग्रा० ८ × ३½ इच । भाषा—सस्कृत । विषय-ज्योतिप । र० काल × । ले०काल स० १८५० आपाढ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० १४७३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३२७. ताजिकसार—हरिभद्रगरिण । पत्र स० ४० । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल स० १८५४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५३२८ प्रति सं० २ । पत्र सख्या ३२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

विशेष—दो प्रतियो का मिश्रण है ।

५३२९. ताजिक ग्र थ—नीलकठ । पत्र स० २६ । आ० ८½×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

५३३०. ताजिकालंकृति—विद्याधर । पत्रस० १२ । आ० ८ × ६ इञ्च । भाषा सम्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल स० १७६३ । पूर्ण । वेष्टन स० २८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—विद्याधर गोपाल के पुत्र थे ।

५३३१. तिथिदीपकयन्त्र— × । पत्रस० ६५ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-गरिणत (ज्योतिष) । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २३ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बू दी) ।

५३३२ तिथिसारिरणी— × । पत्र स० ११ । आ० १०¾ × ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५३३३ दिनचर्या गृहागम कुतूहल—भास्कर । पत्रस० ७ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५४८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५३३४. दिन प्रमाण— × । पत्र स० १ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ३१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५३३५. दुघडिया मुहूर्त्त— × । पत्रस० ८ । आ० ६× ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल । ले०काल स० १८६३ श्रावरण बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० २०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बू दी ।

विशेष—इति श्री शिवा लिखित दुगडयो मुहूर्त्त ।

५३३६. प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल स० १८२० श्रावरण । बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० २०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बू दी) ।

५३३७. दोषावली— × । पत्रस० २ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले०काल स० १८७३ जेठ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १७/२८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—साहीखेडा मे लिखी गई थी ।

५३३८. द्वादशराशि सक्रातिफल— × । पत्र स० ७ । ग्रा० ११ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

५३३९. द्विग्रह योगफल— × । पत्र सख्या १ । ग्रा० ११½ × ५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–ज्योतिष । र० काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५३४० नरपति जयचर्या—नरपति । पत्र स० ५३ । ग्रा० १०×५½ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल स० १५२३ चैत सुदी १४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३५९-१३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

५३४१. नक्षत्रफल— × । पत्र स० २ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । भाषा-स स्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ३१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५३४२ नारचन्द ज्योतिष—नारचन्द । पत्र स० १४ । ग्रा० १०½×४½ इञ्च । भाषा-स स्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल स० १६४७ । पूर्ण । वेष्टन स० १०६७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स वत् १३४७ वर्षे ग्रासु विदि ८ दि० प्रति लीधी । पातिसाह श्री ग्रकवर विजइराजे । मेडता मध्ये महाराजि श्री वलिभद्र जी विजइराज्ये ।

५३४३. प्रतिस०२ । पत्र स० ३ । ग्रा० १०× ४½ इञ्च । ले०काल स० १६९९ कार्तिक वुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १३२९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

५३४४. प्रति स० ३ । पत्र स० २३ । ग्रा० ९×३¾ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६७५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

५३४५. प्रतिस० ४ । पत्र स० ३१ । ले०काल× । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ७६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—देवगढ मे प्रतिलिपि हुई थी ।

५३४६ प्रति स० ५ । पत्रस० २२ । ग्रा० १०½×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—एक ग्रपूर्ण प्रति ग्रौर है ।

५३४७. प्रति स० ६ । पत्र स० २-७२ । ग्रा० १०½ × ४ इञ्च । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर ग्रादिनाथ वू दी ।

विशेष—प्रति सटीक है ।

५३४८ प्रतिस० ७ । पत्र स० २२ । ग्रा० ९¾×४½ इच । ले० काल स० १७४६ फाल्गुन ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १९९ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

५२४६. **प्रतिसं० ८** । पत्र स० ३३ । आ० ११ × ८½ इञ्च । ले० काल स० १७१६ आसोज सुदी १३-८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५३५० **निमित्तशास्त्र**— × । पत्र स० १-१२ । आ० १०½+४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५३५१. **नीलकठ ज्योतिष—नीलकठ** । पत्रस० ५ । आ० ८½ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५३५२ **नैमित्तिक शास्त्र—भद्रबाहु**। पत्रस० ५७ । आ० ११ ½ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल स० १६८० । पूर्ण । वेष्टन स० ३७ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

५३५३. **पचदशाक्षर—नारद** । पत्रस० ५ । आ० ६, × ४¼ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७५० । **प्राप्ति स्थान**— भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

५३५४. **पचाग— ×** । पत्र स० ५६ । आ० ११×७ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर कामा ।

विशेष—स० १६४६ से ४६ तक के है ४ प्रतिया है।

५३५५. **सं० १८६०** । पत्र स० १२ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मदिर बोरसली कोटा ।

५३५६. **पचाग**— × । पत्र स० ६ । आ० ६ × ६¼ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय — ज्योतिष । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन ५४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन तेरहपथी मदिर दौसा ।

५३५७. **पचाग**— × । पत्रस० १२ । आ० ७¾ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

विशेष—स० १६१६ का पचाग है।

५३५८. **पचाशत् प्रश्न—महाचन्द्र** । पत्रस० ६ । आ० ७¼ × ३¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले०काल स० १८२४ आसोज बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० ४२६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३५९. **पथराह शुभाशुभ** × । पत्र स० २ । आ० १३ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ३२२ ।**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५३६०. **पल्यविचार— ×** । पत्र स० ३ । आ० ८½ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३६१ पल्य विचार—× । पत्रस० २ । आ० ११ × ५½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—चित्र भी है।

५३६२ **प्रति स० २** । पत्र स० २ । आ० ११×५½ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१९ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५३६३ **प्रतिस० ३** । पत्रस० १ । आ० ९ × ५ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३२१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

५३६४, **पाराशरी टीका**—× । पत्र स० ७ । आ० ९×५½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४०५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३६५ **पाशा केवली— गर्गमुनि** । पत्र स० २३ । आ० १०½×५½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले० काल स० १८४३ । पूर्ण । वेष्टन स० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—नेमिनाथ जिनालय लश्कर, जयपुर के मन्दिर मे भाभूराम ने प्रतिलिपि की थी।

५३६६.—**प्रति स० २** । पत्र स० १० । आ० १०½×५ इन्च । ले० काल स० १९०१ । पूर्ण । वेष्टन स० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५३६७ **प्रतिसं० ३** । पत्रस० ११। १०"आ०×४½ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५३६८ **प्रति स० ४** । पत्रस० ६ । आ० ४×४½ इन्च । ले०काल स० १८२३ । पूर्ण । वेष्टनस० १३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

५३६९ **प्रति स० ५** । पत्रस० १० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २९-५५५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

५३७० **प्रति स० ६** । पत्रस० ८ । आ० ९×४ । ले०काल × । पूर्ण ।वेष्टन स० २८५ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

५३७१. **प्रतिस० ७** । पत्रस० १४ । आ० १२×४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०९ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

५३७२. **प्रति स० ८** । पत्रस० १९ । आ० ११× ४½ इन्च । ले०काल स० १८१७ आसोज सुदी ५। पूर्ण । वेष्टन स० १०/४८ ।**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इदरगढ (कोटा)

५३७३. **पाशाकेवली**—× । पत्र स० ४ । आ० १० × ५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले० काल स० १८२४ आसोज बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ११११ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—पडित परमसुख ने चौमू नगर मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी ।

५३७४. प्रतिसं० २ । पत्रस० १६ । ले०काल स० १६४० पौष वुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १११२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

५३७५. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १० । आ० ६½×४ इञ्च । ले०काल स० १८२८ आपाढ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६४४। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

५३७६. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ६ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल स० १६३७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—प० जौहरीलाल मालपुरा वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

५३७७. प्रतिस० ५ । पत्र स०,८ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल स० १८३३ । पूर्ण । वेष्टन स० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

५३७८. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ८ । आ० ६ ×५ इञ्च । ले०काल स० १६११ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी वू दी ।

५३७६ प्रतिसं० ७ । पत्रस० १० । आ० १३×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६६-१०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

५३८०. प्रति स० ८ । पत्रस० २२ । आ० ११×४½ इञ्च । ले० काल स० १६६७ । पूर्ण । जीर्ण । वेष्टन स० १५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

५३८१. पाशाकेवली भाषा— × । पत्र स० ४ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६३३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३८२ पाशाकेवली भाषा— × । पत्रस० ६ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४२२ । **प्राप्ति स्थान**--भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३८३. पाशाकेवली भाषा । पत्रस० ६ । भाषा-हिन्दी । विपय-निमित्त शास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १६२६ । पूर्ण । वेष्टनस० ४३० । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मन्दिर भरतपुर ।

५३८४. प्रतिसं० २ । पत्रस० १५ । ले०काल स० १८१३ । पूर्ण । वेष्टनस०४३१ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मन्दिर भरतपुर ।

विशेष--टोडा मे लिपि हुई थी ।

५३८५ प्रतिस० ३ । पत्र स० २४ । ले०काल स० १८२६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

५३८६. पाशाकेवली— × । पत्र सख्या ११ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सख्या ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

५३८७. **पाशाकेवली**— X । पत्र स० ११ । आ० ५½ X ४ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

५३८८. **पाशाकेवली**— X । पत्रस० ८ । आ० १०¾ X ४½ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-शकुन शास्त्र । र०काल— X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १६४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

५३८९ **पाशाकेवली**— X । पत्र स० १२ । आ० ६½ X ५½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र०काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ४५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

५३९०. **पुरुषोत्पत्ति लक्षण**—X । पत्रस० १ । आ० १०½ X ४½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल X । ले० काल X । वेष्टन स० ११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५३९१. **प्रश्नचूडामणि**— X । पत्र स० २१ । आ० ८¾ X ४¾ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल X । ले० काल स० १८८३ चैत्र बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १३०४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३९२. **प्रश्नसार**— X । पत्र स० १० । आ० १० X ५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १५९२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३९३ **प्रश्नावली—श्री देवीनद** । पत्र स० ३ । आ० १२ X ५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र (ज्योतिष) । र०काल X । ले०काल स० १९२२ । पूर्ण । वेष्टन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५३९४ **प्रश्नावली**—X । पत्रस० १३ । आ० १०¾ X ५¾ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल X । ले०काल X । वेष्टन स० १३५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५३९५ **प्रश्नोत्तरी**— X । पत्र स० ४ । आ० ९X४ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-शकुन शास्त्र । र०काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १३३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

विशेष—पहिले प्रश्न किया गया है और बाद मे उसका उत्तर भी लिख दिया गया है । इस प्रकार १६० प्रश्नो के उत्तर हैं ।

पत्रो के ऊपर की छोर की ओर पक्षियो के–मोर, बतक, उल्लू, खरगोश, तौता, कोयल आदि रूप मे हैं । विभिन्न मण्डलो के चित्र हैं ।

५३९६ **प्रश्न शास्त्र** X । पत्रस० १५ । आ० ११ X ५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल X । ले०काल स० १६५० पौष सुदी ६ । वेष्टन स० ३२६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

५३९७. बत्तीस लक्षण छप्पय—गगादास । पत्रस० २ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय शकुन शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७९-१७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

५३९८. बसन्तराज टीका-महोपाध्याय श्री भानुचन्द्र गरिण । पत्रस० २०० । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय शकुन शास्त्र । र०काल × । ले० काल स० १८५९ श्रावरण बुदी ७ । वेष्टन स० २५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति—श्री शत्रु जयकरमोचनादि सुकृतकारि महोपाध्याय भानुचन्द्रगरिण । विरचिताया वसन्तराज टीकाया ग्र थ प्रभावक कथन नाम विंशतितमो वर्ग ।

५३९९. बालबोध ज्योतिष— × । पत्रस० १४ । आ० ८½ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३९६-१४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर डू गरपुर ।

५४०० बालबोध—मु जादित्य । पत्रस० १४ । आ० ९½ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०९७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५४०१. प्रतिस० २ । पत्र स० ११ । आ० ७½ × ४½ इञ्च । ले० काल स० १८२० । पूर्ण । वेष्टन स० १७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी) ।

५४०२. प्रति स० ३ । पत्रस० १७ । आ० ९ × ६ इञ्च । ले०काल स० १७९८ आसोज सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना (बू दी) ।

विशेष—लिखित छात्र विमल शिष्य वाली ग्राम मध्ये ।

५४०३. ब्रह्मतुल्यकरण—भास्कराचार्य । पत्र स० १२ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल स० १७४४ । पूर्ण । वेष्टनस० ३५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति—सवत् १७४४ वर्षे चैत्र सुदी २ शनौ लिखत मुनि नदलाल गौडदेशे मूईनगर मध्ये आत्मार्थी लिखित ।

५४०४. भडली—× । पत्रस० ५९ । आ० ६ × ४½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—भडली बात विचार है ।

५४०५. भडली— × । पत्र स० १ । आ० ९ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—३५ पद्य हैं ।

५४०६. प्रतिसं० २ । पत्र स० १२ । आ० १०½ × ६ इच । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५३२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५४०७ भडली— × । पत्रस० २२-४२ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल स० १८३० भादवा बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५४०८ भडली पुराण—× । पत्रस० १३ । आ० ११½ × ६½ इञ्च । भाषा हिन्दी प० । विषय-ज्योतिष । र०काल × ले०काल स० १८५८ वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० १४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

५४०९ भडली वर्णन । पत्रस० १६ । भाषा-हिन्दी । विषय × । अपूर्ण । वेष्टनस० २०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

५४१० भडलीवाक्यपृच्छा— × । पत्रस० ४ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-ज्योतिष निमित्त । र० काल × । ले०काल स० १६४४ पौष सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १३८७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—लिखत जोसी सूरदासु अर्जुन सुत ।

५४११ भडली विचार— × । पत्र स० ६ । आ० ११ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४७-२५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

५४१२ भडली विचार— × । पत्रस० ४० आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल स० १८५७ । पूर्ण । वे० स० २०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

५४१३ भडली विचार—× । पत्रस० ५ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी प० । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५४१४ **भद्रबाहु सहिता—भद्रबाहु** । पत्र स० ६६ । आ० ६½ ×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२०० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५४१५ **प्रतिसं० २** । पत्रस० ६५ । आ० ८×६½ इञ्च । ले काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५२६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५४१६ **प्रति सं० ३** । पत्र स० ६६ । आ० १२ × ६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५४१७ **प्रतिसं० ४** । पत्र स० ६२ । आ० १३ × ५¾ इञ्च । ले०काल स० १८६६ श्रावण वदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—रूपलाल जी ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि करवाई थी ।

५४१८ **भावफल**— × । पत्र स० १५ आ० ११×४ इञ्च । भाषा -सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल स० १८६६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६-१५१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टौक) ।

५४१९ भाविसमय प्रकरण—पत्र स० ८। भाषा-प्राकृत सस्कृत। विषय- X। रचना काल X। ले०काल X। पूर्ण। वेप्टन स० ४९०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

५४२० भुवनदीपक—पद्मप्रभसूरि। पत्र स० १४। आ० १०X४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र०काल X। ले०काल स० १५६६ भादवा बुदी ६। पूर्ण। वेप्टन स० १२४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार।

५४२१ प्रतिस० २। पत्र स० १२। आ० १०X४½ इञ्च। ले० काल X। पूर्ण। वेष्टन स० ५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

५४२२. भुवन दीपक— X। पत्र स० १०। आ० १०¾X४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—ज्योतिष। र०काल X। ले० काल X। पूर्ण। वेप्टन स० १५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

५४२३ भुवनदीपक टीका— X। पत्र स० १९। आ० १०X४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—ज्योतिष। र०काल X। ले० काल X। पूर्ण। वेष्टनस० १९८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

५४२४. भुवनदीपक वृत्ति—सिंहतिलक सूरि। पत्र स० २५। आ० १०½X४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—ज्योतिष। र०काल X। ले० काल X। पूर्ण। वेष्टन स० १४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—रस युग गुणेन्दु वर्ष १३२६ शास्त्रे भुवनदीपके वृत्ति। युवराज वाटकादिह विशोध्य वीजापुरे लिखिता ॥१॥

५४२५ भुवनविचार— X। पत्र स० २। आ० १०½X५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र०काल X। ले० काल X। पूर्ण। वेष्टन स० ५३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर खडेलवाल उदयपुर।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है।

५४२६. मकरंद (मध्यलग्न ज्योतिष)— X। पत्र स० ६। भाषा—सस्कृत। विषय—ज्योतिष। र०कालX। ले० काल X। पूर्ण। वेष्टन स० ८६/५६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

५४२७. मुहूर्तचितामणि—त्रिमल्ल। पत्र स० ३९। आ० १०½X४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र०काल X। ले०काल स० १८७५। पूर्ण। वेष्टन स० १४४७। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५४२८. मुहूर्तचितामणि—दैवज्ञराम। पत्रस० ९७। आ० ११X५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—ज्योतिष। र० काल स० १६५७। ले०काल X। पूर्ण। वेष्टन स० १९३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी।

५४२९. प्रति स० २। पत्रस० १८। आ० १३X६½ इञ्च। ले० काल X। पूर्ण। वेष्टन स० १९६। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

५४३० प्रति स० ३ । पत्रस० ८५ । ग्रा० १०½×५ इञ्च । ले०काल स० १८५१ । पूर्ण । वेष्टनस० १९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी)

५४३१. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ५१ । ग्रा० ९½×४½ इञ्च । ले०काल स० १८७९ । पूर्ण । वेष्टनस० २०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ ।

विशेष—सवत् १८७९ शाके १७४४ मासानाम मासोत्तम श्रावरणमासे शुभे शुक्लपक्षे १ भृगुवासरे चिरजीव सदासुख लिपिकृत करवाराख्य शुभेग्रामे ।

५४३२. प्रति स० ५ । पत्र स० ७४ । ग्रा० ७⅞×४½ इञ्च । ले० काल स० १८७८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३३५/१२९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५४३३. प्रति स० ६ । पत्र स० ६६ । ग्रा० ७¹×४⅞ इञ्च । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ३३६/१३० । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५४३४ मुहूर्तचिंतामणि—× । पत्रस० १०३ । ग्रा० १०×४½ । भाषा—सस्कृत । विपय—ज्योतिप । र०काल × । ले०काल स० १८५५ ज्येष्ठ बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन स० १११५ । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, ग्रजमेर ।

विशेष—माणकचन्द ने किशनगढ मे प्रतिलिपि की थी ।

५४३५. प्रति स० २ । पत्रस० ३६ । ग्रा० ११×५ इञ्च । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० १४० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

५४३६. प्रति स० ३ । पत्रस० ४० । ग्रा० ११½×५ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन स० ३२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

५४३७. मुहूर्त्तपरीक्षा—× । पत्रस० २ । ग्रा० ११½×५ । भाषा-सस्कृत । ले० काल स० १८१६ मगसिर । पूर्ण । वेष्टन स० ११२६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

५४३८ मुहूर्त्ततत्व— × । पत्रस० २ । भाषा—सस्कृत । विषय—ज्योतिप । र०काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० १९७, ५४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

५४३९. मुहूर्त्तमुक्तावली—परमहस परिव्राजकाचार्य । पत्रस० ७ । ग्रा० ९×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय—ज्योतिप । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८४८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

५४४० प्रति स० २ । पत्रस० १० । ले० काल स० १८७७ । पूर्ण । वेष्टन स० १४५० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

५४४१. प्रतिस० ३ । पत्रस० ११ । ले०काल स० १८७७ । पूर्ण । वेष्टनस० ७५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—हिन्दी ग्रर्थ सहित है तथा नखनऊ मे लिखी गई थी ।

५४४२ प्रति स० ४ । पत्रस० १३ । ग्रा० ८½×४ इञ्च । ले०काल स० १८४९ । पूर्ण । वेष्टन स०१९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

५४४३ **प्रति सं० ५** पत्रस० ८ । आ० १०× ६ इञ्च । ले०काल । पूर्ण वेष्टन स० १७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बू दी ।

५४४४. मुहूर्त्त मुक्तावलि—× । पत्रस० ६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५४४५ मुहूर्त्त मुक्तावलि—× । पत्रस० १२ । आ० ६½× ४½ इञ्च । भाषा – सस्कृत । विषय–ज्योतिष । र०काल × । ले०काल स० १८५४ । पूर्ण । वेष्टन स० २४७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

५४४६ मुहूर्त्त मुक्तावलि—× । पत्र स० १२ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय–ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५४४७ मुहूर्त्त मुक्तावलि—× । पत्रस० ३–७ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय–ज्योतिष । र०काल × । ले०काल स० १८२० प्रथम आषाढ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स०२७ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर दबलाना (बू दी)

५४४८ मुहूर्त्त विधि–× । पत्रस० १७ । आ० ११×५ इ च । भाषा–सस्कृत । विषय–ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१६ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

५४४९ मुहूर्त्त शास्त्र—× । पत्रस० १७ ।आ० १०½× ५ इञ्च । र०काल × । ले०काल स० १८८५ । पूर्ण । वेष्टन स० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—विशालपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

५४५०. मेघमाला—शंकर । पत्रस० २१ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय–ज्योतिष । र०काल × । ले० काल स० १८९१ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

इति श्री शकर कृ मेघ मालाया प्रथमोध्याय ।

इति श्री ईश्वरपार्वती स वादे सनिश्चरमता स पूर्ण । मिति आषाढ शुक्ल पक्षे मगलवारे स० १८९१ आदिनाथ चैत्यालये । द० पडित जैचन्द का परते सुखजी साजी की सु उतारी छै ।

५४५१. मेघमाला—× । पत्र स० ६ । भाषा-सस्कृत । विषय–ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४२२–१५८ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डू गरपुर ।

५४५२. मेघमाला (भडलीविचार)—× । पत्रस० ६ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल स० १८८२ । अपूर्ण । वेष्टनस० १३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खदेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

५४५३. मेघमाला प्रकरण—× । पत्र स० १४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय–निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २८२–५६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन स भवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—भड़लीविचार जैसा है।

५४५४. योगमाला— × । पत्रस० ६ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-सम्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर दवलाना (बूदी)

५४५५ योगातिसार—भागीरथ कायस्थ कानूगो । पत्र स० ३५ । आ० १०×५ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल स० १८५० आसोज सुदी १ । पूर्ण । वे० स० १११४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—सेवग चित्तौडवासी डेह्या मालवा देश के नोलाई नगर मे प्रतिलिपि की थी ।

५४५६. योगिनीदशा —× । पत्र स० ६ । आ० ११$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०कात × । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन स० ११२६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५४५७ योगिनीदशा—× । पत्रस० ८ । आ० ६$\frac{1}{2}$ ×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०कारा × । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ५४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५४५८. रत्नचूडामणि—× । पत्र स० ७ । आ० ११$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय-ज्योतप । र०काल× । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २००–४६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

५४५९ रत्नदीपक—× । पत्र स० ११ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिप । र०काल × । ले०काल स० १८७६ कार्तिक सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स २०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

५४६० रत्नदीप—× । पत्र स० ८ । आ० ८$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी) ।

५०६१. रत्नदीपक—×। पत्र स० ७ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—ज्योतिप । र०काल× । ले०काल स० १८५६ । पूर्ण । वेष्टन स० १६१० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

५४६२ प्रतिस० २ । पत्रस० ६ ।आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

५४६३. प्रतिस० ३ । पत्र स० ७ । आ० १०$\frac{1}{2}$× ७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण ।वेष्टन स० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी)

५४६४ रत्नमाला—महादेव । पत्र स० ५६ । आ० १०×४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिप । र०कारा × । ले० काल स० १४८६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर, उदयपुर ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

प्रशस्ति—स्वास्ति सवत् १४८६ वर्षे कार्तिक बुदी ११ एकादश्या तिथौ भौमवासरे अद्येह खाजूरिक पुरे वास्तव्य भट्ट मेदपाटेज्ञातीय ज्योतिषी कडूआत्मज रगकेन व्यास वादादि समस्त भ्रातृणा पठनार्थ नच शिशूना पठनाय परोपकाराय रत्नमाल फलग्रन्थस्य भाष्य लिलेख ।

५४६५ प्रति स० २। पत्र स० १३० । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ४७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन स भवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

५४६६ प्रति स० ३ । पत्र स० १६-६० । आ० ११X५ इच । ले० काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० २३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

सधि के अन्त मे निम्न प्रकार उल्लेख है—

शश्वद् वाक्यप्रमाणप्रवणरद्गुमते वेदवेदागवेत्तु सूनु श्री लूणिगस्याच्युत चरणरति श्री महादेवनामा तत् प्रोक्ते रत्नमाला रुचिरविवरणे सज्जनाना भोजयानो दुर्जनेन्द्रा प्रकरणमगमत् योग सज्ञा चतुर्थ ।

५४६७. रमल—X । पत्रस० ३ । आ० १० X५½इच । भाषा-हिन्दी । विषय—ज्योतिष । र०काल X । ले०काल स० १८७८ । पूर्ण । वेष्टन स० १००० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५४६८. रमल प्रश्न—X । पत्र स० २ । आ० ६X४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र० काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ३२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५४६९ रमल ज्ञान—X । पत्र स० १६ । आ० ६X४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ३३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५४७०. रमल प्रश्नतत्र—दैवज्ञ चिंतामणि । पत्र स० २३ । आ० ८X५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० २६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

५४७१. रमलशकुनावली—X । पत्रस० ५ । आ० १० X ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—ज्योतिष । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टनस० १३६ । **प्राप्तिस्थान**-दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

५४७२. रमल शकुनावली— X । पत्र स० ७ । आ० ८½X४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र०काल X । ले०काल स० १८५३ । पूर्ण । वेष्टन स० ८०-४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

अन्तिम—इति श्री मुसलमानी शकुनावली सपूर्ण । सवत् १८५३ का मिती चैत बुदी १२ सुखकीरत वाचनार्थ नगर मेलखेडा मध्ये ।

५४७३ रमल शास्त्र—× । पत्र स० ३५ । आ० ६¦ × ७ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय ज्योतिष । र० काल × । ले०काल प० १८६६ वैशाख बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० २१४ । **प्राप्तिस्थान**— भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—लिखित तिवाडी विद्याधरेन ठाकुर श्रीभैरुवक्सजी ठाकुर श्री रामवक्सजी राज्ये कलुखेडीमध्य ।

५४७४. रमलशास्त्र—× । पत्र स० २५ । आ० ६ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५४७५ रमलशास्त्र × । पत्रस० ४५ । आ० ११ × ७ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५०४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—प्रश्नोत्तर के रूप मे दिया हुआ है ।

५४७६ राजावली—× । पत्रस० ११ । आ० १३ × ५½ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले०काल स० १७२१ माघ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १३६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

इति सवत्सर फल समाप्त ।

५४७७. राजावली—× । पत्रस० १६ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल स० १८३८ श्रावण बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० २३२ । **प्राप्तिस्थान**-दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—इति षष्ठि (६०) सवत्सरनामानि ।

५४७८. सवत्सर राजावलि—× । पत्रस० ५ । आ० ६ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५४३ । × **प्राप्तिस्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५४७९. राहुफल—× । पत्रस० ६ । आ० १० × ४¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६३६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

५४८०. राशिफल— × । पत्र स० ५ । आ० ६ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

५४८१. राशिफल—× । पत्रस० २ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—ज्योतिष । र० काल × । ले०काल स० १८१६ सावन सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० २५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

५४८२. लघुजातक—भट्टोत्पल । पत्र स० ६-४५ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले०काल स० १८०६ भादवा सुदी ३ । अपूर्ण । वेष्टन स० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

५४८३. लघुजातक— । पत्रस० ६ । आ० ११½×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल स० १७१७ द्वि ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १५८६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५४८४. लग्नचन्द्रिका—काशीनाथ । पत्रस० ३३ । आ० १०×४½ इच । भाषा—सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

५४८५ प्रतिसं० २ । पत्र स० ३२ । आ० ६½ × ४ इच । ले०काल स० १८५२ । पूर्ण । वेष्टन स० २८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

५४८६. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ५८ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । ले०काल स० १८७८ । पूर्ण । वेष्टनस० २३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी) ।

विशेष—गोठडा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

५४८७ प्रति स० ४ । पत्रस० ७४ । आ० १० × ४ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी) ।

५४८८. प्रति स० ५ । पत्रस० २४ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी) ।

५४८९. प्रति स० ६ । पत्रस० १२ । आ० ७½×६½ इच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना (बूंदी) ।

५४९०. वर्षतत्र—नीलकठ । पत्र स० ६८ । आ० ११½×५½ इच । भाषा—सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०६२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५४९१. प्रतिसं० २ । पत्रस० ३६ । आ० १२×४ इञ्च । ले० काल स० १८५४ । पूर्ण । वेष्टनस० ३४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५४९२ वर्षफल—वामन । पत्रस० ३-६ । आ० १०¼ × ४½ इच । भाषा सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ७१३ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५४९३. वर्षफल— × । पत्र स० ६ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०७-१८० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

५४९४ वर्षभावफल— × । पत्र स० ६ । आ० ६¾×४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४०५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५४६५ **विवाह पडल**— × । पत्र स० २४ । आ० १०×४½ इंच । भाषा संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल स० १७६३ । पूर्ण । वेष्टन स० १५२ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति ।

इति श्री विवाह पडल ग्रंथ सम्पूर्ण । लिखितेय सकल पडित शिरोमणि प० श्री जसवत सागर गणि शिष्य मुनि विनयसागरेण । सवत् १७६३ वर्षे श्री महावीर प्रसादात् शुभ भवतु ।

५४६६ **वृन्द संहिता—परम विद्यराज** । पत्र स० १४३ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२० । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मंदिर इन्दरगढ ।

५४६७ **वृहज्जातक** × । पत्र स० १–१० । आ० ११½×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५४६८ **वृहज्जातक**— × । पत्रस० ४२ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

५४६६ **प्रतिस० २** । पत्रस० ६० । आ० १०×५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३०३ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

५५०० **वृहज्जातक (टीका)—वराहमिहर** । पत्र स० ८८ । आ० १२×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

५५०१ **शकुन दर्शन**— × । पत्र स० १६ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष (शकुन शास्त्र) । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

५५०२ **शकुनविचार**— × । पत्रस० ५ । आ० ६½ × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५५०३. **शकुन विचार**— × । पत्र स० १ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ८१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर जयपुर ।

५५०४ **शकुन विचार**— × । पत्रस० ३ । भाषा—संस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

५५०५. **शकुन विचार**— × । पत्रस० २-१० । भाषा-संस्कृत । विषय-शकुन । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ७०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

५५०६. शकुन विचार— × । पत्र स० १ । भाषा–सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६२/५५६ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—आचार्य श्री कल्याणकीर्ति के शिष्य मुनि भुवनचद ने प्रतिलिपि की थी ।

५५०७ शकुन विचार— × । पत्र स० ३ । आ० ६ × ४ इच । भाषा–हिन्दी । विषय-ज्योतिस । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७०८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

५५०८ शकुन विचार— × । पत्रस० १२ । आ० १२½ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५०/२५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक) ।

५५०६. शकुनावली—गौतम स्वामी । पत्रस० ३ । आ० ११¾ × ४¾ इञ्च । भाषा—प्राकृत । सस्कृत । विषय—निमित्त शास्त्र । र० काल × । ले०काल × । वेष्टनस० १३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

५५१०. प्रतिसं० २ । पत्रस० ३ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन स० १३३ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५५११ शकुनावली— × । पत्रस० ६ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २७०-१०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५५१२. प्रतिसं० २ । पत्रस० ८ । आ० १० × ७½ इञ्च । **ले०काल स० १८८७** । पूर्ण । वेष्टन स० ३५४/१३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५५१३ प्रतिस० ३ । पत्र स० ४ । आ० ६½ × ५ इञ्च । ले०काल सं० १८७५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५५१४. शकुनावली— × । पत्रस० १४ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल स० १६६२ चैत सुदी ११ । वेष्टनस० ६३६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५५१५. प्रतिसं० २ । पत्रस० १६ । आ० १०½ × ५¾ इच । ले० काल × । वेष्टन स० ६४० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मदिर ।

५५१६. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ६ । आ० १०½ × ५ इञ्च । **ले०काल** × । वेष्टनस० ६७१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर, लश्कर जयपुर ।

५५१७. प्रतिसं० ४ । पत्रस० २ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । **ले०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० २०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

५५१८. । पत्रस० ४ । आ० ७ × ५ इञ्च । ले० काल स० १८२० सावण बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० २०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

विशेष—गोठडा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

५५१६ शीघ्रबोध - काशीनाथ । पत्रस० ८-२६ । ग्रा० ९½×५½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०३१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५५२०. प्रतिस० २ । पत्र स० १० । ग्रा० १०×४½ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५५२१. प्रति स० ३ । पत्रस० ३६ । ग्रा० १०×४½ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६५४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५५२२ प्रतिसं० ४ । पत्र स० ४३ । ग्रा० ९½×५½ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६३२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—गुटका साइज मे है ।

५५२३ प्रति स० ५ । पत्रस० ५८ । ग्रा० ९×४½ इन्च । ले० काल स० १८८६ वैशाख बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० ९८८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—किशनगढ मे प्रतिलिपि हुई थी ।

५५२४. प्रतिसं० ६ । पत्र स० १५ । ग्रा० ६×४¾ इन्च । ले०काल १९०३ । पूर्ण । वेष्टन स० १११८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५५२५. प्रतिस० ७ । पत्र स० ३५ । ग्रा० ११½×५ इन्च । ले० काल × । वेष्टन स० ३२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५५२६. प्रतिस० ८ । पत्र स० ८-९१ । ग्रा० ७×५½ इच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चेतनदास दीवान पुरानी डीग ।

५५२७ प्रतिसं० ९ । पत्र स० ५९ । ग्रा० १३½×७½ इन्च । ले०काल स० १८९० भादवा बुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—ला० नथमल के पठनार्थ बयाना मे प्रतिलिपि की गई थी ।

५५२८. प्रतिसं० १० । पत्रस० ३९ । ग्रा० ९×४ इन्च । ले० काल स० १८४५ चैत्र शुक्ला ११ । पूर्ण । वेष्टन स० २४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक) ।

५५२९. प्रतिसं० ११ । पत्र स० ६६ । ग्रा० ८½×४ इच । ले०काल स० १८५५ । पूर्ण । वेष्टन स० १९३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

५५३०. प्रति स० १२ । पत्र स० १३ । ग्रा० ८×५ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

५५३१. प्रतिसं० १३ । पत्रस० ११ । ग्रा० ९×५½ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

५५३२ प्रतिस० १४ । पत्रस० ३० । ग्रा० ९½×५½ इन्च । ले०काल स० १८२०, वैशाख सुदी २ । । पूर्ण । वेष्टनस० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ बूदी ।

५५३३. प्रति स० १५ । पत्रस० १५ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—हिन्दी मे टव्वा टीका है ।

५५३४ प्रति स० १६ । पत्र स० २० । आ० १०×४ इञ्च । ले०काल स० १७४७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५५३५ प्रतिसं० १७ । पत्रस० १६ । आ० १०×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी) ।

५५३६. प्रतिसं० १८ । पत्र स० ३३ । आ० ११×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना (बूदी) ।

५५३७. प्रतिसं० १९ । पत्र सख्या २१ । आ० १०½×५½ इच । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० २०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

५५३८. प्रतिसं० २०। पत्र स० २१-३२ । आ० ८¾×४ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २१६-८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५५३९. षट्पचाशिका—भट्टोत्पल। पत्रस० ४ । आ० ८×४½ इञ्च । भापा—सस्कृत । विषय—ज्योतिप ।र०काल स० १८५२ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३०५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५५४०. प्रतिसं० २ । पत्र स० ४ । आ० १२×४ इञ्च । ले०काल स० १८२९ आपाढ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ११६१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रश्न भी दिये हैं ।

५५४१. प्रतिसं० ३ । पत्र स० २२ । आ० ९¾×४¾ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०७० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—प्रति सस्कृत वृत्ति सहित है ।

५५४२. प्रति सं० ४ । पत्र स० २-८ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन स० ७०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५५४३ प्रतिसं० ५ । पत्र स० २ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल स० १८२५ मगसिर सुदी ७ । वेष्टन स० ३२० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५५४४. प्रतिसं० ६ । पत्र स० २ । आ० १०×४½ इञ्चे । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—शेरगढ मे प० हीरावल ने लिखा था ।

५५४५. प्रतिस० ७ । पत्र स० ८ । आ० ११½×५½ इच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ ।

विशेष—लिखित मुनि धर्म विमलेन सीसवाली नगर मध्ये मिती कार्त्तिक बुदी २ सवत् १७९८ वर्षे गुरुवासरे सपूर्ण ।

५५४६ षड्वर्ग फल— × । पत्र स० १३ । आ० ११३/४×५३/४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले०काल स० १६०३ फागुण बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ११२७ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५५४७. षष्ठि योग प्रकरण — × । पत्रस० ८ । आ० १०१/२×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ३३२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

५५४८ षष्ठिसवतत्सरी—दुर्गदेव । पत्रस० १३ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत, हिन्दी । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल स० १६६५ मगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

१६६५ वर्षे मगसिर सुदी १५ शनिवारे,
माडण ग्रामे लिखवता श्रीलक्ष्मीविमल गाणे ।

५५४६. षष्ठि सवत्सरफल— × । पत्रस० २ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । वेष्टनस० ३२७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५५५०. सप्तवारघटी— × । पत्रस० १५० । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—ज्योतिष (गणित) । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

५५५१ समरसार—रामचन्द्र सोमराजा— । पत्रस० ५ । आ० १२ × ६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १६७ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

५५५२ साठसवत्सरी — × । पत्र स० ७ । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७१२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष —सवत्सर के फलो का वर्णन है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १७१२ वर्षे वैशाख बुदी १४ दिनोसागपत्तने श्री आदिनाथ चैत्यालये ब्रह्म भीरारव्येन लिखि गमिद ।

५५५३ साठ सवत्सरी— × । पत्र स० २७ । आ० १०१/२ × ४१/२ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२३-६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष —सवत्सरी वर्णन दिया हुआ है । प्रति प्राचीन है । भ० विजयकीर्ति जी की प्रति है ।

५५५४ साठि सवत्सरी— × । पत्रस० ६ । आ० १०×४१/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३८१–१४३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५५५५. साठ संवत्सरी— × । पत्रस० ११ । भाषा-हिन्दी । विषय—ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६८/५३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

५५५६. साठि सवत्सरी—× । पत्रस० १० । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४८७-× । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५५५७ प्रतिस ० २ । पत्र स० ४ । आ० १२×७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५५५८. साठिसवत्सरग्रहफल—पण्डित शिरोमणि । पत्र स० २१ । आ० १२½×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ६११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५५५९. सामुद्रिक शास्त्र— × । पत्रस० १० । आ० १०½×६½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—लक्षण शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २९६ । **प्राप्ति स्थान**–भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—शरीर के आगो पागो को देखकर उनका फल निकालना ।

५५६०. सामुद्रिक शास्त्र—× । पत्र स० १२ । आ० ९¼ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—लक्षण शास्त्र । र०काल × । ले० काल स० १९०२ भादवा बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ६७६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५५६१. सामुद्रिक शास्त्र— × । पत्रस० ८ । आ० ९½ × ४½ इच । भाषा—हिन्दी विषय-लक्षण शास्त्र । र०काल × । ले० काल स० १७९५ चैत्र । पूर्ण । वेष्टन स० १०३६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५५६२. सामुद्रिक शास्त्र— × । पत्रस० ५९ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-लक्षण शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । वेष्टनस० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है ।

५५६३. सामुद्रिक शास्त्र— × । पत्रस० २४ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-लक्षण शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११९४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५५६४. सारसग्रह— × । पत्रस० २० । आ० ९½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल स० १८८८ । पूर्ण । वेष्टन स० १००२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५५६५. सिद्धांत शिरोमणि—भास्कराचार्य । पत्रस० ७ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल । पूर्ण । वेष्टनस० ५४७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५५६६. **सूर्य ग्रहण**— × । पत्र स० १ । आ० ८×५ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५४१–× । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियों का डूगरपुर ।

५५६७ **सकटदशा**— × । पत्रस० १० । आ० १०×४½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल स १८२६ । पूर्ण । वेष्टन स० १८–२८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

५५६८. **सवत्सर महात्म्य टीका**— × । पत्रस० ६ । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—सम्भवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—सवत्सर का पूर्ण विवरण है ।

५५६९ **सवत्सरी**— × । पत्रस० १७ । आ० ६×४ इन्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल स० १८२४ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी) ।

विशेष—सवत् १७०१ से १८०० तक के सौ वर्षों का फल दिया है । गाठडा ग्राम मे रूपविमल के के शिष्य भाग्यविमल ने प्रतिलिपि की थी ।

५५७०. **स्त्री जन्म कुडली**— × । पत्रस० १ । आ० १० × ५ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५५७१. **स्वर विचार**— × । पत्रस० २ । आ० ११ × ५½ इन्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-निमित्त शास्त्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

५५७२. **स्वप्न विचार**— × । पत्र स० १ । आ० १३×६ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

विशेष—स्वप्न के फलो का वर्णन है ।

५५७३ **स्वप्नसती टीका—गोवर्द्धनाचार्य** । पत्रस० २६५ । आ० ६¾×४ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १६८० पौष सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० २६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५५७४. **स्वप्नाध्याय**— × । पत्रस० ५ । आ० ६ × ४ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय—निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १८६८ पौष बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

विशेष—बयाना मे प्रतिलिपि हुई थी ।

५५७५ **स्वप्नाध्यायी**— × । पत्रस० २–४ । आ० ११×४ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २१६/६४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

५५७६. स्वप्नाध्यायी—X । पत्रस० ११ । आ० ८$\frac{3}{8}$ X ४$\frac{1}{8}$ इन्च । भापा-मस्कृत । विपय-निमित्त शास्त्र । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टनस० १३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, वू दी ।

विशेष—१४६ श्लोक हैं ।

५५७७. स्वप्नावली— । पत्र स० २१ । आ० १० X ५$\frac{1}{8}$ इन्च । भापा—सस्कृत । विषय—निमित्त शास्त्र । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५५७८. स्वप्नावली— X । पत्रस० ३ । आ० १० X ५$\frac{1}{2}$ इन्च । भापा-स स्कृत । विपय-निमित्त शास्त्र । र०काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० १७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५५७९. स्वरोदय— । पत्रस० ८ । आ० ६$\frac{1}{2}$ X ४ इन्च । भापा—स स्कृत । विपय-निमित्त शास्त्र । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १४२३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—नासिका के स्वरो सवधी ज्ञान का विपय है ।

५५८०. स्वरोदय— X । पत्र स० ५ । आ० ११$\frac{1}{2}$ X ४$\frac{1}{8}$ इन्च । भापा-सस्कृत । विपय-निमित्त शास्त्र । र०काल X । ले०काल स० १७८५ वैशाख सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १०५८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५५८१ स्वरोदय टीका— X । पत्र स० २७ । आ० ११$\frac{1}{2}$ X ५ इन्च । भापा-सस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल X । । ले०काल स० १८०८ वैशाख बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० २४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी वू दी ।

५५८२. स्वरोदय —X । पत्र स० १८ । आ० १०X४$\frac{1}{2}$ इन्च । भापा-सस्कृत । विपय—निमित्त शास्त्र । र०काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (वू दी) ।

५५८३ स्वरोदय— X । पत्र स० १८ । आ० ८$\frac{3}{8}$ X ३$\frac{1}{2}$ इन्च । भापा—सस्कृत । विपय-निमित्त शास्त्र । र०काल X । ले० काल स० १७१५ अगहन बुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टन स० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना (वू दी) ।

विशेष- १२ से १७ पत्र नहीं हैं । पवन विजय नामक ग्र थ से लिया गया है ।

५५८४. स्वरोदय— X । पत्रस० ३२ । आ० ९ X ६$\frac{1}{2}$ इन्च । भापा-सस्कृत । विपय-निमित्त शास्त्र । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टनस० २३०-९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

५५८५. स्वरोदय— X । पत्रस० २७ । आ० ७$\frac{1}{2}$ X ५ इन्च । भापा सस्कृत । विपय-निमित्त शास्त्र । र० काल X । ले०काल स १९०५ । पूर्ण । वेष्टनस० ३२४-१२२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर कोटडियो का डू गरपुर ।

इति पवनविजयशास्त्रे ईश्वर पार्वती सवादे तस्य भेद स्वरोदय सपूर्ण ॥

५५६६. सूर्य ग्रहण— × । पत्र स० १ । आ० ८×५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५४१-× । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५५६७ सकटदशा— × । पत्रस० १० । आ० १०×४½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र० काल × । ले० काल स १८२६ । पूर्ण । वेष्टन स० १८-२८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

५५६८. सवत्सर महात्म्य टीका— × । पत्रस० ९ । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—सम्भवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—सवत्सर का पूर्ण विवरण है ।

५५६९ सवत्सरी— × । पत्रस० १७ । आ० ९×४ इन्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल स० १८२४ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० २९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी) ।

विशेष—सवत् १७०१ से १८०० तक के सौ वर्षो का फल दिया है । गाठडा ग्राम मे रूपविमल के के शिष्य भाग्यविमल ने प्रतिलिपि की थी ।

५५७०. स्त्री जन्म कुडली— × । पत्रस० १ । आ० १० × ५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स २३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५५७१. स्वर विचार— × । पत्रस० २ । आ० ११ × ५½ इन्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-निमित्त शास्त्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

५५७२. स्वप्न विचार— × । पत्र स० १ । आ० १३×६ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

विशेष—स्वप्न के फलो का वर्णन है ।

५५७३ स्वप्नसती टीका—गोवर्द्धनाचार्य । पत्रस० २६५ । आ० ९¾×४ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १६८० पौष सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० २९४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५५७४. स्वप्नाध्याय— × । पत्रस० ५ । आ० ९ × ४ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—निमित्त शास्त्र । र० काल × । ले०काल स० १८६८ पौष बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

विशेष—बयाना मे प्रतिलिपि हुई थी ।

५५७५ स्वप्नाध्यायी— × । पत्रस० २-४ । आ० ११×४ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २१९/६४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मदिर उदयपुर ।

५५७६. स्वप्नाध्यायी—× । पत्रस० ११ । आ० ८$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{4}$ इन्च । भापा-सस्कृत । विपय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष—१४६ श्लोक हैं ।

५५७७ स्वप्नावली— । पत्र स० २१ । आ० १० × ५$\frac{1}{4}$ इन्च । भापा—सस्कृत । विषय—निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५५७८. स्वप्नावली— × । पत्रस० ३ । आ० १० × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भापा-स स्कृत । विपय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५५७९. स्वरोदय— । पत्रस० ८ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा—स स्कृत । विपय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४२३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—नासिका के स्वरो सवधी ज्ञान का विषय है ।

५५८०. स्वरोदय— × । पत्र स० ५ । आ० ११$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{4}$ इञ्च । भापा-सस्कृत । विपय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १७८५ वैशाख सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १०५८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५५८१ स्वरोदय टीका— × । पत्र स० २७ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५ इन्च । भापा-सस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । । ले०काल स० १८०८ वैशाख बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० २४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

५५८२. स्वरोदय —× । पत्र स० १८ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भापा-सस्कृत । विपय—निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी) ।

५५८३ स्वरोदय— × । पत्र स० १८ । आ० ८$\frac{3}{4}$×३$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले० काल स० १७१५ अगहन बुदी १३ । अपूर्ण । वेय्टन स० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना (बू दी) ।

विशेष- १२ से १७ पत्र नही हैं । पवन विजय नामक ग्र थ से लिया गया है ।

५५८४. स्वरोदय— × । पत्रस० ३२ । आ० ६×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भापा-सस्कृन । विपय-निमित्त शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २३०-६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५५८५. स्वरोदय— × । पत्रस० २७ । आ० ७$\frac{1}{2}$×५ इन्च । भाषा सस्कृत । विपय-निमित्त शास्त्र । र० काल × । ले०काल स १६०५ । पूर्ण । वेष्टनस० ३२४-१२२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

इति पवनविजयशास्त्रे ईश्वर पार्वती सवादे तस्य भेद स्वरोदय सपूर्ण ॥

५५८६. स्वरोदय—मुनि कपूरचन्द। पत्रस० २७। आ० ८×४½ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-निमित्त शास्त्र। र०काल ×। ले०काल स० १६२३ चैत सुदी। पूर्ण। वेष्टन स० ७३८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष— कृष्ण असाढी दशम दिन शुक्रवार सुखकार।
सवत वरण निपुणता नदचद धार।

५५८७. स्वरोदय—चरणदास। पत्र स० १५। आ० ६½×६½ इन्च। भाषा-हिन्दी (प)। विषय-निमित्तज्ञान। र०काल ×। ले० काल स० १६२५। पूर्ण। वेष्टन स० ३३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी)।

विशेष—रणजीत के शिष्य चरणदास ढूसर जाति के थे। ये पहिले दिल्ली मे रहे थे। गोरीलाल ब्राह्मण दवलाना वाले ने प्रतिलिपि की थी।

५५८८. स्वोरदय—प्रहलाद। पत्र स० १४। आ० ६×४½ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-निमित्त शास्त्र। र०काल ×। ले० काल स० १८५६। पूर्ण। वेष्टन स० ३३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी)।

विशेष—जती दूदा ने आत्रदा मे प्रतिलिपि की थी।

आदि अ त भाग निम्न प्रकार है—

आदिभाग—

गज वदन मुकभाल सुन्दर त्रिय नयण।
एक मुख दत कर पर सकल माला।
मोदक सघ मूसो वाहाण।
मूघये ससि सुस्वर सुल पाणी।
सुर सर जटा साखा सुकी कठ।
अरधग गोर गजवालसो देवो कुणइ सुभवाणी।

अन्तिम—पाठक देत वखानी भाषा मन पवना जिहि दिढ करि राखौ।
परम तत्व प्रहलाद प्रकासै जनम जनम के तिमिर विनासै।
पढे सुने सो मुकत कहावै गुरु के चरण कमल सिरनावै॥
ऐसा मत्र तत्र जग नाही जैसा ज्ञान सरोदा माही।

दोहा—

मिसर पाठक के कहे पाई जीवन मूल।
मणमूल जीव तह सदा अनुकूल।

इति श्री पवनजय सरोदा ग्र थ।

५५८९. होराप्रकाश— × पत्र स० ८। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र०काल ×। ले० काल स० १६१४। पूर्ण। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर।

५५९०. होरामकरद— ×। पत्र स० ५८। आ० ८½×४ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १००५। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५५९१. होरामकरद-गुणाकर। पत्र स० ४८। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र०काल×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० ११७। **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन स भवनाथ मदिर उदयपुर।

विषय--आयुर्वेद

५५६२ अजीर्ण मंजरी—न्यामतखा । पत्रस० १२ । आ० १२ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र०काल स० १७०४ । ले०काल स० १८२३ । पूर्ण । वेष्टनस० ५३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—कृति का अतिम पाठ निम्न प्रकार है—

सवत् सतरैसौ चतुर परिवा अगहन मास ।
स पूर्ण **ममरेज** कहि कह्यो अजीर्ण नाम ॥६८॥
सब देसन मे मुकुटमरिण **बागडदेस** विख्यात ।
सहर **फतेपुर** अतिसए परसिद्धि अति विख्यात ॥६६॥
क्यामखान को राज जहा दाता सूर सुज्ञान ।
न्यामतखा न्यामते निपुरण धर्मी दाता जान ॥१००॥
तिनि यह कीयो ग्र थ अति उकति जुवित परवान ।
अजीर्ण तास यह नाम धरि पढै जो पडित आनि ॥१०१॥
वैद्यकशास्त्र कौं देखि करी नित यह कीयौ वखान ।
पर उपकार के कारर्ण सो यह ग्र थ सुखदान ॥१०२॥
पर उपगार को सुगम कीयो मोरू महीवरराज ।
तालगि पुस्तग थिर रहै सदा ·· जि महाराज ॥१०३॥

इति श्री अजीर्णनाम ग्र थ सपूर्ण । स० १८२३ वैशाख बुदी ६ । लिखत नगराज महाजन पठनार्थ ।

५५६३. अमृतमजरी—काशीराज । पत्र स० ४ । आ० ११½ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४३२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—हरिदुर्ग (किशनगढ) मध्ये श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालये ।

५५६४. प्रतिसं० २ । पत्रस० ४ । आ० ६ × ४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०८-८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५५६५. अमृतसागर—महाराजा सवाई प्रतापसिंह । पत्रस० ३३१ । आ० ८½ × ५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०-८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५५६६. प्रतिसं० २ । पत्र स० १४ । आ० १० × ६ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

विशेष—स्त्रियो के प्रदर रोग के लक्षण तथा चिकित्सा दी है ।

५५६७. प्रतिस० ३ । पत्र स० १६४ । आ० ८½ × ६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—अमृतसागर ग्र थ मे से निम्न प्रकरण है। अजीर्ण रोग प्रमेह रोग चौरासी प्रकार की वाय, रक्त पित्त रोग। ज्वर लक्षण, शल्य चिकित्सा, अतीसार रोग, सुद्ररोग, वाजीकरण, आदि।

५५९८. प्रति सं० ४ । पत्रस० २९८ । आ० १३×६ इच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटयो का नैणवा।

विशेष—पत्र स० २९८ से आगे के पत्र नही है।

५५९९. प्रति स० ५। पत्रस० २८७ । आ० १२ × ७ इञ्च । ले० काल स० १९०५ चैत बुदी ३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मदिर अलवर।

विशेष—ग्र थ मे २५ तरग (अध्याय) है जिनमे आयुर्वेद के विभिन्न विपयो पर प्रकाश डाला गया है।

५६००. अवधूत— × । पत्र स० १३ । आ० १० ×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८०। **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५६०१. आंख के तेरह दोष वर्णन— × । पत्र स० ६ । आ० ६ × ९$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय—आयुर्वेद। र० काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनस० २०५। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी)।

विशेष—गुटकाकार है। तीसरे पत्र से आयुर्वेद के अन्य नुस्खे भी हैं। दिनका विचार चौघडिया भी है।

५६०२. आत्मप्रकाश—आत्माराम। पत्र स० १५०। आ० १३$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{3}{4}$ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विपय-आयुर्वेद। र०काल ×। ले० काल स० १९१२ वैशाख सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन स० २२८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

५६०३ आयुर्वेद ग्र थ— × । पत्र स० ३५। आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत। विपय-आयुर्वेद। र०काल ×। लेखन काल ×। अपूर्ण। वे० स० २१६। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी)।

५६०४. आयुर्वेद ग्र थ—×। पत्र स० ६८। आ० ९ × ५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० २७७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी)।

विशेष—आयुर्वेद के नुस्खे हैं।

५६०५. आयुर्वेद ग्रन्थ—पत्रस० १८। भाषा सस्कृत। विषय-वैद्यक । रचना काल ×। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन स० ७६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

५६०६. आयुर्वेद ग्र थ— × । पत्र स० २३। आ० १०×४ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र०काल ×। ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७०-१७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)।

५६०७ आयुर्वेद ग्र थ— × । पत्र स० १६ । आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन स० ४५/८। **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

विशेष—वेष्टन स० ८ मे समयसारनाटक एव पूजादि के फुटकर पत्र हैं।

५६०८. आयुर्वेद ग्र थ— × । पत्रस० ८७ । आ० ६½×४½ इन्च । भापा-हिन्दी । विपय-आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७३० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६०९. आयुर्वेद के नुस्खे × । पत्र म० १६ । आ० ११½ × ५½ इन्च । भापा-हिन्दी । विपय-आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ८१४ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—पत्र फुटकर हैं ।

५६१०. आयुर्वेद के नुस्खे— × । पत्र स० ८ । आ० ७×६½ इन्च । भापा-हिन्दी । विपय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

५६११. आयुर्वेद निदान— × । पत्रस० २२ । आ० ११×४½ इच । भापा—सस्कृत । विपय—आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ५४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डू गरपुर ।

५६१२. आयुर्वेदमहोदधि—सुखदेव । पत्रस० ४०३ । भापा-सस्कृत । विपय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल स० १८८८ । पूर्ण । वेष्टनस० ४०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

५६१३. आयुर्वेदिक शास्त्र— × । पत्र स० ८४ । आ० ११×५ इन्च । भाषा—हिन्दी ग० । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस०८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बू दी ।

५६१४. औषधि विधि— × । पत्र स० ४-२४ । आ० ६× ४½ इन्च । भापा- हि दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल स० १७६३ भादवा सुदी २ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी) ।

५६१५. ऋतुचर्या—वाग्भट्ट । पत्रस० ८ । आ० ११×६½ इन्च । भापा-सस्कृत । विपय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा) ।

५६१६ कर्मविपाक—वीरसिंहदेव । पत्र स० १२ । आ० ६×४ इन्च । भापा-सस्कृत । विपय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल स० १८५३ ज्येष्ठ बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ६७५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—इति श्री तोमरवशवतसमूरि प्रभूत श्री वीरसिंहदेवविरचिते ।वीरसिंहावलोक ज्योति शास्त्र कर्म विपाक आयुर्वेदोक्त प्रयोगोभिश्रकाध्याय ।

५६१७. कालज्ञान— × । पत्र स० २५ । आ० ११×५ इन्च । भापा-सास्कृत । विपय-आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल स० १६१० । पूर्ण । वेष्टन स० २६२ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६१८. कालज्ञान— × । पत्रस० २८ । आ० ८$\frac{१}{४}$ × ३$\frac{३}{४}$ इञ्च । भापा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल स ० १८०२ सावन बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० १६३ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—व्यास गोविंदराम चाटसू ने कोटा मे लिखा था ।

५६१९. कालज्ञान— × । पत्रस० ८ । आ० ११ × ५ इञ्च । भापा—सस्कृत । विपय—आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

५६२०. कालज्ञान— × । पत्रस० ११ । आ० ११$\frac{१}{२}$ × ४$\frac{१}{२}$ इञ्च । भापा—सस्कृत । विपय—आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ ।

५६२१. प्रतिसं० २ । पत्रस० ३३ । आ० १०$\frac{१}{२}$ × ५$\frac{१}{२}$ इञ्च । ले०काल स ० १८७८ मगसिर बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० २१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

विशेष—चिरजीव सदासुख ने प्रतिलिपि की थी ।

५६२२. कालज्ञान— × । पत्रस० १६ । आ० १० × ४$\frac{१}{२}$ इञ्च । भापा—सस्कृत । विपय—आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल स० १८८० । पूर्ण । वेष्टन स० १२-८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

लिपिकृत कानकुब्ज ब्राह्मण शालिग्रामेण नगर मारवाड मध्ये सवत् १८८० मिती श्रावण बुदी २ शुक्रवारे ।

५६२३. प्रति स० २ । पत्र स० २-१३ । आ० १०$\frac{१}{२}$ × ४$\frac{१}{२}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

५६२४. कालज्ञान भाषा—लक्ष्मीवल्लभ । पत्र स० १३ । आ० ११ × ४$\frac{१}{२}$ इञ्च । भापा—हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल स० १८८१ वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १५८३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६२५. कालज्ञान भाषा— × । पत्रस० १३ । आ० ६ × ४ इ च । भाषा—हिन्दी । विपय—आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

५६२६. कालज्ञान सटीक— × । पत्र स० ३३ । आ० ८$\frac{१}{२}$ × ४$\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा सस्कृत-हिन्दी विपय—आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४४७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—७ वें समुद्देश तक है ।

५६२७ कृमि रोग का ब्योरा— × । पत्रस० १ । आ० १० × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

५६२८. कुष्टीचिकित्सा— × । पत्र स० ६ । आ० ११×५ इञ्च । भापा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५५३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

५६२९. गुणरत्नमाला—मिश्रभाव । पत्र स० ४-८५ । आ० ११×४½ इञ्च । भापा—सस्कृत । विपय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्टनस० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

५६३०. चन्द्रोदय कर्प्प टीका—कविराज शङ्खधर । पत्रस० ६ । आ० १०×७ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी वू दी ।

५६३१. चिकित्सासार—धीरजराम । पत्र स० १२६ । आ० १२ × ५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल स० १८६० फागुण बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन भट्टारकीय मन्दिर अजमेर ।

विशेष—अजयगढ नगर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

अजमेर मे पट्टस्थ भट्टारक भुवनकीर्ति के शिष्य प० चतुर्भुजदास ने इसकी प्रतिलिपि की थी ।

५६३२. जोटा की विधि—× । पत्रस० १ । आ० १०½×७ इञ्च । भापा—हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

५६३३. ज्वर त्रिशती—शार्ङ्गधर । पत्रस० ३३ । आ० ९×४½ इञ्च । भापा-सस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल स० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन स० २९१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन भट्टारकीय मन्दिर अजमेर ।

विशेष—कृष्णगढ मे देवकरण ने प्रतिलिपि की थी ।

५६३४. ज्वर पराजय— × । पत्र स० १९ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५६३५. दोषावली— × । पत्रस० २-४ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विपय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३६-२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५६३६. द्रव्यगुण शतक — × । पत्रस० ३३ । आ० ६¾×४¼ इच । भापा-सस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४५४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६३७. नाडी परीक्षा—× । पत्रस० ४ । आ० ११×५½ इच । भापा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल स० १९१६ । पूर्ण । वेष्टन स० १४४ । **प्राप्ति स्थान** भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६३८. प्रति स० २ । पत्रस० ८ । आ० ६$\frac{3}{8}$×४ इन्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—पहिले सस्कृत मे बाद मे हिन्दी पद्य मे अर्थ दिया हुआ है ।

५६३९. प्रति स० ३ । पत्रस० ३ । आ० ८×५ इन्च । ले०काल स० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन स० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

५६४०. निघटु—× । पत्रस० १६८ । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०३४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६४१. प्रतिसं० २ । पत्र स० ३ से १२७ । आ० १० × ४$\frac{1}{2}$ इन्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६४२. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ६५ । आ० १२$\frac{1}{2}$×५ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६४३. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ८० । आ० ६×४ इन्च । ले०काल १७५५ प्रथम ज्येष्ठ सुदी ६ । वेष्टन स० ३३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५६४४. प्रति स० ५ । पत्रस० ७० । आ० ६$\frac{1}{2}$×६ इन्च । ले०काल स० १८८८ माघ बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

५६४५. निघटु— × । पत्रस० ४६ । आ० ६$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

५६४६. प्रतिसं० २ । पत्र स० ४६ । आ० १०×४$\frac{1}{8}$ इन्च । ले०काल स० १७५३ कार्त्तिक सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० २२१ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

५६४७. निघटु टीका—× । पत्र स० ५-१३ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । लेखन काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

५६४८. निदान— × । पत्र स १६ । आ० ११×७ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

विशेष—प० दिलसुख ने नृपहर्म्य (राजमहल) मे प्रतिलिपि की थी ।

५६४९. निदान भाषा—श्रीपतभट्ट । पत्र स० ८२ । आ० ८$\frac{3}{4}$×४ इन्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—आयुर्वेद । र०काल स० १७३० भादवा सुदी १३ । ले०काल स० १८१० आसोज बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४४६ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—ग्र थकार परिचय—

गुजराती औदीच्यकुलरावल श्रीगोपाल ॥
श्रीपुरुपोत्तम तास सुत आयुर्वेद विसला ॥

तासो सुत श्रीपतिभिपक हिमतेपा परसाद ।
रच्यौ ग्र थ जग के लिये प्रभु को आसीरवाद ॥

५६५०. पथ्य निर्णय— × । पत्रस० १ । आ० १०½×५ इ च । भापा—हिन्दी । विपय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

५६५१. पथ्य निर्णय—× । पत्रस० ८४ । आ० १२×५½ । भापा-सस्कृत । विपय-आयुर्वेद ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

५६५२. पथ्यापथ्यनिर्णय— × । पत्र स० १६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भापा–सस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५६५३. प्रति स० २ । पत्र स० १७ । आ० १०×५ इञ्च । ले० काल स० १८७१ चैत्र सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

५६५४. प्रति स० ३ । पत्रस० ६ । आ० ११½×५¾ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

५६५५ प्रतिसं० ४ । पत्र स० २१ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा) ।

५६५६ पथ्यापथ्य विचार— × । पत्र स० ५२ । आ० ६×४½ इञ्च । भापा–सस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल स० १८८४ । पूर्ण । वेष्टन स० २६० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष - कृष्णगढ मध्ये लिखापित ।

५६५७. पथ्यापथ्य विबोधक वैद्य जयदेव । पत्र स० २०२ । आ० ८½×६½ इञ्च । भापा सस्कृत । विपय आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल स० १६०४ वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० २
प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६५८. पचामृत नाम रस— × । पत्रस० १० । आ० १२×५½ इ च । भापा—
विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४३४ । **प्राप्ति स्थान**-
जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—१० पत्र से आगे नही हैं ।

५६५९. प्रकृति विच्छेद प्रकरण—जयतिलक । पत्रस० ३ । आ० ६¾×४
सस्कृत । विपय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२४३ । प्र
दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६६०. पाक शास्त्र—× । पत्रस० १२ । आ० १०½×५ इ च । भ
आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १६५–८० । **प्राप्ति**
कोटडियो का डू गरपुर ।

विशेष—विविध प्रकार के पाको के बनाने की विधि दी है ।

५६६१. वाल चिकित्सा—× । पत्रस० २० । आ० १०×५½ इच । भापा-सस्कृत । विपय-आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०५/५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५६६२ वालतत्र—× । पत्रस० ३६ । आ० ११ ×६ इच । भापा—सस्कृत । विपय—आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल स० १७५६ । वेष्टनस० ४३१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६६३. वालतत्र भाषा—प० कल्याणदास । पत्र स० ८६ । आ० १२×५½ इन्च । भाषा—हिन्दी । विपय—आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल स० १८८६ अपाढ सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० ५२० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६६४ बधफल— × । पत्र स० १ । आ० ११×५ इन्च । भापा—सस्कृत । विपय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

५६६५. बध्या स्त्री कल्प—× । पत्रस० १ । आ० १०½×४½ इन्च । भापा-हिन्दी । विपय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी) ।

विशेष—सतान होने आदि की विधि है ।

५६६६ भावप्रकाश—भावमिश्र । पत्रस० १४३ । आ० १३×६ इन्च । भापा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी बूदी ।

विशेष—प्रथम खड है ।

५६६७. प्रति सं० २ । पत्रस० २३० । आ० १४ ×६½ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—मध्यम खड है ।

५६६८. भावप्रकाश—× । पत्र स० ६ । आ० १३½ × ६½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विपय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २२६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

५६६९. भावप्रकाश— × । पत्र स० २–६५ । भापा-सस्कृत । विपय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर वसवा ।

५६७०. माधवनिदान—माधव । पत्रस० २१० । आ० ११½×८ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय— । र०काल × । ले०काल स० १९१६ आसोज सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

५६७१. प्रति स० २ । पत्र स० ७८ । आ० १०½ × ४¾ इन्च । ले०काल स० १७१० । पूर्ण । वेष्टन स० ४४८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है ।

५६७२ प्रतिसं० ३। पत्र स० १२६। आ० १०×४½ इञ्च। ले० काल स० १८५५। पूर्ण। वेष्टन स० ५२६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५६७३. प्रति स० ४। पत्रस० १२८। आ० १२½×६ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १५६६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५६७४. प्रतिसं० ५। पत्र स० ४६। आ० १०×४ इञ्च। ले० काल स० १८२२। अपूर्ण। वेष्टन स० ३५६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

५६७५ प्रतिसं० ६। पत्रस० १११। आ० १०×४ इञ्च। ले० काल स० १८७४ ज्येष्ठ सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन स० १३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी।

५६७६. प्रति स० ७। पत्र स० ५६। आ० १२×५½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पचायती दूनी (टोक)

५६७७. प्रति स० ८। पत्र स० ८६। आ० १०×४¼ इञ्च। ले० काल स० १६२२ ज्येष्ठ सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन म० १६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

विशेष—ऋषि मायाचद ने शिवपुरी मे प्रतिलिपि की थी।

५६७८. प्रतिसं० ६। पत्रस० २६। आ० ८½×४½ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ६८०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर।

५६७६. माधव निदान टीका—वैद्य वाचस्पति। पत्रस० १३६। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल स० १८१२ माघ सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० ५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी।

विशेष. दयाचन्द ने चपावती के आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी।

५६८० मूत्र परीक्षा—×। पत्र स० २। आ० १२×५¼ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—आयुर्वेद। र० काल ×। लेखन काल ×। पूर्ण। वेष्टन म० ७४३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५६८१. मूत्र परीक्षा— ×। पत्र स० ४। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—आयुर्वेद। र० काल ×। ले० काल स० १८८० पौष सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० ११६६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

५६८२. मूत्र परीक्षा—×। पत्र स० ५। आ० ८½×४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—वैद्यक। र० काल ×। ले० काल सं० १७८४। पूर्ण। वे० स० ३१२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूंदी।)

५६८३. योगचिंतामणि—हर्षकीर्ति ×। पत्रस० १६०। आ० ११½×५½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—आयुर्वेद। र० काल। ले० काल स० १८८८। पूर्ण। वेष्टन स० १५६४। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

५६८४. प्रति स० २। पत्र स० ५०। आ० १२×५½ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर कामा।

विशेष—प्रति टीका सहित है ।

५६८५. प्रति सं० ३ । पत्र स० ५१ । आ० ८½×५½ इञ्च । ले०काल स० १८७३ । पूर्ण । वेष्टन स० २७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—वृन्दावती ग्राम मे नेमिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

५६८६. योगचिंतामणि-× । पत्रस० ६६ । आ० १२½×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६३-८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

५६८७. योगचितामणि टीका—अमरकीर्ति । पत्र स० २५६ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल स० १८२७ मगसिर सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १३०६ ।**प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६८८. योगतरगिणी—त्रिमल्ल भट्ट । पत्र स० ११४ । आ० १०×४¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विपय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल स० १७७४ आषाढ सुदी १ पूर्ण । वेष्टनस० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६८९. योगमुक्तावली—× ।पत्रस० ९ । आ० १०½ ×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । **विशेष**—आयुर्वेद । ले०काल × । पूर्ण वेष्टनस० ८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६९०. योगशत—× । पत्रस० १३ । आ० ९¾× ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल स० १७२९ कार्तिक बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० १२४४ । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—पचनाइ मे प० दोपचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

५६९१. योगशत—× । पत्र स० ६ । आ० १०¾×४¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—योगशास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७० । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६९२. योगशत—× । । पत्रस० १४ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ११०८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५६९३ योगशत—× । पत्र स० २-२२ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल स० १६०९ । अपूर्ण । वेष्टन स० ९७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक)

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा जीर्ण है । आधे पत्र मे हिन्दी टीका दी हुई है ।

टीका—श्लोक १९—

वाता जु० । व्याख्या० वास ३ गिलोय किरमालो । काढो करि एरड को तेल ट ४ माहि घालि पीवणाया समस्त शरीर को वातरक्त भाजइ । वासादि क्वाथ रसाजन-व्याख्या-रसवति चौलाई जड । मधु । चावल के धोवण माहिघालि पीवणीया प्रदरू भाजइ ।

५६९४. योगशत टीका—× । पत्र स० ३० । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल स० १७७६ कार्तिक सुदी १० । वेष्टन स० १३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनमन्दिर आदिनाथ बूदी ।

विशेष—प्रारम्भ—

श्री वर्द्धमान प्रणिपत्य मूघर्न समतभद्राय जनाय हेतो
श्री पूर्णसेन सुखवोधनार्थ प्राम्रयते योगशतस्य टीका ।।

अन्तिम— तपागच्छे पुन्यास जी श्री तिलक सौभाग्य जी केन लिखपित भैंसरोडदुर्ग मध्ये ।

५६९५. योगशत टीका—× । पत्रस० ३१ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल स १८५४ । पूर्ण । वेष्टन स० २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ ।

विशेष—१८५४ वैशाखे सिते पक्षे तिथौ द्वादश्या दानविमलेन लिपि कृत नगर इन्दरगढ मध्ये विजये राज्ये महाराजा जी श्री सुनमानसिंह जी—

५६९६. योगशतक—धन्वन्तरि । पत्रस० १९ । आ० × ९ ५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय–आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०७५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—नेमीचद ने लिखवाया था ।

५६९७. प्रतिसं० २ । पत्रस० १८ । ले०काल १९४३ । पूर्ण । वेष्टन स० १०७६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६९८. योगशतक—× । पत्रस० १५ । आ० ९¾×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल स० १८७३ फागुण सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४४२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—चेला मोहनदास के पठनार्थ कृष्णगढ (किशनगढ) मे प्रतिलिपि हुई थी ।

५६९९ योगसार सग्रह (योगशत)—× । पत्र स० ३१ । आ० ५×३¾ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल स० १८२० । पूर्ण वेष्टन स० ५२८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५७००. रत्नकोश—उपाध्याय देवेश्वर । पत्र स० २६७ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल स० १९२१ अषाढ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १२७७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५७०१. रसचिंतामणि— × । पत्रस० १९ । आ० ९¾×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४४५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७०२. रसतरगिणी—भानुदत्त । पत्र स० २४ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल स० १९०४ वैशाख बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १२९३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७०३. प्रति सं० २ । पत्र स० ३१ । ग्रा० ११ × ६ इञ्च । ले० काल स० १८५२ । पूर्ण । वेष्टन स० २०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर ग्रभिनन्दन स्वामी बू दी ।

विशेष—व्यास श्री सालिगरामजी ने ब्राह्मण हरिनारायण गूजर गौड से प्रतिलिपि करवायी थी ।

५७०४. रसतरगिणी—वेणीदत्त । पत्र स० १२४ । ग्रा० १०$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ग्रायुर्वेद । र० काल × । ले० काल स० १८५५ भादो वदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० २०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर ग्रभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

५७०५. रसपद्धति— × । पत्रस० ३६ । ग्रा० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ग्रायुर्वेद । र० काल × । ले०काल स० १८२६ वैशाख बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर ग्रादिनाथ बू दी ।

विशेष—ब्रह्म जैन सागर ने ग्रात्म पठनार्थ लिखा ।

५७०६ रस मंजरी—भानुदत्त । पत्र स० २५ । ग्रा० १० × ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-ग्रायुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५७०७. रसमजरी—शालिनाथ । पत्रस० ४४ । ग्रा० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ग्रायुर्वेद । र० काल × । ले० काल स० १८२६ ज्येष्ठ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ४४४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

५७०८. रसरत्नाकर—नित्यनाथसिद्ध । पत्रस० ७१ । ग्रा० १०×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ग्रायुर्वेद । र० काल × । ले०काल स० १८७१ । पूर्ण । वेष्टन स० ३५१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

५७०९. प्रति स० २ । पत्रस० २-१६ । ग्रा० ११×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—ग्रायुर्वेद । र० काल × । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ३६६/२०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

५७१० रसरत्नाकर—रत्नाकर । पत्रस० ४८ । ग्रा० १२ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ग्रायुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टनस० २३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा) ।

५७११. रसरत्नाकर— × । पत्रस० ६८ । ग्रा० १०×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—ग्रायुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टनस० २०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

५७१२. रामविनोद—नयनसुख । पत्रस० १०० । ग्रा० ५×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-ग्रायुर्वेद । र०काल × । ले०काल स० १८०८ फागुण सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ५२७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष—प० दीपचन्द ने ग्राणी नगर मध्ये लिखित ।

५७१३. रामविनोद—रामचन्द्र । पत्रसं० १६३ । आ० ८$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य) ।विषय-वैद्यक । र०काल × । ले०काल सं० १८२७ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२२२ । **प्राप्तिस्थान—** भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५७१४ प्रति सं० २ । पत्रसं० ८३ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$इञ्च । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३५६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५७१५ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८ । आ० १२×६ इञ्च । ले०काल सं० १८८८ द्वितीय वैशाख बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोंक) ।

५७१६ प्रति सं० ४ । पत्रसं० ११४ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले० काल सं० १७३० । पूर्ण । वेष्टन सं० २८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—सवत् १७३० वर्षे आसोज सुदी १० रविवार नक्षित्र रोहिणी पोथी लिखी साहुदा वेटा फकीर वेटा लालचन्द जी वालदिराम जाती वोरखड्या वासी मोजी मीया का गुढो । राज मावोसिंह (दिल्ली) हाडा बूंदी राव श्री भावसिंह जी **दिलो राज** पातिसाही ओरंगसाहि राज प्रवर्तत ।

५७१७. रामविनोद— × । पत्र सं० ५६ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ११३/११ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मदिर उदयपुर ।

५७१८. लघनपथ्यनिर्णय—× । पत्रसं० १६ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल सं० १८६० कार्तिक बुदी १ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४३५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—मोतीराम ब्राह्मण ने गोपीनाथ जी के देवरा मे लिखा था ।

५७१९. लघनपथ्य निर्णय— × । पत्रसं० १२ । आ० ११ × ८ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल सं० १६४५ वैशाख वदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७२०. वैद्यक ग्रंथ— × । पत्र सं० ८७ । आ० १३ ×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १४३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५७२१. वैद्यक ग्रंथ—× । पत्रसं० ४२ । आ० ६$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा - संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२६-६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

५७२२. वैद्यक ग्रंथ—× । पत्र सं० २ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १६१ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखे दिये हुये हैं ।

५७२३ वैद्यकग्र थ— × । पत्र स० ४ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय – आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५-६२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष— क्रम स० १६/६२३ से २४/६३० तक पूर्ण अपूर्ण वैद्यक ग्र थो की प्रतिया है ।

५७२४. वैद्यक नुस्खे—× । पत्र स० ४ । आ० ८$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—वैद्यक । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण ।वेष्टनस० १२४६ । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७२५ वैद्यक नुस्खे—× । पत्र स० ४ । भाषा-स स्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

५७२६ प्रति स० २ । पत्र स० ८० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४०१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

५७२७. वैद्यक शास्त्र—× । पत्र स० २८३ । आ० १२× ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल स० १८८२ चैत बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ७११ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७२८ वैद्यक शास्त्र— × । पत्रस० १६ ।आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल स ० × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

५७२६. वैद्यक समुच्चय—× । पत्रस० ५१ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—वैद्यक । र० काल × । ले०काल १६६० फागुण सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० १७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी)

विशेष—दिलिकामडले पालवग्राममध्ये लिखित ।

५७३० वैद्यकसार—× । पत्रस० ८२ । आ० ८$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाणा—स स्कृत । विषय-आर्वेयुद । र०काल × । ले०काल स ० १६५३ कार्तिक सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७-२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

५७३१. वैद्यकसार—हर्षकीर्ति । पत्रस० १५ से १६१ । आ० १२ × ५$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल स० १८२५ चैत्र बुदी ३ । अपूर्ण । वेष्टनस० १७७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७३२. प्रति स० २ । पत्रस० ३५ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इच । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २५२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७३३. प्रति स० ३ । पत्रस० १७५ । आ० ११$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन स० ३४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति मिटा रखी है ।

५७३४. वैद्य जीवन—लोलिम्बराज । पत्रस० ५१ । आ० ६ × ६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । ले०काल स० १६१२ । पूर्ण । वेष्टनस० २६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३७ । आ० ९½×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२४० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२४१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७३७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १५ । आ० ११×५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० १९४-८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५७३८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १२ । आ० ११×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १५९९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७३९. प्रति सं० ६ । पत्रसं० १६ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ९५४ । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५७४०. प्रतिसं० ७ । पत्र सं० ५३ । आ० १०½× ४¾ इञ्च । ले० काल सं० १७५३ कार्तिक बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२२ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ ।

५७४१. प्रतिसं० ८ । पत्र सं० १७ । आ० ११¼×५½ इञ्च । ले० काल सं० १८८७ मगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

५७४२. प्रति सं० ९ । पत्र सं० २४ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल सं० माघ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

५७४३. प्रति सं० १० । पत्र सं० १३ । आ० १०¼ × ४¼ इञ्च । ले० काल सं० १८०१ पौष सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

विशेष—खातोली नगर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

५७४४ प्रतिसं० ११ । पत्र सं० १२ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल सं० १९७६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूदी ।

५७४५ प्रति सं० १२ । पत्र सं० ३६ । आ० १०×५½ इञ्च । ले०काल सं० १८८३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

५७४६ प्रतिसं० १३ । पत्रसं० १२ । आ० ११×४½ इञ्च । ले०काल सं० १८०९ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३२ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

५७४७. प्रतिसं० १४ । पत्रसं० २३ । आ० ११× ४½ इञ्च । ले०काल सं० १८२३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२४ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष—साहपुरा के शातिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

५७४८. प्रति सं० १५ । पत्रसं० २ से १९ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल सं० १७१७ । अपूर्ण । वेष्टनसं० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक) ।

५७४९. वैद्यजीवन टीका—हरिनाथ । पत्र स० ४४ । आ० ११×४ इन्च । भाषा-स स्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२३९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७५० प्रति स० २ । पत्रस० ३७ । आ० १२×५½ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६५५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७५१ प्रति स० ३ । पत्रस० ४१ । आ० ११ × ५½ इ च । भाषा—सस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४०० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७५२ प्रति स० ४ । पत्रस० १६ । ले०काल स० १८३१ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१० **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७५३ प्रति स० ५ । पत्रस० ३१ । आ० १०½×५ इन्च । ले०काल × । वेष्टन स०३३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५७५४ प्रति स० ६ । पत्रस० ३१ । आ० १०½×५ इन्च । ले० काल × । वेष्टनस० ३४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

५७५५. वैद्यजीवन टीका—रुद्रभट्ट । पत्रस० ४५ । आ० ११×४½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल० स० १८८५ ज्येष्ठ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० ११६२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७५६ प्रति स० २ । पत्र स० ४६ । ले०काल स० १८८५ प्रथम आषाढ बुदी ऽऽ । पूर्ण । वेष्टन स० ११६७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष – प० देवकरण ने किशनगढ मे नेमिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी ।

५७५७ वैद्यक प्रश्न सग्रह— × । पत्र स० १० । आ० ११½×५ इन्च । भाषा—स स्कृत विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०६३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

५७५८ वैद्य मनोत्सव—केशवदास । पत्र स० ३४-४७ । आ० ८½×६½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३६६-१४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५७५९ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । आ० १३×५ इन्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३३-१३९ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

५७६० वैद्य मनोत्सव—नयनसुख । पत्र स० १५ । आ० ६¾×४¾ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । र०काल स० १६४९ आषाढ सुदी २ । ले० काल स० १९०० भादवा सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १०७७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७६१ प्रति स० २ । पत्रस० ११ । आ० १०½×५¾ इन्च । ले०काल स० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन स० १०२९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७६२. प्रति स० ३ । पत्र स० ४८ । आ० ९×६ इञ्च । ले० काल स० १८१२ अ.षाढ बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ५०६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७६३. प्रति सं० ४ । पत्रस० १३० । आ० ६×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स १८३५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८६५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—गुटका साइज मे है ।

५७६४ प्रति स० ५ । पत्रस० २६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । ले० काल स० १८६७ माह बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० ४७३ । **प्राप्ति स्थान**--भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

५७६५. प्रति सं० ६ । पत्र स० ३७ । आ० ९×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १८८५ मगमिर बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन स० ६९९ । **प्राप्ति स्थान** भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प० क्षेमकरण ने किशनगढ मे प्रतिलिपि की थी ।

५७६६. प्रति स० ७ । पत्रस० १७ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १८५१ ज्येष्ठ सुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन स० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

विशेष - लिखी कुस्याली रामपुरा मध्ये पडित भु गरसीदास ।

५७६७ प्रति स० ८ । पत्र स० १९ । आ० ११$\frac{1}{2}$×६ इच ।ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना (बू दी) ।

५७६८ वैद्यरत्न भाषा—गोस्वामी जनार्दन भट्ट । पत्रस० ३० । आ० ५$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष—लिखित साधु जैकृष्णमहतजी श्री प्रथीदासजी भाडारेज का शिष्य किशनदास ने लिखी हाडोती शेरगढ मध्ये ।

५७६९. वैद्यरत्न भाषा— × । पत्र स० ४७ । आ० १०×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४१६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५७७०. वैद्यवल्लभ— × । पत्रस० २६५ । आ० ९×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

५७७१. प्रति स० २ । पत्र स० २५ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा)

५७७२. वैद्य वल्लभ—हस्तिरुचि । पत्रस० ५६ । आ० ८×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल स० १७२६ । ले०काल स० १९११ । पूर्ण । वेष्टन स० ९५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति मुरादिसाहि गुटिका स्तभनोपरि—

श्रीमत्तपागणाभोजभासनैक नभोमणि ।
प्राज्ञोदयरूचिनामा वभूव विदुषाग्रणी ।।
तस्यानेक महाशिष्या हितादि रूचयो वरा ।
जगन्मान्यारूपाध्याय पदस्यधारकादभुवन ।
ग्रार्या तेषा शिपुना हस्तिरूचिना सद्वैद्य वलभोग्र थ ।
रस ६ नयन २ मुनिन्दु १ वर्ये स० १७२६ काराय विहितोय ।।

इति श्रीमत्तपागच्छे महोपाध्याय हितरूचि तत् शिष्य हस्तिरूचि कवि विरचिते वैद्यवल्लभे शेषयोग निरूपणो नामा ग्रष्टमोऽध्याय ।

५७७३. वैद्यवल्लभ— × । पत्र स० ३३ । ग्रा० ८½×३¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ग्रायुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूदी ।

५७७४. प्रतिसं० २ । पत्र स० ३३ । ग्रा० ८½×४½ इञ्च । ले० काल स० १६५० । पूर्ण । वेष्टन स० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रभिनन्दन स्वामी बूदी ।

५७७५. वैद्यवल्लभ टीका—× । पत्र स० ३६ । ग्रा० १३×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—वैद्यक । र० काल × । ले०काल स० १६०६ वैशाख सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १३५७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

५७७६. प्रतिस० २ । पत्र स० १४ । ग्रा० ६¾×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४४३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

५७७७. वैद्यविनोद— × । पत्रस० ६६ । ग्रा० १०½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ग्रायुर्वेद । र० काल × । ले०काल स० १८८६ ज्येष्ठ शु १५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष—लिखित प० देवकरण हरिदुर्ग (किशनगढ) मध्ये ।

५७७८. वगसेन सूत्र—वगसेन । पत्र स० ४७५ । ग्रा० १२×६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—ग्रायुर्वेद । र० काल × । ले०काल स० १७६६ ग्रापाढ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ७० । **प्राप्ति स्थान** - पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ ।

विशेष—ग्रादिभाग एव ग्रतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

प्रारभ—

नत्वा शिव प्रथमत प्रणिपत्य चडी
वाग्देवता तदनुता पद गुरुश्च
सग्रह्यते किमपि यत्सुजनास्तदत्र
चेनो विद्यात्तु मुचित्तु मदनुग्रहेण ।।१।।

पुष्पिका—
इति श्री वगसेन ग्र थिते चिकित्सा महार्णवे सकल वैद्यक शिरोमणि वगसेन ग्र थ सम्पूर्ण ।

५७७९. शार्ङ्गधर— × । पत्रस० १० । आ० १० × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—हरिदुर्ग (किशनगढ) के लुहाड्यो के मन्दिर मे प० देवकरण ने लिखा था ।

५७८० शार्ङ्गधर दीपिका—आढमल्ल । पत्रस० ६४ । आ० १२$\frac{1}{2}$ × ८ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल स० १९२१ चैत सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनस० १२३१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—अजमेर नगर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

५७८१. शार्ङ्गधर पद्धति—शार्ङ्गधर । पत्रस० १५१ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । भाषा—स स्कृत । विषय—आयुर्वेद । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५७८२. शार्ङ्गधर सहिता—शार्ङ्गधर । पत्र स० ३१ । आ० ११ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७८३ प्रतिसं० २ । पत्र स० १३ । आ० ९ × ४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३०२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७८४· प्रतिसं० ३ । पत्र स० १२५ । आ० ११ × ४ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन स० ३३६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

५७८५. प्रतिसं० ४ । पत्र स० १७० । आ० ११ × ४ इञ्च । ले० काल स० १८२७ आपाढ बुदी १३ । वेष्टन स० ३३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५७८६. प्रति स० ५ । पत्रस० ५७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर हण्डावालो का डीग ।

५७८७. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ४२ से ९६ । आ० १०$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ कोटा ।

५७८८ श्वासभैरवरस— × । पत्रस० २-१५ । भाषा—स स्कृत । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८ । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपथी दि० जैन मन्दिर वसवा ।

५७८९. सन्निपातकलिका—× । पत्रस० १७ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल स० १८६३ मगसिर सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४३३ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७९०. सन्निपातकलिका— × । पत्रस० २३ । आ० ८ × ३$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४४० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—१६ व २० वा पत्र नही है।

५७६१. सन्निपातकलिका – × । पत्रस० ७ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा) ।

५७६२. सतान होने का विचार— × । पत्र स० ७ । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २१६-८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५७६३ स्त्री द्रावण विधि— × । पत्र स० ७ । आ० ७×४¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय आयुर्वेद । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ८१७ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५७६४ स्वरोदय—मोहनदास कायस्थ । पत्रस० १२ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । र० काल स० १६८७ मगसिर सुदी ७ । ले०काल × । वेष्टनस० ६१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—इसमे स्वर के साथ नाडी की परीक्षा का वर्णन है—कवि परिचय दोहा—

कथित मोहनदास कवि काइथ कुल अहिठान ।
श्री गर्ग के कुल ढिग कनोजे के अस्थान ।
नैमखार के निकट ही कुरस्थ गाव विख्यात ।
तहा हमारो वासु नि तु श्री जादौ मम तात ।
सवत् सोरह सै रच्यौ अपरि असी सात,
विक्रमते बीते वस मारग सुदि तिथि सात ।।

इति श्री पवन विजय स्वरोदये ग्र थ मोहनदास कायथ अहिठानै विरचिते भाषा ग्र थ निवृत्ति प्रवृत्ति मार्ग खड ब्रह्माड ज्ञान तथा शुभाशुभ नाम दक्षिण स्वर तन भय विचार काल सावन सपूर्ण ।

५७६५. हिकमत प्रकास—महादेव । पत्रस० ५६१ । भाषा सस्कृत । विषय-वैद्यक । र०काल × । ले०काल स० १८३१ । पूर्ण वेष्टनस० ७६६ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मदिर

विषय--अलंकार एवं छन्द शास्त्र

५७९६. अलकार चन्द्रिका—अप्पयदीक्षित। पत्र स० ७६। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-अलकार। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी।

५७९७. कवि कल्पद्रुम—कवीन्द्राचार्य। पत्रस० ६। आ० १०½ × ४¾ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-अलकार। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० २७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

५७९८ कुवलयानन्द—अप्पयदीक्षित। पत्र स० ७७। आ० १०½×५ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-रस-सिद्धान्त। र०काल ×। ले० काल स० १८५४ वैशाख बुदी ६। वेष्टन स० २०६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—लश्कर के इसी मन्दिर मे प० केशरीसिंह ने ग्रथ की प्रतिलिपि करवाई थी।

५७९९. प्रतिसं० २ । पत्र स० १० । आ० ६×४¾। ले० काल ×। वेष्टन स० २११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—कारिका मात्र है।

५८००. प्रति स० ३। पत्रस० ५३। आ० १०½ × ५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी।

विशेष—ग्रथ का नाम अलकार चन्द्रिका भी है।

५८०१. प्रति सं० ४ । पत्र स० ६। आ० ११ ×५। ले० काल × । वेष्टन स० २०८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

५८०२. प्रति सं० ५। पत्र स० १४। आ० ६¾ × ५¾। ले० काल ×। वेप्टन स० २०६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर।

५८०३. प्रति स० ६। पत्र स० १२ । आ० ६½ × ५ इञ्च । ले०काल स० १८२२ आषाढ सुदी १। पूर्ण। वेष्टन स० १५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी)।

५८०४ छदकोश टीका—चद्रकीर्त्ति। पत्र स० १७। आ० १० × ४ इञ्च। भाषा-प्राकृत-संस्कृत। विषय-छद शास्त्र। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३१५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूदी।

५८०५ छदरत्नावलि—हरिरामदास निरंजनी। पत्रस० १७। आ० १२ × ५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-छद शास्त्र। र०काल स० १७९५। ले० काल स० १९०६ सावण सुदी ८। पूर्ण। वेष्टनस० १४३३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

विशेष—ग्रथ तथा ग्रथकार का वर्णन निम्न प्रकार है।

ग्र थ छदरत्नावली सारथ याको नाम ।
भूपन भरतीतें भरयो कहै दास हरिराम ।।१०।।
५ ६ ७ १
सवतसर नव मुनि शशि नभ नवमी गुरूमान ।
डीडवान दृढ को पतहि ग्र थ जन्म थल जानि ।।

५८०६. प्रतिस० २ । पत्र स० २४ । आ० ८ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १६३५ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४५३ । **प्राप्ति स्थान**—ग० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५८०७ प्रतिस० ३ । पत्रस० २-२५ । आ० ६ × ६ इच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर वयाना ।

विशेष—५-१०५ पद्य तक है ।

५८०८. छदवृत्तरत्नाकर टीका-प० सल्हण । पत्र स० ३६ । भापा-सस्कृत । विपय-छद शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १५६५ । पूर्ण । वेष्टनस० ७६/६०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

५८०९ अंतिम—इति पडित श्री सुल्हण विरचिताया छदोवृत्तौ पट् प्रत्याध्याय पष्ट समाप्त ।।

सवत् १५६५ वर्षे भाद्रपद मासे कृष्णपक्षे १ प्रतिपदा गुरौ श्री मूलसघे ।

५८१०. छदानुशासन स्वोपज्ञ वृत्ति–हेमचन्द्राचार्य । पत्रस० ६० । आ० १४ × ५ इञ्च । भापा-सस्कृत । विपय–छद शास्त्र । र०काल × । ले० काल स० १५६० । अपूर्ण । वेष्टनस० ३३२/५६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—अतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इत्याचार्य श्री हेमचन्द्र विरचिताया स्वोपज्ञ छदानुशासनवृत्तौ प्रस्तारादि व्यावर्ण नाम पष्ठोव्याय समाप्त ।

प्रशस्ति—सवत् १५६० वर्षे कार्तिकमासे महमागाकेन पुस्तक लिखित । महात्मा श्री गुणनदि पठनार्थ ।

५८११ छादसीय सूत्र—भट्टकेदार । पत्रस० ६ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भापा–सस्कृत । विपय-छद शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

५८१२ नदीय छद—नदिताढ्य । पत्रस० ८ । आ० १० × ४ इञ्च । भापा-प्राकृत । विपय–छद शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १५३८ आसोज वुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० ४३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—६४ गाथाएं हैं ।

५८१३. पिंगलशास्त्र—नागराज । पत्रस० ११ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भापा-प्राकृत । विपय-छद शास्त्र । र०काल × ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

५८१४. पिंगल सारोद्धार— × । पत्रस० २० । आ० ८१/२ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-छद शास्त्र । र०काल × ले०काल स० १६६१ । पूर्ण । वेष्टन स० १७३-१३३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—जयदेव ने प्रतिलिपि की थी ।

५८१५ पिंगलरूपदीप भाषा— × । पत्रस० ६ । आ० ६१/४ × ४१/४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-छद शास्त्र । र०काल स० १७७३ भादवा सुदी २ । ले०काल स० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन स० १८६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—सोरठा—द्विज पोखर तेन्य तिस मे गोन कटारिया ।
सुनि प्राकृत सौ बैन तैसी ही भाषा रची ।।५४।।

दोहा—
बावन वरनी चाल सबै जैसी मोमै वुद्ध ।
भूलि-भेद जाकौ कह्यो करो कवीश्वर सुद्धि ।।५५।।
सवत् सतरैसै वरष उर तिहत्तरै पाय ।
भादौ सुदि द्वितीय गुरू भयो ग्र थ सुखदाय ।।५६।।

इति श्री रूपदीप भाषा ग्र थ सपूर्ण । सवत् १८८६ का चैत्र सुदी ७ मगलवार लिखित राजाराम ।

५८१६. प्राकृत छद— × । पत्रस० ६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—छद । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११३४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५८१७. प्राकृत छन्दकोश— × । पत्र स० ७ । आ० १२×४३/४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—छन्द । र०काल × । ले० काल × । वेष्टनस० ४५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर

५८१८. प्राकृत लक्षण—चड कवि । पत्रस० २० । आ० १०१/४×४१/२ इञ्च । भाषा – सस्कृत । विषय—छन्द शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२५७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५८१९. बडा पिंगल— × । पत्र स० ३७ । आ० ६१/२×४१/२ इच । भाषा-सस्कृत । विषय—छन्द । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७२-१६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

५८२०. भाषा भूषण—जसवतसिंह । पत्र स० १५ । आ० ६×४१/२ इञ्च । भाषा – हिन्दी (पद्य) । विषय—अलकार शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विशेष—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

लक्षिन तिय अरु पुरुषके हाव भाव रस धाम ।
अलकार सजोग तै भाषा भूषण नाम ।।
भाषा भूषण ग्र थ को जे देखे चित लाइ ।
विविध अरथ सहित रस समुझै सब बनाइ ।।३७।।

इति श्री महाराजाधिराज धनवधराधीश जसवतस्यव विरचिते भाषा भूषण सपूर्ण ।

५८२१. **रसमजरी—भानु** । पत्रस० २१ । आ० १० × ३½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—रस अलकार । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६३/२२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

५८२२ **रूपदीपक पिंगल**— × । पत्रस० १० । आ० ६¾×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—छन्द शास्त्र । र०काल स० १७७३ भादवा सुदी २ । ले०काल स० १९०२ सावण बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० १०१५ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मदिर अजमेर । इसका दूसरा नाम पिंगल रूप दीप भाषा भी है ।

५८२३. **वाग्भट्टालकार वाग्भट्ट** । पत्र स० २१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अलकार । र०काल × । ले०काल स० १९०४ वैशाख सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १२८७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—इसकी एक प्रति और है । वेष्टन स० ४८१ है ।

५८२४. **प्रति स० २** । पत्र स० ३१ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ११२४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५८२५ **प्रतिस० ३** । पत्र स० १४ । आ० १०×५¾ इञ्च । ले० काल स० १७९७ चैत सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० २०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—पडित खुशालचन्द ने तक्षकपुर मे लिखवाया था ।

५८२६ **प्रतिसं० ४** । पत्रस० २८ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

५८२७ **प्रतिस० ५** । पत्रस० ३१ । आ० ६×४½ इञ्च । ले० काल स० १८२६ । पूर्ण । वेष्टन स० १८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—लिखापित पडित जिनदासेन स्वपठनार्थं ।

५८२८ **प्रतिस० ६** । पत्रस० १६ । आ० १२×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३२६/५५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

५८२९ **प्रतिस० ७** । पत्रस० १० । ले०काल स० १५६२ आषाढ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० ३२५/५५८ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

५८३०. **प्रतिसं० ८** । पत्र स० ७ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८५/७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५८३१ **प्रति स० ९** । पत्र स० १७ । आ० ११¾×५¾ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति संस्कृत व्याख्या सहित है ।

५८३२ **प्रति सं० १०** । पत्रस० ११ । आ० ११¾×५¾ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

५८३३ प्रति सं० ११ । पत्रस० १८ । आ० ११३/४×५३/४ इञ्च । ले०काल स० १८१९ आपाढ बुदी ९ । अपूर्ण । वेष्टनस० ४५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५८३४. प्रतिसं० १२ । पत्रस० ८६ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

५८३५ प्रति सं० १३ । पत्रस० २३ । आ० १०१/२×४१/२ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

५८३६. प्रतिसं० १४ । पत्र स० २३ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

५८३७.वाग्भट्टालकार टीका—जिनवर्द्धन सूरि । पत्रस० ४ । आ० १११/२× ५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय अलकार । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११५८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५८३८. वाग्भट्टालंकार टीका—वर्द्धमान सूरि । पत्रस० ३० । आ० १११/२×४३/४ । भाषा-सस्कृत । विषय-अलकार । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५८३९. वाग्भट्टालकार टोका—वादिराज (पेमराज सुत) । पत्र स० ५६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय अलकार । र०काल स० १७२९ । ले०काल स. १८४२ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स ४५३ ।**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—टीका का नाम कविचद्रका भी दिया है ।

५८४०. वाग्भट्टालकार टीका—× । पत्र स ३ । आ० १०३/४×५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-अलकार । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२९८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि जैन मन्दिर अजमेर ।

५८४१ वाग्भट्टालकार टीका—× । पत्र स २७ । आ० १०×४१/२ इच । भाषा-सस्कृत । विषय—अलकार । र०काल × । ले० काल स १७५१ । पूर्ण । वेष्टन स ३२२ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—निम्न प्रकार है ।

स १७५१ वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे तिथौ दशम्या चन्द्रवासरे श्री फतेहपुरमध्ये लि । ले पाठकयो शुभ । प्रति सुन्दर है ।

५८४२. वाग्भट्टालकार वृत्ति—× । पत्र स० ५७ । आ १०×५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय—अलकार शास्त्र । र०काल× । ले काल × । अपूर्ण । वेष्टन स ५१८ । **प्राप्ति स्थान**—भ दि. जैन मन्दिर अजमेर ।

५८४३. वाग्भट्टालंकार वृत्ति—ज्ञानप्रमोद वाचकगणि । पत्र स ५७ । आ १२×४३/४ इंच । भाषा—सस्कृत । विषय—अलकार । र काल स. १६८१ । ले,काल × । पूर्ण । १४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी ।

५८४४. **वृतचन्द्रिका—कृष्णकवि** । पत्र स २-४४ । आ० ९×६ इच । भाषा हिन्दी (पद्य) । विषय-छद शास्त्र । र काल × । ले काल स १८१६ । अपूर्ण । वेष्टन स ३५३ । **प्राप्ति स्थान**-भ दि जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति श्री कृष्णकवि कलानिधि कृत वृतचन्द्रिकाया मात्रावर्ण वृत्त निरूपण नाम द्वितीय प्रकरण ।

मात्रा छद एव वर्ण छद अलग २ दिये हे ।

मात्रा छद २१६ एव वर्ण छद ३८० हे ।

५८४५. **वृत्त रत्नाकार—** × । पत्र स १ । आ ९½×४½ इच । भाषा-प्राकृत । विषय—छद शास्त्र । र०काल × । पूर्ण । वेष्टन स. १९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मन्दिर दवलाना (बूदी)

५८४६. **वृत्त रत्नाकार—भट्ट केदार** । पत्र स ० ८ । आ० ९½×४ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—छद शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १८१९ माह सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १२८२ । **प्राप्ति स्थान**—भ दि जैन मन्दिर अजमेर ।

५८४७ **प्रति स० २** । पत्रस० स० ८ । आ० १० × ४½ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११९१ । **प्राप्ति स्थान**—भ दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५८४८ **प्रतिस० ३** । पत्र स० ११ । आ० १०½×५ । ले०काल स० १७७६ सावण बुदी ऽऽ । पूर्ण । वेप्टन स० ११६० । **प्राप्ति स्थान** – भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५८४९. **प्रतिस० ४** । पत्रस० ९ । आ० १०×५ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६६४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५८५० **प्रति स० ५** । पत्रस० ४ । आ० १०½×४½ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २६४-१०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५८५१. **प्रतिसं० ६** । पत्र स ० १८ । आ० १०½ × ४½ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १९६-८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

५८५२ **प्रतिस० ७** । पत्र स ० २८ । आ० ११½×५ इन्च । ले० काल × । वेष्टन स० ४५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५८५३ **प्रतिस० ८** । पत्रस० १० । आ० ११½ × ५½ इन्च । ले० काल स० १८३८ ज्येष्ठ बुदी ४ । वेष्टन स० ४५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—सवाई जयपुर के आदिनाथ चैत्यालय मे विद्वान् कृष्णदास के शिष्य जिनदास के पठनार्थ लिखा गया था ।

५८५४ **प्रतिस० ९** । पत्रस० ३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

५८५५. **प्रतिस० १०** । पत्रस० १२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७२/६०९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—छह प्रतियां और है जिनके वेष्टन स० ७३/६१० से ७८/६१६ हैं ।

५८५६. प्रतिसं० ११ । पत्र स० ५७ । आ० ११×५ इच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

५८५७. प्रति स० १२ । पत्र स० १४ । आ० १०×५ इञ्च । ले० काल स० १८२६ मगसिर सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० २५९ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

५८५८. प्रतिसं० १३ । पत्र स० १४ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १६४० माघ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ६/१९ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—हुम्बड जातीय बाई जी श्री बाई ने भट्टारक वादिचन्द्र के शिष्य ब्रह्म श्री कीर्त्तिसागर को प्रदान किया था ।

५८५९. प्रतिसं० १४ । पत्रस० १९ । आ० १० × ५ इञ्च । ले०काल स० १७२० । पूर्ण । वेष्टनस० ८० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

५८६०. प्रतिसं० १५ । पत्रस० ३७ । आ० ११ × ६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी ।

५८६१. प्रतिस० १६ । पत्र स० ४ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १२२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

५८६२. वृत्तरत्नाकर—कालिदास । पत्र स० ८ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-छन्द शास्त्र । र० काल × । ले०काल स० १८१९ । पूर्ण । वेष्टन स० ६९ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—भानपुर मे रिषभदास ने प्रतिलिपि की थी ।

५८६३. वृत्तरत्नाकर टीका—प० सोमचन्द्र । पत्र स० १४ । भाषा—सस्कृत । विषय—छद शास्त्र । र०काल स० १३२५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन ७१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—रचनाकाल निम्न प्रकार है ।

श्री विक्रमनृपकाल नदकर कृपीटयोनि कृपीटयोनि शशि सख्ये (स १३२५) समज निरजोत्सवेदिने वृत्तिरिय मुग्ध बोधा करी ।

५८६४ वृत्तरत्नाकर टीका—जनार्दन विबुध । पत्रस० २८ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—छद शास्त्र । । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी ।

विशेष—प्रशस्ति इति श्री जनार्दन विबुध विरचिताया भावार्थ दीपिकाया वृत्तरत्नाकर टीकाया प्रस्तारादिनिरूपण नामा षष्ठो अध्याय ।

५८६५ प्रतिस० २ । पत्र स० ३३ । आ० ९½×६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

५८६६. वृत्तरत्नाकर वृत्ति—समयसुंदर । पत्र स० ४२ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-छद शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । । पूर्ण । वे० स० २०५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

५८४४. वृतचन्द्रिका—कृष्णकवि । पत्र स २-४४ । आ० ६×६ इच । भाषा हिन्दी (पद्य) । विषय-छद शास्त्र । र काल × । ले काल स १८२६ । अपूर्ण । वेष्टन स ३५३ । **प्राप्ति स्थान**-भ दि जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—पुष्पिका निम्न प्रकार है।

इति श्री कृष्णकवि कलानिधि कृत वृतचन्द्रिकाया मात्रावर्ण वृत्त निरूपण नाम द्वितीय प्रकरण ।

माता छद एव वर्ण छद अलग २ दिये है।

मात्रा छद २१६ एव वर्ण छद ३८० है।

५८४५. वृत्त रत्नाकार—× । पत्र स १ । आ ६½×४½ इच । भाषा-प्राकृत । विषय—छद शास्त्र । र०काल × । पर्ण । वेष्टन स. १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मन्दिर दबलाना (बूदी)

५८४६. वृत्त रत्नाकार—भट्ट केदार । पत्र स० ८ । आ० ६½×४ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—छद शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १८१६ माह सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १२८२ । **प्राप्ति स्थान**—भ दि जैन मन्दिर अजमेर ।

५८४७ प्रति स० २ । पत्रस० स० ८ । आ० १० × ४½ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११६१ । **प्राप्ति स्थान**—भ दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५८४८ प्रतिस० ३ । पत्र स० ११ । आ० १०½×५ । ले०काल स० १७७६ सावण बुदी ऽऽ । पूर्ण । वेष्टन स० ११६० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५८४९. प्रतिस० ४ । पत्रस० ६ । आ० १०×५ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६६४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५८५०. प्रति स० ५ । पत्रस० ४ । आ० १०½×४½ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २६४-१०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५८५१ प्रतिसं० ६ । पत्र स० १८ । आ० १०½ × ४½ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६६-८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

५८५२ प्रतिस० ७ । पत्र स० २८ । आ० ११½×५ इन्च । ले० काल × । वेष्टन स० ४५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५८५३ प्रतिस० ८ । पत्रस० १० । आ० ११¾ × ५½ इन्च । ले० काल स० १८३८ ज्येष्ठ बुदी ४ । वेष्टन स० ४५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—सवाई जयपुर के आदिनाथ चैत्यालय मे विद्वान् कृष्णदास के शिष्य जिनदास के पठनार्थ लिखा गया था ।

५८५४ प्रतिस० ९ । पत्रस० ३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

५८५५. प्रतिस० १० । पत्रस० १२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७२, ६०९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—छह प्रतियाँ और है जिनके वेष्टन स० ७३/६१० से ७८/६१६ हैं ।

५८५६. प्रतिसं० ११ । पत्र स० ५७ । आ० ११×५ इच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर वोरसली कोटा ।

५८५७. प्रति स० १२ । पत्र स० १४ । आ० १०×५ इञ्च । ले० काल स० १८२६ मगमिर सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० २५६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर वोरसली कोटा ।

५८५८. प्रतिसं०१३ । पत्र स० १४ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १६४० माव सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ६/१६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—हुम्बड जातीय वाई जी श्री वाई ने भट्टारक वादिचन्द्र के शिष्य ब्रह्म श्री कीर्त्तिसागर को प्रदान किया था ।

५८५९. प्रतिसं० १४ । पत्रस० १६ । आ० १० × ५ इञ्च । ले०काल स० १७२० । पूर्ण । वेष्टनस० ८० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, वू दी ।

५८६०. प्रतिसं० १५ । पत्रस० ३७ । आ० ११ × ६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ वू दी ।

५८६१. प्रतिस० १६ । पत्र स० ४ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १२२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाना (वू दी) ।

५८६२. वृत्तरत्नाकर—कालिदास । पत्र स० ८ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-छन्द शास्त्र । र० काल × । ले०काल स० १८१६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी वू दी ।

विशेष—भानपुर मे रिषभदास ने प्रतिलिपि की थी ।

५८६३. वृत्तरत्नाकर टीका—प० सोमचन्द्र । पत्र स० १४ । भाषा—सस्कृत । विषय—छद शास्त्र । र०काल स० १३२५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन ७१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—रचनाकाल निम्न प्रकार है ।

श्री विक्रमनृपकाल नदकर कृपीटयोनि कृपीटयोनि शशि मख्ये (स १३२५) समज निरजोत्सवेदिने वृत्तिरियं मुग्ध वोधा करी ।

५८६४. वृत्तरत्नाकर टीका—जनार्दन विबुध । पत्रस० २८ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय – छद शास्त्र । । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ वू दी ।

विशेष—प्रशस्ति इति श्री जनार्दन विवुध विरचिताया भावार्थ दीपिकाया वृत्तरत्नाकर टीकाया प्रस्तारादिनिरूपण नामा पष्टो अध्याय ।

५८६५ प्रतिसं० २ । पत्र स० ३३ । आ० ६¾ × ६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी वू दी ।

५८६६. वृत्तरत्नाकर वृत्ति—समयसुंदर । पत्र स० ४२ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—छद शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । । पूर्ण । वे० स० २०५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी वू दी ।

अन्तिम पुष्पिका—इति वृत्तरत्नाकरे केदार शैव विरचिते छदसि.समयसुन्दरोपाध्याय विरचिते सुगम वृत्ती षष्ठोऽध्याय ॥७५०॥

५८६७. प्रतिसं० २ । पत्र स० ३० । आ० १० × ४ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

५८६८. वृत्तरत्नाकर वृत्ति—हरिभास्कर । पत्रस० ३७ । आ० ११×५½ इञ्च । भापा-सस्कृत । विपय छद शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १८४७ पौप सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० २६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५८६९. शब्दालकार दीपक—पौंडरीक रामेश्वर । पत्र स० १८ । आ० १०½×४½ इञ्च । भापा – सस्कृत । विपय—अलकार । र०काल × । ले० काल स० १८२७ चैत्र सुदी १५ । वेष्टन स० २१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५८७०. श्रुतवोध—कालिदास । पत्र स० ६ । आ० ११×४ इञ्च । भापा—सस्कृत । विषय—छद शास्त्र । र०काल × । ले० काल स० १८६८ । पूर्ण । वेष्टन स० १४१८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

५८७१. प्रतिसं० २ । पत्रस० ५ । आ० ६×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२६५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५८७२. प्रतिसं० ३ । पत्र स० २ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५८७३. प्रति स० ४ । पत्र स० ४ । ले०काल० × । पूर्ण । वेष्टन स० २५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

५८७४. प्रतिसं० ५ । पत्र स० ६ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल स० १८४४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७०-१४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५८७५. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ७ । आ० ९ × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६७-१०६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५८७६. प्रतिसं० ७ । पत्रस० ६ । आ० ९½× ५½ इञ्च । भापा-सस्कृत । विपय-छद । र०काल × । ले०काल स० १८३५ । पूर्ण । वेष्टन स० २४८-९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—सागपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

५८७७. प्रतिसं० ८ । पत्रस० ४ । आ० १०½× ४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

५८७८. प्रतिस० ९ । पत्रस० ६ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल स० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन स० २४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—इन्दरगढ मे प्रतिलिपि हुई थी ।

५८७६ प्रतिसं० १० । पत्रस० ४ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—भ० देवेन्द्रकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

५८८० प्रतिसं० ११ । पत्र स० ३ । आ० १०¾×४¾ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ३१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

५८८१ प्रतिसं० १२ । पत्र स० ५ । आ० १०¾ × ५ इञ्च । ले०काल स० १८८२ । पूर्ण । वेष्टनस० ८६ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूंदी) ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १८८२ आपाढ मासे शुक्ल पक्षे तृतीयायां गुरुवासरे सवाई जयपुर मध्ये हरचन्द लिपिकृत वाचकाना ॥

५८८२. प्रतिसं० १३ । पत्र स० ५ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल स० १८७७ । वेष्टन स० २०७ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५८८३. प्रतिसं० १४ । पत्रस० ६ । आ० ६½×४½ इञ्च । ले० काल स० १८७७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११० । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

५८८४. प्रति स १५। पत्रस० १५ । आ० ६×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक)

५८८५ प्रतिस० १६ । पत्रस० ४ । आ० ८½×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोक)

५८८६. प्रति स० १७ । पत्र स० ४ । आ० ६×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर कोटयो का नैणवा ।

५८८७. प्रतिस० १८ । पत्र स० ४ । आ० १०×६½ इच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१/१६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मदिर पञ्चायती दूनी (टोक)

५८८८. प्रतिसं० १९ । पत्रस० ३ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

५८८९ श्रुतबोध टीका—मनोहर शर्मा । पत्रस० १४ । आ० ७½ × ४ इञ्च । भापा—सस्कृत । विषय—छन्द शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५८९०. श्रुतवोध टीका—वरशर्म्म । पत्रस० १२ । आ० ११×६ इञ्च । भापा-सस्कृत । विषय-छन्द शास्त्र । र०काल × । ले० काल स० १९३३ वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ९-१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वडा वीसपथी दौसा ।

५८९१. श्रुतबोध टीका—हर्षकीर्त्ति । पत्र स० २० । आ० ११½×४¾ इञ्च । भापा-सस्कृत । विषय—छन्द शास्त्र । र०काल × । ले० काल स० १९०१ भादवा सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक)

५८६२. शृ गारदीपिका—कोमट भूपाल। पत्र स० ६। ग्रा० १०×८½ इन्च। भाषा—सस्कृत। विषय—रस अलकार। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १०१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बू दी)

५८६३. सस्कृत मजरी— ×। पत्र स० ६। ग्रा० १०×४ इन्च। भाषा—सस्कृत। विषय—छन्द। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० २४५-६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

विषय--नाटक एवं संगीत

५८९४. इन्द्रिय नाटक— × । पत्रस० १६। आ० १२×७½ इच। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—नाटक। र०काल स० १९५५। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

विशेष—नाटक की रचना ग्र थकार ने अपने शिष्य तिलोका पाटनी, राजवल्लभ नेमीचन्द फूलचन्द पटवारी खेमराज के पुत्र आदि की प्रेरणा से आषाढ मास की अष्टान्हिका महोत्सव के उपलक्ष मे स० १९५५ मे केकडी मे की थी। रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है।

आदि भाग—

परम पुरुष प्रमेस जिन सारद श्री वर पाय।
यथा शक्ति तुम ध्यानतै नाटक कहू बनाय ॥

× × × × ×

इक दिन मनमदिर विषै सुविधि धारि उपयोग।
प्रकट होय देखहि विविध इन्द्रीन को अनुयोग ॥

अन्तिम भाग—

जिय परणत त्रिय भेद बताई।
शुभ अर अशुभ बुद्ध यू गाई।
नाटक अशुभ शुभई दोय जानू।
शुद्ध कथन अनुभव हियमानू ॥
सो नाटक पूरण रस थाना,
पडित जन उपयोग लगाना।
उतपत नाटक की विध जानू।
विद्या शिष्य के प्रेम लखानू।
अष्टान्हिक उत्सव जिन राजा।
साढ मास का हुआ समाजा।
शुक्ल तिथि ग्यारस भुज पासा।
आये शिष्य नाटक करि आसा ॥
गोत पाटणी नाम तिलोका,
राजमल्ल नेमीचन्द कोका।
फूलचन्दजी हैं पटवारी,
कहे सब नाटक क्यो कहो सुखकारी ॥
खेमराज सुत वैन उचारी,
इन्द्री नाटक है उपकारी।
धर्म हेतु यह काज विचारयो,
नाना अर्थ लेय मन धारयो ॥

लाज त्याग उद्यत इस काजा,
लह्य भेद वेद न असमाजा।
पारख क्षमा करो बुधि कोरी,
हेर अर्थ कू ल्याय घटोरी ॥
नीर वू द मधि सीप समाई,
केम मुक्त नही हो प्रभुताई।
कर उपकार सुधारहु वीरा,
रति एह नहि तुम धीरा ॥७॥
कवि नाम अरु गाम वताया,
अर्द्ध दोय चौपई पर गाया।
मगल नृपति प्रजा सब साजा,
ए पूरण भयो समाजा ॥८॥
नादो चिरजीवो साधर्मी,
अन्त समाधी मिलो सतकर्मी।
धर्मवासना सब सुखदायी,
रहो अखड यू होय वढाई ॥
उगणीसो पचपन विषै नाटक भयो प्रमान।
गाव केकडी धन्य जहा रहे सदा मतिमान ॥

५८६५ ज्ञानसूर्योदय नाटक- वादिचन्द्रसूरि। पत्रस० ३७। आ० ८$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$। भाषा—सस्कृत। विषय—नाटक। र०काल स० १६४८ माघ सुदी ८। ले०काल स० १८००। पूर्ण। वेष्टन स० १२६४। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर।

५८६६ प्रति स० २। पत्रस० ४३। आ० ११ × ५$\frac{1}{2}$ इन्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १२५६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

५८६७ प्रतिस० ३। पत्रस० ३१। आ० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इन्च। ले०काल स० १८२८ आपाढ सुदी ७। पूर्ण। वेष्टनस० ८५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—केशरीसिह ने प्रतिलिपि की थी।

५८६८ प्रतिस० ४। पत्रस० ३६। आ० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इन्च। ले०काल स० १७६२ कार्त्तिक सुदी ३। पूर्ण। वेष्टनस० २४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

५८६६. प्रति स० ५। पत्र स० ३३। आ० ११ × ५ इन्च। ले० काल स० १७३० आसोज बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० ५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर दूनी (टोक)

विशेष—व्यावर नगर मे शातिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की गयी थी।

५६००. प्रति स० ६। पत्र स० ६६। आ० ६$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इन्च। ले० काल स० १८७४ माघ बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० १३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली।

विशेष—गुमानीराम के सुपुत्र जीवनराम ने लिखकर करौली के मन्दिर मे चढाया था।

५६०१. ज्ञानसूर्योदय नाटक भाषा—भागचन्द । पत्रसं० ६० । आ० १०½×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—नाटक । र० काल सं० १६०७ भादवा सुदी ७ । ले० काल सं० १६२६ ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

५६०२ प्रति सं० २ । पत्रसं० ६१ । आ० १०×५½ इञ्च । ले० काल सं० १६१६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

५६०३. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० ५१ । ले०काल सं० १६२२ । पूर्ण । वेष्टनसं० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बडा पचायती मन्दिर डीग ।

५६०४. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० १०४ । आ० १२×५½ इंच । ले०काल सं० १९१५ भादवा सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

५६०५. प्रति सं० ५ । पत्रसं० ५५ । आ० १०½×६½ इञ्च । ले० काल १६२६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर बयाना ।

५६०६ प्रति सं० ६ । पत्रसं० ८३ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल सं० १६३७ जेष्ठ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—पालमग्राम मे श्रावक अमीचन्द ने प्रतिलिपि की थी । लाला रिखवदास के पुत्र रामचन्द्र ने लिखवाया था ।

५६०७ प्रतिसं० ७ । पत्रसं० ८४ । आ० १०×६ इंच । ले०काल सं० १६४१ वैशाख सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर स्वामी बूंदी ।

५६०८. प्रतिसं० ८ । पत्रसं० ५४ । आ० १२½×८ इञ्च । ले० काल सं० १६३६ वैशाख बुदी ५ । वेष्टन सं० २६, १०८ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

५६०९. प्रतिसं० ९ । पत्रसं० ७२ । आ० १३½ × ८ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

५६१०. प्रतिसं० १० । पत्र सं० ५६ । आ० १०½ × ७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

५६११. प्रति सं० ११ । पत्रसं० ६३ ले०काल सं० १६१४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर हुण्डावालो का डीग ।

५६१२ ज्ञानसूर्योदय नाटक – पारसदास निगोत्या । पत्र सं० ७९ । आ० ११½×८½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–नाटक । र०काल सं० १६१७ वैशाख बुदी ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५६१३. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ५० । आ० ११½× ८½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५३६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

५६१४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०५ । आ० ६×६ इञ्च । ले० काल सं० १६१५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

५६१५. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० ४० । आ० १२½ × ७ इञ्च । ले०काल सं १६३४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर चौधरियान मालपुरा (टोंक) ।

५६१६ प्रति स० ५ । पत्रस० ४७ । आ० १२×५½ इन्च । ले०काल स० १६३६ (ता० २-४-१८८२) । पूर्ण । वेष्टनस०११४-८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह् (टोक) ।

विशेष—राजा सरदारसिह् के राज्य मे प्रतिलिपि हुई थी ।

५६१६. प्रति स० ६ । पत्र स० ३५ । आ० ११×८ इन्च । ले० काल स० १६३६ फागुण बुदी ७ । वेष्टन स० २२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

५६१८ ज्ञान सूर्योदय नाटक— × । पत्रस० ६७ । भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २८/१७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

५६१६ प्रतिसं० २ । पत्र स० ५७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३०/१६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

५६२०. प्रबोध चद्रोदय नाटक—कृष्णमिश्र । पत्रस० ७० । आ० १३½ ×५½ इन्च । भाषा—सम्कृत । **विशेष**—नाटक । र०काल × । ले०काल स० १७६५ । पूर्ण । वेष्टन स० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

विशेष—दीक्षित रामदास कृत सस्कृत टीका सहित है । बीच मे मूल तथा ऊपर नीचे टीका है ।

स० १७६५ वर्षे लिपिकृत वधनापुर मध्ये अविराम पठनार्थ प्रहोत (प्रोहित) उदैराम ।

५६२१. प्रतिसं० २ । पत्रस० ६८ । अ० ११×५½ इच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—इति श्री मदभट्ट विनायकात्मज दीक्षित रामदास विरचिते प्रकाशाख्ये प्रवोध चन्द्रोदय नाटक व्याख्याने जीवन्मुक्ति निरुपण नाम पष्टाक ।

५६२२. मदनपराजय—जिनदेवसूरि । पत्रस० ५२ । आ० १० × ५ इन्च । भाषा-सस्कृत । **विशेष**—नाटक । र०काल × । ले० काल स १६२८ आसोज सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनस० २५० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५६२३ प्रति सं० २ । पत्रस० ७४ । आ० ११×५ इच । ले०काल स० १८४१ वैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० ३६८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

५६२४. प्रतिस० ३ । पत्रस० ४६ । आ० ११×४½ इन्च । ले० काल स० १६०७ फाल्गुन बुदी ५ सोमवार । पूर्ण । वेष्टन स० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५६२५ प्रतिसं० ४ । पत्र स० ३५ । आ० ११ × ४½ इन्च । ले० काल स० १८०० ज्येष्ठ सुदी १२ । वेष्टन स० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—लवाण नगर के चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प० भ० महेन्द्र कीर्ति ने प्रतिलिपि कराकर स्वय ने सशोधन किया था ।

५६२६. प्रतिसं० ५ । पत्र स० ३७ । आ० ११×५ इन्च । ले०काल स० १६२६ मगसिर बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० १७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६२६ वर्षे मार्गशिर वदि ४रवौ श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कु दकु दाचार्यान्वये भ० पद्मनन्दि तत्पट्टे भट्टारक सकलकीर्ति तत्पट्टे भुवनकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक ज्ञानभूषणदेवा तत्पट्टे भट्टारक विजयकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक सुमतिकीर्तिदेवा तद्गुरु भ्राता आचार्य श्री सकलभूषण गुरूपदेशात् शिष्य ब्र० हरखा पठनार्थ भीलोडा वास्तव्य हु वडज्ञातीय दो. मूला भार्या वा पूतिलि तयो सुत धर्मभारधुरधर जिनपूजापुरदर आहारभयभैषज्यशास्त्रदानवितरणैकतत्पर जिनशासनश्रृ गार हार दो सकर भार्या सरूपदे एतेपा मध्ये दो सकरस्तेन स्वज्ञाना वरणी कर्म क्षयार्थं श्री मदन पराजय नाम शास्त्र लिखाप्य दत्त ।।

ब्रा. शिवदास तत् शिष्य पडित वीरभाग पठनार्थ ।

५६२७ प्रति स० ६ । पत्रस० ३२ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले०काल स० १६६० वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

प्रशस्ति—सवत् १६६० वर्षे मिती वैशाख मासे शुक्ल पक्षे नवम्या तिथौ रविवासरे श्री मूलसघे नद्याम्नाये सरस्वतीगच्छे कु दकु दाचार्यन्वये मडलाचार्य श्री नेमिचन्द्र जी तत्पट्टे मडलाचार्य श्री यश कीर्ति तच्छिष्य ब्रह्म गोपालदास स्तेनलिपिकृतमिद मदनपराजयाह्वय स्वात्मपठनार्थ कृसनगढ मध्ये ।

५६२८. प्रतिसं० ७ । पत्रस० ५१ । आ० १०¾ × ५ इञ्च । ले०काल स० १८४२ चैत बुदि ३ ।पूर्ण । वेष्टन स० ३२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

५६२९. प्रति स० ८ । पत्र स० ३१ । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३७ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

५६३०. प्रतिसं० ९ । पत्र स० ८६ । आ० ६×४½ इ च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

५६३१. प्रतिसं० १० । पत्र स० ५१ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५५–३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

५६३२. मिथात्व खडन नाटक– बखतराम साह । पत्र स० १८३ । भाषा-हिन्दी । विषय-नाटक । र०काल स० १८२१ पोप सुदी ५ । ले०काल स० १९१२ आसोज सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १४६ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

५६३३. प्रतिसं० २ । पत्र स० १०६ । आ० १०½ × ४¾ इञ्च । ले०काल स० १८५७ आषाढ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६–६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—तक्षिकपुर मे प० शिवजीराम ने सहजराम व्यास से लिखवाया था ।

५६३४. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १८ । आ० ६ × ६ इ च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक) ।

५६३५ प्रतिसं० ४ । पत्र स० १६ से ११६ । आ० ६½× ६ इञ्च । ले० काल स० १८४५ । अपूर्ण । वेष्टन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल टोक ।

५६३६. प्रतिसं० ५ । पत्र स० १०१ । आ० १० × ५ इञ्च । ले० काल स० १८८८ । पूर्ण । वेष्टन स० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पचायती दूनी (टोक) ।

विशेष—दूनी के जैन मन्दिर मे स० १९३६ मे हजारीलाल ने चढाया था ।

५६३७ प्रतिस० ६ । पत्रस० ६१ । आ० १० × ५½ इञ्च । ले०काल स० १८७६ प्रथम आसोज सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

विशेष—महात्मा गुमानीराम देवग्राम वासी ने तक्षकपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

५६३८ प्रतिसं० ७। पत्र स० ३६ । आ० १३×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

५६३९. प्रतिस० ८ । पत्र स० ५८ । आ० ११½×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २७० । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

५६४० प्रतिस० ९ ।पत्रस० ४५ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

५६४१ प्रतिस० १० । पत्रस० १२७ । आ० ६½×४½ इच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४६ ६७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

५६४२ प्रतिस० ११ । पत्रस० ६३ । आ० १२½ × ६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन स० ४६-३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

५६४३. प्रतिसं० १२ । पत्रस० ११५ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल स० १८६१ आषाढ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६०-५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीस पथी दौसा ।

विशेष—शुद्ध एव उत्तम प्रति है ।

५६४४. १३ । पत्र स० २८ । आ० १२×८ इञ्च । ले०काल स० १६५७ जेठ सुदी १५ । अपूर्ण। वेष्टन स० ५० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

५६४५. मिथ्यात्व खडन नाटक—× । पत्रस० २५ । आ० १२ × ८ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय—नाटक । र०काल × । ले० काल स० १६५५ । पूर्ण । जीर्ण । वेष्टनस० २०-७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

५६४६. हनुमन्नाटक—मिश्र मोहनदास । पत्र स० २७ । आ० १३×६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-नाटक । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन स० २०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष—प्रति सटीक है ।

५६४७ तालस्वरज्ञान— × । पत्र स० ६ । आ० ११ ×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सगीत । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

अतिम प्रशस्ति—इति श्री भावभट्टसगीतरामानुष्टयचन्द्रवाप्ति विरचिते व्रतमुपैष्यन्निति शत-पषस्य प्रथम श्रुति प्रभाव । विंशति पद ताला ।

५६४८. रागमाला— × । पत्रस० ५ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-राग रागनिया के नाम । र०काल— × । ले० काल × । वेष्टन स० २१२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

५६४६. रागरागिनी (सचित्र)— × । पत्र स० ३० । आ० १० × ७½ इञ्च । विषय-सगीत । पूर्ण । वेप्टन स० ३–२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—३० राग रागनियो के चित्र हैं । चित्र सुन्दर हैं ।

५६५०. रागमाला— × । पत्रस० ५ । भाषा-हिन्दी । विषय-सगीत । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

५६५१. सभाविनोद (रागमाला)—गंगाराम । पत्र स० २४ । आ० ८¾ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-सगीत । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२८४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—आदिभाग—

गावत नाचत आपही डौरु मे सब अ ग ।
नमो नाथ पैदा कहै सीस गग अरवग ॥१॥
दृष्टि न आवै अगम अति मनस्य की गम नाहि ।
विपट निकट सगही रहै बोलै घटघट माहि ॥

अ तिम—षट् राग प्रभाव कवित्त—

भैरव तै थानी विन विरद किरत जात ।
माल कोश गाये गुनी अ गन जरातु हैं ।
हिंडोर की आलापतैं हिंडोर आप झोटा लेत
दीपक गाये गुनी दीपक जरातु हैं ।
श्री मैं इह गुन प्रकट वखानत है सु को ।
रूष हसो होत फिरि हुलसात है
गगाराम कहै मेघराग को प्रभाव
इह मेघ बरसातु है ।

इति श्री सभाविनोद रागमाला ग्र थ स पूर्ण ।

५६५२. सगीतशास्त्र— × । पत्र स० ६१-६५ । आ० १२ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सगीत । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४६४/६१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

५६५३ सगीतस्वरभेद— × । पत्र स० ४ । आ० १२ × ४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय-सगीत । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४६५/६१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

—— ० ——

विषय -- लोक विज्ञान

५६५४ चन्द्रप्रज्ञप्ति— × । पत्रस० २६ । आ० १३½ × ५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र०काल × । ले०काल स० १५०३ । पूर्ण । वेष्टन स० १७७/५३६ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति पतले कागज पर है । एक पत्र पर २७ पक्तिया है ।

अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—इति चन्दपण्णत्ती सूत्र । ग्र थाग्र थ २००॥

अ तिम—श्री गधारापुर्यां प्राग्वाट् ज्ञाति मुकुटमजनिष्ट ।

जोगाक सघपति. समूल्लसद्धर्मकर्ममति ॥१॥
तस्यानुरक्त चित्तादयिताडारहीनगुणकलिता ।
तेनमोनाया सुविनयो लपामिध, समजाति समृद्ध ॥
भ्रातृ नगराज गुणि आमुक्ट गौरीप्रभृति वहुकुटु वयुत ।
राणीजाति स्या मूज्यानि पुण्यानुवधि जाते ॥३॥
प्रथिन तया बाण गगन गण भासन भासमानतानुमता ।
श्री जयचन्द्र गुरुणामुपदेशे नावगत तच्च ॥४॥
निजलक्ष्मी सुक्षेत्रे निक्षेप्तु मातृवर्द्धितोत्साह ।
लक्षानुमित ग्र थ विक्रोश लेखयान्नप ॥५॥
लेखयतिस्य श्रीमचन्द्रप्रज्ञप्तमागसूत्रमिद ।
लोचन य निधि मिताब्धे १५०३ विदुपा सततोययोगिस्तात् ॥६॥
क्रीडतस्तो राजहसाववृदिकदल पुष्करे ।
यावत्तावदिद विद्वद्वाच्य नदतु पुस्तक ॥७॥

५६५५ जम्बूदीप पण्णत्ति— × । पत्र स० १३१ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६३ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

५६५६ प्रतिस० २ । पत्रस० १६६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

५६५७. जम्बूद्वीप सघयणि—हरिभद्र सूरि । पत्रस० ६ । आ० १०×५ इच । भाषा—प्राकृत । विषय—गणित । र०काल × । ले०काल स० १६०७ आसोज सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८–१२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—सस्कृत टव्वा टीका सहित है ।

५६५८. तिलोय पण्णत्ति—आचार्य यतिवृषभ । पत्रस० ३१६ । आ० १२½×७½ इच । भाषा-प्राकृत । विषय-लोक विज्ञान । र०काल × । ले० काल स० १८१४ माघ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० २११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

विशेष—प० मेधावी कृत सस्कृत मे विस्तृत प्रशस्ति है। कामा मे प्रतिलिपि हुई थी।

५९५९. प्रतिसं० २। पत्र स० ३४६। आ० ११×५ इञ्च। ले०काल स० १७९९ वैशाख बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० १३४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर दीवान जी कामा।

विशेष—अग्रवाल ज्ञातीय नरसिंह ने प्रतिलिपि की थी। पत्र स० ३४०-३४६ तक मेघावीकृत सवत् १५१९ की विस्तृत प्रशस्ति दी हुई है।

५९६०. प्रति स० ३। पत्र स० २७। आ० ११×६½ इञ्च। ले० काल स० १७५०। पूर्ण। वेष्टन स० ५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजो कामा।

५९६१. त्रिलोक दीपक—वामदेव। पत्र स० ८६। भाषा-सम्कृत। विषय-लोक विज्ञान। र०काल ×। ले० काल स० १७९५ सावन सुदी १। पूर्ण। वेष्टनस० २८५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—प्रति सचित्र है।

५९६२ प्रतिसं० २। पत्र स० ८२। आ० १२×७½ इञ्च। ले० काल स० १७३४ कार्तिक सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन स० २१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा।

विशेष—भ० रत्नकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी। प्रति सचित्र हैं।

५९६३ प्रतिसं० ३। पत्र स० २३-७२। आ० १२ × ६ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ८१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

विशेष—सद्दृष्टिया हैं।

५९६४ प्रतिसं० ४। पत्र स० १-३२। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ८२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

५९६५ प्रतिसं० ५। पत्रस० १०१। आ० १३×६ इच। ले०काल स० १५७२। पूर्ण। वेष्टन स० १३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर।

विशेष—पत्र ४० पर एक चित्र भी है अभ्यन्तर परिपद् इन्द्र के रनिवास का चित्र है। वरुणकुमार सोमा, यम, आदि के भी चित्र हैं।

५९६६ त्रिलोक प्रज्ञप्ति टीका— ×। पत्रस० २५। आ० ११×५ इच। भाषा-प्राकृत सस्कृत। विषय-लोक विज्ञान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १४९। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—प्रति अच्छी है।

५९६७. त्रिलोक वर्णन—जिनसेनाचार्य। पत्र स० १९-५९। भाषा—सस्कृत। विषय—लोक विज्ञान। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ६१३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—हरिवश पुराण मे से है।

५९६८. त्रिलोक वर्णन— ×। पत्रस० १०। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—लोक वर्णन। र०काल ×। ले०काल स० १५३० आषाढ सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन स० १९६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)।

५९६९ त्रिलोकसार—नेमिचन्द्राचार्य। पत्रस० ६६ । आ० ११×४½ इन्च। भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल स० १६६१ । पूर्ण । वेप्टन स० ४७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति इस प्रकार है—स० १६६१ वर्षे मूलसघे भट्टारक श्री वादिभूषण गुरुपदेशात् तत् शिष्य ब्र० श्री वर्द्धमान पठनार्थं ।

५९७०. प्रति स० २ । पत्रस० १७ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६४/१८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सभवनाथ उदयपुर ।

५९७१. प्रति स० ३ । पत्रस० ७६ । आ० ११×४ इन्च । ले० काल स० १६६७ पौष बुदी १० । वेप्टन स० २५१, ६३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—श्री गिरिपुर (डूगरपुर नगर) मे श्री आदिनाथ चैत्यालय मे प्रनिलिपि हुई थी ।

५९७२ प्रतिस० ४ । पत्र स० २६ । आ० १० ×४½ इन्च । । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन स० १७१ । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५९७३ प्रतिस० ५ । पत्र स० ३-१५ । आ० १०½×४½ इन्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २६० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

विशेष—१४ यत्रो के चित्र दिये हुए है ।

५९७४ प्रतिस० ६ । पत्र स० १८ । आ० १०½×४½ इन्च । ले० काल स० १६८२ वैशाख सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर आदिनाथ (बूदी) ।

विशेष ब्रह्मचारी केशवराज ने ग्राम सालोडा मे प्रतिलिपि की थी । प्रति हिन्दी अर्थ सहित है ।

५९७५ प्रतिस० ७ । पत्र स० २२ । आ० ११ × ४½ इन्च । ले० काल स० १५१८ काती सुदी ३ । पूर्ण । वे० स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी ।

विशेष— प्रशस्ति—सवत् १५१८ वर्षे कार्त्तिक सुदी ३ मगलवारे देवसाह नयरे रावत भोजा मोकल-राज्ये श्री मूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा तस्य शिष्य महात्मा शुभचन्द्रदेव लिखापित श्री श्री नेमिनाथ चैत्यालये मध्ये । वणिक पुत्र माहराजेन वास्ते ।

५९७६. प्रतिस० ८ पत्र स० १-२० । आ० १२×५½ इन्च । ले०काल × । वेष्टन स० ७४८ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

५९७७ प्रतिस० ९ । पत्रस० २७ । आ० १४×७ इन्च । ले० काल स० १९३२ मगसिर बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनस० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी नैणवा ।

विशेष—चन्दालाल वैद ने स्वय अपने हाथ से पढने को लिखा था ।

५९७८ प्रतिस० १० । पत्र स० ६० । आ० १२×५½ इन्च । ले० काल स० १८४६ । पूर्ण । वेष्टनस० १८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है । साह रोडु सभद्रा का बेटा मनस्या ने ज्ञान विमल की प्रति से उतारा था ।

५९७९. प्रतिस० ११ । पत्र स० १०५ । आ० ६½×४½ इन्च । ले०काल स० १७८६ आसोज बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १४/१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा)

५६८०. प्रतिसं० १२ । पत्रस० ८४ । आ० १३ × ६ ३/४ इञ्च । ले० काल स० १७८६ पौष सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १४८/२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा) ।

५६८१. प्रतिस० १३ । पत्र स० २८ । आ० १३ × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—६३ शलाका के चित्र हैं ।

५६८२. प्रतिसं० १४ । पत्रस० २८ । आ० १० १/२ × ४ १/२ इ च । ले० काल स० १५३० चैत बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० २०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

विशेष— खण्डेलवाल ज्ञातीय पाटनी गोत्रोत्पन्न स० तोल्हा भार्या तोल्ही तथा उनके पुत्र खेतो पौत्र जिनदास टीला, तथा वोट्टा ने कर्मक्षय निमित्त प्रतिलिपि करवाई थी ।

५६८३. प्रतिस० १५ । पत्र स० ५१ । आ० ५ १/२ × ३ १/२ इञ्च । ले० काल स० १५२७ चैत्र बुदी १३ । पूर्ण । वे० स० १८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

५६८४. प्रतिसं० १६ । पत्रस० २६ । आ० १० १/२ × ४ १/२ इ च । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ९८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

५६८५. प्रतिसं० १७ । पत्र स० ७२ । आ० १२ १/२ × ५ इ च । ले०काल स० १६०९ । अपूर्ण । वेष्टन स० १५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति टीका सहित है किन्तु सब पत्र अस्त व्यस्त हो रहे हैं ।

५६८६ प्रतिसं० १८ । पत्र स० ८३ । आ० ११ १/२ × ४ १/२ इञ्च । ले० काल स० १५४४ । पूर्ण । वेष्टन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

५६८७ त्रैलोक्यसार सद्दष्टि— × । पत्रस० फुटकर । भाषा-प्राकृत । विषय-लोक विज्ञान । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेप्टन स० २८४-८५/२०५-२०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

५६८८. त्रिलोकसार— × । पत्र स० १७४ । आ० ११ १/२ × ४ ३/४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल स० १६५६ पौष बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ बू दी ।

विशेष— प्रशस्ति—

सवत् १६५६ पौष वदि चतुर्थी दिवसे वृहस्पतिवारे श्री मूलसघे नद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्री जिनचद्र देवा तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्री चन्द्रकीर्त्तिस्तदाम्नाये खडेलवालान्वये सा।वडा गोत्रे अवावती मध्ये राजा श्री मानसिघ प्रवर्त्तमाने साह धणराज तद्भार्ये प्रथम धणसिरि द्वितीया सुहागणि प्रथम भार्या · · ।

५६८९. प्रति स० २ । पत्रस० ६-८९ । आ० ११ १/२ × ५ १/२ इञ्च । ले० काल स० × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

५६९०. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २-३१ । आ० १० × ५ इञ्च । ले०काल स० १७५१ । अपूर्ण । वेष्टन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोक)

५९९१. प्रति स० ४ । पत्रस० १२३ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

५९९२. प्रति स० ५ । पत्रस० ९ । आ० १०×५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

५९९३. त्रिलोकसार सटीक— × । पत्र स० १० । आ० १२×८ इञ्च । भाषा—प्राकृत-सस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

५९९४ त्रिलोकसार भाषा — × । पत्र स० ३१ । आ० ९×६ इञ्च । भाषा हिन्दी गद्य । विषय—भू विज्ञान । र०काल × । ले०काल स० १८१६ ज्येष्ठ सुदी ९ । अपूर्ण । वेष्टन स० ७१ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक)

विशेष—मालवा देश के सिरोज नगर मे लिखा गया था ।

५९९५ प्रति स० २ । पत्रस० ३४-४३ । आ० १२×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बूदी)

५९९६. प्रतिस० ३ । पत्रस० ९ । आ० ११×४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

५९९७ प्रति स० ४ । पत्रस० २१ । आ० १०×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२० ।**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—त्रिलोकसार मे से कुछ चर्चाए है ।

५९९८. त्रिलोक सार— × । पत्र स० ११५ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १२२/१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—११५ से आगे के पत्र नही है ।

५९९९. त्रैलोक्यसार टीका—नेमिचन्द्रगणि । पत्रस० २२ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय लोक विज्ञान । र०काल × । ले०काल स० १५३१ आषाढ सुदी १३ । वेष्टन स० १८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६००० प्रति स० २ । पत्र स० ३८ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन स० १८६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६००१. प्रतिस० ३ । पत्रस० ८६ । आ० ११½×४ इञ्च । ले० काल स० १५८३ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—चपावती नगरी मे सोलकी राजा रामचन्द्र के राज्य मे प्रतिलिपि हुई थी ।

६००२ प्रतिस० ४ । पत्र स० ७१ । आ० १०½ × ४¾ इञ्च । ले०काल स० १५४० फागुन सुदी ३ । वेष्टन स० १८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—जोशी श्री परसराम ने प्रतिलिपि की थी ।

६००३. **प्रति स० ५** । पत्रस० ६५ । आ० १०$\frac{७}{८}$×४$\frac{१}{४}$ इञ्च । ले०काल स० १८८३ आसोज बुदी ६ । वेष्टन स० १८४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६००४. **त्रिलोकसार टीका—माधवचन्द्रत्रिविद्य** । पत्रस० १४६ । आ० १२×५$\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा-स स्कृत । विषय लोकविज्ञान । र०काल × । ले०काल स० १५८८ सावण सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६२— । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

प्रशस्ति—सवत् १५८८ वर्षे श्रावण सुदि चतुर्दशी दिने गुरुवारे श्री मूलसघे सरस्वती गच्छे वलात्कार गणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनदिस्तत्पट्टे भ० श्री सकलकीर्ति देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री भुवनकीर्ति देवास्तत्पट्टो भ० श्री ज्ञानभूषण देवा ... ... ।

स० १८२१ फागुण सुदी १० को प० सुखेण द्वारा लिखा हुआ एक विषय सूची का पत्र और है ।

६००५. **प्रतिस० २** । पत्र स० २२८ । आ० १०×४$\frac{३}{४}$ इञ्च । ले०काल स० १५५१ फागुण सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० २०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—खडेलवाल ज्ञातीय वाकलीवाल गोत्रोत्पन्न साह लाखा भार्या लखमीं के वश मे उत्पन्न नेता व नाथू ने ग्र थ की लिपि करवायी थी ।

६००६. **प्रति स० ३** । पत्रस० ६६ । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २५ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मन्दिर डीग ।

६००७. **प्रतिसं० ४** । पत्र स० ६० । आ० १२$\frac{१}{२}$ × ५$\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-लोकविज्ञान । र०काल × । ले० काल स० १७६५ फागुण वदि ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १५४ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मन्दिर करोली ।

विशेष—२ प्रतिया और हैं । नरसिंह अग्रवाल ने प्रतिलिपि की ।

६००८. **प्रतिसं० ५** । पत्र स० ८६–११७ । आ० १२$\frac{१}{२}$ × ७ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६००९. **प्रति स० ६** । पत्रस० १४५ । आ० १३×५$\frac{१}{२}$ इञ्च । ले०काल स० १७२१ । पूर्ण । वेष्टन स० १७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६०१०. **प्रति स० ७** । पत्र स० १६५ । आ० ११$\frac{१}{२}$×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—दो प्रतियो का मिश्रण है । ६० से आगे दूसरी प्रति के पत्र हैं । यह पुस्तक आचार्य त्रिभुवनचन्द के पढने की थी । प्रति प्राचीन है ।

६०११. **त्रैलोक्यसार टीका—सहस्रकीर्ति** । पत्र स० ५७ । भाषा-सस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल १७६३ । पूर्ण । वेष्टन स० २२ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मदिर डीग ।

६०१२. **त्रिलोकसार चर्चा— ×** । पत्रस० ६३ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-चर्चा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५२१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६०१३ **त्रैलोक्य दीपक—वामदेव।** पत्र स ८१। ग्रा० २०×१२ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-लोक-विज्ञान। र०काल ×। ले० काल स० १७२१ फाल्गुन सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स १७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—प्रति बडे ग्राकार की है। कोटा दुर्ग मे महाराज जगतसिंह के राज्य मे महावीर चैत्यालय मे जगसी एव सावल सोगाणी से लिखवाकर भ० नरेन्द्र कीर्ति के शिष्य वालचन्द को भेंट की थी। प्रति सचित्र है।

६०१४. **त्रैलोक्य स्थिति वर्णन**—×। पत्रस० १२। ग्रा० १२ × ५½ इन्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय—लोक विज्ञान। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी।

६०१५. **त्रिलोकसार—सुमतिकीर्ति।** पत्र स० १५। ग्रा० १२×६ इन्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—लोक विज्ञान। र०काल स० १६२७ माघ सुदी १२। ले० काल स० १८५६। पूर्ण। वेष्टन स० १६१२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६०१६. **प्रतिसं० २।** पत्रस० १३। ग्रा० १०×५ इन्च। ले०काल स० १७६३ ग्रापाढ सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन स० ४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना (बूदी)।

६०१७ **प्रतिसं० ३।** पत्र स० ११। ग्रा० १० × ४¾ इन्च। ले० काल स० १७६२ फाल्गुन सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन स० १६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

६०१८. **प्रतिसं० ४।** पत्र स० २-४५। ग्रा० ६½ × ४½ इन्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० १३७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी)।

६०१९. **प्रतिसं० ५।** पत्रस० ११। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ४१०-१५३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर।

६०२०. **त्रिलोकसार—सुमतिसागर।** पत्रस० १२६। भाषा सस्कृत। र०काल ×। ले०काल स० १७२४ वैशाख सुदी ७। पूर्ण। वेष्टनस० ८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा।

६०२१. **त्रिलोकसार वचनिका**— ×। पत्रस० ३७६। ग्रा० १२½×६¾ इच। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—लोकविज्ञान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १८२/६२। **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ कोटा।

६०२२ **त्रिलोकसार पट**— ×। पत्र स० १। ग्रा० २८ × १३ इन्च। विषय—लोक विज्ञान। र० काल ×। लेखन काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २७३-१०६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

विशेष—कपडे पर तीन लोक का चित्र हैं।

६०२३. **त्रिलोकसार**—×। पत्र स ५१। ग्रा० १२×६½ इन्च। भाषा हिन्दी। विषय-लोक विज्ञान। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १७२-७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

६०२४. **त्रिलोकदर्पण—खडगसेन।** पत्र स० १४६। ग्रा० १२ × ५½ इन्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—लोक विज्ञान। र०काल स० १७१३। ले०काल स० १८६६। पूर्ण। वेष्टन स० ११५१। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक)।

६०२५. **प्रतिसं० २** । पत्रस० २७० । आ० १० × ५ इञ्च । ले०काल स० १८१८ पौष सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० १४०७ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

६०२६. **प्रतिसं० ३** । पत्रस० १२१ । आ० १२×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल स० १८४८ पौष बुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० ३१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी) ।

६०२७ **प्रतिसं० ४** । पत्रस० ६० । आ० १०×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष—६० से आगे पत्र नही हैं ।

६०२८ **प्रतिसं० ५** । पत्र स० ११२ । आ० १०×५ इञ्च । ले० काल स० १७६८ वैशाख बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १४४ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मन्दिर करौली । इसका दूसरा नाम त्रिलौक चौपाई, त्रिलोकसार दीपक भी है ।

विशेष—स० १७६८ वर्षे वैशाख मासे कृष्ण पक्षे सप्तम्या गुरुवासरे श्री मूलसघे वलात्कार गणे सरस्वती गछे कु दकुन्दाचार्यान्वये ब्रजमडलदेशे कछवाहा गोत्रे राजा |जैतसिंघ राज्ये कामवनमध्ये । भट्टारक श्री विश्वभूषणदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री देवेन्द्रभूपणदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सुरेन्द्रभूपणदेवास्ततिसष्य पडित राजा रामेण सकलकर्मक्षयार्थं श्रीमत्त्रैलोक्यसारभापा ग्र थोय लिखित ।

अथ ढिलावटीपुर सुभस्थाने तत्र निवास कानु सोगानी जाति साहजी मोहनदास तस्य भार्या हीरा तत्पुत्र द्वौ ज्येष्ठ जगरूप तस्य भार्या अनदी तत्पुत्र भोगीराम द्वितीय जगरूपस्य भ्राता वलूए तेषा मध्ये साह जगरूपेण लिखापित स्वज्ञानावर्णी क्षयार्थं । श्रीमत्त्रिलोकदीपक नाम ग्र थ नित्य प्रणमति । सर्व ग्र थ सख्या ५००६ ।

६०२९. **प्रतिसं० ६** । । पत्र सख्या ३२० । आ० ९×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-लोकविज्ञान । ले० काल स० १७३२ । पूर्ण । वेष्टन सख्या ८८२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६०३०. **प्रतिसं० ७** । पत्र स० १५० । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । ले०काल स० १८४१ । पूर्ण । वेष्टन स ० ५ । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपथी दि० जैन मदिर नैणवा ।

६०३१. **त्रिलोकसार भाषा**— × । पत्र स० २५२ । आ० १३×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विपय-लोक विज्ञान । र० काल स० १८४१ । ले०काल स० १९४७ । पूर्ण । वेष्टन स० १६१४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

६०३२. **त्रिलोकसार भाषा**— × । पत्र स० ३५० । आ० १० × ७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय-त्रिलोक वर्णन । र०काल × । ले०काल स० १८७४ मगसिर बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ दूनी (टोक) ।

विशेष—लिखत महात्मा जयदेव वासी जोवनेर लिख्यौ सवाई जयपुर मध्ये ।

कटि कुवरी करवे डाडी, नीचे मुख अर नयण ।
इण सकट पुस्तक लिख्यौ, नीकै रखियौ सयण ।।

६०३३. **त्रिलोकसार भाषा—महापडित टोडरमल** । पत्र स० २५२ । भाषा-राजस्थानी ढू ढारी गद्य । विषय-तीन लोक का वर्णन । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ३८१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर मे विजयपाल चादवाड ने लिखवाया था ।

६०३४ **प्रति स० २** । पत्र स० १४६ । ग्रा० १२ X ६½ इन्च । ले०काल X । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ग्रग्रवाल मदिर नैरणवा ।

६०३५. **प्रति स० ३** । पत्रस० २८७ । ग्रा० १२ X ७ इन्च । ले० काल स० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन स० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बू दी ।

६०३६ **प्रति स० ४** । पत्रस० २३५ । ग्रा० ११X७½ इन्च । ले० काल स० १८८३ ग्रासोज बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १२/६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर ग्रलवर ।

६०३७. **प्रति सं० ५** । पत्र स० २८५ । ग्रा० १०½ X ७ इन्च । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

६०३८ **प्रति स० ६** । पत्रस० ३०८ । ग्रा० १४X८ इन्च । ले० काल स० १९७३ ग्रापाढ बुदी ११ । पूर्ण । वेप्टन स० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—गुलजारीलाल रुस्तमगढ जि० एटा थाना निखौली कला मे प्रतिलिपि हुई थी ।

६०३९ **प्रति स० ७** । पत्रस० ४१८ । ग्रा० ११½ X ७¾ इन्च । ले०काल स० १९२३ ग्रासोज बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टनस० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—सवाई जयपुर मे लिखा गया था । प्रति सुन्दर है ।

६०४०, **प्रति स० ८** । पत्रस० २५१ । ग्रा० १२½ X ६½ इन्च । ले०काल स० १९०३ ज्येष्ठ बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनस० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

६०४१ **प्रति स० ९** । पत्रस० २५० । ग्रा० १२ X ६ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान । र० काल X । ले०काल स० १८१६ ग्रासोज सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर भादवा ।

६०४२ **प्रति स० १०** । पत्र स० ३६४ । ग्रा० १२ X ६½ इन्च । ले० काल स० १८८३ । पूर्ण । वेष्टन स० २९-१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

प्रशस्ति—श्री मूलसघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये बागड पट्टे भ० श्री नेमिचद्र जी तत्पट्टे भ० श्री रत्नचन्द जी तत् शिष्य प० रामचन्द्र सदारा नगरे पार्श्वजिनचैत्यालये साह जी श्री वक्ताजी व्यवस्था तत् भार्या सोनाबाई इद पुस्तक दत्त ।

६०४३ **प्रति स० ११** । पत्रस० २५६ । ग्रा० १४X७ इन्च । ले०काल X । ग्रपूर्ण । वेप्टन स० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

विशेष—ग्रागे के पत्र नही हैं ।

६०४४ **प्रति स० १२** । पत्रस० ३०८ । ग्रा० १५ X ७ इन्च । ले० काल स० १९०२ भादवा बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

विशेष—मालपुरा मे लिखा गया था ।

६०४५ फुटकर सवैय्या— × । पत्र स० २२ । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-तीन लोक वर्णन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४२४-१६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६०४६ भूकप एव भूचाल वर्णन × । पत्रस० १ । आ० १०½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

६०४७ सघायणि—हेमसूरि । पत्र स० ४८ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत हिन्दी । विषय—लोक विज्ञान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३४ र । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—प्रति हिन्दी टव्वा टीका सहित है ।

६०४८ क्षेत्रन्यास — × । पत्र स० ३ । आ०१० × ६ इञ्च । भाषा- हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

६०४९ क्षेत्र समास— × । पत्र स० २३ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-लोक विज्ञान । र०काल × । ले०काल स० १४३९ । पूर्ण । वेष्टन स० २८८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

विशेष—प्रशस्ति—सवत् १४३९ वर्षे वैशाख सुदी ३ ।

— ० —

विषय -- मंत्र शास्त्र

६०५० आत्म रक्षा मत्र X । पत्र स० १ । आ० ११½ X ४¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-मत्र शास्त्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ४३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६०५१. ओंकार वचनिका— X । पत्र सख्या ५ । आ० १२½ X ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—मत्र शास्त्र । र० काल X । लेखन काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १६/१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज) ।

६०५२ गोरोचन कल्प— X । पत्र स० १ । आ० १० X ५½ इच । भाषा—हिन्दी । विषय-मत्र । र० काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टनस० ३८३-१४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६०५३ घटाकर्ण कल्प— X । पत्र स० १० । भाषा-सस्कृत हिन्दी । विषय—मत्र शास्त्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ४२१-१५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६०५४ घटाकर्ण कल्प—X । पत्र स० ६ । आ० १२ X ६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी, सस्कृत । विषय-मत्र शास्त्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० २५५-१०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—१३ यत्र दिये हुए है। यत्र एव मत्र विधि हिन्दी मे भी दी हुई है ।

६०५५ घटाकर्ण कल्प X । पत्रस० ११ । आ० १०½ X ५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-मत्र शास्त्र । र० काल X । ले०काल स० १८५० चैत सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ४२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—सवाई जयनगरे लिखित ।

६०५६. घटाकरण मत्र— X । पत्र स ६२ । आ० ६½ X ३½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-मत्र शास्त्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टनस० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

६०५७ घटाकरण मत्र विधि विधान— X । पत्र स० ६ । आ० १२ X ६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—मत्र शास्त्र । र०काल X । ले० काल स० १८१४ । पूर्ण । वेष्टन स० २७७-१०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६०५८ जैन गायत्री— X । पत्रस० १ । आ० १०½ X ४¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-मत्र शास्त्र । र० काल X । ले०काल X । वेष्टन स० ४२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६०५९ **ज्ञान मंजरी**— × । पत्रस० २८ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—मन्त्र शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०१/२२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सभवनाथ उदयपुर ।

विशेष—त्रिपुर सुन्दरी को भी नमस्कार किया गया है ।

✓६०६०. **त्रिपुर सुन्दरी यत्र**— × । पत्रस० ३ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–मन्त्र शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—यत्र का चित्र दिया हुआ है ।

६०६१. **त्रैलोक्य मोहन कवच**—। पत्रस० ३ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–मन्त्र शास्त्र । र० काल × । ले०काल × । वेष्टनस० २८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

६०६२ **त्रैलोक्य मोहनी मंत्र**— × । पत्रस० ३ । आ० ८ × ४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–मन्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १९५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

६०६३. **नवकार मत्र गाथा**— × । पत्र स० १ । आ० ९½×४½ इञ्च । भाषा–प्राकृत । विषय–मत्र । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १५५ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन मदिर उदयपुर ।

विशेष-- ३ मन्त्र और हैं । अन्तिम मन्त्र नवकार कथा का है ।

६०६४. **पूर्ण बधन मन्त्र**— × । पत्रस० ७ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय—मन्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५४६- × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६०६५. **बावन वीरा का नाम**— × । पत्र स० २ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—मन्त्र शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६०६६. **बालत्रिपुर सुन्दरी पद्धति**— × । पत्रस० ६ । आ० ११ ×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—मन्त्र शास्त्र । र० काल × । ले०काल स० १८७९ फालगुण सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मदिर उदयपुर ।

६०६७. **बीजकोष**— × । पत्र स० ४० । आ० ८½ × ७ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय—मन्त्र शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १९९३ । पूर्ण । वेष्टन स० ९८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

६०६८. **भैरव कल्प**—× । पत्रस० ५८ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-मन्त्र शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

६०६६. **भैरव पद्मावती कल्प—आ० मल्लिषेण ।** पत्र स० २३ । आ० १२ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—मन्त्र शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १८६१ जेष्ठ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १८० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूदी ।

६०७०. **प्रतिसं० २** । पत्रस० २३ । आ० १४× ७½ इञ्च । ले०काल स० १६२१ माह सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १०२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

६०७१. **प्रति स० ३** । पत्र स० २४ । आ० ११×४½ इञ्च । ले० काल स० १६८५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६५-१४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

प्रशस्ति—सवत् १६८५ वर्षे माह मासे कृष्ण पक्षे २ दिने श्री मूल सघे मोडी ग्रामे पार्श्वनाथ चैत्यालये भ० सकलचन्द्र तत्पट्टे भ० खूबचन्द तदाम्नाये ब्र० श्री जेसा तत् शिष्य आ० जयकीर्ति लिखित ।

६०७२. **मातृका निघंटु—महीधर ।** पत्रस० ४ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-मन्त्र शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६०७३ **मोहिनी मत्र**— × । पत्रस० २३ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—मन्त्र शास्त्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

६०७४. **मत्र प्रकरण सूचक टिप्पण—भावसेन त्रैवेद्यदेव** । पत्र स० ६ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—मन्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५०१- × । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

अन्तिम—इति श्री परवादिगजकेसरि वेदवादिविध्वसक भावसेन त्रैविद्यदेवेन जिनसहितया मन्त्र प्रकरण सूचक टिप्पणक परिसमाप्तं । श्री नेत्रनन्दि मुनिना लिखापित ।

६०७५ **मत्र यंत्र**— × । पत्र स० २ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-मत्र शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६०७६. **मत्र शास्त्र**— × । पत्रस० ६ । आ० ६ × ६ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-मन्त्र शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—चामुडादेवी का मन्त्र है ।

६०७७ **मत्र शास्त्र**— × । पत्रस० ६ । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-मन्त्र शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

६०७८. **मत्र शास्त्र**— × । पत्र स० २ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-मन्त्र शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर सभवनाथ उदयपुर ।

६०७६ **मत्र संग्रह** — × । पत्रस० १५ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी, सस्कृत । विषय—मत्र शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १६०५ । पूर्ण । वेष्टनस० ४६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

प्रशस्ति—सवत् १६०८ जयनगरे मूलसघे सारदा गच्छे सूरि श्री देवेन्द्रकीर्ति जी तस्य शिष्य रामकीर्ति जी प० लक्ष्मीराम, मन्नालाल, रामचन्द, लक्ष्मीचन्द, अमोलकचन्द, श्रीपाल पठनार्थं ।

६०८० **मायाकल्प**— X । पत्रस० २ । भाषा-सस्कृत । विषय–मत्र शास्त्र । र०काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ६६३ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६०८१. **यक्षिणीकल्प—मल्लिषेण** । पत्र स० ६ । भाषा —सस्कृत । विषय—मत्र शास्त्र । र०काल X । ले०काल स० १७६८ वैशाख सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

६०८२. **यत्रावली—अनूपाराम** । पत्रस० ७० । आ० ६X४ इन्च । भाषा—स स्कृत । विषय–मत्र शास्त्र । र०काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० ३०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

प्रारम्भ—

दक्षिणमूर्त्तिगुरु प्रणम्य तदीरित श्रीताडवस्था ।
यत्रावली मकमयी प्रवस्ताव्य व्याकुर्महे सज्जनरजनाय ।।
शिवताडव टीकेयमनूपाराम सज्ञिता ।
यत्रकल्पमद्रुममयी दत्तोद्वोभीष्ट सर्तात ।।२।।

६०८३. **विजय यंत्र**— X । पत्रस० १ । आ० ४X४½ इन्च । विषय—यत्र । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ८२५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—कपडे पर अङ्क ही अङ्क लिखे हैं । कोरो पर मत्र दिए हैं ।

६०८४ **विजयमत्र**—X । पत्रस० ८ । आ० ६X५½ इन्च । भाषा सस्कृत । ले० काल स० १६४१ । पूर्ण । वेष्टनस० २३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

६०८५. **विद्यानुशासन—मल्लिषेण** । पत्र स० १०२-१२६ । आ० ११X४ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—मत्र शास्त्र । र० काल X । ले०काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० ४३७/२१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६०८६ **विविध मत्र सग्रह**— X । पत्र स० १२० । भाषा—सस्कृत । विषय—मत्र शास्त्र । र०काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ४१५-१५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

विशेष—विविध प्रकार के मत्र तत्र सचित्र हैं तथा उनकी विधि भी दी हुई है ।

६०८७ **शान्ति पूजा मत्र**— X । पत्रस० ६ । आ० १०¾X ४¾ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—मत्र शास्त्र । र०काल X । ले०काल X । वेष्टनस० ४४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

६०८८. **षट् प्रकार यंत्र**—X । पत्र स० ३ । आ० १० X ५ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय—मत्र । र०काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १०६० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६०८९. **सवर्जनादि साधन—सिद्ध नागार्जुन**। पत्रस० ८६। आ० ६×४½ इन्च। भाषा—संस्कृत। विषय—मंत्र शास्त्र। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी।

अन्तिम पुष्पिका—इति श्री सिद्ध नागार्जुन विरचिते कक्षयुटे सवार्जनादि साधन पचदश पटल।

६०९०. **सरस्वती मंत्र**— ×। पत्र स० १। आ० १०½×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-मंत्र। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

६०९१. **संध्या मंत्र—गौतम स्वामी**। पत्रस० १। आ० १०½×५ इन्च। भाषा—संस्कृत। विषय—मंत्र शास्त्र। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—मंत्र संग्रह है।

६०९२. **यंत्र मंत्र संग्रह—निम्न यंत्र मंत्रो का संग्रह है**—

१ **वृहद् सिद्ध चक्र यंत्र**— ×। पत्र स० १। आ० २२½×२२½ इन्च। भाषा—संस्कृत। विषय—यंत्र आदि। र०काल ×। ले०काल स० १६१६ फागुण सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन स० १। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी नैणवा।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६१६ वर्षे फालगुन सुदी ३ गुरुवासरे आश्वनि नक्षत्रे श्रीमूलसंघे नद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये मंडलाचार्य श्री ३ धर्मकीर्त्तिस्तू शिष्य ब्रह्म श्री लाहड नित्य प्रणमति वातेनवृहत् सिद्धचक्र यंत्र लिखित।

६०९३. **२ चिंतामणि यंत्र बडा**— ×। पत्र स० १। आ० १८×१८ इन्च। भाषा-संस्कृत। विषय—यंत्र। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा।

विशेष—कपडे पर है।

६०९४. **३ धर्मचक्र यंत्र**— ×। पत्र स० १। आ० २५×२५ इन्च। भाषा—संस्कृत। र०काल ×। ले० काल स० १६७४। पूर्ण। वेष्टनस० ३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी नैणवा।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६७४ वर्षे वैशाख सुदी १५ दिने श्री ॥१॥
नागपुर मध्ये लिखापित। शुभ भवतु॥ कपडे पर यंत्र है।

६०९५ **४ ऋषि मंडल यंत्र**— ×। पत्रस० १। आ० २१×२३ इन्च। भाषा—संस्कृत। विषय—यंत्र। र०काल ×। ले०काल स० १५८५। पूर्ण। वेष्टन स० ४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नैणवा।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्री श्री श्री शुभचन्द्र सूरिभ्योनम। अथ संवत्सररेस्मिन श्री नृप विक्रमादित्य गताब्द संवत् १५८५

वर्षे कार्त्तिक वदि ३ शुभदिने श्री रिपि मडल यत्र व्रह्म अज्जू योग्य प० अर्हदासेन शिष्य प० गजमल्लेन लिखित। शुभ भवतु। कपडे पर यत्र है।

६०९६. ५ अढाई द्वीप मडल— ×। आ० ४२×४२ इञ्च। पूर्ण। प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा।

विशेष—यह कपडे पर है।

६ नदीश्वरद्वीप मंडल— ×। यह पत्र २४×२४ इञ्च का है। प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा।

विशेष—इसमे अजनगिरि आदि का आकार पुराने मडल से स० १९०६ मे वनाया गया है।

—— ० ——

विषय -- श्रृंगार एवं काम शास्त्र

६०९७. अनगरग—कल्याणमल्ल । पत्र स० ३० । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—काम शास्त्र । र०काल × । ले० काल स० १६०७ । पूर्ण । वेष्टन स० १४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६०९८ **प्रति स० २** । पत्रस० ३३ । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

विशेष—मूल के नीचे गुजराती भाषा मे अर्थ दिया हुआ है ।

६०९९. **प्रतिस० ३** । पत्र स० ४३ । ले० काल स० १७९७ । पूर्ण । वेष्टन स० ७०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

६१००. **कोकमजरी—आनद** । पत्र स० २८ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-काम शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६१०१. **कोकशास्त्र—कोकदेव** । पत्र स० ८ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-काम शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी)

विशेष—रणथभौर मे राजा भैरवसेन ने कोकदेव को बुलाया और कोकशास्त्र की रचना करवायी थी ।

६१०२ **कोकसार**— × । पत्रस० ३६ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—काम शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—सामुद्रिक शास्त्र भी दिया हुआ है ।

६१०३. **कोकसार** । पत्र स० ९ । आ० १०×९ इञ्च । भाषा हिन्दी ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २३६/९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६१०४ **प्रेम रत्नाकर**— × । पत्र स० १३-४७ तक । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—श्रृगार । र० काल × । ले० काल स० १८४८ जेष्ठ सुदी ११ । अपूर्ण । वे० स० १०८ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—इसकी पाच तरङ्ग है । प्रथम तरङ्ग नही है ।

६१०५ **विहारी सतसई—बिहारीलाल** । पत्र स० १४८ । आ० ९×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—श्रृगार । र० काल स० १७८२ कार्तिक बुदी ४ । ले० काल स० १८८२ पौष बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोक)

विशेष—विहारी सतसई की इस प्रति मे ७३५ दोहे है ।

६१०६ **प्रतिसं० २** । पत्र सं० २-४० । आ० ९×४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

६१०७ **प्रतिसं० ३** । पत्र सं० ७० । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७९८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६१०८ **बिहारी सतसई टीका**— × । पत्र सं० २७ । आ० ९×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-शृंगार वर्णन । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—पहिले मूल दोहे फिर उसका हिन्दी गद्य मे अर्थ तथा फिर एक एक पद्य मे अर्थ को और स्पष्ट किया गया है ।

६१०९. **भामिनी विलास—प० जगन्नाथ** । पत्र सं० ३ से २२ । भाषा—संस्कृत । विषय—काम शास्त्र । र०काल × । ले० काल सं० १८७९ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७६० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर ।

६११०. **प्रतिसं० २** । पत्र सं० २४ । आ० ११ × ४ इञ्च । ले० काल सं० १८-३ माह सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—सरोजपुर मे चिंतामणिपार्श्वनाथ चैत्यालय मे प० बूलचद ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

६१११. **भ्रमरगीत—मुकुंददास** । पत्र सं० ३२ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—विरह (वियोग शृंगार) । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—७५ पद्य हैं । २५ वे पत्र से उषा चरित्र है जिसके केवल १४ पद्य हैं ।

६११२ **मधुकर कलानिधि—सरसुति** । पत्र सं० ४० । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-शृंगार । र०काल सं० १८२२ चैत सुदी १ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७३ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—अंतिम प्रशस्ति तथा रचनाकाल संबंधी पद्य निम्न प्रकार हैं ।

इति श्री सारस्वत सरि मधुकर कलानिधि संपूर्णम् ।

सवत् अठारह सै बावीस पहल दिन चैत सुदी
शुक्रवार ग्रंथ उल्हास्यौ सही ।
श्री महाराना माधवेश मन कै विनोद हेत
सुरसति कीनो यह दूब ज्यो जमे नही ।।

६११३. **माधवानल प्रबन्ध—गणपति** । पत्र सं० ५२ । आ० ११ ×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी प । विषय—कथा (शृंगार रस) । र०काल सं० १५९४ श्रावण बुदी ७ । ले० काल सं० १६५३ जेठ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

६११४. **रसमंजरी**— × । पत्र सं० ७ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (प) । विषय-शृंगार रस । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६११५ **रसमजरी—भानुदत्त मिश्र** । पत्रस० ४१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—शृ गार । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—गोपाल भट्टकृत रसिक र जिनी टीका सहित है ।

६११६. **प्रति स० २** । पत्रस० ७४ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—भट्टाचार्य वेणीदत्त कृत रसिकर ज्नी व्याख्यासहित है ।

६११७. **रसराज—मतिराम** । पत्रस० १७ । आ० ६ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—शृ गार । र०कारा × । ले० काल स० १८६६ फाल्गुण सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनस० ४२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक) ।

६११८ **रसिकप्रिया—महाराजकुमार इन्द्रजीत** । पत्र स० १३८ । आ० ६ × ६ इन्च । भापा-हिन्दी । विपय-शृ गार रस । र०काल × । ले० काल स० १७५६ । पूर्ण । वे० स० ५०१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६११६ **प्रतिस० २** । पत्र स० ६-६४ । ले० काल स० १७५७ मगसिर सुदी १२ । अपूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

६१२० **प्रतिस० ३** । पत्रस० ७१ । आ० ६ ×५ इञ्च । ले०काल स० १८४५ । पूर्ण । वेष्टन स० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बू दी ।

६१२१ **शृ गार कवित्त**— × । पत्र स० ५ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विपय-शृ गार । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६१२२ **शृ गार शतक—भर्तृ हरि** । पत्र स० ६ । आ० ६× ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विपय-शृ गार रस । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स ३/१६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

विशेष—१०२ पद्य हैं ।

६१२३ **प्रतिस० २** । पत्र स० १२ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन स० ४६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६१२४ **प्रतिस० ३** । पत्र स० २० । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन स० ४६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रति टिप्पण सहित है ।

६१२५. **प्रतिस० ४** । पत्रस० ४० । आ० १०½ × ५ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन स० ४६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—श्लोक स० ५५० है ।

६१२६. सुन्दर शृंगार—महाकवि राज। पत्र स० ३२। आ० ८$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—शृंगार। र० काल ×। ले०काल स० १८८३। पूर्ण। वेष्टन स० १६१–७१। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

यह सुंदर सिंगार की पोथि रचि विचारि।
चूक्यौ होइ कछु लघु लीज्यो सुकवि सुवारि॥

इति श्रीमत् महाकविराज विरचित सुंदर सिगार संपूर्ण।

संवत् १८८३ वर्षे शाके १७४८ प्रवर्त्तमाने पौष मासे शुक्ल पक्षे तिथौ २ शनिवासरे सायकाले लिखीत।

६१२७ प्रतिसं० २। पत्र स० ७। आ० १०×५$\frac{1}{2}$ इच। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३६३-१४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर।

६१२८ प्रतिसं० ३। पत्रस० २४। आ० ६$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ३७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना बूदी।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

६१२९ प्रतिसं० ४। पत्र स० ११-६२। आ० ७×६ इञ्च। लेखन काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक)।

६१३०. प्रतिसं० ५। पत्र स० २५। आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल स० १७२८। वेष्टन स० ६१३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—अंत मे सुन्दरदास कृत बारहमासा भी है। ग्रन्थ की प्रतिलिपि मालपुरा मे हुई थी।

६१३१. सुन्दरशृंगार—सुन्दरदास। पत्र स० ४७। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी प। विषय—शृंगार। र०काल ×। ले० काल स० १८५९। पूर्ण। वे० स० ५७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—नेमिनाथ चैत्यालय मे प० विजयराम ने पूरा किया था।

६१३२. प्रति स० ६। पत्रस० ४२। आ० ८×५ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ८। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी।

—— ० ——

विषय -- रास, फागु वेलि

६१३३. अजितनाथ रास—ब्र० जिनदास। पत्र स० ४० । आ० १२ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—रास । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारभ—वस्तु छद—

अजित जिनेसर, अजित जिनेसर ।
पाय प्रणमि सुतीर्थंकर अति निरमला
मन वाछित फलदान सुभकर ।
गणधर स्वामी नमस्करू
सरस्वति स्वामिणि ध्याऊ निरभर ।
श्री सकलकीरति पाय प्रणमि
त्रिभुवन कीरति भवतार ।
रास करिसूहु निरमलो
ब्रह्म जिणदास तणिसार

भास यशोधर—

भवियण भाविइ सुगुण चग मनिधारे आनन्दु ।
अजित जिणेसर चारित्रसार कहु गुणचन्द ।।

अन्तिम—

श्री सकलकीरति गुरु प्रणमीने
मुनि भवनकीर्ति भवतार ।
रास कीधो मै निरमल
अजित जिणेसर सार ।।
पढई गुणइ जे साभलइ मनि धरि अविचल भाव ।
तेहनइ रिद्धि घर गणा पामइ शिवपुर ठामी ।।
जिण सासण अति निरमलु भवि भवि देउ मुझसार ।।
ब्रह्म जिणिदास इम वीनवेइ श्री जिणवर मुगति दातार ।

इति श्री अजित जिणनाथ रास समाप्त ।

६१३४ अमरदत्त मित्रानद रासो—जयकीर्त्ति। पत्र स० २७ । आ० १२ × ६ इन्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-रासा साहित्य । र० काल स० १६८६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—प्रति नवीन है ।

६१३५. आदिपुराण रास—ब्र० जिनदास । पत्रस० १८० । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पुराण । र०काल १५ वी शताब्दी । ले०काल स० १८३१ भादवा बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनस० ११८-५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—भट्टारक नागौर के श्री जयकीर्त्ति तत् शिष्य आचार्य श्री देवेन्द्रकीर्त्ति के समय आदिनाथ चैत्यालय अजमेर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

६१३६. प्रतिसं० २ । पत्र स० ८ । आ० १२×६½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४२८-१६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६१३७ आदिनाथ फागु—भ० ज्ञानभूषण । पत्रस० ३-१५ । आ० ११ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-फागु साहित्य । र०काल × । ले०काल × अपूर्ण । वेष्टन सं० ४८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—आचार्य नरेन्द्रकीर्ति के शिष्य ब्र० शिवदास ने लिपि की थी ।

६१३८. प्रति स० २ । पत्र स० २६ । आ० १३½×६ इञ्च । ले० काल स० १८६८ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १८६८ फागुण बुदी १४ रविवासरे श्री सलूवर नगरें मूलसघे सरस्वती गच्छे कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री १०८ श्री श्री चन्द्रकीर्ति विजयराज्ये तत् शिष्य पडित श्री गुलावचन्द जी लिखित ।

६१३६. प्रति सं० ३ । पत्र स० २८ । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७१/४५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—कुल ५०१ पद्य हैं ।

६१४०. आषाढभूतरास—ज्ञानसागर । पत्रस० १२ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

६१४१. इलायचीकुमार रास—ज्ञानसागर । पत्र स० १० । आ० ६ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र०काल स० १७१६ आसोज सुदी २ । ले० काल स० १७२८ जेठ मास । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

> सवत् १७१६ सावरमे शेपपुर मन हरखे ।
> आसोज सुदी द्वितीया दिन सारे हस्तनक्षत्र बुधवारखे ।।
> ग्यान सागर कहे ... ।

६१४२. प्रति स० २ । पत्र स० १४ । आ० ११×४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

६१४३. अ जणा रास— × । पत्रस० १४ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल स० १६०७ माघ बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना (बूदी) ।

६१४४ अंजना सुन्दरी सतीनो रास— × । पत्र स० ५-१७ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १७१३ फागुन वदि ७ । अपूर्ण । वेष्टन स० ४९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६१४५. अंबिकारास— × । पत्रस० ३ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

६१४६. कर्म विपाकरास—ब्र० जिनदास । आ० १०½ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-रास । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६-४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६१४७. करकुंडनोरास—ब्रह्म जि० दास । पत्रस० २१ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल स० १९२१ । पूर्ण । वेष्टन स० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोंक) ।

विशेष—सवत् १९२१ वर्षे भट्टारक श्री १०८ धर्म्मचद्र जी तत्सीस ब्र गोकलजी लिखीत तत् लघु भ्राता ब्र मेघजी पठनार्थ ।

६१४८ गौतमरास— × । पत्रस० ३ । आ० १०¾ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले०काल स० १८०५ । पूर्ण । वेष्टनस० १३२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अजमेर भण्डार ।

६१४९ चतुर्गति रास—वीरचन्द । पत्रस० ५ । आ० ९ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—चारगतियो का वर्णन । र०काल × । ले० काल स० १८१४ । पूर्ण । वेष्टनस० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६१५०. चारुदत्त श्रेष्ठीनो रास—भ यश कीर्ति । पत्रस० ३-४२ । आ० ९½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल स० १८७५ ज्येष्ठ सुदी १५ । ले०काल स० १९७६ । अपूर्ण । वेष्टन स० २२३ ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—श्री मूलसघे बलात्कारगणे भारतीगच्छे कुदकुदाचार्यान्वये सूरीश्वर सकलकीर्ति भुवनकीर्ति तत्पट्टे ज्ञानभूषण तत्पट्टे विजयकीर्ति तत्पट्टे शुभचन्द्र तत्पट्टे सुमतिकीर्ति तत्पट्टे गुणकीर्ति तत्पट्टे वादिभूषण तत्पट्टे रामकीर्ति तत्पट्टे पद्मनदि तत्पट्टे देवेन्द्रकीर्ति तत्पट्टे क्षेमेन्द्रकीर्ति तत्पट्टे नरेन्द्रकीर्ति तत्प विजयकीर्ति नेमिचन्द्र जी भ० चन्द्रकीर्ति पट्टे कीर्तिराम इन्ही के गच्छपति यश कीर्ति ने खडग देश मे धूलेव गाव मे आदि जिनेश्वर के धाम पर रचना की थी ।

ववेला मे भ० यश कीर्ति के शिष्य खुशाल ने प्रतिलिपि की थी ।

६१५१. चिद्रूपचिन्तन फागु— × । पत्रस० ३८ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-चिन्तन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६२५२. चपकमाला सती रास— × । पत्रस० ९ । आ० ९½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बूदी) ।

६१५३. जम्बूस्वामीरास—ब्रह्म जिनदास। पत्रस० ७३। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-राजस्थानी पद्य। विषय-कथा। र०काल ×। ले०काल स० १६२१ पौष वुदी १२। पूर्ण। वेष्टन स० ६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)।

विशेष—सवत् १६२१ वर्षे पोस वदी ११ शुक्रवासरे श्री मूलसघे सरस्वतीगछे वलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री १०८ रत्नचन्दजी तत्पट्टे भट्टारक जी श्री १०८ देवचन्द्रजी तत्पट्टे भट्टारक श्री १०८ धर्मचन्द्र जी तत् शिष्य ब्रह्म गोकल स्वहस्ते लखीता। स्व ज्ञानावर्णी कर्म्म क्षयार्थं।

५१५४. जम्बूस्वामी रास—नयविमल। पत्र स० २४। आ० ११×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-कथा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन म० ३३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

६१५५. जिनदत्तरास—रत्नभूषण। पत्र स० ३०। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-कथा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—आदिभाग निम्न प्रकार हैं—

सकल सुरासुर पद नमि नमू ते जिनवर राय
गणधरजी गोतम नमू, बहु मुनि सेवित पाय ॥१॥
सुखकर मारिग वाहनी, भगवती भवनी तार।
तेह तणा चरण कमल नमु, जे वेणा पुस्तक धार ॥२॥
श्री ज्ञानभूषण ज्ञानी नमू, नमू सुमति कीर्ति सुरिंद।
दक्षण देशनो गछपति नमु, श्री गुरु धर्मचन्द ॥३॥
एह तणा चरण कमल नमि, कहू जिनदत्तचरिउ विचार।
भवियण जनसहू सामलो, जिम होय हरिष अपार ॥४॥

अन्तिम भाग—

मूलसघ सरसतीगछि सोहामणो रे,
　　काई कुदकु दयति राय।
तिणि अनुकारी ते वलात्कारगणी,
　　जाणीएरे ज्ञान भूषण नमि पाय ॥१॥
श्री सूरिवर रे सुमति कीरति पदनमीरे
　　नमी श्री गोर ध्रमचन्द्र।
श्री जिनदत्त रास करिवा मनि उपन्नो रो,
　　काइ एक दिवासी आन द ॥

दूहा—

देवि सरस्वती गुरू नमीमि कीधी रास सार।
डणो होइ ते सावज्यो पूरो करज्यो सुविचार।
श्री हासोट नगरे सुहामणू श्री आदि जिनद भवतार।
तिणि नयरे रचना रची श्री जिन सासनि शृंगार।

आसो मास सोहामणो सुदि पचमी बुधवार ।
ए रचना पूरी करी साभलो भविजन सार ।।३।।
श्री रत्नभूपण सूरिवर कही जे वाचे जिनदतए रास ।
जिनदतनी परि सुख लही पोहोचि तेहनी आस ।।४।।
भणि भणवि ए सही लिखि लिखावि रास ।
तेह घरि नवनिधि सपजि पूजता जिन पाय ।।५।।
भवियण जन जे सांभलि रास मनोहर सार ।
श्री रत्नभूपण सूरीवर कही तेह घरि मगलाचार ।।६।।

६१५६. प्रति स० २ । पत्र स० ४० । आ० ११×४½ इन्च । ले० काल स० १६६५ । पूर्ण । वेप्टन स० ३३१-१२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—सवत् १६६५ वर्षे फाल्गुण मासे कृष्णपक्षे १२ बुधवारेण लिखितमिद जिनदत्त रास ।

६१५७. जीवधर रास—ब्रह्म जिनदास । पत्रस० ७५ । आ० ११×४ इन्च । भापा-हिन्दी । विपय-चरित्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३१८/६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—एक त्रुटित प्रति और है ।

५१५८. प्रति स० २ । पत्र स० ८० । ले० काल स० १८६५ । पूर्ण । वेष्टनस० ५०/५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—मेवाडदेश के गेगला ग्राम मे आदिनाथ चैत्यालय मे स० १८६५ मे प्रतिलिपि हुई थी ।

६१५९. जोगीरासा—जिनदास । पत्रस० ३ । आ० ११×४½ इन्च । भापा-हिन्दी (पद्य) । विपय—अध्यातम । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पाश्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

६१६०. प्रति स० २ । पत्रस० २ । आ० १०½×४½ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

६१६१. दानफलरास—ब्र० जिनदास । पत्रस० ६ । आ० ११×७ इच । भापा—हिन्दी पद्य । विपय—कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेप—लुब्धदत्त एव विनयवती कथा भाग है ।
अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति श्री दान फलचरित्रे, ब्रह्म जिनदास विरचिते लुब्धदत्त विनयवती कथा रास । १८२२ वर्षे श्रावण सुदी ११ तिथौ पठित रूपचन्दजी कस्य वाचनार्थाय ।

६१६२ द्रौपदीशील गुणरास—आ० नरेन्द्रकीर्त्ति । पत्र स० १३ । आ० ११×५ इच । भापा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल स० १६२० । पूर्ण । वेप्टन स० १८५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

६१६३. धन्यकुमार रास—ब्र० जिनदास। पत्रस० २६। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—रास। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० २०३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

६१६४. प्रतिसं० २। पत्रस० ३३। ले०काल स० १६४५। पूर्ण। वेष्टन स० ३३/५१। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

६१६५. धर्मपरीक्षारास—ब्र० जिनदास। पत्रस० ३-२८। आ० १०×४ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र०काल ×। ले० काल स० १६३५। अपूर्ण। वेष्टन स० १४। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी)।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

सवत् १६५१ वर्षे ज्येष्ठ सुदी १० स्वस्ति श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री सकलकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री भुवनकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री ज्ञानभूषणदेवा तत्पट्टे श्री विजयकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे श्री सुमतिकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री गुणकीर्तिदेवास्तदाम्नाये ब्र० जिनदास तत्पट्टे ब्र० श्री शातिदास तत्पट्टे ब्र० श्री हेमराज तत्पट्टे ब्र० श्री राजपाल तद्दीक्षिता ज्ञान विज्ञान विचक्षण वाई श्री रूडीये धर्मपरीक्षा रास ज्ञानावर्णीय कर्मक्षयार्थ पडित देवीदास पठनार्थं।

६१६६. धर्मपरीक्षारास—सुमतिकीर्ति। पत्र स० १८३। आ० ११×७ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—धर्म। र०काल स० १६२५। ले० काल स० १८३५। अपूर्ण। वेष्टन स० ४०४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

६१६७. प्रति सं० २। पत्र स० ३६। आ० १०×६ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

६१६८. प्रति स० ३। पत्र स० १७८। आ० १०×५ इञ्च। ले०काल स० १७३२ चैत्र बुदी ४। पूर्ण। वेष्टन स० १७०/१११ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर।

विशेष—अहमदावाद मे प्रतिलिपि हुई थी।

६१६९. धर्मरासो— ×। पत्र स० १०। आ० १०½×५½ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—धर्म। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बू दी।

६१७०. ध्यानामृत रास—ब्र० करमसी। पत्र स० ३२। आ० १०×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र०काल ×। ले० काल स० १९१६। पूर्ण। वे० स० २६१-११५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर।

६१७१. नवकाररास—ब्र० जिणदास। पत्रस० २। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ११६२। **प्राप्ति स्थान**-भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—णमोकार मत्र सम्वन्धी कथा है।

६१७२ **नागकुमार रास—ब्र० जिनदास** । पत्रस० ६ । आ० ११×४ इच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—रास साहित्य । र०काल १५ वी शताब्दि । ले०काल स० १८२६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

६१७३. **प्रतिसं० २** । पत्र स० ३१ । ले०काल स० १७१५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५२/१३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६१७४. **नेमिनाथरास—पुण्यरतनमुनि** । पत्रस० ३ । आ० १०×४½ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल स० १५८६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७३६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है ।

आदि भाग—

सारद पय प्रणमी करी, नेमितगा गुण हीइ धरेवि ।
रास भणु रलीयामणउ, गुण गुरुवउ गाइसू सखेवि ॥१॥
हूँ बलिहारी जादव एक, रस उरथई छउवालि ।
अपराध न मइ को कीयउ, काइ छोडइ नवयोवनवाल ॥२॥
सोरीपुर सोहामणउ, राजा समुदविजय नउ ठाम ।
शिवादेवी राणी तसु तणी, अनोप रूपइ रभ समाण ॥३॥

अन्तिम पाठ—

सजम पाल्यउ सातसइ वरस सहसनउ पूरउ पूरउ आउ ।
आसाढ सुदी आठमी मुकती पहूता जिणवरराय ॥६६॥
सवत पनरछियासिइ रास रचिउ आणी मन भाइ ।
राजगच्छ मडण तिलउ गुरु श्री नदिवर्द्धन सूरि सुपसाई ॥६७॥
प्रह उठीनइ प्रणमीयइ श्री यादवमडन गिरिनारि ।
मनवछित फल ते ते लहइ हरिपिइ जो गावइ नरनारि ॥६८॥
समुदविजय तन गुण निलउ सेव करइ जसु सुर नर वृन्द ।
पुण्य रतन मुनिवर भणइ श्री सघ सुप्रसन नेमि जिणद ॥६९ ।
श्री नेमिनाथ रास समापता ।

६१७५. **प्रतिसं० २** । पत्र स० २ । आ० ६×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६८ । **प्राप्ति स्थान** - भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६१७६. **नेमिनाथ विवाहलो—खेतसी** । पत्रस० १२ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—विवाह वर्णन । र०काल स० १६६१ सावण । ले० काल स० १७६३ कार्तिक बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

६१७७. **नेमिनाथ फागु—विद्यानदि** । पत्रस० ४० । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—फागु । र० काल स० १८१७ माघ सुदी ५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५/३३ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—प्रति बहुत सुन्दर है तथा ७६६ पद्य हैं ।

६१७८. **प्रतिसं० २।** पत्र स० ५४। ग्रा० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल स० १८३१ माघ सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० ७६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा।

६१७६ **नेमीश्वररास—ब्र० जिनदास।** पत्र स० १६५। ग्रा० ८×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–रास साहित्य। र० काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १५३/८३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर।

६१८० **परमहस रास—ब्र० जिनदास।** पत्रस० ३८। ग्रा० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय—रुपक काव्य। र० काल ×। ले० काल स० १८२६ ज्येष्ठ सुदी १०। पूर्ण। वेष्टनस० १६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मदिर उदयपुर।

६१८१. **पल्यविधान रास—भ० शुभचन्द्र।** पत्र स० ५। ग्रा० १०$\frac{1}{2}$×४ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा।

प्रारम्भ—

श्री जिनवर कर मानस करी, पल्य विधान रे
भाई कहिस्यू कर्म विपाक हर।
ए पुण्य तणु निधान रे भाई, व्योहत्परि उपवास,
पल्य तणा चेला च्यार छह छठार ॥
पाप पक दूर करि करता मक सोह ठार ॥१॥
भाद्रवा मास वदि ६ वडी सूर्य प्रभ उपवासो।
भाई उपवास पल्य तणुफल तस्य सर्व सुरासुर दासार ॥२॥

अन्तिम—

एणि परमारथ साधो, माया मोह मे वाघो ॥
शुभचन्द्र भट्टारक वोलि, शुद्धो धर्म ध्यान धरी वाघो ॥
पल्य ५ वस्तु।
छटोमद्व्रत २
मुगति दातार भणता सिव सुख सपजि।
उपजि अग आणद कद हो अनत पल्य उपवास फल
सकल विपुल निर्मल आनद कदह।
भट्टारक शुभचन्द्रमणि जे भण सिंवली रास।
अमरखेचर सकट निवार लक्ष्मी होइ तस दास ॥१॥
इति पल्य विधानरास समाप्त।

संवत् १६६० श्री मूलसघे फागण वदि ५ दिने उदयपुरे प० कानजि लिखितोय रास व्र० लाल जी पठनार्थं।

६१८२. **प्रति सं० २।** पत्र स० ६। ग्रा० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। **ले०काल** ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

६१८३. **प्रतिसं० ३** । पत्रस० ६ । ग्रा० १० × ४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३२२/१२२ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६१८४. **प्रति स० ४** । पत्र सख्या ६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३२३/१२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—पहिले पत्र के ऊपर की ग्रोर 'नागद्रा रास' नागदा जाति का रास ज्ञानभूपरण का हिन्दी मे दिया है । यह ऐतिहासिक रचना है पर ग्रपूर्ण है । केवल ग्रन्तिम २२ वा पद है ।

ग्रन्तिम—

श्री ज्ञान भूषण मुनिवरि प्रसुगिया कीधु रास मैं सारए
हवुथ जिणवरि कहीय वसुणि श्रीग्र थ
माहि रास रचु ग्रति रूवडू हवि भणि जो नर नारे ।
भणिसी भगावेजे साभले ते लहिसीइ फल विचार ।

इति नागद्रारास सम्पूर्ण ।

६१८५. **पाणीगालन रास—ज्ञानभूषण** । पत्र स० ४ । ग्रा० १० × ४½ इञ्च । भापा—हिन्दी (पद्य) । विपय-विधान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ग्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६१८६. **पोषहरास—ज्ञानभूषण** । पत्र स० २-८ । ग्रा० १०×४ इञ्च । भापा-हिन्दी । विपय-कथा । र०काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० २७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६१८७. **प्रद्युम्नरासो—ब्रह्मरायमल्ल** । पत्रस० २० । ग्रा० ११×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विपय—कथा । र०काल स ० १६२८ । ले०काल × । । पूर्ण । वेष्टन स० ४४- × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वडा वीस पथी दौसा ।

विशेष—गढ हरसौर मे ग्रन्थ रचना हुई थी ।

६१८८. **बुद्धिरास**— × ।पत्रस० १ । ग्रा० ६¾×४½ इञ्च । भापा-हिन्दी (पद्य) । विपय-विविध । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी) ।

विशेष—इसमे ५६ पद्य हैं । ग्र तिम पद्य निम्न प्रकार है—

सालिभद्र गुरु सकल्प हुए ए सवि सीख विधान ।
पांवि ते सिय सपदाए तिस घरि नवय विधान ।।५६।।

इति वुद्धिरास सपूर्ण ।

६१८९. **वाहुबलिबेलि—वीरचन्द सूरि** । पत्रस० १० । ग्रा० ११× ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विपय-कथा । र०काल × । ले०काल स० १७४४ । पूर्ण । वेष्टनस० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

६१९०. **वकवूलरास—ब्र० जिनदास** । पत्र स० ६ । ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विपय—कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ग्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—उपा० श्री गुणभूषण तत् शिष्य देवसी पठनार्थ।

६१६१. भद्रबाहुरास—ब्र०जिनदास। पत्रस० १०। आ० ११½×४½ इञ्च। भाषा–हिन्दी (पद्य)। विषय-कथा। र०काल ×।ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर।

६१६२. प्रति सं० २। पत्र स० ११। आ० ११ × ५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १८८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

६१६३. भविष्यदत्तरास—ब्रह्म जिनदास। पत्रस० ८५। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—कथा। र०काल ×। ले०काल स० १७३६ आसोज बुदी १। पूर्ण। वेष्टन स० १६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मदिर उदयपुर।

६१६४. भविष्यदत्तरास—विद्याभूषणसूरि। पत्रस० २१। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-कथा। र० काल स० १६३३ अषाढ सुदी १५। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीस पथी दौसा

६१६५. मुनि गुणरास बेलि—ब्र० गागजी। पत्र स० १०। आ० ६×४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। र० काल ×। ले० काल स० १६१४। पूर्ण। वेष्टन स० १०४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

६१६६. मृगापुत्रबेलि— ×। पत्रस० २। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बूदी)।

६१६७. यशोधर रास—ब्र०जिनदास। पत्र स० २८। आ० ११ × ५ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-रास (कथा)। र०काल ×। ले० काल×। पूर्ण। वेष्टन स० ११६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी।

६१६८. प्रतिसं० २। पत्र स० २४। आ० ११ × ६ इञ्च। ले० काल स० १८१७। पूर्ण। वेष्टन स० २०२-८३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

६१६६ प्रति स० ३। पत्र स० ४४। आ० १०½×४½ इञ्च। ले०काल स० १८२२। पूर्ण। वेष्टन स० ५६-३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

प्रशस्ति—स० १८२२ वर्षे पौष मासे शुक्ल पक्षे सोमवासरे कुशलगढ मध्ये श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुदकुदाचार्यान्वये वागड पट्टे भ० श्री १०८ रतनचन्द जी तत्पट्टे भ० श्री १०८ देवचन्द्र जी तत्पट्टे भ० श्री १०८ धर्मचन्द्र जी तत् शिष्य पडित सुखराम लिखित। श्री कल्याणमस्तु॥

६२००. प्रतिसं० ४। पत्र स० ३५। आ० १० × ४¾ इञ्च। ले० काल स० १७२६। पूर्ण। वेष्टन स० १५२-६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

६२०१ रत्नपाल रास—सूरचन्द। पत्रस० ३०। आ० ६ × ४ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-रास। र० काल स० १७३६। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० २६५-११५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

६२०२. **रामचन्द्ररास—ब्रह्म जिनदास**। पत्र स० ३८०। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा-राजस्थानी। विषय-राम काव्य। र० काल स० १५०८। ले० काल स० १८२५। पूर्ण। वेष्टन स० ६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

विशेष—

सवत् १५ अठारोतरा मागसिर मास विसाल
शुक्ल पक्ष चउरिय दिने, हस्त नक्षत्र रास कियो तिसा गुणमाल।

वस्तु बध—रास कियो २ अतिसार मनोहार।

अनेक कथा गुणी आगलो, रात तणो रास निरमल,
एक चित्त करि साभलो भाय धरी मन माहा उजल,
श्री सकलकीर्ति पाय प्रणमोने ब्रह्म जिनदास भणसे सार
पढे गुणे जो साभले तहिने द्रव्य अपार।

इति श्री रामचन्द्र महामुनीश्वर रास सपूर्ण समाप्त।

झवूवा गाव मे प्रतिलिपि की थी।

विशेष—इसका दूसरा नाम रामराम/रामसीताराम भी है।

६२०३. **रामरास—ब्र०जिनदास**। पत्रस० ४०५। आ० १२×६ इञ्च। भाषा-राजस्थानी विषय-रामकाव्य। र० काल स १५०८। ले०काल स० १७४०। वेष्टनस० ६-६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

प्रशस्ति—सवत् १७४८ शाके १६१३ वर्षे आपाढ पद मासे शुक्ल पक्षे त्रयोदशी तिथौ रविवासरे प्रजापति सवत्सरे लिखित रामराम स्वामीनो श्री देउनग्रामे शुभस्थाने श्री मूलसघे सेनगणे पुष्करगणेनाम्ना श्रीवृषभसेनाधस्य पट्टावली श्री जिनसेन भट्टारक तत्पट्टे भट्टारक श्री समन्तभद्र साह श्री अर्जुन सुत रत्नकेश लिखित भाइ श्री जयवत सा. माताप्रशाद कुटवे जन्म वस ज्ञाती बघेरवालान् गोत्र साहूल।

विशेष—इसका दूसरा नाम रामसीतारास। रामचन्द्र रास भी है।

६२०४. **रामरास—माधवदास**। पत्रस० ३६। आ० १०½ × ४ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य विषय-कथा। र०काल ×। ले०काल स० १७६८ वैशाख सुदी ७। पूर्ण। वेष्टनस० ६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

६२०५. '**रुक्मिणिहरणरास—रत्नभूषणसूरि**। पत्र सं० ३-६। आ० ११ × ५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र०काल ×। ले०काल स० १७२१। अपूर्ण। वेष्टन स० २४१/७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—ग्रन्थ का अन्तिम भाग एव प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

श्रावण वदि रे सुन्दर जाणी कि वली एकादशी रास
सूरथ माहि रे एह रचना रची जिहा आदि जिन जगदीश
जे नर ए निरे भणिसि भणावसि तेहनि घर मगलाचार
श्री रत्न भूषण सूरीवर इम कहिसी आदि जिणद जयकार।

इति श्री रुक्मिणी हरण समाप्ता।

प्रशस्ति—सवत् १७२१ वर्षे वैशाख सुदी १३ सोमे श्री सागवाडा सुभस्थाने श्री आदिनाथ चैत्यालये श्री मूलसघे सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे कु दकु दाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनदिदेवा तत्पट्टे देवेन्द्रकीर्ति तदाम्नाये श्री मुनि धर्मभूषण तत् शिष्य ब्र वाघजी लिखित ।

६२०६. **रोहिणीरास—ब्र०जिनदास** । पत्रस० २४ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—राजस्थानी । विषय-रास । र० काल × । ले०काल स० १६८२ । पूर्ण । वेष्टन स० २८५-१११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

प्रशस्ति—सवत् १६८२ वर्षे कार्तिक मासे शुक्ल पक्षे चतुर्थी सोमवासरदिने लिखितोय रास । श्री मूलसघे भट्टारक श्री ज्ञानभूषण तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्र तत्पट्टे भ० वादिचन्द्र तत्पट्टे श्री महीचन्द्रणो शिष्य घासीसाह पठनार्थ ।

६२०७ **वर्द्धमान रास—वर्द्धमानकवि** । पत्र स० २३ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र० काल स० १६६५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६२०८. **विज्जु सेठ विजया सती रास – रामचन्द** । पत्रस० २-५ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय –कथा । र०काल स० १६४२ । ले० काल स० १७४५ । अपूर्ण । वेष्टन स० १०२-६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वडा बीस पथी दौसा ।

६२०९. **व्रतविधानरासो—दिलाराम** । पत्रस० २५ । आ० १२×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र०काल स० १७६७ । ले० काल स० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन स० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरह पथी दौसा ।

विशेष—ब्राह्मण भोपतराम ने माधोपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

६२१० **प्रति स० २** । पत्रस० २४ । आ० १०×६ इञ्च । ले० काल स० १८९४ मगसिर बुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

६२११ **शिखरगिरिरास**— × । पत्रस० १३ । आ० १०½×५¾ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय— माहात्म्य । र०काल × । ले० काल स० १९०१ श्रावण सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४८० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६२१२ **शीलप्रकासरास—पद्मविजय** । पत्र स० ४९ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—सिद्धान्त । र० काल स० १७१७ । ले० काल स० १७१९ । पूर्ण । वेष्टनस० १७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बू दी) ।

६२१३ **शीलमुर्दशनरास**— × । पत्र स० १५ । आ० १०½×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल । अपूर्ण । वेष्टन स० ६९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

६२१४. **श्रावकाचाररास—जिणदास** । पत्र स० १३६ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—आचार शास्त्र । र०काल स० १६१५ भादवा सुदी १३ । ले०काल स० १७८३ माह सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १४-२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वडा बीस पथी दौसा ।

विशेष—श्रीमत काष्ठा सगे भग्रामसि वारी साह् अदेसीध भार्या अप्रुथदेभी लहोडा (लुहाडिया) गोत्रे सुत थानसिंह कर्मक्षयार्थ सामगिरपुर मध्ये श्री मल्लिनाथ चैत्यालये प० न्यास केशर सागर लिखी—आमोर का रपा ३।।) साडा त्रण वैठ्या छैंज्या ।

६२१५. **श्रीपालरास—ब्र०जिनदास** । पत्रस० ३७ । आ० १०$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{4}$ इञ्च । भाषा-राजस्थानी। विषय-काव्य । र०काल × । ले०काल स० १६१३ मगसिर वुदी १२ । वेष्टन स० ३०२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—सवत १६१३ वर्षे मगसिर वुदि १२ सनौ लख्यत वाई अमरा पठनार्थ ।

६२१६. **प्रति स० २** । पत्रस० ३३ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनस० १८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

६२१७. **प्रतिसं० ३** । पत्र स० ३६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १८८२ फागुन सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५७-३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

प्रशस्ति—सवत् १८२२ वर्षे फागुन सुदी ५ दिन गुरुवासरे नगर भीलोडा मध्ये शातिनाथ चैत्यालये भ० श्री रतनचद तत्पट्टे भ० श्री देवचन्द्र तत्पट्टे भ० श्री १०८ श्री धर्मचन्द तत् शिष्य प० सुखराम लिखित ।

६२१८. **श्रीपालरास—ब्रह्म रायमल्ल** । पत्र स० १२-४७ । आ० ६ × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-रास । र० काल स० १६३० । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

६२१९ **प्रति स० २** । पत्रस० २१ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १७५८ सावण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

६२२० **श्रीपालरास—जिनहर्ष** । पत्र स० ३१ । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—चरित्र । र०काल स० १७४२ चैत्र बुदी १३ । ले० काल स० १८१२ । पूर्ण । वेष्टन स० ७२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—झुझनू मे लिखा गया था ।

६२२१. **प्रतिसं० २** । पत्रस० ४६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६२२२. **प्रति स० ३** । पत्र स० ५६ । ले०काल स० १८६२ । पूर्ण । वेष्टनस० ५८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६२२३ **श्रुतकेवलिरास—ब्र०जिनदास** । पत्र स० ३६ । आ० ६$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल स० १७६१ फाल्गुन सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० ३७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली, कोटा ।

६२२४. **श्रेणिक प्रबन्ध रास—ब्रह्मसघजी** । पत्र स० ६३ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र०काल स० १७७५ । ले०काल स० १८५३ । पूर्ण । वेष्टन स० ४३६-१६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६२२५. श्रेणिकरास—ब्रह्म जिनदास । पत्रस० ६२ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल स० १७७० । पूर्ण । वेष्टन स० २६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति – सवत् १७७० प्रवर्तमाने अषाढ सुदी २ गुरुवासरे भ० श्री सकलकीर्ति परम्परान्वये श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे भ० श्री विजयकीर्ति विजयराज्ये श्री अमदावाद नगरे श्री राजपुरे श्री हुवड वास्तव्य हुबडज्ञातौ उत्रेस्वर गोत्रे साह श्री ५ धनराज कसनदास कोटडिया लखित ।

६२२६. प्रतिसं० २ । पत्रस० ५५ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल स० १७६० भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६२२७. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ४० । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल स० १७६८ आसोज सुदी १ । पूर्णं । वेष्टन स० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

विशेष—पत्र ३८ से पोषधरास दिया हुआ है । ले० काल स० १७६९ काती सुदी १५ है ।

६२२८. श्रेणिकरास—सोमविमल सूरि । पत्र स० २९ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र०काल स० १६०३ । ले० काल × । अपूर्णं । वेष्टन स० । ६६-९ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीस पथी दौसा ।

विशेष—२९ से आगे के पत्र नही हैं । प्रशस्ति दी हुई है ।

प्रारम्भ—

सकल ऋद्धि मगल करण, जिण चउवीस नमेवि ।
ब्रह्मा पुत्री सरसती माय पय पणमेवि ।।१।।
गोयम गणहर नइ नमु त्रिवन विणासण हार ।
सोहम स्वामि नमु सदा, जसु शाखा विस्तार ।।
सार सदा फल गुरु तणा, दुइ अविचल पट्ट ।
अनुक्रमि पचावन्न मइ, जसु नामिइ गट्टगट्ट ।।३।।
हेम विमल तणु दीपतु, श्री हेम विमल सूरिंद ।
तेह तणो चलणे नमी, हीयइ धरी आणद ।।४।।
चद परिचडती कला, लमइ जेइ नइ नामि ।
सोभाग हरिप सूरिंद वर, हरषिउ तासु प्रणामि ।।५।।
मूरख अक्षर ज कहइ, ते सवि सुगुरु पसाय ।
वर्ण मात्र जिणि सीखविउ, तेहना प्रणमु पाय ।।

वस्तु—

सफल जिणवर २ चलण वदेवि ।
देवि श्री सरसति तणा पाय कमल वहुभत्ति जुत्तउ
प्रणमी गोयम स्वामि वर सुगुरुदाय, पय कमलि रत्तउ
श्रेणिक राजा गुणनिलु निर्मल बुद्धि विशाल ।
रचि सुरासहु तेह तणु सुणिज्यो अति हरसाल ।।

ग्रन्तिम—

तप गछ नायक गणधरु एहा, सोम सुन्दर सूरि राय ।
तस पटि गछपति वेद सू एमा, सुमति सुन्दर सूरि पाय ।।
तसु शाखा मोहा करू एमा रत्नशेखर सूरिंद ।
तस पट गयग दीपावता एमा लिखिमी सागर सूरिचद ।।
सुमति साधु सूरीपद एमा, ग्रजमाल गुरु पाट ।
सोभागी सोहामणी एठा ए महा, जसु नामिइ गह गटसु
हेम परिइ जगवल्लहु एगए मा श्रें हेमविमल सूरि ।
सोभाग हरस पाट धर मा नामि सपद भूरि सु ।।
सोम विमल सूरि तास पाटि मा, पामी सु गुरु ए साय ।
श्री वीर जिनवर मघी एमा गायु श्रे णिक राज ।।
भुवन ग्राकाश हिम किरण मा सवत् १६०३ इणि ग्रहि नाणि सु ।
भादव मास सोहामणइ एमा, पडेवि चडिउ प्रमाणि ।
कुमरपाल राय थापीउ एमा कुमर गिरपुर सारसु ।
साति जिणद सुपसाउ लए मा, रचु रास उदार सु ।।७८।।
चुपई दूहा वस्तु गात मा, सुवि मिलीए तु मान सु ।
वसइ ग्रसी ग्रागला एमा, जाणु सहुइ जाण ।
ग्रधिक उछउ मइ भणउ एमा जे हुइ रास मभारि ।।
ते कवि जन सोधी करी, ग्रागम नइ ग्रनुसारि ।।७९।।
जे नर नारी गाई सउ सुणसिइ ग्राणी र ग ।
ते सुख सपद पामइ स ए मा, र ग चली परिचग ।
जा लग इ मेरु मही धरु ए, मा जा लगि इ ससि तार ।
• चउ जपु ए मा मगल जय २ कार ।।८०।।

६२२९. षट्कर्मरास—ज्ञानभूषण । पत्र स० १० । ग्रा० ८½ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

६२३० प्रतिसं० २ । पत्रस० ४ । ग्रा० १२ × ५ इच । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ बूंदी ।

६२३१. सनत्कुमार रास—ऊदो । पत्र स० ३ । ग्रा० १० × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल स० १६७७ सावण सुदी १३ । ले०काल स० १७६२ । पूर्ण । वेष्टनस० ३१६/९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—रचना का आदि ग्रन्त भाग निम्न प्रकार है ।

प्रारम्भ—

सुख कर सती सर नमु सद्गुरु सेव करू निसदीस ।
तास पसायं ग्रणमरु सिद्ध सकल मननी जगीस ।

सनत्कुमार सहामणउ उत्तम गुण मणिनउठाण ।
चक्रीसर चउथउ सही चतुर पणं सोहै सपराण।

×　　×　　×　　×

अन्तिम—

सोलहसइ सत्तरोत्तरइ सावण सुद तेरस अववार ;
उत्तराष भणे सपेपथी विरत थकी कीधउ उद्धार ।।८२।।
पासचन्द गुरु पाय नमी हरप घरीए रचीयउ रास ।
ऋपि ते ऊदौ इम कहै भणइ तिहा घरि मगल लछि निवास ।।८३।।
इति श्री सनत्कुमार रास समाप्तेति ।
सवत् सतरै सौ वासठै मेदपट्ट सुख ठाम ।
वीरमजी सुप्रसाद थी लिखत जटमल राम ।

६२३२. सीताशीलपताकागुण बेलि—आचार्य जयकीर्ति । पत्रस० ३१ । भापा–हिन्दी । विषय–कथा । र० काल स० १६०४ । ले० काल स० १६७४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५३/१४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर । यह मूल पाडुलिपि है ।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारभ—राग आसावरी—

सकल जिनेश्वर पद युगल,
　　आनि हृदय कमलि धरु तेह ।
सिद्ध समूह गुण अरोपम मनि
　　प्रणमवि परवी एह ।।१।।
सूरीवर पाठक मुनी सहु
　　आनि भगवती भुवनाधार
सरस सिद्धात समूहनि
　　जिन मुखा प्रगटी प्रतार ।।२।।
अति लो अनादि गणधर होय
　　अनि अमृत मिष्टा विस्नार ।
आणद उल्लहि सहुय वन्दवि
　　वेल्ल ज्ञान की कहि कवीसार

×　　×　　×　　×

अन्तिम—

सीता समरण जिनवर करी आनि सहु लोक प्रति कहि वाच
पर पुरुप ज्यो भि इच्छयो होय तो अगन्य प्रकट करे साच ।
इम कही जव झपलावीयु तव अगन्य गई जल थामि ।
जय जय शव्द देव उच्चरि पूजि प्रणमी सीता तणा पाय ।
सुद्ध थई गुरु की दीक्षा लेइ तप जप करी धर्म ध्यान ।
समाधि सन्यासि प्राणनि तजी स्वर्ग सोलमि थयो इन्द्र जाणि ।

सागर बावीस तरण आयसु लही सुख समुद्र मीलत ।
आगलि मुगत्य वधु वर थई सुभ अवत गुण क्रीडत ॥३१॥

दूहा—

सकलकीरति आदि सहु गुणकीर्ति गुणमाल ।
वादिभूषण पट्ट प्रगटियो रामकीर्ति विशाल ॥१॥
ब्रह्म हरखा परसादथी जयकीर्ति कही सार ।
कोट नगरि कोडामणि आदिनाथ भवनार ॥२॥
सवत् सोल चउ उत्तरि सीता तणी गुण वेल्ल ।
ज्येष्ठ सुदि तेरस बुधि रची भणी करैं गेल्ल ॥३॥
भाव भगति भणि सुणि सीता सती गुण जेह ।
जयकीरति सूरी कही सुख सू ज्यो पलहि तेह ॥४॥
सूद्ध थी सीता शील पताका ।
गुण वेल्ल आचार्य जयकीर्ति विरचिता ।

सवत् १६७४ वर्षे आषाढ सुदी ७ गुरौ श्री कोट नगरे स्वज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थ आ० **श्री जयकीर्तिना स्वहस्ताभ्यां** लखितेयं ।

६२३३. सीताहरणरास—जयसागर । पत्रस० १२६ । आ० ६×५ इच । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–कथा । र०काल स० १७३२ वैशाख सुदी २ । ले०काल स० १७४५ वैशाख सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० २३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—इस के कुल ८ अधिकार है । अन्त मे रामचन्द्र का मोक्ष गमन का वर्णन है ।

ग्र थ का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—

सकल जिनेश्वर पद नमु सारद समरू माय ।
गणधर गुरु गौतम नमु जे त्रिभुवन वदित पाय ॥१॥
महीचन्द गुरु पद नमी रामचन्द्र घर नारि ।
सीता हरण जहु कहू सामल ज्यो नरनारि ॥२॥

अन्त मे ग्रन्थ प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

रामचन्द्र मुनि केवल थइ नो सिद्ध थयो भवतार जी ।
ते गुण कहते पार न पावे समरता सौख्य अपार जी ॥१॥
मूलसघ सरसति वरगच्छे बलात्कारगण सारजी ।
विद्यानदि गुरु गोयम सरसो प्रणमू वारोवार जी ॥२॥
गधार नगरे प्रत्यक्ष अतिशय कलियुगे छै मनोहारजी ।
तेह तणे पाट मल्लिभूषण विद्याना वहिपार जी ॥३॥
लक्ष्मीचन्द्र ने अनुक्रमे जाणो लक्ष्मण पडित कायजी ।
वीरचन्द भट्टारक वाणी साभलता सुखधाम जी ॥४॥
ज्ञानभूषण तस पाटे सोहै ज्ञान तणो भडार जी ।
लाड वसे उद्योतज कीधो भव्य तणो आधार जी ॥५॥

प्रभाचन्द्र गुरू तेहने पट्टे वाणी अमी रसाल जी ।
वादिचन्द्र वादी वहु जीत्या घर सरमति गुणपाल जी ॥६॥
महीचन्द मुनिजन मनमोहन वाणी जेहे विस्तार जी ।
परवादीना मान मुकाव्या गर्वं न करे लगार जी ॥७॥
मेरुचन्द तस पाटे सोहे मोहे भवियण मन्न जी ।
व्याख्यान वाणी अमीय ममाणी साभला एके मन्नजी ॥८॥
गोर महीचन्द्र शिष्य जयसागर रच्यु सीता हरण मनोहार जी ।
नर नारी जे भण सुवासे तस घरे जय जय कार जी ।९।
हु वड वस रामा सतोषी रमादे तेहनी नार जी ।
तेह तणो पुत्र श्याम सुलक्षण पडित के मनोहार जी ॥१०॥
तेह तणे आदर सीता हरण ए कीधू मन उल्लास जी ।
साभलता गाता सुख होसी सीता सील विसाल जी ॥११॥
सवत् सत्तर बत्रीसा वरसे वैशाख सुदि वीज सार जी ।
बुधवारे परिपूर्णज रच्यु **सूरत** नयर मझार जी ॥१२॥
आदि जिणेसुर तणे प्रसादे पद्मावती पसाय जी ।
साभलता गाता ए सहुने मन मा आनन्द थाय जी ॥१३॥
महापुराण तणे अनुसारे कीधू के मनोहार जी ।
कविजन दोस म देसो कोई मोव ज्यो तमे सुखकार जी ।.१४॥
मुझ आलसूने उजमचढ्यु सारदा ये मति दीव जी ।
तेह प्रसादे ग्र थ ए कीधो श्याम दासेज सतीध जी ॥१५॥
सीता सील तणो ए महिमा गाय सहू नरनार जी ।
भाव धरी जे गाते अनुदिन तस घर मगलचार जी ॥१६॥

दूहा—

भाव घरी जे भणे सुणे सीता सील विसाल ।
जयसागर इम उच्चरे पोहचे तस मन आस ।

इति भट्टारक महीचन्द्र शिष्य ब्र० जयसागर विरचिते सीताहरणख्याने श्री रामचन्द्र मुक्ति गमन वर्णन नाम पष्ठोधिकार समाप्ता । शुभ । ग्र थाग्र थ २५५० लिखत सवत् १७४५ वैंशाख सुदी १ गुरौ ।

६२३४. प्रतिसं० २ । पत्र स० ८६ । आ० ११$\frac{1}{4}$×५ इञ्च । ले० काल स० १८२२ । पूर्ण । वेष्टन स० १९९-८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६२३५. सुकौशलरास—वेणीदास । पत्र स० १७ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १७२४ । पूर्ण । वेष्टनस० ११८-५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

अन्तिम—

श्री विश्वसेन गुरू पाय नमी,
वीनवी ब्रह्म वेणीदास ।

परम सौख्य जिहा पायीइ,
तेयु मुगति निवास ।।

इति सकोशल रास समाप्ता ,

प्रशस्ति—सवत् १७१४ वर्षे श्री माघ वदी ५ शुक्रे श्रीग्रहमदावाद नगरे श्री शीतलनाथ चैत्यालये श्री काष्टासघे नदीतट गच्छे विद्यागणे भ० रामसेनान्वये भ० श्री विद्याभूषणदेवास्तत्पट्टे भ० श्री भूषण देवास्तत्पट्टे भ० श्री चदकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री ५ राजकीर्त्तिस्तच्छिष्य ब्र० श्री देवसागरेन लिखापित कर्मक्षयार्थं ।

६२३६. **सुदर्शनरास—ब्र० जिनदास** । पत्रस० ४-१७ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—रास कथा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—ब्र० नेमिदास की पुस्तक है पडित तेजपाल के पठनार्थ लिखी गयी थी ।

६२३७. **प्रतिस० २** । पत्रस० १६ । आ० १०½×४¾ इञ्च । ले०काल स० १७२६ माह सुदी २। पूर्ण । वेष्टनस० ३०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

६२३८. **प्रतिस० ३** । पत्र स० २-२० । आ० १०½×६ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६२ ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—आचार्य रामकीर्ति जी ने ईलचपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

६२३९. **सोलहकारण रास—ब्र० जिनदास** । पत्र स० ८ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-रास । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६२४० **प्रतिस० २** । पत्र स० ६ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६१-१३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६२४१. **प्रति स० ३** । पत्र स० १० । आ० ११×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३५७-१३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६२४२. **स्थूलभद्रनुरास—उदयरतन** । पत्रस० ६ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-रास । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५६० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६२४३. **हनुमतरास—ब्र० जिनदास** । पत्रस० ४१ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-रास । र०काल × । ले० काल स० १७०५ । पूर्ण । वेष्टनस० ८१-४४ । **प्राप्ति स्थान** -दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

प्रशस्ति—सवत् १७०५ वर्षे भाद्रपद वदि द्वितीया बुधे कारजा नगरमध्ये लखीत । श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० देवेन्द्रकीर्त्ति तत्पट्टे भ० धर्मचन्द्र तत्पट्टे भ श्री धर्मभूषण त प भ देवेन्द्रकीर्त्ति त प भ० कुमुदचन्द्र त प भ श्री धर्मचन्द्र तदाम्नाये व्याघ्रेलवाल ज्ञाति पहर सोरा गोत्रे शा श्री रामा तस्य पुत्र शा श्री मेघा तस्य भार्या हीराई तयो पुत्र शा नेमा तस्य भार्या जीवाई

तयो पुत्र शा श्री शीतलमेघा द्वितीय पुत्र शा भोजराज तस्य भार्या सोनाई तयो पुत्र शा श्री मेघा ऐतेषा मध्ये श्री भोजा साक्षेण भट्टारक श्री पद्मनन्दि तच्छिस्य ब्र श्री वीरनि पठनार्थ ज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थं हनुमान रास लिखापित शुभ भूयात् ।

६२४४ प्रति सं० २ । पत्र स० ६७ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

६२४५ हनुमत कथा रास—ब्र. रायमल्ल । पत्र स० ४१ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—रास । र० काल स० १६१६ वैशाख बुदी ६ । ले० काल स० १६६१ । पूर्ण । वेष्टन स० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

विशेष—उगाही करके मिनी काती सुदी १ स० १६६१ को जयपुर मे लिखा गया ।

६२४६ प्रति स० २ । पत्रस० ४२ । आ० १२×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

६२४७. प्रति सं० ३ । पत्र स० ६-३३ । आ० १३ × ७ इञ्च । ले० काल स० १८६८ । पूर्ण । वे० स० १३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष—फागी मे प्रतिलिपि की गयी थी ।

६२४८. प्रति सं० ४ । पत्रस० ३४ । आ० १२ × ६ इच । ले० काल स० १८६८ । पूर्ण । वेष्टन स० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

विशेष – श्योबक्स ने फागी मे प्रतिलिपि की थी ।

६२४६. प्रति सं० ५ । पत्रस० १०५ । आ० × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक) ।

६२५०. प्रति सं० ६ । पत्रस० ८१ । आ० × । ले० काल × । अपूर्ण । जीर्ण । वेष्टनस० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक) ।

६२५१. प्रति स० ७ । पत्रस० ८३ । ले० काल १६२५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

६२५२. प्रति सं० ८ । पत्रस० ३७ । ले०काल स० १८८६ आसोज वदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ५३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर मे लिखा गया था ।

६२५३. प्रति स० ९ । पत्र स० ५४ । ले०काल स० १६५४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६२५४ प्रति सं० १० । पत्रस० ४४ । आ० ६×५ इञ्च । ले०काल स० १७५२ । पूर्ण । वेष्टनस० २३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

६२५५. प्रति सं० ११ । पत्रस० ८४ । आ० ८ × ६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—गुटका के आकार मे है। पत्र ७६ तक हनुमान चौपई रास है तथा आगे फुटकर पद्य हैं।

६२५६ प्रति स० १२। पत्रस० ४५। आ० ११½ × ६½ इञ्च। ले० काल स० १६१८ भादवा सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन स० १६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना।

६२५७. प्रति स० १३। पत्रस० ६७। आ० ८½ × ५½ इञ्च। ले०काल स० १८१२ चैत बुदी १४। पूर्ण। वेष्टनस० ६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना।

विशेष—वैर ग्राम मध्ये लिखित। अ तिम पाठ नही है। पद्य स० ८७० है पत्र स० ६८-७० तक पच परमेष्टी गुण स्तवन है।

६२५८. प्रति स० १४। पत्र स० ५६। आ० १०¾ × ५ इञ्च। ले० काल स० १८२६। पूर्ण। वेष्टन स० १७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली।

विशेष—हीरापुरी मे लालचन्द ने लिखा था।

६२५६ प्रति स० १५। पत्रस० ४०। आ० १०¾ × ७¾ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—२५-२६ वा पत्र नही है।

६२६० प्रति स० १६। पत्र स० ४७। आ० ६ × ५½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

६२६१. प्रति स० १७। पत्र स० ४३। आ० ११×५ इञ्च। ले० काल स० १८६२ वैशाख बुदी १४। पूर्ण। वेष्टन स० ६६/३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)।

६२६२ प्रति स० १८। पत्र स० ५६। आ० १०×६¾ इञ्च। ले० काल स० १६२८ आसोज वदी ८। पूर्ण। वेष्टन स० ४५। **प्राप्ति स्थान**—सौगाणी दि० जैन मदिर करौली।

विशेष—वगालीमल ने देवाराम से करौली नगर मे प्रतिलिपि करवाई थी।

६२६३. प्रति स० १६। पत्रस० ७०। आ० १२×४ इञ्च। ले०काल स० १८३७। पूर्ण। वेष्टनस० ४४६-३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—गाव स्वामी मध्ये लिखित। प० जसरूपदास जी।

६२६४. प्रति स० २०। पत्रस० ७६। आ० ७½ × ५½ इञ्च। ले०काल स १८१५। पूर्ण। वेष्टनस० २०। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खडेलवाल मदिर उदयपुर।

— ० —

विषय -- इतिहास

६२६५. उत्सव पत्रिका— X । पत्रस० २ । ग्रा० ६$\frac{3}{2}$ X ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पत्र लेखन इतिहास । र०काल X । ले०काल स ० १६३० । पूर्ण । वेष्टनस० २१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

विशेष—सागत्वपुर की पत्रिका है ।

६२६६. कुन्दकुन्द के पांच नामो का इतिहास— X । पत्र स० ६ । ग्रा० ११ X ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । र०काल X । ले० काल १९६६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६०/६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेष—इन्दौर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

६२६७ कुलकरी— X । पत्रस० २४ । ग्रा० १० X ५$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—कुलकरो का इतिहास । र० काल X । ले० काल स० १८०५ कार्त्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १२०-५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

विशेष—उदयपुर मे लिखा गया था ।

६२६८ गुरावली— X । पत्रस० २६ । ग्रा० १३ X ५$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—इतिहास । र० काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टनस० १८५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६२६९. गुर्वावलीसज्भाय— X । पत्र स० १० । ग्रा० १० X ४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—इतिहास । र०काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

६२७०. ज्ञातरास—भारामल्ल । पत्रस० २४ । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र०काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टनस० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन वडा पचायती मन्दिर डीग ।

विशेष—सघाधिपति देवदत्त के पुत्र भारामल्ल थे ।

६२७१ चौरासी गोत्र विवरण— X । पत्र स० ८ । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र० काल X । ले०काल १८६६ । पूर्ण । वेष्टन स० १०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६२७२ प्रतिसं० २ । पत्र सख्या ६ । ग्रा० ११ X ९ इञ्च । ले०काल X । पूर्ण । वेप्टन स० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—चौरासी गोत्र के अतिरिक्त वश, गाव व देवियो के नाम भी हैं ।

६२७३. चौरासी जयमाल (माला महोत्सव)—विनोदीलाल । पत्र स० २ । ग्रा० ११X५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र०काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ६१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६२७४. चौरासीजाति जयमाल— ×। पत्रस० ७। ग्रा० ७½×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विपय—इतिहास। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १८९ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

६२७५ चौरासी जाति की विहाडी—× । पत्रस० ३। ग्रा० १०½×५ इच। भाषा—हिन्दी। विपय—इतिहास। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ६७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—चौरासी जातियो की देवियो का वर्णन है।

६२७६. जयपुर जिन मदिर यात्रा—प० गिरधारी। पत्र स० १३। ग्रा० ९½×६ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विपय—यात्रा वर्णन (इतिहास)। र०काल ×। ले० काल स० १९०८। पूर्ण। वेष्टन स० ५३६। **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६२७७ तीर्थमाला स्तवन— ×। पत्रस० ३। ग्रा० १०⅞ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—इतिहास। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर उदयपुर

विशेय—स० १५२९ वर्षे माघ वुदी ६ दिने शुक्रवारे लिखित।

६२७८. निर्वाण काण्ड गाथा— ×। पत्रस० ४। ग्रा० ११×५ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—इतिहास। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ११-१६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

६२७९. प्रतिसं० २। पत्रस० २। ग्रा० ११½×६ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

६२८०. निर्वाण काड भाषा—भैया भगवतीदास। पत्रस० ५। ग्रा० ११×५⅞ इञ्च। भापा—हिन्दी पद्य। विपय—इतिहास। र०काल स० १७४१। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा।

विशेष—प्राकृत निर्वाण काण्ड की भापा है।

६२८१ पद्मनदिगच्छ की पट्टावली—देवाब्रह्म। पत्र स० ७। ग्रा० ११×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विपय—इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ३४२/४१३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सभवनाथ उदयपुर।

विशेष—रचना निम्न प्रकार है—

विकसी भव्य पकज दर्श हथि गुरु इन्द्र समान ए जाणीएजु।
नदीनाथ मुतापति पुत्र विकट कुशिल हथि विस ग्राणीएजु।
अज्ञान कि अध निकदन कु एह ज्ञान कि भानु वरवाणी एजु।
देवजी ब्रह्म वाणी वदि गछ नायक पद्मनदि जग मानियेजु ॥१॥
व्याकरण छद अलक्षिति काव्य सुतर्क पुराण सिद्धात परा।
नवतेज महाव्रत पचसमिति कि ग्राइपरे चरणा अमरा।
ग्रोर ध्यान कि ज्ञान गुमान नहि तजि लाभ लीय तरुणा चीवरा।
रामकीर्ति पट्टोधर पद्मनदि कहि देवजी ब्रह्म सेवो सुनरा ॥२॥

वादि गजेन्द्र तिहा जु भडि जिहा पद्मनदि मृगरजन गजे ।
कौरव किचक त्याहाजु लडि ज्यहा भीम महा भड हाथ न वजे ।
रामकीर्ति के पट्टपयोज प्रवोदनकु रविराज सुरजे ।
देवजी ब्रह्मवदि गच्छनायक सारदागच्छ सदा ए छाजे ।।३।।
वादि कुमत फणि दरवागापति वादिकरी सर्भमिह भयो है ।
वादि जलद समिरण ए गुरु वादिय वृ द को भेद लयो है ।
राय श्री सघ मिलि पद्मनदि कु रामकीर्ति को पट्ट दयो है ।
ब्रह्म भणे देवाजी गुरुजी याकू इन्द्र नारद प्रणाम कियो है ।।४।।
राजगुरु पद्मनदि समोवर मेघ कछु नहि पावतहि ।
ताको निरतर चाहत चातक तोकु पाट जिन धावतहि ।
मेघ निरन्तर वरषत निरतु भारथि दानकि गाजतुहि ।
ओ दान समिमुख सामतु गोर कल्याण मुनि गुण गावतहि ।।५।।
श्रीमूलसघ सणगार पद्मनदि भट्टारक सकलकीर्ति गुरुसार ।
भुवनकीर्ति भवतारक ज्ञानभूषण गुरुचग विजयकीर्ति सुभचन्द्र ।
सुमतिकीर्ति गुणकीर्ति बदो भवियण मनरगह तसपट्टे गुरु जाणिय ।
श्रीवादीभूषण यतिराय पु जराज इमि उच्चइ गुरु सेविनरपति पाय ।।६।।

पचमहाव्रतसार पचसमिति प्रतिपालि ।
गुप्तित्रय सुखकार मोह मोहा दूरि टारिन ।
पचाचार विचार भेद विज्ञान सुजाणे ।
आगम न्याय विचारसार सिद्धात वखाणे ।
गुणकीर्ति पट्टे निपुण श्री वादिभूपण वदो सदा ।
पु जराज पडित इम उच्चरे गुरुचरण सेवो मुदा ।
सवल निसाण घनाघन गर्जित माननी लाद जु मङ्गल गायो ।
विद्या के तेज रुदे धरि हेत कु उरवादिपाय वदन आयो ।
मेघराज के नाद जसि गुजरात तास जुगमानी को मान गमायो ।
वदे धर्मभूषण पद्मनदि गुरु पाटण माहि जुसामो करायो ।
एकरतावर पिर रहे करणी कथनी एक उर धरे ।
एक लोभ के कारण चारण से एक मत्र धारि ।
म्येहमत फिरिहि एक स्यादिक नाम विकलडरि ।
यहे धर्मभूपण पद्मनदि निकलक कु भूप प्रणाम करिहि ।।८।।

इसके आगे निम्न पाठ और हैं—

नेमिपच्चीसी	कल्याणकीर्ति	हिन्दी
चौवीस तीर्थकर स्तुती	,,	,,

६२८२. पट्टावली—× । पत्रस० ५ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—इतिहास । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी वू दी ।

विशेष—श्वेताम्वर पट्टावली है। सवत् १४६१ जिनवर्द्धन सूरि तक पट्टावली दी हुई है।

६२८३. **प्रतिसं० २**। पत्र स० २४। आ० ६½×५ इञ्च। ले० काल स० १८३० सावन बुदी १२। पूर्ण। वेष्टन स० १३६ र। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

विशेष—श्वेताम्वर पट्टावली है।

६२८४ **प्रतिष्ठा पट्टावली**— ×। पत्रस० १८। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १९१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक)

६२८५. **भट्टारक पट्टावली**— ×। पत्र स० ४। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—इतिहास। र०काल ×। ले० काल ×। वेष्टन स० ६७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर।

विशेष—स० १०४ भद्रावहु से लेकर स० १८८३ भ० देवेन्द्रकीर्ति के पट्ट तक का वर्णन है।

६२८६. **भट्टारक पट्टावली**— ×। पत्र स० ३०। आ० ९॥ × ४ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—इतिहास। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४३४। **प्राप्ति स्थान**—समवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

विशेष—सवत् १६६७ से स० १७५७ तक के भट्टारको वर्णन है।

६२८७ **भट्टारक पट्टावलो**— ×। पत्रस० २-८। आ० १० × ४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३८०-१४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

६२८८. **भट्टारक पट्टावली**—। पत्रस० १५। आ० १०×७ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय-इतिहास। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २८०-१११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

६२८९. **मुनिपट्टावली**— ×। पत्र स० ५५। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १५४८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

विशेष—सवत् ४ से सवत १८४० तक की पट्टावलि है।

६२९०. **प्रबधचिन्तामणि—राजशेखर सूरि**। पत्रस० ६०। आ० १४×४ इञ्च। भाषा-सस्कृत गद्य। विषय-इतिहास। र०काल ×। ले० काल स० १४०५ ज्येष्ठ सुदी ७। पूर्ण। वेष्टनस० १२४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—ढिल्ली (देहली) मे मुहम्मद शाह के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई थी।

६२९१ **प्रवध चिन्तामणि—आ० मेरूतुंग**। पत्रस० ४९। आ० १४×४ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-इतिहास। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १२२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

६२९२ **महापुरुष चरित्र—आ० मेरूतुग**। पत्रस० ५२। आ० १४×४ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय-काव्य (इतिहास)। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १२१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

६२६३ **यात्रा वर्णन**— × । पत्रस० ११ । आ० ११ × ७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-वर्णन । र० काल स० १६०६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६-४८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)।

विशेष—गिरनार, महावीर, चौरासी, सौरीपुर आदि क्षेत्रो की यात्रा का वर्णन एव उनकी पूजा बनाकर अर्घ आदि चढाये गये हैं।

६२६४ **यात्रावली**— × । पत्र स० ४ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय—इतिहास । र० काल × । ले०काल स० १६३२ । पूर्ण । वेष्टन स० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)।

विशेष—१६३२ भादवा सुदी ६ की यात्रा का वर्णन है।

६२६५ **विक्रमसेन चउपई—विक्रमसेन** । पत्र स० ५७ । आ० १०½ × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय-इतिहास । र० काल स० १७२४ कार्तिक । ले० काल स० १७५६ मगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १२६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६२६६ **विरदावली**— × । पत्र स० ५ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)।

विशेष—इसमे दिगम्बर भट्टारको की पट्टावली दी हुई है।

६२६७ **विरदावली**— × । पत्र स० ७ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—इतिहास । र०काल × । ले० काल स० १८३७ मार्गशीर्ष सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० २५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—सूरतिबिंदर (सूरत) मे लिखा गया था।

६२६८ **वृहद् तपागच्छ गुरावली**— × । पत्र स० १४ । आ० १०½ × ४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत । विषय-इतिहास । र०काल × । ले०काल स० १४६२ चैत्र सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर।

विशेष—१४६६ तक के तयागच्छ गुरुओ का नाम दिया हुआ है। मुनि सुन्दर सूरि तक है।

६२६६ **वृहत्तयागच्छ गुर्वावली—मुनि सुन्दर सूरि** । पत्र संख्या ३ से ५५ । भाषा-सस्कृत । विषय-इतिहास । र०काल × ले०काल स० १४६० फागुन सुदी १० । अपूर्ण । वेष्टन स० ४६१ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६३०० **शतपदी**— × । पत्र स० २१-२४ । आ० १२ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । र०काल × । ले०काल × । विषय-इतिहास । वेष्टन स० ७०५ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर

विशेष—श्वेताम्बर आचार्यो के जन्म-स्थान, जन्म-सवत तथा पट्ट सवत् आदि दिये हैं। सं० ११३६ से १४५४ तक का विवरण है।

६३०१ **श्वेतांबर पट्टावली**— × । पत्र स० ५ । आ० १० × ४½ इन्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-इतिहास । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३०० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) ।

विशेष—महावीर स्वामी से लेकर विजयरत्न सूरि तक ६४ साधुओं का पट्ट वर्णन है ।

६३०२ **श्रुतस्कंध—ब्र० हेमचन्द्र** । पत्र स० १० । आ० १०×४ । इन्च । भाषा-प्राकृत । विषय-इतिहास । र० काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६३०३ **प्रति स० २** । पत्र सं० ५ । आ० १०½×४¾ । भाषा-प्राकृत । विषय-इतिहास । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६३०४. **प्रति स० ३** । पत्रस० ५ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २५७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—प० सुरजन ने प्रतिलिपि की थी ।

६३०५. **प्रति सं० ४** । पत्रस० ५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर उदयपुर ।

६३०६. **श्रुतस्कध सूत्र**— × । पत्रस० २९ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-इतिहास । र०काल × । ले० काल स० १६६८ चैत्र सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनस० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बैर ।

विशेष— चपावती नगर मे ऋषि मनोहरदास ने प्रतिलिपि की थी ।

६३०७ **श्रुतावतार**— × । पत्र स० ५ । आ० ११ × ५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय—इतिहास । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर दूनी (टोंक) ।

६३०८ **श्रुतावतार** — × । पत्रस० ४ । आ० १२ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—इतिहास । र०काल × । ले०काल स० १७०६ । पूर्ण । वेष्टन स० २८४/११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १७०६ वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्लपक्षे सप्तमी दिवसे अहिमदाबाद नगरे आचार्य श्री कल्याण कीर्ति तत् शिष्य ब्र० श्री तेजपाल लिखित ।

६३०९. **श्रुतावतार**— × । पत्र स० ४ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय इतिहास । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४१७/५०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

६३१०. **भट्टारक सकलकीर्तिनुरास — ब्र० सामान** । पत्र स० ११ । आ० ११ ×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१४/४१० । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—अन्तिम भाग—

चउवीस जिणेसरे प्रसादि
श्री भुवनकीर्ति नवनवलि नादि ।
जयवता सकल सघ कल्याण करए ।

इति श्री भट्टारक सकलकीर्तिनुरास समाप्तः । श्राविकाबाई पूतलि पठनार्थं ।

६३११. सम्मेदशिखर वर्णन—× । पत्रस० ४ । आ० १२$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{1}{2}$ इच । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र०काल × । ले०काल स० १९६२ । पूर्ण । वेष्टन स० ५३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रारभ मे लघु सामायिक पाठ भी दिया है ।

६३१२. सम्मेदशिखरस्यात्रा वर्णन—प० गिरधारीलाल । पत्रस० ७ । आ० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । र०काल स० १८९९ भादवा बुदी १२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९९४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

६३१३. सम्मेद शिखर विलास—रामचन्द्र । पत्रस० ७ । आ० ८ × ५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–इतिहास । र०काल × । ले० काल स० १९०४ । पूर्ण । वेष्टनस० ५३/८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

विशेष—प्रेमराज रावका ने प्रतिलिपि की थी ।

६३१४. संघ पणट्टक टीका—ब्र० जिनवल्लभ सूरि । पत्र स० २० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-इतिहास । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६३१५ प्रति स० २ । पत्रस० २१ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—उक्त मन्दिर ।

६३१६. संघपट्टप्रकरण । पत्र स० ७ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-इतिहास । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अजमेर भण्डार ।

६३१७ संवत्सरी-× । पत्रस० ४ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय–इतिहास । र०काल × । ले० काल स० १८१७ । पूर्ण । वेष्टनस० १३११ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—स० १७०१ से लेकर स० १७४४ तक का वर्णन है । लिखित आर्या नगीना समत १८१७ वर्षे ।

विषय -- विलास एवं संग्रह कृतियां

६३१८. आगम विलास—द्यानतराय। पत्र स० ३६२। आ० १०×६ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—संग्रह। र०काल स० १७८४। ले० काल स० १८३६। पूर्ण। वेष्टन स० ५६-३७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर।

विशेष—कृष्णगढ मे श्वेताम्बर श्री कन्हीराम भाऊ ने प्रतिलिपि की थी। इसका दूसरा नाम द्यानत विलास भी है।

६३१९. कवित्त— ×। पत्र स० ६। आ० ६½×४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—सुभाषित। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० २८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूंदी)

६३२०. कवित्त—बनारसीदास। पत्रस० १। आ० १०×४ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय-फुटकर। र०काल × । ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २१२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलना (बूंदी)

विशेष—दो कवित्त नीचे दिये जाते है —

कचन भडार पाय नैक न मगन हूजे।
पाव नव योवना न हूजे ए वनारसी।
काल अधिकार जाणं जगत वनारा सोई।
कामनी कनक मुद्रा दुहु कू वनारसी।
दोउ है विनासी सदैव तू है अविनासी।
जीव याही जगतवीच पड्डो वनारसी।
याको तू सग त्याग कूप सू निकस भागी।
प्राणि मेरे कहे लागी कहत बनारसी।

× × × × ×

किते गिली बैठी है डाकिणी दिल्ली।
इत मानकरी पति पडम सु।
पृथ्वीराज कै सगी महाहित हिल्ली।
हेम हमाऊ अकवर वब्बर।
साहिजिहा सुभी कीनी है भल्ली।
साहि जिहा सुखी मन रग।

तउ विरची साहि ग्रौरग मिल्ली ।
कोटि कटासु कहै तरुणी वै किते • •

६३२१ प्रतिसं० २ । पत्र स० १ । ग्रा० १०×४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूंदी)

विशेष—समयसार नाटक के कवित्त हैं ।

६३२२. कवित्त—सुन्दरदास । पत्रस० ३ । ग्रा० १०½×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले०काल स० १८७४ । पूर्ण । वेष्टन स० २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, चौगान बूंदी ।

विशेष—प० रतनचन्द के पठनार्थ लिखा गया था ।

६३२३. कवित्त एवं स्तोत्र संग्रह— × । पत्रस० ६० । ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी काव्य । विषय—सग्रह । र० काल × । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ७११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—भजगोविन्द स्तोत्र, नवरत्नकवित्त, गिरधर कुंडलिया है ।

६३२४. गुणकरड गुणावली—ऋषिदीप । पत्रस० ३१ । ग्रा० १० × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । र० कालस० १७५७ । ले० काल स० १८१७ । पूर्ण । वेष्टनस० ९७४ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष—मिती ग्राषाढ बुदी ११ स० १८१७ का श्रीमत श्री सकलसूरि शिरोमणि श्री मडलाचार्य श्री १०८ श्री विद्यानद जी तत् शिष्य प० श्री ग्रवैरामजी लिपिकृत । शिष्य सूरि श्री रामकीर्ति पठनार्थं ।

६३२५ चमत्कार षट् पंचाशिका—महात्मा विद्याविनोद । पत्र स० ४ । ग्रा० ११½×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—विविध । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७८–१८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

६३२६. ग्रंथसूची शास्त्र भंडार दबलाना—× । पत्रस० ९ । ग्रा० २७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—सूची । र० काल × । ले०काल १८९९ ज्येष्ठ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूंदी)

विशेष—वही की तरह सूची वनी हुई है ।

६३२७ चम्पा शतक—चम्पाबाई । पत्रस० २३ । ग्रा० १०×८¾ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय— सग्रह । र०काल × । ले०काल स० १९७५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६३२८. चेतनविलास—परमानन्द जौहरी । पत्रस० १७० । ग्रा० १२×७¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य-पद्य । विषय—विविध । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—ग्रंथकार के विभिन्न रचनाग्रो का सग्रह है । ग्रधिकाश पद एव चर्चायें हैं ।

६३२९ प्रति स० २ । पत्रस० १७३ । ग्रा० १२×८ इंच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

६३३०. **चौरासी बोल**— X । पत्र स० १० । आ० ११½ × ६ इन्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—धर्म । र०काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १७६-७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६३३१ **जैन विलास—भूधरदास** । पत्रस० १०५ । आ० ८ × ५ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—विविध । र०काल X । ले०काल स० १८६६ माघ बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० ३७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—भूधरदास के विविध पाठो का सग्रह है । मिट्ठूराम ने ग्रथ की प्रतिलिपि करायी थी ।

६३३२. **ढालसागर—गुणसागर सूरि** । पत्र स० १२८ । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—विविध । र०काल X । ले० काल स० १६६६ । पूर्ण । वेष्टनस० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बसवा ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६६६ वर्षे कार्त्तिक मासे शुक्ल मासे चतुर्दश्या तिथौ देवली मध्ये लिखित ।

६३३३. **ढालसग्रह—जयमल** । पत्र स० ३६ । भाषा-हिन्दी । विषय-फुटकर । र०कालX । ले०काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० २०७/६६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

निम्न पाठो का सग्रह है—

१. परदेशीनी ढाल   जयमल   हिन्दी र०काल स० १८७७ अपूर्ण ।

अन्तिम—

> सवत अठारै सै सतोत्तरै रे बुद तेरस मास अपाढ ।
> सिंघ प्रदेशीरायनी एक हीय सूत्र थी काढो रे ।।४६।।
> पुज धनाजीप्रसाद थी रे तत् सिष भूधरदास ।
> तास सिस जेमल कहै रे छोडे सलार नापसोरे ।
> इति परदेशीनी सिद समाप्ता ।

२. मृगोलोढानी चरित्र   जयमल   हिन्दी ले०काल स० १८१५ अपूर्ण

इतिमरगालोढानो चरित्र समाप्ता ।

३. सुबाहु चरित्र   जयमल   हिन्दी   अपूर्ण

६३३४ **दृष्टान्त शतक**— X । पत्रस० २३ । आ० १०½ × ४¾ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—विविध । र० काल X । ले०काल स० १८४२ फागुण बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—पोथी पडित जिनदासजी की छै ।

६३३५ **दौलत विलास--दौलतराम** । पत्रस० २७ । आ० १२ × ७ इन्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सग्रह । र०काल X । ले० काल स० १९६४ आषाढ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

६३३६ **दौलत विलास—दौलतराम पल्लीवाल** । पत्रस० ४३ । आ० १२½ × ७½ इन्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सग्रह । र०काल X । ले०काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० ४१/११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष – दौलतराम की रचनाओ का सग्रह है।

६३३७. **धर्मविलास—द्यानतराय** । पत्र सख्या १७२ । आ० १४×७ इच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सग्रह । र०काल स० १७८१ । ले० काल स० १९३७ आसोज बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० २९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर टोडारार्यसिंह (टोक)।

विशेष—रामगोपाल ब्राह्मण ने केकडी मे लिखी थी।

६३३८. **प्रतिसं० २** । पत्र स० ४८ । आ० ११×४ इञ्च । ले० काल स० १७८६ पौष बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

६३३९. **प्रति स० ३** । पत्रस० १४० । आ० १३×५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक)।

६३४०. **प्रतिसं० ४** । पत्र स० २८७ । आ० १२×४½ इञ्च । ले०काल स० १८५८ । पूर्ण । वेष्टन स० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

६३४१. **प्रतिस० ५** । पत्र स० २५५ । आ० ११×४½ इञ्च । ले० काल स० १८८३ मगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ६६१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

विशेष—जयपुर नगर के कालाडेहरा के मन्दिर मे विजेराम पारीक साभर निवासी ने प्रतिलिपि की थी।

६३४२. **प्रति स० ६** । पत्र स० २९१ । आ० ४×६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा।

६३४३ **प्रतिसं० ७** । पत्र स० ३८७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर।

विशेष—भरतपुर मे लिखा गया था।

६३४४. **प्रति स० ८** । पत्र स० १७० । आ० १२×६½ इच । ले० काल स० १८२८ आषाढ बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ७ **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मदिर।

विशेष—१४९ फुटकर पद्य तथा अन्य रचनाओ का सग्रह है।

६३४५. **प्रति स० ९** । पत्रस० २७३ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

६३४६. **प्रति सं० १०** । पत्र स० २५० । ले० काल स० १८७८ । पूर्ण । वेष्टन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर हण्डावालो का डीग।

६३४७. **प्रति सं० ११** । पत्रस० २७८ । आ० १२½×७½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर कामा।

६३४८ **प्रति स० १२** । पत्र स० २३१ । आ० १०½×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

६३४९. **प्रति स० १३** । पत्रस० २६३ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल स० १७९५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना।

विशेष—बयाना मे केशोदास कासलीवाल के पुत्र हिरदैराम ने चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे ग्रंथ लिखवाया था ।

६३५०. प्रति सं० १४ । पत्र स० २६० । ले० काल स० १८०४ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३३७ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

६३५१. प्रति सं० १५ । पत्रस० १६५ । ले०काल स० १८६७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—नानकराम ने भरतपुर मे लिखी थी ।

६३५२. प्रति न० १६ । पत्र स० २६६ । ले० काल स० १८७७ । पूर्ण । वेष्टन स० ४०६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६३५३. प्रतिसं० १७ । पत्रस० २०६ । ले०काल स० १८७७ सावन सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—परमानन्द मिश्र ने घममूर्त्ति दीवान जोधराज के पठनार्थ प्रतिलिपि की सावन बुदी ७ को ।

६३५४ प्रति स० १८ । पत्रस० ७८ । आ० १२½ × ७ इच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

६३५५. प्रति स० १९ । पत्रस० २०१ । आ० ११½ × ७ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०१ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

६३५६. प्रति स० २० । पत्रस० १८१ । आ० १२½ × ७½ इन्च । ले०काल स० १९१२ माह सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५६/८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

६३५७. प्रतिस० २१ । पत्रस० १७० । आ० १२½ × ८ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

६३५८. प्रति स० २२ । पत्रस० २५ । आ० ६ × ६ इन्च । ले० काल० स० १९५५ । पूर्ण । वेष्टनस० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

६३५९ प्रतिसं० २३ । पत्र स० २०३ । आ० ११½ × ७½ इन्च । ले०काल स० १९३२ आषाढ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८२-२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीस पथी दौसा ।

विशेष—जयपुर मे प्रतिलिपि की गई थी ।

६३६०. प्रति स० २४ । पत्र स० १५१ । आ० १२½ × ६ इन्च । ले०काल स० १८६६ ज्येष्ठ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० १०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—नाथूलाल तेरापथी ने चिमनलाल तेरापथी से प्रतिलिपि करवाई थी ।

६३६१. प्रति सं० २५ । पत्र स० ३८ । आ० १०½ × ८ इन्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १२८-५४ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

६३६२. **नित्यपाठ सग्रह**— X । पत्र स० २५ । ग्रा० १०X६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पाठ सग्रह । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

भक्तामर स्तोत्र, तत्वार्थ सूत्र, सहस्रनाम-स्तोत्र, एव विषापहारस्तोत्र भाषा ।

६३६३. **पद एव ढाल**—X । पत्र स० ७-२६ । ग्रा० १० X ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—पद । र०काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

विशेष—निम्न रचनाग्रो का मुख्यतः सग्रह है—

नेमि व्याहलो—हीरो हिन्दी । र०काल स० १८४० ।

विशेष—बूदी मे नेमिनाथ चैत्यालय मे ग्र थ रचना की थी ।

सज्झाय — जैमल ,,

विशेष—कवि जैमल ने जालोर मे ग्र थ रचना की थी ।

रपि जैमल जी कह जालोर मे हैं,

सूतर भापै सो परमाण हैं ।

पद—ग्रजयराज हिन्दी

पद पदमराज गणि ,

६३६४ **पद सग्रह—खुशालचन्द** । पत्रस० ९ । ग्रा० ६½X७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । र०काल X । ले०काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

६३६५. **पद सग्रह—चैनसुख** । पत्रस० ९ । ग्रा० ११ X ८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । र०काल X । ले०काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० ४८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—इसका नाम ग्रात्म विलास भी दिया है ।

६३६६ **पद सग्रह—देवाब्रह्म** । पत्रस० ८६ । ग्रा० १२ X ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पद सग्रह । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १५१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

विशेष—देवाब्रह्म कृत पद, विनती एव ग्रन्य पाठो का सग्रह है ।

६३६७. **प्रतिसं० २** । पत्र स० ३९ । ग्रा० १०X६½ इञ्च । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १५२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

६३६८. **पद संग्रह—देवाब्रह्म** । पत्रस० ५० । ग्रा० ७X६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पद सग्रह । र० काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टनस० ३६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रभिनन्दन स्वामी बूदी ।

६३६९. **पद सग्रह (गुटका)—पारसदास निगोत्या** । पत्र स० ९६ । ग्रा० ८½X६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पद । र०काल X । ले० कालX । पूर्ण । वेष्टनस० ६९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

विशेष—गुटका सजिल्द है ।

६३७०. **पद सग्रह—हीराचन्द** । पत्रस० ३७ । ग्रा० १३×५इञ्च । भाषा – हिन्दी । विषय—भजनो का सग्रह । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५७/४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेष—८० पदो का सग्रह है ।

६३७१. **पद सग्रह**—× । पत्र स० १३२ । ग्रा० ५½×५ इ च । भाषा- हिन्दी पद्य । विषय-पद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली (कोटा) ।

विशेष—विभिन्न कवियो के पदो का सग्रह है ।

६३७२. **पद सग्रह** । पत्र स० २ से ६८ । ग्रा० १०½ × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६२ । **प्राप्दि स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रथम पत्र नही है । विभिन्न कवियो के पदो का वर्णन है ।

६३७३. **पद सग्रह** । पत्र स०५–३४ । ग्रा० ६ × ७ इ च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

६३७४ **पद सग्रह** । पत्र स० २८ । ग्रा० ६× ४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोट्यो का नैणवा ।

विशेष—किशनचन्द ग्रादि के पद हैं ।

६३७५. **पद सग्रह** । किशनचन्द, हर्षकीर्ति, जगतराम, देवीदास, महेन्द्रकीर्ति, भूधरदास ग्रादि के पदो का सग्रह है । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोट्ययो का नैणवा ।

६३७६ **पद सग्रह** । पत्रस० ३४ । ग्रा० ६ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी, बू दी ।

६३७७ **पद सग्रह** । पत्रस० ५७ । ग्रा० ५ × ४ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी नैणवा ।

विशेष—ग्र थ जीर्ण अवस्था मे है तथा लिपि खराब है ।

६३७८. **पद सग्रह** । पत्र स० ६२ । ग्रा० ३½×३ इञ्च । ले० काल स० १८६८ चैत्र बुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ बू दी ।

६३७९. **पद सग्रह** । पत्र स० ६६ । ग्रा० १२×८½ इ च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १६२१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष—विभिन्न कवियो के पदो का सग्रह है ।

६३८० **पद सग्रह** । पत्र स० ६ । ग्रा० ६¾×४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

६३८१. **पद संग्रह** । पत्रस० ६८ । ग्र० १०½×४¼ इ च । ले० काल× । पूर्ण । वेष्टन स० २६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

६३८२. पद सग्रह । पत्रस० ६३ । भाषा-हिन्दी पद्य । ग्रा० १०×४ इच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—ब्रह्म कपूर, समयसुन्दर, देवा ब्रह्म के पदो का सग्रह है ।

६३८३. पद सग्रह । पत्रस० ६० । भाषा-हिन्दी पद्य । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—दौलतराम देवीदास ग्रादि के पदो का सग्रह है ।

६३८४. पद सग्रह । पत्र स० १६२ । भाषा-हिन्दी पद्य । ग्रा० ११×६½ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन स० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर ।

विशेष—मुख्यत निम्न कवियो के पदो का सग्रह है—
नवलराम, जगराम, द्यानतराय ग्रादि ।

६३८५. पद संग्रह । पत्र स० १६ । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

विशेष—निम्न कवियो के पद एव रचनाए मुख्यत सग्रह मे है—

यशोदेवसूरि	पुरिसा दाणी पास जी भेटण ग्रधिक उल्हास हे प्रभु ताहरै सनमुख जोडवै ग्रमृत नयण विकास ।।
गुणभद्रसूरि	नमस्कार महामत्र पत्र
राजकवि	उपदेश बत्तीसी
समयसुन्दर	पद वीतराग तेरा पाया सरण ।
गुणसागर	कृष्ण बलिभद्र सिज्झाय । मेघकुमार सिज्झाय ।
ग्रजित देवसूरि	पचेन्द्रिय सिज्झाय । पचबोल चौवीस तीर्थंकर स्तवन ।
महमद	जीवमृत सिज्झाय ।
महमद	पद पद निम्न प्रकार है—

भूलो मन भ्रमरा काई भ्रमै भमै दिवसनै राति ।
मायानो बाध्यौ प्राणीयो भ्रमै परिमल जाति ।
कु भ काचो काया करिसी तेहना करो रे जतन्न ।
विणसता वार लागै नही निमल राखो मन्न ।।२।।
ग्र स्या डू गर जेवडी मरिवो पगला हेठि ।
धन साचीनै काई मरो करिधी दैवनी वढि ।
कोना छोरु कोना वाछरु कोना माय नै बाप ।
प्राणी जावो छै एकलो सायै पुण्य व पाप ।।३।।
मूरिख कहै धन माहरो धोखै धान न खाय ।
वस्त्र विना जाइ पैठिस्यो लखपति लाकड माहि ।

लखपति छत्रपति सव गये गये लाखा न लाख ।
गरव करी गोखै वैसते भये जल वलि राख ।।६।।
भव सायर भव दुख भरयो तरिवौ छै तेह ।
विच मे वीहक सवल छै नर मे धमो मेह ।
उतर नधी प्राण चालिवो उतरि वोछै पार ।
आगै हारम वगसियो सैवल लीज्यो लार ।।
मैहमद कहै वस्त्र वौहरी ये जो क्यू चालै आथि ।
लाहा अपणा ठगाहि ल्यै लेखा साधि हाथ ।

६३८६. पद सग्रह—X । पत्रस० २२ । आ० १२X५ इञ्च । भाषा-हिन्दीले० काल X । अपूर्ण । वेष्टनस० ५३-X । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वडा वीस पथी दौसा ।

६३८७ पद सग्रह—X । पत्रस० १८ । आ० १२X६ इञ्च । **ले०काल** X । पूर्ण । वेष्टन स० २२७-६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—नवल, भूधर, दीपचन्द, उदयराम, जादवराम, जगराम, धनकीर्ति, दास वसत, लालचन्द जोधा, द्यानत बुधजन, जिनदास, घनश्याम, भागचन्द, रतनलाल आदि कवियों के पद है ।

६३८८. पद सग्रह—X। पत्रस० ६६ । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ४२०-१५७ ।**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६३८९ पद सग्रह—X । पत्र स० १ । आ० ६½ X ४⅞ इञ्च । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टनस० ८१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—नयन विमल, विमल विजय, शुभचन्द्र, ऋषभस्तवन, ज्ञान विमल । गोडी पार्श्वनाथ स्तवन रचना सवत् १६८२ है ।

६३९० पद सग्रह—X । पत्र स० ८ । आ० ९X४ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । **ले०काल** X । अपूर्ण । वेष्टन स० १६४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर दवलाना (बूदी) ।

विशेष—वनारसीदास जोधराज आदि कवियो के नीति परक पद्यो का सग्रह है ।

६३९१. पाठ सग्रह— X । पत्र स० ७० । आ० ११ X ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सग्रह । र०काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १११ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर ।

विशेष—विभिन्न पाठो का सग्रह है ।

६३९२. पाठ सग्रह—X। पत्र स० २० । आ० १२X५ इञ्च । भाषा-प्राकृत-सस्कृत । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ३७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—भाव पूजा, चैत्य भक्ति, सामायिक आदि है ।

६३९३. पाठ सग्रह—X। पत्र स० १२७ से १७६ । भाषा-सस्कृत । ले० काल X । अपूर्ण । वेष्टनस० ६१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६३९४. पाठ सग्रह—X। पत्रस० १२ । भाषा-हिन्दी । ले० काल X। पूर्ण । वेष्टन स० ४४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—त्रिभुवन गुरु स्वामी की वीनती, भक्तामर स्त्रोत्र भाषा, कल्याण मन्दिर स्तोत्र भाषा, पच मगल आदि पाठ हैं।

६३६५. **पाठ सग्रह**—× । पत्र स० ५८–११३ । आ० १२½×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६३९६ **पाठ सग्रह**—× । पत्र स० २३९ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

आदिपुराण	जिनसेनाचार्य	सस्कृत	पत्र १८४	अपूर्ण ।
उत्तरपुराण	गुणभद्राचार्य	,,	८	,,
षट् पाहुड	कुन्दकुन्दाचार्य	प्राकृत	२७	,,
कर्मकाण्ड	नेमिचन्द्राचार्य	,,	४	,,
कलिकुण्डपूजा	,,	सस्कृत	५	,,
चौवीस महाराज पूजा	,,	हिन्दी	११	,,

६३९७. **पाठ संग्रह**—× । पत्रस० १५ । आ० १२½×६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—तत्वार्थ सूत्र, भक्तामर स्तोत्र एव गोम्मट स्वामी पूजा हिन्दी) आदि हैं।

६३९८ **पाठ सग्रह** —× । पत्रस० २१ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृर-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ९६/९१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है ।

१. भक्तामर स्तोत्र २–कल्याण मन्दिर स्तोत्र ३–दानशील तप भावना कुलक (प्राकृत)

हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है ।

६३९९. **पाठ सग्रह** —× । पत्रस० ११० । आ० ८×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५५/ ८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है ।

१– नरक वर्णन	पत्र ५
२– समवशरण वर्णन	१३
३– स्वर्ग वर्णन	१४
४– गुणस्थानवर्णन	१२
५– चौसठ ऋद्धि वर्णन	१७
६– मोक्ष सुख वर्णन	१६
७– द्वादश श्रुत वर्णन	१७
८– अकृत्रिम चैत्यालय वर्णन	६

६४००. **पाठ सग्रह**—× । पत्रस० १९० । आ० ६×५ इ च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी बूंदी ।

विशेष—विभिन्न पाठो का सग्रह है ।

६४०१. पारस विलास—पारसदास निगोत्या। पत्रस० २७७ । ग्रा० ११½×८ इच । भाषा—हिन्दी। विपय—पारसदास की रचनाग्रो का सग्रह। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्ट्न स० ५०५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

६४०२. पार्श्वनाथ कवित्त—भूधरदास। पत्रस० ३। ग्रा० १०¾×४ इञ्च। भापा-हिन्दी। विषय-स्फुट । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १००६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

६४०३ बनारसी विलास—स० कर्त्ता जगजीवन। पत्रस० ६४ । ग्रा० १०×६इञ्च। भाषा-हिन्दी। विपय-सग्रह। सग्रह काल स० १७०१। ले०काल स० १६५६। पूर्ण। वेष्टनस० १५७१। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर ग्रजमेर।

विशेष—बनारसीदास की रचनाग्रो का सग्रह है।

६४०४ प्रति स० २। पत्र स० १३३। ग्रा० ६½×७ इञ्च। ले०काल स० १८२६ वैशाख सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन स० ६३३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर ग्रजमेर।

६४०५. प्रति स० ३। पत्रस० ११६। ग्रा० १२×५ इञ्च। ले० काल स० १७४३। पूर्ण। वेष्टन स० ११७/७०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

६४०६ प्रति स० ४। पत्र स० २-१०६। ग्रा० ११×४½ इञ्च। ले० काल × । ग्रपूर्ण। वेष्टन स० ३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर दवलाना (कोटा)।

६४०७. प्रति स० ५। पत्रस० १६२ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

६४०८. प्रतिसं० ६। पत्रस० १३५। ग्रा० ११ × ७½ इञ्च। ले०काल स० १७४३ श्रावण सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन स० ४७। **प्राप्तिस्थान**—दि० मन्दिर चेतनदास दीवान पुरानी डीग।

६४०९ प्रति स० ७। पत्र स० १३१। ग्रा० १२ ×५½ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवान जी कामा।

६४१० प्रति सख्या ८। पत्रस० ७८। ग्रा० १४×८½ इञ्च । ले०काल स० १८८६ ग्रपाढ सुदी १२। पूर्ण । वेष्टन स० १०१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा।

विशेष—कामवन (कामा) मे प्रतिलिपि हुई थी।

६४११. प्रति स० ९। पत्र स० ६५। ले०काल स० १८६३। पूर्ण। वेष्टनस० ४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर।

६४१२. प्रति स० १०। पत्र स० १४७। ग्रा० १०×४½ इञ्च। ले०काल स० १८६० फागुन बुदी ६। पूर्ण। वेप्टन स० २५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—कोटा नगर मध्ये वासपूज्य जिनालये पडित जिणदास उपदेशात् लिखापित खडेलवालान्वये कासलीवाल गोत्रे धर्मज्ञ साह जैतरामेण स्वपठनार्थ।

६४१३. प्रतिसं० ११। पत्र स० ४६। ग्रा० १०×५ इच । ले० काल स० १७८७ ग्रापाढ बुदी ३। पूर्ण। वेष्टन स० १३६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर दवलाना (बूदी)।

६४१४. प्रतिसं० १२ । पत्रस० १४८ । आ० ६×७½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पञ्चायती मदिर बयाना ।

विशेष—१२४ पत्र के आगे रूपचन्द के पदो का स ग्रह है ।

६४१५. प्रति स० १३ । पत्रस० ५४ । आ० १३½ × ६½ इञ्च । ले० काल स० १६०६ फागुण बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

विशेष—साह पन्नालाल अजमेरा ने प्रतिलिपि की थी ।

६४१६. प्रति सं० १४ । पत्रस० १६४ । आ० १० × ७ इञ्च । ले० काल स० १८०५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बघेरवालो का आवा (उणियारा) ।

विशेष—नरसिंहदास ने लिखा था । समयसार नाटक भी है ।

६४१७. प्रति स० १५ । पत्र स० ६१ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल स० १८८५ । पूर्ण । वेष्टन स० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बू दी ।

६४१८ प्रति स० १६ । पत्रस० १०२ । आ० १०½× ५ इञ्च । ले०काल स० १८८७ कार्त्तिक बुदी ६ । पूर्ण ।

विशेष—श्योलाल जी ने पन्नालाल साह से प्रतिलिपि कराई थी ।

६४१६ प्रतिसं० १७ । पत्र स० ६६ । आ० १३ × ६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

६४२० प्रतिसं० १८ । पत्र स० ६५ । आ० १२ × ४ इञ्च । ले० काल स० १८५४ । पूर्ण । वेष्टनस० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बू दी ।

६४२१. प्रति सं० १६ । पत्रस० ७६–८० । आ० ६×५½ इञ्च । ले०काल स० १७३८ । पूर्ण । वेष्टन स० १०६-५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

६४२२. बुद्धि विलास—बखतराम साह । पत्र स० ८६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—विविध । र०काल स० १८२७ । ले०काल × । वेष्टन स० ८२७ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६४२३ बुधजन विलास—बुधजन । पत्रस० १०० । आ० १२¾×७¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सुभाषित । र०काल स० १८६१ काती सुदी २ । ले०काल स० १६५५ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, लश्कर जयपुर ।

विशेष—सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

६४२४. प्रतिसं० २ । पत्रस० ७१ । र०काल स० १८७६ कार्त्तिक सुदी ५ । ले० काल स० १६२४ । पूर्ण । वेष्टन स० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६४२५. प्रति स ३ । पत्रस० ८४ । ले०काल स० १६२४ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६४२६. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ७४ । आ० १२½×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६४२७. **ब्रह्म विलास—भैया भगवतीदास** । पत्र स० १३३ । आ० १४×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सग्रह । र०काल × । ले०काल स० १६१७ आसोज बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—गोपाचल (ग्वालियर) मे प्रतिलिपि हुई थी ।

६४२८. **प्रति स० २** । पत्र स० १६६ । ले० काल स० १८७६ प्र० आसोज सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

६४२९. **प्रति स० ३** । पत्र स० १४८ । ले० काल स० १८१४ कार्तिक सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० १५० । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

६४३०. **प्रति सं० ४** । पत्र स० १०१ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

६४३१. **प्रतिस० ५** । पत्रस० ६४ । र०काल १७५५ । ले०काल स० १८६५ । पूर्ण । वेष्टनस० १७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प चायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—तुलसीराम कासलीवाल वैरका ने भरतपुर मे महाराजा बलवतसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि की थी । भरतपुर वासी दीवान गजसिंह अपने पुत्र माधोसिंह गौत्र वैद्य के पठनार्थ लिपि कराई ।

६४३२. **प्रतिस० ६** । पत्र स० १०२ । आ० १३ × ७½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ११५ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

६४३३. **प्रतिस० ७** । पत्र स० १४४ । आ० १२½×७½ इञ्च । ले०काल स० १६२६ पोष बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

विशेष - ठाकुरचन्द ने माधोसिंह के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

६४३४. **प्रति स० ८** । पत्रस० ६५ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ५६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

६४३५. **प्रतिस० ९** । पत्र स० २३४ । आ० ६½× ६ इञ्च । ले० काल स० १८८२ आषाढ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

विशेष—कामा निवासी ऋषभदास के पुत्र सदासुखजी कासलीवाल ने सवत् १८८२ मे प्रतिलिपि की थी ।

६४३६ **प्रतिस० १०** । पत्र स० १०० । आ० १३×६ इञ्च । ले० काल स० १८८२ फागुण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

विशेष—नैणवा मे ब्राह्मण गिरधारीलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

६४३७ **प्रति स० ११** । पत्र स० १०७ । आ० १४½×८ इञ्च । ले० काल स० १८६६ पौष सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष - देवकीनन्दन पोद्दार ने प्रतिलिपि की थी ।

६४३८ **प्रति स० १२** । पत्र स० २२० । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल स० १६१७ भादवा सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

६४३९. **प्रतिसं० १३** । पत्र स० १५८ । आ० १२×७ इञ्च । ले० काल स० १६४१ भादवा बुदी १८ । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

६४४०. प्रति स० १४ । पत्रस० २०० । आ० ११×४ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—२०० से आगे पत्र नही हैं ।

६४४१ प्रति स० १५ । पत्रस० १२२ । आ० १०$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{4}$ इञ्च । ले०काल स० १८९९ । पूर्ण । वेष्टनस० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

उदयपुर सैर वसी सुमथान , दीपै उत्तम सुरग समान ।
ब्रह्म विलास ग्र थो भाप, लीखीयो ता माही जिन खास ।
लिखापित साहा वेणीचन्द, ज्ञान चीतोडा नाम प्रसिद्ध ।
वाचनार्थ भव्य जीवनताई, मेलो जिन मन्दिर भाई ।
सवत् अष्टादश शत जान, ता ऊपर नीन्याण वखान ।
अगहन सुदी दशमी सार पुरो लिखो रजनी पतिवार ॥

६४४२. प्रतिसं० १६ । पत्रस० २३३ । आ० ७$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले० काल स० १८१७ । पूर्ण । वेष्टनस० १०२/७९ ।

विशेष—नन्दराम विलाला ने प्रतिलिपि की थी ।

६४४३ प्रतिसं० १७ । पत्र स० १३७ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १८५८ । पूर्ण । वेष्टन स० १०२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—नाथूलाल तेरहपथी ने चिम्मनलाल तेरहपथी से प्रतिलिपि करवाई थी ।

६४४४ प्रति सं० १८ । पत्रस० २२८ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १८३४ कार्त्तिक सुदी ५। पूर्ण । वेष्टनस० २१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

६४४५. प्रतिसं० १९ । पत्र स० १८५ । आ० १०×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल १९०८ आसोज सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० २२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

६४६४. प्रतिसं०२० । पत्र स० १२५ । आ० १२$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । ले० काल स० १९१३ भादवा सुदी २ । वेष्टन स० १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बू दी ।

विशेष—चैद्यपुर मे लिखा गया था ।

६४४७. प्रतिसं० २१ । पत्र स० ५७-११४ । आ० ११×४ इच । ले० काल स० १८५२ आषाढ बुदी ७ । अपूर्ण । वेष्टन स० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी नैणवा ।

६४४८. प्रतिसं० २२ । पत्र स० २११ । आ० ९×७ इञ्च । ले०काल स० १८५४ ज्येष्ठ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ८७-६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वडा वीसपथी दौसा ।

विशेष—रतनचन्द पाटनी ने दौसा मे प्रतिलिपि की थी ।

६४४९. प्रतिस० २३ । पत्रस० ५५ । आ० ११×६ इञ्च । ले० काल स० १७८७ वैशाख सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स०१६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

६४५०. प्रतिसं० २४ । पत्र स० २४४ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इच । ले०काल स० १८५४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—डीग मे प्रतिलिपि की गई थी ।

६४५१. प्रति स० २५ । पत्र स० २१६-२४६ । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल स० १७६६ आसौज सुदी ६ । अपूर्ण । वेष्टन स० ७३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

६४५२. प्रतिस० २६ । पत्रस० १३२ । आ० १२½×६½ इञ्च । ले०काल स० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन स० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

६४५३. प्रति स० २७ । पत्रस० २०६ । आ० ११×६ इञ्च । ले०काल स० १७६२ द्वितीय ज्येष्ठ सुदी । पूर्ण । वेष्टन स० ५१६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—प्रति सुन्दर है ।

६४५४. प्रतिसं० २८ । पत्र स० १४६ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल स० १८४० । पूर्ण । वेष्टन स० ६४३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६४५५. प्रतिसं० २६ । पत्र स० ११७ । आ० १०½×५½ इञ्च । ले०काल स० १८४५ । पूर्ण । वेष्टन स० १५६-७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६४५६ प्रतिस० ३० । पत्रस० १५५ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल स० १८१२ । पूर्ण । वेष्टनस० ३४-२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६४५७ प्रतिस० ३१ । पत्रस० १०१ । आ० १०½×७ इञ्च । ले०काल स० १८७३ भादवा बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

६४५८. प्रतिस० ३२ । पत्र स० २३५ । आ० ७½×५½ इञ्च । ले० काल स० १६४१ माघ बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ८१ । **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर ।

६४५६. प्रति स० ३३ । पत्रस० ६६ । आ० १२½×७ इञ्च । ले० काल स० १६७७ सावन सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ८२ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर ।

विशेष—जिल्द सहित गुटकाकार है ।

६४६०. प्रतिस० ३४ । पत्र स० २०८ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल स० १६२३ । पूर्ण । वेष्टन स० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

६४६१. प्रतिस० ३५ । पत्र स० २६५ । आ० ६×५ इञ्च । ले० काल स० १८१७ । पूर्ण । वेष्टन स० २८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

६४६२. प्रतिस० ३६ । पत्रस० १६६ । आ० १२×५½ इच । ले० काल स० १७६६ भादवा सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वैर ।

विशेष—चौबे जगतराम ने प्रतिलिपि कराई थी ।

६४६३. भवानीबाई केरा दूहा—× । पत्र स० २-७ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-राजस्थानी विषय—स्फुट । र०काल × । ले० काल स० १८८२ चैत्र सुदी १२ । अपूर्ण । वेष्टन स० २४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

६४६४ **भूधर विलास—भूधरदास।** पत्र स० ४९। आ० ११×६ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—सग्रह। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बू दी।

६४६५. **प्रति स० २।** पत्र स० ६२। आ० १३×७½ इञ्च। ले० काल स० १८८६। पूर्ण। वेष्टन स० ७। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

६४६६. **प्रतिसं० ३।** पत्र स० ६३। ले०काल स० १९५१। पूर्ण। वेष्टन स० १६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

६४६७. **प्रतिसं० ४।** पत्रस० ८६। आ० ११ × ५½ इञ्च। ले०काल स० १९०५ मगसिर सुदी ६। पूर्ण। वेष्टनस० ७८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—मिश्र रामदयाल ने फरुक नगर मे प्रतिलिपि की थी।

६४६८. **मनोरथमाला गीत—धर्मभूषण।** पत्रस० ५। भाषा—हिन्दी। विषय—गीत सग्रह। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ७०/४७७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

६४६९. **मरकत विलास—मोतीलाल।** पत्र स० १४८। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्म। र०काल ×। ले० काल १९८५ आसोज बुदी ७। पूर्ण। वेष्टन स० ३७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर।

विशेष—प्रति सुन्दर है।

६४७०. **माणकपद सग्रह—माणकचन्द।** पत्र स० २-५३। आ० ११ × ६½ इच। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—पद। र०काल ×। ले० काल स० १९५८ फागुण सुदी २। अपूर्ण। वेष्टनस० २२२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रथम पत्र नही है।

६४७१ **मानबावनी—** ×। पत्र स० २६। आ० १२×४½ इच। भाषा—पुरानी हिन्दी पद्य। विषय—स्फुट। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर तेरहपथी दौसा।

६४७२. **मानविनय प्रबध—**×। पत्र स ७। आ० १०×४¾ इच भाषा-पुरानी हिन्दी। विषय—स्फुट। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स ४९३। **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—कौनो पर फटा हुआ है।

६४७३. **यात्रा समुच्चय—**×। पत्र स० ४। आ ९×४ इच। भाषा-सस्कृत। विषय—विविध। र०काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५४९। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

६४७४. **रत्नसग्रह—नन्नूमल।** पत्र स ६६। आ १३½×८ इच। भाषा—हिन्दी गद्य। र काल स १९४६ मगसिर सुदी ५। ले०काल स० १९६७ चैत बुदी ४। पूर्ण वेष्टनस०। १२। **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—

प्रारम्भ—दोहा—

प्रथम वीर सन्मति चरण, दूतीया सारदा माय ।
नमू रतन सग्रह करन, ज्यों भववन नसि जाय ।।
ग्र थ समूह विचारते, तिनही के अनुसारि ।
रतन चुन इम कारने, पठत सुनत भव पार ।।२।।

अन्तिम—

शुभ सुथान मुहबतपुरा, जिला अलीगढ जान ।
शैली श्रावक जनन की, जन्म भूमि मुझ मान ।।८।।
मैंडू वासी श्रावक, जैसवाल कुल भान ।
वश इक्ष्वाक सु ऊपजे भोलानाथ प्रधान ।।६।।

चौपई—

सुत गोपालदास है तास, पुत्र युगल तिनके हम तास ।
अनुज गणेशीलाल वरवानि, दूजा भगवता गुरु मानि ।।
उर्फ लकव नन्नूमल कह्यो, जन्म सुफल जिन वच पढि भयो ।
भूल चूक धीमान सम्हार, अन्यमती लखि दया विचार ।।

सोरठा—

रतन पु ज चुनि लीन, पढो पढावो सजन जन ।
कर्म वध हो क्षीन, लिखो लिखावो प्रीतिधर ।।
ग्रव मपूर्ण कीन, सवत् सर विक्रम तनो ।
युगल सहस मे हीन, अर्ध शतक चव मे मनो ।।

गीतछद—

मगसिर जु शुक्ला पचमी बुधवार पूर्वापाढ के ।
दिन कियो पूरण रतन सग्रह शुभ सुवखानि के ।।
अनुमान अरु परिमान सारे हैं श्री जिनवानि के ।
अपनी तरफ से कुछ नही मैं लिखा भविजन जानि के ।।

।। इति श्री रतन सग्रह समाप्त ।।

लिखत लाला परशादीलाल जैनी साकिन नगले सिकदरा जिला आगरा पोस्ट हिम्मतपुर मिती चैत कृष्णा ४ शनिवार स० १६६७ विक्रम । रामचन्द्र बलदेवदास फतेहपुर वालो ने जैन मन्दिर मे चढाया हस्ते प० हीरालाल आसोज सुदी ५ स० १६६७ ।

६४७५. लक्ष्मी विलास—प० लक्ष्मीचद । पत्रस० १२० । आ० १२½ × ७ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सग्रह । र०काल × । ले० काल स० १६६८ । पूर्ण । वेष्टन स० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

विशेष—वैष्णव मत के विरोधी का खण्डन किया गया है

६४७६. विचारामृत संग्रह—× । पत्र स ६३ । आ० १०½ × ४½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-सग्रह । र०काल × । ले काल स १८६१ । पूर्ण । वेष्टन स २२० । **प्राप्ति स्थान**— दि जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६४७७. विचारसार षडशीति—× । पत्र स ३ । आ १०½×४½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय—स्फुट । र०काल × । ले०काल स० १६४० । पूर्ण । वेष्टन स. ७४० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि जैन मन्दिर अजमेर ।

६४७८. विनती सग्रह—देवब्रह्म । पत्र स ० ७३ । आ० १०×६ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तुति । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स ० २८७ । **प्राप्ति स्थान**— दि जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

६४७९. विनती सग्रह—× । पत्रस० ३–१० । आ० १० ×४ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

वशेष— पाठो का सग्रह है—

१—चउबीस तीर्थंकर विनती-जयकीर्ति । हिन्दी । पत्र ३ ५ आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारभ –

सकल जिनेश्वर प्रणमीया सरसती स्वामीरण समरिमाय ।
वर्तमान चउवीसी जेह नव विधान वोलेहु तेह ।

अन्तिम—

काष्ठासघ नदी तट गच्छ यती त्रिभुवनकीर्ति सूरिश्वर स्वच्छ ।
रत्नभूषण रवितल गछपति सेन शुभकर मोहमती ।
जयकीर्ति सूरि पद धार हर्ष धरि करयु एही विचार ।
भणि सुणिजे भवीयणसार, ते निश्चतरसी ससार ।।२।।

इति नव विधान चउवीसी तीर्थंकर वीनती सपूर्ण ।

२ परमानन्द स्तवन	स स्कृत	२५ श्लोक
३ वाहुवलीछद	वादिचन्द्र	हिन्दी

प्रारम्भ—

कोसल देश अयोध्या सोहि, राजा वृषभतण् मनमोहि ।
घरि हो दीसि अनोपम राणी, रूप कलाधाती इन्द्राणी ।
जसोमति जाया भरतकुमार, वाहुवली सुनदा मल्हार ।
नीलजमा नाटिक विभग, वन्यु वैरागह चित्तिनिरज्य ।

अन्तिम—

सिद्ध सिद्ध युगती भरतार, वाहुवली करुसहु जयकार ।
तुझ पाये लागि प्रभाचन्द्र, वाणी वोलि वादिचन्द्र ।।६०।।

इति वाहुवली छद सपूर्ण ।

४ गुणत्तीसी भावना

अन्तिम—

भोगभलाजे नरलाहि हरषि जु देइदान ।
समफित विणा शिवपद नही जिहा अनत सुखठाम ।।

ए गुणत्रीसी भावना भणकि सुघु विचार ।
जे मन माही समरिसी ते तरसी ससार ।।३१।।

इति उगणतीसी भावना सपूर्णं

६४८०. **विनती सग्रह—देवाब्रह्म** —× । पत्र स० १६ । आ० ८½×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय— स्तवन । र० काल × । ले०काल × । पूर्णं । वेष्टन स० ५६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—तीर्थंकरो की विनतियाँ हैं ।

६४८१. **विनती एव पद सग्रह—देवाब्रह्म** । पत्र स० ११३ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-स्तवन । र०काल × । ले०काल × । अपूर्णं । वेष्टन स० ३०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

विशेष—९९ पद एव भजनो का सग्रह है ।

६४८२. **विनती पद सग्रह—×** । पत्र स० ४ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पद स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्णं । वेष्टन स० ६८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—ब्र० कपूर, जिनदास जगराम आदि के पद है ।

६४८३. **विनती सग्रह**—× । पत्रस० ६ । आ० ११¾ × ५¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्णं । वेष्टनस० १२२-५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

विशेष—भूधर कृत विनतियो का सग्रह है ।

६४८४ **विवेक विलास—जिनदत्त सूरि** । पत्र स० १५-७० । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—हिन्द । विषय-विविध । र०काल × । ले०काल × । पूर्णं । वेष्टन स० २१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

६४८५ **वृ द विलास--कविवृन्द** । पत्र स० १५ । आ० १०× ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय कविवृ द की रचनाओ का सग्रह । र०काल × '। ले०काल स० १८४२ चैत्र सुदी २ । पूर्णं । वेष्टनस० १४३२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६४८६. **शास्त्रसूची**—× । पत्र स० १० । भाषा—हिन्दी । विषय—सूची । र०काल × । ले०काल × । पूर्णं । वेप्टन स० ४१२-१५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

६४८७. **शिखर विलास--लालचन्द** । पत्रस० ५७ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—महात्म्य वर्णन । र०काल स० १८४२ । ले०काल स० १३४७ । पूर्णं । वेष्टन स० ४०/१०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

६४८८ **श्लोक सग्रह**— × । पत्र स० ६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—स स्कृत । विषय—फुठकर । र० काल × । ले०काल × । अपूर्णं । वेष्टन स० ३३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी) ।

६४८६. श्लोक सग्रह—×। पत्रस० २४। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४४०-१६५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

विशेष—विभिन्न ग्र थो मे से श्लोक एव गाथाए प्रश्नो के उत्तर देने के लिए सग्रह की गई हैं।

६४९० श्रावकाचार सूचनिका— ×। पत्रस० ५। आ० ११×४ इन्च। भाषा—हिन्दी। विषय-- सूची। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १४८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी।

विशेष—श्रावकाचारो की निम्न सूची दी है।

१	रत्नकरण्ड श्रावकाचार	समन्तभद्र	श्लोक स०	१२५
२	श्रावकाचार	वसुनन्दि	,,	५२६
३	चरित्रसार	चामुण्डराय	,,	७६५
४	पुरुपार्थसिद्धयुपाय	अमृतचन्द	,,	९६२
५.	श्रावकाचार	अमितिगति	,,	१०५०
६.	सागारधर्मामृत	आशाधर	,,	१२९२
७	प्रश्नोत्तरोपासकाचार	सकलकीर्त्ति	,,	१४९५

६४९१. यम विलास— ×। पत्रस० १०। भाषा—हिन्दी। विषय—सग्रह। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

६४९२ शील विलास— ×। पत्र स० २०। आ० १२½×५¾ इन्च। भाषा—सस्कृत। विषय—सुभापित। र०काल ×। ले० काल स० १८३० चैत्र सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० १२१६। प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६४९३. षट्त्रिंशति— ×। पत्रस० १०। आ० १०×४½ इच। भाषा-सस्कृत। विषय—विविध। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ६३८। प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६४९४. षट्त्रिंशतिका सूत्र— ×। पत्र स० १-७। आ०११×४ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विपय—फुटकर। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० १८२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर।

६४९५. प्रतिसं० २। पत्र स० ५। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १८३/४२३। प्राप्ति स्थान— दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—ब्र० तेजपाल ने प्रतिलिपि की थी।

६४९६. षट्पाठ— ×। पत्र स० ४६। आ० १२×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी (गद्य)। विपय—सग्रह। र०काल×। ले०काल स० १९३६। पूर्ण। वेष्टन स० १३५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन खडेलवाल पचायती मदिर अलवर।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—
दर्शन पच्चीसी, बुधजन छत्तीसी, वचन वत्तीसी तथा अन्य कवियो के पदो का सग्रह है।

६४६७. **सज्झाय एवं बारहमासा**— × । पत्र स० १ । आ० १०×४ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्फुट । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

६४६८. **सवैया--सुन्दरदास** । पत्रस० ६ । आ० १०½×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—२७ सवैया तथा ३३ पद्य हसाल छद के हैं ।

६४६६. **सारसग्रह--सुरेन्द्रभूषण** । पत्र स० ७ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूदी ।

६५००. **सुखविलास--जोधराज कासलीवाल** । पत्रस० २४२ । आ० १३×८ इञ्च । भापा—हिन्दी पद्य । विषय—सूक्ति सग्रह । र०काल स० १८८४ मगसिर सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २३ २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

६५०१ **प्रतिसं० २** । पत्रस० ७७ । आ० १३×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । **वेष्टनस०** ३२/६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनमन्दिर भादवा (राज०)

विशेष—कवि की विभिन्न रचनाओ का सग्रह है ।

६५०२. **सग्रह**— × । पत्रस० ६४ । आ० ६×५ इञ्च । भापा—हिन्दी । विषय—सग्रह । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पचायती दूनी (टोंक) ।

विशेष—जैन एव जैनेतर विभिन्न ग्रथो मे से मुख्य स्थलो का सग्रह है ।

६५०३. **सग्रह ग्रन्थ**— × । पत्रस० ७ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सग्रह । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

विशेष—विविध विषयो के श्लोको का सग्रह है ।

६५०४. **सग्रह ग्रन्थ**— × । पत्रस० ६५ । आ० १०×६½ इञ्च । ले०काल स० १६२० । अपूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

१ मदनपराजय	हिन्दी । अपूर्ण ।	
२. ज्ञानस्वरोदय	चरणदास रणजीत	हिन्दी । पूर्ण । र०काल स० १८६६ ।

अन्तिम—

सुखदेव गुरु की दया सु साध तथा सुजान ।
चरणदास रणजीत ने कह्यो सरोदे ज्ञान ।।
डहरे मे मेरो जनम, नाम रणजीत बखानो ।
मुरली को सुत जान जाति दुसर पहचानो ।।

वाल अवस्था माहि वहुर दली मे आयो।
रमति मिले सुखदेव नाम चरणदास कहायो ।।

इति ज्ञान सरोदो सपूर्ण स० १८६६ को साल मे वणायौ।

मूलोय मे प्रतिलिपि हुई।

३ वारह भावना ४ अकृत्रिम वदना ५ वज्र पजर स्तोत्र ६ श्रुतवोध टीका
७. जिनपजर स्तोत्र ८. प्रस्ताविक श्लोक ९. दशलक्षण मडल पूजा १० फुटकर श्लोक
११ चतुर्गति नाटक—डालूराम।

आदि भाग—

अरिहत नमू सिरनाय पुनि सिद्ध सकल सुखदाई।
अचारज के गुन गाऊ पद उपाध्याय सिर नाऊ।

सिरनाय सकल उपाधि नासन मर्व साधू नमू सदा।
जिनराय भापित धर्म प्रणमू विघन व्यापै न हूँ कदा।

य परम मगल रूप चवपद लोक मे उत्तम यही।
जव नटत नाटक जगत जीय केयक पर तक्षक सही।

अन्तिम—

ई विधि जीव नटवा नाच्यौ,
लख चौरासी र ग राच्यौ।

इक इक भेप न माही,
नाचि काल अनत गुमाहि ।।

वीत्यौ अनतकाल नाचते उरवमध्य पाताल मे।
ज्यो कर्म नाच नचावत जिय नट त्यो नचत वेहाल मे ।।

अवै छाडि कर्म कुसग वजिय नचि ज्ञान नृति वेहाल मे।
थिर रूप डालूराम गहि ज्यो होय सिव के सुख अखै।

१२ वाईस परीषह हिन्दी।
चि० **लाल** ने पार्श्वनाथ मन्दिर मे प्रतिलिपि की थी।

६५०५. सगह ग्रन्थ— × । पत्र स० २ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी।

विशेष—चौदह कला, पच्चीस क्रिया आदि का वर्णन है।

६५०६. स्फुट पत्र संग्रह— × । पत्रस० १५ । आ० ८½×६½ इच । भापा—सस्कृत । विपय—सुभापित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३८-१३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर।

६५०७. **स्फुट पाठ सग्रह**— × । पत्रस० ५६ । आ० ६×४ इ च । भापा—हिन्दी । विपय—सग्रह । र०काल × । ले० काल स० १८२० । अपूर्ण । वेष्टनस० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

विशेष—विविध पाठो एव कथाओ का सग्रह है ।

६५०८. **स्फुट सग्रह**— × । पत्रस० ५२ । भाषा—हिन्दी । विषय—सग्रह । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन ४४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—निम्न पाठ है ।

वाईस परीषह वर्णन, कवित्त छहढाला, उपदेश बत्तीसी तथा कृपण पचीसी हैं ।

—— ० ——

विषय -- नीति एवं सुभाषित

६५०९ अक्षर बावनी—केशवदास (लावण्यरत्न के शिष्य) । पत्रस० १५ । आ० १०×४½ इच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सुभाषित । र०काल स० १७३६ सावण सुदी ५ गुरुवार । ले०काल स० १८६६ वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—पत्रस० १३ से राजुल नेमी बारहमासा केशवदास कृत (स० १७३४) दिया हुआ है । शीतकाल सवैया भी दिया हुआ है ।

अक्षर बावनी का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

आदि भाग—

ओकार सदा सुख देवत ही जिन सेवत वछित इच्छित पावै ।
बावन अक्षर माहि शिरोमणी योग योगीसर इस ही ध्यावै ।
ध्यान मे ज्ञान मे वेद पुराण मे कीरति जाकी सबै मन भावै ।
केशवदास को दीजिये दौलत भावस् साहिब के गुण गावै ।।६।।

× × × × × ×

यादव कोडि बसै दुरदत के राजतिराज त्रिखडमुरारी ।
होतव कोउन मेटि सकै जब देवपुरि खिन माहि उजारी ।
जोर सुरासुर जोर करै छट्ठी राति के लेखन लागतकारी ।
आल जजाल कहा करो केशव कर्म की रेख टरै नहि टारी ।।५०।।

अन्तिम—

बावन अक्षर जोय करै भैया गावु पच्यावहि मैं मल आवै ।
सतरसौत छत्तीस को श्रावण सुदि पाचै भृगुवार कहावै ।
सुख सौभाग्यनी कौतिन को हुवै बावन अक्षर जो गुण गावै ।
लावण्यरत्न गुरु सुपसावसु केशवदास सदा सुख पावै ।।

इति श्री केशवदास कृत अक्षर बावनी सपूर्ण ।

६५१०. अक्षरबावनी— × । पत्रस० १४ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—८ पत्र से आगे अध्यात्म बारहखडी है ।

६५११ अङ्क बत्तीसी--चन्द । पत्र स० ३ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । र०काल स० १७२८ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन म० २६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—

वोमकार अपार है जाको धरिये ध्यान ।
सर्व वस्तुकी सिद्धि ह्वै अरु घट उपजे ज्ञान ।
कथा कामिनि कनक सो मति बाधै तू हेत ।
ए दोऊ है अति बुरे अन्ति नरक मे देत ।।

× × × × ×

अन्तिम—

क्षिनक माझ करता पुरुष करन और सो और ।
जनम सिरानो जात है छाडि चन्द जग डौर ।।३५।।
सवत सत्रह सै अधिक वीते वीसर आठ ।
काती वुदि दोहज को कियो चन्द इह पाठ ।।३६।।

पार्श्वनाथ स्तुति भी दी हुई है ।

६५१२ **इन्द्रनदिनीतिसार—इन्द्रनदि** । पत्र स० ६ । आ० १२×४ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-नीति । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६०/८७ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६५१३ **प्रतिसं० २** । पत्र स० ७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६१/८८ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६५१४ **प्रतिसं० ३** । पत्र स० ७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६२/८६ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६५१५. **उपदेश बावनी—किशनदास** । पत्र स० ११ । आ० १०½×५ इन्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सुभाषित । र०काल स० १७६७ आसोज सुदी १० । ले० काल स० १८८० । पूर्ण । वेष्टन स० २१४/८६ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—

श्रीय सघराज लोकागछ सरिताज गुरु,
　　तिनकी कृपा ज कविताइ पाइ पावनी ।
सवत सत्तर सतसहे विजय दशमी को,
　　ग्रथ की समापत भइ है मम भावनी ।।
साध वीस ग्यानमा की जाइ श्री रतनवाई,
　　तज्यो देह तापें एह रची पर वावनी ।
मत कीन मति लीनी तत्वो ही पें रूची दीनी,
　　वाचक किशन कीनो उपदेश वावनी ।।

६५१६ **उपदेश वीसी—रामचन्द ऋषि** । पत्र स० ३ । आ० १०½×५ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । र०काल स० १८०८ वैशाख सुदी ६ । ले० काल स० १८३६ चैत्र बुदि । पूर्ण । वेष्टन स० १६४ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

अंतिम—

समत अठारैनीसैने आठ,
वैसाख सुद कहै छै छठ ।
युज जैमलजी रा प्रतापसु,
तीवरी माहे कहै छै रीप रायचन्द ।
छोडो रे छोडो ससार नो फद, तू चेत रे ।।

(दीवरा पेठ तुरकपुर माहे लीखी छै । दसकत सरावक वेला कोठारी रा छै ।

६५१७. **ज्ञानचालीसा**— × । पत्र स० २२ । आ० ६ × ४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले०काल स० १६१५ वैशाख बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ११२५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६५१८. **ज्ञान समुद्र—जोधराज** । पत्रस० ३७ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–सुभाषित । र०काल स० १७२२ चैत्र सुदी ५ । ले० काल स० १७५२ चैत्र बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी)

विशेष— हिण्डोली ग्राम मे प्रतिलिपि हुई थी ।

६५१९. **चतुर्विधदान कवित्त—ब्रह्म ज्ञानसागर** । पत्र स० ३ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १–१५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

विशेष—दान, पञ्चेन्द्रिय एव भोजन सम्बन्धी कवित्त हैं ।

६५२०. **चाणक्य नीति—चाणक्य** । पत्र स० २० । आ० ७½ × ५½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–नीति शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १८६६ । पूर्ण । वेष्टन स० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर टोडारायसिंह (टोक)

६५२१ **प्रति स० २** । पत्र स० २४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

६५२२. **प्रति स० ३** । पत्रस० १६ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोट्यो का नैणवा ।

६५२३. **प्रतिसं० ४** । पत्र स० ७ । आ० ५ × ४ इञ्च । । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८३ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६५२४. **प्रतिसं० ५** । पत्र स० ११ । आ० १०½ × ५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा ।

विशेष—११ से आगे पत्र नही हैं ।

६५२५. **प्रतिसं० ६** । पत्र स० १२ । आ० ११ × ४½ इञ्च । ले०काल स० १५६२ । पूर्ण । वेष्टन स० १५२/६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—

सवत् १५६२ वर्षे आश्वन बुदी १ शुभे लिखित चाणायके जोशी देइदास । शुभमस्तु । नीचे लिखा है—

आचार्य श्री जयकीर्ति तत् शिष्य ब्रह्म सवराज इद पुस्तक ।

६५२६ प्रति स० ७ । पत्र स० १० । आ० १२×५ इच । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष—वृहद् एव लघु चाणक्य राजनीति शास्त्र है ।

६५२७ प्रतिस० ८ । पत्र स० ७८ । आ० ४½×४½ इञ्च । ले०काल स० १७५४ आपाढ बुदी १२ । पूर्ण । वेप्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

६५२८. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १५ । आ० १०½ ×५ इञ्च । ले० काल स०१८७३ पौप सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० २६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६५२६. प्रति स० १० । पत्रस० ३-२३ । आ० १०×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३२६-१२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६५३० जैनशतक—भूधरदास । पत्रस० ६-४० । आ० ६ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । र०काल स० १७८१ । ले० काल स० १६२८ । अपूर्ण । वेप्टन स० ६६८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६५३१. प्रतिस० २ । पत्र स० २ । आ० ११ × ६ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४३२-२३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६५३२ प्रति स० ३ । पत्रस० स० १४ । आ० १० × ५½ इञ्च । ले०काल स० १८४७ आपाढ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० २६८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

विशेष—लिखापित सेरगढ मध्ये लिखि हरीस्यघ टोग्या श्री पार्श्वनाथ चैत्यालै लिखापित । पडित जिनदास जी पठनार्थं ।

६५३३. प्रति स० ४ । पत्रस० १७ । आ० १० ×५ इञ्च । ले० काल स० × । पूर्ण । वेष्टनस० ३११ । **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त मन्दिर ।

६५३४. प्रतिस० ५ । पत्र म० १८ । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल स० १६४० । पूर्ण ।वेष्टन स०३-२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)

विशेष—श्री हजारीलाल साह ने अष्टमी, चतुर्दशी के उपवास के उपलक्ष मे दूनी के मन्दिर मे चढाई थी ।

६५३५ प्रतिसं० ६ । पत्रस० १८ । आ० १३×७ इञ्च । ले० काल स० १६४४ भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)

विशेष—पुस्तक किसनलाल पाडया की है ।

६५३६. प्रतिस० ७ । पत्र स० २० । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल स० १६३६ द्वितीय सावण बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

विशेष—अग्रवालो के मन्दिर की पुस्तक से उतारा गया है ।

६५३७. प्रतिस० ८ । पत्र स० १८ । आ० ६×५½ इञ्च । ले०काल स० १६३५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

६५३८ **प्रतिसं० ९** । पत्र स० ३–१६ । आ० १०×६ इञ्च । ले० काल स० १९१० । अपूर्ण । वेष्टन स० २६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर बूंदी ।

विशेष—नगर भिलाय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

६५३९ **प्रतिसं० १०** । पत्रस० ३१ । आ० १०½ × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

विशेष—इसके अतिरिक्त द्यानतराय कृत चरचाशतक भी है ।

६५४० **प्रतिसं० ११** । पत्र स० १९ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५२ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

६५४१. **प्रतिसं० १२** । पत्रस० १२ । आ० १३ × ६ इञ्च । ले०काल स० १८१८ । पूर्ण । जीर्ण । वेष्टनस० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर टोडारायसिंह (टोंक)

६५४२. **प्रति स० १३** । पत्रस० १८ । आ० १०½ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

६५४३. **प्रति स० १४** । पत्रस० १७ । आ० ११×६ इञ्च । ले०काल स० १७८७ । पूर्ण । वेष्टन स० १६५–१२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

६५४४. **प्रति स० १५** । पत्रस० १७ । आ० ८×४ इञ्च । ले०काल स० १८४३ । पूर्ण । वेष्टन स० १६५-७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

६५४५. **प्रतिस० १६** । पत्रस० १२ । आ० १२ × ८ इञ्च । ले०काल स० १९४९ । पूर्ण । वेष्टनस० ९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा)

६५४६. **प्रति स० १७** । पत्रस० ८१ । ले०काल स० १७८९ । पूर्ण । वेष्टन स० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

विशेष—गुटका मे है ।

६५४७ **प्रति सं० १८** । पत्र स० ८ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन स० ६८२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६५४८. **प्रतिसं० १९** । पत्रस० १२ । आ० ९×७ इञ्च । ले०काल स० १९९६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६५४९. **प्रतिसं० २०** । पत्र स० १८ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल स० १८५९ । वेष्टन स० ७२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६५५०. **प्रति स० २१** । पत्रस० १५ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल स० १८८५ सावण सुदी १३ । वेष्टन स० ६०९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—दीवान सगही अमरचन्द खिन्दुका दसकत हुवचन्द अग्रवाल का ।

६५५१. **जैन शतक दोहा**—× । पत्र स० २ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर चौगान बूंदी ।

६५५२. देशना शतक— × । पत्र स० १८ । ग्रा० १० × ४½ इन्च । भापा—प्राकृत । विपय-सुभापित । र०काल × । ले० काल स० १७६१ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्रीमच्चन्द्रगच्छे उपाध्यायजी श्री लिखमीचन्दजी तत् शिष्य वा श्री स (मो) भाचन्दजी तत् शिष्य लालचन्दजी लिखत । स० १७६१ वर्षे वैशाख सुदी २ सोम श्री उदयपुरे नगर भृगात् ।

६५५३. दोहा शतक— × । पत्र स० ४ । भापा हिन्दी (पद्य) । विपय-सुभापित । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७० । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

विद्या भलपयण समुद्र जल अ भपगां ओकास ।
उत्तर पथ ने देवगत पार नही पृथवीराज । २६॥
कीयु कीजे साजना भीउन भाजे ज्याह ।
अजाकठ पयोहरा दूध न पाणी त्याह् ।।५।।
किहा कोयल किहा अ ब वन किहा ददुर किहा मेह ।
विसारिया न फिरे गिसा तणा सनेह ।।६१।।
कण काती तृण भादवे मोती आमो जरित ।
वहु वछेरा डीकरा निवडीया निरत ।।७१।।

६५५४. दृष्टान्त शतक—कुसुमदेव । पत्र स० ६ । ग्रा० १० × ४¾ इन्च । भापा—सस्कृत । विपय—सुभापित । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

६५५५ धर्मामृत सूक्ति सग्रह—× । पत्रस० ७८ । ग्रा० १०×६½ इन्च । भापा—सस्कृत । विपय सुभापित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

६५५६ नवरत्न वाक्य—× । पत्र स० १ । ग्रा० ६¾×४½ इन्च । भापा-सस्कृत । विपय-सुभापित । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी)

विशेष—विक्रमादित्य के नवरत्नो के वाक्य है

६५५७. नसीहत बोल—× । पत्रस० ५ । ग्रा० १२½ × ५½ इन्च । भापा-हिन्दी । विपय-सुभापित । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३५६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर

६५५८ नीति मजरी— ×। पत्रस० ६ । ग्रा० १२ × ५½ इन्च । भापा-हिन्दी प० । विपय-सुभापित । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

६५५६. नीति वाक्यामृत—आ० सोमदेव । पत्र स० ३० । ग्रा० १२×४¾ इन्च । भापा-सस्कृत । विपय-नीति शास्त्र । र०काल×। ले० काल× । पूर्ण । वेष्टन स० १४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

६५६०. **नीति श्लोक** — × । पत्रस० १-११,१७ । आ० ६३/४ × ४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय—नीति । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ८१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६५६१. **नीतिसार—आ० इन्द्रनन्दि** । पत्रस० ८ । आ० १२×५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-नीति । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३९ । । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

लेखक प्रशस्ति—सवत्सरे वसु वाण यमि सुधाकर मिते १७५८ वृन्दावतीनगरे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये श्री मूलसघे नद्यालाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कु दकु दाचार्यान्वये भ० श्री नरेन्द्रकीर्तिस्तच्छिष्य आचार्यवर्य ५ श्रीमदुदयभूसण शिष्य पडित जी ५ तुलसीदास शिष्य वुध तिलोकचद्रेणेद शास्त्र स्व-पठनार्थ स्वयुजेन लिखित ।

६५६२. **प्रतिसं० २** । पत्र स० १२ । आ० १०१/२×४१/२ इन्च । **ले०काल** स० १८५० चैत्र मास सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६५६३. **प्रति स० ३** । पत्रस० १४ । आ० ९ × ५१/२ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६५६४. **प्रतिसं० ४** । पत्रस० ६ । आ० १११/२ × ५१/२ इच । **ले०काल** स १९७१ । पूर्ण । वेष्टन स० २०७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६५६५ **नद बत्तीसी—नदकवि** । पत्रस० ४ । आ० १०×४१/२ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-नीति । र० काल × । ले०काल स० १७८१ सावन सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० १८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा ।

विशेष—नीति के श्लोक हैं ।

६५६६ **परमानंद पच्चीसी**— × । पत्र स० २ । आ० १०×९१/२ इन्च । भाषा—सस्कृत विषय—सुभाषित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८२-४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

६५६७ **पंचतन्त्र—विष्णुशर्मा** । पत्र स० ६१ । आ०१० × ४१/२ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—नीति शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६५६८. **प्रतिसं० २** । पत्र स० १८ । आ० १० × ४ इन्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २८९/५८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

६५६९. **प्रतिसं० ३** । पत्रस० २३ । आ० १२ × ६ इन्च । ले० काल स० १८५६ । पूर्ण । वेष्टन स० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, वू दी ।

विशेष—सुहृद्भेद तक है ।

६५७०. **प्रति स० ४** । पत्रस० १०२ । आ० १०१/२×४३/४ इन्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

विशेष—१०२ से आगे पत्र नही है।

६५७१. **प्रतिसं० ५** । पत्र स० १२३ । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल स० १८४४ आषाढ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजहमल (टोक) ।

विशेष—दौलतराम बघेरवाल शास्त्र घटायो पचाख्यान को महर का हामलक हाडौती सहर कोटा को लाडपुरो राज राणावतजी को देहुरो श्री शातिनाथजी को आचार्य श्री विजयकीर्ति ने घटायो पडिता नानाछ्ता ।

६५७२ **प्रतिसं० ६** । पत्रस० २३ । आ० १२×६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

६५७३ **प्रतिसं० ७** । पत्रस० ११२ । आ० १० × ४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मदिर ।

६५७४. **पचाख्यान (हितोपदेश)**— × । पत्र स० ८३ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय—नीति शास्त्र । र०काल × । ले० काल स० १८८९ । पूर्ण । वेप्टन स० ८२/३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ इदरगढ (कोटा)

विशेष—ऋषि बालकिशन जती ने करवर मे प्रतिलिपि की थी । मित्र भेद प्रथम तन्त्र तक है ।

६५७५ **प्रज्ञाप्रकाश षट्त्रिशका—रूपसिह** । पत्रस० ४ । आ० ६$\frac{1}{2}$×३$\frac{3}{4}$ इच । भाषा—सस्कृत । विपय—सुभापित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३२४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६५७६. **प्रश्नोत्तर रत्नमाला—अमोघहर्ष** । पत्र स० ३ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विपय-सुभापित । र०काल × । ले० काल स० १६१६ । पूर्ण । वेष्टनस० २८५/८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—सवत् १६१६ वर्षे पौष सुदी २ दिने स्वस्ति श्री अहमदावाद शुभ स्थाने मोजमपुर श्री आदिजिन चैत्यालये लिखित । ब्र० सवराजस्येद ।

६५७७ **प्रश्नोत्तर रत्नमाला—अमोघहर्ष** । पत्र स० ४ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय—सुभापित । र०काल× । ले०काल स० १६१७ फालगुण बुदी ११ । पूर्ण । वेप्टन स० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—वागडदेश के सागवाडा नगर मे श्री आदिनाथ जिन चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

६५७८ **प्रतिस० २** । पत्र स० २ । आ० ११×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन स० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६५७९. **प्रश्नोत्तर रत्नमाला—बुनाकोदास** । पत्रस० २ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय—सुभापिन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

६५८०. **प्रश्नोत्तर रत्नमाला—विमलसेन** । पत्र स० २ । आ० ६$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय—सुभापित । । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ९८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६५८१. प्रश्नोत्तर रत्नमाला— × । पत्र स० ५७ । आ० ६$\frac{3}{4}$×६$\frac{1}{4}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

विशेष—प्रति जीर्ण शीर्ण है ।

६५८२. प्रस्ताविक श्लोक— × । पत्र स० २२ । आ० ११×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले० काल स० १८८० मगसिर सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ४४१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६५८३. प्रस्ताविक श्लोक— × । पत्र स० २४ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत हिन्दी । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६५८४. प्रस्ताविक श्लोक— × । पत्र स० ६ । आ० ६× ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

६५८५. प्रस्तावित श्लोक— × । पत्र स० २ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले०काल स० १८६६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

६५८६. बावनी—जिनहर्ष । पत्र स० ४ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । र० काल स० १७३८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६५८७. बावनी—दयासागर । पत्रस० ३ । आ० ६$\frac{3}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०८६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—सूक्ति मुक्तावली का पद्यानुवाद है ।

१ ७ ६

सवत् चद समुद कथा निधि फागुण के वदि तीज भलीया ।
श्री दयासागर वावन अक्षर पूरण कीध कवित्त तेवीया ॥५८॥

६५८८. बावनी—ब्र० माणक । पत्र स० २-६ । आ० ६ × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६२/२८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—अन्तिम भाग

ब्रह्मचारि मणक इम वोलइ ।
सघ सहित गुरु चिरजीवहु ॥

इससे आगे ज्ञानभूषण की वेलि दी हुई है ।

अन्तिम भाग—निम्न प्रकार है ।

सेवकनि सहु सघ सदा जस महिमा मेरु समान ।
श्री ज्ञानभूपण गुरु सइहाथ इथ थाकतु कीजई ज्ञान ।
अमीयपाल साह कर जो नइ बोलइ एणा परिग्रास ।
स्वामीइ वेलि वलीवलीए तलउ रणगु उत्तम भरणेदि उवास ।।
इति वेलि समाप्ता ।

६५८९. बुधजन सतसई—बुधजन । पत्र स० ३१ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । र०काल स० १८८१ ज्येष्ठ बुदी ६ । ले० काल स० १९०६ । पूर्ण । वेष्टन स० १११० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६५९० प्रतिस० २ । पत्र स० ३० । आ० १०$\frac{1}{2}$×६$\frac{3}{4}$ इन्च । ले० काल स० १९३९ चैत सुदी ९ । पूर्ण । वेष्टनस० २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—मुकाम चन्द्रपुर मे लिखा गया है ।

६५९१ प्रतिसं० ३ । पत्रस० २३ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ८ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ९८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

६५९२ प्रतिस० ४ । पत्र स० २-५ । ले० काल स० १९५८ । पूर्ण । वेष्टन स० ९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

६५९३. प्रतिसं० ५ । पत्र स० २४ । । ले०काल स० १९४५ । पूर्ण । वेष्टन स० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर अलवर ।

६५९४ प्रति स० ६ । पत्रस० ३० । आ० ११×७ इन्च । ले० काल स० १९६१ । पूर्ण । वेष्टन स० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

६५९५. प्रतिस० ७ । पत्र स० २६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

६५९६ प्रतिसं० ८ । पत्र स० २८ । आ० ११ × ५$\frac{1}{2}$ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

६५९७ प्रति स० ९ । पत्रस० १०७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर दीवानजी भरतपुर ।

विशेष—गुटके रूप मे है ।

६५९८ बुधिप्रकाश रास—पाल । पत्रस० ३ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १९१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

उद्धरण—

भूखो मति चालै सीयालै ।
जीमर मति चालै उन्हालै ।।

वामण होय अण खायो ।
क्षत्री होय रिण मे भागो जाय ।।२०।।
कायथ होय र लेखो भूलै ।
एती तू क्रियाहीन तोलै ।।२१।।
आवुधिमार तणो विचार ।
आलन आवै इण ससार ।।
भणै पाल पुरुषोत्तम युता ।
राजकरो परिवार सजुत्ता ।।२२।।
इति बुधप्रकाश रास सपूर्ण ।

६५९९ **भर्तृहरि शतक—भर्तृहरि** । पत्र स० ३३ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल । ले० काल स० १८१६ पौष सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ६७२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६००. **प्रतिस० २** । पत्रस० १६ । ५ आ० १०×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १२८० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—१३ वा १४ वा पृष्ठ नही है ।

६६०१. **प्रतिसं० ३** । पत्रस० ३८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२८२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

६६०२. **प्रतिसं० ४** । पत्रस० २७ । आ० ९×४ इञ्च । ले०काल स० १७५९ । पूर्ण । वेष्टनस० १३२८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६०३ **प्रतिस० ५** । पत्र स० २-४५ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर वसवा ।

६६०४. **प्रतिसं० ६** । । पत्र सख्या ३५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सख्या ७५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

विशेष—सस्कृत टीक सहित हैं ।

६६०५. **प्रतिस० ७** । पत्र स० १० । आ० १२×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ बूदी ।

विशेष – शतक त्रय है ।

६६०६. **प्रतिसं० ८** । पत्र स० ३५ । आ० ९½ × ५½ इञ्च । ले० काल स० १८०४ । पूर्ण । वेप्टन स० २३५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूदी ।

विशेष—मूल के नीचे गुजराती मे अर्थ भी है ।

६६०७ **प्रतिसं० ९** । पत्र स० २१ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले० काल स० १८६६ वैशाख बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी)

विशेष—गोठडा ग्राम मे रुप विमल के शिष्य माग्य विमल ने प्रतिलिपि की थी ।

६६०८. प्रति स० १० । पत्रस० २४ । आ० ११×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

६६०९. प्रति स० ११ । पत्र स० ३२ । आ० १२×७½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)

६६१०. भर्तृहरि शतक भाषा—× । पत्र स० २९ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विपय–नीनि । र० काल × । लें०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १०० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर आदिनाथ बूदी

विशेष—नीति शतक ही है ।

६६११. भर्तृहरि शनक टीका— × । स०पत्र २६ । आ० ११½ × ५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय–नीति । र०काल × । ले०काल स० १८५६ । पूर्ण । वेष्टनस० २३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—भर्तृहरि काव्यस्यटीका श्री पाठकेन विदघेध्यनसार नाम्ना ।

६६१२ भर्तहरि शतक टीका—× । पत्रस० ४९ । भाषा–सस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७५८ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६६१३. भर्तृहरि शतक भाषा—सवाई प्रतापसिह । पत्रस० २३ । आ० १३× ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । र०काल × । ले० काल स० १८९२ । पूर्ण । वेष्टन स० ४५१ । **प्राप्ति स्थान** - भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६१४. मनराज शताक—मनराज । पत्र स० ७ । आ० १२ × ५ इञ्च । भाषा —हिन्दी । विषय–सुभापित । र०काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन स० ४६८/२५७ **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सभव नाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—अन्तिम भाग—

समय सुजावन समय धन समय न बार बार ।
सलिल वहेति सुरतिकरि इह क्षुदखाति गयारि ।
समयादेतुमसकि लधि सु प्रीति जु कसी ।
एहनी गुणी थिरु नहि चपल गजकन्नह जसी ।
पडित कु मुख देखि अधिक हुसि लाज करती ।
अधम तणा घरि महि दासजिम नीर भरती ।
इम जाणि समुअ कुसुय इह जग जुट्टिणि नवि भली ।
श्रीमानु कही नसि सगलो हो कहु कोई सधर चली ।।

कुल ३–४ पद हैं ।

६६१५. मरण करडिका—× । पत्रस० १३० । आ० १०×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत (पद्य) । विषय–सुभापित । र०काल × । ले० काल स० १६२७ । पूर्ण । वेष्टन स० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—स० १६२७ भादवा सुदी ३ गुरौ दिने सागवाडा ग्रामे पुस्तिका लेखक श्री राजचन्द्रेण ।

६६१६. राजनीति समुच्चय—चारणक्य । पत्रस० ६ । ग्रा० १०½×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय—नीति । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर ग्रजमेर भण्डार ।

६६१७. प्रतिसं० २ । पत्रस० ६ ।ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २८० । **प्राप्ति स्थान**–भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर भण्डार ।

६६१८. राजनीति सवैया—देवीदास । पत्रस० १८८ । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय—राजनीति । र०काल × । ले०काल स० १८३२ । पूर्ण । वेप्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

ग्रादि ग्रन्त भाग निम्न प्रकार हैं—

प्रारम्भ—

नीतिही तैं धर्म, धर्मतैं सकल सीधि
नीतिहीतैं ग्रादर सभानि वीचि पाइयौ ।
नीति तैं ग्रनीति छटैं नीतिहीतैं सुख लूटैं
नीतिहीनैं कोल भलो वकता कहाइयो ।
नीति हीतैं राज राजै नीति हीतैं पाया ही
नीति हीतैं नोउखड माहि जस गाइयो ।
छोटन कौ वडो करैं वडे महा वडे धरैं
तातैं सबही को राजनीति ही सुहाइयो ।

× × ×

ग्र तिम—

जब जब गाढ परी दासनि को
देवीदास जब तब ही ग्राप हरि जूनैं कीनी है ।
जैसे कष्ट नरहरि देव तु दयानिधान
ऐसो कौन ग्रवतार दयारस भीनौ है ।
मातानि पेटतैं स्वरूप धरैं ग्रौर ठौर
सोतो है उचित ऐसो ग्रोर को प्रवीन है ।
प्रहलाद देतु जानि ता घर कै बाधै
ग्रापु थावर के पेट मैं ते ग्रवतार लीनो है ।।१२२।।

इति देवीदास कृत राजनीति सवैया सपूर्ण ।

६६१९. राजनीति शतक— × । पत्र स० ५ । ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सुभापित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० २८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६६२०. लघुचारणक्य नीति (राजनीति शास्त्र)—चारणक्य । पत्र स० ११ । ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय—राजनीति । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर चौगान बूदी ।

विशेष—वृहद् राजनीति शास्त्र भी है।

६६२१. लुकमान हकीम की नसीहत—× ।। पत्रस० ७। ग्रा० १२½×५½ इञ्च। भापा-हिन्दी। विपय—सुभापित। र०काल ×। ले०काल स० १६०७ श्रावण सुदी ८ । पूर्ण। वेप्टन स० ३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर छोटा वयाना।

विशेष—प्रथम पाच पत्र तक लुकमान हकीम की नसीहते है तथा इससे आगे के पत्रो मे १०० प्रकार के मूर्खो के भेद दिये हुए हैं।

६६२२. वज्जवली—प० वल्लह। पत्र स० १८। ग्रा० १४¾×४¾ इञ्च। भापा—प्राकृत। विपय—सुभापित। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १३६१। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।'

६६२३. विवेक शतक—थानसिंह ठोल्या। पत्र स० ६। ग्रा० १०½×६¾ इञ्च। भापा—हिन्दी पद्य। विषय—सुभाषित। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

६६२४ वृन्द शतक—कवि वृन्द। पत्र स० ४। ग्रा० १०½×६½ इच। भापा—हिन्दी (पद्य)। विणय—सुभापिन। र० काल ×। ले०काल। अपूर्ण। वेप्टन स० ५६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर टोडारायसिंह (टोक)

६६२५. सज्जन चित्त वल्लभ—मल्लिषेण। पत्रस० ३। ग्रा० १०×४½ इञ्च। भापा—सस्कृत। विषय—सुभाषित। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ३०६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६६२६. प्रतिस० २। पत्रस० ३। ग्रा० १२×५ इञ्च। ले०काल स० १८०६ कार्तिक वुदी ८। पूर्ण। वेष्टन स० १५६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवाजी कामा।

६६२७. सज्जन चित्तन वल्लभ—×। पत्रस० ३। ग्रा० ६⅞×४⅞ इञ्च। भापा-सस्कृत। विपय—सुभापित। र०काल ×। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन स० ६०७। **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६६२८ सज्जन चित्त वल्लभ भाषा— ऋषभदास। पत्रस० १२। ग्रा० १२×४½ इञ्च। भापा-हिन्दी गद्य। विषय-सुभापित। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी।

६६२९. सज्जनचित्त वल्लभ भाषा—हरगूलाल। पत्रस० २२। ग्रा० १० ½×४½ इञ्च। भापा-हिन्दी (गद्य)। विपय—सुभापित। र०काल स० १६०७। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ५२-८४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर।

विशेष—लेखक करौली के रहने वाले थे तथा वहा से सहारनपुर जाकर रहने लगे थे। ग्रथ प्रशस्ति दी हुई हैं।

६६३०. प्रतिस० २। पत्रस० १६। ग्रा० ११½×७ इञ्च। ले० काल स० १६३८। पूर्ण। वेष्टन स० १७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर।

६६३१. सप्तव्यसन चन्द्रावल—ज्ञानभूषण। पत्रस० १। आ० १२×४ इच। भाषा—हिन्दी। विषय—सुभाषित। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २१०-६५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

६६३२. सद्भाषितावली (सुभाषितावली)—सकलकीर्त्ति। पत्र स० २६। आ० १२×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय—सुभाषित। र०काल ×। ले० काल स० १७०२ फाल्गुन बुदी ७। पूर्ण। वेष्टन स० ७१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—महाराजसिंह के शासनकाल मे साह पावू ने अम्बावती गढ मे लिपि की थी।

६६३३. प्रतिसं० २। पत्र स० २३। आ० १०½×६ इञ्च। ले० काल स० १७। पूर्ण। वेष्टनस० ७२। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—चम्पावती महादुर्ग मे प्रतिलिपि हुई लेखक प्रशस्ति बहुत विस्तार से है।

६६३४.प्रति स० ३। पत्र स० ३४। ले० काल स० १६१०। पूर्ण। वेष्टन स० १७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर हूण्डावालो का डीग।

६६३५ सद्भाषितावली— ×। पत्र स० १६। आ० ११½×५½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—सुभाषित। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

६६३६. सद्भाषितावली—×। पत्रस० १-२५। आ० १०×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—सुभाषित। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ३४८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

६६३७. सद्भाषितावली—×। पत्र स० ४२। आ० ९×५ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-सुभाषित। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० २६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा।

६६३८. सद्भाषितावली—×। पत्र स० २६। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-सुभाषित। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १२१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

६६३९. सदभाषितावली—×। पत्रस० २५। भाषा-सस्कृत। विषय-सुभाषित। र० काल×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बडा पचायती मन्दिर डीग।

६६४०. सद्भाषितावली भाषा—पन्नालाल चौधरी—×। पत्र स० ११६। आ० ११¾×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय— सुभाषित। र० काल स० १९३१ ज्येष्ठ सुदी १। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

६६४१. प्रति स० २। पत्रस० १०२। आ० १३½×७ इञ्च। ले०काल स० १९४६। पूर्ण। वेष्टनस० ९५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

६६४२. प्रतिसं० ३। पत्र स० ६१। आ० १३ × ७½ इञ्च। ले० काल स० १९५२। पूर्ण। वेष्टन स० ३७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा।

६६४३ **प्रति स० ४**। पत्र स० ६६। आ० १२×७½ इञ्च। ले० काल स० १६४५। पूर्ण। वेष्टनस० २७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बूदी।

विशेष—इन्दौर मे लिखा गया था।

६६४४. **सभातरग**—×। पत्रस० २७। आ० १०×४½ इच। भाषा—सस्कृत। विषय—सुभाषित। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २८७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

६६४५. **सारसमुच्चय**— ×। पत्रस० १०। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—सुभाषित। र०काल ×। ले०काल स० १८८०। पूर्ण। वेष्टनस० १४ **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६६४६. **सारसमुच्चय**—×। पत्रस० २२। आ० १०½×५ इच। भाषा—सस्कृत। विषय—सुभाषित। र०काल ×। ले०काल स० १६५२ कार्तिक शुक्ला १२। पूर्ण। वेष्टन स० ३४२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६६४७. **सारसमुच्चय**—×। पत्र स० १६। आ० १०½ × ५½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—सुभाषित। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३२८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

६६४८ **सिन्दूर प्रकरण—बनारसीदास**। पत्रस० २४। आ० १२½×५½ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—सुभाषित। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

६६४६. **प्रतिसं० २**। पत्रस० ६२। आ० ६×६ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सौगानी करौली।

विशेष—१८ पत्र से समयसार नाटक बधधार तक है आगे पत्र नही है।

६६५०. **प्रतिसं० ३**। पत्रस० ५-२१। आ० १० × ६ इच। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ७८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

६६५१ **प्रतिसं० ४**। पत्र स० १३। आ० १०×६½ इञ्च। ले० काल स० १६०८ चैत सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन स० ६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

विशेष—गणेशीलाल बैनाडा ने पुस्तक चढाई थी।

६६५२. **प्रति स० ५**। पत्र स० १४। आ० १०×६ इञ्च। ले० काल स० १८६१। पूर्ण। वेष्टन स० ६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)।

६६५३. **प्रतिस० ६**। पत्र स० १८। आ० ११×४½ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक)।

६६५४ **प्रतिसं० ७**। पत्र स० २-२२। आ० ७ × ४½ इञ्च। ले०काल स० १८०८। पूर्ण। वेष्टन स० ६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोट्यो का नैणवा।

६६५५. **प्रतिसं० ८**। पत्र स० १५। आ० ११½×५½ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ८३४/८३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर।

६६५६ प्रतिसं० ९ । पत्रस० २१ । आ० ११×४ इच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

विशेष—प्रति नवीन है ।

६६५७. प्रतिसं० १० । पत्र स० २–१३ । आ० ९×४ इञ्च । ले०काल स० १६९६ भादवा सुदी १५ । अपूर्ण । वेष्टन स० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी) ।

विशेष—प्रथम पत्र नही है ।

सवत् १६९६ वर्षे भादवा सुदी १५ सोमवासरे श्री आगरा मध्ये पातिसाह श्री साहिजहा राज्ये लिखित साह रामचन्द्र पठनार्थं लिखित वीरवाला ।

६६५८ प्रतिसं० ११ । पत्रस० १६ । ले० काल स० १७१७ । पूर्ण । वेष्टन स० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

६६५९. सिन्दूरप्रकरण भाषा— × । पत्रस० ४१ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विपय-सुभापित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

६६६० सुगुरु शतक—जोधराज । पत्र स० ६ । आ० ११×५ इञ्च । भापा-हिन्दी । विपय–सुभाषिन। र०काल स० १८५२ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन म० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक)

६६६१. सुबुद्धिप्रकाश—थानसिंह । पत्र स० ७६ । आ० ११×५ इञ्च । भापा-हिन्दी पद्य । विषय-सुभापिन । र०काल स० १८४७ फागुन बुदी ६ । ले० काल स० १९०० ज्येष्ठ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

६६६२ प्रति सं० २ । पत्र स० ११९ । आ० १३×६ इञ्च । ले० काल स० १९०० कार्तिक सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

६६६३. सुभाषित— × । पत्रस० १७ । आ० ९×४$\frac{1}{2}$ इच । भाषा—सस्कृत । विपय—सुभापित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६६६४. प्रति स० २ । पत्र स० २५ । आ० १०$\frac{3}{4}$×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेव्टन स० ६५९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

६६६५ प्रति स० ३ । पत्रस० १६ । आ० ८×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४६५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६६६. सुभाषित दोहा— × । पत्र स० २–४२ । आ० ९×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विपय—सुभापित । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६६६७. सुभाषित प्रश्नोत्तर रत्नमाला—ब्र० ज्ञानसागर । पत्रस० १४१ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९६१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—सुभापित प्रश्नोत्तरमाणिक्यमालामहाग्र थे ब्र० श्री ज्ञानसागर सग्रहीते चतुर्थोऽधिकार.।

६६६८. सुभाषित रत्नसदोह—अमितिगति । पत्रस० ११४ । आ० ७½×४ इन्च । भाषा—सस्कृत । विपय—सुभापित । र० काल × । ले०काल स० १५६५ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० १२०३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६६९ प्रति स० २ । पत्रस० ७५ । आ० ११¾×४¾ इन्च । ले० काल स० १५७४ मगसिर सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ७४६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

६६७० प्रति स० ३ । पत्रस० ७१ । आ० १०½×४¾ इन्च । ले०काल स० १५६० । पूर्ण । वेष्टनस० ७०६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६७१. प्रति स० ४ । पत्र स० ६५ । आ० १२×५½ इन्च । ले० काल स० १८४७ । पूर्ण । वेष्टन स० १६०० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

६६७२ प्रति स० ५ । पत्रस० ४६ । ले० काल स० १८२७ ज्येष्ठ बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—आशाराम ने भरतपुर मे प्रतिलिपि करवाई थी ।

६६७३. सुभाषितावली—सकलकीर्ति । पत्र स० ४२ । आ० ६×५ इच । भाषा—सस्कृत । विपय—सुभापित । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—ग्र थ का नाम सुभापित रत्नावली एव सद्भापितावली भी है ।

६६७४ प्रतिस० २ । पत्रस० २३ । आ० ६×४ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४२६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६७५. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ५१ । आ० ११×५ इन्च । ले०काल स० १६६७ भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १४६५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—मडलाचार्य यश कीर्ति के शिष्य ब्र० गोपाल ने प्रतिलिपि की थी ।

६६७६. प्रति स० ४ । पत्र स० २६ । आ० १०¾×४½ इन्च । ले०काल० × । पूर्ण । वेष्टन स० १८३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६७७. प्रतिसं० ५ । पत्र स० २२ । आ० ११×५ इन्च । ले० काल स० १८३२ चैत सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स०१०४१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—सिकदरा मे हरवशदास लुहाडिया ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

६६७८. प्रतिस० ६ । पत्र स० १८ । आ० ९ × ५ इच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११०२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

६६७९ प्रतिस० ७ । पत्र स० ३३ । आ० ११½×५½ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

६६८०. **प्रतिसं० ८** । पत्रस० २१ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल स० १५८४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

प्रशस्ति—सवत् १५८४ वर्षे आसोज सुदी १५ बुधवार लथत श्री मूलसघे महामुनि भट्टारक श्री सकलकीर्ति देवातत्पट्टे भ० श्री ५ भुवनकीर्त्ति भ्रातृ आचार्य श्री ज्ञानकीर्ति शिष्य आचार्य श्री रत्नकीर्ति तस्य शिष्य आ० श्री यशकीर्ति तत् शिष्य ब्रह्म विद्याधर पठनार्थं उपासकेन लिखाप्य दत्त ।

६६८१. **प्रतिसं० ९** । पत्रस० १४ । आ० ९×५½ इञ्च । ले०काल स० १८५६ जेठ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

६६८२. **प्रतिस० १०** । पत्रस० ६ । आ० ९×४½ इञ्च । ले० काल स० १७४८ माघ शुक्ला ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—प० मनोहर ने आत्म पठनार्थं लिखा था ।

६६८३ **प्रति स० ११** । पत्रस० ४० । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

६६८४. **प्रतिसं० १२** । पत्र स० २-३७ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६६८५. **प्रति स० १३** । पत्रस० ४१ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल स० १७१८ आसोज बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टनस० ३०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—मोजमावाद मे ऋषभनाथ चैत्यालय मे पडित भगवान ने स्वय के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

६६८६. **प्रतिसं० १४** । पत्र स० २२ । आ० ९×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८३-७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६६८७. **प्रतिसं० १५** । पत्र स० १० । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति जीर्ण किन्तु प्राचीन है । प्रति की लिखाई सुन्दर है ।

६६८८. **प्रतिसं० १६** । पत्रस० २५ । आ० ९¾×६ इञ्च । ले०काल स० १८७६ मगसिर बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक)

६६८९ **प्रतिस० १७** । पत्र स० २४ । आ० ११½×५¾ इञ्च । ले०काल स० १८२२ माघ बुदी ऽऽ । पूर्ण । वेष्टन स० ८० । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पचायती मन्दिर दीवान जी कामा ।

विशेष—प्रतिलिपि दिल्ली मे हुई थी ।

६६९०. **प्रतिसं० १८** । पत्रस० ७६ । ले०काल स० १७२२ चैत बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर बसवा ।

विशेष—दौसा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

६६९१. **प्रतिसं० १९** । पत्रस० १७ । आ० १०×५ इच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १९१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलना (बूंदी)

६६६२. **प्रति सं० २०** । पत्रस० ३३ । ग्रा० ६$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १८३१ वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

विशेष—भट्टारक धर्मचन्द्र के शिष्य ब्रह्म मेघजी ने प्रतापगढ़ नगर मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी ।

६६६३. **सुभाषितरत्नावलि**— × । पत्र स० १७ । ग्रा० ६×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले० काल स० १७५८ ग्रापाढ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० ६८७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष—प० सुन्दर विजय ने प्रतिलिपि की थी ।

६६६४. **सुभाषितावली—कनककीर्त्ति** । पत्र स० ३३ । ग्रा० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा ।

६६६५ **सुभाषितावली**—× । पत्रस० १४ । ग्रा० १०× ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले०काल × । । पूर्ण । वेष्टनस० ४० । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

६६६६. **सुभाषितावली**—× । पत्र स० ८ । ग्रा० ६×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६०-२८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६६६७. **प्रति स० २** । पत्र स० ८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६१-२८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६६६८ **सुभाषितावली—दुलीचन्द** । पत्र स० १७ । ग्रा० १३× ८$\frac{1}{2}$ इच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सुभाषित । र०काल स० १६२१ ज्येष्ठ सुदी १ । ले०काल स० १६४६ भादवा बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर ग्रलवर ।

६६६९. **प्रतिस० २** । पत्रस० ७५ । र०काल स० १६२१ । ले०काल स० १६५२ । पूर्ण । वेष्टनस० ५४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६७००. **सुभाषितावली भाषा—खुशालचद** । पत्रस० २-८५ । ग्रा० १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—सुभाषित । र०काल स० १७६४ सावण सुदी १४ । ले०काल स० १८०२ चैत सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—ग्रन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

वीतराग देवजू कह्यो सुभाषित ग्रथ ।
च्यारि ग्यान धारक गणी रच्यौ सुभाषजी ।
इन्द्र धरणीन्द्र चक्रवर्ति ग्रादिक सेवतु है
तीनलोक के मोह को सुदीपक कहायजी ।।
साधु पुरुषू के वैन ग्रमृत सम मिष्ट ग्रैन
धर्म बीज पावन सुभाषि फलदायजी

सर्वजिन हितकार जामै सुख है अपार
ऐसो ज्ञान तीरथ अमोल चितलायजी ।
दोहा—
सतरासै चौराणवे श्रावण मास मझार ।
सुदि चवदसि पूरण भयो इह श्रुत अति सुखकार
सवलसिंह पञ्चा तणौ नदन राजाराम ।
तीन उपदेसै मैं रच्यो श्रुति खुशाल अभिराम ॥

इति सुभाषितावलि ग्रंथ भाषा खुशालचन्द कृत समाप्तम् ।

६७०१. **प्रति सं० २** । पत्र सख्या ३३ । आ० ८×४½ इञ्च । ले०काल स० १८१२ आसोज बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

६७०२. **प्रतिस० ३** । पत्रस० ६३ । आ० १०×५½ इञ्च । ले०काल स० १८६९ पौष बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—छबीलचन्द मीतल ने करौली नगर मे पार्श्वनाथ के मन्दिर मे प्रतिलिपि कराई थी ।

६७०३. **सुभाषितार्णव—शुभचद्र** । पत्रस० ११३ । आ० ९×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले० काल स० १८६९ सावन सुदी १३ । । पूर्ण । वेष्टन स० ६२-५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगानी मन्दिर करौली ।

६७०४. **प्रतिसं० २** । पत्रस० २५७ । ले० काल स० १९३० । पूर्ण । । वेष्टनस० ५३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६७०५. **प्रति सं० ३** । पत्रस० ४१ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल १७४४ । पूर्ण । वेष्टन स० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६७०६. **सुभाषितार्णव**—× । पत्रस० ४५ । आ० ११½×६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले०काल स० १७८४ माघ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर दूनी (टोक)

६७०७. **सुभाषितार्णव**—× । पत्रस० ४९ । आ० १२ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले०काल स० १६०७ भादवा बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन स० ७३ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—चम्पावती महादुर्ग मे प्रतिलिपि हुई । लेखक प्रशस्ति बहुत विस्तार पूर्वक है ।

६७०८. **सूक्ति मुक्तावली—आचार्य मेरूतुग** । पत्रस० ३ । आ० १४×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—महापुरुष चरित्र का मूलमात्र है ।

६७०९. **सूक्तिमुक्तावली-आ० सोमप्रभ** । पत्रस० ८ । आ० ९½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—दो पतिया और है ।

६७१०. प्रति सं० २ । पत्रस० ८ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन स० ११८७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६७११. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ७ । आ० १०× ४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३४० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६७१२. प्रतिसं० ४ । पत्रस० २८ । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल स० १७८८ । पूर्ण । वेष्टनस० २८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

६७१३. प्रतिस० ५ । पत्रस० ८ । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६६८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

टव्वाटीका सहित है तथा प्रति जीर्ण है ।

६७१४. प्रतिसं० ६ । पत्र स० १६ । आ० १०×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६७१५. प्रति स० ७ । पत्र स० ११ । आ० ९×४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४२८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६७१६. प्रति सं० ८ । पत्र स० ९ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३८६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६७१७. प्रति स० ९ । पत्र स० १० । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १८११ । पूर्ण । वेष्टन स० १२७४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

६७१८. प्रतिसं० १० । पत्रस० १५ । आ० ११×४ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २३७/२३२ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

६७१९. प्रतिस० ११ । पत्र स० ७ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल स० १७७६ । अपूर्ण । वेष्टन स० २५६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६७२०. प्रतिसं० १२ । पत्रस० १५ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इच । ले० काल स० १६४० । पूर्ण । वेष्टनस० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है —

सवत् १६४० वर्षे श्रावरण वुदी ९ दिने लिखित शिष्य ब्र० टीला ब्र० नाथू कै पाडे गोइन्द शुभ भवतु कल्याणमस्तु ।

६७२१. प्रतिसं० १३ । पत्रस० १३ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले०काल स० १७२९ । पूर्ण । वेष्टन स० २११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—सवत् १७२९ मे सावरण सुदी १० को श्री प्रतापपुर के आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की गई थी ।

६७२२ प्रतिसं० १४ । पत्र स० १८ । आ० १० × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६७२३. **प्रतिस० १५**। पत्र स० ११। आ० १०½ × ५½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

६७२४. **प्रति स० १६**। पत्रस० २०। आ० १०½ × ५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—सुभाषित। र०काल ×। ले० काल स०१७२८ चैत्र सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० ६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—मोहम्मद शाह के राज्य मे शेरपुर मे चिन्तामणि पार्श्वनाथ के चैत्यालय मे हारिक्षेम ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

६७२५. **प्रतिसं० १७**। पत्रस० १४। आ० १२ × ६ इञ्च। ले०काल स० १८४४ प्रथम श्रावण सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० ६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—११-१२ वा पत्र नही हैं।

६७२६ **प्रतिसं० १८**। पत्र स० १५। आ० १०½×५½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—१५ से आगे नही लिखा गया है।

६७२७. **प्रतिसं० १९**। पत्रस० १२। आ० १२×६ इच। ले०काल स० १९४६। पूर्ण। वेष्टन स० ६१०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

६७२८. **प्रतिस० २०**। पत्रस० २-१५। आ० ८½ × ३½ इच। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ७१६। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मदिर लश्कर, जयपुर।

६७२९ **प्रतिसं० २१**। पत्र स० १०। आ० ९ × ६ इञ्च। ले० काल स० १८८७। पूर्ण। वेष्टन स० ३२५-१२२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर।

६७३० **प्रतिसं० १२**। पत्रस० १२। आ० १० × ४½ इञ्च। ले०काल स० १७३१ श्रावण शुक्ला १। पूर्ण। वेष्टन स० ३७८-१४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

६७३१ **प्रतिसं० १३**। पत्रस० १२। आ० १०¾ × ४½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १२६-५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

६७३२. **प्रतिसं०१४**। पत्र स० १४। आ० १०½ × ४½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—भट्टारक शुभचन्द्र शिष्य मुनि श्री सोमकीर्ति पठनार्थ स्वहस्तेन लिखित।

६७३३. **प्रतिसं० १५**। पत्र स० १४। आ० १० × ५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २९१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

६७३४ **प्रतिसं० १६**। पत्रस० १०। आ० १०½ × ५ इञ्च। ले०काल स० १६०३। पूर्ण। वेष्टन स० १३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

लेखक प्रशस्ति—सवत् १६०३ वर्षे शाके १४६८ प्रवर्त्तमाने महामागल्य भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे दशम्या तिथौ रविवासरे तक्षक महादुर्गे राजाधिराज सोलकीराउ श्री रामचन्द विजयराज्ये [श्री ऋषभ जिन चैत्यालये श्री मूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे.......... मडलाचार्य धर्म्म तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये

वैद गोत्रे　　　साह पोषा तस्य पौत्र सा. होला तद्भार्या खीवणी इद शास्त्र लिखाप्य मुनि श्री कमल-कीर्त्तिये दत्त ।

६७३५. **प्रतिसं० १७** । पत्रस० ५ । श्रा० १३ × ५ इञ्च । ले० काल स० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन स० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

६७३६. **प्रतिस० १८** । पत्र स० ३५ । श्रा० ६$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १७६५ । पूर्ण । वेष्टनस० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—मेडता मे प्रतिलिपि हुई थी ।

६७३७. **प्रतिसं० १६** । पत्र स० १६ । श्रा० ६$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{4}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

६७३८. **प्रतिस० २०** । पत्र स० १३ । श्रा० १०×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

६७३६ **प्रतिसं० २१** । पत्र स० १६ । श्रा० ८$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—दो प्रतिया और हैं ।

६७४०. **प्रति स० २२** । पत्र स० ११ । श्रा० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल स० १६६८ काती सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

६७४१. **प्रतिसं० २३** । पत्रस० १७ । श्रा० १३×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १६५५ काती सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० २३७ । **प्राप्दि स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

६७४२ **प्रतिसं० २४** । पत्र स० २२ । श्रा० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति हर्षकीर्ति कृत सस्कृत टीका सहित है ।

६७४३ **प्रतिस० २५** । पत्रस० १६ । श्रा० १०×४$\frac{1}{2}$ इच । ले०काल स० १६६६ । पूर्ण । वेष्टन स० १२२/२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ कोटा ।

विशेष—प्रति हर्षकीर्ति कृत सस्कृत टीका सहित है ।

सवत् १६६६ वर्षे फागुण वुदी श्रमावस्यासोमे पाटण नगरे लिखितेय टीका ऋषि लक्ष्मीदासेन ऋषि जीवाय वाचनार्थं । इन्दरगढ का वडा जैन मन्दिर ।

६७४४. **प्रतिस० २६** । पत्रस०३६ । श्रा० १०×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले०काल स० १८२७ । पूर्ण । वेष्टनस० १२१/२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगट (कोटा) ।

विशेष—करवाड ग्राम मे प्रतिलिपि हुई थी ।

६७४५. प्रतिसं० २६ । पत्र स० १० । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—स स्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले०काल स० १७८१ । पूर्ण । वेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्द्रगढ (कोटा)

६७४६ प्रति स० २७ । पत्र स० १० । आ० १०½×४¾ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी) ।

६७४७. प्रतिसं० २८ । पत्रस० ९ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी)

विशेष—ध्यान विमल पठनार्थं ।

६७४८ प्रतिस० २९ । पत्रस० १० । आ० १० ×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल स० १५९२ माघ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० ५८/८९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर भादवा (राज०)

विशेष—प्रति जीर्ण है । वीर भट्टारक के लिए प्रतिलिपि की गई थी ।

६७४९. प्रतिसं० ३० । पत्रस० ९ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले० काल स० १६६६ कार्त्तिक बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० २२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

विशेष – अहमदाबाद मे लिखा गया था ।

६७५०. प्रतिसं० ३१ । पत्र स० ३-१५ । आ० १०½×७ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले० काल स०१९०४ । पूर्ण । वेष्टन स० २५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

विशेष—मूल के नीचे सस्कृत मे टीका भी है । वृन्दावती मे नेमिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

६७५१. प्रतिसं० ३२ । पत्रस० ३० । आ० ६×५ इञ्च । ले० काल स० १९५५ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

६७५२ प्रति स० ३३ । पत्रस० २५ । आ० १० ×७½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, चौगान बू दी ।

६७५३ प्रति स० ३४ । पत्र स० ७६ । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल स० १७१७ कार्त्तिक बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बू दी ।

विशेष—मौजमाबाद मे लिखा गया था ।

६७५४. प्रतिसं० ३५ । पत्र स० १७ । आ० ९×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले० काल स० १८७६ भादवा बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० २११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

६७५५. प्रतिसं० ३६ । पत्रस० १३ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सुभाषित । र०काल-× । ले० काल स० १९५५ आषाढ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक)

विशेष—कोटा स्थित वासूपूज्य चैत्यालय मे सभवराम ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

६७५६. **प्रतिस० ३७** । पत्र सख्या २१ । ले०काल स० १७६५ पौष बुदी ६ । पूर्ण । वेप्टन स० २०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—सुन्दरलाल ने सूरत मे लिपि की थी ।

६७५७. **प्रतिस० ३८** । पत्रस० २७ । ले०काल स० १८६२ चैत्र सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० २०६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर मे लिखी गई थी ।

६७५८. **प्रतिस० ३९** । पत्रस० १९ । ले०काल स० १८२५ आषाढ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० २८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—सूत्रो पर दूदा कृत हिन्दी गद्य टीका है । केसरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

६७५९. **प्रति स० ४०** । पत्र स० ११ । ले०काल स १६५२ । पूर्ण । वेप्टन स० २७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

६७६०. **प्रति स० ४१** । पत्रस० ३२ । ले०काल स० १८७२ । पूर्ण । वेष्टनस० ७१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—प्रति हर्पकीर्ति कृत सस्कृत टीका सहित है ।

६७६१ **प्रति स० ४२** । पत्र स० ६९ । आ० ९ × ४½ इञ्च । ले०काल स० १६५२ । पूर्ण । वेष्टन स० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

६७६२. **प्रतिसं० ४३** । पत्रस० १३ । आ० ११½×५ इञ्च । ले० काल स० १८४७ माह सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर ।

६७६३. **सूक्तिमुक्तावली टीका—हर्षकीर्त्ति** । पत्र स० ३५ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल स० १७६० प्रथम सावण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ कोटा ।

विशेष—अमर विमल के प्रशिष्य एव रत्नविमल के शिष्य रामविमल ने प्रतिलिपि की थी ।

६७६४. **प्रतिसं० २** । पत्रस० ४५ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल स० १७५० माघ बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १४८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—शाकभरी वास्तव्ये श्राविका गोगलदे ने रत्नकीर्ति के लिए लिखवाया था ।

६७६५. **प्रति स० ३** । पत्र स० २६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६७६६. **प्रति स० ४** । पत्रस० ४२ । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

विशेष—नागपुरीयगच्छ के श्री चन्द्रकीर्ति के शिष्य श्री हर्षकीर्ति ने सस्कृत टीका की है ।

६७६७ सूक्ति मुक्तावली भाषा—सुन्दरलाल । पत्रस० ४६ । ग्रा० १२×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-सुभाषित । र० काल स० १७६६ ज्येष्ठ बुदी २ । ले० काल म० १६३५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—रचना सवत् के निम्न सकेत दिये है—

६ ६ ७ १

'रस युग सरा शशि'

६७६८. सुक्तिमुक्तावली भाषा—सुन्दर । पत्रस० ४५ । ग्रा० १३ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

६७६९. सूक्तिमुक्तावली टीका— × । पत्र स० २-२४ । भाषा—सस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६७७० प्रतिसं० २ । पत्र स० २६ । ग्रा० ६½×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले० काल स० १८३६ ज्येष्ठ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६७७१. सूक्तिमुक्तावली भाषा— × । पत्रस० ६६। ग्रा० ११¾×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । (गद्य) । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५२/१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा)

६७७२. सूक्ति मुक्तावली वचनिका—× । पत्र स० ४३ । ग्रा० १०½ × ६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले० काल स० १६४५ । पूर्ण । वेष्टन स० १८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

६७७३. सूक्तिसग्रह— ×। पत्रस० १० । भाषा—सस्कृत । विषय—सुभाषित । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६७७४ सूक्ति सग्रह— × । पत्रस० २७ । ग्रा० १०×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल× । पूर्ण । वेष्टनस० ३२७-१२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६७७५ सबोध पचासिका — × । पत्र स० १३ । ग्रा० ११½×५½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सुभापित । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली, कोटा ।

६७७६. सबोध सत्ताणनु दूहा—वीरचन्द । पत्रस० ६ । ग्रा० ६×४⅓ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले०काल स० १८३७ कार्त्तिक बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६७७७. **हरियाली छप्पय—गंग।** पत्र स० ५। आ० ६३/४×४३/४ इ च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय—सुभाषित। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १०६-५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर।

६७७८. **हितोपदेश—वाजिद।** पत्रस० १-२१। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—नीति शास्त्र। र० काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बू दी)।

६७७९ **हितोपदेश—विष्णुशर्मा।** पत्र सं० ३-६०। आ० १०१/२×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय–नीति एव सुभाषित। र०काल ×। ले०काल स० १८५२। अपूर्ण। वेष्टन स० ३६०। **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूंदी)।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है।

६७८०. **प्रति स० २।** पत्रस० ५५। आ० ६३/४×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र०काल ×। ले० काल। अपूर्ण। वेष्टनस० २००। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

६७८१. **हितोपदेश चौपई—×।** पत्रस० ६। आ० ६× ४ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय–सुभाषित। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी।

विषय--स्तोत्र साहित्य

६७८२. **अकलकाष्टक-अकलकदेव** । पत्र स० ५-८ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४५५/४३७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—एक प्रति वेष्टन स० ४५६/४३८ मे और है ।

६७८३ **प्रतिसं० २** । पत्रस० २ । आ० १३½×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिरलश्कर, जयपुर ।

६७८४. **प्रतिसं० ३** । पत्र स० ३ । आ० ९×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय स्तोत्र । र० काल× । ले० काल× । पूर्ण । वेष्टन स० १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिरबोरसली कोटा ।

६७८५. **अकलकाष्टक भाषा—जयचन्द छाबड़ा** । पत्र स० ११ । आ० ११½×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १९२९ फाल्गुण सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६-३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

६७८६. **प्रतिसं० २** । पत्र स० ९ । ले०काल स० १९३० । पूर्ण । वेष्टन स० ३७-३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

६७८७. **अकलकाष्टक भाषा—सदासुखजी कासलीवाल** । पत्र स० १४ । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल स० १९१५ सावन सुदी २ । ले० काल स० १९६२ । पूर्ण । वेष्टन स० ४२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

६७८८ **प्रति सं० २** । पत्र स० १० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४२५ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

६७८९. **प्रतिसं० ३** । पत्र स० ९ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४२६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्यारेलाल व्यास ने कठूमर मे प्रतिलिपि की थी ।

६७९० **प्रतिसं० ४** । पत्र स० १६ । आ० ८×६½इञ्च । **ले०काल** स० १९३८ श्रावण सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६७९१. **प्रति स० ५** । पत्र स० ११ । आ० १२½×७½ इञ्च । ले०काल स० १९२९ श्रावण सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

विशेष—स० १९३२ मे हिण्डौन मे प्रतिलिपि करवाकर यहा मन्दिर मे चढाया था ।

६७९२. **प्रति सं० ६** । पत्र स० १६ । आ० ११×५½ इञ्च । **ले०काल** × । अपूर्ण । वेष्टन स० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर दीवानजी कामा ।

६७६३. प्रति स० ७ । पत्र स० ८ । ग्रा० १३ × ७½ इन्च । ले० काल स० १९४१ कार्तिक वुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४३ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

६७६४ अकलंकदेव स्तोत्र भाषा—चपालाल बागडिया । पत्रस० ५४ । ग्रा० १०½ × ७ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-स्तोत्र । र० काल स० १९१३ । ले०काल स० १९२४ । पूर्ण । वेष्टनस० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान वू दी ।

विशेष—परमतखडिनी नामा टीका है । श्री चपालाल जी बागडिया झालरा पाटन के रहने वाले थे ।

प्रारम्भ—

श्री परमातम प्रणम्य करि प्रणउ श्री जिनदेव वानि ।
ग्र थ रहित सद्गुरु नमौ रत्नत्रय ग्रमलान ।
श्री अकलक देव मुनीसपद मैं नमिहो सिरिनाय ।
ज्ञानोद्योतन अर्थमुभ कहू कथा सुखदाय ।।

अन्तिम—

श्रावण कृष्णा सुतीज रवि नयन व्रह्म ग्रहचन्द्र ।
पूरण टीका स्तोत्र की कृत अकलक द्विजेन्द्र ।।
सिद्ध सूरि पाठक वहुरि सर्व साधु जिनवानि ।
अरु जिनधर्म नमौ सदा मगलकारि ग्रमलान ।

मारोठ ग्राम मे पाश्वनाथ चैत्यालय मे विरधीचद्र ने प्रतिलिपि की थी ।

६७६५. अजितशाति स्तवन—नन्दिषेण । पत्र स ४ । ग्रा० ९×४¾ इन्च । भापा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र०कारा × । ले० काल स० १७६० ग्रासोज वुदी २ । पूर्ण । वेप्टन स १५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (वू दी)

६७६६. अजित शाति स्तवन—× । पत्रस० ३ । ग्रा० १०¾×४¾ इन्च । भापा-सस्कृत । विपय—स्तोत्र । र०काल× । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३३१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—द्वितीय एव सोलहवें तीर्थकर अजितनाथ और शातिनाथ की स्तुति है ।

६७६७. अजित शाति स्तवन— × । पत्रस० ३ । ग्रा० १०×४½ इच । भाषा—प्राकृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६७६८. अट्ठोतरी स्तोत्र विधि— × । पत्र स० ४ । भाषा–हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र०काल × । लेखन काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६७६९. अध्यात्मोपयोगिनी स्तुति—महिमाप्रभ सूरि । पत्र स० ४ । ग्रा० ११×४ इन्च । भापा—हिन्दी (पद्य) । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

६८००. अपराजित मंत्र साधमिका—× । पत्रसं० १ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लश्कर, जयपुर।

६८०१. अपामार्जन स्तोत्र—× । पत्र सं० १२ । आ० ८½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल सं० १७७६ । पूर्ण । वे० सं० २३३-६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

६८०२. आसजज्भाय कुल—× । पत्रसं० २ । भाषा—प्राकृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । । पूर्ण । वेष्टन सं० ६५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

६८०३. आणंद श्रावक संधि- श्रीसार । पत्र सं० १४ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी गुजराती । विषय-स्तवन । र०काल सं० १६८७ । ले०काल सं० १८३० श्रावण सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

प्रारम्भ

वर्द्धमान जिनवर चरण नमता नव निधि होई ।
संधि करू आणंदनी, संभिलज्यो बहु कोई ।।१।।

अन्तिम—

संवत् रिमि सिधिरस ससि तिणपुरी मई कीवो चौमास ।
ए संबध कीयौ रलिया मणौ, सुण माथाई उल्हास ।।२।।
रतन हरष गुरु वाचक माहरा हेमनन्द सुखकार ।
हेमकीरति गुरु वाचवनें कहइ प्रभणइ मुनि श्रीसार ।।१२।।

इति श्री आणंद श्रावक संधि संपूर्ण ।

६८०४. आदिजिन स्तवन—कल्याण सागर । पत्रसं० ५ । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ७२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

६८०५. आदित्य हृदय स्तोत्र—× । पत्र सं० ८ । आ० १०½×६¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × ।ले० काल सं० १६२८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवन चेतनदास पुरानी डीग ।

६८०६. आदिनाथ मंगल—नयनसुख × । पत्र सं० ६ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २५८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—अन्तिम भाग निम्न प्रकार है—

आदि जिन तीरथ मुनो तिमके अनुसवारि चिरित्त ब्यायो ।
भाग भज्यो नव जोग मिल्यो जगरामजी ग्रंथकु नीकै सुनायो ।
वो उपदेश लगो हमे कुसुधभाव वरे जीव मे ठहरायो
कहै नैण सुख सुनो भवि होय श्री आदिनाथ जी को मंगल गायो ।।८६।।

६८०७. आदिनाथ स्तवन—मेहउ । पत्र स० ३ । आ० ८३/४ × ४ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र० काल स० १४९९ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

विशेष—मुनि श्री माणिक्य उदय वाचनार्थ । राउपुर मडन श्री आदिनाथ स्तवन ।

६८०८. आदिनाथ स्तुति—× । पत्र स० २ । आ० १० × ५ इन्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—भगवान आदिनाथ की स्तुति है ।

६८०९. आदिनाथ स्तोत्र । पत्रस० १३ । आ० १० × ४ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १६०२ भादवा बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० २१० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

विशेष—इति श्री शत्रुजयाधीश श्री नाभिराय कुलावतस श्री युगादिदेवस्त्रयोदश भव स्तवन सपूर्ण मिति मई भवतु ।। श्री श्रमण सघस्यान्लिवर नदतु । स० १६०२ वर्षे भादवा वुदि ११ सोम दिने मन्नाहृडीयगछे पूज्य भट्टारक श्री पद्मसागर सूरि तत्पट्टे श्री नयकीर्त्ति तत्पट्टे श्री महीमुन्दर सूरि तत्पट्टाल कार विजयमान श्री ४ सुमयसागर वा श्री जयसागर लिखत श्राविका मल्ही पठनार्थं ।

६८१० आनन्द लहरी—शकराचार्य । पत्रस० ३ । आ० ८१/२ × ६ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

६८११. आराधना—× । पत्रस० ५ । आ० ११ × ४१/२ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—टब्बा टीका सहित है ।

६८१२. आहार पचखाण । पत्रस० ६ । आ०१०×४१/२ इन्च । भाषा - प्राकृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६८१३. उवसर्गहर स्तोत्र—× । पत्र स० १ । आ० १०१/२ × ५ इच । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तोत । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६८१४. उपसर्गहर स्तोत्र—× । पत्र स० १ । आ० १० × ४१/२ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

६८१५ एकाक्षरी छद— × । पत्रस० ३ । आ० ९ × ५१/२ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

६८१६ **एकादशी स्तुति—गुणहर्ष ।** पत्रस० १ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

६८१७. **एकीभाव स्तोत्र—वादिराज ।** पत्रस० ६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६०६ । **प्राप्ति स्थान**– भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६८१८. **प्रतिसं० २ ।** पत्र स० ७ । आ० ६½×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४२७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

६८१९. **प्रतिसं० ३ ।** पत्रस० ४ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४६६ । **प्राप्ति स्थान** – भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

६८२०. **प्रति स० ४ ।** पत्रस० ४ । आ० १०½×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८५ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

६८२१. **प्रति स० ५ ।** । पत्र स० २३ । आ० १०½×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी गद्य । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

६८२२. **प्रतिस० ६ ।** पत्रस० ८ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल स० १६४२ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

६८२३ **प्रति सं० ७ ।** पत्रस० ८ । आ० १०½ × ४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६८२४. **प्रति स० ८ ।** पत्रस० ४ । आ० १०½×४¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

६८२५ **प्रति स० ९ ।** पत्रस० ४ । आ० १० × ४¾ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७५–५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष - निर्वाण काण्ड गाथा भी दी हुई है ।

६८२६ **प्रतिसं० १० ।** पत्रस० ४ । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०६-८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६८२७. **प्रतिसं० ११ ।** पत्रस० १० । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १७५ १४० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर, नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

६८२८. **प्रतिसं० १२ ।** पत्रस० ७ । आ० ११×५½ इञ्च । ले० काल स० १७४४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

६८२९. **प्रतिस० १३** । पत्रस० २ । ग्रा० १३½×६ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन स० ४२१ । **प्राप्ति स्थान**—जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६८३० **एकीभाव स्तोत्र टीका** × । पत्र स० ७ । ग्रा० ९½×६½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १९३२ ग्रासोज सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

६८३१· **एकीभाव स्तोत्र टीका** × । पत्रस० १९ । ग्रा० १०½×४½ इञ्च । भाषा —सस्कृत विषय— स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । वेष्टनस० ३९१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६८३२ **प्रतिसं० २** । पत्रस० ८ । ग्रा० ११×५½ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन स० ३९४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—श्लोक १७ तक की राजस्थानी भाषा टीका सहित है ।

६८३३. **एकीभाव स्तोत्र भाषा**—× । पत्र स० ११ । ग्रा० १३×५ इच । भाषा-हिन्दी प० । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स० १७६४ मगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० २९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर ग्रादिनाथ, बू दी ।

विशेष—कर्मप्रकृतिविघान एव सहस्रनाम भाषा भी है ।

६८३४ **एकीभाव स्तोत्र भाषा**—× । पत्र स० ३१ । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४११-१५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डू गरपुर ।

विशेष—सवोध पचासिका भाषा भो है ।

६८३५ **एकीभाव स्तोत्र भाषा**—भूधरदास । पत्र स० ४ । ग्रा० १०×५ इच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बू दी ।

६८३६. **एकीभाव स्तोत्र वृत्ति—नागचन्द्र सूरि** । पत्रस० ८ । ग्रा० १० × ४½ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । वेष्टनस० ३८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६८३७. **ऋद्धि नवकार यत्र स्तोत्र**—× । पत्रस० १ । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचनाकाल × । लेखनकाल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७११ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मन्दिर, भरतपुर ।

६८३८. **ऋषभदेव स्तवन—रत्नसिंह मुनि** । पत्र स० १ । ग्रा० १०×४ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तुति । र०काल स० १६६६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, दवलाना (बू दी) ।

विशेष—विक्रमपुर मे ग्रन्थ रचना हुई थी ।

६८३९ **ऋषिमण्डल स्तोत्र—गौतम स्वामी** । पत्र स० १६ । ग्रा० ९½ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १८९३ । पूर्ण । वेष्टनस० २९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बू दी ।

विशेष—प्रति टब्बा ठीका सहित है । उणियारे मे प्रतिलिपि हुई थी ।

६८४०. प्रति स० २ । पत्रस० ७ । आ० १३×७½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूदी ।

६८४१. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ४ । आ० ८¾×४½ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स० १८८० भादवा बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १०८६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर, अजमेर ।

६८४२. प्रतिसं० ४ । पत्रस० २ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

६८४३. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ५ । आ० ८½×३½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स० १७६४ माघ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० १०३७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

विशेष—लिखित सिकन्दरपुर मध्ये ।

६८४४. प्रतिसं० ६ । पत्रस०६ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर, उदयपुर ।

६८४५. प्रतिसं० ७ । पत्रस० ७ । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १७२५ माह सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१६-१५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—देवगढ मध्ये श्री मल्लिनाथ चैत्यालये श्री मूल सघे नद्याम्नाये भ० शुभचन्दजी तदाम्नाये ब्र० जसराजजी ब्रह्म मावजी लिखित ।

८४६. प्रतिसं० ८ । पत्र स० ४ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर, उदयपुर ।

६८४७ प्रतिसं० ९ । पत्र स० ६ । आ० १०¾×४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० १७४/४९ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मदिर, इन्दरगढ (कोटा) ।

६८४८. अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ स्तवन—भाव विजय वाचक । पत्रस० ५ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-(पद्य) । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, दबलाना (बूदी) ।

विशेष—इसमे ४४ छन्द हैं तथा मुनि दयाविमल के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

६८४९. अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ स्तवन—लावण्य समय । पत्र स० ३ । आ० १०½×४½ इच । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, दबलाना (बूदी) ।

६८५०. **करुणाष्टक—पद्मनन्दि** । पत्र स० १ । आ० १०½ × ४¾ इन्च। भाषा-सस्कृत । विपय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । वेप्टन स० ४२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६८५१ **कर्मस्तवस्तोत्र—** × । पत्रस० ६ । आ० १०×४½ इ च । भाषा—प्राकृत । विपय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति हिन्दी टव्वा टीका सहित है ।

६८५२. **कल्याण कल्पद्रुम—वृन्दावन** । पत्र स० २३ । भाषा-हिन्दी । विपय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल १९६४ । पूर्ण । वेप्टन स० ११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—सकट हरण वीनती भी है ।

६८५३ **कल्याणमन्दिर स्तवनावचूरि—गुणरत्नसूरि** । पत्र स० १२ । आ० ६½×६½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विपय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल १९३२ काती बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

६८५४. **कल्याण मन्दिर स्तोत्र—कुमुदचन्द्र** । पत्रस० ६ । आ० १० × ४ इन्च । भाषा-सस्कृत । विपय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६०४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति टव्वा टीका सहित है ।

६८५५. **प्रति स० २** । पत्रस० १६ । आ० १०×४½ इन्च । ले० काल स० १७०० । पूर्ण । वेष्टन स० ७०५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति टव्वा टीका सहित है । पडित कल्याण सागर ने अजीर्णगढ (अजमेर) नगर मे प्रतिलिपि की थी ।

६८५६. **प्रतिस० ३** । पत्रस० ३ । आ० १०½×४½ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २३३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६८५७. **प्रतिस० ४** । पत्र स० १४ । आ० १०×४½इ च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २५३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६८५८. **प्रति स० ५** । पत्रस० ४। आ० १०×५ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६५ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मदिर अजमेर ।

६८५९ **प्रति स० ६** । पत्रस० ९ । आ० ९×५ इन्च । ले०काल स० १८२३ प्रथम चैत्र सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति हिन्दी टव्वा टीका सहित है । प्रति पत्र मे ६ पक्तिया एव प्रति पक्ति मे ३१ अक्षर हैं ।

सवत् १८२७ मे प्रति मदिर मे चढाई गई थी ।

६८६०. **प्रतिसं० ७** । पत्रस० ११ । आ० ११×५ इच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बू दी ।

विशेष—मूल के नीचे हिन्दी टीका है ।

६८६१. **प्रतिसं० ८** । पत्रस० ५ । आ० ११×४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बू दी ।

विशेष—प्रति प्राचीन है एव सस्कृत टीका सहित है ।

६८६२. **प्रतिसं० ६** । पत्रस० ४ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी)

६८६३. **प्रति स० १०** । पत्र स० ४ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी)

६८६४. **प्रति स० ११** । पत्रस० २५ । आ० ८×६ इञ्च । ले०काल स० १८६६ चैत्र बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० २०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक)

विशेष—प० गुमानीराम ने वसतपुर मे श्री सुमेरसिंहजी के राज्य मे मिश्र रामनाथ के पास पठनार्थ लिखा था ।

६८६५. **प्रतिसं० १२** । पत्र स० २ । आ० ८×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६८६६. **प्रति स० १३** । पत्र स० ६ । आ० १०×३½ इञ्च । ले० काल स० १८१४ वैशाख सुदी १३ । पूर्ण । वेप्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वडा वीस पथी दौसा ।

विशेष—दयाराम ने देवपुरी मे प्रतिलिपि की थी ।

६८६७. **प्रतिसं० १४** । पत्र स० ३ । आ० १०×४ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १०१-६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वडा वीसपथी दौसा ।

विशेष—आगे के पत्र नही हैं ।

६८६८. **प्रतिसं० १५** । पत्र स० ५ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११४-६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वडा वीसपथी दौसा ।

विशेष—सस्कृत टीका सहित है पुण्यसागर गणिकृत ।

स्तोत्र को सिद्धसेन दिवाकर द्वारा रचित लिखा हुआ है ।

६८६६. **प्रतिसं० १६** । पत्रस० ५ । आ० १०×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा कमलप्रभ सूरि कृत सस्कृत टीका सहित है ।

६८७०. **प्रतिसं० १७** । पत्रस० ४ । आ० ११×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मदिर उदयपुर ।

६८७१ **प्रतिसं० १८** । पत्र स० ५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—प्रति सटीक है।

६८७२ **प्रति स० १९** । पत्रस० ३ । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टनस० ७१३ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६८७३. **प्रति स० २०** । पत्र स० ६ । आ० ६½X४½ इञ्च । ले० काल X । वेष्टन स० ६७७ । **प्राप्ति स्थान** – दि०जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६८७४. **प्रति स० २१** । पत्रस० ७ । आ० ११½X५ इञ्च । ले० काल स० १७५७ । पूर्ण । वेष्टनस० ३७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—प्रति व्याख्या सहित है ।

६८७५. **प्रति स० २२** । पत्र स० ४ । आ० १०X४इञ्च । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टनस० ३७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—२६ से आगे के श्लोक नही हैं ।

६८७६. **प्रति सं० २३** । पत्रस० ३ । आ० १३½ X ६ इञ्च । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ४०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

६८७७. **प्रतिसं० २४** । पत्र स० ५ । आ० १०½X४½ इञ्च । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ३६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६८७८. **प्रतिस० २५** । पत्रस० २ । आ० १०X४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६८७९. **प्रतिस० २६** । पत्रस० १० । आ० १०X४ इञ्च । भाषा-सस्कृत, हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनमन्दिर दवलाना (बूदी)

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है ।

६८८०. **कल्याण मन्दिर स्तोत्र टीका—हर्षकीर्ति** । पत्रस० २१ । आ० ८½ X ४¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० कालX । ले० काल स० १७१७ आसोज सुदी ४ । वेष्टनस० ३८४ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

६८८१. **प्रतिस० २** । पत्र स० १६ । आ० १०½X४¾ इञ्च । ले० काल स० १८२७ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—बुध केशरीसिंह ने स्वय लिखी थी ।

६८८२. **कल्याण मन्दिर स्तोत्र टीका—चरित्रवर्द्धन** । पत्र सख्या ८ । आ० १०½X५ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी)

६८८३ **कल्याण मन्दिर स्तोत्र टीका**— X । पत्र स० ७ । आ० १०X५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १६० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६८८४. **कल्याणमन्दिर स्तोत्र टीका**— × । पत्रस० २-१० । आ० ९½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स० १७५५ माह सुदी १२ । अपूर्ण । वेष्टनस० १८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बूदी)

विशेष—हिण्डोली नगरे लिखित ।

६८८५. **कल्याणमन्दिर स्तोत्र टीका**— × । पत्र स० २० । आ० ८½ × ४¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स० १७८१ सावण बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बूदी) ।

६८८६. **कल्याणमन्दिर स्तोत्र टीका**—× । पत्रस० २६१ । आ० ९ × ५ इच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष—पत्र १६ से आगे द्रव्य सग्रह की टीका भी हिन्दी मे है ।

६८७७ **कल्याणमन्दिर स्तोत्र टीका**— × । पत्र स० ३ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत, हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल स० × । ले०काल स० × । पूर्ण । वेष्टनस० १८७-७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है ।

६८८८. **कल्याणमदिर भाषा—बनारसीदास** । पत्रस० २ । आ० ९½×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—अत मे बनारसीदास कृत तेरह काठिया भी दिया है ।

६८८९. **कल्याणमदिर स्तोत्र भाषा**—× । पत्र स० ९ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत, हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १८२५ कार्तिक बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली, कोटा ।

विशेष—नन्दग्राम मे लिखा गया था ।

६८९०. **कल्याणमन्दिर स्तोत्र भाषा—अखयराज श्रीमाल** । पत्रस० २१ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—स्तोत्र । र०काल स० × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६८९१ **प्रति सं० २** । पत्रस० २२ । आ० १२×४½ इञ्च । ले० काल स० १७२२ चैत्र बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीस पथी, दौसा ।

६८९२ **प्रति सं० ३** । पत्रस० ३३ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

६८९३. **कल्याणमन्दिर स्तोत्र वचनिका—प० मोहनलाल** । पत्रस० ४० । आ० ८½×८½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र०काल स० १९२२ कार्तिक बुदी १३ । ले० काल स० १९६५ सावन बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १३१३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६८६४ **कल्याणमन्दिर स्तोत्र वृत्ति—देवतिलक** । पत्र स० १२ । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचनाकाल × । लेखनकाल १७६० । पूर्ण । वेष्टनस० ७२५ । **प्राप्ति स्थान**—पचायती दि० जैन मदिर, भरतपुर ।

विशेष—टोंक मे लिपि हुई थी ।

६८६५ **कल्याण मन्दिर स्तोत्र वृत्ति—गुरुदत्त** । पत्र स० २० । ग्रा० १२ × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १६४० मगसिर सुदी १५ । वेष्टन स० ३८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६८६६ **कल्याण मन्दिर स्तोत्र वृत्ति—नागचन्द्र सूरि** । पत्र स० १६ । ग्रा० ११$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १६०४ वैशाख बुदी ३ । वेष्टन स० ३८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६८६७ **कल्याण मन्दिर स्तोत्र वृत्ति**— × । पत्र स० २२ । ग्रा० ११ × ४$\frac{1}{2}$ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

विशेष—२२ से आगे के पत्र नही है ।

६८६८. **क्षेत्रपालाष्टक**— × । पत्र स० ६ । ग्रा० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३३१ । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

६८६९. **कृष्णबलिभद्र सज्झाय—रतनसिंह** । पत्र स० १ । ग्रा० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तुति । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

६९०० **गर्भषडारचक्र—देवनदि** । पत्र स० ५ । ग्रा० ८$\frac{1}{2}$×४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १८३७ । पूर्ण । वेष्टन स० ६७६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

६९०१ **प्रति स० २** । पत्रस० ३ । ग्रा० ११×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण ।वेष्टनस० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

६९०२. **प्रति स० ३** । पत्रस० १४ । ग्रा० १०$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

६९०३ **प्रति स० ४** । पत्र स० ४ । ग्रा० ११$\frac{3}{4}$×४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८७-४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६९०४ **गीत गोविंद—जयदेव** । पत्रस० ४-३७ । ग्रा० १२×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १७१७ । अपूर्ण । वेष्टन स० ११० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६६०५ **गुणमाला—ऋषि जयमल्ल** । पत्र स० ६ । आ० ११½ × ५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—निम्न पाठ और हैं ।

महावीर जिनवृद्धि स्तवन	समयसुन्दर
चित सभू की सज्झाय	×
स्तुति	भूधरदास
नवकार सज्झाय	×
चौबीस तीर्थंकर स्तवन	×
वभणवाडि स्तवन	×
शाति स्तवन	गुणसागर

६६०६ **गुरावली स्तोत्र**—× । पत्र स० १० । आ० ६¾ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

६६०७ **गुरु स्तोत्र—विजयदेव सूरि** । पत्र स० २ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३६-४०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सभवदाथ उदयपुर ।

विशेष—इति श्री विजयदेव सूरि स्वाध्याय सपूर्ण ।

६६०८ **गोपाल सहस्र नाम**— × । पत्रस० ३१ । आ० ४½ × ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-श्रीकृष्ण स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

६६०९. **गोम्मट स्वामी स्तोत्र**— × । पत्र स० ६ । आ० १० × ७ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१८-८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६६१०. **गौडीपार्श्वनाथ छंद—कुशललाभ** । पत्रस० १ । आ० १२ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६४/४७२ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६६११. **गौतमऋषि सज्झाय**—× । पत्रस० १ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-गीत । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी)

विशेष—लिखित रिषि हरजी । वाई चापा पठनार्थ ।

६६१२. **गंगा लहरी स्तोत्र—भट्ट जगन्नाथ** । पत्र स० ६ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १८२५ ज्येष्ठ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वोरसली कोटा ।

विशेष—गिरिपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

६६१३. **चक्रेश्वरीदेवी स्तोत्र**—। पत्रस० ६। ग्रा० ११½×५½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल ×। ले० काल स० १८७६। पूर्ण। वेष्टनस० १३८८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर।

६६१४ **चतुर्दश भक्तिपाठ**। पत्रस० ३०। ग्रा० १०×६½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल ×। ले० काल स० १६०४ मगसिर सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन स० २३/१५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)

६६१५ **चतुर्विध स्तवन**— ×। पत्रस० ५। ग्रा० १०½ × ४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—स्तोत्र। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १२२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर ग्रलवर।

६६१६. **चतुर्विशति जयमाला—माघनन्दि व्रती**। पत्रस० १। ग्रा० १३½×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४१८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

६६१७. **चतुर्विशति जिन नमस्कार**—×। पत्र स० ३। भाषा-सस्कृत। विषय—स्तवन। र०काल ×। ले०काल स० ×। पूर्ण। वेष्टन स. ६६७। **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मन्दिर भरतपुर।

६६१८. **चतुर्विशति जिन स्तवन**—×। पत्र स० १। ग्रा० १०½×५ इच। भाषा—प्राकृत। विषय—स्तवन। र०काल ×। ले०काल स० १४६५। पूर्ण। वेष्टन म० १८७-११७। **प्राप्ति स्थान**— दि जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

६६१९. **चतुर्विशति जिनस्तुति**—×। पत्रस० ४। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तवन। र०काल ×। ले०काल स० १८६२। पूर्ण। वेष्टन स० ६६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

६६२० **चतुर्विशति जिन स्तोत्र टीका—जिनप्रभसूरि**—। पत्रस० ६। ग्रा० १०×४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—स्तोत्र। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० २३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रभिनन्दन स्वामी, बूदी।

विशेष—बीच मे श्लोक हैं तथा ऊपर नीचे सस्कृत मे टीका है। गरिण वीरविजय ने प्रतिलिपि की थी।

६६२१. **प्रतिस० २**। पत्र स० १। ग्रा० १२×४ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३५६/४६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन साभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

६६२२. **चतुर्विशति जिन दोहा**— ×। पत्र स० २। ग्रा० १०×४ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तवन। र०काल ×। ले०काल स० १६२६ माह सुदी २। पूर्ण। वेष्टन स० १३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

६६२३ **चतुर्विशति स्तवन**— ×। पत्रस० २-१३। भाषा—सस्कृत। विषय – स्तवन। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

६६२४ **चतुर्विशतिस्तवन—प० जयतिलक** । पत्र स० १ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६६/४७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६६२५. **चतुर्विशति स्तुति—शोभनमुनि** । पत्रस० ६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल स० १४८३ आसोज बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० १३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—इति वर्द्धमान स्तुति ।

मध्य देशस्थ **संकाशद्र ग** निवासी देवर्षिसुत सर्वदेवस्तस्यात्मजेन शोभन मुनिना विहिता इमाश्चतु-विंशति जिनस्तुतय तदग्रज पडित धनपाल विहिता विवरणानुसरेण त्रयमत्रचूर्णिर्महायमकखडनरूपाणा तासास्तुतीना लेशतोऽलेखि । सवत् १४८३ वर्षे आश्विनि मा व ४ ।

६६२६. **चतुर्विशति स्तोत्र—प० जगन्नाथ** । पत्र स० १५ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी ।

विशेष—प्रति सटीक है । प० जगन्नाथ भ० नरेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे ।

६६२७. **चन्द्रप्रभु स्तवन—आनन्दघन** । पत्र स० २ । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६६२८. **चित्रबध स्तोत्र**— × । पत्रस० ५ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल× । ले० काल× । पूर्ण । वेष्टनस० ११२० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—स्तोत्र की रचना को चित्र मे सीमित किया गया है ।

६६२६. **चित्रबन्ध स्तोत्र**— × । पत्रस० २ । आ० १०½×४¾ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ३७८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

६६३०. **चित्रबन्ध स्तोत्र**— × । पत्रस० २ । आ० १०½×४¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ४३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—महाराजा माधवसिंह के राज्य मे आदिनाथ चैत्यालय मे जयनगर मे प० केशरीसिंह के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी । प्रशस्ति अच्छी है ।

६६३१. **चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र**—× । पत्र स० १ । आ० १३½×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल× । ले० काल × । वेष्टन स० ४१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६६३२ **चेतन नमस्कार**—× । पत्र स० ३ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—गिरिपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

६६१३. **चक्रेश्वरीदेवी स्तोत्र**—। पत्रस० ६। आ० ११½×५½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल ×। ले० काल स० १८७६। पूर्ण। वेष्टनस० १३८८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६६१४ **चतुर्दश भक्तिपाठ**। पत्रस० ३०। आ० १०×६½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल ×। ले० काल स० १६०४ मगसिर सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन स० २३/१५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)

६६१५ **चतुर्विध स्तवन**— ×। पत्रस० ५। आ० १०½ × ४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—स्तोत्र। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १२२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर अलवर।

६६१६ **चतुर्विशति जयमाला—माघनन्दि व्रती**। पत्रस० १। आ० १३½×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४१४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

६६१७. **चतुर्विशति जिन नमस्कार**—×। पत्र स० ३। भाषा-सस्कृत। विषय—स्तवन। र०काल ×। ले०काल स० ×। पूर्ण। वेष्टन स. ६६७। **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मन्दिर भरतपुर।

६६१८. **चतुर्विशति जिन स्तवन**—×। पत्र स० १। आ० १०½×५ इच। भाषा—प्राकृत। विषय—स्तवन। र०काल ×। ले०काल स० १४६५। पूर्ण। वेष्टन स० १८७-११७। **प्राप्ति स्थान**— दि जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

६६१६. **चतुर्विशति जिनस्तुति**—×। पत्रस० ४। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले०काल स० १८६२। पूर्ण। वेष्टन स० ६६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

६६२० **चतुर्विशति जिन स्तोत्र टीका—जिनप्रभसूरि**—। पत्रस० ६। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—स्तोत्र। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० २३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी।

विशेष—बीच मे श्लोक हैं तथा ऊपर नीचे सस्कृत मे टीका है। गणि वीरविजय ने प्रतिलिपि की थी।

६६२१. **प्रतिसं० २**। पत्र स० १। आ० १२×४ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३५६/४६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

६६२२ **चतुर्विशति जिन दोहा**— ×। पत्र स० २। आ० १०×४ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तवन। र०काल ×। ले०काल स० १६२६ माह सुदी २। पूर्ण। वेष्टन स० १३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

६६२३ **चतुर्विशति स्तवन**— ×। पत्रस० २-१३। भाषा—सस्कृत। विषय – स्तवन। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

६६२४ **चतुर्विशतिस्तवन—प० जयतिलक** । पत्र स० १ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६६/४७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६६२५. **चतुर्विशति स्तुति—शोभनमुनि** । पत्रस० ६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल स० १४८३ आसोज बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० १३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—इति वर्द्धमान स्तुति ।

मध्य देशस्य **सकाशद्र ग** निवासी देवर्षिसुत सर्वदेवस्तस्यात्मजेन शोभन मुनिना विहिता इमाश्चतुर्विशति जिनस्तुतय तदग्रज पडित धनपाल विहिता विवरणानुसरेण त्रयमत्रचूर्णिर्महायमकखडनरूपाणा तासास्तुतीना लेशतोऽलेखि । सवत् १४८३ वर्षे आश्विन मा व ४ ।

६६२६. **चतुर्विशति स्तोत्र—प० जगन्नाथ** । पत्र स० १५ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बू दी ।

विशेष—प्रति सटीक है । प० जगन्नाथ भ० नरेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे ।

६६२७. **चन्द्रप्रभु स्तवन—आनन्दघन** । पत्र स० २ । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६६२८. **चित्रबंध स्तोत्र**— × । पत्रस० ५ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११२० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—स्तोत्र की रचना को चित्र मे सीमित किया गया है ।

६६२६. **चित्रबन्ध स्तोत्र**— × । पत्रस० २ । आ० १०½×४¾ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ३७८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

६६३०. **चित्रबन्ध स्तोत्र**— × । पत्रस० २ । आ० १०½×४¾ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ४३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—महाराजा माधवसिंह के राज्य मे आदिनाथ चैत्यालय मे जयनगर मे प० केशरीसिंह के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी । प्रशस्ति अच्छी है ।

६६३१. **चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र**—× । पत्र स० १ । आ० १३½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ४१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६६३२ **चेतन नमस्कार**—× । पत्र स० ३ । आ० ६¾×४¼ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६६३३. **चैत्यवदना**—× । पत्रस० ४ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय—स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४६० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टव्वा टीका सहित है ।

६६३४ **चैत्यालय वीनती—दिगम्बर शिष्य** । पत्रस० ३ । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

अन्तिम पद्य—

दिगम्बर शिष्य इम भणेइ ए वीनतीमइ करीए ।
द्यो प्रभु मो अनिवास सफल कीरती गुरु इम भणे ए ।

विशेष—हिन्दी मे एक नेमीश्वर वीनती और दी हुई है ।

६६३५. **चौरासी लाख जोनना विनती—सुमतिकीर्ति** । पत्रस० ६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

श्री मूलसघ महतसत गुरु लक्ष्मीचन्द ।
वीरचन्द विबुधवत ज्ञानभूषण मुनीद ।।
जिनवर वीनती जो भणे मन धरी आनद ।
भुगती मुगती कर ते लहे परमानद ।।
सुमतिकीर्ति भावे कहिए ध्याजो जिनवर देव ।
ससार माही नही अवरयो पाम्यो सिवपद हेत ।।

इति चौरासी लक्ष जोनना वीनती सपूर्ण ।

६६३६. **चौबीस तीर्थंकर वीनती—देवाब्रह्म** । पत्र स० १६ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

६६३७. **चौबीस तीर्थंकर स्तुति**— × । पत्र स० २ । आ० १०$\frac{3}{4}$×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ३५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

६६३८. **चौबीस तीर्थंकर स्तुति (लघुस्वयम्भू)**—× । पत्रस० ३ । आ० ८×६$\frac{1}{2}$ इच । भाषा-सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११४५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

६६३९. **चौबीस महाराज की विनती—चन्द्रकवि** । पत्र स० ६-२३ । आ० ६$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र०काल × । ले० काल स० १८६० आसोज सुदी १५ । अपूर्ण । वेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

६६४०. **चौबीस महाराज की वीनती--हरिचन्द्र संघी।** पत्र स० २५ । भाषा—हिन्दी । विषय—विनती । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० २८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—कठिन शब्दो का अर्थ दिया हुआ है । प्रति प्राचीन है इसके अतिरिक्त निम्न और हैं—

१- जिनेन्द्रपुराण—दीक्षित देवदत्त । भाषा-सस्कृत । र० काल X । ले० काल १८४७ । पूर्ण ।

विशेष—ब्रह्मचारी करुणा सागर ने कायस्थ रामप्रसाद श्रीवास्तव अटेर वालो से प्रतिलिपि करवाई थी।

२- पूजा फल— X ।

३- सुदर्शन चरित्र—श्री भट्टारक जिनेन्द्रभूषण ।

विशेष—श्री शौरीपुर वटेश्वर तैं लश्करी देहरे मे श्री प० केसरीसिंह के लिए श्रुतज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थ वनाई थी ।

६६४१. **चौसठ योगिनी स्तोत्र**—X। पत्रस० २ । आ० १०$\frac{1}{2}$ X ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल X । ले० काल स० १८७९ कार्तिक सुदी ११ । वेष्टन स० ४३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—लिपिकार प० झाझूराम ।

६६४२. **चौसठ योगिनी स्तोत्र**— X । पत्रस० २ । आ० ११ X ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ३०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—ऋषि मडल स्तोत्र भी है ।

६६४३. **चन्द्रप्रभ छंद—ब्र० नेमचन्द** । पत्रस० ४६ । आ० ६$\frac{1}{2}$ X ६ इच । भाषा-हिन्दी । विषय—स्तवन । र० काल स० १८५० । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ७१/४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६६४४. **छंद देसंतरी पारसनाथ—लखमी वल्लभ गणि** । पत्रस० ६ । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० ७१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६६४५. **जयतिहुयण प्रकरण—अभयदेव** । पत्र स० ३ । आ० १० X ४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—स्तवन । र० काल । ले० काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० ४५३/२६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

अन्तिम—

एयम दारियजतदेव ईम न्हवण भहुसवज अणलिय ।
गुणगहण तुम्ह अ गीकरिय गुणिगण सिद्धउ ॥
एमह पसीअमु पासनाह थभणपुर ठियइअ ।
मुणिवर श्री अभयदेव विनवयइ साणदिय ॥

इति श्री जयतिहुयण प्रकरण सपूर्ण ।

६६४६. **जिनदर्शन स्तुति**— ×। पत्र स० ३ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा ।

६६४७. **जिनपाल ऋषिकाचौढलिया—जिनपाल** । पत्र स० ३ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तुति । र० काल × । ले०काल स० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बूदी) ।

६६४८. **जिनपिंजर स्तोत्र—कमलप्रभ** । पत्र स० ३ । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६८६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

६६४९. **जिनपिंजर स्तोत्र**—। पत्र स० १ । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६६५०. **जिनपिंजर स्तोत्र**— × । पत्रस० ५ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

६६५१. **जिनपिजर स्तोत्र**— × । पत्र स० ४ । आ० ६½ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७३/४८ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मदिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष —परमानद स्तोत्र भी है ।

६६५२. **जिनरक्षा स्तोत्र**— पत्र स० ५ । आ० ६×३ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

६६५३ **जिनवर दर्शन स्तवन—पद्मनन्दि** । पत्रस० ४ । आ० ८½ × ४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ३६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

६६५४ **जिनशतक** – × । पत्र स० १७ । आ० ८½ × ३ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूदी ।

६६५५ **जिनशतक**— × । पत्रस० २६ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

६६५६ **जिनसमवशरणमगल—नथमल** । पत्र स० २४ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल स० १८२१ वैशाख सुदी १४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

विशेष—नथमल ने यह रचना फकीरचद की सहायता से पूर्ण की थी जैसा कि निम्न पद्य से पता लगता है—

चन्द फकीर सहायतै मूल ग्र थ अनुसार।
समोसरन रचना कथन भाषा कीनी सार ॥ २०१ ॥

पद्यो की स० २०२ है।

६६५७. जिनदर्शन स्तवन भाषा— × । पत्र स० २। आ० ६½ × ४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बू दी)

विशेष—मूलकर्ता पद्मनदि है।

६६५८. जिनसहस्रनाम—आशाधर। पत्रस० ४। आ० ६½ × ४¾ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६४७। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६६५६ प्रति स० २। पत्र स० २५। आ० १३ × ६ इञ्च। ले०काल स० १८६५ कार्तिक बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० ४८२। **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है।

६६६०. प्रतिसं० ३। पत्रस० ६। आ० १०½ × ५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ३६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

६६६१. प्रति सं० ४। पत्र स० ८। आ० १०½×४½ इञ्च। ले० काल स० १६०६ (शक)। पूर्ण। वेष्टन स० १६७। **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

६६६२. प्रति सं० ५। पत्र स० ७। आ० १०½×४½ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ५७। **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

६६६३. प्रति स० ६। पत्रस० १५। आ० १२×५ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ३०१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है। टीकाकार रत्नकीर्त्ति शिष्य यशकीर्त्ति। उपासको के लिए लिखी थी। प्रति प्राचीन है।

६६६४. प्रतिसं० ७। पत्र स० १०। आ० १२×४ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ३०६। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मदिर।

६६६५. प्रतिसं० ८। पत्र स० ६। आ० १० × ४ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २८३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बू दी)

६६६६. जिनसहस्रनाम—जिनसेनाचार्य। पत्र स० ७ आ० ६½×४ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय—स्तोत्र। र०काल ×। ले० काल×। पूर्ण। वे० न० ३०३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६६६७ प्रतिस० २। पत्रस० ६ । आ० ११×५ इञ्च। ले० काल× । पूर्ण। वेष्टनस० १२३४। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६६६८ प्रति स० ३। पत्र स० १३। आ० ६×४ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन स० ४७१। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

६६६९. प्रति स० ४। पत्रस० १६। आ० ११×४३/४ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन स० १८२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६६७०. प्रति स० ५। पत्र स० ११। आ० ८×४ इञ्च। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन स० १३०५। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

६६७१. प्रति स० ६। पत्रस० ३६। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनस० १६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—भक्तामर आदि स्तोत्र भी है।

६६७२. प्रति स० ७। पत्रस० ३८। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—दो प्रतिया और है।

६६७३ प्रति स० ८। पत्रस० १०। आ० १०१/२×४३/४ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनस० १३०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर।

६६७४ प्रतिसं० ९। पत्र स० ११। आ० ११×४१/२ इञ्च। ले० काल स० १९०५। पूर्ण। वेष्टन स० ४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी।

६६७५. प्रति स० १०। पत्र स० १२। आ० ९१/२×४१/२ इञ्च। ले०काल स० १९३७। पूर्ण। वेष्टन स० २४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी।

६६७६. प्रतिस० ११। पत्र स० ११। आ० ८×६१/२ इच। ले० काल × । पूर्ण। वेष्टन स० १२६। **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मदिर भादवा (राज०)

६६७७ प्रति स० १२। पत्रस० ९। आ० १०१/२×४३/४ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनस० ८७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी)

६६७८ प्रतिस० १३। पत्र स० २५। आ० ६१/२×५ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन स० ६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा।

६६७९. प्रतिस० १४। पत्र स० २१-३५। आ० १२१/२×५३/४ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ७०८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

६६८०. जिन सहस्रनाम टीका—अमरकीर्ति ×। पत्रस० ६५। आ० १२१/४× ५१/२ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—स्तोत्र। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १२८८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

विशेष—मूल्य ७ रु० दस आना लिखा है।

६९८१. प्रतिसं० २ । पत्र स० ७५ । आ० १०$\frac{1}{8}$×५$\frac{1}{8}$ इच । ले०काल स० १९६२ मगसिर बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन स० १२९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

६९८२. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ७७ । आ० ९×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६९८३. प्रतिसं० ४ । पत्रस० १५३ । आ० ८$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवाना कामा ।

६९८४. प्रतिसं० ५ । पत्र स० २-८ । आ० १२×५$\frac{3}{8}$ इच । ले०काल स० १७४२ मगसिर बुदी १४ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६९८५. जिनसहस्र नाम टीका—श्रुतसागर । पत्रस० १४७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स० १६०१ आसोज सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० ३९३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६९८६. प्रतिसं० २ । पत्रस० १०१ । आ० १३ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १५६६ । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १५६६ वर्षे पौष बुदी १३ भौमे परम निरग्र थाचार्य श्री त्रिभुवनकीर्त्युपदेशात् श्री सहस्र नाम लिखापिता । मगलमस्तु ।

६९८७. प्रति स ० ३ । पत्र स० ११० । आ० १२$\frac{1}{8}$ ×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ बूदी ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

६९८८. प्रति सख्या ४ । पत्रस० १०९ । आ० ११×४$\frac{3}{8}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

६९८९. प्रति सं० ५ । पत्र स० १७३ । आ० १२ × ५ इञ्च । ले० काल । पूर्ण । वेष्टनस० ३९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६९९० प्रतिसं० ६ । पत्रस० १३७ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३३-६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६९९१. जिनसहस्त्र नाम वचनिका— × । पत्र स० २८ । आ० १०×४ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

६९९२ जिनस्मरण स्तोत्र—× । पत्रस० ९ । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

६९९३. जैनगायत्री—× । पत्रस० ५ । आ० ८×३$\frac{1}{2}$ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १९२७ कार्तिक बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० १०१९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६९९४ ज्वाला मालिनी स्तोत्र ×। पत्रस० २०। आ० ८ × ३½ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १४३६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैनमदिर अजमेर।

६९९५ ज्वाला मालिनी स्तोत्र—×। पत्र स० ५। आ० ११×८ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा।

६९९६ तकाराक्षर स्तोत्र—×। पत्रस० २। आ० १०½×५ इन्च। भाषा—सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल ×। ले०काल स० १८२२। पूर्ण। वेष्टन स० २५४। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—प्रत्येक पद तकार से प्रार भ होता है।

६९९७. तारण तरण स्तुति (पच परमेष्टी जयमाल)—×। पत्र स० २। आ० ६×५ इन्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय-स्तोत्र। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५३० ×। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर।

६९९८ तीर्थ महात्म्य (सम्मेद शिखर विलास)—मनसुखराय। पत्र स० ११०। आ० १०½×६½ इन्च। भाषा—हिन्दी। विषय-महात्म्य स्तोत्र। र०काल स० १७४५ आसोज सुदी १०। ले०काल स० १९१० आसोज बुदी २। पूर्ण। वेष्टन स० ७८ ×। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा।

विशेष— ज्ञानचद तेरापथी ने प्रतिलिपि की थी।

६९९९ त्रिकाल सध्या व्याख्यान—×। पत्र स ०९। आ० ११×४ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १५४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

७००० थमण पार्श्वनाथ स्तवन—×। पत्र स० ३। भाषा—प्राकृत। विषय-स्तवन। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

७००१. दर्शन पच्चीसी—गुमानीराम। पत्र स० ११। आ० ७ × ६ इन्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-स्तवन। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर।

विशेष—आरतिराम ने सशोधन किया था।

७००२. प्रति स० २। पत्रस० ९। आ० १२×६½ इच। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १२७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर।

७००३ दर्शन स्तोत्र—भ० सुरेन्द्र कीर्त्ति। पत्र स० १। आ० १०½×५½ इन्च। भाषा—सस्कृत। विषय—स्तोत्र। र०काल ×। ले० काल ×। वेष्टन स० ६९८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

७००४. **द्वात्रिंशिका (युक्त्यष्टक)**— × । पत्रस० ३ । आ० १०$\frac{1}{4}$ × ४$\frac{1}{4}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

७००५. **नन्दीश्वर तीर्थ नमस्कार**— × । पत्रस० ३ । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

७००६. **नवकार सवैया—विनोदीलाल** । पत्रस० १२ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४६-६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूँगरपुर ।

७००७. **नवग्रह स्तवन**— × । पत्रस० १३ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत, सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी)

विशेष—३ से ६ तक पत्र नही हैं । प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

७००८. **नवग्रह स्तोत्र—भद्रबाहु** । पत्र स० १ । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

७००९. **नवग्रह स्तोत्र**— × । पत्रस० १ । आ० १० × ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ४२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

७०१० **नवग्रह पार्श्वनाथ स्तोत्र**— × । पत्र स० १ । आ० ६$\frac{3}{4}$ × ४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ४४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७०११ **निर्वाण काण्ड भाषा—भैया भगवती दास** । पत्रस० २ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र०काल स० १७४१ । आसोज सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० ६०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

७०१२ **प्रति स० २** । पत्र स० २ । आ० ९ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन स० ६६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७०१३. **नेमिजिनस्तवन—ऋषिवर्द्धन** । पत्रस० १ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७०१४ **नेमिनाथ छंद—हेमचंद्र** । पत्रस० १६ । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल स० १८८१ । पूर्ण । वेष्टनस० २५३/९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—वोरी मध्ये सभवनाथ चैत्यालये लिखित ।

७०१५. नेमिनाथ नव मगल—विनोदीलाल। पत्रस० ८। भाषा—हिन्दी। विषय-स्तवन। र०काल स० १७४४। ले०काल स० १६४०। पूर्ण। वेष्टन स० ४६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

७०१६. पद्मावती गीत—समयसुन्दर। पत्रस० २। आ०×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-स्तोत्र। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—३४ पद्य है।

७०१७ पद्मावती पचाग स्तोत्र—×। पत्रस० २६। आ० ८$\frac{1}{2}$×४ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल ×। ले०काल स० १७८२। पूर्ण। वेष्टनस० १६६। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

७०१८ पद्मावती स्तोत्र—×। पत्रस० ५६। आ० ३×३ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—स्तोत्र। र०काल ×। ले०काल स० १८८०। पूर्ण। वेष्टन स० ८६२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७०१९ पद्मावती स्तोत्र—×। पत्र स० ४। आ० ११$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इन्च। भाषा—सस्कृत। विषय—स्तोत्र। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६३२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७०२०. पद्मावती स्तोत्र—×। पत्रस० २४। आ० ६×४$\frac{1}{2}$ इ च। भाषा—सस्कृत। विषय-स्तोत्र र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ६१३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७०२१. पद्मावती स्तोत्र— ×। पत्र स० ४। आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—स्तोत्र। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १००। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अजमेर।

७०२२. पद्मावती स्तोत्र—×। पत्र स० २। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

७०२३. पद्मावती स्तोत्र— ×। पत्रस० १०। भाषा—सस्कृत। विषय—स्तोत्र। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ३५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

७०२४. प्रति स० २। पत्र स० १०। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

७०२५ पद्मावती स्तोत्र—×। पत्र स० ७२। आ० १०$\frac{1}{2}$×७ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १४६/७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—यत्र साधन विधि भी द, हुई हैं।

७०२६. परमज्योति (कल्याण मन्दिर स्तोत्र) भाषा—बनारसीदास । पत्र स० ४। आ० १२×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७०२७. परमानन्द स्तोत्र—× । पत्रस० ३ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

७०२८. पात्र केशरी स्तोत्र—पात्र केशरी । पत्र स० ५ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७०२९. पात्र केशरी स्तोत्र टीका—× । पत्र स० १४ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल स० १६८७ आसोज बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३५५।४३४ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७०३०. प्रतिसं० २ । पत्र स० १४ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३५६/४३५ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७०३१. पार्श्वजिन स्तुति—× । पत्र स० १ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मदिर उदयपुर ।

७०३२. पार्श्वजिन स्तोत्र—जिनप्रभ सूरि । पत्रस० ४ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४४१ । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—इनि जिनप्रभ कृत पारसी भाषा नमस्कार काव्यार्थ ।

७०३३. पार्श्वजिन स्तोत्र—× । पत्र स० ३ । आ० ११×५½ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९९ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७०३४. पार्श्वदेव स्तवन—जिनलाभ सूरि । पत्र स० १७ । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७०३५. पार्श्वनाथ छद—हर्षकीर्ति—× । पत्र स० ४ । आ ६½×४¾ इच । भाषा-हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले काल × । पूर्ण । वेष्टन स ० २०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष—२८ छद हैं ।

तेरीवा जाऊ सोभा पाउ वीनतडी सुणदा है ।
क्या कहु तोसू सगलमा वहोती तौसु मेरा मन उलैभदा है ।
सिद्धि दीवासी तिह रहवासी सेवक वल सदा है ।
पजाव निमाणी पासवप्राणी गुण हर्षकीर्ति गवदा है ।।

७०३६. **पार्श्वनाथ छद—लब्धरूचि (हर्षरुचि के शिष्य)** । पत्र स २ । श्रा० १०½×४½ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी)

७०३७. **पार्श्वनाथजी की निशानी—जिनहर्ष** । पत्रस० ४ । श्रा० ११×५ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तुति । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३४१/४०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है ।

तहा सिद्धादावासीय निरदावा सेवक जस विलवदा है ।
घुघर निसाणी सा पास वखाणी गुण जिणहर्ष सुणदा है ।।

७०३८. **प्रति स० २** । पत्र स० १५ । श्रा० ७½×४ इन्च । ले०काल स० १७६७ । पूर्ण । वेष्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

७०३९ **पार्श्वस्तवन**— × । पत्र स० १ । श्रा० १०×४½ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११८८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

७०४०. **पार्श्वनाथ स्तावन**— × । पत्रस० १ । श्रा० ११×४ इन्च । भाषा—हिन्दी पद्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०४-६ । **प्राप्दि स्थान**—दि० जैन मन्दिर वडा वीसपथी दौसा ।

७०४१. **पार्श्व॰ाथ स्तवन**— × । पत्रस० १ । श्रा० १०×४ इन्च । भाषा—सस्कृत । विपय—स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६०/४६८ । **प्राप्दि स्थान**—दि० जैन मन्दिर सभवनाथ उदयपुर ।

७०४२ **पार्श्वनाथ स्तावन**— । पत्र स० ३ । श्रा० ११×४ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६०५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—कही २ कठिन शब्दो के अर्थ दिये हैं ।

७०४३. **पार्श्वनाथ (देसतरी) स्तुति—पास कवि** । पत्रस० ३ । भाषा—सस्कृत । विपय—स्तवन । र०काल × । ले०काल स० १७६८ । पूर्ण । वेष्टनस० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी वसवा ।

विशेष—रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है ।

आदि भाग—

सुवचन स पो सारदा मया करो मुक्त माय ।
तोसु प्रसन सुवचन तणी कुमणान श्री भावै काय ।।
कालिदास सरिपा किया रक थकी कविराज ।
महिर करे माता मुने निज सुत जाणि निवाज ।।

अन्तिम भाग—

जपै सको जगदीस ईस त्रय भवण अखडित ।
अद्‌भुत रूप अनूप मुकुट फणि मणि सिर मडित ।
वरै आण सहु ध्याहु उदवि मन्त्रि पजिताई ।
प्रकट सात पाताल सरग कीरति सुहाई ।
सिरिलविवल भवा पामु तन पूरण प्रभु वंकु ठपुरी ।
प्रणमेव पास कविराज इम तवीसो छद देसतरी ॥

इति श्री पार्श्वनाथ देसातरी छद सपूर्ण ।

७०४४. **पार्श्वनाथ स्तोत्र**— × । पत्र स० ४ । आ० १३½×७¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १८६३ माघ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनस० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

७०४५. **पार्श्वनाथ स्तोत्र**— × । पत्रस० १ । आ० १३½×६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । वेष्टनस० ४१९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

७०४६. **प्रतिसं० २** । पत्र स० २ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन स० ४३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

७०४७. **पार्श्वनाथ स्तोत्र (लघु)**— × । पत्र स० ९ । आ० १०×४¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १९९२ वैशाख सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी)

७०४८. **पार्श्वनाथ स्तोत्र—पद्मनंदि** । पत्र स० ८ । आ० १०½×४½ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी)

विशेष—पत्र ३ से सिद्धिप्रिय तथा स्वयभू स्तोत्र भी है ।

७०४९. **पार्श्वनाथ स्तोत्र—पद्मप्रभदेव** । पत्र स०१ । आ० १०½×४ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७०५०. **प्रतिसं० २** । पत्रस० १ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १८२२ । वेष्टन स० ६९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—पत्र पर चारो ओर सस्कृत टीका दी हुई है । कोई जगह खाली नही है ।

७०५१. **पोषह गीत—पुण्यलाभ** । पत्र स० १ । आ० १०½ × ४½ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना (बू दी) ।

७०५२. **पंच कल्याणक स्तोत्र**—× । पत्र स० ६ । आ० ८½ × ४¾ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३२२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजयेर ।

७०५३. **पंच परमेष्ठी गुण**—× । वेष्टनस० ७ । आ० ११ × ४½ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

७०५४. **पच परमेष्ठी गुण वर्णन**—× । पत्र स० २० । आ० ८¾ × ४¾ इच । भाषा—संस्कृत-हिन्दी । विषय—स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १७८-४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

विशेष—इसके अतिरिक्त कर्म प्रकृतिया तथा बारह भावनाओ आदि का वर्णन भी है ।

७०५५ **पंचमगल—रूपचन्द** । पत्र स० ८ । आ० १० × ४½ इन्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय-स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७०५६. **प्रतिस० २** । पत्रस० ५ । आ० १० × ६½ इन्च । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८४/९२ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

७०५७. **प्रति स ३** । पत्रस० ६ । आ० १०½ × ४½ इन्च । ले०काल स० १८१७ मगसिर बुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० ३१६ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

७०५८. **प्रतिसं० ४** । पत्रस० ५-१३ । आ० ११½ × ५½ इन्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

७०५९. **प्रति स० ५** । पत्र स० १२ । आ० ६ × ४ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

७०६०. **प्रतिस० ६** । पत्रस० ५ । आ० १०½ × ५ इन्च । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन स० ३०२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ बूंदी ।

७०६१. **प्रति स० ७** । पत्रस० ८ । आ० ६ × ५½ इन्च । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

७०६२. **प्रतिस० ८** । पत्र स० ११ । पूर्ण । ले०काल × । वेष्टन स० ४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—एक प्रति और है ।

७०६३ **प्रतिसं० ९** । पत्र स० ७ । आ० ९½ × ७ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४४/९८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ । (कोटा)

७०६४. **पचवटी सटीक** । पत्र स० ३ । आ० १२ × ४½ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—चौवीस तीर्थंकर एव सरस्वती स्तुति सटीक है।

७०६५ पचस्तोत्र— X। पत्रस० २१। आ० ११ X ४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल X। ले०काल X। पूर्ण। वेष्टन स० ७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

७०६६. पचस्तोत्र— X। पत्रस० ७३। आ० १० X ५ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल X। ले०काल X। पूर्ण। वेष्टन स० १५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष—प्रति टीका सहित है।

७०६७. पंचस्तोत्र व्याख्या X। पत्रस० ११। भाषा—सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल X। ले०काल X। पूर्ण। वेष्टन स० ३६/४४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

७०६८. पंचमीस्तोत्र—उदय। पत्र स० १। आ० १० X ४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र०काल X। ले० काल X। पूर्ण। वेष्टन स० ६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना बूदी।

विशेष—अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है—

नेमि जिणवर नमित सुरवर सिध वधूवर नायको।
आणद आणी भजन प्राणी सुख सतति दायको।
वर विवुध भूषण विगत दूषण श्री शकर सौभाग्य कवीश्वरो।
तस सीस जपइ उदय इणि परि सयलि मधि मगल करो।

इति पचमी स्तोत्र।

७०६९ पंचवखाण— X। पत्रस० १। आ० १० X ४½ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-स्तवन। र०काल X। ले०काल X। पूर्ण। वेष्टनस० २३१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी)

७०७०. प्रवोधबावनी—जिनरंग सूरि। पत्रस० ८। भाषा—हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र०काल स० १७८१। ले० काल X। पूर्ण। वेष्टनस० ४७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

७०७१. बगलामुखी स्तोत्र— X। पत्र स० ३। आ० ९ X ४¾ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल X। ले०काल X। पूर्ण। वेष्टन स० १२४८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७०७२. बारा आरा का स्तवन—ऋषभो (रिखव)। पत्र स० ५। आ० १०½ X ४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तुति। र० काल स० १७५१ भादवा सुदी २। ले०काल X। पूर्ण। वेष्टन स० ६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना बूदी।

विशेष—अन्तिम कलश निम्न प्रकार है—

भलत वन कीधो नाम लीधो गोतम प्रश्नोत्तर सही।
सवत् सतरे इ दचद सु भादवा सुदी दोयज भनी।

तपगच्छ तिलक समान सद्गुरु विजयसेन सूरि तणू ।
सागरसुत रिषभो इम बोलै पाप आलोवै आपणु ।।७५।।

इति की वारा आरा को स्तवन सपूर्ण ।

७०७३ **भक्तामर स्तोत्र—मानतु गाचार्य** । पत्र स० ६ । आ० ११ X ५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७०७४ **प्रति स० २** । पत्र स० ८ । आ० ४ X ४ इञ्च । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १४४४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है । प्रति प्राचीन है ।

७०७५ **प्रतिस० ३** । पत्र स० १५ । आ० १० X ४ इञ्च । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १७६५ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेज—प्रति सस्कृत टीका सहित है।

७०७६ **प्रतिस० ४** । पत्रस० ६ । आ० १०½ X ५ इञ्च । ले०काल स० १८७० माह सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० ३५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—पद्मनदिकृत पार्श्वनाथ स्तोत्र भी है ।

७०७७ **प्रतिस० ५** । पत्रस० ६ । आ० ११½ X ५ इञ्च । ले०काल स० १७५७ । पूर्ण । वेष्टनस० ३५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति टिप्पण सहित हैं । प० तिलोकचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

७०७८. **प्रतिस० ६** । पत्र स० २७ । आ० ६ X ४½ इञ्च । ले० काल स० १८१२ पोष सुदी बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति सटीक है प० लालचन्द ने अपने लिये लिखी थी ।

७०७९. **प्रति स० ७** । पत्रस० ८ । आ० ८ X ६½ इञ्च । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टनस० ६५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष ५ प्रतियां और हैं ।

७०८० **प्रतिस० ८** । पत्र स० ८ । आ० ६½ X ५½ इञ्च । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—दो प्रतियां और हैं ।

७०८१ **प्रतिस० ९** । पत्र स० ९ । आ० ६½ X ५½ इञ्च । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १७२।४७ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

७०८२. **प्रतिस० १०** । पत्रस० ६ । आ० ११ X ५ इञ्च । ले० काल स० १९६५ । पूर्ण । वेष्टन स० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोंक)

७०८३. **प्रतिसं० ११** । पत्रस० ८ । आ० १०½ X ४ इञ्च । ले०काल स० १७२० मगसिर बुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—आचार्य रामचन्द तत् शिष्य श्री राघवदास के पठनार्थ गोपाचल मे प्रतिलिपि हुई थी ।

७०८४. **प्रतिस० १२** । पत्रस० २३ । आ० १२ X ६ इञ्च । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टनस० ३२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रति कथा तथा टव्वा टीका सहित है।

७०८५. **प्रति स० १३** । पत्रस० ७ । आ० १०½ × ५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४/२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)

७०८६. **प्रति स० १४** । पत्रस० १६ । आ० ६× ६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—प्रारम्भ मे आदित्यवार कथा हिन्दी मे और है।

७०८७. **प्रति स० १५** । पत्र स० ६ । आ० ७×६ इञ्च । ले० काल स० १६५१ । पूर्ण । वेष्टन स० १७१-७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

७०८८ **प्रति स० १६** । पत्रस० ७ । आ० ६½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६४-३६ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडिया का डूगरपुर ।

विशेष—हिन्दी व गुजराती टव्वा टीका सहित है ।

७०८६ **प्रतिस० १७** । पत्र स० २१ । आ० १०½×७ इञ्च । ले०काल स० १६५१ । अपूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह और भी है—तत्वार्थ सूत्र, कल्याण मन्दिर, एकीभाव । वीच के ११ से १६ पत्र नही हैं ।

७०६० **प्रतिस० १८** । पत्रस० २–२४ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित हैं ।

७०६१. **प्रति स० १६** । पत्रस० ५ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । ले०काल × । अपूर्ण । वेप्टन स० ४७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७०६२ **प्रति स २०** । पत्रस० २–१६ । आ० ११×६ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका महित है ।

७०६३ **प्रतिस० २१** । पत्र स० १६ । आ० १०×४ इच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—कही कहीं हिन्दी मे शब्दो के अर्थ दिये है ।

७०६४. **प्रति स० २२** । पत्रस० ५ । आ० ११×४ इच । ले० काल स० १७५८ । पूर्ण । वेप्टन स० २६७ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—घटा कर्ण यत्र भी है ।

७०६५ **प्रति स० २३** । पत्रस० १२ । आ० ८×४ इञ्च । ले० काल स० १६८० । पूर्ण । वेष्टन ५४/८८ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मदिर भादवा (राज०)

विशेष—भादवा मे भवरलाल चौधरी ने लिपि की थी ।

७०६६. **प्रति स० २४** । पत्र स० ११ । आ० ११×७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३८/६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर भादवा (राज०)

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है।

७०९७ **प्रतिसं० २५**। पत्रसं० ८। आ० ८×५ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० १८८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—एक प्रति और है।

७०९८. **प्रतिसं० २६**। पत्र सं० ६। आ० ७½×५½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—उमास्वामि कृत तत्वार्थसूत्र भी है जिसके ३२ पृष्ठ हैं। आच्युराम सरावगी ने मदनगोपाल, सरावगी से प्रतिलिपि कराई थी।

७०९९. **प्रतिसं० २७**। पत्र सं० ५। आ० ८×५ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ४८-१३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष—कही २ कठिन शब्दो के अर्थ दिये है।

७१००. **प्रति सं० २८**। पत्रसं० ८। आ० ८½×४½ इञ्च। ले०काल सं० १९५८ चैत्र बुदी ११। पूर्ण। वेष्टनसं० १५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल पचायती मदिर अलवर।

विशेष—इस प्रति मे ५२ पद्य हैं। प्रति स्वर्णाक्षरी है।

अन्तिम चार पद निम्न प्रकार है—

नाथ पर परमदेव वचोभिदेयो।
लोकत्रयेपि सकलार्थ वदस्ति सर्व्वं।
उच्चैरतीव भवत परिघोपयेतो।
नैंदुर्गभीर सुरदुंदमय समाया ॥४९॥
वृष्टिर्दिव सुमनसा परित प्रपात।
प्रीतिप्रदा सुमनसा च मधुव्रताना,
प्रीती राजीव सा सुमनसा सुकुमार सारा,
सामोदसा पदमराजि नते सदस्या ॥५०॥
सुप्ता मनुष्य महुसामपि कोटि सख्या,
भाजा प्रभाप्रसर मन्वहु माहुसति।
तस्न्यस्तम पटलभेदमशक्तहीन,
जैंनी तनु द्युतिरशेष तमो पहुती ॥५१।
देवत्वदीय शकलामलकेवलाव,
वोधाति गाद्य निह्यह्लवरत्नराशि।
घोष स एव यति सज्जन तानुमेने,
गभीर भार भरित तव दिव्य घोष ॥५२॥

७१०१. **प्रतिसं० २९**। पत्र सं० ७। ले० काल सं० १९७६। पूर्ण। वेष्टन सं० ७३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—सस्कृत टीका सहित मिर्जापुर मे प्रतिलिपि हुई। भडार मे ५ प्रतिया और हैं।

७१०२ **प्रतिसं० ३०** । पत्र स० ६ । आ० १० ३/४ × ४ ३/४ इञ्च । ले० काल स० १८७२ फागुण सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

७१०३. **प्रति सं० ३१** । पत्र स० २५ । आ० ११ × ७ इञ्च । ले० काल स० १९६४ । पूर्ण । वेष्टन स० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

विशेष—४८ मत्र यत्र दिये हुए हैं । प्रति ऋद्धि मत्र सहित है ।

७१०४. **प्रति सं० ३२** । पत्र स० १० । आ० १० × ४ इञ्च । ले० काल स० १९०८ । पूर्ण । वेष्टन स० २२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

७१०५. **प्रतिसं० ३३** । पत्र स० ६ । आ० १० १/२ × ६ १/२ इञ्च । ले० काल स० १९०४ । पूर्ण । वेष्टन स० २२४ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मदिर ।

विशेष—बू दी मे नेमिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी । सस्कृत मे सकेतार्थ दिए हैं ।

७१०६. **प्रति स० ३४** । पत्रस० ५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २२५ । **प्राप्ति स्थान**-उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्रति प्राचीन एव जीर्ण है । ३ प्रतिया और हैं ।

७१०७. **प्रतिसं० ३५** । पत्र स० ८ । आ० ८ १/२ × ४ ३/४ इञ्च । ले० काल स० १८३४ । पूर्ण । वेष्टन स० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बू दी ।

विशेष—स्वर्णाक्षरो मे लिखी हुई है । श्लोको के चारो ओर भिन्न २ प्रकार की रगीन वार्डर है ।

७१०८ **भक्तामर स्तोत्र भाषा ऋद्धि मत्र सहित**—× । पत्रस० ७ । आ० ६ १/२ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-स्तोत्र एव मत्र शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११६८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७१०९ **भक्तामर स्तोत्र ऋद्धि मत्र सहित**— × । पत्र स० २९ । आ० १३ × ७ १/२ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स० १९२८ । अपूर्ण । वेष्टन स० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष – प्रति जीर्ण है ।

७११०. **प्रति सं० २** । पत्र स० २५ । आ० १० × ६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

७१११. **प्रति स० ३** । पत्र स० १–२५ । आ० ९ × ६ ३/४ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १३४-६२ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मदिर कोटडियो का डू गरपुर ।

७११२. **प्रति स० ४** । पत्र स० २३ । आ० १० × ६ इच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १३५–६२ **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७११३. **प्रति स० ५** । पत्रस० ४८ । आ० ९ × ६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३८६-१४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डू गरपुर ।

७११४. **प्रतिसं० ६** । पत्र स० २४ । आ० १० १/२ × ६ १/२ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ९३/४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा)

७११५. प्रति सं० ७ । पत्र स०४५ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी)

७११६ प्रतिस० ८ । पत्रस० १-२६ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी)

७११७ प्रतिस० ६ । पत्रस० ५२ । आ० ६×६ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

७११८ प्रतिस० १० । पत्रस० ८६ । आ० ६½×४ इञ्च । ले०काल स० १८४६ भादवा बुदी १४ । पूर्ण । वेप्टन स० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

७११६. प्रतिस० ११ । पत्र स० १६ । आ० ६½×४ इञ्च । ले०काल स० १७६२ फाल्गुन सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी बूदी ।

७१२०. प्रतिस० १२ । पत्र स० २७ । आ० १०½×७½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बदी ।

विशेष—चोवे जगन्नाथ चदेरीवाले ने चन्द्रपुरी मे प्रतिलिपि की थी ।

७१२१ भक्तामर स्तोत्र ऋद्धि मत्र सहित— × । पत्र स० २४-६६ । आ० ४×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेप्टन स० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी ।

७१२२ भक्तामर स्तोत्र ऋद्धि मत्र सहित— × । पत्र स० २१ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी ।

७१२३. भक्तामर स्तोत्र ऋद्धि मत्र सहित— × । पत्र सख्या ५ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—मत्र स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ६६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७१२४. भक्तामर स्तोत्र टीका—अमरप्रभ सूरि । पत्र स० १० । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स० १८१२ । पूर्ण । वेप्टन स० ४३७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

७१२५ प्रतिस० २ । पत्र स० २८ । ले० काल स० १८८८ । पूर्ण । वेप्टन स० ७४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—पत्र स० १६ से जीवाजीव विचार है ।

७१२६ प्रतिस० ३ । पत्र स० ८ । आ० ६½×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर ।

विशेष—टीका का नाम सुखबोधिनी है । केवल ४४ सूत्र हैं । प्रति श्वेताम्बर आम्नाय की है ।

७१२७ भक्तामर स्तोत्र टीका— × । पत्रस० २६ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २४७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—टीका का नाम सुख बोधिनी टीका है।

७१२८. **प्रतिस० २** । पत्रस० ६ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० १५३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

७१२६. **प्रतिसं० ३** । पत्र स० १६५ । आ० ६$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३२५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७१३० **प्रति स० ४** । पत्र स० ६७ । आ० ८×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७१३१. **प्रति सं० ५** । पत्र स० १२ । आ० १०×४ इञ्च । ले०काल स० १६६७ । पूर्ण । वेष्टन स० १३३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी)

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६६७ वर्षे ग० श्री गढ़ श्री जिणदास शिष्य ग० हर्षविमल लिखितं नरायणा नगरे स्वय पठनार्थं।

७१३२. **प्रति स० ६** । पत्र स० १२। आ० ६$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १६३२ काती बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० १५४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

७१३३. **प्रतिसं० ७** । पत्रस० ५ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन स० ७१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर।

७१३४. **प्रतिसं० ८** । पत्र स० १६ । आ० ११×७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी।

७१३५ **प्रतिसं० ६** । पत्रस० ४१ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इ च । ले० काल× । पूर्ण । वेष्टनस० २०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी।

विशेष—हिन्दी टीका भी दी हुई है।

७१३६. **प्रतिसं० १०** । पत्रस० १५ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना (बू दी)

७१३७ **प्रतिस० ११** । पत्र स० २१ । आ० ११×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले० काल सं०१८५० अगहन बुदी १ । पूर्ण। वेष्टन स० १८१/४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—लाखेरी ग्राम मे प्रतिलिपि हुई थी।

७१३८. **प्रतिसं० १२** । पत्र स० १४ । आ० १०×६$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक)

७१३६. **प्रति स० १३** । पत्रस० २६ । आ० १२×६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३/३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर।

विशेष—मत्रो के चित्र भी दे रखे हैं।

७१४०. **प्रतिसं० १४** । पत्रसं० ८० । आ० ६$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

विशेष—गुटकाकार मे है।

७१४१. **प्रति स० १५**। पत्र स० ३८। आ० ६×४½ इञ्च। ले० काल स० १६५० ज्येष्ठ बुदी १४। पूर्ण। वेष्टन स० ७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है।

७१४२. **प्रतिसं० १६**। पत्रस० ४०। आ० १३×७¾ इच। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा।

७१४३. **प्रतिस० १७**। पत्रस० २४। आ० ११×७ इञ्च। ले०काल स० १६६६। पूर्ण। वेष्टनस० ८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—प्रति सुन्दर है।

७१४४. **प्रतिसं० १८**। पत्रस० २४। आ० १०×४ इच। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २६३-११५। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर।

७१४५ **प्रतिसं० १६**। पत्र स० २७। आ० ६½×६½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

७१४६ **प्रतिसं० २०**। पत्रस० २४। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

७१४७. **भक्तामर स्तोत्र वालावबोध टीका**—×। पत्र स० २-३५। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल स० १८४४ आषाढ बुदी ७। पूर्ण। वेष्टन स० १४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी।

७१४८ **भक्तामर स्तोत्र वालावबोध टीका**— ×। पत्र स० ११। आ० १२×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल स० १८३६। पूर्ण। वेष्टन स० ३५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दूवलाना (बूदी)

७१४६ **भक्तामर स्तोत्र भाषा—अखैराज श्रीमाल**। पत्रस० २४। आ० १०×५½ इञ्च। भाषा-सस्कृत हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २०५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

७१५०. **प्रति स० २**। पत्रस० १३। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग।

७१५१. **भक्तामर स्तोत्र भाषा—नथमल बिलाला**। पत्रस० ५२। आ० १०×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र। र० काल स० १८२६ ज्येष्ठ सुदी १०। ले०काल स० १८८४ कार्तिक सुदी २। पूर्ण। वेष्टनस० १५८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

७१५२ **प्रति स० २**। पत्रस० ५०। आ० ११×५½ इञ्च। ले० काल स० १८५५। पूर्ण। वेष्टन स० १३६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर राजमहल (टोक)

विशेष—प्रति ऋद्धि मत्र सहित है। तक्षकपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

७१५३. प्रति स० ३ । पत्रस० २-४४ । आ० ११ × ६½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ६४-३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपंथी दौसा

७१५४. भक्तामर स्तोत्र भाषा—जयचद छाबडा । पत्र स० ३६ । आ० ८½×८½ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र०काल स० १८७० कार्तिक बुदी १२ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—लालसोट वासी प० विहारीलाल ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी ।

७१५५. प्रति स० २ । पत्र स० २६ । ले० काल स० १६०६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

७१५६ प्रति स० ३ । पत्रस० २० । आ० १३×८½ इञ्च । ले० काल स० १६५५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

७१५७. प्रति स० ४ । पत्र स० २३ । आ० १३ × ८ इञ्च । ले०काल० स० १६०८ ।। पूर्ण । वेष्टन स०१७२ । **प्राप्ति स्थान**-- दि० जैन खडेलवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—दीवान वालमुकन्दजी के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी । एक दूसरी प्रति २० पत्र की और है ।

७१५८. प्रतिसं० ५ । पत्र स० २० । आ० ११×५½ इञ्च । ले० काल स० १६६४ मगसिर बुदी १० । पूर्ण । वेप्टन स० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

७१५९. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ३८ । आ० ११ × ४¾ इच । ले०काल स० १६५४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

७१६०. भक्तामर स्तोत्र भाषा—× । पत्र स० ४ । आ० १०¾ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०४ । **प्राप्ति स्थान**——भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

आदि भाग—चौपई

अमर मुकुटमणि उद्योत । दुरित हरण जिन चरणह ज्योत ।
नमहु त्रिविधयुग आदि अपार । भव जल निधि परु तह आधार ।।

अन्तिम—

भक्तामर की भाषा भली । जानिपयो विधि सत्तामिली ।
मन समाव **जपि करहि** विचार । ते नर होत **जयश्री** सार ।।

इति श्री भक्तामर भाषा सपूर्ण ।

७१६१. भक्तामर स्तोत्र भाषा—× । पत्रस० ५० । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—अन्तिम पत्र नही है ।

७१६२ भक्तामर स्तोत्र भाषा टीका—विनोदीलाल । पत्र स० १७३ । आ० ६½ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल स० १७४७ सावण बुदी २ । ले० काल १८४३ सावण बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० २६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—प्रति कथा सहित है।

७१६३. प्रतिस० २ । पत्रस० २३० । ले०काल स० १८६५ फागुन सुदी २ । पूर्ण । वेप्टन स० ५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

विशेष—कुम्हेर नगर मे लिखा गया था ।

७१६४. प्रतिस० ३ । पत्र स० १७३ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

७१६५. प्रतिसं० ४ । पत्र स० १३० । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

विशेष – १६२६ मे मन्दिर मे चढाया था ।

७१६६ प्रतिसं० ५ । पत्र स० २३६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान**-—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

७१६७. प्रतिस० ६ । पत्रस० १३८ । आ० १२×८ इञ्च । ले०काल स० १६६६ । पूर्ण । वेष्टनस० १७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

७१६८ प्रतिस० ७ । पत्र स० १८३ । आ० १३×७ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेप्टन स० १४२ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

७१६९. प्रतिस० ८ । पत्रस० १८३ । आ० १२×७ इञ्च । ले०काल स० १८७१ । पूर्ण । वेष्टन स० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

७१७०. प्रतिसं० ९ । पत्रस० १७४ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

विशेष—८५ से आगे पत्र नही है।

७१७१ प्रति स० ११ । पत्रस० २२६ । आ० १२½×७ इञ्च । ले०काल स० १८६५ । पूर्ण । वेप्टन स० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

७१७२. भक्तामर स्तोत्र टीका—लब्धिवर्द्धन । पत्रस० २१ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

७१७३. भक्तामर स्तोत्र भाषा टीका—हेमराज । पत्र स० ७६ । आ० ६ × ६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १७७० । पूर्ण । वेष्टन स० १५०४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

भक्तामर टीका सदा पढै सुनैजो कोई ।
हेमराज सिव सुख लहै तन मन वंछित होय ।

विशेष— गुटका आकार मे है ।

७१७४. प्रतिस० २ । पत्र स० १४ । आ० ७½×४ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—हिन्दी पद्य सहित है ।

७१७५. प्रति स० ३ । पत्रस० ४ । आ० ६$\frac{3}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२३-५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष – हिन्दी पद्य टीका है ।

७१७६. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ५ । आ० १० ×४ इञ्च । । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २५७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—हिन्दी पद्य हैं ।

७१७७. प्रतिसं० ५ । पत्र स० २८ । ले०काल स० १८६६ ज्येष्ठ शुक्ला ४ । पूर्ण । वेष्टनस० १५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—जोधाराज कासलीवाल ने लिखवाई थी । हिन्दी पद्य हैं ।

७१७८. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ११२ । आ० ४$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल स० १८३० माघ बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० १२० । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—वाटिकापुर मे लिपि की गई थी । प्रति हिन्दी गद्य टीका सहित है । गुटकाकार है ।

७१७९. प्रतिसं० ७ । पत्र स० ८६ । आ० ६×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४५ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

विशेष—हिन्दी गद्य एव पद्य दोनो मे अर्थ है ।

७१८०. प्रतिसं० ८ । पत्रस० २६ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १७२७ । पूर्ण । वेष्टन स० २५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—हेमराज पाड्या की पुस्तक है ।

७१८१. भक्तामर स्तोत्र भाषा टीका— × । पत्र स० २० । आ० ११$\frac{3}{4}$ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत, हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स० १८४४ मगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—प० चिमनलाल ने दुलीचद के पठनार्थ किशनगढ मे प्रतिलिपि की थी ।

७१८२ भक्तामर स्तोत्र टीका—गुणाकर सूरि । पत्र स० ८५ । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७१८३ प्रति स० २ । पत्र स० ५४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बडा पचायती मन्दिर डीग ।

७१८४ भक्तामर स्तोत्र वृत्ति—कनक कुशल । पत्रस० १५ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १६८२ आसोज सुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० २६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर चौगान बूदी ।

विशेष—वैराठ नगर मे विजयदशमी पर रचना हुई थी । नारायना नगर मे नयनरुचि ने प्रतिलिपि की थी ।

७१८५. भक्तामर स्तोत्र वृत्ति—रत्नचन्द्र । पत्र स० २४ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल ×। ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२६१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

७१८६. **प्रतिसं० २** । पत्रस० ४६ । आ० ११×५ इच । ले०काल स० १७५७ अगहन सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७४-१४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

७१८७. **प्रति स० ३** । पत्रस० ४६ । आ० १३ × ८½ इञ्च । ले० काल स० १८३४ पौष बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—सिद्धनदी के तट ग्रीवापुर नगर मे श्री चन्द्रप्रभ के मन्दिर मे करमसी नामक श्रावक की प्रेरणा से ग्रथ रचना की गयी । प्रतिलिपि कामा मे हुई थी ।

७१८८ **प्रतिस० ४** । पत्रस० १४-४३ । ले०काल स०१८२५ । अपूर्ण । वेष्टनस० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर कामा ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

७१८९. **भक्तामर स्तोत्र वृत्ति—ब्र० रायमल्ल** । पत्र स० ५७ । आ० ८ × ३¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल स० १६६७ आषाढ सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३६३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७१९०. **प्रतिसं० २** । पत्रस० ४७ । आ० १० × ४½ इञ्च । ले०काल स० १७४६ भादवा सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० १४१५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७१९१. **प्रतिस० ३** । पत्रस० ६४ ।आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३४८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७१९२. **प्रतिस० ४** । पत्रस० ४२ । आ० १०×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष—भट्टारक धर्मचन्द्र के शिष्य ब्र० मेघ ने प्रतिलिपि की थी ।

७१९३. **प्रतिस० ५** । पत्र स० ३७ । आ० ९½×४½ इञ्च । ले० काल स० १७८३ माह सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

७१९४. **प्रतिस० ६** । । पत्र सख्या ४८ । आ० १०½×४ इञ्च । ले० काल स० १७५१ सावन सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सख्या ३८६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—बगरू ग्राम मे सवलसिहजी के राज्य मे प० हीरा ने आदिनाथ चैत्यालय मे लिपि की थी ।

७१९५. **प्रतिसं० ७** । पत्र स० ४३ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

विशेष – वृ दवादिमध्ये प० तुलसीद्वादसी के शिष्य ऋषि प्रहलाद ने प्रतिलिपि की थी ।

७१९६. **प्रतिस० ८** । पत्र स० ४२ । आ० ९ × ४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

७१९७. **प्रतिस० ९** । पत्र स० ३९ । आ० ९ × ६ इञ्च । ले० काल स० १८९९ चैत्र बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी)

विशेष—छत्र त्रिमल के पठनार्थ प्रतिलिपि कराई थी ।

७१९८. **प्रति स० १०** । पत्रस० ३४ । आ० ७½×४½ इञ्च । ले० काल स० १७८२ वैशाख बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी) ।

७१६६. **प्रतिसं० ११**। पत्र स० ३६ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १८३५ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वोरसली कोटा ।

७२०० **प्रतिसं० १२** । पत्र स० ४१ । आ० १०$\frac{1}{2}$ × ४ इञ्च । ले० काल स० १८१७ माघ वुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

विशेष—नाथूराम ब्राह्मण ने लिखा था ।

७२०१ **प्रतिसं० १३** । पत्रस० २-३७ । ले० काल स० १७३६ । अपूर्ण । वेष्टन स० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर डीग ।

विशेष—कामा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

७२०२. **प्रतिसं०१४** । पत्र स० ३३ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल स० १६७२ । पूर्ण । वेष्टन स० २४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७२०३. **प्रतिसं० १५** । पत्र स० २४ । आ० ११×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १७१३ । पूर्ण । वेष्टन स० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

७२०४ **प्रतिसं० १६** । पत्र स० ४३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७२०५. **भक्तामर स्तोत्र वृत्ति**— × । पत्र स० ४४ । आ० ८$\frac{3}{4}$×८ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२६७ । **प्राप्ति स्थान**– भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७२०६. **प्रतिसं० २** । पत्र स० ७० । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ वू दी ।

विशेष—कथा भी है ।

७२०७. **प्रतिसं० ३** । पत्रस० २४ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी वू दी ।

विशेष—पुस्तक प० देवीलाल चि० विरधू की छै ।

७२०८. **प्रति स० ४** । पत्रस० २५ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष— टीका सहित है ।

७२०९. **भक्तामर स्तोत्र वृत्ति**— × । पत्र स० १६ । भाषा–सस्कृत । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७२१०. **प्रतिसं० २** । पत्रस० ८ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा ३९ वी काव्य तक टीका है । आगे पत्र नही हैं ।

७२११ **भक्तामर स्तोत्रावचूरि**— × । पत्र स० २–२६ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स० १६७१ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३११/४२४-४२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका—

इति श्री मानतु गाचार्यकृत भक्तामर स्तोत्राव चूरि टिप्पणक सपूर्ण कृत ।

प्रशस्ति—रुहतगपुर वास्तव्य चौधरी वसावन ततुपुत्र चौधरी सूरदास तत् पुत्र चौधरी सांहल सुख चेन अर्गलपुर वास्तव्य लिखित कायस्थ माथुर दयालदास ततुपुत्र सुदर्शनेन । सवत् १६७१ ।

७२१२ भक्तामर स्तोत्रावचूरि— × । पत्र स० १११ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६२-१०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

विशेष—श्वेताम्बर आम्नाय का ग्रथ है । ४४ काव्य हैं ।

७२१३. भगवती स्तोत्र— × । पत्रस०३ । आ० ६½×५½ इच । भाषा-हिन्दी । विषय—स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७२१४. भज गोविन्द स्तोत्र— × । पत्रस० १ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ४६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७२१५ भयहर स्तोत्र (गुरुगीता)— । पत्रस० ५ । आ० ५×३½ इञ्च । भाषा— सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

७२१६. भवानी सहस्रनाम स्तोत्र— × । पत्रस० १३ । आ० ९×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२९ । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—अन्तिम दो पत्र मे रामरक्षा स्तोत्र है ।

७२१७ भवानी सहस्रनाम स्तोत्र—× । पत्रस० २-२८ । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १७६७ पौष सुदी ७ । अपूर्ण । वेष्टन स० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

विशेष—भादसोडा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

७२१८ भारती लघु स्तवन—भारती । पत्रस० ७ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति स स्कृत टीका सहित है ।

७२१९. (यति) भावनाष्टक— × । पत्र स० १ । आ० १३½×६ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७२२०. भावना बत्तीसी—आचार्य अमितगति । पत्रस० २ । आ० १३½×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ४०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७२२१. भाव शतक—नागराज । पत्रस० १७ । आ० १०½×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । विषय–स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—६८ पद्य हैं ।

७२२२. प्रतिसं० २ । पत्र स० ५ । आ० १०×४ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन स० २२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—१०१ पद्य हैं । ग्र थ प्रशस्ति अच्छी है ।

७२२३. भूपालचतुर्विंशतिका—भूपाल कवि । पत्रस०४ । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७२२४. प्रति स० २ । पत्रस० १३ । आ० ६×३ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८८८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७२२५. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ४ । आ० ११×४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

७२२६. प्रतिसं० ४ । पत्रस०४ । आ० १०½×४ इञ्च । ले० काल स० १६०७ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

सवत् १६०७ वर्षे श्रावण वदि ८ श्री मूलसघे वलात्कारगणे भट्टारक सकलकीर्त्तिदेवा तदाम्नाये ब्र० जिनदास ब्रह्म वाघजी पठनार्थं ।

७२२७. प्रति स० ५ । पत्रस० १५ । आ० ११½×५ इञ्च । ले०काल सं० १७५७ । वेष्टनस० ३५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—तुलसीदास के साथ रहने वाले तिलोकचन्द ने स्वय लिखी थी । कही २ सस्कृत टीका भी है ।

७२२८. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ६ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन स० ३६२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—टब्बा टीका सहित है ।

७२२९. प्रतिसं० ७ । पत्र स० ४ । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन स० ३६२ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

७२३०. प्रति सं० ८ । पत्र स० ३ । आ० १३½×६ इञ्च । ले० काल × । वेष्टन स० ४०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

७२३१ भूपाल चतुर्विंशतिका टीका—भट्टारक चन्द्रकीर्त्ति । पत्रस० १० । आ० ६½×६¾ इ च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १६३२ कार्त्तिक बुदि २ । पूर्ण । वेष्टनस० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

७२३२. भूपाल चौबीसी भाषा—अखयराज । पत्र स० १६ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

७२३३. **प्रति स० २** । पत्रस० १२ । आ० ११×६ इञ्च । ले०काल स० १७३३ काती वुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है इसकी प्रति सागानेर मे हुई थी ।

७२३४ **प्रतिस० ३** । पत्र स० १२ । आ० ११×४¾ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन स० ६७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७२३५ **प्रतिसं० ४** । पत्रस० २७ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स०९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

७२३६ **प्रतिस० ५** । पत्रस० २-१७ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले०काल स० १७२३ चैत्र वुदी १ । अपूर्ण । वेष्टनस० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—ईश्वरदास ठोलिया ने सग्रामपुर मे जोशी आनन्दराम से प्रतिलिपि कराई थी ।

७२३७ **भूपाल चौबीसी भाषा** – × । पत्र स० २ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०३५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७२३८. **भैरवाष्टक**—× । पत्र स० १४ । आ० १२×६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत, हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७/९७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

७२३९ **मंगल स्तोत्र**— × । पत्र स० २ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

७२४०. **मणिभद्रजी रो छन्द—राजरत्न पाठक** । पत्रस० २ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७५/१४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

सगरवाडापुर मडणो अतुलवली अशरण शरण
राजरत्न पाठक जयो देव जय जय करण

७२४१. **मल्लिनाथ स्तवन—धर्मसिंह** । पत्रस० ३ । आ० १०×४ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । र०काल स० १६०७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३६-४०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—अन्तिम भाग निम्नप्रकार है ।

श्री रतन सघ गणीन्द्र तमपट केशवजी कुलचद ए ।
तस पटि दिनकर तिलक मुनिवर श्री शिवजी मुणिद ए ।।
धर्मसिंह मुनि तस शिष्य प्रेमी धूण्या मल्लि जिणद ए ।।५१।।
सवत नय निधि रम शशिकर श्री दीवाली श्रीकार ए ।
शृंगार मरुधर नयरसुन्दर बीकानेर मझार ए ।
श्रीसघ वीनती सरस जाणी कीवो स्तवन उदार ए ।

श्रीमल्लि जिनवर सेवक जननि सदाशिव सुखकार ए ।

इति श्री मल्लिनाथ स्तवन सपूर्ण । भार्या जवणादे पठनार्थं ।

७२४२. महामर्हषिस्तवन – × । पत्र स० २ । ग्रा० १०×४¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ३५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७२४३. मर्हषि स्तवन— × । पत्र स० १ । ग्रा० १०×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति सस्कृत व्याख्या सहित है ।

७२४४. मर्हषि स्तवन— × । पत्र स० ८ । ग्रा० १२×५½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

७२४५ महाकाली सहस्रनाम स्तोत्र— × । पत्रस० २६ । ग्रा० ६×४½ इच । भाषा—सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल स० १७८४ । पूर्ण । वेष्टनस० ८८४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—गुटका साइज मे है ।

७२४६. महाविद्याचक्रेश्वरी स्तोत्र— × । पत्र स० १२ । ग्रा० ६×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ इदरगढ (कोटा)

७२४७. महाविद्या स्तोत्र मत्र—× । पत्र स० ३ । ग्रा० १०¾×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—मत्र शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

७२४८ महावीर स्तवन—जिनवल्लभ सूरि । पत्र स० ४ । भाषा—प्राकृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन स० ६६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—प० चोखा ने प० हर्ष के पठनार्थं लिखी थी ।

७२४९ महावीर स्तवन—विनयकीर्त्ति । पत्र स० ३ । ग्रा० १०×४ इच । भाषा हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३३५-४०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

अन्तिम भाग—

इति श्री स्याद्वाद सूचक श्री महावीर जिनस्तवन सपूर्ण ।

७२५० महावीरनी स्तवन—सकलचन्द्र । पत्रस० २ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७२५१. महावीर स्तोत्र वृत्ति—जिनप्रभसूरि। पत्रस० ४ । ग्रा० १०½×४ इञ्च । भापा—सस्कृत । विपय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

७२५२. महावीर स्वामीनो स्तवन— × । पत्र स० १ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । भापा—हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स० १८४० चैत्र सुदी १ । पूर्ण । वेप्टन स० २ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर वोरसली कोटा ।

विशेष—ग्रौरङ्गावाद मे लिखा गया था ।

७२५३. महिम्न स्तोत्र—पुष्पदताचार्य। पत्रस० ६ । ग्रा० ६½×४ इञ्च । भापा—सस्कृत । विपय—स्तोत्र। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४५२। **प्राप्दि स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

७२५४ प्रतिसं० २ । पत्रस० ६ । ग्रा० ११ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३३८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

७२५५. प्रति स० ३ । पत्रस० ७ । ग्रा० ६×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १५६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी)

७२५६. प्रति स० ४ । पत्रस० २-६ । ग्रा० ६½×४½ इञ्च । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० २७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना (बू दी)

७२५७ प्रति स० ५ । पत्रस० १० । ग्रा० ११×६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर ग्रभिनन्दन स्वामी बू दी ।

७२५८ मानभद्र स्तवन—माणक । पत्र स० ५ । ग्रा० १०×४½ इच । भापा-हिन्दी । विपय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० २५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

७२५९. मार्त्तण्ड हृदय स्तोत्र—× । पत्रस० २ । ग्रा० १०½ × ६ इञ्च । भापा सस्कृत । विपय-वैदिक साहित्य । र०काल × । ले०काल स० १८८६ फागुण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० १३१० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

७२६०. मुनि मालिका— × । पत्रस० २ । ग्रा० ६½ × ४ इञ्च । भापा-हिन्दो । विपय-स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

७२६१. मूलगुणसज्झाय—विजयदेव। पत्र स० १ । ग्रा० १०½×४ इच । भापा-हिन्दी । विपय—स्तुति । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७२६२. मांगीतु गी सज्झाय—अभयचन्द्र सूरि। पत्र स० ३ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

७२६३ यमक बध स्तोत्र— × । पत्र स० २ । आ० १२ × ८ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० । २०२ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष—टीका सहित है ।

७२६४. यमक स्तोत्र— × । पत्रस० ६ । आ० १० × ५½ इञ्च । भाषा —सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०लका × । वेष्टनस० ६० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)

विशेष—पार्श्वनाथ स्तवन यमक अलकार मे है ।

७२६५. यमक स्तोत्राष्टक—विद्यानदि । पत्र स० ६ । आ० ११ × ८ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है । अर्हत् परमेश्वरीय यमक स्तोत्राष्टक है ।

७२६६. रामचन्द्र स्तोत्र—× । पत्र स० १ । आ० १२ × ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६५-४७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

७२६७. रामसहस्त्र नाम—× । पत्रस० १७ । आ० ६½ × ४¾ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स० १८०६ वैशाख बुदी ऽ ऽ । पूर्ण । वेष्टन स० २१० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

लिखित चिरजीव उपाध्याय मयारामेण श्रीपुरामध्ये वास्तव्य ।

७२६८ रोहिणी स्तवन—× । पत्र स० २ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७२६९. लक्ष्मी स्तोत्र—पद्मप्रभदेव । पत्र स० १ । आ० १३½ × ६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४०२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७२७०. लक्ष्मी स्तोत्र—पद्मप्रभदेव । पत्रस० ७१ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७२७१. लक्ष्मी स्तोत्र—× । पत्र स० २ । आ० ७½ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२५० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७२७२. लक्ष्मी स्तोत्र—× । पत्र स० ६ । आ० ६$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्टनस० ७४८ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७२७३ लक्ष्मी स्तोत्र गायत्री—× । पत्रस० २ । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १७६७ । पूर्ण । वेष्टन स० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर वसवा ।

विशेष—पल्लीवाल गच्छ के सुखमल ने लिपि की थी ।

७२७४. लक्ष्मी स्तोत्र टीका—× । पत्रस० ४ । भाषा—सस्कृत । र०काल × । ले०काल स० १८६० भादवा सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० २८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर मे लिखा गया था ।

७२७५ लक्ष्मी स्तोत्र टीका—× । पत्रस० ७ । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण ।वेष्टन स० १६७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कटा ।

विशेष—सरोज नगर मे प० मूलचन्द ने लिखा स० १८४·· ।

७२७६. लक्ष्मी स्तोत्र टीका— × । पत्र स० ४ । आ० ८×५$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्टनस० २०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

७२७७. लघुशाति स्तोत्र—× । पत्रस० १ । आ० १०×४ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १५० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७२७८. लघु सहस्रनाम—× । पत्रस० ४२ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७२७६. लघुस्तवन टीका—भाव शर्मा । पत्र स० ३-३६ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल स० १५६० । ले०काल स० १७७० । अपूर्ण । वेष्टन स० ७५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—अवावती मे नेमिनाथ चैत्यालय मे भ० जगतकीर्ति के शिष्य दोदराज ने अपनी ज्ञान वृद्धि के लिए टीका की प्रतिलिपि अपने हाथ से की थी । इसही के साथ सवत् १७७०, चैत्र वुदि ५ की, ४० तथा ४१ वें पृष्ठ पर विस्तृत प्रशस्ति है, जिसमे लिखा है कि जगतकीर्ति के शिष्य प० दोदराज के लिए प्रतिलिपि की गई थी ।

७२८० लघु स्तवन टीका— × । पत्र स० ४ । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

७२८१. लघु स्तोत्र विधि—× । पत्र स० ७ । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७२८२. लघुस्वयभू स्तोत्र—देवनदि । पत्र स० ५ । आ० १०$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६०३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७२८३. प्रतिसं० २ । पत्र स० ७ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

विशेष—दशलक्षण धर्म व सोलहकारण के भी कवित्त हैं ।

७२८४. लघुस्वयभू स्तोत्र टीका— × । पत्र स० ३३ । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल स० १७८४ कार्त्तिक बुदि ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

७२८५. वज्रपजर स्तोत्र यत्र सहित— × । पत्र स० १ । वेष्टन स० ७७-४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

७२८६. वदना जखडी— × । पत्रस० ६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल स० १९४२ । पूर्ण । वेष्टन स० १७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बूंदी ।

७२८७. वर्द्धमान विलास स्तोत्र—जगद्भूषण । पत्रस० ४ से ५८ । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २२ (क) । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन वडा पचायती मन्दिर डीग ।

विशेष—४०३ पद्य हैं । भट्टारक श्री ज्ञानभूषण पट्टस्थितेन श्री भट्टारक जगत्भूषणेन विरचित वर्द्धमान विलास स्तोत्र ।

४०१ वा श्लोक निम्न प्रकार है ।

एता श्रीवर्द्धमानस्तुति मतिविलसद् वर्द्धमानानुरागात्,
व्यक्ति नीता मनस्या वसति तनुधिया श्री जगद्भूषणेन ।
यो धीते तस्य कायाद् विगलति दुरित श्वासकाशप्रणाशो,
विद्या हृद्या नवद्या भवति विद्युसिता कीर्तिदद्दामलक्ष्मी ।।४०१।।

७२८८. वर्द्धमान स्तुति—× । पत्र स० १ । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७२८९. वसुधारा स्तोत्र— × । पत्रस० ८ । आ० ७$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४६३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७२९०. वसुधारा स्तोत्र— × । पत्र स० ५ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

७२९१. वसुधारा स्तोत्र—× । पत्र स० ४ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७२९२. विचारषड्त्रिंशिकास्तवन टीका—राजसागर । पत्रस० ६ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल स० १६८१ । पूर्ण । वेष्टन स० २९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बू दी) ।

७२९३ विद्या विलास प्रबन्ध—आज्ञासुन्दर । पत्र स० १७ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । । विषय-स्तोत्र । र०काल स० १५१६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५० । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर दबलाना (बू दी) ।

७२९४. विनती आदीश्वर—त्रिलोककीर्त्ति । पत्र स० २ । आ० ४½×३½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३०१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष— आदिजिनवर सेवियें रे लाल ।
धूलेवगढ जिनराज हितकारी रे ।
त्रिभुवनवाछित पूखैरे लाल ।
सारै आतमकाज हितकारी रे ।
आदिजिनवर ....

७२९५. विनती सग्रह—देवाब्रह्म । पत्रस० ११ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ९५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बू दी ।

७२९६ प्रति स० २ । पत्र स० २२ । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५८-७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—विनतियो का सग्रह है ।

७२९७. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ३१ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

७२९८. विषापहार स्तोत्र महाकवि धनजय । पत्र स० ७ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२६१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७२९९. प्रतिस० २ । पत्र स० ७ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९५० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष— स्तोत्र टीका सहित है ।

७३०० प्रति स० ३ । पत्र स० ३ । आ० १०½×४¾ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन स० ३५५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७३०१. प्रति सं० ४ । पत्रस० ३ । आ० १३½×६ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन स० ४१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७३०२. प्रति स० ५ । पत्रस० ४ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

७३०३ प्रति सं० ६ । पत्रस० ९ । आ० १०⅞×५¾ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूदी ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है । जिनदास ने स्वय के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

७३०४. प्रति सं० ७ । पत्र स० ३ । आ० १०×४ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७३०५. विषापहार स्तोत्र भाषा—× । पत्रस० ८ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बीसपथी दौसा ।

७३०६ विषापहार स्तोत्र टीका—नागचन्द्र । पत्रस० १३ । आ० ९½×६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स० १९३२ कानी सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १५५ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

७३०७. प्रति स० २ । पत्रस० १२ । आ० १०⅞×४½ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन स० ३८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७३०८. प्रति स० ३ । पत्रस० १७ । आ० ११½×४¾ इञ्च । ले०काल × । वेष्टनस० ३९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—आचार्य विशालकीर्त्ति ने लिखवाई थी ।

७३०९ विषापहार स्तोत्र टीका—प्रभाचन्द । पत्र स० १६ । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स० १७३१ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१७-१५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

७३१०. विषापहार स्तोत्र टीका × । पत्रस० १५ । आ० ११×६⅞ इञ्च । भाषा-सस्कृत । पद्य । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स० १७०१ । पूर्ण । वेष्टनस० १०८२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—विजयपुर नगर मे श्री धर्मनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

७३११. विषापहार स्तोत्र टीका— × । पत्र स० १० । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी)

विशेष—९ वा तथा १० से आगे पत्र नही हैं ।

७३१२. विषापहार स्तोत्र भाषा—अखयराज । पत्रस० ३० । आ० १०×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १९५२ । पूर्ण । वेष्टनस० ९४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी (बूदी)

७३१३ प्रति सं० २ । पत्रस० ६-२० । आ० १२×४½ इञ्च । ले०काल स० १७२३ चैत्र सुदी १ । पूर्ण । वेप्टन स० १२ × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वडा बीस पथी, दौसा ।

विशेष—साह ईश्वरदास ठोलिया ने आत्म पठनार्थ आनन्दराम से प्रतिलिपि करवाई थी ।

७३१४ प्रति स० ३ । पत्रस० १५ । आ० ११×५½ इन्च । ले०काल स० १७२० मगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० २३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी (कामा)

७३१५. विषापहार भाषा—अचलकीर्त्ति । पत्र स० ३२ । भाषा-हिन्दी। विपय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन म० ४७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

७३१६. वीतराग स्तवन—× । पत्रस० १ । आ० १२×४ इच । भाषा-सस्कृत । विपय-स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ३६८-४७६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७३१७ वीरजिनस्तोत्र—अभयसूरि । पत्रस० — । भाषा-प्राकृत । विपय-स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेटनस० ३६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७३१८ वीरस्तुति—× । पत्रस० ४ । आ० ८ × ४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विपय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल स० १८४५ । पूर्ण । वेष्टनस० २२३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—द्वितीयागम्य वीरस्तुति सुगडाग को षट्‌मो अध्याय । हिन्दी टव्वा टीका सहित है ।

७३१९. वृहद्शाति स्तोत्र—× । पत्रस० १ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७३२०. वृषभदेव स्तवन—नारायण । पत्र सख्या ३ । आ० ७½ × ४ इच । भाषा—हिन्दी पद्य । विपय—स्तवन । र०काल × । ले०काल स० १७५३ । पूर्ण । वेष्टन स० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बू दी)

७३२१ वृषभ स्तोत्र—प० पद्मनन्दि × । पत्र स० ११ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत। विपय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—श्री पद्मनन्दि कृत दर्शन भी है । प्रति सस्कृत छाया सहित है ।

७३२२. वृहद् शातिपाठ – × ।पत्रस० २ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

७३२३. शत्रु जय गिरि स्तवन—केशराज । पत्र स० १ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विपय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बू दी)

विशेष—

श्री विजयगच्छपति पद्मसागर पाठ श्री गुणसागरु ।
केशराज गावइ सवि सुहावइ सहगिरवर सुखकरु ॥३॥

इति श्री शत्रु जय स्तवन ।

७३२४. शत्रु जय तीर्थस्तुति—ऋषभदास । पत्रस० १ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय –स्तुति । र० काल स० × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी)

विशेष—निम्न पाठ और हैं—

अइमाता ऋपि मज्भाय आणदचद हिन्दी स्तवन (र० कालस० १६६७)

चद्रपुरी मे पार्श्वनाथ चैत्यालय मे रचना हुई थी

७३२५ शत्रु जय भास—विलास सुन्दर । पत्र स० १ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल स० × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७३२६. शत्रु जय मडल—सुहकर । पत्रस० १ । आ० १० × ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-प्राकृत । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना (बू दी)

७३२७. शत्र जय स्तवन—× । पत्रस० ४ । भाषा-सस्कृत । विषय—स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७२७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७३२८. शातिकर स्तवन— × । पत्रस० २ । आ० १०×४ इ च । भाषा—प्राकृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७३२६. शातिजिन स्तवन—गुणसागर × । पत्र स० १ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य । विषय—स्तोत्र । र० काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी)

७३३०. शातिजिन स्तवन । पत्र स० ३-८ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी)

विशेष—मूल के नीचे हिन्दी मे अर्थ भी दिया है ।

७३३१. शांतिनाथ स्तवन—उदय सागरसूरि । पत्रस० १ । आ० १०½ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी)

विशेष—सीमधर स्तवन धुजमलदास कृत और है ।

७३३२. शातिनाथ स्तवन—पद्मनदि । पत्रस० १ । आ० १२ × ४ इन्च । भाषा संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × ।ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३६१-४६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७३३३ शातिनाथ स्तवन—मालदेव सूरि । पत्र स० ३७ से ४७ । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तवन । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ६१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—आरम्भ मे दूसरे पाठ है ।

७३३४. शातिनाथ स्तुति—× । पत्रस० ७ । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७३३५. शातिनाथ स्तोत्र—× । पत्र स० १२ । आ० १०×४½ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, दबलाना (बू दी) ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । श्लोकों के ऊपर तथा नीचे टीका दी हुई है ।

७३३६. शातिनाथ स्तोत्र—× । पत्रस० ४ । आ० १०½×६½ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोट्यो का नैणवा ।

७३३७. शाश्वतजिन स्तवन—× । पत्र स० २ । आ० १० × ४ इन्च । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बू दी)

७३३८. शिव मन्दिर स्तोत्र टीका—× । पत्रस० २ से २५ । आ० ८×४ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

७३३९. शीतलनाथ स्तवन-रायचद । पत्र स० १ । आ० १०×४½ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय-स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७२१ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७३४०. श्रीपालराज सिज्झाय खेमा । पत्रस० २ । आ० ११०×५½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बू दी)

७३४१. श्वेताम्बर मत स्तोत्र सग्रह—× । पत्रस० ६ । आ० ११×५ इच । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६९५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—सप्तति जिनस्तोत्र, भयहर स्तोत्र, लघुशाति स्तोत्र, अजितशान्ति स्तोत्र एव मत्र आदि हैं ।

७३४२ **शोभन स्तुति**— × । पत्र स० ६ । श्रा० १०×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय–स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली, कोटा ।

विशेष—चौवीस तीर्थंकर स्तुति है ।

७३४३ **श्लोकावली**—× । पत्रस० ६ । श्रा० ६ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विपय–स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स० १८२० ज्येष्ठ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० ८७-४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—श्री मडलाचार्य श्री रामकीरत जी पठनार्थ ग्राम उदैगढमध्ये ब्राह्मण भट्ट—

७३४४. **षट त्राणमय स्तवन—जिनकीर्त्ति** । पत्रस० ३ । भाषा—सस्कृत । विषय–स्तवन । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ६६५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—केवल तीसरा पत्र ही है ।

७३४५. **षट्पदी—शकराचार्य** । पत्र स० १ । श्रा० ११ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ५७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७३४६. **षष्ठिशतक—भडारी नेमिचन्द्र** । पत्रस० ६ । श्रा० १० × ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १६०८ ज्येष्ठ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० ३१६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७३४७. **सकल प्रतिबोध—दौलतराम** । पत्र स० १ । श्रा० १० × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स ३७७-१४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

७३४८. **सज्झाय—समयसुन्दर**— × । पत्रस० ५ । श्रा० १०¾×५ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६५६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७३४९. **सप्तस्तवन** × । पत्रस० १५ । श्रा० ६×३¾ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४८६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—निम्न स्तवन है—

उवझायागहर, तीजईपोत, कल्याणमदिर स्तवन, अजितशातिस्तवन, पोडशचिद्या स्तवन, वृहद्शाति स्तवन, गोतमाष्टक ।

७३५०. **समन्तभद्र स्तुति—समन्तभद्र** । पत्र स० २६ । श्रा० ६×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स० १६१६ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—ब्र० रायमल्ल ने ग्र थ की प्रतिलिपि की थी ।

७३५१ समन्तभद्र स्तुति— ×। पत्रस० ६३। आ० ८×५ इञ्च। भाषा—प्राकृत-संस्कृत। विषय-प्रतिक्रमण एव स्तोत्र। र०काल ×। ले०काल स० १६६७। पूर्ण। वेष्टन स० ३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर।

विशेष—सवत् १६६७ वर्षे वैशाख सुदी ५ रवौ श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री गुणकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० वादिभूषण गुरूपदेशात् ब्रह्मगोपालेन श्री देवनन्दिना इद पडावश्यक प्रदत्त शुभ भवतु।

इस ग्र थ का दूसरा नाम पडावश्यक भी है प्रारम्भ मे प्रतिक्रमण भी है।

७३५२ समन्तभद्र स्तुति—×। पत्रस० ६१। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ३६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर।

विशेष—२ पत्र वध त्रिभगी के हैं तथा प्रतिक्रमण पाठ भी है।

७३५३. समन्तभद्र स्तुति—×। पत्र स० ३३। आ० १०½×४½ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले०काल स० १६६४ पौष बुदी ६। वेष्टन स० ३५६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है। प० उदयसिंह ने नागपुर मे प्रतिलिपि की थी।

७३५४ समवशरण पाठ—रेखराज। पत्रस० ६०। आ० १०½×७ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तवन। र०काल ×। ले०काल स० १८५६ कार्त्तिक सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन स० ४८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

७३५५. समवशरण मगल—मायाराम। पत्र स० २६। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र०काल स० १८२१। ले० काल स० १८५४ सावन बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० ३४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

विशेष—भरतपुर मे प्रतिलिपि की गई थी।

७३५६ समवसरण स्तोत्र—विष्णुसेन। पत्र स० ८। आ० ८×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल ×। ले०काल स० १८१३ मगसिर बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स०८०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी।

७३५७ प्रतिस० २। पत्र स० ४। आ० १३½×६½ इञ्च। ले०काल स० १८२७ माघ सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन स० ४७६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

७३५८. समवशरण स्तोत्र— ×। पत्रस० ६। आ० ६½×४½ इञ्च। भाषा - सस्कृत। विषय—स्तोत्र। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १०६४। प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७३५९. समवशरण स्तोत्र—×। पत्र स० ६। भाषा-प्राकृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६६६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

७३६० **समवसरण स्तोत्र** । पत्रस० ६ । आ० १० × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

७३६१. **समवसरण स्तोत्र**— × । पत्र स० ६ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स० १८२५ आषाढ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बू दी ।

विशेष—टव्वा टीका सहित है ।

७३६२. **समवसरण स्तोत्र**—× । पत्र स० ६ । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८५/४३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७३६३. **समवसरण स्तोत्र**— × । पत्र स० ११ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

७३६४ **सम्मेदशिखर स्तवन**— × । पत्रस० ६ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ५६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७३६५. **सरस्वती स्तवन**—× । पत्रस० २ । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—स्तवन के पूर्व थूलिभद्र मुनि स्वाध्याय उदयरत्न कृत दी हुई है । यह हिन्दी की रचना है । र०काल स० १७५६ एव ले०काल स० १७६१ है । प्रति राधणपुर ग्राम मे हुई थी ।

७३६६. **सरस्वती स्तोत्र—अश्वलायन** । पत्र स० २ । आ० ८×४ इच । भाषा संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६२/४७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सभवनाथ उदयपुर ।

७३६७. **सरस्वती स्तुति—प० आशाधर** । पत्रस० १–६ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १६६/४६५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७३६८ **सरस्वती स्तोत्र**— × । पत्र स० १ । आ० १०½×४⅞ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७३६९ **सरस्वती स्तोत्र**— × । पत्र स० ३ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बू दी ।

७३७०. **सर्वजिन स्तुति** । पत्र स० ६ । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

७३७१. सलुणारी सज्झाय—बुधचद । पत्रस० २ । आ० ८$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १८५१ आषाढ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० १७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—लिखतग बाई जमना ।

७३७२. सहस्राक्षी स्तोत्र—× । पत्रस० २-६ । आ० ८ × ३$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०कालस० १७६२ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १६५/४६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७३७३ साधारण जिन स्तवन—भानुचन्द्र गणि । पत्र स० ६ । आ० ६$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १७७० चैत सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० ३२६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

७३७४. साधारण जिन स्तवन—× । पत्रस० १ । आ० ६×३$\frac{1}{2}$ इच । भाषा-सस्कृत । विषय स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७३७५. साधारण जिन स्तवन वृत्ति—कनककुशल । पत्र स० ३ । आ० ९ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तवन । र० काल × । ले०काल स० १७४५ माघ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० २७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी)

७३७६ साधु वन्दना—आचार्य कु वरजी । पत्रस० ९ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय स्तुति । र०काल × । ले०काल स० १७४१ अषाढ बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर बैर ।

विशेष—आल्हणपुर मे प्रतिलिपि की गई थी ।

७३७७. साधु वन्दना—बनारसीदास । पत्र स० ३ । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भरतपुर ।

७३७८. सिद्धगिरि स्तवन—खेमविजय । पत्रस० २ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तवन । र०काल × । ले०काल स० १८७९ प्रथम चैत सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १४-२०४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

७३७९. सिद्धचक्र स्तुति—× । पत्रस० १ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी) ।

७३८०. सिद्धभक्ति—× । पत्र स० ३ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना (बू दी)

७३८१. **सिद्धिदण्डिका स्तवन**—×। पत्रस० १। आ० ६ × ४½ इञ्च। भापा-प्राकृत। विषय-स्तवन। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २-१५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक)

विशेष—१३ गाथाए हैं।

७३८२ **सिद्धिप्रिय स्तोत्र—देवनन्दि**। पत्र स० ३। आ० ११×८ इञ्च। भापा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २४३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७३८३. **प्रतिसं० २**। पत्रस० १४। ले०काल स० १८३२। पूर्ण। वेष्टन स० २४५। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है।

७३८४. **प्रतिसं० ३**। पत्रस० १२। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २४६। **प्राप्ति स्थान**-उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—कल्याण मन्दिर एव भूपाल स्तोत्र भी हैं।

७३८५ **प्रतिसं० ४**। पत्र स० १२। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २४८। **प्राप्ति स्थान**-उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—प्रति सटीक है।

७३८६. **प्रति स० ५**। पत्रस० २। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २५१। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

७३८७. **प्रतिसं० ६**। पत्र स० १०। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० २९९। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मदिर।

विशेष—प्रति टीका सहित है।

७३८८ **प्रतिसं० ७**। पत्रस० १३। आ० १०×५½ इञ्च। ले०काल स० १९०३। पूर्ण। वेष्टन स० ९५२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है।

७३८९. **प्रतिसं० ८**। पत्र स० ४। आ० १०×४½ इञ्च। ले० काल स० १८८० सावण सुदी ३। पूर्ण। वेष्टनस० १०८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है।

७३९० **प्रति सं० ९**। पत्रस० ४। आ० १० × ४ इञ्च। ले० काल स० १७५६ असाढ सुदी १०। पूर्ण। वेष्टनस० ८१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर (कामा)

७३९१. **प्रति सं० १०**। पत्र स० ६। ले० काल ×। वेष्टन स० ५१०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—टीका सहित है।

७३९२. **प्रति स० ११**। पत्रस० ६। आ० ९¾×४½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ३७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—प्रति सस्कृत व्याख्या सहित है ।

७३९३. प्रति स० १२ । पत्र स० ३ । आ० ११½×५ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७३९४. प्रति स० १३ । पत्रस० २ । आ० १३½×६ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

७३९५. प्रतिसं० १४ । पत्र स० ८ । आ० १०¾×५¾ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—प्रति सस्तृत टीका सहित है ।

७३९६. प्रतिसं० १५ । पत्रस० १३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हुण्डावालो का डीग ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

७३९७ प्रति स० १६ । पत्र स० ७ । आ० १०×५ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—इन्दौर नगर मे लिखा गया । प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

७३९८. सिद्धिप्रिय स्तोत्र टीका—**आशाधर** । पत्रस० १० । आ० ११×४¾ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स० १७०२ ज्येष्ठ सुदी १२ । वेष्टन स० १९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

७३९९. सिद्धिप्रिय स्तोत्र टीका— × । पत्र स० ११ । आ० ९½×४½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२२७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७४००. सिद्धिप्रिय स्तोत्र टीका— × । पत्रस० ६ । आ० १२×५½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १७६० फागुन सुदी १ । वेष्टन स० ३९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति टोक मध्य लिखी गई थी ।

७४०१. सिद्धिप्रिय स्तोत्र भाषा—खेमराज । पत्रस० १३ । आ० १२×४½ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल स० १७२३ पौष सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—साह ईश्वरदास ठोलिया ने आत्म पठनार्थ आनन्दराम से प्रतिलिपि करवाई थी ।

७४०२. सोमवर स्तुति— × । पत्र स० १२ । आ० ९×६½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७/५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)

७४०३. **सीमंधर स्वामी स्तवन—प० जयवंत**। पत्र स० ३ । ग्रा० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तुति । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४०/४०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—रचना का अन्तिम भाग निम्न प्रकार है—

साधु शिरोमणि जागीइ श्री विनयमडन उवझायरे ।
ताम सीस गुणि आगली वहुला पडित राय रे ।।
आसो सुदी ५ नेमिदिनि शुक्रवार एकाति रे ।
कागल जयवत पडितिइ लिखी उमा झिमणसिइ रे ।।

इति श्री सीमाधर स्वामी लेख समाप्त । श्री गुणसोमाग्य सूरि लिखित ।

इसी के साथ पडित जयवत का लोचन परवेश पतग गीत भी है। प्रति प्राचीन है ।

७४०४. **सीमधर स्वामी स्तवन**— × । पत्रस० ४ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७४०५. **सुन्दर स्तोत्र**— × । पत्र स० १० । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १६५२ । पूर्ण । वेष्टन स० ८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६५२ वर्षे श्रावण सुदी ११ रविवारे विक्रमपुर मध्ये लिपिकृत । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

७४०६. **सुप्रभातिक स्तोत्र**— × । पत्र स० २ । आ० १३$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७४०७. **सुप्रभातिक स्तोत्र**— × । पत्र स० १ । आ० १३$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

७४०८. **सुभद्रा सज्झाय**— × । पत्र स० १ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७४०९. **सोहं स्तोत्र**— × । पत्रस० १ । आ० १०$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{4}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

७४१०. **स्तवन—गुणसूरि** । पत्रस० १ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—स्तुति । र० काल स० १६५२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—अयवतीपुर के आनन्दनगर मे ग्र थ रचना हुई ।

७४११ **स्तवन**— × । पत्र स० २ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२/१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक)

७४१२ **स्तवन —आणद** । पत्र स० ३–१० । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

विशेष—इसके अतिरिक्त नदिषेण गौतम स्वामी आदि के द्वारा रचित स्तवन भी है ।

७४१३ **स्तवन पाठ**— × । पत्रस० ८ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा—स स्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २८/१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)

७४१४. **स्तवन सग्रह**— × । पत्र स० ८ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७०–१४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डू गरपुर ।

७४१५. **स्तोत्र पार्श्व (थत्रण)**— × । पत्रस० २ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

७४१६ **स्तुति पचाशिका—पाण्डे सिहराज** । पत्र स० २–८ । आ० १०×४¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल स० १७७८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१५ । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७४१७. **स्तुति सग्रह** – × । पत्रस० १ । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७४१८ **स्तुति सग्रह**— × । पत्र स० २–६६ । भाषा-सस्कृत । विषय-सग्रह । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वप्टन स० ७०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७४१९ **स्तोत्र**— × । पत्रस० ६ । आ० ८½×४¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—वैदिक साहित्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०४७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७४२० **स्तोत्र**— × । पत्रस० १९ । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

७४२१ **स्तोत्र चतुष्टय टीका—आशाधर** । पत्र स० ३३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ५०९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष— कृतिरिय वादीन्द्र विशालकीर्ति भट्टारक प्रिय सून यति विद्यानदस्य ।

७६२२ **प्रति स० २** । पत्रस० ३१ । आ० १२×५ इच । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ४१८/४३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इत्याशाधर कृत स्तोत्र टीका समाप्ता ।

कृतिरिय वादीन्द्र विशालकीर्ति भट्टारक प्रियशिष्य यति विद्यानदस्य यद्दमी निर्वेदस्योवृष । वोधेन स्फुरता यस्यानुग्रहतो इत्यादि स्तोत्र चतुष्टय टीका समाप्ता ।

७४२३. **स्तोत्र त्रयी**— × । पत्रस० १० । आ० १०½×५ इच । भाषा—सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । वेष्टनस० ३७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—सिद्धिप्रिय, एकीभाव एव कल्याण मन्दिर स्तोत्र है ।

७४२४ **स्तोत्र पाठ**— × । पत्र स० ८ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत-सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१३-११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—उपसर्गहरस्तोत्र, भयहर स्तोत्र, अजितनाथ स्तवन, लघु शाति आदि पाठो का सग्रह है ।

७४२५. **स्तोत्रय टीका**— × । पत्रस० २५ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—निम्न स्तोत्र टीका सहित हैं ।

१. भक्तामर स्तोत्र २ कल्याण मदिर स्तोत्र तथा ३. एकीभाव स्तोत्र ।

७४२६. **स्तोत्र सग्रह**— × । पत्रस० ८८ । आ० १०¾×५ इञ्च । भापा—सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल स० १६०५ आसोज बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ७२५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

भक्तामर, कल्याणमदिर, भूपालचौवीसी, देवागम स्तोत्र, देवपूजा, सहस्रनाम, तथा पच मङ्गल (हिन्दी) ।

७४२७. **स्तोत्र संग्रह**— × । पत्रस० ६ । आ० १०½×५ इञ्च । भापा-सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—भक्तामर एव सिद्धिप्रिय स्तोत्र सग्रह हैं । सामान्य टिप्पण भी दिया हुआ है ।

७४२८. **स्तोत्र सग्रह**— × । पत्रस० १० । भाषा—सस्कृत । विपय—स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—निम्न स्तोत्रो का सग्रह है ।

एकीभाव	वादिराज	सस्कृत
विपापहार	धनजय	,,
भूपालस्तोत्र	भूपाल	,,

७४२६. **स्तोत्र सग्रह**— × । पत्र स० ४ । आ० १०×४½ इ च । भाषा—सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—पार्श्वनाथ एव महावीर स्तोत्र है ।

७४३०. **स्तोत्र सग्रह**— × । पत्रस० ४७ । आ० १०½×४ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४२० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—भक्तामर, कल्याण मदिर, तत्वार्थ सूत्र एव ऋपिमडल स्तोत्र हैं ।

७४३१ **स्तोत्र सग्रह**— × । पत्र स० ४ । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सग्रह । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

विशेष – निम्न पाठो का सग्रह है ।

(१) नवरत्न कवित्त (२) चतुर्विशति स्तुति (३) तीर्थंकरो के माता पिता के नाम (४) भज गोविंद स्तोत्र (५) शारदा स्तोत्र ।

७४३२ **स्तोत्र सग्रह**— × । पत्र स० ४१ । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राज-महल (टोंक)

विशेष – निम्न स्तोत्रो का सग्रह है—

सहस्रनाम स्तोत्र	जिनसेनाचार्य	सस्कृत
कल्याणमदिर ,,	कुमुदचन्द्र	,,
भक्तामर ,,	मानतुङ्गाचार्य	,,
एकीभाव ,,	वादिराज	,,

७४३३. **स्तोत्र सग्रह**— × । पत्र स० ७ । आ० १०½ × ५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ६२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—एकीभाव भूधरदास कृत तथा परमज्योति बनारसीदास कृत है ।

७४३४ **स्तोत्र सग्रह**— × । पत्रस० ५ । आ० १०¾ × ४¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन स० ४४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—चक्रेश्वरी एव क्षेत्रपाल पद्मावती स्तोत्र हैं ।

७४३५ **स्तोत्र सग्रह**— × । पत्र स० १५ (१६-३०) । आ० ६½×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ६६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७३३६ **स्तोत्रसग्रह**— × पत्रस० ३ । आ० १०¾×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४३६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—महालक्ष्मी, चक्रेश्वरी एवं ज्वालामालिनी स्तोत्र ।

७४३७ स्तोत्रसग्रह — × । पत्र स० ७ । आ० १०½×४½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—ज्वाला मालिनी, जिनपजर एव पचागुली स्तोत्र हैं ।

७४३८. स्तोत्र सग्रह— × । पत्रस० १६ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा-स स्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१. भूपाल चौबीसी	भूपाल कवि	पत्र स० ६
२ विपापहार स्तोत्र	धनजय	" ६-११
३. भावना वत्तीसी	अमितगति	"११-१६

७४३९. स्तोत्र सग्रह—— × । पत्रस० ३ । आ० १०½×४¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन स० ३६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—लघु सामायिक, परमानन्द स्तोत्र एव गायत्री विधान है ।

७४४० स्तोत्रसग्रह— × । पत्रस० ८-४० । आ० ५½×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३१७-११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—जैन सकार वर्णन भी है ।

७४४१. स्तोत्र सग्रह— × । पत्रस० १७ । आ० ५¾×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९७ से ९९ तक-४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—तीन प्रतिया है । ऋषि मण्डल स्तोत्र, पद्मावती स्तोत्र, किरातवराही स्तोत्र, त्रैलोक्य मोहन कवच आदि स्तोत्र हैं ।

७४४२. स्तोत्रसग्रह— × । पत्रस० ८७ । आ० ६½ × ५¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १७९२ । पूर्ण । वेष्टनस० १०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

सवत् १७९२ मिती ज्येष्ठ सुदि चतुर्दशी लि० पडित खेतसी उदयपुरमध्ये ।

७४४३. स्तोत्र सग्रह— × । पत्र स० २१ । आ० ५ × ५ इच । भाषा सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष—परमानन्द, कल्याण मदिर, एकीभाव एवं विषापहार स्तोत्र है ।

७४४४. **स्तोत्र सग्रह**— × । पत्र स० २३ । ग्रा० १० × ४½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५२ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

सरस्वती स्तोत्र		सस्कृत
सरस्वती स्तुति	ज्ञानभूषण	"
क्षेत्रपाल स्तोत्र		"
दशलक्षण स्तोत्र		"
महावीर समस्या स्तवन		"
वर्द्धमान स्तोत्र		"
पार्श्वनाथ स्तोत्र मत्र सहित		"
पार्श्वनाथ स्तोत्र		"
चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र		"
चन्द्रप्रभ स्तोत्र मत्र सहित		"
वीजाक्षर ऋषि मडल स्तोत्र		"
ऋषि मडल स्तोत्र	गौतमस्वामी	"

७४४५ **स्तोत्र सग्रह**—× । पत्र स० ७ । ग्रा० ११ × ६½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचनाकाल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोट्यो का नैणवा ।

विशेष—निम्न स्तोत्रो का सग्रह है—

पार्श्वनाथ स्तोत्र	—	सस्कृत
स्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"
क्षेत्रपाल स्तोत्र	—	"
पार्श्वनाथ स्तोत्र	राजसेन	'
चन्द्रप्रभ स्तोत्र	—	"
लघु भक्तामर स्तोत्र	—	"

नमो जोति मुर्ति त्रिकाल त्रिसिध ।
नमो नरविकार नरागध गध ॥
नमो तो नराकार नर भाग वाणी ।
नमो तो नराधार ग्राधार जाणी ॥

७४४६. **स्तोत्र सग्रह**— × । पत्र स० १६ । ग्रा० १०½ × ४½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वोरसली कोटा ।

विशेष—कल्याण मदिर, विषापहार एव लक्ष्मी स्तोत्र अपूर्ण है ।

७४४७. **स्तोत्र संग्रह**— × । पत्र स० १८ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—मुख्यत निम्न स्तोत्रो का संग्रह है ।

भयहर स्तोत्र, अजितशांति स्तोत्र एव भक्तामर स्तोत्र आदि ।

७४४८ **स्तोत्र संग्रह**— × । पत्र स० ६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष—निम्न स्तोत्रो का संग्रह है ।

स्वयभू स्तोत्र	समन्तभद्र	संस्कृत
महावीर स्तोत्र	विद्यानदि	,
नेमि स्तोत्र	—	”

७४४९. **स्तोत्र संग्रह**— × । पत्रस० ६ । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दबलान (बूंदी)

विशेष—निम्न स्तोत्रो का संग्रह है---

स्वयभू स्तोत्र, भूपालचतुर्विशति स्तोत्र, सिद्धिप्रिय स्तोत्र एव विषापहार स्तोत्र का संग्रह है ।

७४५०. **स्तोत्र संग्रह**— × । पत्र स० २१ से ३९ । भाषा—प्राकृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । लेखन काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष—गुजराती मे अर्थ दिया हुआ है ।

७४५१. **स्तोत्र संग्रह**— × । पत्र स० १९ । भाषा—हिन्दी-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स० १९४९ । पूर्ण । वेष्टन स० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर ।

विशेष—

नवकार मंत्र, जिनदर्शन, परमजोति, निर्वाण काण्ड भाषा, भक्तामर स्तोत्र एव लक्ष्मी स्तोत्र हैं ।

७४५२. **स्तोत्र संग्रह**— × । पत्र स० १४ । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३५७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—एकीभाव, विषापहार, कल्याण मन्दिर एव भूपाल चौबीसी स्तोत्र हैं ।

७४५३. **स्वयभू स्तोत्र—समन्तभद्र** । पत्र स० २५ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी जयपुर ।

७४५४. **प्रतिसं० २** । पत्र स० ४६ । आ० ६½×५ इञ्च । ले० काल स० १८१६ मगसिर बुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० २३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रारम्भ मे सामायिक पाठ भी है।

७४५५. स्वयभू स्तोत्र (स्वयभू पञ्जिका)—समन्तभद्राचार्य। पत्र स० ११। आ० १२½ × ५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विपय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल स० १७६२। वेष्टन स० ६३०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—इसमे टीका भी दी हुई है। टीका का नाम स्वयभू पजिका है।

वर्पेन भागवीतेन्दु कृते दीपोत्सवे दिने।
स्वयभूपजिका लेखि लक्ष्मणारन्येन धीमता ॥

७४५६. स्वयभू स्तोत्र टीका—प्रभाचन्द। पत्र स० ६१। आ० ६×४ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विपय-स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल स० १८२०। पूर्ण। वेष्टन स० ८५। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर, अजमेर।

विशेष—ग्र थ का नाम क्रियाकलाप टीका भी है।

७४५७. प्रतिसं० २। पत्रस० १५२। आ० ११×४½ इच। ले०काल स० १७७७। पूर्ण। वेष्टन स० २९८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

७४५८ प्रति स० ३। पत्रस० ४६। आ० १२½×५½ इञ्च। ले०काल स० १७०२। पूर्ण। वेष्टन स० २४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष—अलवर मे प्रतिलिपि की गई थी।

७४५९. प्रति स० ४। पत्रस० ६६। आ० ११×४½ इञ्च। ले०काल स० १६६५ भादवा बुदी ७। पूर्ण। वेष्टन स० १४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवाजी कामा।

विशेष—रोहतक नगर मे आ० गुणचन्द ने प्रतिलिपि करवायी थी।

७४६०. स्वयभू स्तोत्र भाषा—द्यानतराय। पत्रस० ४६। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विपय-स्तोत्र। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १६२३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर।

७४६१. हीयाली—रिष। पत्र स० १। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विपय-स्तोत्र। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी)

विशेष—साध्वी श्री भागा सज्झाय भी।

——.०——

विषय -- पूजा एवं विधान साहित्य

७४६२ अकृत्रिम चैत्यालय जयमाल—भैया भगवतीदास । पत्र स० ३ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—पूजा । र०काल स० १७४५ भादवा सुदी ४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०१२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

विशेष—अकृत्रिम जिन चैत्यालयो की पूजा है ।

७४६३. अकृत्रिम चैत्यालय पूजा—चैनसुख । पत्रस० ३६ । आ० १३ × ६$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय - पूजा । र० काल स० १९३० । ले०काल स० १९६४ । पूर्ण । वेष्टनस० ५५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

७४६४. अकृत्रिम चैत्यालय पूजा—मल्लिसागर । पत्र स० २० । आ० १०$\frac{1}{2}$×४ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्टनस० २८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

७४६५. अकृत्रिम चैत्यालय पूजा— × । पत्रस० १७७ । आ० १२$\frac{1}{2}$×७ इन्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल स० १८६० । ले०काल स०१९११ । पूर्ण । वेष्टनस० १९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

७४६६. अकृत्रिम जिन चैत्यालय पूजा—लालजीत । पत्रस० २२९ । आ० १३×७ इन्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल स० १८७० कार्त्तिक सुदी १२ । ले० काल स० १८८६ वैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० १४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर ।

७४६७ प्रति स० २ । पत्रस० १२६ । आ० १०२×६$\frac{1}{2}$ इन्च । ले० काल स० १८७७ । पूर्ण । वेष्टन स० १०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—लक्ष्मणदास वाकलीवाल खुमेरवाले ने महात्मा पन्नालाल जयपुर वाले से आगरा मे प्रतिलिपि करवाई थी ।

७४६८. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १५६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर हण्डावालो का डीग ।

विशेष—आगरा मे प्रतिलिपि की गई थी ।

७४६९. प्रति स० ४ । पत्र स० १५५ । आ० १३ × ७$\frac{1}{2}$ इन्च । ले० काल स० १९२८ । पूर्ण । वेष्टन स० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

७४७०. प्रति स० ५ । पत्रस० १४७ । ले०काल स० १९०५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

अंतिम प्रशस्ति—

पूजा आरम्भ क्यो, काशी देश हर्ष भयो,
भेलुपुर ग्राम जैनजन को निवास है ।

अकीर्तम मन्दिर है रचा चारि सै अठावन ।
जेतिन को सुपाठ लालजीत यौ प्रकास है ।

७४७१ **प्रति स० ६** । पत्र स० १६७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७४७२ **प्रतिसं० ७** । पत्रस० १७८ । आ० २२×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५१-३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, कोटडियो का डू गरपुर ।

७४७३. **प्रतिस० ८** । पत्रस० १६१ । आ० ११½×६¾ इञ्च । ले० काल स० १६५१ सावन सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनस० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—श्रावक केदारमलजी न फतेहपुर मे सोनीराम भोजग से प्रतिलिपि कराई थी ।

७४७४ **अक्षयदशमी पूजा**— × । पत्र स० ८ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—मुक्तावली पूजा भी है ।

७४७५ **अढाई द्वीप पूजा**— × । पत्र स० १७६ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल स० १६१५ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १३५/३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

७४७६ **अढाई द्वीप पूजा—डालूराम** । पत्रस० २-३० । आ० १५×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल स० १८८७ ज्येष्ठ सुदी १३ । ले० काल स०१६३१ आषाढ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—ईश्वरी प्रशादशर्मा समशावादवालो ने प्रतिलिपि की थी ।

७४७७ **प्रतिस० २** । पत्र स० ११३ । आ० १२×६ इच । ले० काल स० १६३१ । पूर्ण । वेष्टनस० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोक)

७४७८ **प्रतिसं० ३** । पत्र स० १११ । आ० १२¾×४½ इञ्च । ले० काल स० १६६३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—छोटे दीवानजी के मन्दिर की प्रति से रिषभचन्द बिन्दायक्या ने प्रतिलिपि की थी ।

७४७९. **अढाईद्वीप पूजा—भ० शुभचन्द्र** । पत्रस० २६८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६२४ सावण बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७४८० **प्रतिस० २** । पत्रस० ६७ । आ० ११½×७ इञ्च । ले० काल स० १८६० आषाढ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—१ से २८ तथा ६५ व ६६ पत्रो पर सुन्दर रगीन वेलें हैं ।
बखतलाल तेरापथी ने दौसा मे प्रतिलिपि करवाई थी ।

७४८१ **प्रतिस० ३** । पत्रस० ३७३ । ले०काल स० १८७४ । पूर्ण । वेष्टनस० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

विशेष—जोधराज कासलीवाल कामा ने प्रतिलिपि कराई थी।

७४८२. प्रतिस० ४ । पत्र स० २४३ । आ० १३½×७½ इञ्च । ले०काल स० १६११ । पूर्ण । वेष्टन स० १६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

७४८३ अढाईद्वीप पूजा लालजीत । पत्रस० १३७ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८७० भादो सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

७४८४. अढाईद्वीप पूजा— × । पत्र स० ३६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष—अढाई द्वीप पूजा के पहिले और भी पूजाए दी हैं।

७४८५ प्रतिस० २ । पत्र सख्या १४० । १२¾×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१/४६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

७४८६. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २१५ । आ० १२½×७½ इञ्च । ले०काल स० १६०६जेठ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १४/३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

७४८७. प्रतिस० ४ । पत्रस० २४० । आ० २३×६¾ इञ्च । ले०काल स० १८८८ पौष सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—रामचन्द्र ने नानगराम से किरौली नगर मे दीवान बुधसिंग जी के मन्दिर मे प्रतिलिपि करवाई थी ।

७४८८. प्रति स० ५ । पत्र स० १०४ । आ० १०½×७ इञ्च । ले०काल स० १८५२ । पूर्ण । वेष्टन स० ११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मदिर उदयपुर ।

७४८६. प्रति स० ६ । पत्रस० १५४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर हण्डावालो का डीग ।

७४६०. अनतचतुर्दशी पूजा—श्री भूषणयति । पत्र स० २४ । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर हण्डावालो का डीग ।

७४६१. अनन्तचतुर्दशी पूजा—शान्तिदास । पत्रस० ११ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल स० १७६७ वैशाख सुदी ५ । वेष्टन स० ६१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—नरायण नगर मे भ० जगत्कीर्त्ति के शिष्य बुध दोदराज ने अपने हाथ से प्रतिलिपि की थी।

७४६२. अनन्त चतुर्दशी पूजा— × । पत्रस० १४ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

७४९३. अनन्तचतुर्दशी पूजा— × । पत्र सं० १८ । आ० ११½×४¾ इन्च । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

७४९४ अनन्ताचतुर्दशी व्रत पूजा— × । पत्र सं० २७ । आ० ११×५ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३७० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७४९५. अनन्तचतुर्दशी व्रत पूजा—विश्वभूषण । पत्रसं० १४ । आ० ६½×४½ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० १३६८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर, अजमेर ।

७४९६ अनंत जिनपूजा—पं० जिनदास । पत्रसं० २६ । आ० १०½×५ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १८२३ सावण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४९ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर टोडारायसिंह (टोंक)

७४९७ अनन्तनाथ पूजा—श्रीभूषण । पत्रसं० १३ । आ० १०×४½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १८२४ मगसिर बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४१८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७४९८. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १६ । ले० काल सं० १८७९ भादवा बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ९५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अजमेर भण्डार ।

७४९९ प्रति सं० ३ । पत्रसं० १६ । आ० १२×५½ इन्च । ले०काल सं० १८७९ भादवा बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ९५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७५००. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० १-२२ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

७५०१. अनन्तनाथ पूजा—रामचन्द्र । पत्र सं० ५ । आ० ६½×८½ इन्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय— पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १९९१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ९३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

७५०२. अनन्तनाथ पूजा—× । पत्रसं० २४ । आ० १०×४¾ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय— पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १००७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

७५०३ अनन्तनाथ पूजा— × । पत्र सं० १३ । आ० १३ × ५ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल सं० १८५३ भादवा बुदी ७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी ।

७५०४ अनन्तनाथ पूजा—× । पत्र सं० १८ । आ० १०×५ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर अभिनन्दन स्वामी (बूंदी) ।

७५०५. अनन्तनाथ पूजा × । पत्रस० २७ । आ० ६×५$\frac{1}{4}$ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८६६ । पूर्ण । वेष्टनस० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना (बूदी)

७५०६ अनन्तनाथ पूजा—× । पत्र स० ३१ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल स० १६२५ भादवा बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, (बूदी)

विशेष-नागदी के नेमीश्वरजी के मन्दिर मे गुरुजी साहब शिवलालजी की प्रेरणा से ब्राह्मण गिरधारी ने प्रतिलिपि की थी ।

७५०७. अनन्तनाथ पूजा—× । पत्र स० ३३ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६०६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६/३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

७५०८. अनन्तनाथ पूजा मडल विधान—गुणचन्द्राचार्य । पत्रस० २२ । आ० १२$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६३० । पूर्ण । वेष्टन स० २५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, (बूदी)

७५०९. प्रतिसं० २ । पत्रस० २६ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल स० १६३० । पूर्ण ।वेष्टनस० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी

७५१०. प्रति सं० ३ । पत्रस० ५६ । आ० १०×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

७५११ प्रतिसं० ४ । पत्र स० २ से २७ । आ० ११×७ इञ्च । ले० काल स० १६२१ । पूर्ण । वेष्टन स० २४/१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)

७५१२. प्रतिसं० ५ । पत्र स० ४१ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी (बूदी)

७५१३. प्रति सं० ६ । पत्र सख्या २६ । आ० १० × ५ इञ्च । ले०काल स० १८७६ पूर्ण । वेष्टन स० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

७५१४. प्रतिसं० ७ । पत्रस० ४२ । आ० ८$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । ले० काल स० १६२० । पूर्ण । वेष्टनस० ३०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

विशेष—श्री शाकमागपुर मे रचना हुई थी । नेमीसुर चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

७५१५. अनन्त पूजा विधान । पत्र स० ३ । आ० ११ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५८/२६२ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

७५१६. अनन्त व्रत कथा पूजा—ललितकीर्त्ति । पत्रस० ८ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६२२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

७५१७. **अनन्तव्रत पूजा—पाण्डे धर्मदास** । पत्रस० २७ । आ० ८ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६६३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७५१८ **अनन्तव्रत पूजा—सेवाराम साह** । पत्रस० ३ । आ० ८½ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६४७ । पूर्ण । वेष्टनस० ६५० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७५१९. **प्रतिस० २** । पत्र स० ३ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७५२०. **अनन्तव्रत पूजा**— × । पत्रस० १४ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय – पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७५२१ **अनन्तव्रत पूजा**—× । पत्र स० ७ । आ० ५½ × ४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

७५२२. **अनन्तव्रत पूजा**—× । पत्र स० १४ । आ० ११ × ५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८८० सावण बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ११० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७५२३ **अनन्तव्रत पूजा**—× । पत्रस० २० । आ १२×५¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले काल स० १६६४ । पूर्ण । वेष्टन स० २५/१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

७५२४. **अनन्तव्रत पूजा**— × । पत्रस० २३ । आ० ९½ × ६ इञ्च । भाषा-संस्कृत, हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६०८ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—१४ पूजायें है । जयमाल हिन्दी मे हैं—कही २ अष्टक भी हिन्दी मे है ।

७५२५ **अनन्त व्रत पूजा** — × । पत्रस० १८ । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

७५२६ **अनन्तव्रत पूजा** – × । पत्र स० १३ । आ० १३ × ६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

७५२७ **अनन्तव्रत पूजा**—× । पत्रस० १७ । आ० १५ × ४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटडियो डूंगरपुर ।

७५२८. **अनन्तव्रत पूजा**—× । पत्रस० १२ । आ० १० × ६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८८१ भादवा सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० २४३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर राजस्थान (टोंक)

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

७५२६. अनन्तव्रत पूजा—× । पत्र स० ६ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८६६ सावरण सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ७४-१०६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

७५३० अनन्तव्रत पूजा— × । पत्रस० १-२१ । आ० ७$\frac{3}{4}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय – पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४८-२८६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

विशेष—अन्तिम पत्र नही है ।

७५३१ अनन्तव्रत पूजा उद्यापन—सकलकीर्त्ति । पत्र स० १८ । आ० १० × ५$\frac{1}{4}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८८६ आसोज सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १३७२ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

७५३२. प्रति स० २ । पत्र स० ४१ । ले०काल स० १६२६ मगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १३७६ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

७५३३. अनन्तव्रत पूजा विधान भाषा—× । पत्रस० ३२ । आ० ८$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १५३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर अजमेर भण्डार ।

७५३४. अनन्तव्रत विधान—शान्तिदास—× । पत्रस० २४ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १६३५ । पूर्ण । वेष्टनस० ५४-२४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर वडा वीसपथी दौसा ।

विशेष—शिवबक्स ने दौसा मे प्रतिलिपि की थी ।

७५३५. अनन्तव्रतोद्यापन—नारायण । पत्र स० ५० । आ० ६ × ६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल स० १६५५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५१६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

७५३६. अनन्तव्रतोद्यापन—× । पत्रस० २ से ३२ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सौगानी मदिर करौली ।

विशेष—प्रथम पत्र नही है ।

७५३७ अनन्तव्रतोद्यापन पूजा—× । पत्र स० ११ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २१६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी

७५३८ अभिषेक पाठ—× । पत्र स० ४ । आ० ८$\frac{1}{2}$×७ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७५३९ **अभिषेक पाठ**—× । पत्रस० ७ । आ० १०½×५ इच । भाषा–सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १६०९ । पूर्ण । वेष्टनस० २८६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी (बू दी) ।

विशेष – घृताभिषेक पाठ है ।

प्रशस्ति—सवत् १६०९ वर्षे मार्ग सुदि नवमी वृहस्पतिवासरे उत्तराभाद्रपद नक्षत्रे घृत गुण आत्म पठनार्थ लिखित प० ज्योति श्री महेस गोपा सुत ।

७५४०. **अभिषेक पाठ**— × । पत्र स० ४७ । आ० १० × ८ इञ्च । भाषा सस्कृत । विपय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान**दि० जैन खडेलवाल मदिर उदयपुर ।

७५४१. **अभिषेक पूजा**—× । पत्र स० ३ । आ० १०×५½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विपय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

७५४२. **अभिषेक पूजा—विनोदीलाल** । पत्रस० ५ । आ० ९½ × ५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विपय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० १९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

७५४३. **अभिषेक विधि**× । पत्रस० ४ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विपय—विधान । र०काल × । ले० काल । वेष्टन स० ५८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७५४४. **अष्टद्रव्य महा-अर्घ**—× । पत्रस० १ । आ० ८×६ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल×। ले० काल× । पूर्ण । वेष्टन स० ६६४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

७५४५. **अष्टाह्निका पूजा—सकलकीर्त्ति** । पत्र स० १९ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६२/५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

७५४६ **अष्टाह्निका वृतोद्यापन-शोभाचन्द** । पत्र स २० । आ० ११½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विपय पूजा । र०काल× । ले०काल स० १८१७ चैत सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

७५४७ **अष्टाह्निका पूजा**— × । पत्रस० २० । आ० ८¾ × ६¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय पूजा । र०काल स० १८७९ कार्तिक बुदी ९ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११४७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—दो प्रतियो का मिश्रण है ।

७५४८. **अष्टाह्निका पूजा**—× । पत्रस० १५ । आ० ८ × ६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय-पूजा । र०काल ×। ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

७५४९. अष्टाह्निका पूजा—× । पत्रस० १३ । आ० १० × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३८३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

७५५०. अष्टाह्निका पूजा—× । पत्र स० १६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल स० १६२० । पूर्ण । वेष्टनस० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

७५५१. अष्टाह्निका पूजा—× । पत्र स० ३ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३७/३३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७५५२. अष्टाह्निका पूजा उद्यापन—शुभचन्द्र । पत्रस० १२ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८५६ । पूर्ण । वेष्टनस० ७७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खंडेलवाल मंदिर उदयपुर ।

७५५३. अष्टाह्निकापूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्रस० ४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

७५५४ प्रतिसं० २ । पत्रस० ६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७५५५. अष्टाह्निका पूजा—सुमतिसागर । पत्र स० ८ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८५८ चैत सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७५५६. अष्टाह्निका पूजा—द्यानतराय । पत्रस० १६ । भाषा—हिन्दी । विषय —पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७५५७ अष्टाह्निका पूजा—× । पत्र स० १४३ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १९५४ । पूर्ण । वेष्टन स० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष—२ रु० १५ आना लगा था ।

७५५८ अष्टाह्निका मंडल पूजा—× । पत्र स० ६ । आ० १०×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिरदौसा ।

७५५९ अष्टाह्निका व्रतोद्यापन पूजा—पं० नेमिचचद्र । पत्रस० ३५ । आ० ९×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोंक)

७५६० **अष्टाह्निका पूजा**—× । पत्रस० २७ । आ० ८½×६ इन्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर मालपुरा (टोक)

७५६१ **अष्टान्हिका पूजा**-× । पत्र स० १५ । आ० १३×७ इन्च । र०काल स० १८७६ । ले० काल स० १८८५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक)

७५६२ **अष्टाह्निका पूजा**— × । पत्रस० २२ । आ० १०½×६½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

७५६३ **अष्ट प्रकारी पूजा**—× । पत्र स० ४ । भाषा—हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७५६४ **अष्टप्रकारी पूजा जयमाल**—× । पत्रस० ११ । आ० १३×६ इच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन स० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

७५६५ **असज्झाय विधि** । पत्र स० २ । भाषा—हिन्दी । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

७५६६ **आकार शुद्धि विधान—देवेन्द्रकीर्त्ति** । पत्रस० ६ । आ० ११½ × ५ इन्च ।भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र० काल× । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३६१-१४८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

७५६७ **आठ प्रकार पूजा कथानक**—× । पत्र स० ८५ । भाषा—प्राकृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८७६ । पूर्ण । वेप्टन स० ६०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

७५६८ **आदित्यजिन पूजा—केशवसेन** । पत्रस० ८ । आ० ११×६ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६४६ । पूर्ण । वेष्टन स० ५३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

७५६९ **आदित्य जिनपूजा—भ० देवेन्द्रकीर्त्ति** । पत्रस० १७ । आ० १०×६ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ५२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—इसका दूसरा नाम आदित्यवार व्रत विधान भी है ।

७५७०. **प्रति स० २** । पत्र स० १६ । आ० १०×४½ इन्च । ले०काल स० १६१६ श्रावण सुदी ६ पूर्ण । वेप्टन स० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—मगलचन्द श्रावक ने प्रतिलिपि की थी ।

७५७१. **आदित्यवार व्रतोद्यापन पूजा—जयसागर** । पत्रस० १० । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८१६ । पूर्ण । वेष्टन स० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७५७२ आदित्यव्रत पूजा— ×। पत्र स० १२ । आ० १०¾×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८३६ जेठ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ५१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प० आलमचन्द ने लिखा था ।

७५७३. आदित्यव्रत पूजा— × । पत्रस० ४ । आ० १०×५½ इञ्च । भाषा —सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल×। ले० काल× । पूर्ण । वेष्टनस० ६१२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७५७४ इन्द्रध्वज पूजा—भ० विश्वभूषरण । पत्रस० १११ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर उदयपुर ।

७५७५ प्रतिस० २ । पत्रस० ११८ । आ० ११½×५ इञ्च । ले० काल स० १८८३ फागुण बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)

७५७६ प्रति स० ३ । पत्रस० ११२ । आ० ११×७½ इञ्च । ले० काल स० १९८५ । पूर्ण। वेष्टनस० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

७५७७. इन्द्रध्वज पूजा — × । पत्र स० ९० । आ० १२×७¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—ग्र थ का लागत मूल्य १३।-) है ।

७५७८ इकवीस विधि पूजा— × पत्र स० १३ । भाषा—हिन्दी गुजराती । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८७८ । पूर्ण । वेष्टन स० ६५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७५७९ ऋषिमडल पूजा—शुभचन्द । पत्र स० १८ । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८१६ जेठ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर भरतपुर ।

७५८०. ऋषि मडल पूजा—विद्याभूषरण । पत्रस० २० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७५८१ ऋषि मडल पूजा—गुरणनन्दि । पत्रस० २१ । आ० १०×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल स० १९११ । पूर्ण । वेष्टन स० २८२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

विशेष—बू दी मे नेमिनाथ चैत्यालय मे प० रतनलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

७५८२. प्रतिसं० २ । पत्रस० २-२४ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

७५६० अष्टाह्निका पूजा—× । पत्रस० २७ । आ० ८३/४×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर मालपुरा (टोक)

७५६१. अष्टान्हिका पूजा-× । पत्र स० १५ । आ० १३×७ इञ्च । र०काल स० १८७६ । ले० काल स० १८८५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक)

७५६२ अष्टाह्निका पूजा— × । पत्रस० २२ । आ० १०१/२×६१/२ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

७५६३ अष्ट प्रकारी पूजा—× । पत्र स० ४ । भाषा—हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७५६४ अष्टप्रकारी पूजा जयमाल—× । पत्रस० ११ । आ० १३×६ इच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन स० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

७५६५ असज्झाय विधि । पत्र स० २ । भाषा—हिन्दी । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

७५६६ आकार शुद्धि विधान—देवेन्द्रकीर्त्ति । पत्रस० ९ । आ० १११/२ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३६१-१४८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

७५६७. आठ प्रकार पूजा कथानक—× । पत्र स० ८५ । भाषा—प्राकृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८७६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

७५६८ आदित्यजिन पूजा—केशवसेन । पत्रस० ८ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल स० १९४९ । पूर्ण । वेष्टन स० ५३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

७५६९ आदित्य जिनपूजा—भ० देवेन्द्रकीर्त्ति । पत्रस० १७ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—इसका दूसरा नाम आदित्यवार व्रत विधान भी है ।

७५७०. प्रति स० २ । पत्र स० १६ । आ० १०×४१/२ इञ्च । ले०काल स० १९१९ श्रावण सुदी ९ पूर्ण । वेष्टन स० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—मगलचन्द श्रावक ने प्रतिलिपि की थी ।

७५७१ आदित्यवार व्रतोद्यापन पूजा—जयसागर । पत्रस० १० । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८१९ । पूर्ण । वेष्टन स० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७५७२ आदित्यव्रत पूजा— ×। पत्र स० १२ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८३६ जेठ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ५१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प० आलमचन्द ने लिखा था ।

७५७३. आदित्यव्रत पूजा— × । पत्रस० ४ । आ० १०×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा —संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल×। ले० काल× । पूर्ण । वेष्टनस० ६१२ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७५७४ इन्द्रध्वज पूजा—भ० विश्वभूषण । पत्रस० १११ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर उदयपुर ।

७५७५. प्रतिस० २ । पत्रस० ११८ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले० काल स० १८८३ फागुण बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोंक)

७५७६ प्रति स० ३ । पत्रस० ११२ । आ० ११×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल स० १९८५ । पूर्ण। वेष्टनस० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

७५७७. इन्द्रध्वज पूजा — × । पत्र स० ६० । आ० १२×७$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—ग्रथ का लागत मूल्य १३।–) है ।

७५७८ इकवीस विधि पूजा— × पत्र स० १३ । भाषा—हिन्दी गुजराती । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८७८ । पूर्ण । वेष्टन स० ६५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७५७९ ऋषिमंडल पूजा—शुभचन्द । पत्र स० १८ । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८१६ जेठ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर भरतपुर ।

७५८० ऋषि मंडल पूजा—विद्याभूषण । पत्रस० २० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७५८१ ऋषि मडल पूजा—गुणनन्दि । पत्रस० २१ । आ० १०×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल स० १९११ । पूर्ण । वेष्टन स० २८२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

विशेष—बूदी मे नेमिनाथ चैत्यालय मे प० रतनलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

७५८२. प्रतिसं० २ । पत्रस० २-२४ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

७५८३ **प्रति स० ३** । पत्र स० २० । आ० १०३/४×५१/२ इन्च । ले० काल × । वेष्टन स० ४३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७५८४ **ऋषिमडल पूजा भाषा—दौलत ओसेरी** । पत्र स० १२ । आ० १२१/२×६१/२ इच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल स० १६०० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

७५८५ **प्रति स० २** । पत्रस० १५ । आ० ८१/२×४१/२ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोक)

७५८६ **ऋषिमडल पूजा—×** । पत्र स० ४ । आ० १११/२×४१/२ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बू दी ।

७५८७ **ऋषिमडल पूजा—×** । पत्र स० ५ । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७/३६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—६ प्रतिया और है जिनके वेष्टन स० ३८/३६७ से ४३/३७२ तक है ।

७५८८ **ऋषिमडल पूजा— ×** । पत्र स० १७ । आ० ११×७ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १६२२ । पूर्ण । वेष्टन स० १५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बू दी ।

७५८९ **ऋषिमडल पूजा— ×** । पत्रस० २ । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७५९०. **ऋषिमडल पूजा भाषा— ×** । पत्रस० १३ । आ० १०×५ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८९४ फागुण बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० १२३२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७५९१ **ऋषिमडल यत्र पूजा— ×** । पत्रस० १४ । आ० १११/२×४१/२ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बू दी ।

७५९२. **ऋषिमडल स्तोत्र पूजा— ×** । पत्रस० १७ । आ० ११×७१/२ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन कोटडियो का डू गरपुर ।

विशेष—प्रतापगढ मे प० रामलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

७५९३. **अ कुरारोपण विधि—आशाधर** । पत्रस० ६ । आ० ६१/२×४१/२ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—प्रतिष्टा विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३८३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७५९४. **प्रति स० २** । पत्रस० ६ । आ० १०×४ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—प्रतिष्ठा विधान । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन स० २६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

७५६५ **प्रतिसं० ३** । पत्र स० ६ । आ० ८×६½ इच । र०काल × । ले० काल स० १६४८ । पूर्ण । वेष्टन स० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

७५६६. **अंकुरारोपण विधि—इन्द्रनन्दि** । पत्रस० १५६ । आ० १२ × ६ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले०काल स० १६४० वैशाख शुक्ला ४ । पूर्ण । वेष्टन स० २६७-११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

७५६७. **कमल चन्द्रायण व्रतोद्यापन**—× । पत्र स० १० । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५२३—× । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

७५६८. **कर्मचूर उद्यापन** — × । पत्रस० ६ । आ० ११ × ७ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल स० १८८४ । पूर्ण । वेष्टन स० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक)

७५६६ **कर्मदहन उद्यापन—विश्वभूषण** । पत्र स० २६ । आ० १०¾×४¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । वेष्टन स० २६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७६०० **कर्मदहन पूजा—टेकचद** । पत्रस० १७ । आ० ११ × ७ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी बूंदी ।

७६०१. **प्रतिसं० २** । पत्र स० १३ । आ० ११×७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

७६०२. **प्रतिसं० ३** । पत्रस० १८ । आ० १० × ७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

७६०३. **प्रति स० ४** । पत्रस० २३ । आ० ६ × ६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७३-१०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

७६०४. **प्रति स० ५** । पत्र स० ५७ । आ० १०½×४ इञ्च ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७६०५. **प्रतिसं० ६** । पत्रस० २२ । ले०काल स० १६६२ । पूर्ण । वेष्टन स० ५१७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७६०६ **प्रति सं० ७** । पत्रस० १६ । आ० १२ × ६ इच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोक)

७६०७. **प्रति स० ८** । पत्रस० ३० । आ० ६×७ इञ्च । ले०काल स० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक)

७६०८ **प्रति स० ६** । पत्रस० २५ । आ० ६ × ७ इञ्च । ले०काल स० १८८२ श्रावण बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७ । **प्राप्ति थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर मालपुरा (टोक)

विशेष—रामलाल पहाडिया ने प्रतिलिपि की थी ।

७६०९ **प्रतिस० १०** । पत्रस० २१ । ग्रा० १० × ४½ इच । ले०काल स० १९२७ । पूर्ण । वेष्टन स० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोट्यो का नैणवा ।

७६१०. **प्रतिसं० ११** । पत्रस० ३० । ग्रा० ११½×५½ इञ्च । ले०काल स० १९५५ । पूर्ण । वेष्टनस० ५९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७६११. **प्रतिस० १२** । पत्रस० ४१ । ग्रा० १२¾ × ८¾ इञ्च । ले० काल स० १९५९ चैत सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७६१२ **प्रति स० १३** । पत्रस० ६९ । ले०काल स० १८८५ । पूर्ण । वेष्टन स० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—सदासुख रिषभदास द्वारा प्रतिलिपि कराई गई थी ।

७६१३. **प्रतिसं० १४** । पत्र स० २२ । ग्रा० ११ × ४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३८७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

७६१४ **कर्मदहन पूजा—शुभचन्द्र** । पत्र स० १८ । ग्रा० १०×६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १९३८ । पूर्ण । वेष्टन स० ५३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

७६१५ **प्रतिस० २** । पत्रस० १८ । ग्रा० ११ × ६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ९८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष—हरविशदास लुहाडिया ने सिकन्दरा मे प्रतिलिपि की थी ।

७६१६. **प्रति स० ३** । पत्र स० १० । ग्रा० ११½×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ बूदी ।

७६१७. **प्रति स० ४** । पत्रस० १२ । ग्रा० ११×५ इच । ले०काल स० १७६० वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा)टोक)

विशेष—ग्रा० ज्ञानकीर्ति ने नगर मे प्रतिलिपि की थी ।

७६१८ **प्रतिस० ५** । पत्रस० १७ । ग्रा० ११ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६७३ । पूर्ण । वेष्टन स० १९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी)

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

सवत् १६७३ वर्षे ग्रासोज सुदी ११ गुरु सागवाडा नगरे श्री ग्रादिनाथ चैत्यालये श्री मूलसघे सरस्वती गच्छे मडलाचार्य श्री रत्नकीर्ति तत्पट्टे मडलाचार्य श्री यश कीर्ति तत्पट्टे भ० महाचन्द्रा त० भ० भ० श्री जिनचन्द्र भ० सकलचन्द्रान्वये भ० श्री रत्नचन्द्र विराजमाने हु वड ज्ञातीय सखेश्वर गोत्रे सा० साणा भार्या सजाणदे तत्पुत्रौ सा फाला भार्या कदु सा० ग्ररथी भार्या इन्द्री तत्पुत्र वलभदास स्वस्वज्ञानावरणी कर्म क्षयार्थ ग्र० श्री ठाकरा कर्मदहन पूजा लिखाप्यने दत्त ।

७६१९ **प्रति स० ६** । पत्र स० २२ । ग्रा० १०½× ६½ इञ्च । ले० काल स० १९१९ ग्राषाढ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

७६२० प्रति स० ७ । पत्र स० १७ । ले०काल स० १६६५ आषाढ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १८६-३७८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७६२१ प्रति स० ८ । पत्र स० १७ । आ० ११½×५ इञ्च । ले० काल स० १७२१ । पूर्ण । वेष्टन स० १५६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७६२२. प्रति स० ६ । पत्र स० १५ । आ० १२× ५½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७६२३. प्रति स० १० । पत्र स० १६ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल सं० १७३१ × । पूर्ण । वेप्टन स० २७४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—झाडोल नगरे लिखापित ललितकीर्ति आचार्य ।

७६२४. प्रति सं० ११ । पत्र स० १४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २८० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७६२५ कर्म दहन पूजा— × । पत्र स० १२ । आ० ११¾×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८८० सावरण बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १५५ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७६२६. प्रति सं० २ । पत्र स० ६ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल स० १८२८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३५५ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

७६२७. प्रति सं० ३ । पत्र स० १२ । आ० १२×५¾ इञ्च । ले०काल स० १८६२ सावरण सुदी ६ । पूर्ण । वेप्टन स० १०२० । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७६२८. प्रति स० ४ । पत्र स० २३ । आ० १०½×६¾ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५३८ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७६२९. प्रति स० ५ । पत्र स० २३ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२२५ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—मूल्य ४॥ – । लिखा है ।

७६३० प्रति सं० ६ । पत्र स० १२ । आ० ११×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

७६३१. प्रति सं० ७ । पत्र स० १८ । आ० १२×४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० २१५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

७६३२. प्रति स० ८ । पत्र स० २२६ से २७० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—यशोनन्दि की पचपरमेष्ठी पूजा भी आगे दी गई है ।

७६३३ प्रति स० ६ । पत्र स० ११ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७६३४. प्रति स० ११ । पत्र स० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १८७/३४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७६३५. प्रति सं० १० । पत्र स० १७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८६/३३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सभवनाथ उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

सवत् १५८२ वर्षे आसो वदि ५ भूमे गुर्जरदेशे बीजापुर शुभस्थाने श्री शातिनाथ चैत्यालये श्री मूलसघे नदिसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनदिस्तत्पट्टे भ० श्री सकल कीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री भुवनकीर्त्ति तदाम्नाये भ० श्री ज्ञानभूषणस्तत्पट्टे भ०श्री विजयकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभ घन्द्रदेवास्तदाम्नाये चन्द्रावती नगरे नागद्रहा ज्ञातीय साह घाना भार्या वाछ सुत पडित राजा पठनार्थं ।

७६३६. प्रतिस० १२ । पत्रस० १७ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल स० १८१६ आषाढ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर ।

विशेष—महादास अग्रवाल ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

७६३७. प्रति स० १३ । पत्रस० २७ । आ० ११½×४¾ इन्च । ले०काल स० १८१३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मदिर करौली ।

७६३८. प्रतिस० १४ । पत्र स० १७ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल स० १८४१ । पूर्ण । वेष्टन स० १८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

७६३९ प्रतिसं० १५ । पत्र स० १७ । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी)

७६४०. प्रतिस० १६ । पत्र स० १६ । आ० ६×६ इन्च । ले०काल १६५० । पूर्ण । वेष्टन स० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

विशेष—नैणवा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

७६४१. कर्मदहन पूजा विधान— × । पत्रस० ३० । आ० १०×६½ इच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६३३ । पूर्ण । वेष्टन स० ८६/३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

७६४२ प्रतिस० २ । पत्र स० २७ । आ० १०×६½ इच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६०–३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

७६४३ कर्म निर्जरणी चतुर्दशी विधान— × । पत्र स० १०४ । आ० १०½×४¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल स० १६२८ । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

विशेष—सवत् १६२८ वर्षे ज्येष्ठ बुदी ५ शनौ श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्द-कुन्दाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनदिदेवास्तत्पट्टे भ० सकलकीर्तिस्तत्पट्टे भ० श्री भुवनकीर्त्तिदेवा स्तत्पट्टे श्री विजयकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्रस्तत्पट्टे भ० श्री सुमतिकीर्त्तिदेवास्तदाम्नाये गुरु श्री अभयचन्द्रस्त-शिष्य ब्र० श्री देवदास पठनार्थं पोमीना वास्तव्य हुवडज्ञातीय श्रे० वाघा भार्या वनादे । तयो सुत श्रे० गोविंद भार्या गुरादे । भ्राता गोपाल भार्या गगादे एतेषा मध्ये श्री गुरादे ......

७६४४ **कलशविधि**— × । पत्र स० ६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

७६४५. **कलशारोहण विधान**—× । पत्रस० १२ । आ० ८×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले०काल स० १९४८ । पूर्ण । वेष्टनस० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

विशेष—प० रतनलाल नेमीचन्द की पुस्तक है ।

७६४६. **कलशारोहण विधि**—× । पत्रस० १४ । आ०८×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३८६-१४६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

७६४७. **कल्याण मन्दिर पूजा—देवेन्द्रकीर्ति** । पत्रस० ६ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८९१ । पूर्ण । वेष्टनस० १०५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

विशेष—प० सदासुख ने जम्बू स्वामी चैत्यालय मे पूजा की थी ।

७६४८. **कल्याण मन्दिर पूजा**—× । पत्रस० १२ । आ० १० × ६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा र० काल × । ले० काल स० १९३८ । पूर्ण । वेष्टन स० ५३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डू गरपुर ।

७६४९. **कलिकुण्ड पूजा**—× । पत्रस० ३ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अजमेर भण्डार ।

७६५०. **कलिकुण्ड पूजा**—× । पत्र स० ६ । आ० १०×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

विशेष—पद्मावती पूजा भी दी हुई है ।

७६५१. **कलिकुण्ड पूजा**—× । पत्रस० ३ । आ० ९$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७६५२ **कलिकुण्ड पूजा**—× । पत्रस० २ । आ० १४×५ इञ्च । भाषा- सस्कृत । विषय-पूजा र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०४-५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियों का डू गरपुर ।

७६५३ **काजी व्रतोद्यापन—रत्नकीर्ति** । पत्र स० ४ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय पूजा । र०काल । ले०काल स० १८६८ आसोज बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन स० ५७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प० चिदानन्द ने लिखा था ।

७६५४. कजिकाव्रतोद्यापन—मुनि ललितकीर्ति । पत्र स० ६ । आ० १० × ४ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १७६२ अषाढ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ३८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० भ० जैन मन्दिर अजमेर ।

७६५५ प्रतिस० २ । पत्रस० ५ । आ० ११½×४¾ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ बू दी ।

विशेष—महाराज जगतसिंह के शासन काल मे सवाईमाधोपुर मे अमरचद कोटेवाले ने लिखा था ।

७६५६. कुण्डसिद्धि—× । पत्र स० ६ । आ० ११ × ५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बू दी ।

विशेष—मडप कुण्ड सिद्धि दी गयी है ।

७६५७. कोकिला व्रतोद्यापन— × । पत्रस० १२ । आ० ६ × ५ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल स० १७०४ । पूर्ण । वेष्टन स० २६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—गुटका न ६ मे है ।

७६५८. गणधरवलय पूजा—सकलकीर्ति । पत्र स० ४ । भाषा-सस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २-३१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

७६५९. प्रति स० २ । पत्रस० ४ । ले०काल स० १६७३ अषाढ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० ३-३१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी)

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६७३ वर्षे आषाढ वुदी ६ गुरौ श्री कोटशुभस्थाने श्री आदिनाथ चैत्यालये आचार्य श्री जयकीर्तिना स्वज्ञानवरणी कर्मक्षयार्थ स्वहस्ताभ्या लिखितेय पूजा । श्री हरखाप्रसादत् । ब्र० श्री स्तवराजस्येद ।

७६६०. प्रति स० ३ । पत्रस० ६ । आ० १२ × ६ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७२० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

७६६१ प्रति स० ४ । पत्रस० १२ । आ० १० × ४ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

७६६२ गणधरवलय पूजा—× । पत्र स० ५ । आ० १० × ४½ इ च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३०१-११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

७६६३. गणधरवलय पूजा × । पत्रस० ६ । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १/३२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७६६४. गणधरवलय पूजा विधान— × । पत्रस० १० । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय- पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८८७ श्रावण बुदी ५ । वेष्टनस० १७ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक)

७६६५ गिरनार पूजा—हजारीमल । पत्र स० ४३ । आ० ११½×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन म० ११४ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७६६६. प्रतिसं० २ । पत्र स० ८८ । आ० १०×६½ इञ्च । ले० काल स० १९३७ ज्येष्ठ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २३ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

विशेष— हजारीमल के पिता का नाम हरिकिशन था । वे लश्कर के रहने वाले थे । वहा तेरहपथ सैली थी । दौलतराम की सहाय से उन्हे ज्ञान प्राप्त हुआ था । वे वहा से सायपुर आकर रहने लगे ये गोयल गोत्रीय अग्रवाल थे ।

७६६७. प्रतिस० ३ । पत्रस० १२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७३ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७६६८. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ४२ । आ० १०½×७½ इञ्च । ले० काल स० १९३२ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १९ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बू दी ।

७६६९. गुरावली पूजा—शुभचन्द्र । पत्रस० ३ । आ० १० × ४ इ च । भापा-सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९१ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७६७०. गुरावली समुच्चय पूजा— × । पत्र स० २ । आ० १२ × ५½ इ च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक)

७६७१. गुर्वावली (चौसठ ऋद्धि) पूजा—स्वरूपचन्द विलाला । पत्रस० ३० । आ० ९½×५½ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल स० १९१० । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १२४ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन पचायती मन्दिर वयाना ।

विशेष— अन्तिम पत्र नही है ।

७६७२. प्रतिस० २ । पत्र स० ४५ । आ० १०×६½ इञ्च । ले०काल स० १९२३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन पचायती मदिर वयाना ।

७६७३ गुरु जयमाल—ब्र० जिनदास । पत्रस० ४ । आ० १०×५ इञ्च । भापा—हिन्दो पद्य । विपय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १९७-८० । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

विशेष— हिन्दी गद्य मे अर्थ भी दिया है ।

७६७४ गोरस विधि— × । पत्र स० २ । आ० १०¾×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय—विधि विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०२ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बू दी ।

७६७५ गृहशांति विधि—वर्द्धमान सूरि । पत्रस० १२ । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले० काल स० १८५६ । पूर्ण । वेष्टनस० ६७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७६७६. क्षणवति क्षेत्रपाल पूजा —विश्वसेन । पत्र स० ८ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८६१ मगसिर सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० २१७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर राजमहल (टोक)

७६७७. क्षेत्रपाल पूजा— × । पत्रस० १३ । आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८५१ आसोज सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० ४८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

७६७८. प्रति स० २ । पत्रस० ५ । आ० १०×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

७६७९. प्रति स० ३ । पत्र स० ११ । आ० १०×६ इञ्च । ले० काल स० १९८४ । पूर्ण । वेष्टनस० ३४४-१३२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

७६८० प्रति स० ४ । पत्रस० २ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी)

७६८१ चतुर्दशी व्रतोद्यापन पूजा—विद्यानदि । पत्रस० १२ । आ० ११$\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

प्रारभ—

सकलभुवनपूज्य वर्द्धमानजिनेन्द्र ।
सुरपतिकृतसेव त प्रणम्यादरेण ।।
विमलव्रतचतुर्दश्या शुभोद्योतन च ।
भविकजनसुखार्थ पचमस्या प्रवश्ये ।।१।।

अन्तिम—

शास्त्राब्धे पारगामी परममतिमान मडलाचार्यमुख्य ।
श्रीविद्यनन्दीनामानिखिल गुणनिधि पूर्णमूर्तिप्रसिद्ध ।।
तद्दिष्टया सप्रधारी विबुधमरो हर्ष सदानदत्रो ।
साक्षोसै राम नामा विधिरमुमकरोत् पूजनाया विधे ।
श्रीजयसिहभूपस्य मत्री मुख्यो गुणी सताम् ।
श्रावकस्ताराचद्राख्यस्तेनेद कृत समुद्धत ।।२।।
नर वसर समुद्दिश्य पूर्वशास्त्रानुवृत्ति ।
व्रतोद्योतनमेतेन कारित पुण्यहेतवे ।।३।।

७६८२. प्रतिसं० २ । पत्र स० ११ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३४६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

७६८३. **प्रतिसं० ३** । पत्र स० १० । ले० काल स० १८०० भादवा वुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १३५० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७६८४. **चतुर्विशांति जिन पूजा**—× । पत्र स० ११५ । आ० १२ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १९४८ । पूर्ण । वेष्टनस० १६२४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७६८५. **प्रतिसं० २** । पत्र स० २८ । आ० १३ × ६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १९४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७६८६. **चतुर्विशति जिन शासन देवी पूजा**— × । पत्रस० ३–६ । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३८२/३७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७६८७. **चदनषष्ठीव्रत पूजा—विजयकीर्त्ति** । पत्र स० ४ । आ० १२ × ४½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० १४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, वूदी ।

७६८८ **चन्दनषष्ठीपूजा—प० चोखचन्द** । पत्र स० ६ । आ० १२ × ५½ इच । भाषा—सस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७६८९. **चन्दनषष्टीव्रत पूजा**— × । पत्र स० ८ । आ० १२½ × ६ इच । भाषा—सस्कृत । विपय—पूजा । र०कात × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

७६९० **चमत्कार पूजा—राजकुमार** । पत्रस० ५ । आ० १२¾ × ५¼ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विपय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १९९६ । पूर्ण । वेष्टन स० ५२९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—चमत्कार क्षेत्र का परिचय भी आगे के दो पत्रो मे दिया गया है ।

७६९१. **प्रतिस० २** । पत्र स० ३ । आ० १२ × ६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विपय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १९६४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७६९२. **चमत्कार पूजा**— × । पत्रस० २ । आ० ९×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी वूदी ।

७६९३. **चारित्र शुद्धि पूजा—श्रीभूषण** । पत्र स० ९४ । आ० १०½ × ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय पूजा विधान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी वूदी

७६९४. **प्रति स० २** । पत्रस० ११४ । ले०काल स० १८१६ माघ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—दक्षिण स्थित देवागिरि मे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय मे ग्रन्थ रचना की गई थी। पाढे लालचन्द ने लिपि कराकर भरतपुर के मन्दिर मे रखी गयी थी।

७६६५. चारित्र शुद्धि विधान—भ०शुभचन्द्र। पत्रस० ५०। आ० ५½×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—पूजा। र०काल ×। ले०काल स० १६०३। पूर्ण। वेष्टन स० ८२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अजमेर भण्डार।

विशेष—गुटका मे सग्रहीत है।

७६६६. प्रति स० २। पत्रस० ३२। आ० ६¾×४½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ४२५। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७६६७. चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा—शुभचन्द्र। पत्रस० २–१४। आ० ११ × ५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० १५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी।

७६६८. प्रतिसं० २। पत्र स० ७। आ० १० × ५ इञ्च। ले० काल स० १६०८। पूर्ण। वेष्टन स० ५०२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

प्रशस्ति—सवत् १६०८ वर्षे चैत्रमासे कृष्णपक्षे ५ दिने वाग्वरदेशे सिरपुरवास्तव्ये श्री आदिनाथ चैत्यालये लिखित श्री मूलसघे भ० विजयकीर्त्तिस्तत्पट्टे भ० श्री शुभचद्रदेवा तत् शिष्य प० सूरदासेन लिखापित पठनार्थ आचार्य मेरूकीर्ति।

७६६९. प्रतिसं० ३। पत्रस० ११। आ० १०×५½ इञ्च। ले० काल स० १८६१ सावन सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० १०२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी।

७७००. चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा – × । पत्र स० ९। आ० ११ × ५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विपय- पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १२०५। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

७७०१ चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा— ×। पत्रस० ११। आ० १०×४½ इच। भाषा-सस्कृत। विपय—पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

७७०२. प्रति स० २। पत्र स० २०। आ० ८¾×४½इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सोगानी मदिर करौली।

अन्तिम पत्र नही है।

७७०३. चतुर्विशति पूजा—भ० शुभचन्द्र। पत्रस० ३–३९। आ० १०×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विपय-पूजा। र०काल ×। ले०काल १६६०। अपूर्ण। वेष्टन स० ३०३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १६६० वर्षे आपाढ सुदी ४ गुरुवारे श्री मूलसघे भट्टारक श्री वादिभूपण गुरुपदेशात् तत् शिष्य ब्र० श्री वर्द्धमानकेन लिखापित कर्मक्षयार्थं।

७७०४. **प्रतिसं० २** । पत्र स० ५८ । ले० काल स० १६४० कार्तिक सुदी ३ पूर्ण । वेष्टन स० ७८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

७७०५ **चतुर्विंशति जिन पूजा**—×। पत्रस० ५-५८ । ग्रा० ६×७ इ च । भापा सस्कृत। विपय पूजा । र० काल × । ले० कालस० १८६७ । अपूर्ण । वेष्टनस० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक)

७७०६. **चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजा**— × । पत्रस० ४७ । ग्रा० ११½×५½ इञ्च । भापा—सस्कृत । विपय—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८६६ आपाढ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल(टोक)

७७०७. **प्रतिसं० २**। पत्रस० ४६ । ग्रा० १०½×५ इञ्च । ले०काल × । वेप्टन स० २७३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७७०८. **चतुर्विंशति जिन पूजा** — ×। पत्रस० ५६ । ग्रा० १०½ × ४½ इञ्च । भापा सस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल स० १६३४ ज्येष्ठ बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बू दी ।

७७०९. **चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजा**— × । पत्रस० ६८ । ग्रा० १०½ × ४ इञ्च । भापा—सस्कृत । विपय—पूजा । र०काल ×। ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बू दी ।

७७१० **चतुर्विंशति जिन पूजा** × । पत्र स० ४१ । ग्रा० १० × ५ इञ्च । भाषा-स स्कृत । पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेप्टन स० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—४१ से आगे पत्र नही है ।

७७११. **प्रतिसं० २** । पत्रस० ४४ । ग्रा० १० × ५ इञ्च । ले०काल स० १६५७ । पूर्ण । वेष्टन स० १६० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७७१२. **चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजा**—× । पत्रस० १३७ । ग्रा० ८½ × ६½ इञ्च । भापा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक)

७७१३. **चतुर्विंशति जिन पूजा**— × । पत्रस० ५० । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

७७१४. **चतुर्विंशति पच कल्याणक समुच्चयोद्यापन विधि—ब्र० गोपाल** । पत्रस० १३ । ग्रा० ११×४¾ इञ्च । भापा-सस्कृत । विपय—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १६६५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—इति ब्रह्म भीमाग्रहात्ब्रह्म गोपाल कृत चतुर्शिति पच कल्याणक समुच्चयो द्यापन विधि ।

७७१५ **चतुर्दशी प्रति मासोपवास पूजा**— × । पत्र स० १८ । ग्रा० ११ × ५ इञ्च । भापा—सस्कृत । विपय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बू दी ।

७७१६ **चौबीस तीर्थंकराष्टक**—× । पत्रस० २० । आ० ६ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । लि०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूदी ।

७७१७ **चौबीस तीर्थंकर पूजा—बख्तावरलाल** । पत्र स० ८६ । आ० १२½ × ७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल स० १८६२ फागुण बुदी ७ । ले० काल स० १६२३ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

७७१८. **प्रति सं० २** । पत्र स० ६७ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल १६०३ । पूर्ण । वेष्टन स० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर चौधरियान मालपुरा (टोक)

७७१६. **प्रति स० ३** । पत्र स० ५७ । ले० काल स० १६५६ । पूर्ण । वेष्टन स० ८५ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—प्रतिलिपि किशोरीलाल भरतपुर वाले ने कराई थी । तुलसीराम जलालपुर वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

७७२०. **प्रति स० ४** । पत्र स० ६० । आ० ८½×६½ इच । ले०काल स० १६५७ वैशाख बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

७७२१ **चौबीस महाराज पूजन—बुन्नीलाल** । पत्रस० ४७ । भाषा-हिन्दी । विषय पूजा । र०काल स० १८२७ । ले०काल स० १६१५ । अपूर्ण । वेष्टनस० २६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

७७२२. **प्रतिस० २** । पत्रस० १०२ । आ० ११ × ५ इञ्च । ले०काल स० १६३० । पूर्ण । वेष्टन स० १२३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर वडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—प्रति नवीन है ।

७७२३. **प्रतिस० ३** । पत्र स० ४६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

७७२४ **प्रतिस० ४** । पत्र स० ६५ । आ० १०×६½ इञ्च । ले०काल स० १६३५ । पूर्ण । वेष्टन स० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—चुन्नीलाल करौली के रहने वाल थे । पूजा करौली मे मदनगोपाल जी के शासन काल मे रची गई थी । प्रतिलिपि कोट मे हुई थी ।

७७२५ **प्रतिस० ५** । पत्र स० ६२ । ले०काल स० १६१७ । पूर्ण । वेष्टन स० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

७७२६ **चौबीस तीर्थंकर पूजा—जवाहरलाल** । पत्र० स० ४८ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल स० १६६२ । ले० काल स० १६६२ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

७७२७. चौबीस-तीर्थंकर पूजा—देवीदास × । पत्र स० ४३ से ६३ । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल स० १८२१ सावन सुदी १ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६-२४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर टोडारायसिंह (टोंक)

अन्तिम—

समत अष्टादस धरी जा उपर इकईस ।
सावन सुदि परिवा सु रविवासर धग उगीस ।।
वासव धरा उगीस सगाम नाम सुदु गौडो ।
जैनी जन वस वास ग्रौंडछे सोपुर ठोडो ।।
सावथ सिव सु राज आज परजासवथ वतु ।
जह निरभै करि रची देव पूजा वरि सवतु ।।१।।
गोलारारे जानियौ वस खरौ वाहीत ।
सोनविपार मु वैंक तम् पुनि कासिल्ल मुगोत ।
पुनि कामल्ल सुगोत सीक-सीक हारा खेरौ ।।
देस भदावर माँहि जो मु वरन्यौ तिन्हि केरौ ।
केलि गामके वसनहार मनोजु सुभारे ।।
कवि देवी सुपुत्र दुगुडै गोलागारे ।
सेवत श्री निग्गथ गुर अरु श्री अरिहत देव ।।
पढत सुनत सिद्धान्त श्रुत सदा सकल स्वमेव ।
तुक अक्षर घट बढ कहू अरु अनर्थ सुहोइ ।
अल्प कवि पर कर छिमा धर लीजै बुधि सोइ ।।

इति वर्तमान चौवीसी जिनपूजा देवीदास कृत समाप्त ।।

७७२८ चौबीस तीर्थंकर पूजा—मनरगलाल । पत्र स० ४२ । आ० १२½ × ८½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय पूजा । र० काल स० १८८७ मगसिर सुदी १० । ले०काल स० १६६४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७७२६ प्रति स० २ । पत्रस० ५० । आ० १२ × ८½ इञ्च । ले०काल स० १६६५ । पूर्ण । वेष्टन स०५२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

७७३०. प्रतिस० ३ । पत्र स० ४५ । ले० काल स० १६०८ । पूर्ण । वेष्टन स० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर हुण्डावालो का डीग ।

७७३१ चोबीसा तीर्थकर पूजा—रामचन्द्र । पत्रस० ८१ । आ० ११ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०कारा × । ले०काल स० १८७३ चैत सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १०२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

विशेष—फेरोजपुर के जयकृष्ण ने लिखवाया था । इसकी दो प्रतिया और हैं ।

७७३२ प्रति स० २ । पत्र स० ३२ । आ० ११ × ५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७७३३. **प्रति स० ३** । पत्रस० ७५ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७७३४ **प्रतिसं० ४** । पत्र स० ५४ । आ० १०½×६½ इञ्च । । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७७३५. **प्रतिस० ५** । पत्रस० ६६ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल स० १८१६ मगसिर सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर ।

विशेष—महादास ने प्रतिलिपि की थी ।

७७३६ **प्रतिसं० ६** । पत्र स० ४७ । ले० काल स० १८८८ । पूर्ण । वेष्टन स० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७७३७. **प्रतिस० ७** । पत्र स० १६६ । ले०काल स० १८८८ । पूर्ण । वेष्टन स० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—स० १६६५ मे लिखाकर इस ग्र थ को चढाया था ।

७७३८ **चौबीस महारज पूजन—हीरालाल** । पत्रस० ३५ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७७३९. **चौबस तीर्थंकर पूजा—रामचन्द्र** । पत्रस० ७७ । आ० ११×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन स० २०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर नागदी बू दी ।

७७४० **प्रति स० २** । पत्रस० ६२ । आ० १२½×६½ इञ्च । ले० काल स० १६५५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मदिर कामा

७७४१ **प्रतिस० ३** । पत्रस० ५१ । आ० ११×६½ इञ्च । ले०काल स० १६११ । पूर्ण । वेष्टन स० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बू दी ।

७७४२ **प्रतिसं० ४** । पत्र स० ७३ । आ० १०×७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७७४३. **प्रतिस० ५** । पत्रस० १३३ । आ० ११×६½ इञ्च । ले०काल स० १८२८ ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० ३६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी (कामा)

७७४४ **प्रतिसं० ६** । पत्रस० १०-६० । ले०काल । अपूर्ण । वेष्टनस० १६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

७७४५ **प्रतिस० ७** । पत्रस० ८७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन बडा पचायती मन्दिर डीग ।

७७४६. **प्रतिसं० ८** । पत्रस० ८० । आ० ६×६½ इञ्च । ले०काल ×। अपूर्ण । वेष्टनस० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—प्रारम्भ का पत्र नही है ।

७७४७ **प्रतिसं० ६ ।** पत्रस० १२० । आ० ७½×६½ इञ्च । ले०काल स० १६१३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—डीग मे प्रतिलिपि हुई थी ।

७७४८ **प्रति स० १० ।** पत्रस० ८६ । आ० ८½×७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष – गुटका जैसा आकार है ।

७७४६. **प्रतिसं० ११ ।** पत्रस० ४१ । आ० १२×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष – गुटकाकार हैं ।

७७५०. **प्रतिसं० १२ ।** पत्र स० ४४ । आ० १०×६½ इञ्च । ले० काल स० १६०४ । पूर्ण । वेष्टन स० १५२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मदिर ।

विशेष—चार प्रतिया और हैं ।

७७५१. **प्रति स० १३ ।** पत्रस० ८४ । आ० १३ × ७ इञ्च । ले०काल स० १६४६ । पूर्ण । वेष्टनस० ४५ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

७७५२. **प्रतिस० १४ ।** पत्र स० ६१ । ले० काल स० १८६६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

विशेष—ब्राह्मण भैरूराम उणियारा वाले ने चर्तुर्भु जजी के मन्दिर के सामनेवाले मकान मे प्रतिलिपि की थी । साहजी अमोदरामजी अग्रवाल कासल गोत्रीय ने प्रतिलिपि करायी थी ।

७७५३. **प्रतिसं० १५ ।** पत्रस० १४६ । आ० ८½×६ इच । ले०काल स० १८२५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोक)

विशेष—माहमल्ल के पुत्र कु वर मशाराम नगर निवासी ने कामवन मे प्रतिलिपि कराई थी ।

७७५४. **प्रतिसं० १६ ।** पत्रस० १०३ । आ० ८½ × ५¾ इञ्च । ले०काल स० १८८४ सावन बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनस० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर मालपुरा (टोक)

७७५५. **प्रतिसं० १७ ।** पत्रस० ४७ । आ० १०×६ इच । ले०काल स० १६२४ । पूर्ण । वेष्टन स० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर नैणवा

७७५६ **प्रतिसं० १८ ।** पत्र स० १२ । आ० १०×६½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

७७५७. **प्रतिसं० १६ ।** पत्र स० १५३ । आ० ७×५½ इञ्च । ले० काल स० १८२५ । पूर्ण । वेष्टन स० १८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

७७५८. **प्रति स० २० ।** पत्र स० १०४ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल स० १६०५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी)

विशेष—इन्द्रगढ मे प्रतिलिपि हुई थी ।

७७५६. **प्रति सं० २१ ।** पत्र स० ७१ । ले० काल स० १८६६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी)

विशेष—देवेन्द्र विमल ने कुन्दनपुर मे प्रतिलिपि कराई थी ।

७७६० **प्रति स० २२** । पत्रस० ८८ । ग्रा० ९×७ इञ्च । ले० काल स० १९७१ । पूर्ण । वेष्टन स० २५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

७७६१. **प्रतिस० २३** । पत्रस० ५६ । ग्रा० १३×६¾ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४७/८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दगढ (कोटा)

७७६२ **प्रतिस० २४** । पत्र स० ६१ । ग्रा० ११½×५½ इञ्च । ले०काल स० १९६० ।पूर्ण । वेष्टन स० १९६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल पचायती मन्दिर ग्रलवर ।

विशेष—२ प्रतिया ग्रोर हैं जिनकी पत्र स० क्रमश ६० ग्रोर ६१ है ।

७७६३ **प्रतिस० २५** । । पत्र स० ७८ । ग्रा० ९×६ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोक)

७७६४. **प्रतिस० २६** । पत्र स० ५४ । ग्रा० ९½× ६½ इञ्च । ले०काल स० १९१२ मगसिर बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन स० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोट्यो का नैणवा ।

विशेष—लोचनपुर नैणवा मे प्रतिलिपि की गयी थी ।

७७६५ **प्रतिस० २७** । पत्र स० ५० । ग्रा० १०×६½ इञ्च । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वेप्टन स० ५९ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

७७६६. **प्रतिस० २८** । पत्र स० ७९ । ग्रा० ११×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बघेर वालो का ग्रावा (उणियारा) ।

७७६७. **प्रतिस० २९** । पत्र स० ८६ । ले०काल स० १९०१ । पूर्ण । वेष्टन स० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बघेरवालो का ग्रावा ।

विशेष—ग्रावा मे फतेसिंह जी के शासन काल मे मोतीराम के पुत्र राधेलाल तत्पुत्र कान्हा नोरखड्या बघेरवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

७७६८. **प्रतिस० ३०** । पत्र स० ६५ । ग्रा०—१०×५ इञ्च । ले०काल-स० १८९४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मंदिर खण्डेलवालो का ग्रावा (उणियारा)

७७६९. **प्रतिस० ३१** । पत्र स०-९० । ग्रा० ९×६¾ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स—०१४५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

७७७०. **प्रति स० ३२** । पत्रस० ७१ । ग्रा० ११⅞×५½ इञ्च । ले० काल स०-१९२६ कार्तिक सुदी १३ । पूर्ण । वेप्टन स० २४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७७७१ **प्रति स० ३३** । पत्र स० ८० । ग्रा० ११×५⅞ इञ्च । ले० काल स०–१९५३ । पूर्ण । वेष्टन स० २५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७७७२ **प्रतिस० ३४** । पत्रस० ७३ । ग्रा० १२⅞×५⅞ इञ्च । ले०काल स० १९९८ । पूर्ण । वेष्टनस० २५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७७७३. **प्रतिस० ३५** । पत्रस० ७५ । ग्रा० १०½ × ५ इञ्च । ले० काल स० × । पूर्ण । वेष्टन स० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन जैन मन्दिर राजमहल (टौंक) ।

७७७४. **प्रतिसं० ३५** । पत्र स० ७६ । आ० ६×७ इञ्च । ले०काल स १८२१ आसोज सुदी १ अपूर्ण वेष्टनस०—१५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विशेष—प्रथम पत्र नही है ।

७७७५. **प्रतिसं० ३६** । पत्रस० ५२ । आ० १२×६ इञ्च । ले०काल स० १६०७ अपाढ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० ६६/११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

७७७६. **प्रतिसं० ३७** । पत्र स० ४६ । आ० ११½×७ इञ्च । ले० काल स० १६०५ मगसिर बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ११५-५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—वैष्णव रामप्रसाद ने तक्षकपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

७७७७ **प्रतिसं० ३८** । । पत्रस० ४६ । आ० १२½×६ इच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स०—२८/१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

७७७८. **प्रति स० ३६** । पत्र स० ६६ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

७७७६. **प्रति स० ४०** । पत्रस० ७० । आ० १२×६ इञ्च । ले० काल स० १८७४ ।पूर्ण । वेष्टन स०—१८/५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनमन्दिर भादवा (राज०)

७७८०. **प्रति स० ४१** । पत्र स० ६८ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७-५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर भादवा (राज०) ।

७७८१· **प्रति स० ४२** । पत्रस० ८१ । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३३-३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

७७८२ **प्रति स० ४३** । पत्र स० ६८ । आ० ६×६ इञ्च । ले०काल स० १८८२ चैत सुदी २ । पूर्ण । वेप्टन स० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा ।

विशेप—पत्र ६३ वें से आगे अन्य पूजाए भी हैं ।

७७८३ **प्रतिसं० ४४** । पत्रस० ६१ । आ० ८½×५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा ।

७७८४. **प्रतिसं० ४५** । पत्र स० १०६ । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल स० १८६० आपाढ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—पत्र स० ६० से १०६ तक चौवीस तीर्थंकरो की विनती है ।

७७८५ **प्रतिसं० ४६** । पत्रस० ५६ । आ० ६×६ इच । ले० काल स० १६१४ पौष सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० ४१-७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

७७८६. **प्रतिसं० ४७** । पत्रस० ६१ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल स० १८५१ वैशाख सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ४४-८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—दौसा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

७७८७ **प्रतिसं० ४८** । पत्र स० ७५ । आ० ८½×६ इञ्च । ले० काल स० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन स० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—स्योवक्स ने प्रतिलिपि की थी ।

७७८८. **प्रतिसं० ४६** । पत्र स० ८५ । आ० १०½×६ इञ्च । ले०काल स० १९०८ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—एक प्रति और अपूर्ण है ।

७७८९. **चौबीस तीर्थंकर पूजा—श्रीलाल पाटनी** । पत्रस० ५७ । आ० १०½×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । र०काल स० १६७८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

७७९०. **चौबीस तीर्थंकर पूजा वृन्दावन** । पत्रस० ८२ । आ० १०×५¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल स० १८४७ । ले०काल १६२६ भादवा सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ११५४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७७९१. **प्रतिसं० २** । पत्रस० ६६ । आ० ११½×६¾ इञ्च । ले०काल स० १८५५ । पूर्ण । वेष्टनस० ११० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मदिर उदयपुर ।

७७९२. **प्रतिस० ३** । पत्र स० ८४ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४५/१०५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा)

७७९३. **प्रति स० ४** । पत्र स० १०१ । आ० १२×५ इञ्च । । ले० काल स० १६३० । पूर्ण । वेष्टन स० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वडा वीसपथी दौसा ।

७७९४. **प्रति स० ५** । पत्र स० ७४ । आ० ६×६ इञ्च । ले०काल स० १६०७ वैशाख सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० २२ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोक)

७७९५. **प्रति स० ६** । पत्र स० ६४ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक)

विशेष—अन्तिम पत्र नही हैं ।

७७९६ **प्रतिस० ७** । पत्र स० १८१ । ले० काल स० १८९५ । पूर्ण । वेष्टन स० १३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—इसकी ४ प्रतिया और है ।

७७९७ **प्रतिस० ८** । पत्रस० ८५ । आ० १०×५½ इञ्च । ले०काल स० १६१३ चैत बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

७७९८. **प्रतिस० ९** । पत्रस० ४७ । आ० १२×८ इञ्च । ले०काल स० १६८३ प्र० चैत्र सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० १७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

७७९९ **प्रतिस० १०** । पत्रस० १०८ । आ० १२¾×८ इञ्च । ले०काल स० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन स० १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—एक प्रति और है ।

७८००. **प्रतिसं० ११** । पत्र स० ७७ । आ० १२×६ इञ्च । ले०काल स० १६१२ । पूर्ण । वेष्टन स० ८-५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

विशेय—इसकी दो प्रतिया और हैं।

प्रशस्ति—सवत् १६१२ माह सुदी १३ लिखापित मवौराय जैचन्द गैवीलाल श्री डूगरपरना नाखि श्री शागमपुर मे हस्ते नौगमी अ पुनमचन्द तथा गादि पूनमचन्द लिखित समादि आगमेरचन्द ।

७८०१. **प्रतिसं० १२** । पत्र स० १०९ । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल स० १६२१ । पूर्ण । वेष्टन स० २८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, चौगान बूदी ।

७८०२. **प्रति सं० १३** । पत्रस० ५३ । आ० १०×६½ इञ्च । ले० काल स० १६४१ । पूर्ण । वेष्टन स० १५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष—नैणवा मे प्रतिलिपि हुई थी । साह पन्नालाल वैद बूदीवाले ने अभिनदनजी के मन्दिर मे ग्रथ चढाया था ।

७८०३. **प्रति सं० १४** । पत्रस० ६२ । आ० १३×७½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७८०४. **प्रति सं० १५** । पत्र स० ६१ । आ० १३×८ इञ्च । ले० काल स० १६६४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५५६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७८०५ **प्रति स० १६** । पत्रस० ३७ । आ० १२½×७½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेय—मल्लिनाथ तीर्थंकर की पूजा तक है । एक प्रति और है ।

७८०६ **प्रतिसं० १७** । पत्र स० ६२ । आ० १०×७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष – दो प्रतिया और हैं ।

७८०७ **प्रतिसं० १८** । पत्रस० १०१ । आ० ११×६ इञ्च । ले० काल स० १६१५ । पूर्ण । वेष्टनस० ३६४ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी)

७८०८. **प्रति सं० १६** । पत्रस० ५४ । आ० १०½×६½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेप्टन स० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बघेरवालो का आवा (उणियारा)

७८०६ **प्रति सं २०** । पत्रस० ५२ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

विशेष—महावीर स्वामी की जयमाल नही है ।

७८१०. **प्रतिसं० २१** । पत्र स० ५६ । आ० ११×६ इच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

७८११. **प्रति सं० २२** । पत्रस० १०१ । आ० १३×५½ इच । ले० काल स० १६६४ चैत्र सुदी १५ । पूर्ण । वेप्टन स० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष—सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

७८१२. **प्रति सं० २३** । पत्रस० ४० । आ० १२½×८ इञ्च । ले० काल स० १६०० । पूर्ण । वेष्टन ३३/५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर भादवा (राज०)

७८१३. **प्रति स० २४** । पत्र स० ५६ । आ० १२×५½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

विशेष—एक प्रति और है ।

७८१४. **प्रति स० २५** । पत्रस० ५७ । आ० ११¾×६½ इञ्च । ले०काल स० १८८१ सावन बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १५ ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

७८१५ **प्रतिसं० २६** । पत्रस० ४६ । आ० १३×६ इञ्च । ले० काल स० १९११ पौष सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० २६/३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

विशेष—एक प्रति और है ।

७८१६. **प्रति स० २७** । पत्र स० ६८ । आ० ११×७ इञ्च । ले० काल स० १९६३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

विशेष—कीमत ३) रुपया बघेरवालो का मन्दिर स० १९६४ ।

७८१७. **प्रति स० २८** । पत्रस० ७१ । आ० १०×६½ इञ्च । ले०काल स० १९३३ काती सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

विशेष—एक प्रति और है ।

७८१८. **प्रतिस० २९** । पत्रस० ४४ । आ० १३½×७¾ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)

७८१९. **प्रति सं० ३०** । पत्रस० ५८ । आ० १२×६½ इञ्च । ले०काल स० १८९७ । वेष्टनस० ६/३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायत मन्दिर दूनी (टोक)

विशेष—श्री हजारीलाल कटारा ने दशलक्षण व्रतोद्यापन के उपलक्ष मे स० १९४३ भादवा सुदी १४ को दूनी के मदिर मे चढाया था ।

७८२० **प्रतिस० ३१** । पत्र स० ७७ । आ० ११×६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

७८२१ **प्रतिस० ३२**। पत्रस० ५९ । आ० १० ×६½ इञ्च । ले०काल स० १९२१ फागुन बुदी ३ । अपूर्ण । वेष्टनस० १०७ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

विशेष—५५ से ५८ तक पत्र नही है ।

७८२२ **चौबोसतोर्थ कर पूजा —सेवग** । पत्रस० ७१ । आ० १०×४¾ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १७७५ । पूर्ण । वेष्टन स० १२६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७८२३. **प्रतिस० २** । पत्र स० ४९ । आ० ९½ × ६ इञ्च । ले०काल स० १८९१ । पूर्ण । वेष्टन स० १६८/७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडिया का डूगरपुर ।

७८२४ **चौबीस तीर्थंकर पूजा – सेवाराम** । पत्रस० ४५ । आ० १०¾ × ५ इच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय-पूजा । र०काल स० १८५४ मगसिर बुदी ६ । ले०काल स० १८५४ पौष सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—

तिनप्रभु को सेवगजु हो वखतराम इहनाम ।
साहगोत्र श्रावकसुधी गुण मडित कवि राम ।।
तिन मिथ्यात खडन रच्यो लखि जिनमत के ग्र थ ।
बुध विलास दूजो रच्यो मुक्ति पुरी के पथ ।
तिन को लघु सुत जानियो सेवागराम सुनाम ।
लखि पूजन के ग्र थ वहु रच्यो ग्र थ अभिराम ।
ज्येष्ठ भ्रात मेरो कवि जीवनराम मुजानि ।
प्रभु की स्तुति के पद रचे महामक्तिवर आनि ।
तामैं नाम धरयो जु है जगजीवन गुण खानि ।
तिन की पाय सहाय को कियो ग्र थ यह जानि ।।

एक प्रति और है ।

७८२५ प्रति स० २ । पत्र स० ६२ । आ० ११ × ४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७८२६. प्रतिस० ३ । पत्र स० ६५ । आ० ११ × ४½ इञ्च । ले०काल स० १६१७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३८ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

७८२७ प्रतिस० ४ । पत्रस० ११ । आ० ६½ × ४ इञ्च । ले०काल स० १८८४ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ३०-८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वडा वीस पथी दौसा ।

विशेष—हुकमचन्द विलाला निवाई वालो ने प्रतिलिपि की थी ।

७८२८ प्रतिस० ५ । पत्रस० ४२ । आ० १२ × ५½ इञ्च । ले०काल स० १८६२ भादवा बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० ४०-८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वडा बीसपथी दौसा ।

विशेष - चिमनराम तेरापथी ने प्रतिलिपि की थी ।

७८२९. प्रतिस० ६ । पत्र स० ५६ । आ० १०½ × ५ इञ्च । ले० काल स० १९०१ । पूर्ण । वेष्टन स० १८ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

७८३० प्रति स० ७ । पत्रस० ६० । आ० ११ × ४ इञ्च । ले० काल स० १९२८ । पूर्ण । वेष्टनस० ६८ । **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन मदिर राजमहल (टोंक)

विशेष—प० दिलसुख ने राजमहल मे प्रतिलिपि की थी । तेलो मेलया श्री शिवचन्द जी चैत बुदी ७ स० १९२२ के चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे चढाया था ।

७८३१ प्रतिस० ८ । पत्र स० ५२ । आ० ११ × ७½ इञ्च । ले०काल स० १९५८ । पूर्ण । वेष्टन स० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

विशेष—बू दी मे प्रतिलिपि हुई थी।

७८३२ प्रतिस० ९ । पत्र स० ५३। आ० ११½ × ५ इञ्च । ले० काल स० १९२२ । पूर्ण । वेष्टन स० १५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

७८३३ **प्रतिसं० १०** । पत्रस० ६४ । आ० १०३/४×५ इच । ले० काल स० १८५५ । पूर्ण । वेप्टन स० २४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

७८३४. **प्रतिस० ११** । पत्रस० ५२ । आ० ११×५१/२ इञ्च । ले०काल स० १८५६ आषाढ बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस०२५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७८३५. **प्रतिस० १२** । पत्रस० ४३ । आ० १०१/२×७ इञ्च । ले० काल स० १८२६ माह सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनस० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ बूदी ।

७८३६ **प्रति स० १३** । पत्र स० ४३ । आ० ११×७१/२ इञ्च । ले० काल स० १९५७ । पूर्ण । वेप्टन स० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

७८३७. **प्रतिसं० १४** । पत्र स० ६-५५ । आ० १२×५१/२ इच । ले०काल स० १८६० । पूर्ण । वेष्टन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान, बूदी ।

७८३८. **प्रति स० १५** । पत्र स० ३७ । आ० १०×६१/२ इञ्च । ले० काल स० १९५७ । पूर्ण । वेष्टनस० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूदी ।

७८३९. **प्रतिसं० १६** । पत्र स० ५६ । आ० १११/२×५१/२ इञ्च । ले०काल स० १८६३ आसोज सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ६३-८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

७८४० **प्रति स० १७** । पत्र स० ८४ । आ० ८१/२×६१/२ इञ्च । ले०काल स० १९०३ माह सुदी ११ । पूर्ण । वेप्टन स० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—सौगाणी मदिर करौली ।

७८४१. **चौबीस तीर्थंकर पूजा—हीरालाल** । पत्रस० ८३ । आ० १०×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल स० १९२६ चैत्र सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १८५ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल पचायती मदिर अलवर ।

७८४२. **चौबीस तीर्थंकरो के पच कल्याणक**—× । पत्र स० १६ । आ० ८×४१/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३ । **प्राप्ति स्थान**—जैन मन्दिर वैर ।

७८४३. **चौबीस तीर्थंकर पंच कल्याणक**—× । पत्र स० १३ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४० । ३०३ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७८४४. **चतुर्विंशति तीर्थंकर पचकल्याणक पुजा—जयकीर्त्ति** । पत्रस० १२ । आ० १०१/२×४१/२ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

अन्तिम—

देवपल्ली स्थितेनापि सूरिणा जयकीर्तिना ।
जिनकल्याणकाना च, पूजेय विहिता शुभा ।
भट्टारक श्री पद्मनदि तत् शिष्य ब्रह्म रूपसी निमित ।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

७८४५. **चौसठ ऋद्धि पूजा—स्वरूपचन्द्र**। पत्रस० २८। आ० १२×८ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल सं० १६१०। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० २२१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

७८४६. **प्रति स० २**। पत्रस० ३३। आ० १०×७½ इन्च। ले० काल—×। पूर्ण। वेष्टन स० १६०। **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

७८४७ **प्रति स० ३**। पत्र स० २४। आ० ११½×६ इन्च। ले० काल स० १६३६। पूर्ण। वेष्टन स० ५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

७८४८. **प्रतिसं० ४**। पत्रस० २५। आ० ११×७ इन्च। ले० काल स० १६५७। पूर्ण। वेष्टनस० १७७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी।

विशेष पुस्तक साह धन्नालालजी चिरजीलाल जी नैणवा वालो ने लिखा कर नैणवा सुद्धअग्राम के मन्दिर भेंट किया। मेहनताना २) हीगलू २=)

७८४६. **प्रतिसं० ५** पत्र स० ५०। आ० ८×६¾ इन्च। ले०काल स० १६२३। पूर्ण। जीर्ण वेष्टन स० ७१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली।

७८५० **प्रतिसं० ६**। पत्रस० ३०। आ० १३×८इन्च। ले०काल स० १९६४। पूर्ण। वेष्टनस० १२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वडा वीस पथी दौसा।

७८५१. **प्रतिस० ७**। पत्र स० ४७। आ० ६×६ इन्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १२६ ×। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वडा वीस पथी दौसा।

७८५१. **प्रतिसं० ८**। पत्रस० २०। आ० १३ × ८½ इच। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १०५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा।

७८५२. **प्रति स० ९**। पत्रस० ३५। आ० ११× ५ इन्च। ले० काल स० १६६३। पूर्ण। वेष्टन स० ३६/२०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर दूनी (टोक)

विशेष—प० पन्नालाल के शिष्य सुन्दरलाल ने वसुवा मे प्रतिलिपि की थी।

७८५३ **प्रतिस० १०**। पत्रस० २०। आ० १४ × ६½ इन्च। ले०काल सं० १६५६। पूर्ण। वेष्टनस० १०८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बूंदी।

७८५४ **प्रतिस० ११**। पत्रस० ६८। ले०काल स० १६८०। पूर्ण। वेष्टनसं० ४८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर।

७८५५. **प्रतिसं० १२**। पत्रस० ३४। आ० १२½×७½ इन्च। ले० काल स० १६६१। पूर्ण। वेष्टनस० ५५४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

७८५६. **प्रति स० १३**। पत्रस० २६। आ० १३×८½ इन्च। ले०काल स० १६८६। पूर्ण। वेष्टनस० ५६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर

७८५७. **प्रति स० १४**। पत्र स० ४३। आ० ६¾×६½ इन्च। ले० काल स० १६७२ सावन सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन स० ३१६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर चौगान बूंदी।

विशेष—मडल का चित्र भी है।

७८५८ **प्रति स० १५** । पत्रस० ५८ । ग्रा० १०½×४½ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७८५६. **प्रतिस० १६** । पत्र स० २६ । ग्रा० १३×५½ इन्च । ले० काल स० १६७४ । पूर्ण । वेप्टन स० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर ।

विशेष—एक प्रति और है जिसमे २४ पत्र हैं ।

७८६०. **प्रतिस० १७** । पत्र स० ३६ । ले०काल स० १८४० । पूर्ण । वेप्टन स० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर हण्डावालो डीग

७८६१ **प्रतिस० १८** । पत्र स० २५ । ग्रा० १२×८ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७ ।**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर टोडारायसिंह (टोक)

७८६२ **प्रतिस० १६** । पत्र स० ५६ । ग्रा० १०×७ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरहपथी मन्दिर मालपुरा (टोक)

७८६३. **प्रतिसं० २०** । पत्रस० ३६ । ग्रा० ११½ ×७ इन्च । ले० काल स० १६७० ग्रासोज बुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर मालपुरा (टोक)

विशेष—हीरालाल के पुत्र मूलचद सौगाणी ने मन्दिर मडी मालपुरा मे लिखा था ।

७८६४ **प्रति स० २१** । पत्रस० ४६ । ग्रा० ११×६ इन्च । ले०काल स० १६३६ कार्तिक बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर टोडारायसिंह (टोक)

७८६५. **प्रतिस० २२** । पत्र स० ५-४१ । ग्रा० ८½ × ६ इन्च । ले० काल स० १६३४ माह सुदी ५ । अपूर्ण । वेष्टन स० १८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

७८६६. **जम्बूद्वीप अकृत्रिम चैत्यालय पूजा—जिनदास** । पत्रस० ३ । ग्रा० १२×७ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र० काल स० १५२४ माघ सुदी ५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११७ । **प्राप्ति स्थान** -- दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—रचना सम्बन्धी श्लोक

आद्रे व्याचार द्रव्येके वर्त्तमानजिनेशिना ।
फालगुणे शुक्लपचम्या पूजेय प० रचितामया ॥

७८६७. **प्रति स० २** । पत्र स० ४२ । ग्रा० १२×६½ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४० । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर वैर ।

विशेष—लक्ष्मीसागर के शिष्य प० जिनदास ने पूजा रचना की थी ।

७८६८ **जम्बूदीप पूजा—प० जिनदास** । पत्रस० ३२ । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८१६ माघ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—प० जिनदास लक्ष्मीसागर के शिष्य थे ।

७८६६. जम्बूस्वामी पूजा— × । पत्रस० २७ । आ० १२×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८६० । पूर्ण । वेष्टनस० ८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहतथी मदिर दौसा ।

७८७० जम्बूस्वामी पूजा जयमाल । पत्र स० १० । भाषा—सस्कृत । विषय–पूजा । र०काल × । ले०काल स० १९१२ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हुण्डावालो का डीग ।

७८७१. जपविधि —× । पत्रस० ६ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × ले०काल स० १९२१ । पूर्ण । वेष्टन स० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूदी ।

विशेष—पूज्य श्री जुनिगाढि का वागड पट्टे सागावाडान्वये का श्री १०८ राजेन्द्रभूषणजी लिपि कृतम् स० १९२१ सागवाडा नगरे

७८७२. जलयात्रा पूजा विधान—× । पत्रस० २ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९४८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७८७३ जलयात्रा विधान—× । पत्र स० ३ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-विधि विधान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

७८७४. जलयात्रा विधि—× । पत्रस० २ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४६–१३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

७८७५ जलहर तेला उद्यापन—× । पत्र स० ११ । आ० ७ × ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय–पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७८७६. जलहोम विधान—× । पत्र स० ५ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय–विधान । र०काल × । ले० काल स०१९३८ । पूर्ण । वेष्टन स०३४५–१३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—सलूवर मे लिखा गया था ।

७८७७. जलहोम विधान—× । पत्र स० ४ । आ० ११×७ इच । भाषा—सस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४२७–६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

७८७८. जलहोमविधि—× । पत्र स० ५ । आ० ८×७ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले०काल स० १९४० । पूर्ण । वेष्टन स० ५४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

७८७९ **जिनगुण सपत्ति व्रतोद्यापन पूजा** × । पत्रस० ६ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विपय पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७२१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७८८०. **प्रतिसं० २** । पत्रस० ८ । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

७८८१ **प्रति स० ३** । पत्रस० स० ५ । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल स० १८६० भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० ६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी ।

७८८२. **प्रति स० ४** । पत्रस० ७ । आ० १०×५इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८३-४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडोरायसिंह (टोक)

७८८३. **प्रतिसं० ५** । पत्रस० ६ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण ।वेष्टनस० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर मालपुरा (टोक)

विशेष—केवल प्रथम पत्र नही है ।

७८८४ **जिन पूजा विधि—जिनसेनाचार्य** । पत्रस० ११ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८८५ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० ४१-२७ । **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—लिखापित भ देवेन्द्र कीर्ति लिपि कृत महात्मा शभुराम ।

७८८५ **जिन महाभिषेक विधि—आशाधर** । पत्र स० २४ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल स० १८३७ मगसिर बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० २८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली (कोटा) ।

विशेष—सूरत मध्ये लिखापित आचार्य नग्न श्री नरेन्द्रकीर्ति ।

७८८६. **जिन यज्ञकल्प—आशाधर** । पत्रस० १३५ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय विधान । र०काल स० १२८५ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

विशेष—भावगढ मे प्रतिलिपि हुई थी । प्रति प्राचीन एव सस्कृत मे ऊपर नीचे सक्षिप्त टीका है ।

७८८७. **प्रतिसं० २** । पत्र स० ९४ । आ० १३×६ इञ्च । ले०काल स० १८५९ पौष सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५ ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टौंक) ।

७८८८. **प्रति स० ३** । पत्र स० ९७ । ले० काल १५१९ श्रावण वदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० १ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर (वडा) डीग ।

७८८९ **प्रतिस० ४** । पत्र स० १४७ । आ० १२×५¾ इञ्च । ले०काल स० १७४७ । माघ सुदी २ । पूर्ण । वष्टनस० ११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी ।

विशेष—कही सस्कृत टीका तथा शब्दो के अर्थ भी दिये हुए है ।

७८९०. **जिन सहस्रनाम पुजा—सुमति सागर** । पत्रस० २८ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८१२ माघ बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

७८९१ **जिनसहिता—भ० एकसन्धि** । पत्र स० २१६ । आ० ११½×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत ।विषय-विधान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

७८९२. **जैन विवाह पद्धति—जिनसेनाचार्य** । पत्रस० ४६ । आ० ११½×८ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल स० १६५२ वैशाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० ३०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी (कामा)

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है । टीका काल स० १६३३ ज्येष्ठ बुदी ३ ।

७८९३ **प्रतिसं० २** । पत्र स० ३५ । आ० १०½×५¼ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ तथा टीका सहित है ।

७८९४. **प्रति स० ३** । पत्रस० २८ । आ० १२½×७ इञ्च । ले०काल स० १६३३ । पूर्ण । वेष्टन स० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

विशेष—बीच मे सस्कृत श्लोक हैं तथा ऊपर नीचे हिन्दी टीका है ।

७८९५. **प्रतिसं० ४** । पत्रस० २८ । आ० १२×७ इञ्च । ले०काल स० १९६३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बूदी ।

७८९६ **प्रतिसं० ५** । पत्रस० २६ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल स० १९६८ । पूर्ण । वेष्टन स० २१-१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—पडित फतेहलाल विरचित हिन्दी भाषा मे अर्थ भी दिया हुआ है ।

७८९७. **प्रतिसं० ६** । पत्रस० ४६ । आ० १२×७ इञ्च । ले०काल स० १६३३ । पूर्ण । वेष्टन स० १०६/१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

७८९८. **प्रतिसं० ७** । पत्रस० ४४ । आ० ११½×८ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

७८९९. **जैन विवाह विधि—×** । पत्रस० ३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—विधि विधान । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७९०० **जेष्ठ जिनवर व्रतोद्यापन—×** । पत्रस० ६ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७९०१. **तपोग्रहण विधि—×** । पत्रस० १ । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७६०२. **तीन चौबीसी पूजा—** ×। पत्रस० ८ । आ० ११×५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३६२ । **प्राप्ति स्थान—**भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७६०३ **तीन चौबीसी पूजा—** × । पत्रस० ७ । आ० ११×५½ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

७६०४. **तीन चौबीसी पूजा—त्रिभुवनचन्द** । पत्र स० ६ । आ० ११×५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८०१ अषाढ बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ५३ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा

७६०५. **तीन चौबीसी पूजा—वृन्दावन** । पत्रस० १४२ । आ० १०×७½ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८७० । पूर्ण । वेष्टनस० १६१ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन खडेलवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

७६०६. **प्रति सं० २** । पत्रस० ८८ । ले० काल स० १६४२ । पूर्ण । वेष्टनस० १६२ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

७६०७. **तीन लोक पूजा—टेकचद** । पत्रस० २८२ । आ० १२½×६½ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल स० १८२८ अषाढ बुदी ४ । ले०काल स० १६५६ फाल्गुण सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १८६ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

विशेष—प० नीमलाल जी ने बूदी मे प्रतिलिपि कराई थी ।

७६०८ **प्रतिस० २** । पत्र स० ३२५ । आ० १४×८½ इन्च । ले० काल स० १६७१ । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर चोधरियान मालपुरा (टोक)

विशेष—चौधरी मागीलाल वकील ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

७६०६. **प्रतिस० ३** । पत्रस० ३७५ । आ० १६ ×६ इन्च । ले०काल स० १६६७ माह बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

विशेष—प० लक्ष्मीचन्द नैणवा वाले का ग्रथ है । स० १६६८ मे उद्यापनार्थ चढाया पन्नालाल घम स्थान (?) वेटा जइचन्द का ।

७६१० **प्रतिस० ४** । पत्रस० ३४४ । आ० १२½×६½ इन्च । ले०काल स० १६३८ आषाढ बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० २३ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

७६११ **प्रति स० ५** । पत्र स० ५०५ ले०काल स० १६१२ । पूर्ण । वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७६१२ **प्रति स० ६** । पत्रस० ३०८ । आ० १३×७½ इन्च । ले०काल स० १६३४ चैत सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० ६२ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

७६१३. **तीन लोक पूजा—नेमाचन्द पाटनी** । पत्रस० ६५० । आ० १३½×८½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १६७६ मगसिर सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनस० १६ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मदिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक)

विशेष—पन्नालाल सोनी के पुत्र मूलचन्द सोनी ने आदिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि करवाकर भेंट की थी।

७६१४. तीस चौबीसी पूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र स० ७४ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३७८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

७६१५ प्रति स० २ । पत्रस० ६१ । आ० १०×४$\frac{3}{4}$ इच । ले०काल स० १७२८ वैशाख सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० २०० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—ग्रन्था-ग्रन्थ स० १५०० ।

७६१६. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ५५ । ले० काल स० १८४६ । पूर्ण । वेष्टनस० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—सुखरामजी वसक वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

लिखत दयाचन्द वासी किशनकोट का वेटा फतेहचन्द छावडा के पुत्र सात केसरीसिह के कारण पाय हम भरतपुर मे रहे ।

७६१७ प्रति सं० ४ । पत्रस० ३६ । ले० काल स० १७६६ माघ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० ५२ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—प्रति का जार्णोद्धार हुआ हैं ।

७६१८. प्रति सं० ५ । पत्रस० ६१ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७६१९. प्रति स० ६ । पत्र स० ३–४५ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले०काल स० १६४४ । अपूर्ण । वेष्टनस० १७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स वत् १६ आषाढादि ४४ वर्षे आश्वन सुदी ७ गुरौ श्री विद्यापुरे शुभस्थाने ब्र० तेजपाल ब्र० पदमा पडित माडण चातुर्मासिक स्थिति चतुर्तिशतिका पूजा लिखापिता । ब्र० तेजपाल पठनार्थ मुनि धर्मदत्त लिखित किवद गीक गच्छे ।

७६२०. प्रति स० ७ । पत्रस० २-४७ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३७६।२६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन स भवनाथ मदिर उदयपुर ।

७६२१. प्रतिसं० ८ । पत्र स० १०७ । आ० ८×८ इञ्च । ले० काल स १८४५ भादो सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चेतनदास दीवान पुरानी डीग ।

विशेष—गुटका साइज है । लालजी मल ने दीर्घपुर मे लिखा था ।

७६२२. प्रतिसं० ९ । पत्रस० ६० । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल—× । अपूर्ण । वेष्टन स० ३६६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७६२३ प्रति स० १० । पत्र स० ७२ । आ० १०×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टन स० २४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

७६२४. **प्रतिसं० ११** । पत्रस० ४२ । आ० ११½×½ इञ्च । ले०काल स० १७८० चैत्र बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ बूदी ।

विशेष—मालपुरा नगर मे पार्श्वनाथ चैत्यालय मे प० **योदराज** के पठनार्थ लिखा गया था ।

७६२५. **तीसचौबीसीपूजा—पं० साधारण** । पत्रस० ३५ । आ० १२½×७½ इञ्च । भापा-सस्कृत, प्राकृत । विषय—पूजा । र०काल स० × । ले०काल स० १८५२ आसोज सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

७६२६. **तीस चौबीसो पाठ—रामचन्द्र** । पत्रस० ७६ । आ० १२½×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल स० १८८३ चैत वदी ५ । ले०काल स० १६०८ सावन वदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी सीकर ।

विशेष—ईश्वरीप्रसाद शर्मा ने प्रतिलिपि की थी ।

७६२७. **प्रतिसं० २** । पत्र स० ६५ । आ० १४⅞×८⅞ इञ्च । ले०काल स० १६२६ भादव सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—लाला कल्याणचन्द ने मिश्र श्री प्रसाद श्यामलाल से प्रतिलिपि कराई थी ।

७६२८. **तीस चौबीसी पूजा—वृन्दावन** । पत्र स० १२७ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल—× । ले०काल स० १६२६ कार्तिक सुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टन स० ६०-२१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह टोक ।

विशेष—१०४ का पत्र नही है ।

७६२६ **प्रतिसं० २** । पत्रस० २६६ । आ० १०× ५½ इञ्च । ले० काल स० १८६५ । पौष बुदी १४ । पूर्ण । वेप्टन स० १२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर वयाना ।

विशेष—गुटका साइज मे है ।

७६३०. **प्रतिस० ३** । पत्रस० ११० । आ० १२½×६½ इञ्च । ले०काल स० १६१० आसोज सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस०४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर वयाना ।

विशेष—वयाना मे प्रतिलिपि हुई थी ।

७६३१. **प्रतिस० ४** । पत्रस० १०८ । आ० ११×६ इञ्च । ले० काल—× । पूर्ण वेष्टन स० २०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ टोडारायसिंह टोक ।

७६३२. **प्रतिसं० ५** । पत्र स० १०६ । आ० १०×७ इञ्च । ले० काल स० १६५८ । पूर्ण । वेष्टनस० ३६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७६३३. **प्रतिसं०** । ६ । पत्र स० १०७ । आ० ६½×६½ इच । ले०काल स० १८८६ माघ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० २७/१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—प्रतापगढ मे पडित रामपाल ने लिखा था ।

७६३४. **तीस चौबीसी पूजा**—× । पत्रस० । आ० १६½×६⅞इञ्च । भाषा-हिन्दी । विपय—पूजा ।र०काल × । ले०काल स० १८८५ कार्तिक बुदी १० पूर्ण । वेष्टनस० १३६७ । **प्राप्ति स्थान**-अजमेर भण्डार ।

७९३५. **तीस चौबीसी पूजा**—× । पत्रस० ६ । भाषा–हिन्दी । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३७७ २९८ । **प्राप्ति स्था**—दि० जैन समवनाथ मदिर उदयपुर ।

७९३६. **तेरह द्वीप पूजा—लालजीत** । पत्र स० १६८ । आ० ११½×८ इञ्च । भाषा–विषय—पूजा । र०काल स० १८७० । ले० काल स० १८९७। पूर्ण । वेष्टन स० १३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

विशेष—कृष्णगढ मध्ये लिखिपित ।

७९३७. **प्रतिसं० २** । पत्र स० ११५ । आ० १४×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र०काल स० १८७० । ले०काल स० १९१९ । वैशाख बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

७९३८ **प्रतिसं० ३** । पत्र स० २१७ । आ० १२×६½ इञ्च । ले०काल स० १९६० । पूर्ण । वेष्टन स० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरह पथी मन्दिर नैणवा ।

विशेष—भट्ट रामचन्द्र ने नैणवा मे प्रतिलिपि की थी । आनीलाल जी के पुत्र सावलरामजी भाई सोदान जी चि० फूलचन्द श्रावक नैणवा वाले ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

७९३९ **प्रतिसं० ४** । पत्र स० १७५ । आ० १३ × ६½ इञ्च । ले० काल स० १९०३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर, बू दी ।

७९४०. **प्रतिसं० ५** । पत्र स० २०२ । आ० १०×४½ इञ्च । ले०काल स १९०६ पूर्ण । वेष्टनस० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर भादवा राजस्थान ।

विशेष—मारोठ मे भू थाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

७९४१ **प्रति सं० ६** । पत्र स० २०९ । आ० १०×८ इञ्च । ले० काल स० १९२४ । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर, बू दी ।

७९४२ **प्रति स० ७** । पत्र स० १६३ । ले०काल १९६४ । पूर्ण । वेष्टन स० ७१ । **प्राप्ति–स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

७९४३ **प्रति सं०** । ८ । । पत्रस० १६६ । आ० १३×७½ इञ्च । ले० काल स० १९०७ । पौष सुदी । पूर्ण । वेष्टनस० २५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति उत्तम है ।

७९४४. **प्रति स० ९** । पत्रस० १४० । आ० १३½×८¾ इञ्च । ले० काल स० १९२३ । आसोज सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी सीकर ।

७९४५ **तेरह द्वीप पूजा स्वरूपचन्द** । पत्रस० ११७ । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय–पूजा । र०काल—× । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०४/५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा ।

७९४६. **तेरह द्वीप विधान**—× । । पत्र स० ५५ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, (बू दी) ।

७६४७. **तेरह द्वीप पूजा विधान**—× । पत्रस० १३६ । आ० १२½×८½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १६६१ भादवा वदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी सीकर ।

विशेष—परशादीलाल पद्मावती पुरवाल ने सिकन्द्रा (आगरे) मे प्रतिलिपि की थी ।

७६४८ **त्रिकाल चौबीसी पूजा**—× । पत्रस० ११ । आ० ११¾ × ५⅞ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक) ।

७६४६ **त्रिकाल चतुर्विशति पूजा—त्रिभुवनचन्द्र** । पत्रस० १४ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

७६५०. **त्रिकाल चतुर्विशति पूजा**—× । पत्र स० ११ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६/१८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर टोडारायसिंह (टोक) ।

७६५१ **त्रिकाल चतुर्विशति पूजा**—× । पत्रस० १६ । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०६/१७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—तक्षकपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

७६५२. **त्रिकाल चतुर्विशति पूजा**—× । पत्र स० २२ । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र तथा कल्याण मन्दिर पूजा भी है ।

७६५३ **त्रिकाल चतुर्विशति पूजा**—× । पत्रस० १३ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

७६५४. **त्रिकाल चतुर्विशति पूजा—भ० शुभचन्द्र** । पत्र स० ५६ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सोगाणी मदिर करौली ।

७६५५. **त्रिकाल चौबीसी पूजा**—× । पत्रस० १० । आ० ६×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

७६५६ **त्रिपचाशत् क्रियाव्रतोद्यापन**—× । पत्र स० ४ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० × । पूर्ण । वेष्टन स० ६८३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७९५७. त्रिपंचाशत क्रियाव्रतोद्यापन— × । पत्र स० ९ । आ० १०×६½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

७९५८ त्रिपंचाशत् क्रियाव्रतोद्यापन— × । पत्र स० ४ । आ० १२½×४½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अजमेर भण्डार ।

७९५९. त्रिपंचाशत् क्रियाव्रतोद्यापन × । पत्र स० ६ । आ० १०×७½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७९६०. त्रिपंचासत् क्रियाव्रतोद्यापन—× । पत्रस० ५ । आ० ११½×४½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी ।

७९६१. त्रिलोक विधान पूजा—टेकचन्द । पत्रस० ३०३ । आ० १३×८ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल स० १८२८ । ले०काल स० १९४२ । पूर्ण । वेष्टन स० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

७९६२. त्रिलोकसार पूजा—नेमीचन्द । पत्रस० ६६१ । आ० १४×८½ इन्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल स० १९८४ चैत सुदी १३ । वेष्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक)

७९६३. त्रिलोकसार पूजा—महाचन्द्र । पत्र स० १९९ । आ० १०½×७ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १९१५ कार्तिक बुदी ८ । ले० काल स० १९२४ कार्तिक सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० १०९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष -प० महाचन्द्र सीकर के रहने वाले थे । समेद शिखर की यात्रा से लौटते समय प्रतापगढ मे ठहरे तथा वही ग्रन्थ रचना की थी ।

७९६४ प्रतिसं० २ । पत्र स० १७२ । आ० १०¾×७ इन्च । ले० काल स० १९२४ कार्तिक सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनस० १५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—भट्टारक भानुकीर्ति के परम्परा मे से प० महाचन्द थे ।

७९६५. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १९९ । आ० १०½×६½ इच । ले० काल स० १९२५ । पूर्ण । वेष्टन स० १९५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

७९६६. प्रतिसं० ४ । पत्र स० १८१ । आ० १३×८½ इन्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३८९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७९६७ त्रिलोक पूजा—शुभचन्द । पत्र स० १६६ । आ० ९×६ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १९४२ । पूर्ण । वेष्टनस० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर चौगान बूदी ।

७६६८. **प्रतिसं० २** । पत्र स० १३१ । ग्रा० १२½×५ इञ्च । ले०काल स० १८३० । पूर्ण । वेष्टन स० २१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर वैर ।

७६६९. **प्रतिसं० ३** । पत्रस० १४७ । ग्रा० १२×७½ इञ्च । ले०काल स ० १९१२ । पूर्ण । वेष्टनस० २०० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर ग्रलवर ।

७६७०. **प्रति सं० ४** । पत्रस० १२६ । ले०काल स ० १९६३ । पूर्ण । वेष्टन स०२०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर ग्रलवर ।

७६७१. **प्रति स० ५** । पत्र स० ४२ । ग्रा० १२×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ग्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

७६७२. **त्रिलोकसार पूजा—सुमतिसागर** । पत्र स० ८२ । ग्रा० १२½×६½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय पूजा । र०काल × । ले०काल स ० १८५३ । पूर्ण । वेष्टनस ० १२०-४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

विशेष—उदैचन्द ने स्यौजीराम वीजावर्गीय खू टेटा से द्रव्यपुर (मालपुरा) मे प्रतिलिपि कराई थी ।

७६७३. **प्रतिसं० २** । पत्रस० १०१ । ले०काल स० १८९४ । पूर्ण । वेष्टन स० ७१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—गुटका साइज है ।

७६७४ **त्रिलोकसार पूजा**—× । पत्रस ० १० । ग्रा० ११×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विपय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टनस० २४३ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान वू दी ।

विशेष—नित्य पूजा स ग्रह भी है ।

७६७५. **त्रिलोकसार पूजा**—× । पत्रस० ८ । ग्रा० १२×६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विपय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७३-७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

विशेष—जयमाला हिन्दी मे है ।

७६७६. **त्रिलोकसार पूजा**—× । पत्र स० २२२ । ग्रा० १२×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विपय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १९५८ । पूर्ण । वेष्टन स० १९०-७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डू गरपुर ।

७६७७ **त्रिलोकसार पूजा**—× । पत्रस० १०२ । ग्रा० १३½×६¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विपय-पूजा । र०काल स० १९२१ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर ग्रभिनन्दन स्वामी वू दी ।

७६७८. **त्रिलोकसार पूजा**— × । पत्रस० १०३ । ग्रा० ९ ×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विपय—पूजा । र० काल × । ले०काल स० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन स० १०९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर दूनी (टोक)

७६७६. त्रिलोकसार पूजा— × । पत्रसं० १३१ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८८८ फागुण बुदी १ । पूर्ण । वेष्टनसं० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल पचायती मदिर अलवर ।

७६८०. त्रैलोक्यसार पूजा— × । पत्र सं० ७६ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८८७ मगसिर बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७६८१. प्रतिसं० २ । पत्र सं० १३२ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

विशेष—ऊपर वाली प्रति की नकल है ।

७६८२ त्रैलोक्यसार पूजा— × । पत्र सं० ८१ । आ० १२×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल सं० १८८७ कार्तिक बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७२२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७६८३. त्रेपन क्रिया उद्यापन । पत्रसं० ५ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

७६८४. त्रेपन क्रिया व्रतोद्यापन— × । पत्र सं० ७ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

७६८५. प्रति सं० २ । पत्रसं० ६ । आ० ६½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३५२ । **प्राप्ति थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७६८६. त्रेपनक्रियाव्रत पूजा—देवेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × ले० काल सं० १७६० वैशाख बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर मालपुरा (टोंक)

विशेष—आचार्य ज्ञानकीर्ति ने अपने शिष्य भानुकेशी सहित वासी नगर में प्रतिलिपि की थी ।

७६८७. त्रिंशच्चतुर्विंशति पूजा—शुभचन्द्र । पत्रसं० ७८ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६८२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७६८८. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ५४ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि०जैन मन्दिर अजमेर ।

७६८६. दश दिक्पालार्चन विधी— × । पत्रसं० २ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल सं० × । पूर्ण । वेष्टनसं० ३४२-१३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

७९९०. **दशलक्षण उद्यापन पूजा**— × । पत्रस० ४१ । आ० ७$\frac{3}{4}$ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १९२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७९९१. **दशलक्षण द्यापन पूजा**— × । पत्रस० १५ । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३७८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७९९२. **दशलक्षण उद्यापन पूजा**— × । पत्रस० १-५ । आ० १२×५$\frac{1}{2}$ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ७३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

७९९३ **दशलक्षण उद्यापन पूजा**— × । पत्र स० ४५ । आ० ११$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सवत् १९३३ सावन सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३८-७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वडा वीसपथी दौसा ।

७९९४ **दशलक्षण उद्यापन पूजा**— × । पत्रस० २० । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८३३ । पूर्ण । वेष्टन स० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बू दी ।

७९९५. **दशलक्षण जयमाल** — × । पत्र स० १४ । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० × । पूर्ण । वेष्टन स० ६१-७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

७९९६. **दशलक्षण जयमाल** — × । पत्र स० ५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल स० × । अपूर्ण । वेष्टन स० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बू दी ।

७९९७. **दशलक्षण जयमाल पूजा—भाव शर्मा** । पत्रस० १२ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

७९९८. **प्रति स० २** । पत्र स० ९ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । ले०काल स० × । पूर्ण । वेष्टन स० ६८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—सग्रामपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

७९९९ **प्रति स० ३** । पत्रस० ९ । आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इ च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८०००. **प्रतिस० ४** । पत्रस० ६ । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स०-१८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

८००१. **प्रतिस० ५** । पत्रस० ९ । आ० ११×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स०-१७० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा । प्रति स स्कृत टव्वा टीका सहित है ।

८००२. **प्रतिसं० ६** । पत्रस० १० । ले० काल स० १७५४ । पूर्ण । वेष्टन स० २२ (क) । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर डीग ।

विशेष—नूतपुर मे विमलनाथ के चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी। गाथाओ पर सस्कृत टीका दी हुई है।

८००३. प्रतिसं० ७ । पत्रस० २२ । आ० १२ × ६½ इञ्च । ले०काल स० १६४५ । पूर्ण । वेष्टनस० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी।

८००४. प्रति स० ८ । पत्र स० १३ । आ० १०¾ × ५ इञ्च । ले० काल स० १८४६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पाश्वनाथ मन्दिर चौगान बूदी।

विशेष—सवाई प्रतापसिंह जी के राज्य मे प्रतिलिपि हुई थी।

८००५. दशलक्षण जयमाल × । पत्रस० ६ । आ० १२ × ४½ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल स० १७२१ कार्तिक बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १३३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १७२१ वर्षे कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे द्वितीया दिवमे श्रीमत् परमपूज्य श्री श्री १०८ श्री भूषण जी तत्पट्टे मडलाचार्य श्री ५ धर्मचन्द्र जी तदाम्नाये लिखित पाण्डे उधा राजगढ मध्ये।

८००६. दशलक्षण जयमाल × । पत्र स० १६ । आ० ८½ × ८½ इञ्च । भाषा प्राकृत विषय पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८००७. दशलक्षण जयमाल × । पत्रस० १३ । आ० १२ × ५½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२६८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८००८. दशलक्षण जयमाल × । पत्रस० २० । आ० ६½ × ४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६१५ । पूर्ण । वेष्टनस० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

विशेष—रत्नत्रय जयमाल भी है। हिन्दी अर्थ सहित है।

८००९ दशलक्षण जयमाल × । पत्र स० ५ । भाषा-प्राकृत । विषय पूजा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वष्टन स० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर वसवा।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

८०१० दशलक्षण जयमाल × । पत्र स० ८ । आ० १२ × ५ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय धर्म । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—गाथाओ के ऊपर हिन्दी मे छाया दी हुई है।

८०११. दशलक्षण जयमाल × । पत्रस० ८ । आ० ६½ × ५½ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८४१ श्रावण बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—खुशालचन्द ने कोटा मे लिखा था।

८०१२. **दशलक्षण जयमाल—रइधू।** पत्र स० ४ से ११। आ० १० × ४½ इञ्च। भाषा-अपभ्रंश। विषय पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ५३-२२५। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)।

८०१३ **प्रति स० २।** पत्रस० ८। आ० ६½ × ४½ इञ्च। ले०काल स० ×। पूर्ण। वेष्टनस० ५४-६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)।

८०१४. **प्रतिस० ३।** पत्र स० १४। ले० काल स० १८५२। पूर्ण। वेष्टन स० ५३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है।

८०१५. **प्रति स० ४।** पत्र स० ५। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५५। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—भरतपुर मे मुनि कल्याण जी ने प्रतिलिपि लिखी थी।

८०१६. **प्रतिस० ५।** पत्र स० १४। आ० ११ × ४ इञ्च। ले० काल ×। । पूर्ण। वेष्टन स० ३१। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मदिर बडा वीसपथी दौसा।

८०१७ **प्रति स० ६।** पत्रस० १२। आ० ११ × ५ इञ्च। ले०काल ×। । पूर्ण। वेष्टनस० १०२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी।

विशेष—सस्कृत टब्बा टीका सहित है।

८०१८. **प्रतिस० ७।** पत्रस० ११। आ० १० × ४½ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० १२०। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है। अन्तिम पत्र नही है।

८०१९. **प्रतिसं० ८।** पत्रस० ८। आ० १२ × ६ इञ्च। ले०काल स० १८५२ प्रथम भादवा बुदी ८। पूर्ण। वेष्टन स० १६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक।

विशेष—हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है।

८०२०. **प्रतिस० ९।** पत्र स० १०। आ० १२ × ६ इञ्च। ले० काल स० १७८८। पूर्ण। वेष्टन स० ७८/४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)।

विशेष—प्रति हिन्दी छाया सहित है। तूगा मे श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प० मोहनदास के पठनार्थ लिखी थी।

८०२१. **प्रतिस० १०।** पत्रस० ८। आ१०½ × ४½ इञ्च। ले० काल स० १८०० काती सुदी ८। पूर्ण। वेष्टन स० २६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना बूदी।

विशेष—सीसवालि नग्र मध्ये लिखित।

८०२२. **प्रति स० ११।** पत्रस० ५। आ० ६½ × ५ इञ्च। ले०काल ×। वेष्टनस० २११। पूर्ण। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी)।

८०२३. **प्रतिस० १२।** पत्र स० १२। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ३१। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन तेरहपथी मन्दिर वसवा।

विशेष—प्रति टीका सहित है।

८०२४. प्रति सं० १३ । पत्र स० १० । ले०काल स० १९०४ भादवा बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२ ।

विशेष—वतुआ मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प्रतिलिहि हुई।

८०२५. प्रतिसं० १४ । पत्रस० १८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७३ (अ) । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८०२६. प्रतिसं० १५ । पत्रस० १८ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७३ (ब) । **प्राप्ति स्थान** उपरोक्त मन्दिर ।

८०२७ प्रति स० १६ । पत्रस० १७ । ले०काल स० १९३७ । पूर्ण । वेष्टन स० । ७३ (स) । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८०२८ दशलक्षण जयमाल—पत्र स० २० । आ० १२×५½ इच । भाषा—प्राकृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले०काल स० १८८४ सावरण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८०२९. दशलक्षण जयमाल—× । पत्रस० ३५ । आ० १३× ५⅞ इञ्च । भाषा-अपभ्र श विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टनस० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—सस्कृत टव्वा-टीका सहित है ।

८०३०. दशलक्षण जयमाल—×। पत्र स० २९ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल । पूर्ण । वेष्टनस० ३२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८०३१. दशलक्षण जयमाल—× । पत्र स० २८ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल—× ।ले० काल स० १९६५ पूर्ण । वेष्टन स० ३१२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८०३२. दशलक्षण पूजा जयमाल—× । पत्रस० १४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३१७ । **प्राप्ति स्थान**—*दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।*

८०३३. प्रतिसं० २ । पत्र स० ३७ । आ० १०×६¾ इञ्च । ले०काल स० १९४७ । पूर्ण । वेष्टनस० ३१८ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—ब्राह्मण गूजर गौड कृष्णचन्द्र ने बूदी मे लिखा था ।

८०३४. दशलक्षण धर्मोद्यापन—× । पत्र स० १२ । आ० ९½×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५२२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८०३५ **दशलक्षण उद्यापन विधि**—× । पत्र स० २५ । आ० ६½×४¾ इन्च । भापा-सस्कृत ।विषय पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

८०३६ **दशलक्षण पूजा—द्यानतराय** । पत्र स० ७ । आ० ७½×५½ इन्च । भापा-हिन्दी पद्य । विपय-पूजा । र० काल × । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन स० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी सीकर ।

८०३७. **प्रतिस० २** । पत्र स० ५ । आ० १२×७ इन्च । ले० काल स० १६४७ । पूर्ण । वेष्टन स० ५५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

८०३८ **प्रतिस० ३** । पत्र म० ५ । आ० १०×६½ इन्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

विशेष—दूसरे पत्र से भक्तामर भापा हेमराज कृत पूर्ण है ।

८०३९ **दशलक्षन पूजा विधान—टेकचन्द** । पत्रस० ४२ । आ० १३×७ इन्च । भापा-हिन्दी पद्य । विपय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बू दी ।

८०४० **दशलक्षण मडल पूजा—डालूराम** । पत्रस० ३५ । आ० ११×५ इन्च । भापा-हिन्दी । विपय-पूजा । र०काल स० १८२१ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १००/६२ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा राज० ।

८०४१. **प्रतिस० २** । पत्रस० ३० । आ० १२½×८ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

८०४२ **दशलक्षण विधान पूजा**—× । पत्रस० २६ । आ० १०½×५ इन्च । भापा—सस्कृत । विपय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

८०४३ **दशलक्षण विधान पूजा** × । पत्र स० २५ । आ० ११× ८ इन्च । भापा हिन्दी । विषय–पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६१० । पूर्ण । वेष्टन स० ८२/६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज) ।

विशेष—मारोठ नगर मे प्रतिलिपि की गई ।

८०४४. **दशलक्षण व्रत पूजा**—× । पत्रस० २१ । आ० ११×५ इच । भापा-सस्कृत । विपय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८०४५. **दशलक्षण व्रत पूजा** × । पत्र स० १६ । आ० ६×४½ इन्च । भापा-हिन्दी (पद्य) । विपय—पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३७७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८०४६. **दशलक्षण पूजा—विश्व भूषण** । पत्र स० ३० । आ० ११×६½ इन्च । भापा-सस्कृत । विपय-पूजा । र० काल स०-१७०४ । ले० काल स०-१८१७ मगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

विशेष— चूरामन वयाना वाले ने करौली मे ग्रन्थ की प्रतिलिपि कराई थी।

८०४७ प्रतिसं० २। पत्र स० १६। ले०काल × । पूर्ण। वेप्टन स०१२। प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर पचायती भरतपुर।

८०४८. दशलक्षण व्रतोद्यापन पूजा—सुमतिसागर। पत्र स० १८। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विपय-पूजा। र०काल ×। ले०काल ×।पूर्ण। वेष्टन स० ३७०। प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८०४९. प्रतिसं० २। पत्रस० १४। आ० १०½×५½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १६९-७३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

८०५०. प्रति स० ३। पत्र स० ९। आ० १५×४ इञ्च। ले० काल स० १८४४ पूर्ण। वेष्टन स० ५१२। प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

८०५१. प्रति सं० ४। पत्रस० १८। आ० १०×६ इच। ले०काल स० १९३८। पूर्ण। वेष्टन स० ५२७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

८०५२. प्रतिसं० ५। पत्रस० २०। आ० १४×४ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ६५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर वूदी।

विशेष—सवाई माधोपुर मे झालरापाटन के जैनी ने प्रतिलिपि कराई थी।

८०५३ प्रति स० ६। पत्र स० २१। आ० १०½× ५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७२। प्राप्ति स्थान—दि०जैन मन्दिर नागदी (वूदी)

८०५४ प्रति स० ७। पत्र स० १७। आ० १३×५ इञ्च। ले०काल स० १९३३। पूर्ण। वेप्टन स० ५७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी वूदी।

८०५५ प्रति स० ८। पत्र स० १४। आ० १०×६ इञ्च। ले०काल स० १८६७ भादवा सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० २५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ वूदी।

विशेष—सुमति सागर श्री अभयनन्दि के शिष्य थे।

८०५६. प्रतिसं० ९। पत्रस० २८। आ० १२×६ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १५८। प्राप्ति स्थान– दि० जैन मन्दिर राजमल (टोक)

विशेष—गुलाबचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

८०५७. प्रतिस० १०। पत्रस० २८। ले०काल स० १७९६। पूर्ण। वेष्टन स० ६९। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

८०५८. प्रतिसं० ११। पत्र स० २४। आ० ८½×६½ इञ्च। ले०काल स० १९५२। पूर्ण। वेष्टन स० १८३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर अलवर।

८०५९. प्रतिसं० १२। पत्रस० १२। आ० १२×७ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेप्टन स० २। प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा।

विशेष—आगे षोडश कारण उद्यापन हैं पर अपूर्ण है।

८०६०. **प्रति स० १३** । पत्रस० ११ । आ० १०×५ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति—

श्री अभयनन्दि गुरु शील सुसागर ।
सुमति सागर जिन धर्म धुरा ॥७॥

८०६१ **दशलक्षण व्रतोद्यापन पूजा—सुधीसागर** । पत्र स० २५ । आ० ९×५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी)

८०६२. **दशलक्षण व्रतोद्यापन** — × । पत्रस० १५ । आ० ११½×५ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८८० आषाढ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० १३५१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८०६३. **प्रतिस० २** । पत्रस० १० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३५२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर अजमेर भण्डार ।

८०६४ **दश लक्षण व्रतोद्यापन**— × । पत्र स० १२ । आ० ११¾×६ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३४६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

विशेष—लिखित ब्राह्मण फौजूराम ।

८०६५. **दशलक्षण व्रतोद्यापन पूजा—भ० ज्ञानभूषण** । पत्रस० ३७ । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८१६ सावन सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर के पचो ने करौली मे प्रतिलिपि कराई थी ।

८०६६. **दशलक्षण व्रतोधापन पूजा—रइधू** । पत्रस० २६ । आ० ८½×६½ इन्च । भाषा-अपभ्रश । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १९५२ । पूर्ण । वेष्टन स० १८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर अलवर ।

विशेष—९ प्रतिया और हैं ।

८०६७ **दशलक्षण व्रतोद्यापन**— × । पत्रस० ३० । आ० १०½×६ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १९४९ । अपूर्ण । वेष्टन स० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

८०६८. **दश लक्षण व्रतोद्यापन**— × । पत्रस० २५ । आ० १०×६ इन्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल स० १८५० भादवा सुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

८०६९. **दशलक्षण व्रतोद्यापन**— × । पत्रस० ४९ । आ० १०×६ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १९५२ । पूर्ण । वेष्टनस० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

८०७०. दशलक्षरण व्रतोद्यापन—× । पत्रस० ३० । आ० १०½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तुति । र०काल × । ले०काल स० १९५० । पूर्ण । वेष्टन स० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

विशेष—लिखी माली कवरलाल ने लिखाई घासीराम । चि० भवरीलाल मारवाडा ने अग्रवालो के मन्दिर मे चढाई थी ।

८०७१. दशलक्षरण व्रतोद्यापन—× । पत्रस० १९ । आ० १०×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बू दी ।

८०७२ दशलक्षरण पूजा उद्यापन—× । पत्रस० २१ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विपय—पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८४४ सावरण सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० २०९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष – आचार्य विजयकीर्तिजी तत् शिष्य सदासुख लिपिकृत ।

८०७३. दशलक्षरण पूजा उद्यापन— × । पत्र स० २३ । आ० १०½×४¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८१७ । पूर्ण । वेष्टन स० १३३/३१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर पाश्वंनाथ इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—मिति चैत्र सुदी २ भृगुवासरे वृन्दावती नगरे सुपार्श्वचैत्यालये लिखत स्वहस्तेन लखित शिवविमल पठनार्थं स० १८१७ ।

८०७४. दशलक्षरण पूजा उद्यापन—× । पत्रस० ५ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ११९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बू दी)

८०७५. दशलक्षरण पूजा—× । पत्रस० ६ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

८०७६. दशलक्षरण पूजा— × । पत्रस० ११ । आ० १०¾×६¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विपय-पूजा । र० काल × । ले०काल स० १८५० श्रावरण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

८०७७ दश लक्षरण पूजा — × । पत्र स० १९ । आ० १०×५¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

८०७८. दशलक्षरण पूजा— × । पत्रस० ९ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बू दी)

८०७९. दशलक्षण पूजा — X । पत्रस० २८ । आ० ११ X ७ इन्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—पूजा । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टनस० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

८०८०. दशलक्षण पूजा—X । पत्रसं० ५६ । आ० ११ X ५½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—दो रुपये तेरह आना मे खरीदा गया था ।

८०८१. दश लक्षण पूजा — X । पत्र स० ४५ । आ० ११ X ५ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल X । ले०काल स० १९०३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर दौसा ।

८०८२. दशलक्षण पूजा—X । पत्र स० ५५ । भाषा-सस्कृत । विषय पूजा । र०काल X । ले०काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० ९६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८०८३, दशलक्षण पूजा— X । पत्र स० ६७ । आ० ९ X ६½ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय पूजा । र० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

८०८४. दश लक्षणीक अंग— X । पत्र स० १ । आ० १० X ४½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

८०८५. द्वादश पूजा विधान— X । पत्र स० ८ । आ० १३ X ६ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल X । ले०काल X । अपूर्ण । वेष्टनस० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी ।

विशेष—८ से आगे पत्र नही है ।

८०८६. द्वादश व्रत पूजा—देवेन्द्रकीर्ति । पत्रस० १४ । आ० १०½ X ४½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ३७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अजमेर भण्डार ।

८०८७ द्वादश व्रत पूजा—भोजदेव । पत्रस० १८ । आ० १०½ X ४ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० २८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

८०८८ द्वादश व्रतोद्यापन—X । पत्र स० १६ । आ० १२ X ५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल X । ले०काल स० १८५९ कार्तिक बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० २६-१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक)

विशेष – टोडारायसिह मे लिखा गया था ।

८०८९. **द्वादशांग पूजा**— × । पत्र स० ७ । आ० ८×६½ इंच । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

८०९०. **दीपावलि महिमा—जिनप्रभसूरि** पत्र स० २१ । भाषा-सस्कृत विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८०९१. **दीक्षापटल**— × । पत्र स० ७ । आ० ९×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—विधान । र०काल × । ले०काल स० १९२७ । पूर्ण । वेष्टनस० २५८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८०९२ **दीक्षाविधि**— × । पत्र स० ३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधि विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

८०९३. **दीक्षाविधि**—× । पत्रस० १४ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले० काल स० १५३४ ज्येष्ठ सुदी । पूर्ण । वे० स० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

८०९४ **दुखहरण उद्यापन—यश कीर्ति** । पत्र स० ६ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १९३८ । पूर्ण । वेष्टन स० ५३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

८०९५. **देवपूजा**—× । पत्रस० ४ । आ० ८×५½ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन स० ६४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८०९६. **देवपूजा**—× । पत्र स० १५ । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

८०९७ **देवपूजा**—× । पत्रस० ३३ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक)

८०९८. **देवपूजा**—पत्रस० ११ । आ० ९ × ६ इञ्च । भाषा हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७९-१४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित पूजा है ।

८०९९. **देवपूजा भाषा—पं० जयचन्द छाबड़ा** । पत्रस० २५ । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १९१९ । पूर्ण । वेष्टन स० ४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

८१००. **देवपूजा भाषा-देवीदास** । पत्र स० २३ । आ० १२½×६¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल स० × । ले० काल × पूर्ण । वेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा ।

विशेष—पत्र २१ से दशलक्षण जखडी है (अपूर्ण)।

८१०१. **देवशास्त्र गुरु पूजा—द्यानतराय**। पत्रस० ६। आ० १०$\frac{1}{8}$×५ इन्च। भाषा-हिन्दी विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ११५३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८१०२. **देवगुरुशास्त्र पूजा जयमाल भाषा**—×। पत्रस० ३०। आ० १२$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{8}$ इन्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय—पूजा। र०काल ×। ले० काल स० १६ ०। पूर्ण। वेष्टन स० ११०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

८१०३. **देवसिद्ध पूजा**—×। पत्र स० १५। आ० १२ × ४$\frac{1}{2}$ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ७१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

८१०४ **धर्मचक्र पूजा—खड्गसेन**। पत्रस० ३१। आ० ११ × ५ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले०काल स० १८२३ फागुन बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० ६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा)।

विशेष—प० भागचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

८१०५. **धर्मचक्र पूजा—यशोनन्दि**। पत्रस० ४३। आ० ६×४$\frac{3}{4}$ इन्च। भाषा सस्कृत। विषय—पूजा। र०काल×। ले०काल स०—१८१६ माघ बुदी ७। पूर्ण। वेष्टनस० ३७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर।

विशेष—मिट्ठूराम अग्रवाल ने यह ग्र थ महादास के लिये लिखाया था।

८१०६ **धर्मचक्र पूजा**—×। पत्रस० २। आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय पूजा। र०काल ×। ले० काल स०—१८१८। पूर्ण। वेष्टन स० ३७१। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८१०७. **धर्मस्तभ - वर्द्धमानसूरि**। पत्र स० ३७। भाषा—सस्कृत। विषय ×। र०काल ×। लेखन काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष—इत्याचार्य श्री वर्द्धमानसूरिकृते आचारदिनकरे उभयधर्मस्तभे बलिदान कीर्त्तिनो नाम पट्त्रिशत्तमो उद्दे श।

८१०८. **धातकीखड द्वीप पूजा**—×। पत्र स० २०। आ० १२×५$\frac{1}{8}$ इन्च। भाषा—सस्कृत। विषय—पजा। र० काल ×। ले० काल ×। वेष्टन स० ६३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

८१०९. **ध्वजारोपणविधि**—×। पत्रस० ७। आ० ८×६$\frac{1}{2}$ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-विधान। र०काल×। ले०काल स० १६५८। पूर्ण। वेष्टन स० १५३७। **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

८११० **ध्वजारोपणविधि**—×। पत्रस० १२। आ० १२ × ५ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-विधान। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३००-११७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर।

८१११ ध्वजारोपणविधि—× । पत्रस० १० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २८० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८११२. ध्वजारोपणविधि— × । पत्रस० १८ । आ० ८×६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—विधान । र०काल × । ले०काल स० १९४७ । पूर्ण । वेष्टन स० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

विशेष—लखमीचन्द सागलपुर नग्र वालो ने प्रतिलिपि कराई थी ।

८११३. ध्वजारोपणविधि— × । पत्र स० ३ । आ० १०½×६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

८११४ नवकार पूजा— × । पत्र स० २२ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल स० १८६१ । पूर्ण । वेष्टनस० १३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बू दी

विशेष—अनादि मत्र पूजा भी है ।

८११५. नवकार पैंतीसी पूजा— × । पत्रस० २ । आ० ९½×६½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८१७ माघ बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ४२१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—लिखित चिमन सागरेण । णमोकार मत्र मे पैंतीस अक्षर है और उसी आधार पर रचना की गयी है ।

८११६. नवकार पैंतीसी पूजा— × । पत्रस० २१ । आ० ११½×५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३५५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

८११७. नवकार पैंतीसी व्रतोद्यापन पूजा—सुमतिसागर । पत्र स० १५ । भाषा-सस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८१६ आषाढ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

८११८. नवग्रह पूजा— × । पत्रस० ५ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर भण्डार ।

विशेष—रवि सोम एव राहु केतु आदि नवग्रहो के अनिष्ट निवारण हेतु नो तीर्थकरो की पूजाए है ।

८११९ नवग्रह पूजा— × । पत्र स० ६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३५८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

८१२०. **नवग्रह पूजा**—× । पत्रस० ५ । आ० १०½×५ इच । भापा-सस्कृत । विपय—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८८० सावरण सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १५४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

८१२१ **नवग्रह पूजा**— × । पत्र स० ४ । आ० १०½×४ इन्च । भापा—सस्कृत । विपय-पूजा । र०काल × ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

८१२२. **नवग्रह पूजा** । पत्र स० ७ । आ० १०×४¾ इन्च । भापा—सस्कृत । विपय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८९२ । पूर्ण । वेष्टन स० १५७/५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

८१२३ **नवग्रह पूजा** । पत्र स १५ । आ० १०½×४¾ इन्च । मापा-सस्कृत । विपय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८८६ माघ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १६०/५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

८१२४. **नवग्रह पूजा**—× । पत्र स० ७ ।आ० ८×६½ इन्च । भापा—सस्कृत । विपय —पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३११-११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—पद्मावती जाप्य भी है ।

८१२५. **नवग्रह पूजा**—× । पत्रस० ९ । आ० ११×७ इन्च । भाषा-सस्कृत । विपय—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १९२६ । पूर्ण । वेष्टन स० × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बूदी ।

८१२६. **नवग्रह पूजा**—× । पत्रस० ३ । आ० ९×३ इन्च । भाषा-सस्कृत । विपय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २९४-३८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभनाथ मन्दिर उदयपुर ।

८१२७. **प्रति स० २** । पत्र स० ३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २९५/३८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

८१२८. **नवग्रह पूजा**—× । पत्रस० ५ । आ० १२×५½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

८१२९. **नवग्रह पूजा** —× । पत्रस० १३ । आ० १२ × ६ इन्च । भापा—सस्कृत । विपय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)

विशेष—शातिक विधान भी दिया हुआ है ।

८१३०. **नवग्रह पूजा**—× । पत्र स० २३ । आ० १०×६ इन्च । भाषा-सस्कृत । विपय—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १९६५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

८१३१. नवग्रह पूजा—× । पत्रस० ७ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १६४८ । पूर्ण । वेष्टन स० १७६ (अ) । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

८१३२. नवग्रह पूजा—मनसुखलाल । पत्रस० १६ । आ० ८½×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६३५ । पूर्ण । वेष्टनस० १८७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

८१३३. प्रति सं० २ । पत्र स० १८ । आ० ११×७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १७४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खडेलवाल मदिर उदयपुर ।

८१३४. नवग्रह पूजा—× । पत्र स० १७ । आ० १०× ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८३४ कार्तिक बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० २०३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८१३५. नवग्रह पूजा -× । पत्रस० ८ । आ० १०×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

८१३६. नवग्रह पूजा— × । पत्रस० २८ । आ० ७×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६७६ भादवा बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

विशेष—गुटका साइज मे है ।

८१३७ नवग्रह पूजा— × । पत्रस० १० । आ० ७×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० १८६ र । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

८१३८. नवग्रह अरिष्ट निवारण पूजा—× । पत्र स० ४१ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय- पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल पचायती मदिर अलवर ।

विशेष—निम्न पूजाओ का और सग्रह है —

नदीश्वर पूजा, पार्श्वनाथ पूजा, रत्नत्रय पूजा ।
(सस्कृत) सिद्धचक्र पूजा, शीतलनाथ पूजा ।
सुगन्ध दशमी पूजा, रत्नत्रय पूजा ।

८१३९. नवग्रह पूजा विधान—× । पत्रस० १० । आ० ९¾×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६११ । पूर्ण । वेष्टनस० ३१२ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

८१४०. नवग्रह विधान—× । पत्र स०२० । आ० ८½×६ इच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १६५७ । पूर्ण । वेष्टन स० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बू दी ।

८१४१. न्हवण विधि—आशाधर। पत्र स० ३०। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय पूजा। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३१२-११७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

८१४२. न्हावण पाठ भाषा—बुध मोहन। पत्रस० ४। आ १०×४' इच। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-पूजा। र०काल ×। ले काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ८३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

श्री जिनेन्द्र अभिषेक पाठ सस्कृत भाषा
सकलकीर्ति मुनि शिष्य रच्यो धरि जिनमन आसा।
ताको अर्थ विचारि धारि मन मे हुलसायो।
बुध मोहन जिन न्हवन देसभाषा मे गायो।

इति भाषा न्हावण पाठ सपूर्ण।

८१४३. नाम निर्णय विधान—×। पत्र स० ११। आ० १०×५½ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय-विधान। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—दश बोल और दिये हैं।

८१४४. नित्य पूजा—×। पत्रस० २०। आ० १२×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना।

८१४५. नित्य पूजा—×। पत्रस० ६२। आ० ६½×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १६५४। पूर्ण। वेष्टनस० ७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी।

८१४६. नित्य पूजा—×। पत्र स० २०। आ० ६×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा।

८१४७. नित्य पूजा×। पत्रस० १२। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। वेष्टन स० ४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर मालपुरा (टोक)

८१४८ नित्य पूजा—×। पत्रस० २ से १२। भाषा हिन्दी (पद्य)। विषय—पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर बसवा।

८१४९. नित्य पूजा—×। पत्र स० ५०। आ० ८×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १८०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बूदी।

८१५०. नित्य पूजा—×। पत्र स० ३३। आ० ६×६ इच भाषा—हिन्दी-सस्कृत। विषय—पूजा। र०काल ×। ले० काल स० १६६६। पूर्ण। वेष्टन स० ६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी।

८१५१ नित्यपूजा पाठ—आशाधर। पत्र स० २०। आ० ११½×७½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १५१०। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

विशेष—मूल रचना मे आशाधर का नाम नही है पर लेखक ने आशाधर विरचित पूजा ग्रथ ऐसा उल्लेख किया है।

८१५२. नित्य पूजा पाठ—×। पत्र स० ६-२५। आ० ९×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत, हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक)।

८१५३. नित्य पूजा पाठ सग्रह—×। पत्रस० २२। आ० ६¾×८¼ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ८९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

८१५४. नित्य पूजा भाषा—पं० सदासुख कासलीवाल-पत्र स० ३१। आ० १३½×८½ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-पूजा। र०काल स० १९२१ माह सुदी २। ले०काल स० १९८६ कार्तिक बुदी ८।। पूर्ण। वेष्टन स० ४९१। **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

८१५५. प्रतिसं० २। पत्रस० ३६। आ० ११×७ इञ्च। ले० काल स० १९४१। पूर्ण। वेष्टनस० १६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर, बूदी।

विशेष—नयनापुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

८१५६. प्रति स० ३। पत्रस० ३६। आ० १२×५½ इञ्च। ले०काल स० १९२८ भादवा बुदी ८। पूर्ण। वेष्टनस० १। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

८१५७. प्रतिसं० ४। पत्रस० ५०। आ० ११½×६ इञ्च। ले०काल स० १९४०। पूर्ण। वेष्टनस० ७४। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

८१५८ प्रति स० ५। पत्रस० ५६। आ० १०½×८ इञ्च। ले० काल स० १९३६ ज्येष्ठ सुदी ७। पूर्ण। वेष्टनस० ३६/८७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीस पथी दौसा।

८१५९. प्रतिसं० ६। पत्रस० ३४। आ० १२½×८ इञ्च। ले०काल स०१९४६। पूर्ण। वेष्टनस० ११४/६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

८१६०. नित्य पूजा भाषा—×। पत्रस० १५। आ० १०½×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस०४७। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बडा बीस पथी दौसा।

८१६१. नित्य पूजा पाठ संग्रह— ×। पत्रस० ९०। आ० ११½×६ इञ्च। भाषा—हिन्दी, सस्कृत। विषय—पूजा पाठ। र०काल ×। ले०काल स० १९४७। पूर्ण। वेष्टनस० १३८-५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)।

८१६२ **नित्य पूजा वचनिका—जयचन्द छाबडा** । पत्रस० ५२ । ग्रा० ८$\frac{1}{2}$×७$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल स० १९३५ । पूर्ण । वेष्टनस० १३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर ।

८१६३. **नित्य पूजा सग्रह** — × । पत्र स० ७५ । ग्रा० ६×१२$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

८१६४ **नित्य नियम पूजा**— × । पत्र स० १४ । ग्रा० १०$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल । ले० काल × । स० १९४२ पौष बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर चौगान बूदी ।

विशेष—श्री कृष्णलाल भट्ट ने लोचनपुर मे लिखा था ।

८१६५. **नित्य नियम पूजा**—× । पत्रस० १४ । ग्रा० १२ × ७ इञ्च । भाषा—हिन्दी-सस्कृत । विषय – पूजा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

विशेष—प्रतिदिन करने योग्य पूजाओ का सग्रह है ।

८१६६. **नित्य नियम पूजा**—× । पत्र स० ४३ । ग्रा० १२×८ इञ्च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

विशेष—४३ से आगे पत्र नही है ।

८१६७ **नित्य नियम पूजा**— × । पत्रस० १९ । ग्रा० ६$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा हिन्दी-सस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा) ।

८१६८. **नित्य नियम पूजा**— × । पत्रस० ५० । ग्रा० १२ × ८ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १९५३ । पूर्ण । वेष्टन स० २३६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—व्रतो की पूजाए भी ह ।

८१६९. **नित्य नियम पूजा**- × । पत्र स० ४८ । ग्रा० ११×५$\frac{1}{2}$ इ च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल × । । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

८१७०. **नित्य नियम पूजा**—× । पत्र स० १० । ग्रा० ११ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५८२ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

८१७१ **नित्य नियम पूजा**-× । पत्र स० २४ । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

८१७२ **नित्य नियम पूजा**—× ।पत्र स० २२ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८२२ । पूर्ण । वेष्टन स ३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—मायाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

८१७३. **नित्य नैमित्तिक पूजा**—× । पत्रस० १०६ । आ० ७×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत । हिन्दी । विषय-पूजा । ले०काल स० १६६८ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान, (बूंदी) ।

विशेष—बजरगलाल ने बूंदी मे लिखा था ।

८१७४. **निर्दोष सप्तमी व्रत पूजा—ब्र० जिनदास** । पत्रस० २१ । आ०१०½×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६० । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

८१७५. **निर्दोष सप्तमी व्रतोद्यापन**—× । पत्रस० १६ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल स०१७४६ । पूर्ण । वेष्टनस० ४३५/३५४ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन स भवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

८१७६ **निर्वाण काड गाथा व पूजा—उदयकीर्ति**—पत्र स० ४ । आ० ८×३¾ इञ्च । भाषा-प्राकृत, संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल स० १६२३ । पूर्ण । वेष्टन स० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

८१७७. **निर्वाणकाण्ड पूजा** – × । पत्रस० ८ । आ० १२½×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल स० १८७१ भादवा बुदी ७ । ले० काल । पूर्ण । वेष्टनस० ५१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—अत मे भैय्या भगवती दास कृत निर्वाण काण्ड भाषा भी है । इस भण्डार मे ३ प्रतिया और भी हैं ।

८१७८ **निर्वाण कल्याण पूजा**—× । पत्रस० १५ । आ० ११ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३५३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—भगवान महावीर के निर्वाण कल्याणककी पूजा है ।

८१७९ **निर्वाण क्षेत्र पूजा**—× । पत्र स० १२ । आ० ६⅞×६⅞ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल स० १८७१ भादो सुदी १ । ले०काल स० १८८६ जेठ बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

विशेष—नानिगराम अग्रवाल से देवीदास श्रीमाल ने करौली मे लिखवाई थी ।

८१८०. **निर्वाण क्षेत्र पूजा**—× । पत्र स० १७ । आ० ७¾×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—पूजा र०काल × । ले० काल स० १८८५ चैत वदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० ३६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन सौगानी मन्दिर करौली ।

विशेष—लल्लूराम अजमेरा ने अलवर मे प्रतिलिपि की थी ।

८१८१. **निर्वाण क्षेत्र पूजा**—× । पत्रस० १२ । आ० ११ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल स० १८७१ । ले०काल स० १९३० । पूर्ण । वेष्टनस० १२६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर वडा वीस पथी दौसा ।

८१८२ **निर्वाण क्षेत्र पूजा**—× । पत्रस० ६ । आ० ८½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८९२ आषाढ बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति—स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा राज० ।

८१८३. **निर्वाण क्षेत्र पूजा**—× । पत्रस० ११ । आ० ११×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दो । विषय-पूजा । र०काल स० १८७१ । ले०काल स० १९९९ । पूर्ण । वेष्टन स० ८२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

८१८४ **निर्वाण क्षेत्र पूजा** × । पत्र स० १६ । आ० १३×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल स० १८७१ भादवा सुदी ७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६२४ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

८१८५. **निर्वाण क्षेत्र मडल पूजा**—× । पत्रस० ४४ । आ० १२ × ४½ इच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल स० १९१९ कार्तिक बुदी १३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

८१८६. **निर्वाण क्षेत्र मण्डल पूजा**—× । पत्र स० २२ । आ० ११½ × ५½ इच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ४८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

८१८७ **निर्वाण मगल विधान—जगराम** । पत्रस० २९ । आ० १३×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल स० १८४६ । ले० काल स० १८७१ पूर्ण । वेष्टनस० ११४ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

८१८८ **प्रतिस० २** । पत्र स० ३६ । आ० ११½×६ इञ्च । ले० काल स० १८८९ भादो सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर मालपुरा (टोक) ।

विशेष—पत्र ३४ से आगे **श्रीजिन** स्तवन है ।

८१८९. **प्रतिस० ३** । पत्रस० २२ । आ० ९½×६इच । ले०काल स० १९५५ । पूर्ण । वेष्टन स० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

८१९०. **नन्दि मगल विधान**—× । पत्रस० ८ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २९८-११७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

८१९१. **नदीश्वर जयमाल**—× । पत्रस० ८ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६२४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८१९२ नदीश्वर जयमाल—× । पत्रस० ७ । आ० ८$\frac{3}{4}$×४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पुजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अजमेर भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति सस्कृत टीका सहित है । अष्टाह्निका पर्व की पूजा भी है ।

८१९३. नंदीश्वर द्वीप पूजा—× । पत्रस० १९ । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल स० १८७९ कार्तिक बुदी ५ ।ले० काल स० १९४१ । पूर्ण । वेष्टनस० ७/३३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

८१९४. नदीश्वर द्वीप पूजा—× । पत्रस० ७३ । आ०—× । भाषा— । विषय-पुजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

८१९५. नदीश्वर द्वीप पूजा—× । पत्रस० ११ । भाषा सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स०१८९० । पूर्ण । वेष्टन स० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

८१९६. नदीश्वर द्वीप पूजा—× । पत्र स० ५२ । आ० ७$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५०/७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

८१९७. नदीश्वर द्वीप पूजा—× । पत्र स० १५ । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—पूजा । र०काल स० १८६९ । ले०काल स० १८८० । पूर्ण । वेष्टन स० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर वसवा ।

विशेष—वीर नगर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

८१९८. नदीश्वर द्वीप पूजा उद्यापन—× । पत्र स० १० । आ० ९$\frac{1}{2}$×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १७३० । पूर्ण । वेष्टन स० २९४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूदी ।

८१९९ नदीश्वर पक्ति पूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्रस० ५-२२ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २८०/३४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

८२००. नन्दीश्वर पक्ति पूजा—× । पत्रस० ६ । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४५३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८२०१. —नदीश्वर पक्ति पूजा—× । पत्र स० ८ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

८२०२. नदीश्वर पंक्ति पूजा—× । पत्रस० ११ । आ० १०×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १९०१ आसोज बुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा ।

८२०३ **नदीश्वर पक्ति पूजा**—X । पत्र स० १३ ग्रा० १२X४ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पुजा । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ३५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

८२०४ **नदीश्वर पक्ति पूजा**— X । पत्रस० ५ । ग्रा० ११X५ इन्च । भाषा-स स्कृत । विषय—पूजा । र० काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ३६० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८२०५ **नदीश्वर व्रतोद्यापन**—X । पत्रस० ४ । ग्रा० १५X४ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल X । ले० काल स० १८४४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

८२०६. **नदीश्वर द्वीप पूजा**—X । पत्रस० १० । ग्रा० १०½X ४½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पुजा । र०कारा X । ले०काल स०१६०५ । पूर्ण । वेष्टनस० ३०६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

८२०७. **नदीश्वर पूजा—टेकचन्द** । पत्र स० ३६ । ग्रा० १२X८ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-स्तोत्र । र०काल स० १८८५ सावन सुदी १० । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

८२०८. **प्रति स० २** । पत्रस० ४१ । ग्रा० १२½X६½ इच । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान** —भ० दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

८२०९ **प्रति स० ३** । पत्रस० ५७ । ग्रा० ११½X५½ इन्च । ले०काल स० १६०४ सावण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर मालपुरा (टोक)

८२१० **प्रति स० ४** । पत्रस० ४३ । ग्रा० १०½X४½ इन्च । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ५०६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

८२११ **नदीश्वर पूजा—डालूराम** । पत्र स० १८ । ग्रा० ११½X७ इन्च । भाषा हिन्दी । विषय-पुजा । र०काल स० १८७६ । ले०काल स० १६४१ । पूर्ण । वेष्टन स० १७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

८२१२. **प्रति स० २** । पत्रस०१४ । ग्रा० १२½X८ इन्च । ले०काल स० १६३४ । पूर्ण । वेष्टनस० १७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

८२१३ **प्रतिसं० ३** । पत्र स० २ । ग्रा० १२½X८ इन्च । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १७८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—द्यानतराय कृत है ।

८२१४. **प्रति स० ४** । पत्रस० १५ । ग्रा० १२X७½ इन्च । ले०काल स० १६१७ । पूर्ण । वेष्टन स० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

८२१५ **प्रति स० ५** । पत्रस० १४ । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टनस० १५६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

८२१६ प्रतिसं० ६ । पत्रस० २४ । आ० १०×६$\frac{३}{४}$ इञ्च । ले०काल स० १९६२ । पूर्ण । वेष्टनस० १३५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन खडेलवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—आमेट के ब्राह्मण किशनलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

८२१७. प्रतिसं० ७ । पत्रस० १६ । आ० १२$\frac{१}{४}$×६$\frac{३}{४}$ इञ्च । ले० काल स० १९८३ । पूर्ण । वेप्टन स० २१७-८७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

८२१८ नदीश्वर पूजा—रत्ननंदि । पत्र स० १६ । आ० ६$\frac{१}{२}$×५$\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । र०काल× । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १९५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूदी ।

८२१९. नदीश्वर पूजा—× । पत्र स० १२ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३५७ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८२२०. नदीश्वर पूजा—× । पत्र स० ५ । आ० १०$\frac{१}{२}$×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत-सस्कृत । विषय- पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८७७ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८२२१. नदीश्वर पूजा— × । पत्रस० २ । आ० १२×५$\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक) ।

८२२२. नंदीश्वर पूजा—×। पत्रस० ७ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल स० १८२१ मगसिर बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० २६९ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूदी ।

विशेष—सुरोज नगर मे पार्श्वनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी । प० आलमदास ने जिनदास के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

८२२३. नंदीश्वर पूजा—× । पत्रस० १ । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६२७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८२२४ नदीश्वर पूजा— × । पत्र स० ३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६–१०८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

८२२५ नंदीश्वर पूजा—× । पत्रस० ६० । आ० १०×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

८२२६. नदीश्वर पूजा (बडी)—× । पत्र स० ६७ । आ० ८×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय–पूजा । र०काल× । ले० काल× । पूर्ण । वेष्टनस० १८६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८२२७. नंदीश्वर पूजा विधान—×। पत्र स० ४५ । ग्रा० ११½ × ८ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल स० १६३५ सावण बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—इस पर वेष्टन सख्या नही है ।

८२२८. नदीश्वर द्वीप उद्यापन पूजा—× । पत्र स० १७ । ग्रा० ८×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८५७ चैत बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ७६-४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—प० शिवजीराम की पुस्तक है तक्षकपुर मे प्रतिलिपि की गयी थी ।

८२२९ नन्दीश्वर द्वीप पूजा—प० जिनेश्वरदास । पत्रस० ६७ । ग्रा० १३ × ८ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८८१ । पूर्ण । वेष्टनस० ४८/१०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

८२३०. नदीश्वर द्वीप पूजा—लाल । । पत्रस० ११ । ग्रा० १०×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

८२३१. नन्दीश्वर द्वीप पूजा—विरधीचन्द । पत्रस० ४४ । ग्रा० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल स० १६०३ । ले०काल स० १६०४ । पूर्ण । वेष्टन स० १०६, ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

विशेष—विरधीचन्द मारोठ नगर के रहने वाले थे ।

८२३२. नन्दीश्वर द्वीप पूजा—× । पत्रस० ३३ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल ×। ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—दौलतराम कृत छहढाला तथा नित्य पूजा भी है ।

८२३३ नैमित्तिक पूजा सग्रह—× । पत्रस० ५२ । ग्रा० ११¾×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक)

विशेष - निम्न पूजाग्रो का सग्रह है —

दश लक्षण पूजा, सुख सपत्ति पूजा, पचमी व्रत पूजा, मेघमाला व्रतोद्यापन पूजा, कर्मचूर व्रतोद्यापन पूजा एव ग्रनत व्रत पूजा ।

८२३४ नैमित्तक पूजा सग्रह—× । पत्र स० ६१ । ग्रा० १२½×६¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—दश लक्षण, रत्नत्रय एव सोलह कारण आदि पूजाये हैं ।

८२३५. पक्ति माला—× । पत्रस० ८६ । भाषा-हिन्दी । विषय-पुजा । र०काल × । ले०काल स० १७८६ । ग्रपूर्ण । वेष्टनस० ६३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—बीच २ के पत्र नही हैं। सख्या दी हुई है।

८२३६. पच कल्याणक उद्यापन—गूजरमल ठग । पत्र स० ७४ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन स० ९४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोट्यो का नैणवा ।

८२३७. पच कल्याणक उद्यापन—× । पत्रस० ३१ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-पूजा । र०काल× । ले० काल स० १९४० । पूर्ण । वेष्टन स० ८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

८२३८ पच कल्याणक पूजा—टेकचंद । पत्र स० ३३ । आ० १२⅞×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १९८५ । पूर्ण । वेष्टनस० ६०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८२३९. प्रतिसं० २ । पत्र स० २२ । ले० काल स० १९२२ । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

८२४०. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १६ । आ० ११×७ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

८२४१. पच कल्याणक पूजा—प्रभाचन्द । पत्रस० १३ । आ० १०×७ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १९३८ । पूर्ण । वेष्टनस० १७-१२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—लिखित नग सलूवरमध्ये । लिखापित पडित जी श्रीलाल चिरजीव । शुभ सवत् १९३८ वर्षे शाके १८०३ प्र० मास पौष बुदी १२ ।

८२४२. पंच कल्याणक पूजा—पं० बुधजन । पत्रस० ३८ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १९३३ अषाढ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० ६०-३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बडा बीसपथी मन्दिर दौसा ।

विशेष—शिवबक्स ने प्रतिलिपि की थी ।

८२४३. पच कल्याणक पूजा—रामचन्द्र । पत्रस० १९ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८२२ ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—कुभेर नगर मे प्रतिलिपि हुई थी । चौबीस तीर्थंकरो के पच कल्याणक का वर्णन है ।

८२४४ पच कल्याणक—वादिभूषण (भुवनकीर्ति के शिष्य) । पत्र स० १९ । आ० १०½×४½ इच । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १७१३ । पूर्ण । वेष्टनस० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

८२४५. पच कल्याणक पूजा—सुधा सागर । पत्रस० १५ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

८२४६. प्रति सं० २। पत्र स० १६। आ० ७½×५½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १२६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी।

विशेष—प्रथम ५ पत्रो मे आशाधर कृत पच कल्याणक माला दी हुई है।

८२४७. प्रति स० ३। पत्रस० २४। आ० १०½×४½ इञ्च। ले०काल स० १८४४। पूर्ण। वेष्टन स० ६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष - सदासुख ने कोटा के लाडपुरा मे प्रतिलिपि की थी।

लोकाकास ग्रहोत्तमे सुजिनयो जात प्रदीपस्सदा।
सद्रत्नत्रय रत्नदर्शनपर पापे धनी नाशक।
श्रीमछी श्रवणोत्तमस्यतनुज प्रागवाट वशोभवो।
हसाख्वाय नत प्रयच्छतु सताग्र श्री सुधासागर।

८२४८. प्रतिस० ४। पत्रस० २१। आ० ६''×६ इञ्च। ले०काल स० १६०३। पूर्ण। वेष्टन स० ७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष—गुजराती ब्राह्मण हीरालाल ने प्रतिलिपि की थी।

८२४६. प्रति सं० ५। पत्र स० १२। ले०काल स० १६०२। पूर्ण। वेप्टन स० ५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर बसवा।

८२५०. प्रति स० ६। पत्रस० २१। ले०काल स० १६२०। पूर्ण। वेष्टनस० ५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर बसवा।

८२५१ प्रति स० ७। पत्रस० २१। आ० १०½×५ इञ्च। ले० काल स० १७८ पौष सुदी ११। पूर्ण। वेष्टनस० २७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

८२५२ पंच कल्याणक पूजा—सुमति सागर। पत्र स० १५। आ० ११×६½ इच। भाषा—सस्कृत। विषय—पूजा। र०काल ×। ले० काल स० १८१७ कार्तिक बुदी ११। पूर्ण। वेष्टन स० ११०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बयाना।

विशेष—महाराष्ट्र प्रदेश मे वल्लभपुर मे नेमीश्वर चैत्यालय मे ग्रन्थ रचना हुई थी। लालचन्द पाडे ने करौली मे भूरामल के लिये प्रतिलिपि की थी।

८२५३ प्रतिस० २। पत्र स० १४। आ० १३½×६½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेप्टन स० ५०–४४। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली।

८२५४. प्रतिस० ३। पत्रस० १६। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १२३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

८२५५. पच कल्याण पूजा चन्द्रकीर्त्ति। पत्रस० २६। भाषा—सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

८२५६. पच कल्याणक पूजा—×। पत्रस० १६। आ० ११½×४½ इच। भाषा-सस्कृत। विषय—पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेप्टन स० १५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी।

८२५७. पंच कल्याणक पूजा—× । पत्र स० २४ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

८२५८. पंच कल्याणक पूजा—× । पत्रस० १७ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा —सस्कृत । विषय- पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २०६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

८२५९. पंच कल्याणक पूजा—× । पत्र स० १८ । आ० १०½×५¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बू दी) ।

८२६०. पंच कल्याणक पूजा—× । पत्र स० १५ । आ० १०×७½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

८२६१. पंच कल्याणक पूजा—× । पत्रस० २५ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८०१ आसोज बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

८२६२. पंच कल्याणक पूजा—× । पत्र स० १४ । आ० ९½×६ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८१७ वैशाख सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० २७८ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मदिर वोरसली कोटा ।

८२६३. पंच कल्याणक विधान—भट्टारक सुरेन्द्र कीर्ति × । पत्रस० ४६ । आ०९×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २३४ । **प्राप्ति-स्थान** - दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

८२६४. पंच कल्याणक पूजा—× । पत्रस० १८ । आ० ११×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२२४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८२६५ पंच कल्याण पूजा—× । पत्रस० १३ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विपय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७३ । **प्राप्ति स्थान**-भ०दि० जैन मदिर अजमेर ।

८२६६. पंच कल्याणक पूजा—× । पत्र स० २० । आ० १०½×५¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विपय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४७९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

८२६७. पंच कल्याणक पूजा—× । पत्रस० ३७ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १९०७ भादवा बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

८२६८ पाच कल्याणक पूजा—X । पत्रस० १६ । आ० ६ × ६ इन्च । भापा-हिन्दी पद्य । विपय–पूजा । र०काल X। ले०काल X। पूर्ण । वेष्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

८२६९ पाच कल्याणक पूजा—X ।'पत्र० स० १३ । आ० ७½×४½ इन्च । भापा–हिन्दी । पद्य । विपय–पूजा । र०काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बू दी) ।

विशेष—तप कल्याणक तक ही पजा है । आगे लिखना बन्द कर दिया गया है ।

८२७० पाच कल्याणक पूजा—X । पत्रस० २१ । आ० ६X४ इन्च । भापा–हिन्दी । विपय–पूजा । र०काल X । ले०काल स० १९४८ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६३/३०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

८२७१ पाच कल्याणक पूजा—X । पत्र स० २२ । भापा–हिन्दी । विपय–पूजा । र०काल X । ले० काल स० १९०५ कार्तिक बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १२५ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—दो प्रतिया और हैं ।

८२७२ पाच कल्याणक पूजा—X । पत्र स० ६ । आ० १०½X४½ इन्च । भापा-हिन्दी । विपय—पूजा । र०काल X । ले०काल स० १९८२ । पूर्ण । वेप्टन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

८२७३. पाच कल्याणक पूजा जयमाल—X । पत्रस० १० । आ० १०×८ इन्च । भापा–हिन्दी । विपय–पूजा । र०काल X। ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राजस्थान) ।

८२७४ पाच कल्याणक पूजा—X । पत्रस० १५ । आ० १२X५ इन्च । भापा—हिन्दी । विपय—पूजा । र० काल X । ले०काल स० १८३६ । पूर्ण । वेष्टनस० ६९-६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राजस्थान) ।

८२७५ पाच कल्याणक पूजा—X । पत्रस० ३५ । आ० ७X७ इन्च । भापा–हिन्दी । विपय-पूजा । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टनस० १८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

विशेष—प्रति गुटकाकार है ।

८२७६ पाच कल्याणक पूजा—X। पत्रस० ३४। आ० १०X४½ इन्च । भापा–हिन्दी पद्य । विषय–पूजा । र०काल X । ले० काल स० १९८४ । पूर्ण । वेप्टन स० ३४३/१३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डू गरपुर ।

८२७७ पाच कल्याणक पूजा—X । पत्र स० २७ । आ० ६X६ इन्च । भापा-हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल X । ले० काल स० १९०७ । पूर्ण । वेष्टन स० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

८२७८. **पंच कल्याणक पूजा**—×। पत्रस० १७। आ० ६३/४×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी, पद्य। विषय-पूजा। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर।

८२७९. **प्रति स० २**। पत्र स० ५८। आ० १२×७ इञ्च। ले०काल ×। अपूर्ण वेष्टन स० १४४। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

८२८० **पंच कल्याणक विधान—हरीकिशन**—×। पत्रस० २१। आ० १४×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी-गद्य। विषय-पूजा। र०काल स० १८८० अषाढ सुदी १५। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १६२। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी।

८२८१ **पंच कल्याण व्रत टिप्पण**—×। पत्र स० ४। आ०—×। भाषा-हिन्दी। विषय—पूजा विधान। र०काल—×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर।

८२८२ **पंचज्ञान पूजा**—पत्र स० ५। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल—×। ले०काल—×। पूर्ण। वेष्टन स० ६६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

८२८३. **पंचगुरु गुणमाला पूजा—भ० शुभचन्द्र**। पत्र स० १६। आ० ११×४१/२ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

८२८४. **पंच परमेष्ठी पूजा—भ० देवेन्द्रकीर्ति**। पत्रस० ७। आ०९×६ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल स० १९३८। पूर्ण। वेष्टन स० ५१९। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर।

८२८५ **पंच परमेष्ठी पूजा—यशोनन्दि**। पत्र स० ३२। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल स० १८५२। पूर्ण। वेष्टनस० ३५९। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८२८६. **प्रति स० २**। पत्र स० ३५। आ० १२१/२×५१/२ इञ्च। ले०काल स० १८८७ आषाढ बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० १४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक)।

विशेष—प० शिवलाल के पठनार्थ रामनाथ भट्ट ने मालपुरा मे प्रतिलिपि की थी।

८२८७. **प्रतिस० ३**। पत्र स० ३१। आ० १३×५१/२ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १५७। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खडेलवाल पचायती मन्दिर अलवर।

८२८८ **प्रतिसं० ४**। पत्रस० ३६। आ० ९×७ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ८५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर।

८२८९ **प्रतिसं० ५**। पत्रस० ४०। आ० ११×६१/२ इञ्च। ले०काल स० १८१७ भादवा सुदी ५। पूर्ण। वेष्टनस० ८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

विशेष—उदयराम के पुत्र रूरो ने ग्रंथ की प्रतिलिपि बयाना मे करायी थी।

८२९०. **प्रतिसं० ६** । पत्र स० २९ । ले० काल स० १८५६ जेठ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १९ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

८२९१. **प्रति स० ७** । पत्रस० २५ । ग्रा० ११½×४½ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वोरसली कोटा ।

८२९२ **प्रतिस० ८** । पत्र स० ३८ । ग्रा० १०½×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

८२९३. **प्रतिस० ९** । पत्र स० २८ । ग्रा० ११×५½ इञ्च । ले० काल स० १८३५ जेठ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रभिनन्दन स्वामी, वू दी ।

८२९४. **प्रतिस० १०** । पत्र स० २७ । ग्रा० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर,जयपुर ।

८२९५ **प्रतिसं० ११** । पत्र स० ३७ । ग्रा० १०½×५ इञ्च । ले० काल स० १९०५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चोगान वू दी ।

८२९६ **प्रतिस० १२** । पत्र स० २७ । ग्रा० १०½×७½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०४ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन ग्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

८२९७. **प च परमेष्ठी पूजा—भ० शुभचन्द्र** । पत्रस० २४ । ग्रा० ५½×४½इञ्च । भापा—सस्कृत । विपय—पूजा । र० काल × । ले०काल स० १७८७ । पूर्ण । वेष्टन स० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

ग्र तिम प्रशस्ति—

श्री मूल सघे जननदसघ ।
तया भवछी विजादिकीर्त्ति ।
ततपट्टधारी शुभचन्द्रदेव ।
कल्यानमात्मा कृताप्तपूजा । १२ ।

विशेष—श्री लालचन्द्र ने लिखा था ।

८२९८. **प च परमेष्ठी पूजा—टेकचन्द** । पत्र स० ७ । ग्रा० ८×६½ इच । भापा-हिन्दी पद्य । विपय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२८/९१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियो का डू गरपुर ।

८२९९ **प्रतिस० २** । पत्रस० ३३ । ग्रा० ११×५½ इञ्च । ले०काल स० १८६६ । पूर्ण । वेष्टनस० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मदिर उदयपुर ।

८३०० **प्रतिसं० ३** । पत्र स० १५ । ग्रा० १२×६ इञ्च । ले० काल स० १८५९ । पूर्ण । वेष्टन स० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—उदयपुर मे नगराज जोशी ने प्रतिलिपि की थी ।

८३०१. **प्रति स० ४** । पत्र स० ३३ । ले० काल स० १८५५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७८/३०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

८३०२. **प्रति स० ५** । पत्र स० ३३ । ग्रा० ११×४ इञ्च । ले०कालस०—१८५५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४४६-३१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

८३०३ **प्रति सं० ६।** पत्र स० १२। ले० काल X। अपूर्ण। वेष्टन स० १२२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

८३०४. प्रतिसं० ७। पत्र स० ३४। आ० ६$\frac{1}{4}$X४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल X। पूर्ण। वेप्टन स० १४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर।

८३०५. प्रतिसं० ८। पत्रस० १५। आ० १२X७$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल स०-१६३५ फागुण मुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० ५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीरजी (बूदी)।

विशेष—ईसरदावासी हीरालाल भावसा ने लिखवाया था।

८३०६. पञ्च परमेष्ठी पूजा—डालूराम। पत्रस० ४०। आ० १०$\frac{1}{2}$X५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र०काल स० १८९२ मगसिर बुदी ६। ले०काल स० १६४८ कार्तिक बुदी २। पूर्ण। वेष्टनस० २। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर टोडारायसिंह (टोंक)।

८३०७ प्रतिसं० २। पत्रस० ३६। आ० ६X६ इञ्च। ले०काल स० १८८१ आसोज बुदी १०। पूर्ण। वेष्टनस० ४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर मालपुरा (टोंक)।

८३०८. प्रतिसं० ३। पत्रस० ३०। आ० १२$\frac{1}{4}$ X ८ इञ्च। ले०काल स० १६६१ आपाढ सुदी ८। पूर्ण। वेप्टन स० ४८७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

८३०९. प्रतिसं० ४। पत्र स० २२। आ० १४X७$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल स० १६६१। पूर्ण। वेष्टन स० ४५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर नैणवा।

८३१० प्रति स० ५। पत्रस० ४७। आ० १०$\frac{1}{2}$X५$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले०काल X। पूर्ण। वेष्टन स० २५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा)।

८३११ प्रतिसं० ६। पत्र स० ४१। आ० ८$\frac{1}{2}$X६ इञ्च। ले०काल स० १८७६ श्रावण बुदी १२। पूर्ण। वेष्टन स० २७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)।

विशेष—भादवा मे प्रतिलिपि हुई थी।

८३१२. पंच मंगल पूजा X। पत्र स० ३४। आ० ११X११$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल X। ले०काल X। पूर्ण। वेष्टन स० २८४-१११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

८३१३. पंच परमेष्ठी पूजा—बुधजन। पत्र स० १६। आ० १०X६$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय—पूजा। र०काल X। ले० काल X। पूर्ण। वेष्टन स० १३०। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा।

८३१४. पंच परमेष्ठी पूजा—X। पत्र स० १३। आ० ६$\frac{1}{2}$X५$\frac{1}{2}$ इच। भाषा-सस्कृत। विषय—पूजा। र०काल X। ले० काल स०—१८६६। पूर्ण। वेष्टनस० ३८५-१४४। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर।

८३१५. पाच परमेष्ठी पूजा X। पत्रस० १८। आ० ११ X ५ इञ्च। विषय-पूजा। भाषा—सस्कृत। र० काल X। ले०काल X। पूर्ण। वेष्टनस० ३९५-१४९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

८३१६. **पच परमेष्ठी पूजा** × । पत्रस० ४० । भाषा-सस्कृत । र०काल × । ले० काल स० १६५८ । पूर्ण । वेष्टन स० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—कु भावती नगरी मे प्रतिलिपि की गई थी ।

८३१७. **पच परमेष्ठी पूजा** × । पत्रस० २५ । भाषा--सस्कृत । विषय—पूजा । ले०काल—१८५७ । पूर्ण । वेष्टन स० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८३१८ **पचपरमेष्ठी पूजा** × । पत्रस० २-५ आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६६५ । अपूर्ण । वेष्टनस० ३५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

नागराज लिखत । सवत् १६६५ वर्षे आषाढ़ मासे कृष्णपक्षे पचमीदिने गुरवासरे लिखत ।

८३१९. **पचपरमेष्ठी पूजा** × । पत्र स० ४ । आ० १५×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

८३२० **पच परमेष्ठी पूजा** × । पत्र स० २ । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७९-३०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

८३२१. **प्रतिस० २** । पत्रस० ४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७९-३०९ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—आचार्य सोमकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

८३२२. **पच परमेष्ठी पूजा** × । पत्र स० ६६ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन स० १४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलामा (बू दी) ।

विशेष—देवेन्द्र विमल ने प्रतिलिपि की थी ।

८३२३ **पच परमेष्ठी पूजा** । पत्रस० ३६ । आ० ८¾ × ५½ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बू दी ।

८३२४. **पच परमेष्ठी पूजा** × । पत्रस० ३६ । आ० ११¾×५¼ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक) ।

८३२५ **पच परमेष्ठी पूजा**—× । पत्र स० ३५ । आ० ९½×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८७४ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ११४६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८३२६ **पंच परमेष्ठी पूजा** × । पत्रस० ३९ । आ० ९×४¼ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—पूजा । र०काल स० १८९८ मगसिर सुदी ८ । ले०काल स०—१८८६ ज्येष्ठ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १३०० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८३२७ पच परमेष्ठी पूजा × । पत्रस० २८ । आ० ९×६ इञ्च । भापा-सस्कृत । विपय-पूजा । र०काल—× । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११३७ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८३२८ पच परमेष्ठी पूजा × । पत्र स० ४ । आ० ११×५१/४ इञ्च । भापा-हिन्दी । विपय पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १०३ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८३२९. पच परमेष्ठी पूजा—× । पत्रस० १३ । आ० १३×५ इञ्च । भापा-हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३१/८६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

८३३०. पच परमेष्ठी पूजा— × । पत्रस० ३३ । आ० १०×६१/२ इञ्च । भापा-हिन्दी (पद्य) । विपय-पूजा । र०काल × । ले०काल× । पूर्ण । वेष्टन स० १२९ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन तेरहपथी मदिर दौसा ।

विशेष—प्रति चूहो ने खा रखी है ।

८३३१. पच परमेष्ठी पूजा—× । पत्रस० ४२ । आ० १०१/२×५ इञ्च । भापा-हिन्दी पद्य । विपय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६५ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन बडा बीसपथी मन्दिर दौसा ।

८३३२. पच परमेष्ठी पूजा—× । पत्रस० ३७ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विपय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८१८ । पूर्ण । वेष्टन स० १२५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

८३३३ प्रतिस० २ । पत्र स० ४२ । आ० १११/२×५१/२ इञ्च । ले०काल× । पूर्ण । वेष्टन स० १२१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

८३३४. प्रति स० ३ । पत्रस० ४४ । आ० ८१/२×६३/४ इञ्च । ले०काल स० १९५६ कार्तिक बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १४७ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

८३३५. पच परमेष्ठी पूजा—× । पत्रस० ५० । आ० १२१/२×७१/२ इञ्च । भापा-हिन्दी पद्य । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

८३३६ पच परमेष्ठी पूजा—× । पत्रस० ३६ । आ० ११×६१/२ इञ्च । भापा हिन्दी पद्य । विपय-पूजा । र०काल स० १८६२ । ले०काल स० १९२६ । पूर्ण । वेष्टनस० १५६ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन खडेलवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—अलवर मे प्रतिलिपि की गई थी । एक प्रति और है जिसकी पत्र स० २४ है ।

८३३७ पच परमेष्ठी पूजा—× । पत्रस० ५२ । आ० ९×६१/२ इञ्च । भापा—हिन्दी । विपय-पुजा । र०काल स० १८६२ मार्गशीर्ष बुदी ८ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २२/१५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)

८३३८. पच परमेष्ठी नमस्कार पूजा—× । पत्रस० ७ । ग्रा० ९½×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३९१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

८३३९ पचबालयती तीर्थंकर पूजा—× । पत्र स० १० । ग्रा० ८×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५९७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८३४०. पंचमास चतुर्दशी व्रत पूजा—× । पत्र स० ८ । ग्रा० ९½×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १९५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक)

८३४१ पचमास चतुर्दशी व्रतोद्यापन—भ० सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र स० ५ । ग्रा० ११½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

८३४२. प्रति स० २ । पत्रस० ६ । ग्रा० ९½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

८३४३. पंचमास चतुर्दशी व्रतोद्यापन—× । पत्रस० ५ । ग्रा० १०½×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० -१८/३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

८३४४. पचमास चतुर्दशी व्रतोद्यापन— × । पत्रस० ८ । ग्रा० १०½×६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

८३४५ पचमास चतुर्दशी व्रतोद्यापन विधि— × पत्रस० ४७ ।ग्रा० १०×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०कालx ले० काल स० १८८६ सावण सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १२० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—वृजलाल गोकलचन्द वैद ने पचायती मन्दिर के लिए वालमुकुन्द से प्रतिलिपि करवाई थी ।

८३४६. पचमी विधान—× । पत्रस० १३ । ग्रा० ११× ७ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

८३४७ पचमी व्रत पूजा —कल्याण सागर । पत्रस० ६ । ग्रा० १०½ × ६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

अन्तिम पाठ—

तीर्थकरा सकलल कहितकरास्ते ।
देवेन्द्रवृंदमहिता सहिता गुणौघै ।

वृदावती नभशता वशता शिवानी
कुर्वंतु शुद्ध वनितासुत वित्तजानि ॥१॥
जगति विदति कीर्ते रामकीर्तेपु शिष्यौ
जिनपतिपदभक्तौ हर्षनामा सुधरि ।
रचित उदयमुतेन कल्याण भूम्ने
विधिरूप भवनी सा मोक्ष सोख्य ददातु ॥२॥

८३४८. पंचमी व्रत पूजा—×। पत्रस० ३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

८३४९. पंचमी व्रतो पूजा—× । पत्र स० ६ । आ० ११×५ इच । भाषा—सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० १४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक)

८३५० पंचमी व्रत पूजा—× । पत्रस० ५ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी बूदी ।

विशेष—महाराज श्री जगतसिंह विजयराज्ये कोटा वासी अमरचन्द्र ने सवाई माधोपुर मे लिखा था ।

८३५१. पचमी व्रत पूजा—× । पत्रस० ७ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × ले०काल । पूर्ण । वेष्टन स० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूदी ।

८३५२ पचमी व्रत पूजा—× । पत्रस० ७ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

८३५३ पचमी व्रत पूजा—× । पत्र स० ६ । आ० १२½×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८२५ पौष सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ८५ ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

विशेष चाटसू मे डूगरसी कासलीवाल वासी फागी ने प्रतिलिपि की थी ।

८३५४. पचमी व्रतोद्यापन—हर्ष कल्याण । पत्रस० ८ । आ० १२½×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय पुजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

८३५५. पचमी व्रतोद्यापन—× । पत्र स० ८ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-पुजा । र०काल × । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टन स० ३५१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८३५६. प चमी व्रतोद्यापन—× । पत्रस० ५ । आ० १०३/४×६ इन्च । भाषा सस्कृत । विषय पूजा र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७३७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—महात्मा रिषलाल किशनगढ वाले ने अजमेर मे प्रतिलिपि की थी ।

८३५७ पचमी व्रतोद्यापन—× । पत्रस० ६ । आ० ८×४१/२ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

८३५८. पचमी व्रतोद्यापन—× । पत्रस० ७ । आ० १०१/२×५१/२ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १७/३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

८३५९ पचमी व्रतोद्यापन— × । पत्र स० १० । आ० ६×४१/२ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय पूजा । र० काल× । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

८३६० प चमी व्रतोद्यापन पूजा—नरेन्द्रसेन । पत्रस० ११ । आ० ११×४१/२ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७-१६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—ज्वाला मालिनी स्तोत्र, पूजा एव आरती है । ज्वालामालिनी चन्द्रप्रभ की देवी हैं । पूजा तथा आरती नरसेन कृत भी है जिनका नाम मनुजेन्द्र सेन भी है ।

८३६१. पचमी व्रतोद्यापन पूजा—हर्षकीर्ति । पत्रस० ७ । आ० ६१/२×६ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८०८ । पूर्ण । वेष्टनस० २८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बू दी)

८३६२ प्रतिस० २ । पत्र स० ६ । र० काल × । ले० काल स० १८३१ । पूर्ण । वेप्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८३६३. पचमी व्रतोद्यापन विधि— × । पत्र स० ७ । आ० १०×६ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८७४ माघ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—एक प्रति और है ।

८३६४. पचमेरू पूजा—शुभचन्द्र । पत्रस० १४ । आ० १२१/२×७१/२ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १६१४ फागुण बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर ।

विशेष– नधीणापुरा वासी वसतलाल ने लिखी थी ।

८३६५. पचमेरू पूजा—प० गगादास । पत्र स० १३ । आ० १०×४१/२ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

८३६६. पंचमेरु पूजा—म० रत्नचंद । पत्र स० ५ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल स० १८६० पौष सुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

विशेष—सवाई माधोपुर मे जगतसिंह के राज्य मे लिखा गया था ।

८३६७. प्रतिसं० २ । पत्र स० ५ । आ० ११¾×६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

८३६८. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ५ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल स० १८३८ । पूर्ण । वेष्टनस० १४२ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

८३६९. प्रति सं० ४ । पत्रस० ६ । ले०काल स० १८५९ । पूर्ण । वेष्टन स० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

विशेष—दोनो ओर के पुठ्टे सचित्र हैं ।

८३७० पंचमेरु पूजा-× । पत्रस० २ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८३७१. पंचमेरु पूजा-× । पत्र स० २-६ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर दूनी (टोंक) ।

८३७२. पंचमेरु पूजा—टेकचन्द । पत्रस० ७ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा) ।

८३७३ पचमेरु पूजा—डालूराम । पत्र स० २४ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल स० १८७९ । ले०काल स० × । पूर्ण । वेष्टन स० ११६-८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

८३७४ पंचमेरु पूजा—द्यानतराय । पत्रस० ३ । आ० ७½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल १९४२ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८३७५. पंचमेरु पूजा—भूधरदास । पत्रस० २-५ । आ० ८½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १२/१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मंदिर दूनी (टोंक) ।

८३७६. प्रतिसं० ७ । पत्र स० ३ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८३७७ पंचमेरु पूजा—सुखानद । पत्र स० १९ । आ० १०½×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १९३२ कार्तिक बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—श्री रसिकलाल जी ग्ररूपगढ वाले ने स्यौवक्स से प्रतिलिपि करवायी।

८३७८ प चमेरु पूजा—× । पत्र स० ३६ । ग्रा० ९×६ इञ्च । भापा-हिन्दी पद्य । विपय-पूजा । र० काल × । ले० काल १८७७ । पूर्ण । वेष्टनस० ५३८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

८३७९. प चमेरु पूजा—× । पत्रस० ३३ । ग्रा० १२×८ इञ्च । भापा-हिन्दी पद्य । विपय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १९७१ । पूर्ण । वेष्टनस० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

विशेष—मोनीलाल भौसा जयपुर वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

८३८० पञ्चमेरु पूजा—× । पत्रस० ३६ । ग्रा० १०×६ इञ्च । भापा-हिन्दी पद्य । विपय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १९३५ । पूर्ण । वेष्टन स० २७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

८३८१. पञ्चमेरु पूजा विधान—× । पत्र स० ४४ । ग्रा० ९×६ इञ्च । भापा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर वोरसली कोटा ।

८३८२. पञ्चमेरु पूजा विधान—टेकचन्द । पत्रस० ५६ । ग्रा० ११½×५ इञ्च । भापा-हिन्दी। विपय—पूजा । र० काल × । ले०काल स० १९५४ । पूर्ण । वेष्टनस० ५७९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८३८३ पचमेरु मडल विधान—× । पत्रस० ४५ । ग्रा० ९½×७ इञ्च । भापा-हिन्दी । विपय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

८३८४ पचमेरु तथा नन्दीश्वर द्वीपा पूजा—थानमल । पत्र स० ११ । ग्रा० ८½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विपय-पूजा विधान । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६५४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८३८५. पञ्चामृताभिषेक—× । पत्रस० ६ । ग्रा० १२×६ इञ्च । भापा-सस्कृत । विपय—पूजा । र० काल × । ले०काल स० १८७० । पूर्ण । वेष्टन स० ९१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक) ।

विशेष—प० शिवजीराम ने महेश्वर मे प्रतिलिपि की थी ।

८३८६. पद्मावती देव कल्प मडल पू जा-इन्द्रनन्दि । पत्रस० १६ । भापा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४५७ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८३८७. पद्मावती पटल—× । पत्रस० ३२ । ग्रा० ७½×६ इञ्च । भापा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८२९ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष—गुटका आकार मे है।

८३८८. पद्मावती पूजा—टीपरण। पत्र स० ३७। आ० ६×५½ इच। भाषा सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १७४६। पूर्ण। वेष्टन स० ३१०–११७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

८३८९. पद्मावती पूजा—×। पत्र स० २। आ० १२×६ इन्च। भाषा—सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल स० १८६७। पूर्ण। वेष्टन स० १५२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार।

८३९० पद्मावती पूजा—×। पत्र स० २६। आ० ८¾×५ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १३७३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार।

८३९१. पद्मावती पूजा—×। पत्र स० २२। आ० ६¾×४¾ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १०९३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८३९२. पद्मावती पूजा—×। पत्र स० २२। आ० ८½×४½ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—जैनेतर पूजा है।

८३९३. पद्मावती पूजा—×। पत्र स० १४। आ० १३½×८½ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १९५८। पूर्ण। वेष्टन स० २१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा।

८३९४ पद्मावती पूजा—×। पत्र स० २६। आ० ७½×५½ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—वाक्षागीत (हिन्दी) और है।

८३९५. पद्मावती पूजा विधान—×। पत्र स० २२। आ० १०½×५½ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५४८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

८३९६. पद्मावती पूजा स्तोत्र—×। पत्र स० ९। आ० १०½×६½ इन्च। भाषा—सस्कृत। विषय—पूजा स्तोत्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३२१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ चौगान बूदी।

८३९७. पद्मावती मडल पूजा—× पत्र स० १३। आ० १०×४½ इन्च। भाषा—सस्कृत, विषय—पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १३६७। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८३९८. पद्मावती व्रत उद्यापन—× । पत्रस० ७४-९५ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४१३-१५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

८३९९. पल्य विचार— × । पत्र स० १ । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८४००. पल्य विधान—× । पत्र स० ९ । आ० १२×५ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली काटा ।

८४०१. पल्य विधान—× । पत्र स० ६ । आ० ९×४ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५८४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८४०२. पल्य विधान पूजा—विद्याभूषण । पत्रस० ६ । आ० १०×४ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १९४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

८४०३. पल्यविधान पूजा—× । पत्रस० ७ । आ० ११¾×६ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८८१ । पूर्ण । वेष्टन स० १३४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

८४०४. पल्य विधान पूजा— × । पत्रस० ४ । आ० १०½×४½ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३४८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८४०५. पल्य विधान पूजा—× । पत्रस० ८ । आ० ११×४¾ इन्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल स० १८६० आश्विन बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० १५५ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी ।

८४०६. पल्य विधान पूजा—भ० रत्ननदि । पत्रस० ८ । आ० ११×५ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८५० । पूर्ण । वेष्टनस० ३६१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८४०७. प्रति स० २ । पत्र स० १५ । आ० १२×५ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९८/६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राजस्थान) ।

८४०८ प्रति स० ३ । पत्रस० ११ । आ० ११×४ इच । ले०काल स० १६२७ । पूर्ण । वेष्टन स० २७६/३४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—स० १६२७ वर्षे भादवा वुदि सातमिदिनो सागवाडा शुभस्थाने श्री आदिनाथ चैत्यालये सातिम वृहस्पतिवारे श्री मूल सघे आचार्य श्री यशकीर्ति आचार्य श्री गुणचन्द्र ब्र० पूजा स्वहस्तेन लिखित ।

८४०९. प्रतिस० ४। पत्रस० ७ । आ० ९×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल स० १८५९ श्रावण सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० ५४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी।

८४१०. प्रतिस० ५। पत्रस० ११। आ० ११×४½ इञ्च। ले०काल स० १६४० श्रावण सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन स० ४९। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—मालपुरा मे आचार्य श्री गुणचन्द्र ने प० जयचद से लिखया था।

८४११. प्रतिसं० ६। पत्रस० ११। आ० १०×४ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २२०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक)।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

८४१२. पल्य विधान—शुभचन्द्र। पत्र स० ५। आ० १०¾×४¾ इच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४६०। प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८४१३. प्रतिसं० २। पत्र स० ७। आ० ११×५ इञ्च। ले० काल स० १६०८ ज्येष्ठ सुदी ९। पूर्ण। वेष्टनस० ९५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर।

विशेष—पडित जीव धर ने प्रतिलिपि की थी।

८४१४. प्रतिस० ३। पत्रस० ८। आ० १०½×४½ इच। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ३५५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

८४१५. प्रतिस० ४। पत्र स० ७। आ० ११×४½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६२१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

८४१६. प्रतिसं० ५। पत्र स० ११। आ० १०×५½ इञ्च। ले० काल स० १६५९। पूर्ण। वेष्टन स० २००। प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रत्येक पत्र मे ११ पक्तिया तथा प्रति पक्ति मे ४२ अक्षर हैं। उद्यापन विधि भी दी हुई है।

८४१७. प्रति स० ६। पत्र स० १०। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २७४। प्राप्ति-स्थान—उपरोक्त मन्दिर।

८४१८. प्रति स० ७। पत्रस० ९। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २७७/३४४। प्राप्ति-स्थान—दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—गुरु श्री अभयचन्द्र शिष्य शुभ भवतु। दवे महारावजी लिखित।

✓८४१९. प्रतिसं० ८। पत्रस० ९। ले० काल स० १६४३ ज्येष्ठ बुदी ४। पूर्ण। वेष्टनस० २७८/३४५। प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—प्रथम पत्र पर एक चित्र है। जिसमे दो स्त्रिया एव एक पुरुष खडा है। आगे वाली स्त्री के हाथ मे एक कमल है। मेवाडी पगडी लगाये पुरुष सामने खडा है। वह भी एक हाथ को ऊचे उठाये हुए है। ओढनियो के छोर लवे तीखे निकले हुए हैं।

८४२१. पल्य विधान व्रतोद्यापन एवं कथा—श्रुतसागर। पत्र स० १८८ । ग्रा० ८½×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा एव कथा । र० काल × । ले० काल सवत् १८८० । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक) ।

८४२१. पल्य व्रत पूजा—× । पत्रस० २ । ग्रा० १०×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

८४२२. पञ्चपरवी पूजा—वेणु ब्रह्मचारी। पत्र स० ७ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—प्रारम्भ मे ज्ञान वत्तीसी आदि हैं ।

दोज पचमी अष्टमी एकादशी तथा चतुर्दशी इन पाच पर्वों की पृजा है ।

८४२३. पार्श्वनाथ पूजा—देवेन्द्रकीर्ति। पत्र स० १५ । ग्रा० ८×६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विपय—पूजा । र० काल × । ले०काल स० १९२८ । पूर्ण । वेष्टन स०११४३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—अमरावती मे प्रतिलिपि हुई थी ।

८४२४. पार्श्वनाथ पूजा—वृंदावन। पत्रस० ३ । ग्रा० १२×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विपय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १९३२ । पूर्ण । वेष्टन स० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

८४२५ प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ग्रा० ८½×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान** -दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

८४२६ पिंडविशुद्धि प्रकरण—× । पत्रस० ५ । ग्रा० १०×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विपय विधान । र०काल × । ले०काल अपूर्ण । वेष्टनस०५०० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८४२७. पिण्डविशुद्धि प्रकरण—× । पत्रस० ८ । ग्रा० १०×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विपय-पूजा । र० काल × । ले०काल स० १६०१ आषाढ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १३२ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर नमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

विशेष—प० सप्तिकलश ने महि नगर मे प्रतिलिपि की थी ।

८४२८. पुण्याहवाचन—आशाधर। पत्र स० ७ । ग्रा० ६½×७ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विपय—विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

८४२९. पुण्याहवाचन—× । पत्रस० ६ । ग्रा० १०×६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३४७-१३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूगरपुर ।

८४३०. **पुण्याहवाचन**—× । पत्रस० ८ । आ० १२½×६ इच । भाषा-सस्कृत । विषय—विधान । र०काल × । ले०काल स० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८४३१ **पुण्याहवाचन**—× । पत्रस० ८ । आ० ८½×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले०काल स० १८६४ चैत सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनस० × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

८४३२. **पुण्याहृ वाचन**—× । पत्रस० ७ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल स० १८८१ । पूर्ण । वेष्टन स० २७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प० केशरीसिंह ने शिष्य ने प० देवालाल के लिए प्रतिलिपि की थी ।

८४३३. **प्रतिसं० २** । पत्रस० ६ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल स० १७७३ । पूर्ण । वेष्टनस० २७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८४३४ **पुण्याहवाचन**—× । पत्र स० २८ । आ० ६½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८६५ पौष बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० १४२ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

८४३५. **पुरदर व्रतोद्यापन—सुरेन्द्रकीर्ति** । पत्रस० २ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र० काल स० १८२७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर दूनी (टोक)

विशेष—नेमीचदजी के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

८४३६ **पुरन्दर व्रतोद्यापन**—× । पत्रस० ३ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६१३ । पूर्ण । वेष्टनस० १८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

८४३७ **पुण्यमाला प्रकरण**—× । पत्रस० २२ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-विधान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४२१/२५६ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—केशवराज की पुस्तक है । प्रति प्राचीन है ।

८४३८ **पुष्पांजलि जयमाल**—× । पत्रसं० ७ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

८४३९. **पुष्पाञ्जलि पूजा—द्यानतराय** । पत्र स० ७ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

८४४०. **पुष्पाञ्जलि पूजा—भ० महीचन्द** । पत्र स० ५ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूदी ।

८४४१. **पुष्पाञ्जलि पूजा—भ० रत्नचन्द्र** । पत्रस० १७ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८५८ । पूर्ण । वेष्टनस० ३७६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—पट्टण सहर मध्ये शिपिकृत ।

८४४२. **प्रतिस० २** । पत्रस० ६ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४७७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

८४४३. **पुष्पाञ्जलि पूजा—** × । पत्र स० ६ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

८४४४ **पुष्पाञ्जलि पूजा—** × । पत्रस० ६ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक)

८४४५. **पुष्पाञ्जलि व्रतोद्यापन—गगादास** । पत्रस० ५ । आ० १२×७ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

८४४६. **प्रतिस० २** । पत्रस० ६ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल स० १७५३ । पूर्ण । वेष्टनस० १०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष—इति भट्टारक श्री धर्मचन्द्र शिष्य प० गगादास कृत श्री पुष्पाजलि व्रतोद्यापन सपूर्ण ।

सवत् १७५३ वर्षे शाके १६१८ प्रवर्तमाने आश्विन मासे कृष्णपक्षे दशमी तिथौ शनिवासरे लिखिता प्रतिरिय । सघवी हसराज मथुरादास पठनार्थ । श्री अमदाबाद मध्ये लिखित । प० कुशल सागर गणि ।

८४४७. **प्रति स० ३** । पत्र स० १३ । आ० ६×४ इञ्च । ले०काल स० १८७६ चैत बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ मालपुरा (टोक)

८४४८. **प्रति स० ४** । पत्रस० १० । आ० ६×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

८४४९. **प्रति स० ५** । पत्र स० १६ । आ० ८×४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)

८४५० **प्रति सं० ६** । पत्रस० ५ । आ० १२×५½ इच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूदी ।

८४५१. **पुष्पांजलि व्रतोद्यापन टीका**—× । पत्रस० ४ । ग्रा० १२×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६६१ सावन बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० १३४७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८४५२. **पूजाष्टक—ज्ञानभूषण** । पत्रस० ५४ । ग्रा० १२×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १५२८ । पूर्ण । वेष्टनस० ४४८/३७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

अन्तिम पुष्पिका—

इति भट्टारक श्री भुवनकीर्ति शिष्य मुनि ज्ञानभूषण विरचिताया स्वकृताष्टक दशक टीकाया विद्वज्जन वल्लभा सज्ञाया नदीश्वर द्वीप जिनालयार्चनवर्णणीय नामा दशमोधिकार ।

प्रशस्ति—

श्रीमद् विक्रमभूपराज्य समयातीते । सवत् १५२८ वसुद्वीन्द्रिय क्षोणी समितहायने गिरिपुरे नाभेयचैत्यालये । अस्ति श्री भुवनादिकीर्ति मुनियस्तस्यागिर । सेवितास्थो ज्ञानेविभूसणमुनिना टीका शुभेय कृता ।

८४५३. **प्रतिसं० २** । पत्रस० ३० । ग्रा० १०×४½ इञ्च । ले०काल । अपूर्ण । वेष्टनस० ४४६/२८६ **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति जीर्ण है एव अन्तिम पत्र नही है ।

८४५४ **पूजाष्टक—हरषचन्द** । पत्रस० ३ । भाषा-हिन्दी । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

८४५५. **पूजाष्टक**— × । पत्र स० ४ । ग्रा० ११×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—आदिनाथ पूजाष्टक, ऋषभदेव पूजा तथा भूधरदास कृत गुरु वीनती है ।

८४५६ **पूजा पाठ**—× । पत्र स० ४ । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४४/४५० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैनसभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

८४५७. **पूजापाठ सग्रह** × । पत्रस० १४ । ग्रा० १२×५½ इञ्च । भाषा —हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६३८ । पूर्ण । वेष्टन स० १४५६ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८४५८. **पूजापाठ सग्रह**—× । पत्रस० ७० । ग्रा० ६×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अजमेर भण्डार ।

विशेष—दशलक्षण पूजा तथा षोडषकारण पूजा भी हैं ।

८४५६. **पूजापाठ संग्रह**—× । पत्र स० ५३ । ग्रा० ७×५ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५२/८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर मादवा (राज०) ।

८४६० पूजापाठ सग्रह— × । पत्रस० २१६ । ग्रा० ६×७ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल× । ले० काल× । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर नैरावा ।

विशेष—सामान्य नित्य नैमित्तिक पूजाग्रो एव चौवीसी तीर्थंकर पूजाग्रो का सग्रह है ।

८४६१. **पूजापाठ सग्रह** । पत्रस० २-५० । ग्रा० १२×६½ इन्च । भाषा सस्कृत । विषय-पूजा एव स्तोत्र । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष - नवग्रह स्तोत्र एव ग्रन्य पाठ है ।

८४६२. **पूजापाठ सग्रह**— × । पत्र स० ७० । ग्रा० ६½×५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा पाठ । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ३६०-१४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—विभिन्न पूजाए एव स्तोत्र है ।

८४६३. **पूजापाठ सग्रह**— × । पत्रस० ३७ । ग्रा० ६×६½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-संग्रह । र०काल × । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टनस० २३२-६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—जिन सहस्रनाम (जिनसेन) सरस्वती पूजा (ब्र० जिनदास) एव सामान्य पूजाग्रो का सग्रह है ।

८४६४ **पूजापाठ सग्रह**— × । पत्रस० १८ । ग्रा० ६½×७ इन्च । भाषा—हिन्दी सस्कृत । विषय-सग्रह । र०काल × । ले० काल स० १६६५ । पूर्ण । वेष्टन स० २३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

८४६५ **पूजापाठ सग्रह**— × । पत्रस० ४८ । ग्रा० १०×७ इन्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत विषय-पूजा पाठ । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७-५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—२७ पूजा पाठो का सग्रह है ।

८४६६. **पूजापाठ सग्रह**— × । पत्र स० १०६ । ग्रा० ७×६½ इन्च । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २३०-१२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र भाषा टीका तथा मत्र ऋद्धि ग्रादि सहित हैं ।

८४६७ **पूजा पाठ सग्रह**— × । पत्र स० १३२ । ग्रा० ८½×५½ इच । भाषा—सस्कृत । विषय-पुजा पाठ । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३२६-१२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—विभिन्न प्रकार के स्तोत्रो एव पूजा पाठो का सग्रह है ।

८४६८. **पूजा पाठ सग्रह**— × । पत्रस० १६ । ग्रा० ८×४ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा पाठ । र०काल × । ले० काल । पूर्ण । वेष्टनस० २०७-८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

८४६९. **पुजा पाठ सग्रह**—X। पत्र स० ७० । आ० ८X५½ इञ्च। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। विषय-पूजा पाठ। र० काल X । ले० काल X । पूर्ण। वेष्टन स० ४३०-१६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

८४७० **पूजा पाठ सग्रह**। पत्रस० ५६। आ० ७X६ इञ्च। भाषा-हिन्दी सस्कृत। विषय-पुजा पाठ। र०काल X। ले० काल X । पूर्ण । वेष्टनस० ४३६-१६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

८४७१. **पुजा पाठ सग्रह**—X। पत्र स० १११। आ० १०X५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय-सग्रह । र०काल X। ले०काल X। पूर्ण। वेष्टनस० ५११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

८४७२ **पूजा पाठ सग्रह**—X। पत्रस० २३ । आ० १२X६ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-सग्रह। र० काल X। ले०काल स० १९१५ फाल्गुण बुदी १२। पूर्ण। वेष्टन स० १२५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी सीकर।

८४७३. **पूजा पाठ सग्रह**—X। पत्रस० ५९। आ० १३½X८¾ इञ्च। भाषा-सस्कृत-हिन्दी विषय-पूजा। र०काल X । ले०काल स० १९६७ पौष बुदी १०। पूर्ण। वेष्टनस० ११३। **प्राप्ति स्थान**—जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष – भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा द्वारा लिखाया गया है।

८४७४ **पूजा पाठ सग्रह**—X। पत्र स० ६०। आ० ६X६¾ इञ्च। भाषा-सस्कृत हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल X। ले० काल X । पूर्ण। वेष्टन स० ६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

विशेष—सामान्य पूजा पाठो का सग्रह है।

८४७५. **पूजा पाठ सग्रह**—X । पत्रस० ६२। आ० ८½X½५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-सग्रह। र० काल X । ले०काल X । पूर्ण। वेष्टन स० १८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करलि।

८४७६. **पूजा पाठ संग्रह**—X । पत्रस० ६ से ४८ । आ० ७½X५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल X । ले० काल X। अपूर्ण। वेष्टनस० ७७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

विशेष—गुटका साइज है।

८४७७. **पूजा पाठ सग्रह**—X । पत्रस० ३५। आ० १३X७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी सस्कृत। विषय—पूजा। र०काल X । ले०काल X। पूर्ण । वेष्टनस० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

विशेष—निमित्त नैमित्तिक पुजाओ का सग्रह है।

८४७८. **पूजा पाठ सग्रह**—X। पत्रस० ५२। भाषा—हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल X । ले० काल X । अपूर्ण। वेष्टन स० २६२। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

८४७९. **पूजा पाठ सग्रह**—×। पत्र स० १७२ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मदिर ।

८४८०. **पूजा पाठ सग्रह**— × । पत्रस० ७२ । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

८४८१ **पूजा पाठ सग्रह**— × । पत्र स० १०६ । भाषा—हिन्दी सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८४८२. **पूजा पाठ सग्रह**— × । पत्र स० १०७ । भाषा-हिन्दी, सस्कृत । विषय-सग्रह । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टनस० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८४८३. **पूजा सग्रह**— × । पत्रस० १४२ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-पुजा पाठ । र०काल × ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

८४८४ **पूजा पाठ सग्रह**—×। पत्रस० ६३ । आ० ६½×५½ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय-पुजा । ले०काल स० १८५४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वरसली कोटा ।

विशेष—दुलीचन्द के पठनार्थ बू दी नगर मे लिखा गया है ।

८४८५. **पूजा पाठ सग्रह**— × । पत्रस० १५४ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत, हिन्दी । विषय—पुजा पाठ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—सामन्य पाठो का सग्रह है ।

८४८६. **पूजा पाठ सग्रह**— × । पत्र स० ६५ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-पुजा पाठ । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना (बू दी)

विशेष—प्रति जीर्ण है

८४८७ **पूजा पाठ सग्रह**—×। पत्रस० २२६ । आ० ७½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । विषय-पुजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोट)

८४८८. **पूजा सग्रह**— × । पत्र स० ६ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष—गूर्वावलि पूजा एव क्षेत्रपाल पूजा है ।

८४८९. **पूजा पाठ सग्रह**— × । पत्रस० १०४ । आ० ७½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । विषय-पूजा पाठ । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा)

८४६०. पूजा पाठ सग्रह—X । पत्र स०४६ । आ० १३ X ६ इञ्च । भाषा–हिन्दी, सस्कृत । विषय-सग्रह । र०काल X । ले०काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० ७२ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन तेरहपथी मन्दिर मालपुरा (टोक)

८४६१ पूजापाठ संग्रह—X। पत्रस० ११ । आ०-X । भाषा-सस्कृत, हिन्दी । विषय-सग्रह । र०काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर मालपुरा (टोक)

८४६२. पूजा पाठ सग्रह—X। पत्र स० ३ से २०३ । आ० ७$\frac{3}{4}$ X ४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी, सस्कृत । विषय-पूजा पाठ। र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १४३-२८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

८४६३ पूजा पाठ सगह—X । पत्र स० १४६ । भाषा–सस्कृत-हिन्दी । विषय—सग्रह । र०काल X । ले०काल X । अपूर्ण । वेष्टनस० १३० (ब) र । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

विशेष—निम्न पाठ है—

१. महाशान्तिक विधि—X । सस्कृत । ले०काल स० १५२३ वैशाख बुदी ६ । पत्रस० १-८१ नेनवा पत्तने सुरत्राण अलाउद्दीन राज्य प्रवर्तमाने ।

२ गणधर वलय पूजा–X । पूर्ण । ले०काल स० १५२३ पत्रस० ८२–१४० । ६८ से ११२ तक पत्र खाली हैं ।

३ माला रोहण—X ।	सस्कृत ।	पत्र १४१-१४३
४. कलकुण्ड पूजा—X ।	" ।	पत्र १४४-१४५
५ अष्टाह्निका पूजा–X ।	" ।	पत्र १४६–१४७

८४६४ पूजा पाठ सग्रह—X। पत्रस० २४४ । आ० ७$\frac{1}{2}$ X ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–सस्कृत, हिन्दी । विषय-सग्रह । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

८४६५. पूजा पाठ सग्रह—X । पत्र स० ७२ । आ० ६$\frac{1}{2}$ X ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी, सस्कृत । विषय—पूजापाठ । र०काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

८४६६ पूजा पाठ सग्रह—X । पत्रस० ५-६६ । आ० ८ X ५ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–सग्रह । र०काल—X । ले०काल स० १६५१ । अपूर्ण । वेष्टनस० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर टोडारायसिंह (टोक) ।

८४६७. पूजा पाठ संग्रह—X । पत्र स० ६०-१८१ । आ० ६ X ५ इञ्च । भाषा–हिन्दी, सस्कृत । विषय-पूजा पाठ । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

८४६८. पूजा पाठ सग्रह—X । पत्रस० १२७ । आ० १० X ५ इञ्च । भाषा–हिन्दी, सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल X । ले० काल स० १६५८ । पूर्ण । वेष्टनस० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

विशेष—नैणवा मे प्रतिलिपि की गयी थी ।

८४९९ **पूजा पाठ सग्रह**—× । पत्रस० २१६ । श्रा० ५½×४ इन्च । भाषा-हिन्दी, सस्कृत । विषय—पूजा पाठ । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

८५००. **पूजा पाठ सग्रह**—× । पत्र स० १२८ । श्रा० ६×६ इन्च । भाषा-हिन्दी, सस्कृत । विषय-पूजा पाठ । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७१ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

८५०१. **पूजा पाठ सग्रह**—× । पत्रस० १३० । श्रा० ६×५ इन्च । भाषा हिन्दी, सस्कृत । विषय-पूजा पाठ । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर नैणवा ।

८५०२ **पूजा पाठ सग्रह**—× । पत्र स० १३६ । श्रा० ५×४ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा पाठ । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

८५०३ **पूजा पाठ सग्रह** —× । पत्रस० ४० । श्रा० ६×५ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सग्रह । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७५ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

८५०४. **पूजा पाठ सग्रह**— × । पत्रस० ७० । श्रा० ६×५½ इन्च । भाषा-हिन्दी, सस्कृत । विषय-पूजा पाठ । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा ।

विशेष—सामान्य पूजा एव पाठो का सग्रह है ।

८५०५. **पूजा पाठ सग्रह**— × । पत्र स० ६१ । श्रा० १०×५½ इन्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । विषय— पूजा एव स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १६११ फागुण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

८५०६ **पूजा पाठ सग्रह**—× पत्रस० ६१ । श्रा० १०×५½ इन्च । भाषा हिन्दी-सस्कृत । विषय-पूजा पाठो का सग्रह । र० काल × । ले०काल स० १८७ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

८५०७. **पूजा पाठ सग्रह**—× । पत्रस० १८७ । श्रा० ६×४½ इन्च । भाषा-सस्कृत, हिन्दी । विषय-पूजा पाठो का सग्रह । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७४ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

८५०८. **पूजा पाठ सग्रह**—× पत्र स० १४४ । श्रा० ६×४½ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोट्या का नैणवा ।

८५०९. **पूजा पाठ सग्रह**—× । पत्र स० २-२-४ । श्रा० १८×७ इन्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । विषय-सग्रह । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक) ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठो का सग्रह है।

८५१० पूजा पाठ संग्रह—× । पत्रस० ८४ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत-सस्कृत । विषय-सग्रह । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

विशेष—पच स्तोत्र, पूजा, तत्वार्थ सूत्र, पच मगल आदि पाठो का सग्रह है।

८५११ पूजापाठ सग्रह—× । पत्रस० ५१ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पाठ सग्रह । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर राजमहल (टोक) ।

८५१२. पूजापाठ सग्रह—× । पत्रस० ३४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । विषय-पूजा स्तोत्र आदि का सग्रह । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक) ।

८५१३. पूजापाठ सग्रह—× । पत्रस० २-३२ । आ० ६½×७ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बू दी ।

८५१४. पूजापाठ सग्रह—× । पत्र स० ७० । आ० ११×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । विषय-सग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बू दी ।

विशेष—बू दी मे प्रतिलिपि हुई थी । निम्न पाठ एव पूजायें हैं—

मगलपाठ, सिद्धपूजा, सोलहकारण पूजा, भक्तामर स्तोत्र, तत्त्वार्थसूत्र सहस्रनाम एव स्वयभू स्तोत्र ।

८५१५. पूजापाठ सग्रह—× । पत्रस० २७८ । आ० ६½×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल× । ले०काल× । पूर्ण । वेष्टनस० १७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बू दी ।

८५१६. पूजापाठ सग्रह—× । पत्र स० ८० । आ० १०½×८ इञ्च । भाषा सस्कृत-हिन्दी । विषय-सग्रह । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बू दी ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा तथा स्तोत्र है ।

८५१७ पूजापाठ सग्रह—× । पत्रस० ५६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । विषय-पूजा स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बू दी ।

विशेष—नित्य पूजापाठ एव तत्त्वार्थ सूत्र है ।

८५१८. पूजापाठ सग्रह—× । पत्र स० ४७ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र । र० काल × । ले०काल स० १८५७ जेठ बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बू दी ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ सग्रह हैं ।

८५१९ पूजा पाठ संग्रह—× । पत्रस० ६-६६ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । विषय-सग्रह । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बू दी ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ सग्रह है ।

८५२०. पूजा पाठ सग्रह—× । पत्रस० ५१ । ग्रा० १२×७½ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ वू दी ।

विशेष—२५ पूजा पाठो का सग्रह है ।

८५२१. पूजा पाठ सग्रह—× । पत्रस० ६६ । ग्रा० १०×५ इञ्च । भाषा-पूजा स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स० १६१८ जेठ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ वू दी ।

विशेष—शिवजीलाल जी ने लिखवाया था ।

८५२२. पूजा पाठ सग्रह—× । पत्रस० ११० । ग्रा० १३×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ वू दी ।

विशेष—पूजा एव स्तोत्र ग्रादि पाठो का सग्रह है ।

८५२३. पूजा पाठ सग्रह—× । पत्रस० ३५ । ग्रा० १०½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । । पूर्ण । वेष्टनस० ३४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रभिनन्दन स्वामी वू दी ।

८५२४. पूजा पाठ सग्रह—× । पत्रस० १ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । विषय-पूजा । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०२-१०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—निम्न पूजा पाठो का एक एक का ग्रलग ग्रलग सग्रह है । गुटका ग्राकार मे ८ पुस्तके है—

चन्द्रप्रभ पूजा, निर्वाणक्षेत्र पूजा, गुरु पूजा, भक्तामर स्तोत्र, चतुर्विशति पूजा, (रामचन्द्र) नित्य नियम पूजा एव भक्तामर स्तोत्र ।

८५२५ पूजा पाठ सग्रह—× । पत्र स० ११६ । ग्रा० ९×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सग्रह । ले० काल स० १८७८ वैसाख बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोक) ।

१.	पच मगल	—	रूपचन्द ।	पत्र १-१९ तक
२	साधु वन्दना	—	वनारसीदास ।	
३	परम ज्योति	—	,,	
४	विषापहार	—	ग्रचलकीर्ति	
५	भक्तामर स्तोत्र	—	मानतु ग	
६	ऋषि मडल स्तोत्र	—	×	
७.	रामचन्द्र स्तोत्र	—	×	पत्र स० १९ । सस्कृत
८.	चौसठ योगिनी स्तोत्र	—	×	सस्कृत २०
९	क्षेत्रपाल पूजा	—	शातिदास ।	,, २१
१०	क्षेत्रपाल स्तोत्र	—	× ।	,, २२

११ न्हवण — × । सस्कृत । २३

१२. क्षेत्रपाल —- मुनि शुभचन्द । हिन्दी पद्य । २४

क्षेत्रापाल की विनती लिख्यते :—

जैन को उद्योत भैरु समकति धारी ।
सांति मूरति भव्य जन सुखकारी ।। जैन० ।। टेर
घुघरियालो केस सिंदूर तेल छवि को ।
मोतिया की माला भावी उग्यौ भानू रवि को ।।१।।

सिर पर मुकट कुण्डल काना सोहती ।
कठी सोहे घुगघुगी हीय हार मोहती ।।२।।

मुख सोहे दाता नै तवोल मुख चुवतौ ।
नैणा रेखा काजल की तिलक सिर सोहतो ।।३।।

वाजूवध भौ रख्या प्रौच्यानै पौंचि लाल की ।
नवग्रह आगुल्या नै पकड्या डोरि स्वान की ।।४।।

कटि परि घूघरा तन्यौं लाल पाट कौ ।
जग घनघोर वालै रमे भमि थाट कौ ।।५।।

पहरि कडि मेखला पग तलि पावडी ।
चटक मटक वाजै खु टया मोहै भावडा ।।६।।

छडी लिया हाथ मे देहुरा के वारणै ।
पूजा करै नरच रखवाली कै कारणै ।।७।।
नृत्य करै देहुरा कै वारैएकज लाप कै ।
तान तौडे प्रभु आनै जिन गुण वगाय कै ।।८।।
पहली क्षेत्रपाल पूजै तैल कावी वाकुला ।
गुगल तिलोट गुल आठौं द्रव्य मोकला ।।९।।
रोग सोग लाप वाडि मरी कौं भगाय दे ।
वालका की रक्षा करै अन धन पूत दे ।।१०।।
गीत पहली गाय जौ रभाय क्षेत्रपाल कौ ।
मुनि सुभचन्द गायो गीत भैरू लाल कौ ।।११।।

१३ चतुर्विंशति पूजाष्टक — × । संस्कृत । पत्र स० २५

१४ वदेतान जयमाल — माघनदी । सस्कृत । पत्र स० २६

१५. मुनिश्वरो की जयमाल — ब्र० जिणदास । हिन्दी । पत्र स० ३२

१६. दश लक्षण पूजा — × । सस्कृत ।

१७ सोलहकारण पूजा — × । „

१८ सिद्ध पूजा — × । „

१९ पद — वनारसीदास । हिन्दी । पत्र स० ३७

श्री चिंतामणि स्वामी साचा साहिब मेरा ।
सोक हरै तिहु लोक का उठ लीजत नाम सवेरा ।।

२० रत्नत्रय विधान — × । सस्कृत पत्र स० ४१
२१. लक्ष्मी स्तोत्र — पद्मप्रभदेव । ,, ,, ४३
२२. पूजाष्टक — लोहट । हिन्दी ,, ४६
२३ पचमेरु पूजा — भूधरदास । ,, ,, ५०
२४ सरस्वती पूजा — ज्ञान भूषण । ,, ,, ५५

विशेष—प० शिवलाल ने वैसाख सुदी ६ रविवार स० १८७८ मे मालपुरा नगर मे भौसो के वास के मन्दिर मे स्वपठनार्थं प्रतिलिपि की थी ।

२५ तत्वार्थसूत्र — उमार स्वामी । सस्कृत । ,, ७३
२६ सहस्रनाम — आशाधर । ,, । ,, ७३
२७ विनती — रूपचन्द । ,, । ,, ७४

जय जय जिन देवन के देवा,
सुरनर सकल करै तुम सेवा ।

२८. पद — रूपचन्द । हिन्दी । ,, ७५

अब मैं जिनवर दरसण पायो ।

२९. विनती — कनककीर्त्ति ,, । ,, ७५

वदौ श्री जिनराय मन वच काय करेजी ।

३०, विनती — रायचन्द । हिन्दी । ,,

आज दिवस धनि लेखै लेख्या,
श्री जिनराज भना मुख पेख्या ।

३१ विनती — ब्र० जिनदास । हिन्दी । ,, ७६

प्रारम्भ—स्वामी तू आदि जिणद करौ विनती आप तणी ।

अन्त—श्री सकलकीर्रति गुरु वदि जिनवर वीनती ।
ते भणौ ए ब्रह्म भणौ जिनदास मुक्ति वहागण ते वरै ।।

३२ निर्वाण काण्डभाषा — भैया भगवतीदास । हिन्दी । पत्र स० ७९

विशेष—प० शिवलाल जती वाकलीवाल शिष्य आचार्य माणिकचन्द ने मालपुरा मे भौसे के वास के मन्दिर मे सवाई जयसिह के राज्य मे प्रतिलिपि की थी ।

३३ आरती — द्यानतराय । हिन्दी । पत्र सं० ७९
३४. पचमवधावा — × । ,, । ,, ८०

पञ्च वधावा म्हा के जीव अति भाया तो ।
भवै हो अरिहत सिद्ध जी की भावना जी ।।

३५ विनती — कुमुदचन्द्र । हिन्दी । पत्र स० ८१

प्रारम्भ—दुनिया झामर झोल विलूधी ।
भगवत भगति नही सूधी ।।

अन्तिम—नही एक की हुई घणा की भरतारी,
नारी कहत कुमदचन्द कौण सगि जलसी घण पुरिपा नारी ।।

३६	पचमगति वेलि	—	हर्पकीर्ति ।	हिन्दी । पत्र म० ८३ र० काल स० १६६३
३७	नीदडली	—	किशोर ।	हिन्दी । पत्र म० ८६
३८.	विनती	—	भूधरदास ।	,, ,, ८७

हमारी करुणा लै जिनराज हमारी ।

३९.	भक्तामर भाषा	—	हेमराज	हिन्दी । पत्र स० ८८
४०	वीनती	—	रामदास	,, ,, ९१
४१.	वानती	—	अजैराज	,, ,, ९५
४२	जोगीरासा	—	जिणदास	,, ,, ९६
४३.	पद	—	अजैराज, बनारसीदास, एव मनरय	,, ,,
४४.	लूहरी	—	सुन्दर ।	,, ,, ९९

सहैल्यो हे यो समार असार ।

४५.	रविवार कथा	—	भाऊ ।	,, ,, १०९
४६	शनिश्चरदेव की कथा	—	× ।	हिन्दी गद्य । पत्र स० ११२
४७	पार्श्वनाथाष्टक	—	विश्वभूपण ।	सस्कृत । ,, ११३

४८ खण्डेलवालो के गोत्र । ८४ ।

४९ वघेर वालो के गोत्र—५२

५०. अग्रवालो के गोत्र—१८

८५२६. पूजापाठ सग्रह—× । पत्र स० ६० । आ० १२× ५ इञ्च । भापा—हिन्दी सस्कृत । विपय—पूजा । ले० काल १९४३ । पूर्ण । वेष्टन स० २ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर वघेरवालो का आवा (उणियारा)

विशेष—निमित्त नैमित्तिक पूजा पाठो का मग्रह है । लोचनपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

८५२७. पूजापाठ सग्रह—× । पत्रस० ६३ । आ० ९×८ इञ्च । भापा-हिन्दी । विपय-पजा पाठ । र० काल × । ले० काल । पूर्ण । वेष्टनस० ८६/९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेष—पच मगल, देवपूजा वहद् एव सिद्ध पूजा आदि का सग्रह है ।

८५२८. पूजापाठ संग्रह—× । पत्र स० ५१ । आ० १२×८ इच । भापा—हिन्दी पद्य । विपय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

८५२९. पूजा पाठ सग्रह—× । पत्रस० ३-४१ । आ० १०½×५½ इञ्च । भापा-हिन्दी । विपय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

८५४८ पूजासार समुच्चय—× । पत्र स० ६३ । ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल स० १९०७ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ११७६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर भण्डार ।

८५४६. पूजासारसमुच्चय—× । पत्र स० १०१ । ग्रा० १२½×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल स० १८६१ ज्येष्ठ बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर ग्रादिनाथ बूदी ।

विशेष—मथुरा मे प्रतिलिपि हुई थी । सग्रह ग्र थ है ।

ग्रन्तिम पुष्पिका—इति श्री विद्याविद्यानुवादोपासकाध्ययन जिनसहिता चरणानुयोगाकाय पूजासार समुच्चय समाप्तम् ।

८५५०. पूजा सग्रह—द्यानतराय । पत्र स० १४ । ग्रा० १२½×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १९१९ । पूर्ण । वेष्टन स० ५५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—निम्न पूजाग्रो का सग्रह है—

दशलक्षण व्रत पूजा, ग्रनन्त व्रत पूजा, रत्नत्रय व्रत पूजा, सोलहकारण पूजा ।

८५५१. पूजा सग्रह—द्यानतराय । पत्र स० ११ । ग्रा० ८½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १९५४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८५५२. पूजा सग्रह—× । पत्र स० १८ । ग्रा० ११×५¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८८० सावण बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

८५५३. पूजा सग्रह—× । पत्र स० ३९ । ग्रा० ६½×८½ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १९४७ फागुण सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ६६४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष—पडित महीपाल ने प्रतिलिपि की थी ।

८५५४ पूजा सग्रह— × । पत्र स० १० । ग्रा० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—सोलह कारण, पच मेरु, ग्रष्टाह्निका ग्रादि पूजाग्रो का सग्रह है ।

८५८५ पूजा स ग्रह— × । पत्र स० १५ । ग्रा० १२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल स० १९६१ । पूर्ण । वेष्टन स० ५५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—निम्न पूजाग्रो का सग्रह है—

ग्रनन्त व्रत पूजा	सेवाराम	हिन्दी

दशलक्षण पूजा	द्यानतराय	,,
पचमेरु पूजा	भूधरदास	,,
रत्नत्रय पूजा	द्यानतराय	,,
अष्टाह्निका पूजा	द्यानतराय	,,
शातिपाठ	—	,,

८५५६. पूजा सग्रह—X। पत्रस० १०। आ० ९X६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल X। ले० काल स० १९५३। पूर्ण। वे० स० ६५३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

८५५७. प्रति सं० २। पत्रस० ९। आ० ४½X४½ इञ्च। ले० काल X। पूर्ण। वेष्टन स० ६५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

८५५८. प्रति स० ३। पत्र स० ६। आ० १०½X७ इञ्च। ले० काल स० १९६३। पूर्ण। वेष्टन स० ६६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—द्यानतराय कृत दशलक्षण पूजा तथा भूधरदास कृत पञ्च मेरू पूजा है।

८५५९ पूजा सग्रह—X। पत्र स० ३६-६३। आ० १२½X६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वेष्टन स० ७५५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाओ का सग्रह है।

८५६०. पूजा सग्रह—शातिदास। पत्रस० २-७। आ० ९X४½ इच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र०काल X। ले० काल।अपूर्ण। वेष्टन स० २६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूदी।

विशेष—अजितनाथ, सभवनाथ की पूजाए पूर्ण एव वृषभनाथ एव अभिनन्दननाथ की पूजायें अपूर्ण हैं।

८५६१. पूजा सग्रह—X। पत्र स० ३४-१४६। आ० १२X५½ इच। भाषा—हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल X। ले०काल X। अपूर्ण। वेष्टन स० ३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर।

८५६२ पूजा सग्रह—X। पत्र स० १४३। आ० ७½X४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। विषय—पूजा। र०काल X। ले० काल स० १९२०। पूर्ण। वेष्टन म० ५०। **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन पचायती मन्दिर कामा।

विशेष—चौबीस तीर्थंकर पूजाओ का सग्रह है।

८५६३. पूजा सग्रह—X। पत्रस० ५९। आ० ११½X६½ इच। भाषा-हिन्दी। विषय—पूजा। र०काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वेष्टन स० ३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा।

८५६४ **पूजा सग्रह**—× । पत्र स० ५५ । आ० १२×६ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—वृन्दावन कृत चौबीसी तीर्थंकर पूजा एव सम्मेद शिखर पूजा का सग्रह है ।

८५६५. **पूजा सग्रह**—× । पत्र स० २७ । आ० ११×४½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानाजी कामा ।

८५६६ **पूजा सग्रह**—× । पत्र स २७६ । आ० १२×७ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—नैमित्तिक पूजाओ का सग्रह है ।

८५६७. **पूजा सग्रह**—× । पत्र स० १२६ । आ० १३×५ इन्च । भाषा—हिन्दी-पद्य । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १६६७ । पूर्ण । वेष्टन स० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—मुख्यत निम्न पूजाओ का सग्रह है । जो विभिन्न वेष्ठनो मे वधे है ।

सुगन्ध दशमी पूजा, रत्नत्रयव्रत पूजा, सम्मेदशिखर पूजा, (२ प्रति) चौसठ ऋद्धि पूजा (२ प्रति) चौवीसतीर्थंकर पूजा-रामचन्द्र पत्र स० १४४ । निर्वाण क्षेत्र पूजा (३ प्रति) अनन्तव्रत पूजा (४ प्रति) सिद्धचक्र पूजा ।

८५६८. **पूजा सग्रह**—× । पत्रस० × । आ० ११½×५½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खं० पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—मुख्यत निम्न पूजाओ का सग्रह है ।

श्रुतस्कध पूजा	सस्कृत	पत्र १३
पचकल्याणक पूजा	,	२२
,,	,,	२२
ऋषि मडल पूजा	,,	२५
रत्नत्रय उद्यापन	,,	१४
पूजा सार	,,	८३
कर्मध्वज पूजा	,,	१६-१७

८५६९. **पूजा सग्रह**—× । पत्रस० ७१ । आ० ७½×५½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—निम्न पूजाओ का सग्रह है ।

पच कल्याणक पूजा	सस्कृत	पत्र १३
रोहिणी व्रतोद्यापन पूजा	,,	१३

सार्द्ध द्वय द्वीप पूजा ,, १५
सुगंध दशमी ,, १५
रत्नत्रय व्रत पूजा ,, १५

८५७०. पूजा संग्रह—× । पत्र स० १४० । आ० ८½×६½ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १९६७ । पूर्ण । वेष्टन स० १८० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन स० पंचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—अलवर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

८५७१. प्रति सं० २ । पत्र स० १८० । ले०काल स० १९५३ भादवा बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० १८१ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

८५७२. पूजा संग्रह—× । पत्रस० ४२ । आ० ९½×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८९५ अगहन सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर टोडारायसिंह (टोंक)

८५७३. पूजा संग्रह—× । पत्रस० १७ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १९३६ । पूर्ण । वेष्टन स० २०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी ।

८५७४. पूजा संग्रह—× । पत्र स० ४० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदा (बूंदी) ।

विशेष—शांतिपाठ, पार्श्वजिन पूजा, अनंतव्रत पूजा, शांतिनाथ पूजा, पञ्चमेरु पूजा, क्षेत्रपाल पूजा एव चमत्कार की पूजा है ।

८५७५ पूजा संग्रह—× । पत्र स० ४१ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा- संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

८५७६. पूजा संग्रह—× । पत्रस० २२ । आ० ७×५¼ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर श्रीमहावीर बूंदी ।

८५७७ पूजा संग्रह—× । पत्रस० ८ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल स० १८६० पौष सुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ (बूंदी) ।

विशेष—अक्षयनिधि पूजा सौख्य पूजा, णमो पैंतीसी पूजा है ।

८५७८. पूजा संग्रह—× । पत्र स० ४७-१४८ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ (बूंदी) ।

विशेष—तीस चौवीसी पूजा शुभचन्द एव पोडपकारण पूजा सुमति सागर की है।

८५७९. **पूजा सग्रह**—X। पत्रस० २४। आ० १०X६ इञ्च। भापा-हिन्दी। विपय-पूजा। र०काल X। ले० काल स० १९४४। पूर्ण। वेष्टन स० ९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी नैणवा।

विशेष—नैणवा मे प्रतिलिपि की गयी थी। दशलक्षण पूजा, रत्नत्रय पूजा आदि का सग्रह है।

८५८० **पूजा सग्रह**—X। पत्र स० १७९। आ० ६X४ इच। भापा—सस्कृत। विपय-पूजा। र०काल X। ले०काल X। पूर्ण। वेष्टनस० ६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी नैणवा।

८५८१ **पूजा सग्रह**—X। पत्रस० ११-२२७। आ० १३X७½ इञ्च। भापा-सस्कृत। विपय-पूजा। र०काल X। ले०काल X। अपूर्ण। वेप्टन स० १३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष—पूजाओ का सग्रह है।

८५८२. **पूजा सग्रह**—X। पत्रस० १००। आ० ११¾X८¾ इञ्च। भापा-हिन्दी पद्य। विपय-पूजा। र०काल X। ले०काल X। पूर्ण। वेष्टनस० १४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सोकर)।

विशेष—विविध पूजाओ का सग्रह है।

८५८३. **पूजा सग्रह**—X। पत्र स० ५६। आ० ५X५¾ इञ्च। भापा-सस्कृत-हिन्दी। विपय-पूजा। ले०काल स० १८५४ वैसाख सुदी ६। पूर्ण। वेष्टनस० ८०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

विशेष—उदैसागर के पठनार्थ चिम्मनलाल ने प्रतिलिपि की थी। पचपरमेष्ठी पूजा यशोनदि कृत भी है।

८५८४. **पूजा सग्रह**—X। पत्र स० १८। आ० १३X७¾ इञ्च। भापा-हिन्दी-सस्कृत। विपय-पूजा। र०काल X। ले०काल स० १९४२ आश्विन सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन स० १०९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

विशेय—चुन्नीलाल ने प्रतिलिपि की थी।

८५८५. **पूजा सग्रह**—X। पत्र स० ३-५७। आ० ६X५ इञ्च। भापा सस्कृत। विपय-पूजा। र०काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वेप्टन स० ३६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर।

विशेष—नित्य नैमितिक पूजाए है।

८५८५. **पूजा सग्रह**—X। पत्रस० ७६। आ० १२X५½ इञ्च। भापा-सस्कृत। विपय-पूजा। र०कालX। ले० काल स० १८५६। पूर्ण। वेष्टन स० ५०(व)। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—निम्न पूजाओ का सग्रह है।

रत्नत्रय पूजा, दशलक्षण पूजा, पचमेरु पूजा, पचपरमेष्ठी पूजा।

८५८७. पूजा संग्रह—X । पत्रस० ३५ । आ० १०X४ इञ्च । भापा-सस्कृत । विपय—पुजा । र०काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेप्टन स० १५४ । **प्राप्ति स्थान**—खडेलवाल दि० जैन मदिर उदयपुर ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाओ का सग्रह है ।

८५८८. पूजा संग्रह X । पत्र स० ६० । भापा-हिन्दी । विपय—पूजा । र०काल X । ले० काल स० १६४० । पूर्ण । वेष्टनस० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाए तथा भाद्रपद पूजा सग्रह है । रगलाल जी गदिया साहपुरा वालो ने जयपुर मे प्रतिलिपि करा कर उदयपुर मे नाल के मदिर चढाया था ।

८५८९. पूजा सग्रह—X । पत्रस० ८२ । आ० १०X५ इञ्च । भापा-हिन्दी (पद्य) ।विपय-पुजा । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा ।

८५९० पूजा सग्रह—X । पत्रस० ७० । भाषा-हिन्दी पद्य । विपय-पूजा । र०काल X । ले०काल स० १९८६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा ।

८५९१. पूजा सग्रह—X । पत्र स० ११ । भाषा-सस्कृत । विपय-पूजा । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ७३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भरतपुर ।

८५९२. पूजा सग्रह—X । पत्र स० १९ । भापा-सस्कृत-हिन्दी । विपय-पूजा । र०कालX । ले०काल X । पूर्ण । वेप्टन स० ४७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८५९३. पूजा सग्रह—X । पत्र स० ७५ । भापा-हिन्दी । विपय-पूजा । र०कालX । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—छह पूजाओ का सग्रह है ।

८५९४ पूजा संग्रह—X । पत्र स० ३४ । भाषा-सस्कृत । विपय-पूजा । र० काल X । ले०काल X । अपूर्ण । वेष्टनस० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर ।

८५९५. पूजा सग्रह—X । पत्रस० ४८ । भापा—हिन्दी । विपय-पूजा । र० काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टनस० १४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८५९६. पूजा सग्रह—X । पत्र स० ५३-१०३ । भापा-सस्कृत । विपय-पूजा ।र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेप्टन स० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८८९७ पूजा सग्रह—X । पत्रस० ४० । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० कालX । ले० काल स० १८६७ । पूर्ण । वेष्टनस० ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—नित्य नैमितक पूजाए हैं ।

८५९८. पूजा सग्रह—X। पत्र स० १६७ ।भापा-हिन्दी-सस्कृत । विपय-पूजा । र० काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८५९९ पूजा सग्रह—× । पत्रस० ५ से ३५ । भापा-हिन्दी-सस्कृत । विपय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८६००. पूजा सग्रह—× । पत्र स० ७० । भापा-हिन्दी सस्कृत । विपय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८६०१. पूजा सग्रह—× । पत्रस० १४ । आ० ११×५ इञ्च । भापा सस्कृत । विपय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

८६०२. पूजा सग्रह—× । पत्रस० १७८ । आ० ९×५½ इञ्च । भापा-हिन्दी सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८३३ भादवा बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३५९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली (कोटा) ।

विशेष—ग्रन्त मे नवसीकथा की चउपई सोमगणि कृत है जिसकी रचना काल स० १७२० है। तथा कर्मवुद्धि की चौपई है ।

मालव देश के सुसनेर नगर के जिन चैत्यालय मे आलमचन्द्र द्वारा लिखा गया था ।

८६०३. पूजा सग्रह—× । पत्रस० ९८ । आ० ७×५ इञ्च । भापा-सस्कृत । विपय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३६० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर वोरसली (कोटा) ।

विशेष—निम्नलिखित पूजाए है—

अनतव्रत पूजा, अक्षयदशमी पूजा, कलिकुण्ड पूजा, शान्ति पाठ (आशाधर), मुक्तावलि पूजा, जलयात्रा पूजा, पचमेरु पूजा तथा कर्मदहन पूजा ।

८६०४ पूजा सग्रह—× । पत्रस० १५६ । आ० ६ × ५ इञ्च । भापा-हिन्दी, सस्कृत । विपय-पूजा । र०काल × । ले०काल० स १९९१ भादवा बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० ३६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वोरसलो (कोटा) ।

विशेष—४० पूजाओ का सग्रह है । चिंतामणि पार्श्वनाथ-शुभचन्द्र, गुरुपूजा-रतनचन्द तथा सिद्ध भक्ति विधान-आशाधर कृत विशेपत उल्लेखनीय है ।

८६०५. पूजा सग्रह—× । पत्रस० ७-७४ । आ० १०×६ इञ्च । भापा-सस्कृत । विपय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३६३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर वोरसली (कोटा) ।

विशेष—पूजाओ का सग्रह है

८६०५ पूजासग्रह—× । पत्र स० ७० । आ० १०×४ इञ्च । भापा—हिन्दी । विपय-पजा । र०काल × । लेखन काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठो का सग्रह है ।

८६०७ पूजा सग्रह—X । पत्रस० ६८ । ग्रा० १०X६½ इञ्च । भाषा हिन्दी-सस्कृत । विषय-सग्रह । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ११० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष—विभिन्न प्रकार की ३८ पूजाग्रो एव पाठो का सग्रह है ।

८६०८. पूजा सग्रह—X । पत्रस० ६३ । ग्रा० ६X४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक)

विशेष—मुख्यत निम्न पूजाग्रो का सग्रह है—

रत्नत्रय पूजा, (प्राकृत)
कर्मदहन पूजा, (,,) (ग्रपूर्ण)

८६०६. पूजा सग्रह—X । पत्र स० १२ । ग्रा० ११X४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १३७-६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—पचमेरु द्यानत एव नदीश्वर जयमाल भैया भगवतीदास कृत है ।

८६१० प्रतिमा स्थापना—X । पत्र स० २१ । ग्रा० ११X४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-विधि । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १५१० । **प्राप्ति-स्थान**—दि०जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—श्री ग्राम श्री थालेदा नगरमध्ये लिखित पन्डित मुखराम ।

८६११. प्रतिष्ठा कल्प—ग्रकलंक देव—X । पत्र स० १५२ । ग्रा० १३½X५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

प्रारभ—

वदित्वा च गणाधीरा श्रुत स्कध च ।
ऐद युगि नानाचार्य नयि भक्त्या नमाम्यह ॥१॥
ग्रथ श्री नेमिचन्द्राय प्रतिष्ठा शास्त्र मार्गत
प्रतिष्ठायास्तदा द्युत राजाना स्वय भगिना ॥२॥
इन्द्र प्रतिष्ठा ।

८६१२. प्रतिष्ठा तिलक—ग्रा० नरेन्द्रसेन । पत्रस० २७ । ग्रा० १२X६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टनस० ३१-१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—मुनि महाराज श्री १०८ भट्टारक जी श्री मुनीन्द्रकीर्त्ति जी की पुस्तक । लिखित ज्ञाती हूबड मूलसघी रुघडा वसु कस्तूरचद तत् पुत्र चोकचन्द ।

८६१३. प्रतिष्ठा पद्धति—X । पत्रस० ३६ । ग्रा० १०X४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल X । ले०काल स० १८२४ कार्तिक सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनस० ४७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर ग्रजमेर भण्डार ।

८६१४. प्रतिष्ठा पाठ—आशाधर। पत्रस० १६। आ० १२½×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल स० १८६४। पूर्ण। वेष्टन स० ६८६। **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८६१५. प्रतिसं० २। पत्रस० २३। ले० काल स० १८६५। पूर्ण। वेष्टनस० ५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर।

विशेष—मडल विधान दिया है।

सवत् १८६५ के वैशाख बुदी ६ दिने सोमवासरे श्री दक्षिण देशे श्री गिरवी ग्रामे चैत्यालये श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० यश कीर्ति देवा त० प० भ० सुरेन्द्रकीर्ति तत्पट्ट गुरु भ्राता प० खुशालचन्द लिखित।

८६१६. प्रति स० ३। पत्रस० २०। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ३४/३६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

८६१७. प्रतिसं० ४। पत्रस० ६२-१६५। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० ३५/३६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

८६१८ प्रति स० ५। पत्रस० १३। आ० १२½×८½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ३०/१८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

८६१९. प्रतिसं० ६। पत्रस० ७७। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० १६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बडा पचायती मन्दिर डीग।

विशेष—प्रति जीर्ण है।

८६२०. प्रतिष्ठा पाठ—प्रभाकरसेन। पत्र स० ४२-८५। आ० ६½×६½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-विधान। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ७४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर।

८६२१. प्रतिष्ठा पाठ— ×। पत्रस० २७। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय-विधान। र०काल ×। ले०काल स० १६१३। पूर्ण। वेष्टनस० ८६-६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)।

विशेष—शातिसागर ब्रह्मचारी की पुस्तक से विदुष नेमिचन्द्र ने स्वय लिखा था।

८६२२. प्रतिष्ठा पाठ—×। पत्रस० १३३। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-विधान। र० काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी।

विशेष—प्रारम्भ एव बीच के कितने ही पत्र नही है।

८६२३ प्रतिष्ठा पाठ टीका (जिनयज्ञ कल्प टीका)—परशुराम। पत्रस० १२६। आ० १२×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-विधान। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० ३५/२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर।

विशेष—१२ पक्ति और २४ अक्षर हैं।

८६२४. प्रतिष्ठा पाठ वचनिका—× । पत्रस० ११६ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय—विधान। र०काल × । ले०काल स० १९६६ बैशाख बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—नटवरलाल शर्मा ने श्रीमान् माहाराजाधिराज श्री माधवसिंह के राज्य मे सवाई जयपुर नगर मे प्रतिलिपि की थी ।

८६२५. प्रतिष्ठा मत्र सग्रह—× । पत्र स० १० । आ० १२×७ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३१४-११७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपूर ।

विशेष—प्रतिष्ठा मे ताम आने वाले मत्रो के विधान सचित्र दिये हुये हैं ।

८६२६. प्रतिष्ठा मत्र संग्रह—×। पत्रस० ८७ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । विषय-विधान । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१५-११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—पहिले विभिन्न व्रतोद्यापनो के चित्र, तीर्थंकर परिचय, गुणस्थान चर्चा एव त्रिलोक वर्णन है इसके वाद मत्र हैं ।

८६२७. प्रतिष्ठा यंत्र— × । पत्रस० ८ । आ० १२×७½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

विशेष—४५ यत्रो का सग्रह है ।

८६२८. प्रतिष्ठाविधि—आशाधर । पत्र स० ७ । आ० १२×४½ इच भाणा-सस्कृत । विणय-विधिविधान । र०काल × । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टन स० १७८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

८६२९ प्रतिष्ठाविधि—× । पत्र स० २ । भाषा-हिन्दी । विपय—प्रतिष्ठा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

८६३० प्रतिष्ठासार सग्रह—आ० वसुनदि । पत्र स० २६ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले०काल स० १६३१ । पूर्ण । वेष्टनस० १४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

विशेष—मडलाचार्य धर्मचन्द्र के शिष्य आचार्य श्री नेमिचन्द्र ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

८६३१. प्रतिसं० २ । पत्रस० २६ । आ० १०½×४½ इञ्च । ले० काल स० १६७१ । पूर्ण । वेष्टनस० ६३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

प्रशस्ति—निम्न प्रकार है—

सवत् १६७१ वर्षे श्री मूलसघे भट्टारक श्री गुणसेन देवा आर्यिका वाई गौतम श्री तस्य शिष्य पण्डित श्री रामाजी जसवन्त वघेरवाल ज्ञानमुखमडण चमरीया गोत्रौ ।

८६३२ प्रतिसं० ३ । पत्रस० स० १२ से २२ । आ० १०×५½ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ७४१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८६३३. प्रति स० ४ । पत्रस० १८-२५ । श्रा० ६$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{4}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११५ (क० स०) । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रथम १७ पत्र नही है ।

८६३४. प्रतिसं० ५ । पत्रस० २७ । श्रा० १२ × ५$\frac{1}{4}$ इञ्च । ले०काल स० १८६१ ज्येष्ठ बुदी ३ । अपूर्ण । वेष्टन स० ११० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८६३५. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ३० । श्रा० ११ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १९४८ । पूर्ण । वेष्टन स० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

विशेष— प० रतनलाल जी ने बू दी मे प्रतिलिपि की थी ।

८६३६. प्रति स० ७ । पत्र स० ३३ । श्रा० १३ × ७ इञ्च । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन स० १०४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बू दी ।

८६३७. प्रति स० ८ । पत्र स० २४ । श्रा० १२ × ६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३०४-११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

८६३८. प्रतिसं० ९ । पत्रस० ३६ । ले०काल स० १८७७ फागुण सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हूण्डावालो का डीग

८६३९ प्रतिष्ठासारोद्वार (जिनयज्ञ कल्प)—आशाधर । पत्रस० ३-१२१ । श्रा० १२×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २२९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

८६४० प्रोषध लेने का विधान—× । पत्र स० २ । श्रा० ११ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-विधान । र० काल × । ले० काल स० १८४७ । पूर्ण । वेष्टन स० १९५-१९१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

८६४१. ब्रह्मपूजा—× । पत्रस० ७ । श्रा० ५$\frac{1}{2}$ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०४६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८६४२. बारहसौ चौतीस व्रत पूजा—शुभचन्द्र । पत्र स० ७१ । श्रा० १२ × ५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८६४३. बारहसौ चौतीस व्रत पूजा—श्रीभूषण । पत्रस० ७६ । श्रा० १२×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८५३ आषाढ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० ४५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर

विशेष—सवाई जयनगर के आदिनाथ चैत्यालय मे सवाई राम गोधा ने प्रतिलिपि की थी ।

√ **८६४४. बिम्ब प्रतिष्ठा मडल**— × । पत्रस० १ । श्रा० ८ × ६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३०८/११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर । कोटडियो का डू गरपुर ।

विशेष—मडल का चित्र है ।

८६४५. बीस तीर्थंकर जयमाल—हर्षकीर्ति। पत्र स० २। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल १८५१। पूर्ण। वेष्टनस० ६३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

८६४६. बीस तीर्थंकर पूजा—जौहरीलाल। पत्रस० ४५। आ० १३½×८½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल स० १९४६ सावन सुदी ४। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ४८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

८६४७ बीस तीर्थंकर पूजा—थानजी अजमेरा। पत्रस० ७३। आ० १२½×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल स० १९३४ आसोज सुदी ६। ले० काल स० १९४४ मगसिर बुदी १३। पूर्ण। वेष्टनस० ४८५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर (जयपुर)।

विशेष—अन्तिम पृष्ठ पर पद भी है।

८६४८. बीस तीर्थंकर पूजा—×। पत्रस० ४। आ०६×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १३७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर (जयपुर)।

८६४९. बीस तीर्थंकर पूजा—×। पत्रस० ५७। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १९४२। पूर्ण। वेष्टनस० ४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा।

८६५० बीस विदेह क्षेत्रपूजा—चुन्नीलाल। पत्रस० ३६। आ० १२×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल स० १९३६। पूर्ण। वेष्टन स० ११०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

८६५१. बीस विदेह क्षेत्र पूजा—शिखरचद। पत्र स० ४१। आ० ६¼×८½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल स १९२८ जेठ सुदी १। ले० काल स० १९२९ वैसाख सुदी ७। पूर्ण। वेष्टनस० ५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सोगाणी मदिर करौली।

८६५२ बीस विरहमान पूजा—×। पत्रस० ४। आ० १०×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल स० १९३८ फाल्गुन बुदी १। पूर्ण। वेष्टन स० ५२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

विशेष—विदेहक्षेत्र बीस तीर्थंकरो की पूजा है।

८६५३ भक्तामर स्तोत्र पूजा—नंदराम। पत्रस० २८। आ० १३½×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल स० १९०४ वैसाख सुदी १०। ले०काल स० १९०४ कार्तिक सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन स० ११८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना।

विशेष—श्योजीराम बयाना वाले से बक्सीराम ने प्रतिलिपि कराई थी।

८६५४. भक्तामर स्तोत्र पूजा—सोमसेन। पत्र स० १३। आ० १०×५½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पुजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ३८२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८६५५ प्रति सं० २। पत्र स० १७। आ० ६½×४½ इञ्च। ले०काल स० १९२८ फाल्गुण सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन स० ११४४। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८६५६. प्रति स० ३ । पत्रस० १४ । आ० ११×४½ इञ्च । ले०कालस० १७५१ चैत बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी ।

विशेष—करवर नगर मे प० मायाचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

८६५७. प्रतिस० ४ । पत्र स० १० । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल स० १६०४ श्रावण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० ५२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

८६५८ प्रतिसं० ५ । पत्रस० १२ । आ० १२×५ इञ्च । ले०काल + । पूर्ण । वेष्टन स० १६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बूदी ।

८६५९. भक्तामर स्तोत्र पूजा—× । पत्रस०१२ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल स० १६२० । पूर्ण । वेष्टन स० ३६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८६६०. भक्तामर स्तोत्र पूजा—× । पत्र स० १६ । आ० ६½×६ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८१४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मदिर करौली ।

८६६१. भक्तामर स्तोत्र पूजा—× । पत्रस० १० । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विपय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८२७ ज्येष्ठ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० ३५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

८६६२. भक्तामर स्तोत्र पूजा—× । पत्र स० ८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८८० पौष बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० १३४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर । भण्डार ।

विशेष—अजमेर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

८६६३. भक्तामर स्तोत्र उद्यापन पूजा—केशवसेन । पत्रस० १७ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८८७ । पूर्ण । वेष्टन स० ४३-२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक)

विशेष—मथुरा निवासी चपालाल जी टोग्या की धर्म पत्नी सेराकवरी ने भक्तामर व्रतोद्यापन मे चढाया था ।

८६६४. भक्तामर स्तोत्र पूजा—× । पत्रस० ११ । आ० १०×४½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८४० । पूर्ण । वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

८६६५. भुवनकीर्ति पूजा—× । पत्रस० २ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८६० । पूर्ण । वेष्टन स० १६११ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष - भट्टारक भुवनकीर्ति की पूजा है ।

८६६६ महाभिषेक विधि— × । पत्रस० ३३ । आ० ११×४¾ इञ्च । भापा-सस्कृत । विषय—पूजा विधान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

८६६७. महाभिषेक विधि— × । पत्रस० २-२३ । आ० १०½×४½ इञ्च । भापा-सस्कृत । विपय—विधि विधान । र०काल × । ले०काल स० १६३५ पौप बुदी १४ । अपूर्ण । वेग्टन स० ३१५ । **प्राप्तिस् थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी (कामा)

विशेष—सारमगपुर मे प्रतिलिपि हुई थी । स० १६४५ मे मडलाचार्य गुणचन्द्र तत् शिष्य ब्र० जेसा ब्र० स्याणा ने कर्मक्षयार्थ प० माणक के लिये की थी ।

८६६८. महावीर पूजा—वृन्दावन । पत्र स० ५ । आ० १०½×५ इ च । भापा-हिन्दी पद्य । विपय—पूजा । र०काल × । । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बडा बीसपथी मदिर दौसा ।

८६६९. महाशांतिक विधि— × । पत्रस० ६५ । आ० १०½×६½ इञ्च । भापा-सस्कृत । विपय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

८६७० मासान्त चतुर्दशी व्रतोद्यापन— × । पत्र स० २६ । आ० १०½×५½ इञ्च । भापा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल× । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

८६७१. मासांत चतुर्दशी व्रतोद्यापन— × । पत्रस० १६ । आ० १०½×५½ इ च । भापा-सस्कृत । विपय-पूजा । र० काल × । ले०काल स० १८७२ वैशाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० २०/३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

८६७२. मासांत चतुर्दशी व्रतोद्यापन— × । पत्रस० ११ । आ० १०×६½ इञ्च । भापा-सास्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ३१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

८६७३. मांगीतुंगी पूजा—विश्वभूषण । पत्र स० ११ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र० काल स० १६०४ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८६७४ मुक्तावली व्रत पूजा— × । पत्रस० २ । आ० ६½×४¾ इञ्च । मापा—सस्कृत । विपय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८४-६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

विशेष—भट्टारक मकलकीर्ति कृत मुक्तावली गीत हिन्दी मे और है ।

८६७५. मुक्तावली व्रत पूजा— × । पत्रस० १९ । भापा—सस्कृत । विपय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १९२५ । पूर्ण । वेप्टन सं० २२ । **प्राप्दि स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

८६७६ मुक्तावलि व्रतोद्यापन—× । पत्र स० १२ । आ० ६×६½ इन्च । भाषा-सस्कृत । पय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ाटडियो का डू गरपुर ।

८६७७. मुक्तावलि व्रतोद्यापन—× । पत्रस० १४ । आ × । भाषा-सस्कृत । विपय-पूजा । ›काल × । ले०काल स० १८८६ ज्येष्ठ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० १०-३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन न्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक)

विशेष—गुमानीराम ने देवगोद वास्तव्य मे प्रतिलिपि की थी ।

८६७८. मुक्तावलि व्रतोद्यापन – × । पत्रस० १४ । आ० ११½×५ इन्च । भाषा-सस्कृत । पय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८०-१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर मनाथ टोडारायसिह (टोक)

विशेष—प० शिवजीराम के शिष्य सदासुख के पठनार्थ लिखी गई थी ।

८६७९. मेघमाला व्रतोद्यापन पूजा—× । पत्रस० ४ । आ० १२×६ इन्च । भाषा-सस्कृत । पय-पूजा । र०काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्टनस० ३५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर ौली ।

८६८०. मेघमालिका व्रतोद्यापन—× । पत्र स० ६ । आ० १०×६ इन्च । भाषा-सस्कृत । पय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ५३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर टडियो का डू गरपुर ।

८६८१. मेघमाला व्रत पूजा—× । पत्रस० ३१ । आ० ११½×५ इन्च । भाषा-सस्कृत । पय—पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भिनन्दन स्वामी बू दी ।

८६८२ मेघमाला व्रत पूजा—× । पत्रस० ४ । आ० १०×५ इन्च । भाषा-सस्कृत । पय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३०-१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर मिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

८६८३. याग मडल पूजा—× । पत्रस० ४ । आ० ११×५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ गान बू दी ।

८६८४ याग मडल विधान—प० धर्मदेव । पत्र स० ४० । आ० ६½×६½ इन्च । भाषा-स्कृत । विपय-विधान । र०काल × । ले० काल स० १६३६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२०-१२० । **प्राप्ति ान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

८६८५. याग मण्डल विधान—× । पत्र स० २५-५३ । आ० १०×७ इन्च । भाषा-स्कृत । विपय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन न्दिर नागदी बू दी ।

८६८६ योगीन्द्र पूजा—× । पत्रस० ४ । आ० ११×५½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४१२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८६८७ रत्नत्रय उद्यापन—केशवसेन। पत्र स० १२। आ० १०½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले०काल स० १८१७ ज्येष्ठ बुदी १। पूर्ण। वेष्टन स० ३७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—प० आलमचन्द के शिष्य जिनदास ने लिखा था।

८६८८ **रत्नत्रय उद्यापन पूजा**—×। पत्रस० ६। आ० ११½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल स० १८८० सावण बुदी २। पूर्ण। वेष्टन स० १३६६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८६८९ **रत्नत्रय उद्यापन पूजा**—×। पत्र स० ३६। आ० १०×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल स० १९४९ आसाढ बुदी १४। पूर्ण। वेष्टन स० ४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोठ्यों का नैणवा।

विशेष—नैणवा मे धन्नालाल जी छोगालालजी धानोत्या आवा वालो ने प्रतिलिपि कराई थी।

८६९०. **रत्नत्रय उद्यापन विधान**—×। पत्रस० ३२। आ० ११×७ इच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १०९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी।

८६९१. **रत्नत्रय जयमाल**—×। पत्र स० १४। आ० ११×५½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल १८८५। पूर्ण। वेष्टन स० १६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मदिर उदयपुर।

८६९२. **रत्नत्रय जयमाल**—×। पत्रस० १८। आ० ६½×४½ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा र०काल ×। ले०काल स० १८७२ वैशाख सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन स० ११२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना।

विशेष—खुशालचन्द ने बयाना मे प्रतिलिपि की थी। श्लोको के ऊपर हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है।

८६९३ **रत्नत्रय जयमाल**—×। पत्रस० ४। आ० १०½×५½ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल स० १८०५। पूर्ण। वेष्टन स० ६२६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष - प्रति टव्वा टीका सहित है।

८६९४. **रत्नत्रय जयमाल**—×। पत्र स० ८। आ० ८×४ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ९७७। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

८६९५. **रत्नत्रय जयमाल**—×। पत्रस० ४। आ० १०½×४ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० २७७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी।

८६९६. **रत्नत्रय जयमाल**—×। पत्रस० ६। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—प्राकृत संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल स० १८०५। पूर्ण। वेष्टनस० ५३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली।

८६६७. रत्नत्रय जयमाल—X । पत्रस० ५ । भाषा प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल X । ले०काल X । अपूर्ण । वेष्टनस० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर उदयपुर ।

८६६८. रत्नत्रय जयमाल – X । पत्रस० ११ । आ० ८$\frac{3}{4}$X६$\frac{1}{4}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल X । ले०काल स० १९६३ आषाढ बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० ६६३ । **प्राप्ति स्थान**–भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—मागीलाल बडजात्या कुचामण वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

८६६९ रत्नत्रय जयमाल भाषा—नथमल । पत्र स० १० । आ० १२X७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल X । ले०काल स० १९२५ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ४८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८७००. रत्नत्रय पूजा—भ० पद्मनन्दि । पत्रस० १६ । आ० ११ X ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

८७०१. रत्नत्रय पूजा—X । पत्रस० १४ । आ० ११X७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टनस० १४७८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८७०२. रत्नत्रय पूजा—X । पत्र स० १२ । आ० १२$\frac{1}{2}$X४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टनस० ३६८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८७०३. रत्नत्रय पूजा—X । पत्र स० १५ । आ० ८X६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा ।

८७०४. रत्नत्रय पूजा—X । पत्रस० ५ । आ० १२X६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १६८-११० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक)

८७०५. रत्नत्रय पूजा X । पत्रस० २२ । आ० ११X५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल X । ले०काल स० १८२३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—सवाई जयपुर मे लिखा गया था ।

८७०६. रत्नत्रयपूजा—X । पत्रस० १६ । आ० ८X५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

८७०७ रत्नत्रय पूजा—X । पत्रस० १६ । आ० १०X५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल X । ले०काल स० १८७६ । पूर्ण । वेष्टनस० १०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

८७०८. **रत्नत्रय पूजा**—× । पत्रस० ६ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १६/३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मदिर करौली ।

८७०६. **रत्नत्रय पूजा**—× । पत्रस० २६ । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्टनस० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर डीग ।

विशेष—दोहा शतक-रूपचन्द कृत तथा विवेक जखडी-जिनदास कृत हिन्दी मे और है ।

८७१०. **रत्नत्रय पूजा**—× । पत्र स० ४-२५ । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ६०/३१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

८७११ **रत्नत्रय पूजा**—× । पत्र स० २३ । आ० १२½×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० × । पूर्ण । वेष्टन स० १४७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

८७१२. **रत्नत्रय पूजा**—× । पत्रस० १६ । आ० १२×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

८७१३. **रत्नत्रय पूजा जयमाल**—× । पत्रस० १७ । भाषा-अपभ्र श विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल १७६६ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

८७१४. **रत्नत्रय पूजा—टेकचन्द** । पत्र स० २६ । आ० १४×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय पूजा । र० काल × । ले०काल स० १६२६ फागुण सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन तेरह पथी मन्दिर नैणवा ।

८७१५. **प्रतिसं० २** । पत्रस० ३५ । आ० १३½×५½ इञ्च । ले० काल स० १६७२ । पूर्ण । वेष्टन स० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मदिर उदयपुर ।

८७१६. **रत्नत्रय पूजा—द्यानतराय** । पत्र सं० ८ । आ० ११×५ इच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोंक) ।

८७१७. **प्रति सं० २** । पत्रस० ६ । आ० १०×४½ इच । ले० काल स० १९९१ । पूर्ण । वेष्टन स० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

८७१८. **रत्नत्रय पूजा भाषा**—× । पत्रस० १२ । आ० ११½×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल स० १६४६ । पूर्ण । वेष्टन स० ११५६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

८७१६. **रत्नत्रय पूजा**—× । पत्रस० ४६ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल स० १६४० । पूर्ण । वेष्टनस० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

८७२० **रत्नत्रय पूजा**—X । पत्र स० २० । आ० १२X५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल X । ले०काल स० १६०७ । पूर्ण । वेष्टन स० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोक) ।

८७२१ **रत्नत्रय पूजा**—X । पत्रस० ३० । आ० ११X८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टनस० ६३/६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राजस्थान) ।

८७२२. **रत्नत्रय पूजा**—X । पत्र स० ३६ । आ० ११X८ इञ्च । भासा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल x । ले०काल स० १६३२ माग सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—दौसा मे प्रतिलिपि हुई थी ।

८७२३. **रत्नत्रय पूजा**—X । पत्रस० १६ । आ० १०X६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल स० १६३४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

८७२४. **रत्नत्रय पूजा**—X । पत्र स० २३ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

८७२५. **रत्नत्रय पूजा विधान**—X । पत्र स० १६ । आ० १०½X४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल—X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ६५१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८७२६. **रत्नत्रय पूजा विधान**—पत्र स० १६ । आ० ८¾X५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल—x । ले०काल—X । पूर्ण । वेष्टन स०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक) ।

८७२७ **रत्नत्रय मडल विधान**—X । पत्र स० ३६ । आ० १५X५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल X । ले० काल स० १६५० चैत्र सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक) ।

विशेष—फूलचन्द सौगाणी ने प्रतिलिपि की थी ।

८७२८. **रत्नत्रय मडल विधान**—X । पत्रस० १० । आ०८½X७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

८७२६ **रत्नत्रय विधान (वृहद)**—X । पत्र स० ६ । आ० १०½X७½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टनस० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

८७३० **रत्नत्रय विधान**—X । पत्र स० २४ । आ० १२X६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र० काल X । ले० काल स० १६३० पौष बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष – स्योबक्स श्रावक ने फतेहपुर मे लिपि कराई थी।

८७३१. रत्नत्रय विधान—× । पत्रस० ११ । आ० $10\frac{1}{2}$ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८९३ आसोज बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन स० १८८ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

८७३२ रत्नत्रय विधान—× । पत्र० स० ४५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८३/६४ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राजस्थान)।

८७३३. रत्नत्रय विधान— × । पत्रस० १ । आ० १३ × ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४३६/३८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर।

८७३४. रत्नत्रय विधान—× । पत्रस० ३९ । आ० $10 \times 6\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल ×। ले०काल स० १९४३ । पूर्ण । वेष्टनस० २१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी।

८७३५. रत्नत्रय विधान—× । पत्रस० ४७ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी बूदी।

८७३६. रत्नत्रय विधान—× । पत्रस० ३ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६६/१८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह।

८७३७. रत्नत्रय व्रतोद्यापन—× । पत्रस० १२ । आ० $12 \times 5\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

८७३८. रत्नत्रय व्रतोदद्यापन—× । पत्रस० १५ । आ० $12 \times 5\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८५९ भादो सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० २६/१५ । **प्राप्ति-स्थान**-दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक)।

८७३९. रविव्रत पूजा—भ० देवेन्द्रकीर्ति । पत्र स० ९ । आ० $11\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८५० । पूर्ण । वेष्टन स० ३८८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

८७४०. प्रति सं० २ । पत्र स० ६ । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी।

८७४१. रविव्रत पूजा—× । पत्रस० १० । आ० १०×४ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२१ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक।

८७४२. रविव्रत पूजा एवं कथा—मनोहरदास। पत्रसं० २०। ग्रा० ५½×४½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय पूजा एव कथा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ८७। प्राप्ति-स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

८७४३. रविव्रतोद्यापन पूजा—रत्नभूषण। पत्रसं० ८। ग्रा० १०×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २४०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

८७४४ प्रति स० २। पत्र स० १३। ग्रा० १०½×६¾ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन म० १५४ ९६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

८७४५ रविव्रतोद्यापन पूजा—केशवसेन। पत्र स० ६। ग्रा० १२×५¾ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १००। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पचायती करौली।

८७४६ रेवा नदी पूजा—विश्वभूषण। पत्रसं० ६। ग्रा० ११×५½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २७८। प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष—रेवा नदी के तट पर स्थित सिद्धवरकूट तीर्थ की पूजा है—

८७४७. रोहिणी व्रत पूजा—×। पत्र स० ९। ग्रा० ११¾×६ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १३४५। प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

८७४८. रोहिणी व्रत पूजा—×। पत्र स० ४। ग्रा० १०×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३८५। प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

८७४९. रोहिणी व्रत पूजा। पत्र स० २१। ग्रा० ९×५½ इच। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २७८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान, बूदी।

विशेष—मूल पूजा सकलकीर्ति कृत है।

८७५० रोहिणी व्रत मडन विधान—×। पत्रसं० ३०। ग्रा० ८½×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत हिन्दी।—विषय पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनसं० २८७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी।

८७५१ रोहिणी व्रतोद्यापन—वादिचन्द्र। पत्रसं० २१। ग्रा० १०×४½ इञ्च। भाषा—[illegible]। विषय पूजा। र०काल ×। ले०काल स० १७१३ मगसिर सुदी ५। पूर्ण। वेष्टनसं० १०२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन [illegible] मन्दिर उदयपुर।

८७५२. रोहिणी व्रतोद्यापन—× । पत्रस० १६ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८६८ । पूर्ण । वेष्टनस० ११ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

८७५३. रोहिणी व्रतोद्यापन—× । पत्रस० १५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल ×। ले०काल स० १८६५ । पूर्ण । वेष्टनस० २५० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

८७५४. रोहिणी व्रतोद्यापन पूजा—× । पत्र स० २० । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टन स० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक)

८७५५. रोहिणी व्रतोद्यापन—केशवसेन— ×। पत्रस० १७ । आ० १४×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल×। पूर्ण । वेष्टन स० १३१ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

८७५६. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १३ । आ० १२×५½ इच । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० २७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

८७५७. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १० । आ० १०½×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

८७५८ प्रति स० ४ । पत्रस० १६ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोक)

८७५६. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ४ । आ० ११×७ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

८७६०. लघु पंच कल्याणक पूजा—हरिभान । पत्रस० १७ । आ० १३×७¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल स० १६२६ । ले०काल स० १६२८ मार्गशीर्ष बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—भीकालाल छावडा की बहिन मूलोबाई ने पचायती मन्दिर करौली मे स० १६८१ मे चढाई थी ।

८७६१ लघुशांति पाठ—सूरि मानदेव । पत्रस० १ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ६२०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रारम्भ मे पार्श्वनाथ स्तवन दिया हुआ है, जिसे घण्टाकर्ण भी कहते है ।

८७६२ लघुशान्ति पाठ—× । पत्र स० ३ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६८/४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा)

८७६३. लघुशान्तिक पूजा—पद्मनन्दि । पत्रस० ३८ । आ० ११½×५½ इञ्च । भापा-सस्कृत । विपय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोट्यो का नैणवा ।

८७६४ लघुशान्तिक विधि—× । पत्र स० १७ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विपय-विधान । र०काल × । ले०काल स० १५४८ । पूर्ण । वेप्टन स० ६२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति—

सवत् १५४८ वर्षे चैत्र बुदी १० गुरु दिने श्री मूलसघे नद्याम्नाये स० गच्छे वलात्कारगणे श्री कुन्द-कुन्दाचार्यान्वये भ० पद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्रदेवा तत् शिष्य भ० रत्नकीर्तिदेवास्तत् शिष्य ब्रह्म मोट्टराज ज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थं लिखापित ।

ज्ञानवान ज्ञानदानेन निर्भयो ऽभयदानत ।
अभयदानात् सुखी नित्यनिर्व्याधी भैपज भवेत्

८७६५. लघु सिद्धचक्र पूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्रस० ४६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सास्कृत । विपय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८७६६. लघुस्नपन विधि—× । पत्रस० ५ । आ० ८½×५½ इञ्च । भापा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

८७६७. लब्धिविधनोद्यापन पूजा—× । पत्रस० ११ । आ०११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विपय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १६१० । पूर्ण । वेष्टन स० ४४/२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर दूनी (टोक)

८७६८. लब्धिविधान—भ० सुरेन्द्रकीर्ति । पत्रस० १० । आ० १०½×५ इञ्च । भापा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८६८ फागुण बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १५-१०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक)

८७६९. लब्धिविधान—× । पत्र स० ४-११ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विपय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ६५६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८७७० लब्धिविधान उद्यापन—× । पत्र स० । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विपय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ५३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

८७७१. लब्धिविधान उदयापन पाठ । पत्रस० १२ । आ० ६½×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विपय-पूजा एव विधान । र०काल × । ले० काल स० १६०५ भादवा सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

८७७२ **लब्धि विधान पूजा—हर्षकीर्ति ।** पत्रस० २ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

८७७३. **लब्धिविधान पूजा**—× । । पत्रस० १३ । आ० ६½×४½ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल स० १८८६ भादवा बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन म० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

८७७४. **लब्धि विधानोध्यापन पाठ—×** । पत्रस० ७ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६/३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगानी मदिर करौली ।

८७७५. **वर्तमान चौबीसी पूजा—चुन्नीलाल ।** पत्रस० ७१ । आ० १२¾×७¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प चायती मदिर करौली ।

८७७६ **वर्तमान चौबीसी पूजा**—× । पत्र स० १११ । आ० १०½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १९१७ पौष बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

८७७७. **वर्धमान पूजा—सेवकराम ।** पत्र स० २ । आ० ११×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल १९४६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

८७७८. **वसुधारा**—× पत्रस० ३ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत विषय-विधि विधान । र०काल × । ले०काल स० १७५३ । पूर्ण । वेष्टन स० २८९-१२९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

८७७९ **वास्तुपूजा विधान**—× । पत्र स० ८/११ । आ० १३×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४३७/३८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर स भवनाथ उदयपुर ।

८७८० **वास्तुपूजा विधि**—× । पत्रस० ६ । आ० ९½×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १९४४ भादवा सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १२१३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८७८१. **वास्तु पूजा विधि**—× । पत्र स० ७ । आ० ८×६½ इञ्च । भाषा-विधान । विषय-विधान । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २९९/११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

८७८२ **वास्तु विधान**—× । पत्रस० ६ । आ० ९×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २२७/३९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सभवनाथ उदयपुर ।

८७८३. **विदेहक्षेत्र पूजा**—× । पत्रस० ३८ । ग्रा० ११½×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर खडेलवाल उदयपुर ।

८७८४. **विद्यमान बीस विरहमान पूजा—जोहरीलाल** । पत्रस० ८ । ग्रा० ७½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ५७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८७८५. **विधमान बीस तीर्थंकर पूजा—ग्रमरचन्द** । पत्रस० २८ । ग्रा० ११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १९२५ फाल्गुण सुदी ९ । ले० काल स० १९२५ । पूर्ण । वेष्टन स० १८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सडेलवाल पचायती मन्दिर ग्रलवर ।

८७८६. **प्रतिसं० २** । । पत्रस० २९ । ले०काल सं० १९२६ । पूर्ण । वेष्टन स० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प चायती मन्दिर भरतपुर ।

८७८७. **विमानपक्ति पूजा**—× । पत्रस० ४ । ग्रा० ११×४ इ च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३८/३३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

८७८८. **विमानपक्ति पूजा** –× । पत्रस० ९ । ग्रा० १०×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल स० १९३८ । पूर्ण । वेष्टनस० ३०९/११७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

८७८९. **विमानपक्ति पूजा**—× । पत्रस० ७ । ग्रा० १०¾×४½इञ्च । भापा-सस्कृत । विपय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५० (ग्र) । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ग्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

८७९०. **विमान पक्ति व्रतोदचापन—ग्राचार्य सकलभूषण** । पत्रस० ६ । ग्रा० ११×४½ इञ्च । भापा-सस्कृत । विपय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ग्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

८७९१ **प्रतिस० २** । पत्र स० ६ । ग्रा० ११×५ इञ्च । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ग्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—ग्राचार्य नरेन्द्र कीर्ति के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

८७९२ **विमान शुद्धि पूजा**—× । पत्रस० ५१ । ग्रा० १०½×६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विपय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८२७ । पूर्ण । वेष्टन स० १२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान (बू दी) ।

विशेष – सणेले ग्राम मे लिखा गया था ।

८७९३ **विमान शुद्धि शातिक विधान—चन्द्रकीर्ति** । पत्रस० १४ । ग्रा० ८×६½ इञ्च । भापा-सस्कृत । विपय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३०३/११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

८७९४. विवाह पटल—X । पत्र स० ११ । आ० १०X४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० २३ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा) ।

८७९५. विवाह पटल—X । पत्र स० २७ । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल X । ले०काल स० १७८७ द्वि० भादवा बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है

८७९६. विवाह पटल—X । पत्र स० ७ । आ० १०$\frac{3}{4}$X४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय विधान । र०काल X । ले० काल स० १६६६ । अपूर्ण । वेष्टन स० १७३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

८७९७. विवाह पटल—X । पत्रस० ६ । आ० १०X४$\frac{1}{4}$इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १०६८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—श्री हरिदुर्ग मध्ये लिपिकृत ।

८७९८. विवाह पद्धति—X । पत्र स० १६ । आ० ६$\frac{1}{2}$X५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल X । ले० काल स० १८५७ श्रावण बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० २८० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूदी ।

८७९९. विवाह विधि—X । पत्रस० २७ । आ० ९X३ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वेष्टनस० २२१/६६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

८८००. प्रतिसं० २ । पत्रस० १-११ । ले०काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० २२२/६६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

८८०१ वेदी एवं अष्टपताका स्थापन नवग्रह पूजा—X । पत्र स० ९ । आ० ११X६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ३०२-११७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

८८०२. व्रत निर्णय—X । पत्रस० ४० । आ० १३X५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधि विधान । र०कालX । ले०काल स० १९५२। पूर्ण । वेष्टनस० ३२२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

८८०३. व्रत पूजा सग्रह—X । पत्र स० २०६ । आ० १०$\frac{1}{2}$X५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल X । ले०काल स० १८०९ श्रावण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ८१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

८८०४. व्रत विधान—X । पत्र स० १६ । आ० १०$\frac{1}{2}$X४$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-विधान । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १०४९ । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—व्रतो का ब्योरा है।

८८०५ व्रत विधान—×। पत्रस० ४-१५। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-विधान। र०काल ×। ले०काल स० १८६२। अपूर्ण। वेष्टन स० ७५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—प० केसरीसिंह ने जयपुर मे प्रतिलिपि कराई थी।

८८०६ व्रत विधान—×। पत्र स० १८। आ० १०×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २८१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी।

८८०७. व्रत विधान—×। पत्र स० ४। आ० १२×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—विधान। र० काल ×। ले०काल। पूर्ण। वेष्टन स० ५४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर।

८८०८. व्रत विधान पूजा—अमरचन्द। पत्रस० ४२। आ० ६½×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय—पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना।

विशेष—प्रारम्भ का पाठ—

वन्दौ श्री जिनराय पद, ग्यान वुद्धि दातार।
व्रत पूजा भाषा कहो, यथा सुश्रुत अनुसार।

× × ×

अन्तिम पाठ—

तीन लोक माहि सार मध्य लोक को विचार।
ताके मध्य दीपोदधि असख प्रमानजी।
सब द्वीप मध्य लसै जबू नामा दीप यह
ताकी दिशा दस तामै भरत परवान जी।
तामै देस मेवात है बसत सुबुद्धी लोग
नगर पिरोजपुर झिरकी महान जी।
जामे चैत्य तीन बने पूजत है लोग घने
वसत श्रावग वहा बडे पुन्यवान जी ॥१॥
मूलसघी साधलसै सरस्वतीगच्छ जिसे
गणसी बलात्कार कुन्दकुन्द आनजी।
ऐसो कुलमाना है वश मे खडेलवाल
गोत की लुहाडया रुच करी जिनवानी जी।
किसन हीरालाल सुत अमरचन्द नित
वान के ख्याल व्रत छद यो वखान जी।
यामे भूल-चूक होय साध लीज्यो प्राग्य लोग
मेरो दोष खिमा करो खिमा बडो गुण या उर आनो जी ॥२॥

८८०९. व्रतसार—× । पत्रस० ६ । आ० १०३/४×५१/२ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—व्रत विधान । र०काल × । ले० काल स० १८१६ । पूर्ण । वेष्टन स० १७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८८१०. व्रतोद्यापन संग्रह—× । वेष्टन स० ३३-१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष— निम्न सग्रह है—

१	जिनगुण सम्पत्ति व्रतोद्यापन	सुमति सागर ।	सस्कृत
२	कर्मदहन पूजा	विद्याभूषण ।	
३	षोडशकारण व्रतोद्यापन	मुनि ज्ञान सागर ।	"
४	भक्तामर स्तोत्र मंडल स्तवन	× ।	"
५.	श्रुत स्कध पूजा	वीरदास ।	"
६	पञ्च परमेष्टि पूजा विधान	यशोनन्दि ।	"
७,	रत्नत्रयोद्यापन पूजा	भ० केशवसेन ।	
८	पञ्चमी व्रतोद्यापन पूजा	×	"
९	कजिका व्रतोद्यापन	यश कीर्ति ।	"
१०.	रोहिणी व्रतोद्यापन	×	"
११.	दशलक्षण व्रतोद्यापन	×	"
१२	पल्य विधान पूजा	अभयनन्दि ।	"
१३	पुष्पाञ्जिली व्रतोद्यापन	×	"
१४,	नवनिधान चतुर्दश रत्न पूजा	लक्ष्मीसेन ।	"
१५	चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा	विद्याभूषण ।	"
१६.	पच कल्याणक पूजा	×	"
१७	सप्त परमस्थान पूजा	×	"
१८	अष्टाह्निका व्रत पूजा	ब्रह्म सागर ।	"
१९	अष्ट कर्मचूर्ण उद्यापन पूजा	×	"
२०	कवल चन्द्रायण पूजा	जिनसागर	"
२१.	सूर्यव्रतोद्यापन पूजा	ब्र० ज्ञानसागर	"
२२.	हवन विधि	×	"
२३.	बारहसै चौबीसी व्रतोद्यापन	×	"
२४	तीस चौवीसी व्रतोद्यापन	भ० विद्याभूषण ।	"
२५	अनन्त चतुर्दशी पूजा	भ० विश्वभूषण ।	"
२६	त्रिपचाशत क्रियोद्यापन	×	"

८८११. व्रतोद्यापन पूजा संग्रह—× । पत्र स० १२-६६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय–पूजा । र० काल × । ले० काल १८२१ । पूर्ण । वेष्टनस० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

रत्ननन्दि कृत पल्य विधानोद्यापन, नदीश्वरव्रतोद्यापन, सप्तमी उद्यापन, त्रेपनक्रिया उद्यापन जिनगुण सम्पत्ति व्रतोद्यापन, बारह व्रतोद्यापन, षोडशकारण उद्यापन, चारित्र व्रतोद्यापन का सग्रह है।

८८१२ **व्रतो का व्योरा**—X । पत्रस० १२ । ग्रा० ७X५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-विधान । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० २४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा)

८८१३. **वृहद् गुरावली पूजा—स्वरूपचन्द** । पत्रस० ८२ । ग्रा० ६½X५¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय पूजा । र०काल स० १६१० सावन सुदी ७ । ले०काल स० १६३५ । पूर्ण । वेष्टन स० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—जीवनलाल गिरधारीलाल के तृतीय पुत्र किशनलाल ने नगर करौली मे नेमिनाथाय चैत्यालय मे प्रतिलिपि करवायी थी ।

८८१४. **प्रतिस० २** । पत्रस० २८ । ग्रा० १५X५ इञ्च । ले०काल स० १९१० । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नागदी बू दी ।

८८१५ **वृहत् पुण्याह वाचन**— X । पत्रस० ५ । ग्रा० १२X४¾ इञ्च । भाषा--सस्कृत । विषय-विधि विधान । ले०काल स० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन स० १६३-६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

८८१६ **वृहद् पूजा सग्रह**—X । पत्रस० २१६ । ग्रा० ८½X६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत-प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल X । ले०काल स० १८२१ फागुन बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनपचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—नैमित्तिक पूजाओ का सग्रह है ।

८८१७. **वृहद् पच कल्याणक पूजा विधान**—X । पत्रस० २२ । ग्रा० ६½X४¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० २५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

८८१८. **वृहत् शाति पूजा**—X । पत्रस० १२ । ग्रा० ८½X४¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल X । ले०काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० १३१२ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८८१६. **वृहद् शान्ति विधान—धर्मदेव** । पत्रस० ३६ । ग्रा० ११X५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल X । ले०काल स० १८८२ चैत्र सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनस० ४३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—बगरू ग्राम के आदिनाथ चैत्यालय मे ठाकुर बाघसिंह के राज्य मे झाभूराम ने प्रतिलिपि की थी ।

८८२०. **वृहद् शान्ति विधान**—X । पत्र स० ५ । ग्रा० १०X४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—विधान । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ३०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बू दी ।

८८२१ **वृहद् शान्ति विधान**—× । पत्रस० ३ । आ० ११$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

८८२२. **वृहद् शान्ति विधि एव पूजा सग्रह**—× । पत्र स० २६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

८८२३ **वृहद् षोडशकारण पूजा**—× । पत्रस० ४५ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

८८२४. **वृहद् षोडशकारण पूजा**—× । पत्रस० १५ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल स० १८१८ सावण सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८८२५. **वृहद् सम्मेद शिखर महात्म्य--मनसुखसागर** । पत्रस० १३७ । आ० १२$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल स० १९३० माघ सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १२१६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८८२६. **वृहद् सिद्धचक्र पूजा – भ० भानुकीर्ति** । पत्रस० १४९ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति—अच्छी है ।

जयपुर नगर मे लश्कर के मन्दिर मे प० केशरीसिंह जी के शिष्य झांडूराम देवकरण ने प्रतिलिपि की थी ।

८८२७. **शत्रु जय उद्धार—नयनसुन्दर** । पत्रस० ६ । आ० ९$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८१५ । पूर्ण । वेष्टनस० १९१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

८८२८. **शास्त्र पूजा**—× । पत्रस० ५३-६३ । आ० ७$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० × । पूर्ण । वेष्टनस० ६८-५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राजस्थान) ।

८८२९. **शास्त्र पूजा**—× । पत्र स० ७ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८९५ । पूर्ण । वेष्टनस० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

८८३० **शातिकाभिषेक**—× । पत्र स० १८ । आ० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इच । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८८३१. **शातिकाभिषेक**—×। पत्रस० ३६ । आ० १४×६ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल स० १६२८ कार्तिक बुदी ५ ।पूर्ण । वेष्टनस० ३७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा।

विशेष—नैणवा मे प्रतिलिपि हुई थी।

८८३२ **शान्ति पाठ—प० धर्मदेव** । पत्र स० २१ । आ० ११×५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा। र० काल× । ले० काल× । पूर्ण । वेष्टन स० ३६० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

८८३३. **शान्ति पाठ**—× । पत्रस० २ । आ० ८×६ इन्च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १६६१ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन शास्त्र भण्डार मन्दिर लश्कर, जयपुर।

८८३४. **शातिक पूजा विधान**— × । पत्र स० ५ । आ० १०×४½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, चौगान बू दी ।

८८३५. **शातिक विधान—धर्मदेव** । पत्रस० ४७ । आ० ८½×४½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल स० १८५६ चैत्र वदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० ११७७ । **प्राप्ति-स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८८३६. **प्रतिसं० २** । पत्रस० ३७। आ० १०½×५ इन्च । ले०काल स० १८६४ माह बुदी ६ । पूर्ण । वष्टन स० २५-११ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—टोडारायसिंह मे प० श्री वृन्दावन के प्रशिष्य एव सीताराम के शिष्य श्योजीराम ने प्रतिलिपि की थी ।

८८३७. **शान्तिक विधि**— × । पत्रस० २ । भाषा-सस्कृत । विषय-विधि । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

८८३८ **शातिचक्र पूजा**— × । पत्र स० ३ । आ० १०×४ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५६८ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८८३९ **शान्तिचक्र पूजा**— × । पत्र स० ७ । आ० ६½×४½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १६४८ । पूर्ण । वेष्टन स० १६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

८८४० **शातिचक्र पूजा**— × । पत्रस० ४ । आ० ११½×६¾ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

८८४१. **शातिचक्र पूजा**—× । पत्र स० ४ । आ० ६⅞×८⅞ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८५६ आषाढ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ४४-८१ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—राजमहल नगर मे श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे सुखेन पडित ने प्रतिलिपि की थी।

८८४२ शांतिचक्र पूजा—× । पत्रस० ३ । आ० १०×५ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

८८४३. शांतिचक्र विधि—× । पत्रस० ४ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

८८४४. शातिचन्द्र मडल पूजा—× । पत्रस० ४ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल स० १९४८ । पूर्ण । वेष्टन स० ५०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

८८४५ शांतिचक्र मडल विधान—× । पत्रस० ५ । आ० १०½×५¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८९४ । पूर्ण । वेष्टनस० १५८/५७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा) ।

८८४६. प्रतिसं० २ । पत्रस० ४ । ले०काल स० १८०८ अषाढ बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १५९/५७ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

८८४७ शान्तिनाथ पूजा—× । पत्रस० १३ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १७०/७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

८८४८. शातिनाथ (वृहद्) पूजा—ब्र० शांतिदास । पत्र स० १६ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३९२-१४८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

८८४९. शान्तिमंत्र— × । पत्रस० ४ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल स० १९३८ । पूर्ण । वेष्टनस० ३४१/१३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

८८५०. शाति होम विधान—आशाधर । पत्र स० ४ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०३ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

८८५१. प्रतिसं० २ । पत्रस० ५ । आ० ११×६½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

८८५२. शीतलनाथ पूजा विधान—× । पत्रस० ९ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल× । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३८० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८८५३. शुक्लपचमी व्रतोद्योपन—× । पत्रस० ११ । आ० १२×४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २३६/३५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—भट्टारक वादिभूषण के शिष्य ब्र० वेला के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी प्रति प्राचीन है ।

८८५४. शुक्लपचमी व्रतोद्यापन—× । पत्रस० १० । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, (बूदी) ।

८८५५. शुक्लपचमी व्रतोद्यापन—× । पत्र स० ६ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । लेखन काल स० १६३८ । पूर्ण । वेष्टन स० ५१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

८८५६. शुक्लपचमी व्रतोद्यापन—× । पत्र स० ७ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६८/८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

८८५७. शुक्लपचमी व्रतोद्यापन—× । पत्र स० ७ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

८८५८. श्राद्ध विधि—रत्नशेखर सूरि । पत्रस० १६८ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय विधि विधान । र०काल स०१५०६ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६५-२०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

८८५९. श्रावक व्रत विधान—अभ्रदेव । पत्रस० १५ । आ० १०¾×६¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल स० १७६५ माघ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० ४०२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८८६०. श्रुत पूजा—× । पत्रस० ५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८८६१. श्रुत पूजा—× । पत्रस० ४ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८८६२ श्रुत पूजा—× । पत्र स० ४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६१७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८८६३ श्रुत पूजा—× । पत्रस० ४ । आ० १०¾×५¼ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

८८६४. श्रुतस्कध पूजा—ज्ञानभूषण । पत्रस० ६ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८८१ ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी ।

८८६५. श्रुतस्कध पूजा—त्रिभुवनकीर्ति। पत्रस० ३। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल X। ले० काल X। पूर्ण। वेष्टन स० ४/३१८। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

८८६६ **प्रति स० २**। पत्रस० ३। ले०काल स० X। पूर्ण। वेष्टनस० ५/३१६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

८८६७ **श्रुतस्कन्ध पूजा—भ० श्रीभूषण**। पत्र स० १६। आ० १५×४ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल X। ले०काल स० १७३१। पूर्ण। वेष्टन स० ५१४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

विशेष—वहारादुरमध्ये प० भोमजी लिखित।

८८६८ **श्रुतस्कन्ध पूजा—वर्द्धमान देव**। पत्रस० ७। आ० १०×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय पूजा। र०काल X। ले० काल X। पूर्ण। वेष्टनस० ४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी।

८८६९. **श्रुतस्कन्ध पूजा**—X। पत्रस० ६। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल X ले०काल X। पूर्ण। वेष्टन स० १५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूदी।

८८७० **श्रुतस्कन्ध पूजा**—X। पत्र स० ४। आ० ६$\frac{3}{4}$×५$\frac{1}{4}$ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल X। ले०काल X। अपूर्ण। वेष्टन स० ५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर।

विशेष—एक प्रति और है।

८८७१. **श्रुतस्कंध पूजा**—X। पत्र स० ५। आ० ११$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय—पूजा। र०काल X। ले०काल X। पूर्ण। वेष्टन-स० ३४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

८८७२. **श्रुतस्कध पूजा**—X। पत्रस० ३। आ० १३×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-पूजा। र० काल X। ले०काल स० १८७१ ज्येष्ठ सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन स० २७-६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)।

विशेष—प० शिवजीराम ने अपने शिष्य चैनसुख नेमीचन्द के पढने के लिए टोडा मे प्रतिलिपि की थी।

८८७३ **श्रुतस्कध पूजा**—X। पत्रस० ८। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वेष्टन स० ३५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी।

८८७४. **श्रुतस्कंध पूजा**—X। पत्रस० १०। आ० १०$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल X। ले० काल X। पूर्ण। वेष्टनस० ६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)

८८७५. श्रुत स्कध पूजा विधान—बालचन्द । पत्रस० ३५ । आ० ११½×५ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल स० १६४५ ज्येष्ठ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० १२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

८८७६. श्रुत स्कध मडल विधान—हजारीमल्ल—× । पत्रस० २७ । आ० १३×५ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६३२ । पूर्ण । वेष्टन स० ७८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

विशेष—हजारीमल्ल साहिपुरा के रहने वाले थे ।

✓८८७७. श्रुत स्कध मण्डल विधान—× । पत्रस० १ । आ० २३×११½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक) ।

विशेष—मण्डल का नक्शा दिया हुआ है ।

८८७८. षोडशकारण जयमाल—× । पत्रस० १४ । आ० ११×४½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल १७८० श्रावण सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० ६१६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८८७९. षोडशकारण जयमाल—× । पत्रस० १७ । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८३२ । पूर्ण । वेष्टन स० ४८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—ऋषि रामकृष्ण ने भरतपुर मे प्रतिलिपि लिखी थी ।

८८८० षोडशकारण जयमाल—× । पत्रस० ६ । आ० १२×५½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल स० १७८२ भादवा बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० १२२८ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८८८१. षोडशकारण जयमाल—× । पत्रस० ४१ । आ० १३×५ इन्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६४० भादवा बुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० १०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अजमेर

विशेष—गौरीलाल वाकलीवाल ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । टव्वा टीका सहित है ।

८८८२ षोडशकारण जयमाल—× । पत्रस० १० । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—सस्कृत मे टीका है ।

८८८३. षोडशकारण जयमाल—× । पत्र स० १२ । आ० ११×४ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १७१५ माह सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १२२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक) ।

८८८४. षोडषकारण जयमाल—रइधू । पत्रस० १२ । भाषा-अपभ्रश । विषय-पूजा र०काल × । ले०काल स० १८५३ । पूर्ण । वेष्टनस० × । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—गुमानीराम ने भरतपुर मे प्रतिलिपि की थी।

८८८५ प्रतिसं० २ । पत्र स० २७ । आ० ११×५½ इञ्च ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ३४/२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—कही २ सस्कृत मे शब्दार्थ दिये है।

८८८६. षोडशकारण जयमाल वृत्ति— प० शिवजीदरुन (शिवजीलाल)। पत्रस० २६ । आ० १२½×७½इञ्च । भाषा-प्राकृत सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल× । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५१६ ।**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

८८८७ षोडशकारण पूजा—× । पत्र स० २४ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

८८८८. षोडशकारण पूजा—× । पत्र स० १२ । आ० १२¾×५¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय पूजा । र० काल× । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली।

८८८९. षोडशकारण पूजा मडल विधान—टेकचन्द— × । पत्रस० ४१ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

८८९० प्रति स० २ । पत्रस० ५३ । आ० ६½×६½ इञ्च । ले०काल स० १९५६ । पूर्ण । वेष्टनस० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी।

८८९१. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ५२ । ले०काल स० १९७३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३९३-१४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

८८९२. षोडशकारण व्रतोद्यापन—ज्ञानसागर—×। पत्रस० २३ । आ० १२½×७ इञ्च। भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १९३८ । पूर्ण । वेप्टन स० ५२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर।

८८९३. षोडशकारण व्रतोद्यापन पूजा—सुमति सागर। पत्रस० ३२ । आ० ११×६¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८१७ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना।

विशेष—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

अवन्ति नाम सुदेशमध्ये विशालशालेन विभ्राति भूतले।
सुशान्तिनाथस्तु जयोस्तु नित्य, मुञ्जेनकेया परदेव तत्र ॥१॥

श्रीसघथूले विपुलेयदूरे ब्रह्मी प्रगद्द्वलशालिने गणे।
तत्रास्ति यो गोतम नाम धेया त्वये प्रशातो जिनचन्द्र सूरि ॥२॥

श्रीपद्मनन्दिर्भवतापहारी देवेन्द्रकीर्तिमुवनैककीर्ति।
विद्यादिनदिवरमल्लिभूप लक्ष्म्यादिचन्द्रो भयचन्द्रदेव ॥३॥

तत्पट्टे ऽभयनन्दिसो रत्नकीर्ति गुणाग्रणी ।
जीयाद् भट्टारको लोको रत्नकीर्ति जगोत्तम ।।४।।
सुमति सागरदेव चक्रे पूजा मद्यापहा ।
खडेलवालान्वये य प्रह्लादो ह्लादवान्सुधी ।।५।।
कर्त्तापरोधपूजाया मूलसघविदाग्रणी ।
सुमतिसागरदेव श्रद्धापोडशकारणे ।।६।।
इति षोडशकारण व्रतोद्यापनपाठः ।
पचाशदधिकै श्लोकै पट्शतै प्रमित महत् ।
तीर्थकृत्परपूजाया सुमतिसागरोदित ।।७।।

८८६४. प्रति स० २ । पत्रस० २७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

८८६५. प्रति सं० ३ । पत्र स० २१ । आ० १२×५½ इन्च । ले०काल स० १८६७ फागुण बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनस० ८१-१०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

विशेष—अभयचन्द्र के शिष्य सुमतिसागर ने पूजा बनाई । अभयचन्द्र की पूरी प्रशस्ति दे रखी है । टोडा मे श्याम चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी । नाथूरामजी लुहाडिया ने नासिरदा मे मन्दिर चढाया था।

८८६६ प्रतिस० ४ । पत्र स० २६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८८६७. षोडशकारण व्रतोद्यापन । पत्र स० २१ । आ० ६½×५½ इन्च । भापा-सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १७५३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

८८६८. सकलीकरण विधान—× । पत्रस० ३ । आ० १०×४½ इन्च । भापा-संस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३८४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर

८८६६. सकलीकरण—× । पत्रस० २ । आ० १२½×६ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६८८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८६००. सकलीकरण—× । पत्रस० ३ । आ० ११×६ इन्च । भापा-सस्कृत । विषय-विधि विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

८६०१. सकलीकरण—× । पत्रस० ४ । आ०-१०×६½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन आदिनाथ मन्दिर बूदी ।

८६०२. सकलीकरण विधान × । पत्र स० ३ । आ० १०¾×५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

८९०३ **सकलीकरण विधान**—× । पत्र स० २ । आ० १०½×५¾ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय—विधान । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

८९०४. **सकलीकरण विधि**—× । पत्र स० १ । आ० १२×५ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन नेमिनाथ मदिर टोडारायसिंह (टोक) ।

८९०५ **सकलीकरण विधि**—× । पत्रस० ३ । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । । ले०काल स० १९८४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४८-१३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

८९०६. **सकलीकरण विधि**—× । पत्र स० ३४ । भाषा—सस्कृत । विषय—विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूंदी ।

विशेष—अन्त मे शान्तिक पूजा भी है ।

८९०७. **सकलीकरण विधि**—× । पत्र स० ४ । आ० ९×५½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल स० १९११ । पूर्ण । वेष्टनस० २५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान (बूदी) ।

८९०८. **सकलीकरण विधि**—× । पत्रस० ३ । आ० १०½×५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-मत्रशास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान (बूदी) ।

८९०९ **प्रतिसं० २** । पत्र स० ३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६७ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान (बूदी) ।

८९१०. **सत्तर भेदी पूजा** —× । पत्रस० २ । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल—× । ले० काल स० १८०० । पूर्ण । वेष्टनस० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८९११.**सप्तर्षि पूजा—विश्वभूषण** । पत्रस० ४९ । आ० १०¾×¾ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १३७१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८९१२ **प्रतिसं० २** । पत्रस० १४ । ले०काल स० १८५२ । पूर्ण । वेष्टनस० ६१ । **प्राप्ति—स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८९१३. **प्रति सं० ३** । पत्र स० ७ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६२ । **प्राप्ति-स्थान**—उपरोक्त मन्दिर भरतपुर ।

८९१४. **प्रति स० ४** । पत्रस० ३ से ९ तक । ले०काल स० १८५२ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

८९१५ **प्रतिसं० ५** । पत्रस० १० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मदिर भरतपुर ।

८६१६. प्रति स० ६ । पत्र स० १० । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६५ । **प्राप्ति स्थान**-उपरोक्त मन्दिर भरतपुर ।

८६१७. प्रति स० ७ । पत्र स० १२ । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

८६१८. प्रतिसं० ८ । पत्र स० १७ । ले० काल × । पूर्ण ।वेष्टन स० ५३ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

८६१९. सप्तर्षि पूजा—× । पत्रस० ३ । ग्रा० ११$\frac{3}{4}$×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८६२०. सप्तर्षि पूजा—× । पत्र स० ११ । ग्रा० ६×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा - सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १६३६ भादवा बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १७७ । **प्राप्ति स्थान**—ख० पचायती मन्दिर उदयपुर ।

८६२१ सप्तर्षि पूजा—× । पत्रस० ६ । ग्रा० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल—× । ले०काल स० १७६८ । पूर्ण । वेष्टनस० १६१/५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—सवत् १७६८ भट्टारक श्री १०८ जगत् कीर्ति शिष्येण दोदराजेन लिखित ।

८६२२ सप्तर्षि पूजा—मनरगलाल । पत्र स० ३ । ग्रा० १२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६५८ । पूर्ण । वेष्टन स० २०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी (बू दी) ।

८६२३. प्रतिस० २ । पत्रस० ४ । ग्रा० ६$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इच । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स०-११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

८६२४. सप्तर्षि पूजा—स्वरूपचन्द । पत्र स० ११ । ग्रा० ६×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी विषय-पूजा । र०काल स० १६०६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७८ । **प्राप्ति स्थान**—ख० पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—एक अन्य प्रति १२ पत्रो की और है ।

८६२५. सप्तपरमस्थान पूजा—गगादास । पत्रस० १ । ग्रा० १२×६ इच । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १६० र । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर टोडारायसिंह (टोक) ।

८६२६ सप्तपरमस्थान पूजा— × । पत्र स० ४ । ग्रा० १०×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३८६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८६२७. समवसरण पूजा—पन्नालाल । पत्रस० ७४ । ग्रा० १२×८ इच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल स० १६२१ ग्रासोज बुदी ३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

विशेष—८४५ पद्य हैं।

८६२८. **प्रतिसं० २** । पत्रस० ६८ । आ० ११½×५½ इञ्च । ले० काल स० १६३३ वैशाख बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनस० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

८६२६. **प्रतिसं० ३** । पत्रस० १४० । आ० १२½×६ इञ्च । ले०काल स० १६२६ ज्येष्ठ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—प० लाभचन्द ने मथुरा मे घाटी के मन्दिर मे प्रतिलिपि की ।

८६३० **प्रतिसं० ४** । पत्रस० १४३ । आ० १०½×५ इञ्च । ले०काल स० १६२६ आपाढ बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

८६३१ **प्रतिसं० ५** । पत्रस० ६६ । आ० ११½×८ इञ्च । ले०काल स० १६८३ । पूर्ण । वेष्टनस० ५४० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८६३२ **समवसरण पूजा—रूपचन्द** । पत्रस० ६७ । आ० १३ × ६ इञ्च । भापा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८८४ सावन सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ३५/१७ **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक) ।

८६३३ **प्रति स० २** । पत्रस० १६४ । आ० १०½×७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

८६३४. **समवशरण पूजा—विनोदीलाल लालचन्द** । पत्रस० ४६ । आ० १३¾×६¾ इञ्च । भापा-हिन्दी । विपय-पूजा । र०काल स० १८३४ माह बुदी ८ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०२६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

८६३५. **प्रतिसं० २** । पत्र स० ६२ । आ० १०¾×५¼ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३६६ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैनमन्दिर अजमेर ।

विशेष—और भी पाठ सग्रह हैं ।

८६३६. **प्रति स० ३** । पत्र स० ५४ । आ० १२½×६ इञ्च । ले० काल स० १६६८ । चैत सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० १२६७ । **प्राप्ति स्थान** – भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

८६३७. **प्रति स० ४** । पत्र स० १३२ । आ० १०×६½ इच । ले०काल स० १६२३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष—और भी पाठो का सग्रह है ।

८६३८. **प्रति स० ५** । । पत्र स० ११६ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल स० १८८६ भादवा बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १०३/७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा ।

विशेष—देवली ग्राम के उदैराम ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी ।

८६३६ **प्रति स० ६** । पत्रस० ३४ । ले०काल स० १८८२ पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८६४० **प्रतिसं० ७** । पत्रस० ६६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

८६४१ **प्रति स ८** । पत्रस० ४१ । आ० १३½×८ इन्च । ले०काल स० १६३६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

विशेष—स्यौलाल श्रीमाल के पुत्र गैंदालाल सुगनचन्द ने लिखवा कर करौली के नेमिनाथ चैत्यालय मे चढाया था ।

८६४२. **प्रति स० ६** । पत्रस० १४२ । आ० ८½×६½ इन्च । ले०काल स० १६५० । पूर्ण । वेष्टन स० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोक) ।

विशेष—खाजूलाल जी छावडा ने मालपुरा मे प्रतिलिपि करवाई थी ।

८६४३. **प्रतिसं० १०** । पत्र स० १४२ । आ० ४½×५¾ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४३ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मदिर चौधयिान मालपुरा (टोक)

विशेष—लालजी कनहरदास पद्मावती पुरवाल सकूरावाद निवासी के वडे लडके थे ।

८६४४. **प्रतिसं० ११** । पत्र स० १०४ । आ० १२½×६¾ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर ।

८६४५ **प्रतिस० १२** । पत्र स० ३४ । आ० १२½×७ इन्च । ले०काल स० १६६३ । पूर्ण । वेष्टन स० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—लालजीन भी नाम है ।

८६४६. **प्रतिसं० १३** । पत्रस० ११५ । आ० ११½×५ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मदिर उयदपुर ।

८६४७. **प्रतिसं० १४** । पत्र स० ७८ । ले० काल स० १६२४ । पूर्ण । वेष्टन स० १७० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—लिखित गुरु उमेदचन्द लोकागच्छ का अजमेर मध्ये सुखलालजी हरभगतजी अजमेर के हस्ते लिखाई थी ।

८६४८. **प्रतिसं० १५** पत्रस० ७१ । आ० १४×६ इन्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

८६४६. **प्रति स० १६** । पत्रस० ८८ । आ० ६½×५½ इन्च । ले० काल स० १८४५ मगसिर बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

८६५० **प्रतिस० १७** । पत्रस० ५२ । आ० १०½×५ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

८६१५. **प्रतिसं० १८** । पत्रस० ४३ । आ० १४ × ७ इन्च । ले०काल स० १८७८ । पूर्ण । वेष्टन स० २८६-११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

८६५२. **प्रति स० १६** । पत्रस० १२३ । आ० ६½×६ इन्च । ले०काल स० १८६४ । पूर्ण । वेष्टनस० ३० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर वैर ।

८६५३. **प्रतिस० २०** । पत्रस० ८६ । आ० ११×६ इन्च । ले०काल स० १६४३ श्रावण बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १३० । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—माई चन्दहस जैसवाल लाइखेडा (आगरा) ने कलकत्ता अगरतल्ला मे प्रतिलिपि की थी।

८९५४. प्रति सं० २१। पत्रस० ५४। आ० १३×८ इन्च। ले० काल स० १९१६ सावन बुदी ९। पूर्ण। वेष्टन स० १०२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

८९५५. प्रतिसं० २२। पत्रस० ७१। आ० १०½×७½ इच। ले०काल स० १९२६। पूर्ण। वेष्टन स० १९०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल पचायती मन्दिर अलवर।

विशेष—४२ पत्र की नित्य पूजा और है।

८९५६. समवसरण पूजा भाषा—×। पत्रस० ९७। आ० १२×८ इन्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय—पूजा। र०काल ×। ले०काल स० १९४८ पौष बुदी ७। पूर्ण। वेष्टन स० ३०/५९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा)

८९५७. समवसरण पूजा—×। पत्र स० २७। आ० १३×६ इच। भाषा—सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

८९५८. समवसरण पूजा—×। पत्रस० ३६। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल। पूर्ण। वेष्टन स० ३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

८९५९. समवशरण पूजा—×। पत्रस० १७। आ० ११×५ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० २८१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

८९६०. समवसरण पूजा—×। पत्र स० १७०। आ० ९½×५ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल स० १९२३। पूर्ण। वेष्टन स० ३९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी।

विशेष—बू दी मे लिखा गया था।

८९६१. समवसरण पूजा—×। पत्रस० ३३। आ० ११×५ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ३५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी।

८९६२ समवसरण पूजा—×। पत्रस० ९१। आ० ११×५ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ११३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

८९६३. समवसरण विधान—प० हीरानन्द—×। पत्र स० २४। आ० ११×४ इन्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-पूजा। र० काल स० १७०१। ले० काल स० १७४१ पौष सुदी ४। पूर्ण। वेष्टनस० ५०। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा।

विशेष—वनहटे नगर मे जोशी सावलराम ने प्रतिलिपि की थी।

८९६४ समवसरण पूजा—×। पत्रस० ३४। आ० ११×५ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १९३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

८६६५. समवसरण पूजा —×। पत्र स० १०० । आ० १२×८½ इन्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १६७२ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

विशेष—और भी पाठ हैं ।

८६६६ समवसरण की आचुरी—× । पत्रस० ४ । आ० १०½×४½ इन्च । भाषा-मस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली काटा ।

८६६७ समवसरण चौबीसी पाठ—थानसिंह ठोल्या । पत्र स० २६ । आ० १०½×६½ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल स० १८४० ज्येष्ठ सुदी २ । ले०काल स० १८४६ माघ बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

विशेष—करौली मे रचना हुई । सेवाराम जती ने प्रतिलिपि की थी ।

८६६८. समवसरण मंगल चौबीसी पाठ—× । पत्र स० ५१ । आ० ६×५ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल स० १८४८ जेठ बुदी २ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष—इसके कर्त्ता करौली निवासी थे लेकिन कही नाम देखने मे नही आया । छद स० ४०५ है ।

श्रावक के उपदेश सौ सतसगति परमाया ।
थान करौरी मे भाषा छद बनाया ।।

८६६६ समवसरण रचना—× । पत्र स० ५१ । आ० ६×५ इन्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-पूजा एव वर्णन । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बू दी ।

विशेष—समवसरण के अतिरिक्त नर्क स्वर्ग मोक्ष सभी का वर्णन है ।

८६७० समवश्रुत पूजा—शुभचन्द्र । पत्र स० ३६ । आ० १२×५½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

८६७१. समवश्रुत पूजा—× । पत्र स० ४२ । आ० ८½×६ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल× । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

८६७२. सम्मेदशिखर पूजा—भ० सुरेन्द्रकीर्ति । पत्रस० ५ । आ० ११½×५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८६७३. सम्मेदशिखर पूजा — × । पत्र स० १७ । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

८६७४. सम्मेदशिखर पुजा—गगादास । पत्र स० १२ । आ० ७½×५½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४६-६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

८९७५. प्रति सं० २ । पत्र स० १७ । आ० ९½×६¾ इञ्च । ले० काल स० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

८९७६. प्रति स० ३ । पत्र स० ६ । आ० १०⅛×७ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५२/१९५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

८९७७ प्रति स० ४ । पत्रस० २५ । आ० ७½×५½ इ च । ले०काल स० १८८५ फाल्गुन सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सौगाणी करौली ।

८९७८. सम्मेदशिखर पूजा—सेवकराम । पत्रस० २३ । आ० १०½×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल स० १९११ माघ बुदी ५ । ले०काल स० १९११ । पूर्ण । वेष्टन स० ११५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—नाई के मन्दिर मे सुखलाल की प्रतिलिपि की थी ।

८९७९. सम्मेदशिखर पूजा—संतदास । पत्र स० ३ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५७९ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

८९८०. सम्मेदशिखर पूजा—हजारीमल्ल । पत्रस० २४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १९३२ । पूर्ण । वेष्टन स० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बू दी ।

विशेष—मथुरादास ने साहपुरा मे प्रतिलिपि की थी ।

सहसमल्ल विनती करे है किरपानिधि देव ।
आवागमन मिटाइये अरजी यह सुन लेव ।।

८९८१. सम्मेदशिखर पूजा—ज्ञानचन्द्र । पत्र स० १४ । आ० ८×६½ इ च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल स० १९६६ चैत सुदी २ । ले० काल स० १९८६ । पूर्ण । वेष्टन स० १५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

प्रारम्भ—शिखर समेद से बीस जिनेश्वर सिद्ध भये ।
और मुनीश्वर वहुत तहा ते शिव गये ।।
वदू मन वच काय नमू शिर नायके ।
तिष्ठें श्री महाराज सर्वे इत आयके ।।

अन्तिम—उन्नीसो छासठ के माही ।
सवत विक्रम राज कराही ।।
चैत सुदी दोयज दिन जान ।
देश पजाव लाहोर शुभ स्थान ।।
पूजा शिखर रची हरषाय ।
नमें ज्ञानचन्द्र शीश नमाय ।।

इसके अतिरिक्त निर्वाण क्षेत्र पूजा ज्ञानचन्द्र कृत और है जिसका र०काल एव लेखन काल भी वही है ।

विशेष— बूदी नगर वासी गैंदीलाल के पुत्र सतलाल छावडा ने प्रतिलिपि करके ईश्वरीसिंह के शासनकाल मे भेंट की थी।

८६८२. सम्मेदशिखर पूजा—जवाहरलाल। पत्रस० २७ । आ० ६½×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र० काल स० १८६१ वैशाख सुदी । ले०काल स० १६५६। पूर्ण। वेष्टन स० १५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी।

विशेष—कवि छत्रपुर के रहने वाले थे। मुक्तागिरि की यात्रा कू गये और अमरावती मे यह ग्रन्थ रचना करी।

अमरावती नगरी विषै पूजा समकित कीन।

छिमाजी सब जन तुम करो मोहि दोस मत दीन ॥

प० भगवानदास हरलाल वाले ने नन्द ग्राम मे प्रतिलिपि की थी। पुस्तक प० रतनलाल नेमीचन्द की है।

८६८३. प्रति स० ३। पत्रस० २३। आ० ११×६ इञ्च। ले०काल स० १६५६। पूर्ण। वेष्टनस० २०७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी, बूदी।

विशेष— २-३ प्रतियो का मिश्रण है।

८६८४ प्रति स० ४। पत्र स० १४। आ० ११½×६ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २८६/१११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

८६८५. प्रति स० ५। पत्र स० १८। आ० ११×५½ इञ्च। ले० काल स० १६५४ वैशाख बुदी १०। पूर्ण। वेष्टन स० ५८०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

८६८६. प्रति स० ६। पत्र स० १५। आ० १०×६ इञ्च। ले०कालस०—१६४३ आषाढ सुदी १। पूर्ण। वेष्टन स० १६५। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

८६८७ प्रति स० ७। पत्र स० २२। ले० काल स० १६१४। पूर्ण। वेष्टन स० ८६/२६८। **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर।

८६८८. प्रति स० ८। पत्रस० १७। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ३५४-२६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर।

८६८९ प्रति स० ९। पत्र स० १२। आ० १२½×७ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

८६९०. प्रति सं० १०। पत्र स० १७। आ० ११×६ इञ्च। ले० काल स० १६२६। पूर्ण। वेष्टन स० ७/४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)।

विशेष—अमरावती मे रचना हुई। मुन्नालाल कटारा ने हजारीलाल शकरलाल के पठनार्थ व्यास रामवक्स से दूनी मे प्रतिलिपि करवाई थी। सवत् १६४३ मे हजारीलाल कटारा ने अनन्तव्रत के उपलक्ष मे दूनी के मन्दिर मे चढाई।

८६९१. प्रति सं० ११। पत्र स० १२। आ० १२×५ इञ्च। ले० काल स० १८९१। पूर्ण। वेष्टन स० १०८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी (कामा)।

८६६२ **प्रतिसं० १२** । पत्र स० १६ । आ० १०×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३५ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह और है—

नवग्रह स्तोत्र, पार्श्वनाथ स्तोत्र, भूपाल चतुर्विशतिका स्तोत्र ।

८६६३. **प्रतिसं० १३** । पत्रस० १६ । आ० १०$\frac{1}{2}$×७ इच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर मालपुरा (टोक) ।

८६६४. **प्रतिसं० १४** । पत्र स० ७ । ले०काल स० १६२६ आषाढ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—लालजी लुहाडिया भरतपुर वाले ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

८६६५. **सम्मेद शिखर पूजा—भागीरथ** । पत्र स० २८ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८३७ । पूर्ण । वेष्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

८६६६ **सम्मेद शिखर पूजा—द्यानतराय**—× । पत्रस० १८ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-चरित्र । र०काल स० १८३५ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

८६६७. **सम्मेद शिखर पूजा—बुधजन** । पत्रस० १६ । आ० १०×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय–पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

८६६८. **सम्मेद शिखर पूजा—रामपाल** । पत्र स० ११ । आ० ९×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल स० १८८६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २५७-१०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

अन्तिम—मूलसघ मनुहार भट्टारक गुणचन्द्र जी ।
तस पट सोहे सार हेमचन्द्र गच्छपती सही ।।
सकलकीर्ति आचारज जी जानौ ।
तिन के शिष्य कहे मन आनो ।
रामपाल पडित मन ल्यावे ।
प्रभु जी के गुण बहुविध गावे ।।
सहर प्रतापगढ जानो रे भाई ।
घोडा टेकचन्द तिहा रह्याई ।।
सम्मेद शिखर की यात्रा आवे ।
ता दिन ये पूजा रचावे ।।
समत अठारासै साल मे और छियासी लाय ।
फागुण दुज शुभ जानिये रामपाल गुण गाय ।
लिखित प० रामपाल स्वहस्तेण ।

जुगादीके सुगेह मे पडित वरवान जी ।।
रतनचन्द ताको नाम बुद्धि को निधान जी ।।
ताको मित्र रामपाल हाथ जोर कहत है ।
हेस्याए मोकू दीजिये जिनेन्द्र नाम लेत है ।

८९९९ सम्मेद शिखर पूजा—लालचन्द । पत्रस० ८३ । ग्रा० ९×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल स० १८४२ फागुण सुदी ५ । ले० काल स० १८४५ बैशाख बुदी ऽऽ । पूर्ण । वेष्टन स०४ । **प्राप्ति थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी नैणवा ।

विशेष—लालचन्द भ० जगत्कीर्ति के शिष्य थे ।

अन्तिम—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

काष्टासघ और माथुरगच्छ पोकरगए कहो शुभगच्छ ।
लोहाचार्य आमनाय जो कही हिसार पद मनोक्षा सही ।।३२।।
भट्टारक सत्कीर्ति जानि, भव्य पयोज प्रकाशन भान ।
तासु पट्ट महीन्द्रकीर्ति लयो विद्यागुए भडार जु भयो ।
देवेन्द्रकीर्ति तत्पट्ट बखान, शील शिरोमणि क्रियावान ।
तिनके पट्ट परम गुणवान, जगत्कीर्ति भट्टारक जान ।

× × × × × ×

शिष्य लालचन्द सुधी भाषा रची बनाय ।
एकचित्त सुनै पढै भव्य शिवकू जाय ।।३५।।
सवत् अठारासै भयो ब्यालिस ऊपर जान ।
पाचै फागुए शुक्लकु पूरए ग्रथ बखान ।।३६।।
रेवाडी सहर मनोज्ञ वसै श्रावक भव्य सब ।
आदित्य ऐश्वर्य योग तेतीस पट्ट पूरए भयो ।

इति श्री सम्मेदशिखरमहात्म्ये लोहाचार्यानुसारे भट्टारक जगत्कीर्ति तत् शिष्य लालचन्द विरचिते भद्रकूट वर्णनो नाम एक विशति नम सर्ग ।

९००० प्रतिसं० २ । पत्रस० ६० । ग्रा० १२½×६½ इञ्च । ले०काल स० १९१३ । पूर्ण । वेष्टनस० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

९००१. प्रतिसं० । ३ पत्रस० ३९ । ग्रा० ९½×८½ इञ्च । ले०काल स० १९७० फागुण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १६२ ।दि० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ कोटा ।

९००२. प्रति स० ४ । पत्रस० २६ । ले०काल स० १८४३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

९००३. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ४ । ग्रा० १३×४¾ इञ्च । ले०काल स० १९०६ आषाढ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिरफतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—जगतकीर्ति के प्रशिष्य ललितकीर्ति के शिष्य राजेन्द्रकीर्त्ति के लघु भ्राता के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी । जगह २ प्रति सशोधित की हुई है ।

९००४. **प्रतिसं० ६** । पत्र स० ४७ । आ० १०½×५¾ इञ्च । ले० काल स० १८५४ आसोज सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी सीकर ।

विशेष—रेवाडी मे ग्र थ रचना हुई । देवी सहाय नारनौल वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

९००५. **प्रतिसं० ७** । पत्रस० ४४ । आ० ११½×५½ इ च । ले०काल स० १९१५ पौष सुदी । पूर्ण । वेष्टन स० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी ।

विशेष—

अन्तिम प्रशस्ति—इति श्री सम्मेदशिखरमहात्म्ये लोहाचार्यानुसारेण भट्टारक श्री जगत्कीर्त्ति तत् शिष्य लालचन्द विरचिते सुवर्णभद्रकूटवर्णनोनाम विशतिका सपूर्ण । जीवनराम ने फतेहपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

९००६. **प्रतिसं० ८** ।पत्रस० ५० । आ० ९×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २२०/ ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

९००७. **प्रतिसं० ९** । पत्रस० ६६ । आ० ९×७ इञ्च । ले०काल स० १८८६ । अपूर्ण । वेष्टन स० । ३४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, दीवानजी कामा ।

९००८. **सम्मेद शिखर महात्म्य पूजा—मोतीराम** । पत्रस० ४२ । भाषा-हिन्दी, पद्य । विषय-पूजा । र०काल स० १८४१ भादो सुदी ६ ।ले०काल स० १८४८ वैसाख सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

९००९. **प्रति स० २** । पत्रस० ७२ । ले०काल स० १९२० । पूर्ण । वेष्टनस० ५६६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

९०१०. **सम्मेद शिखर पूजा**— × । पत्रस० ७ । आ० १०½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी, पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १७९३ । पूर्ण । वेष्टनस० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी ।

९०११. **सम्मेद शिखर पूजा**—× । पत्र स० १२ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १९४४ आसोज बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ११५५ । **प्राप्ति-स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

९०१२. **सम्मेद शिखर पूजा**—× । पत्रस० ३० । आ० १२½×५½ इञ्च । **भाषा**—हिन्दी, पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १२१० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

९०१३ **सम्मेद शिखर पूजा**—× । पत्र स० ८ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १९४६ आसोज बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १२६९ । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

९०१४. **सम्मेद शिखर पूजा**—× । पत्र स० १७ । आ० १०×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल स० १८९१ । ले० काल स० १९०० । पूर्ण । वेष्टन स० ९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

९०१५ **सम्मेद शिखर पूजा**—× । पत्र स० १८ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी, पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १६१२ । पूर्ण । वेष्टन स० ६-५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

९०१६. **सम्मेद शिखर पूजा**—× । पत्रस० १८ । आ० ७½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी, पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

९०१७. **सम्मेद शिखर पूजा**—× । पत्र स० १६ । आ० ८½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल स० १६४२ कार्तिक सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ७१-१२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

९०१८. **सम्मेद शिखर पूजा**—× । पत्र स० १८ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १६३३ । पूर्ण । वेष्टन स० ११८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर बडा बीस पथी दौसा ।

९०१९ **सम्मेद शिखर पूजा**—× । पत्र स० ६४ । आ० १०½×८ इच । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल स० १६०४ । पूर्ण । वेष्टनस० ६४-६६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर भादवा (राज०) ।

९०२०. **सम्मेद शिखर पूजा**—× । पत्रस० ४३ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी, पद्य । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल स० × । पूर्ण । वेष्टनस० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैणवा ।

९०२१ **सम्मेद शिखिर पूजा**—× । पत्रस० ८ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १८७७ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

९०२२ **सम्मेद शिखर महात्म्य पूजा—मनशुखसागर** । पत्र स० १०० । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी, पद्य । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८६८ । जेठ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० १००-८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष—ज्ञानचन्द छाबडा ने प्रतिलिपि की थी ।

९०२३. **सम्मेद शिखर महात्म्य पूजा—मनसुखसागर** । पत्रस० ६३ । आ० १०½×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र० काल × । ले० काल स० १६०७ । पूर्ण । वेष्टनस० ४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्रीमहावीर बू दी ।

९०२४ **सम्मेद शिखर महात्म्य—दीक्षित देवदत्त** । पत्रस० ७६ । आ० ११½×६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पजा एव कथा । र० काल × । ले० काल स० १८५१ । पूर्ण । वेष्टनस० २६० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

९०२५. **प्रतिसं० २** । पत्र स० १०६ । आ० १२½×६ इच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६६-४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डू गरपुर ।

६०२६. **सम्मेद शिखरमहात्म्य**—× । पत्रस० २१ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा) ।

६०२७. **सम्मेदाचल पूजा उद्यापन**—× । पत्र स० ८ । आ० १३$\frac{1}{4}$×६$\frac{1}{4}$ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०३ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

६०२८. **सम्यक्त्व चिंतामणि**—× । पत्र स० १२२६ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

६०२६. **सरस्वती पूजा**—× । पत्र स० ७ । आ० ११×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

६०३०. **सरस्वती पूजा—संघी पन्नालाल** । पत्र स० ११ । आ० १३$\frac{1}{2}$×८ इञ्च । भाषा–हिन्दी । विषय पूजा । र० काल स० १६२१ ज्येष्ठ सुदी ५ । ले० काल स० १६८५ आषाढ बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—रिषभचन्द बिन्दायक्या ने लश्कर के मन्दिर के लिये जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

६०३१. **सर्वजिनालय पूजा (कृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालय पूजा)—माधोलाल जैसवाल** । पत्र स० १६ । आ० ८×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोक) ।

६०३२. **सहस्रगुण पूजा—भ० धर्मकीर्ति** । पत्रस० ६१ । आ० १२$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८७६ मागसिर बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है --

इति भट्टारक श्री ललितकीर्तिस्तत्शिष्य भट्टारक श्री धर्मकीर्तिविरचित श्री सहस्रगुण पूजा सपूर्ण । लिख्यत महात्मा राधाकृष्ण सवाई जयपुर मध्ये वासी कृष्णगढ का । मिति मगसिर बुदी ३ शुक्रवार स० १८७६ ।

६०३३. **प्रति सं० २** । पत्र स० ७२ । आ० ११$\frac{1}{2}$×७$\frac{3}{4}$ इञ्च । ले०काल स १६३१ वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० ४६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६०३४. **सहस्रगुणित पूजा**— × । पत्रस० ६१ । आ० ११$\frac{3}{4}$×६इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय–पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८८६ भादवा बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० १३४२ । **प्राप्ति–स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६०३५ **प्रतिसं० २** । पत्र स० ४६ । ले०काल स० १८८६ आसोज सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १३४३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

६०३६. **सहस्रगुणित पूजा—भ० शुभचन्द्र।** पत्र स० १२७। आ० ५½×४ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल स० १७५१ ज्येष्ठ बुदी १२। पूर्ण। वेष्टन स० ७८३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—आ० कल्याणकीर्ति के शिष्य प० कवीरदास के पठनार्थ गुटका लिखा गया था।

६०३७. **प्रतिस० २।** पत्र स० ५२। ले०काल स० १६६८। पूर्ण वेष्टन स० ६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर डीग।

विशेष—मानसिह जी के शासन काल मे आमेर मे प्रतिलिपि हुई थी। वाई किसना ने कजिका व्रतोद्यापन मे चढाई थी।

६०३८. **सहस्रगुणित पूजा—×।** पत्रस० ११-७२। आ० १०×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० ३२०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी।

६०३९. **सहस्रगुणी पूजा—खड्गसेन।** पत्र स० ६७। आ० १२×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल स० १७२८। पूर्ण। वेष्टन स० २४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—प्रशस्ति अच्छी दी हुई है।

६०४०. **सहस्रनाम पूजा—धर्मचन्द्रमुनि—×।** पत्र स० ५०। आ० १२×६½ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल स० १८६१ चैत सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन स० १२५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा।

विशेष—सवाई माधोपुर मे प्रतिलिपि की गई थी।

६०४१. **सहस्रनाम पूजा—धर्मभूषण।** पत्रस० ८५। आ० ११×६ भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना।

६०४२. **सहस्रनाम पूजा—चैनसुख।** पत्र स० ३९। आ० १३×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल स० १९६३। पूर्ण। वेष्टनस० ५५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

६०४३ **सार्द्धद्वयद्वीप पूजा—विष्णुभूषण।** पत्र स० ११६। आ० १२×५½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल स० १९६१। पूर्ण। वेष्टनस० ५७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर।

६०४४ **सार्द्धद्वयद्वीप पूजा—शुभचन्द्र।** पत्र स० १३०। आ० १०×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल स० १८६८ सावन सुदी १। पूर्ण। वेष्टनस० ५४। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६०४५. **प्रति स० २।** पत्रस० ९३। आ० १०×५½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १९९। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६०४६. **प्रतिसं० ३।** पत्रस० २००। आ० ९½×६ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३८८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बरसली कोटा।

६०४७. प्रतिसं० ४ । पत्र स० १२४ । ले०काल स० १८२६ आषाढ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—आशाराम ने भरतपुर मे लिखा था ।

६०४८. प्रतिसं० ५ । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १८६४ ज्येष्ठ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० ११७ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

६०४९. प्रतिसं० ६ । पत्रस० २५६ । ले०काल स० १९६३ । पूर्ण । वेष्टनस ० ११८ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मदिर ।

६०५०. प्रतिसं० ७ । पत्रसं० १०८ । आ० ११×५ इञ्च । ले०काल स० १८७० । पूर्ण । वेप्टन स० ११ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर वैर ।

६०५१. प्रतिसं० ८ । पत्रस० १४४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हुण्डावालो का डीग ।

६०५२. सार्द्ध द्वयद्वीप पूजा—सुधा सागर । पत्रस० ९८ । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८५५ फागुण बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ५६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

६०५३. सार्द्ध द्वयद्वीप पूजा—× । पत्रस० २०१ । भाषा-सस्कृत । विषय-पजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६०५४. सार्द्ध द्वय द्वीप पूजा—× । पत्रस० ८८ । आ० १२½×७ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८६५ । पूर्ण । वेष्टनस० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष— अथ सवत्सेरस्मिन नृपति विक्रमादित्य गताब्द सवत् १८६५ मिती फाल्गुण बुदी ६ वार आदित्यवार । श्री काष्टासघे मायुरान्वये पुष्करगणे हिसारपट्टे भट्टारक श्री त्रिभुवनकीर्तिदेवात्पट्टे भट्टारक श्री क्षेमकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री सहसकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री महीचन्ददेवा तत्पट्टे भट्टारक देवेन्द्रकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक जगतकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक ललितकीर्ति वर्तमाने पिंडि निमत । अग्रवालज्ञाते सहर वासी धर्ममूरति धर्म्मावतार सुश्रावक पुन्यप्रभावक धर्म्मज्ञ लाला दुनीचन्द तत्पुत्र लाला गजूमल तत्पुत्र लाला पुसामल तत्पुत्र गगादास तत्वघु वहालसिंह तेनेद अढाईद्वीप पूजा लिखायित्वा दत्त तेन ज्ञानावर्णी कर्म्मछै निमित्तार्थ शास्त्र स्थापितु ।

प० रामचन्द ने प्रतिलिपि की थी तथा उनके शिष्य सुखराम ने धर्मपुरा के पार्श्वनाथ चैत्यालै स्थापितु ।

६०५५. सार्द्ध द्वय द्वीप—× । पत्र स०१०२ । आ० १०½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल× । अपूर्ण । वेष्टन स० ११९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—स० १६२६ या १६६१ की प्रति से प्रतिलिपि की गई है । प० आशाराम ने भरतपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

६०५६. सार्द्धद्वय द्वीप पूजा—×। पत्र स० १६६। आ० १३×७½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय पूजा। र०काल ×। ले० काल स० १६०१। पूर्ण। वेष्टन स० १४८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचायती मदिर अलवर।

६०५७. प्रति स० २। पत्रस० १२३। आ० १०¾×५ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १४६। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

६०५८. प्रतिसं० ३। पत्र स० ३१५। आ० ११½×५½ इञ्च। ले० काल स० १८७३। पूर्ण। वेष्टन स० १५०। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

६०५६. प्रति स० ४। पत्रस० ६३। आ० ११¾×६¾ इञ्च। ले०काल स० १८७६ पौष सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन स० १५१। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

६०६० सिद्धकूट पूजा—×। पत्रस० १०। आ० १२×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल स० १८८७ ज्येष्ठ सुदी ५। पूर्ण। वेष्टनस० १८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक)।

६०६१. सिद्धक्षेत्र पूजा—दौलतराम। पत्रस० ८५। आ० १०½×७½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल स० १८६४। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा।

विशेष—अन्तिम पद—

सवतसर दस आठ सत नव्वेचार सुओर।
असुनीसुतदोयज भलो रविवार सिर मोर ॥४४॥
तादिन पूजा पाठ करि पढै सुनै जे जेव।
ते पावै सुख स्वासत निजआतम रस पीव ॥४५॥
सोभानन्द सुनन्द हो नदन सोहनलाल।
ताको नद सुनन्द है दौलतराम विसाल ॥४६॥

६०६२. सिद्धक्षेत्र पूजा—प्रकाशचन्द। पत्रस० ४७। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल स० १६१६। ले०काल स० १६४५।। पूर्ण। वेष्टन स० ५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)।

६०६३. सिद्धक्षेत्र पूजा—×। पत्रस० १८। आ० १०½×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल स० १६३६ आसोज सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन स० ७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैणवा।

६०६४. सिद्धक्षेत्र पूजा—×। पत्रस० १६। आ० १०×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पुजा। र० काल ×। ले०काल स० १६३६। पूर्ण। वेष्टन स० १४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अग्रवाल नैणवा।

६०६५. प्रति स० २। पत्रस० १८। ले०काल स० १६३६। पूर्ण। वेष्टनस० १४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा।

विशेष—लोचनपुर (नैणवा) मे प्रतिलिपि हुई थी।

९०६६. **सिद्धक्षेत्र पूजा**—×। पत्रस० १८। आ० १३×५$\frac{1}{4}$ इञ्च। भाषा–हिन्दी पद्य। विषय–पूजा। र०काल ×। ले० काल स० १९३६। पूर्ण। वेष्टनस० २१०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी।

९०६७. **सिद्धक्षेत्र पूजा**—×। पत्र स० ९। आ० ११×८$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५२०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर।

९०६८. **सिद्धक्षेत्र मण्डल पूजा—स्वरूपचन्द**। पत्रस० १९। आ० ११×८ इञ्च। भाषा–हिन्दी। विषय–पूजा। र०काल ×। ले०काल स० १९१९। पूर्ण। वेष्टनस० ५५१। **प्राप्दि स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर।

९०६९. **सिद्धचक्र पूजा—प० आशाधर**। पत्रस० ३। आ० ११×५ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६८। **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी।

९०७०. **सिद्धचक्र पूजा—धर्मकीर्ति**। पत्र स० १३६। भाषा–सस्कृत। विपय–पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर वसवा।

९०७१ **सिद्धचक्र पूजा—ललितकीर्ति**। पत्रस० ६६। आ० १३×८ इञ्च। भाषा–सस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

९०७२. **सिद्धचक्र पूजा—भ. शुभचन्द्र**। पत्रस० ७०। भाषा–सस्कृत। विपय–पूजा। र०काल ×। ले०काल स० १८२४ मगसिर बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० ७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सोगानी मन्दिर करौली।

विशेष—पत्र अलग अलग हैं।

९०७३. **प्रतिसं० २**। पत्रस० ६८। आ० ९$\frac{3}{4}$×६ इञ्च। ले०काल स० १९२६ शाके। पूर्ण। वेष्टनस० १४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करोली।

९०७४ **प्रति स० ३**। पत्र स० १०। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

९०७५. **प्रतिसं० ४**। पत्रस० ८। आ० १०×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। ले० काल स० १५८३ कार्तिक सुदी १०। पूर्ण। वेष्टनस० ९३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा।

९०७६. **प्रतिसं० ५**। पत्रस० २३। आ० १२$\frac{3}{4}$×८$\frac{3}{4}$ इञ्च। ले०काल स० १९८५ ज्येष्ठ सुदी ११। पूर्ण। वेष्टनस० ४८८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

९०७७. **प्रति स० ६**। पत्र स० १९। आ० ११×५ इञ्च। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ३४९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर।

विशेष—समयरससमग्र पूर्णभाव विभाव,

जनितसुशिवसार य स्मरेत् सिद्धचक्र ॥
ग्रखिल नर सुपूज्य सोमचन्द्रादि सेव्य ।
भजति • • ॥

६०७८. **सिद्धचक्र पूजा—संतलाल** । पत्रस० १३१ । ग्रा० १३×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६६१ । पूर्ण । वेष्टन स० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीरजी बूदी ।

विशेष—इन्दौर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

६०७९. **प्रतिस० २** । पत्र स० १०५ । ग्रा० १२½×७¾ इञ्च । ले०काल स० १६८६ ग्राषाढ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

विशेष—ग्रजमेर वालो के चौवारा मे जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

६०८०. **प्रति स० ३** । पत्रस० १-१०३ । ग्रा० १३×८ इञ्च । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टनस० १५७ र । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

६०८१. **प्रतिस० ४** । पत्र स० १४३ । ग्रा० १३×८ इञ्च । ले० काल स० १६८७ कार्तिक बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १५८ र० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

६०८२. **प्रतिसं० ५** । पत्र स० २५१ । ग्रा० ८×६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोक) ।

६०८३. **प्रतिस० ६** । पत्र स० १५३ । ग्रा० १३×८½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—पत्र स० १२४ से ग्रागे २६ पृष्ठो मे पचमेरु एव नदीश्वर पूजा दी गयी है ।

६०८४. **सिद्धचक्र पूजा**—× । पत्र स० ६१ । ग्रा० १२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १६८१ । पूर्ण । वेष्टन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन ख० पचायती मन्दिर ग्रलवर ।

६०८५. **सिद्ध पूजा**—× । पत्र स० ४ । ग्रा० १०½×६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७२३ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

६०८६. **सिद्ध पूजा**—× । पत्र स० ७ । ग्रा० ११¾×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक) ।

६०८७. **सिद्ध पूजा**—× । पत्रस० २ । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टनस० ३८१/३७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन स भवनाथ मदिर उदयपुर ।

६०८८ **सिद्ध पूजा भाषा**—× । पत्रस० ५ । ग्रा० ८×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक) ।

६०८९. सिद्ध भूमिका उद्यापन—बुधजन । पत्रस० ४ । आ० १२½×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल स० १८०६ । ले०काल स० १८९३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५२७ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६०९०. सुगन्ध दशमी पूजा—× । पत्रस० ८ । आ० ६×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर मालपुरा (टोक) ।

६०९१. सुगन्ध दशमी व्रतोद्यापन—× । पत्र स० १० । आ० ८×६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६०९२. प्रतिसं० २ । पत्रस० १० । आ० ८×६½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६०९३ सूतक निर्णय—सोमसेन । पत्र स० १६ । आ० ९×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

६०९४. सूतक वर्णन—× । पत्रस० १ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

६०९५. सोनागिरि पूजा—× । पत्रस० ८ । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६०९६. सोनागिरि पूजा— × । पत्रस० ८ । आ० ६¾×४½ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

६०९७. सोनागिरि पूजा—× । पत्र स० ५ । आ ६×८ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल स० १८८० फागुण बुदी १३ । ले० काल स० १९५६ । पूर्ण । वेष्टन स० ५६८ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

६०९८. सोलहकारण उद्यापन—सुमतिसागर । पत्रस० १९ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८६७ । पूर्ण । वेष्टन स० २५ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोक) ।

विशेष—नाथूराम साह ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

६०९९ सोलहकारण उद्यापन—अभयनन्दि । पत्र स० २७ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८१७ वैशाख बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—सरोज नगर मे सुपार्श्व चैत्यालय मे प० आलमचन्द के शिष्य जिनदास ने लिखा ।

९१००. **सोलहकारण उद्यापन**—X । पत्र स २० । आ० ९$\frac{1}{2}$X६ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बू दी ।

९१०१. **सोलह कारण जयमाल—भ० देवेन्द्रकीर्ति** । पत्र स० २३ । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल १६४३ । ले० काल १८९० । पूर्ण । वेष्टन स० ८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

९१०२. **सोलहकारण जयमाल**—X । पत्रस० १६ । आ० १०X५ इन्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० २१३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

९१०३ **सोलहकारण जयमाल**—X । पत्र स० १० । आ० १०$\frac{1}{2}$X४ इन्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल X । ले० काल स० १७५४ । पूर्ण । वेष्टन स० २८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी

प्रारम्भ—

सोलहकारण पडयमि गुणगण सायरह ।
पणविंण तित्थकर असुह दूवयकर ॥

९१०४. **सोलहकारण जयमाल—रइधू** । पत्र स० ७ । आ० १३X६ इन्च । भाषा—अपभ्र श । विषय-पूजा । र०काल X । ले०काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० ५९ X । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन वडा वीसपथी मन्दिर दौसा ।

९१०५. **सोलहकारण जयमाल**—X । पत्र स० २२ । आ० ९$\frac{1}{2}$X६ इन्च । भाषा—प्राकृत-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली ।

विशेष—गाथाओ पर हिन्दी अर्थ दिया हुआ है ।

९१०६ **सोलहकारण जयमाल**—X । पत्र स० २८ । आ० १३X६ इन्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती करौली ।

विशेष—रत्नकर ड एव अकृत्रिम चैत्यालय जयमाल भी है ।

९१०७. **सोलहकारण पूजा**—X । पत्र स० ११ । आ० १२X६ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक) ।

९१०८ **सोलहकारण पूजा**—X । पत्र स० ४२ । आ० १२X७$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल X । ले० काल स० १९३६ आसोज बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ४४ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बू दी ।

विशेष—हीरालाल वडजात्या ने टोक मे लिखवाया था ।

९१०९. सोलहकारण पूजा विधान—टेकचन्द। पत्रस० ६। आ० ८×६ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा विधान। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर।

९११०. प्रतिसं० २। पत्र स० ५१। आ० १०×५½ इन्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोट्यो का नैणवा।

विशेष—भट्ट शिवलाल ने प्रतिलिपि की थी।

९१११. प्रति स० ३। पत्रस० ७५। आ० १०½×५½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा।

९११२. प्रतिसं० ४। पत्रस० ४९। आ०१२¼×६¾ इन्च। ले०काल स० १९९७ चैत सुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स० १३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी।

९११३. सोलहकारण पूजा—×। पत्रस० २७। आ० १०×४ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २३५/३२५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

९११४. सोलहकारण पूजा—×। पत्रस० २-१७। आ० ११×४½ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

९११५ सोलहकारण मण्डल पूजा—×। पत्रस० ४०। आ० ११×८ इन्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल स० १९११ ज्येष्ठ बुदी ५। पूर्ण। वेष्टनस० ४/६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेष—मारोठ मे भूथाराम ने लिखवाया था।

९११६. सोलहकारण मण्डल विधान—×। पत्रस० ८०। आ० ११¾×५¾ इन्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल स० १९५४ सावण बुदी २। पूर्ण। वेष्टन स० १३९४। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

९११७. सोलहकारण व्रतोद्यापन पूजा—×। पत्रस० १८। आ० ११×७ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा स्तोत्र। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १५३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी।

९११८. सोलहकारण व्रतोद्यापन पूजा—×। पत्रस० ३२। आ० १०×७ इन्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७८ ७८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा।

९११९. सोलहकारण व्रत पूजा विधान—×। पत्रस० ६। आ० ११×५ इन्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ९९-९। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन वडा बीसपथी मन्दिर दौसा।

६१२०. सौख्य काव्य व्रतोद्यापन विधि- ×। पत्रस० ६। ग्रा० १०½×५½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६११। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर ग्रजमेर।

६१२१. सथारा पोरस विधि—×। पत्र स० १। ग्रा० १०×४½ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय—विधाय। ले० काल १६४३। पूर्ण। वेष्टन स० ६८। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दवलाना बू दी।

विशेष—पठनार्थ विरागी रूपाजी।

६१२२. सथारा विधि—×। पत्र स० १२। ग्रा० १०×४½ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-विधान। र०काल ×। ले०काल। ग्रपूर्ण। वेप्टन स० ४६६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर।

विशेष—टव्वा टीका सहित है।

६१२३. स्तोत्र पूजा—×। पत्रस० १ से ५। भाषा—सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। वे० स० ७५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

६१२४ स्तोत्र पूजा—×। पत्र स० ६। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

६१२५. स्नपन विधि—×। पत्र स० ५। भाषा—सस्कृत। विषय-विधि। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हुण्डावालो का ड.ग।

६१२६ स्नपन विधि वृहद्—×। पत्रस० १५। भाषा-सस्कृत। विषय—विधान। र० काल ×। ले० काल स० १५५७ कार्तिक सुदी ५। पूर्ण। वेप्टन म० २३८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ग्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

६१२७. होम एव प्रतिष्ठा सामग्री सूची—×। पत्रस० २०। ग्रा० १२×५½ इच। भाषा-हिन्दी-सस्कृत। विषय—पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३०७-११७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर।

६१२८. होम विधान—ग्राशाधर। पत्रस० ३। ग्रा० १०×४ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा विधान। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेप्टन स० ३८१। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर।

६१२९. प्रति स० २। पत्रस० ३। ग्रा० १२×४½ इञ्च। ले० काल स० १६४० चैत सुदी १। पूर्ण। वेष्टन स० २५२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बू दी।

विशेष—पडित देवालाल ने चाटसू मे प्रतिलिपि की थी।

६१३०. प्रति स० ३। पत्र स० ६। ग्रा० १२×५½ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३२१-१२०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डू गरपुर।

६१३१. होम विधान—×। पत्रस० १०। ग्रा० १०½×४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ३७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर।

६१३२ होम विधान—×। पत्र स० ६ । आ० ८½×६ इन्च । भाषा-सस्कृत । विपय-विधान । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११७५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६१३३. होम विधान—× । पत्र स० २३ । आ० १२×७ इन्च । भाषा-प्राकृत-सस्कृत । विपय-विधान । र०काल × । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टनस० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

६१३४. होम विधान—×। पत्रस० २-८ । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल× । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४३६/३८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६१३५. होम विधि—× । पत्रस० ८ । आ० ११×४½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन स० ६२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

६१३६. होम विधि—× । पत्रस० ६३ । आ० ६×४½ इन्च । भाषा-सस्कृत विषय-विधान । र०काल × । ले०काल स० १६६० । पूर्ण । वेष्टन स० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

— ❀ —

गुटका -- संग्रह

(भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर)

६१३७. गुटका स० १ । पत्रस० ७० । आ० १२×६½ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १८३४ माह सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० २३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—विभिन्न पाठो का सग्रह है । मुख्यत खण्डेलवालो की उत्पत्ति, ८४ गोत्र तथा निम्न रास है ।

भविष्यदत्त रास — ब्र० रायमल्ल
सुदर्शन रास — "
श्रीपाल रास — "

६१३८. गुटका स० २ । पत्रस० १३१ । आ० ११×५ इन्च । भाषा-सस्कृत-प्राकृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४२ ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है । गुटका प्राचीन है ।

६१३९. गुटका स० ३ । पत्रस० १९८ । आ० ८×८ इन्च । भाषा-हिन्दी । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११९ ।

विशेष—ब्रह्म रायमल्ल कृत विभिन्न रासाओ का सग्रह है ।

६१४० गुटका स० ४ । पत्र स० ११५ । आ० ६½×५ इन्च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २२७ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

६१४१. गुटका स० ५ । पत्र स० ७६ । आ० ६×४½ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १९७३ चेत सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० २४१ ।

विशेष—हिन्दी पदो का सग्रह है ।

६१४२. गुटका स० ६ । पत्रस० ५८ । आ० ६×४½ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४२ ।

विशेष—विविध पूजाओ का सग्रह है ।

६१४३ गुटका ७ । पत्रस० १२८ । आ० ८×४ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १८०७ । पूर्ण । वेष्टनस० ३९३ ।

विशेष—

मुख्य पाठ निम्न प्रकार है—

नाम ग्रथ	नाम	भाषा
१—मधु मालती कथा—	चतुर्भुज—	हिन्दी
		ले० काल स० १८०७ ।

पद्य स० ८८३।

२—दिल्ली के बादशाहो के नाम—×।

६१४४. गुटका सं० ८। पत्रस० १६०। आ० ६½×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३६४।

विशेष—स्तोत्र, पूजा एव हिन्दी पदो का सग्रह है।

६१४५. गुटका सं० ६। पत्र स० २७५। आ० ८½×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल स० १६६७ मगसिर सुदी १२। पूर्ण। वेष्टन स० ३६५।

विशेष—निम्न प्रकार सग्रह है—

नाम ग्र थ	ग्र थ कर्त्ता
समयसार	बनारसीदास
सूक्ति मुक्तावली	"
कल्याण मन्दिर स्तोत्र भाषा	"
जकडी	दरिगह
ज्ञान पच्चीसी	बनारसीदास
कर्मछत्तीसी	"
अध्यात्मवत्तीसी	"
दोहरा	आलूकवि
द्वादशानुप्रे क्षा	—

६१४६. गुटका स० १०। पत्रस० २०२। आ० ६×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। र०काल ×। लि०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५०२।

विशेष—हिन्दी पदो का सग्रह है।

हर्षचन्द्र आदि कवियो के पदो का संग्रह है। पद सग्रह की दृष्टि से गुटका महत्वपूर्ण हे।

६१४७. गुटका स० ११। पत्रस० ४६। आ० ५×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। र०काल ×। ले० काल स० १८७६। अपूर्ण। वेष्टन स० ५०३।

विशेष—स्तोत्र एव अन्य पाठो का सग्रह है।

६१४८. गुटका स० १२। पत्र स० १०८। आ० ८½×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ५०४।

विशेष—गुणस्थान चर्चा आदि है।

६१४६ गुटका सं० १३। पत्र स० ११८। आ० १०×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५०७।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

समयसार — बनारसीदास

महावीरस्तवन — समयसुन्दर

(वीर सुनो मेरी वीनती कर जोडि है कहो

मननी वात वालकनी परिविनऊ)

६१५० गुटका स० १४ । पत्रस० ८८ । आ० ५×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५०८ ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । पूजा पाठ सग्रह है ।

६१५१ गुटका स० १५ । पत्रस० २०० । आ० ६½×६½इच । भाषा—हिन्दी-संस्कृत । ले०काल स० १८१२ । पूर्ण । वेष्टन स० ५५१ ।

विशेष—स्तोत्र एव सामान्य पाठो के अतिरिक्त क्षमा बत्तीसी, (समय सुन्दर), जीव विचार टव्वार्थ सहित, विचारपर्डात्रिशिका टव्वार्थ, पद सग्रह (भव सागर) सीमधर स्तवन (कवि कमल विजय), धर्मनाथ स्तवन, (आणदघन) ।

गुटका श्वेताबरीय पाठो का है ।

६१५२. गुटका स० १६ । पत्रस० १५८ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५५३ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है । गुटका जीर्ण है ।

६१५३. गुटका सं० १७ × । पत्र स० ३३ । आ० ५×३½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १७७४ चैत सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ५५४ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

१—शत्रु जय रास — समयसुन्दर

२ —मडोवर पार्श्वनाथ स्तवन — सुमति हेम

३—ऋषभदेवस्तवन —

६१५४. गुटका स० १८ । पत्र स० ७३ । आ० ५½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल स० १५७५ भादवा सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स ५५५ ।

विशेष—विभिन्न ग्र थो मे से पाठ है सामान्य पाठो का सग्रह है ।

६१५५. गुटका स० १९ । पत्रस० १४४ । आ० ६½×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल स० १८०७ । पूर्ण । वेष्टन स० ५५७ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है ।

भक्तामर, एकीभाव, सूक्तिमुक्तावली, नीतिशतक (भर्तृहरि) शृ गारशतक (भर्तृहरि) कविप्रिया (केशवदास) ।

६१५६ गुटका सं० २० । पत्र स० ६७ । आ० ११×७ इञ्च । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५५८ ।

विशेष—सामायिक आदि सामान्य पाठो का सग्रह है ।

६१५७. गुटका स० २० । पत्र स० १४० । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले० काल स० १८५८ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ५५९ ।

निम्न पाठो का सग्रह है—

भविष्य दत्त कथा — ब्र० रायमल्ल

श्रीपाल रास

सुदर्शन रास	ब्रह्मराय मल्ल	
निर्दोष सप्तमी कथा	"	
प्रद्युम्न रास	रायमल्ल	
नेमीश्वर रास	"	
हनुमत चौपई	"	
शालिभद्र चौपई	जिनराज सूरि	
शीलपच्चीसी	—	
स्थूलभद्र को नव रस	—	
अकलकनिकलक चौपई	भ० विजयकीर्ति	र०काल स० १८२४

६१५८. गुटका सं० २१ । पत्रस० ७० । आ० ५ × ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल स०-१७८४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५६० ।

विशेष—चौरासी बोल—हेमराज के तथा पूजा-पाठ सग्रह है ।

६१५९ गुटका सं० २२ । पत्र स० १५६ । आ० ५½ × ३½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल-× । पूर्ण । वेष्टन स० ५६१ ।

विशेष—पदो का सग्रह है ।

६१६० गुटका स० २३ । पत्रस० ८ । आ० ८ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल स०—१८८६ । पूर्णं । वेष्टनस० ५६२ ।

विशेष—नेमिनाथ के नवमगल एव पाठ आदि हैं ।

६१६१ गुटका स० २४ । पत्रस० ४८ । आ० ७½ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दो सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६३ ।

विशेष—आयुर्वेदिक पाठो का सग्रह है । इसके अतिरिक्त २४ पत्र मे काल ज्ञान सटीक है । हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है ।

६१६२. गुटका स० २५ । पत्रस० ६२ । आ० ५½ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १८८८ । पूर्ण । वेष्टनस० ५६४ ।

विशेष—गोम्मटसार मे से चर्चाओ का सग्रह है तथा पद्मावती पूजा भी दी हुई है ।

६१६३. गुटका सं० २६ । पत्रस० २४२ । आ० ६½ × ६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत, हिन्दी । ले०काल स० १७१९ । पूर्ण । वेष्टनस० ५६५ ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है—

भक्तामर स्तोत्र, तत्वार्थ सूत्र एव पूजाओ के अतिरिक्त भाउ कृत रविव्रत कथा, ब्र० रायमल्ल कृत नेमिनाथ रास एव शालिभद्र चौपई आदि का सग्रह है ।

६१६४. गुटका स० २७ । पत्र स० ८४ । आ० ३ × ३ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल स० १९०१ । पूर्ण । वेष्टन स० ५६६ ।

विशेष—स्तोत्र आदि का सग्रह है तथा अन्त मे कुछ मन्त्रो का भी सग्रह है ।

६१६५. गुटका स० २८ । पत्र स० २६५ । आ० ८½ × ६¾ इञ्च । भाषा- हिन्दी । ले०काल स० १८८५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५६७ ।

विशेष—निम्न प्रकार सग्रह है—

	पत्र
इन्द्रजालविद्या	१—४२ प्रारम्भ मे
चक्रकेवली	१—२०
शकुनावली	२१-४६
सक्राति विचार-	
असोदू का शकुन	७६ पत्र तक
कोक शास्त्र	६८ पत्र तक
सवत्सर फल	
सामुद्रिक शास्त्र	१४६ तक
ससार वचनिका	१५० तक
रमल शास्त्र	१७३ तक

आगे जन्म कुण्डली आदि भी हैं ।
गुटका महत्वपूर्ण है ।

६१६६. गुटका स० २६ । पत्रस० ३७१ । आ० ८½ × ६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १७२८ । पूर्ण । वेष्टनस० ५६८ ।

विशेष—निम्न रचनाओ का सग्रह है ।

नाम ग्रथ	ग्रथकार	भाषा	रचना स०	पत्रस०	विशेष
पार्श्वनाथरास	कपूरचन्द	हिन्दी	१६६७	३८-५६	—
नेमीसुर का रास	पुण्यरत्न	„	—	६०-६४	६४ पद्य
जैनरास	—	„	—	६५-८०	—
प्रद्युम्नरास	ब्र० रायमल्ल	„	—	८१-१०१	—
त्रैलोक्य स्वरूप चौपई	सुमतिकीर्ति	„	१६२७	१०१-११६	—
शील बत्तीसी	अकुमल	„	—	—	पत्र स० नही लगी है
भविष्यदत्त कथा	ब्र० रायमल्ल	„	—	११७-७३	—
नद बत्तीसी	विमल कीर्ति	„	१७०६	१७४-१८१	—
निर्दोष सप्तमी कथा	ब्र० रायमल्ल	„	—	१८१-८५	—
यशोधर चउपई	—	„	—	१६५-२०६	—
		लिपिकाल	स० १७२८	जीवनपुर मध्ये लिपिकृत ।	
आदित्यवार कथा	भाउ कवि	„	—	२२०-२२६	—

सीतासतु	भगौतीदास	हिन्दी पद्य	१६८४	२३०-२७० आषाढ सुदी ३	
ज्येष्ठ जिनवर कथा	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी	१६२५	२७१-७४ साभर मे रचना की गयी थी	—
चन्दनमलयागिरि कथा	चन्द्रसेन	"	—	२७५-८५	—
मृगीसवाद	देवराज	"	१६६३	२८६-३०१ चैत सुदी ९ रविवार	—
वसुधरि चरित्र	श्री भूषण	"	१७०६	३०२-३२१	—
हनुमत कथा	ब्र० रायमल्ल	"	—	३२२-५५	—
पाशाकेवली	—	"	—	३५६-६०	—
मालीरास	जिनदास	"	—	३६१-६४	—
गौतम पृच्छा	—	,	—	३६५-३७१	—

सीता सतु—भगौतीदास

आदि भाग—

ऊँकार नमौं धरि भाऊ, मुगति वरगणि वरु जगराऊ ।
सारद पद पकज सिर नाऊ जिहु प्रसादि रिधिसिधि निधि पाऊ ।।

गुरु मुनि महिंदसेन भट्टारक, भव ससार जलधि जल तारक ।
तासु चरण नमि होत अनदो, वढइ वुधि जिम दुतिया चदो ।।

मध्य भाग—

सोरठा—

सीय न हुइ भय भीय करे रूपि रावण घणे ।
हरि करि सरह विसाय भूत प्रेत वेताल निसि । ५६।।

चौपई—

खगगु उपसर्गु करइ आभा, सो सुमरइ चिति लछिमनरामा ।
गइय रैनि रवि उग्यौ दिनेमू, हुइ निरास धरि गयो खगेसू ।।५० ।।

वालु पीडत तेल न लहिये, फणि मस्नकिमणि जिवतन गहिये ।
सतिय पयोहर को करि छावइ वहनि परसि तनि को जगि जीवइ ।।५८।।

अन्तिम—

वलि विक्रम नृप करन सम सुखर सुभा सुजाण ।
अकवर नदण अति वली सयल जगति तिस आण ।।६६।।

सोरठा—

देस कोसु गज वाजि जासु नमहि नृप छत्रपति ।
जहागीर इक राजि सीता सतु मइ मनि कीया । ६७।।

गुरु गुण चदुरिसिंदु वखानिए ।
सकल चन्दु तिह पट्टि जगतमहि जानिए ।

तासु पट्टि जस धामु खिमागुरण मडणो ।
परु हा गुरु मुरिण महिंद सैरण मैरणद्रुम खडरणो ॥६८॥

अडिल्ल—
गुरु मुनि महिदसैरण भगौती, रिसि पद पकज रैरणु भगौती ।
कृष्णदास वनि तनुज भगौती, तुरिय गह्यौ व्रतु मनुज भगौती ॥६७॥
नगरि चूडिये वासि भगौती, जन्म भूमि चिरु आसि भगौती ।
अग्रवाल कुल वस लगि, पडितपदि निरखी ममि भगौती ॥ ७०॥

चौपई—
जग्गनिपुर पुरपति अति राजइ, राइ पौरि नित नौवति वाजइ ।
वसहि महाजन धन धनवत, नागरि नारि पवर मतिवत ॥७१॥
मोतीहटि जिनभवनु विराजइ, पडिमा पास निरखि अघु भाजइ ।
श्रावक सगुन सुजान दयाल, षट् जिय जानि करहि प्रतिपाल ॥७२॥
विनय विवेक देहि रिसि दानू, पडित गुना करहि सनमानू ।
करि करुणा निरधन धनु देही, अति प्रवीरण जगमाहि जसु लेही ॥७३॥
जिह जिनहर चौ सघ निवासू, तह कवि भगत भगौतीदासू ।
सीता सतु तिनि कह्यौ वखानी, छद भेद पद सार न जानी ॥७४॥

दोहरा—
पढहि पढावहि सुनि मनहि, लिखहि लिखावहि गोह ।
सुर नर नृप खग पदु लहइ, मुकति वरहि हरिण मोहु ॥७५॥

सोरठ—
वरसौ पावस मेहु वाजहु तूर अनद के ।
दपति करण सनेहु घर घर मगल गाइयौ ॥७६॥
फुनि हा नवसतसइ वसु चारिसु सवत जानिये ।
साढि सुकल ससि तीज दिवस मनि आनिए ।
मिथुन रासि रवि जोइ चन्दु दूजा गन्यौ ।
परु हा कविस भगौतीदासि आसि सीय सतु मन्यौ ॥६७७॥
इति श्री पद्म पुराणे सीता सतु सपूर्ण समापता ।
सवत् १७३० का दुतीक भाद्रपद मासे कृष्ण ।
पक्ष्ये एकादश्या गुरुवासारे लिप्पकृत महात्मा ।
जसा सुत कलला जोवरणेर मध्ये ॥

मृगी संवाद—(वेष्टन स० ५६८)
अथ मृगी सवाद लिख्यते—

दूहा—
सकल देव सारद नमौ प्रणामू गौतम पाइ ।
रास भरणौ रलिया मरणौ, सहि गुरु तरणै पसाउ ॥१॥

जबू द्वीप सुहावणौ, महिधर मेर उत्तग ।
जहिथे दक्षिण दिसा भली भरथ क्षेत्र सुचग ।।२।।
नगर निरोपम तिहा वसै कललीपुर विरक्षात ।
देखी राजा नट नृपण, किती कहू ग्रवदात ।।३।।

मध्य भाग—

कोई नर एक जिमावै जाति, सहु कोई वसै एकणि पाति ।
परूसण हारी व्यौरा करै, तिहकै पायि सूर्य थर हरै ।।११३।।
साचा माणस नै देई आल, माथै मारै नान्हा वाल ।
सासू सूसरा नै जो दमै, सा नारी वागुलि होइ भमै ।।११४।।
घरि आवै चो निरधन पणौ, चित्तन वो लखै स्वामी तणौ ।
सुखै हर्ष दूखै सताप, स्तुति लागै तिह नौ पाप ।।११५।।

अन्तिम पाठ—

इहा थे मरि कहा जाइसी, त्यौ भाजै मन्देह ।
केवली भाषा सभली, इहा थे मरि सब एह ।।२४७।।
जप तप सजम आदरो टाल्यौ मैयै दुख ।
मुक्ति मनोरथ पामिसी, लहसी वहुला सुख ।।२४८।।
सवत सोलसै तेसढै चैत्रसुदि रविवार ।
नवमी दिन भला भावस्यौ राम रच्यौ सुविचार ।।२४९।।
वीजागछ्छ माडण पवर पास सूर देवराज ।
श्री वननदन दिन दिने, देइ आसीस सुकाज ।।२५०।।
इति मृगी सवाद कथा समाप्त ।।

सवत् १७२३ का वर्षे मिति वदि ५ शुक्रवार लिखित पाडे वीरू कालाडेहरामध्ये ।

वसुधरि चरित्र (वेष्टन स० ५६८)

आदि भाग—

ऊ नमो वीतरागाय नम

दोहडा—

सारद सामणि पय नमौ गणपति लागौ पाय ।
कहिसि कथा रलियावणी, गोतम तणा पसाय ।।१।।
जवूदीप सुहावणौ, लख जोजन विसतार ।
मध्य सुदरसण मेर है, दिखण दिसा सुखसार ।।२।।
भरतक्षेत्र जन भर तहा दिखण देस सुविसाल ।
वन वापी जिन भवन अति, नदी तीर सुभताल ।।३।।
कुसम नगर अति सोभतो कोट उतग आवास ।
वाग वाप वहु वावडी तहा भोगी लील विलास ।।४।।

मध्य भाग—

अति आणद हूवो तिणावार, आणद दोऊ वीर आपार ।
आय पहुता तव तर वारि, गावै गीत सुभग नर नारि ।
वाजै वाजा वहु अतिसार, अ गि उवटणा करै कुमारि ।
जल सनानि जवादि अवीर, अरक उद्योत तिसो वसु धीर ।।
भोजन भगति भई सुभराइ, विजन वृ द वहुत वणाय ।
मोदक मेवा मिठाइ पकवान, जीमै वाला वृद्ध जवान ।।
सीतल जल सुवास सवाद, पीवत तृषा ओर जाय विषाद ।।
त्रिपत्या इन्द्री तत्पर वैण, नर नारी स्नेह रस नैण ।।

अन्तिम भाग—

वाग वाप नदि ताल सुभ, शुभ श्रावग धर्म चेत ।
पोसो सामायक सदा, देव पूज गुह हेत ।
अक्षर मात न जाणही हासि तजो कविराव ।
सुणी कथा तैसी रची, लील कतूहल भाव ।
सतरासै निडोतराय कातिग सुभ गुरुवार ।
सेत सत्तमी कथा रची पढत सुणत सुखसार ।
एकसउ तरेपन दोहडा सोरठ ग्यारह सार ।
इक्यासी अर एक सत सुध चउपई सुढार ।
इति सुघरि चरित्र समाप्त ।

६१६७. गुटका स० ३०. । पत्र स० ३६६ । आ० ६१/२×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६६ ।

विशेष—निम्न पूजाओ का सग्रह है—

त्रेपन क्रिया पूजा
कर्मदहन पूजा
धर्म चक्र पूजा
वृहद् षोडशकारण पूजा
दशलक्षण पूजा
पद्मावती पूजा आदि

६१६८. गुटका स० ३१ । पत्रस० ४२० । आ० ९×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५७० ।

विशेष—पूजा पाठ स्तोत्र कथा आदि का सग्रह है ।

६१६९. गुटका स० ३२ । पत्रस० १२५ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १८११ । पूर्ण । वेष्टन स० ५७१ ।

विशेष—हिन्दी पदो का सग्रह है ।

मुख्य पाठ निम्न प्रकार है—

पारसनाथ की सहेलो—ब्रह्म नाथू
नेमिनाथ का वारहमासा—हर्षकीर्ति
देवेन्द्रकीर्ति जखडी —

६१७०. गुटका स० ३३ । पत्रस० ३७ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी–सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५७२ ।

विशेष—चौवीसठाणा चर्चा आदि का सग्रह है ।

६१७१. गुटका स० ३४ । पत्र स० ११८ । आ० १५×४ इन्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल स० १७६३ । पूर्ण । वेष्टन स० १७६३ ।

विशेष—

यादवरास	पुण्यरत्न	भाषा हिन्दी	पत्र ६–१३
दानशील तप भावना	समयसुन्दर	,,	१०१

इनके अतिरिक्त अन्य स्तोत्र एव पदो आदि का सग्रह है ।

६१७२ गुटका स० ३५ । पत्र स० १८४ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५७४ ।

विशेष—

वावनी	छीहल	हिन्दी	रचना स० १५८४	५३ पद्य
स्वप्नशुभाशुभ विचार	—	,,	—	पत्र ४६-५०
चतुर्विशति जिनस्तुति	—	,,	—	५०–६५
बावनी	वनारसीदास	,,	—	१७२–११८

छीहल की बावनी का अन्तिम पद्य —

चौरासी आगले सोज पनरह सवत्सर ।
शुक्लपक्ष अष्टमी मास कातिग गुरु मासर ।
हिरदै उपनी वुधे नाम श्रीगुरु को लीह्लो ।
सारद तणो पसाइ कवित सपूरण कीन्हो ।
तहा लगि वस नाथ सुतन अग्रवाल पुर प्रगट रवि ।
वावनी वसुधा विस्तरी कर ककरण छीहल कवि ।।

६१७३ गुटका स० ३६ । पत्र स० ४२ । आ० ६×६ इन्च । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५७५ ।

विशेष—गुणस्थान चर्चा का सग्रह है ।

६१७४. गुटका स० ३७ । पत्रस० ५७ । आ० ८½×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले०काल स १७४८ पूर्ण । वेष्टनस० ६७६ ।

विशेष—अवजद केवली पाशा है ।

६१७५ गुटका सं० ३८ । पत्रस० १२ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी- । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५७७ ।

विशेष—१५८ पद्य है । बीच-बीच मे चित्रो के लिये स्थान छोड रखा हैं मधुमालती कथा है ।

६१७६ **गुटका स० ३६** । पत्र स० ३०६ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी-सस्कृत । ले०काल १८३० श्रावण सुदी । पूर्ण । वेष्टन स० ५७८ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है । बीच के बहुत से पत्र खाली है ।

६१७७ **गुटका स० ४०** । पत्रस० २६४ । आ० ५×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५७६ ।

विशेष—पूजा एव स्तोत्र सग्रह है ।

६१७८. **गुटका स० ४१** । पत्रस० १० से २६४ । आ० ७½×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १७६५ चैत सुदी १० । अपूर्ण। वेष्टन स० ५८० ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रहहै—

धर्म परीक्षा	हिन्दी	मनोहर सोनी
ज्ञानचिन्तामणि	,,	मनोहरदास
चौवीस तीर्थंकर परिचय	,,	—
पचाख्यान भाषा	,,	—
(मित्र लाभ एव सुहृद् भेद)	,,	—
प्रति सटीक है ।		—

६१७६. **गुटका स० ४२** । पत्रस० ३१६ । आ० ८½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५८१ ।

विशेष—गुटके मे पूजाए स्तोत्र, एव पद्य आदि का सग्रह है ।

६१८०. **गुटका स० ४३** । पत्रस० १५० । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वष्टन स० ५८२ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

सम्यक्त्वकौमुदी, वृपभजिनस्तोत्र, प्रश्नोत्तररत्नमाला(शकराचार्य), षोडशनियम एव अन्य पाठ हैं । कुछ पाठ जैनतर ग्रथो मे से भी है ।

६१८१. **गुटका स० ४४** । पत्रस० १७८ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५८३ ।

विशेष—पद स्तोत्र एव पूजा पाठ आदि का सग्रह है ।

६१८२ **गुटका स० ४५** । पत्र स० ६८ । आ० ६½×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले० काल स० १६४१ । पूर्ण । वेष्टन स० ५८४ ।

विशेष—यत्रो एव मत्रो का सग्रह है । मुख्य मत्र शत्रूचाटन, सतानोपचार, गर्भबन्धन मत्र, वशीकरण, शत्रुकीलन, सर्पमत्र, बालक के पेटवध, आखो की वशीकरण मत्र, शाकिनी यत्र, शल्यकोपचार आदि मत्र दिये हुये है ।

६१८३ **गुटका स० ४६** । पत्रस० २६० । आ० ७×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५८५ ।

विशेष – पूजा एव स्तोत्र आदि का सग्रह है ।

६१८४. गुटका स० ४७ । पत्रस० ४२ । आ० ८½×६ इञ्च । भापा–सस्कृत–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५८६ ।

विशेष—स्तोत्र, पूजा, अमरकोश एव आयुर्वेदिक नुस्खे आदि का सग्रह है ।

६१८५. गुटका सं० ४८ । पत्रस० ३६ । आ० ६×४ इञ्च । भापा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५८७ ।

विशेष—नददास की मानमजरी है ।

६१८६. गुटका सं० ४९ । पत्र स० ५० । आ० ६½×४ इञ्च । भापा–हिन्दी । ले०काल स० १८८५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५८८ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है ।

नीतिशतक	हिन्दी	सवाई प्रनापसिंह
शृ गार मजरी	,,	सवाई प्रतापसिंह

६१८७ गुटका स० ५० । पत्रस० १४२ । आ० ६½×६½½ इञ्च । भापा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५८९ ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र हिन्दी टीका सहित है । राजस्थानी भापा है ।

६१८८. गुटका स० ५१ । पत्रस० ६८ । आ० ८×५½ इञ्च । भापा–हिन्दी सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५९० ।

विशेष— पूजा एव स्तोत्र सग्रह है ।

६१८९. गुटका स० ५२ । पत्रस० ११० आ० ५×४½ इञ्च । भापा–सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५९१ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है । गुटका जीर्ण है ।

६१९०. गुटका स० ५३ । पत्र स० ६२ । आ० ११×४½ इञ्च । भापा–हिन्दी । ले०काल स० १८२० भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५९२ ।

निम्न प्रकार संग्रह है—

ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	भापा	पद्य स०	विशेप
आराधाना प्रतिबोधसार	सकलकीर्ति	हिन्दी	५४	—
पोसह रास	ज्ञानभूपण	,,	—	—
मिथ्यादुक्कड	ब्र० जिणदास	,,	२४	—
धर्मतरु गीत	प० जिनदास	,,	—	—
जोगीरास	जिणदास	,,	४१	—
द्वादशानुप्रेक्षा	प० जिनदास	,,	१२	—
,,	ईसर	,,	१२	—
पाणीगालण रास	ज्ञानभूपण	,,	३३	—
सीखामण रास	—	,,	१३	—

चहुगति चुपई	—	हिन्दी	५२	—
नेमिनाथराम	अभयचन्द	,,	११७	—
सबोधन सत्तावणी भावना	वीरचन्द	,,	६७	—
दोहावावनी	प० जिणदास	,	—	—
जिनवर स्वामी विनती	सुमनिकीर्ति	,,	२३	—
गुणठाणागीत	ब्रह्मवर्द्धन	,,	१७	—
सिद्धचक्रगीत	अभयचन्द्र	,,	—	—
परमात्म प्रकाश	योगीन्दु	अपभ्र श	१०१	—
ज्येष्ठ जिनवरनी विनती	ब्र० जिनदास	,,	१४	—
त्रेपन क्रियागीत	शुभचन्द्र	,,	७	—
मुक्तावलीगीत	—	,,	१२	—
आलोचना गीत	शुभचन्द्र	,,	२३	—
आचार्य रत्नकीर्ति वेलि	—	,,	—	—
पद सग्रह	—	,,	विभिन्न कवियो के पद	

६१६१ गुटका स० ५४ । पत्रस० ६२ । आ० ६×५½ इच । भाषा-हिन्दी–सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६३ ।

निम्न सग्रह है—

ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	भाषा	पद्य स०	विशेष
गुर्वावलि	—	हिन्दी	४४	—
श्रेणिक पृच्छा	भ० गुणकीर्ति	,,	७२	—
चितामणि पार्श्वनाथ विनती	प्रभाचन्द्र	,,	१२	—
भावना विनती	ब्र० जिनदास	,,	—	—
गुणवेलि	भ० धर्मदास	,,	२८	—
जिनाष्टक	—	,,	७२	—
ऋषिमण्डल स्तोत्र	—	सस्कृत	—	—
रोहिणीव्रत कथा	ब्र० ज्ञानसागर	हिन्दी	—	—

६१६२. गुटका सं० ५५ । पत्रस० ७० । आ० ६×५ इश्च । भाषा—सस्कृत, हिन्दी । ले०काल स० १६५५ चैत्र बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ५६४ ।

विशेष—सवैया वावनी एव सुभापित ग्रन्थ का सग्रह है ।

६१६३ गुटका स० ५६ । पत्र स० ११५ । आ० ५×४½ इश्च । भाषा-हिन्दी, सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६५ ।

विशेष—स्तोत्र, जोगीरासा, नाममाला आदि का सग्रह है ।

६१६४. गुटका स० ५७ । पत्र स० १२५ । आ० ५×५ इश्च । भाषा-हिन्दी, सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५६६ ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है—

नेमिनाथ रास	मुनि रत्न कीर्ति	हिन्दी
भक्तामर स्तोत्र	मानतु ग	सस्कृत
कल्याण मन्दिर	कुमुदचन्द	"
एकीभाव	वादिराज	"
विषायहार	धनजय	"
नेमिनाथ वेलि	ठक्कुरसी	हिन्दी
श्रादिनाथ विनती	सुमतिकीर्ति	"
मनकरहा जयमाल	—	"

६१६५. गुटका सं० ५८ । पत्रस० २०३ । आ० ८½×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत, हिन्दी । ले० काल स० १६६६ । पूर्ण । वेष्टनस० ५६७ ।

निम्न पाठों का सग्रह है—

कालावलि	—	—	—
चन्द्रगुप्त के स्वप्न	ब्र० राममल्ल	हिन्दी	—
चौवीस ठाणा	—		—
छियालीस ठाणा	—	,	—
कर्मों की प्रकृतिया	—	"	—
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वाति	सस्कृत	—
पचस्तोत्र	—	"	—
प्रद्यु न रास	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी	ले० काल स १७०
सुदर्शन रास	"	"	र० काल स० १६३

६१६६. गुटका स० ५६ । पत्र स० ११४ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत, हिन्दी विषय-स ग्रह । ले० काल स० १६५७ फागुण सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ५६८ ।

निम्न प्रकार सग्रह है—

साक्षेप पट्टावलि	—	ले०काल स० १८२६
मूत्र परीक्षा	—	—
काल ज्ञान	—	—
उपसर्गहर स्तोत्र	—	—
भक्तामर स्तोत्र	आ० मानतु ग	—
आयुर्वेद के नुस्खे	—	—

६१६७. गुटका स० ६० । पत्रस० १५२ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी, सस्कृत ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६६ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र भाषा एव अन्य पाठो का सग्रह है ।

६१६८. गुटका स० ६१ । पत्र स० १४० । आ० ६×६ इञ्च । भाषा हिन्दी । ले० काल १८६० आसोज सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ६०० ।

विशेष—आयुर्वेद शास्त्र भाषा है। ग्रन्थ अच्छा है।

अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

इति श्री दुजुलपुराणे वैद्य शास्त्र भाषा हकीम फारसी सस्कृत मसुत विरचते चुरन समाप्तिना।

६१६६ गुटका स० ६२। पत्रस० ३५। आ० ७×५ इन्च। भाषा-हिन्दी। र०काल ×। ले०काल स० १६३६। पूर्ण। वेष्टनस० ७५१।

विशेष—प० खुशालचन्द काला द्वारा रचित व्रत कथा कोष मे से दशलक्षण, शिखरजी की पूजा, कथा एव सुगन्ध दशमी कथा है।

६२००. गुटका स० ६३। पत्रस० १७५। आ० ७×५ इन्च। भाषा-हिन्दी। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ७५२।

निम्नपाठो का सग्रह है—

धर्मबुद्धि पाप बुद्धि चौपई	जिनहर्ष	हिन्दी	र० काल स० १७४२
शालिभद्र चौपई	जिनराज सूरी	,,	१६७८
चन्द्रलेहा चौपई	रामवल्लभ	,,	१७२८
			आसोज सुदि १०
हसराज गच्छराज चौपई	जिनोदय सूरि	,,	ले० काल स० १८६२।

भुवनकीर्ति के शिष्य प० गगाराम ने प्रतिलिपि की थी।

कानडरे कढियारा।	—	,,	१७४७
मृगी सवाद चौपई	—	,,	अपूर्ण

६२०१. गुटका स० ६४। पत्रस० १५६। आ० ७×५½ इन्च भाषा-हिन्दी सस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७५३।

विशेष—पूजा स्तोत्र एव पदो आदि का सग्रह है

६२०२. गुटका स० ६५। पत्रस० १६। आ० ७×५ इन्च। भाषा-सस्कृत हिन्दी। ले०काल ×। पर्ण वेष्टन स० ७५५।

विशेष—ब्याउला शावद समूह सग्रह है। धातु एव शब्द लिखे गये है।

६२०३. गुटका स० ६६। पत्र स० ८४। आ० ६×६ इन्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल स० १८४४। पूर्ण। वेष्टन स० ७५६।

विशेष—वखतराम साह द्वारा रचित मिथ्यात्व खडन नाटक है।

६२०४. गुटका स० ६७। पत्रस० १४२। आ० ८½×५½ इच। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ७५७।

विशेष—आयुर्वेदिक नुस्खो की महत्वपूर्ण सामग्री है।

६२०५. गुटका स० ६८। पत्र स० १६५। आ० ६½×५½ इन्च। भाषा-सस्कृत। ले०काल स० १६४१। पूर्ण। वेष्टन स० ७५८।

विशेष—अनुभूति स्वरूपाचार्य की सारस्वत प्रक्रिया है।

प्रशस्ति—निम्न प्रकार है—

सवत् १६४१ वर्षे भादवा सुदी १३ सोमवासरे घनिष्ठानक्षत्रे श्री मूलसघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे नद्याम्नाये भ० पद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे भ० शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० प्रभाचन्द देवा द्वितीय शिष्य रत्नकीर्तिदेवा तत्पट्टे मडलाचार्य श्री भुवनकीर्तिदेवा तत् शिष्य श्री जयकीर्तिदेवा सारस्वत प्रक्रिया लिखापित । लिखत डालूझाझरी छाजूका ।

६२०६. गुटका स० ६६ । पत्रस० ६६ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७५६ ।

विशेष—निम्न प्रकार सग्रह है । कल्याण मन्दिर भाषा, नेमजी की विनती एव कानड कठियारानी चौपई आदि का संग्रह है ।

६२०७. गुटका स० ७० । पत्रस० २७ । आ० ७×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६० ।

विशेष—आयुर्वेदिक नुस्खो का सग्रह है ।

६२०८. गुटका स० ७१ । पत्रस० ३२२ । आ० ५½×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६१ ।

विशेष—तत्वार्थसूत्र, स्तोत्र पद्मावती स्तोत्र, कथाओ, मुक्तावलीरास (सकलकीर्ति) सोलहकारण रास (सकलकीर्ति) धर्मगणि, गौत्तमष्टच्छा आदि का सग्रह है ।

६२०६. गुटका स० ७२ । पत्र स० ६८ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी प्राकृत । ले०काल स० १८५३ कार्तिक सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ७६२ ।

विशेष—सामायिक पाठ एव आप्तमीमासा (मूल) आदि का सग्रह है ।

६२१०. गुटका स० ७३ । पत्रस० ५० । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७६३ ।

विशेष—व्रत विधान, एव त्रिपचाशतक्रिया व्रतोद्यापन तथा क्षेत्रपाल विनती हे ।

६२११ गुटका स० ७४ । पत्रस० ३० । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १८६८ मगमिर बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० ७६४ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

शत्रु जय मडल, आदिनाथ स्तवन (पासचन्द सूरि) है ।

६२१२. गुटका सं० ७५ पत्रस० २६ । आ० ५×३ इञ्च । भाष—हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन स० ७६५ ।

विशेष—सुभाषित पद्यो का सग्रह है । पद्य स० १६६ हैं ।

६२१३. गुटका सं० ७६ । पत्रस० ५१ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६६ ।

विशेष—निम्न पद्यो का सग्रह है—

नेमिनाथ स्तवन	रूपचन्द	हिन्दी
विनती	रामचन्द्र	”

अ त्मसाबोध	—	हिन्दी
राजुलय पच्चीसी	—	"
विनती	बालचन्द	"
उपदेशमाला	—	"
राजुलकी सज्झाय	—	"

६२१४. गुटका स० ७७ । पत्रस० १०३ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६८ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठो आदि का सग्रह है ।

६२१५ गुटका स० ७८ । पत्रस० १७० । आ० ५½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी, सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६६ ।

विशेष—निम्न पूजा पाठो का सग्रह है देवसिद्ध पूजा, सोलहकारण पूजा, कलिकु ड पूजा, चिन्तामणि पूजा, नन्दीश्वर पूजा, गुरावली पूजा, जिनसहस्र नाम (जिनसेनाचार्य) एव अन्य पूजाए ।

६२१६. गुटका स० ७६ । पत्रस० १६२ । आ० ३½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७७१ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

स्तभनक पार्श्वनाथ नमस्कार	सस्कृत	अभयदेव सूरि
अजितशाति स्तवन	"	नन्दिषेण
अजित शाति स्तवन	"	—
भयहर स्तोत्र	"	—
आदिसप्त स्मरण	हिन्दी	—
भक्तामर स्तोत्र	सस्कृत	मानतु गाचार्य
गौतम स्वामी रास	हिन्दी	र०काल स० १४१२
नेमिनाथ रास	"	—
नेमीश्वर फाग	"	—

(श्वेताम्बरीय पाठो का सग्रह है)

६२१७. गुटका स० ८० । पत्रस० १४२ । आ० ८×७ इञ्च । भाषा—अपभ्र श । पूर्ण । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७७२ ।

विशेष—महाकवि धनपाल की भविसय कहा सग्रहीत है इसकी लिपि स० १६४३ ज्येष्ठ सुदी ५ को हुई थी ।

मेदनीपुर शुभस्थानो मडलाचार्य धर्मकीर्ति देवाम्नाये खन्डेलवालान्वये पाटनी गोत्रे आर्यका श्री सीलश्री का पठनार्थ ।

६२१८. गुटका स० । पत्रस० ८-१०२ । आ० ६½×३½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० स० ७७३ ।

विशेष—हिन्दी के सामान्य पाठो का सग्रह है ।

६२१९ गुटका स० ८२ । पत्रस० १२४ आ० ८½×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७७४ ।

विशेष—प० दीपचन्द रचित आत्मवलोकन ग्र थ है ।

६२२०. गुटका स० ८३ । पत्रस० २४५ । आ० ८×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी-सस्कृत । ले०काल स०१६५० चैत सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ७७५ ।

विशेष – निम्न पाठो का सग्रह है—

जिनसहस्रनाम	सस्कृत	आशाधर
पच स्तोत्र	"	—
रत्नकण्ड श्रवकाचार	"	समन्तभद्र
तत्वार्थसूत्र	"	उमास्वामी
जीवसमास	हिन्दी	—
गुणस्थान चर्चा	"	—
चौवीस ठाणा चर्चा	"	—
भट्टारक पट्टावली	"	—
खण्डेलवाल श्रावक उत्पत्ति वर्णन	"	—
व्रतो का व्योरा	"	—
पट्टावली	"	—

६२२१. गुटका स० ८४ । पत्रस० ८६ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल× । पर्ण । वेष्टनस० ७७६ ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

६२२२. गुटका सं० ८५ । पत्रस० ४९ । आ० ६½×५ इञ्च । भाषा–पुरानी हिन्दी । ले०काल स० १५८० चैत्र सुदी ९ । पूर्ण । वेष्टनस० ७७७ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह—

उपदेशमाला	धर्मदासगणि
शीलोपदेश माला	जयसिंह मुनि
सवोह सत्तरि	जयशेखर
सवोध रसायण	नयचन्द सूरि

प्रशस्ति—निम्न प्रकार है—

सवत् १५८० वर्षे चैत्र सुदी ९ तिथौ वा० श्रीसागर शिष्य मु० रत्नसागर लिखत श्री ब्राह्मणे स्थानत श्री हीरु कृते एषा पुस्तिका कृता ।

६२२३. गुटका स० ८६ । पत्रस० ७८ । आ० ६½×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी–सस्कृत । ले०काल स० १८१७ द्व० सावण सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ७७८ ।

विशेष—निम्न प्रकार सग्रहहै—

आयुर्वेदिक नुस्खे — हिन्दी पत्र ११२-

जिनपजर स्तोत्र	कमलप्रभ सूरि	सस्कृत	१३
शातिनाथ स्तोत्र	—	"	१४-१५
वर्द्धमान स्तोत्र	—	"	१५
पार्श्वनाथ स्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"	१६-१७
चौवीस तीर्थंकर स्तवन	—	हिन्दी	१८२४
आदित्यवार कथा	—	"	२५-४१
पार्श्वनाथ चिन्तामणि रास	—	"	४५-४८
उपदेश पच्चीसी	रामदास	"	४६-५३
राजुलपच्चीसी	विनोदीलाल	"	५४-६२
कल्याण मन्दिर भाषा	बनारसीदास	"	६२-७०

६२२४. गुटका स० ८७। पत्रस० ५४। आ० ७×५ इन्च। भाषा-सस्कृत हिन्दी। ले०काल स० १८३४। पूर्ण। वेष्टन स० ७७६।

विशेष—मुख्य निम्न पाठो का सग्रह है—

भक्तामर स्तोत्र	मानतुगाचार्य	सस्कृत
भक्तामर स्तोत्र भाषा	हेमराज	हिन्दी
आदित्यवार कथा	मु० सकलकीर्ति	हिन्दी (र०काल स १७४४)
कृपणपच्चीसी	विनोदीलाल	हिन्दी

विशेष—आदित्यवार कथा आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

आदिभाग—

अथ आदित्यवार व्रत की कथा लिखते—
प्रथम सुमरि जिनवर चौवीस, चौदहसै त्रेपन जेमुनीस।
सुमरो सारद भक्ति अनन्त, गुरु देवन्द्रकीर्ति महत।
मेरे मन इक उपज्यो भाउ, रविव्रत कथा कहन को चाउ।
मै तुकहीन जु अक्षरु करौ तुम गुनीवर कवि नीके धरौ।
× × ×

अन्तिम पाठ—

हा जू सवत् विक्रमराइ भले सत्रहसै मानौ।
ता ऊपर चवालीस जेठ सुदी दशमी जानौ।
वारु जु मगलवार हस्तुन छितु जु परीयौ।
तव यह रविव्रत कथा मुनेन्द्र रचना सुभ करीयौ।
वारवार हौ कहा कहौ रविव्रत फल जु अनन्त।
धरनेद्रै प्रभु दया करी दीनी लछि अनन्त ॥१०६॥
गर्ग गोत अग्रवाल तिहु नगरी के जो वासी।
साहुमल कौ पूतु साहु भाऊ बुधि जुभासी।

तिन जु करी रविव्रत कथा भली तुकै जु मिलाई।
तिनिकै बुधि मैं कीजियौ सोवे पूरे गुनवत।
कहत मुनिराइजू, सकलकीर्ति उपदेश सुनौ चतुर सुजानजू ॥१०७॥

इति श्री आदित्यवार व्रत की कथा सपूर्ण समाप्त। लिखित हरिकृष्णदास पठनार्थ लाला हीरामनि ज्येष्ठ वुदी ६ स० १८३४ का।

६२२५ गुटका स० ८८। पत्रस० ४६। आ० ८×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। ले० काल×। पूर्ण। वेष्टनस० ७८०।

विशेष—प्रस्ताविक दोहा, तीर्थकर स्तुति, भट्टारक विजयकीर्ति के शिष्यो का व्योरा, भट्टारक पट्टावली एव पद सग्रह आदि है।

६२२६. गुटका स० ८६। पत्र स० ४–२६। आ० ८×६ इञ्च। भापा–हिन्दी। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ७८१।

विशेष—शृगार रस के ३६ से ३७६ तक पद्य है।

६२२७ गुटका सं० ६०। पत्र स० ६०। आ० ८×६ इञ्च। भाषा–सस्कृत–हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ७८२।

विशेष—सोलहकारण भावना, पट्द्रव्य विवरण, पट्लेखा गाथा, नरक विवरण, त्रैलोक्य वरणन, रामाष्टक, नेमिनाथ जयमाल, नदीश्वर जयमाल, 'नवपदार्थ वर्णन, नीतिसार (समय भूपण), नदिताढ्य छद त्रिभगी, प्रायश्चित पाठ आदि पाठो का सग्रह है।

६२२८. गुटका सं० ६१। पत्रस० ७६। आ० ७×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेप्टन स० ७८४।

विशेप—ब्र० रायमल्ल की हनुमत कथा है।

६२२६. गुटका सं० ६२। पत्र स० १०७। आ० ७½×४ इञ्च। भापा–हिन्दी मस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ७८५।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाओ का सग्रह है।

६२३०. गुटका सं० ६३। पत्रस० ८५। आ० ८×५½ इञ्च। भापा-हिन्दी। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७८६।

विशेष—अनेक कवियो के पदो का सग्रह हैं।

६२३१ गुटका सं० ६४। पत्रस० १३०। आ० ५½×६ इच। भाषा हिन्दी–सस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७८७।

विशेष—सस्कृत एव हिन्दी मे सुभापित पद्यो का सग्रह है।

६२३१. गुटका स० ६५। पत्र स० २–३४। आ० ५½×५ इच। भाषा–मस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७८८।

विशेष—आयुर्वेद के नुस्खो का सग्रह है।

६२३३. गुटका सं० ६६। पत्र स० १२६। आ० ६×४½ इच। भापा-हिन्दी। ले०काल स० १७५० आसोज सुदी १।। पूर्ण। वेष्टन स० ७८६।

विशेष—निम्न प्रकार सग्रह है —

पचसधि (प्रक्रिया कौमुदी) समयसुन्दर के पद एव दानशीलतपभावना नेमिनाथ बारहमासा, ज्ञान-पच्चीसी (बनारसीदास) क्षमाछतीसी (समयसुन्दर) एव विभिन्न कवियो के पदो का सग्रह है गुटका सग्रह की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

९२३४. गुटका सं० ९७। पत्र स० ३१२। आ० ६१/२×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी-सस्कृत। ले०काल स० १७०२ माह बुदी १। पूर्ण। वेष्टन स० ७९०।

विशेष—जोबनेर मे प्रतिलिपि की गई थी। निम्न रचनाओ का सग्रह है।

पचस्तोत्र, तत्वार्थसूत्र, गुणस्थानचर्चा जोगीरासा, बडा कल्याणक, आराधनासार, चूनडीरास (विनय-चन्द्र), चौबीसठाणा, कमप्रकृति (नेमिचन्द्र) एव पूजाओ का सग्रह है।

९२३५ गुटका स० ९८। पत्रस० २२६। आ० ८×४१/२ इञ्च। भाषा-हिन्दी। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७९२।

विशेष—ब्र० रायमल्ल की हनुमत कथा है।

९२३६. गुटका स० ९९। पत्रस० १८०। आ० ६×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले०काल स० १६४२ फाल्गुण सुदी १ पूर्ण। वेष्टन स० ७९३।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

प्रतिक्रमण	—	पत्र स० १-८१
गुर्वावली	—	पत्र स० ८२-८५
आराधनासार	—	—
मेघकुमारगीत (पूनो)	—	—

इत्यादि पाठो का सग्रह है।

९२३७. गुटका सं० १००। पत्रस० १८५। आ० ७×५१/२ इञ्च। भाषा-हिन्दी-सस्कृत। ले०काल स० १५७६ माघ सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन स० ७९४।

विशेष—भयरोठा ग्राम मे लिखा गया था। निम्न पाठो का सग्रह है—

स्थूलभद्र फागु प्रबन्ध	—	प्राकृत	२७ गाथा
उपदेश रत्नमाला	—	,,	२५ ,,
द्वादशानुप्रेक्षा	—	,,	४५ ,,
परमात्मप्रकाश	योगीन्दु	अपभ्रश	३४२ पद्य
			(ले० काल स० १५९१ आषाढ बुदी १)
प्रायश्चितविधि	—	सस्कृत	—
दशलक्षण पूजा	—	अपभ्रश	—
सुभाषित	सकलकीर्ति	सस्कृत	३९० पद्य
द्वादशानुप्रेक्षा	जिनदास	हिन्दी	—

९२३८. गुटका स० १०१। पत्रस० ३१६। आ० १२×४३/४ इञ्च। भाषा-हिन्दी-सस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७९५।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ एव स्तोत्रो के अतिरिक्त निम्न महत्वपूर्ण सामग्री और है—

अष्टाह्निका कथा	विश्वभूषण	
अष्टाह्निका रास	विनयकीर्ति	
अनन्तचतुर्दशी कथा	भैरू	र० काल स० १७८७
चौरासीजाति की जयमाला	ब्र० गुलाल	
दशलक्षण कथा	श्रौसेरीलाल	र० काल स० १७८८
आदित्यवार कथा	—	
पुष्पाञ्जलि कथा	आचार्य गुणकीर्तिका शिष्य सेवक	—
सुदर्शन सेठ कथा	नन्द	र० काल १६६३
मृगाकलेखा चउपई	भानुचन्द	र० काल स० १८२५
सम्यक्त्व कौमुदी	—	—
चौरासी जाति की जयमाल	ब्र० गुलाल	

आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

दोहा—जैन धर्म त्रेपन क्रिया दयाधर्म सयुक्त ।
इक्ष्वाक के कुल वस मैं तीन ज्ञान उतपत्त ॥
भया महोछव नेम कौ जूनागढ गिरिनार ।
जात चौरासी जैनमत जुरे छोहनी चार ॥

अन्तिम पाठ—

प्रगटे लछमी सोई धर्म लगै ।
करि जग्य विधान पुराण अरु दान निमित्त धनै खरचै अरु वढै ।
सुभ देहरे जत्र सुंविब प्रतिष्ठा सुभ मत्र जत्र सुमत्र रवजै ॥
अथवा कोई कारण मगल चारण विवाह कुटव अनत पगै ।
कहि ब्रह्म गुलाल गडै लसो सै प्रगटै लक्ष्मी सोई धर्मं लगै ॥
इति श्री चौरासी जाति की जयमाल सम्पूर्ण ।

६२३९. गुटका स० १०२ । पत्रस० ५४ । आ० ७×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७६६ ।

विशेष—महापुराण चउपई (गगादास) एव अन्य पाठो का सग्रह है ।

६२४०. गुटका स० १०३ । पत्र स० ३६ से ८४ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६७ ।

विशेष—दारुण सप्तक एव महापुराण मे से अभिकार कल्प है ।

६२४१. गुटका स० १०४ । पत्रस० २२८ ।आ० ६½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-प्राकृत—सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६८ ।

विशेष— मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है ।

भक्तामर स्तोत्र	मानतु गाचार्य	सस्कृत
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामी	,,

समयसार नाटक	वनारसीदास	हिन्दी
वैद्यमनोत्सव	नयनसुख	"

६२४२. गुटका स० १०५ । पत्रस० ३६ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १८४४ सावण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ७६६ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

कृपणजगावण (ब्र० गुलाल) सामयिक पाठ तथा जोगारास आदि ।

६२४३ गुटका स० १०६ । पत्रस० १४६ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८०० ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है—

मधुमालती कथा	चतुर्भुजदास	हिन्दी पद्य स० ६१६
अमंपालरी वात		ले०काल शक स० १८३६
वीरविलास	नथमल	हिन्दी
साविग्री कथा	—	हिन्दी गद्य
		ले०काल शक स० १८४५

६२४४ गुटका सं० १०७ । पत्र स० २० से ३६ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८०१ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

वैद्यमनोत्सव कथा, मृगकपोत कथा एव चन्दनमलयागिरि कथा ।

६२४५. गुटका स० १०८ । पत्र स० १४-१२८ । आ० ५×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल । पूर्ण । वेष्टन स० ८०२ ।

विशेष—सामान्य पाठो के अतिरिक्त निम्न पाठो का सग्रह है—

परमातम प्रकाश	योगीन्दु	
सप्ततत्वगीत	—	
चउदह गुणगीत	—	
वाहुवलि गीत	कल्याणकीर्ति	
नेमिनाथ वेलि	ठक्कुरसी	
पचेन्द्रीवेलि	ठक्कुरसी	
पद	ठक्कुरसी	
दप	वूचा	
वभणा गीत	—	
धर्मकीर्ति गीत	—	
भुवनकीर्ति गीत	—	
विशालकीर्ति गीत	घेल्ह	
जसकीर्ति गीत	—	र० काल (स० १६६०)

नेमीश्वर राजुल गीत	रत्नकीर्ति	—
जयकीर्ति गीत	—	—

६२४६. गुटका स० १०९ । पत्रस० ११८ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १७५४ चैत सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ८०३ ।

विशेष—रविव्रत कथा (भाउ) पचेन्द्रीवेलि, एव कक्का बत्तीसी आदि पाठो का सग्रह है ।

६२४७. गुटका सं० ११० । पत्रस० ४० । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८०४ ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

६२४८. गुटका स० १११ । पत्रस० १५२ । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८०५ ।

विशेष—पूजाए, स्तोत्र, तत्वार्थसूत्र, कर्मप्रकृति विधान (हिन्दी) आदि पाठो का संग्रह है ।

६२४९. गुटका सं० ११२ । पत्र स० ६० । आ० ८×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८०६ ।

विशेष—गुटका जीर्ण है । आयुर्वेदिके नुस्खो का सग्रह है ।

६२५०. गुटका स० ११३ । पत्र स० ७ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८०७ ।

विशेष—धर्मवुद्धि पापवुद्धि चौपई एव ज्योतिससार भाषा का सग्रह है ।

६२५१. गुटका स० ११४ । पत्रस० ६३ । आ० ८×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १७९७ पौष सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ८०८ ।

विशेष—भूधरदास कृत पार्श्वपुराण है ।

६२५२. गुटका स० ११५ । पत्र स० ६४ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल× । पूर्ण । वेष्टनस० २०९ ।

विशेष—सामान्य चर्चाओ के अतिरिक्त २५ आर्यदेशो के नाम एव अन्य स्फुट पाठ हैं ।

६२५३. गुटका स० ११६ । पत्रस० १७४ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन म० ८१० ।

विशेष—वनारसीविलास, समयसार नाटक, सामायिकपाठ भाषा तथा भक्तामर स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

६२५४. गुटका स० ११७ । पत्रस० १३८ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १८१२ पौष सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ८११ ।

विषय—बनारसीदास कृत समयसार नाटक तथा अन्य पाठ विकृत लिपि मे हैं ।

६२५५ गुटका स० ११८ । पत्रस० ५५० । आ० ६½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८१२ ।

विशेष—निम्न पूजाओ का सग्रह है—

सहस्रगुणित पूजा	शुभचन्द्र	सस्कृत
सोलहकारण पूजा	—	"
दशलक्षण धर्म पूजा	—	"
कलिकुण्ड पूजा	—	"
कर्मदहन पूजा	शुभचन्द्र	"
धर्मचक्र पूजा	—	"
तीस चौबीसी पूजा	शुभचन्द्र	"

इनके अतिरिक्त प्रतिष्ठा सम्बन्धी सामग्री भी हैं।

६२५६ गुटका स० ११६ । पत्र स० १४६ । आ० ८×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८१३ ।

विशेष—सामान्य पूजा स्तोत्र एव पाठो का सग्रह है ।

६२५७. गुटका स० १२० । पत्रस० ४१ । आ० ८×५½इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८१४ ।

विशेष—दर्शन पाठ, कल्याण मन्दिर स्तोत्र एव समाधान जिन वर्णन आदि पाठो का सग्रह है ।

६२५८. गुटका स० १२१ । पत्रस० २४ । आ० ५½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८१५ ।

विशेष—कष्टावलि, गतवस्तु ज्ञान, छींकविचार, कालणाण एव तिथि मत्र आदि है ।

६२५६ गुटका स० १२२ । पत्र स० ८६ । आ० ५½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले०काल स० १८५६ । पूर्ण । वेष्टन स० ८१६ ।

विशेष—नित्य पूजा पाठो का सग्रह है।

६२६० गुटका स० १२३ । पत्रस० १६२ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १८६७ ज्येष्ठ बुदी १३ पूर्ण । वेष्टन स० ८१७ ।

विशेष—नाटक समयसार (बनारसीदास) तत्वार्थ सूत्र, श्रीपाल स्तुति आदि का सग्रह है ।

६२६१ गुटका स० १२४ । पत्र स० १५७ । आ० ६×३½ इञ्च । भाषा-संस्कृत, हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८१८ ।

विशेष—गुटके मे स्तोत्र, अक्षरमाला, तत्वार्थसूत्र एव पूजाओ का सग्रह है ।

६२६२. गुटका स० १२५ । पत्रस० १२६ । आ० ७½×४½ इच । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८२० ।

विशेष— जिनसहस्रनाम (आशाधर) एव अकुरारोपण, सकलीकरण विधान तथा अन्य पाठा का सग्रह है ।

६२६३. गुटका स० १२६ । पत्र स० १५३ । आ० ५×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८२१ ।

विशेष—सामयिक पाठ, तत्वार्थसूत्र, समयसार गाथा, आराधनासार एव समन्तभद्रस्तुति का सग्रह है ।

९२६४. गुटका स० १२७ । पत्रस० १४६ । आ० ६ × इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८२२ ।

विशेष—पूजाओ का सग्रह है ।

९२६५ गुटका स० १२८ । पत्रस० ४२ । आ० ६ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८२३ ।

विशेष—सुन्दरदास कृत सुन्दर शृ गार है ।

९२६६. गुटका स० १२९ । पत्र स० ६–६२ । आ० ५½×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८२५ ।

विशेष—रत्नावली टीका एव शुकदेव दीक्षित वार्ता (अपूर्ण) है ।

९२६७ गुटका सं० १३० । पत्रस० ६० । आ० ६ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८२६ ।

विशेष—हिन्दी पद सग्रह है ।

९२६८. गुटका सं० १३१ । पत्र स० २५ । आ० ७½×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८२७ ।

विशेष—हमराज वच्छराज चौपई है ।

९२६९ गुटका स० १३२ । पत्र स० ९६ । आ० ६ × ५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८२८ ।

विशेष—नेमिकुमार वेलि, सामायिक पाठ, भक्तिपाठ एव गुर्वावलि आदि पाठो का सग्रह है ।

९२७०. गुटका स० १३३ । पत्रस० ८६ । आ० ८½ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८३० ।

विशेष--निम्न पाठो का सग्रह है—

कोकसार, रसराज (मनीराम) एव फुटकर पद्य, दृष्टात शतक, इश्क चिमन (महाराज कुवर सावत सिंह) आदि रचनाओ का सग्रह है ।

९२७१. गुटका सं० १३४ । पत्रस० १६८ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी–सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० १८३३ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

मत्र तत्र, आदित्यवार कथा, जैनबद्री की पत्री, चौदस कथा (टीकम) ।

९२७२. गुटका स० १३५. । पत्रस० २२८ । आ० ५ × ५ इञ्च । भाषा सस्कृत–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८३२ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठो का सग्रह है ।

९२७३ गुटका स० १३६ । पत्रस० १०० । आ० ६ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८३६ ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

६२७४ **गुटका स० १३७** । पत्र स० ६४ । आ० ७×५½ इञ्च । भाषा- हिन्दी । ले० काल स० १८१० वैशाख सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ८३७ ।

विशेष—निम्न रचनाओ का सग्रह है—

श्रीपालरास—ब्र० रायमल्ल

प्रद्युम्नरास—ब्र० रायमल्ल

६२७५. **गुटका स० १३८** । पत्र स० १६५ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८३८ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

इश्वरी छद	कवि हेम
स्थूलभद्र सज्झाय	—
पचसहली गीत	छीहल
वलभद्र गीत	अभयचन्द्र सूरि
अमर सुन्दरी विधि	—
चेतना गीत	समयसुन्दर
सामुद्रिक शास्त्र भाषा	—

इसके अतिरिक्त ज्योतिष सवधी साहित्य भी है ।

६२७६. **गुटका स० १३९** । पत्रस० ४९८ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । विषय-पूजा सग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८३९ ।

विशेष—सामान्य नित्य पूजाओ के अतिरिक्त धर्मचक्र पूजा, वृहद सिद्धचक्र पूजा, सहस्रनाम पूजा, तीस चौवीसी पूजा, वृहद् पचकल्याणक पूजा, कर्मदहन पूजा, गणधरवलय पूजा, दशलक्षण पूजा, तीन चौबीसी पूजा आदि का सग्रह है ।

६२७७. **गुटका स० १४०** । पत्रस० ८४ । आ० ५½×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८४० ।

विशेष—विभिन्न प्रकार के मत्र एव यत्रो का सग्रह है ।

६२७८ **गुटका स० १४१** । पत्रस० १७९ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय- ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८४१ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

प्रद्युम्नरासो	ब्र० रायमल्ल
ज्येष्ठ जिनवर कथा	,,
निर्दोष सप्तमी व्रत कथा	,,
पद सग्रह	—

६२७९ **गुटका स० १४२** । पत्रस० ३४ । आ० ८½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १७३६ । पूर्ण । वेष्टनस० ८४२ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

नेमिनाथ रास	ब्र० रायमल्ल

पद हेमकीर्ति

वैरी विसहर सारिखौ ।

६२८०. गुटका स० १४३ । पत्रस० ८६ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८४३ ।

विशेष—सामान्य पूजा एव स्तोत्रो का सग्रह है ।

६२८१. गुटका स० १४४ । पत्र स० २३ । आ० ७½×६ इञ्च । भाषा–संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८४५ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

६२८२. गुटका स० १४५ । पत्र स० ३८ । आ० १०½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८४६ ।

विशेष—गुरण स्थानचर्चा है ।

६२८३. गुटका स० १४६ । पत्रस० २४० । आ० ६½×५ इच । भाषा-संस्कृत–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८४७ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

कल्याणमन्दिर स्तोत्र, पच स्तोत्र, सज्जन चित्तवल्लभ, सामयिक पाठ, तत्वार्थसूत्र, वृहत् स्वय-भू स्तोत्र, आराधनासार, एव पट्टावलि ।

६२८४. गुटका स० १४७ । पत्र स० ७२ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८४८ ।

विशेष—सामान्य ज्योतिष के पाठो का सग्रह है ।

६२८५. गुटका स० १४८ । पत्र स० १०८ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८४६ ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

६२८६ गुटका सं० १४६ । पत्र स० ३१ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।वेष्टन स० ८५० ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र, पद्मावती पूजा, एव कविप्रिया का एक भाग है ।

६२८७. गुटका स० १५० । पत्रस० ६ । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल स० १६२० माघ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ८५१ ।

विशेष—लुकमान हकीम की नसीहतें हैं ।

६२८८. गुटका स० १५१ । पत्रस० १५ । आ० ८×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८५२ ।

विशेष--सोलह कारण पूजा एव रत्नचक्र पूजाओ का सग्रह है ।

६२८६. गुटका स० १५२ । पत्र स० ६० । आ० ४½×३½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल स० १६०१ । पूर्ण । वेष्टन स० ८५३ ।

निम्न पाठो का सग्रह है—

युगादिदेव स्तोत्र जिनदर्शन सप्तव्यसन चौपई एव हिन्दी पदो का सग्रह है ।

६२६० गुटका स० १५३ । पत्र स० २६ । आ० ५½×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले० काल स० १८६६ । पूर्ण । वेष्टन स० ८५५ ।

विशेष—देवगुरुओ के स्वरूप का निर्णय है ।

६२६१. गुटका स० १५४ । पत्रस० ५४ । आ० ५×३½ इञ्च । भाषा- हिन्दी सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८५४ ।

निम्न प्रकार सग्रह है—

अष्टकर्मप्रकृति वर्णन पचपरमेष्ठी पद एव तत्वार्थसूत्र है ।

६२६२ गुटका स० १५५ । पत्रस० १६० । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १६४२ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० ८५६ ।

विशेष—निम्न रचनाओ का सग्रह है ।

भविष्यदत्त रास	हिन्दी	ब्र० रायमल्ल
प्रद्युम्न रास	,,	ब्र० रायमल्ल
आदित्यवार कथा	,,	भाऊ
श्रीपाल रासो	,,	ब्र० रायमल्ल
सुदर्शन रास	,,	,,

वासली मध्ये लिखित ब्र० हीरा

६२६३ गुटका स० १५६ । पत्रस० १६० । आ० ५×४ इच । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले०काल × ।पूर्ण । वेष्टन स० ८५७ ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

६२६४. गुटका स० १५७ । पत्रस० ८६ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८५८ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

पद्मावती स्तोत्र टीका मत्र सहित कर्म प्रकृति व्योरा तथा घण्टाकर्ण कल्प, अष्टप्रकारी देवपूजा है ।

६२६५ गुटका स० १५८ । पत्रस० १८६ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८५६ ।

विशेष—भैया भगवतीदास के ब्रह्मविलास का सग्रह है ।

६२६६. गुटका स० १५६ । पत्रस० १६६ । आ० ७½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १७६७ पोष वुदी वुधवार । पूर्ण । वेष्टनस० ८६० ।

विशेष—तत्वार्थसूत्र भाषा टीका एव ब्र० रायमल्ल कृत नेमीश्वर रास है ।

६२६७ गुटका सं० १६० । पत्रस० २३४ । आ० ७×६ इन्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल स० १७२५ माघ वुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८६१ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है ।

सर्वार्थसिद्धि	—	पूज्यपाद
आलापपद्धति	—	देवसेन

६२६८. गुटका सं० १६१ । पत्र स० ६६ । आ० ५×४ इन्च । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टन स० ८६२ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है ।

नीति शास्त्र	सस्कृत	चाणक्य
तेरहकाठिया	हिन्दी	वनारसीदास
इष्टछत्तीसी	,,	वुधजन
अध्यात्म वत्तीसी	,,	वनारसीदास
तत्वार्थ सूत्र	,,	उमास्वामी

६२६६ गुटका सं० १६२ । पत्र स० ६४ । आ० ४×४ इन्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८६४ ।

विशेष—सामान्य पाठ, भक्तामर स्तोत्र मत्र सहित एव मत्र शास्त्र का सग्रह है ।

६३००. गुटका सं० १६३ । पत्रस० १८६ । आ० ६×५ इन्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८६३ ।

विशेष—ब्रह्मविलास एव वनारसी विलास के पाठो का सग्रह है । इसके अतिरिक्त रत्नचूडरास (र०काल स० १५०१) एव सुआ वहत्तरी भी हैं ।

रत्नचूडरास—पद्य स० ३१२

आदि अ त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ दोहा—

सरस्वति देवि पाय नमी, मागु चित पसाव ।
रतनचूड गुण वर्णउं दान विपइ जसु नाम ।।१।।
जवूद्वीप माहि अछइ, भरत क्षेत्र अतिचग ।
तामली नयरी तिहा, राजा अजित नरिंद ।।२।।
तिण नयरी जे जिन वसइ, वरण अठारह लोक ।
भोग पुरदर भोगवइ, सुख सपति सुरलोक ।।३।।

चौपई—

सरोवर वाडि करी आराम, तिहा पाप विफरतु अभिराम ।
विवध वृष छइ तिहि वन माहि वसनइ वास वसइ परवाहि ।।४।।

पोह मिदर पोलि पगार, हार श्रेणि नवि लाभइ पार।
चित्तह रमण हर तोरणमाल, लकानी परिभाक भमाल ।।५।।

चउरासी चउहटा अतिचग, नव नव उद्धा नव नवरग।
कोटिधज दीसइ अति घणा, लाखेसरी नीन राही का मणा ।।६।।

माडइ दोसी भविका पट्ट, भराया दीसइ सोनी दट्ट।
माणिक चउक जव वहरी रह्या, हीरइ माणिक मोती सह्या ।।७।।

सुद दीया फोफलीया सोनार, नाई तेली न लहु पार।
तबोली मरदठ घविटि, एक माडइनी सत फडहट्टा ।।८।।

मध्य भाग—

हाथ घलाविउमालो पाहि वल तउ कहि काइ छइ माहि।
माहाराज सीभलिज्यो तम्हे, कुमर कहइ असरामण अम्हे ।।२८२।।

माली प्रीछवीउते तलइ, सूत्रधार आविउ ते तलइ।
कुमर कहिय अम्हे मालिउसु गामि, कली पाइ धाउ भाइ कामि ।।२८३।।

अन्तिम भाग—

नगर माहि न्याय घेरज हुउ, खोटा लोक ते साचु थयउ।
करी सजाइ घाले वाभणी, हुई वाहण तणी पुराणी।
यम घटा मोकला वीकरी, वालउ कुमर सवाहणज भरी।
चाल्या वाहण वायतइ भाणि, खेम कुसल पहुता निर्वाणि।
वाहण वस्तु उतारी घणी, छावीसकोडि हिव द्रव्यह तणी।
हीर वीर घन सोवन वहु, साच्य लखिउ रण घटा वहु।
रण घटा नइ सुहग मजरी, आगइ परणुवइ रत्न सुन्दरी।
नव नव उछव नव नव रग, भोग भोग वइ अतिहि सुचग।
तिण नगरी आव्या केवली, तिहा वादु साघ सर्वं मिली।
मणिचूड तिहा पूछइ सिउ, कहउ वेटा नउ करम हुई किसउ।
रतनचूड नउ सघलउ विचार, पात्र दान दीधउ तिणिवार।
दान प्रभावइ एव जि रिधि, दान प्रभावइ पामीइय सर्वसिधि ।।३०७।।
दानसील तप भावन सार, दान तणउ उत्तम विस्तार।
दानइ जस कीरति विस्तरइ, दान दीयता दुरत भरइ ।।३०८।।
पनरइ एकोत्तरइ नीयनु सवध, रत्नचूड नउ ए सवध।
वहुल वीज, भाइ वहू रनी, कवित नीयनु भगुरेवती ।।३०९।।
वड तप गच्छ रत्त सुरिंद उदभत कला अभिनउच द।
तास सेवइक इम उचरइ, पद् प द चरण कमल अणसरइ ।।३१०।।

सर्वसुख हुइ दूणइ भणइ, नर नारी जेई दूगुणइ ।
तेह घरि लखमी सदाइ मयइ, चद सूरज जा निर्मल तपइ ॥३११॥

ए मगल एहज कल्याण, भणउ भणावहु जा ससि भाण ।
रत्नचूडनउ चारित्रसार, श्री सघनइ करउ जय जयकार ॥३१२॥

इति श्री रत्न चूडरास समाप्त ।

मिति वैशाख वदि ४ सवत् १८१७ का । वीर मध्ये पठनार्थ चिरजीवि पडित सवाईराम ॥

सुवा वहुत्तरी (वेष्टन स० ८६३)

मुवा वहुत्तरी की कथा लिख्यते—

करि प्रणाम श्री सारदा, आपणी बुद्धि परमाण ।
सुक सप्तिक वार्तिक करी, नाई तै देवीदान ॥१॥

वीकानेर मुहावनौ सुख सपति की ठौर ।
हिंदुयानि हिन्दु धरम, ऐसो सहर न और ॥२॥

तिहा तपै राजा करण, जगल को पतिसाह ।
ताकै कुवर अनूपसिंह, दाता सूर सुवाह ॥३॥

तिन मोकौं आज्ञा दई सुयमन्त होइ कै एहु ।
सम्कृत हुती वार्तिक सुक सप्तति करि देहु ॥४॥

अथ कथा प्रारम्भ—

एक मेदुपुर नाम नगर । ते थि हरदत्त वाणियौ वसै । ते पैरे वरि मदन सुन्दरी स्त्री अरु मदन वेटो । ती पैरे सोमदत्त साहरी वेटी प्रभावती नाम । सोमदत्त आपकी स्त्री प्रभावती नेती लागो रहै । माता पितारो कहियो न करै । ताउ राउ वै मदन नू देणन ताई हरिदत्त एक सुवो एक सारिका मगाई । सो पुष्पा गवर्व रो जीव वणीरा सराय हुती सुवो । हुवो अर मालती गवर्वणी रो जीव वणीरा सराय हुती सारिका हुई । सो जुदै जुदै पिजरै रहै । एक दिन मदन री आर देखि शुक अरु सरिका मदन आगै वात कहै छै ॥

दोहा—

जो दुख मात पिता तवौ अश्रु वात जो होइ ।
तिय पाप करता हरि देह सपडानि होइ ॥१॥

वात मदन पूछियौ—

वार्ता अपूर्ण है—१२ वी वात तक पूर्ण है १३ वीं वात वहोडि तेरमैं दिन प्रभावती शृगार करि रात्रि समै सुवानु पूछीयो थे कहो तो जावौ, सुवै कह्यो ।

दोहा—

जो भावै प्रभावती सो मोनु न सहाय ।
परिणामरग जाता देयिका ज्यो होय वुद्धि सुहाय ।
करि हैं सो तु जायकरि अधिरज वुद्धि विचारि ।
व्राह्मरण आगै दभिका जिस हो कीये प्रकास ।।२४।।

वार्ता—

तहरा प्रभावती बोली मारग वहता दभिका किसी वुद्धि उपाई अरु व्राह्मरण आगै किसु प्रकार कीयो वा कहै । अभिलाषा नाम माय, ते थिति लोचन नाम व्राह्मरण । गावरो पटेल । तिरणरै दभिका नाम स्त्री । तिरणरै कामरी अभिलाषा । परिण वै हरै माटी । हुविहुतो कोई मयै नही । एक दिन दभिका । घडो ले पारणी नै गई हुती । पारिण भरि ले आवता एक वटाउ जुवान सरूपदीठो वैहनु क्रीडा रै ताई आखिरी सैन दे वुलायो । अर पूछियो तू कौरण छै । वैह कही हू भाट छो । आगै मागरण नै जावा छा । दभिका कह्यो आजि राति माहरै ही रहज्यो ।

९३०१. गुटका स० १६४ । पत्रस० ९२ । आ० ६×५ इन्च । भाषा—हिन्दी । ले० काल स० १६८६ पौष सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० ८६५ ।

विशेष—निम्न रचनाओ का सग्रह है ।

वुद्धिप्रकाश	—	कवि घेल्ह
चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न	—	ब्र० रायमल्ल
द्वादशानुप्रेक्षा	—	ब्र० जिनदास
लेश्या वर्णन	—	—
'रेमन' गीत	—	छीहल
ज्येष्ठ जिनवर व्रत कथा	—	ब्र० रायमल्ल
मेघकुमार गीत	—	पूनो
मनकरहा जयमाल	—	—

वुद्धिप्रकाश कवि घेल्ह पत्र स० १६-२६ तक

भूखो पथ न जायह सीहालो जीवा पथी न जाह उन्हालो ।
सावरणी भादवो गाय न जाजे आसोजा मो भीयन सोजो ।।१६।।

अरणरचीतो किम नौहि खाजे, अगर पिछाण्या की साथी न जाजे ।
जाय दिसावरि राती न सोजे, चालतपथी रोस न कीजे ।।१७।।

अवघरि न्हाय उतरी जे घाटै कन्या न वेची गरथकै साटै ।।
पाहुरणै आया आदर दीजे, आपरण सारू भगति करीजे

दानदेय लखमी फल लीजे, जुनो ढोर ने कपड लीजे ॥१८॥

पढु न होय की मिही वैचालै वचन वान्ति तुस जो रालै ।
वणिज न कीजे आस पराय, आरभज्यौ काम त्यौ नीरवहि ॥१९॥

नित प्रतिदान सदाही दीजे, दुणा ऊपरि व्याज न लीजै ।
वरिही ण राखी हीण कुल नारि, मुक्त उपाय सतोपास्तरी ॥२०॥

विणसै वीयउ हसि हसीखाय, वीणसै वहु ज परिवरि जाय ।
वीणसै पुत पछोकडी छाडी, वीणसौ गय गवाडो मीडो ॥२१॥

वीणसै विण असुवार घोडो, वीणसै सेवग आहर थोडो ।
वीणसौ राजु मत्री नो थोडो, अचगीलट न वोलसिकुडो ॥२२॥

वुद्धि होइ करि सो नर जीवो, मवीमा कै घरि पाणी न पीव ।
हरिपन कीजे जेवुठडी पाणी, अणनीयनै सुकाल न जाणी ॥२३॥

मत्र न कीजे हीयडौ कुडौ भील वीण नारी ण पहराय चूडौ ।
ऐमी सीख सुणीरी पुन्या, लाज न कीजे मागत कन्या ॥२४॥

व्राह्मण होय सवेद भणावी श्रावग होय मत्रण अथपाजीवी ।
वाण्या होय सवीणज कगवो, कायथ होय, सलेखो भणावौ ॥२५॥

कुल मारगौ जुण छोडौ करमा, सगलीमीख सुणेजे वरमा ।
वुवी प्रगास पढीर विचारौ, वीरो न आवौ कदहि सहसारी ॥२६॥

ऐमी सीख मुणै सहुकोय, कहता सुणतापुनी जु होय ।
कहौ देल्ह परपोत्तम पुत्ता, करौ राज परिवार सजूता ॥७२॥

सवत् १६८६ मिती पोप सुदी १० वुवीप्रगाम समाप्त । लिखित पडित रुडा, लिखामत पडित सिंघजी ।

६३०२. गुटका स० १६५ । पत्रस० १३८ । आ० ५×५ इञ्च । भापा-मस्कृत हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८६६ ।

विशेष—निम्न रचनाओ का सग्रह है—

तत्वार्थ सूत्र	—	उमास्वामी
रत्नकरण्ड श्रावकाचार भापा	—	सदामुख कामलीवाल

६३०३. गुटका स० १६६ । पत्रस० १४-११० । आ० $6\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{2}$ इञ्च । भापा-हिन्दी । ले०काल स० १६८७ ज्येष्ठ वुदी अमावस । अपूर्ण । वेष्टनस० ८६७ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

आदित्यवार कथा	—	भाऊकवि

अनुप्रेक्षा	—	योगदेव
आदिनाथ स्तवन	—	सुमतिकीर्ति
जिनवर व्रत कथा	—	ब्र० रायमल्ल

गुटका जोवनेर मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प० केसो के पठनार्थ लिखा गया था।

६३०४. गुटका स० १६७। पत्रस० १३५। आ० ५½×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी-सस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ८६९।

विशेष—सामायिक पाठ, भक्तामर स्तोत्र, जोगीरास तथा भक्ति पाठ आदि रचनाओ का सग्रह है।

६३०५. गुटका सं० १६८। पत्रस० ६५। आ० ६×३ इञ्च। भाषा–हिन्दी-सस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ८७०।

विशेष – नित्य पूजा पाठएव मगल आदि पाठो का सग्रह है।

६३०६ गुटका स० १६९। पत्र स० १००। आ० ५×४ इञ्च। भाषा–सस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ८७१।

विशेष—आयुर्वेद एव मत्रशास्त्र सम्वन्धी सामग्री है।

६३०७ गुटका स० १७०। पत्रस० १३८। आ० ७×५ इञ्च। भाषा हिन्दी-सस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण वेष्टनस० ८७२।

विशेष—सामान्य पूजाए स्तोत्र एव पाठो का सग्रह है।

६३०८. गुटका स० १७१। पत्रस० १८६। आ० ८½×६इञ्च। भाषा हिन्दी–सस्कृत। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन स० ८७३।

विशेष—सामन्य पूजा पाठ, आयुर्वेदिक नुस्खे, काल ज्ञान एव मत्र शास्त्र सम्वन्धी साहित्य है।

६३०९. गुटका स० १७२। पत्रस० ६८। आ० ८½×६½ इञ्च। भाषा–हिन्दी। ले०काल स० १७९८ पोष बुदी ८। पूर्ण। वेष्टन स० ८७४।

विशेष—निम्न रचनाओ का सग्रह है—

शालिभद्र चोपई	हिन्दी	जिनराजसूरि
राजुलपच्चीसी	,,	विनोदीलाल
पचमगल पाठ	,,	रूपचन्द

६३१०. **गुटका स० १७३** ।पत्रस० ११४ । आ० ३½×३½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८७५ ।

विशेष—स्तोत्र एव मत्रशास्त्र का साहित्य है ।

६३११. **गुटका सं० १७४** । पत्रस० ३३ । आ० ६×३½ इच । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८७६ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र एव पूजा पाठ सग्रह है ।

६३१२ **गुटका स० १७५** । पत्र स० ११० । आ० ६×५½ इच । भाषा—हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८७७ ।

विशेष—त्रेपन क्रिया (हेमचन्द्र हिन्दी पद्य) पद, भक्तिपाठ, चतुर्विंशति स्तोत्र (समतभद्र) भक्तामर स्तोत्र (मानतु गाचार्य) आदि का सग्रह है ।

६३१३ **गुटका स० १७६** । पत्रस० २१८ । आ० ५½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८७८ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ एव स्तोत्रो का सग्रह है ।

६३१४. **गुटका सं० १७७** । पत्रस० २७२ । आ० ५×६ इच । भाषा—हिन्दी । ले०काल-स० १८२७ काती सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ८७९ ।

विशेष—अजमेर के शिवजीदास के पठनार्थ किशनगढ मे प्रतिलिपि की गई थी । कर्णामृत पुराण (भट्टारक विजयकीर्ति) तथा दानशीलतप भावना (अपूर्ण) है ।

६३१५ **गुटका स० १७८** ।पत्रस० ९८ । आ० ४½×३½ इञ्च । भाषा—हिन्दी, सस्कृत । ले० काल स० १८८० श्रावण सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ८८० ।

विशेष—पूजा स्तोत्र, चर्चाए, चौवीस दडक, नवमगल आदि पाठो का सग्रह है । अजमेर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

६३१६. **गुटका सं० १७९** । पत्र स० ६० । आ० ७×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८८१ ।

विशेष—पल्य विधि, त्रेपनक्रियापूजा, पल्यव्रत विधान, त्रिकाल चौबीसी पूजा आदि का सग्रह है ।

६३१७. **गुटका स० १८०** ।पत्रस० ४० । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८८३ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ सग्रह है ।

६३१८. **गुटका सं० १८१** । पत्रस० २६ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले० काल स० १८७३ माह सुदी १५ । पूर्ण । वेप्टन सं० ८८५।

विशेष—सामुद्रिक भाषा शास्त्र है।

६३१९. गुटका स० १८२ । पत्रस० ७० । आ० ५×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल-× । पूर्ण । वेष्टन स० ८८७ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र मत्र सहित, एव अनेकार्थ मजरी का सग्रह है।

६३२०. गुटका स० १८३ । पत्रस० ४०-२४४ । आ० ६×३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८८९ ।

विशेष—सूक्ति मुक्तावली, पदसग्रह तथा मत्र शास्त्र सम्बन्धी साहित्य है।

६३२१. गुटका सं० १८४ । पत्रस० ६ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स०—१७८४ मगसर सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० ८९१ ।

विशेष—वीज उजावलीरी थुई है।

६३२२. गुटका स० १८५ । पत्रस० १६९ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८९३ ।

विशेष—नित्य प्रति काम मे आने वाली पूजाए एव पद है।

६३२३. गुटका स० १८६ । पत्रस० २०० । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी ले०काल स० १८५१ भादवा बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० ८९४ ।

विशेष—

धर्मोपदेशामृत	—	पद्मनदि
पद्मनदि पर्चविशति	—	पद्मनदि
नेमिपुराण	—	—
सुदर्शनरास		ब्र० रायमल्ल ले०काल सं० १६३५ सावण सुदी १३ ।

लिखापि साह सातू खण्डेलवाल ।

६३२४. गुटका स० १८७ । पत्रस० ६२ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी ।ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८९५ ।

विशेष—खुशालचन्द, द्यानतराय, आदि कवियो के पद, तथा धर्म पाप सवाद, चरखा चौपई आदि का सग्रह है।

६३२५. गुटका स० १८८ । पत्रस० २६८ । आ० ४×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले० काल × ।पूर्ण। वेष्टनस० ८९६ ।

विशेष—सामान्य पूजाओ के अतिरिक्त वृन्दावनदास कृत चौवीस तीर्थंकर पूजा आदि का सग्रह है।

६३२६ गुटका स० १८९ । पत्रस० ६४ । आ० ५½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८९७ ।

विशेष—मन्त्रतन्त्र एवं आयुर्वेद के नुस्खों का संग्रह है।

६३२७ गुटका सं० १९० । पत्र स० २५० । आ० ५ × इञ्च । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । ले०काल स० १६५० फागुण बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ८९८ ।

विशेष—मुख्यत निम्न रचनाओं का संग्रह है।

आराधनासार	प्राकृत	देवसेन
सबोध पचासिका	—	—
दशरथ की जयमाल	—	—
सामायिक पाठ	संस्कृत	—
तत्वार्थसूत्र	,,	उमास्वामी
पच स्तोत्र	,,	—

६३२८. गुटका स० १९१ । पत्र स० २२७ । आ० ५½ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८९९ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठो, आयुर्वेद एव ज्योतिष आदि के ग्र थो का संग्रह है।

६३२९. गुटका स० १९२ । पत्रस० २२८ । आ० ६ × ३½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९०० ।

विशेष—तीस चतुर्विंशति पूजा त्रिकालचतुर्विंशति पूजा आदि का संग्रह हैं।

६३३० गुटका सं० १९३ । पत्रस० ८२ । आ० ५ × ४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल स० १६९० वैशाख सुदी । १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ९०१ ।

विशेष—गुरावलि, चिंतामणि स्तवन, प्रतिक्रमण, सुभाषित पद्य, गुरुओ की विनती, भ० धर्मचन्द्र का सवैया आदि का संग्रह है।

६३३१. गुटका स० १९४ । पत्र स० ३२४ । आ० ८½ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल स० १८८० माघ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ९०२ ।

विशेष—पार्श्वनाथ स्तवन, सम्यक्त्व कौमुदी कथा, प्रश्नोत्तर माला, हनुमत कवच एव वृन्दावन कवि कृत सतसई, सुभाषित ग्र थ आदि पाठो का संग्रह है।

६३३२. गुटका सं० १९५ । पत्र स० १८८ । आ० ५½ × ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० स० ९०३ ।

विशेष—जिनसहस्रनाम, प्रस्ताविक श्लोक, भक्तामर स्तोत्र एव बडा कल्याण आदि पाठो का संग्रह है।

६३३३. गुटका स० १९६ । पत्रस० ७० । आ० ५ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९०४ ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है।

६३३४. गुटका स० १६७। पत्र स० ६६। आ० ६×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल स० १८३६ भादवा बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० ६०६।

विशेष—जैनरासो, सुदर्शन रास (ब्रह्म रायमल्ल) शीलरास (विजयदेव सूरि) एव भविष्यदत्त चौपई आदि का सग्रह है।

६३३५ गुटका स० १६८। पत्र स० ६६। आ० ५×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी-सस्कृत। ले०काल स० १८६३ आसोज सुदी १। पूर्ण। वेष्टन स० ६०७।

विशेष—नित्य प्रति काम मे आने वाले स्तोत्र एव पाठो का सग्रह है।

६३३६. गुटका स० १६६। पत्रस० १६-१३६। आ० ६×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी-सस्कृत। ले० काल स० १८६३ आसोज सुदी१। पूर्ण। वेष्टनस० ६०६।

विशेष—आलोचना पाठ, सामायिक पाठ, तत्वार्थ सूत्र आदि पाठो का सग्रह है।

६३३७. गुटका स० २००। पत्रस० ५०। आ० ५½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ६१०।

विशेष—विभिन्न महीनो मे आने वाले एकादशी महात्म्य का वर्णन है।

६३३८. गुटका स० २०१। पत्र स० ८४। आ० ६½×५½इञ्च। भाषा-सस्कृत। ले० काल स १८८७ आषाढ सुदी १०। पूर्ण। वेष्टनस० ६११।

विशेष—जिनसहस्रनाम (आशाधर) एव तत्वार्थ सूत्र (उमास्वामी) आदि पाठो का सग्रह है।

६३३६ गुटका स० २०२। पत्रस० ३०-७०। आ० ६×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी-सस्कृत। ले०काल स० १८२३ भादवा सुदी ५। पूर्ण। वेष्टनस० ६१२।

विशेष—निम्न रचनाओ का सग्रह है—

सबोध दोहा	हिन्दी	सुप्रभाचार्य
सबोध पचासिका	,,	गौतमस्वामी
गिरनारी गीत	,	विद्यानदि
लाहागीत	,,	—
वास्तुकर्म गीत	,,	—
शाति गीत	,,	—
सम्यक्त्व गीत	,,	—
अभिनन्दन गीत	,,	—
अष्टापद गीत	,,	—
नेमीश्वर गीत	,,	—
चन्द्रप्रभ गीत	,,	—
सप्तऋषि गीत	,,	विद्यानदि
नववाडी विनती	,,	—

९३४०. गुटका स० २०३ । पत्रस० ३०-१५२ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल स० × । पूर्ण । वेष्टनस० ९१३ ।

विशेष—पचस्तोत्र एव आदित्यवार कथा है ।

९३४१. गुटका सं० २०४ । पत्र स० ५२ । आ० ६½×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल स० १८०१ आषाढ सुदी ९ । पूर्ण । वेष्टनस० ९१५ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र ऋद्धि मत्र एव वचनिका सहित है ।

९३४२. गुटका सं० २०५ । पत्रस० ९० । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९१६ ।

विशेष—फुटकर श्लोक, जिनमहस्रनाम (आशाधर) मागीतु गी चौपई, देवपूजा, राजुलपच्चीसी, बारहमासा आदि का सग्रह है ।

९३४३. गुटका सं० २०६ । पत्रस० २६ । आ० ८×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९१७ ।

विशेष—नित्य प्रति काम आने वाले पाठो का सग्रह है ।

९३४४ गुटका सं० २०७ । पत्रस० २५ । आ० ७×५ इ च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९१८ ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र एव एकीभाव स्तोत्र अर्थ सहित है ।

९३४५. गुटका स० २०८ । पत्रस० २३४ । आ० ५×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ९१९ ।

विशेष—पूजा पाठ एव स्तोत्र आदि का सग्रह है ।

९३४६ गुटका स० २०९ । पत्र स० २०८ । आ० ५½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी-सस्कृत । ले० काल स० १७९४ । पूर्ण । वेष्टन स० ९२० ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ सग्रह है ।

९३४७ गुटका स० २१० । पत्रस० ७९ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल स० १८०९ ज्येष्ठ बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनस० ९२१ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र, कल्याण मदिर भाषा एव तत्वार्थ सूत्र आदि पाठो का सग्रह है ।

९३४८. गुटका स० २११ । पत्र स० १०० । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल× । पूर्ण । वेष्टन स० ९३३ ।

विशेष—निम्न रचनाओ का सग्रह है । मुनीश्वर जयमाल (जिनदास) प्रतिक्रमण, तत्वार्थ सूत्र, पट्टावलि, मूठमत्र, भक्तिपाठ भट्टारक पट्टावलि एव मत्र शास्त्र ।

९३४९. गुटका स० २१२ । पत्र स० १५० । आ० ५×६½ इ च । भाषा—सस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९२४ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ एव स्तोत्र आदि का सग्रह है ।

६३५०. गुटका स० २१३ । पत्रस० १२४ । आ० ६×४½ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १८२३ भादवा बुदी । पूर्ण । वेष्टन स० ६२५ ।

विशेष—निम्न रचनाओ का सग्रह है ।

नेमीश्वर रास	—	ब्र० रायमल्ल
कृष्णजी का बारहमासा	—	जीवणराम
छनाल पच्चीसी	—	—

६३५१. गुटका स० २१४ । पत्र स० ८२ । आ० ६×६ इन्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले० काल ×। पूर्ण । वेष्टन स० ६२६ ।

विशेष—सोलहकारण जयमाल, गणधरवलय पूजा जिनसहस्रनाम (आशाधर) एव स्वस्त्ययन पाठ आदि का सग्रह है ।

६३५२. गुटका सं० २१५ । पत्रस० ६० । आ० ६×४ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १८११ आषाढ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ६२७ ।

विशेष—अठारह नाता का चौढाल्या (लोहट), चन्द्रगुप्त के १६ स्वप्न, नेमिराजमति गीत, कुमति सज्झाय एव साधु वन्दना आदि पाठो का सग्रह है

६३५३. गुटका स० २१६ । पत्र स० १६० । आ० ८×६½ इच । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १७८२ मगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६२८ ।

विशेष—नासिकेत पुराण, (१८ अध्याय तक) एव सीता चरित्र (कवि बालक अपूर्ण) आदि रचनाओ का सग्रह है ।

६३५४. गुटका स० २१७ । पत्रस० १५० । आ० ८½×६ इन्च । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले० काल स० १७७७ पौष बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ६२६ ।

विशेष—निम्न स्तोत्रो का सग्रह है—

भक्तामर स्तोत्र भाषा	सस्कृत-हिन्दी	हेमराज
कल्याण मदिर स्तोत्र भाषा	,,	बनारसीदास
एकीभाव स्तोत्र भाषा	,,	—

६३५५. गुटका स० २१८ । पत्रस० २८२ । आ० ६½×५½ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १७८६ कार्तिक बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६३० ।

विशेष—निम्न रचनाओ का सग्रह है ।

मागीतु गी स्तवन	हिन्दी	हिन्दी पत्र ३०–३५	
कुमति की विनती	,,	,,	—
ननद भौजाई का झगडा	,,	,,	—
अक्षर बत्तीसी	,,	,	—
ज्ञान पच्चीसी	,	,,	—

परमज्योति	—	हिन्दी
निर्दोष सप्तमी कथा	—	,,
जिनाष्टक	—	,,
गीत	विनोदीलाल	,,
आदिनाथ स्तवन	नेमचन्द (जगत्कीर्ति के शिष्य)	,,
कठियारा कानडदे चउपई	मानसागर	,,
नवकार रास	—	,,
अठारह नाता	लोहट	हिन्दी
धर्मरासो	जोगीदास	,,
त्रेपन,क्रियाकोश	—	,,
कक्का बत्तीसी	—	•
ग्यारह प्रतिमा वर्णन	—	,,
पद सग्रह	विभिन्न कवियो के	,,
सप्तव्यसन गीत	—	,,
पार्श्वनाथ का महेला	—	,,

६३५६. गुटका सं० २१६ । पत्रस० १७४ । आ० ५½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल स० १७४० आसोज बुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० ८३१ ।

विशेष—आयुर्वेद एव मत्र शास्त्र से सम्बन्धित साहित्य का अच्छा सग्रह है ।

६३५७. गुटका सं० २२० । पत्रस० १५० । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी-सस्कृत । ले०काल स० १८११ । पूर्ण । वेष्टन स० ६३३ ।

विशेष—निम्न रचनाओ का सग्रह है ।

सारसमुच्चय ग्र थ	—	सस्कृत
सुकुमाल सज्भाय	शान्तिहर्ष (शि० जिनहर्ष)	र०काल १७४१
बोधसत्तरी	—	हिन्दी
ज्ञान गीता स्तोत्र	—	—
णमोकार रास	—	—
चन्द्राकी	दिनकर	—

६३५८. गुटका सं० २२१ । पत्रस० ६६ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६३४ ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र, ज्ञानचिन्तामणि एव अन्य पाठो का सग्रह है ।

६३५९. गुटका स० २२३ । पत्रस० २१३ । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले० काल स० १६२२ अषाढ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ६३५ ।

विशेष—ज्योतिष साहित्य एव स० १५८२ से स० १७०० तक का सवत्सर फल दिया हुआ है ।

६३६०. गुटका स २२३ । पत्र स० ७२ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६३६ ।

विशेष—शकुनावली लघुस्वयभू स्तोत्र, षष्टिसवत्सरी आदि पाठो का सग्रह है ।

६३६१. गुटका स० २२४ । पत्रस० ६० । आ० ७½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल स० १७६५ फागुण बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ६३७ ।

विशेष—निम्न रचनाओ का सग्रह है—

तीस चौवीसी	श्यामकवि	हिन्दी	र० काल स १७४६ चैत सुदी ५
विनती	गोपालदास	,,	—

इसके अतिरिक्त अन्य पाठो का भी सग्रह है ।

६३६२. गुटका स० २२५ । पत्र स० १७५ । आ० ६½×५½ इच । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले० काल स० १६१५ माघ सुदी १। पूर्ण । वेष्टन स० ६३८ ।

विशेष—निम्न रचनाओ का सग्रह है ।

भक्तिपाठ	—	सस्कृत
चतुर्विशति तीर्थंकर जयमाल	—	हिन्दी
चतुर्दश गुणस्थान वेलि	ब्र० जीवधर	हिन्दी
चेतन गीत	जिनदास	,,
लाभालाभ मन सकल्प	महादेवी	सस्कृत
सिद्धिप्रिय स्तोत्र	देवनदि	,,
परमार्थ गीत	रूपचन्द	हिन्दी
परमार्थ दोहाशतक	रूपचन्द	,,

६३६३. गुटका स० २२६ । पत्रस० ६७ । आ० ६½×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल स० १८२४ आषाढ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० ६३९ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र, विषापहार, पचमगल, तत्वार्थ सूत्र आदि का सग्रह है ।

६३६४. गुटका स० २८ । पत्र स० ४९से ७९ । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४० ।

विशेष—दशलक्षण पूजा, अनत व्रत पूजा, एव भक्तामर स्तोत्र आदि का सग्रह है ।

९३६५. गुटका सं० २२८ । पत्रस० ३८ । ग्रा० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १७९६ । पूर्ण । वेष्टन स० ९४१ ।

विशेष—निम्न रचनाओ का संग्रह है ।

कर्मप्रकृति भाषा	वनारसीदास		हिन्दी
मृगीसवाद	देवराज	र० स० १६६३	,,

९३६६. गुटका सं० २२९ । पत्रस० १८६ । ग्रा० ७½×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत-सस्कृत । ले० काल स० १६८० सावरण बुदी १० । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ९४२ ।

विशेष—मुख्यत: निम्न पाठो का सग्रह है—

ग्राराधना सार	देवसेन	प्राकृत
परमातम प्रकाश दोहा	योगीन्द्रदेव	ग्रपभ्र श
द्वादशानुप्रे क्षा	—	ग्रपभ्र श
ग्रालाप पद्धति	देवसेन	सस्कृत
ग्रष्टपाहुड	कुन्दकुन्दाचार्य	प्राकृत

९३६७. गुटका स० २३० । पत्र स० ६८ । ग्रा० ६½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ९४३ ।

विशेष—ग्रायुर्वेद के नुस्खे है ।

९३६८. गुटका स० २३१ । पत्रस० ७० । ग्रा० ११×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल स० १९३८ ग्रासोज बुदी ९ । पूर्ण । वेष्टनस० ९४४ ।

विशेष—वृहद् सम्मेद शिखर पूजा महात्म्य का सग्रह है ।

९३६९. गुटका सं० २३२ । पत्रस० ४१५ । ग्रा० ४½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ९४५ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है ।

नाम ग्र थ	ग्र थकार	भाषा	पत्रस०	विशेष
नेमीश्वर रास	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी	१-४९	र० स० १६४४ फागुरण सुदी ४
चेतनपुद्गल धमाल	वल्ह	,,	५०-७०	पद्य स० १३०
शील महिमा	सकल भूषण	,,	७०-७३	पद्य स० १६
वीरचन्द दूहा	लक्ष्मीचन्द	,,	७४-८६	पद्य स० ९६
पद	हर्षगरिण	,,	८७	पद्य स० ७
नेमीश्वर राजमति चातुर्मास	सिंहनदि	,,	९९	पद्य स० ४ ले०काल स० १६५५

बलिभद्र गीत	सुमतिकीर्ति	हिन्दी	९१	—
मेघकुमार गीत	पूनो	,,	९८	—
नेमिराजमति बलि	ठक्कुरसी	,,	११३	२१
कृपण पट् पद	,,	,,	१२०	—
पद	,,	,,	१२६	—
पद	साहणु	,,	१२९	—
पद	बूचा	,,	१३०–३३	—
पचेन्द्रीवेलि	ठक्कुरसी	,,	१४०	—
योगीचर्या	—	,	१४४	—
गीत	बूचा	,,	१५७	—
भ० धर्मकीर्ति भुवन कीर्ति गीत	—	,,	१६५	—
मदनजुद्ध	बूचा कवि	,,	१८४	पद्य स० १५८
			(र० स० १५८९ ले०काल स० १६१९)	
विवेक जकडी	जिणदास	,,	—	—
मुक्ति गीत	—	,,	—	—
पोपहरास	ज्ञानभूषण	,,	३४४	—
शीलरास	विजयदेव सूरि	,,	३६५	६९
नेमिनाथरास	ब्रह्म रतन	,,	३७३	
पद	बूचा	,,	३८२	—
आदिनाथविनती	ज्ञानभूषण	,,	३९५	—
नेमीश्वर रास	भाऊ कवि	,,	४१५	—
चतुर्गतिवेलि	हर्षकीर्ति	.	—	—

६३७०. गुटका स० २३३ । पत्रस० ५८ । आ० १३×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल स० १८९९ माघ गुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० ६४६ ।

विशेष—पूजाओ एव पदो का सग्रह है ।

६३७१. गुटका स० २३४ । पत्र स० ४०३ । आ० ७×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४९७ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है ।

सीतासतु	भगवतीदास	हिन्दी	पत्रस०
शीलबत्तीसी	—	,,	१–५३
राजमतिगीत	—	,,	५४–५८
बावनी छपई	—	,,	—

छहढाल	—	हिन्दी	—
पद एव गीत	भगवतीदास	,,	७० तक
पद एव राजमति सतु	—	,,	—
आदित्यवार कथा	—	,,	—
दयारास	गुलावचद	,,	—
चूनडीरास	भगवतीदास	,,	—
रविव्रत कथा	—	,,	—
खीचडरास	—	,,	—
रोहिणी रास	—	,,	—
जोगण रास	—	,,	—
मनकरहारास	—	,,	—
वीर जिणद	—	,,	—
दशलक्षण पद	—	,,	—
राजावलि	—	,,	—
विभिन्न पद एव गीत	—	,	१७६ पत्र तक
वणजारा गीत	—	,,	—
राजमति नेमीश्वरढाल	—	,,	—
समयसार नाटक	वनारसीदास	,,	—
चतुर वणजारा गीत	भगवतीदास	,,	—
अर्गलपुरजिन वदना	—	,,	—
जलगालन विधि	ब्र० गुलाल	,,	—
गुलाल मथुरावाद पच्चीसी	—	,,	—
वनारसी विलास के पाठो का सग्रह	वनारसीदास	,,	—

६३७२. गुटका स० २६५ । पत्र स० ८२ । आ० ७×५ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १७५८/१७६० । पूर्ण । वेष्टन स० १४७४ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

नेमीश्वर के पचकल्याणक गीत, सज्झाय, बुद्धिरासो, आषाढभूति धमालि, धर्मरासो आदि अनेक पाठो का सग्रह है ।

६३७३. गुटका सं० २३६ । पत्रस० २४ । आ० ८×६ इन्च । भाषा-सम्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४७५ ।

विशेष—निम्न पूजा पाठो का सग्रह है—

पद्मावती स्तोत्र, पद्मावती पूजा, पद्मावती सहस्रनाम, पार्श्वनाथ पूजा, पद्मावती आरती, पद्मावती गायत्री आदि पाठो का सग्रह है ।

६३७४ गुटका स० २३७ । पत्र स० १०० । आ० ६½×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले० काल स० १८५५ माह सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १४८५ ।

विशेष—ज्योतिष सबधी पाठो का सग्रह है ।

६३७५ गुटका स० २३८ । पत्रस० १२० । आ० ८½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल स० १८४० फागुण बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनस० १४८६ ।

विशेष—नाटक समयसार एव त्रिलोकेन्दु कीर्ति कृत सामायिक भाषा टीका है ।

६३७६ गुटका स० २३६ ।पत्रस० १२६ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल स० १८८४ फागुण बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १४८७ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है ।

नाम ग्र थ	ग्र थकार	भाषा	**विशेष**
व्रत विधान रासो	दौलत राम पाटनी	हिन्दी	र० स० १७६७
प्रायश्चित ग्र थ	अकलक स्वामी	सस्कृत	—
ज्ञान पच्चीसी	—	हिन्दी	—
नारी पच्चीसी	—	,,	—
वसुधारा महाविद्या	—	सस्कृत	—
मिथ्यात्व भजन रास	—	हिन्दी	—
पचनमस्कार स्तोत्र	उमास्वामी	सस्कृत	—

६३७७. गुटका सं० २४० । पत्रस० १४४ । आ० ८½×६ इच । भाषा-हिन्दी । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४८८ ।

विशेष—पद सग्रह है ।

६३७८. गुटका स० २४१ । पत्र स० १०६ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । र० काल× । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स १४६० ।

विशेष—पदो का सग्रह है ।

६३७६ गुटका स० २४२ । पत्र स० ६८ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा--सस्कृत । र०काल × । ले० काल स० १७२८ । पूर्ण । वेष्टन स० १४६१ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

६३८० गुटका स० २४३ । पत्रस० ३०८ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । र०काल × । ले० काल स० १६६२ फागुण बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १४६२ ।

विशेष—सागवाडा नगर मे प्रतिलिपि की गयी थी । पूजा पाठ एव स्तोत्र सग्रह है ।

६३८१ गुटका स० २४४ । पत्रस० १७० । आ० ६½×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल स० × । पूर्ण । वेष्टनस० १४६३ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

६३८२. गुटका स० २४५ । पत्रस० ७० । आ० ११×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । र०काल × । ले० काल स० १८९४ पौष सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १४९४ ।

विशेष भरतपुरवासी प० हेमराज कृत पदो का संग्रह है ।

६३८३. गुटका स० २४६ । पत्रस० ६७ । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४९५ ।

विशेष—हिन्दी पदो का संग्रह है ।

६३८४. गुटका स० २४७ । पत्रस० ५० । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४९६ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६३८५. प्रतिसं० २४८ । पत्र स० १३४ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १६३५ आसोज सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० १४९७ ।

विशेष—भट्टारक सकलकीर्ति, ब्रह्मजिनदास, ज्ञानभूषण सुमतिकीर्ति आदि के पदो का संग्रह है ।

६३८६. प्रतिस० २४९ । पत्रस० ११७ । आ० ६×५ इच । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १८१८ ज्येष्ठ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १४९८ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६३८७. गुटका २५० । पत्रस० ४१ । आ० ९×६ इञ्च । विषय-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४९९ ।

विशेष—पूजा पाठ एव स्तोत्र संग्रह है ।

६३८८. गुटका सं० २५१ । पत्रस० १३८ । आ० १०¾×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १७९३ । फागुण सुदी १३ पूर्ण । वेष्टन स० । १५०१ ।

विशेष—स्तवन तथा पूजा पाठ संग्रह है ।

६३८९. गुटका स० २५२ । पत्रस० १२७ । आ० ४½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५०२ ।

विशेष—निम्न रचनाओ का संग्रह है ।

अष्टाह्निका पूजा—

अवन्ति कुमार रास—(जिनहर्ष) र० स० १७४१ आषाढ सुदी ८ ।

६३९०. प्रति स० २५३ । पत्रस० ९८ । आ० ५×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १५०३ ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है ।

६३६१. गुटका स० २५४। पत्रस० २०२। ग्रा० १०×८ इन्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १५०५।

विशेष—ज्योतिष शास्त्र सबधी सामग्री है।

६३६२. गुटका स० २५५। पत्र स० २००। ग्रा० ५×५ इन्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल स० १६५३ कार्तिक सुदी १०। ग्रपूर्ण। वेष्टन स० १५०६।

विशेष—निम्न पाठों का सग्रह है।

वीरनाथस्तवन, चउमरणपयन्न, गजसुकुमालचरित्र, बावनी, रतनचूडरास, माधवानल चोपई ग्रादि पाठों का सग्रह है।

६३६३ गुटका स० २५६। पत्रस० ३६। ग्रा० ८½×६ इन्च। भाषा—सस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १५०७।

विशेष—मत्रतत्र एव रमल ग्रादि का सग्रह है।

६३६४ गुटका स० २५७। पत्रस० ५७। ग्रा० ६×५ इन्च। भाषा—हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वष्टनस० १५०८।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है।

६३६५ गुटका स० २५८। पत्रस० ७२। ग्रा० ४½×४ इन्च। भाषा-हिन्दी, सस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १५०६।

विशेष—पूजा पाठों का सग्रह है।

६३६६. गुटका स० २५६। पत्र स० १७४। ग्रा० ६×५ इन्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १५१०।

विशेष—हिन्दी के सामान्य पाठो का सग्रह।

६३६७. गुटका स० २६०। पत्र स० ६२। ग्रा० ७×५ इन्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल-स० १८३८। पूर्ण। वेष्टनस० १५११।

विशेष—वैद्य मनोत्सव के पाठों का सग्रह है।

६३६८ गुटका स० २६१। पत्रस० १००। ग्रा० ६×५ इन्च। भाषा—हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १५१२।

विशेष—गुणस्थान चर्चा एव रत्नत्रय पूजा है।

६३६६ गुटका स० २६२। पत्रस० २४। ग्रा० ८×५½ इन्च। भाषा-सस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १५१३।

विशेष—ग्राचार्य केशव विरचित षोडषकारण व्रतोद्यापनपूजा जयमाल है।

६४०० गुटका स० २६३। पत्र स० ७३। ग्रा० ८½×४½ इन्च। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १५१४।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न, धर्मनाथ रो स्तवन (गुणसागर) उपदेश पच्चीसी, (रामदास) शालिभद्र धन्ना चउपई (गुणसागर)।

६४०१. गुटका स० २६४। पत्र स० १०७। आ० ६×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी,। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १५१५।

विशेष—गुणस्थान चर्चा एव अन्य पाठो का सग्रह है।

६४०२. गुटका स०२६५। पत्रस० १३४। आ० ७×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। ले०काल स० १८८० पौष सुदी ५। पूर्ण। वेष्टनस० १५१६।

विशेष—मुख्यत रसालुकवर की वार्ता है।

६४०३. गुटका स० २६६। पत्र स० १३०। आ० ६½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १५१७।

विशेष—विभिन्न कवियो के हिन्दी पदो सग्रह है।

६४०४. गुटका सं० २६७। पत्र स० १२७। आ० ६×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १५१८।

विशेष—ज्योतिष सम्बन्धी साहित्य है।

६४०५ गुटका स० २६८। पत्र स० १२३। आ० ६½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १५१९।

विशेष—शालिभद्र चौपई के अतिरिक्त विभिन्न कवियो के हिन्दी पदो का सग्रह है।

६४०६. गुटका सं० २६९। पत्र स १४४। आ० ६½×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १५२०।

विशेष—विभिन्न कवियो के हिन्दी पदो का सग्रह है।

६४०७. गुटका सं० २७०। पत्रस० २८२। आ० ५½×४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले०काल स० १६६०। पूर्ण। वेष्टन स० १५२२।

विशेष—पूजाए एव ब्रह्म रायमल्ल कृत नेमि निर्वाण है।

६४०८. गुटका स० २७१। पत्र स० १४०। आ० ८×६ इञ्च। भाषा—हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १५२३।

विशेष—सामान्य पाठ एव आयुर्वेदिक नुस्खे हैं।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी—बूंदी।

६४०९ गुटका स० १। पत्रस० ११५। आ० ५×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १९३।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है।

६४१०. गुटका स० २ । पत्रस० २१६ । आ० ६×६ इन्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल× । पूर्ण । वेष्टनस० १६४ ।

विशेष—पूजा स्तोत्र एव अन्य पाठो का सग्रह है ।

६४११. गुटका स० ३ । पत्रस० २१२ । आ० ८×५ इन्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६२ ।

विशेष—गुणस्थान चर्चा आदि का सग्रह है ।

६४१२ गुटका स० ४ । पत्र स० ३४ । आ० ६×४ इन्च । भाषा- हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८७ ।

विशेष—आयुर्वेद के नुस्खे है ।

६४१३. गुटका स० ५ । पत्र स० ११८ । आ० ८×६ इन्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८८ ।

विशेष—पूजा पाठो का सग्रह है ।

६४१४. गुटका स० ६ । पत्रस० ४० । आ० १०×५ इन्च । भाषा-सस्कृत, हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १८६ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

६४१५. गुटका सं० ७ । पत्रस० ७८ । आ० ५×४½ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल× । पूर्ण । वेष्टनस० १८५ ।

विशेष—पूजा पाठ एव पद सग्रह है ।

६४१६ गुटका सं० ८ । पत्रस० ४८ । आ० ५½×४ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८२ ।

विशेष—गुटका दादू पथियो का है । दादूदयाल कृत सुमिरण एव विनती को अग है ।

६४१७. गुटका स० ९ । पत्रस० ७८ । आ० ५½×४½ इन्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १७५ ।

विशेष—सुभाषित सगह है ।

६४१८. गुटका स० १० । पत्रस० १५० । आ० ८½×६ इन्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७६ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ सग्रह है ।

६४१९. गुटका स० ११ । पत्रस० ६२ । आ० ८×५½ इन्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल स० १५४१ फाल्गुण बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० १७७ ।

१ सम्यग्दर्शन पूजा	सस्कृत	बुधसेन ।
२. सम्यक चारित्र पूजा	,,	नरेन्द्रसेन ।
३ शातिक विधि	,,	धर्मदेव ।

६४२०. **गुटका स० १२** । पत्रस० ११८ ।आ० ७×५½ इञ्च । भाषा–सस्कृत–हिन्दी ।
ले०काल × । पूर्ण । वेप्टनस० १७८ ।

६४२१. **गुटका स० १३** । पत्रस० १२६ । आ० ६½×५½ इञ्च । भाषा–सस्कृत–हिन्दी ।
ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० १७६ ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

१ सतोप जयतिलक	वूचराज	हिन्दी
२ चेतन पुद्गल धमालि	वूचराज	"

६४२२. **गुटका सं० १४** । पत्रस० ६२ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा–सस्कृत–हिन्दी । ले०काल × । पूर्णं । वेष्टन स० १७४ ।

विशेष—आदित्यवार कथा एव पूजा सग्रह है ।

६४२३ **गुटका स० १५** । पत्र स० २५२ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत-हिन्दी ।
ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७३ ।

१. भुवनदीपक भाषा टीका सहित	पद्मनन्दि सूरि ।	सस्कृत
	ले०काल स० १७६०	हिन्दी
२ त्रैलोक्य सार	सुमतिकीर्ति	सस्कृत ।
४ शीघ्रवोघ	काशीनाथ	"
४ समयसार नाटक	वनारसीदास	हिन्दी पद्य

६४२४. **गुटका स० १६** । पत्र स० ४–५७ । आ० १०½×८ इञ्च । भाषा–सस्कृत । ले०काल × । अपूर्णं । वेष्टनस० १६४ ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ एव स्तोत्र सग्रह है ।

६४२५. **गुटका सं० १७** । पत्रस० २०८ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × ।
पूर्णं । वेष्टनस०६६ ।

विशेष—समयसार नाटक एव भक्तामर स्तोत्र, एकीभाव स्तोत्र आदि भाषा मे है ।

६४२६. **गुटका स० १८** । पत्रस० ८–३०४ । आ० ६×८ इञ्च । भाषा–सस्कृत–हिन्दी ।
ले० काल × । अपूर्ण । वेप्टन स० ६५ ।

विशेष—पूजा स्तोत्र आदि है इसके अतिरिक्त विमलकीर्ति कृत आरावाना मार है—जिमका आदि अन्त भाग निम्न है ।

प्रारम्भ—

श्री जिनवर वाणि नमिवि
गुरु निर्ग्रंथ पाय प्रणमेवि ।
कहू आराधना सुविचार
सखे पइंसारोधार ॥१॥

हो क्षपक वयण ग्रवधारि ।
हवेइ चात्यु तु भवपार ।

हास्यु' मट कहू तक्त भेय
धुरि समकित पालिन एह ।।

मन्तिम—

सन्यास तणा फल जोइ ।
हो सारगिरपि सुख होइ ।

वली श्रावकनु कुल पामी
लहर निरवाण मुगतइगामी ।।

जे भड सुणइ नरनारी,
त जोइ भवनइ पारि ।

श्री विमल कीरति कहघु विचार ।
श्री ग्राराधना प्रतिबोध सार ।।

६४२७. गुटका सं० १६ । पत्रस० ३८ । ग्रा० १३×५ इञ्च । भापा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१ ।

विशेष—गुणस्थान चर्चा एव ग्रन्य स्फुट चर्चाए है ।

प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

६४२८ गुटका स० १ । पत्रस० ४५ । ग्रा० १०½×७ इञ्च । भापा-सस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १६६ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

६४२६. गुटका स० २ । पत्रस० १५५ । ग्रा० १०×६ इञ्च । भापा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६४ ।

विशेष—निम्न पाठ हैः—गुणस्थान चर्चा, मार्गणा चर्चा एव नरक वर्णन

६४३०. गुटका स० ३ । पत्र स० ४०८ । ग्रा० १०×६ इञ्च । भापा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५६ ।

विशेष—पूजाग्रो का सग्रह है ।

६४३१. गुटका स० ४ । पत्र स० २१२ । ग्रा० १०½×७ इञ्च । भापा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल स० १६५७ । ग्रपूर्ण ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ एव छहढाला, ध्यान बत्तीसी एव सिंदूर प्रकरण है ।

६४३२. गुटका स० ५ । पत्रस० १४१ । ग्रा० १३½×८½ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा तथा पाठो का सग्रह है ।

९४३३. **गुटका सं० ६** । पत्रस० ४४ । आ० १०½ × ७ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ ।

विशेष—निम्न लिखित पाठ है—

१ अरिष्टाध्याय (२) प्रायश्चित भाषा (३) सामायिक पाठ (४) शाति पाठ एव (५) समतभद्र कृत वृहद् स्वयभू स्तोत्र ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी बूंदी ।

९४३४. **गुटका सं० १** पत्रस० ३८ । आ० ७ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी ।ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ ।

विशेष—निम्न पाठ है—चर्चाशतक कलयुग वत्तीसी आदि है ।

९४३५. **गुटका स० २** । पत्रस० ५९ । आ० ९ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी प० । ले०काल स० १७८० फागुण वदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० ७५ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१. विहारी सतसई — पत्र १-५४ पद्य स० ६७६

२ रसिक प्रिया — ,, ५५-५९

९४३६. **गुटका सं० ३** । पत्र स० ९४ । आ० ५ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७३ ।

विशेष—पद एव विनती सग्रह है

९४३७. **गुटका सं० ४** । पत्र स० ७२ । आ० ९ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७१ ।

विशेष—धातु पाठ एव चौवीसी ठाणा चर्चा है ।

९४३८. **गुटका स० ५** । पत्र स० ९० । आ० ७ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७२ ।

विशेष—पूजा स्तोत्र सग्रह है ।

९४३९. **गुटका स० ६** । पत्रस० ११६ । आ० ७ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ ।

९४४० **गुटका स० ७** । पत्र स० ४७४ । आ० ६ × ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६९ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह हे ।

९४४१. **गुटका स० ८** । पत्रस० २७२ । आ० ७ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ ।

विशेष—त्रैलोक्येश्वर जयमाल, सोलहकारण जयमाल, दशलक्षण जयमाल, पुरपरयण जयमाल आदि पाठो का सग्रह है ।

९४४२ **गुटका स० ९** । पत्र स० ४० । आ० ७ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४५ ।

विशेष—कल्याण मन्दिर भाषा एव तत्वार्थ सूत्र का सग्रह है ।

९४४३. गुटका स० १० । पत्रस० ३१८ । ग्रा० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन म० ४४ ।

विशेष— पूजा पाठ स्तोत्र आदि का सग्रह है ।

९४४४. गुटका स० ११ । पत्रस० ५५ । ग्रा० ६×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल ×। अपूर्ण । वेष्टन स० २८ ।

९४४५ गुटका स० १२ । पत्रस० २९-२१७ । ग्रा० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल । अपूर्ण । वेष्टनस० २१ ।

विशेष—पूजायें स्तोत्र एव सामान्य पाठो का सग्रह है ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी वूंदी ।

९४४६. गुटका सं० १ । पत्रस० ३५३ । ग्रा० ८½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत-प्राकृत । ले० काल स० १७१८ ।पूर्ण । वेष्टनस० ३६६ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है ।

१ ज्ञानसार	पद्मनन्दि	प्राकृत
२. चारित्रसार	×	,,
३ द्वादसी गाथा	×	,,
४ मृत्युमहोत्सव	×	सस्कृत
५. नयचक्र	देवसेन	,,
६ अष्टपाहुड	कुन्दकुन्द	प्राकृत
७ त्रैलोक्यसार	नेमिचन्द	,,
८ श्रुतस्कन्ध	हेमचन्द	,,
९. योगसार	योगीन्द्र	अपभ्र श
१० परमात्म प्रकाश	,,	,,
११ स्वामी कार्त्तिकेयानुप्रेक्षा	कार्त्तिकेय	प्राकृत
१२ भक्तिपाठ	×	प्राकृत
१३ वृहद् स्वयभू स्तोत्र	समतभद्र	सस्कृत
१४ सवोध पचासिका	×	प्राकृत
१५. समयसार पीठिका	×	सस्कृत
१६ यतिभावनाष्टक	×	,,
१७ वीतराग स्तवन	पद्मनन्दि	,,
१८ सिद्धिप्रिय स्तोत्र	देवनन्दि	,,
१९. भावना चौवीसी	पद्मनन्दि	,,
२०. परमात्मराज स्तवन	×	,,
२१ श्रावकाचार	प्रभाचन्द	,,
२२. दशलाक्षणिक कथा	नरेन्द्र	,,

२३ अक्षयनिधि दशमी कथा	×	सस्कृत
२४. रत्नत्रय कथा	ललितकीर्ति	,,
२५ सुभाषितार्णव	सकलकीर्त्ति	,,
२६ अनन्तनाथ कथा	×	,,
२७ पाशाकेवली	×	,,
२८ भाषाष्टक	×	,,

इसके अतिरिक्त अन्य पाठ भी है।

६४४७. गुटका सं० २ । पत्र स० १७२ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६७ ।

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखो का सग्रह है ।

६४४८. गुटका स० ३ । पत्रस० ३४६ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत-प्राकृत-हिन्दी । ले० काल स० १७१२ पौष बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६८ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है ।

१-समयसार नाटक	बनारसीदास	हिन्दी पद्य
२-बनारसी विलास	,,	,,

ले०काल १७१२ पौष वदी ५ । लाहौर मध्ये लिखापितं ।

३-चौबीसठाणा चर्चा	—	,,
४-सामायिक पाठ	—	सस्कृत
५-तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामि	सस्कृत
६-रयणसार	—	प्राकृत
७-परमानद स्तोत्र	—	सस्कृत
८-आणन्दा	महानद	हिन्दी ४२ पद्य हैं ।

आराधना सार, सामायिक पाठ, अष्टपाहुड, भक्तामर स्तोत्र आदि का सग्रह और है ।

६४४९ गुटका स० ४ । पत्रस० ४० । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ३६४ ।

विशेष—लिपि विकृत है । विभिन्न पदो का सग्रह है ।

६४५० गुटका स० ५ । पत्र स० ७८ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३६२ ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

६४५१ गुटका सं० ६ । पत्र स० २० । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३२३ ।

विशेष—कोकशास्त्र के कुछ अ श हैं ।

६४५२ गुटका स० ७ । पत्रस० ५६ । ग्रा० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३२४ ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

६४५३. गुटका स० ८ । पत्र स० ६-६४ । ग्रा० ५×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३२५ ।

विशेष—श्वे० कवियो के हिन्दी पदो का सग्रह है ।

६४५४. गुटका स० ९ । पत्रस० ६० । ग्रा० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३२६ ।

विशेष—स्तोत्र पाठ एव रविव्रत कथा, कक्का बत्तीसी, पचेन्द्रिय वेलि आदि पाठो का सग्रह है ।

६४५५. गुटका स० १० । पत्रस० ५२ । ग्रा० ८½×६ इच । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३२७ ।

विशेष—पूजास्तोत्र आदि का सग्रह है ।

६४५६. गुटका स० ११ । पत्रस० १७६ । ग्रा० ५½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३२८ ।

विशेष—तत्वार्थसूत्र, सामायिक पाठ स्तोत्र, जेष्ठ जिनवर पूजा, तीस चौवीसी नाम आदि पाठो का सग्रह है ।

६४५७ गुटका स० १२ । पत्र स० १६१ । ग्रा० ४½×४½ इच । भाषा—सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३२९ ।

विशेष—सामायिक पाठ, पञ्च स्तोत्र, लक्ष्मी स्तोत्र आदि का सग्रह है ।

६४५८. गुटका स० १३ । पत्रस० १५३ । ग्रा० ७×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३० ।

विशेष—सहस्रनाम स्तोत्र, प्रतिष्ठापाठ सम्बन्धी पाठो का सग्रह है ।

६४५९ गुटका स० १४ । पत्रस० १४१ । ग्रा० ६×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४३१ ।

विशेष—सहस्रनाम, सकलीकरण, गधकुटी, इन्द्रलक्षण, लघुस्नपन, रत्नत्रयपूजा, सिद्धचक्र पूजा । अष्टक-पद्मनन्दीकृत, अष्टक सिद्धचक्र पूजा-पद्मनन्दी कृत, जलयात्रा पूजा एव अन्य पाठ हैं ।

अन्त मे सिद्धचक्र यत्र, सम्यग्दर्शन यत्र, सम्यग्ज्ञान यत्र, पचपरमेष्ठि यत्र, सम्यक् चारित्र यत्र, दशलक्षण यत्र, लघु शान्ति यत्र आदि यत्र दिये हुये है ।

६४६०. गुटका स० १५ । पत्रस० ११४ । ग्रा० ६×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३३२ ।

विशेष—रसिक प्रिया-इन्द्रजीत, योगसत-अमृत प्रभव का सग्रह हैं ।

६३६१. **गुटका सं० १६**। पत्र स० ११४। आ० ६×६ इञ्च। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३३३।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है।

६४६२ **गुटका स० १७**। पत्र स० ८। आ० ६×७ इञ्च। भापा-संस्कृत-हिन्दी। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १८६।

विशेष—दर्शन स्तोत्र, कल्याण मन्दिर स्तोत्र तथा दव्य सग्रेह है।

६४६३. **गुटका स० १८**। पत्रस० २१। आ० १२×६½ इच। भापा-सस्कृत-हिन्दी। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस ० १६०।

विशेष—पूजा एव यज्ञ विधान आदि का वर्णन है।

६४६४. **गुटका स० १६**। पत्रस० १८६। आ० ७×५½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३६।

विशेष—पूजा एव प्रतिष्ठादि सम्वन्धी पाठ हैं।

६४६५. **गुटका सं० २०**। पत्रस० २८६। आ० ६½×५½ इञ्च। भाषा-सस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३५।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है।

६४६६. **गुटका स० २१**। पत्रस० ७२। आ० ६×५ इञ्च। भापा–हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३४।

विशेष—पूजा पाठ आदि का सग्रह है

६४६७. **गुटका सं० २२**। पत्र स० ८–७०। आ० ६×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन म० २८।

६४६८. **गुटका स० २३**। पत्रस० ४८। आ० १०½×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी-सस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ८।

विशेष—चौबीसी दण्डक, गुणस्थान चर्चा आदि का सग्रह हैं।

प्राप्ति स्थान–दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी।

६४६६ **गुटका सं० १**। पत्रस० २–१६५। आ० ६×६½ इञ्च। भापा—सस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ३३४।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह हैं।

(१) प्रतिक्रमण (२) भक्तामर स्तोत्र (३) शाति स्तोत्र (४) गौतम रासा (५) पुन्य मालिका (६) शत्रु जयरास (समयसुन्दर) (७) सूत्र विधि (८) मगलपाठ (९) कृष्ण शुकल पक्ष सज्झाय (१०) अनाथी ऋषि सज्झाय (११) नवकार रास (१२) बुद्धिरास (१३) नवरस स्तुति स्थूलभद्रकृत।

६४७०. गुटका सं० २ । पत्र सं० १०७ । ग्रा० ८½×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३३ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठो का सग्रह है । पत्र फट रहे हैं ।

६४७१. गुटका स ३ । पत्रस० ४१ । ग्रा० ७×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत- हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस०३३१ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

६४७२. गुटका स० ४ । पत्रस० १८ । ग्रा० ६¾×८¼ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३३० ।

विशेष—धर्म पच्चीसी, कर्म प्रकृति, वारह भावना एव परीषह ग्रादि का वर्णन है ।

६४७३. गुटका स० ५ । पत्रस० ३४१ । ग्रा० ८½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल स० १८३३ वैशाख बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० २९५ ।

विशेष—जयपुर मे प० दोदराज के शिष्य दयाचन्द ने लिखा था । निम्न पाठ हैं—

(१) त्रिकाल चौवीसी विधान
(२) सौख्य पूजा ।
(३) जिनसहस्रनाम-ग्राशाधर
(४) वृहद् दशलक्षण पूजा—केशवसेन ।
(५) पोडश कारण व्रतोद्यापन
(६) भविष्यदत्त कथा-ब्रह्म रायमल्ल,
(७) नदीश्वर पक्ति पूजा ।
(८) द्वादश व्रत मडल पूजा ।
(९) ऋपिमडल पूजा-गुणनन्दि ।

६४७४. गुटका सं० ६ । पत्रस० ९४ । ग्रा० ९×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १९४४ श्रावण सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० २९४ ।

विशेष—पारसदास कृत पद सग्रह है, तीस पूजा तथा ग्रन्य पूजायें है ।

६४७५. गुटका स० ७ । पत्र स० २१ । ग्रा० १०½×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २९३ ।

विशेष—जेप्ठ जिनवर पूजा एव जिनसेनाचार्य कृत सहस्रनाम स्तोत्र है ।

६४७६. गुटका स० ८ । पत्रस० १८० । ग्रा० ११×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २९२ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ सग्रह है ।

६४७७ गुटका स० ९ । पत्र स० १९८-३०१ । ग्रा० ६½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टनस० २९१ ।

विशेष—स्तोत्र पाठ पूजा ग्रादि का सग्रह है ।

६४७८. गुटका स० १० । पत्रस० १७१ । ग्रा० ९×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल स० १७१७ । पूर्ण । वेष्टनस० २८९ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

६४७६. गुटका सं० ११ । पत्रस० १६४ । आ० ५½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १८६६ चैत बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० २८८ ।

विशेष—रामविनोद भाषा योग शतक भाषा आदि का सग्रह है ।

६४८०. गुटका सं० १२ । पत्रस० १०६ । आ० ८×६ इच । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले० काल स० १६६८ । पूर्ण । वेष्टनस० २८६ ।

विशेष—गुटके का नाम सिद्धान्तसार है । आचार शास्त्र पर विभिन्न प्रकार से विवेचन करके दश धर्म का विस्तृत वर्णन किया गया है ।

६४८१ गुटका सं० १३ । पत्र स० ५-३२ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा सस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २८५ ।

विशेष—लघु एव वृहद् चाणक्य नीति शास्त्र हिन्दी टीका सहित है ।

६४८२ गुटका सं० १४ । पत्र स० ५७ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २८४ ।

विशेष—अ कुरारोपण विधि, विमान शुद्धि पूजा तथा लघु शान्तिक पूजा है ।

६४८३. गुटका सं० १५ । पत्र स० ५० । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २४५ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा सग्रह हैं ।

६४८४. गुटका सं० १६ । पत्र स० १४५ । आ० १०×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी, सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४४ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

१-एकीभाव स्तोत्र २-विषापहार ३-तत्वार्थ सूत्र ४-छहढाला ५-भक्तामर स्तोत्र टीका ६-मृत्यु महोत्सव ७-मोक्ष मार्ग बत्तीसी दौलत कृत ८-सुपथ कुपथ पच्चीसी ६-नरक दोहा १०-सहस्रनाम ।

६४८५. गुटका सं० १७ । पत्रस० ८० । आ० ८×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी, सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २२० ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ व तत्वार्थ सूत्र आदि हैं ।

६४८६. गुटका सं० १८ । पत्र स० २३ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल स० १६२३ । पूर्ण । वेष्टन स० २१५ ।

विशेष—

१ सहस्रनाम भाषा—बनारसीदास
२. द्वादशी कथा —ब्र० ज्ञानसागर

६४८७. **गुटका स० १६।** पत्र स० ८०। ग्रा० ६×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी, सस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १७४।

विशेष—परमात्म प्रकास, पच मगल, राजुल पच्चीसी, दशलक्षण उद्यापन पाठ (श्रुतसागर) एव तीर्थंकर पूजा का सग्रह है।

६४८८. **गुटका स० २०।** पत्र स० ३१२। ग्रा० ११×५½ इञ्च। भाषा—हिन्दी, सस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७५।

विशेष—पचस्तोत्र तथा पूजाग्रो का सग्रह है।

६४८९. **गुटका स० २१।** पत्रस० ११०। ग्रा० ६×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी, सस्कृत। ले०काल स० १९५२। पूर्ण। वेष्टन स० ६८।

प्राप्ति स्थान-दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर नैणवा

६४९०. **गुटका स० १।** पत्रस० १०१। ग्रा० ६×५ इञ्च। भाषा-प्राकृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १५।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है—

ग्ररिष्टाध्याय	प्राकृत	—
ग्राचार शास्त्र	"	—
त्रिलोकसार	"	ग्रा० नेमिचन्द्र

६४९१. **गुटका स० २।** पत्र स० ११७। ग्रा० ६×५ इञ्च। भाषा–हिन्दी, सस्कृत। ले०काल ×। ग्रपूर्ण। वेष्टनस० १७।

विशेष—पूजाग्रो एव स्तोत्रो का सग्रह है।

६४९२. **गुटका स०** । पत्रस० २-८५। ग्रा० ६×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी, सस्कृत। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। वेष्टनस० १८।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है।

६४९३. **गुटका स० ३।** पत्र स० १४८। ग्रा० १०×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी सस्कृत। ले०काल स० १८७७। पूर्ण। वेष्टनस० १६।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है—

श्रीपाल चरित्र भाषा	—	हिन्दी	—
जिन सहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	सस्कृत	—
भविष्यदत्त चोपई	ब्रह्म रायमल्ल	हिन्दी	—

६४६४. गुटका स० ४ । पत्र स० १६८ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १६ ।

६४६५. गुटका स० ५ । पत्र म० १४६ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २० ।

विशेष—आयुर्वेद, मत्र शास्त्र आदि पाठो का सग्रह है ।

६४६६. गुटका सं० ६ । पत्रस० १७६ । आ० ५½×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । ले०काल स० × । पूर्ण । वेष्टनस० ६२ ।

विशेष—आयुर्वेदिक नुस्खो का अच्छा सग्रह है ।

६४६७ गुटका स० ७ । पत्रस० १३६ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६५ ।

विशेष—पूजा पाठ तथा स्तोत्रो एव पदो का सग्रह है ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टोंक) ।

६४६८. गुटका स० १ । पत्र स० १८८ । भाषा-सस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० १०६ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाओ का सग्रह है ।

६४६६ गुटका स० २ । पत्रस० ७२ । आ० ८×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२६ ।

विशेष—प्रति जीर्ण है तथा लिपि विकृत है । मुख्य निम्न पाठ हैं ।

१-धुचरित	परमानन्द	पत्र १-५ ।	र०काल १८०३ माह सुदी ६ ।
२-सिहनाभ चरित्र		५-६ ।	१७ पद्य हैं ।
३-ज वुक नामो		६-७ ।	७ पद्य हैं ।
४-सुभाषित सग्रह		७-१५ ।	३५ पद्य हैं ।
५-सुभाषित सग्रह		१६-२८ ।	१२५ पद्य है ।
६-सिहासन वत्तीसी		२६-७२ ।	—

६५००. गुटका स० ३ । पत्रस० २०४ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले० काल पूर्ण । वेष्टनस० १३० ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठो का सग्रह है । कही २ हिन्दी के पद भी हैं ।

६५०१. गुटका सं० ४ । पत्र स० ५५ । आ ७×५ इ च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३२ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

६५०२. गुटका स० ५ । पत्रस० ७-२६ । ग्रा० ८½×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १३२ ।

विशेप—तत्वार्थ सूत्र सहस्रनाम स्तोत्र, आदि पाठो का सग्रह है ।

६५०३. गुटका स० ६ । पत्रस० ११५ । ग्रा० ७×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३४ ।

विशेष— पूजा पाठ सग्रह हैं ।

६५०४. गुटका स० ७ । पत्र स० ६८ से १२५ । ग्रा० ६×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १३५ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

६५०५. गुटका स० ८ । पत्रस० १६२ । ग्रा० ७×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३६ ।

विशेप—लिपि विकृत है । पूजा पाठ सग्रह है ।

६५०६. गुटका स० ९ । पत्रस० ७१ । ग्रा० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३७ ।

विशेष—सामान्य पाठ हैं । पट्टी पहाडे भी है ।

६५०७. गुटका स० १० । पत्रस० ६६ । ग्रा० ६×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३८ ।

विशेप—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

६५०८ गुटका स० ११ । पत्र स० २२ । ग्रा० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १३९

६५०९. गुटका स० १२ । पत्र स० ६८ । ग्रा० ८×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४० ।

विशेष—निम्न पूजा पाठो का सग्रह है—

(१) भक्तामर स्तोत्र (२) अकृत्रिम चैत्यालय पूजा (३) स्वयभू स्तोत्र (४) वीस तीर्थंकर पूजा (५) तीस चौवीसी पूजा एव (६) सिद्ध पूजा (द्यानतराय कृत) ।

६५१०. गुटका सं० १३ । पत्रस० १४५ । ग्रा० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १८०१ । पूर्ण । वेष्टनस० १४१ ।

विशेष—साहिपुरा में उम्मेदसिंह के राज्य मे प्रतिलिपि हुई थी ।

(१) सुन्दर शृंगार	सुन्दरदास	पत्र १-५७ ।	हिन्दी
(२) विहारी सतसई	विहारीदास	५८-१२४ ।	हिन्दी
(३) कलियुग चरित्र	वाण	१२५-२९ ।	,
		र०काल स० १६७४	

प्रारम्भ

पहलू शुमरि गुर गणपति को **महामाय** के पाय ।।
जाके शुभिरत ही सवै । पाप दूरि है जाय ।।
सवत् मोलासै चोहोत्तरिया चैत दाद उजियारै
श्री यश भयो खानखाना, को तव कविता अनुसारि ।।
शब समुभै शव के मनमानै शव को लगै सुहाई ।
मैं कवि वान नाम तै जानी आखर की शरशाई ।।
वाभन जाति मथरिया पाठक वान नाम जग जानै ।
राव कियो राजाधिराज यौं महासिंघ मनमानै ।।
कलि चरित्र जव आखिन देख्यो कलि चरित्र तव कीनो
कहे शुवे ने पाप न परसौं अभैदान कलि दीनो ।।

(४) कलि व्यवहार पच्चीसी	नन्दराम	पत्र १३०-१३४ २५ पद्य हैं	हिन्दी
(५) पचेन्द्रिका व्यौरा	—	पत्र १३४-३७	।।
(६) राम कथा	रामानन्द	१३७-१५०	।।
(७) पद्मिनी वखाण	—	१४३ तक	।।
(८) कवित्त	वुधराव वूदी ।	१४५ तक	।।

६५११ गुटका सं० १४ । पत्रस० १३६ । आ० ५×५ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४२ ।

विशेष निम्न पाठ है—

१	सवैया	कुमुदचन्द	पद्य स० ४
२	सोलह स्वप्न छप्पय	विद्यासागर	।। ६
३	जिन जन्म महोत्सव षट् पद	।।	।। १२
४.	सप्तव्यसन	।।	।। ७
५	दर्शनाष्टकसवैया	।।	।। ११
६.	विषापहार छप्पय	।।	।। ४०
७.	भूपाल स्तोत्र छप्पय	।।	।। २७
८	बीस विरहमान सवैया	।।	।। २१
९	नेमिराजमती का रेखता	विनोदीलाल	।। ११
१०	झूलना	तानुसाह	४२ पद्य हैं
११	प्रस्ताविक सवैया	×	२७
१२	छप्पय	×	४ पद्य हैं
१३	राजुल बारह मासा	गगकवि	१३ पद्य हैं
१४	महाराष्ट्र भाषा द्वादश मासा	चिमना	१३ पद्य हैं
१५.	राजुल बारह मासा	विनोदीलाल	२६ पद्य हैं

प्राप्ति स्थान—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर-आवां

६५१२. गुटका स० १ । पत्र स० ७८ । आ० ११×६ इन्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाओ का सग्रह है ।

६५१३. गुटका स० २ । पत्र स० ६० । आ० ७×४ इन्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । विषय-पूजा स्तोत्र । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ सग्रह है ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन बघेरवाल मन्दिर-आवां

६५१४. गुटका स० १ । पत्र स० १५६ । आ० ६½×४ इन्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ सग्रह है ।

६५१५. गुटका स० २ । पत्रस० १७८ । आ० ६×४½ इन्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है । बीच के कई पत्र खाली हैं ।

६५१६. गुटका स० ३ । पत्रस० ७४ । आ० ६×७ इन्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

६५१७. गुटका स० ४ । पत्रस० ८८ । आ० ६×४½ इन्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । विषय-पूजा सग्रह । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८ ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर, राजमहल (टोंक)

६५१८. गुटका स० १ । पत्रस० ७६ । आ० ५×४ इन्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १७४ ।

विशेष—आयुर्वेद, ज्योतिष स्तोत्र आदि का सग्रह है । स्वप्न फल भी दिया हुआ है ।

६५१९ गुटका स० २ । पत्र स ११ । आ० ५×४ इन्च । भाषा-सस्कृत, हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७५ ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

६५२० गुटका स० ३ । पत्र स० ७५ । आ० ६½×६ इन्च । भाषा—हिन्दी । ले० काल स० १९६१ । पूर्ण । वेष्टन स० १७६ ।

विशेष—चौबीस तीर्थंकर पूजा गुटकाकार मे है । पत्र एक दूसरे के चिपके हुए है ।

६५२१. गुटका स० ४ । पत्रस० ८५ । आ० ६×५ इन्च । भाषा-सस्कृत, हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७७ ।

६५२२ गुटका स० ५ । पत्र स० ५६-१२२ । आ० ७×६ इन्च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७८ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है—

भक्तामर स्तोत्र, तत्वार्थसूत्र, सामायिक पाठ आदि ।

६५२३ गुटका स० ६ । पत्र स० २८ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत, हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७६ ।

विशेष—निम्न रचनाओ का सग्रह है—

पञ्चस्तोत्र	—	सस्कृत
सहस्रनाम स्तोत्र	आशाधर	"
तत्वार्थसूत्र	उमास्वामी	"
विपापहार स्तोत्र भाषा	अचलकीर्ति	हिन्दी
चौवीस ठाणा गाथा	—	प्राकृत
शिखर विलास	केशरीसिंह	हिन्दी
पचमगल	रूपचन्द	"
पूजा सग्रह	—	"
वाईस परीषद वर्णन	—	हिन्दी
नेमिनाथ स्तोत्र	—	सस्कृत
भैरव स्तोत्र	शोभाचन्द	हिन्दी

६५२४. गुटका स ७ । पत्र स० ३-६४ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १८० ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है—

चौवीसतीर्थंकर स्तुति	देवाब्रह्म	हिन्दी
अठारह नाता कथा	—	"
पद सग्रह	—	"
खण्डेलवालो की उत्पत्ति	—	"
चौरासी गोत्र वर्णन	—	"
चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न	ब्र० रायमल्ल	"

६५२५. गुटका सं० ८ । पत्र स० १२ । आ० ६×१½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० १८१ ।

विशेष—त्रेसठ शालाका पुरुष वर्णन है ।

६५२६. गुटका स० ९ । पत्र स० २५६ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत, हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८२ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का संग्रह है—

शत अष्टोत्तरी कवित्त	भैया भगवतीदास	हिन्दी
द्रव्य सग्रह भाषा	"	"
चेतक कर्म चरित्र	"	"
अक्षर वत्तीसी	"	"
ब्रह्म विलास के अन्य पाठ	"	"

वैद्य मनोत्सव	नयनसुख	हिन्दी
पूजा एव स्तोत्र	—	सस्कृत हिन्दी
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामि	सस्कृत
आयुर्वेद के नुस्खे	—	हिन्दी

६५२७ गुटका स० १० । पत्र स० ६५ । आ० ५×४ इन्च । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८३ ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है । तत्वार्थ सूत्र, भक्तामर स्तोत्र आदि भी दिये हुए हैं ।

६५२८. गुटका स० ११ । पत्र स० १४२ । आ० ६×४ इन्च । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८४ ।

विशेष—गुटके मे ३८ पाठो का सग्रह है जिनमे स्तोत्र पूजाए तत्वार्थसूत्र आदि सभी सग्रहीत हैं ।

६५२९. गुटका स० १२ । पत्र स० २४-७२ । आ० १२×४ इन्च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण वेष्टन स० १८५ ।

विशेष—पाशा केवली एव प्रस्ताविक श्लोक आदि का सग्रह है ।

६५३०. गुटका स० १३ । पत्रस० ६-१२ ६३ से १०० । आ० ६×५ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १८६ ।

विशेष—आयुर्वेद नुस्खो का सग्रह है ।

६५३१ गुटका स० १४ । पत्र स० २-६० । आ० ६×५ इन्च । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १८७ ।

विशेष—पत्रस० २-३० तक पचपरमेष्ठी पूजा तथा आयुर्वेदिक नुस्खे दिये हुए है ।

६५३२. गुटका स० १५ । पत्र स० १६१ । आ० ८×६ इच । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १८८ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

पच स्तोत्र	—	सस्कृत
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामि	"
[illegible] भाषा	—	हिन्दी
सहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	सस्कृत
आलाप पद्धति	देवसेन	सस्कृत
कबीर बावनी	कबीरदास	हिन्दी

कबीर बावनी का आदि भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—

बावन अ[illegible] लोक त्रयो सब कुछ इनही माहि ।
[illegible] इनमें नाहि ॥१॥

जो कछु अक्षर वोलत आवा, जह अवोल तह मन न लगावा ।
वोल अवोल मध्य है सोई, जस वो है तस लखे न काई ।।२।।
तुरक नरीकम जोइ कैं, हिन्दू वेद पुराण ।
मन समझाया कारणै कथी मे कछू येक ज्ञान ।।३।।
ऊकार आदि मे जाना, लिखकै मेरे ताहि न माना ।
ऊकार जस है सोई, तसि लखि मेटना न होई ।।४।।
कका किरण कवल मे आवा, ससि विकास तहा सपुर नावा ।
अरजै तहा कुसुम रस पावा जकहु कह्यो नहि कासिम झावा ।।४।।

मध्य भाग

ममा मन स्यो काम है मन मनै सिधि होइ ।
मन ही मनस्यौं कही कवीर मनस्यो मिल्या न कोई ।।३६।।

अन्तिम भाग—

वावन अक्षर तेरि आनि एकै अक्षर सक्या न जानि ।।
सवद कवीरा कहै वूझौ जाइ कहा मन रहै ।।४१।।

इति वावनि ग्यान सपूर्ण ।

६५३३ गुटका स० १६ । पत्रस० ३-६३ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल स० १८८८ । अपूर्ण । वेष्टनस० २२८ ।

विशेष—साधारण पूजा पाठ सग्रह एव देवाब्रह्म कृत सास वहू का झगडा है ।

६५३४. गुटका सं० १७ । पत्रस० १४ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल स० × । अपूर्ण । वेष्टनस० २२६ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

६५३५. गुटका सं० १८ । पत्रस० ५६ । आ० ६×७ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल स० १८८७ । पूर्ण । वेष्टनस० २३० ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है—

सप्तर्षि पूजा	श्री भूषण	सस्कृत
अनन्त व्रत पूजा	शुभचन्द्र	,
गणधर वलय पूजा	—	,
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामि	,

६५३६ गुटका स० १६ । पत्रस० ६६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २३१ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाओ एव पाठो का सग्रह है ।

६५३७. गुटका स० २० । पत्रस० ४४ । आ० ११×४ इन्च । भाषा–सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २३२ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है—

चतुर्विशति जिन–षट्पद बध स्तोत्र	धर्मकीर्ति	हिन्दी
पद्मनदिस्तुति	—	सस्कृत

६५३८. गुटका स० २१ । पत्रस० ३० । आ० ५×४ इन्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २३४ ।

विशेष—ज्योतिष शास्त्र सम्बन्धी बातो का विवरण है । भडली विचार भी दिया है ।

६५३९. गुटका स० २२ । पत्रस० २९ । आ० १०×४½ इन्च । भाषा–हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २३५ ।

विशेष—दोहाशतक परमातम प्रकाश (योगीन्दुदेव) द्रव्य सग्रह भाषा तथा अन्य पाठो का सग्रह है ।

६५४०. गुटका सं० २३ । पत्रस० १५ । आ० ११×५ इन्च । भाषा-हिन्दी–सस्कृत । ले०काल स० १८९० वैशाख बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० २३६ ।

विशेष—ज्योतिष सम्बन्धी सामग्री है ।

६५४१. गुटका स० २४ । पत्रस० ८७ । आ० ८×५ इन्च । भाषा–सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २५४ ।

६५४२. गुटका सं० २५ । पत्रस० १९० । आ० १४×९ इन्च । भाषा–सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २५५ ।

विशेष—९९ पाठो का सग्रह है जिसमे पूजाऐ स्तोत्र नित्यपाठ आदि सभी हैं ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ, टोडारायसिह ।

६५४३ गुटका स० १ । पत्रस० ११३ । आ० ७×४ इन्च । भाषा–हिन्दी–सस्कृत । ले०काल स० १९४१ । पूर्ण । वेष्टनस० १२२ र ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

६५४४. गुटका स० २ । पत्रस० १३ । आ० ६×५ इन्च । भाषा–हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२३ र ।

विशेष—पूजा स्तोत्र एव हिन्दी पद सग्रह है ।

६५४५ गुटका स० ३ । पत्रस० । आ० ७½×६½ इन्च । भाषा–हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२४ र ।

६५४६. गुटका स० ४ । पत्रस० ४४-१५० । आ० ६×४½ इन्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १२५ ।

विशेष—पूजआदि सातोत्र है ।

९५४७. गुटका स० ५ । पत्रस० १४६ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १२६ र ।

विशेष—पूजा स्तोत्र सग्रह है ।

९५४८. गुटका स० ६ । पत्रस० १२७ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी–संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । जीर्ण । वेष्टनस० १२७ र ।

९५४९. गुटका सं० ७ । पत्रस० १७५ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी–स स्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १२८ र ।

९५५० गुटका सं० ८ । पत्रस० ८–७५ । आ० ७×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी–सास्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२९ र ।

विशेष—७२ पद्य से ६९४ पद्य तक वृ द सतसई है ।

९५५१. गुटका सं० ९ । पत्रस० ११७ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३० र ।

विशेष—रामचन्द्र कृत चौवीस तीर्थंकर पूजा है ।

९५५२. गुटका सं० १० । पत्रस० ८-६१ । आ० ४½×४ इञ्च । भाषा संस्कृत–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १९० ।

विशेष—हिन्दी मे पद सग्रह भी है ।

९५५३. गुटका सं० ११ । पत्रस० २९ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी ।पद्य ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १८१९ ।

९५५४. गुटका स ० १२ । पत्रस० ८–६१ । आ४½×४ इञ्च । भाषा-सास्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १९१ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र, तत्वार्थ सूत्र, पद्मावती पूजा वगैरह का सग्रह है ।

९५५५. गुटका स० १३ । पत्रस० ३३–१५१ । आ० ४½×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १९४ × ।

१. पुरुष जातक	—	३३ से ३८
२ नारिपत्रिका	—	३९ से ४१
३ भुवन दीपक	—	४२ से ६१
४ जयपराजय	—	६२ से ६६
५. षट पचाशिका	—	६७ से ७३
६ साठि सवत्सरी	—	७४ से १२३
७ कूपचक्र	—	१२४ से १३४

१४१ मे १४९ तक पत्र नही है ।

९५५६. गुटका सं० १४ । पत्रस० १०–५२ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा–सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २०५ ।

विशेष—पूजा तथा स्तोत्र सग्रह है ।

६५५८ गुटका सं० १५। पत्र स० ११२। ग्रा० ५×४ इञ्च। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २०६।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र, भक्तामर स्तोत्र एव पूजा पाठ का सग्रह है।

६५५९. गुटका स० १६। पत्र स० ८८। ग्रा० ५½×४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। ले०काल स० १५६५ माह सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन स० २०७।

१-तीस चौवीसी पूजा—१-६८

२-त्रिकाल चौबीसी पूजा—६८-८८ तक

६५६०. गुटका स० १७। पत्र स० १०। ग्रा० ६×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। ले०काल स० १८६२। पूर्ण। वेष्टन स० २०८।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र है।

६५६१. गुटका स० १८। पत्र स० ११४। ग्रा० ७×५½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २०९।

विशेष—पत्र १-२१ तक पूजा पाठ तथा पत्र २२-११४ तक कथायें है।

६५६२. गुटका स० १९। पत्र स० ४८। ग्रा० ७×५ इच। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २१०।

६५६३. गुटका स० २०। पत्रस० १०७। ग्रा० ६½×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २११।

६५६४. गुटका स० २१। पत्रस० १६-८८। ग्रा० ७×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २१२।

विशेष—पदो का सग्रह है।

६५६५. गुटका सं० २२। पत्रस० १४-१४८। ग्रा० ६×५½ इञ्च। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० २१३।

	पत्र सख्या	
१—पूजा पाठ स्तोत्र	१-११२	हिन्दी सस्कृत
१—शील बत्तीसी-अकमल	११२-१२१	हिन्दी
ले०काल स० १६३९ पौष सुदी १४।		
३—हसनखा की कथा—	१२४-१३५	हिन्दी

६५६६. गुटका स० २३। पत्र स० १५। ग्रा० ६×५ इञ्च। भाषा सस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २१४।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है।

प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह

६५६७ **गुटका स०** १। पत्र स० ५०। आ० ८×५½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ६।

विशेष—नित्यनैमित्तिक पूजाओ का सग्रह है।

६५६८. **गुटका स०** २। पत्रस० २२१। आ० १२×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी-सस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १०।

१-देव पूजा ×। २-शास्त्र पूजा—भूधरदास। ३-शास्त्र पूजा-द्यानतराय। ४-सोलह कारण पूजा ×। ५-सोलह कारण पूजा (प्राकृत)। ६-दशलक्षण पूजा-द्यानतराय। ७-रत्नत्रय पूजा—द्यानतराय। ८-पचमेरू पूजा—द्यानतराय। ९-सिद्ध क्षेत्र पूजा। १०-तत्वार्थ सूत्र। ११-स्तोत्र। १२-जोगीरासा-जिनदास। १३-परमार्थ जकडी। १४-अध्यातम पैंडी-बनारसीदास। १५-परमार्थ दोहाशतक-रूपचद। १६-बारह अनुप्रेक्षा-डालूराम। १७-चर्चाशतक-द्यानतराय। १८-जैन शतक-भूधरदास। १९—उपदेश तक—द्यानतराय। २०-पच परमेष्ठी गुण वर्णन-डालूराम र०काल १८६५। २१-ज्ञान चिन्तामणि—मनोहरदास (र०काल १७२८ माह सुदी ७) २२-पद सग्रह। २३-जखडिया सग्रह। २४—स्तोत्र। २५-मृत्यु महोत्सव। २६-चौसठठाणा चर्चा आदि का सग्रह है।

६५६९ **गुटका स०** ३। पत्र स० २३२। आ० ९×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी-सस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ११।

१—चर्चा समाधान—भूधर मिश्र।

२—भक्तामर स्तोत्र—मानतु गाचार्य।

३—कल्याण मन्दिर स्तोत्र।

६५७०. **गुटका स०** ४। पत्रस० १८८। आ० ८½×५ इञ्च। भाषा हिन्दी-सस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १२।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ सग्रह है।

६५७१ **गुटका स०** ५। पत्रस० ×। आ० ५½×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी-सस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २१।

विशेष—पद सग्रह एव धनञ्जय कृत नाममाला है।

६५७२. **गुटका स०** ६। पत्र स० ६४। आ० ७×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल स० १८९६ सावण बुदी १०। पूर्ण। वेष्टन स० २२।

१—सभाविलास—×। २७३ पद्य है।

विशेष—चि० लखमीचन्द के पठनार्थ व्यास रामवक्स ने रावजी जीवण सिंह डिगावत के राज्य मे दूणी ग्राम मे लिखा था। ले०काल स० १८९६ सावण बुदी १०।

२—दोहे—तुलसीदास। ६८ दोहे हैं।

३—कुण्डलिया—गिरधरराय। ४१ कुण्डलिया हैं।

४—विभिन्न छन्द—× । जिसमे वरवै छद-४०, अडिल्ल छद-२०, पट्टनिया-४० एव मुकुरी छद २६ है ।

५—हिय हुलास ग्र थ—× । ७१ छद है ।

६५७३ गुटका स० ७ । पत्रस० ८ । ग्रा० ८×६½ इन्च । भापा-हिन्दी गद्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४० ।

विशेष—पद्मावती मत्र, खण्डेलवाल जाति की उत्पत्ति तथा वशावली, तीर्थकारो के माता पिता के नाम, तीर्थंकर की माता तथा चन्द्रगुप्त के स्वप्न है ।

६५७४. गुटका स० ८ । पत्रस० २६४ । ग्रा० ८×७½ इन्च । भापा हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७३ ।

विशेष—चौवीस ठारणा चर्चा एव स्तोत्र पाठ पूजा आदि है ।

६५७५ गुटका स० ६ । पत्रस० ६४ । ग्रा० ८×७½ इन्च । भापा-हिन्दी । ले० काल स० १८६७ । पूर्ण । वेष्टन स० ७४ ।

१-आदित्यवार कथा—भाऊ कवि

२-चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न

३ पद सग्रह—देवाब्रह्म

४ खण्डेलवालो के ८४ गोत्र

५-सास वहू का झगडा—देवाब्रह्म

६५७६. गुटका स० १० । पत्र स० ६१-११६ । ग्रा० ८×६ इन्च । भापा-हिन्दी पद्य । ले०काल स० १६४६ माघ सुदी ५ । अपूर्ण । वेष्टनस० ७८ ।

विशेष—वनारसी विलास है ।

६५७७ गुटका स० ११ । पत्र स० ४४ । ग्रा० ७×४½ इन्च । भापा-हिन्दी पद्य । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ ।

विशेष—पद सग्रह है ।

६५७८. गुटका स० १२ । पत्रस० ३२ । ग्रा० ५×४ इन्च । भापा-हिन्दी पद्य । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८० ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र एव कल्याण मदिर स्तोत्र हिन्दी मे है ।

६५७६ गुटका स० १३ । पत्रस० १६-४६ । ग्रा० ५½×४½ इन्च । भापा हिन्दी पद्य । ले०काल स० × । अपूर्ण । वेष्टनस० ८१ ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

दि० जैन मन्दिर दवलाना (वूंदी)

६५८०. गुटका स० १ । पत्रस० २५० । ग्रा० ७½×६½ इन्च । भापा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३७६ ।

विशेष—प्रति जीर्ण शीर्ण है तथा वहुत से पत्र नही हैं । मुख्यत पूजा पाठो का सग्रह है ।

६५८१ गुटका स० २ । पत्रस० २०८ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३७७ ।

विशेष—गुणस्थान चर्चा एव अन्य चर्चाओ का सग्रह है ।

६५८२. गुटका स० ३ । पत्रस० ४-१३८ । आ० ६½×६½ इञ्च । भाषा– हिन्दी । र० काल स० १६७८ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३७८ ।

विशेष—मतिसागर कृत शालिभद्र चौपई है जिसका रचना काल स० १६७८ है ।

६५८३. गुटका स० ४ । पत्र स० २८ । आ० ६× ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७६ ।

विशेष—धनपतराय का चर्चा शतक है ।

६५८४. गुटका सं० ५ । पत्रस० ११५ । आ० ६×६½ इच । भाषा–सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३८० ।

विशेष— निम्न पाठो का सग्रह है ।

समवशरण पूजा	रूपचन्द	हिन्दी
समवशरण रचना	—	,,

६५८५ गुटका सं० ६ । पत्र स० १७५ । आ० ५×३½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०कालस० १७८२ । पूर्ण । वेष्टन स० ३८१ ।

विशेष—पूजा पाठो के अतिरिक्त मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है—

जैन रासो	—	हिन्दी
सुदर्शन रास	ब्रह्म रायमल्ल	,,
जोगीरासो	जिनदास	,,

६५८६. गुटका सं० ७ । पत्रस० १५० । आ० ८½×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत, हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ३८२ ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

रामविनोद एव अन्य आयुर्वेद नुस्खो का सग्रह है ।

६५८७. गुटका सं० ८ । पत्रस० ७२ । आ० ८½×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी, सस्कृत । ले०काल स० १७६३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३८३ ।

विशेष—मुख्यत निम्न रचनाओ का सग्रह है—

श्रीपाल रास	ब्रह्म रायमल्ल	हिन्दी	—
पचगति की वेलि	हर्षकीर्ति	,,	(ले०काल स० १७६३)
एकीभाव स्तोत्र भाषा	हीरानन्द	,,	(ले०काल स० १७६४)
आषाढभूति मुनि का चोढाल्या	कनकसोम	,,	(र०काल स० १६३८ । ले०काल स० १७६६)

६५८८. गुटका सं० ६। पत्रस० १६०। आ० ८½×६ इन्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल स० १७१० आषाढ सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन स० ३८४।

विशेष—निम्न रचनाओ का सग्रह है—

समयसार नाटक	बनारसीदास	हिन्दी
	(ले० काल स० १७१०)	
[illegible] समुच्चय	लालदास	"
	(ले० काल स० १७०८ अषाढ सुदी १५)	

६५८९ गुटका स० १०। पत्र स० ४-५४। आ० ८×५ इन्च। भाषा-हिन्दी-सस्कृत। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ३८५।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है।

६५९० गुटका स० ११। पत्रस० ६८। आ० ६½×६½ इन्च। भाषा-हिन्दी, सस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० ३८६।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है।

६५९१. गुटका स० १२। पत्रस० १७। आ० ५½×७½ इन्च। भाषा-प्राकृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ३८७।

विशेष—प्रतिक्रमण पाठ है।

६५९२. गुटका स० १३। पत्रस० ५-२४८। आ० ५½×४½ इन्च। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ३८८।

विशेष—पूजा स्तोत्र एव आदित्यवार कथा आदि का सग्रह है।

६५९३ गुटका स० १४। पत्रस० १२८। आ० ८½×५½ इन्च। भाषा-हिन्दी, सस्कृत। ले०काल स० १७४३ आसोज सुदी १४। पूर्ण। वेष्टनस० ३८९।

विशेष—मुख्य पाठो का सग्रह निम्न प्रकार से है—

[illegible]	—	हिन्दी	१५ पद्य
		(र० काल स० १७२४)	
[illegible] कथा	सिघो	हिन्दी	२३ पद्य
[illegible]	—	"	—
[illegible]	सुन्दरदास	"	५६ पद्य

अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है—

सरस सिरोमनि है नर देही
नागपद को निज घर येही
[illegible] पटये देव मुरारी
सदया मनुहउ बूझ तुम्हारी ॥५५॥

चेतसि कैसो चेतहु भाई
जिनि उहका वै राम दुहाई
सुन्दरदास कहै जु पुकारी
भइया मनुप जु वूझ तुम्हारी ।।५६।।

विवेक चितामणि	सुन्दरदास	हिन्दी
आत्मशिष्यावणि	मोहनदास	,,
शीलवावनी	मालकवि	,,
कृष्ण वलिभद्र सिज्झाय	—	,,
शीलनाराम	विजयदेव सूरि	,,

इनके अतिरिक्त अन्य पाठो का सग्रह भी है।

६५६४. गुटका स० १५ । पत्रस० ३०६ । आ० ६×५ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३६० ।

विशेष—मुख्यत निम्न रचनाओ का सग्रह हैं—

प्रद्युम्न चरित	कवि सधारू	हिन्दी	अपूर्ण

विशेष—६८५ पद्य हैं । प्रारम्भ के ६ पत्र नही हैं ।

कर्म विपाक	वनारसीदास	,,	—
हनुमत कथा	ब्र० रायमल्ल	,,	—
जम्वू स्वामी कथा	पाडे जिनदास	,,	—
श्रीपाल रास	ब्र० रायमल्ल	,,	—

६५६५. गुटका स० १६ । पत्रस० १७६ । आ० ६×५½ इन्च । भाषा-हिन्दी, सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६१ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

६५६६ गुटका सं० १७ । पत्र स० ७४ । आ० ७½×४½ इन्च । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३६२ ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है ।

६५६७. गुटका स० १८ । पत्रस० १२० । आ० ६×७ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३६३ ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

६५६८. गुटका स० १९ । पत्रस० १०१ । आ० ६×७ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १८२८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६४ ।

विशेष—निम्न रचनाओ का सग्रह है—

भाषा भूषण टीका	नारायणदास	हिन्दी (र० काल स० १८०७)
अलकार सवैया	कूवखाजी	— (नरवर मे लिखा गया)

६५६६. गुटका स० २० । पत्रस० ८१। ग्रा० ६×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी–सस्कृत । ले० काल स० १८७६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६५ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

६६००. गुटका स० २१ । पत्रस० ३२१ । ग्रा० ५×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३६६ ।

विशेष—निम्न रचनाग्रो का सग्रह है—

श्रीपालरास ब्र० रायमल्ल हिन्दी पद्य (१८१ से २५०)

ग्रन्य पाठो का भी सग्रह है ।

६६०१ गुटका स० २२ । पत्रस० १६० । ग्रा० ५×५ इ च । भाषा-हिन्दी, सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनस० ३६७ ।

विशेष—निम्न रचनाग्रो का सग्रह है—

हितोपदेश दोहा हेमराज हिन्दी —
(र० काल स० १७२५)

इसके ग्रतिरिक्त स्तोत्र एव पूजा पाठ सग्रह है ।

६६०२ गुटका स० २३ । पत्र स० ७४ । ग्रा० ७½×६½ इ च । भाषा—सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३६८ ।

विशेष—शब्दरूप समास एव कृदन्त के उदाहरण दिये गये है ।

६६०३. गुटका स० २४ । पत्रस० ६८ । ग्रा० ७×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ३६६ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ सग्रह है ।

६६०४. गुटका स० २५ । पत्रस० ७० । ग्रा० ६×७ इ च । भाषा–सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४०० ।

विशेष—मुख्यत निम्न ग्रायुर्वेदिक ग्रन्थो का सग्रह है—

राम विनोद प० पद्मरग हिन्दी —
(शिष्य रामचन्द्र)

योगचितामरिण हर्षकीर्ति सस्कृत —

ग्रन्य ग्रायुर्वेदिक रचनाए भी हैं ।

६६०५ गुटका स० २६ । पत्रस० १२६ । ग्रा० ५½×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४०१ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठो का सग्रह है ।

६६०६ गुटका स० २७ । पत्र स० ६० । ग्रा० ५½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४०२ ।

विशेष—निम्न रचनाग्रो का सग्रह है—

सवैया हिन्दी

रणकपुर आदिनाथ स्तवन	—	हिन्दी
रतनसिंहजीरी वात	—	"

९६०७. गुटका सं० २८ । पत्रस ० ६९ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल ×। अपूर्ण । वेष्टनम० ४०३ ।

विशेष—विभिन्न कवियो के पदो एव पाठो का सग्रह है ।

९६०८. गुटका सं० २९ । पत्रस० २९ । आ० ७½×७½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टन स० ४०४ ।

विशेष—सामन्य पूजा पाठ सग्रह है ।

९६०९. गुटका स० ३० । पत्रस० ६४ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-प्राकृत सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४०५ ।

विशेष—निम्न रचनाओ का सग्रह है—

वसुधारा स्तोत्र	—	सस्कृत
वृद्ध सप्तति यत्र	—	"
महालक्ष्मी स्तोत्र	—	"

९६१०. गुटका स० ३१ । पत्रस० ३४ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४०६ ।

विशेष—स्वामी वाचन पाठ है ।

९६११. गुटका सं० ३२ । पत्रस० ६३ । आ० ४½×३½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल स० १८३९ आषाढ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनस० ४०७ ।

विशेष—विष्णुसहस्रनाम एव आदित्यहृदय स्तोत्र है ।

९६१२. गुटका सं० ३३ । पत्रस० १७ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४०८ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

९६१३ गुटका सं० ३४ । पत्रस० १५ । आ० ४½×३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४०९ ।

विशेष—पदो का सग्रह है ।

९६१४. गुटका सं० ३५ । पत्रस० ८८ । आ० ५×३ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४१० ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है—

पचपरमेष्ठी गुण	—	सस्कृत
गुणमाला	—	हिन्दी (पद्य स० ९५ हैं)
आदित्यहृदय स्तोत्र	—	सस्कृत
निर्वाण काड	भगवतीदास	हिन्दी

९६१५. गुटका सं० ३६ । पत्र सं० ६२ । आ० ८½×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन सं० ४११ ।

विशेष—ऋषिमण्डल स्तोत्र एवं पद संग्रह है ।

९६१६. गुटका सं० ३७ । पत्र सं० ३४ । आ० ५½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८६६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१२ ।

विशेष—पूजा पाठ एवं पदों का संग्रह है—

९६१७. गुटका सं० ३८ । पत्र सं० ३५ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१३ ।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रह है—

ब्याहलो	—	हिन्दी
	(१२५ पद्य हैं । र० काल सं० १८४१)	
बारहमासा वर्णन	खेमचन्द	"

प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर मालपुरा (टोंक)

९६१८. गुटका सं० ३१ । पत्र सं० ११८ । आ० ५½×४½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण । जीर्ण । वेष्टन सं० ५६ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१ तत्वार्थ सूत्र	संस्कृत	उमास्वामि
२ जिनसहस्रनाम	"	आशाधर
३ आदित्यवार कथा	हिन्दी	भाऊ
४ पंचमगति वेलि	"	हर्षकीर्ति

इनके अतिरिक्त सामान्य पूजा पाठ हैं ।

९६१९. गुटका सं० २ । पत्र सं० ६४ । आ० X इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन सं० ५८ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

९६२०. गुटका सं० ३ । पत्र सं० १२० । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन सं० २६ ।

विशेष—सैद्धांतिक चर्चाओं का संग्रह है ।

९६२१. गुटका सं० ४ । पत्र सं० १५६ । आ० ६×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन सं० २२ ।

विशेष—निम्न पाठ है—

१ बनारसी विलास के १७ पाठ (बनारसीदास)

२ समयसार नाटक (बनारसीदास)

विशेष—जीवनराम ने विदरसा मे प्रतिलिपि की थी ।

६६२२. गुटका सं० ५ । पत्रस० १६० । आ० ५×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत—संस्कृत-हिन्दी । ले० काल १६७४ भादवा बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० २३ ।

विशेष—निम्न पाठ है—

१	तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामी	पत्र १-३१
२	चौवीसठाणा चर्चा	×	पत्र ३२-१३१
३	सामायिक पाठ	×	पत्र १३२-१८३

विशेष—साह श्री जिनदास के पठनार्थ नारायणदास ने लिखा था ।

६६२३. गुटका सं० ६ । पत्र स० ५५-१८१ । आ० ५½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल स० १७५८ कार्तिक सुदी ५ । अपूर्ण । वेष्टन स० २४ ।

विशेष—निम्न पाठ है ।

१.	सुदर्शनरास	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी	पत्र ५६ से ९५ तक
२	दर्शनाष्टक	—	संस्कृत	९५-९६
३	वैराग्य गीत	×	हिन्दी	९७-९८
४	विनती	×	,,	९९
५	फाग की लहुरि	×	,,	१००
६	श्रीपाल स्तुति	×	,,	१०१-१०३
७.	जीवगति वर्णन	×	,,	१०४-१०५
८	जिनगीत	हर्षकीर्त्ति	,,	१०६-२०७
९	टडाणा गीत	×	,,	१०८-१०९
१०	ऋषभनाथ विनती	×	,,	११०-१११
११	जीवढाल रास	समयसुन्दर	,,	११२-११४
१२	पद	रूपचन्द	हिन्दी	पत्र ११५
		अनन्त चित्त छाडदे रे भगवन्त चरणा चित्त लाई		
१३	नाममाला	धनञ्जय संस्कृत		११६-१६०
१४	कल्याण मन्दिर स्तोत्र भाषा	—	बनारसीदास	हिन्दी १६१-१६७
१५.	विवेक जकडी	—	जिनदास	१६८-१६९
१६	पार्श्वनाथ कथा	×	,, अपूर्ण	१८०-१८१

६६२४. गुटका सं० ७ । पत्रस० १२८ । आ० ७×५½ इञ्च । भाषा संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २५ ।

विशेष—पूजा पाठो का संग्रह है ।

६६२५. गुटका सं० ८ । पत्रस० ३२४ । आ० ८×७½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल स० १७४६ चैत बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० २६ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

१ भविष्यदत्त रास　　ब्रह्मरायमल्ल　　हिन्दी
र०काल स० १६३३ । ले०काल स० १७६५
२ प्रवोधवावनी　　जिनदास　　हिन्दी । ले०काल स १७४६

अन्तिम पुष्पिका—इति प्रवोध दूहा वावनी साधु जिनदास कृत समाप्त । ५३ दोहे है ।
३ श्रीपाल रासो ब्र० रायमल्ल । हिन्दी
४ विभिन्न पूजा एव पाठो का सग्रह है ।

६६२६. गुटका स० ६ । पत्रस० ८६ । ग्रा० ८½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २७ ।

विशेष—विभिन्न कवियो के पदो का सग्रह है । द्यानतराय के पद अधिक हैं ।

६६२७. गुटका स० १० । पत्रस० ४८ । ग्रा० ५×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २८ ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर चोधरियों का मालपुरा (टोंक)

६६२८ गुटका स० १ । पत्र स० १८८ । ग्रा० ५८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल स० १७६८ भादवा सुदी २ । । पूर्ण । वेष्टन स० १६ ।

विशेष—निम्न पाठ है—

१ सवैया	विनोदीलाल	हिन्दी ।
२ भक्तामर भाषा	हेमराज	,,
३. निर्वाण काण्ड भाषा	भैया भगवतीदास	,,
४ फुटकर दोहे	×	,,
५. राजुल पच्चीसी	विनोदीलाल	,,
६ यत्र सग्रह	—	बत्तीसयत्र हैं ।
७. कछवाहा राज वशावलि	×	,,

विशेष—११५ राजाओ के नाम हैं माधोसिंह तक स० १६३७ ।

८. औषधियो के नुस्खे	—	
६ चौरासी गौत्र वर्णन	—	
१०. ढोलमारू की वात	×	हिन्दी अपूर्ण । ५२३ पद्य तक

६६२६ गुटका स० २ । ग्रा० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७ ।

विशेष—विविध जैनेतर कवियो के पद हैं ।

९६३० गुटका सं० ३ । पत्र स० ९७ । आ० ९×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३६ ।

विशेष—हितोपदेश की कथायें है ।

९६३१. गुटका स० ४ । पत्र स० ४-६९ । आ० ७½×४½ इ च । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेप्टन स० ३७ ।

विशेष—सामान पूजाओं का सग्रह हैं ।

९६३२ गुटका सं० ५ । पत्र स० ६-९४ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेप्टन स० ३८ ।

विशेष—नित्य पूजाओ का सग्रह है ।

९६३३. गुटका स० ६ । पत्रस० १७२ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३९ ।

विशेष—विविध पूजापाठो का सग्रह है ।

९६३४. गुटका सं० ७ । पत्रस० ७४ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४० ।

विशेष—नित्य पूजा पाठो का सग्रह है ।

९६३५. गुटका स० ८ । पत्रस० २२ । आ० ७×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४१ ।

विशेष—नित्य पूजा सग्रह हैं ।

९६३६ गुटका स० ९ । पत्रस० ९६ । आ० ९×६ इ च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८ ।

विशेष—आयुर्वेद के नुस्खे तथा पूजा पाठ सग्रह है ।

९६३७. गुटका सं० १० । पत्रस० ९२ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४९ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

९६३८. गुटका स० ११ । पत्रस० ३ से २६० । आ० ८½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ५० ।

विशेष—निम्न प्रकार सग्रह है । इसके अतिरिक्त अन्य सामान्य पाठ हैं ।

१-सबोध पचासिका—मुनि धर्मचन्द्र ।

यह सबोध पचासिका, देखे गाहा छद ।
भाषा बध दूहा रच्या, गछपति मुनि धर्मचद ।।५१।।

२-धर्मचन्द्र की लहर (चतुर्विशति स्तवन) ।

३ पार्श्वनाथ रास–ब्र० कपूरचद । र०काल स० १६६७ वैशाख सुदी ५ ।

मूलसघ सरस्वती गच्छ गछपति नेमीचन्द ।
उनके पाट जशकीर्ति, उनके पाठ गुणचन्द ।।
तासु सिपि तसु पडित कपूरजी चद ।
कीनो रास चिति धरिवि आनन्द ।।

रत्नबाई की शिष्या श्राविका पार्वती गगवाल ने स० १७२२ जेठ वदी ५ को प्रतिलिपि कराई थी।

४-पच सहेली––छीहल	हिन्दी
५-विवेक चौपई—ब्रह्म गुलाल	,,
६-सुदर्शन रास—ब्र० रायमल्ल	,,

प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर कोठ्यो का नैरावा ।

६६३६ गुटका स० १ । पत्रस० १४१ । आ० ६½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । विषय-सग्रह । ले०काल स० १८१४ आसोज बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० ३५ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है—

जिन सहस्रनाम	—	सस्कृत	—
शातिचक्र पूजा	—	,,	—
रविवार व्रत कथा	—	हिन्दी	—
वार्ता	बुलाकीदास	,,	—
भक्तामर स्तोत्र	मानतु गाचार्य	सस्कृत	—
कल्याण मदिर स्तोत्र	कुमुदचद्र	,,	—
एकीभाव स्तोत्र	वादिराज	,,	—
विपापहार स्तोत्र	धनजय	,,	—
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामि	,,	—
दशलक्षण पूजा		,,	—

रत्नत्रय पूजा तथा समससार नाटक वनारसीदास
प० जीवराज ने आवा नगर मे स्वयभूराम से प्रतिलिपि कराई थी।

६६४०. गुटका स० २ । पत्रस० १४१ । आ० ८½×६½ इञ्च । ले०काल स० × । अपूर्ण । वेष्टनस० ७० ।

विशेष—चौवीस तीर्थंकर पूजा है ।

६६४१ गुटका स० ३ । पत्रस० २१३ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७१ ।

विशेष—विविध स्तोत्र एव पाठो का सग्रह है ।

६६४२. गुटका सं० ४ । पत्रस० १३० । आ० ११×५½ इञ्च । भापा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । वेष्टनस० ७५ ।

विशेष—पूजा स्तोत्र एव गुण स्थान चर्चा आदि का सग्रह है ।

६३४३. गुटका सं० ५ । पत्रस० १४४ । आ० ७×५ इञ्च । भापा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७७ ।

६६४४. गुटका स० ६ । पत्रस० १६७ । आ० ६×५½ इञ्च । भापा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८० ।

६६४५. गुटका स० ७ । पत्रस० ४२ । आ० ११×५ इञ्च । भापा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ६३ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है ।

१-यशोधर रास	जिनदास	हिन्दी	—
		(र०काल स० १६७६)	

सवत् सोलासौ परमाण वरप उगुन्यासी ऊपर जाण ।
किसन पक्ष कानी भलो तिथि पचमी सहित गुरवार ॥

कवि रणथभ गढ (रणथभौर) के निकट शेरपुर का रहने वाला था ।

२-पूजा पाठ सग्रह		सस्कृत-हिन्दी	

६६४६. गुटका स० ८ । पत्रस० ४७ । आ० ७×४ इञ्च । भापा सस्कृत । ले० काल म० १६६६ । पूर्ण । वेष्टनस० ६८ ।

६६४७. गुटका सं० ६ । पत्रस० १२८ । आ० ६×४½ इञ्च । भापा-सस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६६ ।

६६४८. गुटका सं० १० । पत्र स० १५० । आ० ६½×५ इञ्च । भापा-पस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०२ ।

६६४६. गुटका सं० ११ । पत्रस० १०-२४७ । आ० ७×५ इञ्च । भापा-हिन्दी पद्य । ले०काल स० १५८५ । अपूर्ण । वेष्टन स० १०५ ।

विशेष—गुटका प्राचीन है तथा उसमे निम्न पाठो का सग्रह है—

ग्रथ	ग्रथकार	भापा	
१-चन्द्र गुप्त के सोलह स्वप्न	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी	अपूर्ण
२-वारह अनुप्रेक्षा	—	,,	पूर्ण
३-विवेक जकडी	जिणदास	,,	,,
४-धर्मतरू गीत (मालीरास)	,,	,,	,,
५-कर्म हिंडोलना	हर्पकीर्ति	,,	,,
पद-(तज मिथ्या पथ दुख कारण)	—	,,	,,

पद-(साधो मन हस्ती मद मातो) — " "

पद हर्षकीर्ति " "

(हू तो काई बोलू रे बोलु भव दुख बोलती न आवै)

६ पोथी के विषय की सूची। इसके ऊपरी भाग पर लिखा है—

पोथी को टीकै लिख्यते वैसाख दुतीक सुदी १५ सवत् १६४४ गढ रणथवर मध्ये ॥

			पत्र	पद्य
१	आराधना प्रतिबोध सार	विमलकीर्ति	१-६	५५
२.	मिछादोकड	—	६-८	२८
३	उन्तीस भावना	—	८-१०	२६
४	ईश्वर शिक्षा	—	१०-१३	२६
५	जम्बूस्वामी जकडी	साधुकीर्ति	१३-१७	३६
६	जलगालन रास	ज्ञान भूषण	१०-२०	३२
७	पोसहपारवानीविधि तथा रास	—	२०-२७	
८.	अनादि स्तोत्र	—	२७-२६	२२ (सस्कृत)
६.	परमानद स्तोत्र	—	२९-३१	२५
१०.	सीखामणि रास	सकलकीर्ति	३१-३५	
११	देव परीषह चौपई	उदयप्रभ सूरि	६५-३७	२१
१२.	वलिभद्र कृष्ण माया गीत	—	३७-३८	—
१३	वलिभद्र भावना	—	३८-४३	४४
१४.	रिषभनाथ धूल	सोमकीर्ति	४३-४५	४
१५	जीववैराग्यगीत	—	४५	७
१६.	मत्र सग्रह	—	४६-४७	सस्कृत
१७.	नेमिनाथ श्रुति	—	४८	हिन्दी पद्य (र० काल १५८०)
१८.	नेमिनाथ गीत	ब्र० यशोधर	४६-५२	
१६.	"	—	५२-५३	
२०	योगीवाणी	यश कीर्ति	५३	७ पद्य
२१	पद (मन गीत)	—	५४	
२१	(क) मल्लिगीत	सोमकीर्ति	५४-५५	४
२२	मल्लिनाथ गीत	ब्र० यशोधर	५५-५६	६
२३	जखडी	—	५६-५७	४

				पद्य सख्या
२४	कायाक्षेत्र गीत	धनपाल	५७–५८	६
२५	नेमिनाथ गीत	ब्र० यशोधर	५८–६३	६६
२६	चौवीस तीर्थंकर भावना	यश कीर्ति	६३–६५	२५
२७	रामसीतारास	ब्र० जिणदास	६५–६१	
२८	सकौसलरास	सासु	६१–१०६	
२६	जिनसेन वोल	जिनसेन	१०६	४
३०	गीत	—	१०७	५
३१	शत्रु जयगीत	—	१०७–१०८	१४
३२	पार्श्वनाथ स्तवन	मुनि लावण्य समय	१०८–११२	३५

(इनि श्री पार्श्वनाथ स्तवन पडित नरवद पठनार्थ)

३३	पचेन्द्रिय गीत	जिनसेन	११२	७
३४	मेघकुमार रास	कवि कनक	११३–११६	४८
३५	वलिमद्र चौपइ	ब्र० यशोधर	११६–१३२	१८७

(र० काल स १५८५)

सवत पनर पचासीइ स्कव नयर मझारि ।
भवणि अजित जिनवर तणि ए गुण गाथा सार ॥१८८॥

३६	वुधिरास	—	१३२–३६	४८ पद्य
३७	पद	ब्र० यशोधर	१३६	४

(प्रीतडी रे पाली राजिल इम कहिरे)

३८	पद	—	१३६–३७	

चेतु लोई २ थिर २ कहु कोइ

३६	पद	—	१३७	५

(आदि अनादि एक परमेश्वर सयल जीव साधारण)

४०.	त्रेपनक्रिया गीत	सोमकीर्ति	१३७	५
४१	रत्नत्रयगीत	—	१३८	१३
४२	देहस्तगीत	—	१४०–४१	४
४३	पर रमणी गीत	खीमराज	१३६	४
४४	,,	—	१३६	६
४५	वैराग्य गीत	ब्र० यशोधर	१४१	६
४६.	आसपाल छद	—	१४१–१५१	
४७	व्यसन गीत	—	१५१	
४८.	मगल कलश चौपई	—	१५१–६१	४६

"इति मगलचुपाई समात्या ब्रह्म यशोधर लिखित ।

४६ पद नेमिनाथ	ब्र० यशोधर	१६३	८
(अ गि हो अनोयम वेणरेकरी उग्रसेन घरि जाइ राजुल वरी)			
५० नेमिनाथ वारह मासा	—	१६३–१६४	१२ पद्य
५१ पट्लेशा श्लोक	—	१६४–६५	११ सस्कृत
५२. जीरावली स्तवन	—	१६५–६६	११
५३ अराधनासार	सकलकीर्ति	१६६-१६८	२४ पद्य
५४. वासपूज्य गीत	ब्र० यशोधर	१६८	१२
५५. आदिनाथ गीत	—	१६८–६९	३
५६ आदि दिगवर गीत	—	१६९	३
५७ गीत	यश कीर्ति	१६९	३
(मयण मोह माया मदिमातु)			
५८ गीत	यश.कीर्ति	१७०	६
तडकि लागि जिस त्रेह त्रूटि, अ जलि उदक जिम आऊपु फूटि।			
५९ गीत	ब्र० यशोधर	१७०	७
(वागवाणीवर मागु माता दि मुझ अविरल वाणी रे)			
६०. गीत	ब्र० यशोधर	१७१	४
(गढ जूनू जस तलहटी रे लाई गिरि सवा माहि सार)			
६१ मेघकुमार रास	पून्यू	१७१-७३	२१
६२ स्थूलभद्र गीत	लावण्यसमय	१७३-१७७	२१
६३ गुण्यय दोहा	—	१७७-१८२	७८ प्राकृत गाथा
६४ उपदेश श्लोक	—	१८३	५ स० श्लोक
६५ नेमिनाथ राजिमति वेलि	सिंघदास	१८३–८५	१७ हिन्दी पद्य
६६ नेमिनाथ गीत	—	१८६	हिन्दी पद्य
६७. नेमिनाथ गीत	ब्र० यशोधर	१८६	५
(यान लेई नेमि तो राणी आउ पसू छोडि गढ गिरनार)			
६८ प्रतिवोध गीत	—	१८६	हिन्दी पद्य
(चेतरे प्राणी सुण जिनवाणी)			
६९ गीत (पार्श्वनाथ)	ब्र० यशोधर	१८७	,,
७० गीत (नेमिनाथ)	—	१८७	,,
(समुद्र विजय सुत यादव राजा तोरणि आया करी दिवाजा)			
७१. चेतना गीत	समयसुन्दर	१८७	,,
७२. अठारह नाते की कथा	—	१८८	प्राकत
विशेष—हिन्दी मे अनुवाद भी दिया है।			
७३ कुवेरदत्त गीत	—	१८८–९०	४
(अठारह नाता रास)			

७४	गीत	ब्र० यशोधर	१९१	हिन्दी पद्य
	(तोरणि आवी वेग वल्युरे पशूडा पारिध पेखीरे)			
७५.	अजितनाथ गीत	ब्र० यशोधर	१९१	,,
७६	गीत	—	१९१-९२	,,
	(प्रणमू नेमि कुमार जिणि सवम धरउ)			
७६.	नेमिगीत	ब्र० यशोधर	१९२	हिन्दी पद्य
	(पसूडा तोरगि परिहरी)			
७७	नेमिगीत	,,	१९२-९३	,,
	नेमि निरजन निरोपम तोरणि पसूडा निहाली रे)			
७८	पार्श्वगीत	,,	१९३	,,
	(मूरति मोहण वेल मणीजि अवर उपमा कहु कुण दीजि)			
७९	नेमि गीत	,,	१९३	,,
	(पसूडा कारणि परहरयु रे राजिल सरसु राज)			
८०	नेमिगीत	—	१९३	,,
	(मुख चढीरे निहालि निरोपमउ आवतु नेमिकुार)			
८१	जैन वणजारा रास	—	१९३-९६	,,
८२	वावनी	मतिशेखर	१९६-२०१	५३
८३	सिद्ध धुल	रत्नकीर्ति	२०१-२०३	,,
८४.	राजुल नेमि अबोला	लावण्यसमय	२०३-५	१५
८५	यशोधर रास	सोमकीर्ति	२०५-३४	—
			(ले०काल स० १५८५)	

विशेष—इति यशोधर रास समाप्त । सवत् १५८५ वर्षे सुदि १२ खो ।

८६	कमकमल जयमाल	—	२३४-३५	—
	(निर्वाण काण्ड भाषा है)			
८७	शत्रुजय चित्र प्रवाड	—	२३६-३८	३५
८८	मनोरथ माला	—	२३९	—
८९	सातवीसन गीत	कल्याण मुनि	२३९-४०	१०
९०	पचेन्द्री वेलि	—	२४०-४२	—
९१.	ससार सासरयो गीत	—	२४२-४३	—
९२	रावलियो गीत	सिंहनन्दि	२४३-४४	—
९३	चेतन गीत	नदनदास	२४४-४५	—
९४	चेतन गीत	जिनदास	२४५	—
९५	जोगीरासा	—	२४५-४७	६८

(केवल २८ पद्य तक है) अपूर्ण

६६५०. गुटका स० १२ । पत्रस० २४७ । आ० ६½×५ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टन स० १०४ ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा (टोंक)

६६५१. गुटका स० १ । पत्रस० ५१ । आ० ९×६ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टन स० ५८ ।

६६५२. गुटका स० २ । पत्रस० ९५ । आ० ९×६ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५७ ।

६६५३. गुटका स० ३ । पत्रस० १३ । आ० ७×५ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल ×। पूर्ण । वेष्टनस० ५६ ।

६६५४ गुटका स० ४ । पत्रस० ३० । आ० ७×५ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५२ ।

विशेष—भानु कवि कृत आदियत्वार कथा है ।

६६५५. गुटका स० ५ । पत्र स० २३ । आ० ५×४ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल× । पूर्ण । वेष्टनस० ५१ ।

६६५६. गुटका स० ६ । पत्रस० १८ । आ० ७×५ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टनस० ५० ।

६६५७ गुटका स० ७ । पत्र स० २४० । आ० ७×५ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४९ ।

विशेष—चौवीसी ठाणा चर्चा है ।

६६५८. गुटका स० ८ । पत्र स० २७ । आ० ५×४ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८ ।

६६५९. गुटका स० ९ । पत्रस० ३५ । आ० ८×५ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टन स० ४७ ।

६६६०. गुटका स० १० । पत्रस० ६४ । आ० ८×६ इन्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४१ ।

६६६१ गुटका स० ११ । पत्रस० २६ । आ० ६×५ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३० ।

विशेष—स्तुतियो का सग्रह है ।

६६६२ गुटका स० १२ । पत्रस० ६१ । आ० ८×६ इन्च । भाषा-हिन्दीपद्य । ले०काल ×। अपूर्ण । वेष्टन स० ३१ ।

विशेष—पूजाओ का सग्रह है ।

६६६३. गुटका सं० १३ । पत्र स० ६-१२४ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल पूर्ण । वेष्टन स० ३२ ।

विशेष—रामचन्द्र कृत चौबीस तीर्थंकर पूजा है ।

६६६४. गुटका १४ । पत्रस० २२५ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-प्राकृत,-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है —

१	जयतिहुअण स्तोत्र	मुनि अभयदेव	प्राकृत । अपूर्ण ।
२.	नव तत्व समाप्त	×	प्राकृत
३	श्रावक अतिचार	×	,,
४	आदिनाथ जन्माभिषेक	×	,,
५.	कुसुमाञ्जलि	×	,,
६	महावीर कलश	×	,,
७	लूण पानी विधि	×	,,
८.	शोभन स्तुति	×	सस्कृत
६	गणधर वाद	श्री विजयदास मुनि	हिन्दी
१०.	जम्बू स्वामी चौपई	कमलविजय	,,
११.	ढोलामारूणी	वाचक कुसललाभ	,,

र०काल स० १६७७ । ले० काल स १७११ चैत सुदी २ ।

प्रारम—

दिविस रमति २ सुमति दातार कासमीर कमलासनी ।
ब्रह्म पुत्रिका वाण सोहइ मोहण तरु अरि मजरी ।
मुख मयक त्रिहुभुवन मोहइ पय पकज प्रणमी करी ।
अणी मन आणद सरस चरित शृगार रस, मन पभणिय परमाणद

अन्तिम—

सवत् सोलह सत्तोत्तरइ मादवा त्रीज दिवस मन खरइ ।
जोडी जेसलमेरु मज्भारि वाच्या सुख पामइ ससारी ।
समलि गहगहइ वाचक कुसल लाभ इम कहइ
रिधि वृधि सुख सपति सदा समलता पामइ सवदा ।।७०६ ।।

६६६५. गुटका स० १५ । पत्रस० ३५ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी प० । ले०काल × । जीर्ण शीर्ण । पूर्ण । वेष्टनस० ३४ ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

६६६६. गुटका स० १६ । पत्र स० ३० । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३५ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठो का सग्रह है ।

६६६७ गुटका स० १७ । पत्रस० १०१ । आ० ६×४ इञ्च । भापा-हिन्दी, सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३६ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ हैं ।

६६६८. गुटका स० १८ । पत्र स० १५८ । आ० ७×५ इञ्च । भापा-हिन्दी, सस्कृत । ले० काल स० १७७९ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३७ ।

विशेष—पूजा पाठो का सग्रह है ।

६६६९. गुटका स० १९ । पत्र स० २० । आ० ६×६ इञ्च । भापा-हिन्दी प० । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३८ ।

६६७०. गुटका स० २० । पत्रस० ७८ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी प० । ले०काल-स० १८३३ ।पूर्ण । वेष्टनस० ३९ ।

विशेष—अक्षर घसीट है पढने मे कम आते है । पद, पूजा एव कथाओ का सग्रह है ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

६६७१. गुटका स० १ । पत्र स० २८ । आ० १२×८½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३-७४ ।

विशेष—मुख्यत निम्न रचनाओ का सग्रह है—

पंच स्तोत्र भापा	—	हिन्दी	—
वारहखडी	सूरत	,,	—
ज्ञान चितामणि	—	,,	—

(र०काल स० १७२८ माघ सुदी)

सवत सतरासै अठाईस सार, माह सुदी सप्तमी शुक्रवार ॥
नगर वुहारन पुर पाखान देस माही, ममारखपुर सेवग गुण गाई ॥

६६७२ गुटका स० २ । पत्र स० ११ । आ० ६½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५२ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पदो का सग्रह है—

पार्श्वनाथ की निसाणी, कल्याण मन्दिर भाषा, विषापहार, वृपभदेव का छद ।

६६७३. गुटका स० ३ । पत्रस० १४८ । आ० १०×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १८२९ भादवा वुदी १० ।पूर्ण । वेष्टनस० ५१ ।

विशेष—साधारण पाठो के अतिरिक्त निम्न रचनाए और हैं—

धर्मपरीक्षा	मनोहरलाल	हिन्दी

(र०काल स १७०० । ले०काल स० १८१४)

पार्श्वपुराण	भूधरदास	हिन्दी

सहदेव कर्ण ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

६६७४. गुटका सं० ४ । पत्रस० ६४ । आ० १०×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । ले०काल स० × । पूर्ण । वेष्टन स० ६२ ।

विशेष—सेवाराम कृत चौबीस तीर्थंकर पूजा एव व्रत कथा कोप मे से एक कथा का सग्रह है ।

६६७५. गुटका सं० ५ । पत्रस० १३६ । आ० ६×६ इञ्च । भापा–हिन्दी, सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७५ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

पद्मावती पूजाष्टक, बनारसी विलास तथा भैरव पद्मावती कवच (मल्लिपेण) आदि का सग्रह है ।

६६७६ गुटका स० ६ । पत्रस० २२६ । आ० ६½×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी–सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४१/७७ ।

विशेष—नित्य नैमित्तक पाठो का सग्रह है ।

६६७७. गुटका सं० ७ । पत्र स० ११२ । आ० ६½×६½ इञ्च । भापा-हिन्दी सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० १४२/८० ।

विशेष—पूजा पाठ एव स्त्तोत्र आदि का सग्रह है ।

६६७८ गुटका सं० ८ । पत्र स० १८५ । आ० ४½×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६२ ।

विशेष—पूजा पाठ के अतिरिक्त सेठ शालिभद्र राम एव सेठ मुदर्शनरास (ब्र० रायमल्ल) और हैं ।

शालिभद्र रास   फकीर   र०काल स० १७४३

प्रारम्भ—

सकल सिरोमणी जीनवर सार, पार न पावै ते अगम अपार ।
तीन तिरलोक वदै सदा सुर फुनी इद नर पूजत ईस ।
नाथ ते वस मे ऊपनो अहो श्री वरधमान सामी नमु सीस ।।
सालिभद्र गुण वरनउ ।।१।।

अन्तिम—

अहो वस वघेरवारै खडीय्या गोत
वस वेरा दुहाजी हौत ।
तास ते सुत फकीर मे साली ते भेद को मडियो राप्त
मन मणेहु चीते उपनी अही देखी चारित्र की धोजी परगाम ।।२२०।।

अहो सवत सतरासै वरस तीयाल   (१७४३)
मास वैसाख पूणिम प्रतिपाल ।
जौग नीरवतर सव भल्या मिल्या गुढा मझी
पूरणवास रावने अनरव राजई ।
अहो साली मन की पूगजी अरु सालिभद्र गुण वरणउ ।।२२१।।

प्रारम्भ

गोयम गराहर गिरुप्रा मनि धरि गुणठाणा गुण गाऊ ।
गुण गाऊ रगिभरी रगि भरीय गाऊ ।
पुण्य पाऊ भेद गुणठाणा तणा ।
मिथात पहिलाहि गुणह ठाणी वसइ जीव ग्रनतुगुणा ।
मिथ्यात पच प्रकार पूरचा काल ग्रनतु निहारइं ।
मति हीन च्युहुगति भ्रमि भूला भलो धर्मते भणि लहइ

ग्रन्तिम—

परम चिदानन्द सपद पद धरा ।
ग्रनन्त गुणा कर शकर शिवकरा ।
शिवकराए श्री सिद्ध सुन्दर गाउ गुण गणठाणरा
जिम मोक्ष साख्य मुखि साधु केवल णाण प्रमाणरा
सुभचन्द सूरि पद कमल प्रणवइ मधुप व्रत मनोहर वर
भणइति श्री वर्द्धन ब्रह्म एह वाणि भवियण सुख करई ॥१७॥
इति गुण ठाणा गीत

६६८४. गुटका सं० १४। पत्र स० ६० । ग्रा० ६½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल स० १६६१ । पूर्ण । वेष्टन स० २६८ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

सेवाराम वघेरवाल ने इन्दरगढ मे प्रतिलिपि की थी ।

६६८५. गुटका स० १५ । पत्र स० २८५ । ग्रा० ६½×६½ इच । भाषा—हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६८ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

गुटका लिखवाने मे १४। =॥ व्यय हुग्रा था ।

६६८६. गुटका सं० १६ । पत्र स० १०८ । ग्रा० ६½×५ इञ्च । भापा-हिन्दी । ले० काल× । पूर्ण । वेष्टनस० २७० ।

विशेष—श्वेताम्वर कवियो के पद एव पाठ सग्रह है ।

६६८७ गुटका सं० १७ । पत्रस० ४२ । ग्रा० ४½×५½ इञ्च । भापा- हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २७१ ।

विशेष—ढोलामारूवाणी की वात है । पद्य स० ५०४ है ।

६६८८. गुटका स० १८ । पत्र स० १६८ । ग्रा० ६½×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले०काल स० १८४३ । पूर्ण । वेष्टन स० २७२ ।

विशेष—गणित छद शास्त्र है गणित शास्त्र पर ग्रच्छा ग्र थ है ।

६६८६ गुटका सं० १६ । पत्र स० ६१ । ग्रा० ६×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २७३ ।

विशेष—सामान्य स्तोत्रो एव पाठो का सग्रह है ।

६६६०. गुटका स० २०। पत्रस० ६३। ग्रा० ६×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल स० १८४८। पूर्ण। वेष्टनस० २७४।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है, सामायिक पाठ भाषा-जयचन्द छाबडा हिन्दी २ चौबीस ठाणा चर्चा।

६६६१. गुटका स० २१। पत्रस० २४। ग्रा० ६×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० २७५।

विशेष—ऋषि मडल पूजा, पद्मावती स्तोत्र एव ग्रन्य पूजा पाठ सग्रह है।
सेवाराम बघेरवाल ने मीणाणा मध्ये चरमनदी तटे लिखित।

६६६२ गुटका स० २२। पत्रस० ११०। ग्रा० ६×६ इच। भाषा-हिन्दी-सस्कृत। ले०काल स० १६१०। पूर्ण। वेष्टन स० २७६।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है तथा गुटका फटा हुग्रा एव जीर्ण है।

६६६३. गुटका स० २३। पत्रस० ७६। ग्रा० ६×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी-सस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० २७७।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है।

६६६४ गुटका स० २४। पत्र स० १७१। ग्रा० ६½×६½ इञ्च। भाषा—सस्कृत-हिन्दी। ले० काल स० १८५८ ग्रासोज सुदी ११। पूर्ण। वेष्टन स० २७८।

विशेष—पूजा पाठ एव स्तोत्र ग्रादि का सग्रह है।

६६६५ गुटका स० २५। पत्रस० ३१७। ग्रा० ६½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल स० १६१२। पूर्ण। वेष्टनस० २७६।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है—

गीता तत्वसार	—	हिन्दी पद्य स० १६० (ले०काल स० १६१२)
सेवाराम बघेरवाल ने प्रतिलिपि की थी।		
भक्तिनिधि	—	हिन्दी पद्य स० ५४१
वेदविवेक एव	—	"
भोम का उपदेश	—	"

ले०काल स० १६१३ मगसिर सुदी १२।

६६६६. गुटका स० २६। पत्रस० ६१। ग्रा० ६½×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल स० १६०४। पूर्ण। वेष्टन स० २८०।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र भाषा मत्र सहित है।

६६६७. गुटका स० २७। पत्रस० ७०। ग्रा० ६×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल स० १८३४ फागुण बुदी ५।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र भाषा मत्र सहित है।

६६६८. गुटका स० २८ । पत्रस० १३८ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल स० १७६४ सावण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० २८२ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

भक्तामर स्तोत्र	मानतु गाचार्य	सस्कृत
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामी	,,
कल्याण मन्दिर स्तोत्र	कुमुदचन्द्र	,,
भूपाल चतुर्विशतिका	भूपाल	,,
लघु सहस्रनाम	—	—

कुल १३८ पत्र है जिनमे आगे के आधे अर्थात् ६९ खाली हैं ।

६६९९. गुटका सं० २९ । पत्रस० ७९ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २८३ ।

विशेष – नित्य पूजा पाठ के अतिरिक्त निम्न पाठो का और सग्रह है—

रत्नत्रय पूजा	—	हिन्दी
योगीन्द्र पूजा	—	,,
क्षेत्रपाल पूजा	—	,,

६७००. गुटका स० ३० । पत्रस० १६४ । आ० ८×६½ इञ्च । भाषा-प्राकृत-हिन्दी । ले०काल स० १९१६ । पूर्ण । वेष्टन स० २८४ ।

विशेष – निम्न रचनाओ का सग्रह है—

सुगुरु शतक — जिनदास गोवा — हिन्दी पद्य पत्र ८

र०काल स० १८५२ । (ले०काल स० १९१६)

करावता नगर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

ढाल गणसार	—	,,	१६
सामायिक पाठ	—	प्राकृत	३१
सामायिक पाठ भाषा	श्याम	हिन्दी	५५

सो सामायिक सावसी लहसी अविचल थान ।
करी चौपई भावसु जैसराज सुत स्याम ॥
(र०काल स० १७४६ पौष सुदी १०)

विषापहार स्तोत्र	धनजय	सस्कृत	१०७
सामायिक वचनिका	जयचन्द छावडा	हिन्दी (ग०)	
जैनबद्री यात्रा वर्णन	सुरेन्द्रकीर्ति	हिन्दी	

मदिर चैत्यालय आदि का जहा जहा यात्रा गये वर्णन मिलता है । आमेर घाट आदि का भी वर्णन किया हुआ है ।

लपक पचासिका — जिनदास — हिन्दी (पद्य)-

जैनेतर साधुओ की पोल खोली गई है ।

हुक्कानिषेध — भूधर — हिन्दी

६७०१ **गुटका सं० ३१** । पत्र स० १०–७० । ग्रा० ७×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० २८५ ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ सग्रह है ।

६७०२ **गुटका सं० ३२** । पत्र स० १६० । ग्रा० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी, ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २८६ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

पड्दर्शन पाखड — हिन्दी —

जैन दर्शन व १६ पाखड—

मूलसघी काष्टासघी निग्र थ ग्राल

ग्रजिका व्रतना ग्रव्रती श्वेतावर

द्रवडिग भावलिगी विपर्मय ग्राचार्य

भट्टारक स्वयभू मिश्री साध्य

बारहमास पूर्णमासी फल — हिन्दी —

साठ सवत्सरी — ,, —

सवत् १७०१ से लेकर १७८९ तक का फल है । हसराज वच्छराज चौपई जिनोदय सूरि-हिन्दी—
(र० काल स० १६८०)

कविप्रिया केशव — हिन्दी —

६०७३. **गुटका स० ३३** । पत्रस० १४२ । ग्रा० ५×३ इञ्च । भाषा—सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २८७ ।

विशेष—राम स्तोत्र एव जगन्नाथाष्टक ग्रादि का सग्रह है ।

६०७४. **गुटका सं० ३४** । पत्रस० ७६ । ग्रा० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २८८ ।

विशेष—भाऊ कवि कृत रविवार कथा का सग्रह है ।

६७०५. **गुटका स० ३५** । पत्र स० ८५ । ग्रा० ५½×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत–हिन्दी । ले० काल स० १८२४ । पूर्ण । वेष्टन स० २८९ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है ।

वाईस परीषह — हिन्दी

भक्तामर स्तोत्र पूजा — ,,

देव पूजा — ,,

कक्का वीनती — ,,

पार्श्वनाथ मगल — ,,

(ले०काल स० १८२४)

विनती पाठ सग्रह — हिन्दी

चर्तुविशति तीर्थंकर स्तुति — ,,

प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा

६७०६. गुटका सं० १ । पत्रस० १७ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४७ ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र आदि हैं ।

६७०७. गुटका सं० २ । पत्रस० ११-६७ । आ० ८×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३५१ ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र आदि सामान्य पाठ एव पूजाओ का सग्रह है । सुरेन्द्रकीर्ति विरचित अनन्तव्रत समुच्चय पूजा भी है ।

६७०८. गुटका स० ३ । पत्रस० १०४ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३५२ ।

विशेष—वेगराज कृत रचनाओ का सग्रह है ।

१ चूनडी — वेगराज ।
२ ज्ञान चूनडी ,,
३ पद सग्रह ,,
४ नेम व्याह पच्चीमी ,,
५ वारहखडी ,,
६ सारद लक्ष्मी सवाद ,,

६७०९. गुटका सं० ४ । पत्र स० ११-१६ तथा १ । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १७२२ । अपूर्ण । वेष्टनस० ३५६ ।

१. कवि प्रिया — केशवदास
२ विहारी सतसई — विहारीलाल
३ मधुमालती —
४. सदयवच्छयासावलिंग — । अपूर्ण ।

६७१० गुटका स० ५ । पत्रस० ७-१८५ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १८०६ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३५८ ।

विशेष—निम्न पाठ मुख्य हैं ।

१ श्रावकातिचार चउपई—पासचन्द्र सूरि । ले०काल स० १८०६ ।
२ साधुवदना—× । ८८ पद्य हैं ।
३ चउवीसा—जिनराजसूरि ।
४ गौडी पार्श्वनाथ स्तवन—× ।
५ पद सग्रह—× ।

विशेष—गुटका नागौर मे कर्मचन्द्र वाढिया के पठनार्थ लिखा गया था ।

६७११ **गुटका स० ६** । पत्र स० ५-२२ १-८० । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले० काल स० १७६१ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३५७ ।

१ तत्वार्थ सूत्र—उमास्वामी । भाषा-सस्कृत ।
२ भक्तामर स्तोत्र—मानतु ग । ले० काल १७६४ ।
३ पद्मावती राणी रास—× । हिन्दी ।
४ गौतम स्वामी सज्झाय—× । ,,
५ स्तवन —× । ,,
६ चित्तौड वसने का समय (सवत् १०१)
७ दान शील तप भावना—× । हिन्दी । ले० काल १७६१ ।
८ सज्झाय—× । हिन्दी ।
९ पदमध्या की वीहालो—× । हिन्दी ले० काल १७६३ ।
१० ढोलामारू चौपई—कुशललाभ । हिन्दी ।

६७१२. **गुटका स० ७** । पत्र स० ४० । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६५ ।

विशेष—ज्योतिष सवधी साहित्य है ।

६७१३. **गुटका स० ८** । पत्रस० १०० । आ० ६×६ इञ्च । भाषा--हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६६ ।

मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं ।

१ विहारी सतसई — विहारीलाल । पद्य स० ७०६
२ नवरत्न कवित्त — × ।
३ परमार्थ दोहा — रूपचन्द ।
४ योगसार — योगीन्द्र देव

६७१४. **गुटका स० ९** । पत्रस० १२६ । आ० ७½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६७ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ एव स्तोत्रो का सग्रह है ।

६७१५. **गुटका स० १०** । पत्रस० ६० । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७० ।

विशेष—पूजा सग्रह के अतिरिक्त गुलाल पच्चीसी तथा भाऊ कृत रविव्रत कथा है । लिपिकार वेनराग है ।

६७१६. **गुटका स० ११** । पत्र स० २१६ । आ० ६½×६ इञ्च । भाषा—सस्कृत हिन्दी । ले०काल स० १६३५ फागुन सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७६ ।

प्रशस्ति—श्री मूलसघे भट्टारक श्री धर्मकीर्ति तत्पट्टे भ० शीलभूषण तत्पट्टे भ० ज्ञानभूषण तदाम्नायेजैसेवालान्वये प्रधान श्री दुर्गाराम द्वितीय भ्राता कपूरचन्द तद्भार्या हरिसिंहदे तत्पुत्र श्री लोदी तेनेद पुस्तक लिखाप्य दत्त श्री ब्रह्म श्री वुद्धसेनाय ।

पूजा एव स्तोत्र सग्रह है। मुख्यत पडितवर सिवात्मज प० रूपचन्दकृत दशलाक्षणिक पूजा तथा भाउ कृत रविव्रत हैं।

६७१७ गुटका सं० १२ । पत्र स० १०० । आ० ७½×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७७ ।

विशेष—बनारसीदास, भूधरदास, मोहनदास आदि कवियो के पाठो का सग्रह है।

६७१८ गुटका स० १३ । पत्रस० १४० । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १७३४ । पूर्ण । वेष्टनस० ६७६ ।

१. गौतमरास—विनयमल । र०काल १४१२ ।

२. अजितनाथ शाति स्तवन-मेरुनदन ।

३ मारावाहवनि सज्झाय—× ।

४ आषाढ भूत् वमाल—× । र०काल स० १६३८ ।

५ दान शील तप भावना—सयसुन्दर

६७१६ गुटका स० १४ । पत्रस० १५८ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३८५ ।

विशेष—अन्य पूजाओ के अतिरिक्त चौवीस तीर्थंकर पूजा भी दी हुई है।

६७२०. गुटका सं० १५ । पत्रस० ६४ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३८४ ।

विशेष—मत्र तत्र सग्रह है।

६७२१. गुटका स० १६ । पत्रस० ११८ । आ० ८½×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल स० १७७१ द्वि० आसाढ बुदी १ । पूर्ण वेष्टन स० ३८३ ।

१ स्वामी कार्त्तिकेयानुप्रेक्षा — कार्त्तिकेय ।
हिन्दी टीका सहित

२ प्रीतिंकर चरित्र — जोधराज

६७२२. गुटका स० १७ । पत्रस० ४६ । आ० ७×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३८२ ।

विशेष—विभिन्न पाठो का सग्रह है।

६७२३. गुटका स० १८ । पत्रस० ५० । आ० ६×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३८६ ।

१ भक्तामर स्तोत्र—मानतु ग ।

२ दशलक्षणोद्यापन—× ।

६७२४. गुटका सं० १६ । पत्रस० ५६६ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल स० १८१६ आसोज बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३८७ ।

१ पार्श्वपुराण—भूधरदास । पत्रस० १–१८८

२ सीता चरित्र—कविबालक । ,, १८६–३४८

३ धर्मसार—× । ,, १–६० तक ।

६७४१. गुटका स० ७ । पत्रस० १४० । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल स० १८६२ । पूर्ण । वेष्टन स० १६५ ।

विशेष—जैन शतक (भूधरदास),पार्श्वनाथ स्तोत्र, पच स्तोत्र एव पूजाओ का सग्रह है ।

६७४२. गुटका स० ८ । पत्रस० २५ । आ० ११×६½ इञ्च । भाषा-प्राकृत-हिन्दी । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टनस० १६६ ।

विशेष—इसके अधिकाश पत्र खाली है द्रव्य सग्रह गाथा एव जैन शतक टीका है ।

६७४३. गुटका स० ६ । पत्रस० ७३ । आ० ६½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १६१६ माहबुदी७। पूर्ण । वेष्टनस० १६७ ।

विशेष—निम्न पाठ है ।

१ पूजा सग्रह ।

२ बारहखडी सूरत ।

(३) पच मगल-रूपचन्द ।

(४) नेमिनाथ नवमगल—लालचन्द

र०काल स० १७४४ ।

४ नेमिनाथ का बारहमासा—विनोदीलाल ।

६७४४ गुटका स० १० । पत्र स० २३७ । आ० ६×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टन स० १६८ ।

विशेष—निम्न पाठ है—

१ प्रीत्यकर चोपई　　　　नेमिचन्द्र

२ राजाचन्द की कथा　　　　"

३ हरिवश पुराण　　　　र०काल स० १७६६ आसोज सुदी १०

६७४५. गुटका स० ११ । पत्रस० ८६ । आ० ७×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ ।

विशेष—सामान्य पूजाओ का सग्रह हैं । ४३ से आगे पत्र खाली हैं ।

६७४६. गुटका स० १२ । पत्र स० ६४ । आ० ६×४½ इच । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १७० ।

१ आदित्यवार कथा　　—　　अपूर्ण

२. शनिश्चर कथा　　—

३, विष्णु पजर स्तोत्र　　—

६७४७ गुटका स० १३ । पत्रस० १२८ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १७१ ।

६७४८ गुटका स० १४ । पत्रस० ११६ । आ० ५½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दो । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७२ ।

विशेष—प्रतिष्ठा पाठ (हिन्दी) । सवत् १८६१ (जयपुर) तक की प्रतिष्ठाओ का वर्णन तथा श्रावक की चौरासी क्रिया आदि अन्य पाठ भी हैं ।

६७४६. गुटका स० १५ । पत्र स० ६६ । ग्रा० ५×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टनस० १७३ ।

विशेष—भक्तामर सटीक (श्वे०) । महापुराण सक्षिप्त–गगाराम । विवेक छत्तीसी तथा चैत्य वदना ।

६७५०. गुटका सं० १६ । पत्र स० ५० । ग्रा० ४×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । ग्रपूर्ण ।वेष्टन स० १७४ ।

विशेष—जिन सहस्रनाम, परमानन्द स्तोत्र, स्वयभूस्तोत्र एव समाधिमरण ग्रादि का सग्रह है ।

६७५१. गुटका सं० १७ । पत्र स० ३४ । ग्रा० ७×६ इञ्च । भापा–हिन्दी–सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७५ ।

विशेष—सम्मेदाचल पूजा गगाराम कृत, गिरनार पूजा तथा मागीतु गी पूजा ग्रादि का सग्रह है ।

६७५२. गुटका सं० १८ । पत्र स० ११५ । ग्रा० ७½×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७६ ।

विशेष—गोम्मटसार, क्षपणासार, लब्धिसार मे से प० टोडरमल एव रायमल्ल जी कृत चर्चाग्रो का सग्रह है ।

६७५३. गुटका स० १६ । पत्रस० ८६ । ग्रा० ६×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी–सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १७७ ।

विशेष—नित्य नियम पूजा सग्रह है ।

६७५४ गुटका सं० २० । पत्र स० २० । ग्रा० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १८६५ ग्रासोज सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १७८ ।

विशेष—इष्ट पिचावनी रघुनाथ कृत तथा ब्रह्म महिमा ग्रादि कवित्त है ।

६७५५. गुटका सं० २१ । पत्र स० ६६ । ग्रा० ८×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७६ ।

विशेष—नित्यनियम पूजा सग्रह, सूरत की बारह खडी, बारहभावना ग्रादि का सग्रह है ।

६७५६. गुटका स० २२ । पत्र स० २४८ । ग्रा० ६½×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १८० ।

विशेष—निम्न मुख्य पाठ हैं—

१. उपदेश शतक	द्यानतराय ।	र०काल स० १७५८
२. सबोघ ग्रक्षर बावनी	"	
३. घर्मपच्चीसी	"	
४. तत्वसार	"	
५ दर्शन शतक	"	
६. ज्ञान दशक	"	
७ मोक्ष पच्चीसी	"	

८. कवि सिंह सवाद   द्यानतराय

९ दशस्थान चौवीसी   ,,

विशेष द्यानतराय कृत धर्मविलास मे से पाठ हैं।

९७५७ **गुटका स० २३**। पत्र स० ६०। आ० ६×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १८१।

विशेष—सामान्य पूजाओ का सग्रह है।

९७५८ **गुटका स० २४**। पत्रस० २८। आ० ८½×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी-सस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १८२।

विशेष—आदित्यवार कथा, भक्तामर स्तोत्र एव तत्वार्थ सूत्र का सग्रह है।

९७५९ **गुटका स० २५**। पत्रस० ४४। आ० १०½×५½ इञ्च। भाषा—हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १८३।

१. तत्वार्थ सूत्र भाषा पद्य   छोटीलाल।

२ देव सिद्ध पूजा   ×

९७६० **गुटका स० २६**। पत्रस० ७४। आ० ८½×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० १८४।

विशेष—वनारसी विलास मे से पाठो का सग्रह है। जैन शतक भूधरदास कृत भी है। इसके अतिरिक्त सामान्य पाठो एव पूजाओ का सग्रह है।

९७६१. **गुटका स० २७**। पत्र स० १०५। आ० ८×६ इच। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० १५८।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र भाषा, बाईस परीषह एव कल्याण मन्दिर स्तोत्र भाषा आदि का सग्रह है।

९७६२. **गुटका स० २८**। पत्रस० १३३। आ० ११×७½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ८६।

विशेष—पूजा एव स्तोत्रो का सग्रह है।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन दीवानजी मंदिर भरतपुर।

९७६२. **गुटका स० १**। पत्र स० २८। भाषा—सस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। दशा सामान्य। वेष्टन स० १।

९७६३. **गुटका सं० २**। पत्र स० ३०। साइज ×। भाषा—सस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २।

विशेष—प्रथम गुटके मे आये हुये पाठो के अतिरिक्त पार्श्वनाथ स्तोत्र, घटाकर्ण मत्र तथा ऋषिमडल स्तोत्र आदि का सग्रह है।

६७६४. गुटका सं० ३ । पत्रस० २६१ से ३२३ तक । भाषा–सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३ ।

विशेष—स्तोत्र, तत्वार्थ सूत्र आदि हैं ।

६७६५. गुटका सं० ४ । पत्र स० १५ । भाषा–सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६ ।

विशेष—देवपूजा तथा सिद्ध पूजा है ।

६७६६. गुटका स० ५ । पत्रस० ६७ । भाषा–सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २५ ।

विशेष—गुटका खुले पत्रो मे है तथा स्तोत्र तथा पूजाओ का सग्रह है ।

६७६७. गुटका स० ६ । पत्रस० १६७ । भाषा––हिन्दी–सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २६ ।

६७६८ गुटका स० ७ । पत्र स० २४२ । भाषा हिन्दी–सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३ ।

विशेष—गुटके मे विषय-सूची प्रारम्भ मे दी गई है तथा पूजा पाठ आदि का सग्रह है ।

६७६९ गुटका स० ८ । पत्र स० ६४ । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३५ ।

६७७०. गुटका सं० ९ । पत्र स० १०६ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ ।

६७७१. गुटका सं० १० । पत्रस० १३५ । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३७ ।

६७७२. गुटका सं० ११ । पत्र स० १७३ । भाषा–हिन्दी । ले०काल स० १८२४ भादो सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३९ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है ।

(१) पद सग्रह (जगराम गोदीका)
(२) समवशरण मगल (नथमल रचना स० १८२१ लेखन स० १८२३)
(३) जैन वद्री की चिट्ठी (नथमल)
(४) फुटकर दोहा (नथमल)
(५) नेमीनाथजी का काहला (नथमल)
(६) पद सग्रह (नथमल)
(७) भूधर विलास (भूधरदासजी)
(८) बनारसी विलास (बनारसीदासजी) । आशाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

६७७३. **गुटका स० १२** । पत्रस० ५८। भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४० ।

विशेष—(१) सभाभूषण ग्रथ—(गगाराम) पद्य सख्या ६४ । रचना काल-१७४४ ।
(२) पद सग्रह-(हेतराम) विभिन्न राग रागनियो के पदो का सग्रह है ।

६७७४. **गुटका स० १३** । पत्रस० १६० । भाषा-सस्कृत । ले०काल स० १७७६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४५ ।

विशेष—पूजाओ का सग्रह है ।

६७७५. **गुटका स० १४** । पत्रस० ७६ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४६ ।

विशेष—(१) चौवीस ठाणा चर्चा ।
(२) चौवीस तीर्थंकरो के ६२ ठाणा चर्चा ।

६७७६. **गुटका स० १५** । पत्रस० ११८ । भाषा-हिन्दी । र०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५० ।

विशेष—इन्द्रगढ मे प्रतिलिपि की गई थी । समयसार (वनारसीदासजी) भी है ।

६७७७. **गुटका स० १६** । पत्रस० ५२ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७ ।

६७७८. **गुटका स० १७** । पत्रस० १६ । भाषा-हिन्दी । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टन स० ८ ।

विशेष—शनिश्चर की कथा दी हुई है ।

६७७९. **गुटका स० १८** । पत्रस० ८५ । भाषा-हिन्दी । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टन स० २१ ।

विशेष—बुधजन सतसई, पद व वचन वत्तीसी है ।

६७८०. **गुटका सं० १९** । पत्रस० १६३ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २५ ।

विशेष—पूजा पाठ व कथा-सग्रह है ।

६७८१ **गुटका स० २०** । पत्रस० ८० । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । × । ले०काल। × । पूर्ण । वेष्टनस० २५ ।

विशेष—पूजा पाठ आदि सग्रह है ।

६७८२. **गुटका स० २१** । पत्रस० ८२ । भाषा-हिन्दी । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टनस० २६ ।

विशेष—रत्नकरण्ड श्रावकाचार भाषा वचनिका है ।

६७८३ **गुटका स० २२** । पत्र स० १०१ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २७ ।

विशेष—चर्चा वगैरह हैं ।

६७८४. **गुटका सं० २३।** पत्रस० २७०। भाषा–हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० २८।

विशेष—पूजा पाठ स्तोत्र आदि है।

६७८५. **गुटका स० २४।** पत्रस० ४७। भाषा–हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० २९।

विशेष—अक्षर बावनी, ज्ञान पच्चीसी, वैराग्य पच्चीसी, सामायिक पाठ, मृत्यु महोत्सव आदि के पाठ हैं।

६७८६ **गुटका सं० २५।** पत्रस० ४३। भाषा–हिन्दी। विषय-सग्रह। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ३१।

विशेष—चेतन कर्म चरित्र है।

६७८७. **गुटका स० २६।** पत्रस० २ से २६९। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० ३२।

विशेष—भूधरदास, जिनदास, नवलराम, जगतराम आदि कवियो के पदो का सग्रह है।

६७८८ **गुटका स० २७।** पत्र स० ६७ से २२३। भाषा–हिन्दी। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ३४।

विशेष—पद, स्तोत्र, पूजादि का सग्रह है।

६७८९. **गुटका स० २८।** पत्र स० १०३। भाषा–प्राकृत। ले०काल स० १६०१। पूर्ण। वेष्टन स० ३५।

विशेष—परमात्म प्रकास, परमानन्द स्तोत्र, बावनाक्षर, केवली, लेश्या आदि पाठो का सग्रह है।

६७९०. **गुटका स० २९।** पत्र स० २२७। भाषा–हिन्दी। ले० काल स० १९३०। पूर्ण। वेष्टनस० ४६।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ हैं।

६७९१. **गुटका सं० ३०।** पत्र स० ३७५। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ४७।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ, पचस्तोत्र एव जैन शतक आदि हैं।

६७९२. **गुटका स० ३१।** पत्रस० ७२। भाषा–हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५०।

विशेष—देव पूजा भाषा–टीका जयचन्द जी कृत है।

६७९३. **गुटका स० ३२।** पत्रस० ३२। भाषा–हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५१

विशेष—देव पूजा तथा भक्तामर स्तोत्र है।

६७९४. **गुटका स० ३३।** पत्र स० २९। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५२।

विशेष—पूजन सग्रह है।

९७९५. **गुटका स० ३४** । पत्र स० २ से ३९ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५३ ।

विशेष—नित्य पूजा सग्रह है ।

९७९६. **गुटका स० ३५** । पत्रस० ४८-१३५ । भाषा—हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५८ ।

विशेष—जिन सहस्रनाम एव पूजा पाठ हैं —

९७९७. **गुटका स० ३६** । पत्रस० ७१ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५४ ।

विशेष—जिन सहस्रनाम स्तोत्र-ग्राशाधर, षोडष कारण पूजा, पचमेरु पूजाए है ।

९७९८. **गुटका स० ३७** । पत्र स० १४३ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५५ ।

विशेष—पचमगल-रूपचन्द । सिद्ध पूजा अष्टाह्निका पूजा, दशलक्षण पूजा, स्वयभू स्तोत्र, नवमगल नेमिनाथ, श्रीमधर जी की जखडी—हरष कीर्त्ति । परम ज्योति, भक्तामर स्तोत्र आदि है ।

९७९९. **गुटका स० ३८** । पत्रस० २४० । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५६ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ, सम्मेदाचल पूजा, चौवीस महाराज पूजा, पच मगल, व्रत कथा व पूजाए है ।

९८००. **गुटका स० ३९** । पत्र स० २२३ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५७ ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र, मगल, पूजा, पच परमेष्ठी पूजा, रत्नत्रय पूजा, आदित्यवार कथा, राजुल पच्चीसी आदि पाठ हैं ।

पद—१-मक्सी पारसनाथ—भागचन्द ।
२-प्रभु दर्शन का मेला है—वलिभद्र ।
३-मै कैसी करु साजन मेरा प्रिया जाता गढ गिरनार—इन्द्रचन्द्र ।
४-सेवक कू जान कै—लाल ।
५-जिया परलोक सुधारो—किशनचन्द्र ।
६-आगे कहा करसी भैया जव आजासी काल रे—वुधजन ।

९८०१. **गुटका स० ४०** । **विशेष**—सत्रा शृ गार है ।

अन्तिम पाठ—

भाषा करी नाम समाभूपन गिरथ कह लीजिए ।
यामे रागरागिनी की जात समै यह ते तान
ताल ग्राम सुरगुनी सुनि रीझिऐ ।
गगाराम विनय करत कवि कान सुनि वरनत
भूले तो सुधारि कीजिए ।

दोहा

सत्रह सत मवत् सरस चतुर अधिक चालीस ।
कातिक सुदि तिथि अष्टमी वार सरस रजनीस ।।६२।।
सागानेर सुथान मे रामसिंह नृपराज ।
तहा कविजन वचपन मे राजति समा समाज ।।६३।।
गगाराम तह सरस कार्य कीनो बुधि प्रकास ।
श्री भगवत प्रसाद ते इह सुभ सभा विलास ।।६४।।

इति सभा सृ गार ग्र थ सपूरन ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

६८०२. गुटका स० १ । पत्र स० १३–१४३ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३४ ।

विशेष—पदो का सग्रह है । मुख्यत जग्गाराम के पद है । अ त मे हरच द सघी कृत चौवीस महाराज की वीनती है ।

आतम विन सुख और कहा रे ।
कोटि उपाय करो किन कोउ, विन ग्यानी नही जात लहारे ।
भव विरकत जोगी सुर हैगें, जिहि ये थिरवि चिराचिर हारे ।
वरनन करि कहो कैसे कहिऐ, जिसका रूप अनूपम हारे ।
जिहि दे पाये विन ससारी, जग अन्दर विचि जात वहारे ।
जिहि दे वल करि कै पाडव नै घोर तपस्या सकल सहारे ।
जिहि दे भाव अरथ उर कीना, जो पर सेती नाहि फस्यारे ।
कहे दीप नर तेही धन्य है जिस दानौउ सदा रूप चहारे ।।आतम।।

६८०३. गुटका स० २ । पत्रस० ४३ । भाषा-प्राकृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३०६ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं ।

१ द्रव्य-सग्रह—हिन्दी टीका सहित
टीकाकार वशीधर है ।

२. तपोद्योतक सत्तावनी, द्वादशानुप्रेक्षा,
पच मगल ।

६८०४. गुटका सं० ३ । पत्रस० ७६ । भाषा-सस्कृत । ले० काल स० १६०७ । पूर्ण । वेष्टन स० २८४ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक ५२ पूजाओ का सग्रह है । इनमे नवसेना विधान, दस दान, मतमतार दर्शनाष्टक आदि भी हैं ।

९८०५. **गुटका स० ४** । पत्रस० १९० । भाषा–हिन्दी । ले०काल स० १९२६ । पूर्ण । वेष्टन २७४ ।

विशेष—७५ पाठो का सग्रह है जिनमे अधिक स्तोत्र सग्रह है । कुछ विनती तथा साधारण कथाऐ कुछ उल्लेखनीय पाठ निम्न प्रकार हैं ।

१ कलियुग कथा—रचयिता, पाडे केशव, ज्ञान भूषण के उपदेश से । भाषा हिन्दी पद्य ।

२ कर्म हिंडोलना—रचयिता—हर्षकीर्ति । भाषा–हिन्दी पद्य ।

पद—

साधो छाडो कुमति अकेली, जाके मिथ्या सग सहेली ।
साधो लीज्यो सुमति अकेली, जाके समता सग सहेली ।

वह सात नरक   यह अभयदायक ।।१।।
यह आगे क्रोध यह दरसन निरमल जिन भाषित धर्म बखाने ।।२।।

यह सुमति तनो व्यवहार चित चेतो ज्ञान सभाए ।
यह कवल कीरति गति गावै भवि जीवन के मन भावै ।

पत्र १४७ मालीरासा—

गव तरु सीच हो मालिया, तिह् चरु चारु सुढाल ।
चिहैं डाली फल जुव जुवर, ते फल राखय काल रे ।
प्रानी तू काहे न चेत रे ।।१।।

काल कहै मुनि मालिया, सीच जु माया गवार ।
देखत ही को होडा होड है, भीतर नही कुछ सार रे । ६।।

×   ×   ×   ×   ×

काया कारी हो कन करै वीज सुदेशन नोप ।
सील सुकरना मालिया, धरम अकुरो होय रे प्राणी ।
गहि वैराग कुदाल की, खोदि सुचारत कूप ।
भाव रहट वृत वोलि छट काधे श्रुत जूपरे ।।१७।।

×   ×   ×   ×

धरम महा तरु विरध तो, वहु विस्तार करेय ।
अविनासी सुख कारने, मोख महाफल देव रे ।
कहै जिनदास सुराखियो हसत वीज सुभाल ।
मन वाञ्छित फल लागसी, किस ही भव भव कालरे ।।२६।।

पत्र १६३ से १८१ तक पत्ती से काट कर ले जाये गये हैं ।

निम्न पाठ नहीं हैं—

ऋषभदेव जी की स्तुति, वहत्तरि सीख, अष्ट गव की विधि यत्र, नामावली, मुहूर्त्त, सरोधा, दिल्ली की जन्म पत्रिका ।

यह पुस्तक स० १९३१ मे वछलीराम रामप्रसाद कासलीवाल वैर वाले ने भरतपुर के मदिर मे चढाई ।

९८०६. गुटका स० ५ । पत्रस० २०२ । भापा–सस्कृत-हिन्दी । ले०काल स० १८८२ । पूर्ण । वेष्टन स० २६७ ।

विशेष – नित्य पूजा पाठ हैं । पत्र १०३ से १९९ तक वहुत मोटे अक्षर हैं । पोडप कारण तथा दशलक्षण जयमाल हैं । प्राकृत गाथाओ के नीचे सस्कृत अर्थ है । ३५ पाठो का सग्रह है ।

९८०७ गुटका स० ६ । पत्र स० ७५९ । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७२ ।

विशेष—१२० पाठो का सग्रह है । अक्षर सुन्दर तथा काफी मोटे हैं । प्रारम्म मे पूजा प्राकृत तथा विनोदी लाल कृत मगल पाठ है । प्रारम्भ मे विषय सूचना भी दी हुई है । नित्य नैमित्तिक पाठो के अतिरिक्त निम्न पाठ और हैं—

भजन—जगतराम, नवलजी, जोधराज, द्यानतराय जी आदि के पद तथा टोडरमल कृत दर्शन तथा शिक्षा छन्द ।

९९०८ गुटका स० ७ । पत्रस० ६९ । भापा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २६५ ।

विशेष—निम्न सग्रह हैं—

पार्श्वनाथ स्तोत्र, सिद्ध पूजा, भक्तामर स्तोत्र, सस्कृत तथा भापा, कल्याण मन्दिर स्तोत्र, भापा द्वादशानुप्रेक्षा, त्रिलोकसार भापा-रचना सुमति कीर्ति, र०काल १६२७ ।

छहढाला—द्यानतराय । र०काल १७५९ ।

समाधिमरण

९८०९. गुटका स० ८ । पत्रस० ३१६ । भापा-हिन्दी । ले०काल स० १८८५ । पूर्ण । वेष्टनस० २६६ ।

विशेष—४९ पाठो का सग्रह है । सव नित्य पाठ ही हैं । जोधराज जी कासलीवाल कामा वालो ने लिखाई । अक्षर वहुत मोटे हैं एक पत्र पर आठ लाइन हैं तथा प्रत्येक लाइन मे १३ अक्षर हैं । एक टोडर मल कृत दर्शन भी है जो गद्य मे है ।

९८१०. गुटका सं० ९ । पत्रस० १७० । भापा-हिन्दी । ले०काल स० १७८५ । पूर्ण । वेष्टनस० २६३ ।

विशेष—निम्न सग्रह हैं—

(१) तत्वार्थ सूत्र टीका—पत्र १०२ तक । रचयिता—अज्ञात ।

(२) अनित्य पच्चीसी—भगवतीदास

(३) ब्रह्मविलास—भगवतीदास—पत्रस० ६९ । र०काल स० १७५५ ।

९८११. गुटका स० १० । पत्रस० १४६ । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २६४ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठो का सग्रह है । मोक्ष शास्त्र के प्रारम्भ मे भगवान का एक सुन्दर चित्र है । चित्र मे एक ओर गोडी डाले हाथ जोडे मुनि तथा दूसरी ओर इन्द्र हैं ।

९८१२ गुटका स० ११ । पत्रस० १०८ । भाषा–सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २१५ ।

विशेष—भरतपुर मे लिखा गया था । पद्मावती स्तोत्र, चतु षष्टि योगिनी स्तोत्र, लक्ष्मी स्तोत्र, परमानन्द स्तोत्र, णमोकार महिमा, यमक वध स्तोत्र, कष्ट नाशक स्तोत्र, आदित्यहृदय स्तोत्र आदि पाठो का सग्रह है ।

९८१३ गुटका स० १२ । पत्रस० ४२३ । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १८०० । पूर्ण । वेष्टनस० १७८ ।

विशेष—

(१) पद्म पुराण—खुशाल चन्द । पत्रस० १३९ । र०काल १७८३ । पूर्ण ।

(२) हरिवश पुराण—खुशालचन्द । पत्रस० १०१ ।

(३) उत्तरपुराण—खुशालचन्द । पत्रस० १८३ । र०काल स० १७९९ ।

९८१५. गुटका सं० १३ । पत्र स० ३४६ । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४८ ।

विशेष—गुटके मे निम्न पाठ है ।

१. ब्रह्मविलास	भगवतीदास ।	पत्र स० १३३ ले०काल स० १७९३ चैत्र शुक्ला १० ।
२ पद ४	—	पत्र स० १३४ से १३६
३. बनारसी विलास	बनारसीदास ।	पत्र स० १४१–२०६ तक । ले०काल स० १८१८ कार्तिक सुदी ६ ।
४. समयसार नाटक	बनारसीदास ।	पत्र स० १ से १२७ तक
५ पद सग्रह	—	पत्र स० १ से १७ तक मुख्य रूप से हर्षचन्द के पद हैं ।

पद सुन्दर है—

निजनन्दन हुलरावै, वामादेवी निजनन्दन हुलरावै ।
चिरजीवो त्रिभुवन के नायक कहि कहि कठ लगावै ।।१।।

नील कमल दल अगमनोहर मुखदुतिचन्द डुरावै
उन्नतभाल विसाल विलोचन देखत ही वनि आवै ।।२।।

मस्तक मुकुट कान युग कुण्डल तिलक ललाट वनावै ।
उज्जल उर मुकताफल माला, उडगन मोहि तिहरावै ।।३।।

सुन्दर सहस अष्टोत्तर लक्षन अग गुन सुभग सुहावै ।
मुख मृदुहास दतदुति उज्जल आनन्द अधिक वढावै ।।४।।
जाकी कीरत तीन लोक मैं सुरनर मुनि जन गावै ।
सो मन हरषचन्द वामा दै, ले ले गोद खिलावै ।।५।।

अन्य पाठ सग्रह है—पत्र स० ३५

६८१६. गुटका सं० १४ । पत्रस० १३५ । भाषा-हिन्दो-सस्कृत । ले० काल स० १८०७ । पूर्ण । वेष्टन स० १२० ।

विशेष—जगतराम कृत १६५ पदो का सग्रह है । ६१ पत्र तक पद हैं । इसके वाद सिद्ध चक्र पूजा है ।

६८१७. गुटका स० १५ । पत्रस० २४६ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०७ ।

विशेष—पूजा भजन तथा पद आदि का सुन्दर सग्रह है ।

६८१८. गुटका सं० १६ । पत्र स० ३४३ । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १८८८ । पूर्ण । वेष्टनस० १०६ ।

६८१९. गुटका स० १७ । पत्रस० २६५ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०, ।

विशेष—पूजाओ तथा कथाओ आदि का सग्रह है ।

६८२०. गुटका स० १८ । पत्रस० ४० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०२ ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

६८२१. गुटका सं० १९ । पत्रस० ३१ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०३ ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

६८२२. गुटका सं० २० । पत्रस० ५६ । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४०३ ।

विशेष—हरिसिंह के पद हैं ।

६८२३ गुटका सं० २१ । पत्रस० ३९ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४०५ ।

विशेष—समाधि मरण तथा जिन शतक आदि हैं ।

६८२४. गुटका सं० २२ । पत्रस० २०० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४०६ ।

विशेष—बुधजन, हेतराम, भूधरदास, भागचन्द, विनोदीलाल, जगतराम आदि के पदो का सग्रह है ।

६८२५. गुटका स० २३ । पत्र स० ९ से १६० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३९७ ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—

१. कलियुग की कथा	हिन्दी	केशव पाण्डे
२ वारहखडी, अठारह नाते की कथा	हिन्दी	कमलकीर्ति

३ रामदास पच्चीसी	—	रामदास
४ मेघकुमार सिज्झाय	—	पूनो
५ कवित्त जन्म कल्याणक महोत्सव इसमे २९ पद्य है।	—	हरिचन्द
६ सूम सूमनी की कथा, परमार्थ जकडी	—	रामकृष्ण

९८२६. **गुटका स०** २४। पत्रस० ३० से २०९। भाषा-प्राकृत-हिन्दी। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० ३९८।

विशेष—मुख्य पाठ ये है।

पचेद्रिय वेलि	ठक्कुरसी।	भाषा-हिन्दी।
	रचना काल	स० १५८५। ले०काल ×। अपूर्ण।
प्रतिक्रमण ×।	प्राकृत।	रचना काल ×। ले०काल ×। पूर्ण।
मनोरथ माला	मनोरथ।	भाषा-प्राकृत। रचना काल ×। पूर्ण।
द्रव्य सग्रह	नेमिचन्द्राचार्य।	भाषा-प्राकृत। ले०काल ×। पूर्ण।

९८२७. **गुटका स०** २५। पत्र स० ५४। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३९९।

विशेष—राजुल पच्चीसी-विनोदीलाल, नेमिनाथ राजमति का रेखता—विनोदीलाल

९८२८. **गुटका स०** २६। पत्रस० ८३। ले० काल स० १८६०। पूर्ण। वेष्टन स० ४००।

विशेष—नित्य पूजा पाठ हैं।

९८२९. **गुटका स०** २७। पत्रस० ४०। भाषा हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४०१।

विशेष—सेढूराम कृत पद है।

९८३०. **गुटका स** २८। पत्र स० ९७। भाषा-हिन्दी-सस्कृत। ले०काल स० १८१४। पूर्ण। वेष्टन स० ४०२।

विशेष—नित्य पाठ तथा स्तोत्र सग्रह है। गूजरमल पुत्र मेघराज मोजमाबाद वाल की पुस्तक है।

९८३१. **गुटका स०** २९। पत्र स० ५०। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३५६।

विशेष—सामान्य पाठ हैं।

९८३२. **गुटका स०** ३०। पत्रस० ४८। भाषा—हिन्दी-सस्कृत,। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३५१।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र एव पूजा सग्रह है।

६८३३ गुटका स० ३१ । पत्र स० १० से ४० । भापा-हिन्दी सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३५२ ।

विशेष—स्तोत्र सग्रह है ।

६८३४. गुटका सं० ३२ । पत्र स० ६४ । भापा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३५३ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

६८३५. गुटका स० ३३ । पत्र स० ४६से१४३ । भापा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३४६ ।

विशेष—धार्मिक चर्चाऐ हैं ।

६८३६. गुटका स० ३४ । पत्रस० ४० । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३५० ।

विशेष—नवमगल (विनोदीलाल) पद्मावती स्तोत्र (सस्कृत) चक्रेश्वरी स्तोत्र (सस्कृत)

६८३७. गुटका स० ३५ । पत्र स० २३ । भापा-हिन्दी । ले० काल स० १९६६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४५ ।

विपय—वनारसीदास कृत जिन सहस्रनाम स्तोत्र है ।

६८३८. गुटका स० ३६ । पत्रस० २० । भाषा-हिन्दी । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४६ ।

६८३९. गुटका स० ३७ । पत्रस० १६ से । १२० । भापा-हिन्दी । ले०काल × पूर्ण । वेष्टन स० ३४८ ।

विशेष—श्वेताम्वरीय पूजाओ का सग्रह है । १०८ पत्र से पचमतपवृद्धि स्तवन (समय-सुन्दर) वृद्धि गोतम रास है ।

६८४०. गुटका सं० ३८ । पत्रस० १६ । भापा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३४२ ।

विशेष—दशलक्षण पूजा तथा स्वयम्भू स्तोत्र भाषा है ।

६८४१. गुटका स० ३९ । पत्रस० २५ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४३ ।

विशेष—कोई उल्लेखनीय पाठ नही है ।

६८४२. गुटका स० ४० । पत्रस० ४८ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × पूर्ण । वेष्टनम० ३४४ ।

६८४३ गुटका स० ४१ । पत्रस० १९ से ७० तक । भापा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३३९ ।

९८४४ गुटका स० ४२ । पत्र स० ७४ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४० ।

विशेष—५ पूजाग्रो का सग्रह है ।

९८४५ गुटका स० ४३ । पत्रस० ४७ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४१ ।

विशेष—धार्मिक चर्चाए हैं ।

९८४६ गुटका स० ४४ । पत्रस० ७ से ५७ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३३५ ।

विशेष—ब्रह्मरायमल्ल कृत सोलह स्वप्न किसनसिंह कृत अच्छादना पच्चीसी तथा सूरत की बारहखडी है ।

९८४७. गुटका स० ४५ । पत्रस० ७२ । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १८०९ मगसिर सुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन स० ३३६ ।

विशेष—सामान्य पाठ है ।

९८४७. गुटका स० ४६ । पत्र स० १८८ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७७२ ।

विशेष—पूजा पाठ एव पद सग्रह है ।

९८४८. गुटका स० ४७ । पत्र स० २०४ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७७३ ।

विशेष—छोटे २ भजन हैं ।

९८४९. गुटका स० ४८ । पत्र स० ३३ से ६० । भाषा–सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६६२ ।

९८५०. गुटका स० ४९ । पत्रस० २० । भाषा-प्राकृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६३१ ।

९८५१. गुटका स० ५० । पत्र स० ९५ । भाषा-हिन्दी । विषय–सग्रह । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५२१ ।

विशेष—विनोदीलाल कृत पद तथा नित्य पूजा पाठ हैं ।

९८५२. गुटका स० ५१ । पत्र स० ६० । भाषा–हिन्दी । विषय–सग्रह । र०काल × । ले०काल स० १९४४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५२५ ।

विशेष—सामान्य पाठ हैं ।

९८५३. गुटका स० ५२ । पत्र स० ५ से २२१ । भाषा–हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेप्टन स० ५०१ ।

विशेष—नित्य पूजा पाठो का सग्रह है । उल्लेखनीय पाठ निम्न प्रकार हैं ।

चतुर्विशति देवपूजा—सस्कृत

जोगीरास—जिनदास कृत

सज्जनचित्तवल्लभ—
श्रुतस्कव—भ० हेमचन्द्र ।
नवग्रह पूजा—सस्कृत
ऋषि मडल, रत्न त्रय पूजा—
चिन्तामणि जयमाल—राइमल
माला—इसमे वहुत से देशो के तथा नगरो के नाम गिनाये गपे हैं ।

६८५४. गुटका स० ५३ । पत्र स० १६-६३ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६६ ।

विशेष—पूजा सग्रह—दशलक्षरण जयमाल आदि है ।

६८५५ गुटका स० ५४ । पत्र स० ५० । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४६७ ।

६८५६. गुटका सं० ५५ । पत्रस० ४१ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४६८ ।

विशेष—नित्य पूजा, स्तोत्रादि भी हैं ।

६८५७ गुटका स० ५६ । पत्र स० २५ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६८७ ।

६८५८. गुटका स० ५७ । पत्रस० १८० । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल स० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६३ ।

विशेष—नित्यपूजा पाठ स्तोत्र आदि सग्रह है ।

६८५६ गुटका स० ५८ । पत्रस० १७-११३ । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल स० १८२४ । अपूर्ण । वेष्टन स० ४६४ ।

विशेष—पूजाओ का सग्रह है ।

६८६०. गुटका स० ५६ । पत्र स० १-२४ । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६५ ।

विशेष—पूजा पाठ आदि का सग्रह है । लालचन्द के मगल आदि भी हैं ।

६८६१ गुटका स० ६० । पत्र स० ४४ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल स० १५५६ । भादवा सुदी ५ । अपूर्ण । वेष्टन स० ४६१ ।

विशेष—निम्न सग्रह है—नित्य पूजा, चारित्र पूजा—नरेन्द्रसेन ।

६७६२ गुटका स० ६१ । पत्र स० ६६ से १६३ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८२

६८६३. गुटका स० ६२ । पत्रस० ३४ । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १८८१ माघ वदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ४८५ ।

६८६४ **गुटका स० ६३** । पत्र स० १७-६५ । भाषा—हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८६ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र, कल्याण मन्दिर स्तोत्र भापा स्तोत्र आदि है।

६८६५ **गुटका स० ६४** । पत्र स० ५८ । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४७३ ।

६८६६ **गुटका स० ६५** । पत्र स० ४४ । भापा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४८० ।

विशेष—कर्म प्रकृति, चतुर्विशति तीर्थकर वासीठस्थान, वावन ठाणा की चौपई, परमशतक (भगवतीदास) मान वत्तीसी (भगवतीदास) का सग्रह है।

६८६७ **गुटका स० ६६** । पत्रस० २६१ । भापा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल स० १५६३ मगसिर वदी २ पूर्ण । वेष्टनस० ४७१ ।

विशेष—सुभापितवलि, सारसमुच्चय, सिंघ की पापडी, योगसार, द्वादशानुप्रेक्षा चौवीस ठाणा, कर्मप्रकृति, भाव सग्रेह (श्रुतमुनि) सुभापित शतक, गुणस्थान चर्चा, अध्यात्म वावनी आदि का सग्रह है।

६८६८ **गुटका स० ६७** । पत्रस० । २६८ । भापा-प्राकृत-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४७२ ।

विशेष—पूजा सग्रह है।

६८६९ **गुटका स० ६८** । पत्रस० ६८ । भाषा-प्राकृत-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४६५ ।

विशेष—सामायिक पाठ, पूजा पाठ, स्तोत्र आदि का सग्रह है।

६८७० **गुटका स० ६९** । पत्रस० ३८ । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४५९ ।

६८७१ **गुटका स० ७०** । पत्रस० ३६० । भापा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ४६२ ।

विशेष—पूजा पाठ एव पद सग्रह है।

६८७२. **गुटका स० ७१** । पत्रस० १६४ । भापा-प्राकृत-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४६४ ।

विशेष—पडभक्ति, भावना वत्तीसी, आणदा । गीतडी आदि पाठो का सग्रह है।

६८७३. **गुटका स० ७२** । पत्र स०३४० । भापा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५६ ।

विपय-सूची	कर्त्ता का नाम	भापा	**विशेष**
घटाकर्ण मत्र	—	सस्कृत	(पद्य ७)
देवपूजा ब्रह्मजिनदास	—	,,	
शास्त्र पूजा ,, ,,	—	,,	

जिनशतक	भूधरदास	हिन्दी	
अठारह नाता का चौढाल्या		,,	
अक्षर वावनी	दौलतराम	,,	
वैराग्य उपजावन अग	चरनदास	,,	१०७
दानशील तप भावना	समयसुन्दर	,	
भैरवपूजा	—	,,	
लोहरी दीतवार कथा	भानुकीर्ति रचना १६७२	,,	
भडली वचन	ले०काल १८२८	,,	
निपट के कवित्व	—	,,	
ज्ञानस्वरोदय	चरनदास	,,	
सवद	—	,,	
पद व स्तुति सग्रह	—	,,	
सामुद्रिक	र०काल स० १६७८	,,	पद्य २४७
आदित्यवार कथा	भाउ कवि	,,	
जीवको सिज्झाय	—	,,	
पद व भजन सग्रह	—	,,	

६८७४. गुटका स० ७३ । पत्रस० ७२ । भापा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४५० ।

विशेष—भक्तामर ऋद्धि स्तोत्र मत्र सहित, सूरत की वारहखडी, पूजा सग्रह, भरतबाहुवलि रास (२८ पद्य) आदि पाठ हैं ।

६८७५ गुटका सं० ७४ । पत्र स० ३७ । भापा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४५२ ।

विशेष—पूजा सग्रह है ।

६८७६. गुटका स० ७५ । पत्र स० १०१ । भापा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४०८ ।

६८७७ गुटका स० ७६ । पत्र स० २३ । भापा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४१६ ।

विशेष—ज्ञान चिन्तामणि 'मनोहरदास' जैन वारहखडी, 'सूरत' लघु वारहखडी 'कनक कीर्ति' । वैराग्य पच्चीसी, धर्मपच्चीसी, कलियुग कथा, जैन शतक, राजुल पच्चीसी, वहत्तर सीख आदि हैं ।

६८७८. गुटका स० ७७ । पत्र स० १५० । भापा- × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८०० ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ सग्रह है ।

६८७६. गुटका स० ७८। पत्रस० ७०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ८०१।

विशेष—चौरासी गोत्र आदि का वर्णन हैं।

६८८०. गुटका स० ७६। पत्रस० १५६। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ७६६।

६८८१. गुटका स० ८०। पत्र स० ७०। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७६७।

विशेष—साधारण पाठ एव पूजाए है।

६८८२. गुटका स० ८१। पत्रस० १५०। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ७६६।

६८८३. गुटका स० ८२। पत्रस० ६६। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले०काल स० ×। पूर्ण। वेष्टनस० ७८६।

विशेष—स्तोत्र व पूजा पाठ सग्रह है।

६८८४ गुटका स० ८३। पत्रस० ७७। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ७६०।

विशेष—पूजा, स्तोत्र आदि का सग्रह है।

६८८५ गुटका स० ८४। पत्रस० ८७। भाषा-हिन्दी। ले०काल स० १८१८। पूर्ण। वेष्टनस० ७६१।

विशेष—पत्र ६२ तक जैन शतक (भूधरदास) तथा ६३-८७ तक बलभद्र कृत नखसिखवर्णन दिया हुआ है।

६८८६. गुटका स० ८५। पत्रस० २२६। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ७८६।

विशेष – पूजा सग्रह है।

६८८७. गुटका स० ८६। पत्रस० ४६। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ७८७।

६८८८. गुटका स० ८७। पत्रस० ११४। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ७८८।

विशेष—पद, स्तोत्र एव पूजाओ का सग्रह है।

६८८६. गुटका स० ८८। पत्रस० २७०। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ७८३।

विशेष—पाठो का अच्छा सग्रह है।

६६०० गुटका स० ८६। पत्रस० १५५। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले०काल स० १६२१। पूर्ण। वेष्टन स० ७८४।

विशेष—पूजा सग्रह है।

६८६१. गुटका सं० ६० । पत्रस० १८२ । भापा हिन्दी । ले०काल X । पूर्ण। वेष्टन स० ७८५ ।

विशेष—पूजा सग्रह है ।

६८६२. गुटका सं० ६१ । पत्रस० १८० । भापा-हिन्दी । ले०काल स० १८२३ । पूर्ण । वेष्टनस० ७८० ।

विशेष—चतुर्विशति जिन स्तुति,

जिनवर सात बोल स्तवन-जसकीर्ति ।
उपधान विधि स्तवन-साधुकीर्ति ।
सिज्झाय-जिनरग ।
नणद भोजाई गीत-आनन्द वर्द्धन ।
दिगम्बरी देव पूजा-पोमह पाडे ।
कम्मण विधि-रतनसूरि ।
समीणा पार्श्वनाथ स्तोत्र, भानुकार्ति स्थूलभद्र रासो उदय रतन ।
कलावती सती सिज्झाय तथा मेरू सवाद ।

६८६३ गुटका स० ६२ । पत्र स० १४२ । भापा-हिन्दी । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स ० ७७८ ।

विशेष—पद सग्रह सिज्झाय, अर्बुदाचल तीर्थ स्तवन, सवत् १८२६ पौष बुदी ११ से १८३१ माघ बुदी ६ तक की यात्रा का व्यौरा, गौडी पार्श्वनाथ स्तवन, सिद्धाचल स्तवन ।

६८६४ गुटका स० ६३ । पत्र स० २ से १६। भापा-हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० ७७६ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

६८६५. गुटका स० ६४ । पत्र स० २० । भापा-हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० ७७६ ।

विशेष—ज्ञानकल्याण स्तवन तथा चर्चा है ।

६८६६ गुटका सं० ६५ । पत्र स० ८४ । भापा-हिन्दी । ले० काल X ।पूर्ण । वेष्टन स०

विशेष—दानशील तप भावना आदि पाठो का सग्रह है । समयसुन्दर । सिद्धाचल स्तवन, आनन्द रास, गौतम स्वामी रास, विजयभद्र पार्श्वनाथ स्तवन-विजय वाचक । कल्याण मन्दिर भापा-बनारसीदास । क्षमा छत्तीसी-समय सुन्दर ।

६८६७. गुटका स० ६६ । पत्रस० २३६ । भापा-हिन्दी । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ७७४ ।

विशेष—छोटे २ पदो का सग्रह है ।

६८६८. गुटका सं० ६७ । भापा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल X । अपूर्ण । वेष्टनस० ७७५ ।

विशेष—पूजा पाठ आदि हैं ।

प्राप्ति स्थान — दि० जैन पंचायती मन्दिर (बयाना)

६८६६. गुटका स० १ । पत्रस० ३१२ । आ० ६×६ इन्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५० ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है ।

१ भक्तामर स्तोत्र	—	सस्कृत हिन्दी	

विशेष—जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२, पद	लक्ष्मणदास	हिन्दी	४ अतरे
	राजमति सुनु हो रानी		
पद	घनश्याम	,,	३ अतरे
	जपरथ दूर गयो जब चेती	,,	—
अठारह नाते का चौढाल्या	लोहट	,,	—
तीस चौबीसी के नाम	—	,,	६६–६० पत्र
तथा चौपई	—	,,	र०काल स० १७४६
			ले०काल स० १८०६

विशेष—

अन्तिम—पद्य निम्न प्रकार है—

नाम चौपई ग्र थ मे रच्यो नाम दाम विस्याम ।
जैसराज सुत ठोलिया जोबिनपुर सुभथान ।
सत्तरासै उनचास मे प्ररण ग थ सुभाय ।
चैत्र उजासनी पचमी विजैसिंह नृपराय ।
एक वार जो सरधहै अथवा करमी पाठ ।
नरक नीच गति कै विषै रोपै कीली गाढ ।

इति श्री तीस चौवई नाम ग्र थ समाप्ता । रूपचन्दजी विजैरामजी विनायक्या कासली के ने प्रतिलिपि की थी ।

नेमजी की डोरी	ब्र० नाथु	हिन्दी	७६
पावापुर गीत	अखैराम	,,	७६
सालिभद्र चौपई	जिनराजसूरि	,,	१०८

र०काल स० १६७८ आसोज सुदी ६ ले०काल स० १८०३ भादवा बुदी ११ ।

जयपुर के पाश्वनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी । विजैराम कासली के ने प्रतिलिपि की थी ।

मेघकुमार गीत	पूनो	हिन्दी	१०२
नन्दू की सप्तमी कथा	—	,,	१०३
आदित्यवार	भाऊ	,,	११६

वन्ना चउपई	—	,,	१२५
नित्य पूजा पाठ	—	,,	—
नेमिश्वर रास	ब्र० रायमल्ल	,,	१७५
वन्ना सज्झाय	त्रिलोकप्रसाद	हिन्दी	१८२
		ले०काल स० १८०१	
मृगीसवाद	—	,,	
		र०काल स० १६६३	

सवत सोलसै त्रेसठे चैत्र सुदि रविवार।
नवमी दिन काला भावस्यौ रास रच्यौ सुविचार।
विजागच्छ माडणपुर वास सूरदेव राज।
श्री घननदन दिने हुई सुमीस मुकाज।

इति मृगी सवाद सपूर्ण।

चौरासी जाति की उत्पत्ति	—	हिन्दी	२०१
श्रीपाल रास	ब्र० रायमल्ल	,,	२३२
पच मगल	रूपचन्द	,,	२३४
जन्म कुण्डली	—		

१. साह रूपचन्द के पौत्र तथा टेकचन्द के पुत्र की स० १८२५ का
२ साह टेकचन्द की पुत्री (मानवाई) की स० १८२६ की।

प्रद्युम्न रासो	ब्र० रायमल्ल	,,	२८३
	र०काल स० १६२८ ले०काल स० १८०७		

प० रुडमल ने प्रतिलिपि की थी।

भविष्यदत्त कथा	ब्रह्म रायमल्ल	हिन्दी	३१२ अपूर्ण

६६००. गुटका स० २। पत्रस० १६६। आ० ६½×४ इच। भाषा-सस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १४८।

विशेष—सामान्य पूजा पाठो का सग्रह है।

६६०१. गुटका सं० ३। पत्रस० ८०। आ० ६½×४ इञ्च। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण-जीर्ण। वेष्टन स० १४६।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है।

६६०२. गुटका स० ४। पत्रस० ७३। आ० ६×५½ इञ्च। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १४७।

विशेष—निम्न पूजाओ का सग्रह है—

वृहत् सिद्ध पूजा	शुभचन्द	सस्कृत	१-४६
अष्टाह्निका पूजा	—	,,	५०-७३

६६०३. गुटका स० ५ । पत्रस० ३६ । आ० ६ × ७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १४५ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है ।

स्तुति अर्हंत देव	वृन्दावन	हिन्दी	पत्र १-१६
मगलाष्टक	,,	,,	१७-१६
स्तवन	,,	,,	१६-२५
मरहठी	,,	,,	२६-२६
जम्बूस्वामी पूजा	,,	,,	३०-३६

६६०४. गुटका स० ६ । पत्रस० २८ । आ० ५½ × ३½ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४३ ।

विशेष—जैन गायत्री विधान दिया हुआ है ।

६६०५ गुटका स० ७ । पत्र स० ८४ । आ० ७ × ५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १४० ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

६६०६ गुटका स० ८ । पत्रस० २४ । आ० ५ × ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४२ ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

६६०७. गुटका स० ६ । पत्र स० ६३ । आ० ७½ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १४० ।

विशेष—सामान्य पूजा एव अन्य पाठो का सग्रह है ।

६६०८ गुटका स० १० । पत्रस० ७-१४० । आ० ४¾ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १३७ ।

विशेष—नित्य पूजाओ का सग्रह है ।

६६०६ गुटका स० ११ । पत्र स० ८१ । आ० ५ × ३½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३८ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है—

कल्याणमन्दिर स्तोत्र भाषा	बनारसीदास	हिन्दी	—
जिनसहस्रनाम स्तोत्र	जिनसेनाचार्य	सस्कृत	—
भक्तामर स्तोत्र	मानतुगाचार्य	,,	—

६६१० गुटका स० १२ । पत्र स० ३० । आ० ६½ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३६ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

जम्बूस्वामी पूजा	जगतराम	हिन्दी	१-१३

चमत्कारजी पूजा	—	हिन्दी	१३-१६
रोटतीज व्रत कथा	चुन्नीलाल वैनाडा	,,	१८-२६
			र० काल स० १६०६

विशेष—कवि करौली के रहने वाले थे।

६६११. गुटका सं० १३ । पत्रस० ८१ । ग्रा० ८½×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० १३४।

विशेष—निम्न पूजाग्रो का सग्रह है—

चौवीस महाराज पूजा	रामचन्द्र	हिन्दी	१-७३
पचमेरु पूजा	—	—	७३-८१

६६१२ गुटका स० १४ । पत्रस० १०१-१६६ । ग्रा० ६½×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी। ले०काल×। अपूर्ण। वेष्टनस० १३५।

विशेष—पूजाग्रो का सग्रह है

६६१३ गुटका स० १५ । पत्रस० ४८ । ग्रा० ७×६ इञ्च। भाषा—सस्कृत-हिन्दी । ले० काल स० १८५१ । पूर्ण। वेष्टन स० १३३ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

पच नवकार	—	प्राकृत	१
भक्तामर स्तोत्र मत्र सहित	—	सस्कृत	२-११
ऋषि मडल स्तोत्र	—	,,	१२-१७
श्रीपाल को दर्शन	—	हिन्दी	१७-२०
नवलादेव जी	—	,,	२०-२२
महा सरस्वती स्तोत्र	—	सस्कृत	२२-२४
पद्मावती स्तोत्र	—	,,	२४-२६
कल्याण मन्दिर स्तोत्र	कुमुदचन्द्र	,,	३०-३६
चिंतामणि स्तोत्र	—	सस्कृत	३७
नेमि राजुल के बारह मासा	—	हिन्दी	४२-४६
पार्श्वनाथ स्तोत्र	—	सस्कृत	४७
लक्ष्मी स्तोत्र	पद्मप्रभदेव	,,	४७
स्तवन	गुणसूरि	हिन्दी	४८
			ले०काल स० १८५१

६६१४. गुटका सं० १६ । पत्रस० २६ । ग्रा० ७½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० १३२ ।

विशेष—देवाब्रह्म के पदो का सग्रह है।

६६१५. गुटका स० १७ । पत्रस० ३२ । आ० ७½ × ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३१ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है—

१ भक्तिमाल पद	वलदेव पाटनी	हिन्दी	चौवीस तीर्थंकरो का स्तवन है ।
२. पद	,,	—	—

पदो की सख्या १८ है ।

६६१६ गुटका स० १८ । पत्र स० ६६ । आ० ५ × ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १८२३ द्वितीय चैत वुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १३० ।

विशेष—तत्वार्थसूत्र की चतुर्थ अध्याय तक हिन्दी टीका है ।

६६१७. गुटका स० १६ । पत्र स० १२७ । आ० ६½ × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेप्टन स० १२६ ।

विशेष—पूजा एव स्तोत्र तथा सामान्य पाठो का सग्रह है । बीच के तथा प्रारम्भ के कुछ पत्र नही हैं ।

६६१८. गुटका स० २० । पत्रस० ३७४ । आ० ६ × ३½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२८ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है ।

तत्वार्थ सूत्र के प्रथम सूत्र की टीका	कनककीर्ति	हिन्दी
सामायिक पाठ टीका	सदासुखजी	,,

६६१९. गुटका स० २१ । पत्र स० ३६ । आ० ८½ × ७ इञ्च । भापा -हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १२७ ।

विशेष—स्वामी हरिदास के पदो का सग्रह है । पत्र २३ तक हरिदास के १२६ पदो का सग्रह है । २३ वें पत्र से २९ वें पत्र तक विट्ठलदास के ३८ पदो का सग्रह है । २९ पत्र से ३६ पत्र तक विहारीदास का पद रहस्य लिखा हुआ है ।

६६२०. गुटका स० २२ । पत्र स० ११४ । आ० ६½ × ६ इच । भाषा-सस्कृत-प्राकृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२६ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है ।

ग्र थ	ग्र थकार	भाषा	**विशेष** पद्य
प्रतिक्रमण	—	प्राकृत	१-४
पद	महमद	हिन्दी	५

प्रारम्भ—

भूल्यो मन भमरारे काइ भमै दिवसनि राति ।
मायानो वाध्यो प्राणीयो भमै प्रमलजाय ॥१॥

अन्तिम—

महमद कहै वस्त्र वहरीयो जो कोई आवै रे साथ ।
आपनो लोभनी वाहिते लेखो साहिव हाथ ॥७०॥ भूल्यो

कल्याण मदिर स्तोत्र	कुमुदचन्द्र	सस्कृत
भक्तामर स्तोत्र	मानतु गाचार्य,	,,
कलियुग की कथा	—	हिन्दी
आरती	दीपचद	,,
चौवीस तीर्थकर आरती	मोतीराम	,,
वैराग्य षोडश	द्यानतराय	,,
चौवीस तीर्थकर स्तुति	—	,,
उदर गीत	छीहल	,,
आदिनाथ स्तुति	अचलकीर्ति	,,
अनुप्रेक्षा	अववू	,,
नेमिराजुल गीत	गुणचन्द्र	,,

प्रारम्भ के ७ पद्य नही हैं । ८ वा पद्य निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—

मजन साला हरि गये खेलत सग जिन राय रे ।
करजु गह्यो प्रभु नेम को हरि करि अ गुलि लपटाइ हो ॥
देव तहा जप जप करै वाजै दु दुभिनाद रे ।
पुष्प वृष्टितहा अति भई विलख भई कर वाहुरे ॥

× × ×

अन्तिम—

पुर सुलताण सुहावणी जहा वसै सरावग लोगजी ।
पुर परियन आनन्द स्यौं कर है विविधरस भोगी जी ॥७१॥
काष्टा सघ सुहावणा मथुरा गच्छ अनूपरे ।
शीलचन्द्र मुनि जानिये सव जतियन सिर भूपजी ॥७२॥
तासु पट जस कीर्ति मुनि काष्टा सघ सिंगार रे ।
तासु सिस गुणवद मुनि विद्या गुणह भडारु रे ॥७३॥
मन वच काया भावस्यो पढहि सुनहि नर नारि रे ।
रिद्धि सिद्धि सुख सपदा तिन चरणन पर वारि रे ॥७४॥

इस से आगे के पद नही हैं ।

द्वादशानुप्रेक्षा	सूरत	हिन्दी	—

अन्तिम—

हसा दुर्ल्लभी हो मुकति सरोवर तीर ।
इन्द्रिय वाहियाउहो पीवत विषयह नीर ।।
अति विषयनीर पियास लागी विरह वेदन व्याकुले ।
वारह प्रेक्षा सुरति छाडी एम भूलो वावले ।
अव होउ एतनु कहऊ तेतउ वुद्ध वसइ जम्मरण ।
सज्ञा समरणउ आय सरनउ परम रयनत्तय गुणु ।।१२।।

इति द्वादशानुप्रेक्षा समापिता ।

आदिनाथ स्तुति	विनोदीलाल	हिन्दी
खिचरी	कमलकीर्ति	,,

प्रारम्भ—

सजम की प्रभु सेज मगाऊ स्याद्वाद को गेंदुवा ।
पानी हो जिन पानी मगऊ चरचा चौविध सघको ।
आरज जाय अजवाइन लाइ, पीपर कोमल जावरी ।
धनिया हो जिन पद को लाइ मूढ महामद छाडिये ।
धीरज को प्रभु जीरो लाई सव विसयारसु चेक्षणा ।
सुकल ध्यान की सू ठ मगाऊ कर्मकाड ई घनु परो ।

× × ×

अन्तिम—

श्री आदिनाथ जिनराज ·· · श्रावग हो तहा चतुर सुजान ।
धर्म ध्यान गुण आगरो कीजे ·… ·· …परमारथि जानि ।
यह विनती जिनराज की चहुँ सघ के ···· कल्याण ।
श्री कमल कीर्ति मुनिहर कहो ··· ·· · ।

इति खिचरी समाप्ता

सोलहसती की सिज्झाय	प्रेमचद	हिन्दी	
क्षेत्रपाल गीत	सोभाचद	,,	
भक्तामर स्तोत्र भाषा	हेमराज	,,	ले०काल स० १८२८ बैशाख बुदी ६

विशेष—जतीमान सागर ने जती सेवाराम के पठनार्थ पिंगोरा मे प्रतिलिपि की थी। श्री महावीर जी के प्रसाद से ।

गणपति स्तोत्र	—	सस्कृत
वारहखडी	सूदामा	हिन्दी
वीर परिवार	—	,,
स्थूल भद्र सिज्झाय	गुणवर्द्धन सूरि	,,
धन्नाजी की वीनती	—	,,

शत्रु जय स्तवन	समयसुन्दर	हिन्दी
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामी	सस्कृत
भक्तामर स्तोत्र	मानतु ग	"
लक्ष्मी स्तोत्र	—	"
चौसठ योगिनी स्तोत्र	—	"
वृपभदेव वदना	आनद	हिन्दी
ऋषि मडल स्तोत्र	—	सस्कृत
पोसह कारण गाथा	—	"
गौतम पृच्छा	—	"
जिनाष्टक	—	"

६६२१. गुटका स० २३। पत्रस० ४८ । आ० ५½×४½ इञ्च । भापा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६२ ।

विशेष—पूजाओ तथा अन्य सामान्य पाठो का सग्रह है ।

६६२२. गुटका स० २४। पत्रस० ७६ । आ० ७×५½ इञ्च । भापा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६१ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है—

१ वाहुवलिछद कुमुदचन्द हिन्दी र०काल स० १४६७

विशेष—कुल २११ पद्य हैं रचना का आदि अ त भाग निम्न प्रकार है—

आदि का पाठ (पत्र १३)

प्रथमविपद आदीश्वर केरा, जेह नामे छूटे भव फेरा ।
ब्रह्म सुता समरू मति दाता, गुण गण पडित जगविदत्ता ।।२।।
भरत महीपति कृत मही रक्षण, वाहूवलि वलवत विचक्षण ।
तेह भनो करसु ं नवछद, साभलता भणता आनद ।।३।।
देह मनोहर कौशल सोहै, निरपता सुरनर मन मोहे ।
तेह माहि राजे अति सुन्दर, साकेता नगरी तव मदिर ।
× × ×

मध्य पाठ—

विकसति कमल अमल दलपती,
कोमल कमल समुज्जल कनी ।
वनवाडी श्री राम सुरगी अ व कदवा ऊवर तु गा ।।४२।।
करणा केतकी कमरख केली, नव नारगी नागर वेली ।
अगर नगर तरु तु दुक ताला, सरल सुपारी तरल तमाला ।।४३।।
वदनि वकुल वादाम विजोरी, जाई जुई, जवू जभीरी ।
चदन चपक चारु चारोली, वर वासति वर मोली ।।४४।।

अन्तिम पाठ—

सवत् चौदस मे सडसठो, ज्येष्ट शुल्क पचमी तिथि छट्टे ।
कवीवर वारे घोघा नयरे, अति उतग मनोहर शुभ घरे ।।२०७।।
अष्टम जिनवर ने प्रासादे साभलियो जिनगाना सुखारे ।
रत्नकीर्ति पदवी गुण पूरे, रचियो छद कुमुद शशी सूरे ।।२०८।।
सोमलता भनता आनद, भव आतप नामे सुख कद ।
दुख दरिद्र वहु पीडा नासे, रोग शोक नहि आवे पासे ।।२०९।।
शाकिनी डाकिनी करे चकचूर भूत प्रेत जावे सहू पूर ।
रोग भगदर नविपासे, सुख सपति भविजन परकासे ।।२१०।।

कलस—

उत्कट विकट कठोर रोर गिरि भजन सत्यवि ।
विहित कोह सदोह मोहतम ओघ हरण रवि ।
विहित रूप रति भूप चारु गुण कूप विनुत कवि ।
धनुप पाच सै पचीस वरत सहुँय तनू छवी ।।
ससार सारि त्याग गत विवुद्ध वृ द वदित चरण ।
कहे कुमुदचन्द्र भुजवल जयो सकल सघ मगल करण ।।२११।।

इति वाहुवलि छद सपूर्ण ।

२ नेमिनाथ को छद हेमचन्द्र हिन्दी —
(श्री भूपण के शिष्य)

विशेष—यह रचना २०५ पद्यो की है ।

रचना का आदि अ त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ —

विदेह विमल वेष स्तभ तीर्थस्य नायक ।
गीराघ गौतम वीर छद प्रारभ सिद्धये ।।१।।

छद वाल—

प्रथम नमोह जिन मुखजेह वज वज नादे सकल विदेह ।
वदन सुचदे निर्मल कदे त्रिभुवन वदे भगत सुछदे ।।२।।
झलकति झल्ने झगमग गल्ले, चतुर भुजाय गणगण चल्ले ।
कमडल पोथी कमल सुहस्ती मधुर वचेना शुभ वाचती ।।३।।

मध्य भाग—

राय मनोहर धारिनी नारी पतिवरतानो व्रत धर नारी ।
समरीराय निज चित्त मझारी, इम अनुभवता सुख ससारी ।।९८।।
गृ थी विनत्त पेत्त पवारी, सोम मुखी सोमाति गोरी ।
नेत्र जीति चकित चकोरी, साहन की गज गमन विहारी ।।९९।।

मल पति हीडे जोवन भारी, पैव पवति विपय विकारी ।
जाने विधि कामनि सिनगारी, सगी भगति कला अधिकारी ॥१००॥

× × ×

अन्तिम पाठ—

काष्ठा सघ विख्यात धर्म दिगवर धारक ।
तस नदी तटगच्छ गण विद्या भवितारक ।
गुरु गोयम कुल गोत्र, रामसेन गछ नायक ।
नरसिंघ पुरादि प्रसिद्ध द्वादश न्याति विधायक ।
तद अनुक्रमे भागु भन्या गछ नायक श्री कार ।
श्री भूपण सिष्य कहे हेमचन्द विस्तार ॥२०५॥

× × ×

३-राजुल पच्चीसी	विनोदीलाल	हिन्दी	—
४-नेमिनाथ रेखता	क्षेम	,,	—
५-राजुल का वारहमासा	विनोदीलाल	,,	—
६-वलिभद्र वीनती	मुनिचन्द्र सूरि	,,	—
७-बारह खडी	—	,,	—
८-अनित्य पचासिका	त्रिभुवनचन्द	,,	—
९-जैन शतक	भूधरदास	,,	—

६६२३. गुटका सं० २५ । पत्रस० १३५ । आ० ५½×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६६ ।

विशेष—पूजा एव स्तोत्र सग्रह है ।

६६२४ गुटका सं० २६ । पत्रस० ११४ । आ० ७×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६० ।

विशेष—पूजाओ का सग्रह है ।

६६२५. गुटका सं० २७ । पत्रस० २१-१२१ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८७ ।

विशेष—आयुर्वेद के नुस्खे है ।

६६२६. गुटका सं० २८ । पत्र स० ३६-३२० । आ० ६×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय-सग्रह । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८५ ।

विशेष—पूजा तथा स्तोत्र सग्रह है अमर कोष एव आदित्य कथा सग्रह आदि है ।

६६२७. गुटका सं० २९ । पत्र स० ३-२८६ । आ० ६×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स०

विशेष—वृन्दावन कृत चौवीसी पूजा है । तथा सुखसागर कृत अष्टाह्निका रासो भी है ।

९९२८. गुटका स० ३०। पत्र स० ७८८। आ० ८½×७ इन्च। भाषा--सस्कृत-हिन्दी। विषय-सग्रह। र० काल ×। ले० काल स० १८९३ माघ सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन स० ८४।

निम्न पाठो का सग्रह है—

ग्र थ	ग्र थकार	भाषा	विशेष
पद्मनदि पच्चीसी भाषा	जगतराम	हिन्दी, सस्कृत	र० काल स० १७२२ फागुण सुदी १०
ब्रह्म विलास	भगवतीदास	हिन्दी	—
समयसार नाटक	बनारसीदास	,,	र० काल स० १६९३
स्तोत्रत्रय भाषा	—	,,	—
तत्वसार	द्यानतराय	,,	—
चौबीस दण्डक आदि पाठ	—	,,	—
चेतन चरित्र	भैया भगवतीदास	,,	—
श्रावक प्रति कमण	—	प्राकृत	—
सामायिक पाठ	—	हिन्दी	—
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामि	सस्कृत	—
सामायिक पाठ भाषा	जयचन्द	हिन्दी	—
चरचा शतक	द्यानतराय	हिन्दी	—
त्रिलोक वर्णन	—	हिन्दी	—
आचार्यादि के गुण वर्णन	—	,,	—
पट्टावली	—	,,	स० १२४८ तक है।

आगे लिखा है कि १२४८ तक नो शुद्ध आम्नाय रही। लेकिन स० १३१६ के साल भट्टारक प्रभाचन्द्र जी नै फीरोजसाह पातिसाह के जोग थकी वस्त्रागीकार करचा इन्द्र प्रस्थ मध्ये।

अकृत्रिम चैत्यालय वर्णन	—	,,	—
चर्चा सग्रह	—		—
सिद्धातसार दीपक	नथमल	,,	—
पच इन्द्री चौपई	भूधरदास	,,	—
चर्चा समाधान	भूधरदास	,,	—

गुटके के अन्त मे निम्न पाठ लिखा हुआ है—

चादण ग्राम सुजाण महावीर मन्दिर जहा।
नन्दराम अस्थान ऊठा पाठ वैठे पढै ।।६।।
सुनयन मैं जुभाई जैसिह वहालसिह
हरपरसाद अमिचन्द जदि जानियौ।
रोसनचन्द गगादास आसानन्द मलचन्द
सज्जन अनेक तिहा पढै सरधानियौ।

ता भाइयो की कृपा सेती लिस्यो रामसनी पाठ
नन्दलाल के पढने कू सुनो जू ज्ञानियो ।।
यामे भूलचूक होइ ताहि सोध सुध कीजो
मोहि अल्प बुधजान छिमा उर आनियो ।।२।।

चौपई—
सवत् ठारासै आणवै जान, माघ शुक्ल पूर्णमासी वखान ।
सोमवार दिन हैगो श्रेष्ठ, पूरण पाठ लिख्यो अति श्रेष्ठ ।

६६२६. गुटका सं० ३१ । पत्र स० ३७० । आ० १२×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल स० × । पूर्ण । वेष्टन स० ८३ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है—

ग्र थ	ग्र थकार	भाषा	विशेष
द्रव्य सग्रह भाषा	—	हिन्दी	—
नक्षत्र एव वार विचार	—	—	—

विशेष—विभिन्न नक्षत्रो मे होने वाले फलो का वर्णन है ।

पच स्तोत्र एव तत्वार्थ सूत्र तथा पच मगल पाठ	—	सस्कृत हिन्दी	—
		सस्कृत	—
अनन्त व्रत कथा	मुनि ज्ञानसागर	,,	—
जिनसहस्रनाम ।	जिनसेनाचार्य	हिन्दी	—
आदित्यवार कथा	सुरेन्द्रकीर्ति	,,	३५ पद्य
लघु आदित्यवार कथा	मनोहरदास	,,	—
पूजा सग्रह	—	हिन्दी	—
जैन शतक	भूधरदास	,,	—
पूजा सग्रह	—	हिन्दी	—
शील कथा	भारामल्ल	,,	—
निशि भोजन कथा	—	,,	—
अठारह नाता	अचलकीर्ति		
जैन विलास	भूधरदास		
पद सग्रह	बनारसीदास, जगराम कनककीर्ति, हर्षचन्द्र, नवलराम, देवाब्रह्म, विनोदीलाल, द्यानतराय,		
चौवीस महाराज पूजा,	वृन्दावन	हिन्दी	—

९९३०. गुटका सं० ३२ । पत्रस० २३१ । ग्रा० १०×६½ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल ×। पूर्ण । वेष्टनस० ८२ ।

विशेष—पूजाग्रो का सग्रह है।

९९३१ गुटका सं० ३३ । पत्रस० ७–२९५ । ग्रा० १०×६½ इन्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ ।

विशेष—मुख्य पाठो का सग्रह निम्न प्रकार है ।

ग्र थ	ग्र थकार	भाषा	विशेष
कल्याण मन्दिर स्तोत्र	कुमुदचन्द	सस्कृत	—
शास्त्र पूजा	द्यानतराय	हिन्दी	—
ग्रादित्यवार कथा	—	,,	—
नवमगल	लालचन्द	,,	—
ग्रनन्त व्रत कथा	मुनि ज्ञानसागर	,,	—
भक्तामर तथा ग्रन्य स्तोत्र	—	सस्कृत	—
जिन सहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	,,	—
पूजा सग्रह	—	सस्कृत, हिन्दी	—
ग्रादित्यवार कथा	सुरेन्द्रकीर्ति	हिन्दी	र० काल स० १७४४
जैन शतक	सूधरदास	,,	र० काल स० १७८१
चौवीस महाराज पूजा	वृन्दावन	,,	

९९३२. गुटका स० ३४ । पत्रस० २६३ । ग्रा० १०×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी–सस्कृत । ले० काल स० १९१२ । पूर्ण । वेष्टनस० ७५ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है—

ग्र थ	ग्र थकार	भाषा	विशेष
कल्याण मन्दिर भाषा	बनारसीदास	हिन्दी	—
भक्तामर स्तोत्र	मानतु गाचार्य	सस्कृत	—
भक्तामर भाषा	हेमराज	हिन्दी	—
लक्ष्मी स्तोत्र	पद्मप्रभदेव	सस्कृत	—
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामी	,,	—
पूजा सग्रह	—	,,	

नित्य पूजा, षोडष कारण, दशलक्षण, रत्नत्रय, पचमेरु, नदीश्वर द्वीप एव चोवीस तीर्थंकर पूजा रामचन्द्र कृत हैं ।

ग्रादित्यवार कथा	भाऊ	हिन्दी	,,

पचमंगल	रूपचन्द	हिन्दी	,,
नेमिनाथ के नवमगल	विनोदीलाल	,,	र० काल स० १७०४
सामायिक पाठ	—	सस्कृत	—
व्रत कथाए	खुशालचन्द	हिन्दी	—
जिन सहस्रनाम	—	संस्कृत	—

६६३३ गुटका सं० ३५। पत्रस० २८०। आ० १२×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल स० १७६५ चैत बुदी ८। पूर्ण। वेष्टन स० ६४।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

पाण्डव पुराण	बुलाकीदास	हिन्दी	र० काल स० १७८४
सीता चरित्र	कविबालक (रामचन्द्र)	,,	१७१३

६६३४ गुटका सं० ३६। पत्र स० ६८। आ० ८×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १६।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है।

सूरत की बारहखडी	सूरत	हिन्दी	पत्र १-१३
आदित्यवार कथा	भाऊ	,,	१३-१६
पद	भूधरदास, जगतराम	,,	१६-१७
चौवीस महाराज पूजा	वृन्दावन	,,	१७६८

प्राप्ति स्थान—दि० जैन छोटा मन्दिर, बयाना

६६३५. गुटका स० १। पत्रस० १६६। आ० ५½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १५१।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—

बारहखडी	सूरत	हिन्दी	१२
नवमगल	—	,,	३२
रविव्रत कथा	भाऊ	,	१७
बाईस परीषह वर्णन	—	,	—
लावणी	जिनदास	,,	१३५
पद	—	,,	—
	लाभ नहि लीया जिनन्द भजिकैं		१३६
,,	,,	,,	
	अब अजब रसीलो नेम	,,	
लावणी	रूडागुरुजी	,,	१४०
			र० काल १८७४
पद	खान मुहम्मद	,,	१४५

सोरठा करषा—

तोसौं कौन करिवो करै काम भवथर हरै ।
करत वीनती वलभद्र राजा ।
करत टकार हु कार वर वक्यो
तीन लोक भय चकत जाग्या ।
वाई कर अ गुली कृष्ण हिण्डोलियो
नेमनरनाथ राजाधिराजा ।।२।। तौसौ

स्वामी नग्र पुखवर भरयो मान दुर्जन गरया
कप करि नारि वाल उछग लाया ।
हिरन रोझ सार ग हरित्रास झडकत
फिरै स्रघ गजराज वहु दुक्ख पाया ।।३।।
सतती दतती अजरतो अमरतो
सुद्धतो वृद्धतो ज्ञानवता ।
माई सिवादेवी के उदर उपन्नियो
चित्त चिन्तामनी रतनवता ।।४।। तोसो
स्वामी जिन नाग सिज्यादली नेम जिन
अति वली वाई कर अ गुली धनुष साजा ।
ब्रह्म ब्रह्मापुरी इन्द्र आसन टरी
कपियो सेप जव मख वाजा ।।५।। तोसौ
छपन कोटि जादौ तुम मुकुट मनि
तीन लोक तेरी करत सेवा
खानमहमुद करत है वीनती
राखिले शरण देवाधिदेवा ।।६।।
तोसौ कौन करवो करै काम भय थर हरै
करत वीनती वलभद्र राजा ।।७।।

इसके अतिरिक्त जगतराम, भूधरदास, द्यानतराय, सुखानन्द आदि के पदो का सग्रह है। भूधरदास का जैन शतक भी है।

६६३६. गुटका स० २ । पत्र स० २७४ । आ० ६×५½ इन्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल स० १८५० भादवा बुदी ६ । अपूर्ण । वेष्टन स० १५० ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार है—

शार्ङ्गधर टीका   हिन्दी   ले० काल स० १८५० भादवा सुदी ६ । अपूर्ण ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है । वैर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

अब्जद प्रश्नावली   —   हिन्दी   पूर्ण

अजीर्ण मजरी	वैद्य पद्मनाभ	हिन्दी	" ले० काल स० १८५१
वैद्य वल्लभ	लोलिम्बराज	सस्कृत	" ले० काल स० १८५०

६६३७ **गुटका सं० ३** । पत्र स० १३३ । आ० १०½×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४६ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का संग्रह है—

चौवीस महाराज पूजा	रामचन्द्र	हिन्दी पद्य	पत्र स १७
शास्त्र पूजा	ब्र० जिनदास	"	२३
गुरू पूजा	"	"	२३
वीस तीर्थंकर जखडी	हर्षकीर्ति	"	२८
पचमेरु पूजा	सुखानन्द	"	४६
त्रेपन क्रिया कोष	ब्र० गुलाल	" र० काल स० १६६५ कार्तिक सुदी ३	११८
वारहखडो	सूरत	हिन्दी	
शनिश्चर की कथा	—	हिन्दी गद्य	१३१
कलियुग की कथा	पाडे केशव	" पद्य	१३१

विशेष—पाडे केशवदास ने ज्ञान भूपरा की प्रेरणा से रचना की थी ।

ओकार की चौपई	भैया भगवतीदास	हिन्दी पद्य	१४०
आदिनाथ स्तुति	विनोदी लाल	"	१४१
राजुल वारहमासा	"	"	"
राजुल पच्चीमी	"	"	"
रेखता	"	"	"
रविव्रत कथा	सुरेन्द्र कीर्ति	" र० काल स० १७४४	१७७

६६३८. **गुटका स० ४** । पत्रस० ५० । आ० ७×६ इञ्च । भापा-हिन्दी सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १११ ।

विशेष—पच मगल रूपचन्द के एव तत्वार्थ सूत्र आदि पाठ हैं ।

६६३६. **गुटका स० ५** । पत्रस० १०-६५ । आ० ५½×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११० ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

पद सग्रह	नवल, जगतराम	हिन्दी (पद्य)	पत्र १०-१४
जैन पच्चीसी	नवल	"	१६

बारह भावना	नवल	,,	१८
आदित्यवार कथा	सुरेन्द्र कीर्ति	,,	३३
			र० काल स० १७४४
बारहखडी	सूरत	,,	४०
राजुल पच्चीसी	लालचन्द विनोदीलाल	,,	४५
अक्षर बावनी	द्यानतराय	,,	४८
			(र० काल स० १७५८)
नवमगल	विनोदीलाल	,,	५६
पद	देवा ब्रह्म	,,	६०
धर्म पच्चीसी	बनारसीदास	,,	६२
अठारह नाते की कथा	अचलकीर्ति	,,	६२
विनती	अखैमल	,,	६५

कौन जाने कल की खबर नही इह जग मे पल की ।
यह देह तेरी भसम होयसी चंदन चरची ।।
सतगुरु तै सीखन मानी विनती अखैमल की

इनके अतिरिक्त देवा ब्रह्म, विनोदीलाल, भूधरदास आदि के पदो का सग्रह है ।

६६४०. गुटका स० ६ । पत्रस० ११२ । आ० ७½×५ इञ्च । भाषा सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६६ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है—

भक्तामर स्तोत्र	मानतु गाचार्य	सस्कृत
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामी	,,
पच मगल	रूपचन्द	हिन्दी
जिन सहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	सस्कृत
पद	माणक, रत्नकीर्ति	हिन्दी
लक्ष्मी स्तोत्र	पद्म प्रभ	सस्कृत
विनती	वृन्द	हिन्दी
चिंतामणि स्तोत्र	—	,,
ध्यान वर्णन	—	,,
बावनी	हरसुख	,, पद्य

६६४१. गुटका स० ७ । पत्रस० २२ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ ।

विशेष—नित्य पाठ सग्रह है ।

६६४२ **गुटका सं० ८** । पत्रस० ५२ । आ० ७×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ६७ ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है—

अठारह नाते की कथा	अचलकीर्ति	हिन्दी
आदित्यवार कथा	—	,,

इसके अतिरिक्त नित्य पूजा पाठ भी है ।

६६४३. **गुटका सं० ६** । पत्रस० १०८ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६६ ।

विशेष—निम्न पाठो का संग्रह है—

जैन शतक	भूधरदास	हिन्दी	र०काल स० १७८१
शील महात्म्य	वृन्द	,,	—

नित्य पूजा पाठ एव नवल, बुधजन, भूधरदास आदि के पदो का संग्रह है ।

६६४४. **गुटका सं० १०** । पत्र स० ४२ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठो का संग्रह है ।

६६४५. **गुटका सं० ११** । पत्रस० ६५ । आ० ६½×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी–सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ ।

६६४६. **गुटका सं० १२** । पत्र स० ८ मे ८८। आ० ६½×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६३ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का संग्रह है—

आदित्यवार कथा	विनोदीलाल	हिन्दी (पद्य)
जखडी बीस विरहमान	हर्षकीर्ति	,,

विशेष—इनके अतिरिक्त नित्य नैमित्तिक पूजाए भी हैं ।

६६४७. **गुटका सं० १३** । पत्र स० १०४ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी–सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८८ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पाठ संग्रह एव जवाहरलाल कृत सम्मेद शिखर पूजा है ।

६६४८ **गुटका सं० १४** । पत्रस० ३०० । आ० ६½×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ८५ ।

विशेष—बीच के पत्रस० ७१–२३३ तक के नही हैं । मुख्यतः निम्न पाठो का संग्रह है ।

बारहखडी	सूरत	हिन्दी	
राजुल बारहमासा	विनोदीलाल	,,	पूर्ण

६६४६. गुटका स० १५ । पत्रस० ३७ । आ० ६½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८४ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है ।

नेमि नव मगल	विनोदी लाल	हिन्दी (पद्य)	र०काल स० १७४४ सावरण सुदी ६ ।
बारह भावना	भगवतीदास	,,	—
रविव्रत कथा	सुरेन्द्रकीर्ति	,,	र०काल स० १७४४ जेठ बुदी १० ।
बारहखडी	सूरत	,,	—

इनके अतिरिक्त नित्य पाठ और हैं ।

६६५०. गुटका स० १६ । पत्रस० १४० । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७३ ।

विशेष--मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है—

पच मगल	आशाधर	सस्कृत	अर्हद् भक्ति मे से है ।
सज्जनचित्त वल्लभ	मल्लिषेण	,,	हिन्दी अर्थ सहित पर अपूर्ण । ले०काल स० १८६७
श्रावक प्रतिज्ञा	नदराम सौगाणी	हिन्दी	पत्रस० १८
द्रव्य सग्रह	नेमिचन्द्राचार्य	प्राकृत	१६
चौवीस ठाणा चर्चा	,,	,,	६०
प्रतिष्ठा विवरण	—	हिन्दी	७०
ऋषि मडल स्तोत्र	—	सस्कृत	१००
वज्रपजर स्तोत्र	—	,,	१०१

प्रारम्भ—परमेष्ठी नमस्कार सार रवपदात्मक ।
आत्मरक्षा कर वीर वज्रपिजर स्वराम्यह ।।

योगसार	योगीन्द्र देव	अपभ्र श	११४
आहार वर्णन	—	,,	१२२

इनके अतिरिक्त भक्तामर स्तोत्र, चौवीसी के नाम पट्टावलि, सूतक निर्णय, चौरासी गोत्र, सामायिक पाठ, बारह भावना, विषापहार, बाईस परिषह, एव निर्वाण काण्ड आदि पाठो का सग्रह है ।

६६५१ गुटका स० १७ । पत्रस० ६ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा हिन्दी-सस्कृत । ले०काल स० × । पूर्ण । वेष्टनस० ५६ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

आदित्यवार कथा	—	हिन्दी
अन्य पाठ	—	—

९९५२. गुटका स० १८ । पत्रस० ७ । आ० ७×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५३ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

ज्ञानाकुश	—	सस्कृत	१-५
मृत्यु महोत्सव	—	,	५-६
योग पाठ	—	,,	७

९९५३. गुटका स० १९ । पत्रस० २९ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १९०७ । अपूर्ण । वेष्टनस० ५० ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

वुधजन सतसई	वुधजन	हिन्दी	अपूर्ण
जयपुर के जैन मन्दिर चैत्यालयो का वर्णन	—	,,	पूर्ण ले०काल स० १९०७
अन्य पाठ सग्रह	—	,,	—

९९५४. गुटका स० २० । पत्र स० १२४ । आ० ६×४ इञ्च । भापा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४४ ।

विशेष—निम्न पाठो सग्रह का है—

भक्तामर सवैया	—	हिन्दी	१९-४२
चरचा शतक	द्यानतराय	,,	४३-८१
जैन शतक	भूधरदास	,,	८१-१२४

९९५५. गुटका सं० २१ । पत्रस० ७०-१०६ । आ० ५½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल स० १९०१ । अपूर्ण । वेष्टनस० ४२ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है—

जैन सध्या	—	सस्कृत	१-५ अपूर्ण
सोम प्रतिष्ठापन विधि	—	,,	—
चरचा शतक	द्यानतराय	हिन्दी	७७-१०६ पूर्ण

९९५६. गुटका स० २२ । पत्रस० २६७ । आ० ६×४ इञ्च । भापा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल स० १९०७ । पूर्ण । । वेष्टनस० ४१ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

श्रावक प्रतिक्रमण	—	प्राकृत-हिन्दी	पत्र १-६६ ले०काल स० १९०७
सामायिक पाठ	—	प्राकृत-सस्कृत	६७-१०४
तत्वार्थ सूत्र टीका	—	सस्कृत-हिन्दी	१०५-२०७

सामायिक पाठ भाषा	—	—	२०८-२३३
तत्वसार भाषा	द्यानतराय	हिन्दी	५-१५
पच मगल	आशाधर	—	१५
सज्जन चित्त वल्लभ	मल्लिषेण	सस्कृत	१६-२८
		हिन्दी अर्थ सहित है।	
व्रतसार	—	,,	२८-३०
लघुसामायिक	किशनदास	—	३१-३४

६६५७. गुटका स० २३। पत्रस० ११५। आ० ७×४ इञ्च। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ४०।

विशेष—निम्न पदो का संग्रह है—

स्वयभू स्तोत्र	सस्कृत	समन्तभद्र
अष्ट पाहुड भाषा	हिन्दी	—

६६५८. गुटका स० २४। पत्रस० ३३-१४७। आ० ५½×३½ इञ्च। भाषा-हिन्दी-सस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ३५।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है।

६६५९. गुटका सं० २५। पत्र स० ८६। आ० ५½×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी सस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २६।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है।

६६६०. गुटका सं० २६। पत्र स० ८५। आ० ८×५½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। ले० काल स० १८८... ×। पूर्ण। वेष्टन स० २५।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठो का सग्रह है—

एकीभाव स्तोत्र	सस्कृत	वादिराज
देवसिद्ध पूजा	,,	—
आत्म प्रवोध	,,	—

६६६१. गुटका सं० २७। पत्रस० ६५। आ० ६½×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २४।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है।

एकीभाव स्तोत्र	वादिराज	सस्कृत
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामी	संस्कृत
जिनसहस्रनाम स्तोत्र	जिनसेनाचार्य	,,
अमरकोश	अमरसिंह	

६६६२ गुटका स० २८ । पत्रस० २० । आ० ६ X ३½ इञ्च । भाषा-सस्कृत प्राकृत । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० २२ ।

विशेष—मूलाचार आदि ग्रन्थो मे से गाथाओ का सग्रह है ।

६६६३. गुटका सं० २६ । पत्रस० १४० । आ० ६½X४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टनस० २१ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है ।

आदित्यवार कथा	भाऊ	हिन्दी	१-३०
सबोध पचासिका	बुधजन	"	१००-१०७

इसके अतिरिक्त पूजाओ, भक्तामर एव कल्याणमन्दिर आदि स्तोत्र पाठो का सग्रह है ।

६६६४. गुटका सं० ३० । पत्रस० ३८ । आ० ४½X३½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टनसं० १६ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

पार्श्वनाथ स्तोत्र	—	सस्कृत	—
कल्याणमन्दिर स्तोत्र	कुमुदचन्द	"	—
दर्शन	—	"	—
एकीभाव स्तोत्र	वादिराज	"	—

६६६५. गुटका सं० ३१ । पत्रस० ७३ । आ० ६X४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० २० ।

विशेष—गुटका जीर्ण है । सामान्य पाठो का सग्रह है ।

६६६६. गुटका सं० ३२ । पत्रस० ८२ । आ० ७½X६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १६१० । पूर्ण । वेष्टनस० १३ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

चेतनगारी	विनोदीलाल	हिन्दी	पत्र १-२
शिक्षा	मनोहरदास	"	२-३
नेमिनाथ का बारहमासा	विनोदीलाल	"	३-५
राजुल गीत	—	"	५-७
शातिनाथ स्तवन	—	" (र०काल स० १७४७)	७-८
भविष्यदत्त रास	ब्र० रायमल्ल	" र०काल स० १६३३	६-८२

प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर वैर (बयाना)

९९६७ गुटका स० १ । पत्रस० १६४ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १७२० । अपूर्ण । वेष्टन स० ५६ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न-ब्र० रायमल्ल । हिन्दी । ले०काल स० १७२० । आनन्दराम ने प्रतिलिपि की थी एव कुशला गोदीका ने प्रतिलिपि कराई थी ।

श्रीपाल स्तुति	—	हिन्दी	—
रविवार कथा	भाऊ	,,	१७२०
जकडी	रूपचन्द	,,	—
बारह अनुप्रेक्षा	—	,,	१७२५
निमित्त उपादान	बनारसीदास	,,	
बीस तीर्थंकर जकडी	—	,,	—
चन्द्रप्रभ जकडी	खुशाल	,,	—
पद	बनारसीदास	,,	—

जाको मुख दरस तैं भगत को नैनन को
थिरता बनि बढी चचलता बिनसी
मुद्रा देखि केवली की मुद्रा याद आवे
जेह जाके आगे इन्द्र की विभूति दीसी अरासी ।
जाको जस जपत प्रकास जग्यो हिरदानैं
सोही सूधमती होई हुती सो मलिनसी ।
कहत बनारसी महिमा प्रगट जाकी
सोहै जिनकी सवीह विद्यमान जिनसी ॥

इनके अतिरिक्त नित्य पूजा पाठ और है ।

९९६८. गुटका स० २ । पत्रस० १०१ । भाषा-हिन्दी (पद्य) । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३५ ।

९९६९. गुटका स० ३ । पद । दरगाह कवि । वेष्टन स० ३६ ।

९९७०. गुटका स० ४ । पत्र स० २०२ । आ० ९×७ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल स० १८१३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है—

षोडषकारण पूजा	सुमतिसागर	सस्कृत	पत्र १८-२८
सूर्यव्रतोद्यापन	ब्र० जयसागर	,,	२९-३७
ऋषिमडल पूजा	—	,,	३७-५५

त्रिशच्चतुर्विंशति पूजा	शुभचन्द्र	"	५५-१०४
णमोकार पैंतीसी	सुमति सागर	"	५५-११६
रत्नत्रय व्रतोद्यापन	धर्मभूषण	"	१२०-१३२
श्रुत स्कध पूजा	—	"	१३२-१३५
भक्तामर स्तोत्र पूजा	—	"	१३५-१४६
गणधर वलय पूजा	शुभचन्द्र	"	१४१-१४६
पच परमेष्ठी पूजा	यशोनदी	सस्कृत	१५०-१८५
पच कल्याणक पूजा	—	"	१८६-२०२

६६७१. गुटका स० ५ । पत्रस० १७६ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३१ ।

६६७२. गुटका सं० ६ । पत्र स० १६५ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २३५ ।

विशेष—पूजा एव स्तोत्र पाठो का सग्रह है ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा (भरतपुर)

६६७३. गुटका सं० १ । पत्रस० १२० । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११२ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है ।

आदित्यवार कथा, तेरह काठिया, पच्चीसी ।

६६७४. गुटका स० २ । पत्र स० १७० । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी। ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११३ ।

विशेष—हिन्दी पदो का सग्रह है ।

६६७५. गुटका स० ३ । पत्र स० १०८ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११० ।

विशेष—स्फुट पाठो का सग्रह है ।

६६७६. गुटका ४ । पत्रस० १०८ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १११ ।

विशेष—पूजा सग्रह है ।

६६७७. गुटका स० ५ । पत्र स० ७७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत-हिन्दी ।ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०८ ।

विशेष—गुणस्थान पीठिका दी हुई है ।

६६७८. गुटका स० ६ । पत्र स० २१० । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत-हिन्दी । ले०काल पूर्ण । वेष्टन स० १०६ ।

विशेष—स्फुट पूजा पाठो का सग्रह है ।

९९७९ गुटका स० ७। पत्रस० २१०। आ० ६½×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल स० १८९४। पूर्ण। वेष्टन स० ९५।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है।

सम्मेदशिखर पूजा	जवाहरलाल	हिन्दी
चौबीसी नाम	—	,,
आदित्यवार कथा	भाऊ	,,
नित्य पाठ सग्रह	—	,,

९९८०. गुटका सं० ८। पत्रस० ८७। आ० ७×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी-सस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ९४।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

नित्य पाठ सग्रह, आदित्यवार कथा (भाऊ) परमज्योति स्तोत्र आदि।

९९८१. गुटका स० ९। पत्र स० १६। आ० ११×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी-सस्कृत। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ८५।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है।

९९८२. गुटका स० १०। पत्र स० १८०। आ० ७½×६½ इञ्च। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ७९।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है—

१ तत्वार्थ सूत्र हिन्दी टीका सहित।

२ ज्ञानानन्द श्रावकाचार।

३ निर्वाण काण्ड आदि।

९९८३. गुटका स० ११। पत्र स० ६-१९। आ० ७×५½ इञ्च। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० ७२।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है।

९९८४. गुटका स० १२। पत्रस० १३२। आ० ९×६½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ७३।

विशेष—नित्य पूजा पाठ सग्रह है।

९९८५. गुटका स० १३। पत्र स० ६०। आ० १०×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी-सस्कृत। ले०काल स० १९८६। अपूर्ण। वेष्टन स० ६९।

विशेष - नित्य पूजा पाठ, तत्वार्थसूत्र, भक्तामर स्तोत्र, आदि का सग्रह है। सूरत की बारहखडी भी है।

९९८६. गुटका स० १४। पत्र स० ६-१९। आ० ७×५½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ७०।

विशेष - बारहमासा वर्णन है।

६६८७. गुटका सं० १५ । पत्रस० १०० । आ० ७×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १६०३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५१ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है—

लघु चाणक्य नीतिशास्त्र भाषा	काशीराम	हिन्दी	विशेष र०काल स० १७७४
कृष्ण रुक्मिणी विवाह	—	,,	२२० पद्य
दानलीला	—	,,	१६ पद्य

६६८८. गुटका सं० १६ । पत्रस० २०८ । आ० ८×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६ ।

विशेष—स्फुट पाठो का सग्रह है ।

६६८९. गुटका स० १७ । पत्रस० ३५३ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २० ।

विशेष—पत्र २८ तक सस्कृत मे रचनाए हैं । फिर ३२५ पत्र तक सिद्धातसार दीपक भाषा है । वह अपूर्ण है ।

६६९०. गुटका सं० १८ । पत्रस० २८० । आ० ८½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४ ।

विशेष—विविध पूजाए हैं ।

६६९१. गुटका सं० १९ । पत्रस० १९५ । आ० १२×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११ ।

विशेष—३४ पूजा पाठो का सग्रह है ।

प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा (भरतपुर)

६६९२. गुटका सं० १ । पत्रस० १९० । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४४ ।

विशेष—पूजाओ का सग्रह है ।

६६९३. गुटका सं० २ । पत्र स० १५५ । आ० ७×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३५९ ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ सग्रह तथा तत्वार्थ सूत्र आदि हैं ।

६६९४. गुटका स० ३ । पत्रस० १५५ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३४६ ।

विशेष—नित्य काम आने वाले पाठो का सग्रह है ।

६६९५. गुटका सं० ४ । पत्र स० १२३-१८५ पुन १-५९ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३४२ ।

विशेष—पूजा तथा अन्य पाठो का सग्रह है ।

९९९६ गुटका स० ५ । पत्र स० ४०२ । आ० ९×६ इन्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३४३ ।

विशेष—विविध पाठो स्तोत्रो तथा पूजाओ का सग्रह है ।

९९९७. गुटका स० ६ । पत्रस० २३५ । आ० ६×६ इन्च । भाषा—हिन्दी । ले०काल स० १७५६ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३३६ ।

विशेष—फुटकार पद्य है । भविष्यदत्तरास तथा पचकल्याणक पाठ भी है । बीच मे कई पत्र नही हैं ।

९९९८ गुटका स० ७ । पत्र स० ५३-१६२ । आ० ६×६ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३४० ।

विशेष—भविष्यदत्त रास तथा श्रीपाल रास है । प्रति जीर्ण है ।

९९९९. गुटका स० ८ । पत्र स० १४१ । आ० ६×४½ इन्च । भाषा—हिन्दी । ले०काल स० १६४३ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३३८ ।

विशेष—हिन्दी के विविध पाठो का सग्रह है ।

आलोचना जयमाल	ब्र० जिनदास	हिन्दी
नेमीश्वर रास	—	"

१००००. गुटका स० ९ । पत्र स० ३८५ । आ० ८½×७ इन्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३३१ ।

विशेष—निम्न रचनाओ का सग्रह है—

पद	गुणचन्द्र	हिन्दी	—
बारहव्रत	यश कीर्ति	"	—
सामुद्रिकशास्त्र	—	सस्कृत	—
गुरु शिष्य प्रश्नोत्तर	—	"	—
मदन जुज्झ	बूचराज	हिन्दी	रचना काल स० १५८९
जिन सहस्रनाम	जिनसेन	सस्कृत	—
पूजा सग्रह	—	"	—
गणधर वलय पूजा	—	"	—
ज्वालामालिनी स्तोत्र	—	"	—
आराधनासार	देवसेन	"	—
रविव्रत कथा	भाऊ	हिन्दी	—
श्रावकाचार	—	"	—
धर्मचक्रपूजा	—	सस्कृत	—
तत्वार्थसूत्र	उमास्वामी	"	—
ऋषि मडल स्तोत्र	—	"	—

चेतनपुद्गल धमाल	बूचराज	हिन्दी	—
पद	वल्ह (बूचराज)	,,	—
पद (राजमति)	बूचराज	,,	—
पूजा	—	,,	—
चूनडी	—	,,	—
सखियारास	कोल्हा	,,	—
नेमीश्वररास	ब्रह्मदीप	,,	—

विशेष—रचनाकार सबंधी पद्य निम्न प्रकार है—

रणथभौर की तलहटी जी रणपुरु सावय वासु ।
नेमिनाथु को देहुरौजी बभ दीप रचि रासु ।
यह ससारु असारु किव होसै भवपारु ।। हो स्वामी ।।२५।।

अवधू परीक्षा (अध्रुवानुप्रेक्षा)	—	हिन्दी	—
रोस की पाथडी	—	,,	—
जय जय स्वामी पाथडी	पल्हणु	,,	—
पंडित गुण प्रकाश	नल्ह	,,	—
चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न	ब्र० रायमल्ल	,,	—
मनकरहारास	ब्र० दीप	,,	—

विशेष—ब्रह्मदीप टोडा भीमसेन के रहने वाले थे ।

खटोला	ब्र० धर्मदास	हिन्दी	—
हिंदोला	भैरवदास	,,	—
पचेन्द्रियवेलि	ठकुरसी	,,	—
सुगधदशमीव्रत कथा	मलयकीर्ति	,,	—
कथा सग्रह	जसकीर्ति	,,	—
परमात्मप्रकाश	योगीन्द्र	अपभ्र श	—
पाशोकेवली	—	,	—
धन्यकुमार चरित्र	रइधू	अपभ्र श	—

१०००१. गुटका सं० १० । पत्र स० १०३ । आ० ६½×६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३३० ।

विशेष—मुख्यत निम्न पूजाओ का सग्रह है—

गणधरवलय पूजा, तीस चौवीसी पूजा,
धरणेन्द्र पद्मावती पूजा, योगीन्द्र पूजा,
सप्त ऋषि पूजा, जलयात्रा, व हवन विधि आदि हैं ।

१०००२. गुटका स० ११ । पत्र स० ४६ । आ० ८×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३२८ ।

विशेष—द्यानतराय, भूधरदास, जगतराम आदि के पद हैं ।

१०००३. गुटका स० १२ । पत्र स० ४-८३ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३२६ ।

विशेष—हर्षकीर्ति, मनराम, द्यानत आदि की पूजायें तथा जिनपञ्जर स्तोत्र आदि पाठों का सग्रह है ।

१०००४. गुटका सं० १३ । पत्रस० २२६ । आ० ६½×७ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३०६ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह, भूपाल स्तोत्र, पच परमेष्ठी पूजा, पच कल्याणक पाठ (रूपचन्द कृत) भक्तामर स्तोत्र एव तत्वार्थ सूत्र आदि का सग्रह है ।

१०००५. गुटका सं० १४ । पत्र स० ११६ । आ० ७×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २८८ ।

१०००६. गुटकास० १५ । पत्रस० ४२ । आ० ७×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २८५ ।

विशेष—स्तोत्र एव पद सग्रह है ।

१०००७. गुटका स० १६ । पत्र स० २१-२८६ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २८६ ।

विशेष—गुटका जीर्ण है । पूजाओ का सग्रह है ।

१०००८. गुटका सं० १७ । पत्र स० २७३ । आ० ५½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २८७ ।

विशेष—बीच के अधिकाश पत्र नही हैं । हिन्दी पाठो का सग्रह है ।

१०००९. गुटका स० १८ । पत्र स० ३६ । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी-सस्कृत । ले० काल स० १७८३ । पूर्ण । वेष्टन स० २८३ ।

विशेष—आदित्यवार कथा (भाऊ कवि) तथा राजुलपच्चीसी (लाल विनोदी) एव पूजा पाठ सग्रह है ।

१००१०. गुटका स० १६ । पत्र स० ६६ । आ० ८½×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी–सस्कृत । ले० काल स० १७५३ पौष बुदी ६ । अपूर्ण वेष्टनस० २८४ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र, कल्याण मन्दिर स्तोत्र, तत्वार्थ सूत्र हिन्दी टीका आदि का सग्रह है ।

१००११. गुटका स० २० । पत्रस० १२५ । आ० ७×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल स० १७५८ । पूर्ण । वेष्टनस० २७७ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है ।

नेमिनाथ रास — ले०काल स० १७५८

चदन मलयागिरि कथा — ले०काल स० १७५८

गुटका पढने मे नही आता । अक्षर मिट से गये हैं ।

१००१२. गुटका स ० २१ । पत्रस० १२५ । ग्रा० ७×४ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल स० १७४६ । पूर्ण । वेष्टनस० २७६ ।

विशेष—पदो का अच्छा सग्रह है । इसके अतिरिक्त हनुमत रास, श्रीपाल रास आदि पाठ भी हैं ।

१००१३. गुटका स ० २२ । पत्रस० २४४ । ग्रा० ६×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २६१ ।

विशेष—विविध पाठो व पूजाग्रो का सग्रह है ।

१००१४. गुटका सं० २३ । पत्रस० ३५४ । ग्रा० ७×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २५८ ।

विशेष—सैद्धातिक चर्चाए हैं ।

१००१५. गुटका स ० २४ । पत्रस० ३७ । ग्रा० १०×५ इञ्च । भाषा–सस्कृत–हिन्दी । ले०काल स० १७६४ । अपूर्ण । वेष्टनस० २५७ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है । एकीभाव स्तोत्र एव कल्याणमन्दिर स्तोत्र भाषा ।

१००१६. गुटका स ० २५ । पत्रस० ४४ । ग्रा० ८×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २०२ ।

१००१७. गुटका सं० २६ । पत्रस० ७० । ग्रा० ९×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १७१ ।

विशेष—स्तोत्र ग्रादि पाठो का सग्रह है ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डावालों का डीग (भरतपुर)

१००१८. गुटका स० १ । पत्रस० ३० । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २३ । पूजा पाठ है ।

१००१९. गुटका स० २ । पत्रस० १३३ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २७ ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

१००२० गुटका स० ३ । पत्रस० ७७ । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २८ ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र एव पूजा आदि है ।

१००२१ गुटका सं० ४ । पत्रस० २४ । भाषा–हिन्दी सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण ; वेष्टनस० २९ ।

विशेष—पूजा सग्रह है ।

१००२२ गुटका सं० ५ । पत्रस० १८९ से २१३ । भाषा–हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० स० ३१ ।

विशेष—ग्रध्यात्म बत्तीसी, अक्षर बावनी ग्रादि हैं ।

१००२३. गुटका स० ६ । पत्र स० १८२ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन-स० ३५ ।

विशेष—सम्बोध अक्षर बावनी, धर्म पच्चीसी तथा धर्मविलास द्यानतराय कृत है एव तत्वसार भाषा है ।

१००२४. गुटका स० ७ । पत्रस० ४० से १०३ । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १८०७ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३७ ।

विशेष—पूजा सग्रह है ।

१००२५. गुटका स० ८ । पत्रस० २से ११४ ।भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३८ ।

विशेष—वख्तराम, जगराम आदि के पदो का सग्रह है ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन बड़ा पंचायती मन्दिर डीग

१००२६. गुटका स० १ । पत्रस० १०३ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २६ ।

विशेष—हिन्दी पदो का सग्रह है ।

१००२७. गुटका स० २ । पत्रस० २६१ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३० ।

विशेष—पूजा पाठ है ।

१००२८. गुटका स० ३ । पत्रस० १८० । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २६ ।

विशेष—प्रति जीर्ण है, नाममाला, पूजा पाठ आदि का सग्रह है ।

१००२९. गुटका सं० ४ । पत्रस० ११६ ।भाषा-हिन्दी । ले० काल× । अपूर्ण । वेष्टनस० २७ ।

विशेष—धर्म विलास मे से पद लिखे हुए हैं ।

१००३०. गुटका स० ५ । पत्रस० ६० । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २८ ।

विशेष—जिन सहस्रनाम, प्रतिष्ठा सारोद्धार आदि के पाठ है ।

१००३१. गुटका स० ६ । पत्र स० २४७ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १४ ।

विशेष—बनारसी विलास, समयसार नाटक तथा पूजा पाठ आदि का सग्रह है ।

१००३२ गुटका स० ७ । पत्र स० १२० । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १५ ।

विशेष—पूजा पाठ हैं ।

१००३३. गुटका सं० ८ । पत्र स० १७४ । भाषा-अपभ्रश-सस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २५ ।

विशेष—कथा तथा पूजा पाठ सग्रह है ।

प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर चेतनदास दीवान, पुरानी डीग

१००३४. गुटका स० १ । पत्रस० ७२ । आ० १०×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण वेष्टन स० १७ ।

विशेष—चौबीस तीर्थंकर पूजा तथा भक्तामर स्तोत्र मत्र सहित है ।

१००३५ गुटका सं० २ । पत्रस० १९९ । आ० ८½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १७५७ वैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ ।

विशेष—श्रीपाल चरित्र भाषा (परिमल्ल) त्रेपन क्रिया, त्रिलोकसार आदि रचनाए हैं ।

१००३६. गुटका स० ३ । पत्रस० २५ । आ० ११×७½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण ।वेष्टन स० ४४ ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र एव सामान्य पूजा पाठ सग्रह है ।

१००३७ गुटका स० ४ । पत्र स० ३६ । आ० १०½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ ।

विशेष—पूजाओ का सग्रह है ।

१००३८ गुटका स० ५ । पत्रस० ४२ । आ० ९½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १८५८ चैत्र बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० ४८ ।

विशेष—लूहरी   रामदास
विनती   ,,
पद सग्रह   —

१००३९ गुटका स० ६ । पत्रस० २४५ । आ० ९×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४९ ।

विशेष—समयसार नाटक, बनारसी विलास तथा मोह विवेक युद्ध आदि पाठ हैं ।

१००४० गुटका स० ७ । पत्रस० १३४ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५१ ।

विशेष—जगतराम के पदो का सग्रह है । अन्त मे भक्तामर स्तोत्र भाषा तथा पच मगल पाठ हैं ।

१००४१. गुटका स० ८ । पत्रस० ६० । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १९०० ।अपूर्ण । वेष्टनस० ५२ ।

विशेष—ज्योतिष सम्बन्धी पद्य हैं ।

१००४२. गुटका स० ६ ।पत्रस० ४४ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ५३ ।

विशेष—भर्तृहरि शतक तथा अन्य पाठ है लेकिन अपूर्ण हैं । २२ से आगे के पत्र नही हैं । आगे शृगार मजरी सवाई प्रतापसिंह देव विरचित है जिससे कुल १०१ पद्य हैं तथा पूर्ण है ।

१००४३ गुटका सं० १० । पत्रस० ६० । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५४ ।

विशेष—गुटका नवीन है । हिन्दी पदो का सग्रह है ।

१००४४. गुटका स० ११ । पत्रस० २२-५४ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ५५ ।

विशेष—जैन शतक एव भक्तामर स्तोत्र आदि का सग्रह है ।

१००४५ गुटका स० १२ । पत्र स० ६-५४ । आ० ७×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५६ ।

विशेष—लक्ष्मी स्तोत्र, ऋषिमडल, जिनपजर आदि स्तोत्रो का सग्रह है ।

१००४६ गुटका स० १३ । पत्र स० ६५ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १८२३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५७ ।

विशेष—चेतन कर्म चरित्र (भगवतीदास) पद-जिनलाभ सूरि, दादाजी स्तवन, पार्श्वनाथ स्तवन आदि विभिन्न कवियो के पाठ हैं ।

१००४७ गुटका स० १४ । पत्रस० २३२ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५८ ।

विशेष—षोडश कारण, तीन चौबीसी, षोडश कारण मडल पूजा, दशलक्षण पूजा-सहस्रनाम आदि का सग्रह है ।

१००४८. गुटका स० १५ । पत्रस० ५१ । आ० ७×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५६ ।

विशेष—हिन्दी के विविध पाठो का सग्रह है ।

१००४६. गुटका स० १६ । पत्रस० ६० । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६० ।

विशेष—पच स्तोत्र, तत्वार्थ सूत्र, सिद्ध पूजा, षोडशकारण तथा दशलक्षण पूजा का सग्रह है ।

१००५० गुटका स० १७ । पत्रस० ४४ । आ० ७½×५ इञ्च । भाषा--हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ ।

विशेष—सामान्य हिन्दी पदो का सग्रह है ।

१००५१. गुटका स० १८ । पत्र स० १४४ । आ० ८×५ इंच । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६२ ।

विशेष—पूजा सग्रह, रामाष्टक, बारहमासा, नेमिनाथ का व्याहला, सवत्सर फल, पाशा केवली पाठो का सग्रह है ।

१००५२. गुटका स० १६। पत्रस० ४६। आ० ७×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल स० १८२४। पूर्ण। वेष्टन स० ६३।

१	प्राणायाम विधि	×	६५ पद्य
२	पदस्थ ध्यान लक्षण	×	७४ पद्य
३	वारह भावना	—	
४	दोहा पाहुड	योगीन्द्रदेव	

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है। सेवाराम पाटनी ने कुम्हेर मे प्रतिलिपि की थी।

१००५३. गुटका स० २०। पत्रस० २०। आ० ७×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत—हिन्दी। ले०काल स० १८८३ पौष सुदी ११। । पूर्ण। वेष्टन स० ६७।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है—

भक्तामर स्तोत्र	मानतु गाचार्य	सस्कृत
जम्बूस्वामी पूजा	—	हिन्दी
प्राणीडा गीत	—	"
मगल प्रभाती	विनोदीलाल	"

१००५४. गुटका सं० २१। पत्रस० ८४। आ० ६×४½ इच भाषा-हिन्दी। ले०काल सं० १७६७ पूर्ण। वेष्टन स० ६८।

विशेष—मुख्यत निम्न प्रकार सग्रह है—

फुटकर सवैया	—	हिन्दी
सिद्धात गुण चौवीसी	कल्याणदास	"
कल्याण मन्दिर भाषा	वनारसीदास	"
बारहखडी	—	"
कालीकवच	—	"
विनती नेमिकुमार	भूधरदास	"
पद नेमिकुमार	डूगरसीदास	"

१००५५ गुटका स० २२। पत्र स० ७६। आ० ६½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी-सस्कृत। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ७७।

विशेष—पूजा पाठ, जिनदास कृत जोगीरास, विषापहार स्तोत्र, भानुकीर्ति कृत रविव्रत कथा (र० काल स० १६८७) क्षेत्रपाल पूजा सस्कृत एव सुमति कुमति की जखडी विनोदीलाल की है।

१००५६ गुटका स० २३। पत्रस० २५१। आ० ७½×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७६।

विशेष—करीव ७८ पाठो का सग्रह है। प्रारम्भ मे ७२ सीखें दी हुई हैं। मुख्य पाठ निम्न हैं—

१ अठारह नाता—कमलकीर्ति। (२) घटाकरण मत्र। (३) मगलाचरण-हीरानन्द। (४) गोरख चक्कर। (५) रोटतीज कथा (६) चेतनगारी (७) सास-वहु का झगडा—देवाब्रह्म। (८) सूरत की बारहखडी आदि।

१००५७. गुटका स० ४ । पत्रस० ६० । आ० ८×६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल स० १८८७ माह सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८० ।

विशेष—गुणस्थान चर्चा तत्वार्थ सूत्र हिन्दी अर्थ (अपूर्ण) सहित है ।

प० जयचन्द जी छावडा ने प्रतिलिपि की थी ।

१००५८. गुटका स० २५ । पत्रस० १७० । आ० ७½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १७८५ द्वि० वैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० ८५ ।

विशेष—निम्न पाठ है—

१ त्रेपन क्रिया कोश-किशनसिंह । ले०काल स० १७८५ । पूर्ण । १६२ पत्र तक ।

२. ८४ आसादन दोष-हिन्दी ।

१००५९. गुटका स० २६ । पत्र स० ९२ । आ० ८½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८९ ।

१	रत्नकरण्ड श्रावचार भाषा	×	पत्र १५ तक । र०काल स० १७७० फागुण वुदी २ ।
२	समाधि तत्र भाषा	×	पत्र २८ तक । र०काल स० १७७० चैत्र वुदी ८ ११२ पद्य है ।
३	रमणसार भाषा	×	पत्र ३५ तक । र०काल सं० १७६८
४.	उपदेश रत्नमाला	×	पत्र ४३ तक । र०काल स० १७०२ चैत सुदी १४
५	दर्शनसार	×	पत्र ४६ तक । र०काल स० १७७२
६	दर्शन शुद्धि प्रकाश	×	पत्र ४९ तक ।
७	अष्टकर्म वध विघान	×	प ५९ तक ।
८	विवेक चौवीसी	×	पत्र ६२ तक । र०काल स० १७६६ ।
९	पञ्च नमस्कार स्तोत्र भाषा	×	पत्र ६३ तक ।
१०	दर्शन स्तोत्र भाषा	रामचन्द्र	
११.	सुमतवादी जयाष्टक	—	६६
१२	चौरासी आसादना	×	६७
१३	वत्तीस दोष सामायिक	×	,,
१४,	जिन पूजा प्रतिक्रमण	×	,,
१५.	पूजा लक्षण	×	,,
१६	कषायजय भावना	×	६७-७२ तक
१७.	वैराग्य वारहमासा प्रश्नोत्तर चोपई	×	७५ ,
१८	जयमाल	×	७९ ,
१९	परमार्थ विशतिका	×	८१
२०	कलिकाल पचासिका	×	८३
२१	फुटकर वचनिका एव कवित्त	×	९२

१००६० गुटका सं० २७ । पत्रस० १०६ । आ० ६½×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६१ ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ सग्रह है ।

१००६१. गुटका स० २८ । पत्रस० ६२ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६३ ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र, पूजा पाठ सग्रह, लक्ष्मी स्तोत्र एव पदो का सग्रह है ।

१००६२. गुटका सं० २९ । पत्रस० ७० । आ० ७×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १८६० । अपूर्ण । वेष्टन स० ६४ ।

विशेष—सैद्धातिक चर्चा, कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य वदना, वारह भावना, त्रेपन भाव एव औषधियो के नुसखे हैं ।

१००६३. गुटका सं० ३० । पत्र स० २३२ । आ० ७½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

चतुर्विंशति पूजा, भक्तामर, सहस्रनाम, राजुल पच्चीसी, ज्ञान पच्चीसी, पार्श्वनाथ पूजा, अनत व्रत कथा, सूवा वत्तीसी, ज्ञान पच्चीसी एव पद (हरचन्द) हैं ।

१००६४. गुटका सं० ३१ । पत्रस० ३८ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ ।

विशेष—

१ रविव्रत कथा सुरेन्द्र कीर्ति र०काल स० १७०४ ।

२. पद ब्रह्म कपूर प्रभुजी थाकी मूरत मनडो मोहियो ।

१००६५. गुटका सं० ३२ । पत्र स० ३२१ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

१. तत्वार्थ सूत्र उमास्वामी । सस्कृत ।

२. भक्तामर स्तोत्र मानतु ग । ,,

३ भक्तामर पूजा विश्वभूषण । ,,

श्रीकाष्ठसघे मुनि राम सेनो
नदी तटाख्यो गुरु विश्वसेन ।
तत्पट्टधारी जनसौख्यकारी
विद्याविभूषो मुनिराय वभूव ।
तत्पादपद्मार्चनशुद्धमानु
श्रीभूषणे वादिगजेन्द्रसिंह ।
भट्टारकाधीश्वर सेव्यमाने
दिल्लीश्वरैरार्पितराजमान्य. ॥

तस्यास्ति शिष्यो व्रतमारधार
ज्ञानाब्धि नाम्ना जिनसेवको य ।
तेनै नदर्ध्येय प्रपूर्वपूजा भक्तामरस्यात्मज विशुद्ध जैवै ।।
इति भक्तामरस्तोत्रस्य पूजा पुन्य प्रवर्द्धिनी ।

१००६६. गुटका स० ३३ । पत्र स० ३५६ । आ० ६½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल स० १८३७ वैशाख सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १०० ।

विशेष—निम्न सग्रह है—

व्रत विवरण । प्रतिक्रमण । दश भक्ति । तत्वार्थसूत्र । वृहत् प्रतिक्रमण । पच स्तोत्र । गर्भ-पडार स्तोत्र-देवनन्दि । स्वनावली-वीरसेन । जिनसहस्रनाम-जिनसेन । रविव्रत कथा-भाऊ ।

१००६७ गुटका स० ३४ । पत्र स० २०० । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा—सस्कृत, हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०१ ।

विशेष—६० पाठो एव पदो का सग्रह है । प्रारम्भ के ४ पत्र तक पाठो की सूची है ।

मुख्य पाठ ये हैं—चेतन जखडी वाई मेघश्री जखडी-कविदास । रोगापहार स्तोत्र मनराम । जखडी साहुण लूवरी वर्णन ।

कक्का-मनरामा जन्म-पत्रिका खुशालचन्द की पत्र १५७ स्वति श्री गणेश कुल देव्या प्रसादात् ।

जननि जन्म सौख्याना वर्द्धनी कुलसपदा ।
पदवी पूर्वपुन्याना लिख्यते जन्म पत्रिका ।।

अथ शुभ सवत्सरेस्मिन श्री नृपति विक्रमादित्य राज्ये सवत् १७५६ वर्षे शाके १६२१ प्रवर्तमाने महामागल्यप्रदुक्तमासोत्तममासे पौषमासे शुभ शुक्लपक्षे सूर्यं उत्तरायणे हेमऋतौ पुण्यस्तिथौ एकादशी शुक्रवारे घटी ४० भरणीनक्षत्रे घटी···· · · उमामादेश सवादे आदौ विशोत्तरी श्री भ्रगु दशा मध्ये जन्म गौरी जात के अष्टोत्तरी श्री शुक्र दसामध्ये जन्म सनि सव्या सनि पाचके, माता पिता आनन्दकारी आत्मा दोष विवर्जित सघने अर्क गतास दिन २२ । भोग्यास दिन दित प्रमाण घटी २६ । रात्रिप्रमाण घटी २४ । अहो रात्रि प्रमाण घटी ६० । सागानेरि वास्तव्य साह जी श्री रामचन्द वैनाडा गोत्रे तत्पुत्र चिरजीव दयाराम ग्रहे भार्या ¦ पुत्र जन्म मास ८ वर्ष ८ मास १२ वर्ष १२ वर्ष ६ वर्ष ९ वर्ष १३ शुभ भवत् । कष्टजयधर्म करण । काता नवग्रहा वस्त्र स्वर देवहीणी । दालिद्र दुख दाइ ड मलई प्रपीपिते सकल लोक विरुद्धि वर्द्धी केमद गूणा पार्यव वस लोपी ।।१।।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली

१००६८ गुटका सं० १ । पत्रस० १४८ । आ० ७½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल स० १८१४ । भादो सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टनस० २५ ।

विशेष—नित्य एव नैमित्तिक पूजाओ का सग्रह है ।

१००६९. गुटका स० २ । पत्रस० १२४ । आ० १०×७¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २६ ।

विशेष—पूजा स्तोत्र, पाठ एव पदो का सग्रह है ।

१००७०. **गुटका स० ३** । पत्र स० ७८ । आ० ४$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । भाषा–हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७८ ।

विशेष—पद विनती आदि हैं ।

१००७१. **गुटका सं० ४** । पत्रस० ७४ । आ० ४$\frac{1}{2}$×३$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८२ ।

विशेष—जिनसेन कृत सहस्रनाम तथा रूपचद कृत पच मगल पाठ हैं ।

१००७२. **गुटका स० ५** । पत्र स० ६४ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा–संस्कृत–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ ।

विशेष—सामान्य पूजा स्तोत्र एव पाठ हैं ।

१००७३. **गुटका सं० ६** । पत्रस० ६३ । आ० ५×४$\frac{3}{4}$ इच । भाषा–हिन्दी । ले०काल स० १८४२ कार्त्तिक बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० १०६ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

(१) सूरसगाई—सूरदास । पद्य स० ५

(२) वारहमासा—मुरलीदास । १२

अगहन अगम अपार सखी री
या दुख मैं कासो कहुं ।
एक एक जीय मे एसी आवत है
जाय यमुना मैं वँहु ॥
वहू यमुना जरु पावक
सीस करवत सारि हो ।
पथ निहारत ए दिन वीते
कौ लगि पथ निहारि हो ॥
निहार पथ अनाथ मे भई
या दुख मैं कासो कहूं ।
भनत मुरली दास जाय
यमुना मे वहु ॥६॥

अन्तिम—

भनत गिरवर सुन हो देवा
गति मुकति कैसे पाइये ।
कोटि तीरथ किये को
फल वारामासा गाइये ॥

(३) चौवनी लीला—× ।

(४) कवित्त—नागरीदास । पत्रस० १२० ।

(५) पचायघ्याई—नददास । पत्रस० १२७ ।

इति श्री भागवतपुराणे दशमस्कध राज क्रीडा वर्णन मो नाम पञ्चाध्याय प्रथम अध्याय पूर्ण । इसके वाद ८६ पद्य और हैं ।

अघ हरनी मन हरनी सुन्दर प्रेम वीसतानी ।
नददास कै कठ वसो सदा मगल करनी ।

सवत् १८४२ वर्षे पोथी दरवार री पोथी थी उतारी ।

१००७४. गुटका स० ७ । पत्रस० २२४ । आ० ९ × ६½ इञ्च । भाषा हिन्दी । ले०काल स० १७९६ चैत सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टनस० १३९ ।

विशेष—धर्मविलास का सग्रह है ।

१००७५. गुटका स० ८ । पत्रस० ४४४ । आ० ९ × १३ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल स० १८९० ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० १४८ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक एव मडल विधान आदि का सग्रह है ।

१००७६. गुटका स० ९ । पत्रस० ११७ । आ० ६½ × ६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल स० १८४८ भादो वदी ९ । पूर्ण । वेष्टनस० १६८ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ स्तोत्र आदि का सग्रह है ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर सौगाणियों का करौली

१००७७. गुटका स० १ । पत्रस० ३६ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ७३ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र आदि हैं ।

१००७८. गुटका स० २ । पत्रस० १२–१२८ । आ० ६½ × ४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७४ ।

विशेष—सामान्य पूजाओ का सग्रह है ।

१००७९. गुटका सं० ३ । पत्रस० १० से ६२ । आ० ६ × ९ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ७५ ।

१००८०. गुटका सं० ४ । पत्रस० २४ से ११५ । आ० ९ × ६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत-प्राकृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ७६ ।

विशेष—निमित्त एव नौमित्तिक पूजा पाठ सग्रह है ।

१००८१. गुटका स० ५ । पत्रस० ६ से ४५ । आ० ४½ × ५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७७ ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका—

इति सदैवछसावलिगा की वात सपूरण ।

१००८२. गुटका स० ६ । पत्रस० ३ से १२६ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७८ ।

विशेष—पूजाओ के अतिरिक्त लघु रविव्रत कथा, राजुल पच्चीसी, नव मगल और रविव्रत कथा (अपूर्ण) है ।

१००८३. गुटका स० ७ । पत्र स० ११ से ८० । आ० ६¾×६ इञ्च । भापा–सस्कृत । ले०–काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७९ ।

विशेप—पूजा एव पाठो का सग्रह है ।

१००८४. गुटका सं० ८ । पत्र स० ९८ से ३०६ । आ० ६¾×६¼ इञ्च । भापा–सस्कृत । ले०काल × ।पूर्ण । वेष्टन स० ८० ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ हैं ।

१००८५ गुटका स० ९ । पत्रस० ४७ से १४१ । आ० ६¼×४¾ इ च । भापा-हिन्दी-सस्कृत। ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८१ ।

विशेष—पूजा, स्तोत्र एव विनतियो का सग्रह है ।

१००८६. गुटका सं० १० । पत्रस० २२ से १५५ । आ० ६¼×४¾ इञ्च । भापा–हिन्दी ले०काल स० १८४० चैत्र बुदी ८ । अपूर्ण । वेष्टनस० ८२ ।

१००८७ गुटका स० ११ । पत्र स० ४–७७ । आ० ८¾×५ इञ्च । भापा—सस्कृत-प्राकृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८३ ।

१००८८ गुटका स० १२ । पत्रस० ४१ । आ० ८×६¾ इञ्च । भापा—हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८४ ।

१००८९ गुटका सं० १३ । पत्रस० ५१ । आ० ८×६¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल स० १७८५ आसोज बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनस० ८५ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है ।

१ मोक्ष शास्त्र	उमास्वामी	सस्कृत	ले०काल स० १७८५
२ रविवार कथा	×	हिन्दी	
३ जम्बूस्वामी कथा	पाण्डे जिनदास	,,	र०काल स० १६४२ भादवा बुदी ५ । ले०काल स० १८२८ ।

१००९०. गुटका सं० १५ । पत्रस० २ से ३६८ । आ० ८×६¾ इ च । भापा–सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ८७ ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी बसवा

१००९१. गुटका स० १ । पत्रस० × । भापा–हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७३ ।
विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

पद	दीपचन्द	हिन्दी

अब मोरी प्रभु सू प्रीति लगी

अनेक कवियो के पदो का सग्रह है। रचना सुन्दर एव उत्तम है।

१००६२. गुटका स० २ । पत्र स० × । भाषा-हिन्दी। ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७२ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है।

मेघकुमार गीत	समयसुन्दर	हिन्दी
धन्ना ऋषि सिज्झाय	हर्षकीर्ति	,,
सुमति कुमति सवाद	विनोदीलाल	,,
पाचो गति की वेलि	हर्षकीर्ति	,,
	(र० काल स० १६८३)	
माली रासो	जिनदास	,,

१००६३ गुटका स० ३ । पत्रस० २४२ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३ ।

विशेष—पूजा पाठो का सग्रह है । राजुल पच्चीसी तथा राजुल नेमजी का बारहसामा भी दिया है।

१००६४. गुटका स० ४ । पत्रस० ३० । भाषा-हिन्दी। ले०काल × । अपूर्ण। वेष्टन स० ७४।

विशेष—बनारसी विलास मे से कुछ सग्रह दिया हुआ है।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा

१००६५. गुटका स० १। पत्रस० १५०। आ० ८½×६ इन्च। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० १३०।

विशेष—सामान्य पूजा पाठो का सग्रह। गुटका भीगा होने से अक्षर मिट गये हैं इसलिए अच्छी तरह से पढने मे नही आसकता है।

१००६६ गुटका स० २। आ० ६½×५½ इन्च। भाषा-हिन्दी सस्कृत। ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन स०१३१।

प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा

१००६७. गुटका स० १ । पत्र स० १८४। आ० १२×७½ भाषा-हिन्दी-प्राकृत । ले०काल स० १६६६ फागुण बुदी ८ । पूर्ण। वेष्टनस० १३६ ।

विशेष—निम्न पाठो सग्रह है—

ज्ञान पच्चीसी, पचमगल, द्रव्य सग्रह, त्रेपन क्रिया, ढाढर्सी गाथा, पात्रभेद, पट् पाहुड गाथा, उत्पत्ति महादेव नारायण (हिन्दी) श्रुत ज्ञान के भेद, छियालीसठाणा, पट् द्रव्यभेद, समयसार, दर्शनसार सुभापितावलि, कर्मप्रकृति, गोम्मटसार गाथा।

१००६८. गुटका स० ९ । पत्रस० २४६ । आ० ८×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १४० ।

विशेष—पूजाओं के सग्रह के अतिरिक्त तत्वार्थसूत्र परमात्म प्रकाश, इष्ट छत्तीसी, शीलरास परमानन्द स्तोत्र, जोगीरासो, सज्जनचित्तवल्लभ तथा सुप्पय दोहा, आदि का सग्रह है । दो गुटको को एक मे सी रखा है ।

१००६९. गुटका स० १४ । पत्रस० ३ से १०८ । आ० ८×६$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ८६ ।

विशेष—पच कल्याणक पूजा एव सामायिक पाठ हैं ।

१०१००. गुटका स० ४ । पत्रस० २२५ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा-प्राकृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३८ ।

विशेष—गुणस्थान चर्चा है । गुटका जीर्ण है ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

१०१०१. गुटका स० १ । पत्रस० १५६ । आ० ७$\frac{1}{2}$×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १७५९ पोष बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १३२ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

समयसार	बनारसीदास	हिन्दी
सुदामा चरित्र	—	"
सज्ञा प्रक्रिया	—	सस्कृत ।

१०१०२. गुटका सं० २ । पत्रस० २४८ । आ० ७×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३० ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है—

समाधितन्त्र भाषा	—	पर्वत धर्मार्थी
द्रव्य सग्रह भाषा	—	(ले०काल सं० १७०० आषाढ सुदी १५ ।

जोबनेर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१०१०३ गुटका सं० ३ । पत्रस० × ।वेष्टनस० १३१ ।

विषय—भीग जाने के कारण सभी अक्षर धुल गये हैं ।

१०१०४. गुटका स० ४ । भाषा-हिन्दी- । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३३ ।

विशेष— फुटकर पद्यो मे धर्मदास कृत धर्मोपदेश श्रावकाचार है ।

१०१०५. गुटका स० ५ । पत्रस० ६४ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी मालपुरा ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर
(अवशिष्ट)

१०१०६. गुटका स० १ । पत्रस० १८८ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × ।पूर्ण। वेष्टन स० २०३ ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

१०१०७. गुटका स० २ । पत्रस० ६५ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०४ ।

१०१०८ गुटका स० ३ । पत्रस० १३४ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल स० १६५० भादवा सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० २०८ ।

विशेष—कोई उल्लेखनीय पाठ नही है ।

१०१०९ गुटका स० ४ । पत्रस० १४८ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०९ ।

१०११०. गुटका स० ५ । पत्र स० ६३-८४ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १९४ ।

१०१११. गुटका स० ६ । पत्रस० ३४ । भाषा-सस्कृत । ले०काल स० १९५२ । पूर्ण । वेष्टन स० १९५ ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र भक्तामर स्तोत्र आदि पाठ है ।

१०११२. गुटका स० ७ । पत्र स० ८० । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १९२१पौप सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० २०० ।

विशेष—सूतक वर्णन, मृत्यु महोत्सव, गुणस्थान वर्णन, व्रतो का वर्णन, अर्थप्रकाशिका से लिया गया है । आदित्यवार की कथा भी है ।

१०११३. गुटका स० ८ । पत्र स० १४१ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २११ ।

विशेष—सम्यक्त्व के ६७ भेद, निर्वाण काण्ड, भक्तामर स्तोत्र सटीक (हर्षकीर्ति) नवमगल, राजुल पच्चीसी (विनोदीलाल) सूरत की अठारह नाता, मोक्ष पैडी, पद सग्रह है ।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर

१०११४. गुटका स० १ । पत्रस० ७३ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२१ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

१ पच वधावा	(हर्षकीर्ति)	भाषा हिन्दी
२. आदनाथ मगल	(रूपचन्द)	,,
३ खण्डेलवाल जाति उत्पत्ति		,,
४. सरस्वती पूजा		,,
५ कक्का	मनराम	,,
६ पद	भूलो मन भ्रमरा भाई	

१०११५. गुटका सं० २ । पत्रस० ८-१०३ । आ०९½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२२ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है—

१ जिनस्तवन—गुणसागर — हिन्दी
२. वडा कक्का । — ''
३ वारहमासा—खेतसी । — ''
४ राजुल पच्चीसी—विनोदीलाल-लालचन्द । — ''
५ विनती—दीपचन्द । — ''
६ पद—हर्षकीर्ति — ''
७ शीलरथ—शुभचन्द (१५ पद्य) । — ''
८ वटोई गीत । — ''
९ पद-रूपचन्द । — ''
१० विनती—कनककीर्ति । — ''
११ भक्तामर स्तोत्र । — सस्कृत
१२ छोटा मगल—रूपचन्द । — हिन्दी
१३ नेमिनाथ की लहुरि — ''
१४ पद—सुन्दर । — ''
१५ करम घटा—कनककीर्ति । — ''
१६ पद-जीवा ते तो नर भव वादि गमायो—कनककीर्ति । — ''
१७. सवोध प चासिका—द्यानतराय । — ''
१८ आरती सग्रह । — ''
१९ पद—भूधर, द्यानतराय, भागचन्द । — ''
२० पद—मति चेतन खेलो फागुण हो ।
अहो तुम चेतन-जगजीवन ।
जिनराज वरण मन ···· ······। भूधर ।
२१ चौवीस तीर्थंकर जैमाल—विनोदीलाल । — हिन्दी
२२ निर्वाण काण्ड (भैय्या भगवतीदास)
२३ वारह-अनुप्रेक्षा ।
२४. वारह-भावना ।
२५ प्राणीडा गीत ।
२६ स० १८७३ की सीताराम जी की, स० १७९४ की फतेराम की, सं० १८०३ की वाई खुशमाला की—आदि—जन्म-पत्रिया भी हैं ।

मुनि मायाराम ने दौसा मे चि० दीपचन्द की पुस्तक से प्रति की थी ।

१०११६ गुटका सं० ३ । पत्र स० १५० । आ० ६×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२३ ।

विशेष—निम्न सग्रह है ।

१ पद—मनराम	हिन्दी
२ भक्तामर भाषा—हेमराज	"
३ नाटक समयसार—बनारसीदास	"
४. नेमीश्वर रास—ब्र० रायमल्ल स० १६१५	"
५ श्रीपाल स्तुति	"
६ चितामणि पार्श्वनाथ	
७. पचमगति वेलि—हर्षकीर्ति	

१०११७. गुटका सं० ४ । पत्रस० १४१ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २२४ ।

विशेष—निम्न प्रकार सग्रह है—

१ सीता चरित्र—रामचन्द्र । पत्रस० ११६ तक हिन्दी पद्य । र०काल स० १७१३ । ले०काल स० १८४१ ।

मोतीराम अजमेरा मौजाद के ने सवाई जयपुर मे महाराज प्रतापसिह के शासन मे लिखा था ।

२ जम्बू स्वामी कथा—पाण्डे जिनदास । र०काल स० १६४२ । ले०काल स० १८४५ । स० १९६६ मे लश्कर के मन्दिर मे चढाया था ।

१०११८ गुटका स० ५ । पत्र स० २९७ । आ० ८×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २२५ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

१ जिन सहस्रनाम भाषा

२ सिन्दूर प्रकरण

३ नाटक समयसार—भाषा—हिन्दी ।

४ स्फुट दोहा—भाषा हिन्दी । ७१ दोहे

१०११९. गुटका स० ६ । पत्र स० ५२ । आ० ६½×५½ इच । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २२६ ।

विशेष—पट्टी पहाडे तथा सीधावर्ण समाना आदि पाठो का सग्रह है ।

१०१२०. गुटका स० ७ । पत्र स० १६१ । आ० ७×५½ इञ्च । भाषा × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २२७ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है

पट्टावली—बलात्कार गण गुर्वावली है ।

पडिकम्मण, सामयिक, भक्ति पाठ, पञ्च स्तोत्र, वन्देतान जयमाल, यशोधर रास—जिणदास, आकाश पचमी कथा-ब्रह्म जिनदास, अठाईस मूल गुण रास—जिणदास, पाणी गालण रास-ब्र० जिनदास।

प्रति प्राचीन है।

१०१२१. गुटका सं० ८। पत्र स० २७। आ० ८$\frac{1}{2}$×१$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल अपूर्ण। वेष्टन स० २२८।

विशेष—नित्य पूजा पाठ सग्रह है।

१०१२२. गुटका सं० ९। पत्रस० १४६। आ० १०×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० २२६।

विशेष—विशेपत पूजा पाठो का सग्रह है।

पद—जिन बादल चढि आयो,
भया अपराव क्या किया—विजय कीर्ति
समझि नर जीवन थोरो—रूपचन्द। जगतराम आदि के पद भी हैं।

पूजा सग्रह, सात तत्व, ११ प्रतिमा विचार—त्रिलोक चन्द्र—हिन्दी (पद्य)
पार्श्वपुराण—भूधरदास।

१०१२३. गुटका सं० १०। पत्र स० ३४९। आ० ७×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल स० १६९८। अपूर्ण। वेप्टन स० २३०।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है—

पडिकोणा, श्रुत स्कन्ध—ब्रह्म हेम, भक्ति पाठ सग्रह, पट्टावलि, (मूल सघ) पडित जयमाल, जमोधर जयमाल, सुदसण की जयमाल, फुटकर जयमाल।

१०१२४. गुटका सं० ११। पत्रस० १४३। आ० ५$\frac{1}{2}$×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ७७७।

विशेष—मुख्यत निम्न कवियो के पदो का सग्रह है—

किशन गुलाव, हरखचन्द, जगतराम, राज, नवल जोवा, प्रभाती लालचन्द विनोदी लाल, रूपचन्द, सुरेन्द्रकीर्ति, नित्य पूजन, मगल, जगतराम। नित्य पूजन भी है।

सम्मेदशिखर पच्चीमी—खेमकरण—र०काल स० १८३६
रविवार कथा—भाऊ कवि
भक्तामर भापा—हेमराज
सभी पद अनेक राग रागिनियो मे हैं।

१०१२५. गुटका सं० १२। पत्र स० ९९। आ० ६×४$\frac{1}{2}$ इञ्च। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स० ७७८।

विशेष—नित्य पाठ एव स्तोत्रो के अतिरिक्त कुछ मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—

स्तवन—ज्ञानभूषण
पद—भानुकीर्ति

पद—प० नाथू	हिन्दी
पद—मनोहर	,,
पद— जिनहरप	,,
पद—विमलप्रभ	,,
वारहमासा की विनती—पाडे राज भुवन भूषण—	,,
पद—चन्द्रकीर्ति	,,
आरती सग्रह	,,

१०१२६ गुटका सं० १३ । पत्रस० ६६ । आ० ८½×२½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७७६ । गुटका प्राचीन है ।

विशेष—मुनीश्वर जयमाल—ब्र० जिणदास हिन्दी

नन्दीश्वर जयमाल—सुमतिसागर	हिन्दी
चतुर्विंशति तीर्थंकर जयमाल	हिन्दी
गुरु स्तवन—नरेन्द्र कीर्ति	—
सामयिक पाठ	सस्कृत
सहस्रनाम—आशाधर	सस्कृत
नित्य नैमित्तिक पूजा	सस्कृत
रत्नत्रय विधि पूजा	

१०१२७ गुटका सं० १४ । पत्रस० २६ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७८० ।

विशेष—निम्न सग्रह है—

पार्श्वनाथ स्तोत्र
आदित्यवार कथा (अपभ्र श)
मानवावनी—मनोहर (इसका नाम सवोधन वावनी भी है)
सवैया वावनी--मन्ना साह
वावनी—डू गरसी

१०१२८. गुटका सं० १५ । पत्र स० १८४ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७८१ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

सामायिक पाठ
भक्ति पाठ
तत्वार्थ सूत्र—आदि का सग्रह है ।

१०१२६. गुटका सं० १६ । पत्र स० १७० । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७८२ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

मदन जुज्ज—बूचराज—र०काल १५८६ ।	हिन्दी
मान बावनी—मनोहर	,,
हनुमान कथा—ब्र० रायमल्ल र०काल १६१६ ।	,,
टडाना गीत	,,
दशलक्षण जयमाल	,,
देवपूजा, गुरु पूजा—शास्त्र पूजा	,,
सिद्ध पूजा	,,
सोलह कारण पूजा	,,
कलिकु ड पूजा	,,
चितामणि पूजा जयमाल	,,
नेमीश्वर पूजा	,,
शातिचक्र पूजा	,,
गणधर वलय पूजा	,,
सरस्वती पूजा	,,
शास्त्र पूजा	,,
गुरु पूजा	,,

१०१३०. गुटका सं० १७ । पत्र स० ४२ । आ० ६½×४½ इञ्च । वेष्टन स० ७८३ ।

विशेष—मानमजरी-नन्ददास । ले०काल स० १८१६ द जीवनराज पाड्या का ।

इसके आगे औषधियो के नुस्खे तथा बनारसीदास कृत सिन्दूर प्रकरण है ।

१०१३१. गुटका स० १८ । पत्रस० १०२ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी-सस्कृत । वेष्टन स० ७८४ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ सग्रह है ।

१०१३२. गुटका सं० १६ । पत्र स० १६-६६ । आ० ६×४½ इञ्च । वेष्टनस० ७८५ ।

राजुल पच्चीसी	—	लालचन्द
पच मगल	—	रूपचन्द
पूजा एव स्तोत्र		

१०१३३. गुटका स० २० । पत्र स० ४-६७ । भाषा-हिन्दी-सग्रह । वेष्टनस० ७८६ ।

बधाई—

विशेष—पद-सर्वसुख हरीकिशन, सेवग, जगजीवन, रामचन्द नवल, नेमकीर्ति, द्यानत, ।कर्म-चरित, १३ पद्य हैं ।

१०१३४. गुटका स० २१ । पत्रस० १२६ । ग्रा० ५×६ ५न्च । भाषा–हिन्दी-सग्रह । वेष्टनस० ७८७ ।

विशेष—नित्य पाठ सग्रह एव विनती ग्रादि हैं—

कल्याण मन्दिर भाषा

नेमजी की विनती

१०१३५ गुटका स० २२ । पत्र स० ६६ । ग्रा० ६½×४½ इन्च । भाषा-हिन्दी–सस्कृत । वेष्टन स० ७८८ ।

कोकशास्त्र ग्रानन्द ग्रपूर्ण

१०१३६ गुटका स० २३ । पत्र स० १६ । ग्रा० ६½×४½ इन्च । भाषा-हिन्दी । वेष्टन स० ७८९ ।

विशेष—पूजा सग्रह है ।

१०१३७. गुटका स० २४ । पत्रस० ७४ । ग्रा० ६×५ इन्च । वेष्टनस० ७९० ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रहहै—

१. रविवार कथा

२. जोगीरासा — जिणदास

३ ज्ञान जकडी — जिनदास

४. उपदेश वेलि — प० गोविन्द

पडित गो यद प्रचल महोछव उपदेशी वेलीसार ।
ग्राधर्म रुचि ब्रह्म हेतु भणी कीधी जासि ने भवपार ॥

५ जिन गेह पूजा जयमाल ६ बाहुवलि वेलि — शान्तिदास

७ पद ब्रह्म राजपाल

८ तीर्थंकर माता-पिता नाम वर्णन हेमलु ३० पद, र० काल स० १५४८

९. कवि परिचय—

हू मतिहीन ग्रयानो ग्रक्षिरु कानो जोडि ।
जो यह पढइ पढावइ भविजन लावइ खोडि ॥
कविता सुर कहायो नारी कवीशुरु पूतु ।
कानो मातु न जानो पद्रहसय ग्रढताला ।
वरसा सुगति सुवाला सीलु नो ग्रसराला ॥
वस्त डारनी रूमप सोखा भलिहइ गाऊ ।
गोल पूर्वु महाजनु हेमलु हुइ तसु नाउ ॥
तिसकी माता देल्हा पिता नाउ जिनदास ।
जो यह कावि पढ स्यो कछु पुन्य को ग्राशु ॥

१० मुक्तावली गीत ११. ग्राराधना प्रतिवोध सार दिगम्बर १२. राम सीता गीत-ब्रह्म श्री वर्द्धन
१३. द्वादशानु प्रेक्षा-ग्रवधू १४. सरस्वती स्तुति-ज्ञानभूषण-हिन्दी

१५ कलिकु ड पूजा			
१६ मागीतु गी गीत	अभयचन्द सूरि	हिन्दी	४५ पद्य
१७ जवू कुमार गीत	—		४५ पद्य
१८ रोहिणी गीत	श्रुतसागर	हिन्दी	

१०१३५. गुटका स० २५। पत्र स० ४-६८। आ० ६×६½ इञ्च। वेष्टन म० ७६१।

१. शतक संवत्सरी—

विशेष—प्रारम्भ के ३ पत्र नही हैं। स० १७०० से १७६६ तक १०० वर्ष का वर्षफल दिया गया है।

महात्मा भवानीदास ने लवाण मे प्रतिलिपि की। प्रशस्ति निम्न प्रकार है—स० १७८५ वर्षे शाके १६४० प्रवर्तमाने मिति अपाढ सुदी ६ वार गुरुवासरे सपूर्ण दिल्ली तखतपति साह श्री महैमदसाहि। आवेर नगर महाराजा श्री सवाई जयसिहजी लवाण ग्रामे महाराजाविराज श्री वाका वहादुर श्री रणदरामजी राज कर्त्तव्य।

२. चितोड़ की गजल— कवि खेतान हिन्दी र०काल स १७४८

प्रारम्भ के चार पत्र नही हैं।

खरतर जती कवि खेताक अखै भोजसू एताक।
सवत् सतरासै अडताल, श्रावण मगसिर साल ।।
वदि पाख वारसी ते रीक कीन्ही गजल पढियो ठीक।

कवि ने ५६ पद्यो मे चित्तौडगढ का वर्णन किया है। प्रारभ के ३७ पद्य नही हैं।
रचनाए ऐतिहासिक हैं।

३ शकर स्तोत्र	शकराचार्य	सस्कृत	
४. कर्म विपाक	सूर्यार्णव	अपूर्ण	अन्तिम २५ पत्र सस्कृत मे हैं।

१०१३६. गुटका सं० २६। पत्रस० ४१-१२८। आ० ६×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। वेष्टन म० ७६२।

१, मनोरथ माला	—	साह अचल
२ जिन धमाल········ ····		
३ धर्म रासा		
४. सवोध पचासिका	प्राकृत	
५ साधु गीत	—	मनोहर
६. जकडी	—	रूपचन्द
७. पद	ब्रह्मदीप, देवसुन्दर, कवीरदास, वील्हौ,	
८. धर्मतत्व सवैया	—	सुन्दर
६. पट्लेश्या वर्णन		(सस्कृत)
१०. द्वादसी गाथा	११	वीस विरहमान गाथा

१०१४०. गुटका स० २७ । पत्रस० २-२३ । ग्रा० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण । वेष्टन स० ७६३ ।

विशेष—गुटका प्राचीन है । भोज चरित्र है पर लेखक का नाम नही है) इसमे रतनसेन और पद्मावती की भी कथा है ।

१०१४१. गुटका स० २८ । पत्रस० ४-२४४ । ग्रा० ६½× ५इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । अपूर्ण । वेष्टन स० ७६४ ।

विशेष—मुख्यत नित्य नैमित्तिक पाठ पूजा का सग्रह है । पत्र खुले हुए है ।

१०१४२. गुटका स० २९ । पत्रस० १५-११८ । ग्रा० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण । वेष्टनस० ७६५ ।

विशेष—भूधरदास, द्यानतराय व बुधजन आदि कवियो के पदो का सग्रह है ।

१०१४३. गुटका स० ३० । पत्र स० ६ । ग्रा० ६×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले० काल स० १८४६ । पूर्ण । वेष्टन स० ७६६ ।

विशेष—लक्ष्मी स्तोत्र, शान्ति स्तोत्र आदि । देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य प० नोनदराम ने किशनपुरा मे प्रतिलिपि की थी ।

१०१४४. गुटका स० ३१ । पत्रस० १६ । ग्रा० ३½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी सस्कृत । पूर्ण । वेष्टन स० ७६७ ।

विशेष—नित्य पाठ करने योग्य स्तोत्र पूजा एव पाठो का सग्रह है ।

१०१४५. गुटका स० ३२ । पत्रस० ७८ । ग्रा० ५×४ इञ्च । भाषा--हिन्दी-सस्कृत । पूर्ण । वेष्टनस० ७६८ ।

विशेष—इसमे कछवाहा राजाओ की वशावली है महाराजा ईसरीसिंह जी तक १८७ पीढी गिनाई है । आगे वशावली की पूरी विगत भी दी है ।

१०१४६. गुटका स० ३३ । पत्रस० ३१ । ग्रा० ८×६½ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । पूर्ण । वेष्टन स० ७६९ ।

विशेष—नित्य पूजा पाठो का सग्रह है ।

१०१४७. गुटका स० ३४ । पत्र स० ४८ । ग्रा० ४½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । पूर्ण । वेष्टन स० ८०० ।

विशेष—औषधियो के नुस्खे है तथा कुछ पद भी है ।

१०१४८ गुटका स० ३५ । पत्रस० ७० । ग्रा० ५½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । पूर्ण । वेष्टनस० ८०१ ।

विशेष—पद स्तोत्र एव अन्य पाठो का सग्रह है । गणेश स्तोत्र (१७९५ का लिपिकाल)

१०१४९. गुटका स० ३६ । पत्रस० ३०-६२ । ग्रा० ६½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । पूर्ण । वेष्टनस० ८०२ ।

१. मुनीश्वरो की जयमाल			
२ पचम गति वेलि	हिन्दी	हर्षकीर्ति	र० काल स० १६८३
३. पद सग्रह	"	—	—

१०१५०. गुटका सं० ३७। पत्र स० ८२ । आ० ५×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । पूर्ण । वेष्टन स० ८०३ ।

१ पद स ग्रह २ पूजा पाठ सग्रह

३ शनिश्चर की कथा-विक्रम ले०काल १८१६

४. सूर्य स्तुति-हिन्दी । ५१ पद्य । ले०काल १८१६

विशेष—हीरानन्द सौगाणी ने प्रतिलिपि की थी ।

५ नवकार मत्र—लालचन्द—ले० काल १८१७

६ सुरज जी की रसोई ७ चौपई ८ कवित्त

६ सज्झाय १० पद

१०१५१. गुटका स० ३८। पत्रस० ४१-८६ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । पूर्ण । वेष्टन स० ८०४ ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ सग्रह है ।

१०१५२. गुटका सं० ३६। पत्रस० २८ । आ० ८½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । पूर्ण । वेष्टन स० ८०५ ।

विशेष—बाल सहेली शुक्रवार की तरफ से चढाई गई नित्य नियम पूजा की प्रति स० १६७८

१०१५३. गुटका सं ४०। चतुर्विशतिपूजा—जिनेश्वरदास । पत्रस० ८७ । आ० ६×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १६५६ । पूर्ण । लिपिकाल १६६१ ।वेष्टन स० ८०६ ।

विशेष—(जिनेश्वरदास सुजानगढ के थे ।)

प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

१०१५४. गुटका सं० १। पत्रस० ८८ । आ० ६½×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल ×। पूर्ण ।

१ पद सग्रह	×	पत्र १-४
२. विनती (अहो जगत गुरु)	भूधरदास	पत्र ४-५
३. पद सग्रह	—	पत्र ५-१०
४ सहेल्यो पद	सुन्दरदास	पत्र १०-११
५ पद सग्रह	—	पत्र १२-६२
६. स्वप्न वत्तीसी	भगौतीदास	पत्र ६२-६५

विशेष—३४ पद्य हैं ।

७ पद सग्रह	—	पत्र ६६-८८

विशेष—विभिन्न कवियो के पद हैं । पदो का अच्छा सग्रह है । पदो के साथ राग रागिनियो का नाम भी दिया है ।

१०१५५. गुटका सं० २। पत्रस० ११२। आ० ५½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

१	जैन शतक	भूधरदास		पत्र १–२७। र०काल स० १७८१
२	कवित्व छप्पय	×	हिन्दी	पत्र २८–३७
३.	विषापहार स्तोत्र	अचलकीर्ति	,,	पत्र ३८–४२
४	पूजा पाठ	—	,,	४२–५२
५	कमलामती का सिज्झाय	—	,,	५२–५६
			३२ पद्य हैं। कथा है।	
६.	चौवीस दडक	दौलतराम	हिन्दी	५७–६३
७.	सिखरजी की चौपई	केशरीसिंह	हिन्दी	६४–६६
			४५ पद्य हैं।	
८	एकसौ अष्टोत्तर नाम	—	हिन्दी	७०–७१
९.	स्तुति द्यानतराय	—	हिन्दी	७२–७३
१०.	पार्श्वनाथ स्तोत्र	द्यानतराय	हिन्दी	७३–७४
११	नेमिनाथ के १० भव	×	,,	७५–७७
१२.	रिषभदेव जी लावणी	दीपविजय	,,	७७–८३

६२ पद्य है। र०काल स० १८७४ फागुन सुदी १३।

विशेष—उदयपुर के भीवसिंह के शासन काल मे लिखा था।

१३	पद सग्रह	×	हिन्दी	पत्र ८४–९०
१४	सवैय्या	मनोहर	,,	९१–९६
१५	प्रतिमा वहोत्तरी	द्यानतराय	हिन्दी	९६–१०५
१६.	नेमिनाथ का वारहमासा	विनोदीलाल	,,	१०६–११२

१०१५७. गुटका स० ३। पत्रस० १८३। आ० ७×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ।

१	पच मगल–	रूपचन्द	हिन्दी	पत्र १–१४
२	वीस विरहमान पूजा	—	,,	पत्र १४–२१
३	राजुल पच्चीसी	—	,,	पत्र २२–३१
४	आकाश पचमी कथा	ब्र० ज्ञान सागर	,,	पत्र ३१–४३
५	नेमिनाथ वारहमासा	विनोदीलाल	,,	पत्र ४४–५२
६	आदित्यवार कथा	भाऊ कवि	,,	पत्र ५३–७६
७	निर्वाण पूजा	—	,,	पत्र ७६–८०
८	निर्वाण काण्ड	—	,,	पत्र ८०–८३
९.	देव पूजा विधान	—	,,	पत्र ८३–१०८
१०	पद सग्रह	—	,,	पत्र १०९–१८३

विशेष—विभिन्न कवियो के पद हैं। लिपि विकृत है इसलिये अपाठ्य है।

१०१५८ गुटका सं० ४ । पत्र स० १२२८ । आ० ५½×४¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १६१७ जेठ बुदी २ । पूर्ण ।

विशेष—इसमे ज्योतिप, आयुर्वेदिक एव मत्र शास्त्र सम्वन्धी साहित्य का उत्तम सग्रह है । लिपि बारीक है लेकिन स्पष्ट एव सुपाठ्य है ।

प० जीवनराम ने फतेहपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

१ नाडी परीक्षा—× । सस्कृत । पत्र १ अपूर्ण

२ ग्रह प्रवेश प्रकरण—× । हिदी । पत्र २ अपूर्ण

३ आयुर्वेदिक नुसखे—× । हिन्दी । पत्र ३-५

४ नेत्र रोग की दवा—× । हिन्दी । पत्र ६-८

५ सारणी स० ६५-६६ की—× । हिन्दी । ८-१२

६ हक्कर्म कला—× । सस्कृत । १३-१४

७ सारणी स० १७८२ से १८१२ तक सस्कृत । १४-२१

८ निषेक—× । सस्कृत । २२-२४

६ निपेकोदाहरण—× । हिन्दी गद्य । २५-३४

१० मास प्रवेश सारणी, पत्र ३५-५२ ।

११ ग्रहण वर्णन शक सवत् १७६२ से १८२१ तक पत्र ५६-६२ ।

१२ १८ प्रकार की लिपियो

के नाम ···· हस लिपि, भूतलिपि, यशलिपि, राक्षस लिपि, उड्डी लिपि, पावनी लिपि, मालवी लिपि, नागरी लिपि, लाटी लिपि, पारसी लिपि, अनिमित्त लिपि, चाणदी, मौलवी, देशाविशेप ।

इनके अतिरिक्त—लाटी, चोटी, माहली, कानडी, गुर्जरी, सोरठी, मरहठी, कांकणी, खुरासणी, मागधी, सिंहली, हाडी, कीरी, हम्मीरी, परतीस, मसी, मालवी, महापोवी और नाम गिनाये हैं ।

१३. पुरुप की ७२ कलायें, स्त्री की ६४ कला,
वृत्तादि भेद (हिन्दी) नुसखे—६४ पत्र तक

१४. सारिणी स० १८७५ शक सवत् १७४० से १६२५ तक १६५ तक

१५ आयुर्वेदिक नुसखे—हिन्दी-पत्र १६६-२०६ तक एव अनेको प्रकार की विधिया ।

१६ ,, विभिन्न ग्र थो से पत्र २०७-२४७ हिन्दी मे ।

१७ ग्रहसिद्ध श्लोक—महादेव । सस्कृत । २४८-२४६

१८. उपकरणानि एव घटिका वर्णन—अ को मे । २५०-३५५

१६ गोरखनाथ का जोग—× । हिन्दी । ३५६-३७७

२० दिनमानकरण—× । हिन्दी । ३७८-३८२

२१. दिनमान एव लग्न आदि फल अ को मे

२२ लग्न फल आदि—× । संस्कृत । ४३०-५८२

२३ ज्योतिप सार सग्रह—× । सस्कृत । ५८२-६१८

२४. गिरधरानन्द—× । सस्कृत । पत्र ६१६-६७६

लें०काल स० १८६५ मगसिर बुदी १२ ।

विशेष—प० जीवणराम ने चूरू मे प्रतिलिपि की थी ।

२५ तिथिसारणी—लक्ष्मीचद । सस्कृत । ६८०-६६६

र०काल स० १७६० ।

विशेष—ये जयचद सूरि के शिष्य थे ।

२६ कामधेनु सारणी—अ को मे । ६६७-७१६

२७ सारोद्धार—हर्षकीर्ति सूरि । सस्कृत । ७१७-७८८

२८ पल्ली विचार—× । सस्कृत । ७८६-७६०

२६ आणन्द मणिका कल्प—मानतु ग । सस्कृत । ७६१-७६५

विशेष—अन्तिमपुष्पिका—श्वेताम्बराचार्य श्री मानतु ग कृते श्री मानतुंग नदाभिधानो ब्रह्मसागरे उत्पन्न मणिसकेतस्थान लक्षणोनामत्वमानद मणिका कल्प समाप्त ।

३० केशवी पद्धति भापा उदाहरण—× । सस्कृत । पत्र ७६६-८३७

३१ योगिनी दशाफल—× । सस्कृत । पत्र ८३८-८६६

३२ षड् वर्गफल—× । सस्कृत । पत्र ८६७-६०३

३३ मुष्टिका ज्ञान—× । सस्कृत । ६०४

३४ आषाढी पूर्णिमाफल—श्री अनूपाचार्य सस्कृत ६०५

३५ वस्तुज्ञान—× । सस्कृत । ६०६-६०६

३६ रमल चितामणि—× । सस्कृत । ६१०-६६६

३७ शीघ्रफल—अ को मे । ६६७-६६५

३८ शूलमत्र, मेघस्तभन गर्भवधन, वशीकरण मत्र आदि—× । सस्कृत । पत्र ६६६-६६७ यत्र भी दिया हुआ है ।

३६. ताजिक नीलकठोक्त षोडश योग—× । सस्कृत । पत्र ६६८-१००५ । ले०काल स० १८६६ माघ बुदी ७

विशेष—प० जीवणराम ने चूरू मे लिखा था ।

४० अरिष्टाध्याय—× । सस्कृत । पत्र १००६-१००८

(हिल्लाज जातके वर्ष मध्ये)

४१ दुर्गभग योग—× । सस्कृत । १००८-१०१० ।

४२. घोरकालानतचक्र— । सस्कृत । १०१०-१०११

४३. तिथि, चक्र तिथि, सौरभ, योगसोरभ, वाटिका, वाल्लि, गृहफल, शोघ्रफल-अ को मे ।

१०१२ से १०४३

४४ आयुर्वेदिक नुसखे—× । हिन्दी । १०४४-१०५७

४५. विजययत्र परिकर—× । सस्कृत । १०५८-१०६१

४६ विजय यत्र प्रतिष्ठा विधि सस्कृत १०५८-१०६१

४७ पन्द्रह अ क यत्र—सस्कृत । १०६५-६६

४८ पन्द्रह अ क विधि एव यत्र साधन—सस्कृत-हिन्दी । १०६६-६९

४९ सुभापित—। हिन्दी । १०७०-१०८८

५० सूतक श्लोक—। सस्कृत । १०८८-८९

५१ प्रात सध्या—। सस्कृत । १०९४-९६

५२. व्रतस्वरूप-भट्टारक सोमसेन । सस्कृत । १०९०-९३

५३ अरिष्टाध्याय-धनपति । सस्कृत । १०९७-११०८

५४ कर्म चिताध्याय—। सस्कृत । ११०९-११५

५५ ग्रहराशिफल (जातका भरणे)—× । सस्कृत । १११६-३६

५६ शुद्ध कोष्टक—× । सस्कृत । ११३७-११४८

५७ टिप्पण—× । हिन्दी । ११४९-११५३

५८ आयुर्वेदिक नुसखे—× ।

५९ चन्द्रग्रहण कारक
मारक क्रिया—× । हिन्दी । ११७०-११७३

६० आयुर्वेदिक नुसखे—× । हिन्दी । ११८४-११८९

६१ गणपति नाममाला—× । सस्कृत । ११९०-१२०४

६२ रत्न दीपिका—चडेश्वर । सस्कृत । १२०५-१२११

लें०काल स० १९१७ ।

विशेष—फटेहपुर मे लिखा गया ।

६३ महुरा परीक्षा—× । सस्कृत । १२१२-१२१४

६४, सारणी—× । सस्कृत । १२१५-१२२८

१०१५९ गुटका सं० ५ । पत्रस० १७५ ।आ० १०×६ इञ्च । भापा-हिन्दी । ले० काल ×। पूर्ण ।

१ पूजा सग्रह—× । हिन्दी ।

२. तत्वार्थसूत्र—उमास्वामी । सस्कृत ।

३, पार्श्वनाथ जयमाल—× । हिन्दी ।

४ पाडे की जयमाल—नल्ह । हिन्दी ।

५. पुण्य की जयमाल—× । हिन्दी ।

६ भरत की जयमाल—× । हिन्दी।

७ न्हवण एवं पूजा व स्तोत्र—× । हिन्दी-सस्कृत ।

८ अनन्त चौदश कथा—ज्ञानसागर । हिन्दी-सस्कृत

९. भक्तामर स्तोत्र—मानतु ग । सस्कृत

१० नेमिनाथ बारहमासा—× । हिन्दी

११ सिज्झाय—मान कवि हिन्दी ।

१२ पार्श्वनाथ के छद—× । हिन्दी । ४७ पद्य हैं ।

१३ पद एव विनती सग्रह— × । हिन्दी ।

१४ वारहमासा— × । हिन्दी ।

१५. क्षमा छत्तीसी—समयसुन्दर । हिन्दी ।

१६. उपदेश वत्तीसी—राज कवि । हिन्दी ।

१७ राजमती चूनरी—हेमराज । हिन्दी ।

१८. सवैया—धर्मसिह । हिन्दी ।

१६ वारहखडी—दत्तलाल । ,,

२० निर्दोष सप्तसी कथा—रायमल्ल ।

ले०काल स० १८३२ फाल्गुण सुदी १२ ।

विशेष—चुरू मे हरीसिह के राज्य मे वखतमल्ल ने प्रतिलिपि की थी ।

१०१६० गुटका स० ६ । पत्रस० १३० । आ० १२×७ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल स० १६२६ पौष बुदी २ । पूर्ण ।

विशेष—पडित महीचन्द के प्रशिष्य प० माणिकचन्द के पठनार्थ लिखा गया था । सामान्य पाठो का सग्रह है ।

आदित्यवार की छोटी कथा भानुकीर्ति कृत है जिसमे १२४ पद्य है—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है-

रस श्रुति सोरह सत यदा कथा रची दिनकर की ।
तदा यह व्रत कर वे सुख लहै, भानुकीरत मुनि असै कहै ।।१२४।।

१०१६१. गुटका स० ७ । पत्र स० १-६+१-७६+१५+१८+६×८६+५५+२४×२ १+१+५+२+२+२+३+३+४+२+२×४=१२६ ।
ले० काल स० १८५७ । पूर्ण ।

१. भक्तामर स्तोत्र	मानतु गाचार्य	सस्कृत	पत्र १-६
२ तीन चौवीसी पूजा	शुभचन्द्र	,,	१-७६
		ले०काल स० १८५७ भादवा बुदी ५ ।	
३. चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा	×	सस्कृत	१-१५
४ कर्मदहन पूजा	शुभचन्द्र	सस्कृत	१-१८
५ जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	,,	१-६
६ सहस्रनाम पूजा	धर्मभूषण	,,	१-८६
७ सिद्धचक्र पूजा	देवन्द्रकीति	,,	१-५५
८ भक्तामर सिद्ध पूजा	ज्ञानसागर	,,	१-१३
६ पचकल्याणक पूजा	×	सस्कृत	१-२४
१० विश विद्यमान तीर्थंकर पूजा	×	,,	१-२
११ अष्टाह्निका पूजा	×	सस्कृत	१
१२ पचमेरू की आरती	द्यानतराय	हिन्दी	१
१३ अष्टाह्निका पूजा	×	सस्कृत	१-५

१४ गुरु पूजा	हेमराज	हिन्दी	१-२
१५ धारा विधान	×	,,	१-२
१६ अठाई का रासा	विनयकीर्ति	,,	१-३
१७ रत्नत्रय कथा	ज्ञानसागर	,,	१-३
१८ दशलक्षरा व्रत कथा	—	,,	१-४
१९ सोलहकारण रास	सकलकीर्ति	,,	१-२
२० पखवाडा	जती तुलसी	हिन्दी	१-२
२१. सम्मेद शिखर पूजा	×	सस्कृत	१-४

१०१६२. गुटका स० ८ । पत्र स० ३८ । आ० ९ × ६$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल स० १९६१ पौष बुदी ३ । पूर्ण ।

विशेष—भारामल्ल कृत दान कथा है।

१०१६३. गुटका सं० ९ । पत्रस० ४२ । आ० ८ × ६$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन × ।

विशेष—आचार्य जिनसेन कृत जैन विवाह विधि की हिन्दी भाषा है । भाषाकर्त्ता-प० फतेहलाल । श्रावक पन्नालाल ने लिखवाया था ।

१०१६४ गुटका स० १० । पत्रस० ४९ । आ० ७ × ४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र ऋषि यत्र सहित है । यन्त्रो के चित्र दिये हुये हैं । परशादीलाल बनिया (सिकन्दरा) आगरे वाले ने लिखा था ।

१०१६५ गुटका स० ११ । पत्रस० ११६ । आ० ९ × ६$\frac{1}{2}$ इच । भाषा-हिन्दी । ले० काल अ० १९१७ प्रथम आसोज सुदी ७ । पूर्ण ।

विशेष—रामचन्द्र कृत चौबीस तीर्थंकर पूजा है । नारायण जालडावासी ने लश्कर मे लिखा था ।

१०१६६. गुटका सं० १२ । पत्रस० ७५ । आ० ९ × ७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

१, छहढाला वचनिका — हिन्दी ग० पत्र १-१४

विशेष—द्यानतराय कृत अक्षर बावनी की गद्य भाषा है ।

२. ,, × ,, पत्र १५-३०

विशेष—बुधजन कृत छहढाला की गद्य टीका है ।

३ दर्शन कथा	भारामल्ल	हिन्दी पद्य	१ ४४
४ दर्शन स्तोत्र	×	सस्कृत	४५

१०१६७. गुटका स० १३ । पत्रस० ४५ । ग्रा० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १९६५ । पूर्ण ।

विशेष—भारामल्ल कृत शील कथा है। परसादीलाल ने नगले सिकन्दरा (आगरे) मे लिखा था ।

१०१६८. गुटका स० १४ । पत्र स० ११७ । ग्रा० ८½×६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल स० १९२० पौष बुदी ३ । पूर्ण ।

विशेष—पडित रूपचन्द कृत समवसरण पूजा है ।

१०१६९. गुटका सं० १५ । पत्रस० १२८ । ग्रा० ६×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल स० १९६६ । पूर्ण ।

विशेष—पूजा एव स्तोत्र सग्रह है । पीताम्बरदास पुत्र मोहनलाल ने लिखा था ।

१०१७०. गुटका स० १६ । पत्रस० ८१ । ग्रा० ६½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—तत्वार्थ सूत्र, सहस्रनाम एव पूजाओ का सग्रह है ।

१०१७१ गुटका स० १७ । पत्रस० २७ । ग्रा० ७½×½६ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है ।

१. कल्याण मन्दिर भाषा	बनारसीदास	हिन्दी	१-३
२ भक्तामर भाषा	हेमराज	हिन्दी	३-८
३ एकीभाव स्तोत्र	×	सस्कृत	८-१२ अपूर्ण
४, सामायिक पाठ	×	,,	१२-२६
५. सरस्वती मत्र	—	सस्कृत	२६
पद्मावती स्तोत्र	बीज मत्र सहित	,,	२७

१०१७२. गुटका स० १८ । पत्रस० ८० । ग्रा० ७½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल स० १९६६ ज्येष्ठ सुदी १२ । पूर्ण ।

विशेष—स्तोत्र एव पूजाओं का सग्रह है ।

१०१७३. गुटका स० १९ । पत्र स० ७३ । ग्रा० ६½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल स० १८८१ । पूर्ण ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का संग्रह है ।

१ समोसरण पूजा — लालजीलाल — हिन्दी

र०काल स० १८३४

विशेष—छोटेराम ने लिखा था ।

२ चौबीस जिन पूजा — देवीदास — हिन्दी

इनके अतिरिक्त सामान्य पूजायें और हैं ।

१०१७४ गुटका सं० २० । पत्र स० ३१ । आ० ५$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{4}$ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल स० १८१६ माह सुदी १२ । पूर्ण ।

विशेष—चरणदास विरचित स्वरोदय है ।

१०१७५. गुटका स० २१ । पत्रस० १२० । आ० ६×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-पूजा पाठ । ले०काल सं० १९८१ भादवा सुदी ४ । पूर्ण ।

विशेष—पूजा एव विभिन्न पाठो का सग्रह है ।

१०१७६ गुटका सं० २२ । पत्र स० १६ । आ० ७×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल स० १९४० पौष बुदी ११ । पूर्ण ।

विशेष—उमास्वामी कृत तत्वार्थ सूत्र है । लालाराम श्रावक ने लिखा था ।

१०१७७. गुटका सं० २३ । पत्र स० ३९ । आ० ७×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा–सस्कृत । ले०काल स० १९६२ मगसिर बुदी ५ । पूर्ण ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र, तत्वार्थ सूत्र एव जिनसहस्रनाम जिनसेनाचार्य कृत है । परशादीलाल ने सिकन्दरा (आगरा) मे प्रतिलिपि की थी ।

१०१७८. गुटका स० २४ । पत्रस० ६ । आ० ७×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र है ।

१०१७९. गुटका स० २५ । पत्र स० ३-१३४ । आ ७×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले० काल स० १९१३ । पूर्ण ।

विशेष—सामायिक पाठ, दशलक्षण पूजा, एव देव शास्त्र गुरु की पूजा हिन्दी टीका सहित है । तत्वार्थ सूत्र अपूर्ण है ।

१०१८० गुटका स० २६ । पत्र स० १३३ । आ० ७×६$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी–सस्कृत । ले०काल स० १९८१ भादवा सुदी ८ पूर्ण ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह ।

१०१८१. गुटका स० २७ । पत्र स० ९५ । आ० ७×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १८८७ जेठ शुक्ला १५ । पूर्ण ।

विशेष—मनसुख सागर विरचित यशोवर चरित है । मूलकर्त्ता वासवसेन हैं ।

७ ८ ८ १
मुनि वसु वसु शसि समय गत विक्रम राज महान् ।
जेष्ट शुकल ए अत तिथ, पूरण मासी ज्ञान ।।
चित शुव सागर सुगुरु दीनो रह उपदेश ।
लिखो पढो चित दे सुनो वाढै धर्म विशेष ।।

१०१८२ गुटका स० २८। पत्रस० १८६ । ग्रा० ७×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रेह हैं ।

१ भक्तामर स्तोत्र	मानतु गाचार्य	सस्कृत
२, तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामी	,,
३ जिनसहस्रनाम	जिनसेन	,
४ भैरवाष्टक	—	,,
५. ऋषि मडल स्तोत्र	×	,
६ पार्श्वनाथ स्तोत्र	×	,,
७ कल्याण मन्दिर स्तोत्र भाषा	वनारसीदास	हिन्दी पद्य
८. भक्तामर स्तोत्र भाषा	हेमराज	,,
९. भूपाल चौवीसी भाषा	जगजीवन	,,
१०. विषापहार भाषा	अचलकीर्ति	,,
११. एकीभाव स्तोत्र	भधरदास	,,

१०१८३. गुटका सं० २९ । पत्र स० ५० । ग्रा० ७×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल ×। पूर्ण ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

१००८४. गुटका सं० ३०। पत्र स० ४२ । ग्रा० ८×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १९६६ श्रावण शुक्ला १२ । पूर्ण ।

विशेष—भारामल्ल कृत दर्शन कथा है ।

१०१८५. गुटका सं० ३२ । पत्र स० ९३ । ग्रा० ९×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल स० १९५३ श्रावण वुदी ११ । पूर्ण ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है।

१००८६. गुटका सं० ३३ । पत्र स० १७७ । ग्रा० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—पूजा, स्तोत्र एव कथाओ का सग्रह है ।

१०१८७. गुटका स० ३४ । पत्रस० ३३ । ग्रा० ६×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १९६६ । पूर्ण ।

विशेष—चर्चाओं का सग्रह है ।

१०१८८ गुटका सं० ३५ । पत्र स० १३७ । ग्रा० ६½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल स० १७६५ कार्तिक सुदी ७ । पूर्ण ।

विशेष—उल्लेखनीय पाठ—

१ क्षेत्रपाल पूजा—बुधटोटर। हिन्दी । १-३

२ रोहिणी व्रत कथा-वशीदास । „ । ६-१४ ।ले०काल स० १७६५ ।

विशेष—आचार्य कीर्तिसूरि ने प्रतिलिपि की ।

३ तत्वार्थ सूत्र वाल बोध टीका सहित—× । हिन्दी सस्कृत । २६-६७

४ सहस्रनाम—आशाधर । सस्कृत । ६८-८२

५ देवसिद्ध पूजा × । „ ८३-११२

६ त्रेपन क्रिया व्रतोद्यापन—विक्रमदेव । सस्कृत ११२-२२

७ पचमेरु पूजा—महीचन्द । सस्कृत । १२५-१३३

८ रत्नत्रय पूजा × । सस्कृत । १४५-१६६

विशेष—कासम वाजार मे प्रतिलिपि हुई ।

१०१८६. गुटका सं० ३६ । पत्र स० ३२८ । आ० ६×४½ इञ्च । भापा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

१ नेमिनाथ नव मगल × । हिन्दी

२ रत्नत्रय व्रत कथा—ज्ञानसागर । हिन्दी

३ पोडश कारण कथा—भैरुदास । „ र०काल १७९१ । ७४ पद्य हैं ।

४ दशलक्षण कथा—ज्ञानसागर । „

५. दशलक्षण रास—विनयकीर्ति । „ । ३३ पद्य हैं ।

६. पुष्पाजलि व्रत कथा—सेवक । हिन्दी । पत्रस० ५२-६४

७. अष्टाह्निका कथा-विश्वभूषण । „ ६४-७८

८ „ रास—विनयकीर्ति । „ ७९-८४

९. आकाशपचमी कथा-घासीदास „ ८५-१०१ र०काल स० १७६२ आसोज वुदी १२ ।

१० निर्दोप सप्तमी कथा × । „ १०१-११० । ४२ पद्य हैं ।

११ निशल्याष्टमी कथा—ज्ञानसागर । हिन्दी । ११०-१२० । ६४ पद्य हैं ।

१२ दशमी कथा—ज्ञानसागर । „ । १२१-१२६ ।

१३. श्रावण द्वादशी कथा—ज्ञानसागर । हिन्दी । १२६-१३२ ।

१४ अनन्त चतुर्दशी कथा—भैरूदास । „ १३२-१४१ ।

र०काल स० १७२७ आसोज सुदी १० ।

विशेष—कवि लालपुर के रहने वाले थे ।

१५. रोहिणी व्रत कथा—हेमराज । हिन्दी । १४१-१५४

र०काल स० १७४२ पौप सुदी १३ ।

१६. रसीव्रत कथा—भ० विश्वभूपण । हिन्दी । १५४-५७ ।

१७ दुवारस कथा—विनयकीर्ति „ १५७-१५९

१८ ज्येष्ठ जिनवर व्रत कथा—खुशालचन्द । हिन्दी । १५९-१७१ ।

१९ बारहमासा—पाडेजीवन । हिन्दी । २८०-१९० ।
२०. पद सग्रह × । ,, १९१-२१५ ।
२१ शील चूनडी—मुनि गुणचन्द । हिन्दी । २१६-२२५ ।
२२. ज्ञान चूनडी—भगवतीदास ,, २२६-२३० ।
२३ नेमिचन्द्रिका × । ,, २३१-२७८ ।
र०काल स० १८८० ।
२४ रविव्रत कथा × । ,, २७९-३०८ ।

१०१९०. गुटका स० ३७ । पत्रस० ५६ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र ऋद्धि मत्र सहित एव हिन्दी अर्थ सहित है । कल्याण मन्दिर स्तोत्र भाषा भी है ।

१०१९१. गुटका स० ३८ । पत्रस० २४ । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल पूर्ण ।

विशेष—वृत बध पद्धति है ।

१०१९२ गुटका स० ३९ । पत्रस० ३१९ । आ० ४½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल स० १८९१ वैशाख सुदी १५ । पूर्ण ।

विशेष—नवाबगज मे गोपालचन्द वृन्दावन के पोते सोहनलाल के लडके ने प्रतिलिपि की थी ।

५५ स्तोत्रो का सग्रह है । जिल्द लकडी के फ्रेम पर है जिसमे लोहे के बकसुए तथा खटके का ताला है । पुट्ठो मे दोनो ओर ही अन्दर की तरफ काच मे जडे हुए नेमिनाथ एव पद्मप्रभ के पद्मासन चित्र है । चित्र श्वेताम्बर आम्नाय के हैं । प्रारम्भ के ८ पत्रो मे दोनो ओर मिलाकर ४६ बेलबूटो के सुन्दर चित्र है । चित्र भिन्न प्रकार के है । इसी तरह अन्तिम पत्रो पर भी पेडपौधो आदि के १६ सुन्दर चित्र हैं ।

१ ऋषिमडल स्तोत्र—गोतमस्वामी । सस्कृत । पत्र ९ तक
२. पद्मावती स्तोत्र—× । सस्कृत । १८ तक
३ नवकार स्तोत्र—× । ,, २० तक
४ अकलकाष्टक स्तोत्र—× । ,, २३ तक
५ पद्मावती पटल—× । सस्कृत । २७ तक
६ लक्ष्मी स्तोत्र—पद्मप्रभदेव , २८ तक
७ पार्श्वनाथ स्तोत्र—राजसेन ,, ३१ तक

मदन मद हर श्री वीरसेनस्य शिष्यै,
सुभग वचन पूर राजसेन प्रणीत ।
जयति पठिति नित्य पार्श्वनाथाष्टकाय,
स भवत सिव सौख्य मुक्ति श्री शाति वीस ।।
विगत म्रजन यूथ नौग्यह पार्श्वनाथ ।।

८ भैरव स्तोत्र—× । संस्कृत । ३२ तक । ६ पद्य हैं ।
६ वर्द्धमान स्तोत्र— × । हिन्दी । ३४ तक । ८ पद्य हैं ।
१० हनुमत्कवच— × । संस्कृत । ३८ तक ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री सदर्शन संहिताया रामचन्द्र मनोहर सीताया पंचमुखी हनुमत्कवच संपूर्णं ।

११ ज्वालामालिनी स्तोत्र— × । संस्कृत । ४२ तक ।
१२. वीतराग स्तोत्र— पद्मनंदि ,, ४४ तक ।

विशेष—६ पद्य हैं ।

१३ सूर्याष्टक स्तोत्र—× । संस्कृत । ४४ पर
१४ परमानन्द स्तोत्र—× । संस्कृत । ४७ तक । २३ पद्य हैं ।
१५ शांतिनाथ स्तोत्र—× । ,, ४६ तक । ६ पद्य है ।
१६ पार्श्वनाथ स्तोत्र— × । ,, ५३ तक । ३३ ,,
१७ शांतिनाथ स्तोत्र—× । ,, ५५ तक । १८ ,,
१८ पद्मावती दण्डक—× । ,, ५६ तक । ६ ,,
१६ पद्मावती कवच—× । ,, ६१ तक ।
२० आदिनाथ स्तोत्र—× । हिन्दी ६२ तक ६ पद्य हैं ।

प्रारम्भ— संसारसमुद्र महाकालरूप,
नहीं वार पार विकार विरूप ।
जरा जाय रोमावली भाव रूप ।
तद नोहि सरण नमो आदिनाथ ॥

२१. उपसर्गहर स्तोत्र—× । प्राकृत । पत्र ६४ तक ।
२२ चौसठ योगिनी स्तोत्र—× । संस्कृत । ६५
२३. नेमिनाथ स्तोत्र—प० शालि । ,, । ६७
२४ सरस्वती स्तोत्र—× । हिन्दी । ६६ तक । ६ पद्य हैं ।
२५ चिन्तामणि स्तोत्र— × । संस्कृत । ७० तक ।
२६ शांतिनाथ स्तोत्र—× । संस्कृत । पत्र ७१ तक ।
२७ सरस्वती स्तोत्र—× । ,, ७४ तक । १६ पद्य हैं ।

विशेष—१६ नामो का उल्लेख है ।

२८ सरस्वती स्तोत्र (दूसरा)—× । संस्कृत । ७६ तक । १५ ॥
२६ सरस्वती दिग्विजय स्तोत्र- संस्कृत । ७८ । १३ ॥
३० निर्वाण काण्ड गाथा—× । प्राकृत । ८२ तक ।
३१ चौवीस तीर्थंकर स्तोत्र-× । संस्कृत । ८३ तक ।

विशेष—अन्तिम

सकल गुण निधान यत्नमेन विसुद्ध
हृदय कमल कोस धामता धेय रूप ।
जयति तिलक गुरो शूर राजस्य शिष्य
वदत सुख निधान मोक्ष लक्ष्मी निवास ।।

३२ रावलादेव स्तोत्र— × । हिन्दी । ८४ तक ।

श्री रावलादेव करु जुहारा, स्वामी करु सेवक निज सारा ।
तू विश्व चिन्तामणि एक देवा, करैं सदा चौसठ इन्द्रसेवा ।।१।।
सेवा करैं लक्षण नाग राजा, सारैं सदा सेवक ना कोई काजा ।
पीडा तणा दुखना मूल तोडैं, घटी घटी सकट ली विक्षोडैं ।।२।।
जे ताहरो नाव जगत जाणैं, वलि वलि महिमा ते वखाणें ।
जो वूडता पोहण माझ ध्यावैं, ते ऊतरी सकट पारी जावैं ।।३।।
जे दुष्टस्यो को तरीपात वाजैं, जे वितरा वितरी दोप दाझैं ।
जे प्रेत पीम प्रभु तुझ ध्यावैं । जे ऊनरि सकट पारि नावे ।।४।।
जे काल किकाल ये साच लीजैं,
जे भूत वैताल पैमाल कीजैं ।
जे डाकणी दुष्ट पडिलाज ध्यावैं,
ते ऊनरि सकट पार जावैं ।।५।।
जे नाग विपैं विपझाल मूकैं,
तिण विपैं भूमिया झाड सूकैं ।
ने तिणैं डस्या प्रभु तुझ ध्यावैं ,
ते ऊनरि सकट पार जावैं ।।६।।
जे द्रव्य हीणा मुख दीन भासैं,
जे देह खीणा दिनरात खासैं ।
जे अग्नि माझ पडियाज ध्यावैं,
ते ऊतरि सकट पार जावैं ।।७ ।
जे चक्षु पीडा मुख वव फाडैं,
जे रोग रुध्या निज देह ताडैं ।
जे वेदनी कष्टनी कष्ट पडिपाज ध्यावैं,
ते उतरि सकट पार जावै ।।८।।
जे राज विग्रह पडियात थटैं,
फिरी फिरी पार का देह कूटैं ।
ते लोह वध्या प्रभु तुझ ध्यावै,
ते उतरि सकट पार जावै ।।९।।

श्री पाश्रासा हम एक पूरो,
दु कर्मणा कष्ट समग्र चूरो ।
सुभ कर्मजा सपदा एक आपो,
कृपा करि सेवक मुझ थापो ॥१०॥
इति श्री रावल देव स्तोत्र सपूर्ण ।

३३-सर्वजिन नमस्कार—X । स० । पत्र ९० ।

(सर्व चैत्य वदना)

३४-नेमिनाथ स्तोत्र – X । सस्कृत । पत्र ९१ तक । २० पद्य हैं ।
३५-मुनिसुव्रतनाथ स्तोत्र—X । सस्कृत । ९३ तक ।
३६-नेमिनाथ स्तोत्र—X । सस्कृत । ९६ तक ।
३७-स्वप्नावली—देवनदि । सस्कृत । १०० तक ।
३८-कल्याण मन्दिर स्तोत्र—कुमुदचन्द । सस्कृत । १०० तक ।
३९-विपापहार स्तोत्र—धनजय । सस्कृत । १२१ ।
४०-भूपाल स्तोत्र—भूपालकवि । सस्कृत ।
४१-भक्तामर स्तोत्र ऋद्धि मत्र सहित—X । सस्कृत ।
४२-भगवती आराधना—X । सस्कृत । २८ पद्य हैं ।
४३-स्वयभू स्तोत्र (वडा) समतभद्र । सस्कृत ।
४४-स्वयभूस्तोत्र (लघु)—देवनन्दि । सस्कृत । पत्र १९० तक ।
४५-सामयिक पाठ—X । सस्कृत । पत्र २१७ तक ।
४६-प्रतिक्रमण—X । प्राकृत-सस्कृत । पत्र २४१ तक ।
४७-सहस्रनाम—जिनसेन । सस्कृत । पत्र २६३ तक ।
४८-तत्त्वार्थसूत्र—उमास्वामी । सस्कृत । पत्र २६३ तक ।
४९-श्री सुगुरु चिंतामणि देव—X । हिन्दी । पत्र २८७ ।
५०-चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र—प० पदार्थ । सस्कृत । पत्र २९ ।
५१-पार्श्वनाथ स्तोत्र—पद्मन दि । सस्कृत । पत्र २९५ ।
५२-पार्श्वनाथ स्तोत्र—X । सस्कृत । २९७ तक ।
५३-ब्रह्मा के ९ लक्षण—X । संस्कृत । २९७ ।
५४-फुटकर श्लोक—X । सस्कृत । २९९ ।
५५-घटाकरण स्तोत्र व म त्र—X । सस्कृत ।
५६-सिद्धि प्रिय स्तोत्र—देवन दि । सस्कृत । ३१० ।
५८-लक्ष्मी स्तोत्र—X । सस्कृत । ३१९ ।

१०१९३. गुटका सं० ४० । पत्र स० १४१ । आ० ५ X ४ इञ्च । भाषा—सस्कृत-हिन्दी । ले० काल । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

१०१९४. गुटका स० ४१ । पत्रस० २२७ । आ० ५×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न हैं—

१-शालिभद्र चौपई—सुमति सागर । हिन्दी । पत्र २८-१४० ।

र०काल स० १६०८ । ले०काल स० १९१६ चैत वुदी ६ ।

२-राजमती की चूनडी—हेमराज । हिन्दी । १५२-१७३ ।

प्रारम्भ—

श्री जिनवर पद पकजै, सदा तमो धर भाव हो ।
सोरीपुर सुरपति छनौ, अति ही अनुपम ढाम हो ।।

अन्तिम—

काष्ठासघ सुहावनौ, मथुरा नगर अनूप हो ।
हेमचन्द मुनि जाणये, सव जतीयन सिर भूप जी ।।७६।।

तास पट जसकीर्ति मुनि, काष्ठ सघ सिंगार हो ।
तास शिष्य गुणचन्द्रमुनि, विद्या गुणह भडार हो ।।७०।।

इहा वदराग हीयडौ धरौ, निसप्रह श्रोर निरधारे ।
हेम भणें ले जाणीयो ते पावे भवचार हो ।।८।।

इति राजमति की चूनडी स पूर्णम् ।

३. नेमिनाथ का बारह मासा—पाडेजी पत । हिन्दी । पत्र २११-२२५ ।

१०१९५ गुटका स० ४२ । पत्रस० १८५ । आ० ४½×३½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले०काल× । पूर्ण ।

विशेष—पद एव विनती सग्रह है । लिपि अच्छी नही है ।

१०१९६ गुटका स० ४३ । पत्रस० ४० । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—पार्श्वनाथ स्तोत्र, देवपूजा, वीस विरहमान पूजा, वासुपूज्य पूजा (रामचन्द्र) एव विपायहार स्तोत्र आदि का सग्रह है ।

१०१९७ गुटका स० ४४ । पत्रस० ६२-११७ । आ० ४×३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

१ नेमिनाथ का बारहमासा—पाडेजीवन । हिन्दी । ७४-९६

२, ,, ,, —विनोदीलाल । ,, । ९६-११२

३ पद सग्रह—× । हिन्दी । ११२-११७

१०१९८. गुटका स० ४५ । पत्रस० ३३ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

देवसिद्ध पूजा, भक्तामर स्तोत्र, सहस्रनाम (जिनसेन कृत) है ।

१०१६६. गुटका स० ४६ ।पत्रस० २६ । आ० १०½×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र भाषा (हेमराज) बाईस परीषह, पद एव विनती, दर्शनपच्चीसी (बुधजन) समाधिमरण (द्यानतराय), तेरह काठिया (बनारसीदास) सोलह सती (मेघराज), बारहमासा (दौलतराम) चेतनगारी (विनोदीलाल) का सग्रह है ।

१०२००. गुटका स० ४७ । पत्रस० २४ । आ० ५×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—देवपूजा, निर्वाणकाण्ड, चौवीस दण्डक (दौलतराम) पाठ का सग्रह है ।

१०२०१. गुटका सं० ४८ । पत्रस० ५६ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत-हिन्दी । ले० काल स० १८९६ माघ शुक्ला १३ । पूर्ण ।

विशेष—

१ विमलनाथ पूजा, अनन्तनाथ पूजा (ब्रह्म शातिदास कृत) एव सरस्वती पूजा जयमाल हिन्दी (ब्रह्म जिनदास कृत) हैं ।

अज्ञानतिमिरहर, सज्ञान गुणाकर
पढई गुणइ जे भावधरी ।
ब्रह्म जिनदास भाणह, विबुह पपासइ,
मन वछित फल बुधि वन ॥१३॥

१०२०२. गुटका स० ४९ । पत्रस० ३६ । आ० ६½×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल स० १९३२ । पूर्ण ।

विशेष—भगवतीदास कृत चेतनकर्मचरित्र है ।

१०२०३. गुटका स० ५० । पत्रस० ५६ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा--सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—देवपूजा, भक्तामर स्तोत्र, पद्मावतीसहस्रनाम धरणेन्द्र पूजा, पद्मावती पूजा, शातिपाठ एव ऋषि मण्डल स्तोत्र का सग्रह है ।

१०२०४ गुटका सं० ५१ । पत्र स० २-१२४ । आ० ६½×५½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल सं० १९०२ श्रावण सुदी १५ । पूर्ण ।

विशेष – निम्न पाठो का सग्रह है ।

१ श्रीपाल दरस—× । हिन्दी । पत्र १–२ ।

२. निर्वाण काण्ड गाथा—× । प्राकृत । ३–४ ।

३ विषापहार स्तोत्र—हिन्दी पद्य । ५–९ ।

विशेष—१२ से १८ तक पत्र नही है ।

४ सीता जी की वीनती—× । हिन्दी । १९–२० ।

५ कलियुग वत्तीसी—× । हिन्दी । २१–२४ ।

६ चौवीस भगवान के पद—हिन्दी । २५–५९ ।

७ नेमिनाथ विनती—धर्मचन्द्र । ६०–६४ ।

८ हितोपदेश के दोहे—× । हिन्दी । ६५-७२ ।

९ अठारह नाता वर्णन—कमलकीर्ति । हिन्दी । ७५-८० ।

१० चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न—× । हिन्दी ८०-८२ ।

११ अरहतो के गुण वर्णन—× । हिन्दी । ८३-८४ ।

१२ नेमिनाथ राजमती सवाद—ब्रह्म ज्ञानसागर । हिन्दी । ८७-९४ ।

१३ पच मगल – रूपचन्द । हिन्दी । ९४-१०४ ।

१४. विनती एव पद सग्रह—× । हिन्दी । १०५-१२४ ।

१०२०५ गुटका स० ५२ । पत्रस० १२ । आ० ७×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—चर्चाओ का सग्रह है ।

१०२०६ गुटका स० ५३ । पत्रस० १०१ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा--हिन्दी । ले०काल स० १९७१ पौष शुक्ला १५ । पूर्ण ।

विशेष—चम्पाबाई दिल्ली निवासी के पदो का सग्रह है । जिसने अपनी बीमारी की हालत मे भी पद रचना की थी और उससे रोग की शाति हो गई थी । यह सग्रह चम्पाशतक के नाम से प्रकाशित हो चुका है ।

१०२०७. गुटका स० ५४ । पत्रस० ६६ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह है ।

१०२०८ गुटका स० ५५ । पत्र स० १८१ । आ० ६½×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले० काल स० १९३१ । पूर्ण ।

विशेष—२० पूजाओ का सग्रह है । बडी पचपरमेष्ठी पूजा भी है ।

१०२०९. गुटका सं० ५६ । पत्र स० १९१ । आ० ५½×३ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल स० १९१४ श्रावण सुदी २ । पूर्ण ।

विशेष—सामायिक पाठ, श्रावक प्रतिक्रमण, पच स्तोत्र आदि का सग्रह है ।

१०२१० गुटका सं० ५७ । पत्रस० १८३ । आ० ५½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल स० १८९७ पौष सुदी १३ । पूर्ण ।

विशेष—चौबीस तीर्थंकर पूजा-रामचन्द्र कृत हैं ।

१०२११. गुटका स० ५८ । पत्र स० ५४ । आ० ६½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—पद एव स्तोत्र तथा सामान्य पाठो का सग्रह है ।

१०२१२ गुटका स० ६० । पत्रस० ५३-१५३ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल स० १९३७ मगसिर बुदी १३ । पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

१ पाशा केवली—× । सस्कृत । १-१७

२. पद सग्रह— × । हिन्दी । १८-४४

३. पाच परवी कथा — ब्रह्म विक्रम ४५-५३

४. चौवीसी तीर्थंकर पूजा—वख्तावरसिंह । १-१५३

१०२१३ गुटका स० ६१ । पत्र स० १९८ । आ० ५½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—स्तोत्र एव अन्य पाठो का सग्रह है ।

१०२१४. गुटका स० ६२ । पत्रस० ९० । आ० ५×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १८८९ आषाढ बुदी १४ । पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है ।

१. शालिभद्र चौपई	मतिसागर	हिन्दी	१४४
२ पद	×	हिन्दी	४५-५५
३. गोरावादल कथा	जटमल	,,	५६-९०
	र०काल स० १६८० फागुण सुदी १२ । पद्य स० २२५		

विशेष—जोगीदास ने प्रतिलिपि की थी ।

१०२१५. गुटका स० ६३ । पत्र स० १३९ । आ० ५½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—पूजा एव स्तोत्र आदि का सग्रह है ।

१०२१६ गुटका सं० ६४ । पत्र स० १०७ । आ० ५½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १८७९ आसोज बुदी १३ । पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है ।

१. आदित्यवार कथा	भाऊकवि	हिन्दी	१-२२
२ मानगीत	×	हिन्दी	२७-२९
३ बूढा चरित्र	जतीचन्द	,,	३०-४३
		र०काल सवत् १८३६	

विशेष—वृद्ध विवाह के विरोध मे हैं ।

४ शालिभद्र चौपई	मतिसागर	हिन्दी	४४-१०७

१०२१७ गुटका स० ६५ । पत्रस० १९५ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—पूजायें, स्तोत्र एवं चेतनकर्मचरित्र (भगवतीदास) का सग्रह है ।

प्रारम्भ मे—पट्लेश्या, आदित्यवार व्रतोद्यापन का मडल, चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा का मडल, कल्याणमन्दिरस्तोत्र की रचना, विषापहार स्तोत्र की रचना, कर्म-दहन मडल पूजा, एकीभाव रचना, नदीश्वर द्वीप का मडल आदि के चित्र हैं । चित्र सामान्य हैं ।

१०२१८ गुटका स० ६६ । पत्र स० ६ । आ० ८½×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष—जलगालन विधि है ।

१०२१९. गुटका स० ६७। पत्रस० १२। ग्रा० ८½×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल स० १९६४। पूर्ण।

विशेष—दौलतराम कृत छहढाला है।

१०२२० गुटका स० ६८। पत्रस० ५५। ग्रा० ८½×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण।

विशेष—पद सग्रह है।

१०२२१. गुटका स० ६९। पत्र स० ४१। ग्रा० ५½×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र एव दौलतराम के पद है।

१०२२२. गुटका स० ७०। पत्रस० १२। ग्रा० ८×६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण।

विशेष—बिम्ब निर्माण विधि है।

१०२२३. गुटका स० ७१। पत्रस० ३५। ग्रा० ६×६½ इञ्च। भाषा-हिन्दी-सस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र एव निर्वाण काण्ड ग्रादि पाठ है।

१०२२४. गुटका सं० ७२। पत्र स० १२। ग्रा० ६×४ इञ्च। भाषा--हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण।

१०२२५. गुटका स० ७३। पत्रस० १४। ग्रा० ६½×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण।

विशेष—सामान्य पाठ सग्रह है।

प्राप्ति स्थान—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर

१०२२६ गुटका स० १। पत्रस० ५०। भाषा-हिन्दी। पूर्ण। वेष्टन स० १००।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है—

जम्बूस्वामी वेलि	वीरचन्द	हिन्दी पद्य
जिनातररास	,,	,,
चौबीस जिन चौपई	कमलकीर्ति	,,
विनती	कुमुदचन्द्र	,,
वीर विलास	वीरचन्द	,,
		ले०काल स० (१६८६)
भ्रमर गीत	वीरचन्द	,,
		(र० काल स० १६०४)
ग्रादीश्वर विवाहलो	,,	हिन्दी पद्य
पागी गालनरो रास	ज्ञानभूषण	,,

रुक्मिणिहरण	रत्नभूषण	हिन्दी
द्वादश भावना	वादिचन्द्र	,,
गौतमस्वामी स्तोत्र	,,	,,
नेमिनाथ समवशरण	,,	,,
फुटकर पद	—	,,

१०२२७. गुटका सं० २ । पत्रस० ११-७२ । आ० ८½+४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १८०६ । अपूर्ण । वेष्टनस० ६७ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह हैं—

त्रिभुवन वीनती	गगादास	हिन्दी प०
सत्ताणु दूहा	वीरचन्द	,,
गिरनार वीनती	—	,,
चैत्यालय वदना	महीचन्द	,,
अष्टकर्म चौपई	रत्नभूषण	,,

(र० काल स० १६७७)

इस रचना मे ६२ पद्य हैं ।

१०२२८. गुटका स० ३ । पत्रस० ३७-१४६ । आ० १०½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल स० १८७८ । पूर्ण । वेष्टनस० ३० ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठो का सग्रह है—

१. कक्का वत्तीसी	—	हिन्दी पद्य
		(र० काल स० १७२५)
२. जैनशतक	भूधरदास	,,
३. दृष्टात पच्चीसी	भगवतीदास	,,
४. मधु विन्दु चौपई	—	,,
		(र०काल स० १७४०)
५ अष्टोतरी शतक	भगवतीदास	,,
६. चौरासी वोल	—	,,
७ सूरत की वारहखडी	सूरत	,,
८. वाईस परीषह कथन	भगवतीदास	,,
९. धर्मपच्चीसी	भगवतीदास	हिन्दी
१०. व्रह्म विलास	भगवतीदास	एव

वनारसी विलास (वनारसीदास) के अन्य पाठो का सग्रह है ।

प्राप्ति स्थान—दि जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर

१०२२६ गुटका स० १ । पत्रस० ६३ । आ० ६×६ इन्च । भाषा-प्राकृत । ले०काल स० १७१८ मगसिर बुदी १४ । पूर्ण ।

विशेष—पट् पाहुड की संस्कृत टीका सहित प्रति है ।

१०२३०. गुटका स० २ । पत्र स० ४०-८२ । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल स० १६७० । अपूर्ण । वेष्टन स० ३८८ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है—

लघु तत्वार्थ सूत्र	—	संस्कृत
दान तपशील भावना	ब्रह्म वामन	हिन्दी
गीत	मतिसागर	,,
ऋपिमडल स्तवन	—	सस्कृत
सवोध पचासिका	—	,,

गुटका जीर्ण है ।

१०२३१. गुटका स० ३ । पत्रस० १८-२६८ । आ० ११½×७½ इन्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल स० १६४३ आसोज बुदी ८ । अपूर्ण । वेष्टनस० ।

विशेष—गुटका वहुत ही महत्वपूर्ण है । इसमे हिन्दी एव सस्कृत की अनेक अज्ञात एव महत्वपूर्ण रचनाए है । गुटके मे सग्रहीत मुख्य रचनाओ का विवरण निम्न प्रकार है—

स० नामग्रथ	ग्रथकार	पत्र स० ५६	भाषा	विशेष
१. सीमधर स्तवन	—	६	हिन्दी	पद्य स० ३१
२. स्त्री लक्षण	—	११	,,	—
३. श्री रामचन्द्र स्तवन	—	११		पद्य स० १०
			घन्नालिखत	
४. वकचूल कथा	—	११-१३		पद्य स० १०३
५. विपय सूची	—	१६-१७	,,	
६ चौवीसी तीर्थंकर स्तवन	विद्याभूपण	पत्र १७	हिन्दी	

विशेष—वृपभदेव श्री अजित सकल सभव अभिनन्दन ।
सुमति पद्म सुपार्श्व श्रीचतुर चन्द प्रभ वदन ।।

७ जिनमगल	—	१८	सस्कृत
८ मेवाडीना गोत्र	—		हिन्दी

३० गोत्रो का वर्णन है ।

६. अठारह पुराणो की नामावली	—	,,	,,

विशेष—पुन पत्र स १ से चालू हैं—

१० गुरुराशि गत विचार	—	१	सस्कृत (ज्योतिप)

११.	निरजनाष्टक	—	१	सस्कृत
१२	पल्यविधान कथा	—	३-४	,, (पद्य गद्य)

विशेष—सवत् १६ . . वर्षे आचार्य श्री विनयकीर्ति तत्शिष्य ब्र० श्री वन्ना लिखत ।

१३	विनती	ब्र०जिनदास	४	हिन्दी
१४.	गुणठाणावेलि	जीवन्धर	४-६	,, पद्य

विशेष—जीवन्धर यश कीर्ति के शिष्य थे ।

१५	जीवनी आलोचना	—	६	,,
१६.	महाव्रतीनि चौमासानुदड	—	६	हिन्दी

विशेष—चतुर्मास मे मुनियो के दोपपरिहार विधान है ।

१७.	चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा	शुभचन्द्र	७-११	संस्कृत
			(ले०काल स० १६१६)	

विशेष—चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र भी है ।

प्रशस्ति—सवत् १६११ वर्षे भिरि ग्रामे श्री काष्ठामघे श्री मुनिसुव्रतचैत्यालये आचार्य श्री विजय कीर्ति शिष्ये ब्र० धन्ना केन पठनार्थ ।

१८.	नीतिसार	—	११-१३	सस्कृत
१९	सज्जन चित्तवल्लभ	—	१३-१४	,,
२०	साठिसवत्सरी	—	१४-२१	हिन्दी
	(ऐतिहासिक विवरण है)			

सवत् १६०९ से १६९९ तक की सवत्सरी दी गयी है ।

२१.	सवत्सर ६० नाम	—	२१	,,
२२.	वर्पनाम	—	२१	सस्कृत
२३	तीस चौवीसी नाम	—	२१-३४	हिन्दी
२४.	सक्रातिफल	—	२६	सस्कृत
	(श्री विनयकीर्ति ने धन्ना के पठनार्थं लिखा था)			
२५	गुरु विरुदावली	विद्याभूपण	२६-२८	सस्कृत
२६.	त्रेसठशलाका पुरुप भवावलि	—	२८-३०	हिन्दी
२७.	भक्तामर स्तोत्र सटीक	—	३१-३६	सस्कृत
२८.	दर्शनप्रतिमा का व्यौरा	—	३८	हिन्दी
२९	छद सग्रह	गगादास	३८-३९	हिन्दी
			१७ छन्द है ।	
३०	पट् कर्म छद	—	३९	,,
३१	आदिनाथ स्तवन	—	३९	सस्कृत
३२.	वलभद्र रास	ब्र० यशोधर	४०-४८	हिन्दी

विशेष—स्कध नगर मे रचना की गयी थी ।

३३- वीस तीर्थकर स्तवन	ज्ञान भूषण	४३	सस्कृत
३४- दिगम्बरो के ४ भेद	—	४३	सस्कृत
३५- व्रतसार	—	४३	सस्कृत
३६ दश धर्म वर्णन	—	४३	,,
३७ श्रेणिक कथा	—	४४-४७	,,
३८- लब्धि विधान कथा	प० अभ्रदेव	४७-४८	,,
३६ पुष्पाजलि कथा	—	४६-५१	,,
४० जिनरात्रि कथा	—	५१-५२	,,
४१. जिनमुखावलोकन कथा	सकलकीर्ति	५२-५३	,,
४२, एकावली कथा	—	५३-५४	,,
४३ शील कल्याणक व्रत कथा	—	५४-५५	,,
४४ नक्षत्रमाला व्रत कथा	—	५५	,,
४५ व्रत कथा	—	—	,,
६३ विधान करनेकी विधि	—	५५	सस्कृत
६४ अकृत्रिम चैत्यालय विनती	—	७३	सस्कृत
६५- आलोचना विधि	—	७३	,,
६६-७७ भक्तिपाठ सग्रह	—	७६ तक	,,
७८ स्वयभू स्तोत्र	समतभद्र	८१	,,
७६. तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामी	८३	,,
८०. लघु तत्वार्थ सूत्र	—	८३	,,

विशेष—स० १६१६ माह वदि ५ को धन्ना ने प्रतिलिपि की । ५ अध्याय हैं ।

८१. प्रतिक्रमण (श्रावक)	—	८४	सस्कृत
८२ लघुआलोचना	—	,,	,,
८३. महाव्रती आलोचना	—	८६	,,
८४ सीखामण रास	—	८७	हिन्दी
८५ जीवन्धर रास	त्रिभुवनकीर्ति	८७-६३	,,

विशेष—र०काल स० १६०६ है इसकी रचना कल्पवल्ली नगर मे हुई थी ।

अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है—

श्री जीवधर मुनि तप करी पुहतु शिव पद ठाम
त्रिभुवनकीरति इम वीनवि देयो तम गुण ग्राम ।।८१।।

८६. पाशाकेवली	गर्गमुनि	६३-६५	सस्कृत
८७ यति भावनाष्टक	—	६५	,,
८८, जीरावलि वीनती	—	,,	हिन्दी

८६- कर्मविपाक रास ब्र० जिणदास ६६ हिन्दी

(ले०काल स० १६१६)

६० नेमिनाथ रास विद्याभूपण १००-१०४ हिन्दी

विशेष—देवपल्ली स्थान मे विनयकीर्ति के शिष्य धन्ना ने प्रतिलिपि की थी।

६१ श्रावकाचार प्रतापकीर्ति १०४-७ हिन्दी

(र०काल स० १५७५ मगसिर सुदी २)

६२ यशोधर रास सोमकीर्ति १०७-१३ हिन्दी

६४ भविष्यदत्त रास विद्याभूपण ११४-२० ,,

(र०काल स० १६०० श्रावण सुदी ५)

६५- उपासकाध्ययन प्रभाचन्द्र — सस्कृत

ले०काल स० १६०० मगसर वुदी ६

६६. सामुद्रिक शास्त्र — १२०-१२४ सस्कृत

ले०काल स० १६१६ मगसिर वुदी ११

६७ शालिहोत्र — १२४-२५ सस्कृत

६८ सुदर्शनरास ब्र० जिनदास १२५-२६ हिन्दी पद्य

ले०काल स० १६१६ मगसिर वुदी ४

६६ नागश्रीरास ,, १२६-३२ ले०काल स० १६१६ पौप सुदी ३

(रात्रि भोजन रास)

१०० श्रीपालरास ,, १३२-३६ ,,

१०१ महापुराण विनती गगादास १३७-३६ ,,

ले०काल स० १६१६ पौप वुदी

१०२, सुकौशल रास गगुकवि १३६-४१ ,,

१०३. पल्य विचार वार्ता — १४१ ,,

१०४ पोसानुरास — १४३ ,,

१०५. चहु गति चौपई — १४३ ,,

१०६. पार्श्वनाथ गीत मुनिलवण्य समय १४३ ,,

राग अवरस—

दीनानाथ त्रिजगनाथ दशगणधर रचि साथ।
देहनवहाथ पारिश्वनाथ तु तारिभव पाथ रे ॥

१०७. ग्यारहप्रतिमा वीनती ब्र०जिणदास १४३ हिन्दी

१०८- पानीगालन रास — १४४ ,,

१०६. आदित्यव्रतरास — १४५ ,

११०. माखण मूछ कथा — १४५-४६ ,,

६४ पद्य हैं

१११. गुणठाणा चौपई वीरचन्द १४६ ,,

११३ रत्नत्रयगीत — १४६ हिन्दी

जीव रत्नत्रय मन माहि धरीनि कहि सु चारित्र सार

११४ अविकासार ब्र० जिणदास १४८-४८ ,,

१५८ पद्य हैं।

११५. आराधना सकलकीर्ति १४८-४९ हिन्दी ५५ पद्य
प्रतिबोध सार

११६ गुणतीसी सीवना — १४९ ,, ३२ पद्य

११७ मिथ्यादोकरण ब्र० जिणदास ,, हिन्दी पद्य
(मिथ्यादुकट) ले० काल स० १६१६ माह सुदी १४

११८. सताण भावना वीरचन्द १५०-५१ हिन्दी ८७ प०

अंतिम पद्य निम्न प्रकार है—
सूरि श्री विद्यानदि जय श्री मल्लिभूषण मुनिचन्द।
तस पट महिमानिलु गुर श्रीचन्द लक्ष्मीचन्द।
तेह कुल कमल दिव सपती जयति जपि वीरचन्द।
सुणता भणता ए भावना पामीइ परमानन्द ॥८७॥

११९. नेमिकुमार गीत मुनि १५१ हिन्दी
(हमची नेमनाथ) लावण्य समय र० काल सं० १५६४ ७८ प०

१२०. कलियुग चौपई — १५२ हिन्दी ७७ प०

१२१. कर्मविपाक चौपई — १५२-५३ ,, ६४ प०

१२२. वृहद् गुरावली — १५३ संस्कृत

१२३. ज्योतिष शास्त्र — १५४-५६ ,,

१२४. जम्बूस्वामी रास ब्र०जिणदास १५६-६६ हिन्दी

१००६ पद्य हैं।

१२५. चोतीस अतिशय — १६६-६७ ,, २७ पद्य
विनती

१२६. गणधर विनती — १६७ हिन्दी २६ पद्य

१२७. लघु बाहुबलि वेलि शांतिदास १६७ ,,

विशेष—शान्तिदास कल्याणकीर्ति के शिष्य थे।

अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है—

भरत नरेश्वर आवीया नाम्यु निजवर शीस जी।
स्तवन करी इम जपए हूँ किंकर तु ईस जी।
ईस तुमनि राजीराज भरतनि आपीउ।
इम करी मन्दिर गया सुन्दर ज्ञान भुवने व्यापीउ।
श्री कल्याणकीरति सोम मूरति चरण सेव मिनणि मइ।
शान्तिदास स्वामी बाहुबलि सरण राखु पुत्र तम्ह तणी।

१२८. तीन चौवीसी पूजा　　विद्याभूपण　　१६८ ७१　　सस्कृत
ले०काल स० १६१६ ज्येष्ठ वुदी १३

१२६. पल्य विघान पूजा　　,,　　१७१-७३　　सस्कृत

१३०. ऋपिमडल पूजा　　—　　१७३-७८　　सस्कृत
ले०काल स० १६१७ आपाढ सुदी ११

१३१ वृहद्कलिकुण्ड पूजा　　—　　१७८-७६　　संस्कृत

१३२. कर्मदहन पूजा　　शुभचन्द्र　　१७६-८४　　,,
ले०काल स० १६१७ आपाढ वुदी ७

१३३ गणधरवलयपूजा　　—　　१८४-८५　　,,

१३४ सककलीरण विधान　　—　　१८५-८६　　,,

१३५. सहस्रनाम स्तोत्र　　जिनसेनाचार्य १८६-८८　　,,
ले०काल स० १६१७ आपाढ सुदी ११

१३६. वृहद् स्नपन विधि　　—　　१८८-६४　　सस्कृत
ले०काल स० १६१७ सावरण सुदी १०

प्रशस्ति—निम्न प्रकार है—

सवत् १६१७ वर्पे श्रावण सुदी १० गुरौ देवपल्या श्री पार्श्वनाथभुवने श्री काष्ठासघे भट्टारक श्री विद्याभूपण आचार्य श्री ५ विनयकीर्ति तच्छिष्य ब्रह्म धन्ना लिखत पठनार्थं ।

१३७. लघुस्नपन विधि　　—　　१६४-६६　　,,

१३८-४१ सामान्य पूजा पाठ　　—　　१६६-२००　　,,

१४२. सोलहकारणपाखडी　　—　　२००　　,,

१४३-१४७ नित्य नैमित्तिक पूजा —　　२००-५　　,,
ले०काल स० १६१७

१४८. रत्नत्रय विधान　　नरेन्द्रसेन　　२०५-६　　सस्कृत
(वडा अर्घ्य खमावणी विधि)

इति भट्टारक श्री नरेन्द्रसेन विरचिते रत्नत्रयविधि समाप्त । ब्र० धन्ना केन लिखित ।

१४६ जलयात्रा विधि　　—　　२०६　　सस्कृत
ले०काल स० १६१७ भादवा वुदी ११

प्रशस्ति—स० १६१७ वर्पे भादवा वुदी ११ श्री काष्ठासघे भ० श्री रामसेनान्वये । भट्टारक श्री विश्वसेन तत्पट्टे भट्टारक श्री विद्याभूपण आचार्य श्री विनयकीर्ति तच्छिष्य श्री धन्नाख्येन लिखत । देवपल्यां श्री पार्श्वनाथ भुवने लिखित ।

१५० जिनवर स्वामी वीनती　　सुमतिकीर्ति　　२०६-६　　हिन्दी

श्रीमूलसघ महत सत गुरु श्री लक्ष्मीचन्द ।
वीरचन्द विवुघ वधन्याय भूपण मुनिन्द ।
जिनवर वीनती जे भरिण मनिवरी आणद ।
भगति सुगति मुनिवर ते लहि जिटा परमानद ।

सुमतिकीर्ति भवि भरिण ये घ्यावो जिनवर देव ।
ससार माहि नवतयु पाम्यु सिवपद देव ॥२३॥

इति जिनवर स्वामी विनती समाप्त ।

१५१- लक्ष्मी स्तोत्र सटीक — २०७-२०८ सस्कृत
१५२ कर्म की १४८ प्रकतियो का वर्णन — ३०८-१० हिन्दी
१५३ विनती पार्श्वनाथ — २१०-११ ,,
पद्य स० १४

जय जगगुरु देवाधिदेव तु त्रिभुवन तारण ।
रोग शोक अपहरणधरि सवि सपद कारण ।
रागादिक अतरग रिपु तेह निवारण ।
तिहु अण सल्य जे मयण मोह भड देवि भजण ।
चिन्तामणि श्रीयपास जिनवर प्रद्धनवर शृ गार ।
मनह मनोरथ पूरणुए वाछित फल दातार ॥

१५४ विद्युत्प्रभ गीत × २११-१२ हिन्दी
१५५ वाईस परीषह वर्णन — २१२-१४ सस्कृत
ले०काल स० १६३२ वैशाख सुदी १०

प्रहलादपुर मे ब्र० धन्ना ने अपने पठनार्थ लिखा था ।

१५६ षट्काल भेद वर्णन — २१५ सस्कृत
१५७- दुर्गा विचार — २१६ ,,
१५८ ज्योतिष विचार — २१६ ,,

विशेष—इसमे वापस विचार, शकुन विचार, पल्ली विचार छीक विचार, स्वप्न विचार, अगफडक विचार, एव वापस घट विचार आदि दिये हुए है ।

१५९ अकलकाष्ठक — २१६-१७ सस्कृत
१६० परमानद स्तोत्र — २१७ ,,
१६१ ज्ञानाकुश शास्त्र — २१७-१८ ,,
१६२ श्रुत स्कध शास्त्र — २१८-१९ ,,
१६३ सप्ततत्व वार्ता — २१९-२० ,,
१६४ सिद्धातसार — २२०-२२ ,,
१६५-६८ कर्मो की १४८ प्रकृतियो का वर्णन
जैन सिद्धात वर्णन चौवीसी ठाणा
चर्चा, तीर्थंकर आयु वर्णन
२२३-३४ हिन्दी
ले०काल स० १६१८ आसोज सुदी १

१६९ सुकुमाल स्वामी रास धर्मरुचि २५१-६५ हिन्दी

अन्तिमभाग—

वस्तु—

रास मनोहर २ किवु मि सार ।
सुकुमालनु अति रुअडु सुणता दुखदालिद्र टालि अति ऊजल ।
भण्यो तह्यो भविजज्यु अनेक कथा इस वर्ण वीलोह जल ।
श्री अभयचन्द्र गुरु प्रणमीनि ब्रह्मधर्म रुचि मणिसार ।
भणि गुणिज सोभलि ते पामि सुख अपार ।

इति श्री सुकुमाल स्वामी रास समाप्त ।

१७०	श्री नेमिनाथ प्रबध	लावण्य समय मुनि	२६५-७०	हिन्दी
१७१	उत्पत्ति गीत	—	२७१	,,
१७२-	नरसगपुरा गोत्र छद	—	२७१	,,
१७३	हनुमन रास	ब्र० जिणदास	२७३-२८९	,,

अन्तिम पाठ—

वस्तु—रास कह्यु २ सार मनोहर सहितयुग सार सहोजल ।
हनुमत वीनु निर्मल अजल ।
भ्राति केडवा अतिवर्णी भवीयणसुणत्रासार अजल
श्री सकलकीरति गुरु प्रणमीनि भवनकीरति भवमार ।
ब्रह्मजिणदास एणी परिभणी पढता पुण्य अपार ।।७२७।।

७२७ पद्य हैं ।

१७४	जिनराज वीनती	—	२९२	हिन्दी	
१७५	जीरावलदेव वीनती	—	,,	,,	
			ले०काल स० १६३९		

सवत् १६२२ वर्षे दोमडी ग्रामे लिखित ।

१७६-	नेमिनाथ स्तवन	—	२९१	,,	३६ पद्य
१७७	होलीरास	ब्र० जिणदास	२९६	,,	
			ले०काल स० १६२५ चैत सुदी ५		
१७८.	सम्यक्त्व रास	ब्र० जिणदास	२९६-२९७	,,	
			ले०काल स० १६२५ पौष सुदी २		
१७९.	मुक्तावली गीत	सकलकीर्ति	२९७	हिन्दी	
			ले०काल स० १६२६ पौष बुदी १३		
१८०	वृषभनाथ छद	—	२९८	,,	
			ले०काल स० १६४३ ग्रासोज बुदी ३ ।		

१०२३२. गुटका० स०४ । पत्रस० १३० । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १८३३ । पूर्ण । वेष्टनस० ३८६ ।

विशेष—निम्न दो रचनाओ का सग्रह है—

त्रेपनक्रिया विधि—दौलतराम । भाषा-हिन्दी । ।पूर्ण । र०काल स० १७६५ मादवा सुदी १२ । ले० काल स० १८३३ ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १८३३ वर्षे मासोत्तमासे शुभज्येष्ठ मासे कृष्ण पक्षे पाडिवा शुक्रवासरे श्री उदयपुर नगरे मध्ये लिखित साह मनोहरदास तोलेशलालजी सुत श्री जिनवरमी दौलतराम जी सीप ग्र थ करता जणारी आज्ञा थकी सरधा ग्यानी तेरेपथी देवधरम गुरु सरधा शास्त्र प्रमाणे वा ग्र थ गुरु भक्ति कारक ।

२. श्रीपाल मुनीश्वर चरित   ब्रह्म जिनदास   हिन्दी
(ले०काल स० १८३४)

१०२३३ गुटका स० ५ । पत्रस० १८० । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३८५ ।

विशेष—मुख्यत निम्न रचनाओ का सग्रह है—

कवित्त	मानकवि	हिन्दी
ऋषि मडल जाप्य	—	सस्कृत
देव पूजाष्टक	—	"

अन्य साधारण पाठ हैं ।

१०२३४. गुटका स० ६ । पत्रस० १६६ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × ।पूर्ण । वेष्टन स० ३८४ ।

विशेष—निम्न प्रकर सग्रह है—

पूजा पाठ, पद, विनती एव तत्वार्थसूत्र आदि पाठो का सग्रह है ।

बीच बीच मे कई पत्र खाली है ।

१०२३५. गुटका स० ७ । पत्रस० १८५ । आ० ७×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३८३ ।

मुख्य पाठ निम्न प्रकार है—

विशेष—सामायिक पाठ, भक्ति पाठ, आराधनासार, पट्टावलि, द्रव्य सग्रह, परमात्म प्रकाश, द्वादशानुप्रेक्षा एव पूजा पाठ सग्रह है ।

१०२३६ गुटका स० ८ । पत्रसं० १४० । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल ×। अपूर्ण । वेष्टन स० ३८२ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है—

गुणस्थान चर्चा		प्राकृत
तत्वार्थसूत्र भाषा	—	हिन्दी (गद्य)
भाव त्रिभगी	नेमिचन्द्राचार्य	प्राकृत
आश्रव त्रिभगी	—	"
पर्यास्तिपाय	—	हिन्दी

हिन्दी गद्य टीका सहितहै

१०२३७ गुटका सं० ६। पत्रस० २१-१३१। आ० ६×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले०काल स० १७८१। अपूर्ण। वेष्टन स० ३८१।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है।

अनन्तनाथव्रत रास	ब्र० जिनदास	हिन्दी
भक्तामर स्तोत्र	आचार्य मानतु ग	सस्कृत
दान चौपई	समय सुन्दर वाचक	हिन्दी
पार्श्वनाथजी छद सवोध	—	,, (ले०काल १७८१)
वाहुवलिनी निपद्या	—	,, (ले०काल १७८१)
रविव्रत कथा	जयकीर्ति	,,
सोलह्कारण कथा	ब्र० जिनदास	,,
पाणीगालन रास	ज्ञानभूषण	,,

१०२३८ गुटका स० १०। पत्रस० ४६-६६। आ० ८¾×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पद्य)। ले०काल स० १७८१। अपूर्ण। वेष्टनस० ३८०।

विशेष- निम्न रचनाओ का सग्रह है—

हनुमत कथा	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी	अपूर्ण
जम्बू स्वामी चौपई	पाडे जिनदास	,,	पूर्ण
मृगी सवाद	—	,,	अपूर्ण

१०२३६. गुटका सं० ११। पत्रस० ४२०। आ० १०×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल स० १८२० काती सुदी १। पूर्ण। वेष्टनस० ३७६।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

अनन्तव्रत कथा	ब्र० जिनदास	हिन्दी	पत्रस० ६
सोलहकारण रासा	,,	,,	१५
दशलक्षण व्रत कथा	,,	,,	२१
चारुदत्त प्रवध रास	,,	,,	४५
गुरु जयमाला	,,	,,	५६
पुष्पाजलि पूजा	—	सस्कृत	७६
अनन्त व्रत पूजा	शातिदास	हिन्दी	
पुष्पाजलि रास	ब्र० जिनदास	,,	
महापुराण चौपई	गगदास	,,	
अकृत्रिम चैत्यालय विनती	लक्ष्मण	,,	

काष्टासघ विख्यात सूरी श्री भूपण शोमताए
चन्द्रकीर्ति सूरि राय तस्य शिष्य लक्ष्मण वीनती करू ए ॥

लु कामत निराकरण रास वीरचन्द हिन्दी
(र० काल स० १६२७ माघ सुदी ५)

मायागीत ब्र० नाराण (विजयकीर्ति का शिष्य) हिन्दी १७७

त्रिलोकसार चौपई सुमतिकीर्ति ,,

होली भास ब्र० जिनदास ,,

विशेष—१४ पद्य हैं। उदयपुर नगर मे प्रतिलिपि की थी।

सिन्दूर प्रकरण भाषा वनारसीदास हिन्दी
(ले०काल स० १७८५)

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १७८५ वर्षे फागुण मासे शुक्लपक्षे प्रतिपदातिथौ सोमवासरे पूर्व भाद्रपदनक्षत्रे साका नामि गोत्रे मेवाडदेशे श्री उदयपुरनगरे महाराणा श्री सग्रामसिंह जी विजयराज्ये श्री मूलसघे श्री सभवनाथ चैत्यालये भ० श्री विजयकीर्ति जी आम्नाये श्री हूमड ज्ञातीय वृद्धि शाखाया सु श्रावक पुन्य प्रभाव श्री देवगुरु भक्ति कारक श्री जिनाज्ञाप्रतिपालक द्वादशव्रतधारक लिखापित वालेसा देवजी तत् सुत एक विंशति गुण विराजमान वाले सा श्री रतन जी पठनार्थ।

सुदर्शन रास ब्र० जिनदास हिन्दी पत्रस० २४३

रात्रि भोजनरास ,, — २८५
(ले०काल स० १७८७)

दानकथा रास — — २९५
कथा लुब्धदत्त साहकी)

दानकथा रास — —
साह घनपाल की दान कथा है।

अकलक यति रास ब्र० जयकीर्ति हिन्दी
(र० काल स० १६६७)

कोटा नगर मे रचना की गई थी।

नामावलि छद ब्र० कामराज हिन्दी

नूर की शकुनावली नूर —
आख फडकने सवन्धी विचार

वारह व्रत गीत ब्र० जिनदास हिन्दी पत्रस० ३५३

ग्यारह प्रनिमा रास — —

मिथ्या टुकड जयमाल — —

जीवडा गीत — —

दर्शन वीनती — —

भारथी राग जिणद गीत — —

वणजारा गीत — — ३६६

चेतन प्राणी गीत	—	—
काया जीव सुवाद गीत	ब्रह्मदेव	—

श्री मूल सघे गछपति रामकीर्ति भवतार ।
तस पट कमल दिवसपति पद्मनंदि गुणवीर ।
तेहणा चरण कमल नमी गगदास ब्रह्म पसाये ।
काया जीव सुवादडो देवजी ब्रह्मगुण गाय ।

पोषह रास	ज्ञानभूषण	हिन्द
ज्ञान पच्चीसी	बनारसीदास	,,
गोरखकवित्त	गोरखदास	,,
जिनदत्त कथा	रत्न भूषण	,,

सवत् १८२० मे उदयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१०२४०. गुटका सं० १२ । पत्र स० ११० । आ०७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३७८ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है ।

क्षेत्रपाल पूजा	—	सस्कृत
ऋपिमडज पूजा	—	सस्कृत
मागी तुगीजी की यात्रा	अभयचन्द सूरि	हिन्दी

विशेष—इसमे ४२ पद्य हैं । अन्तिम पक्तिया निम्न प्रकार हैं—

भाव मे भवियण साभलोरे भणे अभयचन्द सूरी रे ।
जाइ ने वलभद्र जुहारिजो पापु जाइ जिमि दूरि रे ।

योगीरासा	जिनदास	हिन्दी
कलिकुडपार्श्वनाथ स्तुति ।	—	,,

१०२४१. गुटका स० १३ । पत्रस० ६० । आ० ५½×५½ इञ्च । मापा-हिन्दी सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३७७ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है ।

कलिकुड स्तवन, सोलहकारण पूजा दशलक्षण पूजा, अनन्तव्रत पूजा ।

अन्य पूजा पाठ सग्रह है ।

१०२४२. गुटका स० १४ । पत्रस० २०६ । आ० ६×५ इञ्च । भषा-हिन्दी । ले० काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७६ ।

मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है—

विरह के फुटकर दोहे	लालकवि	हिन्दी

नित्य पूजा हिन्दी
बुधरासा — ,, ले०काल स० १७३७

प्रारम्भ का पाठ निम्न प्रकार है—

प्रणमीइ देव माय, पाचाइण कमसी।
समरिए देव सहाय जैन सालग सामणी।
प्रणमीइ गण हर गोम सामणी।
दुरियणासे जेने नानि सद्गुरु वेसिणिरो कीजे।

अन्त मे—

सवत् १७३७ मगसर सुदी ११ संगही किलाणजी खीमजी पठनार्थं।

राजा यशोधर चरित्र— हिन्दी —
काया जीव सवाद गीत हिन्दी देवा ब्रह्म

अ तिम भाग निम्न प्रकार है—

गगदास ब्रह्म पसाये राणी काय जीव सुवादडो।
देवजी ब्रह्म गुण गाय राणीला।

इति काया जीव सुवादजीव सपूर्ण।

गढी आड का लाल जो कलाणजी स्वलिखिता।
सवत् १७१२ वर्षे आषाढ वदी ११ गुरौ श्री उज्जेणी नगरे लिखता।

यशोधररास हिन्दी ब्रह्म जिनदास
श्रेणिकरास ,, ,,
ले०काल स० १७१३ माघ सुदी ५।

विशेष—अहमदाबाद नगर मे प्रतिलिपि हुई थी।

जिनदत्तरास हिन्दी पद्य।

१०२४३. गुटका स० १५। पत्र स० ११०। आ० ८×७ इन्च। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले०काल स० १७३०। अपूर्ण। वेष्टन स० ३७२।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है।

अनन्तव्रत रास ,, ब्र० जिनदास हिन्दी
जिनसहस्रनाम स्तोत्र ,, आशाधर सस्कृत ले०काल स० १७१९
प्रद्युम्न प्रबध ,, हिन्दी

१०२४४. गुटका स० १६। पत्रस० ३९। आ० ६×४ इन्च। भाषा—सस्कृत। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३७३।

विशेष—नदीश्वर पूजा जयमाल आदि है।

१०२४५. गुटका सं० १७ । पत्र स० ८-८४ । आ० ६×४½ इञ्च । भापा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३७४ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है ।

प्रतिक्रमण पाठ	—	सस्कृत
राजुल पच्चीसी	—	हिन्दी
सामायिक पाठ	—	हिन्दी

१०२४६. गुटका स० १८ । पत्रस० ५६ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७५ ।

विशेष—मनोहरदास सोनी कृत धर्म परीक्षा है ।

१०२४७. गुटका स० १९ । पत्रस० ३-५३ । आ० ६×४½ इञ्च । भापा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३७६ ।

विशेष—पूजा पाठ तथा विनती एव पदो का सग्रह है ।

१०२४८. गुटका सं० २० । पत्रस० ७५ । आ० ८½×४½ इञ्च । भापा-सस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३६८ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है ।

भक्तिपाठ	—	सस्कृत
वृहद स्वयभू स्तोत्र	—	,,
गुर्वावलि	—	,,
नेमिनाथ की विनती	—	हिन्दी

१०२४९. गुटका सं० २१ । पत्रस० २०७ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६६ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है ।

हनुमतरास	ब्र० जिनदास	हिन्दी
जम्बूस्वामीरास	,,	,,
पोपहरास	ज्ञानभूपण	,,
सवोध सनाणु दूहा	वीरचन्द	,,
नेमकुमार	वीरचन्द	,,
		ले०काल स० १६३८
सुदर्शनरास	ब्र० जिनदास	हिन्दी
धर्मपरीक्षारास	ब्र० जिनदास	,,
		ले०काल स० १६४४
अजितनाथ रास	,,	हिन्दी

१०२५०. गुटका सं० २२ । पत्र स० २२८ । आ० ६½×६ इञ्च । भापा-प्राकृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३६७ ।

विशेष—प्रारम्भ मे पूजा पाठ हैं । ततपश्चात् जम्बूद्वीप पण्णत्ति दी हुई है । यह तेरह उद्देश तक है ।

१०२५१. गुटका सं० २३ । पत्र स० ६४ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३६६ ।

विशेष—गुणस्थान चर्चा एव समाधि मरण का सग्रह है ।

१०२५२ गुटका सं० २४ । पत्रस० ८६ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६४ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है—

आदित्यवार कथा	—	भाऊ	हिन्दी
विषापहार भाषा	—	अचलकीर्ति	,,
कल्याण मदिर भाषा	—	बनारसीदास	,,
सर्वजिनालय पूजा	—	—	सस्कृत

१०२५३. गुटका स० २५ । पत्रस० १५ । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३६५ ।

विशेष—आचार शास्त्र सबधी ११८ गाथाए हैं ।

१०२५४. गुटका स० २६ । पत्र स० २८-१२३ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २८४ ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं ।

आदित्यवार कथा	—	भाऊ कवि	हिन्दी
श्रीपाल स्तुति	—	महाराम	ले०काल स० १८१०
भक्तामर भाषा	—	हेमराज	हिन्दी
विनती	—	कनककीर्ति	, ले०काल स० १८०८

१०२५५. गुटका स० २७ । पत्रस० १० से १८० । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २८५ ।

१०२५६. गुटका सं० २८ । पत्र स० १४८ । आ० १०½×६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २८६ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

सामायिक पाठ सटीक ·· हिन्दी गद्य । ले०काल स० १८२३

कर्म विपाक भाषा विचार— ढू ढारी पद्य । पद्य स० २४०५ हैं ।

सम्यक्त्व कौमुदी—जोधराज गोदीका । हिन्दी गद्य । ले०काल स० १८३२

महाराजा हमीरसिंह के शासन काल मे उदयपुर मे प्रतिलिपि हुई ।

१०२५७. गुटका सं० २९ । पत्र स० २६६ । आ० ७½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १८२३ अपूर्ण । वेष्टन स० २८७ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

नाटक समयसार	—	वनारसीदास	र०काल स० १६९३ ।	हिन्दो
पचास्तिकाय भापा	—	हीरानन्द		,,
भक्तामर भापा	—	हेमराज		,,

१०२५८. गुटका ३० । पत्रस० १७६ । आ० १२×६ इन्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २८८ ।

रत्नत्रय पूजा — सस्कृत

विशेष—नरेन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि कराई थी ।

आदित्यवार कथा	अर्जुन	प्राकृत	
कल्याणस्तोत्र वृत्ति	विनयच द्र	सस्कृत	×

१०२५६. गुटका स० ३१ । पत्र स० ७० । आ० १०×६½ इन्च । भापा—सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २८६ ।

१०२६०. गुटका सं० ३२ । पत्र स० ८६ । आ० १२×८इ च । भापा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल स० १७६० । पूर्ण । वेष्टन स० २६० ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

सरस्वती स्तवन एवं पूजा	—ज्ञानभूपण	सस्कृत
मुनीश्वर जयमाल	पाण्डे जिनदास	हिन्दी
सम्यक्त्वकौमुदी	जोवराजगोदिका	,,

१०२६१. गुटका स० ३३ । पत्र स० ४० । आ० ६×५ इन्च । भापा-हिन्दी। ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २६३ ।

१०२६२. गुटका स० ३४ । पत्र स० १०० । आ० ६×५½ इन्च । भापा—हिन्दी । ले० काल अपूर्ण । वेष्टनस० २६४ ।

विशेष—निम्न मुख्य पाठो का सग्रह है—

पार्श्वनाथ जी की विनती	मुनि जिनहर्ष	हिन्दी	
योगसार	क्षेमचन्द्र	,,	ले० काल स० १८२४
आत्मपटल	—	,,	
जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	सस्कृत	
परमात्माप्रकाश	योगीन्द्र देव	अपभ्र श	

१०२६३. गुटका सं० ३५ । पत्रस० ९३ । आ० ८×७ इन्च । भापा-हिन्दी । ले०काल स० १६८६ । पूर्ण । वेष्टनस० २६६ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

१०२६४. गुटका सं० ३६ । पत्रस० ४३ । आ० ६×४½ इन्च । भापा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २६७ ।

विशेष—पूजा पाठ एव सामायिक पाठ आदि का सग्रह है।

१०२६५. गुटका सं० ३७ । पत्रस० १०४ । आ० ४½×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २६८ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है।

१०२६६. गुटका सं० ३८ । पत्रस० १६ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २६६ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है।

१०२६७. गुटका सं० ३६ । पत्रस० ३-२३० । आ० ५½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३०० ।

विशेष—वनारसीदासकृत नाटक समयसार है।

१०२६८. गुटका स० ४० । पत्रस० ३०० । आ० ८½×७ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल स० १६८६ वैशाख बुदी १४ । वेष्टनस० ३३१ ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार है—

परमात्म प्रकाश, द्रव्य सग्रह, योगसार, समयसार भाषा (राजमल्ल—आगरा मे स० १६८६ मे प्रतिलिपि हुई थी) एव गुणस्थान चर्चा आदि है।

१०२६६. गुटका सं० ४१ ।

विशेष—

समयसार वृत्ति है। अपूर्ण। वेष्टनस० ३३२ ।

१०२७० गुटका स० ४२ । पत्रस० १४० । आ० ४½×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ३३३ ।

विशेष—अक्षर घसीट हैं।

१०२७१ गुटका स० ४३ । पत्रस० २५ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३३४ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है।

१०२७२ गुटका स० ४४ । पत्रस० २२६ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले०काल स १८३३ । पूर्ण । वेष्टनस० ३३५ ।

विशेष—निम्न रचनाओ का सग्रह है—

समयसार नाटक—बनारसीदास		हिन्दी
पोषहरास	ज्ञानभूषण	,,

१०२७३. गुटका स० ४५ । पत्रस० १२० । आ० ५×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३३६ ।

विशेष—बारहखडी आदि पाठो का सग्रह है।

१०२७४. गुटका सं० ४६ । पत्र स० ४१ । ग्रा० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ३३७ ।

विशेष—पद एव स्तोत्रो का सग्रह है ।

१०२७५. गुटका स० ४७ । पत्रस० १५५ । ग्रा० ५½×३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३३८ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है ।

मधु बिंदु चौपई	भगवतीदास	हिन्दी (पद्य)
	(र०काल स० १७४०)	
सिद्ध चतुर्दशी	,,	,,
सम्यक्त्व पच्चीसी	,,	,,
	(ले०काल स० १८२५)	
ब्रह्मविलास के ग्रन्य पाठ	,,	,,

१०२७६. गुटका सं० ४८ । पत्रस० ३४५ । ग्रा० ६×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत-सस्कृत । ले०काल स० १८१२ वैशाख सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० ३३९ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है ।

गुणस्थान एव लोक चर्चा, पचस्तिकाय टव्वा टीका ।

तत्वज्ञान तरगणि—ज्ञानभूषण की भी दी हुई है ।

उदयपुर नगरे राजाधिराज महाराजा श्रीराजसिहजी विजयते सवत् १८१२ का बैशाख सुदी १० ।

१०२७७ गुटका स० ४९ । पत्र स० ६० । ग्रा० ६×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४० ।

१०२७८ गुटका सं० ५० । पत्र स० ९३ । ग्रा० १०×७ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३४१ ।

विशेष—पूजा, स्तोत्र एव सामायिक ग्रादि पाठो का सग्रह है ।

१०२७९. गुटका सं० ५१ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है ।

कक्का बत्तीसी	—	हिन्दी	
वणजारो रासो	नागराज	,,	७ पद्य हैं
पचमगति वेलि	हर्षकीर्ति	,,	
पचेन्द्रिय वेलि	वेल्ह	,,	

इनके ग्रतिरिक्त पद, विनती एव छोटे मोटे पदो का सग्रह है—

१०२८०. गुटका स० ५२ । पत्रस० १३४ । ग्रा० १०×७ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३४३ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है ।

जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	सस्कृत

स्नेह परिक्रम—नरपति । हिन्दी ।

विशेष—नारी से मोह न करने का उपदेश दिया है ।

नेमीश्वर गीत— × ।

१०२९३. गुटका स० ११ । पत्रस० २०० । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत-प्राकृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४७७ ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार है—

१ कजिकाव्रतोद्यापन—ललितकीर्ति । सस्कृत ।

२. सप्त भक्ति— × । प्राकृत । मालपुरा नगर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३ स्वयभू स्तोत्र— × । सस्कृत ।

४ तत्वार्थ सूत्र—उमास्वामि । ,,

५ लघुसहस्रनाम— × । ,,

६ इष्टोपदेश—पूज्यपाद । ,

१०२९४. गुटका स० १२ । पत्रस० ४० । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । ले०काल स० १७८१ । पूर्ण । वेष्टनस० ४७६ ।

विशेष—मत्र शास्त्र, विपापहार स्तोत्र (सस्कृत) तथा यत्र आदि हैं ।

१०२९५. गुटका सं० १३ । पत्रस० १८० । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४७५ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है ।

१ भद्रवाहु गुरु की नामावली— × ।

विशेष—सवत् १५९७ से १६०७ पौष सुदी १५ तक । गोपाचल में प्रतिलिपि हुई थी । भट्टारक पद्मनदि तक पट्टावली दी है ।

२ गच्छभेद	मूलसघे		सघ ४	गच्छ		१६ भेद नामानि		
नदि सघे	नदि	१	चन्द्र २	कीर्ति	३	भूषण	४
देवसघे	देव	१	दत्त २	नाग	३	तुग	४
सेनघ सघे	सिंह	१	कुभ २	आसव	३	सागर	४
श्रेणी सघे	सेन	१	भद्र	वीर	३	राज	४
श्री नदि सघे	सरस्वतीगच्छे			वलात्कारगणे			
श्री देवसघे	पुस्तकगच्छे			देसीगणे			
श्री सेनसघे	पुष्करगच्छे			सूरस्थगणे			
श्री सिंहसघे	चन्द्रकपाटगच्छे			कानुरगणे			

३ सामायिक पाठ ४ भक्तिपाठ ५ तत्वार्थ सूत्र

६. भक्तामर स्तोत्र ७ स्तोत्रसग्रह ८ नदेतान की जयमाल ।

९. सवोध पचासिका रइघ । अपभ्रंश ।

ले०काल स० १५९७

प्रशस्ति—सवत् १५९७ वर्षे कार्तिकमासे कृष्णपक्षे मगल त्रयोदश्या सुसनेर नगरे श्री पद्मप्रभ चैत्यालये श्री मूलसघे सरस्वीगच्छे बलात्कारगणे श्री कु दकु दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनदि देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सकलकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक भुवनकीर्तिदेवातत्पट्टे भट्टारक श्री ज्ञानभूषणदेवास्तद् वृहद् गुरुभ्रातृश्री रत्नकीर्तिस्थविराचार्यदेवातत्शिष्याचार्य श्री देवकीर्तिदेवा तत्शिष्याचार्य श्री शीलभूषण तच्छिष्य ब्र० खेमचन्द पठनार्थ स्वज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थं परोपकारायआचन्द पडावश्यक ग्र थ स्वहस्तेनालेखि आचार्य श्री गुणचद्रेय । शुभ भवतु ब्र० खेमचन्द पण्डित आत्मर्थी कू पडावश्यक की पोथी दी थी । कल्याणमस्त

सवत् १६६१ वर्षे शाके सागवाडा नगरे आदिनाथ चैत्यालये मडलाचार्य श्री सकलचन्द्रेण इद पुस्तक पण्डित वीरदासेण गृहीत ॥

१०	जिन सहस्रनाम	×	सस्कृत
११.	पद सग्रह	×	हिन्दी
१२	पच परमेष्ठी गीत	यश कीर्ति	हिन्दी
१३	नेमिजिन जयमाल	विद्यानन्दि	,,
१४	मिथ्या दुक्कड	ब्र० जिनदास	,,
१५.	विनती	×	,,

१०२९६. गुटका सं० १४ । पत्रस० १०१ । आ० ४/३ इञ्च । भापा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४७४ ।

विशेष—नीति के श्लोक हैं ।

१०२९७ गुटका स० १५ । पत्र स० २६ । आ० ४×४½ इञ्च । भापा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स ० ४७३ ×।

विशेष—विनती एव पद आदि है ।

१०२९८ गुटका सं० १६ । पत्र स० १०२ । आ० ५×५½ इञ्च । भापा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४७२ ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार है—

१.	नवमगल	लालविनोदी	
२.	लेश्यावली	हर्षकीर्ति	र० काल स० १६८३
३	पद सग्रह	बखतराम, भूषण आदि के हैं ।	

१०२९९. गुटका सं० १७ । पत्र स० ५२ । आ० ६½×६½ इञ्च । भापा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ४७१ ।

विशेष—पट्टी पहाडे तथा स्तोत्र एव मत्र आदि हैं ।

१०३००. गुटका स० १८ । पत्रस० २३३ । आ० ५×५ इञ्च । भापा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४७० ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार है—

१. क्षेत्रपालाष्टक विद्यासागर

२. गुरु जयमाल जिनदास

३. पट्टावली × ले०काल सं० १७५७

विशेष—ब्रह्म रूपसागर ने वारडोली मे प्रतिलिपि की थी।

१०३०१ गुटका स० १६। पत्रस० २४०। ग्रा० ५×४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत-प्राकृत। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ४६६।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ सग्रह है। प्रति प्राचीन है।

१०३०२ गुटका स० २०। पत्रस० २२५। ग्रा० ७×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेप्टन स० ४६८।

विशेष—ग्रायुर्वेद के नुसखो का सग्रह है।

१०३०३. गुटका स० २१। पत्रस० ७७। ग्रा० ६½×४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ४६७।

विशेष—मुख्य निम्न पाठ है—

१. गौतमस्वामी रास विनयप्रभ हिन्दी
र०काल स० १४१२

२ चौवीस दण्डक गजसागर ,,
ले०काल स० १७६६

३. मुनिमालिका चारित्रसिंह ,,
ले०काल स० १६३२

ग्रन्तिम—

सवत् सोल वत्तीस ए श्री विमलनाथ सुए साल।
दीक्षा कल्याणक दिने गूथी श्री मुनिमाल ॥३२॥
श्री रिणीपुरे रलिया मणी श्री शीतल जिणचन्द।
सूर विजय राजै तदा सघ ग्रधिक ग्राणद ॥३३॥
श्री मतिभद्र सुगुर तणै सु पसाये सुखकार।
मनुहर श्री मुनिमालिका गण गण परिपल पूर ॥३४॥
महामुनीसर गावता सुर तरु सफल विहाण।
ग्रष्ट महानिधि घरै फलै सदा सदा कल्याण ॥

इति श्री मुनिमालिका सपूर्ण।

पद सग्रह विमलगिरि, दुर्गादास ग्रादि के —

१०३०४. गुटका स० २२। पत्रस० १३१। ग्रा० ५½× ६ इञ्च। भापा–हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० स० ४६६।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है।

आरती संग्रह, विजया सेठनी वीनती, सुभद्रा वीनती, रत्नगुरु वीनती, निर्वाण काण्ड भाषा, चन्द्र-गुप्त के सोलह स्वप्न, चौबीस तीर्थंकर वीनती, गर्भवेलि-देवमुरार

नवरेमास गरभ मे रह्यो
ते दिन प्राणी विसरि गयो ।
देवमुरार जी वीनती कही
आपेन् पाई प्रभु आये लहि ।।७।।

बलभद्र वीनती, जिनराज वीनती, विनती संग्रह आदि हैं ।

१०३०५. गुटका सं० २३ । पत्रसं० ११२ । आ० × । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४६५ ।

विशेष—निम्न लिखित पाठ हैं—

१. पंच कल्याणक	रूपचन्द	हिन्दी
२ आदित्यावार कथा	भानुकीर्ति	,,
३ अनन्तव्रतरास	ब्र० जिनदास	,,

मंत्र तथा यंत्र भी दिये हैं ।

१०३०६ गुटका सं० २४ । पत्र सं० २१ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६४ ।

विशेष—केवल पूजाए हैं ।

१०३०७. गुटका सं० २५ । पत्रसं० ८० । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १८१३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६३ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१ भडली विचार × हिन्दी ज्योतिष

विशेष—पाचोता मे लिखा गया था ।

२. सम्मेद विलास देवकरण हिन्दी

अन्तिम—

लोहाचार्य मुनिंद सुधर्म विनीत है ।
तिन कृत गाथा बंध सुग्रंथ पुनीत है ।।
साह तने अंनुसार सम्मेद विलास जु ।
देवकरण विनवै प्रभु को दासजु ।।
श्री जिनवर कूं सीस नमावैं सोय ।
धर्म बुद्धि वहां संचरे सिद्ध पदारथ सोय ।

३ जीवदया छंद	भूधर	हिन्दी
४. अंतरीक्ष पार्श्वनाथ छंद	भाव विजय	,,
५. रेखता	मांडण	,,

६ झूलना	—	हिन्दी
७- छदसार	नारायणदास	,,
८ छद	केशवदास	हिन्दी
९- राग रत्नाकर	राधाकृष्ण	हिन्दी
१० ज्ञानार्णव	शुभचन्द	सस्कृत

१०३०८. **गुटका स० २६** । पत्रस० ८५ । भापा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४६२ ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार है—

वृषभनाथ लावणी मयाराम

विशेष—इसमे घुलेव नगर के वृपभनाथ (रिखवदेव) का वर्णन है। घूलेव पर चढाई आदि का वर्णन है।

१०३०९ **गुटका स० २७** । पत्र स० ५० । आ० ५१/२×६ इञ्च । भाषा सस्कृत हिन्दी। ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६१ ।

विशेष—मुख्यत निम्न पाठ है—

१. वृपभदेवनी छद	×	हिन्दी
२ सुभापित सग्रह	×	सस्कृत
३. शान्तिनाथ की लावणी	×	हिन्दी

१०३१० **गुटका स० २८** । । भापा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४५९ ।

विशेष—पद पूजा पाठ आदि है।

१०३११ **गुटका स० २९** । पत्रस० ६५ । आ० ६१/२×४१/२ इञ्च । भापा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४५७ ।

विशेष— पद स्तुतियो का सग्रह है।

१०३१२ **गुटका स० ३०** । भापा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४५६ ।

विशेष—अभिषेक स्नपन पूजा पाठ एव मत्र विधि आदि है।

१०३१३. **गुटका स० ३१** । पत्र स० ५५ । भापा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४५५ ।

विशेष – विभिन्न कवियो के पद, स्तुति गिरधर की कुडलिया, पिंगल विचार तथा स्तुतिया है।

१०३१४ **गुटका स० ३२** । पत्रस० ८० । आ० ७×६१/२ इञ्च । भापा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४५४ ।

विशेष—आयुर्वेद एव ज्योतिष सम्बन्धी विवरण है।

१०३१५. गुटका स० ३३ । पत्र स० ६६ । आ० × । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४५३ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१ त्रिलोकसार चौपई	सुमतिसागर	हिन्दी
२. गीत सलूना	कुमुदचन्द	,,

१०३१६. गुटका स० ३४ । पत्र स० १०० । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २५२ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१. पद सग्रह—

२. विनती रिखवदेव जी घुलेव ब्र० देवचन्द

विशेष—वागड देश मे घुलेव के वृषभदेव (केशरिया जी) की दिगम्बर विनती हैं। मदिर ५२ शिखर होने का विवरण है। कुल २६ पद्य है।

ब्र० रामपाल ने प्रतिलिपि की थी।

३ पच परमेष्ठी स्तुति ब्र० चन्द्रसागर

अन्तिम—

दिगम्वरी गच्छ महा सिरणगार ।
सकलकीर्ति गच्छपति गुणधार
तास शिष्य कहे मधुरी वाणि ।
ब्रह्म चन्द्र सागर वखाण ।।३२।।
नयर सज्यआ परसिद्ध जाण ।
सासन देवी देवल मनुहार ।।
भणे गुणे तिहु काल उदार ।
तह घर होसे जय-जयकार ।।३३।।

४ नेमिनाथ लावणी रामपाल

विशेष—रामपाल ने स्वय अपने हाथ से लिखा था।

५. चौबीस ठाणाचर्चा	×	हिन्दी
६ औपधियो के नुसखे	×	,,
७ भ्रमर सिज्झाय	×	,,

विशेष—परनारी की प्रीत का वर्णन हैं।

१०३१७. गुटका स० ३५ । पत्रस० १०० । भाषा-सस्कृत । ले०काल स० × । पूर्ण । वेष्टनस० ४५० ।

विशेष—निम्न मुख्य पाठ है—

१. मेघमाला	—	सस्कृत	ले०काल स० १७२१

प्रशस्ति—सवत् १७२१ वर्षे आसोज सुदी १० सोमे वागीदोरा (वासवाडा जिला) स्थाने श्री शाति-नाथ चैत्यालये ब्र० श्री गणदास तत् शिष्य ब्र० श्री आख्येन स्वहस्तेन लिखितेय मेघमाला सपूर्णं ।।

सवत् १११५ से ११६२ तक के फल दिये है ।

२. ग्रेह् नक्षत्र विचार, ताजिक शास्त्र एव वर्षफल (सरस्वती महादेवी वाक्य) ।

ज्योतिष सवधी गुटका है ।

१०३१८ गुटका स० ३६ । पत्र स० १५० । आ० ५×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । ले० काल स० १७१४ व १७२२ । पूर्ण । वेष्टन स० ४४६ ।

निम्न उल्लेखनीय पाठ है—

१ पूजा अभिषेक पाठ × सस्कृत

२. ऋपिमडल जाप्य विधि × सस्कृत

ले०काल स० १७२२ माघ सुदी १५

प्रशस्ति—१७२२ वर्षे माघ सुदी १५ शुक्रे श्री मूलसघे आचार्य श्री कल्याणकीर्ति शिष्य ब्र०चारि सघ जिष्णना लिखित पडित हरिदास पठनार्थं ।

३ नरेन्द्रकीर्ति गुरु अष्टक × सस्कृत

४ जिन सहस्रनाम × सस्कृत

५ गणधर वलय भ० सकलकीर्ति सस्कृत

ले०काल स० १७३४

प्रशस्ति—स० १७१४ वर्षे माघ वुदी २ भौमे श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे कुन्दकुन्दा-चार्यान्वये भट्टारक श्री रामकीर्ति तत्पट्टे भ० श्री पद्मनदि तत्पट्टे भ० देवेन्द्रकीर्ति तत् गुरु भ्राता मुनि श्री देव-कीर्ति तत् शिष्याचार्य स्त्री कल्याणकीर्ति तत् शिष्य क० चदिसघि निष्युणा लिखित प० अमरसी पठनार्थं ।

६ चार यत्र हैं— जलमडल, अग्निमडल, नाभिमडल वायुमडल ।

७ पट्टावलि हिन्दी भट्टारक पट्टावलि दी हुई है ।

८ सरस्वती स्तुति आशाधर सस्कृत

१०३१९. गुटका स० ३७ । पत्रस० ५४ । आ० ७×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४४८ ।

विशेष—औपधियो के नुसखे, यत्र मत्र तत्र आदि, सूर्य पताका यत्र, चौसठ योगिनी यत्र लावणी-जसकर्ति ।

अन्तिम— कोट अपराध मे कीना तारा क्षमा करो जिनवर स्वामी ।
तीन लोक नाइक साहिव सर्व जीव अन्तर जामी ।।
जसकीर्ति की अरज सुनीले राखो सेवक तुम पाइ ।
दीनदयाल कृपा निधि सागर आदिनाथ प्रभु सुखदायी ।।

१०३२०. गुटका स० ३८ । पत्रस० ३२२ । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टनस० ४४७ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है।

१. सूक्ति मुक्तावली	सोमप्रभाचार्य	सुभाषित
२. सुभाषितावली	×	,,
३ सारोद्धार	—	,,
४. भर्तृहरि शतक	भर्तृहरि	,,
५ विष्णुकुमार कथा	×	,,
६. सुकुमाल कथा	×	
७. सागरचक्रवर्ति की कथा	×	,,
८ सोह स्तोत्र	×	,,

१०३२१. गुटका स० ३९ । पत्रस० १८१ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४४५ ।

विशेष—गुटका महत्वपूर्ण है । वाजीकरण औषधिया, यत्र मत्र तत्र, रासायनिक विधि, अनेक रोगो की औषधिया दी हुई हैं। प० श्यामलाल की पुस्तक है ।

१०३२२. गुटका स० ४० । पत्र स० १४८ । आ० ६×७ इञ्च । भाषा–सस्कृत–हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४४१ ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न हैं—

१ महावीर वीनती—प्रभाचन्द्र । हिन्दी ।

अन्तिम—डाकिनी साकिनि भूत वैताल
वाघ सिंघ ते नडे विकराल
तुझ नाम ध्याता दयाल ॥२८॥
जग मगलकारी जिनेन्द्र ।
प्रभाचन्द्र वादिचन्द्र जोगिन्द्र ॥
स्तव विक्रम देवेन्द्र ॥२९॥

२ पार्श्वनाथ वीनती—वादिचन्द्र । हिन्दी । र०काल स० १६४८ ।

३ सामायिक टीका—× । सस्कृत ।

४ लघु सामायिक—× । सस्कृत ।

५. शातिनाथ स्तोत्र—मेरूचन्द्र । सस्कृत ।

अन्तिम -

व्यापारे नगरे रम्ये शातिनाथजिनालये ।
रचित मेरूचन्द्रेण पढतु सुधियो जना ॥

६ वासुपूज्य स्तोत्र—मेरुचन्द्र । सस्कृत ।
७ तत्वार्थसूत्र—उमास्वामी । ,,
८. ऋषि मडल पूजा—× । ,,
९ चैत्यालय वदना—महीचन्द । हिन्दी ।

अन्तिम – मूलसघे गछपति वीरचन्द्र पट्टे ज्ञानभूषण मुनीद ।
प्रभाचन्द्र तस पटे हसे, उदयो धन्य ते हुँवड वशे ।
तेह पट्टे जेणे प्रकट ज करो
श्री वादिचन्द्र जगमोर अवतरयो ।
तेह पट्टे सूरि श्री महीचन्द्र,
जेह दीठे होय आनन्द ।
चैत्याला भणसि नर नार,
तेह घट होसि जयजयकार । सपूर्णं ।

लिखित ब्र० मेघसागर स० १७२४ आसोज सुदी १ ।

१०३२३. गुटका स० ४१ । पत्र स० १६७ । आ० ९ × ६ इच भाषा–हिन्दी । ले०काल सं० १८६३ । पूर्ण । वेष्टन स० ४२२ ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—

१ पचाख्यान कथा—× । हिन्दी ।

विशेष—हितोपदेश की कथा है । मढा ग्राम मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२. चदनमलयागिरि कथा—भद्रसेन । हिन्दी ।

विशेष—मारोठ मे आचार्य सकलकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

३ चतुर मुकुट और चन्द्र किरण की कथा—× । हिन्दी ।

विशेष—३२७ पद्य हैं । रचनाकार का नाम नही दिया हुआ है ।

१०३२४. गुटका स० ४२ । पत्र स० २१० । आ० ६ × ६ इश्च । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्णं । वेष्टन स० ४४३ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है । मुख्य पाठ निम्न हैं—

भक्तामर भाषा—हेमराज ।

छप्पय—

सोरठ देश मझार गाम नदीवर जाणो ।
मूलसघ महत तिजग माहि वखाणो ॥
सीत रोग सरीर तहा आचारिय निपनो ।
लेह गया समसान काष्ट मो भलो निपनो ॥
सवत् १८ सौ तले त्रैपन गुरु वसना लोपी करि ।
सोम श्री ब्रह्म वाणी वदे चमरी पीछी कर धरी ॥

२. यशोधर चरित्र—खुशालचद ।

१०३२५. गुटका स० ४३ । पत्रस० ७६ । आ० ८×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४४४ ।

विशेष—नित्य तथा नैमित्तिक पूजा पाठ एव स्तोत्र आदि हैं।

१०३२६. गुटका स० ४४ । पत्रस० ४५ । आ० ५½×६½ इच । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४३३-१६३ ।

विशेष—पूजा एव अन्य पाठो का सग्रह है।

१०३२७ गुटका स० ४५ । पत्र स० ६६ । भाषा-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४३२-१६३ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१. पद्मावती गायत्री	सस्कृत	पत्र २१
२ पद्मावती सहस्रनाम	,,	पत्र २३
३ पद्मावती कवच	,,	पत्र २८
४. घण्टा कर्ण मंत्र	,,	पत्र ३२
५ हनुमत्त कवच	,,	पत्र ३२
६ मोहनी मत्र	,,	पत्र ३८

१०३२८ गुटका सं० ४६ । पत्र स०२२१ । आ० ५×५¼ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले० काल स० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४३१-१६३ ।

विशेष—निम्न मुख्य पाठ हैं—

१ आदित्य व्रत कथा—पाडे जिनदास ।	हिन्दी	पत्र १३७
२ ,, ब्र० महतिसागर	,,	पत्र १४४
३. अनन्तकथा—जिनसागर ।	,,	पत्र १७५

सामायिक पाठ, भक्तामर स्तोत्र एव पूजा पाठो का सग्रह है।

१०३२९. गुटका सं० ४७ । पत्र स० १७८ । आ० ७×७ इञ्च । भाषा-सस्कृत-प्राकृत । ले०काल स० १८११ । पूर्ण । वेष्टनस० ४२९-१६२ ।

विशेष—लघु एव वृहद् प्रतिक्रमण पाठ, काष्ठासघ पट्टावलि आदि पाठ है।

१०३३० गुटका सं० ४८ । पत्र स० १८५ । भाषा-सस्कृत । ले० काल स० १८८२ । पूर्ण । वेष्टन स० ४२६-१६० ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है।

१ क्षेत्रपाल स्तोत्र—मुनि शोभाचन्द	हिन्दी	पत्र ३
२. स्नपन	,,	पत्र ६
३. पूजा सग्रह एव जिन सहस्रनाम	सस्कृत ।	पत्र ५२
४. पुष्पाजलि व्रत कथा—ब्र० जिनदास ।	हिन्दी	पत्र ५८
५ सोलहकारण व्रत कथा	,,	पत्र ६३

६. दशलक्षण व्रत कथा — — हिन्दी पत्र ६८

७ अनन्तव्रत रास — ,, पत्र ७४

८. रात्रि भोजन वर्णन ब्र० वीर ,, पत्र ७६

विशेष—श्री मूल सघे मडणो जयो सरसीत गच्छराय ।
रतनचन्द पाटे हवो ब्रह्मवीर जी गुणगाय ।।

६ वाहुवलि नो छन्द—वादीचन्द्र । हिन्दी । पत्र ८४

विशेष—तम पाय लागे प्रभासचन्द ।

वाणि वोल्ये वादिचन्द्र ।।५८।।

१०. पारसनाथ नो छन्द—× । हिन्दी । पत्र ८७

११ नेमि राजुल सवाद – कल्याणकीर्ति । हिन्दी पत्र ६३

१०३३१. गुटका स० ४६ । पत्र स० ३४ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४२५-१६० ।

विशेष—तीन लोक एव गुणस्थान वर्णन हैं ।

१०३३२. गुटका स ५० । पत्र स० १२ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४२३-१५६ ।

विशेष—निम्न पाठ है—

१. भट्टारक परम्परा २ वघेरवाल छद

१०३३३. गुटका स० ५१ । पत्रस० ५४ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४१४-१५४ ।

विशेष—पहिले पद सग्रह हैं तथा पश्चात् भट्टारक पट्टावलि है ।

१०३३४. गुटका स० ५२ । पत्र स० ४०३ । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ४०७ १५३ ।

विशेष—पूजा पाठ सग्रह है ।

१०३३५. गुटका सं० ५३ । पत्र स० १८६ । आ० ३½×४ इन्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ३८४-१४३ ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—

१	आदित्यवार कथा	वादिचन्द्र सूरि के शिष्य महीचन्द	पत्र १४७ तक
२	आराधना प्रतिवोधसार	सकलकीर्ति	पत्र १५८ ,,
३.	आदित्यवारनी वेल कथा	—	१८४ ,,

१११ पद्य हैं ।

१०३३६ गुटका सं० ५४ । पत्रस० ४० । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा–हिन्दी । ले०काल×। पूर्ण । वेष्टनस० ३६७-१४० ।

विशेष—गुणस्थान चर्चा, स्तोत्र एव आराधना प्रतिबोधसार है ।

१०३३७. गुटका स० ५५ । पत्र स० ४६४ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल× । पूर्ण । वेष्टनस० ३५६-१३८ ।

विशेष—विभिन्न प्रकार की १०५ पूजा एव स्तोत्रो का सग्रह है । गुटके मे सूची दी हुई है ।

१०३३८. गुटका स० ५६ । पत्र स० १०० । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३५५-१३७ ।

मुख्य निम्न पाठ है—

१	गुणस्थान चर्चा	×	हिन्दी	पत्र १-६६ पर
२	त्रैलोक्यसार	×	,,	६७-९६ ,,
६	महापुराण विनती	गगादास	,,	

१०३३९. गुटका स० ५७ । पत्रस० ५९४ । आ० ९×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३५२-१३४ ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न हैं—

१	भक्तिपाठ	×	प्राकृत-सस्कृत	
२	स्वयभू स्तोत्र	समतभद्र	,,	
३.	भक्तामर स्तोत्र (समस्या पूर्ति)	भुवनकीर्ति	,,	४९ पद्य हैं ।
४	,, (द्वितीय स्तोत्र)	×	,,	
५	पच स्तोत्र	×	,,	
६.	महिम्न स्तोत्र	पुष्पदत	,,	
७	सकलीकरण मत्र	×	,,	
८	सरस्वती स्तोत्र	×	,,	१६० पत्र पर
९	अन्नपूर्णा स्तोत्र	×	,,	१६१ पत्र
१०	चक्रेश्वरी स्तोत्र	×	,,	१६२ ,,
११	इन्द्राक्षी स्तोत्र	×	,,	१६६ ,,
१२	ज्वालामालिनी स्तोत्र	×	,,	१६८ ,,
१३.	पचमुखी हनुमान कवच	×	,,	१७१ ,,
१४	शनिश्चर स्तोत्र	×	सस्कृत	१८७ पत्र पर
१५	पार्श्वनाथ पूजा	×	,,	१९२ ,,
१६	पद्मावती कवच एव सहस्रनाम	×	,,	२१४ ,,
१७.	पार्श्वनाथ आरति	×	हिन्दी	
१८	भैरव सहस्रनाम पूजा	×	सस्कृत	२३३ ,,

१६. भैरव मानभद्र पूजा एव स्तोत्र	शान्तिदास	,,	२४६	,,
२०, नवग्रह पूजा	×	,,	२५४	,,
२१ क्षेत्रपाल पूजा	×	सस्कृत	२६१	,,
२२. गुरावलि	×	सस्कृत गद्य	२६७	
२३. जिनाभिषेक विधान	सुमतिसागर	,,	२७४	
२४ सप्तर्षि पूजा	सोमदेव	सस्कृत	२८०	,,
२५ पुण्याहवाचन	×	,,	२६२	,,
२६ देवसिद्ध पूजा	आशाधर	,,	२६६	,,
२७ विद्यादेवतार्चन	×	,,	३०७	,,
२८ चतुर्विशति पद्मावती स्थापित पूजा		,,	३३४	,,
२६ जिनसहस्रनाम	जिनसेन	,,	३४३	,,
३० विभिन्न पूजा स्तोत्र	×	,,	३७४	,,
३१· छप्पय	जिनसागर	हिन्दी	३७६	,,
३२. चौबीसी	रत्नचन्द र० काल स० १६७६	,	३८२	,,
३३ लवाकुशषटपद	भ० महीचन्द	,,	३६४	,,
३४. रविव्रत कथा	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी	४१०	,,
३५ पञ्चकल्याण	×	,,	४२०	
३६ अनन्त व्रत कथा	×	हिन्दी	४३१ पत्र पर	
३७. अन्तरीक्ष पार्श्वनाथ स्तवन	×	,,	४६१	,,
३८ माझ्या झूलना	×	,,	४७०	
३६ कवित्त	सुन्दरदास	,,	४८०	
४० भववोध	×			
४१. भगवद् गीता	×		४६६-५६५	

१०३४०. गुटका स० ५८ । पत्रस० ३७७ । आ० ४×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत-प्राकृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३५१-१३३ ।

विशेष— पूजा स्कोत्र पद एव अन्य पाठो का सग्रह है । गुटके मे पूरी सूची दी हुई है ।

१०३४१. गुटका स० ५६ । वेष्टनस० ३५०-१३२ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

१ रत्नत्रय विधान—	काष्टासघी भ० नरेन्द्रसेन ।	सस्कृत ।
२ वृहद्स्नपन विधि—	×	,,
३. गुरु अष्टक —	श्रीभूषण	,,
४ कर्मदहनपूजा —	शुभचन्द्र	,,
५. जलयात्रा विधि —	×	,

६ पल्य विधान	—	×	सस्कृत
७ जिनदत्तरास	—	×	,,

शक सवत् १६२५ सर्वंगति नाम सवत्सरे आषाढ सुदी ८ गुरुवारे लिखित कारजामाहिनगरे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये भट्टारक श्री छत्रसेन गुरूपदेशात् लिखित वाया वाइन लेहविल।

८ लघुस्नपन विधि— ब्र० ज्ञानसागर। सस्कृत।

१०३४२ गुटका स० ६० । पत्र स० × । वेष्टन स० ३३४-१२८।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१. दानशीलतप भावना	—	श्री भूषण	हिन्दी पद्य	ले० काल १७६५
२, आषाढ भूतनी चौपई	—	×	,,	—
३. वैद्यक ग्र थ	—	नयनसुख	,,	ले० काल १८१४
४ सुकौशल रास	—	×	,,	—
५. प्रद्य ुम्नरास	—	×	,,	—

प्रशस्ति—सवत् १८१४ वर्षे शाके १६७९ प्रवर्तमाने मासोत्तम मासे शुभकारीमासे आश्विनमासे शुक्लपक्षे तिथि ५ चद्रवारे श्रीमत् काष्टासघे नन्दितटगच्छे विद्यागणे भ० श्री रामसेनान्वये तदनुक्रमेण भ० श्री सुमतिकीर्ति जी तत्पट्टे आ० श्री रूपसेन जी तत्पट्टे आ० विनयकीर्ति जी तत् शिष्य श्री विजयसागर जी प० केशव जी पडित नाथ जी लिखित।

१०३४३ गुटका स० ६१ । पत्र स० १९६। आ० ८×६ इन्च । भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २९०-११४।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१. श्रेणिक चरित्र	—	डूगा वैद	र० काल स० १६९९ भादवा वदी १३
२ जसोधर चौपई	—	लक्ष्मीदास	
३. सम्यक्त्व कौमुदी	—	जोधराज	
४. जम्बूस्वामी चोपई	—	पाडे जिनदास	र० काल स० १६४२
५. प्रद्य ुम्न कथा	—	ब्र० वेणीदास	,
६ नागश्री कथा	—	किशनसिंह	ले० काल स० १८१९

विशेष—अहिपुर मे प्रतिलिपि हुई।

१०३४४. गुटका सं० ६२ । पत्रस० ३२१। आ० ९×६½ इन्च। भाषा–हिन्दी–सस्कृत। ले० काल—×। पूर्ण। वेष्टनस० २७६–१०८।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१–विनती एव भावनाए—×। हिन्दी

२–पच मगल—रूपचन्द—×। ,,

३–सिंदूर प्रकरण—बनारसीदास। हिन्दी

५–भक्तिबोध—दासद्वैत। गुजराती

६-लघु आदित्यवार कथा—भानुकीर्ति । हिन्दी
७-आदित्यवार कथा—भाऊ हिन्दी ।
८-जखडी—रामकृष्ण । हिन्दी ।
९-जखडी—भूधरदास । हिन्दी ।
१०-ऋषभदेवगीत—रामकृष्ण । हिन्दी ।
११-बनारसी विलास—बनारसीदास । हिन्दी ।
१२-बलिभद्र विनती—× । हिन्दी ।
१३-छन्द—नारायनदास । हिन्दी ।

१०३४५. गुटका सं० ६३ । पत्र स० ३५ । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १७६५ । पूर्ण । वेष्टनस० २७५-१०७ ।

विशेष—देव, बिहारी, केशव आदि की रचनाओ का सग्रह है । गुटका बडा है बारहमासा सुन्दर कवि का भी है ।

१०३४६ गुटका स० ६४ । पत्र स० ४६ । आ० ९×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २२०-८७ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

१-अनुरुद्ध हरण	—	जयसागर ।
२-श्रीपाल दर्शन	—	× ।
३-पद्मावती छद	—	× ।
४-सरस्वती पूजा	—	× ।

१३४७. गुटका स० ६५ । पत्र स० फुटकर । आ० ६$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले० काल—× । अपूर्ण । वेष्टन स० २१३-८६ ।

विशेष—सप्तव्यसन चौपई,आदित्यवार कथा आदि हैं ।

१०३४८ गुटका स० ६६ । पत्रस० ९२ । आ० ७$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेप्टनस० १८०-७५ ।

विशेष—लघु चाणक्य एव आदिनाथ स्तवन और धर्मसार हिन्दी मे है ।

१०३४९. गुटका स० ६७ । पत्र स० १०४ । आ० ८×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १६६-७२ ।

विशेष – निम्न ग्र थ हैं—

१-भाषा भूषण—जसवत सिंह । २०८ पद्य हैं ।
२-सुन्दर श्रृ गार-महाकविराज ।
३-बिहारी सतसई—बिहारीलाल । ले० काल स० १८२८ ।
४-मधुमालती कथा—चतुर्भुजदास । ८७७ छन्द हैं ।

१०३५०. गुटका स० ६८ । पत्रस० २१५ । आ० ८×५$\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल स० १८८६ । वैशाख वदी ४ । पूर्ण । वेष्टनस० १४२-६४ ।

विशेष—इसी वेष्टनस० पर एक गुटका ग्रौर है ।

१०३५१ गुटका सं० ६९ । पत्र स० १४२ । आ० ६$\frac{1}{2}$×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल स० १८७० । पूर्ण । वेष्टनस० १४१-६४ ।

विशेष—निम्न सग्रह है ।

१-नैमित्तिक पूजायें ।

२-मानतु ग मानवती—मोहन विजय । हिन्दी ।

३-साड समछरी—× । स० १८०१ से १८६८ तक का वर्णन है ।

४-ग्रनत व्रत रास—जिनसेन ।

१०३५२. गुटका सं० ७० । पत्र स० फुटकर पत्र । आ० ७$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत । हिन्दी । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टनस० ११२-५४ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

१०३५३. गुटका सं० ७१ । पत्र स० १०० । आ० ६×४$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७२-४२ ।

विशेष—भक्तिपाठ के ग्रतिरिक्त मुख्य निम्न पाठ हैं—

१. ग्रादित्यवार कथा—महीचन्द । हिन्दी । पत्र ७८

महिमा ग्रादित्य व्रत तणोए हवै जगत विख्यात ।
जे कर सी नर नारी एह ते पाये सुख भन्डार ।
मूल सघ महिमा उत्त ग सूरि वादी च द्र ।
गछ नायक तस पटेधर कहे श्री महीचन्द्र ।

२ महापुराण विनती—गगदास । हिन्दी पत्र ६२ ।

१०३५४. गुटका सं० ७२ । पत्रस० १६६ । आ० ६×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । भापा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७-४१ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाग्रो का सग्रह है ।

१०३५५. गुटका सं० ७३ । पत्र स० १३८ । आ० ६$\frac{1}{2}$×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ८-६ ।

विशेष—पूजा पाठ एव स्तोत्र सग्रह है ।

प्राप्ति स्थान—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर

१०३५६. गुटका स० १ । पत्रस० २२३ । भापा-हिन्दी (पद्य) । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ४८३ ।

विशेष—ग्रश्वचिकित्सा सम्बन्धी पूर्ण विवरण है ।

१०३५७. गुटका सं० २ । पत्र स० ७२ । आ० ६×६ इ च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४४१ ।

विशेष—पूजा पाठ तथा विरुदावली है ।

१०३५८. गुटका स० ३ । पत्रस० ६० । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४४० ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ सग्रह है ।

१०३५९ गुटका स० ४ । पत्र स० ७-१२२ । आ० ५×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३७३ ।

विशेष—कबीरदास के पदो का सग्रह है ।

१०३६० गुटका स० ५ । पत्रस० ३० । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ३२६ ।

विशेष—सुभाषित तथा गोम्मटसार चर्चा सग्रह है ।

१०३६१ गुटका सं० ६ । पत्रस० २-२३ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल× । अपूर्ण । वेष्टन स० २५१-६४० ।

विशेष—वैद्य रसायन ग्र थ है ।

१०३६२. गुटका सं० ७ । पत्र स० ४६ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २३० ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

अनत पूजा	ब्र० शातिदास	हिन्दी	—
अनतव्रतरास	ब्र० जिणदास	,,	—

प्रति प्राचीन है ।

१०३६३ गुटका स० ८ । पत्रस० ११३ । आ० ८३/४×५ इ च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२६ ।

विशेष—निम्न पाठो का सग्रह है—

चरचा बासठ	बुधलाल	हिन्दी	स्तवन

विशेष—चौवीस तीर्थंकरो के पचकल्याणक तिथि, महिमा वर्णन, शरीर की ऊचाई वर्णन, शरीर का रग तथा तीर्थंकरो के शासन व उपदेश निरूपण का वर्णन है ।

अन्तिम भाग—

अन्त एकादश पूरब चौदह और प्रज्ञापति पच बखाणं ।
चुनीका पच है प्रथमानुयोग सुभ सिद्धान्त सु एकही जानौ ।।
प्रकीर्णक चौदह कहे जगदीस सवै मिलि सूत्र एकावत मानो ।
ए जिन भापित सूत्र प्रमाण कहे बुधलाल सदाचित आनो ।।६२।।

दोहा

देव शास्त्र गुरु नमी करी ए जिनगुण पुण्य महान ।
मुझ बुधि सूत्रे करी माल गू थि सुखदान ॥१॥
भविजन पावे पहरज्यो एक अपूरव हार ।
यश कीर्ति गुरुनाम करि कहे लाल सुखकार ॥२॥
सवत् ओगसि दश साल मे सुद फागुणना सुभमास ।
दशमिदिन पूरण भया चरचा वासठ भास ॥३॥
पढे सुणे जे भावथी भविजन को सुख कर्ण ।
लाल कहे मुझ भव भव द्यो प्रभु हो जो तुम चरण ॥४॥

इत चरचा वासठि सपूर्ण ।

२	सार सग्रह		सस्कृत		पूर्ण
३	शान्तिहोम विधान	—	उपाध्याय व्योमरस	सस्कृत	—
	अन्तिम पुष्पिका	—	इति श्री उपाध्याय वोमरस विरचिते शाति होम विधान समाप्त		
४	मगलाष्टक	—	भ० यश कीर्ति	सस्कृत	—
५.	वृषभदेव लावणी	—	लाल	हिन्दी	—

(भट्टारक यश कीर्ति के शिष्य लाल)

गुजरात देश मे चोरीवाड नामक स्थान के आदिनाथ की लावणी है ।
उनकी प्रतिष्ठा का सवत् निम्न प्रकार है—

सवत् उणो सा साता वरषे वैशाख मास शुक्लपक्षे ।
पष्ठदिन सिगासण जिनकी प्रतिष्ठा कीधी मनहरपे ॥

इसके अतिरिक्त नित्यनैमित्तिक पूजाओ का सग्रह है ।

चित्र व यंत्र

यंत्र कागज व कपडे पर

✓१०३६४. १-हाथी के चित्र में यंत्र—

विशेष—यह चित्र कागज पर है किन्तु कपडे पर चिपका हुआ है। यह १५ वी शताब्दी की कला का द्योतक है। हाथी काफी बडा है। उस पर देव (इद्र) बैठा है। सामने बच्चे को गोद मे लिये हुए एक देवी है सभव है इन्द्राणी हो। ऐसा लगता है कि भगवान के जन्मोत्सव का हो। चित्र मे लोगो की पगडिया उदयपुरी हैं।

१०३६५. २-पच हनुमान वीर—

विशेष—कपडे पर (२०×२० इच) हाथी, घोडे तथा हनुमानजी का चित्र है।

१०३६६. ३-श्रुत ज्ञान यत्र—

विशेष—भट्टारक हेमचन्द्र का बनाया हुआ यह यत्र कपडे पर है। इसका आकार ३६×४४ इन्च है।

१०३६७. ४-काल यंत्र—

विशेष—यह उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी काल चक्र का यत्र कपडे पर है। इसका आकार २२×२२ है। इस पर स० १७४७ का निम्न लेख है—

सवत् १७४७ भादवा सुदी १५ लिखत तेजपाल सघई अगरवाला गर्गगोति वाचै ज्यानै म्हा को श्री जिनाय नम ।

✓१०३६८. ५—तीन लोक चित्र—

विशेष—यह यत्र ४०×२२ इच के आकार वाले कपडे पर है। यह काफी प्राचीन प्रतीत होता है। इसमे स्वर्ग, नरक तथा मध्यलोक का सचित्र वर्णन है। सभी चित्र १५ वी या १६ वी शताब्दी के हैं।

१०३६९. ६-शातिनाथ यत्र—

विशेष—१२×१२ इच के आकार वाले कपडे पर यह यत्र है।

✓१०३७० ७-अढाई द्वीप मडल रचना—

विशेष—यह ३६×३६ इच आकार वाले कपडे पर है। इसमे तीर्थंकरो तथा देवदेवियो आदि के सैकडो चित्र हैं। चित्र १६ वी शताब्दी की कला के द्योतक हैं तथा श्वेताम्बर परंपरा के पोषक हैं।

✓१०३७१ ८-नेमीश्वर बारात तथा सम्मेदशिखर चित्र—

विशेष—यह ७२×३६ इच के आकार के कपडे पर है। इसमे गिरनार तथा सम्मेदाचल तीर्थ वहा के मदिरो तथा यात्रियो आदि के चित्र हैं। चित्र-कला प्राचीन है।

प्राप्ति स्थान-(संभवनाथ मंदिर उदयपुर)

अवशिष्ट रचनायें

१०३७२. अठारह नाता का गीत—शुभचन्द्र। पत्रस० ६। आ० ११×५ इञ्च। भापा—हिन्दी पद्य। विषय—कथा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३१८। **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

१०३७३. अथर्वणवेद प्रकरण—×। पत्र स० ५६। आ० १०½×४½ इञ्च। भापा—सस्कृत। विषय—वैद्धिक साहित्य। र०काल ×। ले०काल स० १८४४ भादवा वुदी १। पूर्ण। वेष्टन स० ६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक।

विशेष—आचार्य विजयकीर्ति ने नन्दग्राम मे प्रतिलिपि की थी।

१०३७४. अनाश्व कर्मनुपादान—×। पत्रस० २। आ० ११×४ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—सिद्धान्त। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ५७। **प्राप्ति स्थान**—खडेलवाल दि० जैन मदिर उदयपुर।

१०३७५. आदीश्वर फाग—भट्टारक ज्ञानभूषण। पत्र स० ३६। आ० १०½×४½ इञ्च। भापा—सस्कृत—हिन्दी। विषय—फागु काव्य। र०काल ×। ले० काल स० १५८७ आपाढ सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन स० १६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—भ० शुभचन्द्र के शिष्य विद्यासागर के पठनार्थ लिखा गया था।

१०३७६. आत्मावलोकन स्तोत्र—दीपचन्द। पत्र स० ६६। आ० ११×६½ इञ्च। भापा—हिन्दी पद्य। विषय—अध्यात्म। र०काल ×। ले० काल स० १८६०। पूर्ण। वेष्टन स० ५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा।

विशेष—इसका दूसरा नाम दर्पण दर्शन भी दिया है। श्री हनूलाल तेरहपथी ने माधोपुर निवासी ब्राह्मण भोपत से प्रतिलिपि करवाकर दौसा के मन्दिर मे रखी थी।

१०३७७. आदिनाथ देशनाद्वार—×। पत्र स० ५। आ० १०×४ इञ्च। भापा—प्राकृत। विषय—सिद्धान्त। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० १४१४। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—भगवान आदिनाथ के उपदेशो का सार है।

१०३७८ इष्टोपदेश—पूज्यपाद। पत्र स० ४। आ० १०×५ इञ्च। भापा—सस्कृत। विपय अध्यात्म। र०काल ×। ले०काल स० १६४७। पूर्ण। वेष्टन स० ७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी।

१०३७९. उज्झर भाष्य—जयन्त भट्ट। पत्र स० ३६। आ० ×। भाषा सस्कृत। विपय—सिद्धान्त। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ७०४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर।

विशेष—इति श्री मज्जयन्त भट्ट विरचिते वादि घटमुझर वृदन्त समाप्तमिति।

१०३८०. उपदेश रत्नमाला—सकलभूषण । पत्रस० ११७ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सुभापित । र०काल-स० १६२७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

१०३८१. उपदेश रत्नमाला—धर्मदास गणि । पत्र स० १३ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-अपभ्र श । विषय-सुभापित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७३३ । **प्राप्ति—स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०३८२. प्रतिसं० २ । पत्रस० २ से २३ । आ० १०×४½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । प्रथम पत्र नही है ।

१०३८३. प्रतिसं० ३ । पत्र स० २३ । आ० ११¾×४¼इञ्च । ले०काल स० १५९७ आपाढ सुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन स० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन आदिनाथ मन्दिर बू दी ।

विशेष—योगिनीपुर (दिल्ली) मे लिखा गया था ।

१०३८४. प्रतिसं० ४ । पत्र स० १० । आ० ९½×४½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन आदिनाथ मन्दिर बू दी ।

१०३८५ उपदेश सिद्धान्त रत्नमाला भाषा—भागचन्द । पत्रस० ४० । आ० ११×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विपय-सुभाषित । र०काल स० १९१४ माघ बुदी १३ । ले०काल स० १९४५ । पूर्ण । वेष्टनस० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष—म्होरीलाल भौंसा ने चोरू मे प्रतिलिपि की थी ।

र०काल निम्न प्रकार और मिलता है ।

दि० जैन तेरहपथी मन्दिर जयपुर स० १९१२ ।

दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा स० १९२२ आषाढ बुदी ६ ।

१०३८६. प्रतिस० २ । पत्र स० २६ । आ० १२×७½ इञ्च । ले० काल स० १९५७ । पूर्ण । वेष्टनस० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा ।

१०३८७. उपदेशसिद्धान्त रत्नमाला—× । पत्रस० ४० । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

१०३८८ प्रतिसं० २ । पत्र स० ४३ । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६१/१८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर अलवर ।

१०३८९. ऋषिपंचमो उद्यापन-× । पत्र स० १० । आ० १०¾×४½ इञ्च । भाषा सस्कृत । विपय-वैदिक साहित्य । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११०६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०३९०. कृष्ण युधिष्ठिर संवाद— < । पत्र स० १६ । ग्रा० १०×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय–वार्ता (कथा) । र०काल × । ले०काल स० १७८४ । पूर्ण । वेष्टन म० १२० । । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर दबलाना (बू दी) ।

विशेष—चि० सदासुख ने प्रतिलिपि की थी । पत्र दीमको ने खा रखा है ।

१०३९१. कृष्ण रुक्मणि वेलि—पृथ्वीराज (कल्याणमल के पुत्र) । पत्रम० २-१६ । ग्रा० ९×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-काव्य । र०काल × । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टनस० १२६ । **प्राप्ति स्थान—**भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—पद्य स० ३०८ हैं ।

१०३९२ प्रतिसं० २ । पत्र स० २३ । ग्रा० १०×४ इञ्च । ले०काल स० १७३४ । पूर्ण । वेष्टनस० १०६ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर दबलाना बू दी ।

विशेष—श्री रग विमल शिशुदान मिल लिखत स० १७३४ ई टडिया मध्ये ।

१०३९३. कर्णामृत पुराण–भट्टारक विजयकीर्ति । पत्र स० ४१ । ग्रा० १२×६½ इञ्च । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–पुराण । र०काल स० १८२६ काती बुदी १२ । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ५८ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा ।

विशेष—भगवान आदिनाथ के पूर्व भवो की कई कथाए दी हैं ।

१०३९४. कलजुगरास—ठक्कुरसी कवि । पत्र स० २१ । ग्रा० ९×५ इञ्च । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय–विविध । र०काल स० १८०८ । ले० काल स० १८३९ द्वि ज्येष्ठ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १७/११ । **प्राप्ति स्थान—**दि जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—ग्रन्थ का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—

वीतराग जति नमु वदु गुर के पाय ।
मनिप जन्म वह दोहिला गुरू भाख्यो चितलाय ।
साध ऋषि स्वर आगै भाषिया कलजुग एसा आवै ।
साध ऋषिस्वर साच तो बोलिया ठाकुरसी ऋपि गावै ।
प्राणी कुडाररे कलजुग आया ।।
नग्र देखियो गाव सरीखा उजर वास वसाया ।
राज हुआ बाजम सारिखा भजा तो दुख पाया रे ।।३।।

अन्तिम—

सवत् अठारसै आठ वरसै जुजु वारसैहर भक्ता रै ।
तिथ बारस मगलवार सावण सुद जग सार रे ।
प्राणी कुडार के कलजुग आया ।।
पाखडि की बहुत जो पूजा साध देख दुख पावै ।
ठाकुरसी ऋपि साची भाखै चतुर नार चित आवै ।।३।।

१०३९५. कलियुग की विनती—देवा ब्रह्म । पत्र स० ६ । आ० ५×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय–विविध । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर (जयपुर) ।

१०३९६. कल्पद्रुम कलिका-× । पत्रस० १८० । भाषा-सस्कृत । विषय–विविध । र०काल ले०काल स० १८८२ । पूर्ण । वेष्टनस० ७४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०३९७. कल्पसूत्र बखाण · ·· ···· । पत्र स० १५७ । भाषा-हिन्दी । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६१८, ६१९, ६२०, ७४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—कल्पसूत्र चतुर्थ, पचम एव सप्तम २ वेष्टनो मे है ।

१०३९८. कल्याणमाला—पं० आशाधर । पत्रस० ४ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—विविध । र०काल—× । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४२-१५८ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह टोक ।

विशेष—तीर्थंकरो के कल्याणक की तिथियाँ दी हुई हैं ।

१०३९९. कवरपाल बत्तीसी—कवरपाल । पत्र स० ५ । आ० १०½×४½ इच । भाषा-हिन्दी । विषय–धर्म । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

१०४००. कविकाव्य नाम—× । पत्र स० ३-१४ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—सुलि । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१५/६५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सभवनाथ उदयपुर ।

१०४०१. कविकाव्य नाम गर्मचक्रवृत्त—× । पत्र स० १६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—स्तुति । र०काल × । ले० काल स० १६९८ । पूर्ण । वेष्टन स० १५५/२४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सभवनाथ उदयपुर ।

विशेष—कुल ११६ श्लोक हैं । प्रति सस्कृत टीका सहित है । ११६ श्लोको के आगे लिखा है—कवि काव्य नाम गर्म चक्र वृत्त । ७ चक्र नीचे दिये हुए हैं । टीका के अत मे निम्न प्रशस्ति है—

सवत् १६९८ वर्षे ज्येष्ट सुदी २ शनौ जिनशतका ख्यालकृते स्वज्ञानावर्णी कर्मक्षयार्थं पडित सहस्र वीराख्येण स्वहस्ताभ्यालिखिता ।

टीका का नाम जिनशतका ख्यालवृति है ।

१०४०२. कवि रहस्य-इलायुध । पत्रस० ४ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१०४०३ कार्त्तिक महात्म्य—× । पत्रस० ३७ । आ० १०×५¾ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय-वैदिक साहित्य । र०काल—× । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

विशेष—३७ से आगे पत्र नही है ।

१०४०४. काली तत्व—× । पत्रस० ८१ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा एव यत्र शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

१०४०५. क्षेत्र गणित टीका—× । पत्रस० १८ । आ० १०½×६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—गणित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । अ त मे निम्न प्रकार लिखा है—

"इति उत्तर क्षेत्री टीका सपूर्ण"

१०४०६. क्षेत्र गणित टीका—× । पत्र स० २१ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—गणित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रेवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—इसका नाम उत्तर छत्तीसी टीका भी है । भट्टारक श्री विजयकीर्ति जित् ब्रह्म नारायण दत्तमुत्तरछत्तीसी टीका ।

✓**१०४०७. क्षेत्र गणित व्यवहार फल सहित**—× । पत्र स० १४ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—गणित शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५२ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—प्रति रेखा चित्रो सहित है ।

१०४०८ क्षीरार्णव—विश्वकर्मा । पत्रस० ४१ । आ० ८½×६½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—शिल्प शास्त्र । र०काल—× । ले० काल स० १६५३ । पूर्ण । वेष्टनस० ४-२ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन म दिर कोटडियो का डू गरपुर ।

विशेष—इति श्री विश्वकर्माकृते क्षीरार्णवे नारद पृच्छते शतागुण एकोनविंशोऽध्याय ।। १६।। सपूर्ण । सवत् १६५३ वर्षे कार्तिक सुदी ११ रवौ लिखित दशोश ब्राह्मण ज्ञाति व्यास पुरुषोत्तमेन हस्ताक्षर नग्र डू गरपुर मध्ये शुभ भवतु ।

१०४०९. खण्ड प्रशस्ति—× । पत्रस० ३ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-स स्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१०४१०. खंड प्रशस्ति श्लोक—× । पत्रस० २-४ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-काव्य । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० २५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन म दिर बोरसली कोटा ।

१०४११ गगड प्रायश्चित—× । पत्र स० १५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-आचार शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन म दिर बोरसली कोटा ।

१०४१२. **गणितनाममाला—हरिदत्त। (श्रीपति के पुत्र)**— पत्र स० ५। आ० ११×४ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—गणित। र० काल ×। ले० काल स० १७३४। पूर्ण। वेष्टन स० ४७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

प्रारम्भ—

गणितस्य नाममाला वक्ष्ये गुरु प्रसादत

वालाना सुखवोधाय हरिदत्तो द्विजाग्रणी।

अन्तिम—

श्री श्रीपतिसुनेनैते बालाना वुद्धिवृद्धये।

गणितस्य नाममाला प्रोक्त गुरुप्रसादत ।

१०४१३ **गणितनाममाला**—×। पत्रस० १०। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—गणित शास्त्र। र० काल ×। ले०काल स० १६०८ मगसिर सुदी १। पूर्ण। वेष्टनस० १४०६। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर।

१०४१४ **गणितनाममाला**—×। पत्रस० ३। आ० १०×४½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—गणित। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० १०१७। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

१०४१५ **गणित शास्त्र**—×। पत्र स० २६। आ० ६×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-गणित। र० काल ×। ले०काल स० १५५०। अपूर्ण। वेष्टनस० ४७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ म दिर उदयपुर।

विशेष—सवत् १५५० वर्षे श्रावण बुदी ३ गुरौ अद्येह कोट नगरे वास्तव्य सूत्रा देवा सुत कान्हादे भ्रातृणा पठनार्थं लिखितमया।

निमित्त शास्त्र भी है। अ त मे है—

इति गणित शास्त्रे शोर छाया तलहण समाप्त।

१०४१६. **गणित शास्त्र**—×। पत्र स० फुटकर। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय—गणित। र० काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टनस० ३२०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल म दिर उदयपुर।

१०४१७. **गणितसार—हेमराज**। पत्रस० ५। आ० ११¾×४¾ इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय—गणित। र० काल ×। ले०काल स० १७८४ जेष्ठ सुदी ६। पूर्ण। वेष्टनस० १६२। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूदी।

१०४१८. **गणितसार सग्रह—महावीराचार्य**। पत्रस० ५३। आ० ११×७ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-गणित। र० काल ×। ले०काल स० १७०५ श्रावण सुदी २। पूर्ण। वेष्टन स० ×। **प्राप्ति स्थान**—खडेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

१०४१६ **प्रति स० २**। पत्रस० ३६। आ० १२½×५½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। ले० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेप्टन स० १४८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर।

१०४२०. गाथा लक्षण × । पत्रस० १-८ । आ० १२×४½ । भाषा-प्राकृत । विषय-लक्षण ग्रंथ । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा संस्कृत टीका सहित है ।

१०४२१. गोत्रिरात्रव्रतोद्यापन—× । पत्र स० ७ । आ० १०×४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—वैदिक साहित्य । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७२७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०४२२. ग्रहणराहुप्रकरण—× । पत्र स० ४ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७०४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०४२३. चन्द्रोमीलन—मधुसूदन । पत्र स० ३२ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—इसका दूसरा नाम शिष्य निर्णय प्रकरण तथा शिष्य परीक्षा प्रकरण भी है । चन्द्रोन्मीलन जैन ग्रंथ से उद्धृत है । प्रारम्भ मे चन्द्रप्रभ भगवान एव सरस्वती को नमस्कार किया है ।

अन्तिम—

लष्यपादमहाज्ञान स्वय जैनेन्द्रभाषित ।
चन्द्रोन्मीलनक शास्त्र तस्म मध्यान्मयो घृत ॥
रुद्रेण भाषित पूर्वं ब्राह्मणा मधु सूदने ।
न च दृष्ट मया ज्ञान भाषित च अनोकसा १० ।
एतत् ज्ञान महाज्ञान सर्व ज्ञानेषु चोत्तम ।
गोपितव्य प्रजन्तेन त्रिदशौ रपि दुर्लभ ॥

इति चन्द्रोन्मीलने शास्त्रार्णव विनर्गतिषु शिष्य निर्णय प्रकरण ।
प्रस्तुत ग्रंथ मे शिष्य किसे, कब और कैसे बनाया जाय इसका पूर्ण विवरण है ।
प्रति प्रचीन है ।

१०४२४. चरणव्यूह—वेदव्यास । पत्रस० ४ । आ० ६¾×४¾ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-वैदिक साहित्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १०४७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०४२५. चेतन कर्म सवाद—भैया भगवतीदास । पत्रस० २१ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-रुपक काव्य । र०काल स० १७३२ ज्येष्ठ बुदी ७ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बूंदी ।

१०४२६. प्रतिसं० २ । पत्रस० ५६ । ले०काल स० १६३६ । पूर्ण । वेष्टनस० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

१०४२७. **प्रतिसं० ३** । पत्रस० ५६ । ले०काल स० १६३६ । पूर्ण । वेष्टन स० १४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी वसवा ।

१०४२८. **प्रति सं० ४** । पत्रस० १६ । आ० १३½×४ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

१०४२९. **चेतनगारी—विनोदीलाल** । पत्रस० १५ । आ० ६×४ इञ्च । भापा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । र०काल स० १७४३ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

१०४३०. **चेतन गीत**—× । पत्रस० १ । आ० १०½×४½ इञ्च । भापा-हिन्दी पद्य । विषय-अध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २११-८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

१०४३१ **चेतन पुद्गल धमाल—बूचराज** । पत्र स० १८ । आ० ५½×४½ इञ्च । भापा-हिन्दी । विषय—रूपककाल । र०काल × । ले० काल स० १६२६ । पूर्ण । वेष्टनस० ८८६ । **प्राप्ति-प्राप्ति**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—आ० भानुकीर्ति के शिष्य मु० विजयकीर्ति ने लिखा था ।

गुटके मे सग्रहित है ।

१०४३२. **चेतन मोहराज सवाद—खेमसागर** । पत्र स० ४६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—रूपक कथा र०काल × । ले०काल स० १७३७ । अपूर्ण । वेष्टनस० ३५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—भीलोडा नगर मे शातिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई ।

१०४३३. **चौढाल्यो—भृगु प्रोहित** । पत्र स० ३ । आ० ६½×४½ इञ्च । भापा-हिन्दी पद्य । विषय—स्फुट । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ३११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना बूदी ।

१०४३४. **चौदह विद्यानाम** × । पत्र स० १ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विपय-लक्षण ग्रन्थ । ले०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—चौदह विद्याओ का नाम कवित्त दोहा तथा गोरोचन छन्द (कल्प) दिया हुआ है ।

१०४३५ **चौबीस तीर्थंकर पूजा—वृन्दावन** । पत्र स० ८५ । आ० ११×६ इञ्च । भापा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । ले०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५३-६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूगरपुर ।

१०४३६. **प्रतिसं० २** । पत्रस० ६५ । आ० १३×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २२४-६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

१०४३७. **छेदपिंड**—पत्रस० ४ । आ० १३×३ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । ले०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० ७० । **प्राप्ति स्थान**—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर

✓१०४३८ **जम्बूद्वीप पट**—× । पत्रस० १ । आ० × । वेष्टनस० २७४-१०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर डूंगरपुर ।

विशेष—जबूद्वीप का नक्शा है ।

१०४३६. **जिनगुण विलास—नथमल** । पत्र स० ६१ । आ० ७½×१०½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—स्तवन । र०काल स० १८२२ आषाढ बुदी १० । ले० काल स० १८२२ आषाढ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० २६/१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगाणी मदिर करौली ।

विशेष—५२ पत्र से भक्तामर स्तोत्र हिन्दी मे है ।

साह श्री खुशालचन्द के पुत्र रतनचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

१०४४० **प्रतिसं० २** । पत्र स० ५६ । आ० १२½×६ इञ्च । ले०काल स० १८२३ काती सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनस० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—सवाई राम पाटनी ने भरतपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

१०४४१ **प्रतिसं० ३** । पत्रस० ६५ । आ० ११×५½ इञ्च । ले०काल स० १८२३ भादवा बुदी १५ । पूर्ण । वेष्टनस० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष—नौनिधिराम ने आसाराम के पास प्रतिलिपि करवायी थी ।

१०४४२ **प्रतिसं० ४** । पत्र स० ८६ । आ० ८¾×६ इञ्च । ले०काल स० १८२२ भादवा सुदी १२ । वेष्टनस० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

विशेष—दोदराज ने करौली नगर मे लिखवाया था ।

१०४४३. **जिनप्रतिमास्वरूप वर्णन—छीतर काला** । पत्रस० ३८ । आ० १२½×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—लक्षण । र०काल स० १६२४ वैशाख सुदी ३ । ले०काल स० १६४५ वैशाख सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० १४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष—छीतर काला अजमेर के रहने वाले थे । आजीविका वश इन्दौर आये वही १६२५ मे ग्रथ को पूर्ण किया ।

सहर वास अजमेर मे तहा एक सरावग जान ।
नाम तास छीतर कहे गोत्र ज कालो मान ।
कोई दिन वहा सुख सो रह्यो फेर कोई कारण पाय ।
नमत काम आजीविका सहर इन्दौर मे आय ।

× × ×

अन्तिम—

नगर सहर इन्दौर मे सुद्धि सहसि होय ।
तहा जिन मन्दिर के विषै पूरो कीनो सोय ।

स० १६२३ सावन सुदी १५ को इन्दौर आये । और स० १६२४ मे ग्रथ रचना प्रारम्भ कर स० १६२५ वैशाख सुदी ३ को समाप्त किया ।

छोगालाल लुहाडिया आकोदा वालो ने इन्दौर मे प्रतिलिपि की थी ।

१०४४४ प्रतिसं० २ । पत्रस० ४६ । श्रा० ११ × ६½ इन्च । ले०काल स० १६६० । पूर्ण । वेष्टनस० ४०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

१०४४५. जिनविम्वनिर्माण विधि— × । पत्र स० ५७ । श्रा० ६½×३½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय—विंब निर्माण शिल्प शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६१४ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—गुटका साइज है ।

१०४४६. जिनबिम्व निर्माण विधि —× । पत्रस० ११ । श्रा० १३ × ४¾ इन्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय—शिल्प शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १६४५ । पूर्ण । वेष्टनस० ११३ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मदिर श्री महावीर बू दी ।

१०४४७. जिनबिम्ब निर्माण विधि—× । पत्रस० १० । श्रा० १२×५½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय—शिल्प शास्त्र । र०काल × । ले०काल × ।पूर्ण । वेष्टनस० २०-१६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर भादवा ।

१०४४८. जिनशतिका—× । पत्रस० १६ । श्रा० १२ × ५½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—लक्षण ग्र थ । र०काल × । ले०काल × । वेष्टनस० ६६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर, जयपुर ।

विशेष—अ त मे इति श्री जिनशतिकाया हस्त वर्णन द्वितीय परिदाय चूर्ण ।।२।।

१०४४६ जीभदांत-नासिका-नयनकर्णसवाद—नारायण मुनि । पत्रस० २ । श्रा० १०×५ इन्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—सवाद । र०काल × । ले० काल स० १७८१ आसोज बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० ५३५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

१०४५०. प्रतिस० २ । पत्रस० २ । श्रा० १०×४ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

१०४५१. ज्ञानभास्कर—× । पत्र स० २६ । श्रा० १२×४ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—वैदिक शास्त्र । र०काल × । ले० काल स० १६८५ । पूर्ण । वेष्टनस० ३४५ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—इति श्री ज्ञानभास्करे कर्मविपाके सूर्य्यारुणसवादे कालनिर्णयो नाम प्रथम प्रकरण । स० १६८५ वर्षे चैत सुदी ७ सोमे महेषेण लेखि ।

१०४५२ ज्ञानस्वरोदय—चरनदास । पत्रस० ४३ । श्रा० ५×३½ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-उपदेश । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी (बू दी) ।

१०४५३. ढाढसी गाथा-× । पत्रस० २ । श्रा० १०½×४¾ इन्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल १८२१, भादवा बुदी ११ । वेष्टनस० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर (जयपुर) ।

विशेष—प० सुखराम के लिये लिखा था ।

१०४५४. **णमोकार महात्म्य**—× । पत्र स० ५ । आ० ८३/४×४१/४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तवन । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ४२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर (जयपुर) ।

१०४५५. **तत्वज्ञान तरगिणी—ज्ञानभूषण** । पत्र स० ८३ । आ० १२१/४×६३/४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल स० १५६० । ले० काल स० १८४६ आसोज बुदी १ । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—अन्त मे निम्न प्रकार लिखा है—

भागचन्द सोनी की वीदणी के असाध्य समय चढाया । १६८५ चैत बुदी १२ ।

१०४५६. **तत्वसार—देवसेन** । पत्र स० १२ । आ० १०१/२×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—आचार्य नेमिचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

१०४५७. **तत्वार्थ सूत्र—उमास्वामि** । पत्र स० १३ । आ० ६१/२×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल स० १६६५ । वेष्टन स० ६५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर (जयपुर) ।

१०४५८. **तत्वार्थ सूत्र भाषा-पं० सदासुख कासलीवाल** । पत्र स० १७७ । आ० १०१/२×५१/२ इञ्च । भाषा-राजस्थानी (ढू ढारी-गद्य) । विषय-सिद्धान्त । र०काल स० १६१० फागुण बुदी १० । ले०काल स० १६५२ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी) ।

१०४५६. **तम्बाखू सज्झाय-आणद ऋषि** । पत्र स० १ । आ० ६१/२×४१/४ इञ्च । भाषा-हिन्दी (प०) । । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी) ।

१०४६०. **तोस चौबीसी पूजा—सूर्यमल** । पत्र स० १६ । आ० १११/२×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २७१-१०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

१०४६१ **दज्जिवणिया**—× । पत्र स० ६ । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ४८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०४६२ **दस अंगो की नामावली**—× । पत्र स० ६ । आ० ६१/२×४१/२ इञ्च । भाषा--हिन्दी । विषय-आगम । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०४६३. **दशचिन्तामणि प्रकरण**—× । पत्र स० ११ । भाषा-प्राकृत । विषय-विविध । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०४६४ **दश प्रकार ब्राह्मण विचार** × । पत्रस० १ । ग्रा० ११×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ८२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०४६५. **दातासूम सवाद** × । पत्रस० २१ । ग्रा० १२×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सवाद । र०काल × । ले०काल स० १६४८ ग्राषाढ बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—जीर्ण एव फटा हुग्रा है ।

१०४६६. **दिशानुवाई**—× । पत्रस० १ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४१४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

विशेष—ढाणाग सूत्र के ग्राधार पर है ।

१०४६७. **दिसानुवाई**—× । पत्रस० १ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-फुटकर । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना बू दी ।

१०४६८. **दूरियरय समीर स्तोत्र वृति—समय सुन्दर उपाध्याय** । पत्र स० १४ । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल १८७६ । पूर्ण । वेष्टनस० ५६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०४६९. **देवागम स्तोत्र—समतभद्राचार्य** । पत्र स० ५ । ग्रा० १३×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र एव दर्शन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४२८-४३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सभवनाथ उदयपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१०४७०. **प्रतिसं० २** । पत्रस० १२ । ग्रा० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ग्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—इसका नाम ग्राप्तमीमासा भी है । प्रति प्राचीन है ।

१०४७१. **प्रतिसं० ३** । पत्रस० ८ । ग्रा० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०५-२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा) ।

१०४७२. **प्रतिस० ४** । पत्र स० ८ । ग्रा० ११×५ इञ्च । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ (कोटा) ।

१०४७३. **प्रतिसं० ५** । पत्र स० ५ । ग्रा० १०¾×५⅞ इञ्च । ले०काल स० १८७७ । पूर्ण । वेष्टन स० १२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ग्रग्रवाल पचायती मन्दिर ग्रलवर ।

१०४७४ **प्रतिसं० ६** । पत्रस० ८ । ग्रा० १०×४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रभिनन्दन स्वामी बू दी ।

१०४७५. प्रतिसं० ७। पत्रस० ५। आ० ६½×५ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टनस० ६७। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

१०४७६. देवागम स्तोत्र वृत्ति—आचार्य वसुनंदि। पत्रस० ४३। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—न्याय। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४७५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर।

१०४७७. प्रतिसं० २। पत्रस० २५। आ० ११×५ इञ्च। ले०काल स० १८५३ कार्तिक सुदी ७। पूर्ण। वेष्टनस० १३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—जयपुर मे सवाई राम गोधा ने प्रतिलिपि की थी।

१०४७८ द्वादशनाम—शकराचार्य। पत्रस० ५। आ० ८×३ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय-वैदिक साहित्य। र० काल ×। ले०कालस० १८३४ सावरा बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० २५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ कोटा।

✓**१०४७९. द्वासप्तति कला काव्य —×**। पत्रस० २। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-लक्षण ग्रथ। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण वेष्टन स० ६३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर।

विशेष—पुरुप की ७२ कला एव स्त्री की चौसठ कलाओ का नाम है।

१०४८० धर्मपाप सवाद—विजयकीर्ति। पत्रस० ५६। आ० ६½×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-चर्चा। र० काल स० १८२७ मगसिर सुदी १४। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १५६५। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

१०४८१ धर्म प्रवृत्ति (पाशुपत सूत्राणि) नारायण—×। पत्रस० १२३। आ० ११×४½ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-वैदिक साहित्य। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ११०३। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

१०४८२. धर्मयुधिष्ठिर संवाद—×। पत्रस० १४। आ० ९×५½ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय—महाभारत (इतिहास)। र० काल ×। ले०काल स० १७९४। पूर्ण। वेष्टन स० १२७। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—महाभारते शत सहस्रगीताया। अश्वमेघ यज्ञ धर्मयुधिष्ठर सवादे॥

१०४८३. धातु परीक्षा—×। पत्रस० १३। भाषा—सस्कृत। विषय-लक्षण ग्रथ। र० काल ×। ले०काल ×। अपूर्ण। वेष्टन स ६२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

१०४८४. ध्रु चरित्र—×। पत्रस० ४६। आ० ५½×४½ इञ्च। भापा—हिन्दी। विषय—चरित काव्य। र० काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ९२२। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—इसमे २०० पद्य हैं।

१०४८५. नलोदय काव्य—× । पत्रस० २० । श्रा० १०$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ । भाषा-सस्कृत । विषय काव्य । र०काल × । ले०काल स० १७१६ वैशाख सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ६१५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—नलदमयती कथा है ।

१०४८६ नवपद फेरी—× । पत्रस० ६ । भाषा-सस्कृत । विषय विविध । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०४८७ नवरत्न कवित्त—× । पत्रस० १ । श्रा० १२×७$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-विविध । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ५३१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०४८८ नवरत्न काव्य—× । पत्रस० २ । श्रा० १०×४$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा-सस्कृत विषय-काव्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०४८९ प्रतिस० २ । पत्रस० १ । श्रा० १०×४$\frac{1}{2}$ इन्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २६२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०४९०. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १ । श्रा० ११×५ इन्च । ले०काल × । वेष्टन स० २६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१०४९१. नारचन्द्र ज्योतिष ग्र थ—नारचन्द्र । पत्रस० २४ । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल स १७८६ माह बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर (वसवा)

विशेष—हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है । केलवा नगर मे मुनि सोभाग्यमल ने प्रतिलिपि की थी ।

१०४९२. नारदीय पुराण—× । पत्रस० ३० । श्रा० ६$\frac{1}{2}$×५$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-वैदिक-साहित्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बू दी ।

१०४९३. नित्य पूजा पाठ सग्रह—× । पत्रस० १६ । श्रा० १०$\frac{1}{2}$×५ इन्च । भाषा सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी)

१०४९४. निर्वाण काण्ड भाषा—भैया भगवतीदास । पत्रस० ४ । श्रा० ८$\frac{1}{2}$×४$\frac{1}{2}$ इन्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-स्तवन, इतिहास । र०काल स० १७४१ । ले०काल स० १९५० पौष सुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० १५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर अलवर ।

विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरो मे लिखी हुई है । मु शी रिसकलालजी ने लिखवाकर प्रति विराजमान की थी ।

१०४९५ निर्वाण काण्ड गाथा—× । पत्रस० २ । श्रा० १०×५ इन्च । भाषा-प्राकृत । विषय-इतिहास । र०काल × । ले०काल स० १८२७ । पूर्ण । वेष्टन स० ५८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०४९६. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ३ । आ० १२×५½ इञ्च । ले०काल सं० १९६२ आसोज बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०४९७. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० २-३ । आ० १०¾×५ इञ्च । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०४९८. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० ३ । आ० १०½×४¾ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०४९९. प्रतिसं० ५ । पत्रसं० २५ । आ० १०×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

१०५०० नेमिराजमती शतक—लावण्य समय । पत्रसं० ४ । भाषा-हिन्दी । विषय-फुटकर । र०काल सं० १५६४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ५५/६४१ ।

विशेष – अन्तिम भाग निम्न प्रकार है -

हम वीर हम वीर इम चलइउ रासी
मुनि लावण्य समय इमावलि हमवि हर्ष इवासी रे ।।
सवत् पनरचउसठि इरे गायउ नामिकुमार ।
मुनि लावण्य समइ इमा वालिइ वरतिउ जय जयकार ।

इति श्री नेमिनाथ राजमती शतक समाप्त ।

१०५०१. नेमिराजुल बारहमासा—विनोदीलाल । पत्रसं० २ । आ० १०¼×४¼ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-वियोग शृंगार । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष - नेमिनाथ द्वारा तोरण द्वार से मुंह मोडकर चले जाने एवं दीक्षा धारण कर लेने पर राजुलमती एवं नेमिनाथ का बारहमासा का रोचक संवाद रूप वर्णन है ।

१०५०२ प्रतिसं० २ । पत्रसं० २ । आ० ९×४ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४१ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूंदी)

१०५०३ पंच कल्याणक फाग—ज्ञानभूषण । पत्रसं० २-२६ । आ० १०½×४¼ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । विषय-स्तवन । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ४९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

१०५०४. पञ्च कल्याणक गीत—× । पत्रसं० ८ । आ० ८×६½ इञ्च । भाषा-हिन्दी प० । विषय-गीत । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३३९-१३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

१०५०५ पंचदल अंक पत्र विधान—× । पत्रसं० १ । आ० १२½×५½ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-वैदिक । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २७५ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष—शिव ताडव से उद्धृत ।

१०५०६. पचमी शतक पद— × । पत्रस० १ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विविध । र० काल × । ले०काल स० १४६१ सावण सुदी १० । पूर्ण । वेष्टनस० १८०-१५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

विशेष-। अग्रवालान्वये प० फरेण लिखापित गोपाश्चलदुर्गे गोलाराटान्वये प० खेमराज । तस्यपुत्र प० हरिगण लिखित ।

१०५०७ पचम कर्मग्रंथ—× । पत्रस० १६ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सिद्धात । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

१०५०८. पच लब्धि—× । पत्रस० ५ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल× । ले०काल× । अपूर्ण । वेष्टन स० १८२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

१०५०९. पचेन्द्रिय सवाद—भैय्या भगवतीदास । पत्रस० ४ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-वाद-विवाद । र०काल स० १७५१ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैन मन्दिर दबलाना (बूदी)

विशेष—१५२ पद्य हैं ।

१०५१०. पचेन्द्रिय सवाद—यश कीर्ति सूरि । पत्रस० १४ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-पाचो इन्द्रियो का वाद विवाद है । र०काल स० १८६० चैत सुदी २ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६७-२५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

१०५११ पज्जुण्ण कहा (प्रद्युम्न कथा)—महाकवि सिंह । पत्रस० ३६ । आ० १०४×४½ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल स० १५४८ कार्तिक बुदी १ । वेष्टनस० १६६ । प्रशस्ति अच्छी है । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

१०५१२. प्रति स० २ । पत्रस० ६४ । आ० ११½×४ इञ्च । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी बूदी ।

१०५१३. पद स्थापना विधि—जिनदत्त सूरि । पत्र स० २ । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले०काल स० १८५७ । पूर्ण । वेष्टनस० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

१०५१४. पद्मनदि पर्चाविशति भाषा—मन्नालाल खिन्दूका । पत्रस० २०६ । आ० १३×८½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-आचार शास्त्र । र० काल स० १९१५ । ले० काल स० १९३५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—खडेलवाल दि० जैन मदिर उदयपुर ।

१०५१५ परदेशीमतिबोध—ज्ञानचन्द । पत्र स० २१ । भाषा-हिन्दी । विषय-उपदेशात्मक । र० काल × । ले० काल स० १७८६ कार्तिक वदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० १५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—वैराठ शहर मे लिखवाई थी ।

१०५१६. परमहस कथा चौपई—ब्र० रायमल्ल । पत्रस० ३० । आ० ६×५½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-रुपक काव्य । र०काल स० १६३६ ज्येष्ठ बुदी १३ । ले०काल स० १७६४ ज्येष्ठ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० ६०४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—गुटका आकार मे है ।

१०५१७. प्रति स० २ । पत्र स० ३६ । आ० १२×५ इञ्च । ले० काल स० १८४४ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बडा बीस पथी दौसा ।

विशेष—प्रशस्ति मे तक्षकगढ का वर्णन है । राजा जगन्नाथ के शासन काल मे स० १५३५ मे पार्श्वनाथ मदिर था । ऐसा उल्लेख है ।

पडित दयाचद ने सारोला मे ब्रह्मजी शिवसागर जी के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१०५१८. पल्य विचार × । पत्रस० ६ । आ० ८½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्फुट । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १४६-२७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—बाईस परीषह पार्श्वपुराण 'भूधर कृत' मे से और है ।

१०५१९. पाकशास्त्र— × । पत्रस० ५८ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पाकशास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १९१६ चैत्र सुदी १ सोमवार । पूर्ण वेष्टनस० ६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

१०५२०. पाकावली × । पत्रस० २८ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पाक शास्त्र । र०काल × । ले० काल स० १७५१ फाल्गुण शुक्ला ६ । वेष्टनस० ३४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर, जयपुर ।

१०५२१. पाण्डव चन्द्रिका—स्वरूपदास । पत्र स० ६२ । आ० ११½×५ इच । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-वैदिक साहित्य । र०काल × । ले० काल स० १६०६ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० ४२२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

१०५२२. पाण्डवपुराण —× । पत्रस० ३४६ । आ० ११¾×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०५२३. पुण्यपुरुष नामावलि—× । पत्रस० ३ । आ० १०×५¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्फुट । र०काल × । ले०काल स० १८८१ माघ वदि ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १२०६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प० देव कृष्ण ने अजयदुर्ग मे प्रतिलिपि की थी ।

१०५२४ पुण्याह मत्र—× । पत्रस० १ । आ० ११⅞×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-वैदिक साहित्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४२३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०५२५ पोसहरास—ज्ञानभूषण । पत्रस० ८ । आ० १०⅞×४¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी प० । विषय-कथा काव्य । र०काल × । ले०काल स० १८०६ । पूर्ण । वेष्टन स० १६४-७२ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

१०५२६ **प्रतिस० २** । पत्रस० ५ । आ० ११½×६ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २८७-१११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

१०५२७. **प्रवूर्ण गाथाना अर्थ**—× । पत्रस० ६० । आ० ९×५½ इञ्च । भापा-प्राकृत हिन्दी । विषय-सुभापित । र०काल × । ले०काल स० १७६८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४६-१३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

१०५२८ **प्रज्ञावल्लरीय**—× । पत्रस० २ । आ० १०×४ इञ्च । भापा-सस्कृत । विपय—काव्य । र०काल × । ले०काल × । वेष्टन स० ७३२ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लश्कर (जयपुर) ।

१०५२९. **प्रतिमा बहत्तरी—द्यानतराय** । पत्रस० ३ । आ० १२×५ इञ्च । भापा-हिन्दी प० । विषय-स्तवन । र०काल स० १७८१ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४१-१५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष—अन्तिम—

दिल्ली तखत वखत परकास, सत्रैमै इक्यासी वास ।
जेठ सुकल जगचन्द उदोत, द्यानत प्रगट्यो प्रतिमा जोत ।।७१।।

१०५३० **प्रत्यान पूर्वलिपूठ**—× । पत्रस० ५४ । भापा-प्राकृत । विपय-विविध । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भरतपुर ।

१०५३१. **प्रवोध चन्द्रिका—वैजल भूपति** । पत्रस० २३ । आ० ११×५½ इञ्च । भापा-सस्कृत । विपय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३१५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०५३२ **प्रतिस० २** । पत्रस० ३१ । आ० ९×६ इञ्च । ले० काल स० १९४३ फागुण वुदी ९ सोमवार । पूर्ण । वेष्टन स० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

१०५३३ **प्रतिस० ३** । पत्रस० ३१ । आ० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, वू दी ।

१०५३४ **प्रवोध चिंतामणि—जयशेखर सूरि** । पत्रस० ४-४० । आ० १०½×४½ इञ्च । विषय-विविध । र०काल × । ले० काल स० १७२० चैत सुदी १२ । अपूर्ण । वेष्टन स० ७१० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर (जयपुर) ।

१०५३५ **प्रशस्ति काशिका—त्रिपाठी वालकृष्ण** । पत्रस० १८ । आ० ९½×४ इञ्च । भापा-सस्कृत । विपय-स्फुट लेखन विधि । र०काल × । ले० काल स० १८४१ वैशाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान वू दी ।

१०५३६ **प्रस्तुतालकार**—× । पत्रस० ३ । भापा-सस्कृत । विषय-विविध । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—प्रशस्ति मे प्रयोग होने वाले अलकारो का वर्णन है ।

१०५३७ प्रस्ताविक श्लोक—× । पत्रस० १-७ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सुभाषित । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर (जयपुर) ।

१०५३८. प्रतिसं० २ । पत्रस० १-८ । आ० १०×५½ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर (जयपुर) ।

१०५३९. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १-३३ । आ० १०½×५ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन सं० ७३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर (जयपुर) ।

विशेष—कवित्त सग्रह भी है ।

१०५४० प्रासाद वल्लभ—मंडन । पत्रस० ४० । आ० ६½×७ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-शिल्प शास्त्र । र०काल × । ले० काल स० १६५३ । पूर्ण । वेष्टन स० २५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

अन्तिम—इति श्री सूत्रधारमडनविरचिते वास्तुशास्त्रे प्रासादमडन साधारण अष्टमोध्याय ॥ इति श्री प्रासाद वल्लभ ग्र थ सपूर्ण । डूगरपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१०५४१ प्रिया प्रकरन—× । पत्रस० १७-७६ । भाषा-प्राकृत । विषय-विविध । र०काल × । ले० काल स० १८७८ । अपूर्ण । वेष्टन स० ५६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०५४२. प्रेमपत्रिका दूहा—× । पत्रस० २ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-विविध । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—खण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

१०५४३. प्रीतिकर चरित्र—× । पत्रस० ४८ । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र०काल स० १७२१ । ले० काल स० १६४३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

१०५४४ फुटकर ग्रन्थ—× । पत्रस० १ । भाषा-कर्णाटी । वेष्टन स० २१०/६५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—कर्णाटी भाषा मे कुछ लिखा है । लिपि नागरी है ।

१०५४५ बखारा—× । पत्रस० १८-३१ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी) ।

विशेष—हिन्दी गद्य टीका सहित है ।

१०५४६ वराजारा गीत—कुमुदचन्द्र सूरि । पत्रस० २ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—रूपक काव्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन मदिर खण्डेलवाल उदयपुर ।

१०५४७. बारहमासा—× । पत्रस० १ । ग्रा० १०½×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—विरह वर्णन । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मदिर उदयपुर ।

१०५४८. विहारीदास प्रश्नोत्तर—× । पत्रस० ६ । ग्रा० ६×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—विविध । र०काल × । ले०काल स० १७६० मगसिर सुदी ४ । पूर्ण । ले०काल १२४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर भादवा ।

विशेष—साह दीपचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

१०५४६ ब्रह्म वैवर्त्त पुराण—× । पत्रस० ५५ । ग्रा० ६¾×६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—वैदिक साहित्य । र०काल—× । ले०काल—× । पूर्ण । वेष्टनस० २०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, बू दी ।

इति श्री ब्रह्मवैवर्त पुराणे श्रावण कृष्णपक्षे कामिका नाम महात्म्य ।

१०५५०. ब्रह्मसूत्र— × । पत्रस० ७ । ग्रा० १०×४½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय-वैदिक साहित्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १००१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०५५१. भक्तामर पूजा विधान श्रीभूषण । पत्रस० १४ । ग्रा० ६½ × ६½ इञ्च । भाषा–सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८९५ फागुण सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ कोटा ।

विशेष—भीलवाडा मे चि० सेवाराम बघेरवाल दूवारा वाले ने पुस्तक उतारी प० ऋषभदास जी बघेरवाल गोत ठोल्यामाले गाव सु कोस २० तु गीगिरि मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१०५५२ भक्तामर भाषा—हेमराज । पत्रस० ३६ । ग्रा० ११×६¾ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य विषय-स्तोत्र । र० काल स० १७०६ माघ सुदी ५ । ले०काल म० १८८३ फागुण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—अमीचन्द पाटनी ने प्रतिलिपि की थी ।

१०५५३ भर्तृहरि—भर्तृहरि । पत्रस० ५७ । ग्रा० १०½×४¾इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—प्रति टिप्पणी सहित है ।

१०५५५ प्रतिसं० २ । पत्रस० १३ । ग्रा० १०½×५ इञ्च । ले०काल × । वेष्टन स० ४६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०५५५. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ७० । ग्रा० १०¾×५½ इञ्च । ले०काल स० १८६७ कार्तिक बुदी ५ । वेष्टन स० ४५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष — लिपिकार चिरजीव जैकृष्ण । प्रति सटीक है ।

१०५५६ मलेबावनी—विनयमेरु। पत्र स० ५ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल स० १८६५ माह सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ३५१ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मदिर दबलाना बू दी ।

१०५५७ भागवत—× । पत्र स० ८ । आ० ६×३ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० २६३ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर ।

१०५५८. भगवद् गीता—× । पत्रस० ६० । आ० ६½×४ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । र०काल × । ले०काल स० १७३१ । भादवा बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० ५३ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बून्दी)

विशेष—मोहनदास नागजी ने प्रतिलिपि की थी ।

१०५५६. भगवद् गीता—× । पत्रस० ८० । आ० ५½×३½ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०४४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

१०५६० भावनासार संग्रह (चारित्रसार)—चामु डराय । पत्रस० ६६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-चारित्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—सस्कृत मे कठिन शब्दो के अर्थ दिये हुए हैं । प्रति जीर्ण एव प्राचीन है । कुछ पत्र चूहे काट गये हैं ।

१०५६१. भावशतक—नागराज । पत्रस० ३० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-शृ गार । र०काल × । ले०काल स० १८५३ भादवा बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० ५६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लश्कर जयपुर ।

१०५६२ भाषाभूषण—भ० जसवन्तसिंह । पत्रस० ११ । आ० ११×५ । भाषा-हिन्दी । विषय-लक्षण ग्रंथ । र०काल × । ले०काल सं० १८५३ । वेष्टनस० ६०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०५६३ भुवनद्वार—× । पत्रस० ६४-११६ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

१०५६४. भूधर शतक—भूधरदास । पत्रस० ६ । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-सुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—६७ पद्य हैं । इसका दूसरा नाम जैन शतक भी है ।

१०५६५ मृत्यु महोत्सव—सदासुख कासलीवाल । पत्रस० २६ । आ० १२½×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-अध्यात्म । र० काल स० १६१८ । ले० काल स० १६४५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर बू दी ।

१०५६६ प्रति स० २। पत्रस० ११। आ० १२×६½ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन स० २१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मंदिर उदयपुर।

१०५६७ प्रति स० ३। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

१०५६८ प्रतिस० ४। पत्रस० १४। आ० ८×६½ इञ्च। ले०काल स० १६४८ माघ बुदी १४। पूर्ण। वेष्टन स० १२८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

१०५६९. प्रतिस० ५। पत्रस० १२। आ० १२×५½ इञ्च। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन स० २३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

१०५७०. प्रतिसं० ६। पत्रस० ५३। आ० ११×६¾ इञ्च। ले०काल स० १६६५ माघ बुदी ६। वेष्टन स० ११६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष—रत्नकरण्ड श्रावकाचार मे से है।

१०५७१ प्रतिसं० ७। पत्रस० २१। ले०काल × । पूर्ण। वेष्टनस० १६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

१०५७२. प्रतिस० ८। पत्रस० ६। आ० १४×७½ इञ्च। ले० काल स० १६७६। पूर्ण। वेष्टन स० ८४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी।

१०५७३ प्रतिस० ९। पत्रस० ६। आ० १०×५ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ८८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी।

१०५७४. पत्रस० १०। आ० ११×५½ इञ्च। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पाश्वनाथ चौगान बूंदी।

१०५७५ **मृत्यु महोत्सव**—×। पत्रस० २। आ० १२×४ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-अध्यात्म। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० ३६३/४७१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर।

१०५७६. **मृत्यु महोत्सव पाठ**—×। पत्रस० ३। आ० १०¾×५ इच। भाषा सस्कृत। विषय-चिन्तन र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० २०३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान, बूंदी।

१०५७७ **मणकरहा जयमाल**— ×। पत्रस० ३। आ० ११¾×४¾ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-रूपक काव्य। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १७८। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर।

विशेष—मनरूपी करघा (चर्खा) की जयमाल गुण वर्णन किया है।

१०५७८ **मदान्ध प्रबोध**—×। पत्रस० २६१। भाषा-सस्कृत। विषय-धर्म। र०काल ×। ले०काल स० १६७६। पूर्ण। वेष्टन स० ६००। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

१०५७९. मनमोरड़ा गीत – हर्षकीर्ति । पत्रस० १ । आ० १०×४½ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय-गीत । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बू दी)

विशेष – म्हारा रे मन मोरडा तू तो उडि उडि गिरनार जाइ", यह गीत के प्रथम पक्ति है ।

१०५८० महादेव पार्वती सवाद—× । पत्रस० १–२६ । आ० १२½×६ इन्च । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय–वैदिक–साहित्य (सवाद) । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण ।वेष्टन स० २२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष—कई रोगो की औषधियो का भी वर्णन है ।

१०५८१ महासती सज्झाय—× । पत्रस० १ । आ० १०×५ इन्च । भाषा-हिन्दी ग० । विषय-विविध । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक)

विशेष—सतियो के नाम दियेहै ।

१०५८२ मानतु ग मानवती चौपई—रूपविजय । पत्रस० ३१ । भाषा-हिन्दी । विषय–कथा । र०काल ×। ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०५८३. मिच्छा दुक्कड़—× । पत्रस० १ । आ० १२×५ इन्च । भाषा–हिन्दी । विषय–धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेट्टन स० १८४/४२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभव–नाथ मन्दिर उदयपुर ।

१०५८४ मौन एकादशी व्याख्यान—पत्र स० २ । भाषा–सस्कृत । विषय–कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ७३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

१०५८५. यत्याचार— × । पत्र स० २ । आ० १२×५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय–मुनि आचार धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २९९/१५५ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर ।

१०५८६ रत्नपरीक्षा— × । पत्र स० १–३५ । भाषा-सस्कृत । विषय–लक्षण ग्र थ । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०५८७ रयणसारव चनिका—जयचन्द छाबडा । पत्र स० ७ । आ० ११×८ इन्च । भाषा–राजस्थानी (गद्य) । विषय–आचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०२ । **प्राप्ति स्थान** —भट्टारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

१०५८८ रविवार कथा एवं पूजा—पत्रस० ८ । आ० ११×५½ इन्च । भाषा–सस्कृत । विषय–पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १९२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

१०५८९ **राजुल छत्तीसी—बालमुकन्द** । पत्रस० ८ । भाषा-हिन्दी । विषय-वियोग शृ गार । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४९८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भरतपुर ।

१०५९० **राजुल पच्चीसी**—× । पत्रस० ३ । आ० ९×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-वियोग शृ गार । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

१०५९१. **राजुल पच्चीसी**—× । पत्रस० ६ । आ० ९×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-वियोग शृ गार । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७०-४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

विशेष—निम्न पाठ और है —

मुनीश्वर जयमाल भूधरदास कृत तथा चौबीस नीर्थंकर स्तुति ।

१०५९२. **राजुल पत्रिका—सोयकवि** । पत्रस० १ । भाषा-हिन्दी । विषय-पत्र-लेखन (फुटकर) । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स ५६/६३९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—

प्रारम्भ—

स्वस्ति श्री पदुपति पाय नमि गढ गिरनार सुठायरे सामलिया ।
लखितु राजुल रगि वीनती सदेसइ परिणामरे पीयारा ।।१।।
एक वार अवोरे मन्दिर मा हरइ जिम तलिय मन हेजरे सामलिया ।
तुम विन सूना मन्दिर मालिया सूनी राजुल सेजरे पीयारा ।।२।।
अत्र कुशल ते मुजीना ध्यान की तुम कुशल नित मेव रे समलिया ।
चरणनी चाकरी चाहु ताहरी दरसन दिखवहु देव पीयारा ।३।।

× × ×

अन्तिम—

वेगीमालण करी जेवा लही ढौल भणे रहि कामरे ।
पाणि नखइ मइ पीउडा पातली दोहिलो विरह विरायरे पीयारारे ।।२०।।
माह वदि सातिम दिन इति मगल लेख लिख्यौ लख वोलरे सामलिया ।
जस सोम कवि सीस साहि प्रीति राजुल मनरग रोलरे पीयारा ।।२१।।
पूज्याराध्य तुमे प्राणिसरु श्री यदुमति चरणनुरे सामलिया ।
राजुल पतिया पाठवी प्रेम की गढ गिरनाप सुठामरे पीयारा ।।२२।।
एक वार आवोरे मन्दिर माहरे ।।

१०५९३ **रामजस—केसराज** । पत्र स० २५२ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-विविध । र०काल स० १६८० आसोज वुदी १३ । ले०काल स० १८७४ अपाढ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टनस० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना वूदी ।

विशेष—इसका नाम रामरस भी दिया है । अ तिम—श्री राम रसौधिकारे सपूर्ण ।

१०५६४ रावण परस्त्री सेवन व्यसन कथा—X । पत्रस० २४ । आ० ११½ X ६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल X । ले०काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० ३२०/६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष - ६५७ श्लोको से आगे नही है ।

१०५६५ रूपकमाला वालाबोध—रत्नरंगोपाध्याय । पत्रस० १० । आ० १०½ X ४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-विविध । र०काल X । ले०काल स० १६५१ । पूर्ण । वेष्टन स० ७३४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—

स० १६५१ वर्षे श्रावण वुदी ११ दिने गुरुवारे श्री मुलताणमध्ये प० श्री र गवर्द्धन गणिवराणा शिष्य प० थिरउजम्स शिष्येण लिखितो वालाववोध ।

१०५६६. लघियस्त्रय टीका—अभयचन्द्र सूरि । पत्रस० २६ । आ० १४ X ५½ इञ्च । भाषा-स'कृत । विषय-व्याकरण । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

१०५६७. लघुक्षेत्र समास वृत्ति—रत्नशेखर । पत्रस० २६ । आ० १०½ X ४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०५६८. लब्धिसार भाषा—पं० टोडरमल । पत्रस० १५ । आ० १५—७ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-सिद्धात । र०काल X । ले०काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० २१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

१०५६६ लीलावती—भास्कराचार्य । पत्रस० २१ । आ० ११ X ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष-गणित । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०६००. प्रतिसं० २ । पत्रस० १० । आ० १०½ X ५½ इञ्च । ले०काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० १८ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—१० से आगे के पत्र नही हैं ।

१०६०१ लीलावती— X । पत्रस० ३३ । आ० ६½ X ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष-गणित । र०काल X । ले० काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०६०२. लीलावती—X । पत्रस० २० । आ० ६ X ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष-गणित । र०काल X । ले०काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० ४७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

१०६०३. लीलावती—X । पत्रस० ६७ । आ० १०½ X ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष-गणित । र०काल X । ले०काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० २३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

१०६०४ लीलावती भाषा—लालचन्द सूरि। पत्रस० २८। आ० ११ × ५२ इन्च। भाषा–हिन्दी (पद्य)। विषय-ज्योतिष-गणित। र०काल स० १७३६ अषाढ सुदी ५। ले०काल स० १८०१। पूर्ण। वेष्टन स० ६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर (बयाना)

विशेष—ग्र थ का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—

शोभित सिन्दूर पूर गज सीस नीकद।
नूर एक सुन्दर विराजै भाल चन्द जु
सूर कोरि कर जोरि अभिमान दूरि छोरि
प्रणमत जाके पद पकाज अनन्दजू।
गौरीपूत सेवै जोउ मन चित्यो,
पावै रिद्धि वृद्धि सिद्धि होत है अगटजू।
विघन निवारै सत लोक कू सुधारै
ऐसे गणपति देव जय जय सुखकदजू ॥१॥

दोहा

गणपति देव मनाय के सुमरि वान सुरसति
भापा लीलावती करु चतुर सुणो इक चित्त ॥२॥
श्री भास्कराचार्य कृत सस्कृत भापा सप्तसती ॥
लीलावती नाम इस ऊपरि सिद्ध ॥३।

अन्तिम पाठ—

सपूरण लीलावली भापा मे भल रीति।
ज्यु कीधि जिणदिन हुई तिको कहुँ धरि प्रीति ॥
सतरासै छत्तीस समै वदि अपाढ वखान।
पाचम तिथि बुधवार दिन ग्र थ सपूरण जान ॥
गुरु मौ चउरासी गच्छे गच्छ खरतर सुवदीत।
महिमडल मोटा मनुष्य पूरी करै प्रतीत ॥११॥
गच्छनायक गुणवत अति प्रकट पुन्य अकूर।
सोभागी सुन्दर वरण श्री जिनचद सुरिंद ॥१२॥
सेवग तासु सोभागनिधि खेम साख सुखकार।
शाति हर्ष वाचक मन्यो जस सोभाग्य अपार ॥१३॥
शिष्य तास सुविनीत मति लालचन्द इण नाम।
गुरु प्रसाद कीधो भली ग्र थ भण्या अभिराम ॥१४॥
भला शास्त्र यद्यपि भला तो पणि चित्त उल्टास।
गणित शास्त्र धुरि अन्ति लगि कीयो विशेष अभ्यास ॥१५॥
बीकानेर वडो सहर चिहु दिस मे प्रसिद्ध।
घरघर कचन धन प्रवल घरघर ऋद्धि समृद्धि ॥१६।

घरघर सुन्दर नारि सुभ झिगमिग क्चन देह ।
फोकल अका कामनी नित नित वद्धती नेह ।।१७।।

गढमढ मिंदर देहुरा देखत हरपन नैंन ।
कवि औपम ऐसी कहै स्वर्ग लोग मनु ऐन ।।१८।।

राजै तिहा रग्जा वडो श्री अनोपसिंह भूप ।
राष्ट्रवश नृप करण सुत सुन्दर रूप अनूप ।।१९।।

जैतसाह जामे वसै सात ववा श्रीकार ।
लवुवय मे विद्याभणी कियो शास्त्र अभ्यास ।।२०।।

सप्तसती लीलावती भणी वहुकीव अभ्यास ।
लालचन्द सु विनय करि कीव असी अरदास ।।२१।।

भापा लीलावती करौ ग्र थ सुगम ज्यु होइ ।
देस देस मै विस्तरै भणै चतुर सहु कोइ ।।
ग्र थ सातसै सातहु ठहरायो करि ठीक ।
मूलशास्त्र जिनरौ कियो कह्यो न ग्र थ अलीक ।।२२।।

इति लीलावती भापा लालचन्द सूरि कृत मपूर्ण ।

सवत् १९०१ मिती असाढ बुदी ११ मगलवारे लिखत श्रावग पाटणी उकार नलपुर मध्ये लिखी छै। श्रावग उदासी सोगाणी वासी जैपुर भाई के नन्दराम वाचनार्थ । श्रावक गोत्र वाकलीवाल मूलाजी कनीराम वीरचन्द लिखाय दीदी ।।

१०६०५ लीलावती टीका—दैवज्ञराम कृष्ण । पत्रस० १४८ । आ० १०×४½ इञ्च । भापा-सस्कृत । विपय-ज्योतिप, गणित । र० काल × । ले०काल स० १८३७ अपाढ बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनस० १२५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१०६०६. प्रतिसं० २ । पत्रस० १०९ । आ० ९×४ इञ्च । **ले०काल** स० १६०९ (शक स०) । पूर्ण । वेष्टन स० १९८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—इति श्री नृसिंह दैवज्ञात्मज लक्ष्मण दैवज्ञ सुत सिद्धात वि० दैवज्ञ रामकृष्णेन विरचित लीलावती वृत्ति ।

१०६०७. लेख पद्धति—× । पत्रस० ७ । आ० ११½×४½ इञ्च । भापा-सस्कृत । विपय-विविध । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसलो कोटा ।

विशेष—पत्र लेखन विधि दी हुई है ।

१०६०८ वृन्द विनोद सतसई—वृन्दकवि । पत्रस० ४८ । आ० ११×४ इञ्च । भापा-हिन्दी, (पद्य) । विपय-शृ गार रस । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमल (टोक)

१०६०९. वृषभदेव गीत— ब्रह्ममोहन । पत्रस० २ । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । र०कालX। ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ६६/४७८ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—अंतिम पाठ निम्न प्रकार है—

वारि धारि विधान हारे ससार सागर तारीणी
पुनि धर्मभूषण पद पकज प्रणमी करिमोहन ब्रह्मचारिणी

१०६१०. वज्र उत्पत्ति वर्णन—X । पत्रस० ३ । भाषा-सस्कृत । विषय-विविध । र०काल X। ले०कालX। वेष्टनस० ६१५ । पूर्ण वेष्टन ६१५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

१०६११ वज्रसूची (उपनिषत्)—श्रीधराचार्य । पत्र स० ४ । आ० ११X४ इन्च । भाष-सस्कृत । विषय-वैदिक (शास्त्र) । र०काल X । ले०काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० ४१६/५०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

१०६१२. वरुण प्रतिष्ठा—X। पत्र स० १६ । आ०१०X४½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । ले०काल स० १८२४ कार्तिक बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ११०५ ।**प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०६१३. वाकद्वार पिंड कथा— X । पत्रस० २१ । आ० ६X५ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टनस० ६६७ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०६१४. वाजनेय सहिता—X । पत्र स० १ से १७ । भाषा-सस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । र०काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० ७५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पजायती मदिर भरतपुर ।

१०६१५. वाजनेय सहिता—X । पत्रस० ३०६ । भाषा-सस्कृत । विषय-आचार-शास्त्र । र०काल X । ले०काल स० १६४६ । अपूर्ण । वेष्टन स० ७०-७०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—बीच २ के बहुत से पत्र नही है ।

१०६१६ वाच्छा कल्प—X। पत्रस० २५ । आ० ६½X३ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-वैदिक साहित्य । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १०४५ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०६१७ वास्तुराज—राजसिंह । पत्रस० ४७ । आ० ८X६½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय-वास्तु शास्त्र । र०काल X । ले०काल स० १९५३ । पूर्ण । वेष्टन स० ४८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

अन्तिम—इति श्री वास्तुशास्त्रे वास्तुराज सूत्रधार राजसिंह विरचिते शिखर प्रमाण कथन नाम दशमेध्याय ।।

सवत् १९५३ वर्षे भृगमास सुदी १५ रवौ लिखित दशोरा ब्राह्मण ज्ञाति व्यास पुरुषोत्तमे हस्ताक्षर नग्र डूगरपुर मध्ये ।

१०६१८ वास्तु स्थापन— × । पत्रस० १८ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-वास्तु शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन २२८/३८६ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

१०६१६. वास्तु शास्त्र—×। । पत्र स० १-१७ । आ० ६½×४¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-वास्तु शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०६२०. विजयभद्र क्षेत्रपाल गीत—ब्र० नेमिदास । पत्रस० १ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल×। ले०काल×। पूर्ण । वेष्टनस० ३६७/४७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—अन्तिम—

नित नित आवि वधावणा चन्द्रनाथ ना भुवन मझार रे ।
धवल मगल गाइया गोरडी तहा वरत्यो जय जयकार रे ।।
इणि परि भगति भली करो जिम विघन तणु दुख नासि रे ।
इति नरेन्द्र कीरति चरणे नमी इम बोलि ब्र० नेमिदास रे ।

१०६२१. विदग्ध मुखमंडन—धर्मदास । पत्रस० २२ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र०काल× । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२२१ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति टव्वा टीका सहित है ।

१०६२२. प्रतिसं० २ । पत्रस० ५ । आ० ६×४½ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११७ । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०६२३. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १३ । ले०काल स० १७४० जेष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस० २८७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०६२४. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ४२ । आ० ६½×४½ इञ्च । ले०काल स० १८०० पौष बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० १४२६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०६२५। विदग्ध मुखमंडन टोका—विनय सागर । पत्रसं० १०८ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २२४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—टीका काल—

अ कर्त्रु रसराकेश वर्षं तेजपुरे वरे ।
मार्ग शुक्ल तृतीयाया खावेपा विनिर्मिता ।।

इति खरतरागच्छालकार श्री जिनहर्ष सूरि तत् शिष्य श्री विनयसागरमुनि विरचिताया विदग्ध मुखमडनालकारटीकाया शब्दार्थमदाकिन्या महेलादि प्रदर्शको नाम चतुर्थोध्याय ।

१०६२६ **विद्वज्जन बोधक—सघी पन्नालाल** । पत्र स० १८२ । ग्रा० ११½×७½ इञ्च । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय-सुभाषित । र०काल स० १६३६ माघ सुदी ५ । ले०काल स० १६६७ पौष सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

१०६२७. **वीतराग देव चैत्यालय शोभा वर्णन**—× । पत्रस० ६ । ग्रा० १२×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय—चैत्य वदना । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ४६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--ब्र० सवराज की पोथी ।

१०६२८ **वेलि काम विडम्बना—समयसुन्दर** । पत्रस० १ । ग्रा० ६½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । र०काल × । ले०काल । ग्रपूर्ण । विषय—वेलि । वेष्टनस० ७१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

विशेष—बनारसीदास कृत चितामणि पार्श्वनाथ भजन भी है । "चितामणि साचा साखि मेरा"

१०६२६. **वैराग्य शाति पर्व (महाभारत)**—× । पत्रस० २–१४ । ग्रा० ६×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—वैदिक शास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १६०५ । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० २३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बू दी) ।

विशेष—लिखी ततु वाडिशी कृष्णपुर नदगाव मध्ये ।

१०६३०. **शृ गार वैराग्य तरगिणी—सोमप्रभाचार्य** । पत्रस० ६ । ग्रा० १२½×५¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०२ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

विशेष—४७ श्लोक हैं । ग्रकबरा बाद मे ऋषि बालचद्र ने प्रतिलिपि की थी ।

१०६३१. **शकर पार्वती सवाद**—× । पत्रस० ७ । ग्रा० १०×४¾ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—सवाद । र०काल × । ले०काल स० १६३० । पूर्ण । वेष्टन स० २०१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर राजमहल (टोंक) ।

✓१०६३२ **शतरज खेलने की विधि ×** -पत्र स० ७ । भाषा–हिन्दी–सस्कृत । विषय-विविध । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टनस० ७०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

✓**विशेष**—४ पत्र नही हैं । ७१ दाव दिये हुए हैं । हाथी, घोडा, ऊट, प्यादा ग्रादि का प्रमाण दिया हुग्रा है ।

१०६३३ **शत्रु जय तीर्थ महात्म्य—धनेश्वर सूरि** । पत्रस० २–२३८ । भाषा—सस्कृत । विषय—इतिहास-शत्रु जय तीर्थ का वर्णन है । र०काल × । ले०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टनस० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर बसवा ।

१०६३४ **शब्दभेदप्रकाश**—× । पत्र स० १७ । ग्रा० ११×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—कोष । र० काल × । ले०काल स० १६२६ जेष्ठ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० २८८ । **प्राप्ति स्थान** भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष—मडलाचार्य धर्मचन्द्र के शिष्य नेमिचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

१०६३५ शब्दानुशासन—हेमचन्द्राचार्य । पत्र स० ७ । आ० १०$\frac{3}{4}$×४$\frac{1}{4}$ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १०१३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०६३६. प्रतिसं० २ । पत्रस० ५६ । आ० १३×५$\frac{1}{2}$ इञ्च । ले०काल स० १५१४ । पूर्ण । वेष्टनस० ४२८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर । प्रति सटीक है ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १५१४ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ३ गुरिदिने पुनर्वसुनक्षत्रे वृद्धियोगी श्री हिसारपेरोजापत्तने तत्र लब्धविजयपुर सुरत्राण श्री वहलोल साह राज्य प्रवर्त्तमाने श्री काष्ठासघे माथुरान्वये पुष्पगणे भट्टारक श्रीहेमकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री कमलकीर्तिदेवा तस्य गुरु भ्राता मुनि श्री धर्मचन्द्रदेवास्तच्छिष्य श्री प्रभाचन्द्रदेव तस्य शिष्यो मुनि श्री शुभचन्द्र देव श्री धर्मचन्द्र शिष्यिणी क्षातिकापुण्यश्री तस्या शिष्यणी क्षातिकाज्ञानश्री अग्रोतवशजातसाधु उद्धरण पुत्र प० मीहासज्ञ । एतेपामध्ये अग्रोतवशे वशल गोत्रे परम श्रावक साधु भू गड नामा तस्य भार्या विनयसरस्वती सावु मीवाजी नामी तयो पुत्राश्च-त्वार प्रथम पुत्र चतुर्विधदानवितरण कल्पवृक्ष सावु छाजूसज्ञस्तत् भार्या सावुणी पोल्हणती तयो पुत्रचिरजीवी लूणाभिध द्वितीय पुत्र सावु राजुनामा । तद्भार्या साधुनी लूणी नाम्नी । तृतीय पुत्र साधु-देवास्य तस्य भार्या साधुजी जील्हाही । चतुर्थ पुत्र सावु सेवराज-तस्य मार्या मोहणही । एतेपामध्ये परम श्रावकेन साधु छाजुनाम्ना इम प्राकृत वृत्ति पुस्तक निज द्रव्येण लिखाप्य पडित श्री मेघावि सज्ञाय प्रदत्त निजज्ञानावरणकर्मक्षयाय शुभम् सुलेखक पाठकयो ।

१०६३७ शारङ्गधर संहिता—दामोदर । पत्र स० ३१५ । आ० ६$\frac{3}{4}$×४ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—आयुर्वेद । र० काल × । ले०काल स० १६०७ वैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनस० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक)।

विशेष—लाल कृष्ण मिश्र ने काशी मे प्रतिलिपि की थी ।

१०६३८ शील विषये वीर सेन कथा—× । पत्र स० ११ । आ० ६$\frac{1}{2}$×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—कथा । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना (बूदी) ।

१०६३९. श्रमरण सूत्र भाषा—× । पत्र स० ७ । आ० १०×७$\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

१०६४० षट् कर्म वर्णन—× । पत्र स० १० । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—वैदिक शास्त्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अजमेर भण्डार ।

१०६४१ श्रुतपचमी कथा—धनपाल । पत्र स० ४४ । आ० १०$\frac{1}{2}$×३ इञ्च । भाषा—अपभ्र श । विषय—कथा । र० काल × । ले०काल स० १५०१ फागुण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथीम न्दिर दौसा ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है । सवत् १५०१ वर्षे फाल्गुन सुदी ५ । शुक्र दिने तिजारा

नगर वास्तव्ये श्री मूलसघे माथुरान्वये पुष्करगणे श्री सहस्रकीर्ति देवा तत्पट्टे श्री गुणकीर्ति देवा तत्पट्टे श्री यश कीर्ति देवा तत्पट्टे प्रतिष्ठाचार्य श्री मलयकीर्ति देवा. तदाम्नाये।

१०६४२. सख्या शब्द साधिका—× । पत्र स० २ । आ० १०×५ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय—गणित । र० काल × । ले०काल × । वेष्टन स० २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०६४३ सकल्प शास्त्र—× । पत्र स० १२ । आ० १०×४½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—वैदिक साहित्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११०४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

१०६४४. सध्या वदना—× । पत्र स० ४ । आ० ८×२½ इन्च । भाषा—सस्कृत । विषय—वैदिक साहित्य । र० काल × । ले०काल स० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन स० १०१८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१०६४५. सज्जनचित्त वल्लभ—मल्लिषेण । पत्र स० ६ । आ० १०×४½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय—सुभाषित । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

विशेष—मूल के नीचे हिन्दी मे अर्थ दिया है । किन्तु गुजराती मिश्रित हिन्दी है ।

१०६४६ सत्तरी कर्म ग्रन्थ—× । पत्र स० ३६ । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

१०६४७ सत्तरिरूपठाण—पत्र स० २ से १२ । भाषा—प्राकृत । विषय-सिद्धात । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

१०६४८ समाचारी—पत्र स० ३६-८३ । भाषा-सस्कृत । विषय-विविध । र०काल × । ले०काल स० १८२७ । अपूर्ण । वेष्टन स० ६२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०६४९ प्रतिसं० २ । पत्र स० ११३ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६२५ । **प्राप्ति-स्थान**-दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

१०६५० सर्वरसी--× । पत्र स० ३६ । आ० ६½×६½ इन्च । भाषा-हिन्दी । 'विषय-सग्रह । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

१०६५१ सर्वार्थसिद्धि भाषा-जयचन्द छावडा । पत्रस० २८२ । आ० १४½ ×७½ इन्च । भाषा-राजस्थानी (ढूढारी गद्य) । विषय-सिद्धान्त । र०काल स० १८६५ चैत सुदी ५ । ले० काल स० १६३२ । पूर्ण । वेष्टन स० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

१०६५२ साठि—× । पत्रस० १२ । आ० १०½×४½ इन्च । भाषा-सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल × । ले० काल स० १८११ चैत बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० २०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ ।

विशेष—रूपचन्द ने लिखा था ।

१०६५३. सामुद्रिक शास्त्र—× । पत्रस० १६ । आ० ८½×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-लक्षण ग्रन्थ । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बू दी ।

१०६५४ सामुद्रिक शास्त्र—× । पत्रस० १७ । आ० १०×४½ इ च । भाषा-लक्षणग्र थ । र०काल × । ले० काल सं० १५८६ । पूर्ण । वेष्टन स० २११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौगान बू दी ।

विशेष—जैनाचार्य कृत है ।

१०६५५ सामुद्रिक शास्त्र—× । पत्रस० १० । आ० ६½×४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-लक्षण ग्रन्थ । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बू दी ।

१०६५६. सामुद्रिक शास्त्र—× । पत्र स० २० । भाषा—हिन्दी । विषय—लक्षण ग्रन्थ । र०काल × । ले० काल स० १८६६ वैशाख वदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दीवानजी, भरतपुर ।

१०६५७. सामुद्रिक शास्त्र (स्त्री पुरुष लक्षण)—× । पत्र स० ४ । आ० १०×४¾ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सामुद्रिक शास्त्र । र०काल × । ले० काल × । वेष्टन स० १४० । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर बारा ।

१०६५८ सामुद्रिक शास्त्र (स्त्री पुरुष लक्षण)—× । पत्र स० ३६ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सामुद्रिक (लक्षण ग्रन्थ) । र०काल × । ले० काल स० १८५० काती सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल टोक ।

विशेष—तक्षकपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

१०६५९. सामुद्रिक सुरूप लक्षण—× । पत्रस० १६ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । विषय-सामुद्रिक । र०काल × । ले० काल स० १७६२ भादवा सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० १४१३ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—इस प्रति की जोवनेर मे पडित प्रवर टोडरमल जी के पठनार्थ लिपि की गई थी ।

१०६६० सार सग्रह-महावीराचार्य । पत्रस० ५१ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-गणित । र०काल × । ले० काल स० १९०६ । वेष्टन स० १०९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर (जयपुर) ।

विशेष—महाराजा रामसिह के राज्य मे लिखा गया था । इसका दूसरा नाम गणितसार सग्रह है ।

१०६६१. सारस्वत प्रक्रिया—परिव्राजकाचार्य । पत्रस० ९२ । भाषा-सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ९८/५८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

१०६६२. सिद्धचक्र पूजा—शुभचन्द्र। पत्रस० १०८ । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल X । ले०काल X । अपूर्ण । वेष्टन स० ५६/३१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सभवनाथ उदयपुर ।

विशेष—इसका नाम सिद्ध यत्र स्तवन भी दिया है ।

१०६६३. सुदृष्टितरगिनी भाषा—टेकचन्द। पत्रस० ४२६ । आ० १४½×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-सुभाषित । र०काल स० १८३८ सावण सुदी ११ । ले०काल स० १६०७ वैषाख सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

विशेष—सवाई जयपुर मे ब्राह्मण जमनालाल ने चि० सदासुखजी तथा प० चिमनलालजी बूदी वालो के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी । ग्र थाग्र थ १६२२२ पडितजी की प्रशस्ति —

आचार्य हर्षकीर्ति—स० १६०७ आचार्य श्री हरिकीर्त्तिजी सवत् १६६६ के साल टोडा मे हुआ, ज्याकी वान छत्री हाल मौजूद । त्याके शिष्य रामकीर्त्ति, तत्शिष्य भवनकीर्त्ति, टेकचद, पेमराज, सुखराम, पद्मकीर्त्ति दोदराज पडित हुए । तत्शिष्य छाजूराम, तत्शिष्य प० दयाचद, तत्शिष्य ऋषभदास त० शि० सेवाराम, द्वितीय डू गरसीदास, तृतीय साहिबराम एतेषा मध्ये प० डू गरसीदास के शिष्य सदासुख शिवलाल तत्शिष्य रतनलाल, देवालाल मध्ये वृहत् शिष्येन लिपीकृता । प० चिमनलाल पठनार्थ ।

ऐसा हुआ बूदी के खेडे पडित शिवलाल ।
वाग वणाया तसि जिनने तलाव ऊपर न्यारा ।
सव दुनिया मे शोभा जिनकी रुपया देव उधारा ।
जिनका शिष्य रतनलाल पौत्र नेमीचद प्यारा ।।
सवत् १६०७ के मई ग्र थ लिखाया सारा ।
जाग दुकाना कटला का दरवाजा वणाया नागदी माई ।।

१०६६४ प्रतिसं० २ । पत्र स० ५२६ । आ० ११×८ इच । ले० काल स० १६६८ । पूर्ण । वेष्टन स० ८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ ।

विशेष—ईश्वरलाल चादवाड ने प्रतिलिपि की थी ।

१०६६५. सूक्तावली—X । पत्र स० १-५१ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-सुभाषित । र०काल X । ले० काल X । वेष्टन स० ७२१ । अपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

१०६६६. सूर्य सहस्त्रनाम— X । पत्र स० ११ । आ० ७⅔×३½ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टनस० ११०७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—भविष्य पुराण मे से है ।

१०६६७ स्तोत्र पूजा सग्रह— × । पत्र स० २ से ४१ । आ० ११×५½ इच। भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा स्तोत्र । र०काल × । ले०काल स० १८४७ । अपूर्ण । वेष्टन स० ५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी बूदी ।

विशेष—प्रारम्भ का केवल एक पत्र नही है ।

१०६६८ स्थरावली चरित्र—हेमचन्द्राचार्य । पत्र स० १२७ । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल स० १८७६ जेठ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ५८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

१०६६९ प्रतिसं० २ । पत्र स० २ से १५० । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ५९९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

१०६७०. हिण्डोर का दोहा— × । पत्र स० १ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-फुटकर । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ८१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर ।

॥ समाप्त ॥

ग्रंथानुक्रमणिका

अकारादि स्वर

ख

घ

च

द

ध

न

प

फ

म

य

क्ष

ज्ञ

———

ग्रंथ एवं ग्रंथकार

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र स०
	सारस्वत धातु पाठ स०	५२२
	सारस्वत प्रक्रिया स०	५२३, ६५४
	सारस्वत व्याकरण पचसधि स०	५२६
	सारस्वत सूत्र स०	५२७
अनूपाचार्य —	आषाढी पूर्णिमाफल स०	१११६
अनूपाराम—	यन्त्रावली स०	६२३
अप्पयदीक्षत—	अलकार चन्द्रिका स०	५६३
	कुवलयानन्द स०	५६३
अपराजित सूरि—	भगवती आराधना (विजयोदया टीका) स०	१४५
अभयचन्द्र—	गोम्मटसार (पच सग्रह) वृत्ति स०	२०
	लघीयस्त्रय टीका स०	११९७
अभयदेव गणि—	प्रश्न व्याकरण सूत्र प्रा०स०	७६
अभयदेव सूरि—	स्तभनक पार्श्वनाथनमस्कार स०	९५६
अभयचन्द्र—	नेमिनाथ रास हि०	९५२
	सिद्धचक्र गीत हि०	९५२
	वलभद्र गीत हि०	९६६
अभयचन्द्राचार्य—	कर्म प्रकृति टीका स०	७
	आचारागसूत्र वृत्ति प्रा०स०	३
अभयदेव—	जयतिहुयण प्रकरण प्रा०	७२५, १०२९
	वीर जिन स्तोत्र प्रा०	७६०

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र स०
	स्तभनक पार्श्वनाथनमस्कार स०	९५६
अभयचन्द सूरि—	मागीतुगी जी की यात्रा हि०	७५५, ११४५
	माँगीतुगी गीत हि०	११११
अभयनन्दि—	पल्यविधान पूजा स०	९०७
	सोलहकारण उद्यापन स०	९३५
प० अभ्रदेव—	लब्धि विधान कथा स०	४३४, ४७६
	व्रत कथा कोश स०	४७८
	लब्धि विधान कथा स०	४७९, ११३६
	चतुर्विंशति कथा स०	४८०
	त्रिकाल चौवसी कथा स०	४२४, ४३४
	द्वादश व्रत कथा स०	४४७
	व्रतोद्यातन श्रावकाचार स०	
	शास्त्र दान कथा स०	४३४
	श्रावक व्रत कथा स०	९१२
अमरकीर्ति	जिनसहस्र नाम टीका स०	७२८, ७२९
	योगचिन्तामणि टीका स०	५८२
अमरकीर्ति—	षट्कर्मोपदेशरत्नमाला अप०	१६८
अमरचन्द—	विद्यमान बीस तीर्थकर पूजा हि०	९०४
	व्रतविधान पूजा हि०	९०६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र स०
ऋषभ—	बारा आरा का स्तवन हि०	७३७
ऋषभदास निगोत्या—	मूलाचार भापा राज०	१५१
ऋषि जयमल्ल—	गुणमाला हि०	७२१
ऋषि दीप—	गुणकरण्ड गुणावली हि०	६५९
ऋषि वर्द्धन—	नेमिजिन स्तवन स०	७३१
कवि कनक—	मेघकुमार रा[illegible] हि०	१०२५
	कर्मघटा	११०५
कनककीर्ति—	तत्वार्थसूत्र भापा हि०	५१, ५२, १०६६
	पद हि०	१०७३, ११०५
	बारहखडी हि०	१०५९
	विनती हि० स०	८७६, ११०५, ११४८
	सुभापितावली	७००
कनक कुशल—	भक्तामर स्तोत्रवृत्ति स०	७४७
	साधारण जिनस्तवन वृत्ति स०	७६६
कनकशाल—	ज्ञानपचमी व्याख्यान स०	११०
कनक सुन्दर—	हरिश्चन्द्र चौपई हि०	४२०
कनक सोम—	आषाढभूति मुनि का चौढाल्या हि०	१०१३
मुनि कनकामर—	करकण्डु चरित्र अपभ्रंश,	३१५
ब्रह्मकपूर—	पद हि०	१०९७
	पार्श्वनाथ रास हि०	९४४, १०२२

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र स०
मुनि कपूरचन्द—	स्वरोदय हि०	५७२
कबीरदास—	अक्षर बावनी हि०	११०६
	पद हि०	११११, ११७०
कमलकीर्ति—	अठारह नाता हि०	१०५३, १०९५, ११३०
	खिचरी हि०	११६८
	चौबीसजिन चौपई हि०	११३२
	बारहखडी हि०	१०५३
कमलनयन—	जिनदत्त चरित्र भापा, हि०	३२९
कमलभद्र—	जिनपजर स्तोत्र स०	७२६, ९५८
कमलविजय—	जम्बू स्वामी चौपई हि०	१०२९
	सीमधर स्तवन हि०	९४७
ब्र० कर्मसी—	ध्यानामृत हि०	६३५
कल्याण—	कुतुहल रत्नावली स०	५४२
कल्याणकीर्ति—	नेमि राजुल सवाद हि०	११७४
	चारुदत्त प्रबध हि०	४५९
	बाहुबलि गीत हि०	९६२
	श्रेणिक प्रबन्ध हि०	४०६, ४९१
कल्याणदास—	सिद्धात गुण चौबीसी हि०	१०९५
	बालतन्त्र भापा हि०	५८०
कल्याणमल्ल—	अनग रग स०	६२६
कल्याणमुनि—	सात बीसन गीत हि०	१०२७
कल्याणसागर—	आदि जिन स्तवन हि०	७११
	पचमीव्रत पूजा स०	८५६
कंवरपाल—	कवरपाल बत्तीसी हि०	११७६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	सम्यक्त्व बत्तीसी हि०	१७२
कविराज पडित—	राघवपाडवीय टीका स०	३८३
कवीन्द्राचाय—	कवि कल्पद्रुम स०	५६३
ब्र० कामराज—	जयकुमार चरित्र स०	३२६
	जयपुराण स०	२७६
	नामावलि छद हि०	११४४
(स्वामी) कार्तिकेय—	कार्तिकेयानुप्रेक्षा प्रा०	१९०, १९१, ६६४, १०३९
कालिदास—	ऋतुसहार स०	३१५
	कुमारसभव स०	३१७
	नलोदय काव्य स०	३३९
	वसत वर्णन स०	३५७
	मेघदूत स०	३६९
	रघुवश स० ३७८,	३७९
	वृत्तरत्नाकर स०	५९९
	श्रुतबोध स०	६००
काशीनाथ—	लग्न चन्द्रिका स०	५६३
	शीघ्रबोध स०	५६६, ६९१
काशीराज—	अमृत मजरी स०	५७३
काशीराम—	लघु चाणक्य नीतिशास्त्र भाषा हि०	१०८७
किशनचन्द्र—	पद हि०	१०४८
किशनदास—	उपदेश बावनी हि०	६८२
	लघुसामायिक हि०	१००२
किशनसिंह—	अच्छादना पच्चीसी हि०	१०५६
	त्रेपन क्रियाकोश हि०	१००, १०१, १०९६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र स०
	नागश्री कथा हि०	११६७
	निशिभोजन कथा हि०	४५२
	भद्रबाहु चरित्र हि०	३५९, ३६०, ३६१
	लब्धिविधान व्रत कथा हि०	४७६
किशोर—	आदिनाथ वीनती हि०	४५
	नीदडली हि०	८७७
कुदकुन्दाचार्य—	अष्टपाहुड प्रा०	१८१, ६८३, ६६४
	द्वादशानुप्रेक्षा प्रा०	२०३
	पचास्तिकाय प्रा०	७१, ७२
	प्रवचनसार प्रा०	२१०
	मोक्षपाहुड प्रा०	२१५
	रयणसार प्रा०	७८
	शीलप्राभृत प्रा०	२१७
	षट्पाहुड प्रा०	२१८
	समयसार प्राभृत प्रा०	२२०
	सूत्र प्राभृत प्रा०	८७
कुमार कवि—	आत्म प्रबोध स०	१०३
कुमुदचन्द्र—	कल्याण मन्दिर स्तोत्र स०	७१६, ७१७, ७१८, ७७२, ६५३, १०२२, १०३५, १०६५, १०६७, १०७४, १०८३, ११२६
भ०कुमुन्दचन्द्र—	आदिनाथ स्तुति हि०	४५
	गीत सलूना	११५९
	परदारो परशील सज्झाय	
	वणजारा गीत हि०	४५६, ११९१
	बाहुबलि छद हि०	१०९६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
चतुर्भुजदास—	मधु मालती कथा हि०	६४०, ६६२, ११६८
चतुरमल—	चतुर्दशी चौपई हि०	१०५
(जाति)चन्द—	बूढा चरित्र हि०	११३१
चन्द्रकवि—	चौबीस महाराज की विनती हि०	७२४
चन्द्रकीर्ति—	कथाकोश स०	४३१
	छदकोश टीका स० प्रा०	५६३
	पच कल्याणक पूजा स०	४८
	पार्श्वपुराण स०	२६०, ३४५
	भूपाल चतुर्विंशति की टीका स०	७५१
	विमान शुद्धि शातिक विधान स०	६०४
चन्द्रकीर्ति—	पद हि०	११०८
चन्द्रकीर्ति सूरि—	प्रक्रिया व्याख्यान स०	५१६
	सारस्वत दीपिकावृत्ति स०	५२२
	सारस्वत व्याकरण दीपिका	५२६
चन्द्रसागर—	श्रीपाल चरित्र हि०	३६८
ब्र० चन्द्रसागर—	पच परमेष्ठी हि०	११५६
चन्द्रसेन—	चन्दनमलयागिरि कथा हि०	६४५
चम्पाबाई—	चम्पा शतक हि०	६५६
	पद हि०	११३०
चम्पाराम—	भद्रबाहु चरित्र भाषा हि०	३६१
चम्पालाल वागडिया—	अकलकदेव स्तोत्र भाषा हि०	७१०

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
पं० चम्पालाल—	चर्चासागर हि०	३०
चपाराम दीवान—	धर्म बावनी हि०	१०४०
चरनदास—	ज्ञानस्वरोदय स०	५४६, ५७२, १०५६, ११२१, ११८२
	वैराग्य उपजीवन ग्रन्थ हि०	१०५६
चरित्रवर्द्धन—	कल्याण मन्दिर स्तोत्र टीका स०	७१८
	राघव पाण्डवीय टीका स०	३८३
चाणक्य—	चाणक्य नीति स०	६८३, ६८४, ६८५,
	राजनीति शास्त्र स०	६६३, ६६६
	राजनीति समुच्चय स	६६३
चामुण्डराय—	चारित्रसार स०	१०६
	भावनासार सग्रह स०	११६३
चारित्र भूषण—	महीपाल चरित्र स०	३६७
चारित्रसिंह—	मुनिमालिका हि०	११५६
पं० चिंतामणि—	ज्योतिष शास्त्र स०	५४७
चिमना—	द्वादशमासा महाराष्ट्री	१००३
चुन्नीलाल—	चौबीस महाराज पूजन हि०	८००
	(वर्तमान चौबीसी पूजा)	६०३
	वीस विदेह क्षेत्र पूजा हि०	८६१
	रोटतीज व्रत कथा हि०	४७४, १०६५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
नथमल दोसी—	महिपाल चरित्र भापा हि०	३६८
नथमल बिलाला—	गुण विलास हि०	१६४, ११८१
	जीवन्धर चरित्र हि०	३३०
	जैनवद्री की चिट्ठी हि०	१०४५
	नागकुमार चरित्र हि०	३४१
	नेमिनाथजी का काहला हि०	१०४५
	पद सग्रह हि०	१०४५
	फुटकर दोहा हि०	१०४५
	भक्तामरस्तोत्र कथा (भापा सहित) हि०	४६५, ७०४
	रत्नत्रय जयमाला भापा हि०	९६
	वीर विलास हि०	६६२
	समवशरण मगल हि०	७२६, १०४५
	सिद्धचक्रव्रत कथा हि०	५०२
	सिद्धातसार दीपक हि०	८५, १०४२
नन्द—	सुदर्शन सेठ कथा हि०	६६१
नन्द कवि—	नन्द वत्तीसी स०	६८७
नन्दनदास—	चेतन गीत हि०	१०२७
	नाममाला हि०	५३८
नन्दराम—	कलि व्यवहार पच्चीसी हि०	१००३
	भक्तामरस्तोत्र पूजा हि०	८६१
नन्दराम सोगाणी—	श्रावक प्रतिज्ञा हि०	१०८०
नन्दि गणि—	भगवती आराधना टीका प्रा० स०	६२, १४६
नन्दि गुरू—	प्रायश्चित समुच्चय वृत्ति स०	१४२, २१४
नन्दिताढय—	नन्दीयछद प्रा०	५६४
नन्दिषेण—	अजितशाति स्तवन प्रा०	७१०, ६५६
नन्नूमल—	रत्नसग्रह हि०	६७३
नयचन्द सूरि—	सबोध रसायण हि०	६५७
नयनन्दि—	सुदसण चरिउ अपभ्र श०	४१५
नयनसुख—	आदिनाथ मगल हि०	७११
नयनसुख—	राम विनोद हि०	५८६
	वैद्यमनोत्सव हि०	५०८, ६६२, १००६, ११६७
नयनसुन्दर—	शत्रु जय उद्धार हि०	६०६
नयविमल—	जम्बूस्वामीरास हि०	६३३
नरपति—	नरपति जयचर्या स०	५५०
नरसिंहपाण्डे—	नैषधीय प्रकाश स०	३४४
प० नरसेन—	श्रीपाल चरित्र अपभ्र श	३६२
नरेन्द्र—	दशलाक्षणिक कथा स०	६६४

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
पारसदत्त—	विदरभी चौपई हि०	४८५
पारसदास निगोत्या—	ज्ञानसूर्योदय नाटक हि०	६०५
	पद सग्रह हि०	६६३, ९९८
	पारस विलास हि०	६६८
	सार चौवीसी हि०	१७५
पाल—	बुद्धिप्रकाश रास हि०	६९०
पास कवि—	पार्श्वनाथ स्तुति स०	७३४
पासचन्द सूरि—	आदिनाथ स्तवन हि०	९५५
	श्रावकविचार चउपई हि०	१०३७
पुंजराज—	सारस्वत टीका स०	५२१
पुन्यकीर्ति—	पुण्यसार चौपई हि०	४६३
पुण्यरतनमुनि—	नेमिनाथ रास हि०	६३६, ९०४
	यादवरास हि०	९४९
पुण्यलाभ—	पोपहगीत हि०	७३५
पुण्यसागर—	अंजना सुन्दरी चउपई हि०	३१४
	प्रश्नपष्ठिशतक काव्य टीका स०	३५६
	सुबाहु चरित्र हि०	४१७
पुरुषोत्तमदेव—	त्रिकाण्डकोश स०	५३६
पुष्पदन्त—	आदिपुराण अपभ्रंश	२६६
	उत्तर पुराण अपभ्रंश	२७२
	जसहर चरिउ अपभ्रंश	३२६
	णायकुमार चरिउ अपभ्रंश	३३२
	महापुराण अपभ्रंश	२९४, ६७१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
पुष्पदन्ताचार्य—	महिम्नस्तोत्र स०	७५४, ११६५
पूज्यपाद—	इष्टोपदेश स०	९३, १९०, ११५४, ११७३
	उपासकाचार स०	९६
	समाधितंत्र सं०	२३४
	समाधिशतक स०	२३९
	सर्वार्थसिद्धि स०	८१, ९६९
पूनो—	मेघकुमार गीत हि०	९७२, ९८४, १०२६, १०५४, १०६२
आचार्य पूर्णदेव—	यशोधर चरिउ स०	३७३
मुनि पूर्णभद्र—	सुकुमाल चरित्र अपभ्रंश	४११
पृथ्वीराज—	कृष्णरुक्मिणी वेलि हि०	११७५
मुनि पोमसिंह—	ज्ञानसार प्रा०	४१
पोसह पाण्डे—	दिगम्बरी देव पूजा हि०	१०६१
पौंडरीक रामेश्वर—	शब्दालंकार दीपक स०	६००
प्रकाशचन्द—	सिद्धक्षेत्र पूजा हि०	९३२
प्रतापकीर्ति—	श्रावकाचार हि०	११३६
महाराजा सवाई प्रतापसिंह—	अमृतसागर हि०	५७३
	नीतिशतक हि०	९५१
	भर्तृहरि शतक भाषा हि०	६९२
	शृंगार मंजरी हि०	९५१
प्रतिबोध—	समयसार प्रकरण प्रा०	२२६

ग्रथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
प्रभजन गुरु—	यशोधर चरित्र पीठवध	सं० ३७२
प्रभाकर सेन—	प्रतिष्ठा पाठ	सं० ८८८
प्रभाचन्द्र—	आत्मानुशासन	सं० १८४, १८५
	आराधनासार कथा प्रबध	सं० ४३०
	उपासकाध्ययन	सं० ११३७
	क्रियाकलाप टीका	सं० ६८
	द्रव्यसग्रह टीका	सं० ६४
	पचकल्याणक पूजा	सं० ८४७
	चमीकथा टिप्पण अपभ्रंश	४५५
	प्रतिक्रमण टीका	सं० २०६
	प्रवचनसार टीका	सं० २१०
	यशोधरचरित्र टिप्पण	सं० ३७१
	रत्नत्रय कथा	सं० ४६८
	विषापहारस्तोत्र टीका	सं० ७५६
	श्रावकाचार	सं० ६६४
	समयसार वृत्ति	सं० २२५
	समाधिशतक टीका	सं० २४०
	स्वयभूस्तोत्र टीका	सं० ७७६
भ० प्रभाचन्द्र— (हेमकीर्ति के शिष्य)	तत्वार्थरत्नप्रभाकर	सं० ४२
प्रभाचन्द—	रत्नकरण्ड श्रावकाचार टीका	सं० १५६
प्रभाचन्द्र—	चितामणि पार्श्वनाथ विनती	हि० ६५२
	महावीर विनती	हि० ११६१ २१३
प्रहलाद—	पद्मनन्दि महाकाव्य टीका	सं० ३४४
प्रहलाद—	स्वरोदय	हि० ५७२
प्रेमचद—	सोलहसती की सिज्झाय	हि० १०६८
प० फतेहलाल—	जैनविवाहविधि	हि० १११६
बखतराम साह—	धर्मबुद्धि मन्त्री कथा	हि० ४५०
	पद सग्रह	हि० ११५५
	बुद्धि विलास	हि० १४३, ६६६
	मिथ्यात्व खडन	हि० १४६, ६०७, ६५४
बख्तावर लाल—	चौवीस तीर्थंकर पूजा	हि० ८००, ११३१
बख्तावर सिह रतन लाल—	आराधना कथ कोश	हि० ४३०
बनारसीदास—	अध्यात्मपैंडी	हि० १०११
	अध्यात्म बत्तीसी	हि० ६६६
	अनित्य पचासिका	हि० १०४१
	कर्म छत्तीसी	हि० ६४१
	कर्म प्रकृति	हि० ६८३
	कर्म विपाक	हि० ८, १०१५

शासकों की नामावलि

— — — —

ग्राम एवं नगर नामावलि

शुद्धाशुद्धि विवरण

पत्र संख्या	पक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
२	२४	देवेन्द्र चन्द्र मणि	देवेन्द्र चन्द्र गणि
३३	४	जयार्थं	जथार्थ
३६	१६	सभाज्य	सज्भाय
४२	७	अपभ्र श	प्राकृत
७०	१६	निपलावति	नियलावलि
७७	६	बियालीस ढाणी	बियालीस ठाणी
७८	२	सिद्धान्त	धर्म
८०	१३	तदान्माये	तदाम्नाये
१०५	१६	चतुंदशी	चतुर्दशी
११५	१	दानशीत तप भावना	दानशील तप भावना
१२२	१६	दीवन जी	दीनानजी
१३५	३	प्रतिउ णियारा	प्रति उणियारा
१३८	६,११,१३,१५,१७,१६	प्रनि स० २,३,४,५, ६,७	प्रति स० २(क) ३(क) ४(क) ५(क) ६(क) ७(क)
१४१	२८	वीरसेनामिधें	वीरसेनाभिधें
१४२	५	चन्द्रप्रभा चैत्यालये	चन्द्रप्रभ चैत्यालये
१४३	८	बुद्धि वि	बुद्धि बिलास
१४६	१	तलपि	मे प्रतिलिपि
१४८	२५	भापा सस्कृत	भापा-प्राकृत
१५१	२०	१-४७	१५४७
१५३	१	महा-प०	—महा प०
१६०	२०	लोकामत	लोकामत
१७३	४	सागर धर्मामृत	सागारधर्मामृत
१७६	४	मगसिर सुदी १४	मगसिर सुदी ५
२१४	२१	ब्रह्म ज्योवि स्वरूप	ब्रह्म ज्योति स्वरूप
२०३	१२	द्वदशानुमोक्षा	द्वादशानुप्रेक्षा
२१६	२४	रचनिका	वचनिका
२२२	३०	सम्प्रक	सम्यक्
२२२	३५	जपतु	जयतु

पत्र संख्या	पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
२२६	१७	प्रकरण-प्रतिरोध	प्रकरण प्रतिबोध
२२६	२०	समसार	समयसार
३८	५	नाथूलाल	नाथूराम
२३८	८	समाधि दत्र	समाधि तंत्र
२४६	१५	सवरामनुमप्रेक्षा	सवरानुप्रेक्षा
२४८	२	पयसहस्री	अष्टसहस्री
२६१	२२	समुच	समुचय
२६१	२५	हरिचन्द्र	हरिनंद्र
२६७	३	मवि	कवि
२६८	३, ८, १०	६, ७, ८	७, ८, ६
३१३	१४	बढा	बडा
३१५	१३	श्वेताम्बरनाथ	श्वेताम्बराम्नाय
३१५	२	पुरतक	पुस्तक
३२०	५	भावा	भादवा
३२०	६	जानन्धर	जीवधर
३३८	२५	धन्कुमार	धन्यकुमार
३४०	८	सकृत	संस्कृत
३४८	५	तेरहपथी	तेरहपंथी
३५८	३५	सकृत	संस्कृत
३६०	१८	दि० जैन मन्दिर वघेर वालो का	दि० जैन मन्दिर वघेर वालो का आवा
३६४	२८	कविपरण	कवियरण
३७१	१०	सवाई मानसिंह	सवाई रामसिंह
३७६	१३	यशोधर	यशोधर चरित्र-परिहानन्द
३७३	२८	जनसेन	जयसेन
३८७	१३	र० काल ×	र० काल स० १५८८ ले काल ×
४०१	१२	र० काल×	र० काल स० १८६७
४०७	३४	प्रति स० ७	प्रति स० १
४१६	११	यश कीर्ति	भ० यश कीर्ति
४१७	३१	सुसाहु चरित्र	सुबाहु चरित्र
४२५	१	तजी	तणी
४२६	२०	आदितवार कथा	आदित्यवार कथा
४३५	२२	कालाका चार्य कथा	कालकाचार्य कथा

पत्र संख्या	पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
४३७	४	भ० नरेन्द्र कीर्ति	आ० नरेन्द्र कीर्ति
४४३	१७	भापा-कथा	भाषा–हिन्दी/विषय — कथा
४४८	३	उदयमुर	उदयपुर
४६१	२३	मैंडक	मैढक
४६४	४	नथमल	— × ।
४६८	२६	रत्नावती कथा	रत्नावली कथा
४७२	२३	श्रतसागर	श्रुतसागर
४७४	२३	चुन्नीराम वैद	चुन्नीलाल वैनाडा
४७६	२१	अम्रदेव	अभ्रदेव
४८०	४	कजिका व्रत कथा	काजिका व्रत कथा
४८२	१५	भीवसी	घनराज
४६१	१६	श्रणिक	श्रेणिक
४६२	२४	वादीभ कुमस्य	वादीभ कु भस्य
४६२	२८	प्रति पृोदप	प्रतिष्ठोदय
४६४	२७	स्वल्य	स्वल्प
५०८	७	ग्र थ उते द्धृत	ग्र थ तैं उद्धृत
५११	२६	कातन्त्रत रूप माला	कातन्त्र रूप माला
५२८	७	कृतन्द	कृदन्त
५६८	७	षष्ठि सवतत्सरी	षष्ठि सवत्सरी
५६७	१६	कवि चन्द्रका	कविचन्द्रिका
६०७	५	जिन पूजा पुरदन	जिन पूजा पुरदर
६३३	७	५१५४	६१५१
६४०	१४	रामराम	रामरास
६४०	१४	रामसीताराम	रामसीतारास
६४५	१८	अरोपम	अनोपम
६४५	१२	१६०४	१६७४
६४६	३४	सुखथाम	सुखयाय
६५२	४	विहाडी	दिहाडी
६५५	२५-२६	तयागच्छ	तपागच्छ
६५६	३१	ब्र० सामान	ब्र० सावल
६७१	६	ज्ञान	ज्ञात
६७५	१०	वशेप	विशेप
६७६	२६	सग्रह द्रन्थ	सग्रह ग्रन्थ
६८२	२०	किशनदास	वाचककिशन

पत्र संख्या	पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
७११	१	साघमिका	साधनिका
७१६	१	४८५०	६८५०
७२४	६	सफलकीरती	सकलकीरती
७२१	२१	प्राकृत	संस्कृत
७३०	२२	समरण पार्श्वनाथ	स्मरण पार्श्वनाथ
७३४	२४	संस्कृत	हिन्दी
७७१	१४	स्तोत्रय	स्तोत्रत्रय
७९७	३	चतुविंशाति जिन पूजा	चतुर्विंशति जिन पूजा
८११	११	शुद्ध मग्नाय	शुद्धाम्नाय
८१२	२५	५०	
८१४	२०	नग्न	रत्न
८१७	२३	चतुति शतिका	चतुर्विंशतिका
८२४	४	दशलक्षण द्यापन	दशलक्षणोद्यापन
८२७	५	वसुमा मे चन्द्रपभ	वसुधा में चन्द्रप्रभ
८३६	३१	शातिक	शांतिक
८४१	२०	निवार्ण काड	निर्वाण काड
८५७	१०	पचमी व्रतो पूजा	पंचमी व्रत पूजा
८५६	२६	प्रति स० ७	प्रति स० २
८७६	१०	उमार स्वामी	उमा स्वामी
८७६	१२	संस्कृत	हिन्दी
८८०	८	विद्या विद्यानु वादो	विद्यानुवादो
८८३	३०	णमो पैंतीसी	णमो कार पैंतीसी
९०३	२८	भाषा-विधान	भाषा-संस्कृत
९४६	३४	प्रणाम्	प्रणाम्
९८८	१६	सुधरि	वसुधरि
९५२	१७	—	प्राकृत
९५६	६	,,	हिन्दी
९५६	१८	—	संस्कृत
९५८	१६	भ० सकलकीर्ति	मुनि सकलकीर्ति
९७०	१८	निर्वाणि	निर्वाणि
९९१	१३	पद्मनंदि सूरि	पद्म प्रभसूरि
९९२	५	मन्तिम	अन्तिम
१००२	३०	विहारीदास	बिहारीलाल

पत्र संख्या	पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१००३	३४-३५	महाराष्ट्र भाषा	द्वादश मासा
		द्वादश मासा	महाराष्ट्र भाषा
१००५	३२	चेतक कर्म चरित्र	चेतन-कर्म चरित्र
१०११	१२	उपदेशतक	उपदेश शतक
१०१३	६	धनपतराय	द्यानतराय
१०२६	४	षट्लेशा	षट्लेश्या
१०४१	१६	पाण्डे जिनराम	पाण्डे जिनदास
१०४३	३	गगाराम	गगादास
१०४५	२८	काहला	व्याहला
१०४८	२६	मवाश्रृ गार	सभाश्रृ गार
१०६१	२४	देह	देश
१०७४	१७	सूधरदास	भूधरदास
१०८४	३१	अ० जयसागर	उपा० जय सागर
१०८६	१	चेतन पुद्धल धमाल	चेतन पुद्गल धमाल
१०९६	१४	रमण सार भाषा	रयण सार भाषा
१०९८	६	स्वना=वली	स्वप्नावली
१०९८	१५	मनरामा	मनराम
११०१	१	पचापध्यायी	पचाध्यायी
११०३	१६	बनासरीदास	बनारसीदास
१११०	२४	प्रक्षिस	अक्षिरु
११२२	१	बुधटोटर	बुधटोडर
११२३	१४	भधरदास	भूधरदास
११२८	१८	पाडेजी पत	पाण्डे जीवन
११३१	२	बख्तावर सिंह	बख्तावर लाल
११३७	२७	लवण्य समय	लावण्य समय
११३८	६	गुणतीसी सीवना	गुणतीसी भावना
११३९	२०	सोलह कारण पाखडी	सोलह कारण पाखडी
११४४	५	होली भास	होलीरास
११४४	३०	मिथ्या दुकड	मिथ्या दुकड
११४७	२६	सबोध सनाणु	सबोध सत्ता णु
११५७	३३	मांडका	माडन
११५८	६	मयाराम	दयाराम
११६२	२७	छप्प	छप्पय
११७३	५	अथर्वण वेद	अथर्व वेद

पत्र सख्या	पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
११७३	६	वैद्धिक	वैदिक
११७५	—	गुटका सग्रह	अवशिष्ट साहित्य
११७६	२०	गर्मचक्रवृत्त	गर्भचक्रवृत्त
११७६	२४	जिनशतका रव्यालं कते	जिनशतकारव्यलंकृति
११७६	२५	ह्लायुध	हलायुध
११७९	११	चन्द्रोमीलन	चन्द्रोन्मीलन
११८८	१९	पज्जुण्ण कहा	पज्जुण्णकहा
११८८	२९	परदेशी मतिवोध	परदेशी प्रतिबोध
११९२	२४	रयणसारव चनिका	रयणसार वचनिका
११९५	२९	भर्तृहरि	भर्तृहरि शतक
११९६	११	सोभकवि	'सोमकवि

———